त्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' के प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

मारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं,
सय नहीं कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

हाबाद—विजय दशमी—२ अक्टूबर, १९३० | संख्या १, पूर्ण संख्या १

ी चीज़ों की बस क़द्र हो अपने दिल में। तार खद्दर का हमें मिस्ले रगे जाँ हो गया।

The only Point where Newspapers, Leaders and Indi

Hindi edition :
Annual Rs. 6/8
Six-monthly
Rs. 3/8

The 'CHAN

A magazine which has raised consciousn

The Leader :

The February (1929) number of the CHAND fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine like CHAND.

***

The Amrit Bazar Patrika :

Had there been such magazine, in Bengali, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered.

***

The Bombay Chronicle :

It has justly won a reputation all over India. Lovers of social regeneration in India, especially those who are well-off, can benefit themselves and also do a good turn to this magazine by being subscribers and donors.

***

The Mysore Chronicle :

Few vernacular papers and magazines can boast of such a well-conducted magazine as the CHAND.

***

The Sunday Times :

It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies a foremost place among the journals published in this country.

***

The Indian Daily Telegraph :

It is ably edited and deserves much encouragement.

***

The Tribune :

The magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire.

***

The Rajasthan :

The CHAND undoubtedly stands high among the existing Hindi monthlies and we heartily congratulate the conductors for their unabated zeal.

***

The Searchlight :

It can unhesitatingly be said that it can take its rank with any high class magazine.

***

The Indian Social Reformer :

We have often noticed in these columns the excellent work done by the Hindi Journal—the CHAND. The CHAND has justified its existence as one of the best Hindi magazines.

The Forward :

The neatness of the paper and its get-up leaves nothing to be desired. It has raised a general consciousness in the Hindi-knowing world.

***

The Patriot :

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful *journal, which, we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.*

***

Individual Opinions

Justice Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu edition of your excellent magazine. The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out and Urdu edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

***

F. W. Wilson, Esq., Ex-Chief Editor of the "Pioneer" :

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I am told that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and unswervingly followed. Again and again the criticism is made against Indian life to-day and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference, unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of Public opinion is an enlightened, vigorous, independent and free press. That you realise the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social custom that are choking the young and vigorous life of a healthy Indian nationality, is obvious by the mere fact that you have undertaken this new venture. I cordially wish you all success.

the
ind
be a

Mun
Le

I
The w
thrice
do it.
the rig
it does
antists
imitator
trust it
the fact
education
I sincere
preservati
woman-hoo
usefulness.

Prof. M. F
Urdu, Al

I am gla
edition of th
I wish this n
I understand
devoted to the
India. In ou
there is no cau
I do hope that
garb will bring
people who are
and are averse

Dr. Sir Tej Baha
D., Ex-Law M
ment of India :

I wish it every

*

Mr. M. M. Verma,
Education, Bika

I need ha
been following the ca
nal with keen interes
tremely refreshing ou
which it is sure to
most important of
Reform in India . . .

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशित विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशन होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ || इलाहाबाद—विजय दशमी—२ अक्टूबर, १९३० || संख्या १, पूर्ण संख्या १

'भविष्य' का आदर्श और कार्यक्रम

"भविष्य" का जन्म ऐसे समय में हो रहा है, जब कि हमारा देश एक बहुत ही सङ्कटमय और साथ ही महत्वपूर्ण युग में होकर गुज़र रहा है। अपने जन्म-सिद्ध अधिकार 'स्वराज्य' के लिए बहुत समय तक प्रार्थना, चेष्टा और आन्दोलन करने पर भी जब भारतवासियों को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त न हुई तो उन्होंने विदेशी शासन से सम्बन्ध तोड़ कर पूर्ण स्वतन्त्र होने का निश्चय कर लिया और इसके लिए सविनय आज्ञाभङ्ग अथवा सत्याग्रह का सहारा लिया। गवर्नमेण्ट ने भी अपनी सत्ता की रक्षा करने का दृढ़ सङ्कल्प प्रकट किया और लड़ाई छिड़ गई। शीघ्र ही यह संग्राम देश के कोने-कोने में व्याप्त हो गया और जोशीले नवयुवक ही नहीं, वरन् वृद्ध, बालक और महिलाएँ तक इसके रङ्ग में रँग गईं। आज भारत का शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा होगा, जो इस संग्राम से अनजान हो और जिस पर इसका किसी न किसी रूप में असर न पड़ा हो। भारतवासी ही नहीं, विदेशी भी इसके प्रभाव से नहीं बच सके हैं और आज आप संसार के किसी भी राजनीति की चर्चा करने वाले पत्र को उठा लीजिए, भारतीय सत्याग्रह-संग्राम का कुछ न कुछ हाल उसमें आपको मिल ही जायगा। दिन पर दिन इस संग्राम की गम्भीरता और भीषणता बढ़ती जाती है और कुछ समय पश्चात् इसको किस परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा, इसकी कल्पना तक कर सकना कठिन है।

समाचार-पत्रों और प्रेसों को इस सङ्कटकाल में विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। गवर्नमेण्ट समझती है कि पत्रों और प्रेसों द्वारा ही आन्दोलन बढ़ता है और इनको दबा देने से वह अपङ्ग हो जायगा! इस धारणा के वशीभूत होकर वह न्याय-अन्याय का विचार ताक़ पर रख कर तरह-तरह के दमनकारी उपायों द्वारा समाचार-पत्रों का गला घोंट देना चाहती है या उनको इस प्रकार दबा हुआ और भयभीत रखना चाहती है कि उनकी आवाज़ भी न सुनाई दे!

ऐसे आपत्ति-काल में किसी नवीन समाचार-पत्र के प्रकाशित करने का उद्योग करना, यदि पूरा पागलपन नहीं, तो जान बूझ-कर आग में कूदना ज़रूर है। इस कार्य की कठिनाइयों और ख़तरों का अनुभव वे ही कर सकते हैं, जिन्होंने कभी इस कण्टकाकीर्ण क्षेत्र में पैर रक्खा है और इसके कड़वे फलों को चक्खा है। पर साथ ही यह भी सच है कि पत्रों की आवश्यकता जितनी अधिक ऐसे समय में हुआ करती है, उतनी कभी नहीं होती। यह उत्तरदायित्व को समझने वाले पत्रों का ही कर्तव्य है कि ऐसे हलचल के समय में, जब कि आँखों के सामने नित्यप्रति रोमाञ्चकारी घटनाएँ घटती हैं और हृदय को दहला देने वाले दृश्य देखने में आते हैं, तब साधारण लोगों को सुधबुध बिसार देने से बचावें। उन्हें न तो भय से भयभीत होकर मनुष्यत्व को तिलाञ्जलि देकर भेड़ और बकरी बनने दें और न क्रोध तथा रोष से पागल होकर जङ्गली पशु! ऐसे विकट अवसरों पर निष्पक्ष और निर्भीक नीति वाले समाचार-पत्र ही जनता के ज्ञान और विवेक की रक्षा कर सकते हैं और उसे आत्म-गौरव के विरुद्ध कोई काम करने से बचा सकते हैं।

"भविष्य" के जन्म का यही कारण और उद्देश्य है। यह जनता को सत्य और न्याय पर डटे रह कर अपने जन्मसिद्ध अधिकारों के लिए वीरतापूर्वक संग्राम करना सिखलाएगा। आत्म-सम्मान दुनिया में बहुत बड़ी चीज़ है और सैकड़ों वर्षों की ग़ुलामी के फलस्वरूप भारतवासी इस गुण से प्रायः शून्य होगए हैं, और बात-बात में दब जाना तथा अपमान को चुपचाप बर्दाश्त कर लेना उनका स्वभाव बन गया है। इसी आत्म-सम्मान की कमी से वे अपनी मातृभूमि को पराधीन देख कर व्याकुल नहीं हो जाते और न उनको विदेशियों के शासन में रहना अपमान-जनक प्रतीत होता है। "भविष्य" भारतीय जनता में आत्म-सम्मान का वह प्रचण्ड भाव जाग्रत करने की चेष्टा करेगा, जो कि लोगों की आत्मा को तलमला दे और ग़ुलामी की दशा को उनके लिए असह्य बना दे! हमारे यहाँ दूसरी बड़ी कमी राष्ट्रीयता के भाव की है जो आत्म-सम्मान-शून्य लोगों में प्रायः पाई जाती है। इसके कारण हम जैसा चाहिए सङ्गठित रूप से काम नहीं कर सकते और साधारण से साधारण बातों में ही हममें फूट पड़ जाती है।

पर इन बातों से यह न समझ लेना चाहिए कि "भविष्य" भारतवासियों को किसी तङ्ग दायरे में बन्द कर देना चाहता है अथवा वह उनको—'हमी सब कुछ हैं—हमारी सभ्यता ही सर्वश्रेष्ठ है—दुनिया के सब देश हमारे शिष्य हैं'—का पाठ पढ़ाना चाहता है! हम राष्ट्रीयता के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीयता के भी क़ायल हैं, और हमारा विश्वास है कि विश्वव्यापी शान्ति और कल्याण की रक्षा तथा संसार में रहने वाले समस्त मनुष्यों और जातियों की—जिनमें हम भी शामिल हैं—उन्नति और वृद्धि के लिए यह परमावश्यक है कि दुनिया के विभिन्न देशों में मेल-मिलाप बढ़े और भाईचारे का बर्ताव होने लगे। जिस प्रकार हम अपने ऊपर विदेशी शासन होने से व्याकुलता अनुभव करते हैं, उसी प्रकार हम संसार के किसी भी देश पर विदेशी शासन का रहना निन्दनीय और घृणित समझते हैं। इसलिए केवल उन देशों को छोड़ कर, जो अपने स्वार्थ-साधन के लिए हमारे साथ अन्याय और अत्याचार का बर्ताव करते हैं और हमको तरह-तरह से हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, हम समस्त राष्ट्रों के साथ—चाहे वे एशियाई हों, चाहे यूरोपियन और चाहे अमेरिकन—एकता, समता और भ्रातृभाव का बर्ताव करने के अभिलाषी हैं।

भारतवर्ष की सबसे बड़ी समस्या दरिद्रता की है। जिनको हम अपना अन्नदाता कहते हैं अथवा जो हमारे हाथ-पैर हैं, उन किसान-मज़दूरों की ही अकथनीय दुर्दशा है!! रात-दिन परिश्रम करते रहने पर भी सुखपूर्वक रहना तो दूर, वे सूखा अन्न और मोटा कपड़ा भी पर्याप्त मात्रा में नहीं पाते। उनकी गाढ़ी कमाई का कुछ हिस्सा लुटेरे छीन लेते हैं और कुछ ठग लोग उड़ा लेते हैं और उनको तथा उनके स्त्री-बच्चों को अक्सर रोटियों के भी लाले पड़े रहते हैं! उनकी मलिन सूरत, हड्डियाँ निकले हुए बदन और फटे-पुराने चिथड़ों को देख कर, और साथ ही उनकी आकृति से प्रकट होने वाले घोर निराशा और उदासी के भाव को देख कर शायद ही ऐसा कोई पाषाण-हृदय होगा जिसकी आँखों में आँसू न आ जायँ। इन देश के 'सर्वस्व'—आज दर-दर ठुकराए जाने वाले लोगों की—सेवा करना "भविष्य" अपना सब से बड़ा कर्तव्य समझेगा। वह उन लोगों का निडर होकर विरोध करेगा, जो इन सीधे और शान्त लोगों को लूटते और ठगते हैं। इन पर होने वाले अमानुषिक अत्याचारों की करुण-कहानी का नग्न-चित्र वह संसार के सामने उपस्थित करेगा और प्रत्येक सम्भव उपाय द्वारा वह उनको, उनके वास्तविक रूप और अत्याचार का निशान मिटा देने को तैयार करेगा।

हमारा देश केवल आर्थिक विषमता से ही पीड़ित नहीं है, वरन् यहाँ की सामाजिक विषमता भी बड़ी दुःखदायक है। इसके कारण भारतमाता की कई करोड़ सन्तानों को बिना किसी अपने दोष के, पशुओं से भी अधम और कष्टपूर्ण जीवन बिताना पड़ता है! हमारे यहाँ के अधिकांश कुलीन और उच्च जाति के समझे जाने वाले लोग उनके साथ जैसा निर्दयता और अन्याय का बर्ताव करते हैं, उसे देख कर ख़ून गरम हो उठता है! उन अभागों को इतना अधिक दबाया और कुचला गया है कि आत्म-सम्मान का भाव उनमें तिल भर भी शेष नहीं रहा है और वे अपने साथ होने वाले गर्हित और घृणित व्यवहार को स्वाभाविक-सा समझने लग गए हैं! सच पूछा जाय तो हम अपने अछूत-नाम-धारी भाइयों के साथ जैसा मनुष्यता-विहीन और असभ्यतापूर्ण बर्ताव करते हैं, उससे हमारे स्वराज्य अथवा स्वाधीनता के दावे का महत्व बहुत कुछ घट जाता है; जब हम अपने देश-भाइयों के साथ इस प्रकार का जघन्य बर्ताव कर सकते हैं तो अन्य देशों के निवासी हमारे साथ जो कुछ करें, थोड़ा है। यदि हम वास्तव में स्वराज्य के योग्य बनना चाहते हैं, तो हमको शीघ्र से शीघ्र इस कलङ्क से छुटकारा पाना होगा। हम इस पर विशेष ज़ोर इसलिए देते हैं कि अन्य कामों की तरह इसमें बाहरी बाधाएँ अधिक नहीं हैं और यह ख़ास कर हमारा मानसिक परिवर्तन हो जाने और मूर्खता-जन्य अहङ्कार को त्याग देने से ही बहुत कुछ पूरा हो सकता है। "भविष्य" इस पिशाचिनी प्रथा के विरुद्ध सदैव खड्गहस्त रहेगा और जात-पाँत के ढोंग की सदा पोल खोलता रहेगा। उसका उद्देश्य समस्त मनुष्यों के बीच सामाजिक एकता का प्रचार करना रहेगा और जातिगत तथा वंशगत उच्चता के सम्मुख वह कभी सर झुकाने को तैयार न होगा।

अछूतों के समान ही हमारे समाज का एक और अङ्ग महिला-वर्ग—सामाजिक बन्धनों में जकड़ा हुआ, लाचारी और बेकसी की हालत में पड़ा है! उनकी स्थिति ऐसी असहाय और परतन्त्रतापूर्ण हो गई है कि वे अधिकांश में हमारे गले का बोझ बनी हुई हैं और उनके कारण हमारी उन्नति की गति में पग-पग पर रोड़ा अटकता है। यह जानते हुए भी कि वे राष्ट्र के बच्चों की जननी हैं और उनके दुर्दशाग्रस्त और कुसंस्काराच्छन्न रहते हुए यहाँ का पुरुष-समाज कभी श्रेष्ठ और उन्नत नहीं बन सकता, हमने उनको अवनति के गढ़े में डाल रक्खा है, और उससे बाहर निकलने में सहायता और उत्साह देना तो दरकिनार, ज़्यादातर लोग भारतीय सभ्यता की रक्षा इसी में समझते हैं कि उनको जहाँ की तहाँ पड़ी रक्खा जाय! उनके सुधार की छोटी-छोटी बातों के लिए लोग शास्त्रों और स्मृतियों की ओर दौड़ते हैं, मानो ये उनको दासता के बन्धन में रखने वाले दमनकारी क़ानून हैं और पुरुष हमेशा इसी फ़िक्र में रहते हैं कि महिलाओं के किस विद्रोहजनक कार्य को इन धार्मिक दण्ड-संग्रहों (प्रोसीजर कोड) की दफ़ा द्वारा रोका जाय! 'भविष्य' की नीति इस सम्बन्ध में क्या रहेगी, यह जनता को बतलाना हमारे लिए ज़रूरी नहीं है। इस सम्बन्ध में "चाँद" ने पिछले आठ वर्षों से जो काम किया है, वही इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हम इस प्रश्न को कितनी गम्भीर निगाह से देखते हैं और महिला-समाज के उत्थान के लिए हम कितने व्यग्र हैं।

राजनीतिक स्वतन्त्रता और सामाजिक स्वतन्त्रता के समान ही "भविष्य" का लक्ष्य विचार-स्वतन्त्रता के प्रचार पर भी रहेगा। क्योंकि ग़ुलाम-मनोवृत्ति के लोगों का राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त कर सकना कठिन है और अगर किसी तरह वह मिल भी जाय तो उससे लाभ उठा सकना बहुत कम सम्भव है। यह विचार-स्वतन्त्रता की कमी का ही फल है कि हमारे देश में मत-मतान्तरों के इतने झगड़े फैले हुए हैं और उनके कारण हमारी राजनीतिक उन्नति में बड़ी बाधा पड़ रही है। हिन्दू-मुसलमान, जो एक ही खेत का अन्न खाते हैं और एक ही कुएँ का पानी पीते हैं, अगर मन्दिर या मसजिद अथवा गीता और क़ुरान के नाम पर लड़ें तो क्या यह विचार-स्वतन्त्रता के अभाव का सूचक नहीं है? कोई भी विचारशील मनुष्य इस बीसवीं शताब्दी में, जब कि मानव-जीवन आर्थिक सूत्र द्वारा बँध कर एक रूप होता जा रहा है और उससे भी आगे बढ़ कर साम्यवाद के द्वारा मनुष्यों के समस्त भेद-भावों के लोप हो जाने की सम्भावना हो रही है, किस तरह धर्म-कर्म के इन थोथे झगड़ों के लिए माथा फोड़ सकता है? सच तो यह है कि ऐसे लोग जानते ही नहीं कि 'धर्म' क्या चीज़ है और मनुष्य को किस प्रकार उसका पालन करना चाहिए।

"भविष्य" की आकांक्षा है कि भारतवासी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक—सभी क्षेत्रों में उन्नति करें और इन क्षेत्रों में जो दोष, जो दुर्गुण, जो कुप्रथाएँ आ घुसी हैं उनको बाहर निकाल दें। इस उद्देश्य की पूर्ति में वह अपनी समस्त शक्ति और साधनों को लगा देगा। उसका जन्म राष्ट्रीय कल्याण के लिए हुआ है और इसी के लिए—अगर आवश्यक हो तो—उसका अन्त भी होगा। सत्य और न्याय—निर्भीकता और निष्पक्षता इसके मूल-मन्त्र होंगे, और इन पर दृढ़ रहता हुआ देश और जनता की अधिक से अधिक सेवा करना ही वह अपना एकमात्र कर्तव्य समझेगा। हम उस सर्वशक्तिमान परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें अपने इन गम्भीर उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करने की क्षमता और बल प्रदान करे। इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक से प्रेम और सहयोग की भी हम पूर्ण आशा रखते हैं।

—रामरखसिंह सहगल, सञ्चालक "भविष्य"

—पं० मोतीलाल जी नेहरू जेल से छोड़े जाने पर स्वास्थ्य-सुधार के लिए मसूरी गए हैं। वहाँ डॉक्टर टी० बी० बूचर उनका इलाज कर रहे हैं। पहिले पण्डित जी बहुत-कुछ अच्छे थे, पर २२ सितम्बर से फिर उन पर मलेरिया का आक्रमण हुआ है। डॉक्टर का कहना है कि उनकी हालत तो ख़राब है, किन्तु विशेष चिन्ता का कोई कारण नहीं है।

—अतरौली (अलीगढ़) में कॉङ्ग्रेस की तरफ़ से एक अदालत क़ायम की गई है। इसमें जो पहिला अभियोग आया उसमें प्रतिवादी को अपराधी पाया गया और उस पर एक रुपया जुर्माना किया गया। कहते हैं कि लोगों ने फ़ैसले के इस सस्ते ढङ्ग को ख़ूब पसन्द किया है।

—इटावे में राव नरसिंह राय, और डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के बीच समझौता हो जाने के कारण वहाँ के गवर्नमेण्ट इण्टरमिडिएट कॉलेज पर से धरना उठा लिया गया है और जो विद्यार्थी कॉलेज से निकाल दिए गए थे वे अब फिर से कॉलेज में भरती कर लिए गए हैं। कॉलेज के कम्पाउण्ड में राष्ट्रीय झण्डा फहरा दिया गया है और विद्यार्थी स्वतन्त्रता से राष्ट्रीय गीत गाते हैं।

—कुछ दिन हुए सहगल जी ने इङ्गलैण्ड जाने के लिए पासपोर्ट पाने की प्रार्थना की थी। सहगल जी ने यह पासपोर्ट 'भारत में अङ्गरेज़ी राज्य' पुस्तक के हाईकोर्ट वाले फ़ैसले के विरुद्ध प्रिवी कौन्सिल में अपील करने और जल-वायु परिवर्त्तनार्थ माँगा था और स्वयं इलाहाबाद के पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट ने उस पर सिफ़ारिश की थी। अब २४ सितम्बर को इलाहाबाद के कलक्टर ने पत्र लिख कर सहगल जी को सूचित किया है कि "गवर्नर-इन-कौन्सिल ने उन्हें पासपोर्ट न देने का फ़ैसला कर लिया है।"

—कानपुर में श्री० हरनारायण टण्डन, रामस्वरूप दीक्षित आदि २१ सत्याग्रही स्वयम्सेवकों को ३-३ मास की और श्री० गङ्गासहाय पाण्डे को छः मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—पीलीभीत से श्री० मकुन्दलाल अग्रवाल लिखते हैं कि वे सालों से अदृश्य और नाशकारी प्रेतों की करतूतों से बहुत दुःखी हैं। एक साल पहिले उन्होंने एक तीन साल के लड़के को कुएँ में फेंक कर मार डाला था और एक तीन माह के बच्चे को एक तिमञ्ज़िले मकान के छप्पर के ऊपर छोड़ दिया था, परन्तु किसी प्रकार उसकी जान बच गई। आँखों से देखते-देखते खाने-पीने की चीज़ें, बर्तन और रुपया ग़ायब हो जाता है, ओलों की नाईं दिन-रात ईंटें बरसते रहते हैं और दरवाज़े खटखटाए जाते हैं। पिछले एक सप्ताह में तो उन्होंने खूँटियों पर टँगे हुए और स्टील ट्रङ्कों में रक्खे हुए एक हज़ार वस्त्र जला कर राख कर दिए। श्री० अग्रवाल ने इस सम्बन्ध में कुछ जानने वालों से रक्षा की याचना की है।

—पिलखुआ (मेरठ) में एक २७ वर्ष के नवयुवक ब्राह्मण ने नहर में कूद कर आत्म-हत्या कर ली। वह एक कपड़े की दुकान में नौकर था और उसने दुकान के दो सौ रुपए किसी जातीय काम में ख़र्च कर दिए थे। जब उनके लिए सख़्ती के साथ तक़ाज़ा किया गया तो उसने अपनी जान दे दी।

—रिवाड़ी में १६ तारीख़ को रात के ११ बजे पुलिस के ७० सिपाहियों ने कॉङ्ग्रेस का ऑफ़िस घेर लिया और ३ बजे तक उसकी तलाशी लेते रहे। वहाँ पर जितने काग़ज़ात, किताबें, झण्डे आदि मिले उन सबको वे उठा ले गए। पुलिस ने कई ताले भी तोड़ डाले।

—भूपाल के नवाब अलीगढ़ मुसलिम यूनीवर्सिटी के चान्सलर चुने गए हैं।

—श्री० सुभाषचन्द्र बोस और श्री० जे० एम० सेन गुप्ता २३ तारीख़ को जेल से छोड़ दिए गए। श्री० सुभाषचन्द्र ने कलकत्ता-कॉरपोरेशन के मेयर का पद ग्रहण कर लिया है।

—मुसलमानों के सुप्रसिद्ध नेता, कलकत्ता यूनीवर्सिटी के वायस चान्सलर और असेम्बली के सदस्य डॉ० सुहरावर्दी ने एक विज्ञप्ति में गोलमेज़ परिषद् लन्दन में न होकर, दिल्ली में होने पर बहुत अधिक ज़ोर दिया है। उनका कहना है कि यदि कॉन्फ़्रेन्स दिल्ली में न हो तो उसकी तारीख़ बढ़ा देना चाहिए। उनकी सलाह से कॉन्फ़्रेन्स के डेलिगेट भारत की संस्थाओं के प्रतिनिधि नहीं हैं।

—दमदम (कलकत्ता) की जेल में कम भोजन मिलने के कारण क़ैदियों में बड़ा असन्तोष फैला है। क़ैदियों ने कोठरियों के भीतर जाने से इनकार किया, जिससे वार्डरों को बल-प्रयोग करना पड़ा और तीन क़ैदियों को चोटें आईं।

—हाल ही में कलकत्ता-कॉरपोरेशन ने संसार के अद्वितीय भारतीय तैराक श्री० पी० के० घोष का स्वागत किया है। आप लगातार ६७ घण्टे तक कलकत्ते के कार्नवालिस स्क्वायर वाले तालाब में तैरते रहे। संसार में आज तक ६० घण्टे से अधिक कोई पानी में नहीं रहा।

—बङ्गाल सरकार ने एक दुभाषिया दैनिक समाचार-पत्र श्रीयुत एच० टर्नर बैरेट आई० सी० एस०, प्रेस-ऑफ़ीसर के सम्पादकत्व में प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया है। उसकी एक प्रति की क़ीमत एक पैसा रक्खी गई है। पत्र में कलकत्ते के पिकेटिङ्ग और उसके प्रभाव सम्बन्धी समाचार रहते हैं।

—पञ्जाब प्रान्तीय गज़ट में प्रकाशित १६ सितम्बर की एक विज्ञप्ति के अनुसार पञ्जाब-गवर्नमेण्ट ने सम्पूर्ण प्रान्त की कॉङ्ग्रेस कमेटियों को ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दिया है। इसके अनुसार पञ्जाब के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध शहरों की कमेटियों के ऑफ़िसों और उनके कार्यकर्ताओं के घर की तलाशियाँ ली गई हैं; और प्रायः सभी स्थानों से पुलिस काग़ज़-पत्र, बुलेटीन, रिपोर्ट और अन्य आवश्यक सामान उठा ले गई है। गवर्नमेण्ट का विरोध करने के लिए कॉङ्ग्रेस ने सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया है। एक-एक आदमी सत्याग्रह करेगा, जो 'युद्ध-समिति' का डिक्टेटर कहलाएगा।

—२४ सितम्बर का समाचार है कि रलियाराम नाम के कपड़े के दुकानदार ने विदेशी कपड़ा बेचने के सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस कमेटी की शर्तों को स्वीकार नहीं किया और इसलिए उसकी दुकान की पिकेटिङ्ग की जा रही है। अब तक १४ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं। औरतों का एक दल रलियाराम के घर के सामने जाकर 'स्यापा' करने लगा। वहाँ भी पुलिस ने नौ औरतों और छः मर्दों को

पकड़ा। दो महिला-कार्यकर्त्री २३ तारीख़ को पकड़ी जा चुकी हैं।

—लाहौर कॉङ्ग्रेस कमेटी के वाइस प्रेज़िडेण्ट श्री० ग़ुलाम मुहम्मद को आठ महीने की सख़्त क़ैद और २५०) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई। स्वयंसेवक दल के कप्तान हामिसदीन को २ हज़ार रुपए की ज़मानत न देने पर एक साल की सज़ा दी गई।

—लाहौर में श्री० महाराजदीन कुम्हार प्रान्तीय कौन्सिल की मेम्बरी के उम्मेदवार थे। वे मलिक मुहम्मद-दीन के मुक़ाबले में हार गए। मलिक को ४१३० और कुम्हार को ५३४ वोट मिले। इस हार से कॉङ्ग्रेस दल में बड़ा असन्तोष फैला है।

—दिल्ली के तीसरे डिक्टेटर और सुप्रसिद्ध बैरिस्टर श्री० आसफ़अली को छः माह की सादी क़ैद की सज़ा सुना दी गई। वे 'ए' क्लास में रक्खे गए हैं। श्री० ब्रज-कृष्ण चण्डीवाल, ए० के० देक और धर्मवीर भी उन्हीं के साथ सत्याग्रह आश्रम में गिरफ़्तार किए गए थे। उन्हें तीन-तीन मास की सज़ा हुई। २६ कॉङ्ग्रेस वालण्टि-यरों को तीन-तीन माह की सख़्त सज़ा और पचास-पचास रुपया जुर्माना हुआ। २५ नाबालिग़ वालण्टियर चेतावनी देकर छोड़ दिए गए।

—पाठक यह भूले न होंगे कि बारडोली ताल्लुक़े के किसानों ने यह निश्चय किया था कि जब तक महात्मा गाँधी या सरदार बल्लभ भाई पटेल उनसे लगान देने के लिए न कहेंगे, तब तक वे लगान न देंगे और यदि गवर्नमेण्ट उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही करेगी तो वे अपने गाँव छोड़ कर रियासतों में चले जायँगे। अपने इस निश्चय के अनुसार ताल्लुक़े के सारमान, केदाद, बक्कानेर और बालोद गाँवों के निवासियों ने अपनी चल-सम्पत्ति सहित गाँव छोड़ना प्रारम्भ कर दिया है। कहा जाता है कि डिपुटी पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट की कार्यवाहियों के कारण ही, जो वहाँ राजनैतिक परिस्थिति के कारण नियुक्त हुए हैं, लोगों ने अपने गाँवों का छोड़ना प्रारम्भ किया है।

—१७ सितम्बर को बम्बई में सी० आई० डी० महकमे के लोगों ने पुलिस की सहायता से ज़ब्त साहित्य का पता लगाने के लिए बहुत से घरों और ऑफ़िसों पर धावा किया। इस सम्बन्ध में पुलिस ने मलाबार-हिल पर रहने वाले दो अमेरिकनों की भी तलाशी ली। अमेरिकनों को छोड़ कर, सबके यहाँ से वह कुछ छपे पत्रों के साथ प्राईवेट पत्र भी ले गई।

—कराची शहर से श्री० गोबरगड़ा नाम का स्कूल का चपरासी बम्बई कौन्सिल का मेम्बर चुना गया है। उसे २५५७ वोट मिले और उसके विरोधी को, जो वकील और म्युनिसिपैलिटी का सदस्य है, केवल ६२८ वोट मिले।

—हैदराबाद (सिन्ध) में श्री० दालू मोची को ३६७२ और उसके विरोधी, मि० परमानन्द को जो सर-कारी वकील हैं, ४३६ वोट मिले। श्री० दालू मोची बम्बई-कौन्सिल के सदस्य घोषित कर दिए गए।

—सीमा प्रान्त की कॉङ्ग्रेस कमेटी के प्रेज़िडेण्ट डॉक्टर घोष, जो पेशावर जेल में अपने दो वर्ष के कठिन कारावास का दण्ड भोग रहे थे, बीमारी के कारण पेशावर की लेडी रीडिङ्ग अस्पताल में लाए गए हैं। वहाँ उनका स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है।

—काश्मीर-नरेश ने [illegible]राज्य को राष्ट्रीय आन्दोलन की छूत से बचाने के लिए आज्ञा निकाली है कि वहाँ ब्रिटिश इण्डिया के आन्दोलन के सम्बन्ध में कोई सभा या भाषण न हों, राज्य के नौकरों को चेतावनी दी गई है कि वे अपने लड़कों को राजनीतिक आन्दोलन से अलग रक्खें। साथ ही विद्यार्थियों को राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेने तथा राष्ट्रीय नारे लगाने से रोका गया है।

—बीकानेर के सुप्रसिद्ध दानी सेठ रामगोपाल तथा रावबहादुर शिवरतन मोहता ने जोधपुर के महाराजा साहब को एक लाख रुपया अनाथ और दीन स्त्रियों के आश्रय के लिए एक भवन स्थापित करने को दिया है। महाराजा साहब ने इस दान को धन्यवाद सहित स्वी-कार कर लिया है और इसके उपयोग के लिए योजना तैयार की जा रही है।

—झाँसी के स्वदेशी प्रेस से ५०० रुपए की ज़मानत माँगी गई है। वहाँ के बलवन्त-प्रेस से भी ज़मानत माँगी गई है।

—लाहौर के 'तमङ्ना' नामक उर्दू दैनिक पत्र से २००० रुपये की ज़मानत माँगी गई है।

—बम्बई प्रान्त के पनवेल नामक स्थान में २५ सितम्बर को जङ्गल-सत्याग्रह के कारण बड़ा भारी उपद्रव हो गया, जिसमें ८ मनुष्य मारे गए और ६० घायल हुए। मरने वालों में एक मैजिस्ट्रेट, दो पुलिस के सिपाही और एक सरकारी चौकीदार भी है। कहा जाता है कि जिस समय पुलिस ने गोली चलाई उस समय वे लोग सत्या-ग्रहियों के दल में ही मिले थे और गोली लगने से मारे गए। पुलिस वाले जब तक गोली-बारूद ख़तम न होगई, गोलियाँ चलाते रहे। अब तक इस बात का पता नहीं चल रहा है कि गोली चलाने की आज्ञा किसने दी थी!

—२६ सितम्बर को कौन्सिल-चुनाव के सम्बन्ध में मुरादाबाद में भीषण दङ्गा हो गया, जिसमें पुलिस ने गोली चलाई। ४६ घायल व्यक्ति अस्पताल में भेजे गए, जिनमें से एक मर गया।

—विभिन्न प्रान्तों में सत्याग्रह आन्दोलन के सम्बन्ध में जितनी गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं, उनकी संख्या इस प्रकार है :—

बिहार	...	...	८,१२६
पञ्जाब	...	...	५,७००
संयुक्त प्रान्त	...	...	४,७६६

—ख़बर है कि फ़ीरोज़पुर (पञ्जाब) की जेल में १८४ राजनैतिक क़ैदी अनशन कर रहे हैं।

—मुसलमानों के एक ख़ास नेता कहलाने वाले सर फ़ज़ली हुसैन ने राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स के मुसलमान प्रतिनिधियों के नाम प्राइवेट पत्र भेजा है, जिसमें ज़ोर दिया गया है कि कॉन्फ़्रेन्स में वे एकमत होकर कार्य करें और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के झगड़ों को बीच में न घुसने दें। उन्होंने ज़्यादा ज़ोर इस पर बात पर दिया है कि हिन्दुओं से किसी प्रकार का समझौता न किया जाय। ऐसा करने से मुसलमान अङ्गरेज़ी गवर्नमेण्ट की सहानु-भूति को खो बैठेंगे, जो हिन्दुओं की दोस्ती की अपेक्षा विशेष क़ीमती है। हिन्दुओं के सामने मुसलमानों के लिए विशेष प्रतिनिधित्व और सरकारी नौकरियों में एक सुरक्षित भाग रखने की शर्त पेश की जाय और यदि वे उसे स्वीकार न करें तो सरकार के साथ मिल कर काम किया जाय। चुनाव अलग-अलग सम्प्रदायों के आधार पर ही होना चाहिए।

—कानपुर में कौन्सिल-चुनाव में बहुत कम लोगों ने वोट दिए। एक स्वयंसेवक गिरफ़्तार किया गया।

—आगरे में प्रेमा मेहतर को कौन्सिल के लिए खड़ा किया गया और कॉङ्ग्रेस वालों ने उसके लिए वोट दिलवाए।

—मुरादाबाद का २७ तारीख़ का समाचार है कि कौन्सिल-चुनाव के अवसर पर गोली चलाने से २०० व्यक्ति घायल हुए हैं। कॉङ्ग्रेस प्रेज़िडेण्ट की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी भी भयङ्कर रूप से घायल हुई हैं।

—बन्नू (सीमा-प्रान्त) की एक दुकान में २६ सित-म्बर को एक बम फूटा, जिससे एक स्त्री घायल होकर मर गई।

—इङ्गलैण्ड में २० सितम्बर को एक भयङ्कर तूफ़ान आया। हवा की चाल फ़ी घण्टा ८० मील थी, हज़ारों पेड़ उखड़ गए, खेती का नुक़सान हुआ और रेल-गाड़ियाँ रुक गईं।

—२० सितम्बर को स्टोमार्केट (सफोक) में बेकारी पर भाषण देते हुए मि० लॉयड जॉर्ज ने कहा है कि वे उस गवर्नमेण्ट का साथ देने के लिए तैयार हैं जो बुद्धि-मत्ता, शीघ्रता और दृढ़तापूर्वक बेकारी की समस्या हल करने के लिए तैयार हो, जो अशान्त संसार में शान्ति स्थापित करे और जो भारत की वर्तमान स्थिति को न्याय-पूर्वक और दृढ़ता से सम्हाल सके।

—रूटर का समाचार है कि केनेडा के प्रतिनिधि की १३ सितम्बर को लन्दन पहुँचने की असमर्थता के कारण 'इम्पीरियल कॉन्फ़्रेन्स' पहली अक्टूबर के लिए स्थगित कर दी गई है।

—'कॉमन-वेल्थ ऑफ़ इण्डिया लीग' की कौन्सिल ने श्री० पीटर फ़्रीमेन के सभापतित्व में यह प्रस्ताव पास किया है कि सुलह के सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस नेताओं की ५ शर्तें उचित हैं। उसने उनके आधार पर गवर्नमेण्ट से, भारत से समझौता करने की भी प्रार्थना की है। भारत के अधिकारों का प्रचार करने पर भी बहुत ज़ोर दिया गया।

—श्री० रेनाल्ड्स ने, जो महात्मा गाँधी का पत्र वायसराय के पास लेकर गए थे, लन्दन की विद्यार्थी-सभा में भाषण देते हुए कहा है कि—"मैं यहाँ से मज़दूर-दल का भक्त होकर गया था, परन्तु उसके प्रति घृणा लेकर वापस लौटा हूँ।" उन्होंने अब वहाँ मज़दूरों में भारत के सच्चे रूप का प्रदर्शन करने का निश्चय किया है।

—'सण्डे एक्सप्रेस' लिखता है कि लिबरल लीडर लॉयड जार्ज और प्रधान मन्त्री मेकडानल्ड में तनातनी हो गई है। यदि बेकारी की कॉन्फ़्रेन्स असफल हुई, जिसकी पूरी-पूरी सम्भावना है, तो लिबरल-दल कन्सर्वेटिव-दल से मिल जायगा और दोनों मिल कर पार्लामेण्ट की बैठक होने पर गवर्नमेण्ट को परास्त करेंगे। नवम्बर में नया चुनाव होगा।

—रूस में ४८ व्यक्तियों को, जिन्होंने जाल रच कर जनता की भोजन-सामग्री को रोकने और अकाल की दशा उत्पन्न करने की चेष्टा की थी, प्राण-दण्ड दिया गया है।

—ट्रान्सवाल (दक्षिण अफ़रीका) के भारतवासियों ने श्री० सी० एफ़० एण्ड्रयूज़ को सहायतार्थ बुलाया है। वे ट्रान्सवाल 'एशियाटिक लैण्ड टेन्योर बिल' के आन्दो-लन में सहयोग देंगे।

—इटली के भाग्य-विधाता मुसोलिनी के प्रधान सहकारी सीन्योर टुरेती ने फ़ैसिस्ट दल के मन्त्री पद से इस्तीफ़ा दे दिया है।

—इङ्गलैण्ड, फ़्रान्स और जर्मनी की तीन सर्व-प्रधान बैङ्कों के अध्यक्ष शीघ्र ही एक स्थान पर एकत्र होकर सलाह करने वाले हैं कि संसारव्यापी व्यापार की शिथिलता को दूर करने के लिए क्या योजना की जाय।

—टर्की के मन्त्रिमण्डल ने, जिसके प्रधान इस्मत-पाशा हैं, इस्तीफ़ा दे दिया है। इसका कारण वहाँ की एसेम्बली में एक प्रस्ताव का, जिसके अनुसार गवर्नमेण्ट को नोटों का सुरक्षित धन ख़र्च करने का अधिकार दिया गया है, पास होना है। इस्मत पाशा ने नवीन मन्त्रि-मण्डल का सङ्गठन किया है।

* * *

'चाँद' पर गवर्नमेन्ट का नया प्रहार!

एक हज़ार की ज़मानत और माँगी गई !!

विगत १८ सितम्बर को 'चाँद' के प्रकाशक श्री० रामरखसिंह सहगल को यू० पी० गवर्नमेण्ट के चीफ़ सेक्रेटरी कुँवर जगदीशप्रसाद की तरफ़ से प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार ज़मानत देने के लिए फिर नीचे लिखा नोटिस मिला—

"चूँकि गवर्नर-इन कौन्सिल को यह मालूम हुआ है कि 'चाँद' (इलाहाबाद) में, जिसके आप प्रकाशक हैं, ऐसी बातें प्रकाशित हुई हैं, जो सन् १६३० के प्रेस-ऑर्डिनेन्स (धारा ४, उप-विभाग १) के अनुसार आपत्तिजनक हैं। इसलिए उसी ऑर्डिनेन्स के (धारा ८, उप-विभाग ३) द्वारा प्राप्त अधिकार का उपयोग करके गवर्नर-इन कौन्सिल आपको आज्ञा देते हैं कि आप इस नोटिस को पाने के दो दिन के भीतर इलाहाबाद के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के यहाँ एक हज़ार रुपए की नक़द या 'गवर्नमेण्ट सीक्योरिटीज़' में ज़मानत जमा कर दें।"

पाठकों को स्मरण होगा कि पिछले जुलाई मास में गवर्नमेण्ट ने सहगल जी से ४,००० रुपए की ज़मानत माँगी थी—दो हज़ार 'चाँद' से और दो हज़ार 'फ़ाइन आर्ट प्रिन्टिङ्ग कॉटेज, (चाँद-प्रेस) से। बाद में 'चाँद' की ज़मानत की आज्ञा रद्द कर दी गई और प्रेस की ज़मानत घटा कर १ हज़ार कर दी गई थी, जो जमा की जा चुकी है।

इस नोटिस को पाने के बाद ही सहगल जी ने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट को लिखा कि वे उन लेखों को बतलाने की कृपा करें, जिनके कारण ज़मानत माँगी गई है; क्योंकि वे 'चाँद' के उस अङ्क में किसी प्रकार की आपत्तिजनक सामग्री ढूँढ़ने पर भी नहीं पा सके हैं। इसके सिवाय जब से प्रेस-ऑर्डिनेन्स जारी हुआ है, तब से 'चाँद' में उसके विरोध में किसी प्रकार के सम्पादकीय लेख या टिप्पणी आदि भी प्रकाशित नहीं होती। इसके उत्तर में डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने सहगल जी को दूसरे दिन आने को लिखा। दूसरे दिन सहगल जी ने मि० क्रम्फ़र्ड से साक्षात किया। उनसे मालूम हुआ है कि गवर्नमेण्ट ने 'चाँद' के अगस्त-सितम्बर वाले संयुक्ताङ्क में प्रकाशित 'स्त्रियों के आदर्श' शीर्षक कविता (श्री० अनूप शर्मा, बी० ए०) और 'सत्याग्रह-संग्राम और स्त्रियाँ' शीर्षक समाचार को आपत्तिजनक क़रार देकर यह ज़मानत माँगी है!

एक सुप्रसिद्ध बैंक के अंगरेज़ मैनेजर की ग्रेट ब्रिटेन को चेतावनी!

भारत को स्वराज्य दिए बिना व्यापार नहीं चलाया जा सकता !!

इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध 'स्पेक्टेटर' पत्र में भारत-स्थित एक बैङ्क के प्रतिष्ठित मैनेजर का पत्र प्रकाशित हुआ है, जो उसने अपने एक मित्र के नाम भेजा था। उसका सार यह है :—

"इस देश में साइमन-कमीशन की रिपोर्ट की सभों ने ही धज्जियाँ उड़ाई हैं। मैं जितने लोगों से मिला हूँ, मैंने जिन-जिन का वक्तव्य पत्रों में पढ़ा है, किसी ने उसका आदर नहीं किया। यहाँ के "टाइम्स ऑफ़ इण्डिया" पत्र तक ने थोड़ी प्रशंसा के साथ, उसकी निन्दा की है; और यहाँ के प्रतिष्ठित अङ्गरेज़ तो बिलकुल ही चुप बैठे हैं !!

"कुछ लोग कलकत्ता में अवश्य ऐसे हैं, जो रिपोर्ट के पक्ष में हैं, परन्तु मालूम होता है कि वे गत शताब्दी के वायु-मण्डल में विचरण कर रहे हैं। नरम दल के हर एक नेता—जिन्ना, शास्त्री, ठाकुरदास, सप्रू आदि तक ने उसको कड़े से कड़े शब्दों से ठुकराया है; और मैं उनसे पूर्ण-रूप से सहमत हूँ। उसमें कुछ भी सार नहीं है—और यदि यह रिपोर्ट कुछ भी देती है तो यही, कि दिए हुए सामान्य हक़ों को भी छीनना चाहती है !! भारत को कुछ शर्तों के साथ पूर्ण-औपनिवेशिक स्वराज्य देना ही होगा; उससे कम में उसे सन्तोष न होगा; और यदि अङ्गरेज़ों के दिल में अब भी यह भ्रम घुसा हुआ है कि जनता आन्दोलन में भाग नहीं ले रही है, तो वे थोड़े दिनों के लिए गुजरात में रहें और अपनी आँखों से वहाँ की स्थिति सावधानी से देखें !!

"जब अपने सिद्धान्तों के लिए लोग प्रसन्नतापूर्वक जेल जाने लगे हैं, तब तो हमें अवश्य ही चेत जाना चाहिए। अब समय आ गया है कि हम शीघ्र ही इसका इलाज करें। यदि हम वास्तव में इङ्गलैण्ड की साख रखना चाहते हैं और भारत को साम्राज्य के अन्दर रखना चाहते हैं तो हमें शीघ्र ही इस बात की घोषणा कर देनी चाहिए कि 'गोल-मेज़ परिषद्' में औपनिवेशिक स्वराज्य पर ही बहस होगी !!

"यदि हम भारत को अपने घर की मालकिन बना देंगे तो वही हमारी पुत्री बनी रहेगी! भारत के नेता जिस लगन से अपने देश के उद्धार में रत हैं, इङ्गलैण्ड के लोगों को उसका बिलकुल पता नहीं है; परन्तु इस लगन के साथ ही उन्हें अङ्गरेज़ों से बिलकुल द्वेष नहीं है। मेरे साथ यहाँ के सभी विचारों के लोग सहृदयता का व्यवहार करते हैं; और गाँधी के आन्दोलन की इस उबलती हुई कड़ाही में भी मैं सुरक्षित हूँ! यदि वे किसी बात के लिए झगड़ते हैं, तो केवल अपने देश की बागडोर अपने हाथों में लेने के लिए! गाँधी से लेकर अछूत तक—हर एक अपने हक़ों की इज़्ज़त के लिए दृढ़ता-पूर्वक लड़ने को तैयार है और बीसवीं शताब्दी के इस उन्नति और विकास के युग में कोई भी ऐसा दिखाई नहीं पड़ता, जो ३० करोड़ भारत-वासियों को उनके जन्म-सिद्ध अधिकारों से वञ्चित रख सके !!!"

भारत का अहिंसात्मक संग्राम

एक अमेरिकन विद्वान मिशनरी की राय

(हमारे विशेष सम्वाददाता द्वारा)

भारत के एक प्रान्त में निवास करने वाले एक सुप्रसिद्ध अमेरिकन विद्वान मिशनरी ने अपने देश-भाइयों के नाम एक गश्ती पत्र लिखा है, जिसकी ३,००० कॉपियाँ लगभग सभी प्रसिद्ध अमेरिका-निवासी विद्वानों के नाम भेजी गई हैं! वे कहते हैं :—

"× × × भारत की परिस्थिति का सच्चा-सच्चा हाल देना इस समय बहुत कठिन कार्य है। परन्तु यहाँ समस्त देश में क्रान्ति हो गई है। इङ्गलैण्ड ने भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देने की जो प्रतिज्ञाएँ समय-समय पर की हैं, लॉर्ड इर्विन उन पर दृढ़ हैं। इङ्गलैण्ड में लोगों का एक दल ऐसा है, जिसे दस वर्ष पहिले या एक पीढ़ी पहिले के भारत का ज्ञान भले ही हो, परन्तु वह वर्तमान भारत से बिलकुल अनभिज्ञ है; और जो उसे अभी भी पराधीन, असमर्थ और इङ्गलैण्ड के माल का बड़ा भारी ग्राहक समझता है! भारत को पाशविक बल के ज़ोर से दबा कर रखना अब भूतकाल की बात हो गई है। भारत-वासियों के हृदय से दासत्व की भावना निकलती जाती है और उन्होंने स्वतन्त्र होने का पूर्ण रूप से निश्चय कर लिया है, चाहे उसका मूल्य उनको अपने प्राण देकर ही क्यों न चुकाना पड़े !!

"अपने इस संग्राम में भारत जिस शक्ति का प्रयोग कर रहा है, वह है अस्त्र-शस्त्र-रहित निहत्थे भारतीयों का आत्मबल! जब डाकगाड़ी के रवाना होने का समय हो, सम्भव है उसी समय दो-तीन सौ खद्दरधारी पुरुष उसके सामने आ जायँ और रेल की पटरी पर हाथ-पैर फैला कर लेट जायँ। यदि ऐसे समय ड्राइवर उन सबके ऊपर से कहीं गाड़ी चला दे, तो आन्दोलन की ज्वाला शान्त होने की अपेक्षा, द्विगुण वेग से प्रज्वलित हो उठे और दो-तीन सौ के स्थान में शायद उतने ही हज़ार आदमी आगे आ जावें! रुख़ से तो ऐसा प्रतीत होता है कि रेलों को रोकना कुछ दिनों में एक साधारण सी बात हो जावेगी !! ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो स्वतन्त्रता की वेदी पर बलिदान होने के लिए उत्सुक हो उठे हैं। गाँधी के अनुयायियों का उद्देश्य यह मालूम पड़ता है कि वे समस्त सार्वजनिक कामों और गवर्नमेण्ट का सञ्चालन तथा उन व्यक्तिगत कामों को भी, जिन्हें वे अच्छा नहीं समझते, असम्भव बना देना चाहते हैं! ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार धड़ाधड़ हो रहा है। भारत के बहुत से मिल-मालिकों और व्यापारियों के सामने कठिन आर्थिक समस्या उपस्थित हो गई है और हज़ारों की संख्या में श्रमजीवी बेकार हो गए हैं !! जो लोग पिकेटरों की आज्ञा उल्लङ्घन करते हैं, उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाता है—कोई भी मनुष्य—भङ्गी, नाई, धोबी आदि—उनका कार्य नहीं करता; और उनके पास भोजन सामग्री तक नहीं पहुँचने पाती। उनका विश्वास है कि यदि वे अपना यह कार्य-क्रम उचित समय तक जारी रख सकेंगे तो गवर्नमेण्ट की सञ्चालन-गति रुक जायगी और उसका भारत पर शासन करना असम्भव हो जायगा! यद्यपि वे स्वयं निहत्थे हैं, तो भी वे इस बात का दावा करते हैं कि वे गवर्नमेण्ट की फ़ौजी शक्ति पर विजय प्राप्त कर लेंगे। गवर्नमेण्ट बहुत कुछ उत्तेजित किए जाने पर भी कम से कम फ़ौज और पुलिस की शक्ति का उपयोग कर रही है !!

(शेष मैटर छठे पृष्ठ पर देखिए)

क्या भारत में हिंसात्मक क्रान्ति का सूत्रपात हो रहा है ?

—२५ अगस्त को कलकत्ते के डलहौज़ी स्कायर में पुलिस-कमिश्नर सर चार्ल्स टेगार्ट पर दो बम फेंके गए। टेगार्ट साहब की मोटर टूट गई और ड्राइवर को भी चोट आई, पर वह स्वयं बाल-बाल बच गए। दो और मोटर गाड़ियाँ भी, जो वहाँ मौजूद थीं, टूट गईं। पास ही पटरी पर एक आदमी ख़ून में लथपथ पड़ा मिला। उसके पास दो बम और एक भरा हुआ पिस्तौल था। पीछे मालूम हुआ कि उसका नाम अनुजसेन गुप्त है। वहीं पर एक दूसरा आदमी घायल दशा में गिरफ़्तार किया गया। इसका नाम दीनेशचन्द्र मज़ूमदार है और यह लॉ-कॉलेज का विद्यार्थी है। इसके पास से भी एक बम और एक पिस्तौल बरामद हुआ। इस पर ख़ास अदालत में मुक़दमा चलाया गया और १८ सितम्बर को उसे आजन्म कालेपानी की सज़ा दे दी गई।

—२६ अगस्त को कलकत्ते के जोड़ाबगान थाने पर रात के नौ बजे एक बम फेंका गया। इससे दो आदमी घायल हुए। फेंकने वाले का आज तक पता नहीं लग सका।

—२७ अगस्त को सुबह साढ़े नौ बजे कलकत्ते के ईडन गार्डन थाने पर किसी ने बम फेंका। इससे एक सिपाही और पी० डब्लू० डी० के तीन क़ुलियों को चोट लगी। एक क़ुली का दाहिना हाथ उड़ गया, बाएँ हाथ में गहरी चोट आई, और चेहरा जल गया।

—टेगार्ट साहब पर बम चलाने के सम्बन्ध में पुलिस ने कलकत्ते में बहुत सी तलाशियाँ लीं, जिनके फल-स्वरूप पाँच व्यक्ति पकड़े गए। कहा जाता है, ये पाँचों चटगाँव के शस्त्रागार पर हमला करने वालों में से हैं। कैनिङ्ग होस्टल की भी तलाशी ली गई और ५ विद्यार्थी और अन्य दो व्यक्ति पकड़े गए। कुल २० आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं। कहा जाता है कि इन तलाशियों में पुलिस को एक ऐसा रजिस्टर मिला है जिससे षड्यन्त्रकारियों के एक भयङ्कर दल का पता चलता है। यह दल कलकत्ता और बङ्गाल के अन्य स्थानों में राजनीतिक अपराध करने की कोशिश कर रहा था।

—कलकत्ते के पुलिस-कमिश्नर पर बम चलाने के सम्बन्ध में लाहौर में कई मकानों की तलाशी ली गई और राजेन्द्र तथा शिवलाल नाम के दो युवक गिरफ़्तार किए गए।

—२९ अगस्त को सुबह ९॥ बजे ढाका के मिटफ़ोर्ड अस्पताल में बङ्गाल के इन्स्पेक्टर जनरल ऑफ़ पुलिस मि० एफ़० जे० लोमैन और ढाका के पुलिस सुप० मि० हडसन पर गोली चलाई गई। मि० लोमैन ३१ अगस्त को मर गए और हडसन साहब अभी तक अस्पताल में पड़े हैं। २२ सितम्बर को वे ढाका से कलकत्ता लाए गए हैं। वहाँ उनकी एक्स-रे (× Roy) से परीक्षा होगी। इस सम्बन्ध में पुलिस विनयकृष्ण बोस नाम के मेडिकल स्कूल के एक विद्यार्थी को गिरफ़्तार करना चाहती थी, पर वह अपने स्थान पर न मिला। उसकी गिरफ़्तारी के लिए ५,००० रु० इनाम की घोषणा की गई है। जहाँ पर यह दुर्घटना हुई थी, वहाँ पर दो स्लीपर मिले थे। बोर्डिङ्ग हाउस के प्रबन्धकर्ता और एक विद्यार्थी ने उनको विनयकृष्ण का बतलाया है।

—३० अगस्त की शाम को मैमनसिंह के ख़ुफ़िया पुलिस के इन्सपेक्टर पवित्रकुमार बोस के घर पर बम फेंका गया। वह घर पर नहीं था, पर उसके दो भाई, जो वहाँ मौजूद थे, साधारण घायल हुए। उसी दिन दूसरा बम तेजेशचन्द्र गुहा के मकान पर फेंका गया, जो कि आबकारी का सब-इन्सपेक्टर है; पर इससे कोई नुक़सान नहीं पहुँचा।

—राजशाही के पुलिस सब-इन्सपेक्टर देवेन्द्रनाथ चौधरी के घर पर एक बम फेंका गया, जिससे बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ। उसी समय एक बङ्गाली युवक अभयपद मुकर्जी वहाँ से भागता हुआ मिला जो गिरफ़्तार कर लिया गया। उसके पिता के घर की तलाशी भी ली गई, पर कोई सन्देहजनक चीज़ न मिली। दो व्यक्ति और भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—३१ अगस्त को कलकत्ते में हाज़रा रोड पर श्रीमती शोभारानी दत्त नाम की १८ वर्ष की नवयुवती को पुलिस ने गिरफ़्तार किया। वे अपनी मोटर में कहीं जा रही थीं। यह गिरफ़्तारी हाल की बम-दुर्घटनाओं के सम्बन्ध में हुई है। शोभारानी मि० पी० एन० दत्त की भतीजी हैं, जो कलकत्ते के प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट थे।

—२ सितम्बर को रात के ३ बजे कलकत्ता की पुलिस ने चन्द्रनगर के एक मकान को घेर लिया। चन्द्रनगर कलकत्ते के पास ही फ़्रान्स वालों के अधिकार में है और इसलिए वहाँ की फ़्रान्सीसी पुलिस भी मौजूद थी। यह मकान बिल्कुल एकान्त में है और चारों तरफ़ जङ्गल से घिरा है। इसमें एक मीनार भी बनी है, जिस पर से चारों तरफ़ की निगरानी की जा सकती है। पुलिस कलकत्ते से आधी रात के पश्चात् टेगार्ट साहब की अधीनता में रवाना हुई। वे बहुत छिप कर मकान की तरफ़ गए, पर तो भी वहाँ के रहने वालों को उनका पता लग गया और वे गोली चलाने लगे। कुछ देर बाद पुलिस ने मकान पर क़ब्ज़ा कर लिया और लोकनाथ बल, आनन्द गुप्ता और गनेश घोष नाम के तीन व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया। इन सबके पास भरी हुई पिस्तौलें थीं। माखन घोषाल नाम का एक चौथा व्यक्ति घायल होकर तालाब में गिर गया और डूब कर मर गया। इनके सिवाय शशधर आचार्य नाम का एक व्यक्ति और दो स्त्रियाँ भी उस मकान में पाई गईं और गिरफ़्तार कर ली गईं। तलाशी लेने पर मकान में गोली-बारूद बनाने के कुछ औज़ार मिले। इस मकान को शशधर आचार्य ने, जो ईस्ट इण्डियन रेलवे में टिकट-चेकर का काम करता है, भाड़े पर लिया था। जो तीन व्यक्ति सशस्त्र पकड़े गए हैं वे चटगाँव शस्त्रागार वाले मामले के मुखिया बतलाए गए हैं और उन पर चटगाँव की ख़ास अदालत में अन्य अभियुक्तों के साथ मुक़दमा चलाया जा रहा है।

—१० सितम्बर को कलकत्ते के जोड़ाबगान में पुलिस ने एक बम-फ़ैक्टरी का पता लगाया, जहाँ पर उसे एक तैयार बम, नौ बमों के ख़ाली खोल और बहुत सा मसाला मिला। उस घर में पुलिस ने तीन पुरुषों और एक स्त्री को गिरफ़्तार किया। ये सब बङ्गाली हैं। एक पुरुष का नाम अतुलचन्द्र गाङ्गुली है और स्त्री का सत्यमणि दत्त। स्त्री के पति का नाम सुरेन्द्रनाथ दत्त बतलाया जाता है। जब तलाशी हो रही थी, एक पुरुष साग-भाजी की टोकरी लेकर मकान में आया। वह फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया गया और तलाशी लेने पर उसकी टोकरी में आठ बम छुपे मिले। सत्यमणि दत्त की गोद में एक बच्चा भी है। ये तमाम लोग पूर्वी बङ्गाल में बारीसाल ज़िले के निवासी बतलाए जाते हैं।

—जोड़ाबगान की बम-फ़ैक्टरी के सम्बन्ध में और कई मकानों की तलाशियाँ ली गईं और पाँच व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए। इनमें बम-फ़ैक्टरी वाले मकान का स्वामी सुरेन्द्रनाथ दत्त भी सम्मिलित है। १४ तारीख़ को उसके मकान की दुबारा तलाशी ली गई और सबसे नीचे के घर में चार तैयार बम एक पीपे में रक्खे पाए गए। सुरेन्द्रनाथ इत्र-तेल आदि का व्यापार करता है और उसका नीचे का घर बोतलों, पीपों और लकड़ी के बक्सों से भरा पड़ा है।

—कलकत्ते की पुलिस ने १६ सितम्बर को शहर के उत्तरीय विभाग में कितने ही मकानों की तलाशियाँ लीं और बहुत से लोगों को, जिनमें तीन स्त्रियाँ भी हैं, गिरफ़्तार किया। ये सब गिरफ़्तारियाँ हाल की बम-दुर्घटनाओं के सम्बन्ध में हुई हैं। १९ तारीख़ को भी कितने ही बोर्डिङ्ग हाउसों, विद्यार्थी-गृहों, खद्दर की दूकानों और निजी घरों की तलाशियाँ ली गईं और दो आदमी गिरफ़्तार भी कर लिए गए हैं।

—११ सितम्बर का कलकत्ते का समाचार है कि बहादुर बगान लेन में रहने वाले श्री० गणेशचन्द्र सेन की छै नली पिस्तौल किसी ने कैश बक्स में से चुरा ली। उसके साथ कुछ रुपया और ज़ेवर भी रक्खा था, पर उनको हाथ तक नहीं लगाया गया। उसी दिन उनके मित्र एस० सी० मुकर्जी की, जो ग्रैण्ड होटल में रहते हैं, पिस्तौल भी किसी ने ग़ायब कर दी।

—बाँकुड़ा (बङ्गाल) में नवनीधर घटक नाम का मेडिकल स्कूल का एक विद्यार्थी बम-काण्डों से सम्बन्ध रखने के अभियोग में गिरफ़्तार किया गया है। स्कूल के बोर्डिङ्ग हाउस की तलाशी भी ली गई।

—कलकत्ते में आजकल पिस्तौलों की चोरियाँ बहुत हो रही हैं। पुलिस को दस दिन के भीतर इस प्रकार की छै घटनाओं की रिपोर्ट मिली है। इससे पहले इस प्रकार की घटनाएँ महीने भर में दो-तीन से ज़्यादा नहीं होती थीं। पुलिस ने तमाम हथियार रखने वालों से ताकीद की है कि वे अपने हथियारों को होशियारी के साथ ऐसी जगह रक्खें जहाँ नौकर लोग सहज में न जा सकते हों। उनको खुली हुई जगह में रखना ख़तरे की बात है। क्योंकि आजकल बाज़ार में इनके लिए काफ़ी दाम मिलते हैं और इस लालच से नौकर अक्सर उनको उड़ा देते हैं।

—२० सितम्बर का समाचार है कि जैसोर (बङ्गाल) की मगुरा तहसील में पुलिस सुपरिन्टेन्डेण्ट और कितने ही कॉनिस्टेबिल कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस की तलाशी ले रहे थे। उसी समय एक भयङ्कर धड़ाका हुआ और तमाम मकान जलने लगा। पुलिस वाले किसी तरह जान बचा कर निकल आए। सन्देह किया जाता है कि वह धड़ाका तेज़ाब और अन्य विस्फोटक पदार्थों में आग लगने से हुआ था।

—१ सितम्बर का समाचार है कि लाहौर में पुलिस ने पाँच नवयुवक सिक्खों के मकानों की तलाशियाँ लेकर चार बम और बहुत से कारतूस बरामद किए। पाँचों व्यक्ति गिरफ़्तार कर लिए गए।

—५ सितम्बर का लाहौर का समाचार है कि सुबह के वक़्त पुलिस के कितने ही कर्मचारी रावी नदी के पुल के पास पहुँचे। उनके साथ १५ वर्ष का एक लड़का भी था। उसके बतलाने पर पुलिस ने पानी के भीतर से चौदह बम बरामद किए। फिर उसी लड़के के बतलाने से उन्होंने सुतारमण्डी बाज़ार में नन्दलाल नामक व्यक्ति

के घर की तलाशी ली और वहाँ से एक पीतल का बर्तन, एक गिलास, एक पीपा और कई दूसरी चीज़ें उठा ले गए। शीशमहल रोड पर भी एक घर की तलाशी ली गई और एक पिस्तौल तथा चार बम बरामद किए गए। कहा जाता है कि एक सिक्ख नवयुवक और एक स्कूल में पढ़ने वाला हिन्दू लड़का मुख़बिर बन गए हैं और उन्होंने पुलिस को इन बातों का पता दिया है। नन्दलाल को, जो एक उर्दू दैनिक पत्र में कॉपी लिखने का काम करता है, गिरफ़्तार कर लिया गया है।

—१० सितम्बर को रात के साढ़े तीन बजे पुलिस का एक बहुत बड़ा दल लायलपुर में पहुँचा और बहुत से हिस्सों में बँट कर शहर के विभिन्न भागों में मकानों की तलाशियाँ लेने लगा। दिन के आठ बजे तक पुलिस ने १६ मकानों की तलाशियाँ लीं और १३ व्यक्तियों को पकड़ा; ये सब व्यक्ति एक ड्रैमेटिक क्लब के मेम्बर हैं। गोपाल दास कपूर नामक एक व्यक्ति चिनोट से गिरफ़्तार करके लाया गया। उसके हाथों में हथकड़ियाँ पड़ी थीं। ये सब गिरफ़्तारियाँ हाल में होने वाले बम-काण्डों के सम्बन्ध में हुई हैं।

—मालूम हुआ है कि पञ्जाब की पुलिस को एक नए और भयङ्कर षड्यन्त्रकारी दल का पता लगा है। इसका अड्डा लायलपुर में बतलाया जाता है। इस दल का नेता एक हिन्दू नवयुवक है जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता है और बेतार से ख़बरें भेजने के यन्त्रों और उसके सिद्धान्तों के साधने में भी वह ख़ूब होशियार है। पञ्जाब-ख़ुफ़िया-पुलिस के तमाम अफ़सर कोशिश करने पर भी उसे नहीं पकड़ सके हैं। इस षड्यन्त्र में सभी श्रेणियों के व्यक्ति शामिल हैं। पुलिस का ख़्याल है कि लायलपुर के उसी नवयुवक ने वायसराय की गाड़ी को उड़ाने की कोशिश की थी। यह आदमी बड़ा भयङ्कर षड्यन्त्रकारी समझा जाता है और बम तथा डकैतियों की जो अनेकों दुर्घटनाएँ हाल में हुई हैं उनका प्रबन्ध करने वाला और ख़र्च देने वाला वही समझा जाता है। अब तक इस सम्बन्ध में बीस गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं, क़रीब बारह आदमी भागे हुए हैं, जिनमें कई औरतें भी हैं।

—'पायोनियर' के लाहौर स्थित सम्वाददाता ने १३ सितम्बर को समाचार भेजा है कि पुलिस ने जिस नवीन षड्यन्त्रकारी दल का पता लगाया है वह कुछ दिनों से लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों को छुड़ाने की तदबीर कर रहा था। पर जब उस दल के कुछ लोग बहावलपुर रोड के मकान में बम बना रहे थे तो एक बम फूट गया और उनकी स्कीम का भेद खुल गया। इस दल का दूसरा व्यक्ति, भगवतीचरण, जो भगतसिंह का सहकारी समझा जाता है, कुछ साथियों को लेकर रावी नदी के पास जङ्गल में गया। वहाँ पर वे बमों की परीक्षा करना चाहते थे। कहा जाता है कि बम भगवतीचरण के हाथ में ही फूट गया और वह उसी जङ्गल में रात के समय मर गया। इस घटना का हाल मालूम होने पर पुलिस ने उस स्थान की तलाशी ली और बहुत कुछ मेहनत करके ज़मीन के भीतर से एक लाश ढूँढ़ कर निकाली, यह लाश जल्दी में एक छोटा सा गड्ढा खोद कर दबा दी गई थी और बैठी हुई हालत में थी।

—अमृतसर में आर्यमुनि गुप्त, सुशील कुमार सेन, नगीनचन्द्र, राजसिंह और मूला नाम के पाँच व्यक्तियों पर षड्यन्त्र रचने और राजनैतिक डकैतियाँ डालने की चेष्टा करने का अभियोग चल रहा है। हीरेन्द्र कुमार नाम के मुख़बिर ने बतलाया है कि नगीनचन्द्र के पास तीन पिस्तौलें और एक तलवार थी। उन्होंने तरनतारन के बैङ्क में डाका डालने की तैयारी की थी।

—८ दिसम्बर को बनारस में दुर्गाबाड़ी के सामने एक बम का धड़ाका हुआ। कहा जाता है कि बम एक लकड़ी के बक्स में सड़क के किनारे रक्खा था। एक बुढ़िया मालिन ने, जो फूलों की टोकरी लिए हुए उस रास्ते से जा रही थी, उसको उत्सुकता वश उठा लिया। बम नीचे गिर कर फूट गया और बुढ़िया के दोनों हाथ उड़ गए। वह अस्पताल में भेजी गई और वहीं कुछ समय बाद मर गई। इस सम्बन्ध में पुलिस ने १६ सितम्बर को मन्नूलाल नामक व्यक्ति को, जो हरहा गाँव का निवासी है, गिरफ़्तार किया है। उसकी पेशी ४ अक्टूबर को होगी।

—फ़ीरोज़ाबाद (आगरा) से एक बम फटने का समाचार आया है। यह दुर्घटना मोटर लॉरियों के अड्डे के पास हुई और इसके फल से हरीशङ्कर नाम का एक कम्पाउण्डर तथा एक अन्य युवक घायल हुए हैं। दोनों अस्पताल पहुँचाए गए। हरीशङ्कर के प्राण रास्ते में ही निकल गए, दूसरा युवक हिरासत में रक्खा गया है। इस सम्बन्ध में कई जगह तलाशियाँ हुई हैं और एक विद्यार्थी पकड़ा गया है।

—१५ सितम्बर को रात के दस बजे कराची की कोतवाली में एक बम फेंका गया, जो गार्ड-रूम के पास फटा। किसी को चोट नहीं लगी।

भारत के हिंसात्मक क्रान्तिकारी आन्दोलन के सम्बन्ध में गवर्नमेण्ट की तरफ़ से ११ सितम्बर के कम्यूनिक में जो वक्तव्य प्रकाशित हुआ है उसका एक अंश नीचे दिया जाता है :—

"इस सप्ताह में क्रान्तिकारियों की तरफ़ से कोई उपद्रव नहीं हुआ और उनके विरुद्ध जिन उपायों से काम लिया गया है उनमें काफी सफलता मिली है......।

पञ्जाब में भी, जहाँ कि पिछले कुछ महीनों से क्रान्तिकारियों का ज़ोर बढ़ रहा था, पुलिस ने हाल में कितनी ही गिरफ़्तारियाँ की हैं और ऐसे प्रमाण प्राप्त किए हैं, जिनसे आशा है कि क्रान्तिकारी दल का सङ्गठन बहुत कुछ तोड़ा जा सकेगा और पिछले साल जो कितने हो ख़ास-ख़ास उपद्रव हुए थे उनका भेद खुल सकेगा। पर यह आशा करना कि इन सफलताओं से यह आन्दोलन अच्छी तरह क़ाबू में आ जायगा, ठीक नहीं। क्योंकि पिछले कुछ महीनों से युवकों के नाम जो असंयत अपीलें प्रकाशित हुई हैं और हत्याकारियों को राष्ट्रीय योद्धा बना कर जो सम्मान प्रदान किया गया है, इसके कारण क्रान्तिकारी दल को नए रँगरूट (सदस्य) बहुत बड़ी संख्या में मिल गए हैं और यह बात वास्तव में बड़े ख़तरे की है।"

—१६ सितम्बर को कलकत्ते की आगरपारा रोड की, हरटोकी बागान पट्टी में पुलिस ने लड़कियों के तीन मेसों (होटलों) पर धावा किया और गोआ बागान मेस की कुमारी रेणुका सेन और एक बी० ए० पास छात्रा को पुलिस-एक्ट की ५४ दफ़ा में गिरफ़्तार कर लिया। इनकी गिरफ़्तारी उत्तरीय कलकत्ते में बम पकड़े जाने के सम्बन्ध में हुई है। कुमारी रेणुका सेन की ज़मानत की दरख़्वास्त पर कोई ऑर्डर नहीं सुनाया गया।

—लाहौर में भारद्वाज सिनेमा के अहाते में जो बम पाया गया था उस सम्बन्ध में 'प्रताप' के एक कर्मचारी को गिरफ़्तार किया गया है। इसी सम्बन्ध में वहाँ की एक तस्वीरों की दूकान की भी तलाशी ली गई। पुलिस अपने साथ भगतसिंह और सतीन सेन की तस्वीरें लेती गई।

—मुन्शीगञ्ज (बङ्गाल) के औटशाही हाई स्कूल में एक बम फेंका गया। कहा जाता है कि वह स्कूल के शिक्षक और यूनियन बोर्ड के प्रेज़ीडेण्ड श्री० अविनाशचन्द्र बनर्जी पर फेंका गया था। बम के फटने से नवें दर्जे का आशुतोष गुह नाम का विद्यार्थी घायल हुआ। उसकी दो अँगुलियाँ काट देनी पड़ी हैं। वह सन्देह में गिरफ़्तार किया गया है और एक हज़ार की ज़मानत पर छोड़ा गया है।

—२१ सितम्बर को काण्डी ग्राम (मुर्शिदाबाद) में मन्नादासी नाम की स्त्री बम फटने से बुरी तरह घायल हुई है। समाचार है कि बम पहले भूपतिभूषण त्रिवेदी के मकान पर फेंका गया था, पर फटा नहीं। वहाँ से मन्नादासी उसे उठा कर अपने घर ले आई और खोलने लगी। एकाएक वह फट पड़ा। आवाज़ सुन कर गाँव वाले दौड़े आए और उन्होंने मन्नादासी को घायल पड़े देखा।

—अमृतसर में पूरनसिंह नाम का मोटर ड्राइवर क्रान्तिकारी पर्चे बाँटता पकड़ा गया। पर्चे टैक्सी की अगली बैठक के नीचे रक्खे हुए थे। पूरनसिंह का कहना है कि उनको कोई मुसाफ़िर छोड़ गया था।

—२३ सितम्बर को खुलना (बङ्गाल) के पुलिस के थाने में एक बम फेंका गया जिससे एक हेड कॉन्स्टेबिल भयङ्कर रूप से घायल हुआ। फेंकने वाला भाग गया।

—दासपुर (मिदनापुर) के सब इन्सपेक्टर की हत्या वाले मामले में ख़ास अदालत ने १२ लोगों को आजन्म काले पानी और ५ को २-२ वर्ष की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। आरम्भ में ३३ व्यक्तियों पर मुक़द्दमा चलाया गया था जिनमें ७ फ़ैसला होने से पूर्व और ६ फ़ैसला होने पर सबूत की कमी से छोड़ दिए गए।

* * *

(४ थे पृष्ठ का शेषांश)

"××× यहाँ के अधिकांश कॉलेजों और यूनीवर्सिटियों पर पिकेटिङ्ग हो रही है। पिकेटिङ्ग करने वाले स्वयंसेवक खद्दर पहिने राष्ट्रीय झण्डा फहराते रहते हैं। यदि कुछ विद्यार्थी और अध्यापक उनके जत्थे के बीच में से ज़बर्दस्ती निकल जाते हैं तो वे देशद्रोही कहलाते हैं! यदि अध्यापक और उनके साथ कुछ विद्यार्थी अन्दर पहुँच कर पढ़ाई प्रारम्भ करते हैं तो स्वयंसेवक अन्दर पहुँच कर शोर मचाते हैं (बिगुल बजाते हैं) और पढ़ाई असम्भव कर देते हैं! परन्तु यहाँ के अधिकांश विद्यार्थियों की इच्छा अपना अध्ययन स्थगित करने की नहीं है!! पुलिस की सहायता से शिक्षालयों की पिकेटिङ्ग नहीं रोकी जा सकती, क्योंकि जनता पुलिस को घृणा की दृष्टि से देखती है और जो पुलिस की सहायता ले, उसके सामाजिक वहिष्कार का डर है। यहाँ के एक स्थानीय स्कूल के मैनेजर अपने स्वतन्त्र अधिकारों का इस प्रकार घात न सह सके और उन्होंने पुलिस की सहायता ली! जिसका परिणाम यह हुआ कि स्कूल के रजिस्टर, काग़ज़-पत्र और लकड़ी का सामान (Furniture) जला दिया गया और सौभाग्य से ही वे अपने जीवन की रक्षा कर सके!!

"ग्रेट ब्रिटेन और भारत की कठिन परीक्षा का यह समय है। इस भूमि के कोने-कोने में ईसा मसीह की आवश्यकता है! हमें आशा है और हम ईश्वर से नतमस्तक होकर प्रार्थना करते हैं कि वह हमें अपने पवित्र सिद्धान्तों के प्रचार की शक्ति दे। आप सब लोग भी हमारी इस प्रार्थना में सहयोग दें और अपनी हार्दिक सहानुभूति दिखाएँ।"

* * *

शहर और ज़िला

—इलाहाबाद के क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज को मिलने वाली सरकारी ग्रान्ट (सहायता) बन्द कर दी गई है। कारण सिर्फ़ यह बतलाया जाता है कि संयुक्त प्रान्त की कॉङ्ग्रेस डिक्टेटर श्रीमती उमा नेहरू उसकी असिस्टेन्ट सेक्रेटरी हैं। और वे राजनैतिक आन्दोलन में भाग ले रही हैं। फ़ण्ड की कमी के कारण अध्यापिकाओं को जुलाई के बाद से तनख़्वाह नहीं मिली है।

—क्रॉस्थवेट कॉलेज की सरकारी सहायता बन्द होने से जनता में अनेकों अफ़वाहें उड़ रही हैं। इसलिए वहाँ के अधिकारियों ने प्रकाशित कराया है कि कॉलेज के काम में किसी प्रकार का परिवर्तन न होगा और न छात्राओं की या बोर्डिङ्ग-हाउस में रहने वाली लड़कियों की फ़ीस बढ़ाई जायगी।

—इलाहाबाद में २४ सितम्बर को सवेरे बिजलीघर के पास सूरजकुण्ड पर एक बुढ़िया पोस्ट ऑफ़िस की लॉरी के नीचे दब कर उसी वक्त मर गई। सब-डिविज़नल मैजिस्ट्रेट ख़ाँ साहब रहमानबख़्श क़ादरी और सिटी पुलिस डिपुटी सुपरिन्टेन्डेन्ट ने घटना-स्थल पर पहुँच कर सब प्रकार से सहायता की, पर बुढ़िया मर चुकी थी। मोटर ड्राइवर गिरफ़्तार कर लिया गया है।

—इलाहाबाद के युवक-सङ्घ ने दस दिन का एक कैम्प अपने मेम्बरों के लिए सिराथू में खोला है। यह कैम्प २६ सितम्बर से ६ अक्टूबर तक रहेगा। उसका उद्देश्य खद्दर, चर्खे और तकली का प्रचार, तथा अन्य कॉङ्ग्रेस-कार्य करना और वालण्टियर भरती करना है।

—गत छः वर्षों की भाँति इलाहाबाद की रामलीला इस साल भी बन्द रहेगी। कारण यह है कि सरकारी अधिकारी मसजिदों के सामने बाजा रोकने की आज्ञा देते हैं। इस वर्ष सदा की भाँति गवर्नमेण्ट के पास जुलूस निकालने की मञ्ज़ूरी के लिए किसी प्रकार की अर्ज़ी तक नहीं दी गई है, क्योंकि इस राष्ट्रीय आन्दोलन के समय रामलीला के प्रबन्धक कोई ऐसी बात करना अनुचित समझते हैं, जिससे हिन्दू-मुसलमानों में वैमनस्य उत्पन्न होने की ज़रा भी आशङ्का हो।

—सिटी मैजिस्ट्रेट की अदालत में मॉडर्न स्कूल के बलवे का जो मुक़द्दमा चल रहा है, उसमें गवाही देते हुए डॉ० घोष ने कहा है कि उन्होंने अपने स्कूल में कॉङ्ग्रेस आन्दोलन को कुचलने का निश्चय कर लिया है। वे स्कूल में राष्ट्रीय झण्डा फहराने और राष्ट्रीय गीत गाने के विरोधी हैं। असहयोग आन्दोलन के समय वे अमन सभा के मन्त्री भी थे।

—२५ सितम्बर को नरसिंह भट्टाचार्य और बालाप्रसाद उर्फ़ बेनीमाधो नाम के दो स्वयंसेवकों को मॉडर्न हाईस्कूल में पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ६-६ मास की सख़्त सज़ा दी गई।

मेजर बामनदास बसु का देहान्त

इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध नागरिक, इतिहासज्ञ और लेखक मेजर बामनदास बसु का बहादुरगञ्ज में २२ सितम्बर को देहान्त हो गया। 'राइज़ ऑफ़ क्रिश्चियन पावर इन इण्डिया' और पाणिनी ऑफ़िस से प्रकाशित अपनी अन्य पुस्तकों के द्वारा उन्होंने भारत की अविशेष सेवा की है। उनकी मृत्यु से वास्तव में एक अमूल्य रत्न खो गया। हम उनके दुःखी परिवार के साथ अपनी समवेदना प्रकट करते हैं।

—गनेशप्रसाद महेन्द्र नामक व्यक्ति ने इलाहाबाद सेवा-समिति के श्री० श्रीराम भारतीय और पं० हृदयनाथ कुँज़रू से ३० रुपए ठग कर ले लिए थे। स्थानीय रेलवे मैजिस्ट्रेट ने उसको छः महीने की सख़्त क़ैद की सज़ा दी।

—२५ सितम्बर को इलाहाबाद म्युनिसिपल चुङ्गीघर के पास विलायती कपड़े और सिगरेट के बण्डलों पर जिन २५ आदमियों की गिरफ़्तारी हुई थी, उनके मुक़द्दमे का फ़ैसला सब-डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट श्री० मुअज़्ज़मअली ने सुना दिया। उनमें से हर एक को छः-छः महीने की सख़्त सज़ा दी गई है। पुलिस की ओर से कोतवाली-ऑफ़िसर श्री० लालबहादुर की एक गवाही हुई, जिसमें उन्होंने कहा कि माल के मालिकों को माल उठाते समय ज़बर्दस्ती रोका गया और उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया, परन्तु जिनके साथ दुर्व्यवहार किया गया उनमें से पुलिस के गवाहों में एक न था।

तार-समाचार

हमने 'भविष्य' के लिए फ़्री प्रेस से विशेष तार मँगाने का प्रबन्ध किया है। पर पहले अङ्क की व्यवस्था और उसे तैयार करने का काम इतना अधिक है कि हम इस अङ्क में उन समाचारों को दे सकने में असमर्थ हैं। दूसरा कारण यह है कि 'विजय दशमी' की छुट्टी के उपलक्ष में प्रेस बन्द रहेगा और उस दिन काम नहीं हो सकेगा। दूसरे अङ्क से पाठकों को बराबर ताज़े तार-समाचार मिलते रहेंगे।

फ़ैसले से पता चलता है कि २५ अभियुक्तों में से १८ ने पिकेटिङ्ग करना स्वीकार कर लिया। श्री० माताप्रसाद चुप रहे। श्री० रामप्रसाद, बी० एन० गुप्त, गयाप्रसाद और मूलचन्द ने अपना अपराध अस्वीकृत किया। श्री० ओङ्कारनाथ और शम्भूनाथ ने अपना वक्तव्य देने से इन्कार कर दिया। एफ़० जे० गाँधी ने कुछ उत्तर ही नहीं दिया। जिन लोगों ने अपराध स्वीकार किया उनके नाम निम्न प्रकार हैं:—श्री० प्रभूदास पटेल, महादेवसिंह, शिवनाथ, भोलानाथ, रघुवीर, रामभरोसे, श्रीनाथ, महादेवप्रसाद, कामता, ब्रजभूषण लाल, सत्यदेव मिश्रा, लल्लू जी साहिब, गौरीशङ्कर, मुक्तनाथ, रामप्रसाद सिंह, उदितनारायण सिंह और बच्चूलाल।

जिस आदमी के माल बेचने पर गिरफ़्तारियाँ हुई थीं, उसने उसकी क़ीमत १००० रुपया वापिस देकर माल लौटा लिया और उसने पुलिस से उन गिरफ़्तार वालण्टियरों को छोड़ देने की प्रार्थना की।

—इलाहाबाद में ता० २१ को दोपहर में मौलाना शाहिद गिरफ़्तार कर लिए गए। जिस समय वे अपनी मोटर पर कोतवाली के सामने से निकल रहे थे, उसी समय सिटी डिपुटी सुपरिन्टेन्डेन्ट ने उन्हें वारण्ट दिखा कर अपनी मोटर पर बिठा लिया और शान्तिपूर्वक जेल पहुँचा आए। उन पर २४ अगस्त के भाषण के कारण दफ़ा १२४-ए का अभियोग लगाया गया। २६ तारीख़ को मुक़दमा चलने पर उन्हें एक साल की सख़्त क़ैद की सज़ा और २५०) जुर्माने की सज़ा दी गई। जुर्माना न देने पर ३ महीने की सज़ा और भोगनी होगी।

आहुतियाँ

(२४ वें पृष्ठ का शेषांश)

—२० सितम्बर को कलकत्ता के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने श्रीमती कमला विश्वास और अन्य दो महिलाओं को बड़े बाज़ार में विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ४-४ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी।

—नोआखाली (बङ्गाल) में सोनापुर कॉङ्ग्रेस कमिटी और राय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी और वालण्टियरों के कप्तान गिरफ़्तार किए गए। उन पर 'कॉङ्ग्रेस सङ्कल्प' शीर्षक बङ्गाली पर्चा बाँटने का अभियोग लगाया गया है।

—ट्रिप्लिकेन (मद्रास) में गाँधी-टोपी दिवस मनाने के लिए हिन्दू हाईस्कूल पर पिकेटिङ्ग करने के कारण वहाँ के ३१ विद्यार्थी १६ सितम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—मदुरा में छः वालण्टियरों को पुलिस-चौकी के सामने राष्ट्रीय झण्डा फहराने और गीत गाने के अपराध में आठ-आठ दिन की सख़्त सज़ा दी गई।

—कटनी में पाँच सत्याग्रही बालक बेत खाकर छूटे हैं। इनमें से दो को, जो कम उम्र हैं और बीमार भी थे, छः-छः बेत लगाए गए, और बाक़ी तीन को आठ-आठ। कहा जाता है कि इस काम से कई लोगों ने इन्कार कर दिया तब एक मुसलमान पुलिस कॉन्स्टेबिल ने बेत लगाए।

—नागपुर 'वार कौन्सिल' के सदस्य श्री० माणिकराव देशमुख को छः मास की क़ैद और तीन सौ रुपया जुर्माने की सज़ा हो गई। जुर्माना न देने पर दो माह की क़ैद और भोगनी पड़ेगी। एक दूसरे सदस्य श्री० बालीराम विनायक नीमगाँवकर को भी डेढ़ साल की कड़ी क़ैद और दो सौ रुपए जुर्माने का दण्ड मिला है।

—२१ सितम्बर की ख़बर है कि बैतूल (सी० पी०) के बोरदेही नामक गाँव में पुलिस कुछ व्यक्तियों को गिरफ़्तार करना चाहती थी। कई सौ गोंडों ने इकट्ठा होकर उनको छुड़ाना चाहा। पुलिस ने गोली चलाई, जिससे ४ गोंड मारे गए और पचास घायल हुए।

—बम्बई कॉङ्ग्रेस कमेटी की आठवीं डिक्टेटर श्रीमती रमाबाई कामदार को तीन माह की सादी सज़ा और सेक्रेटरी मि० पानिकर और वालण्टियरों के कप्तान श्री० जमैयतसिंह को ४-४ मास की सख़्त सज़ा दी गई।

—इलाहाबाद ज़िले का कौन्सिल-चुनाव २७ तारीख़ को हो गया। बारा के राजा और श्री० आनन्दीप्रसाद दुबे इसके लिए उम्मेदवार थे। बहुत ही कम वोटर वोट देने को पहुँचे। सब जगह कॉङ्ग्रेस के स्वयंसेवक पिकेटिङ्ग कर रहे थे। सराय इनायत में छः वालण्टियर गिरफ़्तार किए गए। जिन सात पोलिङ्ग-स्टेशनों के समाचार प्राप्त हुए हैं वहाँ ६५०० वोटों में से सिर्फ़ ११० वोट पड़े।

—इलाहाबाद यूनीवर्सिटी की तरफ़ से प्रान्तीय कौन्सिल में जाने वाले मेम्बर का चुनाव हो गया। श्री० गजाधरप्रसाद को २७४ और श्री० बद्रीनारायण को १६ वोट मिले।

—'अभ्युदय' ने १०००) रु० की ज़मानत दे दी है और वह २७ तारीख़ से फिर निकलने लगा है। मालूम हुआ है कि यह रक़म चन्दे से इकट्ठी की गई थी। पण्डित कृष्णकान्त जी को जेल हो जाने पर श्री० रामकिशोर मालवीय पत्र के प्रकाशक और सम्पादक हुए हैं।

—२७ तारीख़ को अल्लाह बख़्श, ठाकुर और विन्ध्येश्वरी प्रसाद नामक तीन वालण्टियर पत्थर गली की देशी शराब की दूकान पर गिरफ़्तार किए गए।

—इलाहाबाद के विद्यार्थी-सङ्घ ने हाल ही में जो 'स्वदेशी सप्ताह' मनाया था, उसमें दो हज़ार लोगों से स्वदेशी वस्तु व्यवहार की प्रतिज्ञा कराई गई।

* * *

भविष्य की नियमावली

१. 'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२. किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३. लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४. हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५. कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६. लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७. समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८. परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९. सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०. किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

२ अक्तूबर, सन् १९३०

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

[पं० कृष्णप्रसाद जी कौल, सर्वेण्ट ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी]

"कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई"

जब मैंने इस भव-बन्धन से विमुक्त होकर आत्मिक-जगत में प्रवेश किया तो देखता क्या हूँ कि स्वर्ग और नरक के दूत प्रयाग और काशी के पण्डों की तरह परस्पर उलझ रहे हैं। एक कहता है, इसने धर्म के लिए प्राण-विसर्जन किया है, जाति और देश के लिए अपने को निछावर किया है। यह ईश्वर के भक्तों का सेवक है, इसलिए इसे स्वर्ग में स्थान दिया जायेगा और हम इसे वहीं ले जायँगे। दूसरे का हठ है कि नहीं, इसने भूखों मर-मर कर जान दी है, जो आत्म-हत्या के तुल्य है। जीवन परमात्मा का दान है। इसने उसका सदुपयोग न कर, उसके लिए परमात्मा के प्रति कृतज्ञता न प्रकाशित कर, उस दान को ठुकरा दिया है। यह घोर नास्तिकता है। इसने ईश्वर का अपमान किया है, इसलिए यह नरक की सज़ा पाने के योग्य है, और इसे हम वहाँ ले जाए बिना कदापि न छोड़ेंगे। तिरसठ दिनों तक बिना अन्न-जल के बिता कर, मैं एक सीमा तक नरक से निर्भय और स्वर्ग से निस्पृह हो चुका था। मुझे उनके झगड़ने पर हँसी आई। मैंने कहा—मुझे 'एराफ़' (स्वर्ग और नरक के मध्य का स्थान) में ही छोड़ दो और तुम दोनों जाकर अपने महाप्रभु से इस विवाद की मीमांसा करा लाओ।

यह बात उनकी समझ में आ गई। मुझे 'एराफ़' में छोड़ कर वे दोनों चले गए। मैं बेकारी और प्रतीक्षा से ऊब रहा था, इतने में उन्होंने आकर कहा कि जगत्पति इस समय काम में व्यस्त हैं, तुम्हारा मामला पीछे पेश होगा।

मैंने कहा—न मुझे फ़ैसले की जल्दी है और न उसकी कोई चिन्ता, परन्तु मैं बेकारी से ऊब रहा हूँ। यहाँ कुछ पढ़ने को मिल सकता है?

उन्होंने ईश्वर के सरकारी दफ़्तर की कई बड़ी-बड़ी जिल्दें मेरे सामने लाकर डाल दीं और कहा—विश्व-विधान और ईश्वरीय नियम सम्बन्धी तमाम समस्याओं और व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में परमात्मा की आज्ञाएँ इसमें लिखी हैं। इन्हें पढ़ो, इससे तुम्हारा समय बीत जायगा।

मैंने इसी पर सन्तोष किया और तुरन्त उनके पढ़ने में लग गया। पढ़ता जाता था और बड़ी सावधानी से यह ढूँढ़ता जाता था कि कहीं मेरे अभियोग का भी कोई दूसरा उदाहरण (नज़ीर) मिल जाता तो मैं देखता कि उसका निर्णय क्या हुआ है। परन्तु तमाम दफ़्तर उलट डालने पर भी जो ढूँढ़ता था, वह न मिला। ज्ञात हुआ कि ईश्वरी आज्ञा में भी भारतीय दण्ड-विधान की तरह, सर जेम्स फ़ेरार के कथनानुसार 'लकूना' अर्थात कमी पड़ गई है, जिसकी पूर्त्ति करने की आवश्यकता है। मैं इस परिणाम पर पहुँचा ही था, कि एकाएक ख़याल आया कि वर्तमान समय में मेरे अग्रगामी एक मियाँ मेकस्विनी भी तो हो चुके हैं। आख़िर उनका क्या परिणाम हुआ। मैं इसी विचार में था कि एक दिन वही दोनों दूत मेरा कुशल-सम्वाद जानने के लिए आए। मैंने तुरन्त ही पूछा—मित्रो, मेरे पहले मेकस्विनी नाम के एक व्यक्ति के सम्बन्ध में भी तो ठीक ऐसी ही घटना घटित हो चुकी है; उसके सम्बन्ध में क्या आज्ञा हुई थी?

उन्होंने कहा—उनका अभियोग भी आपकी तरह ही विचाराधीन है।

मैं आश्चर्य में पड़ कर उनकी ओर देखने लगा तो वे मुस्कुराए और कहने लगे—वाह, आप भी विचित्र हैं, आपको आश्चर्य किस बात का हो गया। आपके यहाँ कई ज़िले हैं, प्रत्येक ज़िले में दर्जनों ऑफ़िस हैं, तथापि कभी-कभी छोटे-छोटे मामलों के फ़ैसले में भी महीनों नहीं, बल्कि बरसों लग जाते हैं। और यहाँ सारे विश्व की व्यवस्था करनी पड़ती है। एक अल्लाह मियाँ, तनतनहा आज्ञा देने वाले ठहरे, ऐसी दशा में तो देर का न लगना ही आश्चर्य की बात थी। फिर यहाँ समय का अन्दाज़ा महीनों या बरसों के हिसाब से नहीं, बल्कि युगों के हिसाब से होता है। आपको आए मुश्किल से एक युग हुआ है। मियाँ मेकस्विनी को आए हुए दो-तीन युग हुए होंगे। आख़िर हथेली पर सरसों कैसे जमाई जा सकती है?

यह उत्तर सुन कर मैं तो हक्का-बक्का रह गया। इतने में वे दोनों ग़ायब हो गए।

निदान जब मैं यहाँ की उमस और बेकारी से घबरा उठा तो एक दिन यह आज्ञा सुनाई गई कि इसके पाप और पुण्य के दोनों पल्ले बराबर हैं। यह न स्वर्ग के योग्य है न नरक के, इसलिए इसे मर्त्यलोक को वापस कर दो। अवश्य ही इसे यह सुविधा दी जायगी कि पुनर्जन्म नहीं ग्रहण करना पड़ेगा। इसके नवजीवन का आरम्भ वहीं से होगा, जहाँ से उसे छोड़ा है। इसके अतिरिक्त इसे आत्मिक जगत का जो अनुभव और ज्ञान प्राप्त हो गया है वह सांसारिक जीवन में भी बाक़ी रहेगा, जिसमें यह फिर ऐसी भद्दी भूल न कर सके। यों तो, कौन नहीं जानता कि संसार दुःख और कष्ट का आगार है और मुझ पर भी कुछ कम कड़ी मुसीबतें नहीं पड़ी थीं, तथापि संसार मुझे बड़ी ही दिलचस्प जगह मालूम होती थी और मैं इसे ख़ुशी से छोड़ना नहीं चाहता था। वह तो पञ्जाब-सरकार के साथ कुछ ऐसी ज़िद ही पड़ गई थी कि मैंने भी उसकी हठधर्मी तोड़ने का बीड़ा उठा लिया, नहीं तो पहले भी एक ऐसी ही घटना हो चुकी थी और बङ्गाल की सरकार की शिष्टतापूर्ण बातचीत से सारा झगड़ा बड़ी सहूलियत से निपट चुका था। फलतः यह आज्ञा सुन कर मेरी बाछें खिल गईं और झट भारतभूमि पर वापस पहुँचा दिया गया। जब मैंने इस मृत्युलोक को छोड़ा था, तब सन् १६२६ के सितम्बर महीने का आरम्भ था और वापस आकर लोगों से पूछता हूँ तो सभी सन् १६५६ का नवम्बर बता रहे हैं। मैं विस्मित हूँ कि पलक मारते एक पुश्त का समय कैसे बीत गया? यही नहीं; वरन् इस आश्रयहीनता की दशा में मैंने जो देश की ख़ाक छानना आरम्भ किया तो देखा कि यहाँ की तो काया-पलट हो गई है। अब तो हिन्दोस्तान का बाबा आदम ही निराला हो गया है। हमारे समय में तो लड़कों की शिक्षा भी अनिवार्य न थी और अब लड़कियों में भी पढ़ने-लिखने की यथेष्ट चर्चा हो गई है। इसका परिणाम यह हुआ है कि युनिवर्सिटियों में लड़कों की तरह लड़कियाँ भी बाल कतरवा कर तथा ख़ाकी घुटन्ने पहन कर मैदान में क़वायद और निशानेबाज़ी सीख रही हैं। ऐसी हालत में पर्दे का तो ज़िक्र ही क्या, वह तो हिन्दोस्तान के मर्दों की आँखों से उठ कर वृटिश गवर्नमेण्ट की अक़्ल पर पड़ गया है। जिस समय मैं लाहौर की जेल में अनशन का अभ्यास कर रहा था, उस समय एसेम्बली में 'शारदा-बिल' के नाम से एक क़ानून का मसौदा पेश था, जिसका मतलब यह था कि चौदह वर्ष से कम उमर की लड़कियों की शादी क़ानून द्वारा निषिद्ध कर दी जानी चाहिए। इसके विरुद्ध पुराने विचार के लोगों ने भारी हो-हल्ला मचा रक्खा था। इन विरोधियों में बड़े-बड़े नामी लीडर भी थे। परन्तु चौदह तो दरकिनार, अब अगर अट्ठारह वर्ष की लड़की से भी पूछता हूँ कि तुम्हारा विवाह हो गया है तो वह इसे अपना अपमान समझती है। हमारे सामने मसजिदों के सामने बाजा बजाने और गो-हत्या के लिए आए-दिन हिन्दू-मुसलमानों में झगड़े और बलवे हुआ करते थे। मगर अब इनकी चर्चा कहीं सुनने में भी नहीं आती। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि सन् १६३७ की विश्व-व्यापी बाढ़ ने काशी के भारतधर्म-महामण्डल और लखनऊ के फिरङ्गी महल को जब से ढा दिया और दूध चार आने सेर की जगह आठ आने सेर बिकने लगा, तो गो-हत्या बन्द हो गई। तथा मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने जब से मसजिदों में बाजा बजाने का रिवाज जारी कर दिया तब से हिन्दोस्तान के मुसलमानों ने भी बाजा बजाने पर एतराज़ करना छोड़ दिया। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि देश से तमाम लड़ाई-झगड़े दूर हो गए हैं। पहले हिन्दू-मुसलमानों में बलवे होते थे, अब पुलिस और फ़ौज के साथ देश के नवयुवकों की लड़ाइयाँ हुआ करती हैं।

जब से इण्डिपेन्डेन्स अर्थात् पूर्णस्वाधीनता का बखेड़ा कॉङ्ग्रेस ने खड़ा किया, तब से सरकार ने सार्वजनिक शान्ति की रक्षा के लिए कॉङ्ग्रेस का वार्षिक अधिवेशन बन्द कर दिया। अब सार्वजनिक सभाओं और प्रदर्शनों का होना बिलकुल बन्द हो गया है। प्रेस-एक्ट के पुनः प्रहार तथा उसकी सख़्तियों से तङ्ग आकर अख़बार वालों ने अपना असन्तोष इस तरह दिखाया कि एकदम अख़बार निकालना ही बन्द कर दिया है। जिनको अख़बार पढ़ने की बीमारी है, वे एङ्ग्लो इण्डियन अख़बारों से अपना मनोरञ्जन कर लिया करते हैं। तात्पर्य यह कि देश में राजनीतिक हड़ताल है। पुराने नेताओं में से न अब किसी का नाम सुनाई देता है और न कोई देखने में ही आता है। कतिपय नेताओं से 'एराफ़' में भेंट हुई थी तो आश्चर्य हुआ कि ये बेचारे यहाँ कहाँ से आ फँसे हैं। फिर मालूम हुआ कि धर्महीनता और नास्तिकता के पाप ने इनकी स्वदेश-भक्ति और परोपकार के पुण्य को धोकर बहा दिया है, इसलिए इनके लिए स्वर्ग का द्वार बन्द है। वहाँ केवल हिन्दू-सभा और ख़िलाफ़त कमेटी के लीडर ही जाने पाते हैं। क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धिमानी से अपना इहलोक और परलोक, दोनों सँभालने की फ़िक्र कर ली है। कुछ तो अभी जीवित हैं। उनमें कोई घर बैठे-बैठे मृत-कॉङ्ग्रेस के लिए मर्सिया (शोक-गायन) लिखने में लगे हैं, कोई भारत के क़ानूनी शासन का विधान तैयार करने में लगे हैं। एक सज्जन ने महात्मा गाँधी की असहयोग-नीति पर कई बड़ी-बड़ी पुस्तकें तैयार कर डाली हैं। नए लीडरों का कोई नाम नहीं जानता। विश्वविद्यालय के छात्र और देश के नवयुवकों में जब इनका ज़िक्र होता है तो साङ्केतिक कथोपकथन होने लगते हैं। जिनके समझने से मैं एकदम वञ्चित रहता हूँ। कौन्सिलों

का यह हाल है कि वहाँ या तो नीच जातियों के प्रतिनिधि दिखाई देते हैं या बड़े-बड़े जागीरदार या ताल्लुक़ेदार ! कभी कदाच स्वराजी पलटन के भूले-भटके और बिछुड़े हुए ख़ुदाई फ़ौजदार दिखाई पड़ जाते हैं। यह 'सिविल दस उवेदस, नो टक्स कम्पनी, आवेस टरकश' और इसी तरह की भाँति-भाँति की बोलियाँ बोलते हैं, जो न किसी की समझ में आती हैं और न जिन पर कोई ध्यान देता है। अन्त में बेचारे अपनी बेकसी पर चुप हो जाते हैं। सरकार सूखी सहानुभूति दिखा कर इनके आँसू पोंछ देती है। डोमिनियन स्टेटस और नेहरू-रिपोर्ट की माँग भी पेश की जाती है। जब कौन्सिलों से डोमिनियन स्टेटस का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो जाता है तो सरकार कह देती है कि विषय विचाराधीन है, परन्तु अभी अन्तिम निर्णय में कुछ देर लगेगी। यह कैफ़ियत देख कर मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि देशी राजनीति के सम्बन्ध में चारों तरफ़ अकर्मण्यता फैल गई है। परन्तु जब मैंने अख़बार पढ़ना आरम्भ किया तो मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना ही न रहा। किसी न किसी स्थान से रोज़ ही यह ख़बर आने लगी कि आज अमुक जगह बम फटा तो अमुक सरकारी अफ़सर की हत्या हुई! पुलिस ने कुछ नवयुवकों को पकड़ने की चेष्टा की तो दोनों ओर से राइफ़ल और पिस्तौल से गोलियाँ चलीं। पहले सुना करते थे कि जाट, अहीर और पासी चोरी के लालच से डाका डाला करते हैं और अब पढ़ने में आया कि शरीफ़ ख़ान्दान के पढ़े-लिखे नवयुवक डाका डाल कर उस कमी को पूरा करते हैं जो पहले जातीय चन्दों से पूरी होती थी। तात्पर्य यह कि नवयुवकों ने देश में ख़ासी चहल-पहल मचा रक्खी है। इन लोगों में नाइट क्लब की चर्चा हमेशा हुआ करती है—यद्यपि दबी ज़बान से, और सब बातों में कुछ गुप्त परामर्श का अंश अवश्य होता है। यह सब अच्छी तरह मेरी समझ में नहीं आता था। सोचने लगा कि नवयुवकों से मिल कर इस रहस्य को जान लेना चाहिए। मैं ख़ुद इस हङ्गामे में पड़ूँ या न पड़ूँ, कम से कम जो कुछ हो रहा है, उससे जानकारी तो प्राप्त करनी चाहिए। जब मैंने 'एराफ़' से इस भूलोक की ओर प्रस्थान किया था तो देव-दूतों से कह दिया था कि मैं विशेष कारणों से बङ्गाल से अलग ही रहा चाहता हूँ और चूँकि पञ्जाब में भी मुझे लोग जानते हैं, इसलिए मुझे संयुक्त प्रान्त में पहुँचा दिया जाए तो अच्छा है। फलतः वे लोग मुझे मगरवारे के पास गङ्गा किनारे छोड़ कर चले गए थे। मैं वहाँ से भटकता हुआ लखनऊ पहुँच गया। यहाँ मुझे तीन मास से अधिक हो गए थे और कई आदमियों से घनिष्ठता भी हो गई थी। मैं जिस धुन में था, उसका ज़िक्र अपने एक मित्र से किया तो उन्होंने मुस्कुरा कर उत्तर दिया कि क्या हर्ज है।

मेरे यही मित्र शङ्करनाथ जी एक दिन तीसरे पहर को मुझसे मिले और बोले कि चलो तुम्हें मुकुटबिहारी से मिला दें। उनसे मिलने पर तुम्हें बहुत सी बातें मालूम हो जाएँगी। मुकुटबिहारी राजा यशवन्तसिंह के छोटे लड़के थे। राजा यशवन्तसिंह ज़िला सीतापुर के बड़े तालुक़ेदारों में थे। आदमी पढ़े-लिखे, उज्ज्वल मस्तिष्क वाले और स्वतन्त्र विचार के थे। कौन्सिल के सदस्यों में अग्रगण्य समझे जाते थे। सरकारी अधिकारियों में भी आपकी पैठ थी। आपकी सन्तान में दो लड़के और एक लड़की थी। बच्चों की शिक्षा की ओर आपका यथेष्ट ध्यान था। बड़े लड़के ब्रजराजबिहारी इलाहाबाद के कृषि-कॉलेज की अन्तिम परीक्षा में उत्तीर्ण होकर आजकल रियासत का काम देखते थे, मुकुटबिहारी तीन वर्ष से लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे और उनकी बहिन मनोरमा लखनऊ युनिवर्सिटी में एम० एस-सी० पास करने की तैयारी में थी। मुकुटबिहारी की अवस्था प्रायः चौबीस वर्ष और मनोरमा की बाईस वर्ष की थी। दोनों भाई-बहिन अपनी माता के साथ बी रोड पर अपनी कोठी में रहते थे। कोठी निहायत आलीशान और सुसज्जित थी। तीसरे पहर का समय था, जब मैं और शङ्करनाथ उनकी कोठी पर पहुँचे। सम्वाद भेजा गया, हम लोग ड्रॉइङ्ग रूम में बुलाए गए। वहाँ उस समय मुकुटबिहारी और मनोरमा के सिवा एक और सज्जन उपस्थित थे, जिनका नाम पीछे मालूम हुआ कि काशीनाथ था और युनिवर्सिटी लाइब्रेरी में असिस्टेण्ट का काम करते थे। शङ्करनाथ ने मुकुटबिहारी और मनोरमा से मेरा परिचय कराया। दोनों बड़े प्रेम और आग्रह से मिले। चाय मँगवाई गई। शङ्करनाथ तो चाय पीकर किसी ज़रूरत से चले गए। पर मैं तथा काशीनाथ बैठे बातें करने लगे। पहले तो कुछ इधर-उधर की बातें होती रहीं, फिर राजनीति की चर्चा छिड़ी। मैंने कहा—पिछले पन्द्रह साल से तो यहाँ की राजनीति का बिलकुल रङ्ग ही बदल गया है। मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आता।

मुकुट०—तो क्या आप देश से कहीं बाहर थे?

मैं—हाँ, मैं जब सत्रह साल का था और कॉलेज में पढ़ता था, तभी आवश्यकतावश मुझे फ़िजी चला जाना पड़ा। वहाँ से पन्द्रह वर्ष बाद आया हूँ और देखता हूँ कि इस बीच में देश की कायापलट हो गई है।

मुकुट०—मुझे इसका ज्ञान नहीं, क्योंकि मैंने तो जब से होश सँभाला है, तब से यही रङ्ग देखा और इसी में शिक्षा-दीक्षा पाई है। हाँ, इतना अन्तर अवश्य हो गया है कि गत पाँच-सात वर्षों से देश का बल-बूता बहुत कुछ बढ़ गया है, और प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। परन्तु यह कोई दुख और चिन्ता की बात नहीं, जैसा कि आपके स्वर से मालूम होता है।

मैं—अजी महाशय, एक समय था जब कॉङ्ग्रेस का बड़ा ज़ोर था, धुआँधार वक्तृताएँ सुनने में आती थीं, अख़बारों में जोशीले लेख निकलते थे, प्रत्येक मनुष्य महात्मा गाँधी का कलमा पढ़ता था, हर तरफ़ से 'महात्मा गाँधी जी की जय' की गगन-भेदी ध्वनि सुनाई देती थी। पर अब तो सन्नाटा पड़ा है और जो कुछ ख़बरें सुनने में आती हैं, वह इतनी भयङ्कर कि सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मुकुट०—इसमें भयङ्करता की कौन सी बात है। हर ज़माने का रङ्ग अलग-अलग होता है। वह व्याख्यानों और लेखों का युग था, अब क्रियात्मक आन्दोलन का युग आया है। हाँ, इस समय दिल-गुर्दे की ज़रूरत है।

मनोरमा—(मेरी ओर देख कर) गाँधी से आपका आशय महात्मा गाँधी से है? वह तो बड़ी पदवी के महात्मा थे, जैसे महात्मा बुद्ध, गुरु नानक और ऋषि दयानन्द। मेरी माँ तो उनको ईश्वर का अवतार कहती हैं। चौबीस अवतार तो सुने थे, अब इनको पचीसवाँ अवतार बताती हैं।

काशीनाथ—तो इसमें सन्देह ही क्या है? वह वास्तव में साधारण मनुष्य न थे। भारतवर्ष ही नहीं, सारा संसार उनके महत्व को स्वीकार करता था। भारत में तो अब भी उन्हें पूजते हैं।

मनोरमा—उनके नाम से तो कई मन्दिर बने हैं। अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में मैंने उनकी सङ्गमर्मर की मूर्ति देखी है। ऐसी सुन्दर और पवित्र कि वर्णन नहीं हो सकता। काशी में भी गाँधी का मन्दिर है।

मुकुट०—वह मन्दिर नहीं, 'काशी विद्यापीठ' है।

मनोरमा—वाह! मैंने ख़ुद देखा है, मूर्ति को हार पहनाए जाते हैं, आरती की जाती है, जो लोग दर्शन करने आते हैं, पैसे चढ़ाते हैं। बाहर दीवारों पर, जैसे किसी मन्दिर पर 'सीताराम, सीताराम' 'जय शिव जय शिव' गेरू से लिखा रहता है, वैसे ही वहाँ महात्मा गाँधी की जय से तमाम दीवारें भरी हुई हैं और कहीं-कहीं एक पहिया-सा भी बना हुआ है, मन्दिर तो है ही।

मुकुट०—तुम बड़ी बेवक़ूफ़ हो। वह चर्ख़ा है, पहिया नहीं।

मनोरमा—तो मैंने जो चीज़ न कभी देखी और न सुनी, उसका नाम कैसे बता सकती हूँ।

मुकुट०—मैं देखता हूँ कि तुम्हारी स्मृति अभी से बिगड़ती जाती है। चर्ख़ा तुमने कभी देखा नहीं है?

मनोरमा—जी, नहीं देखा है। आप उस खिलौने को कहते होंगे जो दद्दा जी के ड्रॉइङ्ग रूम में रक्खा हुआ है। लखनऊ का बना हुआ गेरू के रङ्ग का मट्टी का चर्ख़ा।

मुकुट०—जी नहीं; आपने सचमुच का देखा है, आपको याद नहीं।

मनोरमा—अच्छा तो बतलाइए, कहाँ देखा है?

मुकुट०—क़ैसरबाग़ वाले अजायबख़ाने में एक सचमुच का पुराना चर्ख़ा नहीं रक्खा है और आपने नहीं देखा है?

मुझे मुस्कुराहट आ गई और मनोरमा बिना परास्त हुए बोली—आप तो हँसी करते हैं। वह तो देखा है और बीसों विचित्र-विचित्र चीज़ें वहाँ देखी हैं। उनसे क्या मतलब?

काशीनाथ—महात्मा गाँधी केवल महात्मा और सन्त ही न थे, वरन् वह ऐसे ऊँचे दर्जे के राजनीतिक लीडर थे कि ऐसा कोई लीडर भारतवर्ष में पैदा ही नहीं हुआ। उन्होंने बृटिश सरकार से खुल्लमखुल्ला संग्राम किया था और ऐसी विजय प्राप्त की कि आज तक उसकी याद भारतीयों के दिलों में चुटकियाँ लेती है।

मनोरमा—इतिहास में कहीं भी इस लड़ाई का ज़िक्र नहीं है। बृटिश सरकार से, अन्तिम लड़ाई, सौ वर्ष पहले सन् १८५७ में हुई थी, पर इसमें भी मतभेद है। कुछ लोग उसे 'वार ऑफ़ इन्डिपेन्डेन्स' कहते हैं और कुछ लोगों की राय है कि फ़ौज ने ग़दर किया था।

काशीनाथ—महात्मा गाँधी का उद्देश्य हिंसात्मक युद्ध नहीं था, वह तो केवल चर्ख़े के बल पर लड़ते थे।

मनोरमा—यह बात तो कुछ समझ में नहीं आती।

मुकुट०—(मुस्कुरा कर) जी हाँ, बक़ौल शायर—

इस सादगी पै कौन न मर जाय ऐ ख़ुदा—
लड़ते हैं, और हाथ में तलवार भी नहीं !!

काशीनाथ—महाशय, दिल्लगी नहीं थी, हज़ारों को जेलख़ाने की सज़ा हो गई। न मालूम कितने जीवन नष्ट हो गए।

मुकुट०—भाई लड़ाई में जेलख़ाने नहीं होते, सर कटते हैं।

मनोरमा—भई, हमारी समझ में नहीं आया। यह चर्ख़े की लड़ाई कैसी? क्या उस वक़्त हम लोग हथियार बनाना नहीं जानते थे।

मुकुट०—मनोरमा, वह ज़बानी लड़ाई थी। जैसे, 'शैम फ़ाइट' होती है, सचमुच की लड़ाई नहीं।

मनोरमा—तब देश ने गत पन्द्रह वर्षों में बड़ी उन्नति की है।

काशीनाथ—यह उन्नति नहीं, हमारी सभ्यता पर एक भद्दा धब्बा है। एक ओर सभ्यता और शिष्टता का दावा और दूसरी ओर मार-काट और अर्द्ध पशुवत् कर्म! यूरोप वाले आज शान्ति और सुलह की क़समें खा रहे हैं और ख़ून-ख़राबी तथा लड़ाई-झगड़े का ख़ातमा करना चाहते हैं। और आप महात्मा गाँधी की, जिन्होंने सारे संसार को अहिंसा का सन्देश सुनाया था, हँसी उड़ाते हैं। 'सोल फ़ोर्स' (आत्मबल) और सत्याग्रह का सन्देश, संसार को सब से पहले महात्मा गाँधी ने ही सुनाया और समस्त भारतवर्ष ने उसके आगे अपना मस्तक झुका दिया।

मुकुट०—मैं तुम्हारे 'सोल फ़ोर्स' के विरुद्ध कुछ नहीं कहता। पहले महात्मा ईसा ने संसार को ऐसा ही सन्देश दिया था। अब दो हज़ार वर्ष बाद महात्मा गाँधी ने फिर उसकी पुनरावृत्ति की है; सम्भवतः दो हज़ार वर्ष के बाद कोई और महापुरुष पैदा होंगे और संसार को अपना करशमा दिखाएँगे। मगर यह तो बतलाओ कि हमारा क्या परिणाम होगा? कहावत है कि 'घड़ी में घर जले ढाई घड़ी भद्रा!' महात्मा ईसा के नाम पर हज़ारों नहीं, बल्कि लाखों गिरजे बन गए। महात्मा गाँधी की मूर्ति भी बहुत से मन्दिरों में पूजी जाती है, परन्तु हमारी ग़ुलामी की ज़ञ्जीरें अभी तक ढीली नहीं हो सकीं और यूरोप वाले आज भी मार-काट का सामान एकत्र करने में उसी प्रकार जुटे हैं, जैसे पहले जुटे रहते थे।

काशीनाथ—मैं इसको नहीं मानता। भारत में महात्मा के सन्देश का जो असर हुआ और जिस तरह लोगों ने उसका स्वागत किया, उसकी स्मृति आज तक बनी है।

मुकुट०—तो भई, एक ही के 'सोल फ़ोर्स' से काम नहीं चलता। तुमसे जिनसे पाला पड़ा है, अर्थात् अङ्गरेज़ों से, वे तो इस तत्व को समझते नहीं।

काशीनाथ—हथेली पर सरसों नहीं जमा करती। प्रभाव पड़ते-पड़ते पड़ेगा। वह भी समझने लगेंगे।

मुकुट०—हाँ, जब हमारी तरह वे भी भूखों मरने लगेंगे, तन ढँकने को कपड़ा नहीं रहेगा, बीमारी और गन्दगी से उनके यहाँ भी जब बरबादी होने लगेगी और रगों में ख़ून, जोश पैदा करने के बदले सूखने लगेगा, तब वे भी 'सोल फ़ोर्स' और सत्याग्रह के क़ायल हो जाएँगे। परन्तु इसके लिए अभी एक युग चाहिए।

काशीनाथ—माना, आप ही कौन से गढ़ जीत रहे हैं? एक-दो नाइट-क्लब जो आपने स्थापित कर लिए हैं, उन्हीं पर भूलते हैं?

मुकुट०—कम से कम रास्ता तो सीधा पकड़ा है, मार्ग-भ्रष्ट तो नहीं हो रहे हैं।

काशीनाथ—परन्तु इस रहस्य का पता न लगा कि वहाँ होता क्या है?

मुकुट०—आपको इससे क्या दिलचस्पी है, आप तो गाँधी-पन्थी हैं। बस, चर्ख़ा चलाया कीजिए।

काशीनाथ—नहीं भाई, अगर मालूम हो कि तुम लोग वाक़ई कुछ कर रहे हो तो हम भी तुम्हारे साथ सम्मिलित हो जायँ, मगर कुछ बताओ तो सही।

मुकुट०—पहले यह विश्वास हो कि आप कुछ करने के लिए तैयार हैं।

काशीनाथ—भई, जैसा पक्का वादा चाहो, ले लो। मैं दिल्लगी नहीं कर रहा हूँ। अगर समझ में आ जाएगा तो दिलोजान से तुम्हारा साथ दूँगा।

मुकुट०—भई, वहाँ का हाल 'फ़्रीमेसन' का सा है, तुम वहाँ का रहस्य जान कर उसे कहीं प्रकट नहीं कर सकते। चाहे शरीक हो चाहे न हो, पर मुँह नहीं खोल सकते।

काशीनाथ—मञ्ज़ूर।

मैं—मैं भी इस विषय को जानने के लिए बेचैन हो रहा हूँ; बल्कि इसी इच्छा से आपसे मिलने आया था। मैं इसका तो आपसे वादा नहीं कर सकता कि आपका साथ देकर आपका हाथ बटाऊँगा। पर इसका पक्का वादा करता हूँ कि जो कुछ आँखें देखेंगी, ज़बान से न निकलेगा।

मुकुट०—देखिए साहब। यह बच्चों का खेल नहीं, इसमें जान का जोखिम है। इसे सोच लीजिए। अभी कुछ नहीं गया है, परन्तु भविष्य में वादाख़िलाफ़ी हुई तो परिणाम अच्छा नहीं होगा।

हम दोनों ने ज़बान न खोलने का पक्का वादा किया; बल्कि काशीनाथ ने तो यहाँ तक कहा कि अगर इसमें ज़रा भी फ़र्क़ आए तो गर्दन उड़ा देना। इस पर मुकुटबिहारी ने कहा—"अच्छा, चलिए, मेरे पढ़ने के कमरे में। मैं आपको क्लब की नियमावली दिखा दूँ। पहले उसे ध्यानपूर्वक पढ़ लीजिए, फिर रात को आपको क्लब भी ले चलूँगा। वहाँ आपको हमारे नेता के सामने शपथ खानी पड़ेगी, तब क्लब में दाख़िल हो सकिएगा।" हम दोनों ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया और चारों आदमी वहाँ से उठ कर दूसरे कमरे की ओर चले। संयोगवश काशीनाथ ने दरवाज़े की चौखट से ठोकर खाई और गिरते-गिरते बचे। सम्हल कर मुकुट के साथ हो लिए। मनोरमा भी उनके पीछे थी। जब काशीनाथ ने ठोकर खाई तो मनोरमा ने उनकी जेब से एक पत्र और

उठ जा सोते हुए सिंह!

[प्रोफ़ेसर 'कुमार' एम० ए०]

काँप रही है क्यों आशा,
तेरी आँखों के आगे।
बतला दे, बतला दे ना,
ऐ भारतवर्ष अभागे!!
सूनी-सी आँखों से गिरता,
क्यों आँसू का पानी।
नया रूप रख कर आई क्या—
तेरी व्यथा पुरानी?

कैसे युद्ध करेगा पाकर ये निर्बल कृष बाहें!
तेरे पास रखा ही क्या है? कुछ थोड़ी सी आहें!

क्यों बुझता है? अरे—
विश्व-भर के दैदीप्य उजाले!
उठ जा, सोते हुए सिंह!
दुनियाँ का दिल दहला ले!!
दिखला लेने दे औरों को—
अपना ज़रा तमाशा!
फिर तो—सुन, तुझ पर ही है—
कितनी आँखों की आशा!!

गूँजेंगे 'भविष्य' में भारत! तेरी जय के गाने!
झूम, मस्त हो झूम, अरे आज़ादी के दीवाने!!

लिफ़ाफ़ा सामने गिरते देखा। उसने चाहा कि उसे उठा कर उन्हें दे दे, परन्तु जब लिफ़ाफ़े पर उसकी दृष्टि पड़ी तो आश्चर्य-चकित होकर वहीं ठिठक गई। उसका चेहरा क्रोध से लाल हो गया। लिफ़ाफ़ा उठा कर उसने जेब में डाल लिया। हम तीनों व्यक्ति तो आगे वाले कमरे में चले गए, परन्तु मनोरमा बहाना करके ड्रॉइङ्ग रूम में लौट आई। मुकुट ने अपनी मेज़ की दराज़ का ताला खोला और एक प्रति नियमावली की निकाल कर हम दोनों व्यक्तियों को पढ़ने को दी।

क्षण भर के बाद काशीनाथ बोले—भई, इस नियमावली के साथ यह नुसख़ा-सा क्या नत्थी है?

मुकुट०—कुछ नहीं, इसको अभी आप समझ नहीं सकते।

काशीनाथ—अच्छा तो यह नियमावली थोड़ी देर के लिए मुझे दे दो। मैं घर ले जाकर इसे इतमीनान से पढ़ूँगा।

मुकुट०—ना, यह नहीं हो सकता। यहीं देख लो, मैं दे नहीं सकता।

काशीनाथ ने हँस कर कहा—मियाँ, बड़े वहमी और शक्की हो। ख़ैर, न सही।

यह बातचीत हो ही रही थी कि मनोरमा ने कमरे में प्रवेश किया। वह कुछ घबराई हुई सी थी। उसने जब नियमावली की कॉपी काशीनाथ के हाथ में देखी तो उसके चेहरे का रङ्ग फीका हो गया। परन्तु अपने मनोभाव को छिपा कर कुर्सी पर बैठ गई।

थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं, फिर काशीनाथ ने कहा—"भई, चल दिए।" मैंने भी विदा चाही और रात को अमीनाबाद के चौराहे पर सबके एकत्र होकर क्लब में चलने की ठहरी। इस तरह बातें करते मुकुटबिहारी, मनोरमा, काशीनाथ और मैं बरामदे से बाहर निकले और कोठी के बाग़ से होते हुए दरवाज़े पर पहुँचे। मैंने मुकुट और मनोरमा से हाथ मिलाया। काशीनाथ ने मुकुट से हाथ मिलाने के बाद मनोरमा की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाया तो उसने बड़ी लापरवाही से अपना हाथ खींच लिया और बोली—मैं ऐसे मित्रों से, जो झूठी शपथ खाते और झूठी प्रतिज्ञाएँ करते हैं, हाथ नहीं मिला सकती।

काशीनाथ ने तेवर बदल कर जवाब दिया—आप मेरा अपमान करती हैं!

मनोरमा बोली—तुम पुलिस के जासूस हो और यहाँ से जीते जी नहीं जा सकते।

यह सुनते ही काशीनाथ का चेहरा उतर गया। वह सँभल कर कुछ कहना ही चाहते थे कि मनोरमा ने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा कर, जिसमें पिस्तौल थी, काशीनाथ की छाती पर गोली दाग़ दी। काशीनाथ वहीं ढेर हो गया! मैं हक्का-बक्का हो गया। मुकुट ने कहा—मनोरमा, यह तुमने क्या अनर्थ कर डाला!

मनोरमा ने जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाल कर मुकुटबिहारी को दिया और निहायत लापरवाही से रूमाल द्वारा पिस्तौल का मुँह, जिसमें से गोली निकली थी, साफ़ करने लगी। मुकुट पत्र पढ़ने में संलग्न था और मनोरमा पिस्तौल साफ़ करने में। मैं सन्ध्या के धुँधले प्रकाश में आश्चर्य से आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहा था कि कोई आ तो नहीं रहा है कि एकाएक किसी के ज़ोर से आने की आहट कानों में आई। मैं सँभला ही था कि एक पुलिस कॉन्स्टेबिल मेरे सर पर खड़ा दिखाई पड़ा। उसने मनोरमा के हाथ में पिस्तौल देख कर सब से पहले उसी पर हाथ डालना चाहा। मैंने ललकारा, ख़बरदार, जो हाथ लगाया, दूर हो यहाँ से। कॉन्स्टेबिल ने एक हाथ से तो मनोरमा का हाथ पकड़ा और दूसरे से मुझे ऐसा धक्का दिया कि मैं तिलमिला कर रह गया। परन्तु ईश्वर जाने मुझ पर क्या पागलपन सवार हो गया कि मैं सँभल कर उसकी ओर लपका और मनोरमा के हाथ से पिस्तौल छीन कर कॉन्स्टेबिल को गोली मार दी। उसकी लाश भी काशीनाथ की लाश के पास तड़पने लगी। अब हम तीनों इतमीनान से कोठी में गए और कमरे में बैठ कर बातचीत होने लगी। मैंने कहा—यह तो जो कुछ हुआ, ठीक हुआ; परन्तु अब गिरफ़्तारी के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

मनोरमा ने कहा—तीनों गिरफ़्तार नहीं हो सकते। मैं अपराध स्वीकार करूँगी, सारा झगड़ा तै हो जाएगा।

मैंने कहा—यह नहीं हो सकता। मैंने कॉन्स्टेबिल को मारा है, मैं अपराध स्वीकार कर लूँगा।

मुकुट—तुम्हें याद है कि हमारा-तुम्हारा ऐसी दशा

में क्या वादा था ? यह कैसे मुमकिन है कि तुम गिरफ़्तार हो जाओ और मैं खड़ा तमाशा देखूँ ?

मैं—मुझे तो यह कोई बुद्धिमानी की बात नहीं मालूम होती कि एक साधारण सी बात के लिए तीन जानें भेंट चढ़ाई जायँ ! आप लोगों को अभी बहुत काम करना है, मैं फ़ालतू आदमी हूँ। बस, आप लोग हठ न कीजिए और मुझे अपराध स्वीकार कर लेने दीजिए।

मनोरमा ने भवें सिकोड़ कर कहा—मैं दूसरों का आश्रय लेकर मुँह छिपाना पसन्द नहीं करती।

मैंने कहा—यह आपकी इच्छा है। परन्तु मैं तो पुलिस के सामने अपना अपराध अवश्य ही स्वीकार करूँगा।

मुकुट०—अच्छा, इसका निर्णय क्लब की कमेटी पर छोड़ दिया जाय और प्रत्येक उसके निर्णय को स्वीकार करे।

मनोरमा—मुझे स्वीकार है ?

मैं—मुझे भी स्वीकार है।

मुकुट०—अच्छा तो तुरन्त यहाँ से निकल चलो, नहीं तो क्लब पहुँचना भी कठिन हो जाएगा।

डर था कि दरवाज़े पर भीड़ लगी होगी और पुलिस भी आ पहुँची होगी, इसलिए पीछे के रास्ते से निकल कर हम लोग क्लब पहुँचे। दलपति से मेरा परिचय कराया गया। मुकुटबिहारी ने सारी घटना सुनाई। तुरन्त ही क्लब की कमेटी का अधिवेशन हुआ। मुझे और मनोरमा को जो कुछ कहना था, कहा। निर्णय मेरे पक्ष में और मनोरमा के विरुद्ध हुआ। हम तीनों वहाँ से वापस आए। मनोरमा के तेवर चढ़े हुए थे। मैं यह देख कर मुस्कुराया। उसने रुष्ट होकर मेरी ओर से मुँह फेर लिया। इसके बाद वे दोनों अपने घर गए और मैं अपने स्थान पर वापस आया।

मुकुट और मनोरमा जिस समय कोठी पर पहुँचे तो उस समय पुलिस वहाँ पहुँच गई थी और कोठी को चारों ओर से घेर लिया था। वे दोनों तुरन्त गिरफ़्तार कर लिए गए। सवेरे थाने में पहुँच कर मैंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। दोनों ने आरम्भ से अपने को निर्दोष बताया था। कोई दूसरा प्रमाण या गवाही भी मौजूद न थी। इसलिए वे दोनों छोड़ दिए गए और मुझे एक सप्ताह के अन्दर फाँसी की आज्ञा मिल गई।

जिसने लगातार तिरसठ दिनों तक कड़ी से कड़ी तकलीफ़ें बरदाश्त की हों, वह फाँसी के क्षणिक कष्ट की क्या परवाह कर सकता है ? मैं बड़ी प्रसन्नता से आत्मिक जगत की ओर बढ़ा और इस ख़याल में मस्त था कि स्वर्ग के दूत मुझे हाथों-हाथ वहाँ पहुँचाएँगे। देवाङ्गनाएँ पारिजात पुष्पों की मालाएँ लिए मेरे स्वागत को खड़ी होंगी। परन्तु वहाँ पहुँचते ही मुझे बड़ा हल्ला सुनाई पड़ा। चारों ओर से आवाज़ें आने लगीं—"निकालो-निकालो, इसे तुरन्त निकाल बाहर करो। यह बड़ा हठी है, इसके लिए यहाँ स्थान नहीं है। इसे पुनः नरलोक में वापस लौटा दो।" मैं यह सुन कर हक्का-बक्का रह गया और सोचने लगा कि ऊँट की तरह परमात्मा की भी कोई कल सीधी नहीं। इन्हें प्रसन्न करना बड़ा कठिन है। स्वर्ग की लालसा बिलकुल व्यर्थ है। यह सोचता हुआ मैं उलटे पाँव वापस लौटा और इस तरह विचार करके सन्तोष करने लगा कि स्वर्ग कितना ही सुन्दर और मनोरम क्यों न हो, हमारी दुनिया से अधिक दिलचस्प कदापि नहीं हो सकता। फिर स्वर्ग के मुक्त जीवन से तो आवागमन ही अच्छा है, उससे तबीयत उकताएगी तो नहीं। ऐसे ही विचारों में डूबता-उतराता मैं संसार में वापस आया और आते ही अपनी विचित्र कहानी लिखना आरम्भ कर दिया।

[जनवरी, १९३० वाले अङ्क में प्रकाशित 'चाँद' के उर्दू-संस्करण से]

* * *

द्वितीय महासमर के काले बादल

[डॉक्टर "पोल खोलानन्द भट्टाचार्य" एम० ए०, पी० एच-डी०]

यूरोप में सन् १९१४—१९१८ में जो महासमर हुआ था, उससे वहाँ के समस्त देशों की जनता को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा था और इसलिए सभी श्रेणियों के लोग युद्ध के विरोधी बन गए थे। सर्वसाधारण की इस भावना को प्रकट करने के लिए कितने ही नवीन विचारकों और सुधारकों का आविर्भाव हुआ और युद्ध के विरोध में एक ज़ोरदार आन्दोलन खड़ा हो गया। इस विरोध को शान्त करने के लिए यूरोप की प्रधान शक्तियों ने, जो कि महासमर में विजयी हुई थीं, राष्ट्र-सङ्घ या 'लीग ऑफ़ नेशन्स' की स्थापना की और उसके द्वारा युद्धों का सदा के लिए अन्त कर देने का लोगों को विश्वास दिलाया।

पर आज बारह वर्ष का लम्बा युग व्यतीत हो जाने पर भी 'लीग ऑफ़ नेशन्स' की सारी कार्रवाई बातों का जमा-ख़र्च साबित हुई है, और उससे शान्ति की स्थापना होना तो दूर रहा, यूरोप में युद्ध की सम्भावना दिन पर दिन बढ़ती जाती है और विभिन्न देश गुप्त रीति से महासमर के लिए दल-बन्दी कर रहे हैं। 'लीग ऑफ़ नेशन्स' से अगर कोई उद्देश्य सिद्ध हुआ है तो यही कि उसके द्वारा जर्मनी और ऑस्ट्रिया को दबा कर रक्खा गया है और सोवियट रूस के मार्ग में भी रोड़ा अटकाया गया है। लोगों को दिखलाने के लिए लीग की तरफ़ से प्रायः प्रति वर्ष निःशस्त्रीकरण (Disarmament) कॉन्फ़्रेन्सें हुआ करती हैं और उनमें संसार के कल्याण के लिए युद्ध-सामग्री को घटाने पर बड़ी गर्मागर्म बहस होती है, लम्बे-चौड़े प्रस्ताव पास होते हैं, मोटी-मोटी रिपोर्टें छापी जाती हैं, पर वास्तव में फल कुछ भी नहीं होता, और ये सब बातें नाटक का अभिनय ही सिद्ध होती हैं। अगर थोड़ी-बहुत युद्ध-सामग्री घटाई भी जाती है, तो इसमें प्रायः ऐसी ही चीज़ों का समावेश होता है, जिनका महत्व आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण घट गया है और जिनकी जगह ये युद्ध-प्रिय राष्ट्र अधिक भयङ्कर और कारगर चीज़ें पा चुके हैं। शान्ति के लिए इतनी धूमधाम होने पर भी समस्त देशों का सैनिक-ख़र्च बराबर बढ़ रहा है। स्थल, जल और आकाश संहारकारी यन्त्रों की ध्वनि से गूँज रहे हैं ! इनके लिए करोड़ों, अरबों रुपए ख़र्च करके नए-नए कारख़ाने खोले जा रहे हैं, और फल यह होता है कि सर्वसाधारण के लिए उपयोगी चीज़ों की पैदावार कम होती जाती है और जनता के स्वाभाविक, आर्थिक विकास में भयङ्कर बाधा पड़ रही है।

आजकल यूरोपीय देशों पर क़र्ज़ें का जो भयङ्कर बोझ लदा हुआ है, उसके कारण वे निःशस्त्रीकरण का प्रकट में विरोध नहीं कर सकते। पर उनके सैनिक-बजट को देख कर मालूम होता है कि उनको क़र्ज़ें की कोई चिन्ता नहीं। इङ्गलैण्ड ने सन् १९२७ में सेना के लिए जितना धन व्यय किया था, वह १९१३ की अपेक्षा दुगुना था। फ़्रान्स वाले कहते हैं कि हम सेना की संख्या घटा रहे हैं, पर इस 'घटी हुई सेना' के लिए ख़र्च पहले से बहुत अधिक किया जा रहा है। जर्मनी सन्धि की शर्तों के कारण एक लाख सेना से अधिक नहीं रख सकता और न वह किसी प्रकार की युद्ध-सामग्री बना सकता है; तो भी वह सेना पर, सन् १९१३ की अपेक्षा, जब कि जर्मन-सेना संसार में सब से अधिक शक्तिशाली मानी जाती थी, आधा ख़र्च कर रहा है। इङ्गलैण्ड, जर्मनी में सेना के समस्त सिपाही स्थायी तौर पर नौकर रक्खे जाते हैं, इसलिए उनका ख़र्च अधिक पड़ता है। पर फ़्रान्स, इटली और रूस आदि में अनिवार्य सैनिक-शिक्षा का क़ानून है और इसलिए वहाँ थोड़े ही ख़र्च में बड़ी सेना रक्खी जा सकती है। इटली पहले की अपेक्षा सेना पर दुगुना ख़र्च करता है और रूस में स्त्रियों तक की सेना तैयार की जा रही है ! और भी अनेकों छोटे-छोटे देश पागलों की तरह सैनिक तैयारी में जुटे हुए हैं !!

इस सम्बन्ध में हाल में एक अमेरिकन सम्वाददाता ने 'लीग ऑफ़ नेशन्स' के एक अधिकारी से, जो संसार की राजनीति का ज्ञाता है, बातचीत की थी। उस बातचीत से निःशस्त्रीकरण के प्रश्न पर काफ़ी प्रकाश पड़ता है और इसकी पोल बहुत कुछ खुल जाती है। उन दोनों में जो प्रश्नोत्तर हुए वे यहाँ दिए जाते हैं :—

प्रश्न—क्या यूरोपीय राष्ट्रों की युद्ध-सामग्री में कुछ भी कमी नहीं पड़ी है ?

उत्तर—यह बात अङ्कों के देखने से ही मालूम हो सकती है। पर ये अङ्क भी सच्चे नहीं हैं। प्रायः सभी देश चालबाज़ी से सैनिक व्यय को दूसरे मदों में रख कर, लोगों को शान्ति की झूठी आशा दिलाते हैं !

प्रश्न—क्या आपका मतलब यह है कि अनेक देशों की गवर्नमेण्टें 'लीग ऑफ़ नेशन्स' के सामने जाली हिसाब-किताब पेश करती हैं ?

उत्तर—'लीग ऑफ़ नेशन्स' की तरफ़ से जो सैनिक व्यय सम्बन्धी वार्षिक विवरण प्रकाशित किया जाता है उससे कुछ बातें मालूम हो सकती हैं। पर उनसे पूरा भेद नहीं जाना जा सकता। उदाहरण के लिए फ़्रान्स अपनी स्थल और जल-सेना के व्यय को बजट के असंख्य विभागों में बाँट डालता है। अगर कोई निष्पक्ष आदमी उसकी जाँच करे और उसे वहाँ के अधिकारियों से जिरह कर सकने का भी अधिकार हो तो वह मालूम कर सकता है कि फ़्रान्स आजकल सेना में उससे भी अधिक रक़म ख़र्च कर रहा है, जितनी कि महासमर से पहले जर्मनी और फ़्रान्स दोनों मिल कर करते थे ! जर्मनी का ख़र्च भी कम नहीं है। जब वह देखता है कि उसके पड़ोसी राष्ट्र किसी प्रकार अपनी सेना कम नहीं करते, तो वह भी सन्धि-पत्र के शब्दों की रक्षा करता हुआ यथासम्भव प्रत्येक उपाय से अपनी सैनिक-शक्ति को बढ़ाने की चेष्टा करता है। सच तो यह है कि चाहे जैसे सत्य भाव से जाँच की जाय, इन बातों का ठीक पता नहीं लगाया जा सकता। फ़्रान्स के बजट में उसके उपनिवेशों का हिसाब शामिल करके गड़बड़ी पैदा कर दी जाती है। इङ्गलैण्ड के बजट की कोई थाह ही नहीं मिलती, क्योंकि उसके तमाम उपनिवेशों के पास स्वतन्त्र स्थल और जल-सेनाएँ

हैं। जर्मनी शारीरिक उन्नति का बहाना लेकर अपना काम चलाता है। और इटली, फ़्रान्स और रूस में तो बच्चे का जन्म होते ही उसे सिपाही बनाने का उद्योग आरम्भ कर दिया जाता है!

प्रश्न—क्या आपका कहना यह है कि फ़्रान्स सब से बढ़ कर नियम-विरुद्ध काम करता है?

उत्तर—नहीं, हम सब पापी हैं। पर फ़्रान्स और इसके दोस्त बड़ी तेज़ी से सशस्त्र हो रहे हैं। जर्मनी और ऑस्ट्रिया भी फ़्रान्स का मुक़ाबला इसी तेज़ी से करते, पर इनके हाथ-पैर सन्धि की शर्तों के कारण बँधे हैं।

प्रश्न—क्या जर्मनी छिपे तौर पर सशस्त्र नहीं हो सकता?

उत्तर—जर्मनी अगर किसी बड़े पैमाने पर सशस्त्र होने की कोशिश करे तो उसकी कार्य-प्रणाली चाहे जैसी गुप्त हो, वहाँ के गर्म दल वाले अवश्य उसका भण्डाफोड़ कर देंगे। कुछ छोटे-छोटे निरपेक्ष राज्य अपनी जल और स्थल-सेना को मिटा देना चाहते हैं, पर आजकल संसार में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली मसल जिस प्रकार चरितार्थ हो रही है, उसे देख वे भी अपने विचार को कार्य-रूप में परिणत नहीं कर सकते। पोलैण्ड, जैकोस्लोविका, जूगोस्लेविया सैनिक नीति की शतरञ्ज के प्यादे बने हुए हैं! इटली की रण-गर्जना संसार में सुनाई दे रही है और रूस की लाल सेना टिड्डी दल के समान यूरोप पर निगाह लगाए हुए है!!

इसी प्रकार अन्य राजनीतिज्ञों की भी यही सम्मति है कि यूरोप बराबर भावी महासमर की तैयारी कर रहा है। यदि हम विभिन्न देशों की सेनाओं की संख्या और सेना सम्बन्धी नियमों की जाँच करें तो इस बात की सचाई पूरी तौर से साबित हो जाती है। इङ्गलैण्ड ने अपनी सेना में अवश्य कुछ कमी की है। इस समय इङ्गलैण्ड की सेना में सिर्फ़ १ लाख ४० हज़ार सिपाही हैं, जबकि सन् १८९५ में उनकी संख्या १ लाख ७८ हज़ार थी। पर इङ्गलैण्ड की साठ हज़ार गोरी सेना हिन्दुस्तान में भी रहती है और उपनिवेशों से भी काफ़ी संख्या में सिपाही मिल सकते हैं। उनके पास तीस लाख सेना के लायक़ युद्ध-सामग्री सदैव तैयार रहती है!

फ़्रान्स ने अपनी सेना का सङ्गठन इस प्रकार किया है कि वह चाहे जिस समय ४० लाख सेना युद्ध-क्षेत्र में लाकर खड़ी कर सकता है। वहाँ सार्वजनिक सैनिक सेवा का नियम प्रचलित है, और सैनिक शिक्षा दिए जाने का समय पहले की अपेक्षा घटा दिया गया है। इस प्रकार उसने अपने देश के समस्त हथियार चला सकने लायक़ पुरुषों को सिपाही बना लिया है। फ़्रान्स अपनी तोपों, मशीनगनों और टैङ्कों का आकार और शक्ति भी बढ़ा रहा है। इस समय उसके पास भारी मशीनगनें, सन् १९१४ की अपेक्षा बीस गुनी ज़्यादा हैं! सन् १९१४ में स्थल सेना के पास भारी तोपें बिलकुल नहीं थीं, पर अब ऐसी कई सौ तोपें उसके पास हैं। टैङ्क और बख़्तरदार मोटरों की संख्या, जिनका सन् १९१४ से पहले नाम भी न था, ५८०० हैं!! फ़्रान्स में जो नई सेना सम्बन्धी क़ानून बना है, उसके अनुसार किसानों और व्यापारियों तक को युद्ध के समय सिपाही बनाया जा सकता है। वहाँ एक ऐसा भी क़ानून है, जिसके द्वारा अख़बारों से युद्ध के सम्बन्ध में इच्छानुसार प्रचार किया जा सकता है और समस्त राष्ट्र में युद्ध की आग फूँकी जा सकती है। इस समय फ़्रान्स के पास ६ लाख १४ हज़ार सेना सदैव तैयार रहती है और रिज़र्व-सेना की संख्या ४५ लाख के क़रीब है!!!

फ़्रान्स में २१ साल से ४१ साल के बीच की उम्र का हरएक आदमी, आवश्यकता पड़ने पर सेना में काम करने को क़ानून द्वारा बाध्य है। युद्ध के समय कारख़ानों के मज़दूरों और मैनेजरों—दोनों को सेना में शामिल होना पड़ेगा। इस प्रकार फ़्रान्स ने समस्त राष्ट्र को युद्ध के लिए सशस्त्र बना दिया है। वहाँ पर राज्य की सत्ता ही सर्वप्रधान मानी जाती है और उसकी रक्षा के लिए देश के प्रत्येक साधन को काम में लाया जा सकता है। युद्ध के अवसर पर राष्ट्र की रक्षा करने के लिए एक सुप्रीम कौन्सिल का निर्माण किया गया है, जिसमें जल और स्थल सेना तथा अन्य सरकारी विभागों के प्रतिनिधि सम्मिलित हैं। इसने अभी से इस बात का निश्चय कर लिया है कि युद्ध के अवसर पर किस सरकारी विभाग को क्या काम करना पड़ेगा। इस काम की तैयारी उसको शान्ति के समय में ही कर रखनी चाहिए। वहाँ पर हरएक लड़के-लड़की को छः वर्ष की आयु से ही शारीरिक शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। नवयुवकों

यूरोप के राष्ट्र निःशस्त्रीकरण (Disarmament) की नीति पर किस तरह अमल कर रहे हैं!

को सेना में दाख़िल होने से पहले ही आरम्भिक क़वायद आदि सीख लेनी पड़ती है। इस प्रकार सरकार प्रत्येक नागरिक को बचपन से तब तक अपनी निगरानी में रखती है, जब तक कि वह युद्ध के अयोग्य नहीं हो जाता!!

अब जर्मनी की दशा देखिए। वर्सेलीज़ की सन्धि के अनुसार जर्मनी को केवल १ लाख सेना, जिसमें ४ हज़ार अफ़सर भी शामिल हैं, रखने का अधिकार है। वह युद्ध के लायक़ हवाई जहाज़, टैङ्क और बड़ी तोपें नहीं बना सकता। उसे अपना प्रधान युद्ध-विभाग तोड़ देना पड़ा है और एक को छोड़ कर, समस्त क़िलों को भी गिरा देना पड़ा है। वह अपने राइनलैण्ड प्रदेश में, जो बेलजियम और फ़्रान्स की सीमा के पास है, किसी प्रकार की सेना नहीं रख सकता। नवयुवकों को सैनिक शिक्षा देना वहाँ क़ानूनन रोक दिया गया है। वहाँ न ज़हरीली गैस बनाई जा सकती है और न फ़ौजों को जल्दी से इकट्ठा करने के लिए किसी प्रकार की तैयारी की जा सकती है। वहाँ पर सार्वजनिक सैनिक सेवा का नियम उठा दिया गया है और सेना में भर्ती होने वाले हरएक सिपाही को कम से कम बारह साल, और हरएक अफ़सर को कम से कम पचीस साल नौकरी करनी पड़ती है! इस शर्त के कारण जर्मनी अपनी जनता के बहुत बड़े भाग को सैनिक शिक्षा दे सकने में असमर्थ है। इस प्रकार हाथ-पैर बाँध दिए जाने के कारण जर्मनी वाले अपने सिपाहियों की योग्यता बढ़ाने का उद्योग कर रहे हैं। वहाँ के प्रत्येक सिपाही को सेना सम्बन्धी प्रत्येक कार्य की शिक्षा दी जाती है, और मित्र राष्ट्र के विशेषज्ञों की सम्मति है कि अपनी सीमा के भीतर जर्मन-सेना यूरोप में सब से अधिक सङ्गठित है।

सन्धि की शर्तों के अनुसार जर्मनी के पास कुछ भी रिज़र्व-सेना नहीं है। पर वहाँ पर कितनी ही ऐसी संस्थाएँ हैं, जिनके सदस्य निजी तौर पर सैनिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन संस्थाओं की कार्यवाही बहुत कुछ गुप्त रीति से होती है और इनके पास भारी तोपें, टैङ्क और लड़ाकू हवाई जहाज़ आदि युद्ध-सामग्री का सर्वथा अभाव है।

पर अब जर्मनी के युद्ध-विशारदों के मत में भी परिवर्त्तन हो गया है और वे गत महासमर की अशिक्षित या अल्प-शिक्षित करोड़ों सिपाहियों की सेना के स्थान में पूर्णरूप से शिक्षित और शीघ्रगामी छोटी सेना को अधिक पसन्द करने लगे हैं। उनका कहना है कि युद्ध के समय सब से अधिक महत्व की बात यही है कि सेना को जल्दी से जल्दी एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जा सके। इस कारण अब सन्धि की शर्तों से छुटकारा मिल जाने पर भी पुरानी सैनिक-पद्धति के अनुसार काम नहीं करेगा। एक बात जिससे जर्मनी वाले अप्रसन्न हैं, वह उनकी युद्ध-सामग्री का नाश है। सन्धि की शर्तों के कारण उनको अपनी हज़ारों तोपें, मोटरें, हवाई जहाज़ और लाखों बन्दूक़ें नष्ट कर देनी पड़ीं। युद्ध-सामग्री के लिए जो अरबों रुपए की लागत के बड़े-बड़े कारख़ाने खोले गए थे, उनको भी मटियामेट कर देना पड़ा। फ़्रान्स जर्मनी को यहाँ तक दबा कर रखना चाहता है कि उसने सन्धि-पत्र द्वारा वहाँ के स्कूलों में फ़ौजी क़वायद कराया जाना भी बन्द कर दिया है। तो भी आजकल जर्मनी में शारीरिक व्यायाम का प्रचार बढ़ रहा है और इसके द्वारा वहाँ के नवयुवकों को सब प्रकार से सुदृढ़ और हट्टा-कट्टा बनाया जाता है। सार यह कि जर्मनी ने, यद्यपि लाचार होकर ऊपर से फ़्रान्स और अन्य मित्र राष्ट्रों के सामने गर्दन झुका दी है, पर उसकी अन्तरात्मा अब भी उनकी शत्रु बनी हुई है और उससे जिस प्रकार सम्भव होता है वह अपनी शक्ति बढ़ाने की चेष्टा करता रहता है!

जर्मनी के साथी ऑस्ट्रिया की भी क़रीब-क़रीब ऐसी ही दशा है। उसको सिर्फ़ तीस हज़ार सेना रखने की आज्ञा है। पर वह सिर्फ़ बीस हज़ार सेना ही रखता है। वहाँ भी ऐसी संस्थाओं की कमी नहीं, जो निजी तौर पर जनता में सैनिक शिक्षा का प्रचार करती हैं। इन संस्थाओं का ख़र्च सार्वजनिक चन्दे से चलता है, यद्यपि कुछ लोगों को सन्देह है कि सरकार भी गुप्त रीति से उनकी पूरी सहायता करती है। हङ्गरी, जो कि महासमर से पहले ऑस्ट्रिया का एक भाग था और अब स्वतन्त्र राज्य बना दिया गया है, ३५ हज़ार सेना रख सकता है। वह भी सन्धि के अनुसार युद्ध की किसी प्रकार की तैयारी नहीं कर सकता, पर लोगों का ख़्याल है कि इटली छिपे तौर पर उसको सब प्रकार की युद्ध-सामग्री पहुँचाता रहता है।

जर्मनी का तीसरा साथी बलगेरिया भी इसी प्रकार

सन्धि की शर्तों में बँधा हुआ है। उसके पास २३ हज़ार सेना है। टर्की ने महासमर में जर्मनी का साथ दिया था और उसके विरुद्ध भी मित्र राष्ट्रों ने इसी प्रकार की शर्तें तैयार की थीं। पर निर्भय कमालपाशा ने उनको ठुकरा दिया। वह सब प्रकार की सैनिक तैयारी बेरोक-टोक कर रहा है। वहाँ की सेना की संख्या डेढ़ लाख से ज़्यादा है और युद्ध के समय वह १२ लाख तक सेना इकट्ठी कर सकता है।

मित्र राष्ट्रों के साथी अन्य छोटे-छोटे देश ज़ोरों से सैनिक तैयारी करते रहते हैं। छोटे से बेलजियम के पास सत्तर हज़ार सेना है और आवश्यकता पड़ने पर वह बारह लाख सिपाही मैदान में ला सकता है! उसने जर्मनी की सीमा पर बड़ी मज़बूत क़िलेबन्दी की हुई है, जिसका ख़र्च उसे गुप्त रीति से फ़्रान्स से मिलता है! रूमानिया की सेना की संख्या ढाई लाख है और युद्ध के समय वह सत्रह लाख सेना तैयार कर सकता है। ज़ेकोस्लोवेकिया के पास एक लाख से अधिक सेना है और वह नौ लाख तक सेना इकट्ठी कर सकता है! उसे लाख ३० हज़ार है। युद्ध के अवसर पर वह २० लाख सेना इकट्ठी कर सकता है। उसका राज्य जर्मनी और रूस के बीच में स्थित है और इनसे अपनी रक्षा का बहाना करके, वह इच्छानुसार सैनिक तैयारी करता रहता है! उसने ऑस्ट्रिया के ऊपर सिलेशिया और जर्मनी के डैनज़िग नामक प्रदेश पर ज़बर्दस्ती अधिकार कर लिया है और इस कारण उसका इन दोनों देशों से सदा ही मनमुटाव बना रहता है।

फ़्रान्स की तरह पोलैण्ड भी अपने सैनिक व्यय को अन्य विभागों में शामिल करके घुमाया करता है। वहाँ का शासन—समस्त विभागों की बागडोर—सैनिक अधिकारियों के हाथ में है। वहाँ की स्टेट बैङ्क का प्रधान और गृहमन्त्री ऐसे व्यक्ति हैं जो सेना में भी काम करते हैं। वहाँ की राजधानी वारसा में आजकल प्रायः वही दृश्य देखने में आता है जो महासमर से पहले बर्लिन में देखा जाता था। सब जगह सैनिक पोशाकें देखने में आती हैं और प्रत्येक बात में सैनिकता के चिन्ह पाए जाते हैं। पोलैण्ड के गोली-बारूद के अधिकांश कार-

यूरोप की किश्ती बारूद के ऊपर रक्खी है; बस एक चिनगारी की कसर है!!

ख़ाने जर्मनी की सीमा पर बनाए गए हैं। देश के अन्य भागों में भी बाहर से सहायता लेकर बड़े-बड़े कारख़ाने खोले गए हैं। इसके सिवाय गवर्नमेण्ट को अधिकार है कि युद्ध आरम्भ होते ही लोगों के निजी कारख़ानों में भी युद्ध-सामग्री तैयार करा सके। इसके लिए विशेषज्ञ हमेशा कारख़ानों का निरीक्षण करते रहते हैं और वे जिस प्रकार की नई मशीनें कारख़ाने में लगाने को कहते हैं, उसी प्रकार की मशीनें लाचार होकर कारख़ाने वाले को लगानी पड़ती हैं। पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं पर बड़े मज़बूत क़िले बनाए गए हैं। स्कूलों में बालकों को छोटी उम्र से ही सैनिक क़वायद सिखलाई जाती है और इसके लिए सेना के आदमी ही शिक्षक नियुक्त किए जाते हैं! इतने से भी सन्तोष न करके, वहाँ एक नए 'आफ़िज़-लैटी क़ानून' की रचना हो रही है, जिसके द्वारा वहाँ के

फ़्रान्स से मशीनगनें और टैङ्क मिलते हैं और उसकी सेना फ़्रान्सीसी सेना के ढङ्ग पर ही सङ्गठित की गई है!

पोलैण्ड का देश गत महासमर से पूर्व रूस के अधीन था। उसका कुछ अंश जर्मनी और ऑस्ट्रिया में भी शामिल था। सन्धि के अनुसार उसके तमाम बिखरे हुए हिस्सों को मिला कर एक नवीन राज्य की स्थापना की गई, जो कहने के लिए प्रजातन्त्र है, पर वास्तव में वहाँ सैनिक शासन प्रचलित है। इस समय वह फ़्रान्स का आन्तरिक मित्र बना हुआ है और सैनिक तैयारी में उसी का अनुकरण कर रहा है। वह अपनी आमदनी में से ३८ सैकड़ा इस कार्य में ख़र्च करता है, इसके सिवाय फ़्रान्स से जो मदद पा जाता है वह अलग!! उसकी सेना में १२१ सेनापति, ९०० कर्नल, १७ हज़ार अफ़सर और ३७ हज़ार छोटे अफ़सर हैं। सिपाहियों की संख्या २

सोलह से लेकर साठ वर्ष तक के प्रत्येक पुरुष से सेना-सम्बन्धी काम लिया जा सकेगा!!

इटली की फ़ैसिस्ट सरकार, जिसका प्रधान मुसोलिनी है, सैनिकता के लिए संसार में प्रसिद्ध है। मुसोलिनी इटली के प्राचीन वैभव का स्वप्न देखता रहता है जबकि वहाँ की रोमन जाति का डङ्का समस्त यूरोप में बजता था। यद्यपि वहाँ पर सेना पर व्यय अधिक नहीं किया जाता, पर फ़ैसिस्ट आन्दोलन के प्रभाव से वहाँ की जनता में सैनिक भाव कूट-कूट कर भरे जा रहे हैं। वहाँ की सेना की संख्या क़रीब चार लाख है और युद्ध के अवसर पर ४०-५० लाख सिपाही मैदान में आ सकते हैं! इटली में लड़ाकू हवाई जहाज़ों, मोटरों, टारपिडो आदि की भी इतनी तरक़्क़ी की गई है कि बड़े-बड़े देशों को भी उससे डरना पड़ता है। वहाँ की साठ हज़ार पुलिस और तेईस हज़ार चुङ्गी वाले भी पूरे फ़ौजी सिपाही हैं। गोली-बारूद का मुसोलिनी ने ऐसा प्रबन्ध किया है कि युद्ध-काल में समस्त सेना को काफ़ी युद्ध-सामग्री मिल सकती है। शारीरिक शक्ति के खेलों का इटली में ज़ोरों से प्रचार हो रहा है और मुसोलिनी स्वयं उन सब में भाग लेता है। वहाँ पर ऐसी अनेकों संस्थाएँ क़ायम हैं जो आठ से चालीस वर्ष तक के पुरुषों को सैनिक शिक्षा देती हैं। इटली की सेना को देख कर फ़्रान्स सदा शङ्कित बना रहता है। मुसोलिनी ने अलबेनिया को सैनिक सामग्री की सहायता देकर अपना साथी बना लिया है और वह स्पेन, हङ्गरी, बलगेरिया, ग्रीस और टर्की से भी मित्रवत व्यवहार रखता है।

अब बच गया रूस, जिसे एक प्रकार से यूरोप वालों ने जाति बाहर कर रक्खा है, और जिसकी सेना तथा राजनीति संसार के लिए रहस्य की चीज़ है। रूस की शासन-पद्धति इस समय संसार के समस्त देशों से भिन्न है, और इस कारण सब लोग उसे इस प्रकार देखते हैं, जैसे किसी दूर देश से लाए हुए अजीब प्राणी को! साथ ही उनको भय भी लगा रहता है कि कहीं इस नवीन शासन-पद्धति की छूत हमारे यहाँ भी न लग जाय और हमारे सुख-शान्ति को भङ्ग न कर दे! इस कारण वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सदा उसका विरोध किया करते हैं, सदा इसके अहित की कामना करते रहते हैं, और यदि किसी प्रकार आज उसका नाम-निशान मिट जाय तो इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि इन समस्त देशों की सरकारें और प्रभावशाली लोग अत्यन्त प्रसन्न हों!

रूस भी अपनी स्थिति को भली भाँति समझता है और इन 'शुभचिन्तकों' के आन्तरिक भावों की तरफ़ से भी वह बेख़बर नहीं है। इसलिए वह सदा आत्म-रक्षा के लिए तैयार रहता है, और इसीलिए वहाँ की सैनिक योजना सब से बढ़ कर है। उसकी नियमित सेना और रिज़र्व सेना की संख्या बहुत अधिक है। पुरुष और स्त्री दोनों वहाँ सैनिक सेवा के लिए बाध्य हैं। शान्ति के समय में स्त्रियाँ अगर राज़ी हों तो पुरुषों के समान ही सेना में प्रवेश कर सकती हैं। नियमित सेना के सिपाहियों को २१ साल से ३० साल की उम्र तक नौकरी करनी पड़ती है। जो लोग सेना में नौकरी नहीं करते उनको छः महीने में सेना-सम्बन्धी साधारण अभ्यास करा दिया जाता है। यह छः महीने का अभ्यास पाँच वर्ष के भीतर कराया जाता है। हथियार रख सकने का अधिकार श्रमजीवियों को ही है। मालदार लोग हथियार नहीं रख सकते और युद्ध के समय उनको श्रमजीवियों के आगे रक्खे जाने का नियम है!!

रूस की स्थायी सेना की संख्या ५ लाख ६२ हज़ार है। पर जो लोग छः महीने की शिक्षा पाते रहते हैं उनको भी शामिल कर देने से रूस हर समय क़रीब १२ लाख सिपाही युद्ध-क्षेत्र में भेज सकता है। उनकी रिज़र्व सेना की संख्या किसी को निश्चित रूप से मालूम नहीं।

अनुमानतः यह १ करोड़ २० लाख समझी जाती है, पर इनमें से सैनिक शिक्षा प्राप्त लोगों की संख्या ७२ लाख से अधिक नहीं है। रूस की सेना में आज्ञा-पालन पर बड़ा ज़ोर दिया जाता है और इस सम्बन्ध के अपराधों पर बड़ा कड़ा दण्ड दिया जाता है। वहाँ पर स्थायी सेना के सिपाहियों को वेतन तो कम मिलता है, पर मकान, ईंधन, रसद आदि के सम्बन्ध में उनको ऐसी कितनी ही सुविधाएँ प्राप्त हैं, जिससे सेना की नौकरी लोग पसन्द करते हैं। जो व्यक्ति पूरे बीस वर्ष तक सेना में नौकरी कर लेता है, उसको पूरी तनख़ाह की पेन्शन दी जाती है !

रूस में सैनिक शिक्षा के लिए सात यूनीवर्सिटियाँ और कितने ही स्कूल हैं। शारीरिक व्यायाम पर भी बहुत ज़ोर दिया जाता है। शारीरिक शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बालक के लिए अनिवार्य है। १६ वर्ष से १६ वर्ष तक लड़कों को सरकारी अधिकारियों के निरीक्षण में विशेष रूप से शारीरिक शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। छोटे बच्चों को बम फेंकना और ज़हरीली गैस से बचने के लिए 'मॉस्क' लगाना सिखलाया जाता है। जनता में सैनिक शिक्षा का प्रचार करने के लिए कितनी ही सार्वजनिक संस्थाएँ भी खोली गई हैं। 'ओसोवियेचन' नाम की एक ही संस्था के सदस्यों की संख्या तीस लाख बतलाई जाती है। यह संस्था लोगों को हवाई और रासायनिक युद्ध-प्रणाली की शिक्षा देती है !!

कमनीय कामना

[कविवर पं० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध']

मिटे सकल सन्ताप विघ्न बाधा टल जावे।
घर-घर में आनन्द-वाद्य बजता दिखलावे।
जन-जन होवे सुखित लाभ कर वैभव सारा।
बहे सदा सब ओर शान्ति की सुन्दर धारा।
बिलसे पाकर भव-विभव—
सब बने सुर-सदन स्वर्ग सम।
हे त्रिभुवन भूप 'भविष्य' हो !
भारत-भू का भव्यतम !!

इस प्रकार समस्त यूरोप युद्ध की तैयारी में पागल हो रहा है। यद्यपि जर्मनी और उसके साथी ऑस्ट्रिया आदि सन्धि की शर्तों के कारण इस विषय में बहुत पिछड़े हुए हैं, पर यदि अन्य समस्त देश इसी प्रकार आगे बढ़ते रहे और उनकी भीषण तैयारियों का अन्त न हुआ, तो जर्मनी आदि भी सैनिक तैयारी के लिए उद्योग करने लगेंगे और लड़-झगड़ कर अपने लिए कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेंगे। इसका अन्तिम परिणाम क्या होगा, यह किसी समझदार आदमी को बतलाने की ज़रूरत नहीं।

भीषण सैनिक व्यय के कारण इसी समय अनेक देशों का दिवाला निकला जा रहा है और यही दशा रही तो वह दिन दूर नहीं, जबकि समस्त यूरोप दिवालिया बन जायगा। उस समय उनको सिवाय इसके कुछ न सूझेगा कि दूसरे राष्ट्रों को लूट कर अपना पेट भरें। सैनिक तैयारी के बल पर सबके दिमाग़ आसमान पर चढ़ ही रहे हैं। बस जहाँ ज़रा सा बहाना मिला कि युद्ध की अग्नि जलने लगेगी और यूरोप में गत महासमर से भी कहीं भयङ्कर दृश्य उपस्थित हो जायगा। अमेरिका का इतिहास बहुत लम्बा है ; सुविधानुसार किसी आगामी अङ्क में इस प्रदेश की पोल खोली जायगी—पाठकगण ज़रा धैर्य्य रक्खें !!

*   *   *

नवयुवकों के प्रति—

स्वामी विवेकानन्द जी को, यद्यपि सर्वसाधारण एक धर्म-प्रचारक और साधु ही मानते हैं, पर वास्तव में वे भारत के एक बहुत बड़े राजनीतिज्ञ और समाज-सुधारक थे। आज भारत जिस पथ का अनुसरण कर रहा है और उसने अपना जो ध्येय बनाया है, उसका दिग्दर्शन स्वामी विवेकानन्द ने अब से तीस-चालीस वर्ष पूर्व विशद रूप से करा दिया था। पाठक देखेंगे कि नीचे दिए हुए लेख में उन्होंने भारतीय नवयुवकों के सामने जो आदर्श रक्खा है, ठीक उसी पर आज महात्मा गाँधी भारतीय आन्दोलन को अग्रसर कर रहे हैं :—

भाइयो, यह बड़े शर्म की बात है कि दूसरे देश हिन्दू-जाति पर दुर्गुणों के जो लाञ्छन लगाते हैं, वे हमारे ही कारण उत्पन्न हुए हैं। हमारे दुर्गुणों के कारण भारत की दूसरी जातियाँ भी हमारे साथ ही बदनाम हो गई हैं। परन्तु यह ईश्वर की ही कृपा है कि हमने अपने उन दोषों को पहचान लिया है। अब केवल हम ही उन दुर्गुणों पर विजय प्राप्त न करेंगे, परन्तु भारत की समस्त जातियों को अनन्त धर्म की उच्च भावनाओं का आदर्श प्राप्त करने में सहायता पहुँचाएँगे।

सब से पहले हमें ग़ुलामी का वह चिह्न निकाल कर फेंक देना चाहिए, जो प्रकृति सदैव ग़ुलाम-जाति के मस्तक पर अङ्कित कर देती है ; वह है द्वेष। किसी से द्वेष न करो। सदैव भलाई करने वाले की सहायता करने के लिए तत्पर रहो। तीनों लोकों में प्रत्येक जीव के कल्याण की कामना करो।

हमें हर एक धर्म के उस अनन्त सत्य पर अवलम्बित रहना चाहिए; जिस पर हिन्दुओं, बौद्धों और जैनों का एक सा विश्वास है, और वह है सत्य, मनुष्य की अजर, अमर और अनन्त आत्मा, जिसके गुण गाते-गाते वेद, थक गए। ऊँचे से ऊँचे देवता और स्त्री-पुरुष से लेकर तुम्हारे पैरों के नीचे सरकने वाले तुच्छ जीव तक में एक ही सी आत्मा विराजमान है। उनमें किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

आत्मा की अनन्त शक्ति का प्रभाव यदि पुद्गल पर पड़ता है तो हमारा भौतिक विकास होता है। यदि उस शक्ति से हम विचार और मनन का कार्य लेते हैं तो उससे हमारे ज्ञान का विकास होगा। यदि इस अनन्त शक्ति का प्रभाव स्वयं आत्मा पर पड़ता है तब उसकी परम ज्योति प्रकाशवान हो जाती है और अन्त में वह ईश्वर में लीन हो जाता है।

पहले स्वयं देवता बनो और तब दूसरों को बनाओ। "बनो और बनाओ" इस सिद्धान्त को कभी न भूलो ; इसी को अपना आदर्श बना लो। यह कभी अपने मुँह से न कहो कि मनुष्य पापी है। उससे सदैव यही कहो कि वह ईश्वर का अवतार है ; उसमें परमब्रह्म की दिव्य ज्योति चमकती है।

यदि तुम्हारा कमरा अँधेरे से आच्छादित है तो केवल प्रकाश की रट लगाने और उसके ध्यान मात्र से कमरे में प्रकाश न आ जायगा ; वरन् उसके अन्दर प्रकाश लाने से ही वह प्रकाशवान होगा। यह याद रक्खो कि जो नाशवान है, जो केवल विवादात्मक है, जो क्षणभङ्गुर है, उसका अस्तित्व संसार में कभी नहीं रह सकता। अस्तित्व उसी का रहेगा जो अमर है, जो विवाद से परे है और जो विधायक है। यह कहो कि—'हमारा अस्तित्व ही ईश्वर का अस्तित्व है—हम ईश्वर हैं'—और दृढ़तापूर्वक अपना पैर आगे बढ़ाओ। अपने भौतिक शरीर का नहीं, अपनी आत्मा का विकास करो। जिन पदार्थों का नामकरण हो सकता है और जिनका रूप है वे सब उनके अधीन हैं, जिनके नाम और रूप नहीं होते। श्रुतियों में इसी सत्य का निरूपण किया गया है। अपनी आत्मा को उज्ज्वल और प्रकाशवान बनाओ, अँधेरे का स्वयं नाश हो जायगा। वेदान्त-रूपी शेर की गर्जना सुन कर लोमड़ियाँ अपने आप अपनी गुफ़ाओं में भाग जायँगी। अपनी समस्त शक्तियों को एकत्र कर जीवन के उच्च आदर्शों का प्रचार करो, उनके परिणामों की परवाह न करो; वे तो स्वयं अपना रङ्ग खिला देंगे। रसायन के तत्वों को मिला दो; उनसे चमकदार कण (Crystal) तो अपने आप बन जावेंगे। पहिले अपनी आत्मा को पवित्र और बलिष्ठ बना लो। उसे विकास की चरम सीमा तक पहुँचा दो और फिर समस्त भारत में, और हो सके तो संसार भर में, उसका प्रकाश फैला दो। उसकी शक्ति से वायु-मण्डल आच्छादित कर दो ; और उसके अतुल प्रभाव का जो परिणाम होगा उसे तुम्हें कहीं ढूँढने न जाना पड़ेगा।

अपनी अन्तरात्मा में ईश्वर का अनुभव करो और तुम देखोगे कि तुम्हारे चारों ओर इच्छित वायु-मण्डल तैयार हो गया है। वेदों में वर्णित इन्द्र और विरोचन का उदाहरण याद रक्खो। दोनों को यही शिक्षा दी गई थी कि वे ईश्वर के अवतार हैं। असुर विरोचन ने अपने जड़ शरीर को ईश्वरीय मान लिया। परन्तु इन्द्र उच्च देव-योनि का था, उसने उसका सच्चा अर्थ समझ लिया कि ईश्वरीय अंश का मतलब आत्मा से है। तुम इन्द्र की सन्तान हो; देवताओं के कुलों में तुम्हारा जन्म हुआ है। पुद्गल तुम्हारा ईश्वर कभी नहीं हो सकता; शरीर को तुम ईश्वर का अवतार नहीं मान सकते।

भारत का उद्धार शारीरिक शक्ति और पशुबल से नहीं हो सकता ; उसकी उन्नति और चरम विकास के लिए तो आत्म-बल की आवश्यकता है ; उसकी प्रतिष्ठा युद्ध में विजय-पताका फहराने और नरमेध रचने से नहीं बढ़ सकती; उसके लिए तो उसे संन्यासी के वेष में शान्ति और प्रेम की धारा प्रवाहित करनी पड़ेगी। धन और वैभव की शक्ति नहीं, बल्कि साधु के भिक्षा-पात्र की शक्ति ही उसका मान बढ़ाएगी। कभी अपने मुँह से ऐसा उच्चारण न निकालो कि तुम कमज़ोर हो; तुम्हारी आत्मा अनन्त शक्ति सम्पन्न है। उन मुट्ठी भर नवजवानों को तो याद करो, जिन्होंने स्वामी रामकृष्ण से ईश्वरीय बोध प्राप्त किया था और उसी वेदान्त का ढिंढोरा उन्होंने आसाम से लेकर सिन्ध और हिमालय से लेकर, केप कामोरिन तक पीटा। उन्होंने पैदल ही बीस हज़ार फ़ीट ऊँची हिमालय की गगन-चुम्बी और बर्फ़ से आच्छादित चोटियों को पार कर तिब्बत के रहस्यों का पता लगाया। भिक्षा

उनकी जीविका थी; और वस्त्र थे पुराने चिथड़े; कई जगह वे गवर्नमेण्ट के शिकञ्जे में फँस गए; पुलिस ने गिरफ़्तार कर उन्हें जेल में ठूँस दिया; परन्तु जब उनके भोलेपन और उनके आदर्श पर उन्हें विश्वास हो गया तब वे मुक्त कर दिए गए।

अभी वे संख्या में केवल बीस हैं। कल उन्हें तुम दो हज़ार बना दो। तुम्हारे देश को उनकी ज़रूरत है; संसार वेदान्त के पवित्र स्रोत के जल के लिए तृषित हो गया है, वह अनिमेष नेत्रों से उनकी ओर टकटकी लगाए है। अपनी आत्मा में ईश्वरीय अंश को बोध करो; इस से तुम भूख और प्यास, शीत और उष्णता के कष्ट सहने के लिए तैयार हो जाओगे। दूसरे देशों के धन और वैभव की गोदी में पले हुए लोग सुन्दर महलों में रह कर और सुरा और सुन्दरी का उपभोग करते हुए धर्म के थोड़े से अध्ययन और साधारण नियमों के पालन से भले ही सन्तोष धारण कर लें; परन्तु भारत उतने से सन्तोष नहीं कर सकता। धर्म और दर्शन उसके प्राण हैं; वेदान्त, उपनिषद् और गीता उसके भोजन हैं और सत्य उसका पथ है। तुम्हें तो वैभव को ठुकरा देना होगा, अपने इस आदर्श के लिए, सुख और भोग, सुरा और सुन्दरी को तिलाञ्जलि देनी होगी। आदर्श बनो। बिना त्याग और बलिदान के कोई काल आदर्श नहीं हो सकता। संसार की उत्पत्ति के लिए 'पुरुष' ने स्वयं अपना बलिदान कर, तुम्हारे सामने उदाहरण रख दिया है। अपने सुख, आनन्द, यश, मान, मर्यादा यहाँ तक कि अपने जीवन तक का बलिदान कर दो और उन त्याग और आत्म-बलिदानों की कड़ियों को जोड़ कर एक ऐसा पुल तैयार कर दो जिस पर से संसार के अगणित मनुष्य जीवन-समुद्र के पार हो सकें। सत्य, न्याय और त्याग आदि अच्छे गुणों को एकत्रित कर लो। इस बात की परवाह न करो कि तुम किसके झण्डे की छाया में अग्रसर होगे। इसकी परवाह न करो कि तुम्हारा रङ्ग क्या है। चाहे वह हरा हो या नीला या लाल; तुम तो उन सभों को मिला दो और उससे प्रेम का शुद्ध, गहरा और अत्यन्त चमकीला रङ्ग तैयार करो।

हमारा कार्य तो केवल कर्त्तव्य करना है, उसके परिणामों से हमारा कुछ सम्बन्ध नहीं। यदि समाज की कोई रूढ़ि, उसका कोई बन्धन तुम्हें ईश्वर बनने से रोकता है तो तुम्हारी आत्म-शक्ति के सामने वे सब चकनाचूर हो जायँगे और तुम्हारा कण्टकमय मार्ग निष्कण्टक कर देंगे। मैं अपने भविष्य की ओर टकटकी नहीं लगाता, और न मुझे उसकी फ़िक्र ही है। मैं तो सुदूर अन्तरिक्ष में अपनी कल्पना के स्वर्गीय राज्य में एक सुन्दर दृश्य देख रहा हूँ। मैं देख रहा हूँ कि प्राचीन 'माता' एक बार फिर निद्रा से जागृत हो गई है और अपने पूर्व वैभव और गौरव से रत्न-जटित सिंहासन पर बैठी है। यौवन का जो तेज और प्रतिभा आज उसके मस्तक पर चमक रही है वैसी कभी नहीं चमकी। प्रेम और शान्ति की श्रद्धाञ्जलि उसके चरणों में अर्पण कर, संसार को उसके इस नए रूप का सन्देश सुना दो।

* * *

हम क्या करें ?

भारतीय महिलाओं में अपनी दुरवस्था और पतन का ज्ञान धीरे-धीरे फैलता जाता है और वे क्रमशः सामाजिक क्रान्ति की ओर अग्रसर होती जाती हैं 'स्त्री-धर्म' (मद्रास) में प्रकाशित एक लेख से इस समस्या पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। उसकी लेखिका भारतीय महिलाओं की वर्तमान प्रगति से सन्तुष्ट नहीं हैं और उनकी सम्मति में असाधारण उपायों से काम लेकर समाज में हलचल मचा देनी चाहिए। आपने लिखा है—

भारतीय महिलाओं का कर्त्तव्य है कि वे केवल देश को स्वतन्त्र बनाने में ही सहायता न करें, बल्कि देश के साथ ही साथ अपना मार्ग भी स्वतन्त्र एवं सरल बनावें। अभी तक भारत में स्त्रियों की स्वतन्त्रता का आन्दोलन केवल थोड़े से पढ़े-लिखे और अमीर घरों के पुरुषों तक ही परिमित रहा है। परन्तु इस आन्दोलन को यदि सच-मुच सफल बनाना हो तो भारत के घर-घर में इस स्त्री-सङ्गठन के आन्दोलन को पहुँचा देना चाहिए। इसी उपाय से यह आन्दोलन सफल हो सकता है। स्त्रियों के उद्धार का आन्दोलन किसी वर्ग विशेष या जाति के स्वार्थ के लिए नहीं है, बल्कि यह समस्त भारत के उद्धार का आन्दोलन होगा। बहिनो, यह वही भारतवर्ष है जिसकी सभ्यता की विजय-पताका किसी दिन समस्त संसार में फहराती थी और जिसके मस्तिष्क-बल ने संसार में समय-समय पर नवीन क्रान्ति को जन्म दिया था। वह सब तुम्हारी मातृ-शक्ति की मुस्तैद सत्ता ही तो थी। वही सत्ता पाने के लिए अब तुम्हें वास्तविक और सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र होना है। अभी तक तुम सिर्फ़ मनोरञ्जन की आलङ्कारिक वस्तु ही समझी जाती हो। तुम्हें सब प्रकार की उपलभ्य सुख-सामग्री प्रदान की जाती है; भाँति-भाँति के वस्त्र पहिना कर तुम्हें अप्सरा के रूप में सजाया जाता है; पर तुम्हें सच्ची स्वतन्त्रता के रूप का आभास तक भी मालूम होने नहीं दिया जाता! तुम पुरुषों की सहगामिनी समझी जाती हो। पर केवल भोग-विलास के क्षेत्र में; जहाँ सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों का प्रश्न उठता है वहाँ तुम मानवी अधिकारों से बिलकुल ही वञ्चित हो जाती हो। वहाँ तुम्हारी दशा एक जादूगर के थैले में (पिटारे में) रक्खी हुई उन चीज़ों के समान हो जाती है; जो लोगों का मनोरञ्जन करने के लिए वह उन वस्तुओं को मन्त्र द्वारा किसी दूसरे रूप में सजाता है और दर्शकों का मन बहला कर, अपने पैसे कमा कर फिर उन चीज़ों को टोकरे में रख चलता बनता है! यह है तुम्हारी व्यक्तित्व-हीनता का प्रत्यक्ष उदाहरण।

यह तो तुम्हारे धनी-घरानों की स्त्रियों की दशा है। परन्तु जिन स्त्रियों को ऐश्वर्य और आमोद के बीच उत्पन्न होने का सौभाग्य नहीं मिला है उनकी दशा अत्यन्त ही हीन है। भारत की ग़रीब स्त्रियों की दशा देखनी हो तो यहाँ के बड़े-बड़े कारख़ानों और पुतली-घरों में जाइए। जिन्हें देख कर रोमाञ्च हो आता है। बम्बई, कलकत्ता, अहमदाबाद आदि व्यावसायिक केन्द्रों में स्त्रियों की भीषण दुर्दशा देख यदि आपके पास हृदय होगा तो आप आँसू बहाए बिना नहीं रहेंगी। इन्हीं परिवर्तित परिस्थितियों को देख कर हम लोगों को पृथक रूप से अपना विचार आप करना पड़ता है।

आज, अङ्गरेज़ राजनीतिज्ञ भारतीय पुरुषों की तरह भारतीय स्त्रियों को भी हथियाने की चेष्टा में लगे हुए हैं। और तुम्हें यह कह कर फुसलाया जाता है कि अङ्गरेज़ी शिक्षा द्वारा तुम राष्ट्र की सम्पत्ति समझी जाओगी। उसी शिक्षा द्वारा जब तुम संसार-यात्रा करने निकलती हो यानी लण्डन, पेरिस, बर्लिन, वियेना, न्यूयॉर्क आदि घूम कर भारत लौटती हो तब तुम्हें तुम्हारी हीन दशा की सच्ची स्थिति का ज्ञान होता है। इसी से अब हमें चाहिए कि हम पुरुषों की आमोद की वस्तु न बन कर, उनकी सच्ची सहवासिनी बनें। अब हमें सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्र में पुरुषों के साथ होना चाहिए। तथा उन्हीं के समान सभी क्षेत्रों में उन्नति करने के लिए अग्रसर होना चाहिए। हमें अब पुरुषों के ऊपर निर्भर न होकर, अपना सङ्गठन आप करना चाहिए। चाहे वह हमारे कार्य में सहानुभूति दिखावें या नहीं। हमें स्त्रियों को इस प्रकार से उत्साहित करना चाहिए जिससे वे समाज के सुधार में शिक्षा-सञ्चालन और व्यवसाय-सङ्घों के कामों में, व राजनैतिक क्षेत्र में पूरी तरह से हाथ बटावें। स्त्रियों को अपनी ओर से इसमें किसी तरह की भी कमज़ोरी नहीं दिखानी चाहिए! उन्हें अब अच्छी तरह से यह प्रमाणित कर देना चाहिए कि वे अब इस क्रान्तिकारी युग में पुरुषों से किसी भी तरह कम नहीं हैं। वर्तमान क्रान्ति, स्त्रियो! अब तुम्हारे लिए यह नया सन्देशा लाई है। चूँकि तुम अभी तक दलित, हीन, अशिक्षित रही हो, इसीलिए यह भारतीय नवयुगी क्रान्ति तुम्हारे लिए सुधारों का, अधिकारों का, समानता का और पुरुषों के पहिले अपने को स्वतन्त्र बना लेने का स्वर्णमय युगोपहार लाई है; और कहती है—यह लो अपनी थाती सँभालो और अपने को साम्यवादी-समाज की रचना के कार्य में लगा दो! बहिनो! इसके लिए अब तुम्हें सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र बनना पड़ेगा। और तुम्हें स्वतन्त्र प्रेम का अधिकार प्राप्त करना पड़ेगा। अब तुम्हें अपनी वैवाहिक समस्या को दलालों, पण्डितों अथवा अपने माता-पिता के अन्ध-विश्वास पर निर्भर होकर हल नहीं करना होगा। अब तुम्हें अपने वैवाहिक जीवन के नियम किसी धर्म-शास्त्र के आधार पर अथवा किसी पैग़म्बर की व्यवस्था पर निर्भर नहीं रखने पड़ेंगे, अब तुम्हें सदियों से जकड़ी हुई समाज की कुरीतियों को एकदम तोड़ कर बाहर निकलना होगा। अब तुम्हें भारतीय मठों, मन्दिरों, मेलों और अन्य धार्मिक संस्थाओं को अत्याचार का सहायक समझना होगा। हम लोग स्वयं इन स्थानों की लीलाओं को देख कर इस वचन की सत्यता अनुभव कर सकती हैं कि ब्राह्मणों, साधु, सन्तों, गुरुओं ने हमें सच्चा धर्म सिखाने के बदले, हमारे हृदयों में धार्मिक विद्वेष भर कर हम लोगों को अपना ग़ुलाम बना रक्खा है।

यह बात अब हमें भली-भाँति समझ लेनी होगी कि अपनी दशा सुधारने के लिए जहाँ तक हो सके शीघ्रातिशीघ्र ऐसे लोगों से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया जावे, जो हमारे विकास में बाधक हो रहे हैं! आरम्भ में ऐसा भी होगा कि पुरानी कट्टरता के कारण लोग अपनी पत्नियों को, बहू-बेटियों को, बहिनों को इन सुधारों का समर्थक होने के कारण तरह-तरह के कष्ट देंगे और ऐसी शिक्षा व ऐसे वातावरणों से दूर रखने का उपाय करेंगे। परन्तु अब हमें सबके लिए तैयार होकर इसी क्रान्ति में अपनी क्रान्ति मचा देनी होगी। इस देश में पर्दे की प्रथा, बाल-विवाह, लड़कियों को बेचने की कुरीति आदि के विरुद्ध आवाज़ हमी लोगों को ही उठानी होगी। शारदा-क़ानून बना कर देश ने इच्छित दिशा में ही पैर बढ़ाया है। परन्तु हमें इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना होगा। बाल-विवाह की घातक प्रथा में जहाँ स्त्रियों की अशिक्षिता, उनका आर्थिक परावलम्बन, उनकी शारीरिक दुरवस्था आदि बहुत सी कठिनाइयाँ हैं उन्हें हमें ही पूरा करने में सब से पहिले प्रयत्नशील होना पड़ेगा। पुरुषों का प्रयत्न तो काफ़ी सा दिखता है। जहाँ की स्त्रियों में इस उच्च कोटि का आत्माभिमान, वीरत्व एवं सहनशक्ति होगी, वहाँ के पुरुषों में कदापि इतनी हिम्मत नहीं हो सकेगी कि वे उनके साथ किसी तरह का अन्याय कर सकें। देश की आन्तरिक शक्ति ही हमी लोगों पर निर्भर है। परन्तु हम स्त्रियाँ जब तक राष्ट्रीय सम्पत्ति नहीं बन सकतीं, तो किस बिरते पर समाज के आधे अङ्ग बनने का दावा कर सकती हैं? जब तक हम अपने को दृढ़ न बनावेंगी तब तक हम संसार में कुछ नहीं कर सकतीं। हम चाहे कितना ही असहयोग और सत्याग्रह करें और चर्खा चलावें, परन्तु हम उस समय तक स्वराज्य कभी भी नहीं पा सकतीं, जब तक कि हमारी जाति सुसङ्गठित नहीं है। और जब तक हम ऐसा

सङ्घ तैयार न कर लेंगीं, जो अपनी स्वतन्त्रता के लिए जीवन का बलिदान कर सकें! तभी हम भारतीय स्वराज्य के योग्य होंगे। जब कि स्वतन्त्र देशों में अब तक भी स्त्री-सङ्गठन की पुकार ज़ोरों से उठ रही है; तब क्या हमारा कर्त्तव्य नहीं कि भारत जैसे पराधीन देश में स्त्री-सङ्घ सुसङ्गठित करने के लिए पहिले ध्यान दें। दूसरे देश इतने थोड़े समय में क्यों इतनी जल्दी बढ़ सके, इसका कारण यही है कि उन देशों की भीतरी जड़ इतनी सुदृढ़, सुसङ्गठित हो गई कि कोई भी राष्ट्र उन्हें अपने अधीनता के पाश में नहीं बाँध सकता।

आज एक भारत ही ऐसा देश है जो तमाम संसार का आदर्श-पात्र था, अब घृणा का पात्र बन रहा है। कारण यही है कि भारत में भारतीय शक्ति की अवहेलना की गई और आज हम उसका अस्तित्व मिटा कर केवल उसकी अतीत स्मृतियों के बल के सहारे ही स्वराज्य पाने के आकांक्षी हैं। यदि हम संसार में अपने देश को आदरणीय बनाना चाहती हैं तो हमें स्वराज्य के पहले ही अपनी स्वतन्त्रता भारतीय समाज से वापस ले लेनी चाहिए। जब तक देश के, पुरुष-बच्चे, बूढ़े, जवान, धनी, ग़रीब, सभी सामाजिक रूप से स्वतन्त्र न हों, तब तक स्वराजी स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं। बीमार आदमी तभी पूर्णतः निरोग समझा जा सकता है, जब उसके अङ्ग-अङ्ग से बीमारी दूर हो जाय। जब तक स्त्रियाँ जड़मूर्ख, अशिक्षित, दबाई हुई और परतन्त्र रहेंगी तब तक भारतवर्ष स्वाधीन नहीं हो सकता। इस विषय में हम विदेशों का अनुकरण नहीं कर सकतीं, तो भी वहाँ से समयोचित शिक्षा ज़रूर ग्रहण कर सकती हैं। हमको उनके देश, काल और स्थिति का विचार करके शिक्षा द्वारा सच्ची स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न करना चाहिए। जो रोगी स्वयं ही रोग को बढ़ा रहा हो उसके लिए डॉक्टर अथवा उसकी दवाई क्या काम देगी। यही हाल भारत का है!

* * *

जेलें कैसी होनी चाहिएँ?

यह देख कर कि हज़ारों वर्षों से अपराधियों को जेलों की भीषण से भीषण यन्त्रणाएँ देने से भी मनुष्य-समाज में होने वाले अपराधों और पापों की संख्या घटने के बजाय बढ़ती ही जाती है, अनेक विचारकों के हृदय में यह प्रश्न उत्पन्न होने लगा है कि इस प्रथा में क्या सुधार किया जाय या इसकी जगह किस नवीन उपाय का अवलम्बन किया जाय जिससे इस अवस्था में सुधार हो सके। इस सम्बन्ध में रामकृष्ण मिशन द्वारा सञ्चालित 'मॉर्निङ्ग स्टार' में एक विचारपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें आध्यात्मिक दृष्टि से इस विषय की मीमांसा की गई है:—

समय की वर्तमान उथल-पुथल में जब कि संसार के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक विचारों में परिवर्तन हो रहा है; यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि लोगों का ध्यान जेलों के सुधार की ओर आकर्षित होता है और वे या तो उसके प्राचीन और मध्यकालिक नियमों को तोड़ कर नए परिवर्तित नियमों का प्रवेश करना चाहते हैं, या जेल की पुरानी शासन-पद्धति को बिलकुल मिटा कर उसके स्थान में किसी नए विधान की योजना करना चाहते हैं। मनुष्य-जीवन के सामाजिक, धार्मिक और अन्य पहलुओं के जितने उच्च विचारक और दार्शनिक वर्तमान हैं, उनमें से सभी का यह मत है कि आजकल जेलों में जो विधान प्रचलित हैं उससे क़ैदियों के मस्तिष्क पर अत्यन्त घातक प्रभाव पड़ता है। यद्यपि इन विधानों में बहुत कुछ परिवर्तन हुए हैं, परन्तु अब भी भारत के प्रचलित विधान के कुछ दण्ड प्राचीन और मध्यकाल के बर्बर दण्डों से मिलते-जुलते हैं।

इस स्थान पर जेल-विधान का संक्षिप्त इतिहास देना असङ्गत न होगा। जेलें जिस रूप में आज वर्तमान हैं, उन्हें वह रूप न तो किसी जादूगर ने दिया है और न वे क्षण भर में उत्पन्न हुई थीं। उनकी उत्पत्ति तो हमारे पूर्वजों ने की थी। और सबसे आज तक सभ्यता की प्रगति के साथ उनमें अगणित परिवर्तन होते आए हैं। सभ्यता के प्रभात-काल में जब मनुष्य बिलकुल प्राकृतिक जीवन व्यतीत करते थे तब उनमें न तो अपनी सभ्यता और योग्यता ही थी और न वे अपराधियों के लिए जेल बनवाने की आवश्यकता ही समझते थे। परन्तु जब राज्य स्थापित होने लगे तब शासन का कार्य सुचारु रूप से चलाने और प्रजा में शान्ति फैलाने के लिए अपराधियों और विद्रोहियों को दण्डित करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। परन्तु ऐसे अपराधियों को कभी-कभी केवल नज़रबन्द रखने का दण्ड दिया जाता था। उस समय जेलें न थीं, अपराधियों को काल-कोठरी में बन्द कर भूखा और प्यासा रख कर मारा जाता था! जैसे-जैसे सभ्यता, शिक्षा और उन्नति की प्रगति हुई, वैसे ही वैसे इस अत्याचारी जेल-शासन में भी सुधारों का प्रवेश हो चला। वैसे तो अपराधियों को भूखा-प्यासा रख कर मारने की प्रथा थी, पर बाद में सुधारों के अनुसार जब कोई बड़ा आदमी, राजकुमार, राजा, मन्त्री या सरदार आदि क़ैद होता था तो उसके साथ इतनी निर्दयता का व्यवहार न किया जाता था। उसके पद और सम्मान के अनुसार उसके साथ दयालुता का व्यवहार होता था। कुछ समय बाद लोगों में इतनी जाग्रति और ज्ञान का प्रसार हो गया कि उन्हें थोड़े से अपराध पर आजन्म देश निकाले या फाँसी की सज़ा देने में अत्याचार और बर्बरता की बू आने लगी। इसके बाद जब लोग और भी अधिक सभ्यता और ज्ञान के प्रकाश में आने लगे तब जेल का शासन सुचारु-रूप से चलने लगा और अपराधियों को उनके अपराध के अनुसार ही कम या अधिक सज़ा दी जाने लगी। वर्तमान जेल-शासन इन्हीं उपर्युक्त पद्धतियों का विकसित रूप है। उनके इस विधान में भी अब सभ्यता और ज्ञान की द्रुतगति और मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तन की ज़रूरत मालूम होने लगी है!

यहाँ जेल-विधान के असली तत्व पर थोड़ा विचार करना आवश्यक मालूम होता है। भारतवर्ष में वेदान्त के अनुसार जितने आदमी पृथ्वी पर जन्म लेते हैं वे सभी 'पूर्ण' नहीं हो सकते। उनकी यह पूर्णता या अपूर्णता उनके पूर्व जन्म के कर्मों पर निर्भर रहती है। अपने पूर्व जन्म में उन्होंने जितने अधिक सुकृत किए होंगे वे उतने ही अधिक अच्छे अपने इस जन्म में हो सकेंगे। यदि उनके कर्म 'पूर्ण' पुरुष बनने के योग्य हो गए हैं तो वह इस जीवन से छुटकारा पाकर अवश्य ही ब्रह्म-ज्योति में मिल जायँगे। परन्तु यदि उन्होंने अपने पिछले जन्म में कुकर्म किए हैं तो उनसे इस जन्म में अच्छे कर्मों की अधिक आशा नहीं की जा सकती। उस जन्म के भले-बुरे कर्मों की मात्रा के अनुसार वह कुकर्मों में रत रहेंगे। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि अपने इस जन्म के अच्छे संस्कारों से पूर्व जन्म के कुसंस्कारों का वह नाश ही नहीं कर सकते। जिनकी उच्च भावनाएँ कुसंस्कारों के विचार से दब रही हों उन्हें यह सदैव याद रखना चाहिए कि 'मुक्त पुरुष' से लेकर दुराचारी से दुराचारी पुरुष तक में ईश्वर का अंश है। संसार में पतित जनों के ऐसे अगणित उदाहरण मौजूद हैं जो सेवा, त्याग और तपश्चर्या के द्वारा अपने जीवन को पवित्र और उच्च बना 'मुक्त' होकर परमपिता की अनन्त ज्योति में मिल जाते हैं। सुधारकों को मनुष्य के इस ईश्वरीय अंश का ध्यान रखते हुए जेलों के सुधार का आन्दोलन करना चाहिए।

आजकल जो मनुष्य अपनी दुर्बलताओं के कारण छोटा-मोटा अपराध कर बैठता है उसे सब जन-समाज, यहाँ तक कि नीच से नीच मनुष्य भी घृणा की दृष्टि से देखने लगता है। उस पर ताने कसता है, और कहता है कि वह 'ईश्वर के न्यायालय' (जेल) में जाकर सुधर जायगा। सभ्यता के इस विकास-काल में, जब कि मनुष्य जीवन के हर एक पहलू में निपुण माना जाने लगा है और प्रकृति के तत्वों तक पर विजय प्राप्त करने का दावा करता है, जेलों की वर्तमान पद्धति से अपराधियों के सुधार की आशा करना अत्यन्त सन्देहजनक मालूम पड़ता है। जेलों की इस प्राचीन और मध्यकालिक नीति का तो नाम-निशान मिटा देना पड़ेगा। और उसके स्थान पर एक ऐसी नई प्रणाली की स्थापना वेदान्त के इस सिद्धान्त पर करनी पड़ेगी, कि मनुष्य ईश्वर का अंश है और उसके जीवन का अन्तिम उद्देश्य उस परम ज्योति में मिल जाना है।

हर एक पढ़े-लिखे मनुष्य के हृदय में स्वभावतः यह प्रश्न उठ सकता है कि वर्तमान वायुमण्डल में पुराने विधानों की जड़ काटना और नए विधानों में सुधार करना किस प्रकार सम्भव है? जिन नराधमों ने निरपराधियों और निर्बलों की हत्या की है, अबलाओं के सतीत्व का अपहरण किया है, चोरी और डाके डाल कर अच्छे-अच्छे सम्माननीय आदमियों को दूसरे दिन दाने को मुहताज कर दिया है और जिन्होंने इसी प्रकार अन्य वीभत्स और जघन्य पाप किए हैं उनमें किस प्रकार ईश्वर का अंश माना जा सकता है। क्या इन विचारों के आधार पर जेल-शासन का नियन्त्रण होने से समाज के पीड़ित जन-समूह में त्राहि-त्राहि की आवाज़ न गूँज उठेगी, और समाज में उथल-पुथल न मच जावेगी? इन प्रश्नों का उत्तर बिलकुल सरलता से दिया जा सकता है। कोई यह बतला दे कि क्या प्राचीन काल के मनुष्य के हृदयों में, जो अपना जीवन खेती-किसानी और शिकार के द्वारा यापन करते थे, कभी इस भावना का भी उदय हुआ होगा कि जेलों का विधान और नियन्त्रण ऐसे सङ्गठित रूप में हो सकेगा, जैसा कि आज बीसवीं शताब्दी में हो रहा है? यदि इस विचार में सत्यता है तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि निकट भविष्य में जेलों के नियन्त्रण की नींव मनुष्य के इस विकसित और ईश्वरीय रूप पर स्थापित हो। सब से अधिक कठिनाई तो इस बात की है कि जेलों के वर्तमान शासन और नियन्त्रण के कारण हमारे चारों ओर एक ऐसा वायुमण्डल तैयार हो गया है कि उससे हमारे हृदय में ऐसी भावना का उदय ही नहीं होता कि जेल-विधान का उद्देश्य मनुष्य-जीवन को कुचलना और उसकी आत्मा को पतित करना नहीं, बल्कि अपराधी की आत्मा में जो ईश्वरीय अंश सुप्त और निस्तेज पड़ा है उसे जीवन के उच्च पथ पर अग्रसर कर जागृत कर देना है।

संसार में जब तक मनुष्य-समाज का अस्तित्व रहेगा तब तक यह स्वाभाविक है कि उसमें पाप-कर्म होते रहेंगे और अपराधियों का अस्तित्व बना रहेगा। दण्ड-विधान के आचार्य हम लोगों की अपेक्षा इस बात का जल्दी निर्णय कर सकते हैं कि अपराधी के पापों के अनुसार उनके सुधार की कौन सी योजना उपयुक्त हो सकती है। मोटी दृष्टि से अपराधी आयु और लिङ्ग, अपराध की गुरुता और जिसके ऊपर अत्याचार किया गया हो उसके सम्मान और पद के आधार पर विभाजित और दण्डित किए जा सकते हैं। जहाँ तक दण्ड का आयु से सम्बन्ध है नाबालिग़ लड़के-लड़कियों को किसी प्रकार का दण्ड न देना चाहिए, वरन उन्हें सुधार-संस्थाओं और स्कूलों में रख कर उच्च शिक्षा के द्वारा सुशिक्षित और सभ्य नागरिक बना देना चाहिए। समुचित शिक्षा द्वारा उनकी इच्छा-शक्ति, और आकांक्षाओं में परिवर्तन कर देना चाहिए,

जिससे उनके मस्तिष्क में दुर्भावनाओं का उदय ही न होने पावे और सुचारु शिक्षा द्वारा अपनी संस्कृति बदल कर वे अपने में ईश्वरीय अंश का अनुभव करने लगें। जेल के इस प्रकार के नियन्त्रण से ही उसका सच्चा उद्देश्य पूरा हो सकता है, अतीत-काल की क्रूर और निर्दयता-पूर्ण दण्ड-प्रथाओं का जो चिह्न—फाँसी अथवा ख़ून का बदला ख़ून—बच गया है, वह वर्तमान सभ्यता के माथे पर कलङ्क के सिवा कुछ नहीं है। मनुष्य के एक क्रूर कार्य के पाप के अपराध का बदला फाँसी से लेना उच्च ईश्वरीय सिद्धान्त का अपमान करना है! एक आदमी का अपराध, जो केवल धन के प्रलोभन में आकर किसी मनुष्य की हत्या कर डालता है, इतना भारी नहीं हो सकता कि समाज उसका बदला उस मनुष्य का ख़ून पीकर ले। आज तक न मालूम कितने मनुष्यों से ख़ून का बदला उनके ख़ून से लिया गया होगा; परन्तु क्या इससे हत्याएँ कम हो गईं? फाँसी के भय से भी इन क्रूर पापों की संख्या वैसी ही बनी हुई है, जैसी पहले थी। इससे मालूम होता है कि विधान की जड़ में ही त्रुटि है। इस सम्बन्ध में यदि हम अपना मन्तव्य प्रगट करने लायक़ हैं तो हम यही सलाह देंगे कि जेल-विधान में ऐसी सुधारक संस्थाओं की योजना होनी चाहिए जिनकी उच्च शिक्षा के सहारे अपराधी सभ्य बन कर अपने मस्तिष्क से उन क्रूर भावनाओं को दूर कर सकें जिनका दण्ड उनका ही ख़ून है।

ऐसी योजना के सहारे उनका सुधार होने और सभ्य नागरिक बनने की बहुत सम्भावना है। इसी प्रकार की योजनाएँ चोरों, ठगों और जन-समाज में अशान्ति फैलाने वालों के लिए भी होना चाहिए। इस प्रकार दण्ड-विधान और जेलों का उद्देश्य प्रतिकारार्थ कष्ट पहुँचाना, परिताप, वेदना और अपने अमूल्य मनुष्य-जीवन से हाथ धो, अगणित जातियों में भ्रमण कर उनका प्रायश्चित्त करना न रह जायगा, बल्कि उनसे उनकी आशा-लताओं पर पड़े हुए तुषार का अन्त हो जायगा; हृदय एक बार फिर अपनी वर्षों की छाई हुई मुर्दनी दूर कर, खिल उठेगा; मस्तिष्क जीवन के रहस्यों की खोज में व्यस्त हो जायगा और अन्तरात्मा अपने सुप्त ईश्वरीय अंश को शुद्ध कर सुख में लीन हो सकेगा।

इस प्रकार के सुधारों में अपनी वैयक्तिक और सामूहिक दोनों शक्तियाँ लगा देने की आवश्यकता है। इन उच्च सिद्धान्तों पर जेल-विधान की स्थापना करना कोई आसान काम नहीं है। उसके लिए पहिले जनता को उन सिद्धान्तों को समझा कर उसे जेल-विधान में परिवर्त्तन करने के पक्ष में करना होगा। परन्तु यह एकाएक न हो जायगा; इसके लिए बहुत धीरे-धीरे सावधानी से एक-एक मोरचा विजय करते हुए आगे बढ़ना होगा। जन-समाज को मनुष्य में ईश्वरीय अंश के अस्तित्व का भाव अच्छी तरह समझाना होगा और जब वह इस भाव को पूर्ण रूप से हृदयङ्गम कर लेगा तो थोड़े ही प्रयास से हम उन्हें अपने पक्ष में खींच सकेंगे। इसके बाद इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए जिन विधानों और संस्थाओं की आवश्यकता होगी वे तो अपने आप उत्पन्न हो जायँगी। सारांश यह कि जेल-विधान के सुधारकों के हृदय में यह अब पूर्ण रूप से बैठ जाना चाहिए कि एक क्रूर, पापी, दुराचारी, दर्पोन्मत्त और अत्याचारी अपराधी में ईश्वरीय अंश उसी रूप में स्थित है, जिस प्रकार एक ऊँचे से ऊँचे महापुरुष में; और उसके उस अंश की जागृति के लिए विधानों में परिवर्तन करने और ऐसी संस्थाएँ स्थापित करने की आवश्यकता है जिसके सहारे इसकी उच्च भावनाएँ और शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ विकसित हो जायँ।

* * *

मुसलमानी अन्तःपुरों में विद्रोह की आग

हाल ही में डिमॉस्कस में 'पूर्वीय स्त्रियों की कॉङ्ग्रेस' का अधिवेशन हुआ था, जिसमें प्रायः सभी मुसलमान देशों की स्त्री-प्रतिनिधि उपस्थित थीं। इस कॉङ्ग्रेस के द्वारा वहाँ की स्त्रियों ने पहिले-पहिल मुसलमानी रीति-रिवाजों की ग़ुलामी से पिण्ड छुड़ाने का प्रयत्न किया है। पहिले कुछ स्त्रियाँ अवश्य ही स्त्रियों में सुधार का आन्दोलन करती रही हैं, परन्तु इस प्रकार के आन्दोलन का, जिसमें प्रायः सभी देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया हो, यह पहिला ही अवसर था। इस कॉङ्ग्रेस में बहुत से यूरोपीय देशों की मुसलमान और ईसाई स्त्रियाँ भी उपस्थित थीं। कॉङ्ग्रेस ने निम्न प्रस्ताव पास किए हैं :—

विवाह और विवाह-विच्छेद

बहुत वाद-विवाद के पश्चात इस सम्बन्ध में यह प्रस्ताव पास हुआ कि पर्दे का रिवाज तोड़ दिया जाय और स्त्रियों को मुँह खोल कर बाज़ार में निकलने की आज्ञा दी जाय। यह भी निश्चय किया गया कि विवाह के पहिले दम्पति को एक-दूसरे को देखने की आज्ञा दी जाय; शादी के पहिले दहेज ठहराने की प्रथा उठा दी जाय; आजकल विवाह-विच्छेद के जो अधिकार पुरुषों को हैं, उसी प्रकार स्त्रियों को भी तलाक़ के अधिकार प्राप्त हों। क़ानून से विवाह की आयु कम से कम १८ साल नियत कर देना चाहिए; लड़के और लड़कियों, दोनों की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए; १४ वर्ष से नीचे की उमर के लड़के-लड़कियों से कोई जीविका कमाने का कार्य नहीं लिया जाना चाहिए और अरबी सभ्यता और उद्योग-धन्धों का ख़ूब प्रचार होना चाहिए।

शिक्षा की आवश्यकता

सीरिया की ईसाई महिला कुमारी नूरी हमदा ने कॉङ्ग्रेस की कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए स्त्रियों को पुरुषों की तरह शिक्षा सम्बन्धी सुविधाएँ देने पर बहुत अधिक ज़ोर दिया। परन्तु उन्होंने स्त्रियों को वोट देने के अधिकार पर यह राय दी कि इसके उपयुक्त अभी समय नहीं आया। इस प्रकार के सुधारों के लिए स्त्री-पुरुष दोनों में ही शिक्षा के प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है।

स्त्रियों के उत्थान की सब से प्रथम सीढ़ी धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुषों के मस्तिष्क से यह भाव निकाल देना है कि स्त्रियाँ उनकी ग़ुलाम और पैर की जूती हैं। स्त्रियों में आत्म-सम्मान और सच्चरित्रता के पुनर्जीवन करने के लिए लड़कियों की शिक्षा-पद्धति में परिवर्त्तन करने की बड़ी आवश्यकता है। पूर्वीय शहरों में आजकल स्त्रियों को जो शिक्षा दी जाती है वह उनके चरित्र का विकास करने के स्थान में उनका पतन करती है। अन्त में कुमारी नूरी हमदा ने धार्मिक भेद-भावों को दूर करने की प्रार्थना की।

बुर्क़ा और धर्म

मुसलमानी देशों में जितनी विकट समस्या पर्दे की है उतनी दूसरी नहीं। स्त्रियाँ यदि बुर्क़ा फाड़ कर फेंकती हैं तो वहाँ के पुरुष-समाज की इज़्ज़त और आत्म-सम्मान पर पानी फिरता है और यदि वे उस प्रथा की ग़ुलामी स्वीकार करती हैं तो उसकी वेदी पर स्वयं उनके जीवन का बलिदान होता है। इसलिए अधिवेशन भर में इसी विषय पर बहुत अधिक वाद-विवाद हुआ।

बहुत सी स्त्रियों ने अपनी वक्तृताओं में पर्दे का विरोध करते हुए कहा कि इसका प्रधान कारण सामाजिक है, धर्म का इससे कुछ सम्बन्ध नहीं। कुछ स्त्रियों ने धर्म-गुरुओं की साख देते हुए कहा कि धर्म, पर्दे को बहुत पवित्र मानता है और यदि यह प्रथा उठा दी जायगी तो मुसलमानी स्त्रियों पर धर्म-सङ्कट आ जायगा और वे विपत्ति के भँवर में फँस जायँगी।

इस वाद-विवाद में यह प्रश्न भी उपस्थित हुआ कि यदि पर्दे की प्रथा उठा दी जाय तो फिर स्त्रियों के सुधार का वेग कहाँ जाकर रुकेगा? यदि इस प्रथा के उपरान्त बिलकुल कपड़े न पहिनने का आन्दोलन प्रारम्भ हो जाय तो उसे कौन सी शक्ति रोकेगी? परन्तु दिन भर के इस प्रकार के वाद-विवाद के अनन्तर कॉङ्ग्रेस ने यही निश्चय किया कि पर्दे की प्रथा को समूल उड़ा देना चाहिए।

—लक्ष्मीदेवी, बी० ए०

* * *

एशियाई महिला-सङ्घ

संसार के हर एक महाद्वीप की कुछ न कुछ विशेषता रहती है। यूरोप, एशिया और अमेरिका के नाम लेते ही मस्तिष्क में भिन्न-भिन्न विचारों का उदय होने लगता है। एशिया, जहाँ संसार की आधी से अधिक जन-संख्या निवास करती है, यूरोप और आशावादी तरुण-अमेरिका से बिलकुल भिन्न है। परन्तु उनमें से हर एक ने अपनी भेंट से, संसार की सभ्यता और कला-कौशल के कोष का सम्वर्धन किया है। हर एक को मानवीय एकता की वृद्धि के लिए अपने व्यक्तित्व की रक्षा करना आवश्यक है।

जब कभी संसार के प्राचीन अभ्युदय का प्रश्न आता है तभी एशिया की सभ्यता आगे आती है। एशिया की सभ्यता वर्तमान यूरोपीय सभ्यता से बिलकुल भिन्न थी, वह आजकल के भौतिकवाद की पूजा नहीं करती थी और न उस समय मिलें, फ़ैक्टरियाँ और सुख के वर्तमान साधन ही थे। उनके स्थान में सादा और सरल कृषि-जीवन था। बाक़ी समय यहाँ के लोग सांसारिक सुख उपभोग के स्थान में पारमार्थिक सुख उपार्जन करने में लगाते थे। एशिया की सभ्यता जीवन के उच्च सिद्धान्तों का पाठ पढ़ाती थी; और उस सभ्यता का सच्चा पोषक था यहाँ का स्त्री-मण्डल। कला के आदर्श, दर्शन और अध्यात्मवाद और प्राकृतिक जीवन की जो शिक्षा एशिया ने संसार को दी है वह किसी दूसरे महाद्वीप ने नहीं दी। और एशिया के स्त्री-मण्डल को इसका बहुत कुछ श्रेय है। दुर्भाग्यवश आज वह अपना अस्तित्व भुला बैठा है। वहाँ की स्त्रियाँ समय के फेर से पतन के गड्ढे में गिर गई हैं। एक चीनी स्त्री को, जितना अपनी बर्मा निवासिनी बहिन का ज्ञान नहीं, उससे अधिक उसे अमेरिका की स्त्री का है। एक भारतीय महिला को जितना अपनी अफ़ग़ानिस्तान

और मेसोपोटामियाँ की पड़ोसियों का ज्ञान नहीं, उनका उसे अपनी एक भिटिश।भगिनी का है।

स्त्रियों की इस अनभिज्ञता का प्रधान कारण है पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव। इस सभ्यता ने उनके चारों।ओर एक ऐसा वायु-मण्डल तैयार कर दिया है जिसके कारण वे एशिया को बिलकुल भूल गई हैं। पश्चिमीय सभ्यता की इस धारा ने जापान को अपनी बार लहर से एक ही परिप्लावित कर दिया है, उसने अपने प्रबल प्रवाह।में तुर्किस्तान को बहा दिया और अब बड़े वेग से उसने अपना रुख भारत की ओर किया है। इस बृहत नद में एशिया की सभ्यता और उसके अस्तित्व की थाह लेने और उसकी रक्षा करने का अब केवल यही मार्ग शेष रह गया है कि समस्त एशिया का मातृ-मण्डल एकत्र होकर उसकी चेष्टा करे।

दाम्पत्य-प्रेम

देश-देश की स्त्रियाँ एकत्र होकर अपनी संस्कृति की समस्याओं को हल करें और उनके भेदों का पता लगा कर उन्हें निकाल दें और इस प्रकार समस्त एशिया की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में सन्धि स्थापित करने की चेष्टा करें। महाद्वीप भर के देशों की स्त्रियों के सम्मेलन से वे अपनी आदि शक्ति और सभ्यता के सच्चे आदर्श से।परिचित हो जायँगी और इस प्रकार केवल एशिया में ही नहीं, संसार में शान्ति का राज्य स्थापित कर सकेंगी।

भारतीय महिलाओं में कुछ वर्षों से एक नई जागृति उत्पन्न हो गई है और उसके कारण वे अपनी समस्याओं पर विचार करने के लिए वर्ष में एक बार एकत्र भी होने लगी हैं। होनोलूलू में जो कॉन्फ्रेन्स हुई थी उससे पाश्चात्य और पूर्वीय स्त्रियों के विचार-विनिमय में बहुत अधिक सहायता मिली थी; और यूरोप और अमेरिका में तो स्त्रियों का सङ्गठन इतना दृढ़ हो गया है कि पुरुषों की तरह ही उन्होंने प्रायः समान्त कार्य-क्षेत्रों में अधिकार प्राप्त कर लिया है। परन्तु अभी तक एशिया में स्त्रियों का ऐसा कोई सङ्गठन नहीं है जिसके द्वारा वे अपने स्वत्व पहचान सकें।

भारतमाता एशिया के समस्त धर्मों और सभ्यताओं की सदैव धात्री।रही है। पश्चिम से आकर भारत में इस्लाम ने विश्रान्ति ली है और उत्तर से आर्य-सभ्यता ने, और बौद्ध धर्म और सभ्यता की तो उसे जननी होने का सौभाग्य प्राप्त है। क्या उसे अपनी इन कन्याओं को अपने परिवार में बुलाने का अधिकार नहीं है जिससे वे सब सम्मिलित होकर अपने गुण-दोषों का पारायण कर सकें, अपनी तथा संसार की सेवा के लिए अपने को सङ्गठित कर सकें; अपने अनुभवों, विचारों और ज्ञान-विनिमय से अपने को दृढ़ बना सकें और अज्ञान तथा बढ़ती हुई मृत्यु-संख्या को दूर करने और अपने राष्ट्रीय अधिकारों को प्राप्त करने के उपाय ढूँढ़ सकें। जापान, कोरिया, चीन, ब्रह्मा, भारत, जावा, अफ़ग़ानिस्तान, तिब्बत, अरब, फ़ारस और तुर्किस्तान आदि देशों की स्त्रियाँ यदि इस प्रकार सङ्गठित हो जावें तो एशिया की सभ्यता और संस्कृति की किरणें एक बार फिर संसार में अपना प्रकाश फैला दें।*

—आर० एस०

* * *

*'स्त्री-धर्म' के एक लेख के आधार पर

संसार की महिलाओं की प्रगति

दक्षिण अफ़्रिका

अन्त में बहुत वाद-विवाद के बाद दक्षिण अफ़्रिका की स्त्रियों को 'वोट' का अधिकार प्राप्त हो ही गया! उनके पक्ष में ३० सदस्य थे और विपक्ष में केवल ६। परन्तु यह अधिकार केवल गोरी स्त्रियों को प्राप्त हुआ है।

—९ सितम्बर को दक्षिण अफरीका की मिस पैगी डङ्कन नाम की युवती ने इङ्गलिश चैनल के २१ मील चौड़े पाट को १६॥ घण्टे में तैर कर पार किया। चार साल पहिले मिस इडर्ली ने चैनल को १४॥ घण्टे में पार किया था और।अभी तक कोई उससे बाजी नहीं मार सका है।

इङ्गलैण्ड

—इङ्गलैण्ड के चारों ओर हवाई जहाज़ों की दौड़ के लिए सम्राट ने जो 'कप' पुरुस्कार स्वरूप देना निर्धारित किया था वह कुमारी विनीफ्रैड ब्राउन ने जीत लिया। इस दौड़में ७२ पुरुष और ६ महिलाएँ सम्मिलित हुई थीं; उनमें से चार महिलाएँ प्रथम दस उड़ाकों में आईं!

बन्दूक़ से लक्ष्यवेध करने की प्रतिस्पर्धा में कुमारी फ़ॉस्टा मारजरी ने सम्राट का सर्व प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। इस प्रतिस्पर्धा में उन्होंने संसार के बड़े-बड़े ९९ लक्ष्यवेधकों को परास्त करके बड़ी ख्यातिलाभ की है!

ब्रिटिश पार्लामेण्ट की सदस्या कुमारी सूसान लॉरेन्स ब्रिटेन की ओर से सितम्बर में होने वाली 'लीग की असेम्बली' के लिए प्रतिनिधि नियुक्त हुई हैं। श्रीमती हैमिल्टन उनकी सहायक प्रतिनिधि नियुक्त हुई हैं।

ऑक्सफ़र्ड के कृषि-सम्मेलन में कुमारी एञ्जीला केव को सर्वोत्तम कविता की रचना पर सर्व-प्रथम पुरस्कार मिला है।

न्यूफ़ाउन्डलैण्ड

न्यूफ़ाउण्डलैण्ड की पार्लामेण्ट में वहीं के प्रधान मन्त्री की पत्नी लेडी स्क्वायर्स सदस्या चुनी गई हैं। एक महिला के चुनाव का वहाँ यह पहिला ही अवसर है। आशा है इनके चुनाव से ब्रिटेन के सब से पुराने उपनिवेश की स्त्रियों में जागृति फैलेगी।

पैलेस्टाइन

जेरूसलम की हिब्रू यूनीवर्सिटी के रजिस्ट्रार की धर्मपत्नी श्रीमती जिन्सबर्ग सात वर्षों तक पैलेस्टाइन की कचहरी में वकालत करने के अधिकार के लिए लगातार झगड़ती रही हैं। सन् १९२२ में ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने पैलेस्टाइन की कचहरी में स्त्रियों को वकालत के अधिकार से वञ्चित कर दिया था। बाद में उन्होंने वहाँ के चीफ़ जस्टिस पर दबाव डाल कर वकालत की परीक्षा में प्रविष्ट होने की आज्ञा ले ली। उनके वकील ने टर्की और इजिप्ट के उदाहरण सम्मुख रख इस बात पर ज़ोर दिया कि जब वहाँ की मुसलमान स्त्रियों को वकालत करने का अधिकार है तो यहाँ स्त्रियों को उस अधिकार से क्यों वञ्चित रक्खा जाय। इसका परिणाम यह हुआ कि वहाँ की 'विशिष्ट अदालत' (Supreme Court) के दो ब्रिटिश और एक अरबी जज ने मिल कर यह फ़ैसला दिया कि ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद से वहाँ कोई ऐसा क़ानून नहीं बना जिसमें स्त्रियों को वकालत करने से रोका गया हो। इसके आधार पर इसी वर्ष की १९ फ़रवरी से वहाँ की स्त्रियों को वकालत करने का अधिकार प्राप्त हो गया है!

* * *

राष्ट्र का नव-निर्माण

[आचार्य चतुरसेन जी शास्त्री]

मैं सुधारक नहीं, क्रान्तिवादी हूँ। मैं भारतीय राष्ट्र को सुधारना नहीं—उसे विध्वंस करके फिर से उसका-नव निर्माण किया चाहता हूँ। भारतीय राष्ट्र में जितना विरोध, जितने खण्ड, जितने दोष और पाप, मैल भरे हैं, उन्हें देखते कोई भी बुद्धिमान इसके सुधार की आशा नहीं कर सकता। स्वामी दयानन्द, राजा राम-मोहन राय और अनेक आधुनिक महापुरुषों ने इस उन्नीसवीं शताब्दी में, और इससे प्रथम दूर तक के इति-हास के सिलसिले में, प्रबल सुधारवाद का आयोजन किया; परन्तु फल यही हुआ कि एक नया खण्ड, नया सम्प्रदाय बन गया और दिमाग़ी ग़ुलामी के वातावरण ने उसमें दुर्बलताएँ ला दीं! आर्य-समाज और ब्रह्म-समाज, दादू-पन्थ और नानक-पन्थ सभी की भावना राष्ट्र में सुधार और नवजीवन उत्पन्न करने की रही, परन्तु ये सभी एक-एक नए पन्थ बन गए और इनमें वे दोष आ ही गए, जो उन कुसंस्कारी पुरुषों के संसर्ग से आने अनिवार्य थे, जो क्षणिक उत्तेजना से इन दलों में मिले तो—पर वे अपने उस पुराने कुसंस्कारों के ग़ुलाम थे—वे अपनी पुरानी बिरादरियों में, पुराने समाज में वैसे ही मिले रहे। इन सम्प्रदायों में और एक सम्प्रदाय की वृद्धि करना हो तो कोई नये सुधार की योजना रक्खे! परन्तु वह योजना चाहे जितनी कट्टर होगी—समाज का कल्याण न कर सकेगी। यह तो हम प्रत्यक्ष देखते हैं, एक तरफ़ हिन्दू गो-मांस के नाम से काँपते और गोबध के विरुद्ध आपे से बाहर हो जाते हैं, उधर ईसाई मुसल-मान खुल्लमखुल्ला गो-मांस खाते हैं। मुसलमान सुअर के नाम से हद दर्जे तक चिढ़ते हैं, पर सिक्ख खुल्लमखुल्ला सुअर खाते हैं! ईसाई सुअर और गो-मांस दोनों ही से परहेज़ नहीं करते। इस विषय की कट्टरता सैकड़ों वर्ष तक हिन्दू-मुसलमानों के निकट रहने पर भी नहीं मिटी! और हज़ारों वर्ष साथ रहने पर भी कभी न हिन्दू गो-मांस के प्रति उदासीन होंगे न मुसलमान ही! इसी प्रकार मूर्तिपूजा के विरोधी मुसलमानों ने जितना इसका विरोध किया, उतनी कट्टरता उत्पन्न हुई! हिन्दू सम्प्रदाय में भी दादू, नानक, आर्य आदि मत मूर्तिपूजा के विरोधी हैं, परन्तु उनका परस्पर कुछ भी प्रभाव नहीं। सुधारक, हठधर्मी पर प्रभाव नहीं जमा सकता! ईसाइयों और मुसलमानों ने हठधर्मियों पर बल प्रयोग किया। वह एक क्रान्ति थी—सुधार न था। फल यह हुआ कि ये दोनों सम्प्रदाय संसार में व्याप्त हो गए। बौद्ध धर्म का प्रचार, यद्यपि प्रकट में क्रान्तिकर नहीं समझा जाता, पर वास्तव में उसकी जड़ में मार-काट, अत्याचार और उत्क्रान्ति कम न थी!

यह तो हम अच्छी तरह समझ गए हैं कि वर्तमान हिन्दू-धर्म दिमाग़ी ग़ुलामी का एक जीर्ण-शीर्ण अस्तित्व है, उसमें अपनी रक्षा की रत्ती भर सामर्थ्य नहीं। आज राजनैतिक आन्दोलन ने जो शक्ति हिन्दू समाज को दी है—वह बात ही दूसरी है। उस शक्ति के केन्द्र हिन्दू-धर्म की दृष्टि से तो प्रायः क्रोध और तिरस्कार के ही पात्र हैं! हर हालत में यदि हिन्दू-समाज, जिसे धर्म या कर्तव्य के नाम से मानता है, यदि उसकी पूरी-पूरी परवा की जाय तो, जो राष्ट्रीय प्रगति देश में पैदा हुई है, वह वहीं रुक जाय! क्या वह हिन्दू-मुस्लिम और अल्प-संख्यक भार-तीय जातियों को, उस निकट-सम्बन्ध को सहन कर सकता है, जो इस आन्दोलन ने पैदा कर दिया है और जो दिन-दिन निकट होता जा रहा है! क्या वह स्त्रियों के उस साहस की प्रशंसा कर सकता है, जो वे आश्चर्यजनक रीति से किसी अज्ञात, दुर्जेय शक्ति के बल पर दिखा रही हैं? वह तो समाज-कल्याण से दूर एक ऐसी भावना में ओत-प्रोत है, जिसकी सारी ही शक्ति मनुष्य की आत्मा की कल्याण-कामना में लग गई है, और वह भावना भी शुद्ध नहीं, प्राय भ्रान्त है! आत्मा की कल्याण-कामना निस्सन्देह एक बहुत सुन्दर वस्तु तो है—परन्तु राष्ट्र और देश के कल्याण का प्रश्न भी असाधारण है! दर्शन-शास्त्र कहते हैं—"यतो अभ्युदय निःश्रेयससिद्धिस्स धर्मः", जिससे अभ्युदय और निश्रेयस की सिद्धि हो वह धर्म है। यह अभ्युदय ही सांसारिक परम स्वार्थ और निश्रेयस पारलौ-किक परम स्वार्थ है। सांसारिक परम स्वार्थ, राष्ट्रीय स्वाधी नता, अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति का समाज में स्वाधीन अधिकार और पारलौकिक परम स्वार्थ आत्मा का सभी बन्धनों से मुक्ति प्राप्त करना यह निश्रेयस है। यदि मैं यह कहूँ कि निश्रेयस से अभ्युदय श्रेष्ठ है तो अनुचित नहीं। यदि श्रीकृष्ण अभ्युदय को निश्रेयस की अपेक्षा श्रेष्ठ न मानते, तो सम्भव न था कि जगत के प्रपञ्च में फँस कर ऐसे लोम-हर्षण रक्त पात के विधायक बनते, क्या कुरुक्षेत्र और प्रभास का हत्याकाण्ड साधारण था? और क्या अकेले श्रीकृष्ण ही उसके पूर्ण रूप से उत्तरदाता नहीं? क्यों उन्होंने चुपचाप मुक्ति की कामना से संसार को त्याग कर समाधि नहीं लगाई? आज भी क्यों महात्मा गान्धी जेल में क़ैदी के रूप में पड़े हैं? इन उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि प्रथम यह लोक और पीछे परलोक है। इस-लिए हमें सर्व-प्रथम इस लोक के लिए सत्कर्म करने चाहिएँ और पीछे परलोक के लिए!

परन्तु, हमारी एक भयानक भूल तो यह है कि हम जब कभी छोटा-बड़ा सत्कर्म करते हैं, वह परलोक के लिए करते हैं और जो छोटा-बड़ा कुकर्म करते हैं, इस लोक के लिए करते हैं! हम दया, सेवा, त्याग, दान, तप, संयम, विवेक आदि का जब कभी उपयोग करेंगे उसका फल परलोक खाते डालेंगे, पर जब कभी स्वार्थ, छल, पाखण्ड, हत्या, चोरी तथा व्यभिचार आदि दुष्कर्म करेंगे, इस लोक के लिए करेंगे। यदि हम यथासम्भव सत्कर्म इस लोक के लिए करें, तो हमारी बहुत सी कठि-नाइयाँ दूर हो जायँ। प्रातःकाल हम स्नान कर माला ले, गोमुखी में हाथ डाल, भगवत् स्मरण के लिए बैठते हैं—घण्टा दो घण्टा में जितने पवित्र वाक्य, श्लोक, दोहा, चौपाई, पद याद होते हैं सभी रट जाते हैं—वह हमारा सारा काम परलोक में फल देगा, पर वहाँ से उठ कर जब दफ़्तर या दूकान पर आते हैं और कारबार में झूठ, दग़ा, निर्दयता आदि का व्यवहार करते हैं तब किस पाप से जेब कितनी भारी होगी, यही देखते हैं—परलोक को बिलकुल ही भूल जाते हैं! यही तो दिमाग़ी ग़ुलामी है जो हमें सुधार करने में विफल करती है और जिसके संस्कार मात्र को बिना नष्ट किए हम नवराष्ट्र की रचना नहीं कर सकते और बिना नवराष्ट्र की रचना किए हम देश को न एक इञ्च बढ़ा सकते हैं और न उसका रत्ती भर भला कर सकते हैं!!

यह बात सच है कि मेरे आक्षेप की प्रधान दृष्टि केवल हिन्दू-समाज पर ही है, और वह इसलिए कि वही भारत की प्रधान जाति है। उसकी संख्या २२ करोड़ है और उसी के सङ्गठन में बहुत से खण्ड हैं! हिन्दू ही राष्ट्रीय नव-निर्माण की सब से बड़ी बाधा हैं। छुआछूत, खान-पान, ऊँच-नीच, जाति-मर्यादा आदि के भयानक बन्धनों ने हिन्दू जाति को इतना निस्तेज और निर्वीर्य कर रक्खा है कि—जब तक उसके ये बन्धन दृढ़तापूर्वक काट न दिए जायँ वह किसी काम की नहीं बन सकती! २२ करोड़ नर-नारियों के समुदाय को इस बन्धन में विवश छोड़ कर भारत आगे बढ़ेगा कैसे? यह तो बात विचार में ही नहीं आ सकती!!

हिन्दू नवयुवकों ने इस समय उत्क्रान्ति में जो पौरुष प्रयोग किया है वह असाधारण है, परन्तु नवीन नहीं। चीन, जापान, रूस, इटली आदि देशों के नवयुवकों ने भी यही किया है। यह सच है कि हिन्दू नवयुवक अभी पीछे हैं—परन्तु उनके बन्धन भी असाधारण हैं। सौभाग्य से उन्हें राजनीति का एक गुरु गान्धी जैसा महान् पुरुष मिल गया है। गान्धी का राजनैतिक गुरुपन कर्म-भित्ति पर है, यह बड़े आश्चर्य का विषय है। भारत के लिए यह स्वा-भाविक भी है। और इसका फल हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि जो नवयुवक महात्मा गान्धी के राजनैतिक दीक्षा प्राप्त शिष्य बनते हैं, वे हिन्दू धर्म की रूढ़ि की ग़ुलामियों से भी साथ-साथ बहुत दूर तक स्वाधीन होते जाते हैं। छुआछूत और ऊँच-नीच के भेद उनसे दूर हो रहे हैं—वे सेवाधर्म और सात्विक जीवन के महत्व पर स्व-तन्त्र विचार करने लगे हैं—उनके मन पवित्र, स्वच्छन्द और त्याग की भावना से ओत-प्रोत हो रहे हैं। महात्मा गान्धी को यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने भारत के युवकों को अपनी आत्मिक और हार्दिक सद्भावनाओं को ऐहि-लौकिक कार्यों में—और उन कार्यों में, जिनमें प्रायः उनका स्वार्थ नहीं होता, लगाने की रुचि है, उत्पन्न कर दी है!

यह बात तो मैं स्वीकार करूँगा, ऋषि दयानन्द की शिक्षा ने विशुद्ध धार्मिक ढङ्ग से स्वतन्त्र विचार करने की रुचि भारत के इन युवकों के पिताओं के मन में पैदा कर दी; और इसके साथ ही अङ्गरेज़ी शिक्षा-पद्धति ने उनके पुराने अन्ध-विश्वासों की जड़ें हिला डालीं। अब ये युवक किसी रूढ़ि के ग़ुलाम होंगे, यह मैं आशा नहीं कर सकता। इनमें वीरता, त्याग, स्वावलम्बन और विन-म्रता उत्पन्न करने का श्रेय तो महात्मा गान्धी ही को है। यह महापुरुष शताब्दियों तक भारत में पूजा जायगा। हिन्दू-धर्म की सात्विक प्रवृत्तियों को इसने उदय किया है। दुर्दम्य क्षोभ के कारणों को प्रकट करके भी इस पुरुष ने युवकों को संयम से युद्ध करने की शिक्षा दी है!

नवराष्ट्र के निर्माण की यह मूल भित्ति है! परन्तु

आगामी अंक में

इसी लेखमाला का एक महत्वपूर्ण

अध्याय

ब्राह्मणत्व का नाश

पढ़िए

और सोचिए कि इस भयानक सर्प से बिना पिण्ड छुड़ाए हिन्दू-समाज एक साँस भी स्वाधीनता से नहीं ले सकता!!

मातृ-भूमि की तीन आदर्श सन्तान

अपनी क़ुर्बानी से है मशहूर नेहरू ख़ानदान,
शमआ-महफ़िल देख ले, यह घर का घर परवाना है।
—बिस्मिल
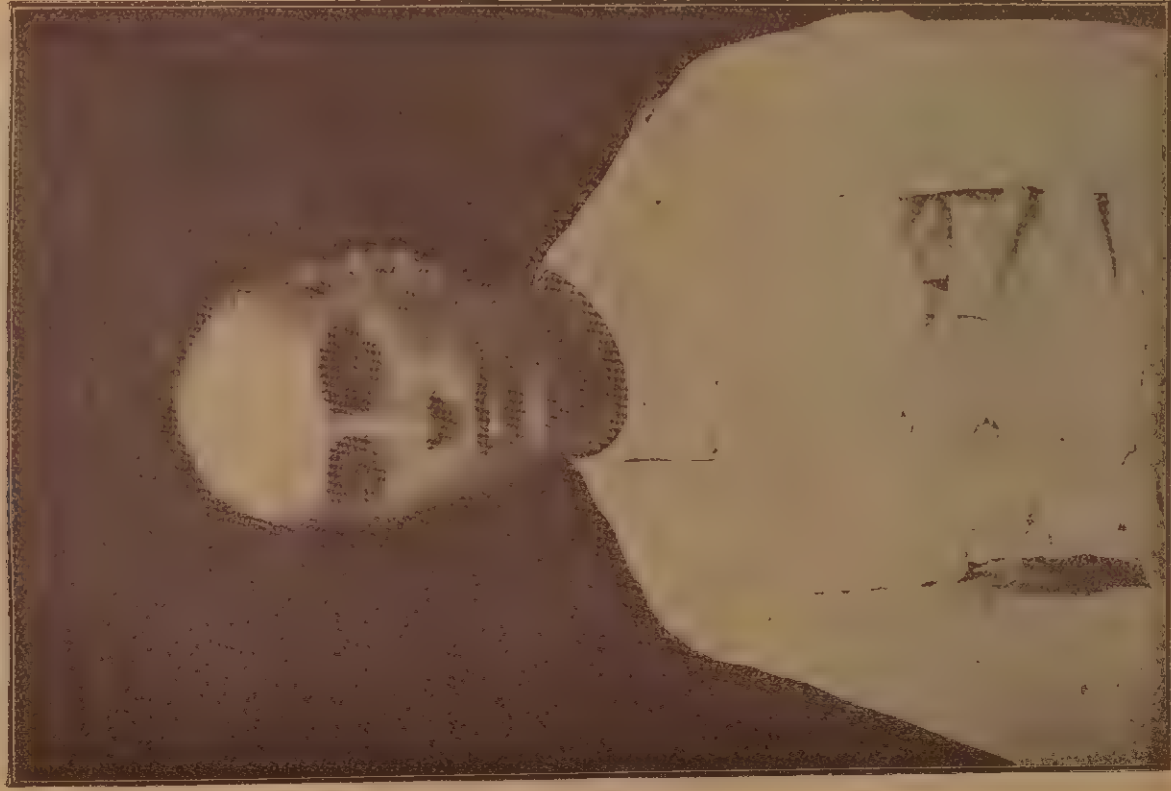
राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू

कुमारी कृष्णा नेहरू

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित

क़ानून भंग करने वाली कलकत्ते की चार वीरांगनाएँ

(१)

देशबन्धु के श्राद्ध-दिवस के उपलक्ष में पुलिस की आज्ञा को अमान्य करके जलूस निकालने के कारण इन चारों पूजनीय महिलाओं को छः-छः मास की क़ैद की सज़ा दी गई है। नम्बर के हिसाब से इन देवियों की नामावली इस प्रकार है :—

(१) श्रीमती उर्मिला देवी (स्वर्गीय देशबन्धु महोदय की बहिन)
(२) कुमारी ज्योतिर्मयी गङ्गोली, एम० ए०
(३) श्रीमती विमल प्रतिभा देवी
(४) श्रीमती मोहिनी देवी

(२)
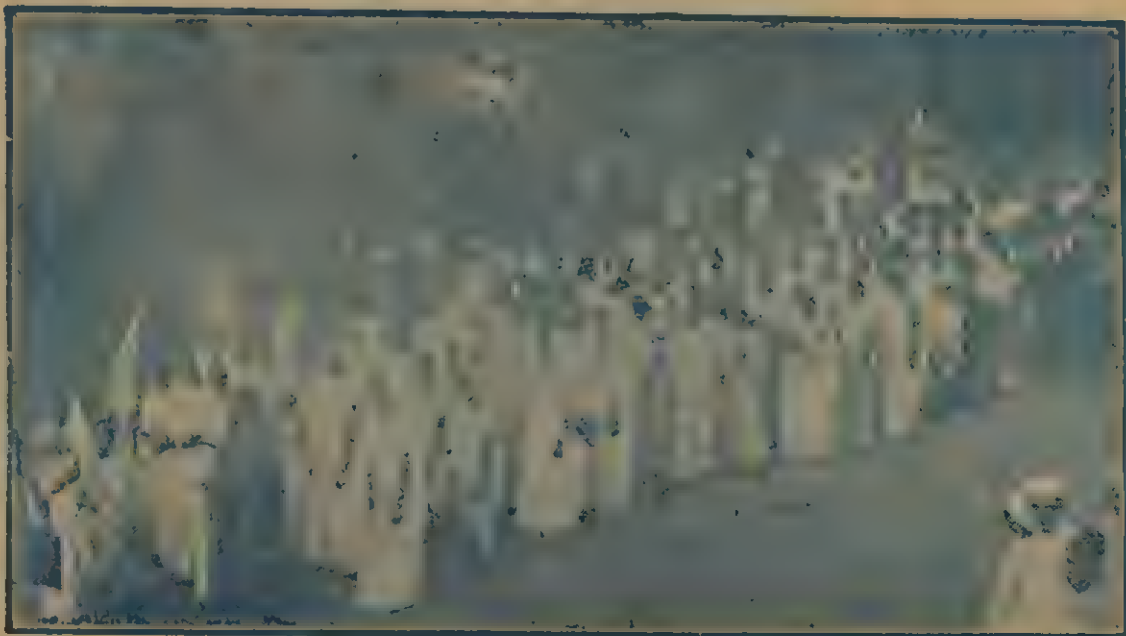
गुजरात की सत्याग्रही महिलाएँ, जिन्होंने विदेशी कपड़े और शराब की पिकेटिङ्ग करके बम्बई-गवर्नमेण्ट को दिवालिया बना दिया है।

(३)

(४)

'भविष्य'

सत्याग्रह-संग्राम में जेल-यात्रा करने वाली कलकत्ते की सर्वप्रथम महिला—श्रीमती इन्दुकुमारी गोइनका।

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय—जिन्होंने बम्बई में सत्याग्रह की अग्नि प्रज्वलित कर दी। आपको ९½ मास की क़ैद की सज़ा दी गई है।

काशी की सत्याग्रही महिलाएँ नमक बना कर गवर्नमेण्ट के क़ानून पर हड़ताल फेर रही हैं।

सत्याग्रह-संग्राम में सब से पहले जेल जाने वाली महिला-समाज की मार्ग-प्रदर्शिका—श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति (आन्ध्र प्रान्त)।

श्रीमती हंसा मेहता—जो बम्बई के सत्याग्रह-संग्राम को आश्चर्यजनक योग्यता के साथ सञ्चालन कर रही थीं। आप कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग-कमेटी की भी मेम्बर थीं। आपको 'कॉङ्ग्रेस बुलैटिन' प्रकाशित करने के अभियोग में तीन महीने की सज़ा दी गई है।

बम्बई की महिला-सभा में पं० मोतीलाल जी का सिंहनाद

(ऊपर) पं० मोतीलाल जी नेहरू बम्बई की एक विराट महिला-सभा में सत्याग्रह का उपदेश कर रहे हैं ।

(बीच में) बम्बई की महिलाएं पुलिस वालों की लाठियों द्वारा देश-सेवा का पुरस्कार प्राप्त कर रही हैं ।।

(नीचे) बम्बई की बानर सेना के बाल-सदस्य—जिन्होंने पिकेटिङ्ग में करामात का काम कर दिखाया है। इस सेना में केवल दस वर्ष से कम के बालक सम्मिलित हो सकते हैं—अधिक उम्र के नहीं !

बम्बई की बानर सेना

इसमें बाधाओं की कमी नहीं है। आवश्यकता तो यह है कि जब तक भारत स्वाधीन हो, तब तक भारतीय नव-राष्ट्र बन जाना चाहिए। यदि ऐसा न हुआ तो समझिए कि राजनैतिक क्रान्ति हिन्दू जाति के शिथिल सङ्गठन को इस प्रकार छिन्न-भिन्न कर डालेगी कि जिसका स्मरण करना ही भयानक है !

अलबत्त, मैं यह कह सकता हूँ कि यदि नवराष्ट्र के निर्माण में हिन्दू मुस्तैदी और साहस से जुट जायँ और राजनैतिक भाग्य-निर्णय से प्रथम ही नया राष्ट्र बना लें—तो फिर कल्याण ही कल्याण है ! फिर तो न रूस, न जर्मन, न जापान और न इटली ही की क्रान्ति भारतीय क्रान्ति के समान उज्ज्वल हो सकती है !!

यदि हिन्दू समाज अपनी दिमाग़ी ग़ुलामी को तोड़ दे ; यह स्वच्छन्द हो जाय तो—इसमें सन्देह नहीं कि मुसलमान और अल्प-संख्यक जातियाँ बड़ी आसानी से उसके अन्दर लीन हो जावेंगी !!

मैं यह स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि जब तक यह मुख्य कठिनाई दूर नहीं हो जाती, भारत की राजनैतिक स्थिति दृढ़ नहीं हो सकती। जब तक ब्रिटेन का राज्य है, या अन्य किसी ग़ैर जाति का राज्य हो, तब तक तो किसी तरह मामला इसी भाँति चल सकता है ; जैसा अब तक चलता रहा—परन्तु जब प्रजासत्ता का प्रश्न आएगा, जब देश का स्वामी देश का जनबल होगा, तब यदि जन-बल में राष्ट्रीयता न पैदा हुई तो प्रजासत्ता देश में स्थापित ही नहीं हो सकती। इसके विरुद्ध उस समय देश में ऐसी अशान्ति उत्पन्न हो सकती है जिसे शान्त करने का कोई उपाय ही नहीं है !!

मुसलमान, ईसाई और अन्य अल्प-संख्यक ग़ैर-हिन्दू जातियाँ खान-पान और छुआछूत में इसी समय हिन्दुओं से सहयोग करने को उद्यत हैं। प्रायः सभी हिन्दुओं के हाथ का कच्चा-पक्का खाना खा सकते हैं। इसी प्रकार यदि हिन्दू अपनी कन्याएँ इन जातियों में ब्याहने लगें, तो इन जातियों को कुछ उज्र होगा, ऐसी सम्भावना नहीं। हिन्दुओं में आर्यसमाजी और ब्रह्मसमाजी तथा कुछ स्वतन्त्र विचार के पुरुष आसानी से इन जातियों से रोटी-बेटी के सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। इसी तरह अछूत और निम्न श्रेणी की जातियाँ तथा ख़ाना-बदोश जातियाँ सभ्य और सुशिक्षित बनाई जाकर समाज का उपयोगी अङ्ग बन सकती हैं। इस नवीन सङ्गठन में यदि कोई अंश बाधक है तो वे कट्टर हिन्दू हैं, जो पुराने अन्ध-विश्वासों के ग़ुलाम हैं—और जो देश की ऊपर तेज़ी से चढ़ी चली आती हुई उस विपत्ति को देखने की योग्यता नहीं रखते—जिसके एक ही झटके में हिन्दुत्व का जीर्ण ढाँचा चूर-चूर हो जायगा !!!

एक समय था, जब भारतवर्ष एक सुदृढ़ क़िले के समान था। अपनी आवश्यकता की सभी सामग्री वह उपजा लेता था। विदेशियों से यदि इसका कोई सम्बन्ध था भी तो सिर्फ़ इतना ही, कि उसके काम में आने से जो कुछ बच जाय उसे वह विदेशियों को बेंच दे। तब विदेशी व्यापारी उसके द्वार के बाहर निरुपाय खड़े रहते थे, और जो कुछ भारत को देना होता, उसे लेकर बदले में स्वर्ण और रत्न देकर चले जाते थे ! उस समय उसकी एक देशीयता बनी हुई थी। उसका अन्य जातियों से संसर्ग न करना भी निभ गया था ; यद्यपि तब भी भारतीय बड़ी-बड़ी यात्राएँ करते थे—परन्तु वह समय ही और था। राजसत्ता का प्रायः सर्वत्र आधिपत्य था। भारत में भी राजसत्ता थी—इसके सिवा भारत की एक जातीयता भी थी।

पर वह क़िला तो अब टूट गया। अब उसकी वह शक्ति, प्रतिष्ठा और परिस्थिति न रही। अब उसे स्वाधीन होते ही शताब्दियों तक व्यापार वाणिज्य और शिल्प-शिक्षा आदि के लिए संसार भर में यात्रा करनी पड़ेगी। संसार की जातियों से मित्रता और सद्भाव बनाना पड़ेगा। ऐसी दशा में यदि हिन्दू अपना चौका, धोती, दाल, चावल और जनेऊ लिए फिरें तो समझिए कि उनकी दुर्दशा और असुविधाओं का अन्त न रहेगा ! देखिए तुर्क और ईरान इतना कट्टर एशियाई जीवन रहते भी, कितने शीघ्र यूरोप में मिल गया ! रूस किस तेज़ी से एशिया में घुस रहा है ; और जापान कैसे यूरोप के कान काटने लगा ! क्या हिन्दू-जाति भी इस सरलता से पड़ोसी जातियों के बन्धु बन सकती है ? उसे तो एशिया के सङ्गठन में सम्मिलित होना अनिवार्य है। यदि उसने अपनी मूर्खता और चौका-चूल्हे में फँस कर एशिया के सङ्गठन का तिरस्कार किया तो यह मानी हुई बात है कि एशिया का सर्वप्रथम काम यह होगा कि वह अपने पहले धक्के में इस निकम्मी अछूत हिन्दू-जाति को विध्वंस कर दे और तब उसे पड़ोस के मुस्लिम राष्ट्र बाँट लें !

यूरोप और एशिया का जो सङ्घर्ष है, वह भारत पर ब्रिटेन का आधिपत्य तो रहने ही न देगा, परन्तु ब्रिटेन के पञ्जे से छूट कर भी भारत हिन्दू जाति की सम्पत्ति नहीं बन सकेगा। जब तक कि वह अपना नया राष्ट्र न निर्माण कर ले और जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और अन्य अल्प संख्यक जातियाँ मिल कर एक महाजाति के रूप में न खड़ी हो जायँ !!

भारतीय प्रजातन्त्र के ये हिस्से नहीं बँट सकते, जैसे कि अब अङ्गरेज़ी राज्य में हैं। कितनी नौकरियाँ हिन्दुओं को और कितनी मुसलमानों को मिलें—यह तुच्छ प्रश्न तब न रहेगा, तब तो यही प्रश्न होगा कि भारत की निवासिनी महाजाति का नाम क्या है ? भारत की अधिपति जाति कौन सी है ?

मैं प्रथम कह चुका हूँ कि नवराष्ट्र निर्माण में सबों से बड़ी बाधक हिन्दू-जाति है, अन्य जातियाँ बहुत कुछ बढ़ी हुई हैं—यदि हिन्दू-जाति उनके बराबर पहुँच जायगी तो अन्य जातियाँ ख़ुशी से मिल जावेंगी !!

हिन्दू-सङ्गठन और शुद्धि-आन्दोलन, इन दोनों ही नीतियों से मेरा मतभेद है—मतभेद का मूल कारण यह है कि इन नीतियों से अन्य जातियों को भी हिन्दुओं के उन पुरानी रूढ़ियों के बन्धनों में बाँधा जा रहा है ! प्रश्न तो यह है कि इस समय हिन्दू-संस्कृति संसार की सभ्य जातियों से सामाजिक रीति से मिलने के योग्य है या नहीं ? यदि है तो अन्य जातियों को शुद्ध करना ठीक है। यदि नहीं तो जहाँ २२ करोड़ चौका-चूल्हा, जाति, छूत-अछूत, जनेऊ-धोती की चिन्ता में हैं, वहाँ ३०-३२ करोड़ हो जावेंगे ? पर मुख्य और विकट प्रश्न तो बना ही रहेगा। मुझे यह कहने में ज़रा भी सङ्कोच नहीं कि भारत की अन्य जातियाँ राष्ट्रीयता की दृष्टि से कहीं अधिक सुगठित हैं ; फिर उन्हें इस रूढ़ि-बन्धनों से विवश, जर्जर जाति में फाँसना देश के लिए कहाँ तक अच्छा है ?

अलबत्त, हिन्दू नाम से मैं प्रेम करता हूँ ! भले ही उसका चाहे भी जो भद्दा अर्थ हो—मैं यह स्वाभाविक रीति से चाहूँगा कि हिन्दुस्तान का प्रत्येक प्राणी अपने को हिन्दू कहे। मैं हिन्दू राष्ट्र के ही निर्माण का स्वप्न देखता हूँ और हिन्दू राष्ट्र के निर्माण की ही योजना सामने रखता हूँ और उसमें सभी अल्प-संख्यक भारतीय जातियों को लीन करने की कामना भी करता हूँ। पर हिन्दू राष्ट्र की वह शक्ल होनी चाहिए, कि संसार की सभी जातियों में उसके अबाध सामाजिक सम्बन्ध बन सकें—तभी भारत में एक महान राष्ट्र का उदय हो सकता है !!!

[लेखक महोदय की "तब, अब क्यों और फिर ?" नामक अप्रकाशित ग्रन्थ से, जो इस संस्था द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

—सम्पादक 'भविष्य']

* * *

भव्य-भविष्य

[कविवर पं० रामचरित जी उपाध्याय]

मिटेगी निविड़ अँधेरी रात,
प्रदर्शित होगा पुनः प्रभात।
अलक्षित असुरों का उत्पात,
न्याय होगा अवगत अवदात।
साम का सुखद सुरीला गान—
सुनेंगे, होगा देवोत्थान ॥

न होगी पराधीनता-भीति,
रहेगी नहीं धाँधली नीति।
खलों पर होगी नहीं प्रतीति,
बढ़ेगी पुनः परस्पर प्रीति।
शौर्य्य का उद्यापन होगा।
सत्ययुग का स्थापन होगा॥

भीरुता भग जाएगी कहीं,
वीरता फिर आएगी यहीं।
रहेगा दानव का दल नहीं,
रहेगी मानव के बल मही।
शस्त्र-शास्त्रों का होगा ज्ञान।
पूर्व गौरव पर होगा ध्यान॥

मरण जीवन का है परिणाम,
सुखद स्वर्गद केवल संग्राम।
समर चढ़ना वीरों का काम,
काम के बिना न होता नाम।
यही हमको शिक्षा होगी।
अलग हमसे भिक्षा होगी॥

अछूतों का होगा उद्धार,
रीति में होगा सुघर सुधार।
देश में सौम्याचार विचार,
हार पर हुरदङ्गों की हार।
अनय की नैया नदिया बीच
मग्न होगी, खीझेंगे नीच॥

विश्व में होगी नैतिक क्रान्ति,
बढ़ेगी उद्भ्रान्तों की भ्रान्ति।
करेंगे खल परस्व की वान्ति,
कठिनता से छाएगी शान्ति।
पलट जाएगी काया आप।
न होगा पाप-जनों से ताप॥

निबल हो जाएँगे बलवान,
अधन हो जाएँगे धनवान।
विगुण हो जाएँगे गुणवान,
अधिप हो जाएँगे परवान* ॥
नहीं बक बने रहेंगे हंस।
कपट-गढ़ हो जाएगा ध्वंस॥

घाट घर से हो हीन जघन्य,
वनों में फिर विचरेंगे वन्य।
कहेंगे लज्जित हो नृपमन्य।
धन्य भारत ! भू पर तू धन्य।
छिड़ेगी फिर वंशी की तान।
करेगा मोहन गीता-गान !!

* * *

* पराधीन।

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की।

बॉयकॉट आन्दोलन का प्रभाव देख कर तो अपने राम की भूख-प्यास असहयोग कर बैठी है। ओफ़ ओह! कुछ ठिकाना है। कहाँ तो पहले केवल विदेशी वस्त्र का बॉयकॉट आरम्भ हुआ था और कहाँ अब यह दशा है कि सिगरेट, साबुन, औषधियाँ—सबका एक सिरे से बॉयकॉट!! बॉयकॉट आन्दोलन चलाने के समय बूढ़े बाबा गाँधी जी के मस्तिष्क में भी इतने बॉयकॉट उदय न हुए होंगे! जैसे हज़रत मुहम्मद को क़ुरानशरीफ़ की आयतों का इलहाम (दैवी सन्देश) होता था उसी प्रकार हिन्दुस्तानियों को बॉयकॉट का इलहाम हो रहा है। इस बॉयकॉट से किसी को भी हानि हो या लाभ, परन्तु अपने राम मारे चिन्ता के आधे रह गए। क्या करें, अपने राम तो उन ऋषियों की सन्तान हैं, जो सवेरे उठ कर पहले सब का भला मनाने के पश्चात ईश्वर से अपनी भलाई की प्रार्थना किया करते थे। पुराने संस्कार एक बारगी कैसे मिट सकते हैं! माई-बाप अङ्गरेज़ों की यह दुर्दशा अपने राम से तो नहीं देखी जाती। कहावत भी है कि पीठ की मार भली, परन्तु पेट की मार भली नहीं। सो यहाँ तो पेट की मार दी जा रही है। यह बहुत बुरी बात है। हिन्दुस्तानियों में धर्म्म-युद्ध का माद्दा बिल्कुल नहीं रह गया। यदि अङ्गरेज़ों से झगड़ना ही है तो जमा-ख़र्च रक्खो—ख़ूब कहो और ख़ूब सुनो, परन्तु भाई खाने को दिए जाओ। जिसे खाने को ही न मिलेगा वह क्या अपनी कहेगा और क्या दूसरे की सुनेगा। हिन्दुस्तानियों में कुछ मर्दानापन है, धर्म्म-युद्ध का माद्दा है तो अङ्गरेज़ों की रोटियाँ बन्द न करें—बल्कि वीरता तो इसी में है कि उनका रैशन डबल कर दें और फिर कहें कि अब आओ बहस कर लो! लड़ लो!! झगड़ लो!!! फिर स्वराज्य चाहे मिले या न मिले, परन्तु जो कुछ हो धर्म्म तथा वीरता की पुट लिए हुए—तभी लड़ाई का मज़ा है, अन्यथा जब आदमी भूखा मरेगा तो लड़ाई-वड़ाई सब भूल कर,'रोटी-रोटी' चिल्लाने लगेगा! ऐसी लड़ाई दो कौड़ी की!! अपने,राम इस लड़ाई को लड़ाई नहीं, हत्याकाण्ड समझते हैं। यह सौभाग्य की बात है कि जो अपने राम का विचार है, वही विचार देश के बहुत से व्यापारियों का भी है। व्यापारी जाति में अधिकतर मारवाड़ी तथा बनिए हैं। ये जातियाँ कितनी धार्म्मिक तथा दयावान हैं—यह आप से छिपा न होगा। सड़कों पर चींटियाँ चुनाना, बन्दरों को चने चबवाना, कछुओं को राम नाम की गोलियाँ निगलवाना—इन्हीं महा-जातियों का काम है! दूसरी जातियों से यह काम न हुआ है और न हो ही सकता है। यह जाति किसी को भूख से मरता हुआ देख ही नहीं सकती। देखे तो तब, जब आदत हो—आदत तो है ही नहीं, देखे कैसे? अतएव इस जाति के अधिकांश लोग इस समय दिलोजान से अङ्गरेज़ों की सहायता कर रहे हैं। पिकेटिङ्ग होते हुए भी अनेक प्रकार के छल-बल करके ये लोग विलायती कपड़े की निकासी करते ही हैं। क्या करें, आदत से लाचार हैं। जिस समय ये लोग चटपटा और झोलदार भोजन करने बैठते हैं, उस समय मुँह में दिया हुआ कौर नाक के रास्ते बाहर निकलने लगता है। क्यों? यह सोच कर कि हाय! लङ्काशायर में इस समय लाखों आदमी भूखों मर रहे हैं। हम इस समय इस आलू के झोल में ग़ोता मार रहे हैं और उन्हें उबले आलू भी नसीब न हुए होंगे! यह विचार आते ही उनका दया-भाव पद्दलित सर्प की भाँति जाग्रत हो उठता है। उस समय ये लोग यह भीष्म प्रतिज्ञा करते हैं कि चाहे जो कुछ हो, चाहे स्वराज्य मिले या न मिले, चाहे गाँधी जी जेल ही में पड़े रहें—क्योंकि उनको तो जेल में भी भोजन मिलता ही है, दूसरे जेल में रहने की उनकी कुछ आदत भी पड़ गई है—इसमें हमारा क्या दोष है—परन्तु लङ्काशायर वालों के लिए कम से कम दोनों समय डबल रोटी और मक्खन का प्रबन्ध होना ही चाहिए। इधर उन्होंने यह विचार किया और उधर दिमाग़ की फ़ैक्टरी में 'वस्त्रायती' माल निकालने की युक्तियाँ सोची जाने लगीं। उन्होंने कैसी-कैसी युक्तियाँ निकालीं, इसका प्रमाण आपको मिला ही होगा। कलकत्ते में इन लोगों ने पिकेटर्स को गुण्डों द्वारा पिटवाया, पुलीस की सहायता ली। पालकियों में ज़नानी सवारी के बहाने विलायती कपड़ा निकलवाया। मुर्दों की अर्थियाँ बना कर और उसमें लाश की जगह वलायती धोती जोड़े लदवा कर बाहर भेजे। वह तो कहिये पिकेटर्स को भगवान समझे!! उन्होंने एक ही रात में एक ही घर से दो अर्थियाँ निकलते देख कर सन्देह किया—यद्यपि सन्देह करने का उनका कोई अधिकार नहीं था!! हैज़े और प्लेग में एक-एक घर से एक-एक दिन में चार-चार अर्थियाँ निकल चुकी हैं—उस समय किसी भकुए को सन्देह नहीं हुआ। परन्तु आजकल केवल दो अर्थी देख कर ही सन्देह कर बैठा! यह अन्धेर नहीं तो और क्या है? तो सम्पादक जी, पिकेटर्स को सन्देह हो गया और उन्होंने अर्थी की जाँच की तो उसमें लाश के स्थान में धोती-जोड़े निकले!!! अतएव उन्होंने इस युक्ति से काम लेना बन्द कर दिया। यदि युक्ति कारगर होती रहती तो कलकत्ते के व्यापारियों के घर में बे मौसम की महामारी फैल जाती। हमारे नगर में भी कुछ व्यापारियों ने, जो कि काँग्रेस के कार्य-क्रम से पूर्ण सहानुभूति रखते हैं और हाथ-पैर बचा कर भाग भी लेते रहते हैं, विदेशी कपड़ों की गाँठों को स्वदेशी गाठों का रूप देकर इधर-उधर भेजना आरम्भ किया था, परन्तु शक्की पिकेटर्स तथा स्वयम्सेवकों ने भण्डाफोड़ कर दिया। न जाने ऐसे शक्की आदमियों को काँग्रेस कमेटियाँ कैसे भर्ती कर लेती हैं। शक्की आदमी बहुत बुरा होता है—ऐसे आदमी को तो पास न फटकने देना चाहिए। सो यहाँ तक तो इन दया के पुतलों ने किया। अपने देशवासियों को गुण्डों और पुलीस से पिटवाया, जाल किया, फ़रेब किया—क्यों? वही आदत की लाचारी से! परोपकार की आदत के कारण ये सब ज़िल्लतें उठानी पड़ीं!!

कुछ मूर्ख लोग समझते हैं, समझते ही नहीं, खुल्लमखुल्ला कहते भी हैं, कि व्यापारी लोग यह सब अपने स्वार्थ के लिए करते हैं। अपने राम उनके इस विचार और इस कथन से रत्ती भर तो क्या, पसेरी दो पसेरी भी सहमत नहीं हैं। अपने स्वार्थ के लिए कोई इतनी ज़िल्लत और बदनामी उठा ही नहीं सकता, और कोई चाहे भले ही उठा ले, परन्तु मारवाड़ी और बनिये, जिनके हाथ में व्यापार की बागडोर है, ऐसा कदापि नहीं कर सकते। इन्हें तो केवल दया खाए जाती है और कुछ परलोक का विचार! हिन्दू-धर्म यह चीख़-चीख़ कर कहता है कि इस लोक में जैसा करोगे वैसा परलोक में भोगोगे, इस लोक में जो दोगे वही परलोक में पाओगे! इसका तत्व हमारे व्यापारी भाई ख़ूब समझते हैं। वह जानते हैं कि यदि इस लोक में वे किसी की रोटी छीनेंगे तो परलोक में उन्हें भी रोटी नसीब न होगी। और यदि इस लोक में वे दूसरों की रोटी का ख़्याल रक्खेंगे तो उन्हें भी परलोक में फुलके, पूरी, पराठे और चटपटे झोलदार आलू मिलते रहेंगे! अतएव वे परलोक का प्रबन्ध पहले करते हैं। इस लोक में वे भूखों मर सकते हैं, परन्तु परलोक में—हरे! हरे! परलोक में तो एक क्षण भी भूखे नहीं रह सकते!! केवल यही एक कारण है, जिससे कि वे लङ्काशायर वालों की रोटियाँ छीनने का विचार तक नहीं कर सकते; और इस लोक में उन्हें अब आवश्यकता ही क्या रह गई है जो वे अपने स्वार्थ के लिए ऐसा करेंगे? उन्होंने अपने जीवन भर के गुज़ारे के लिए यथेष्ट कमा लिया है; अब उन्हें अपनी परवा उसी प्रकार नहीं है, जिस प्रकार कि बूढ़ी बिल्ली को चूहों की परवा नहीं रहती। अतएव उन पर यह दोषारोपण करना, कि वे अपने स्वार्थ के लिए ऐसा करते हैं, उतना ही असङ्गत है, जितना कि उलूक पर सूर्य से असहयोग करने का दोषारोपण करना। हाँ, यह कहा जा सकता है कि उनमें कृतज्ञता का माद्दा अभी विद्यमान है। वे विलायत वालों के कृतज्ञ हैं। जिनकी बदौलत वे इतने मालदार बन गये—मुल्लू से सेठ मूलचन्द अथवा लाला मूलचन्द बन गये, उनके प्रति कृतघ्नता कैसे करें? जो समय पड़ने पर अपनी सहायता करे तो समय पड़ने पर उसकी सहायता भी अवश्य करनी चाहिए। यह भाव इन लोगों में काम कर रहा है। अन्यथा ये लोग कुछ नासमझ नहीं हैं—करोड़ों का व्यापार करते हैं। करोड़ों का व्यापार करने वाले कहीं नासमझ हो सकते हैं? यदि कोई गुण-ग्राहक हो तो वह समझे कि ये लोग कितने वफ़ादार हैं। परन्तु अन्धे के आगे रोवे अपनी आँखें खोवे। जिसमें वफ़ादारी का माद्दा नहीं,।वह भी कोई आदमी है?

सम्पादक जी, दुनिया चाहे कुछ बके, काँग्रेस के अनुयायी चाहे जो कहें; क्योंकि वे इस समय अपने स्वार्थ के कारण अन्धे हो रहे हैं—सत्यासत्य का ज्ञान उनमें नहीं है; परन्तु अपने राम तो यही कहेंगे कि व्यापारी लोग यदि चुरा-छिपा कर विलायती माल की निकासी कर रहे हैं तो बड़ा अच्छा कर रहे हैं। ईश्वर इन्हें इसका फल देगा। प्रथम तो इन लोगों के शाप से भारत को स्वराज्य मिलेगा ही नहीं—यद्यपि यह कहावत है कि चमार के कोसे ढोर नहीं मरते; परन्तु यह कहावत इन लोगों पर लागू नहीं हो सकती; क्योंकि न तो काँग्रेस ढोर है और न ये लोग चमार—और यदि धोखे से स्वराज्य मिल भी गया, तो भी इन्हें कुछ परवा नहीं—सब लोग अपना बोरिया-बँधना सँभाल कर इङ्गलैण्ड में जा बसेंगे। इस दशा में भी भारत की बहुत बड़ी हानि होगी; क्योंकि भारत में व्यापार का चिह्न तक न रह जायगा। जब व्यापारी जाति ही न रहेगी, तो व्यापार करेगा कौन—और कोई करेगा तो हानि उठाएगा; क्योंकि कहावत है कि तेली का काम तम्बोली कभी नहीं कर सकता!

मुझे पूर्ण आशा है कि आप मेरे विचारों से उसी प्रकार सहमत होंगे, जिस प्रकार कि मैं उपरोक्त व्यापारियों के विचारों से सहमत हूँ।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबेजी)

* * *

श्रमजीवी-संसार

बेकारी की समस्या

["राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी"]

संसार के सामने इस समय जो समस्याएँ मौजूद हैं, उनमें सबसे बड़ी समस्या शायद बेकारी की है। यह एक ऐसा प्रश्न है जो मनुष्य-समाज की नींव को हिला रहा है। यूरोप, अमेरिका, एशिया आदि संसार के सभी महाद्वीपों में यह समस्या विकराल रूप से मुँह बाए खड़ी है और यदि वर्तमान काल के शासकगण और राष्ट्रों के नेता इसका कोई उपाय न कर सके तो यह निश्चय ही संसार में उथल-पुथल मचा देगी और मनुष्य जाति को भयङ्कर सङ्कट का सामना करना पड़ेगा। इस समय अमेरिका में ३० से ४० लाख, जर्मनी में २० लाख, इङ्गलैण्ड में १५ से २० लाख व्यक्ति बेकार हैं! उनको चेष्टा करने पर भी किसी तरह की नौकरी नहीं मिलती और या तो उनकी परवरिश सरकार करती है या उनको भूखों मरना पड़ता है। अन्य देशों की भी क़रीब-क़रीब यही हालत है और हर जगह लाखों आदमी नौकरी के लिए व्याकुल घूमते हैं। इन बेकारों की संख्या घटने के बदले, दिन पर दिन बढ़ती जाती है। अगर गवर्नमेण्ट कोशिश करके दो-चार लाख आदमियों के लिए कोई नया काम ढूँढ़ कर निकालती है तो किसी नई हलचल के कारण अन्य व्यवसाय में उससे भी अधिक लोग बेकार हो जाते हैं!

बेकारी के कारण साधारण जनता पर आजकल जैसी मुसीबत आई हुई है, उसका वर्णन शब्दों में किया जा सकना कठिन है। किसी बाल-बच्चेदार आदमी के लिए, जो केवल माहवारी तनख़ाह या मज़दूरी पर निर्भर रहता है, कई-कई महीने तक बेकार रहना कितना भयङ्कर है, इसे वे ही समझ सकते हैं, जिन पर यह मुसीबत कभी पड़ी है। यद्यपि इङ्गलैण्ड, अमेरिका आदि पश्चिमी देशों में गवर्नमेण्ट का यह कर्तव्य समझा जाता है कि वह इन बेकार लोगों को खाने के लिए दे, और इसलिए उन देशों के ख़ज़ाने से प्रति वर्ष अरबों रुपया ख़र्च भी किया जाता है, पर यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस उपाय से लोगों की तकलीफ़ मिट नहीं सकती और अनेकों को भूखों मरना पड़ता है। शासक भी इस समस्या के कारण परेशान हैं और उनकी अधिकांश शक्ति आजकल इसको सुलझाने में लगी है। अभी हाल ही इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट में सर ओसवाल मोसले ने, जो मज़दूर पार्टी के एक प्रभावशाली नेता हैं, कहा था :—

"वर्तमान दशा यद्यपि सर्वथा निराशाजनक तो नहीं है, पर यह है बड़ी नाज़ुक! हमको उस पर स्पष्टतः विचार करना आवश्यक है। समस्त राष्ट्र का कर्तव्य है कि एक दिल होकर इसके प्रतिकार के लिए घोर चेष्टा करे, क्योंकि अगर यह काम वर्तमान मज़दूर सरकार के समय में भी नहीं हो सका तो फिर आगे कैसे हो सकेगा? अगर उचित चेष्टा नहीं की गई तो हमको शीघ्र ही किसी गम्भीर सङ्कट का सामना करना पड़ेगा। मैं इस सङ्कट से भयभीत नहीं होता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यहाँ के निवासी ऐसे सङ्कट के समय में बहुत अच्छी तरह काम करना जानते हैं। उनको मालूम है कि सङ्कट का सामना किस प्रकार किया जाता है। मुझे जिस बात का भय है, वह यह है कि कहीं हम धीरे-धीरे नीचे गिरते हुए निष्क्रिय और शक्तिहीन न हो जाएँ। यह बात बड़ी भयङ्कर है और यदि चेष्टा न की गई तो इसकी बहुत कुछ सम्भावना है।"

अमेरिका की भी यही दशा है। यद्यपि वह संसार का सब से अधिक मालदार देश है, और वहाँ गली-गली में करोड़पति पड़े हुए हैं, पर बेकारी के कारण वहाँ भी लाखों मनुष्यों को भूखों मरना पड़ता है। थोड़े दिन पहले वहाँ की राष्ट्रीय काँग्रेस के सीनेटर कजिन्स ने एक सभा में व्याख्यान देते हुए कहा था :—

"क्या आपने कभी इस पर विचार किया है कि अमेरिका में ३० लाख व्यक्ति, जो कि डेढ़ करोड़ प्राणियों का पालन करते हैं, बेकार हैं? क्या आप समझते हैं कि कङ्गाली के कारण ये लोग कुछ नहीं ख़रीद सकते, और इसके कारण अमेरिका के व्यापार को कितनी हानि पहुँच रही है? आप समझते हैं कि सरकार इन लोगों का पालन करती है, इसलिए, इससे किसी का कुछ नुक़सान नहीं होता। पर सरकार उनको आपके ही ख़र्च से पालती है; आप पर टैक्स लगा कर ही उनके ख़र्च के लिए रुपया वसूल करती है! इस प्रकार आप उनका ख़र्च तो देते ही हैं, पर ऐसे तरीक़े से देते हैं, जिसमें बहुत बड़ी रक़म बर्बाद जाती है; क्योंकि सरकार द्वारा जो काम किए जाते हैं उनमें सब से अधिक ख़र्च होता है। अगर आप इस समस्या को स्वयं हल कर लें तो आप भारी टैक्सों को बन्द करा सकते हैं और व्यवसाय-वाणिज्य की उन्नति में सरकारी अधिकारियों के हस्तक्षेप को रोक सकते हैं। सरकार तब तक व्यवसाय में हस्तक्षेप नहीं करती, जब तक व्यवसाय स्वयं उस दशा में नहीं पहुँच जाता, जब कि सरकारी हस्तक्षेप आवश्यक हो।"

अब प्रश्न होता है कि बेकारी किस उपाय से दूर हो सकती है? पर उपाय ढूँढ़ने से पहले हमको इसका कारण ढूँढ़ना चाहिए, क्योंकि बिना वास्तविक कारण को जाने, बिना जड़ का पता लगाए, किसी बीमारी का इलाज नहीं हो सकता, चाहे वह व्यक्ति के शरीर में हो और चाहे समाज के शरीर में!

बेकारी का मुख्य कारण मैशीन और व्यवसाय वाणिज्य का वर्तमान तरीक़ा है। मैशीनों के कारण प्रत्येक काम पहले की अपेक्षा जल्दी होने लगा है। बीस साल पहले जिस काम को करने के लिए सौ मनुष्य दरकार होते थे, वह आजकल पचहत्तर मनुष्यों से ही हो जाता है, और मैशीनों की इसी तरह तरक़्क़ी होती रही तो इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि बीस साल आगे चल कर वही काम पचास से कम मनुष्यों द्वारा होने लगेगा। उसके पश्चात् क्या होगा, यह भी हम अपनी कल्पना द्वारा जान सकते हैं। इतना ही नहीं, मज़दूरों की संख्या के घटाए जाने पर भी मैशीनें पहले से ज़्यादा माल तैयार कर डालती हैं। वे इतना ज़्यादा माल बनाती हैं कि बाज़ार में उसका बिक सकना असम्भव होता है और वह गोदामों में भरा हुआ ख़राब होने लगता है। तब कारख़ानों के मालिक माल बनाना क़तई बन्द कर देते हैं और उनका ऐसा करना अनुचित भी नहीं कहा जा सकता; क्योंकि जब माल बिकता ही नहीं और पड़ा-पड़ा सड़ता-गलता है, तब नया माल बनाते रहने से नुक़सान के सिवा क्या फ़ायदा हो सकता है?

मैशीनों के द्वारा माल कितना अधिक तैयार होता है, इसके लिए दो-एक उदाहरण देखिए। सन् १९२९ में अमेरिका के मोटर बनाने वाले कारख़ानों ने जितनी गाड़ियाँ बिक सकती हैं उनसे बीस लाख ज़्यादा गाड़ियाँ बना डालीं, और उनके कारख़ानों में इतनी गुञ्जायश है कि अगर वे चाहते तो चालीस लाख गाड़ियाँ ज़्यादा बना सकते थे! यह बात सिर्फ़ कारख़ाने में बनने वाली चीज़ों के सम्बन्ध में ही नहीं है, दो वर्ष पहले अमेरिका में मैशीनों और अन्य वैज्ञानिक उपायों द्वारा इतनी अधिक रूई उत्पन्न की गई कि उसके कारण रूई के बाज़ार में बड़ी हलचल मच गई और बड़े-बड़े धनवानों ने किसानों पर दबाव डाल कर लाखों मन कपास को खेतों में ही आग लगा कर जलवा डाला! गेहूँ की भी यही दशा है। अमेरिका की सरकार ने करोड़ों रुपए इस बात के लिए ख़र्च किया कि गेहूँ की अधिक पैदावार के कारण बाज़ार का भाव न बिगड़ जाय, और अब वह किसानों से इतना ज़्यादा गेहूँ पैदा न करने की प्रार्थना कर रही है, जिससे देश का नुक़सान हो!!!

हमारे साधारण पाठक, जो कि आजकल के कुटिल आर्थिक नियमों और निन्दनीय व्यवसाय-प्रथा से अनजान हैं, इस बात को पढ़ कर बड़ा ताज्जुब करेंगे कि आख़िर माल तैयार होने से रोकने और रूई और गेहूँ जैसी जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं को जान-बूझ कर नष्ट करने से क्या लाभ? क्योंकि वे अपनी आँखों से देखते हैं कि हमारे देश में करोड़ों अभागे प्राणी दो मुट्ठी अन्न और गज़ भर कपड़े के लिए तरसते रहते हैं। इङ्गलैण्ड और अमेरिका में भी अनगिनती लोग भूखों मरते रहते हैं। तब यदि इन वस्त्रों और अन्न आदि को नष्ट न करके, उन ग़रीबों को दे दिया जाय, तो इसमें किसी की क्या हानि है? पर वे सज्जन वर्तमान समय में समाज में प्रचलित पूँजीवाद-पद्धति को भूल जाते हैं! आजकल प्रत्येक वस्तु किसी न किसी व्यक्ति के अधिकार में रहती है और वह उसका मनमाना उपयोग कर सकता है, चाहे उससे समाज का भला हो या बुरा। इसी अधिकार के कारण इन वस्तुओं के स्वामी इस बात का विचार नहीं करते कि इन लोगों को ज़रूरत है या नहीं! वे सदा इसी बात को निगाह में रख कर काम करते हैं कि इन वस्तुओं को किस तरीक़े से बेचा जाय कि अधिक लाभ हो। यह स्पष्ट है कि जब बाज़ार में बहुत ज़्यादा माल पहुँच जायगा तो उसका भाव घट जायगा और उन चीज़ों के मालिकों का नफ़ा भी कम हो जायगा। इसलिए वे सदा इतना माल पैदा करना चाहते हैं, जिससे बाज़ार का भाव न बिगड़े और उनको पूरा नफ़ा मिलता रहे, फिर चाहे ग़रीब लोग जीते रहें और चाहे भूखों मरें। थोड़े दिन हुए सुप्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक 'मेसर्स लाँगमैन्स ग्रीन एण्ड को' ने अपनी न्यूयार्क की शाखा से एक पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसका नाम है 'Towards civilisation' (सभ्यता की ओर) इस पुस्तक में, जिसमें बहुत से अनुभवी इञ्जीनियरों और वैज्ञानिकों के, जो न साम्यवादी ही हैं, न अनारकिस्ट—लेखों का संग्रह किया गया है। इस पुस्तक की भूमिका में एक स्थान पर कहा गया है :—"समझे जाने वाले पक्के व्यवसायी का प्रधान लक्ष्य तैयार होने वाली चीज़ों के परिमाण पर रहता है, न कि मनुष्य-जीवन की उन्नति पर, और इसके लिए वह अपना और अपने से सम्बन्ध रखने वाले अन्य सब लोगों का बलिदान करने को तैयार रहता है। उसके अर्थशास्त्रकारों के मतानुसार लाभदायक पूँजी वही है जो कि नई पूँजी उत्पन्न करे। जो पूँजी मनुष्य-जीवन को केवल सुन्दर और मीठा बनाती है वह उनकी सम्मति में

अनुत्पादक है—लाभ-रहित है। ये लोग उन बातों को, जो कम से कम लागत में अधिक से अधिक माल तैयार करने में सहायता नहीं पहुँचातीं, तुच्छ समझते हैं। वे इन बातों पर दार्शनिक दृष्टि से विचार नहीं कर सकते और न भविष्य की तरफ़ निगाह उठा कर देखने को राज़ी हैं। उन लोगों को अपने सिद्धान्त में सरल विश्वास है। वे उन धर्म-प्रचारकों के समान अन्ध और दृढ़-विश्वासी हैं, जो समझते हैं कि ईश्वर ने जो कुछ बनाया है अच्छा ही बनाया है! इन लोगों को एक इसी बात की लगन रहती है कि सम्पत्ति की वृद्धि हो और उसके विरोध करने वालों का सर्वनाश!

"आजकल बड़े-बड़े व्यावसायिक शहरों के नव-निर्माण में सिर्फ़ इसी बात का ध्यान रक्खा जाता है कि मज़दूर और दूसरे नौकर किसी प्रकार छत के नीचे थोड़ा बहुत सोकर फिर काम करने लायक़ बन जायँ। चूँकि आजकल सब कामों में प्रतिद्वन्द्विता का भाव सम्मिलित रहता है और जल्दी से जल्दी लाभ उठाने की नीयत रक्खी जाती है, इसलिए जीवन की सुन्दरता ही नहीं, वरन् स्वास्थ्य और साधारण आराम की बातों की भी उपेक्षा की जाती है। उन अभागे लोगों को तङ्ग जगहों में भेड़-बकरियों की तरह भरे हुए रहना पड़ता है, सूर्य की रोशनी भी उनको प्राप्त नहीं होती, साँस लेने के लिए हवा की जगह धुँआ मिलता है, और नालियों की बदबू नाक में घुसती रहती है। और तो क्या, वे नीले आकाश के भी दर्शन नहीं कर पाते!!"

अब पाठक इस बात को समझ सकते हैं कि बेकारी और मज़दूरों की दुर्दशा के वास्तविक कारण क्या हैं? मैशीनों का प्रचार बेकारी का एक प्रधान कारण अवश्य है, पर मैशीन तो कोई सजीव या विवेकशील चीज़ नहीं है। वह चाहे जैसी आश्चर्यजनक दिखलाई पड़े, वह असल में एक जड़ पदार्थ ही है। उससे जिस प्रकार मनुष्य काम लेंगे, उसी प्रकार वह काम करेगी। उसकी दशा एक चाक़ू की तरह है, जिससे मनुष्य के घाव और फोड़ों का ऑपरेशन करके उसे लाभ पहुँचाया जा सकता है, और साथ ही उसका गला काट कर उसके जीवन का अन्त भी किया जा सकता है! इसलिए मैशीनों के कारण मनुष्य-समाज का जो अनिष्ट होता दिखलाई पड़ रहा है, उसका मूल कारण मैशीन नहीं है, वरन् वे लोग हैं, जो उस पर अधिकार रखते हैं और उस पर अपने काम के लिए काम कराते हैं। ये ही पूँजीपति या 'कैपिटलिस्ट' दल वाले और इनकी कार्य-प्रणाली बेकारी का मूल कारण है।

जैसा ऊपर वर्णन किया जा चुका है, पूँजीपतियों अथवा कारख़ाने आदि के मालिकों का एकमात्र उद्देश्य यही रहता है कि किसी भी उपाय से कम से कम लागत में अधिक से अधिक माल तैयार किया जाय, अथवा व्यापार में ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा उठाया जाय। उन लोगों की यही प्रवृत्ति बेकारी को उत्पन्न करने वाली है। वर्तमान पूँजीवादी पद्धति में मज़दूरों को जितनी मज़दूरी दी जाती है, सदा उससे अधिक का काम कराया जाता है। उदाहरण के लिए अगर कोई कारख़ाने वाला अपने मज़दूरों को दस हज़ार महीना मज़दूरी देता है तो वह अवश्य ही उनसे इतना माल तैयार कराएगा जिसमें उसे सब ख़र्च निकाल कर पन्द्रह-बीस हज़ार रुपया मिल सके। इस प्रकार संसार भर के मज़दूर यदि सौ अरब रुपया मज़दूरी पाते हैं तो उसके बदले में डेढ़ सौ या दो सौ अरब का माल तैयार कर देते हैं। यह साफ़ ज़ाहिर है कि ये तमाम मज़दूर सौ अरब से अधिक का माल नहीं ख़रीद सकते, क्योंकि उनके पास इससे ज़्यादा रुपया ही नहीं होता। तब बाक़ी पचास या सौ अरब के माल का क्या हो? पूँजीपतियों या उनके कुटुम्ब वालों की संख्या तो इतनी ज़्यादा होती नहीं, कि वे उस सब माल का उपयोग कर सकें। फल यह होता है कि माल इकट्ठा होता जाता है और कुछ दिनों में उसका परिमाण इतना अधिक हो जाता है कि वह गोदामों में पड़ा सड़ने लगता है। तब वे लोग स्वयं कारख़ानों को बन्द कर देते हैं, या मज़दूरों के साथ ऐसी सख़्ती का बर्ताव करने लगते हैं कि वे हड़ताल कर देते हैं और काम बन्द हो जाता है। कारख़ाने वालों की इच्छा होती है कि जब उनका गोदामों में इकट्ठा माल बिक जाय तो वे फिर से कारख़ानों को खोलें। पर मज़दूर नौकरी छूट जाने के कारण भूखों मरने लगते हैं और पैसे के अभाव से कुछ भी माल नहीं ख़रीद सकते। इस प्रकार एक ऐसा व्यापार-सङ्कट (Business crisis) उत्पन्न हो जाता है जिसका अन्त हो सकना बड़ा कठिन जान पड़ता है। मालिक लोग अपने इकट्ठे माल को बेचे बिना और अधिक माल बनाना मूर्खता का काम समझते हैं और मज़दूर या नौकरी पेशा लोग बिना मज़दूरी पाए कुछ ख़रीद नहीं सकते। अन्त में बहुत दिनों तक ऐसी ही हालत बनी रहती है और माल धीरे-धीरे ख़र्च या ख़राब होता रहता है। जब माल घटने लगता है तो फिर कारबार शुरू होता है!!

इस विवेचन से स्पष्ट है कि पूँजीवाद अथवा कारबार की वर्तमान प्रणाली में स्वभावतः एक ऐसा अवगुण मौजूद है जो बार-बार व्यापार-सङ्कट और बेकारी की स्थिति को उत्पन्न करता है। कारख़ाने वाले कभी इस दशा से बचने के लिए मज़दूरों से दिन में दस घण्टे की जगह पाँच घण्टे में काम कराते हैं और कभी सप्ताह में तीन-चार दिन कारख़ानों को बन्द रखते हैं। वे मज़दूरों की तनख़्वाह को घटा कर भी अपनी कमी को पूरा करना चाहते हैं। कितने ही देशों में मज़दूरों की नौकरी का बीमा कराने की प्रथा जारी की गई है, जिससे बेकारी की हालत में बीमा कम्पनी वाले मज़दूरों को खाने के लिए दें। बड़े-बड़े देशों में सरकार स्वयं बेकार मज़दूरों की सहायता करती है और जब तक नौकरी नहीं मिलती, उनको अपने ख़ज़ाने से आधी तिहाई तनख़्वाह देती है। पर ये सब उपाय एक जीर्ण-शीर्ण मकान की ऊपर से लीपा-पोती करने के समान हैं और इनमें से कोई मूल कारण को दूर करके सदा के लिए स्थिति का सुधार नहीं कर सकता।

अब कुछ लोगों का ध्यान इस स्थिति के सुधार की तरफ़ जाने लगा है। यों तो कोई सौ वर्ष से अधिक समय से इसके लिए आन्दोलन किया जा रहा है और बहुत सी स्कीमें भी बनाई गई हैं, पर अधिकार सम्पन्न और बड़े लोग अब तक इन सब बातों को साम्यवादियों की बकवाद कह कर उपेक्षापूर्वक टाल देते थे। इतना ही नहीं, इन्हीं बातों की माँग पेश करने के अपराध में आज तक न मालूम कितने निरपराध और उच्च चरित्र के व्यक्तियों को जुर्माने, जेल और फाँसी तक की सज़ाएँ दी गई हैं और लाखों, करोड़ों श्रमजीवियों को भूख-प्यास की यन्त्रणाएँ उठानी पड़ी हैं। पर अब कुछ बड़े लोग स्वयं ही इन बातों को कह रहे हैं, और यद्यपि वे अब भी साम्यवादियों का विरोध करना बन्द नहीं करते, पर कुछ अंशों में उनके मत का समर्थन कर रहे हैं। कुछ दिन हुए इङ्गलैण्ड के सुप्रसिद्ध 'रिव्यू ऑफ़ रिव्यूज़' नामक मासिकपत्र के, जिसे 'बड़े' लोगों का ही पक्षपाती कहा जा सकता है, सम्पादक ने 'बेकारी' के सम्बन्ध में आलोचना करते हुए लिखा था:—

"मुझे तो यह जान पड़ता है कि इस समस्या को हल करने का उपाय उत्तरदायित्वपूर्ण सहयोग है। इसकी वृद्धि करने के अनेकों मार्ग हैं, पर उन सबका मूल आधार एक ही है। आवश्यकता इस बात की है कि मज़दूर काम और अपने श्रम के फल में प्रत्यक्ष रूप से दिलचस्पी लेने लगें। कारबार में सबसे प्रधान बात ये श्रमजीवी ही हैं, न कि मैशीन अथवा पूँजी, जिससे ये मैशीनें ख़रीदी जाती हैं। अगर मैशीनें उच्च-सभ्यता के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं—और मेरा विचार है कि वे आवश्यक हैं—तो भी हमको इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिए कि हम साधन को उद्देश्य न समझ बैठें! मैशीनों और पूँजी को वस्तु ही समझना चाहिए, ये सभ्यता का निर्माण करने में कच्चे माल की तरह हैं। इनको सभ्य-समाज के फूल या फल की तरह समझना भूल है। सभ्यता का वास्तविक फल तो श्रेष्ठ और उत्तम मनुष्यों को उत्पन्न करना ही है।

"मैं नहीं समझता कि जब तक हम इस बात को मज़बूती के साथ अपने दिल में न जमा लें, तब तक बेकारी की समस्या को सुलझाने का कोई उपाय सफल हो सकता है। अगर उद्योग-धन्धों और कारख़ानों के स्वामी तथा प्रबन्धक इस बात को अच्छी तरह समझ जायँ कि वे स्वयं और उनके मज़दूर एक ही सामाजिक दल के हैं, कारबार में दोनों किसी हद तक साझीदार हैं, और दोनों को उसके प्रबन्ध में बोलने का अधिकार है, तो बेकारी की समस्या सहज ही में हल की जा सकती है। यह निश्चय है कि ऐसा होने से सट्टेबाज़ शेयर होल्डर्स (हिस्सेदार) लम्बी-चौड़ी रक़में न पा सकेंगे और उनको बाज़ार में मिलने वाले सूद के बराबर मामूली रक़म पर ही सन्तोष कर लेना पड़ेगा। पर उस दशा में सबको काफ़ी काम करने को मिल सकेगा और मज़दूरों को वर्तमान समय की अपेक्षा कम काम करना पड़ेगा। अन्त में जब कि मनुष्य पूरी तौर से मैशीनों के मालिक बन जायँगे तो हमारे सामने यह कठिनाई न रहेगी कि बेकारों को कहाँ से काम दिया जाय, वरन् यह प्रश्न उपस्थित होगा कि मज़दूर अपने फ़ुर्सत के समय का सदुपयोग किस प्रकार कर सकते हैं।"

'रिव्यू ऑफ़ रिव्यूज़' के सम्पादक ने मालिकों और मज़दूरों में जिस सहयोग का प्रस्ताव किया है, कितने ही नर्म विचारों के साम्यवादी बहुत समय से उस पर ज़ोर देते आ रहे हैं। पर श्रमजीवियों के अधिकांश नेताओं का मत है कि इस उपाय से भी यह समस्या पूरी तरह से हल नहीं हो सकेगी, चाहे इसमें थोड़ा-बहुत सुधार भले ही हो जाय। जब तक कि मालिक और श्रमजीवी—ये दोनों श्रेणियाँ बनी रहेंगी और पूँजी वाले बिना कुछ मिहनत किए, केवल पूँजी लगाने के आधार पर मज़दूरों के स्वत्व अपहरण करते रहेंगे तब तक, न तो बेकारी पूरी तौर से मिट सकती है, न समाज में शान्ति स्थापित हो सकती है। इसका सच्चा उपाय यही है कि सब लोग अपने-अपने परिश्रम द्वारा रोटी कमा कर खायँ, फिर चाहे वह परिश्रम शारीरिक हो या मानसिक—चाहे वे मिट्टी खोदें और चाहे लड़के पढ़ावें। पर केवल किसी व्यक्ति का इस आधार पर, कि उसका बाप या अन्य रिश्तेदार मरते समय लाख दो लाख रुपया छोड़ गया है, या जुआ अथवा बेईमानी या किसी अन्य उपाय द्वारा वह बहुत सी सम्पत्ति पा गया है, बैठे-बैठे मौज उड़ाना किसी तरह न्यायसङ्गत नहीं माना जा सकता और जब तक ऐसी प्रथा क़ायम है, तब तक अवश्य कुछ लोगों को भूखों मरना पड़ेगा तथा उसके फल-स्वरूप समाज की शक्ति में बाधा पड़ेगी!!

* * *

भारतीय-भारत

भारतीय स्वाधीनता और देशी-राज्य

["बड़े पते की एक प्रजा"]

देशी रियासतें दो भागों में विभाजित की जा सकती हैं। एक तो वे, जिनका शासन वर्तमान पाश्चात्य ढङ्ग पर होता है, जहाँ के शासक प्रजा-सत्तात्मक संस्थाओं की स्थापना का सतत प्रयत्न कर रहे हैं, जहाँ प्रजा की मानसिक और आर्थिक परिस्थिति सुधारने के लिए उच्च शिक्षा-संस्थाएँ खोली जा रही हैं और जहाँ कला-कौशल और व्यापार की वृद्धि के लिए राजा लोग सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसी रियासतों में मैसूर का नम्बर सर्व-प्रथम है। दूसरी रियासतें वे हैं, जिनका शासन अब भी प्राचीन या मध्यकालिक ढङ्ग से होता है। हिन्दुस्थान की ५६२ रियासतों में से मुश्किल से १०-१२ रियासतें ऐसी होंगी, जिनकी गणना प्रथम श्रेणी में की जा सकती है। उन १०-१२ को छोड़ कर, सभी रियासतें दूसरी श्रेणी में सम्मिलित होंगी। इस वर्ग की रियासतों के उदाहरण उदयपुर और जयपुर राज्य हैं।

उन्नति और विकास के इस युग में, जब कि देशी रियासतों के पड़ोस में ही ब्रिटिश-भारत ने विज्ञान, शासन-विधान, व्यापार और कला-कौशल में इतनी उन्नति कर ली है, इन रियासतों का त्रस्त और नृशंस शासन अब भी वहाँ की प्रजा को दीन, निर्धन, अज्ञान और अपाहिज बनाए हुए है! यदि ये देशी राजा वर्तमान वैज्ञानिक प्रगति और संसार की राजनैतिक संस्थाओं का थोड़ा भी ज्ञान रखते हों, तो उन्हें यह शीघ्र मालूम हो जायगा कि अब उनके स्वेच्छाचारी (Autocratic) शासन के दिन इने-गिने रह गए हैं। संसार में आज जन-सत्तात्मक शासन-प्रणाली की लहर—चाहे वह किसी रूप में हो—बह चली है, और देशी रियासतें उस लहर के प्रवाह से बच नहीं सकतीं। ब्रिटिश-भारत में ऐसी संस्थाओं की स्थापना के साथ ही, देशी रियासतों में एक ऐसा वायु-मण्डल तैयार हो गया है कि यदि राजा लोग ब्रिटिश-भारत की जन-सत्तात्मक संस्थाओं की उपेक्षा भी करें, तो भी उनका प्रभाव वहाँ की प्रजा पर पड़े बिना नहीं रह सकता। वह दिन दूर नहीं है, जब भारत की छोटी-बड़ी सभी रियासतों में ऐसी संस्थाओं की स्थापना शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायगी। जैसे-जैसे दिन व्यतीत होंगे, उनके विरोध में अपनी समस्त शक्ति लगा देने पर भी उनकी जड़ अन्दर धँसती चली जायगी। राजाओं के बड़े से बड़े अत्याचारों और प्रजा के स्वाभाविक स्वत्वों पर छापा मारने से भी उनके स्वेच्छाचारी (Autocratic) शासन की रक्षा नहीं हो सकती; प्रत्युत इससे उनके शासन की जड़ हिल जायगी और स्वेच्छाचार सदैव के लिए रसातल को चला जायगा।

जन-सत्तात्मक शासन

ऐसी परिस्थिति में राजाओं की रक्षा का केवल एक ही उपाय है और वह है अपनी रियासतों में जन-सत्तात्मक शासन की स्थापना और ब्रिटिश राजा महाराजाओं की तरह स्वेच्छाचारी शासक से बदल कर वैध-शासक (Constitutional monarchy) बन जाना। ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट से दूषित सन्धियाँ करके और उसमें अपने मान-मर्यादा की रक्षा का वचन लेकर, अब अपनी नृशंसता और अपने स्वेच्छाचारों की रक्षा नहीं कर सकते। इतिहास इस बात का साक्षी है; संसार के किसी देश के राजा का स्वेच्छाचारी शासन अधिक दिनों तक नहीं टिक सका। रूस के ज़ारों को लीजिए। अपनी रत्ती-रत्ती शक्ति लगाकर भी वे अपने स्वेच्छाचारों की रक्षा न कर सके और उसके परिणाम स्वरूप उनका जो भयानक अन्त हुआ वह किसी शिक्षित पुरुष से छिपा नहीं है। ज़ारों की तरह आसमान में तीर मारने की आकांक्षा छोड़ कर, ब्रिटिश लोगों की तरह देशी नरेशों को भी अपनी प्रजा के स्वत्वाधिकार देकर अपनी रक्षा करनी चाहिए। यदि ये नरेश अपनी रियासतों में शान्ति पूर्वक रहना चाहते हैं, तो उन्हें वैध शासक बन कर ब्रिटिश-भारत से मित्रता स्थापित करके रहना पड़ेगा। रियासतों की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि ब्रिटिश-भारत से सम्बन्ध स्थापित किए बिना उनका काम ही नहीं चल सकता। इस प्रकार अपने राज्य में बिलकुल पाश्चात्य ढङ्ग पर स्वराज्य संस्थाएँ स्थापित करने और ब्रिटिश-भारत से मित्रता रखने से केवल प्रजा का ही उपकार न होगा, राजाओं के मान-मर्यादा की भी रक्षा होगी।

अगले अंक में

हमें खेद है कि स्थानाभाव के कारण हम इस अङ्क में कितने ही महत्वपूर्ण लेखों को स्थान नहीं दे सके हैं। उनको शीघ्र ही प्रकाशित करने की चेष्टा की जायगी। अगले अङ्क के कुछ लेखों के नाम देखिए :—

(१) हास्य-रस के समर्थ लेखक श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव का वर्तमान राजनीतिक आन्दोलन सम्बन्धी एक एकाङ्की नाटक।

(२) श्रीयुत चतुरसेन शास्त्री जी लिखित मुग़ल-दर्बार की रहस्यपूर्ण घटनाएँ।

(३) प्रो० बेनीमाधव जी अग्रवाल, एम० ए० की "सफल क्रान्ति के कुछ आधार"।

(४) रूसी क्रान्तिकारी दल का घोषणा-पत्र।

(५) भारतीय अछूतों की समस्या।

परन्तु अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इन स्वराज्य संस्थाओं की स्थापना देशी राज्यों में किस प्रकार हो? इसके आन्दोलन का मार्ग अत्यन्त कण्टकाकीर्ण है। शायद ही ऐसी कोई रियासत हो, जहाँ प्रजा को साधारण भाषण, लेखन और सभा आदि के अधिकार प्राप्त हों। ऐसी परिस्थिति में कोई राजनैतिक आन्दोलन उठाना आसान काम नहीं है। इसलिए अपने इन अधिकारों के लिए यदि रियासतों की प्रजा ब्रिटिश गवर्नमेंट की सहायता द्वारा राजाओं पर ज़ोर डालती हैं, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

सार्वभौम शक्ति से रियासतों का सम्बन्ध

राजाओं से ब्रिटिश गवर्नमेंट के सम्बन्ध की जाँच करने के लिए हाल ही में जो बटलर कमिटी नियुक्त हुई थी, उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हुए बहुत दिन नहीं बीते। उस कमेटी के समक्ष राजाओं की ओर से वकालत करते हुए सर लैसली स्कॉट ने कहा था कि, राजा महाराजाओं का सम्बन्ध भारत गवर्नमेंट से नहीं, सीधा सार्वभौमिक शक्ति (Paramountcy) या ब्रिटिश पार्लामेन्ट से है और इसलिए भारत की गवर्नमेंट रियासतों की नीति में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकती! परन्तु स्कॉट साहब के इस कथन की पुष्टि इतिहास से नहीं होती। वास्तव में राजाओं का सम्बन्ध सदैव भारत के प्रमुख शासक गवर्नर-जनरल-इन-कौंसिल से रहा है और वे सदैव रियासतों के कार्यों में हस्तक्षेप करते आए हैं। रियासतों का सम्बन्ध सीधा सार्वभौमिक शक्ति (Paramount power) से जोड़ लेने से ब्रिटिश सलाहगीरों का मन्तव्य यह प्रतीत होता है कि भारतवर्ष दो विभागों में—ब्रिटिश भारत और भारतीय-भारत (देशी रियासतों)—बँट जावे और उन दोनों में कभी ऐक्य स्थापित न होने पावे!! इन दोनों के बीच में सदैव फूट का एक अलंघ्य पहाड़ खड़ा रहे। भारत के बड़े-बड़े विचारकों ने इस नीति पर यही मत दिया है। परन्तु भारतीय नरेशों के हृदय में यह बात अच्छी तरह जम गई है कि पार्लामेन्ट से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने से भारत-गवर्नमेन्ट उनकी नीति में हाथ न डाल सकेगी और वे अपना स्वेच्छाचारी शासन सदैव स्थापित रख सकेंगे। शासन-विधान (constitution) के अनुसार ये युक्तियाँ कितनी ही सारगर्भित क्यों न हों; परन्तु भारत गवर्नमेन्ट और रियासतों का इतना घनिष्ट सम्बन्ध है कि एक दूसरे के बिना उनका काम एक क्षण भी नहीं चल सकता। कुछ नरेशों को यह सन्देह है कि भारत में स्वराज्य की स्थापना हो जाने पर न जाने उनकी क्या परिस्थिति होगी? हाल ही में बीकानेर के महाराजा ने अपने एक भाषण में यह बिलकुल स्पष्ट कर दिया है कि ब्रिटिश भारत में स्वराज्य की स्थापना होने पर भी देशी नरेश सुरक्षित रहेंगे; और उन्हें कोई हानि न उठानी पड़ेगी।

यह प्रश्न प्रायः उठा करता है कि सार्वभौलिक शक्ति को रियासतों की नीति में हस्तक्षेप करने का कहाँ तक अधिकार होना चाहिए? इस सम्बन्ध में देशी राज्यों की कमिटी (Indian States Committee) का यह निर्णय कि सार्वभौमिक शक्ति को किसी रियासत की आन्तरिक नीति में हस्तक्षेप करने का अधिकार वहीं तक रहे, जहाँ तक उसका सम्बन्ध रियासतों में स्वराज्य संस्थाएँ स्थापित करने से है, अत्युत्तम प्रतीत होता है। परन्तु जब तक वहाँ ऐसी संस्थाएँ स्थापित न हो जायँ और प्रजा के हाथ में राजाओं के अत्याचारों से बचने का कोई अधिकार न आ जाय तब तक सार्वभौमिक शक्ति को ऐसे अत्याचारी शासन का अन्त करने या उसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार होना चाहिए। कमेटी के इस निर्णय का स्वागत सभी विद्वानों और रियासतों की प्रजा ने किया है।

संयुक्त सभा

उपर्युक्त युक्तियों से देशी रियासतों और ब्रिटिश-भारत में ऐक्य स्थापित करने की आवश्यकता प्रतीत हो जाती है। इस ऐक्य को चिरस्थायी बनाने के लिए ब्रिटिश-भारत और रियासतों की एक संयुक्त-सभा (Federation) की बड़ी आवश्यकता है। परन्तु निकट-भविष्य में उसकी स्थापना की कोई आशा नहीं की जा सकती। क्योंकि ५६२ रियासतों के प्रतिनिधियों की सभा का प्रबन्ध कोई आसान कार्य न होगा। इसके लिए केवल दो ही उपाय हैं, एक तो यह कि छोटी-छोटी रियासतें अपने पास की बड़ी-बड़ी रियासतों से मिल जायँ और वे सम्मिलित रूप में अपने प्रतिनिधि संयुक्त-सभा में भेजें; और दूसरा यह कि जो रियासतें प्रान्तों में अकेली-दुकेली पड़ गई हैं, वे उन प्रान्तों में मिला ली जायँ। यह समस्या व्यावहारिक रूप में विकट होगी; परन्तु सम्भव है कि यदि उन छोटे राजाओं की मान-मर्यादा के अनुसार दूसरी रीति से उन्हें सन्तोषित कर दिया जाय तो वे रियासतों पर से अपना अधिकार छोड़ने के लिए राज़ी हो जायँ।

* * *
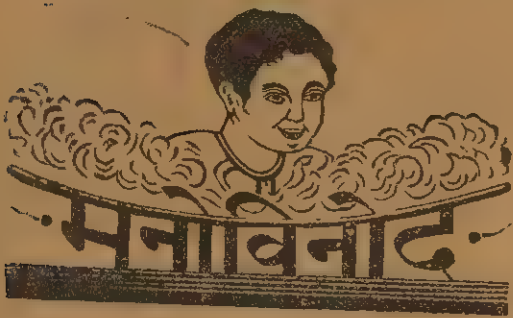
रेलवे के एक बड़े दफ़्तर का कोई कर्मचारी संयोग-वश बहिरा हो गया। सभी बड़े अफ़सर उसके काम से प्रसन्न थे और उसे नौकरी से अलग नहीं करना चाहते थे। वे लोग मिल कर सलाह करने लगे कि उसे कौन सा काम दिया जाय।

एकाएक एक नया अफ़सर बोल उठा—उसको कम्प्लेण्ट डिपार्टमेन्ट (शिकायत-विभाग) में रख दीजिए।

* * *

डॉक्टर साहब रोगी को देखने के लिए उसके घर पहुँचे। वे बोले—शराब पीने के बारे में मैंने जो हिदायत की थी उस पर आप अमल कर रहे हैं न?

रोगी—जी हाँ, मैं हर रोज़ छै पेग शराब से अधिक नहीं पीता।

डॉक्टर—यह क्या, मैंने तो सिर्फ़ तीन पेग पीने को कहा था।

रोगी—मैंने एक दूसरे डॉक्टर को भी बुलाया था और उन्होंने भी तीन पेग पीने को कहा है; इसलिए मैं दोनों की आज्ञा का पालन कर रहा हूँ!

* * *

स्त्री—क्यों, आप विदेशी सिगरेट पी रहे हैं? इसका तो बॉयकॉट किया गया है। क्या खद्दर पहिनने वालों को यही उचित है?

पति—इसीलिए तो कहा जाता है कि औरतों को अक़्ल नहीं होती। तुम बॉयकॉट का मतलब भी समझती हो?

स्त्री—क्या?

पति—बॉयकॉट का मतलब है विदेशी माल को जला कर नष्ट कर देना। जैसे विलायती कपड़ों की होली जलाई जाती है, उसी तरह मैं भी इसको जला रहा हूँ।

* * *

बच्चा—माँ, मैना किसको कहते हैं?

माँ—बेटा, मैना एक पक्षी होता है।

बच्चा—क्या उसके दो पङ्ख होते हैं?

माँ—हाँ, उसके पङ्ख होते हैं।

बच्चा—क्या वह उड़ भी जाता है?

माँ—हाँ, बेटा।

बच्चा—तो अब मेरी आया (धाय) भी उड़ जायगी, क्योंकि पापा उसको छाती से लगा कर कह रहे थे—'मेरी मैना।'

माँ—(गुस्से को रोकते हुए) तो वह ज़रूर उड़ जायँगी।

दूसरे दिन उठने पर बच्चे ने देखा कि सचमुच आया नहीं है, और उसने समझा कि वह उड़ गई।

* * *

मैजिस्ट्रेट—(गिरहकट से) तुमने किस तरह उसकी जेब से रुपए का बटुआ निकाला कि उसको पता ही न लगा।

मुल्ज़िम—इसकी तरकीब मैं फ़ीस पाने पर बतलाया करता हूँ?

* * *

प्रश्न—वर्णमाला की उत्पत्ति कहाँ से हुई ?

उत्तर—वर्णमाला की उत्पत्ति कहाँ से हुई, इसका ठीक-ठीक जवाब नहीं दिया जा सकता। क्योंकि इसका विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ है, जिस प्रकार मनुष्य और अन्य सब चीज़ों का विकास होता है। यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि किसी बुद्धिमान या ज्ञानी मनुष्य ने किसी जगह बैठ कर वर्णमाला या अक्षरों की रचना न की थी, और यह भी हमको मालूम है कि वर्णमाला का आरम्भ चित्रों के स्वरूप में हुआ था। जिस प्रकार बच्चा अक्षर-ज्ञान प्राप्त करने से पहले तस्वीरों द्वारा पढ़ता है और विभिन्न चीज़ों का ज्ञान प्राप्त करता है, उसी प्रकार मनुष्यों ने भी चित्रों द्वारा लिखना-पढ़ना आरम्भ किया था। धीरे-धीरे यह तस्वीरें सरल होती गईं और अन्त में उन्होंने अक्षरों का रूप धारण कर लिया।

* * *

प्रश्न—रेल कब और कैसे चली ?

उत्तर—रेल के इञ्जिन का सब से पहला आविष्कारक इङ्गलैण्ड का जॉर्ज स्टीफ़ेनसन नामक व्यक्ति था, जो एक ग़रीब आदमी था और मामूली नौकरी पर मज़दूरी करके अपना और अपने कुटुम्ब का पेट भरता था। उसे शुरू से ही भाप से चलने वाली गाड़ी बनाने का शौक़ था। २७ सितम्बर, सन् १८२५ के दिन उसने एक अच्छा इञ्जिन बना कर उसके द्वारा रेलगाड़ी चला कर दिखलाई। उसकी चाल पन्द्रह मील फ़ी घण्टा थी। इस घटना के पश्चात् जॉर्ज स्टीफ़ेनसन का नाम समस्त यूरोप में हो गया और बड़े-बड़े बादशाह उसको बुलाने लगे। थोड़े ही दिनों में तमाम यूरोप में रेल का प्रचार हो गया और वहाँ के लोगों ने संसार के दूसरे देशों में उसका प्रचार किया।

* * *

प्रश्न—आँखों की भौंहें किस काम आती हैं ?

उत्तर—यह बड़ा अच्छा सवाल है और इसके बारे में हम सबको जानकारी होनी चाहिए। पर कितने ही बड़ी उम्र के आदमी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। भौंहों से शारीरिक लाभ भी है और वे सुन्दरता को भी बढ़ाती हैं। अगर हमारे भौंहें न होतीं, तो परिश्रम करने से हमारे मस्तक से जो पसीना बहता वह सीधा हमारी आँखों में चला आता। पसीना हानिकारक चीज़ है और वैसे भी उसको आँखों में जाने से हम अच्छी तरह देख भी नहीं सकते। भौंहें उस पसीने को रोक लेती हैं और बग़ल से निकाल देती हैं।

* * *

केसर की क्यारी

डाली फूलों की

[नाख़ुदायसख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

बुलबुल का चुराया दिल नाहक़, यह ख़ाम ख़याली फूलों की।
लेती है तलाशी बादेसबा, अब डाली-डाली फूलों की॥

माना कि लुटाया रातों को गुलज़ार में मोती शबनम ने!
जब सुबह हुई, सूरज निकला, तो जेब थी ख़ाली फूलों की!!

आती है ख़िज़ाँ अब रुख़सत कर; ज़िन्दा जो रहे फिर आएँगे!
हमसे तो न देखी जाएगी, माली पामाली फूलों की!!

फिर रुत बदली, फिर अब्र उठा, फिर सर्द हवाएँ चलने लगीं!
हो जाय परी, बन जाय दुल्हन; अब डाली-डाली फूलों की!!

हारों में गुँधे, जकड़े भी गए, गुलशन भी छुटा, सीना भी छिदा!
पहुँचे मगर उनकी गरदन तक, यह ख़ुश-इक़बाली फूलों की!!

बुलबुल को यह समझा दे कोई, क्यों ख़ून के आँसू रोती है!
उड़ जायगी सुर्ख़ी फूलों से, मिट जायगी लाली फूलों की!!

हम अपने दिल में दाग़ों को, यों देखते हैं, यूँ जाँचते हैं!
करता है निगहबानी जैसे, गुलज़ार में माली फूलों की!!

गुलज़ारे-जहाँ को जब देखा, तो शक्ल नज़र आई मुझको!
आलम से अलग, आलम से जुदा, आलम से निराली फूलों की!!

गुलचीं की भी नज़रें पड़ती हैं, सरसर के भी झोंके आते हैं!
हो ऐसे में किससे, क्यों कर, कब तक, रखवाली फूलों की!!

हर मिसरे में, हर शेर में है, गुलहाय मज़ामीं का जलवा!
ऐ "नूह" कहूँ इसको मैं ग़ज़ल, या समझूँ डाली फूलों की?

शैदाये वतन हम हैं!

गिरफ़्तारे बला बताब मजनूँ ख़सता-तन हम हैं।
मगर इस पर भी वजहे ज़ीनते रङ्गे-चमन हम हैं!

सितमगर फ़ितना जू अय्यार ज़ालिम से कोई कह दे—
कि सौदा है वतन का सर में, शैदाए वतन हम हैं!!

लिबासे हुब्बे मुलकी तुच के रङ्ग अपना दिखाएगा!
बनेंगे जिससे फाहे ज़ख़्म के, वह पैरहन हम हैं!!

हमारी रौशनी से रौशनी में आज दुनिया है!
अँधेरा दूर जिससे होगया, ऐसी किरन हम हैं!!

हमें ताज़ीम से है काम, मन्दिर हो कि मस्जिद हो।
हरम में शेख़ हम हैं, बुतकदे में बरहमन हम हैं!!

इरादा है बढ़ा कर इरतबाते हिन्दुओ मुस्लिम;
दिखा दें दुश्मनों को सूरते गङ्गो-जमन हम हैं!!

न वह अगला तराना है, न वह अगला फ़िसाना है।
ज़माने में हमारा अब, गया-गुज़रा ज़माना है!!*

* यह लाजवाब कविता कविवर "बिस्मिल" जी ने स्थानीय पुरुषोत्तम पार्क में कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के मेम्बरान की गिरफ़्तारी के अवसर पर पढ़ी थी, जो बहुत पसन्द की गई है। पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि 'बिस्मिल' और 'भविष्य' एक ही वस्तुओं के दो भिन्न-भिन्न नाम हैं!

—स० 'भविष्य'

कहानी फूलों की

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

रह जायगी कहने सुनने को गुलशन में कहानी फूलों की,
कै रोज़ यह आलम फूलों का, दुनिया है यह फ़ानी फूलों की।

गुलज़ार में आया मौसिमे गुल अल्लाह रे! जवानी फूलों की,
अब फूल के बुलबुल कहती है, फूलों से कहानी फूलों की!

सैय्याद के घर में कहता है, यूँ कोई कहानी फूलों की,
जाँची, परखी, देखी, भाली; मैंने भी जवानी फूलों की!

ऐ बादेसबा! यह ज़ुल्मो-सितम!! पत्ते भी अलग, शाख़ें भी जुदा,
गुलशन में न रहने पाएगी, क्या कोई निशानी फूलों की?

जब मौसमे-गुल का ज़िक्र आया, तो अश्क बहाए गुलचीं ने,
तसवीर की सूरत फिरने लगी, आँखों में जवानी फूलों की?

वह महफ़िले-गुल बाक़ी न रही, वह अहले चमन बाक़ी न रहे,
अब कौन सुनाएगा हमको, दिलचस्प कहानी फूलों की?

गुलचीं भी मुख़ालिफ़, सरसर भी; कुछ बस नहीं चलता बुलबुल का,
मिट्टी में मिलाई जाती है, पुर-जोश जवानी फूलों की!

गुलशन में न क्योंकर दिल बहले, वह सुनते हैं, मैं सुनता हूँ!
फूलों से फ़िसाना बुलबुल का, बुलबुल से कहानी फूलों की।

बुलबुल के मुक़द्दर से बेशक, तक़दीर इसी की अच्छी है।
चल फिर के सबा ही चूमती है, क्या-क्या पेशानी फूलों की!

मज़मून के गुल क्योंकर न खिलें "बिस्मिल" फिर सफ़हए-काग़ज़ पर,
सौ रङ्ग से लिक्खी है तुमने, ख़ुश रङ्ग कहानी फूलों की!!

फ़रियादे बिस्मिल

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

फिरते हैं क्या सोच कर वह इस तरह अकड़े हुए,
मज़हबी झगड़ों में हैं दिन-रात जो जकड़े हुए!

उनसे हम बँगले पे कहने जा रहे थे राज़े-दिल,
रह गए कुछ सोच कर, अपनी ज़बाँ पकड़े हुए!

कुछ लिखें 'बिस्मिल' तो आफ़त लिख के सर पर मोल लें,
सब हैं क़ानूनी शिकञ्जों में बहुत जकड़े हुए!!

× × ×

मुँह से हम कहते हैं भगवान का दर्शन मिल जाय,
और है पेट का यह हुक्म कि भोजन मिल जाय!!

कोई अरमान नहीं इसके सिवा ऐ 'बिस्मिल'
उनके फ़ैशन से हमारा कहीं फ़ैशन मिल जाय!!

× × ×

पाजामे की इज़्ज़त नहीं पतलून के आगे,
क्यों बहस अबस हम करें क़ानून के आगे।

पामालिए तौक़ीर से डरते हो जो 'बिस्मिल'
तो सर न उठाना कभी क़ानून के आगे!!

× × ×

जगद्गुरु का फ़तवा !

[प्रतिवादि भयङ्कर श्रीमत्स्वामी वृकोदरानन्द जी जगद्गुरु]

"हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः !"

कुछ लोगों की राय है कि सखी नौकरशाही ने श्रीमान पण्डित मोतीलाल जी नेहरू को छोड़ कर बड़ी ग़लती की है। परन्तु बात असल यह है कि जब देश में चोचलेबाज़ी के लिए नौजवान काफ़ी मिल रहे हैं तो—'ऐसे वृद्ध अपङ्ग को कौन बाँधि भुस देई।'

एक तो महँगी का ज़माना, दूसरे आमदनी का टोटा ! तिस पर पण्डित जी का रुग्ण शरीर ! सखी की शराब की पवित्र आमदनी पर हज़रत पहले ही पानी फेर चुके थे। ऐसी हालत में बेचारी कहाँ से लाती दवा-इलाज के लिए पैसे और आठो पहर की तीमारदारी के लिए समय !

यद्यपि पण्डित जी जब से मूँछें मुँड़ाने लगे थे, तब से नौजवानों के भी कान कतरते थे और सखी भी आप पर दिलोजान से फ़िदा थी। अल्लाहताला ने दिल का अरमान पूरा कर लेने का स्वर्ण-सुयोग भी दिया था, परन्तु दईमारी बीमारी ने सारा मज़ा ही किरकिरा कर दिया। अब लॉर्ड इरविन महोदय एक ऑर्डिनेन्स निकाल दें कि कोई लीडर जेल जाने पर बीमार न पड़ा करे।

बम्बई के किसी एडवोकेट जनरल महोदय ने 'फ़तवा' दिया है कि बहिष्कार हर हालत में ग़ैर क़ानूनी है, चाहे वह विदेशी माल का हो या कौन्सिलों का। सरकार को चाहिए कि उपर्युक्त एडवोकेट महोदय को शीघ्र ही 'डॉक्टर ऑफ़ लॉ' की उपाधि से विभूषित कर अपना लीगल रिमेम्ब्रेन्सर बना ले। क्योंकि ऐसे क्षणजन्मा जीव संसार में बहुत कम मिलते हैं !

परन्तु आश्चर्य तो यह है कि क़ानून के इतने बड़े दिग्गज होकर भी एडवोकेट महोदय ने विलायती शराब छोड़ने को ग़ैरक़ानूनी काम नहीं बतलाया। हालाँ कि सरकार को इस पवित्र रोज़गार से आमदनी भी काफ़ी होती है और सर्वसाधारण को भी ग़म-ग़लत करने का सुलभ साधन हाथ लगता है। फिर ऐसी अमूल्य वस्तु का बहिष्कार ग़ैरक़ानूनी क्यों नहीं माना जा सकता।

पञ्जाब की पुलिस ने स्वर्गवासी लाला लाजपतराय के मकान की तलाशी लेकर वाक़ई बड़ी बुद्धिमानी का काम किया है। सरकार को चाहिए कि स्वर्ग में लाला जी के कामों की देख-रेख करने के लिए भी कोई जासूस नियुक्त कर दे।

रुपए की तङ्गी से बम्बई की सरकार ने अपने कर्मचारियों का वेतन घटाने का विचार किया है। बाज़ार मन्दा होने पर किसी सेठ ने भी अपने कर्मचारियों को लिखा था कि "कमरी ओढ़ो सत्तू खाव, अब ही काम निकारे जाव !" कभी न कभी तो सुदिन आएगा ही।

कलकत्ते के भारत-बन्धु 'स्टेट्समैन' की राय है कि राउण्ड टेबिल कॉन्फ्रेन्स का अध्यक्ष किसी ऐसे आदमी को बनाना चाहिए जो भारत के बारे में कुछ न जानता हो। इसलिए विलायत के लॉर्ड चान्सलर को इसका अध्यक्ष बनाना चाहिए। बात बन्धुवर ने बावन तोले पाव रत्ती ठीक कही है। क्योंकि "यादृशी शीतला देवी तादृशी खर वाहनो।"

कुष्टिया के एक वकील साहब से सरकार दौलत मदार की ओर से नोटिस देकर पूछा गया है कि चूँकि उन्होंने किसी वालण्टियर को अपने घर में स्थान दिया है, इस लिए उन पर मामला क्यों न चलाया जाय ? ज़रूर चलाया जाय। हमारी तो राय है कि उन माता-पिताओं पर भी मामले चलाए जायँ जिन्होंने वालण्टियर बच्चे पैदा किए हैं ! [illegible]र अगर गर्भाधान के पूर्व ही कोई ऐसी शर्त दम्पतियों से करा ले तो और भी अच्छा हो।

गोरों की देखादेखी अर्द्ध-गोरे भी जोश में आ गए हैं और कालों को कुचल डालने के लिए लँगोट कस कर तैयार हैं। इस देश का नमक जब सात समुद्र तेरह नदी पार वालों को व्याकुल कर देता है तो जो इसी देश के जन्मे और बढ़े हैं उन्हें भला कैसे चैन से रहने दे सकता है ? आशा है, अर्द्ध-गोरे भाई भी अपने दिल का अरमान पूरा कर डालेंगे।

इलाहाबाद कॉङ्ग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी ने आसाम कॉङ्ग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी के पास एक पचास रुपए का बीमा भेजा था, उसे सरकार ने बीच ही में ज़ब्त कर लिया। जलियाँवाला बाग़ में घुस कर पुलिस ने कॉङ्ग्रेसियों की झोपड़ियाँ नष्ट कर दीं। इससे मालूम होता है कि यूरोपियन एसोसिएशन ने जो मुजर्रब नुस्ख़ा बतलाया था, वह सरकार को पसन्द आ गया है। मगर इधर 'मरज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की !' यह युक्ति भी चरितार्थ होती जा रही है। इसलिए हमारी तो

(शेष मैटर ३४ वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

बेचारा सम्पादक

कुछ समझ कर सोच कर भरिए असर मज़मून में। आपने कुछ लिख दिया और आ गए क़ानून में ॥

—सरदार वल्लभ भाई पटेल की पुत्री और धरसाना के नमक-सत्याग्रह की सञ्चालिका श्रीमती बहिन को भूमि-कर बन्द करने का आन्दोलन करने के अभियोग में ४ महीने की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है। उन्हें 'बी' क्लास में रक्खा गया है।

—कुमारी दिलशाद सैयद ने मातृभूमि को अपनी सेवाएँ अर्पित करने के लिए हाल ही में एफ़० ए० से कॉलेज का अध्ययन छोड़ा था। आपने बम्बई के कॉङ्ग्रेस बुलेटीन के सम्पादकत्व का भार अपने ऊपर लिया था। इसके फल-स्वरूप आप गिरफ़्तार कर ली गईं और ३ महीने की क़ैद की सज़ा दी गई।

—पुलिस ने मसूर (पूना) के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड स्कूल पर से राष्ट्रीय झण्डा उतार लिया। बाद में उसने राममन्दिर पर से भी राष्ट्रीय झण्डा उतार कर अग्नि में स्वाहा कर दिया। गाँव वालों के प्रतिरोध करने पर बहुत से व्यक्ति गिरफ़्तार कर लिए गए।

—यरवदा जेल में रतीलाल नाम के स्वयं-सेवक की मृत्यु के उपलक्ष में अहमदाबाद में ६ सितम्बर को नङ्गे सर काले झण्डों का जुलूस निकाला गया था। शहीद की लाश की अनुपस्थिति में उसका फ़ोटो माला पहना कर कुर्सी पर घुमाया गया।

—अहमदाबाद के एक मिल-मालिक श्री० अम्बालाल साराभाई की धर्मपत्नी श्रीमती सरलादेवी को ५०० रुपया जुर्माना हुआ है। जुर्माना न देने पर डेढ़ माह के लिए उन्हें जेल-यात्रा करनी पड़ेगी।

—सिन्ध के हाईकोर्ट के जुडीशियल कमिश्नर ने सक्खर के वकील श्री० चौथराम टी० बालेचा और सन्तदास ईदानमल लालवानी वकील की सनदें सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के कारण छीन लीं।

—श्री० फ़रीदुल हक़ अन्सारी की गिरफ़्तारी के पश्चात् नई दिल्ली की बार-कौन्सिल के नए डिक्टेटर श्री० आसफ़अली भी १८ सितम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—दिल्ली में सत्याग्रह-आश्रम और कॉङ्ग्रेस को ग़ैर-क़ानूनी क़रार देकर गवर्नमेण्ट ने ११२ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए थे। उनमें से ७२ स्वयंसेवकों को ३-३ माह की सख़्त क़ैद और ५०-५० रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई। जुर्माना न देने पर उन्हें १५-१५ दिन की सख़्त सज़ा और भोगनी पड़ेगी।

—दिल्ली के १२ वालण्टियर, जो सड़कों पर तख़्ती लिए घूम रहे थे, गिरफ़्तार कर लिए गए। तख़्तियों पर लिखा था कि—'हम ग़ैरक़ानूनी सभा के मेम्बर हैं, यदि जी चाहे तो पकड़ लो।'

—२० सितम्बर को पुलिस ने दिल्ली के सत्याग्रह आश्रम पर दुबारा धावा किया और १४६ वालण्टियरों को गिरफ़्तार कर ले गई। साथ में सब काग़ज़-पत्र और रजिस्टर भी लेती गई। बाद में उसने दिल्ली के चौथे डिक्टेटर मौलाना अहमद सईद और मङ्गतराम कोतवाल वाला को भी दफ़ा १२४ में गिरफ़्तार कर लिया।

—लाहौर के प्रोफ़ेसर रामगोपाल शास्त्री से एक साल के लिए दस हज़ार रुपए की ज़मानत माँगी गई थी। उनके इन्कार करने पर उन्हें एक साल की सादी सज़ा दी गई। वे 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं।

—अमृतसर में कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी के सदस्य और शहर कमिटी के सभापति मुहम्मद इस्माईल ग़ज़नवी और जनरल सेक्रेटरी भोलानाथ, ग़ैरक़ानूनी सभा के सदस्य होने के कारण, गिरफ़्तार कर लिए गए।

—लाहौर शहर के डिक्टेटर लाला हेमराम, वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी को ग़ैर-क़ानूनी क़रार देने के बाद, गिरफ़्तार कर लिए गए। लाला ठाकुरदास की स्त्री पूरन देवी भी उसी अपराध में गिरफ़्तार की गईं और उन्हें चार माह की सज़ा दी गई।

—अमृतसर में रूपलाल और रोशनलाल नाम के क्रमशः १० और १२ साल के दो लड़के, कॉङ्ग्रेस की डुग्गी पीटने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए। उनमें से हर एक पर ५०) जुर्माना हुआ, न देने पर एक-एक माह की सख़्त सज़ा।

—लाहौर के श्री० लाला रामसहाय कपूर (शहीद राजपाल के पिता), भगवानदास बीड़ी मर्चेण्ट और लाला लछमनदास गिरफ़्तार कर लिए गए।

—अमृतसर में सिगरेट की दुकानों पर पिकेटिङ्ग अभी तक जारी है और लोगों के झुण्ड के झुण्ड तमाशा देखने को वहाँ रोज़ एकत्रित होते हैं। कॉङ्ग्रेस विलायती सिगरेटों के विरुद्ध ज़बरदस्त प्रचार कर रही है। केवल एक दिन में वहाँ इस सम्बन्ध में छः गिरफ़्तारियाँ हुईं।

—झङ्ग में पुलिस ने सुन्दरलाल मानचन्द नामक एक १३ वर्ष के लड़के को दफ़ा १२४ ए में उसके पिता की दुकान पर गिरफ़्तार किया और उसके हाथों में हथकड़ी डाल कर कोतवाली ले गई।

—१८ सितम्बर को पञ्जाब के ग्यारहवें डिक्टेटर श्री० आर० सी० सैनिक को दो हज़ार की ज़मानत देने से इनकार करने पर एक साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई।

—इटावा के गवर्नमेण्ट कॉलेज पर पिकेटिङ्ग पूर्ववत् जारी है। १५ सितम्बर को जो स्त्रियाँ गिरफ़्तार हुई थीं उन पर २५) से ५०) रुपए तक जुर्माना हुआ; पर उन्होंने देने से इनकार किया। तो भी वे यह कह कर छोड़ दी गईं कि उनकी जायदाद में से जुर्माना वसूल कर लिया जायगा। इस सम्बन्ध में वहाँ १८ सितम्बर तक ६० गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं। वालण्टियरों का व्यवहार सौजन्यपूर्ण है।

—१५ सितम्बर को पुलिस ने भीकनपुर के सत्याग्रह कैम्प पर धावा किया और २२ वालण्टियरों को, जो उस समय वहाँ उपस्थित थे, गिरफ़्तार करके ले गई।

—बनारस में १७ सितम्बर को भोला नामक भङ्ग और गाँजे के ठेकेदार के घर पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में १४ वालण्टियर गिरफ़्तार किए गए।

—कलकत्ते में १७ सितम्बर को बड़े बाज़ार में पिकेटिङ्ग के अभियोग में ५ स्त्री स्वयंसेविकाएँ और १२ पुरुष वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए। तारीख़ १८ को उसी सम्बन्ध में २ स्त्रियों और ८ पुरुषों की गिरफ़्तारी की गई। उनमें से ४ स्त्रियों को चार-चार माह की सादी और एक वालण्टियर को ५ माह की सख़्त सज़ा हुई।

—१५ सितम्बर को रानपुर (बङ्गाल) में सबेरे पुलिस ने स्वर्गीय बाबू पूरनचन्द सेन वकील के घर की केवल दो माह के अन्दर तीसरी बार तलाशी ली। उसे वहाँ कोई आपत्तिजनक चीज़ नहीं मिली। पर वह उनके पुत्र श्री० सुरेशचन्द्र सेन को बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर ले गई।

(शेष समाचार ७वें पृष्ठ पर देखिये)

जगद्गुरु का फ़तवा

(३३वें पृष्ठ का शेषांश)

सम्मति है कि सरकार एक दफ़े शाहमदार की मज़ार पर धरना दे आवे। केवल इलाज मुआलिजे से ही काम न चलेगा।

परन्तु श्राद्ध का सब से अधिक पुण्य सञ्चय किया हमारी पुण्यवती सखी नौकरशाही ने। उनके घर मानो बारहमासी 'पितर पख' था। खोपड़ियों का श्राद्ध, क़ानून और नियम का श्राद्ध, मनुष्यता और सभ्यता का श्राद्ध, ऑर्डिनेन्स और दफ़ा १४४ का श्राद्ध, कॉङ्ग्रेस तथा अहिंसात्मक आन्दोलन के साथ ही सखी ने देश के सभी बड़े-बड़े नेताओं का भी जीते जी श्राद्ध कर डाला! 'तृप्यन्ताम्! तृप्यन्ताम्' के तुमुल रव से आकाश गूँज उठा।

बम्बई के आन्ध्र-निवासी विलायती कपड़े वालों ने सरकार से प्रार्थना की है कि वे अब विलायती कपड़े का कारोबार नहीं करेंगे, इसलिए उनकी दूकानों के सामने पिकेटिङ्ग करने वाले गिरफ़्तार न किए जाएँ। परन्तु रोग की दवा रोगी के इच्छानुसार थोड़े ही होती है। लेहाज़ा सरकार को चाहिए कि वह आँख मूँद कर स्वयंसेवकों को पीसती रहे।

'केपिटल' के भाई डिचर की राय है कि राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स में साइमन रिपोर्ट के दूसरे भाग पर बहस-मुबाहिसा करके उसी की सिफ़ारिशों के अनुसार कोई 'निरगन्धाइव किन्सुकाः' शासन-प्रणाली भारत में क़ायम कर दी जाए। भाई डिचर तो बड़े उदार और समझदार मालूम पड़ते हैं, मालूम होता है, इन्हें पॉलिटिक्स पढ़ाने में इनके बुज़ुर्गों ने काफ़ी कोदों ख़र्च किया है।

इस साल पितृपक्ष में श्राद्धों की ख़ासी धूम रही। बिहार और संयुक्त प्रान्त में वर्षा न होने पर भी वहाँ के सनातनियों ने पितरों को पानी देने में कोताही न की। रेगिस्तानी ऊँटों की तरह बरसों के लिए खाद्य-पानी पेटों में भर कर पितर लोग सकुशल अपने-अपने स्थानों पर लौट गए।

ऐन पितृपक्ष में ज़रूरत से ज़्यादा जल बरसा कर इन्द्र महाराज ने भी बम्बई और बङ्गाल की फ़सल का श्राद्ध कर डाला। उत्तर भारत में प्रायः सर्वत्र ही सूखे श्राद्ध की धूम रही। परन्तु अन्त में भगवान इन्द्र ने पितरों पर कृपा कर दी। नहीं तो बेचारों को ख़ाली हाथ ही लौटना पड़ता।

सब से अधिक धूमधाम से श्राद्ध किया पञ्जाब की गवर्नमेण्ट ने, एक साथ ही सारी की सारी कॉङ्ग्रेस कमिटियों को ग़ैरक़ानूनी क़रार देकर। अगर अन्यान्य प्रदेशों की सरकारें भी ऐसी ही सुबुद्धि से काम लें तो लगे हाथ सारे देश के पितर तर जाएँ।

हिन्दू-जाति की नौका के 'सोल' कर्णधार श्रीमान डॉक्टर मुञ्जे बहादुर अगर राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स में न जायँगे तो हिन्दुत्व तहस-नहस (Ruin) हो जाएगा। अच्छा किया आपने कि जाने को तैयार हो गए और बेचारे बाइस करोड़ हिन्दुओं को मुफ़्त से बचा लिया।

* * *

शैलबाला ... १)
विसर्जन ... ॥)
राजरानी ... ।॥)
नल-दमयन्ती ... ।॥)
सत्य-हरिश्चन्द्र ... ।≡)
अनुराग-वाटिका ... ।-)
बनारस ... १॥)
स्वयं स्वास्थ्य-रक्षक ... ।॥=)
अजेय तारा ... १॥)
विश्राम बाग़ ... १॥)
पृथ्वीराज चौहान ... ।॥)
छत्रपति शिवाजी ... ।॥)
सहधर्मिणी ... ।॥)
रूपनगर की राजकुमारी... ३)
विचित्र डाकू ... १।)
पाप की छाप ... २)
शैतान पार्टी ... ।॥)
रमणी-नवरत्न ... १)
विचित्र घटना ... ।)
सावित्री-सत्यवान ... ।॥)
अत्याचार का अंश ... ।)
सदाचार-दर्पण १॥),२), २॥)
भारत का इतिहास ... (सजिल्द) ३)
मज़ेदार कहानियाँ ... १)
सूक्ति-सरोवर ... २॥)
कौतूहल भण्डार ... १।)
अन्त्याक्षरी ... ॥)
पहेली बुझौवल ... ।)
सच्ची कहानियाँ ... ।)
इक्कीस खेल ... ।≡)
नवीन पत्र-प्रकाश ... ॥=)
वक्तृत्वकला ... १।)
स्वदेश की बलिवेदिका ... ॥=)
शाहज़ादा और फ़क़ीर ... ।॥)
बाल नाटकमाला ... ।=)
गज्जू और गप्पू की मज़ेदार कहानियाँ ... ≡)
हल-बिल की कहानियाँ ... ≡)
विद्यार्थियों का स्वास्थ्य ... ।=)
अदलू और बदलू की कहानियाँ ... ≡)
टीपू और सुल्तान ... ।)
नटखटी रीछू ... ≡)
भिन्न-भिन्न देशों के अनोखे रीति-रिवाज ... ॥=)
परीक्षा कैसे पास करना? =)
पत्रावली ... ।-)
पञ्चवटी ... ।=)
रङ्ग में भङ्ग ... ।)
आत्मोपदेश ... ।)
स्वाधीनता के सिद्धान्त ... ॥)
सन्त-जीवनी ... ॥)
अमृत की घूँट ... २॥)
विचित्र परिवर्तन ... २)
पौराणिक गाथा ... ।-)
गुब्बारा ... ॥=)
दस कथाएँ ... ।=)॥
अनूठी कहानियाँ ... ।=)
मनोहर कहानियाँ ... ।=)
हँसी-खेल ... ।॥)

डल्लू और मल्लू ... ≡)
विज्ञान-वाटिका ... ।=)
परियों का देश ... १)
खोपड़ेसिंह ... ।)
बालक ध्रुव ... ।)
बच्चू का ब्याह ... ।-)
नानी की कहानी ... ।=)
मज़ेदार कहानियाँ ... ।-)
बाल कवितावली ... १)
रसभरी कहानियाँ ... ॥)
बहता हुआ फूल २॥), ३)
मि० व्यास की कथा २॥), ३)
प्रेम-प्रसून १=), १॥=)
विजया १॥), २)
भिखारी से भगवान ... १)
मूर्खमण्डली ॥=), १=)
जीवन का सद्व्यय १), १॥)
साहित्य-सुमन ॥), १)
विवाह-विज्ञापन ... १॥)
चित्रशाला (दो भाग) ३।),४।)
देव और बिहारी १।॥), २।)
मञ्जरी १।), १।॥)
कर्बला १॥), २)
रावबहादुर ... ।॥)
प्राणायाम ।॥=), १।=)
पूर्व-भारत ॥=), १।=)
बुद्ध-चरित्र ।॥), १।)
भारत-गीत ... ।॥=)
वरमाला ।॥), १।)
एशिया में प्रभात ॥), १)
कर्मयोग ॥), ।॥)
संक्षिप्त शरीर-विज्ञान ... ॥=)
लबड़धोंधों ।॥=), १।=)
हठयोग ... १।=)
कृष्णकुमारी १), १॥)
प्राचीन पण्डित और कवि ... ।॥=), १।=)
जयद्रथबध ।॥), १।=)
तात्कालिक चिकित्सा १।), १।॥)
किशोरावस्था ... ॥=)
अद्भुत आलाप ... १)
मनोविज्ञान ।॥), १।)
अश्रुपात ... १)
ईश्वरीय न्याय ... ॥)
सुख तथा सफलता ... ।)
किसान की कामधेनु ... ।=)
प्रायश्चित्त (प्रहसन) ... ≡)
संसार-रहस्य ... १॥)
नीति रत्नमाला ... ।)
मध्यम व्यायोग ... =)
सम्राट चन्द्रगुप्त ... ।)
वीर भारत ... ।॥)
केशवचन्द्र सेन १≡),१॥=)
बङ्किमचन्द्र चटर्जी १≡),१॥=)
देशहितैषी श्रीकृष्ण ... =)
द्विजेन्द्रलाल राय ... ।)
भारत की विदुषी नारियाँ ॥)
वनिता-विलास ... ।॥)
पत्राञ्जलि ... ॥)
लक्ष्मी ... ॥=)
ज़ब्बा ... ।॥=)

भगिनी-भूषण ... =)
सुखद चमेली ... =)
खिलवाड़ ... ।)
देवी द्रौपदी ... ॥)
महिलामोद ... ॥)
गुप्त सन्देश ... ॥)
कमला-कुसुम ... १)
मिश्रबन्धु-विनोद (तीन भाग) ... ७।)
शिवराज विजय ... २॥)
सत्य हरिश्चन्द्र (नाटक) ।=)
माधव निदान ... १॥)
अनङ्ग-रङ्ग ... २)
कुटुम्ब-चिकित्सा ... १॥)
रामायण का अध्ययन ... ।॥)
रचना नवनीति ... १)
प्रवेशिका व्याकरण बोध... १।)
अयोध्याकाण्ड रामायण... ॥)
बाल महाभारत ... ।=)
अलङ्कार चन्द्रिका ... ॥)
बालबोध रामायण ... ॥)
अपर प्रकृति पाठ ... ।=)॥
मिडिल प्रकृति परिचय ... ।-)॥
शिशुवर्ण परिचय ... -)
वर्णमाला और पहाड़े ... -)
शासन और सहयोग ... =)॥
शिशुकथा माला ... =)
कन्या-साहित्य ... =)॥
पत्र-चन्द्रिका ... ।)
बालक ... १)
स्वराज्य-संग्राम ... ।॥=)
आर्यसमाज और कॉङ्ग्रेस ।-)
हिन्दू-सङ्गठन ... १)
शिक्षा-प्रणाली ... १)
भारत-रमणी-रत्न ... ।॥=)
सन्ध्या पर व्याख्यान ... ।)
शिशु-सुधार ... ॥)
पुत्री-शिक्षक ... ॥)
स्त्री-शिक्षा ... ।=)
मनोहर पुष्पाञ्जलि ... ॥)
गृहिणी-शिक्षा ... ॥)
गुलदस्ता ... ।॥)
अक्षरबोध ... ।॥)
उर्वशी ... १)
ब्रह्मचर्य-शिक्षा ... ॥=)
तपस्वी भरत ... ।-)
दिलचस्प कहानियाँ ... ।=)
सूखा हुआ फूल ... ≡)
हितोपदेश ... ॥)
पृथ्वीराज रासो ... ॥)
नवीन बीन ... २)
बिहार का साहित्य ... १॥)
जयमाल ... ।=)
प्रेम ... ... ।=)
मधु-सञ्चय ... ।=)
अशान्त ... ॥)
लङ्गटसिंह ... ।)
विद्यापति ... ।)
अहिल्याबाई ... ।)
सौरभ ... १)
नवपल्लव ... १।)

देहाती दुनिया ... १॥)
प्रेम-पथ ... २)
पुरुष-परीक्षा ... १)
सुधा-सरोवर ... १)
त्यागी भरत ... ।)
गुरु गोविन्दसिंह ... ।)
एकतारा ... १)
अशोक ... १।)
निर्माल्य ... १)
बाल-विलास ... ।)
विपञ्ची ... ।)
दुलहिन ... ।)
शेरशाह ... ।)
शिवाजी ... ।)
माइकेल मधुसूदन ... ।)
भगवान बुद्ध ... १)
जङ्गल की मुलाक़ात ... -)
थार की अँगूठी ... =)
सूरजमुखी ... ।=)
आसमानी लाश ... =)
चोर की तीर्थ-यात्रा ... ।)
आशिक़ की कमबख़्ती ... =)
सूर्यकुमार सम्भव ... ।)
भयानक विपत्ति ... =)
श्रीदेवी ... =)
भीषण सन्देह ... ॥)
माधवी ... =)
पिशाच पति ... ॥)
अद्भुत हत्याकारी ... ≡)
कविता-कुसुम ... ।)
बगुला भगत ... ॥)
बिलाई मौसी ... ॥)
सियार पाँड़े ... ॥)
पृथ्वीराज ... १।)
शिवाजी ... १।)
राजर्षि ध्रुव ... ॥=)
सती पद्मिनी ... ॥=)
शर्मिष्ठा ... ॥=)
मनीषी चाणक्य ... १।)
अर्जुन ... ॥=)
चक्रवर्ती बप्पाराव ... ॥=)
वेश्यागमन ... २)
नारी-विज्ञान ... २)
जनन-विज्ञान ... ३)
गृहिणी-भूषण ... ।॥=)
भारतीय नीति-कथा ... ।॥)
दम्पति शिक्षक ... ॥)
नाट्यकला दर्शन ... ।॥-)
शाही डाकू ... १।॥)
शाही जादूगरनी ... १॥)
शाही लकड़हारा ... २)
शाही चोर ... ।)
गृहधर्म ... ।॥)
बालराम कथा ... ।॥)
माता और पुत्र ... १॥=)
जातीय कविता ... १॥)
भागवन्ती २),२।)
अनोखा जासूस ... २)
सुप्रभात ... १॥)
प्राचीन हिन्दू माताएँ ... १)
महाभारत ... १।)

विधवाश्रम ... १॥)
चालाक बिल्ली ... =)
मुसाफ़िर की तड़प ... ।-)
यूरोपीय सभ्यता का दिवाला ।=)
अमृत में विष ... ।=)
मुसाफ़िर पुष्पाञ्जलि ... ।)
जया ... ... ।-)
मानवती ... ।-)
धर्म-अधर्म युद्ध ... ।॥)
नवीन भारत ... ।॥)
श्रीकृष्ण-सुदामा ... ।=)
ग़रीब हिन्दुस्तान ... १।)
भारतीय सभ्यता ... १)
हरफ़नमौला ... १)
हरद्वार का इतिहास ... ।=)
बोल्शेविज़्म ... १।=)
मुसाफ़िर भजनावली ... ।≡)
असहयोग दर्शन ... १।)
चेतावनी सङ्कीर्तन ... ।)
जन्मबधैया सङ्कीर्तन ... ।)
श्रीसतवानी सङ्कीर्तन ... ।=)
महात्मा गाँधी ... ≡)
गँवार मसखरा ... =)॥
सेवाश्रम ... २॥)
महात्मा विदुर ... १)
महामाया ... ॥=)
शकुन्तला ... १=)
कृष्णकुमारी ... ।=)
क्षात्रधर्म ... -)
बलिदान ... ≡)
भारतीय देश ... ॥)
चित्रशाला ... ।॥)
दम्पति सुहृद ... १।)
रानी जयमती ... ॥)
तपस्वी-अरविन्द के पत्र ... ।)
सुभद्रा ... ... ॥)
हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास ।=)
ग्रीस का इतिहास ... १=)
श्रीबद्री-केदार यात्रा ... ।)
नवयुवको स्वाधीन बनो... ॥)
असहयोग का इतिहास ... ।॥)
सफलता की कुञ्जी ... ।)
पाथेयिका ... १)
रोम का इतिहास ... ।॥)
अपना सुधार ... ॥)
महादेव गोविन्द रानाडे... ।॥)
दिल्ली अथवा इन्द्रप्रस्थ ... ॥)
गाँधी-दर्शन ... १)
बिखरा फूल ... १॥)
प्रेम ... ... ।=)
इटली की स्वाधीनता ... ॥)
गाँधी जी कौन हैं? ... ।-)
फ़्रान्स की राज्य-क्रान्ति का इतिहास ... १=)
आकाश की बातें ... ≡)
जगमगाते हीरे ... १)
मनुष्य-जीवनकी उपयोगिता ॥=)
भारत के दस रत्न ... ।-)
वीरों की सच्ची कहानियाँ ।॥)
आहुतियाँ ... ।-)
वीर राजपूत ... ... १)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की ख़ुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। भाषा अत्यन्त सरल। मूल्य केवल १॥)

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य केवल १)

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष नहीं रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; सजिल्द तथा सचित्र; विरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य ३) स्था० ग्रा० से २।)

जननी जीवन

पुस्तक की उपयोगिता नाम ही से प्रकट है। इसके सुयोग्य लेखक ने यह पुस्तक लिख कर महिला-जाति के साथ जो उपकार किया है, वह भारतीय महिलाएँ सदा स्मरण रक्खेंगी। घर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः प्रत्येक बातों का वर्णन पति-पत्नी के सम्वाद-रूप में किया गया है। लेखक की इस दूरदर्शिता से पुस्तक इतनी रोचक हो गई है कि इसे एक बार उठा कर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से "गागर में सागर" वाली लोकोक्ति का परिचय मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में कुल २० अध्याय हैं; जिनके शीर्षक ये हैं :—

(१) अच्छी माता (२) आलस्य और विलासिता (३) परिश्रम (४) प्रसूतिका स्त्री का भोजन (५) आमोद-प्रमोद (६) माता और धाय (७) बच्चों को दूध पिलाना (८) दूध छुड़ाना (९) गर्भवती या भावी माता (१०) दूध के विषय में माता की सावधानी (११) मल-मूत्र के विषय में माता की जानकारी (१२) बच्चों की नींद (१३) शिशु-पालन (१४) पुत्र और कन्या के साथ माता का सम्बन्ध (१५) माता का स्नेह (१६) माता का सांसारिक ज्ञान (१७) आदर्श माता (१८) सन्तान को माता का शिक्षा-दान (१९) माता की सेवा-शुश्रूषा (२०) माता की पूजा।

इस छोटी सी सूची को देख कर ही आप पुस्तक की उपादेयता का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में होनी चाहिए। मूल्य १।); स्थायी ग्राहकों से ॥।≤)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के एक प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य केवल आठ आने!

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ॥।) स्थायी ग्राहकों से ॥-)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक़ एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक़ भी हैं। शीघ्र ही मँगाइए। मूल्य लागत-मात्र केवल ।) है।

निर्मला

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी बामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में इनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोस्ट और ब्रियो का "डैमेज्ड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर सर्वथा अवलम्बित होती है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारों का जनाज़ा है !!

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा-बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। मू० २॥) स्था० ग्रा० से १॥।=)

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल ॥।) ; स्थायी ग्राहकों से ॥-)

नायक और नायिका के पत्रों के रूप में यह एक दुःखान्त कहानी है। हृदय के अन्तःप्रदेश में प्रणय का उद्भव, उसका विकाश और उसकी अविरत आराधना की अनन्त तथा अविच्छिन्न साधना में मनुष्य कहाँ तक अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति कर सकता है—ये बातें इस पुस्तक में अत्यन्त रोचक और चित्ताकर्षक रूप से वर्णन की गई हैं। आशा-निराशा, सुख-दुख, साधन-उत्कर्ष एवं उच्चतम आराधना का सात्विक चित्र पुस्तक पढ़ते ही कल्पना की सजीव प्रतिमा में चारों ओर दीख पड़ने लगता है। मूल्य केवल ३); स्थायी ग्राहकों से २।)

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ॥)

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। ऐसी कथाओं का भी सविस्तार वर्णन किया गया है। प्रत्येक त्योहार के सम्बन्ध में जितना अधिक खोज से लिखा जा सकता था, लिखा गया है। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १॥) ; स्थायी ग्राहकों से १=)

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी-सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-साहित्य को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुबन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुबन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

अधिक प्रशंसा न कर, हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। एक बार हाथ में लेते ही आप बिना समाप्त किए नहीं छोड़ेंगे। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। मूल्य केवल १); स्थायी ग्राहकों से ॥।)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

'चाँद' कार्यालय

की

अनमोल पुस्तकें

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्य-पूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। यह उन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू समाज के वक्षस्थल पर,दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, पृष्ठ-संख्या लगभग ५००, सजिल्द एवं तिरङ्गे कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य ३) रु०; स्थायी ग्राहकों से २)

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता ? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए, युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए ; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

इस उपन्यास में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्त-र्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ खत्म पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें !

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्त-काल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनोमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों !! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं ! मूल्य केवल ३)

आदर्श चित्रावली

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—६ अक्टूबर, १६३० | संख्या २, पूर्ण संख्या २

'भविष्य' पर भयङ्कर वज्राघात !

पहले ही अङ्क की २१,८०० कॉपियाँ डाकख़ाने में रोक ली गईं !!

दूसरे अङ्क का ख़ुदा हाफ़िज़ !!!

लाहौर षड्यन्त्र केस का फ़ैसला

भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी

सात को कालापानी और दो को सख़्त क़ैद

लाहौर, ७ अक्टूबर

लाहौर षड्यन्त्र केस का फ़ैसला स्पेशल ट्रिब्यूनल ने, जो इसी कार्य के लिए वायसराय ने ऑर्डिनेन्स द्वारा नियुक्त किया था, सुना दिया। तीन व्यक्तियों को फाँसी, सात को कालापानी और दो को क्रमशः सात और पाँच साल की सख़्त क़ैद का दण्ड दिया गया है। अभियुक्तों के नाम और सज़ा इस प्रकार हैं :—

फाँसी

(१) भगतसिंह।
(२) राजगुरु उर्फ़ एम० एम०।
(३) सुखदेव।

कालापानी

(४) किशोरीलाल।
(५) महावीरसिंह।
(६) डी० के० सिन्हा।
(७) शिव वर्मा
(८) गयाप्रसाद सिंह।
(९) जयदेव
(१०) कँवलनाथ तिवारी

सख़्त क़ैद

(११) कुन्दनलाल—सात वर्ष
(१२) प्रेमदत्त—पाँच वर्ष

देशराज; अजयकुमार घोष और सन्याल—तीन अभियुक्त सबूत की कमी से छोड़ दिए गए।

मालूम हुआ है कि स्पेशल ट्रिब्यूनल के जजों ने यह फ़ैसला एकमत से किया है। इस केस के फ़ैसले के लिए कई बार भिन्न-भिन्न तारीख़ें नियत की गई थीं, और अन्त में ८ अक्टूबर की ख़बर मिली थी। पर ट्रिब्यूनल के जजों ने ७ तारीख़ को अचानक बोरस्टल जेल पहुँच कर यह फ़ैसला सुना दिया। इस कारण न तो कोई प्रेस-रिपोर्टर उस समय वहाँ पहुँच सका, न अभियुक्तों के इष्ट-मित्र और दूसरे लोग। फ़ैसले के समय पुलिस का विशेष रूप से प्रबन्ध किया गया था।

लाहौर षड्यन्त्र केस के फ़ैसले की ख़बर इलाहाबाद में कल ७ वीं अक्टूबर की रात को बिजली की तरह फैल गई। आज दिन में तमाम शहर में ज़बर्दस्त हड़ताल मनाई गई। शहर के सभी मुख्य बाज़ार पूर्णतया बन्द रहे। स्थानीय यूनीवर्सिटी के छात्रों ने पूरी हड़ताल रक्खी।

एप्रूवरों पर मुक़दमा

ब्रह्मदत्त और रामसरन दास पर, जो इस केस में अभियुक्त थे और जिन्होंने आरम्भ में एप्रूवर बन कर बाद को अपने बयान वापस ले लिए थे, नए सिरे से मुक़दमा चलने वाला है।

भागे हुए अभियुक्त गिरफ़्तार

सरनदास, किशनगोपाल और आत्माराम, जो इस केस में अभियुक्त बतलाए जाते थे और जो अभी तक नहीं पकड़े जा सके थे, ६ अक्टूबर को कलकत्ते के एक मकान की तलाशी होते समय गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

'भविष्य' पर भीषण प्रहार

'भविष्य' निकलने भी न पाया कि अधिकारियों की उस पर कृपा हो गई। उसके पहले अ[illegible] की [illegible] माजों खादे। [illegible] २२ हज़ार कॉपियाँ स्थानीय डाकख़ाने में रोक ली गई हैं और पुलिस उनको उठा ले गई है। हमने इस सम्बन्ध में सभी सरकारी अधिकारियों से पूछताछ की, पर कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिला। इस अकल्पित आपत्ति ने हमारी स्थिति को डाँवाडोल कर दिया है, पर जब तक कोई निश्चयात्मक उत्तर गवर्नमेण्ट की तरफ़ से प्राप्त न हो तब तक हम इस सम्बन्ध में कुछ कह सकने में असमर्थ हैं।

३ री अक्टूबर को दोपहर के समय सहगल जी डाकख़ाने गए थे। क्योंकि पोस्टल टिकट देर से मिले थे और इस कारण अख़बार भी डाकख़ाने देर से भेजा गया था। सहगल जी वहाँ इस बात का पता लगाने गए थे कि वह जल्दी भेजा जाता है या नहीं। वहाँ उन्होंने तीन-चार लोगों को 'भविष्य' खोल कर पढ़ते देखा, जो सम्भवतः सी० आई० डी० के आदमी थे। रात को ८ बजे पुलिस सब अख़बारों को, जिन पर डाकख़ाने की मुहर लग चुकी थी, कई मोटर लारियों में भर कर न मालूम कहाँ ले गई। इस सम्बन्ध में जब सहगल जी ने टेलीफ़ोन द्वारा ज़िला मैजिस्ट्रेट से बातें कीं तो उन्होंने बतलाया कि यह काम उनकी आज्ञा से नहीं हुआ है, वरन् पुलिस को 'भविष्य' पर एतराज़ था और डाकख़ाने वालों ने उसे रोका है। हमें यह भी पता चला है कि स्थानीय अफ़सर नैनीताल में बड़े अधिकारियों से सलाह-मशविरा कर रहे हैं कि 'भविष्य' के सम्बन्ध में क्या कार्रवाई की जाय।

* * *

—७ अक्टूबर को, काकोरी डकैती केस के शहीद श्री० रामप्रसाद बिस्मिल की बहिन श्रीमती विद्यावती को क्रिमिनल प्रॉसीजर-कोड की १०८ धारा के अनुसार एक साल की सादी क़ैद की सज़ा हो गई। राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अभियोग में उन्हें अमृतसर की अदालत ने भी दण्ड दिया है।

लाहौर-षड्यन्त्र में तीन को फाँसी

'साण्डर्स की हत्या के समय भगतसिंह कलकत्ते में था'

स्पेशल ट्रिब्यूनल को भगतसिंह के पिता की अर्ज़ी

लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त भगतसिंह के पिता श्री० किशनसिंह ने स्पेशल ट्रिब्यूनल के सम्मुख एक अर्ज़ी पेश की है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि :—

"इस मामले में अभियुक्त सरकारी गवाहों के बयानों की अच्छी तरह छान-बीन कर अपनी रक्षा की गवाही पेश करना चाहते थे। वे उस गवाही में समुचित सामग्री प्राप्त किए बिना रक्षा की गवाही न दे सकते थे। इस कार्य के लिए लगभग एक सप्ताह का समय माँगा गया था, परन्तु ट्रिब्यूनल के सम्माननीय सदस्यों ने वह समय देने से इन्कार कर दिया। इसलिए मैं उन सम्माननीय न्यायाधीशों के विचार के लिए निम्न-लिखित बातें पेश करता हूँ :—

गवाहों में स्वयं आँखों से अपराधी को देखने की जो बात आई है वह अविश्वासनीय है, क्योंकि जब साण्डर्स की हत्या के मामले के सम्बन्ध में भगतसिंह दिल्ली से लाहौर लाया गया था उस समय वह आते ही न तो सेन्ट्रल जेल भेजा गया और न बोर्स्टल इन्स्टीट्यूट, जहाँ सर्कारी गवाहों को—उसके पहिले जब कि मैजिस्ट्रेट के सामने लाहौर केन्टोन्मेन्ट पुलिस-चौकी में गवाह अपराधियों को पहचान-पहचान कर बतला रहे थे—भगतसिंह को देखने का अवसर प्राप्त न हो सकता था। लाहौर केन्टोन्मेन्ट की पुलिस-चौकी और सेन्ट्रल जेल में केवल दो मील का अन्तर है; भगतसिंह आसानी से सेन्ट्रल जेल भेजा जा सकता था और वहीं उसको पहचाना भी जा सकता था। केन्टोन्मेण्ट पुलिस-चौकी में, मामले की जाँच करने वाले अफ़सरों ने ही गवाह पेश किए थे और जिस मैजिस्ट्रेट ने यह सब कार्यवाही की थी, वह भी जाँच के नियुक्त अफ़सरों की ओर से ही बुलाया गया था। मैंने उसी समय लाहौर के ज़िला मैजिस्ट्रेट को इस बात की अर्ज़ी दी थी कि अपराधियों को इस प्रकार पहचानने का कोई मूल्य नहीं है और उस अर्ज़ी में २१ पी० डबल्यू० आर० १९१७ की दलील देकर ज़िला मैजिस्ट्रेट का ध्यान पुलिस की इस अनुचित कार्यवाही की ओर आकर्षित किया था। लाहौर हाईकोर्ट ने यह स्पष्ट रूप से तय कर दिया है कि यदि अपराधी को पहचानने का कार्य होने के पहिले गवाहों को अपराधियों के देखने का अवसर प्राप्त हो जाय तो उसका मूल्य बहुत कुछ कम हो जाता है। मेरी अर्ज़ी स्थानीय पत्र 'मिलाप' और विशेषतः 'ट्रिब्यून' में भी प्रकाशित हुई थी। इसलिए उन लोगों की गवाही का, जिन्होंने भगतसिंह को—पहचानने वाली क्रिया में पहिचाना है, कोई मूल्य न समझा जाना चाहिए। आप स्वयं बड़े न्यायाधीश हैं और प्रायः समाचार-पत्र पढ़ते हैं। असेम्बली बम केस के बाद भगतसिंह की फ़ोटो भारत के प्रायः सभी पत्रों में छपी थी; और इसका सहज में अनुमान लगाया जा सकता है कि उन गवाहों ने पहचानने के पहिले भगतसिंह की फ़ोटो अवश्य देखी होगी।

साक्षात् गवाह

"इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं कि ट्रैफ़िक के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट यूरोपियन सज्जन श्री० फ़र्न, जिन्हें सच्चे अपराधियों को देखने के बहुत से अवसर प्राप्त होंगे, अपराधी की शिनाख़्त न कर सके। ट्रैफ़िक विभाग में होने के कारण, इस गवाह ने, अपनी रुचि और व्यवसाय के कारण भारतीयों को शिनाख़्त करने की शक्ति बढ़ा ली थी। वह भगतसिंह को न पहचान सका, परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि हेड कॉन्स्टेबिल और नायब कोर्ट पुलिस कॉन्स्टेबिल गण्डासिंह और दूसरे गवाहों ने, जो कि मौक़े पर अचानक उपस्थित थे, भगतसिंह को पहचान लिया।

एप्रूवर

"इस मामले में एप्रूवरों पर कोई विश्वास न करना चाहिए, क्योंकि मैजिस्ट्रेट ने अपराधियों को पुलिस की देख-रेख में हवालात भेजने में क्रिमिनल प्रोसीज़र कोड की दफ़ा १६७ की तृतीय धारा की आज्ञा का उल्लङ्घन किया है। भगतसिंह और दूसरे लोग, जो एप्रूवर मान लिए गए हैं, या जिनके मान लिए जाने की सम्भावना है, लाहौर के क़िले की और अन्य जगह की पुलिस की हवालातों में लगातार तीन माह तक रक्खे गए हैं। उस बीच में उन्हें संसार की हवा तक के दर्शन नहीं हुए।

मैजिस्ट्रेट-गण असाधारण रूप से हवालातों में गए हैं और अपराधियों को पन्द्रों हवालात में रक्खा है। हवालात के समय पुलिस की यह इच्छा न थी कि मैजिस्ट्रेट के सम्मुख वकील लोग यह कहें कि अपराधियों को और अधिक दिनों तक हवालात में रखने के लिए पुलिस के पास कोई सबूत नहीं है। अपराधियों को अपने उस अपराध को जानने का अवसर प्राप्त न था जिसके कारण पुलिस ने उन्हें हवालात में बन्द किया था। ९० दिन में जितनी चाहे उतनी गवाही तैयार की जा सकती है। अदालत पुलिस के उन कुटिल उपायों से कुछ अपरिचित नहीं है जिनके द्वारा वह अपराधियों से जो चाहती है कहला लेती है। ७ सी० डबल्यू० एन० के पृष्ठ ४४७ में कलकत्ता हाईकोर्ट के सम्माननीय न्यायाधीशों ने यह निर्धारित किया है कि—"किसी ऐसे अपराधी की गवाही में, जिसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है और जिसे एप्रूवर मान लिया गया है या मान लिए जाने की सम्भावना है, और जो मामले की जाँच के समय तक हवालात में रह चुका है, इस बात की सब से अधिक शङ्का है कि पुलिस उसके बयान अपनी किसी प्रकार की गवाही की शहादत में करा दे।" "इस मामले की जाँच करने में लगभग १०० अफ़सर नियुक्त हुए थे। दण्ड-विधान की दफ़ा १६७ और उसी की तरह अन्य दफ़ाएँ, अपराधियों की ऐसी ही झूठी गवाहियों से रक्षा करने के लिए बनाई गई हैं। ९० दिन में पत्थरों को पीस कर उनका चूर्ण बनाया जा सकता है। इस मामले में अपराधी लड़के थे, जिन्हें बार-बार रिहर्सल द्वारा इस नाटक में अपना पार्ट खेलने के लिए तैयार किया जा सकता था। ख़ुफ़िया पुलिस सशङ्कित पुरुषों और उनकी कार्यवाहियों की एक फ़ेहरिस्त रखती है। वे राजद्रोही साहित्य की ख़बर रखते हैं, और हर एक प्रान्त में एक का दूसरे विभाग से गहरा सम्बन्ध रहता है। वे आसानी से राजद्रोही साहित्य प्राप्त कर सकते हैं और बम बनाने के रासायनिक पदार्थों का ज्ञान भी। वे एप्रूवरों के बयानों में इच्छित बातें कहला सकते हैं। जाँच अफ़सरों ने हवालात के क़ानून की अवज्ञा करके इस मामले का ढाँचा तैयार किया है। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि एप्रूवरों की गवाही पर विचार करते समय हवालात के ऑर्डरों की जाँच कर ली जाय। पञ्जाब चीफ़-कोर्ट के सन् १९०२ के पी० आर० नं० २४ के निर्णय के विरुद्ध पुलिस ने इन लोगों को सन्तोषजनक कारणों के बिना ही हवालात में रक्खा है। मुक़दमा प्रारम्भ होने के पहिले पुलिस १५ दिन से अधिक किसी भी व्यक्ति को हवालात में नहीं रख सकती। क़ानून अपराधियों की रक्षा करता है।

मामले के पक्ष के गवाह

"पक्ष के गवाह जाँच होने के बहुत समय बाद पेश किए गए, और इस देश में लोग अपने स्वार्थ-साधन के लिए जैसी चाहें वैसी गवाही देने के लिए तैयार हो जाते हैं, और पुलिस के अफ़सर अपने मित्रों से गवाहियाँ दिला देते हैं और उनकी पुष्टि एप्रूवरों से करा देते हैं। दण्ड-विधान की १७२ धारा के अनुसार अदालतें पुलिस की डायरी से इस बात का ज्ञान प्राप्त कर सकती हैं कि पुलिस ने बयान किस तारीख़ को लिए थे। वादी का यह भी कर्त्तव्य है कि वह ट्रिब्यूनल के सामने यह स्पष्ट रूप से बतला दे कि उसने किन साधनों से मामले के लिए गवाह प्राप्त किए हैं।

हत्या के समय भगतसिंह की अनुपस्थिति

"अपराधियों ने वादियों के गवाहों से जिरह नहीं की, परन्तु 'बेञ्च' में अनुभवी न्यायाधीश सम्मिलित हैं। उन्हें स्वयं जाँच के नियमों के अनुसार गवाहियों के सत्य और झूठ का निर्णय करना चाहिए। इस घटना के दिन भगतसिंह कलकत्ते में था, और उसने उसी रोज़ फ़्री-महल लाहौर के पते से खद्दर भण्डार के मैनेजर रामलाल को एक पत्र भेजा था जो उसे ठीक समय पर प्राप्त हो गया था। बहुत से सम्माननीय पुरुष शपथपूर्वक यह कह सकते हैं कि भगतसिंह घटना के रोज़ कलकत्ते में था। यदि न्यायपूर्वक मुझे अवसर दिया जाय तो मैं उन्हें पेश कर सकता हूँ; या न्याय, अपक्षपात और सहृदयता के नाम पर अदालत स्वयं उन्हें अपना गवाह बना कर बुला सकती है। इस मामले में जीवन और मरण का प्रश्न है। अपराधियों के प्रतिवाद के अधिकार की रक्षा विशेष ध्यानपूर्वक होनी चाहिए। यदि मामले में प्रतिवाद करने का अवसर दिया जाता तो मैं 'एवीडेन्स एक्ट' की १५५ धारा के अनुसार वादी के गवाहों की पोल खोल देता और बतला देता कि वे समाज में कितनी इज़्ज़त के आदमी हैं, गवाही देने में उनके क्या उद्देश्य रहे हैं और किन साधनों से वे प्राप्त किए गए हैं।

"मेरी विनम्र प्रार्थना है कि भगतसिंह को प्रतिवाद करने का अवसर प्रदान किया जाय।"

* * *

—आगरे में शराब की दुकानों के लैसन्स २३ सितम्बर को नीलाम हो गए। शहर की दुकानों के ठेके किसी व्यक्ति ने एक लिखित पत्र द्वारा ८०००) में ले लिए। ज़िले की अन्य दुकानों के लिए बोली पर्याप्त नहीं थी इसलिए उनकी बोलियाँ मन्ज़ूर नहीं की गईं। पिछले वर्ष जिन चार दुकानों के ठेके १३००) में बिके थे उन में दो के लिए कोई बोली नहीं लगाई गई और दो दुकानें केवल ३२५) में नीलाम हो गईं।

—बस्ती में अमन-सभा वाले बड़ा ज़ोर दिखला रहे हैं और उनके वालण्टियर लाठियाँ लेकर शहर में परेड करते हैं। अभी उनका एक जलूस निकला था, जिसमें आगे-आगे यूनियन-जैक (अङ्गरेज़ी झण्डा) ले जाया जा रहा था और पीछे क़रीब दो सौ गाँव वाले जा रहे थे, जिनमें से सब के हाथों में डण्डे थे। कहा जाता है कि इन में से अधिकांश किसी बड़े अमन-सभा के अधिकारी के किसान थे।

चोट पर चोट

सीने की चोट, दिल की औ पहलू की हाय चोट !
खाऊँ किधर की चोट, बचाऊँ किधर की चोट !!

—आगरे में गाँव के लोगों को गवर्नमेण्ट की और अन्य डेरियों में दूध ले जाने से रोका जाता है। जो लोग नहीं माने उन में से कुछ का दूध लुढ़का दिया गया। दूध वाले इस नुक़सान के ख़िलाफ़ बड़ी शिकायत कर रहे हैं।

—इटावा की चार तहसीलों में शराब के ठेके निम्न प्रकार नीलाम हुए। इटावा २२००) रु०, औरइया ५००) रु०, बुधूना १५०) रु० और भर्थना ८०) रु०। पिछले साल इटावा में इस ठेके से जितनी आमदनी हुई थी उससे इस वर्ष केवल चौथाई रह गई।

—लाहौर में २१ सितम्बर को फ़क़ीरचन्द नामक देशी शराब के ठेकेदार को, जिस की दुकान पर सब से अधिक पिकेटिङ्ग करने वाले स्वयंसेवक पकड़े गए हैं, किसी ने छुरी मार दी। पुलिस ने एक नवयुवक को गिरफ़्तार किया है जो विदेशी कपड़े पहिने था।

—श्री० बन्सी मेहतर ने, जो कॉङ्ग्रेस की सहायता से पञ्जाब-कौन्सिल का मेम्बर चुना गया है, लाहौर के एक हज़ार मेहतरों की एक सभा की और मेहतर-यूनियन का निर्माण किया। इस सभा में एक प्रस्ताव पास किया गया है कि विलायती कपड़े और शराब के व्यापारी इन चीज़ों का बेचना छोड़ दें, अन्यथा मेहतर उनके पाख़ानों की सफ़ाई करना बन्द कर देंगे। जो मेहतर इस प्रस्ताव पर अमल न करेगा उसका बॉयकॉट किया जायगा।

—दिल्ली से प्रकाशित दैनिक 'महारथी' के सम्पादक, प्रकाशक और मुद्रक पण्डित रामचन्द्र शर्मा से २०००) पत्र के लिए और २०००) प्रेस के लिए ज़मानत माँगी गई है।

—एक गवर्नमेण्ट-विज्ञप्ति का कहना है कि जङ्गली जातियों में कॉङ्ग्रेस-आन्दोलन फैलने के कारण बैतूल, मण्डला और रायपुर ज़िलों में कई हिंसात्मक घटनाएँ हो गई हैं। बैतूल में अभियुक्तों को बचाते समय तीन बार गोंडों ने गवर्नमेण्ट का विरोध किया और पुलिस को डिन्डोरी में गोली चलाना पड़ा। मण्डला ज़िले की धमतरी और महा-समुन्द तहसीलों में तार काटने का प्रयत्न किया गया। रायपुर में भी पुलिस के ऊपर आक्रमण करने के कारण उसे गोली चलाना पड़ा जिससे एक मरा और तीन घायल हुए। वहाँ पुलिस के हर एक सिपाही को चोट आई और एक सब-इन्स्पेक्टर की पत्थर से आँख फूट गई।

'जेल-भोज' में ५,००० भाटियों ने ज्वार की रोटी और भाजी खाई।

बम्बई में भाटिया जाति के लोगों ने 'भाटिया-क़ैदी दिवस' भाटिया-महाजन-वाड़ी में बड़ी धूमधाम से मनाया। यह दिवस उन ५० स्त्री-पुरुषों के सम्मान में मनाया गया था जो इस आन्दोलन में जेल की यातनाएँ भोग रहे हैं। इस भोज में ५,००० स्त्री-पुरुषों ने ज्वार की रोटी और भाजी का ही भोजन किया, जो जेल के क़ैदियों का प्रधान आहार है। भोजन ५०० धनिक परिवारों की रमणियों ने तैयार किया था। यह दिवस पूना, कराची, रङ्गून, कोल्हापुर, अमलनेर और अन्य जगहों में भी मनाया गया है।

कॉङ्ग्रेस की ओर से 'फ़ौजी' शिक्षा

बम्बई कॉङ्ग्रेस कमेटी ने अपनी एक 'फ़ौज' तैयार करने के लिए 'फ़ौजी शिक्षा' का प्रबन्ध किया है। अभी परीक्षा के लिए ३० वालण्टियर इस शिक्षा के लिए चुने गए हैं और श्री० पटवर्धन के, जो हाल ही में रॉयल ऐयर फ़ोर्स में थे, चार्ज में रक्खे गए हैं।

—'गवर्नमेण्ट गज़ट' की एक विज्ञप्ति के अनुसार गोंदिया ज़िला भण्डारा में ता० २४ सितम्बर से छै माह तक अतिरिक्त-पुलिस रहेगी।

—कलकत्ते में मि० ए० के० फ़ज़लुलहक़ ने प्रकाशित कराया है कि गवर्नमेण्ट को जूट के व्यवसाय की घोर दुर्दशा का पूरा ध्यान है और वह उसके सुधारने का उद्योग कर रही है। गवर्नमेण्ट शीघ्र ही उन सब लोगों की एक कॉन्फ़्रेन्स करना चाहती है, जिनका इस व्यवसाय से किसी प्रकार का सम्बन्ध है।

—गवर्नमेण्ट ने गुजरात के खेड़ा ज़िले में ५ सितम्बर से लगान वसूल करने के नोटिस बँटवा दिए थे। इसलिए वहाँ के गाँवों के लोगों ने अपनी चल-सम्पत्ति लेकर बड़ौदा राज्य की सीमा में जाना प्रारम्भ कर दिया है।

—मलाबार में २७ सितम्बर तक सत्याग्रह-संग्राम में ३२६ गिरफ़्तारियाँ हुईं हैं।

—ऐसी अफ़वाह है कि गवर्नमेण्ट ने गोलमेज़ परिषद् के लिए दो प्रतिनिधि और चुने हैं। श्री० एन० एम० जोशी के साथ ही श्री० बी० शिवराव के नाम निमन्त्रण आने की ख़बर है।

—बोरसद तालुक़े के बहुत से गाँवों के लोगों ने ज़मीन का लगान न देने का निश्चय कर लिया है। गवर्नमेण्ट ने जनवरी का लगान अक्टूबर में वसूल करने का इरादा कर लिया है। प्रजा को भड़काने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। उनसे कहा जा रहा है कि ज़ब्त ज़मीनें एक रुपया एकड़ के हिसाब से बेची जायँगी। गाँवों में रक्षा के लिए नए-नए थाने बनेंगे और फ़ौज रक्षा के लिए नियुक्त की जायगी।

—पण्डित मोतीलाल जी के दामाद श्री० आर० एस० पण्डित १६ सितम्बर से 'बी' क्लास से 'ए' क्लास में बदल दिए गए हैं और वे नैनी जेल में पण्डित जवाहरलाल के साथ रहते हैं।

—संयुक्त प्रान्तीय कौन्सिल के लिए अर्जुन चमार और स्पेशल मैजिस्ट्रेट श्री० उदयवीरसिंह उम्मेदवार थे। अर्जुन चमार को ३००६ वोट मिले और मैजिस्ट्रेट साहिब को ३०७।

डॉक्टर मुञ्जे की मालवीय जी से नैनी जेल में मुलाक़ात

डॉक्टर मुञ्जे, गोलमेज़ परिषद के लिए विलायत रवाना होने से पहिले २६ सितम्बर को भारत-सर्कार की आज्ञा से पण्डित मदनमोहन मालवीय से नैनी जेल में मिले थे। दोनों की मुलाक़ात उसी कमरे में हुई थी, जिसमें सर तेजबहादुर सप्रू की पण्डित मोतीलाल और जवाहरलाल से हुई थी। वे दो घण्टे तक बातचीत करते रहे, परन्तु इसका किसी को पता नहीं कि क्या बातचीत हुई। भेंट गुप्त थी; जेल के अफ़सर तक बातचीत के समय उपस्थित न थे।

राजशाही में राजनीतिक क़ैदी घायल हुए

कहा जाता है कि ३ अक्टूबर को 'सी' क्लास के क़ैदियों ने दुर्व्यवहार के कारण जेलर पर आक्रमण कर दिया। जिसके कारण अफ़सरों ने उन्हें सन्ध्या में जल्दी बन्द करने का ऑर्डर दिया। राजनीतिक क़ैदियों के, इस आज्ञा का विरोध करने पर उनके साथ 'ज़बर्दस्ती' की गई जिससे ८ क़ैदी घायल हुए। सब राजनीतिक क़ैदियों ने अनशन व्रत प्रारम्भ कर दिया है।

—३ अक्टूबर का कालीकट का समाचार है कि वहाँ के चार सत्याग्रही नमक बनाने समुद्र के किनारे गए; परन्तु पुलिस ने उन्हें लाठियों से मार कर रोक दिया। उनमें से एक गवर्नमेण्ट अस्पताल में है।

—बम्बई के श्रीयुत मुन्शी, जो नमक-सत्याग्रह में गिरफ़्तार किए गए थे, २ तारीख़ को नासिक जेल से छोड़ दिए गए।

—कहा जाता है कि पं० जवाहरलाल नेहरू सम्भवतः १० वीं अक्टूबर को छूट जायँगे।

—आगरे का समाचार है कि श्री० नारायणसिंह बी० ए० वहाँ के ग्यारहवें डिक्टेटर चुने गए हैं। स्त्रियाँ ज़िले में प्रचार-कार्य कर रही हैं। वहाँ की स्थानीय कॉङ्ग्रेस कमेटी ने व्यापारियों से भविष्य में ब्रिटिश धातुओं का उपयोग करने की मनाही की है और अपने वर्तमान स्टॉक का माल भी डेढ़ माह के अन्दर समाप्त करने को कहा है। विदेशी रद्दी का प्रचार बन्द करने के लिए देशी रद्दी का व्यवसाय बढ़ाने का प्रयत्न हो रहा है। पुलिस ने बाबू लक्ष्मण स्वरूप एडवोकेट के घर की तलाशी ली, जिनके भाई कॉङ्ग्रेस के उत्साही कार्यकर्ता हैं। पुलिस साइक्लोस्टाइल मैशीन तलाश करने आई थी, पर उसे कुछ प्राप्त न हो सका।

—मुरादाबाद की कॉङ्ग्रेस कमेटी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई है।

—उन्नाव का समाचार है कि वहाँ के राजनीतिक क़ैदियों के साथ बहुत बुरा बर्ताव होता है। कहा जाता है कि वे बुरी तरह पीटे गए थे और अब उन्होंने अनशन-व्रत धारण कर लिया है। स्थानीय कॉङ्ग्रेस ने जाँच के लिए दो प्रतिनिधि भेजे थे, परन्तु उन्हें क़ैदियों से मिलने की आज्ञा नहीं दी गई।

—अमटा (हवड़ा) में पाँच स्वयंसेवक शराब की दुकान की पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में पकड़े गए हैं।

—श्री० जे० एम० सेन गुप्ता, श्री० एस० सी० मजूमदार, श्री० नरीमैन, चौधरी ख़लीक़ुज़्ज़माँ आदि कॉङ्ग्रेस के कितने ही नेता पं० मोतीलाल नेहरू से मिलने मसूरी गए हैं। वहाँ से लौट कर वे लखनऊ में कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमेटी की मीटिङ्ग में शामिल होंगे, जिसे गवर्नमेण्ट ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे चुकी है।

—कॉङ्ग्रेस के नेतृत्व में लाहौर में ४ ता० को एक सभा हुई थी। सभा के बीच में ही पुलिस ने सभा के प्रेज़िडेण्ट कॉङ्ग्रेस प्रचारक तख़्तराम, और वीरप्रकाश और दूसरे वालण्टियरों को गिरफ़्तार कर लिया। कपड़े की दूकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण भी वहाँ ४ वालण्टियर गिरफ़्तार किए गए हैं।

पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट पर गोली चली

४ अक्टूबर का लाहौर का समाचार है कि जब पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट ख़ान बहादुर अब्दुल अज़ीज़, जो लाहौर कॉन्सपिरेसी केस के प्रधान सञ्चालक थे, शहर से एक मील की दूरी पर अपने खेत से नहर के किनारे-किनारे मोटर पर वापस आ रहे थे, दूर पर खड़े तीन युवकों ने उनकी मोटर पर क़रीब १२ गोलियाँ चलाईं जिससे उनके मोटर ड्राइवर और एक कॉन्स्टेबिल घायल हुए। परन्तु वे बच गए। गोली चलाने वालों का पता अब तक नहीं लग रहा है।

सत्याग्रही वालण्टियरों पर गोली चलाई गई

४ ता० को तामलुक के डिपुटी मैजिस्ट्रेट, सूतहट्टा के एक सब-इन्स्पेक्टर के साथ चाउलखोला नामक गाँव में कुछ सन्देहजनक, आग लगाने वालों को गिरफ़्तार करने गए थे। वहाँ पहुँचने पर उन्हें मालूम हुआ कि सत्याग्रही वालण्टियरों और प्रायः १,००० आदमियों ने शरत मन का घर चारों ओर से घेर रक्खा है और घर के अन्दर जाने के सब रास्ते बन्द हैं। वहाँ पहुँचने पर अफ़सरों के ऊपर पत्थर फेंके गए, जिससे ५ कॉन्स्टेबिल घायल हुए। जब बहुत कहने पर भी लोग न हटे तो उन्हें ग़ैरक़ानूनी मजमा क़रार देकर लाठियों से हटाने का प्रयत्न किया गया। परन्तु जब वे लाठियों से भी न हटे तो गोली चलाई गई। परन्तु उससे किसी को कोई हानि नहीं हुई।

—घोसी (आज़मगढ़) में कॉङ्ग्रेस के मन्त्री ठाकुर सालिगरामसिंह और पण्डित किशोर पाण्डे गिरफ़्तार कर लिए गए।

—मुरादाबाद की ज़िला और शहर कॉङ्ग्रेस कमेटियाँ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई थीं। उसीके परिणाम स्वरूप ४ ता० को पुलिस ने उनके दफ़्तरों की तलाशी ली और वहाँ के रजिस्टर और दूसरी चीज़ें ले गई। मौलाना फ़ख़रुद्दीन प्रेज़िडेण्ट, जमायत उलेमा के मन्त्री मौलाना मुहम्मद मियाँ और वालण्टियरों के कप्तान श्री० रामग़ुलाम गिरफ़्तार कर लिए गए। भूतपूर्व मन्त्री श्री० सन्तसरन भी गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बनारस में दीवान बाड़ी के दूसरे मञ्ज़िल के एक कमरे की, जिसमें विधवा मृणालिनी देवी और युवक सङ्घ का एक सदस्य रहता था, कई घण्टे लगातार तलाशी लेने के उपरान्त पुलिस ने एक सूट केस में गोलियाँ, ताँबे के टुकड़े और कुछ रासायनिक पदार्थ पाए। कुछ चिट्ठियाँ और कपड़े के दो टुकड़े भी पकड़े गए। मृणालिनी देवी, उनकी १४ साल की एक कुमारी लड़की और मृणालिनी के भाई सुविमल कुमार राय, जो एक ही कमरे में रहते थे, गिरफ़्तार कर लिए गए।

—भेलूपुरा (बनारस) के पुलिस सब इन्सपेक्टर के मकान के पिछवाड़े एक बम पाया गया है जो कि तार द्वारा दरवाज़े की ज़ञ्जीर से बाँध दिया गया था। सुबह जब नौकरानी आई तो उसने उसे देखा और घर वालों को ख़बर दी।

कानपुर ज़िले में गोली चली

१ मरा १४ घायल

१ली ता० को कानपुर ज़िले के देरापुर गाँव में गोली चल गई। कहा जाता है कि पास ही के गाँव में २० सत्याग्रहियों की गिरफ़्तारी हुई थी और उन्हें पुलिस-थाने में लाते समय बुरी तरह पीटा गया था। गाँव वाले सत्याग्रहियों को देखना चाहते थे, परन्तु उनकी आशा सफल नहीं हुई। लोग 'महात्मा गाँधी की जय' बोल-बोल कर उन्हें देखने के लिए ज़बरदस्ती करने लगे। जब उन्होंने थाने के फाटक को धक्का मारना प्रारम्भ किया तब पुलिस ने झुण्ड के ऊपर लाठी घुमाई। इसका जवाब लोगों ने उनके ऊपर ईंट के टुकड़े फेंक कर दिया। इस पर दो कॉन्स्टेबिलों ने गोली चला दी जिसके कारण १ चमार मरा और १४ घायल हुए। सब-इन्स्पेक्टर उस समय वहाँ उपस्थित न थे, गोलियों के धड़ाके सुनते ही वे जल्दी से दौड़े हुए आए और उन्होंने पूँछा—"गोली चलाने का हुक्म किसने दिया?" लोगों की भीड़ तितर-बितर हो गई; परन्तु १०० व्यक्ति बाद में भी लाश को १ बजे रात तक घेरे रहे। वे बड़ी मुश्किल से वहाँ से हटे। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट और सुपरिण्टेण्डेण्ट दूसरे दिन मौक़े पर पहुँचे। कानपुर की शहर कॉङ्ग्रेस कमेटी ने डॉक्टर रघुनाथप्रसाद कपूर और श्री० दर्शबहादुर को मौक़े की जाँच और आहतों की सहायता के लिए भेजा है। कुछ आहत कानपुर की कॉङ्ग्रेस के अस्पताल में आ गए हैं। आसपास के गाँवों और कानपुर शहर में बड़ी सनसनी फैली है।

—बुलन्दशहर में २७ सितम्बर की रात को दिल्ली के एक विद्यार्थी के हाथ में बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ, जो सम्भवतः बम का था। उसका हाथ उड़ गया है।

गवर्नमेण्ट द्वारा

इस संस्था पर जैसे भयङ्कर प्रहार हो रहे हैं उनसे इसकी रक्षा करना प्रत्येक विचारशील देशवासी का कर्तव्य है।

—'हेल्थ एण्ड हेपीनेस' और 'साहित्य समाचार' के सहायक सम्पादक सतकौड़ी बैनर्जी, अमिय, नन्दलाल और कालीचरण घोष, जो बम के सम्बन्ध में गिरफ़्तार हुए थे, छोड़ दिए गए और उसी समय बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार फिर गिरफ़्तार कर लिए गए। डॉक्टर भूपालचन्द और दस अन्य व्यक्ति, जो उसी सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, ६ अक्टूबर तक के लिए हवालात भेज दिए गए।

* * *

गुजरात में टैक्सबन्दी का व्यापक आन्दोलन

"मैं देशद्रोही बनने से जेल जाना पसन्द करता हूँ।"

लगानबन्दी के सम्बन्ध में बारदोली में अत्याचार दिन प्रति दिन बढ़ रहे हैं। गाँवों के सम्माननीय और धनिक किसानों की गिरफ़्तारियाँ जारी हैं। वरद में एक निरपराध ६५ वर्ष के बुड्ढे किसान को, जिसने अपना पूरा लगान चुका दिया था, केवल इसलिए गिरफ़्तार कर लिया गया है कि उसने दूसरों पर लगान चुकाने के लिए दबाव नहीं डाला।

बाकानेर के पाँच प्रसिद्ध किसानों को ४-४ माह का कठिन और ५००)-५००) जुर्माने का दण्ड दिया गया। जुर्माना न देने पर एक-एक माह के कारावास का दण्ड और। इन पाँच अभियुक्तों में से एक ७५ वर्ष का बुड्ढा है। उसे आँखों से कम सूझता है और बिना किसी की सहायता के कहीं नहीं जा सकता। मुक़द्दमे के समय इस असमर्थता के कारण वह ज़मानत पर छोड़ दिया गया था। एक पुलिस ऑफ़िसर के यह कहने पर कि यदि वह अपने गाँव के दूसरे किसानों से लगान के ३०००) वसूल करा दे तो वह छोड़ दिया जायगा—उसने कहा कि वह देशद्रोही बनने से जेल के कष्ट भोगना अधिक पसन्द करेगा।

२५ सितम्बर को एक फ़ौजदार १५ पुलिस के सिपाहियों के साथ कराड़ी में वीर नाथूभाई के घर आया जो अभी जेल में अपनी सज़ा पूरी कर रहे हैं। दरवाज़े पर ताला पड़ा होने के कारण चार पहरेदार वहाँ छोड़ कर फ़ौजदार मतवाड़ में देवचन्द जीवन की अनुपस्थिति में उनके गोदाम पर पहुँचा और 'ज़ब्ती' में ५० बोरे चावल ले गया। हज़ारों दर्शक उस समय राष्ट्रीय गीत गा रहे थे।

गुजरात की प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमेटी ने समस्त गुजरात के कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं को अपनी सब शक्ति लगानबन्दी पर ही केन्द्रित करने की हिदायत की है। इसके अनुसार चिखली तालुक़े के क़रीब ३५ गाँवों के मनुष्यों ने लगान न देने की अटल प्रतिज्ञा की है।

रुड़की में गोलियाँ और लाठियाँ चलीं

रुड़की में २७, २८ और २९ सितम्बर को राजनीतिक कॉन्फ़्रेन्स होने वाली थी और उसके एक दिन पहिले ही आस-पास के गाँवों के ६,००० वालण्टियर एकत्र हो गए थे। परन्तु कान्फ़्रेन्स प्रारम्भ होने के एक दिन पहले वहाँ १४४ धारा लगा कर पाँच या पाँच से अधिक आदमियों का एक साथ मिलना ही रोक दिया गया। कॉङ्ग्रेस ने इस ऑर्डर के विरोध में दस-दस वालण्टियरों के चार दल भेजे जो गिरफ़्तार कर के बाद में छोड़ दिए गए। बाक़ी दलों से पुलिस ने अपनी लाठियाँ अलग फेंकने के लिए कहा। इसके बाद बिना किसी चेतावनी के वहाँ के ज्वॉइन्ट मैजिस्ट्रेट और पुलिस अफ़सरों ने लाठी चलाने का हुक्म दे दिया। पुलिस ने लाठियों के प्रहार से सैकड़ों दर्शकों और वालण्टियरों को घायल कर दिया। इस पर गाँवों के कुछ लोगों ने दो पुलिस कॉन्स्टेबिलों और बहुत से अमन सभा वालों को लाठियों से मारा और उन्हें चोट भी आई। उस समय पुलिस वहाँ से हट गई और फिर बन्दूकें लेकर आ धमकी और दो गोलियाँ चलाईं। अभी तक पता नहीं लगा कि उनसे कोई मरा या नहीं। इस अवसर पर वहाँ के एम्बुलेन्स कोर ने आठ वालण्टियरों और कॉन्स्टेबिलों को सुरक्षित स्थान में पहुँचाने और उनकी मरहम-पट्टी करने में बड़ी सहायता पहुँचाई। अब वहाँ शान्ति है। शहर में हड़ताल है। ९५ आहत कॉङ्ग्रेस अस्पताल में भरती किए गए हैं और बहुत से आहत अपने-अपने गाँव चले गए हैं। इस सम्बन्ध में अभी तक वहाँ तीस गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

साबरमती का जादूगर ही इर्विन का आसन ग्रहण कर सकता है!

गोलमेज़ परिषद के बङ्गाल के प्रतिनिधियों—श्री० जे० एन० बसु; ए० के० फ़ज़लुलहक़ और डॉ० एन० एन० लॉ, को लेफ़्टिनेन्ट बी० जी० सिन्हा ने उनकी बिदाई के उपलक्ष में एक भोज दिया था। उसके बाद उन्होंने उनकी सफलता के लिए प्रार्थना करते हुए कहा कि जिन्हें गोलमेज़ परिषद की सफलता पर पूर्ण विश्वास था वे ही अब उसकी सफलता में सन्देह करने लगे हैं, क्योंकि उनके हृदय में अज्ञात रूप से यह बात समा गई है कि साबरमती के जादूगर के सिवा कोई लार्ड इर्विन के आसन पर नहीं बैठ सकता। और यदि प्रतिनिधिगण कॉन्फ़्रेन्स में महात्मा गाँधी का स्थान ग्रहण करना चाहते हैं तो उन्हें अपने अस्तित्व को भुला देना होगा।

मुसलमान आन्दोलन के अगुआ बनें?

'जमायतुल-उलेमा-हिन्द' के सेक्रेटरी और दिल्ली की प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमेटी के डिक्टेटर ने जेल जाते समय मुस्लिम भाईयों को निम्न सन्देश भेजा है:—

"......अपनी गिरफ़्तारी के बाद मैं स्वभावतः उन सभी ज़िम्मेदारियों से बरी हो जाता हूँ जो स्वतन्त्र रहने पर मेरे कन्धे पर थीं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे देश-भाई आन्दोलन को पूर्ण रूप से सफल करने में कोई कसर न उठा रक्खेंगे। मुझे आशा है कि मुसलमान इस लड़ाई में किसी दूसरी जाति से पीछे न रहेंगे। यह लड़ाई बहुत बढ़ गई है और सफलता में केवल एक इञ्च की कसर रह गई है। यदि हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल कर इस युद्ध को जारी रक्खेंगे तो ईश्वर हमें शीघ्र ही सफलता देंगे।"

राजा राजगद्दी का अधिकार छोड़ दे!

स्पेन में प्रजातन्त्रवादियों का बलवा!!

स्पेन की राजधानी मेड्रिड की ख़बर है कि वहाँ के बीस हज़ार जनसत्तावादियों ने सारे देश में वर्तमान शासन के विरुद्ध बग़ावत फैला दी है। उनकी सभा बिलकुल क्रान्तिकारी थी, परन्तु उसकी कार्यवाही की भाषा साधारण थी। भूतपूर्व लिबरल मिनिस्टर एलकाला ज़मोरा ने यह घोषणा की है कि राजा को गद्दी छोड़ देना चाहिए, परन्तु उसने साथ ही जनता से भी उपद्रव न मचाने की प्रार्थना की है। सन् १९२३ में जनरल डी० रेवरा की घोषणा के बाद वहाँ की जनता ने पहली बार ही गवर्नमेण्ट की स्वीकृति से इस प्रकार की घोषणा की है। यद्यपि वहाँ इस प्रकार की घोषणाओं के लिए कोई रोक-टोक नहीं है, परन्तु क़ानून के अनुसार राजा के ऊपर कोई आक्रमण नहीं कर सकता।

* * *

पञ्जाब में गिरफ़्तारियाँ

२६ सितम्बर तक ५,६४०

पञ्जाब प्रान्त में १२ सितम्बर से २६ सितम्बर तक ६१० गिरफ़्तारियाँ हुईं और इस प्रकार गिरफ़्तारियों की कुल संख्या ५,६४० तक पहुँच गई है।

हर एक ज़िले में गिरफ़्तारियों की संख्या निम्न प्रकार है:—

ज़िला	संख्या
लाहौर	१७३६
अमृतसर	८६७
गुजरानवाला	४६०
लुधियाना	३७५
शेख़ूपुरा	३४२
लायलपुर	३४२
फ़ीरोज़पुर	२६६
जलन्धर	२३२
रोहतक	१८४
मन्तगोमरी	१७७
सियालकोट	१६८
झेलम	१५३
शिमला	१३४
हिसार	१२६
होशियारपुर	१२५
मुल्तान	१२३
रावलपिण्डी	१२२
अम्बाला	१२०
गुरदासपुर	६६
सरगोधा	६७
काँगड़ा	४०
झङ्ग	३६
गुजरात	२४
कैम्बलपुर	२०
मियाँवाली	२०
करनाल	१५
मुज़फ़्फ़रगढ़	१४
झींद स्टेट	१४
डेरा गाज़ी ख़ाँ	१२
कपूरथला स्टेट	३
कुल संख्या	५,६४०

* * *

—इङ्गलैण्ड में एक कोयले की खान में धड़ाका होने से १४ मज़दूर मर गए।

—कई देश अपने यहाँ बहुत अधिक उत्पन्न हुई चीज़ों से छुटकारा पाने के लिए आपस में बदला करने की स्कीम सोच रहे हैं। जैसे इङ्गलैण्ड अमेरिका को रबड़ देकर कपास लेना चाहता है और जापान कपास के बदले में रेशम देना चाहता है!

—३० सितम्बर को लन्दन में तीन सैनिक हवाई जहाज़ कुहरे के कारण आपस में लड़ गए। एक अफ़सर और एक सारजण्ट मर गए। हवाई-जहाज़ों की दुर्घटनाओं के कारण इङ्गलैण्ड में पहली जनवरी से अब तक ४८ मौतें हो चुकी हैं।

—हवाना में विद्यार्थियों के एक दल ने प्रेज़िडेण्ट मेकाडो के महल पर धावा किया। पुलिस ने उनको रोका और दोनों में एक घण्टे तक लड़ाई होती रही। छः व्यक्ति सख़्त घायल हुए। प्रेज़िडेण्ट के ख़िलाफ़ एक महीने से बड़ा आन्दोलन चल रहा है और उसे अमेरिकन धन-कुबेरों के हाथ की कठपुतली बतलाया जाता है।

लॉर्ड बर्कनहैड का देहान्त

लन्दन का समाचार है कि ३१ सितम्बर को दोपहर के बाद लॉर्ड बर्किनहैड का देहान्त हो गया। इस समय उनकी उम्र ५८ वर्ष की थी। वे इङ्गलैण्ड के बड़े राजनीतिज्ञों में से एक समझे जाते थे, और उन्होंने ४ वर्ष तक भारत-मन्त्री के पद पर काम किया था।

—श्री० विन्सेन्ट-चर्चिल के सम्बन्ध में यह अफ़वाह उड़ी थी कि वे राजनीतिक क्षेत्र से हट कर व्यापारिक और साहित्यक जीवन व्यतीत करेंगे। परन्तु उन्होंने एक मुलाक़ात में कहा है कि—"ऐसे अवसर पर, जब कि हमें भारत पर अधिकार स्थिर रखने का प्रश्न हल करना है; मैं कभी राजनीतिक जीवन से न हटूँगा।"

—अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह नादिरशाह ने अपने देश की उन्नति के लिए वहाँ एक रेलवे लाइन बनाने का एक जर्मन कम्पनी को ठेका दिया है। यह लाइन जलालाबाद से काबुल तक १०० मील लम्बी होगी। आगे यह रूसी सीमा में 'कुश्क' लाइन से मिला दी जायगी। अफ़ग़ानिस्तान में अभी तक रेल नहीं थी और इसलिए इस आविष्कार से वहाँ के लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं है। भारत से व्यापार सुचारु रूप से चलाने में अब वहाँ के लोगों को बहुत सुविधा हो जायगी। नादिरशाह ने अपने राज्य काल में अफ़ग़ानिस्तान को समृद्ध बनाने के लिए खेती की उन्नति, खनिज पदार्थों का उपयोग और शासन में बहुत से सुधार करने की ठान ली है।

—एक माह पहले चीन के कन्सू प्रान्त के दक्षिण में लिवसीन नामक नगर में उत्पातकारियों की एक फ़ौज ने धावा किया था। नगर निवासियों ने वीरतापूर्वक उनका सामना किया। परन्तु धीरे-धीरे उनकी शक्ति कम हो गई। उसके बाद फ़ौज ने युवतियों को छोड़ कर; जिन्हें वे अपनी नीच वासनाओं की तृप्ति के लिए ले गए; ८००० नगर निवासियों को क़त्ल कर डाला।

—अभी हाल में २री सितम्बर को श्री० घोष ने ६७ घण्टे लगातार तैर कर संसार के तैराकों को परास्त किया था और भारत का सम्मान बढ़ाया था। परन्तु अब माल्टा में आर्थर रिज़ो नामक एक व्यक्ति ने ६८ घण्टे ११ मिनिट तैर कर घोष को परास्त कर दिया।

—विजयानगरम के महाराज-कुमार क्रिकेट के बड़े उत्साही खिलाड़ी हैं। अभी हाल ही में जब वे विलायत से भारत लौटने लगे तब उन्होंने वहाँ के सुप्रसिद्ध खिलाड़ी जे० बी० हॉब्ज़ और सटक्लिफ़ को अपनी टीम के साथ खेलने के लिए आमन्त्रित किया था। परन्तु सटक्लिफ़ ने ऐसे आन्दोलन के समय भारत आने से अनिच्छा प्रकट की और हॉब्ज़ ने कहा कि वे वहाँ 'बम' खाने न जायँगे।

चीन में दो अङ्गरेज़ स्त्रियों की हत्या

३री अक्टूबर को फूकाऊ (चीन) स्थित ब्रिटिश-कौन्सिल जनरल ने लुटेरों को २००० पौण्ड छुटकारे के लिए न देने के कारण दो मिशनरी स्त्रियों, कुमारी जेव हैरसिन (६३ वर्ष) और कुमारी एडिथ नैटिल्टन (६० वर्ष) की हत्या के समाचार भेजे हैं। वे जून के महीने में, जिस समय कौन्सिल-जनरल ने सब मिशनरियों की सभा एकत्र की थी, फूकाऊ आते समय रास्ते में पकड़ ली गई थीं। लुटेरों ने उनके छुटकारे के लिए २००० पौण्ड माँगे थे। पहले इन लुटेरों ने धमकी देते हुए कहा था कि यदि रक़म न भेजी जायगी तो वे कुमारी नैटिल्टन की अँगुलियाँ काट डालेंगे। अगस्त में उन्होंने रक़म का तक़ाज़ा करने के साथ ही उस रमणी की एक अँगुली काट कर भेजी थी। परन्तु पिछले सप्ताह में जो तक़ाज़ा आया था उसमें उन्हें शीघ्र ही मार डालने की धमकी दी थी। पहले 'चर्च मिशनरी सोसाइटी' ने छुटकारे की रक़म न देने का ही इरादा किया था। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने भी इस प्रस्ताव का समर्थन किया था; परन्तु पीछे से सोसाइटी थोड़ी रक़म देने के लिए तैयार हो गई थी। फूकाऊ के ब्रिटिश अफ़सरों के पास अन्तिम चेतावनी भेजने के बाद ही दोनों स्त्रियाँ क़त्ल कर दी गईं। इस ख़बर से इङ्गलैण्ड भर में आतङ्क फैल गया है। मालूम हुआ है कौन्सिल-जनरल भी सुरक्षित नहीं है।

—लङ्काशायर में बहुत दिनों के बाद कुछ मिलें फिर चलने लगी हैं। अभी हाल में नम्बरी सूत की माँग बढ़ने के कारण 'लङ्काशायर कॉटन कॉरपोरेशन' की चार मिलों के फिर से शुरू होने की ख़बर आई है।

—२ अक्टूबर का समाचार है कि लन्दन में म० गाँधी सोसाइटी ने एक शाक और फलाहारी भोज में गाँधी जन्म-दिवस मनाया जिसमें ब्रिटिश, अमेरिकन और भारतीय सम्मिलित हुए थे। उत्सव के प्रेज़िडेण्ट श्री० फ़ेनर ब्रॉकवे ने कहा कि यदि आज उपवास रक्खा जाता तो इस उत्सव के लिए अधिक उपयुक्त होता। उन्होंने ब्रिटेन और भारत दोनों के मित्रों से अपने सिद्धान्तों को कार्य रूप में परिणत करने की प्रार्थना की। इङ्गलैण्ड के सुप्रसिद्ध और प्रतिभाशाली लेखक श्री० जॉर्ज बरनार्डशॉ स्वयं उत्सव में तो उपस्थित न हो सके, परन्तु उनके प्राइवेट सेक्रेटरी ने निम्न आशय का एक पत्र भेजा—"...श्री० बरनार्डशॉ को गाँधी से पूर्ण सहानुभूति है, परन्तु उनका कार्य भारत का कार्य है और इसलिए उससे मि० शॉ का विशेष सम्बन्ध नहीं है। राष्ट्रीय आन्दोलन में विदेशियों की सहानुभूति से लाभ की अपेक्षा हानि की अधिक सम्भावना रहती है।"

* * *

बधाई

'भविष्य' का भविष्य बहुत उज्ज्वल मालूम होता है, हर पहलू से लाजवाब है। सहगल जी को दिल से बधाई देता हूँ।

चरचा हर एक जगह सरे-बाज़ार यही है।
दिल जिस पे है क़ुरबान, वह अख़बार यही है॥

"बिस्मिल" इलाहाबादी

—कानपुर ज़िले से कौन्सिल के लिए कानपुर के विश्वम्भर सिंह रईस चुने गए हैं और कानपुर शहर से राय बहादुर बाबू अवधबिहारी लाल। इनको कुल मिला कर ७२ वोट मिले हैं। कॉङ्ग्रेस की पिकेटिङ्ग को पूरी सफलता प्राप्त हुई समझी जाती है।

—हरदोई के कौन्सिल चुनाव में श्री० मुनीश्वरबख़्श सिंह ने राय बहादुर बाबू मोहनलाल को हरा दिया २०,८८० में से कुल १,४३३ वोट डाले गए।

—फ़तहपुर से युक्त प्रान्तीय कौन्सिल के लिए मुसद्दवा भाई चुना गया है। उसके खड़े होते ही दूसरे उम्मेदवारों ने अपने-अपने नाम वापस ले लिए।

—फ़ीरोज़ाबाद का समाचार है कि 'विशाल भारत' के सम्पादक और हिन्दी के सुलेखक पं० बनारसी दास चतुर्वेदी की धर्मपत्नी का देहान्त ३० सितम्बर को होगया। चतुर्वेदी जी केवल एक दिन पहले कलकत्ते से आए थे।

—हाल ही में दिल्ली के मेहतरों की एक सभा ने प्रस्ताव किया है कि—"हम मर्दुमशुमारी विभाग की इस कार्यवाही से बड़े असन्तुष्ट हैं कि उसने शिमले के सब मेहतरों को मुसलमान लिख दिया है। हम अधिकारियों का ध्यान इस तरफ़ आकर्षित करना चाहते हैं कि यदि यह ग़लती दुरुस्त न की गई तो इसका नतीजा बहुत बुरा होगा।"

—पेशावर में सर अब्दुल क़यूम, एम० एल० ए० के सभापतित्व में एक कमेटी भोपाल की बेगम साहिबा के २१,०००) के अनाथ-रक्षक-फ़ण्ड के सञ्चालन के लिए नियुक्त हुई है। फ़ण्ड का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है और तीन हज़ार रुपया २३ अप्रैल के हत्या-काण्ड के शहीदों के कुटुम्बियों को बाँटे गए हैं।

—गोलपाड़ा (आसाम) के पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० मन्मथ घोष और उनके दो अधीनस्थ कर्मचारियों पर षड्यन्त्र रचने और हत्या करने का अभियोग लगाया गया है।

—विज़गापट्टम (मद्रास) का समाचार है कि चार नवयुवक, जो आतिशबाज़ी बना रहे थे, आग लग जाने से बुरी तरह घायल हुए हैं। वे फ़ौरन अस्पताल भेजे गए जहाँ तीन कुछ देर बाद मर गए।

—२६ और २७ सितम्बर को लगातार २४ घण्टे मूसलाधार वर्षा होने के कारण बस्ती ज़िले की सदर तहसील के पूर्वीय भाग में और ख़लीलाबाद तहसील के दक्षिणी भाग में बड़े ज़ोर की बाढ़ आई है। सैकड़ों गाँव बह गए हैं और हज़ारों आदमी बे-घर-बार और भिखारी हो गए हैं। कुछ आदमियों की जान जाने की भी ख़बर है। परन्तु अभी बाढ़ के कारण कोई ख़बर ठीक-ठीक नहीं आती। लोगों का कहना है कि उस भाग में ऐसी बाढ़ उन्होंने कभी नहीं देखी थी।

—ऐसा मालूम हुआ है कि यू० पी० के गवर्नर सर मालकेम हेली और छतारी के नवाब के विलायत चले जाने पर उनके स्थान निम्न अफ़सर ग्रहण करेंगे।

सर जॉर्ज लैम्बर्ट अर्थ-मन्त्री, गवर्नर का, श्री० जे० सी० स्मिथ रेवेन्यू बोर्ड के मेम्बर का और भीकमपुर के नवाब सर मुज़म्मिल उल्ला होम-मेम्बर का स्थान ग्रहण करेंगे।

—कलकत्ते में ७२ मज़दूर क़ानून के ख़िलाफ़ चोरी से शराब बनाने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए हैं। ६२ गैलन शराब, १४३ मन शराब निकाल कर फेंका हुआ महुआ और २२ मन सूखा महुआ मिला है।

* * *

—बनारस के अब्दुल ग़नी नामक दुकानदार ने विदेशी कपड़ों के बण्डल पर लगी मुहर को तोड़ कर कपड़े बेचना शुरू किया है। इस पर सत्याग्रह कमेटी की तरफ़ से उसकी दुकान पर पिकेटिङ्ग की जा रही है। २९ सितम्बर की शाम को इस अभियोग में छः स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। अलीनगर और सैदरापा नामक स्थानों में भी, जो शहर के पास हैं, पाँच स्वयंसेवक पकड़े गए हैं।

—आगरे के डिक्टेटर श्री० गोपालनारायण शिरोमणि बी० ए०, जो सेण्ट-जोन्स कॉलेज में एम० ए० के विद्यार्थी थे, गिरफ़्तार कर लिए गए और उनको छः मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई। उनको 'सी' क्लास में रक्खा गया है। यह गिरफ़्तारी पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार कौन्सिल-चुनाव के समय पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में हुई थी।

—देहरादून में सत्याग्रह 'वार-कौन्सिल' के सभापति श्री० श्यामलाल, श्रीमती सत्यवती देवी, श्रीयुत छाजूराम, गुणानन्द, जुगलराज, दर्शनसिंह और शिवनाथ, जो सत्याग्रह-आन्दोलन के मुख्य कार्यकर्ता थे, २९ सितम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—क़ायमगञ्ज में श्रीयुत रामदीन रस्तोगी, गिरीशचन्द्र अग्रवाल, नयनसिंह और महाराजनारायण, जो सत्याग्रह आन्दोलन के प्रधान कार्यकर्ता थे, २९ सितम्बर को पकड़ लिए गए।

—सी० पी० 'युद्ध-समिति' के आठवें प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत जोगलेकर वर्धा में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कटक में चुनाव के समय पिकेटिङ्ग करने के अपराध में कटक कॉङ्ग्रेस कमेटी की मन्त्रिणी मालती देवी और उत्कल कॉङ्ग्रेस कमेटी के प्रेज़िडेण्ट पण्डित लिङ्गराज मिश्र अन्य ११० वालण्टियरों सहित गिरफ़्तार कर लिए गए। मालती देवी को छः मास के सादे और पण्डित जी को छः मास के कठिन कारावास का दण्ड मिला और ३८ पुरुष और ५ स्त्री वालण्टियरों को अदालत बरख़ास्त होने तक क़ैद का दण्ड दिया गया। बाक़ी छोड़ दिए गए।

—कुछ समय पहले कानपुर के एक प्रसिद्ध व्यापारी श्री० बेगराज हरद्वारीमल की विलायती कपड़े की कुछ गाँठें उन्नाव और कानपुर के बीच के एक छोटे स्टेशन मगरवारा से लादी गई थीं, जिन्हें कॉङ्ग्रेस वालण्टियरों ने देख लिया था। इस के फलस्वरूप ३० सितम्बर से उनकी दुकान पर बड़े ज़ोरों से पिकेटिङ्ग हो रही है। कानपुर के सातवें डिक्टेटर डॉक्टर हज़ारीलाल शर्मा और शहर कॉङ्ग्रेस कमेटी और युवक-सङ्घ के प्रेज़िडेण्ट गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। उन पर चुनाव के समय पिकेटिङ्ग करने का भी अभियोग लगाया गया है। इसी अभियोग में श्री० रमाकान्त मिश्र और कालीचरण भी गिरफ़्तार किए गए हैं। २ ता० की सन्ध्या को दुकान पर पिकेटिङ्ग करते समय और भी वालण्टियर गिरफ़्तार किए गए हैं। डॉ० हज़ारीलाल शर्मा की जगह अब श्री० मुकुन्दचरण निगम एडवोकेट शहर कॉङ्ग्रेस कमेटी के डिक्टेटर और प्रेज़िडेन्ट नियुक्त हुए हैं।

—अनूपशहर (बुलन्दशहर) की कॉङ्ग्रेस के प्रेज़िडेन्ट पण्डित बेनीप्रसाद दुबे १४४ दफ़ा में गिरफ़्तार कर लिए गए। उनकी गिरफ़्तारी के बाद ही उनके लड़के की मृत्यु हो गई। शहर में पूर्ण हड़ताल मनाई गई।

—अहमदाबाद से ता० २ को नवजीवन-भारत-सभा के ११ वालण्टियरों का एक जत्था धरसाना के नमक के कारख़ाने पर धावा करने रवाना हुआ, परन्तु शहर के बाहर पहुँचते ही वे गिरफ़्तार कर पुलिस हवालात में भेज दिए गए।

—अहमदाबाद की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमेटी की सेक्रेटरी कुमारी ख़ुरशेद बेन नैरोजी को एक माह की सादी क़ैद और २५ रुपए जुर्माने की सज़ा हुई है। जुर्माना न देने पर एक माह की सादी सज़ा। वे 'ए' क्लास में रक्खी गई हैं।

—गुजरात प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी श्री० हरिप्रसाद मेहता पहली अक्टोबर को गिरफ़्तार कर लिए गए। उनकी जगह श्री० मूलराज देसाई, जो पहले कलक्टर के पर्सनल असिस्टेण्ट थे और जिन्होंने सत्याग्रह में सम्मिलित होने के लिए कुछ समय पहले नौकरी से इस्तीफ़ा दिया था, काम कर रहे हैं।

—सी० पी० मराठी 'युद्ध-समिति' के प्रेज़िडेन्ट प्रोफ़ेसर एम० बी० जोगलेकर को, जो वर्धा में गिरफ़्तार किए गए थे, आठ माह की सख़्त क़ैद और २०० रुपए जुर्माने की सज़ा हुई है। जुर्माना न देने पर दो माह की सख़्त सज़ा और भोगनी होगी। १ ता० को वर्धा में एक शराब की दुकान और गवर्नमेण्ट के शराब के गोदाम पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ९ वालण्टियर गिरफ़्तार किए गए।

—कालीकट का समाचार है कि काड़कनाद राजघराने के श्री० शङ्कर वर्मा राजा को, जो केरल 'युद्ध-समिति' के डिक्टेटर थे, चार माह की सख़्त क़ैद और ७५ रुपया जुर्माने की सज़ा हो गई। जुर्माना न देने पर उन्हें दो सप्ताह की क़ैद और भोगनी पड़ेगी।

* * *

शहर और ज़िला

—इलाहाबाद में ता० २९ सितम्बर को श्री० जे० एस० ग्रोस, सिटी मैजिस्ट्रेट की अदालत में गाँजा, भाँग और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने वाले सत्याग्रही अभियुक्तों की सुनवाई हुई थी। उसमें निम्नलिखित वालण्टियरों को सज़ा दी गई :—

ठाकुरदीन, अल्ला बख़्श, विन्देश्वरी, बलाई और भैरों पर पत्थर गली की शराब की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने का अभियोग लगाया गया था; उसमें से भैरों को चार माह की सख़्त क़ैद और सौ रुपए जुर्माने की सज़ा हुई। जुर्माना न देने पर डेढ़ माह की सज़ा और भोगनी पड़ेगी। ठाकुरदीन को छः माह की सख़्त क़ैद और पचास रु० जुर्माने की सज़ा हुई। जुर्माना न देने पर एक माह की अतिरिक्त क़ैद।

—दारागञ्ज में गाँजा और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में चार आदमी—स्वामी बालानन्द, राधेलाल, पीताम्बर और विदेसी गिरफ़्तार किए गए थे। उनमें से स्वामी बालानन्द, राधेलाल और पीताम्बर को छः छः मास का कठिन कारावास-दण्ड मिला। इसके अतिरिक्त राधेलाल और पीताम्बर को क्रमशः २५) और ५०) जुर्माने की भी सज़ा दी गई। जुर्माने न देने पर उन्हें क्रमशः पन्द्रह दिन और एक माह की सख़्त सज़ा और भोगनी पड़ेगी।

—बख़्शी बाज़ार की शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण हीरालाल को छः मास के कठिन कारावास का दण्ड मिला।

—इलाहाबाद में पण्डित लाडलीप्रसाद ज़ुत्शी एडवोकेट के बङ्गले में बड़ी ज़बरदस्त चोरी हो गई। पण्डित जी एक माह पहिले अपनी धर्मपत्नी श्रीमती लाडोरानी ज़ुत्शी की, जो लाहोर कॉङ्ग्रेस की डिक्टेटर थीं, गिरफ़्तारी का हाल सुन कर ताला लगा कर लाहौर चले गए थे और चाबी पण्डित मोहनलाल नेहरू को दे गए थे। चोरी ताला बन्द रहते की गई। ता० २९ सितम्बर को जब पण्डित मोहनलाल नेहरू उनके बङ्गले से एक बिजली का पङ्खा निकालने गए तब सम्पूर्ण बङ्गले की अस्त-व्यस्त हालत देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। पण्डित ज़ुत्शी की अनुपस्थिति में वे यह नहीं बतला सके कि कौन-कौन सी चीज़ें चोरी गई हैं, परन्तु उनका विश्वास है कि घर में जितने मूल्यवान पदार्थ थे उनमें से वहाँ कुछ भी नहीं बचा। अब पण्डित ज़ुत्शी लाहौर से लौट आए। उन्होंने चोरी जाने वाली चीज़ों की एक फ़ेहरिस्त पुलिस को दी है। उनका एक नौकर पकड़ा गया है।

—इलाहाबाद के कितने ही कपड़े के व्यापारियों ने श्रीमती उमा नेहरू से प्रार्थना की है कि बहुत से दुकानदार अपनी शाख़ाएँ सिविल लाइन में खोल रहे हैं और वहाँ विलायती कपड़े बेच रहे हैं। अगर इसको रोकने का प्रयत्न न किया जायगा तो दूसरे लोग भी, जो अभी तक ईमानदारी से कॉङ्ग्रेस के निर्णय का पालन कर रहे हैं, उसके विरुद्ध काम करने लगेंगे।

—२७ सितम्बर को स्वामी बालानन्द के, जो कि स्थानीय निषाद-सभा के मन्त्री थे, पकड़े जाने पर इलाहाबाद के मल्लाहों ने हड़ताल कर दी और नावों का चलना दिन भर बन्द रहा। २८ तारीख़ को दो-तीन सौ मल्लाहों का एक जुलूस दारागञ्ज से रवाना होकर अलोपीबाग़, कीटगञ्ज होता हुआ गऊघाट गया, जहाँ उनकी सभा हुई।

—१ ली अक्टूबर को दोपहर के समय श्री० कामेश्वरनाथ भार्गव के मकान पर श्रीमती एनी बीसेण्ट की ८३-वीं वर्ष गाँठ का उत्सव मनाया गया। इलाहाबाद के बहुत से थियोसोफ़िस्ट इकट्ठा हुए थे। गाने-बजाने और जलपान का भी सुन्दर प्रबन्ध था।

—क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज की कार्यकारिणी कमेटी ने ५,००० रु० क़र्ज़ लेने का निश्चय किया है। इसके सिवाय बैङ्क से भी ५,००० 'ओवर ड्राफ़्ट' करने (जमा रुपए से अधिक देने) को कहा गया है। स्थानीय कलक्टर मि० बम्फ़र्ड ने, जो कि कार्यकारिणी कमेटी के 'एक्स ऑफ़िशो चेयरमैन हैं, मीटिङ्ग में तब तक उपस्थित होने से इन्कार किया, जब तक कि सरकारी सहायता फिर जारी न हो जाय।

—इलाहाबाद के मुस्लिम-होस्टल का एक डेपुटेशन चन्दा इकट्ठा करने अलीगढ़ पहुँचा। वहाँ के नवाब सर मुज़म्मिलुल्लाह ख़ाँ ने उनको १ हज़ार रुपया सहायता दी और ५ हज़ार का वचन दिया।

—४ ता० के युक्त-प्रान्तीय गवर्नमेण्ट गज़ट में एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है, जिसके अनुसार शहर के निवासियों की चाल-चलन के कारण इलाहाबाद में तीन माह के लिए पुलिस बढ़ाई जायगी और नागरिकों को इनका वेतन देना होगा।

* * *

—इलाहाबाद ज़िले में २७ सितम्बर को चुनाव के समय पिकेटिङ्ग के अभियोग में जिन चार आदमियोंः—इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्य पं० ब्रजकिशोर मालवीय, प्रभू, किशनचन्द्र और जानकी की गिरफ़्तारी हुई थी उनमें से ब्रजकिशोर मालवीय का मुक़हमा स्थगित कर दिया गया और बाक़ी को छः-छः मास की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई। साथ ही जानकी और किशनचन्द्र पर ७५-७५ रुपया और प्रभू पर ५० रुपया जुर्माना हुआ। जुर्माना न देने पर सबको डेढ़-डेढ़ माह की सख़्त क़ैद और भोगनी पड़ेगी।

—सदैव की तरह इलाहाबाद में दशहरे में कोई उत्सव नहीं मनाया गया, परन्तु झूँसी, सारन और मनौरी आदि कई गाँवों में उत्सव मनाया गया था। शहर के हिन्दुओं की प्रायः सभी दुकानें बन्द थीं और पूरी हड़ताल मालूम होती थी।

—इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के इतिहास-विभाग के अध्यक्ष डॉ० शफ़ात अहमद ख़ाँ ३ ता० को सबेरे राउण्ड-टेबिल कॉन्फ़्रेन्स में भाग लेने के लिए रवाना हो गए।

—सर तेजबहादुर सप्रू १ ली अक्टूबर को विलायत जाने के लिए बम्बई को रवाना हो गए। स्टेशन पर उनको विदा करने के लिए बहुत से सम्माननीय व्यक्ति इकट्ठे हुए थे। यू० पी० को डिक्टेटर श्रीमती उमा नेहरू ने इस बात का विशेष रूप से प्रबन्ध कर दिया था कि उनके विरुद्ध काले झण्डों का जलूस आदि न निकाला जाय।

—इलाहाबाद के सिटी मैजिस्ट्रेट श्री० जे०एस०ग्रोस ने ४ थी ताः को कई अभियोगों का फ़ैसला सुना दिया। बिदेसी को दारागञ्ज की शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई। गजाधर और भुलई को मछली-बाज़ार की ताड़ी की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई। बिन्देशरी और अल्लाह बक्स को पत्थर गली की शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई। बलाई ने, जिस पर पत्थर गली की शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने का अभियोग लगाया गया, कहा कि वह अपनी दुकान पर गिरफ़्तार किया गया था और उसने अपने को निरपराध सिद्ध करने के लिए बहुत से गवाह भी दिए, परन्तु मैजिस्ट्रेट ने उस पर विश्वास नहीं किया और उसे ४ माह की सख़्त क़ैद और १०० रुपए जुर्माने की सज़ा दे दी। जुर्माना न देने पर उसे डेढ़ माह की सज़ा और भी भोगनी पड़ेगी।

—इलाहाबाद में जॉन्सटनगञ्ज मुहल्ले में गत शनिवार को ८ बजे सन्ध्या को अनवार अहमदी प्रेस के पास एक बम फटा था, जिससे शहर में सनसनी फैल गई है। परन्तु उसका रहस्य अभी तक नहीं खुला।

—६ अक्टूबर को इलाहाबाद में विलायती कपड़े की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण शहर में एक, और दारागञ्ज में गाँजा और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ज्ञानचन्द और नथई नामक दो वालण्टियर गिरफ़्तार हुए। चौक के वालण्टियरों के कप्तान योगिन्द्रनाथ मजूमदार भी गिरफ़्तार कर लिए गए।

—७ वीं अक्टूबर को दोपहर के समय चौक में श्रीमती कमला नेहरू खड़ी हुई कुछ लोगों से बातें कर रही थीं कि एकाएक एक मुसलमान बुढ़िया उनकी तरफ़ दौड़ी और उनको अपमानित किया। इससे बड़ी सनसनी फैल गई और एक व्यक्ति ने दौड़ कर इसकी ख़बर कोतवाली में डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट मिस्टर इक़रामहुसैन को दी। उन्होंने उसे पकड़वा कर हवालात में बन्द करवा दिया। कहा जाता है कि वह पागल है।

* * *

'आर १०१' भारत आते समय जल कर ख़ाक हो गया

भारत के 'भावी-वायसराय' जल कर मर गए

'आर १०१' नाम का हवाई जहाज़, जिसकी इङ्गलैण्ड से भारत की यात्रा के लिए बहुत दिनों से तैयारियाँ हो रही थीं, ४ अक्टूबर की शाम को ७ बज कर ३६ मिनट पर रवाना हुआ। अन्य बहुसंख्यक उच्च पदाधिकारियों के अलावा इसके यात्रियों में इङ्गलैण्ड के वायु-सचिव लॉर्ड टॉमसन भी थे, जिनके भारत का वायसराय नियुक्त किए जाने की बहुत कुछ सम्भावना की जाती थी।

यात्रा के समय का दृश्य

'आर १०१' लन्दन जाने के लिए रात्रि में ८-४० पर हेट फ़ील्ड पर से गुज़रा। उसकी इस लम्बी उड़ान के समय सैकड़ों मनुष्यों ने उसका स्वागत किया। सन्ध्या के ७ बजे के कुछ ही पश्चात् उसका एक एञ्जिन चलाना प्रारम्भ कर दिया गया और उसका हरा प्रकाश खोल दिया गया। फिर धीरे-धीरे वह उड़ कर रात्रि के अन्धकार में लुप्त हो गया। वह ६ बजे रात्रि को लन्दन पर से गुज़रा, परन्तु धीमे मेह और बादलों के कारण वहाँ के लोग केवल उसका लाल, हरा और सफ़ेद प्रकाश ही देख सके।

उड़ने के पहले लॉर्ड टॉमसन से भेंट करने पर उन्होंने कहा कि वे बड़े विश्वासपूर्वक उड़ रहे हैं। उन्होंने कराँची ४-५ दिन में पहुँचने की आशा प्रकट की। उन्होंने कहा कि वे दो दिन शिमला ठहरेंगे। प्रधान मन्त्री से उन्होंने २० दिन में वापस लौटने की प्रतिज्ञा की थी। यह पूछने पर कि क्या इस यात्रा के बाद यह जहाज़ सदैव भारत आया-जाया करेगा, उन्होंने हँस कर उत्तर दिया कि "कोई भविष्य वाणी नहीं की जा सकती।"

टक्कर और धड़ाका

पेरिस, ५ अक्टूबर

यह ख़बर निश्चित है कि हवाई जहाज़ 'आर १०१' को २॥ बजे सबेरे ब्यूवेस के पास एक पहाड़ी से टक्कर लगी और धड़ाके के साथ उसमें आग लग गई। ५४ आदमियों में से केवल ७ आदमी जीवित बचे हैं, बाक़ी ४७ जल कर मर गए। मृतकों में लॉर्ड टॉमसन सम्मिलित हैं। जो जीवित बचे हैं वे भी बुरी तरह जल गए हैं और अस्पताल में पड़े हैं।

जब 'आर १०१' हवाई जहाज़ ब्यूवेस के ऊपर से निकला तब वह बहुत नीचे से जा रहा था और एञ्जिन से बहुत ज़ोर से आवाज़ निकल रही थी। इससे वहाँ के सब निवासी जाग गए और बच्चे अत्यन्त भयभीत हो गए। तूफ़ानी हवा बहुत ज़ोर से बह रही थी, जिससे हवाई जहाज़ डगमगाता और फिर एक टीले के पीछे दक्षिण की ओर अदृश्य होता हुआ दिखाई दिया। इसके एक ही क्षण बाद जहाज़ की टक्कर से जो ज़बरदस्त धड़ाका हुआ उससे ब्यूवेस के घर भी, जो वहाँ से चार मील की दूरी पर थे, हिल गए।

मालूम हुआ है कि जब यह रोमाञ्चकारी घटना हुई उस समय १२ नाविक जहाज़ चला रहे थे और बाक़ी सब निद्रामग्न थे। जिस शीघ्रता से यह भयानक काण्ड हुआ है, उसका अनुमान केवल इसीसे लगाया जा सकता है कि जाँच करने पर एञ्जिन-घर में एक इञ्जीनियर हाथ में 'स्पैनर' पकड़े हुए ही जल गया। एक फ़्रान्सीसी का, जिसने यह काण्ड साक्षात देखा है, कहना है कि जब जहाज़ जल रहा था उसने मृतकों के जले हुए शरीरों को "इस प्रकार ऐंठा हुआ पाया जिस प्रकार जल कर 'चीज़' ऐंठ जाता है।" गाँव वालों ने सबेरे दो बजे कुहरे और मेह के बीच में जहाज़ का प्रकाश देखा। उस समय जहाज़ कई कठिनाइयों के कारण बहुत नीचे उड़ रहा था।

खोज का कार्य

हवाई जहाज़ पर फ़्रान्सीसी सरकार की ओर से कड़ा पहरा है। फ़्रान्स के वायु-सचिव, एम० लारेण्ट ईनेक ने मौक़े पर पहुँच कर फ़्रान्स गवर्नमेण्ट की ओर से मृतकों को सलामी दी। दिन उगते ही जहाज़ की तलाशी का कार्य प्रारम्भ हो गया। कुलियों और फ़ायरमैनों ने उसमें से नङ्गे, जले और पिसे हुए शरीर निकाले और स्ट्रैचर पर फैला कर उन्हें एक क़तार में एक कुञ्ज में रख दिया।

'आर १०१' पर अभी तक फहराता हुआ ब्रिटेन का अधजला यूनियन जैक वहाँ से हटा कर ब्रिटिश फ़ौज के सिपाहियों के हवाले कर दिया गया है।

जैसे-जैसे 'कॉफ़िन' आते जाते हैं वैसे-वैसे मृतक शरीर उनमें बन्द किए जा रहे हैं। दर्शकों की भीड़ नदी की बाढ़ की तरह बढ़ रही है। दर्जनों हवाई जहाज़ उस जगह ऊपर उड़ रहे हैं।

लन्दन, ६ अक्टूबर

ऐसी धारणा है कि हवाई जहाज़ 'आर १०१' के मृतक शरीर एक युद्ध के जहाज़ में जल्दी से जल्दी ब्रिटेन वापस लाए जायँगे। इस समय मृतकों के शरीर एलोने गाँव के 'आरडेण्ट चेपिल' में रक्खे हैं। इस समय—१ बजे रात्रि को तेल की टड्डियाँ जल रही हैं।

इस भयानक काण्ड का समाचार तुरन्त सम्राट जॉर्ज और प्रधान-मन्त्री मेकडॉनल्ड के पास भेज दिया गया। प्रधान-मन्त्री, जो केनेडा के प्रतिनिधियों का स्वागत कर रहे थे, वायु-मन्त्रि-मण्डल के पास दौड़े हुए गए और उनकी एक सभा कर शीघ्र ही उन्होंने ब्रिटेन के विशेषज्ञ फ़्रान्स को रवाना कर दिए। जो लोग सौभाग्य से बच गए हैं उन्होंने इस काण्ड का बड़ा रोमाञ्चकारी वर्णन किया है। संसार के हर एक देश से शोक और सहानुभूति के सन्देश आ रहे हैं।

* * *

—कलकत्ता के बम-काण्ड के सम्बन्ध में श्रीमती रेणुका सेन और कमलादास गुप्ता नाम की जो दो युवती छात्राएँ गिरफ़्तार की गई थीं, वे ६ ठीं अक्टूबर तक के लिए हवालात भेज दी गईं।

—संयुक्त प्रान्त में बुलन्दशहर की ज़िला और तहसील कॉङ्ग्रेस कमेटियाँ, सिकन्दराबाद की तहसील कॉङ्ग्रेस कमेटी और खुरजा तहसील कॉङ्ग्रेस कमेटी ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दी गई हैं।

—दिल्ली में ४ ता० को पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार एक्सचेञ्ज बैंङ्कों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ५ वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए।

भविष्य की नियमावली

१ 'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२. किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३. लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४. हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५. कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६. लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७. समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८. परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९. सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०. किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

९ अक्तूबर, सन् १९३०

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-

ज़ार देख कर !

मतलब निकाल लीजिए

अख़बार देख कर !!

[श्री० विश्वम्भरनाथजी शर्मा, कौशिक]

"हमारे नगर में कल पहली बार स्त्रियों का जुलूस निकलने जा रहा है—कल जुलूस में मैं भी सम्मिलित होऊँगी।"

शाम के पाँच बज चुके हैं। एक सुन्दर सजे हुए कमरे में एक पुरुष इज़ीचेर पर बैठे हुए एक अङ्गरेज़ी का समाचार-पत्र पढ़ रहे हैं। उनके सामने ही दूसरी कुर्सी पर एक सुन्दर स्त्री गाल पर हाथ रक्खे पुरुष के मुख की ओर ताक रही है। पुरुष की वयस तीस वर्ष के लगभग तथा स्त्री की वयस पचीस वर्ष के लगभग होगी। हठात् स्त्री ने ठोढ़ी पर हाथ फेरते हुए उपर्युक्त वाक्य कहा। स्त्री की बात सुनते ही पुरुष मुख के सामने से पत्र हटा कर बोला—क्या कहा ! जुलूस में सम्मिलित होगी ?

"हाँ !"—स्त्री ने किञ्चित् सङ्कोच के साथ कहा।

पुरुष माथा सिकोड़ कर बोला—क्यों, ऐसी कौन सी आवश्यकता है ?

"आवश्यकता समझो तो बहुत कुछ है, न समझो तो कुछ भी नहीं है।"

"तो तुम यही समझो कि कोई आवश्यकता नहीं है ; क्योंकि मैं भी ऐसा ही समझता हूँ।"

इतना कह कर पुरुष ने पुनः अपना मुख पत्र की ओट में छिपा लिया। स्त्री किञ्चित् म्लान मुख होकर अपना पैर भूमि पर रगड़ने लगी।

कुछ क्षणों तक दोनों मौन बैठे रहे। तदुपरान्त स्त्री ने पुनः कहा—नगर की हज़ारों स्त्रियाँ जुलूस में भाग लेंगी—तब मेरे जाने में कौन हर्ज है ?

पुरुष उसी प्रकार पत्र की आड़ में मुँह छिपाए हुए बोला—इसलिए कि मैं तुम्हें जाने देना नहीं चाहता, क्योंकि मैं भी किसी जुलूस-उलूस में भाग नहीं लेता।

"हमारे पड़ोस की सब स्त्रियाँ जायँगी।"

"जाने दो ; पड़ोस वाले कुएँ में गिरें तो क्या तुम भी गिरोगी ?"

"परन्तु इसे तुम कुएँ में गिरना तो नहीं कह सकते।"

"और नहीं तो क्या है—वहाँ पुलिस ने लाठी और गोली चलाई तो क्या होगा ?"

"होगा क्या, जो सबकी दशा होगी वही मेरी भी होगी।"

"परन्तु मैं तो यह नहीं चाहता कि जो सबकी दशा हो वही तुम्हारी भी हो।"

"यह तो बड़ा स्वार्थपूर्ण विचार है।"—स्त्री ने दबी हुई जिह्वा से कहा।

पुरुष मुख के सामने से पत्र हटा कर बोला—यदि स्वार्थपूर्ण भी है तो क्या बुरा है। अपना स्वार्थ सोचना मनुष्य का पहला कर्त्तव्य है। संसार अपना स्वार्थ देखता है। तुम्हारे न जाने से जुलूस में कोई कमी न हो जायगी।

पुरुष के इस कथन पर स्त्री हँस पड़ी और बोली—ऐसा ही सब सोच लें तो कोई भी सम्मिलित न हो।

"परन्तु ऐसा न सब सोच सकते हैं और न सोचेंगे। यदि सब लोग एक ही बात सोचने लगें और करने लगें तो यह संसार ही बदल जाय। मैंने लोगों को बहुधा यह बात कहते सुना है कि—यदि सब ऐसा सोच लें तो ऐसा काहे को हो। ऐसा कहने वाले यह नहीं सोचते कि सब लोग एक बात नहीं सोच सकते। प्रत्येक आदमी का विचार तथा विश्वास अलग-अलग होता है। जहाँ कुछ लोग यह सोचते हैं कि उनके बिना अमुक कार्य नहीं रुकेगा, वहाँ ऐसा सोचने वाले भी हैं कि यदि वे सम्मिलित न होंगे तो वह कार्य पूर्णतया नहीं होगा। उसमें कुछ न कुछ त्रुटि रह जायगी।"

इतना कह कर पुरुष मृदुतापूर्वक बोला—तुम इस तूफ़ान के बहाव में मत बहो। यह तो एक तूफ़ान है—कुछ दिनों बाद साफ़ हो जायगा, तुम ख़्वाहमख़्वाह अपने को ख़तरे में क्यों डालती हो ?

"तो इसके अर्थ तो यह हैं कि हमें स्वराज्य की आकांक्षा भी नहीं करनी चाहिए।"

"क्यों ?"

"जो स्वराज्य-प्राप्ति के लिए कुछ प्रयत्न नहीं करता उसे स्वराज्य की आकांक्षा करने का क्या अधिकार है।"

"ठीक है ! परन्तु मेरा विश्वास है कि स्वराज्य के लिए केवल विदेशी वस्तुओं का बॉयकाट ही पर्य्याप्त है—सो वह हम कर ही रहे हैं—यह जुलूस-उलूस सब व्यर्थ है।"

"तो इतने लोग जो यह कर रहे हैं वे सब बेवक़ूफ़ हैं ?"

"करने की न कहो ! करने को तो बहुत से बमबाज़ी भी कर रहे हैं, बहुत से बॉयकाट का विरोध भी कर रहे हैं, बहुत से सरकार की हाँ में हाँ भी मिला रहे हैं। उद्देश अच्छा होते हुए भी कार्य-प्रणाली ग़लत हो सकती है।"

इस बात का उत्तर स्त्री न दे सकी अथवा उसने देने की इच्छा नहीं की, अतएव वह मौन हो गई। परन्तु उसके मुख के भाव से यह स्पष्ट प्रकट होता था कि पुरुष की दलीलों से उसकी शङ्काओं का समाधान नहीं हुआ।

२

दूसरे दिन दो बजे के लगभग वही स्त्री खिड़की से बाहर सड़क का दृश्य देख रही थी। स्त्री-पुरुषों के झुण्ड के झुण्ड एक ओर लपके हुए चले जा रहे थे। स्त्री इन स्त्री-पुरुषों को बड़ी ईर्षा की दृष्टि से देख रही थी और रह-रह कर दीर्घ निश्वासों द्वारा अपनी विवशता प्रकट कर रही थी। इसी समय उसे पैरों की आहट सुनाई पड़ी। उसने घूम कर पीछे की ओर देखा तो तीन खद्दरधारिणी स्त्रियों को अपनी ओर आते पाया। उसने एक मलिन मृदु-मुस्कान के साथ कहा—जुलूस में जा रही हो ?

"हाँ ! और क्या तुम न चलोगी ?"—उनमें से एक ने पूछा।

स्त्री ने उदास भाव से कहा—नहीं, मैं तो न चल सकूँगी।

"वाह सरला बहिन, हमसे वादा करके ऐन समय पर इन्कार करती हो—कारण क्या है ?"

सरला ने उत्तर दिया—मुझे स्वामी जी की आज्ञा नहीं मिली।

"क्यों ?"

"उनकी इच्छा !"

"तुमने उन्हें समझाया नहीं। स्वयम् तो घर में मुँह छिपाए बैठे रहते हैं और तुम्हें भी नहीं जाने देते। उनकी इच्छा न हो तो न जायँ, पर तुम्हें क्यों रोकते हैं ?"

"मेरा दुर्भाग्य—और क्या कहूँ।"

तीसरी स्त्री बोल उठी—इनकी भी इच्छा न होगी, व्यर्थ बहाना करती हैं।

सरला बोली—मेरी तो जैसी इच्छा है वह भगवान जानते हैं। परन्तु क्या करूँ, विवश हूँ—स्वामी की आज्ञा बिना कैसे जाऊँ ?

"इसमें स्वामी की आज्ञा की आवश्यकता ही क्या है ? यह तो ऐसा शुभ-कार्य है कि इसमें आज्ञा लेने की आवश्यकता ही नहीं।"

"हो न हो, परन्तु मेरा तो कर्त्तव्य है।"

"अच्छा वह हैं कहाँ, हम अभी आज्ञा दिलाती हैं।"

"वह तो कोर्ट गए हैं, कहीं चार बजे आवेंगे।"—सरला ने कहा।

"हाँ ठीक है, कोर्ट गए हैं—मुझे यह याद ही न रहा। तब—?"

"तब क्या, तुम लोग जाओ—ईश्वर ने मुझे यह सौभाग्य नहीं दिया।"

"ईश्वर तुम्हारे हाथ पर धरने नहीं आवेगा। चलना चाहो तो अभी चल सकती हो। तुम्हें इस समय रोक कौन सकता है ?"

"यह ठीक है ; परन्तु वह नाराज़ होंगे।"

"नाराज़-वाराज़ कुछ नहीं होंगे। जब तुम हँसी-ख़ुशी घर लौट आओगी तो कुछ न कहेंगे।"

"वह कहते थे कि पुलिस लाठी और गोली चलावेगी।"

इस पर सब खिलखिला कर हँस पड़ीं और एक ने कहा—अच्छा इसी से तुम भयभीत हो गईं—अब हम समझ गईं।

"मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहती हूँ कि मैं ज़रा भी भयभीत नहीं हूँ, परन्तु क्या करूँ, स्वामी की आज्ञा से विवश हूँ।"

"फिर वही आज्ञा की बात, मैं कहती हूँ कि तुम उनकी इस आज्ञा को मानती ही क्यों हो ?"

"जब सब आज्ञाएँ मानती हूँ तो यह भी माननी ही चाहिए।"

"नहीं, यह आज्ञा नहीं माननी चाहिए।"

सरला मौन रही, उसने कुछ उत्तर न दिया। हठात् एक स्त्री बोल उठी—अच्छा हम बतावें—तुम चलो। यदि वह कुछ कहें तो कह देना हम लोग तुम्हें ज़बर्दस्ती पकड़ ले गई थीं। यदि तुम्हारी बात पर विश्वास न करें तो हमारी गवाही दिलवा देना। हम कह देंगी कि हाँ, हम लोग ज़बर्दस्ती पकड़ ले गई थीं। क्यों, यह तो ठीक रहेगा ?

"हाँ.........परन्तु.........।"

"अब अरन्तु-परन्तु न करो, चुपचाप चली चलो। आज का जुलूस बड़ा महत्वपूर्ण है। आज पार्क में झण्डा लगाया जायगा। अधिकारी लोग झण्डा लगाने देना नहीं चाहते। अतएव ज़रा तमाशा देखने को मिलेगा।"

"परन्तु जुलूस तो केवल स्त्रियों ही का है ?"

"नहीं, पुरुष भी हैं। कल तक यही विचार था कि केवल स्त्रियों ही का जुलूस निकाला जाय ; परन्तु कल रात में यह निश्चय हुआ कि पुरुष भी रहें।"

सरला "हूँ" करके मौन हो गई।

"तो यदि चलना हो तो शीघ्रता करो—देर हो रही है।"

"चलूँ ?"

"हाँ चलो ! जो होगा देखा जायगा। और अब तो हम सारा दोष अपने ऊपर लेने को तैयार हैं, अब तुम्हें किस बात का भय है ?"

"अच्छा चलो। अच्छे कार्य में योग देने जा रही हूँ तो भगवान सब अच्छा ही करेंगे।"

इतना कह कर सरला शीघ्रतापूर्वक वस्त्र बदलने लगी।

३

शाम को चार बजे के लगभग जब वकील साहब लौटे तो घर में प्रवेश करते ही नौकर द्वारा उन्हें सरला की अनुपस्थिति का पता लगा।

नौकर ने कहा—बहू जी तो जुलूस में गई हैं।

वकील साहब बोले—क्या कहा, जुलूस में गई हैं—मेरे इतना मना करने पर भी ?

नौकर ने पड़ोस के तीन सज्जनों के नाम लेकर कहा—उनके घर की आई थीं—वह ज़बर्दस्ती लिवा गईं—वह तो न जाती रहें।

वकील साहब झल्ला कर बोले—वह कोई बच्चा थी, जो गोद में उठा ले गईं। उसकी इच्छा न होती तो वे लाख कहा करतीं—वह स्वयम् गई है। अच्छा है, मरने दो। आज जुलूस में जाने का स्वाद मिल जायगा।

नौकर ने डरते-डरते पूछा—क्यों सरकार, क्या कुछ गड़बड़ी होगी ?

वकील साहब बोले—गड़बड़ी पूरी होगी—आज पुलिस लाठी चलावेगी—तैयार होकर गई है। मुझे कचहरी में सब पता लग चुका है।

"जो ऐसा हो तो हम बहू जी का ढूँढ़ लाई।"

"ढूँढ़ेगा कहाँ—वहाँ कोई दो-चार स्त्रियाँ हैं, जो ढूँढ़ लाएगा—पागल कहीं का।"

"तब कैसे का होई।"

"जो होना है होगा—किया क्या जाय। इतना समझाया तब भी न मानी।"

यह कह कर वकील साहब कपड़े उतारने लगे। कपड़े उतार कर इज़ीचेर पर बैठ गए। और मेज़ पर रक्खा हुआ ताज़ा समाचार-पत्र उठा कर पढ़ने लगे। परन्तु पत्नी की चिन्ता के कारण पत्र में चित्त न लगा। अतएव पत्र अलग रख कर चिन्ता में मग्न होगए। इस समय उन्हें सरला पर बड़ा क्रोध आ रहा था। उसने उनकी आज्ञा का उल्लङ्घन किया। क्या उसके लिए जुलूस में सम्मिलित होना उनकी आज्ञा से अधिक महत्वपूर्ण था ? नौकर दुष्ट कहता है कि पड़ोस की स्त्रियाँ ज़बर्दस्ती ले गईं। यह वही सिखा गई होगी। मुझे इतना बेवक़ूफ़ समझ लिया कि मैं इस बात को मान लूँगा। हुँह ! भला कोई किसी को ज़बर्दस्ती ले जा सकता है। मुझे तो कोई कहीं ले जाय ! उसकी स्वयम् इच्छा थी—कल मुझसे बहस कर रही थी। उफ़ ! भगवान जाने क्या होगा, चित्त घबरा रहा है। किया तो उसने बहुत बुरा, परन्तु ईश्वर सकुशल घर भेज दे।

वकील साहब बैठे न रह सके, उठ कर टहलने लगे। टहलते-टहलते खिड़की के पास पहुँचे और बाहर झाँकने लगे। सड़क पर शान्ति छाई हुई थी। नित्य की तरह सब कार्य हो रहा था। गड़बड़ी के कोई चिन्ह नहीं थे। वकील साहब सोचने लगे—अभी तक तो सब कुशल मालूम होती है। जुलूस तीन बजे उठा होगा। इस समय पाँच बजने वाला है। अब शायद पार्क पहुँचा हो। ईश्वर करे सब कार्य सकुशल होजाय—सब लोग सही-सलामत अपने-अपने घर पहुँच जायँ।

इसके पूर्व कई बार जुलूस निकल चुका था ; परन्तु वकील साहब ने जुलूस की सही-सलामती के लिए कभी चिन्ता नहीं की थी। वह पुनः कुर्सी पर आ बैठे और पत्र उठा कर पढ़ने लगे। दस मिनट तक चेष्टा करके एक पृष्ठ पढ़ा ; परन्तु उनके मस्तिष्क में पुनः वही जुलूस और पुलिस की डण्डेबाज़ी की सम्भावना और सरला की कुशलता की चिन्ता आ घुसी। उन्होंने पत्र को मेज़ पर पटक कर कहा—"इस औरत ने ख़ामख़ाह बैठे बिठाए मुसीबत में जान डाल दी। और कहीं का मामला होता तो मैं अभी जाकर पकड़ लाता ; परन्तु इतनी भीड़ में भला उसका पता कहाँ मिलेगा। क्या कहूँ, यदि उसे कुछ चोट-चपेट आगई तो बड़ी मुश्किल होगी। क्या कहूँ। उँह, हटाओ भी—जो होना होगा हो जायगा। जैसा किया वैसा फल पाएगी।" इसी प्रकार की चिन्ता करते हुए वकील साहब टहलते रहे। हठात् उनके हृदय में एक प्रकार की ग्लानि उत्पन्न हुई। उनके अन्तःकरण से एक आवाज़ निकली—बड़ी लज्जा की बात है कि सरला के लिए इतने चिन्तित होते हुए भी तुम घर में दुम दबाए हुए बैठे हो। एक स्त्री में इतनी निर्भीकता कि तुम्हारे यह सचेत कर देने पर भी कि वहाँ पुलिस लाठियाँ चलाएगी—वह निर्भीकतापूर्वक गई है और तुम उसकी कुशलता के लिए इतने व्याकुल होने पर भी बाहर पैर नहीं निकालते। देश के लिए न सही, सरला ही के लिए कुछ साहस करो—बाहर निकलो, पार्क में जाओ—देखो, सरला कहाँ है और किस दशा में है।

यह विचार आते ही वकील साहब के शरीर में बिजली सी दौड़ गई। उन्होंने शीघ्रतापूर्वक कोट तथा टोपी उठाई और भागे।

४

बाहर निकल कर कुछ दूर चलने पर वकील साहब को कुछ आदमी भागे आते हुए दिखाई दिए। वकील साहब का कलेजा धक् से हुआ। उन्होंने पूछा—क्या हुआ ?

एक ने कहा—पार्क में पुलिस लाठी चला रही है, पचासों आदमी घायल हो गए हैं।

वकील साहब ने घबरा कर पूछा—और स्त्रियाँ, उनकी क्या दशा है ?

"सबकी एक दशा है। पुलिस स्त्री देखती है न पुरुष, जो सामने आता है उसी को पीट रही है।"

इतना सुनते ही वकील साहब एक ख़ाली ताँगा रोक कर उस पर सवार हो गए और उससे बोले—पार्क चल तेज़ी के साथ !

ताँगे वाला बोला—वहाँ तो मैं न जाऊँगा—वहाँ पुलिस डण्डे चला रही है।

वकील साहब बोले—तू पार्क के अन्दर न जाना, हमें बाहर ही छोड़ देना, चल जल्दी। जो किराया माँगेगा, देंगे।

"वहाँ से तो लोग भागे आ रहे हैं—ख़ैर मुझे क्या, चलिए।"

यह कह कर ताँगे वाले ने ताँगा भगाया। जो वकील साहब जुलूस की छाया तक के पास न फटकते थे, वही इस समय यह जानते हुए भी कि वहाँ लाठी चल रही है, उस ओर बड़ी उत्सुकता तथा बेचैनी के साथ चले जा रहे थे। उन्हें इस समय न लाठियों की परवा थी और न गोलियों की।

पार्क के निकट पहुँचने पर उन्हें वहाँ बड़ा कोलाहल सुनाई पड़ा और लोग इधर-उधर भागते हुए दिखाई पड़े। वकील साहब शीघ्रतापूर्वक ताँगे से उतरे और ताँगे वाले को आठ आने के स्थान में एक रुपया देकर पार्क के भीतर की ओर भागे। पार्क के अन्दर जनसमूह के मध्य में असंख्य लाल पगड़ियाँ चमक रही थीं और लोगों के कराहने तथा चिल्लाने का कोलाहल सुनाई दे रहा था। वकील साहब ने एक क्षण रुक कर अपने चारों ओर देखा। जिस ओर पुलिस लाठी चला रही थी उसके आगे बढ़ कर उन्हें कुछ स्त्रियों की झलक दिखाई पड़ी और उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि कुछ पुलिस वाले स्त्रियों की ओर बढ़े चले जा रहे हैं। स्त्रियों के पास जाने के लिए भीड़ के मध्य से होकर जाने के अतिरिक्त और कोई रास्ता न था। वकील साहब एक क्षण के लिए हिचकिचाए, परन्तु फिर तुरन्त ही तेज़ी के साथ भीड़ में घुस गए और भीड़ को चीरते हुए स्त्रियों की ओर बढ़ने लगे। वह थोड़ी ही दूर गए थे कि हठात् उनके सिर पर कोई आघात लगा—आँखों के सामने अँधेरा छा गया और..............!

*　　　*　　　*

वकील साहब को होश आया तो उन्होंने अपने को एक लोहे की चारपाई पर पड़े हुए पाया। उनके सिर में हलकी पीड़ा हो रही थी और सिर में पट्टी बँधी थी। उनके आँख खोलते ही एक चिर-परिचित मधुर-कण्ठ से निकला हुआ—क्यों, कैसा जी है—वाक्य सुनाई पड़ा। वकील साहब ने गर्दन घुमाई तो सामने कुर्सी पर अपनी प्रेम-प्रतिमा को बैठे पाया। सरला को देखते ही वकील साहब को सब बातें याद आ गईं। उन्होंने उठने की चेष्टा की ; परन्तु सरला ने उन्हें रोक कर कहा—चुपचाप पड़े रहो, नहीं तो सिर के घाव के टाँके टूट जायँगे।

वकील साहब ने सरला के मुख को ध्यानपूर्वक देखा। सरला का मुख उदास तथा आँखें अश्रुपूर्ण हो रही थीं। वकील साहब ने पूछा—सरला, तुम कहाँ थीं, तुम्हें चोट तो नहीं लगी ?

सरला ने कहा—नहीं, मैं तो उस स्थान से बहुत दूर थी और सकुशल घर पहुँच गई थी। तुम वहाँ कैसे पहुँच गए थे ?

वकील साहब ने उत्तर दिया—लाठी चलने का सम्वाद पाकर तुम्हें ढूँढ़ने गया था।

सरला के नेत्रों से अश्रुपात होने लगा। उसने कहा—यदि मैं तुम्हारी आज्ञा मान कर वहाँ न जाती तो तुम्हारी यह दशा क्यों होती। मुझे बड़ा पश्चात्ताप है। भविष्य के लिए मैं प्रतिज्ञा करती हूँ.........।

वकील साहब ने हाथ उठा कर उसे रोक दिया और कहा—प्रतिज्ञा न करो। तुमने वहाँ जाकर अच्छा ही किया। यदि तुम वहाँ न जातीं तो मेरे सिर पर पुलिस की लाठी न पड़ती।

"यही तो मैं भी कहती हूँ कि यह बड़ा बुरा हुआ।"

"नहीं, यह अच्छा हुआ।"

सरला विस्मित होकर बोली—क्यों ?

"मेरे मस्तिष्क में जो विकार भरा हुआ था, वह पुलिस की लाठी पड़ने से निकल गया।"

सरला अवाक् होकर पति का मुख ताकने लगी। वकील साहब कहते गए—अब हम-तुम दोनों देश को स्वतन्त्र करने के लिए अपनी सारी शक्तियाँ लगा देंगे।

सरला के मुख पर गर्व तथा प्रेम के भाव प्रस्फुटित हो उठे। उसने अपना मुख, जिसके नेत्रों से अश्रुधारा बह रही थी और ओठों पर मन्द मुस्कान थी, पति के मुख पर रख दिया।

*　　　*　　　*

रूस के क्रान्तिकारी दल का घोषणा-पत्र

["राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी"]

रूस के क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास बहुत विस्तृत है। वहाँ की निरङ्कुश ज़ारशाही के अन्याय और अत्याचारों के प्रतिकारार्थ अनेकों दलों का जन्म हुआ, अनेकों मार्गों का अनुसरण किया गया, अनेकों उपायों का अवलम्बन किया गया ; पर उसकी नीति न बदली, और उसका शासन दिन पर दिन कठोर-भाव धारण करता गया। अन्त में जब आन्दोलनकारी सब उपाय करके हार गए ; विनय, प्रार्थना, अधिकारों की माँग, विरोध आदि सब बातें निष्फल सिद्ध हुईं और सरकार छोटी-छोटी बातों के लिए देश-भक्त नवयुवकों और नवयुवतियों को साइबेरिया (रूस का कालापानी) भेजने लगी तो लोगों के धैर्य का अन्त हो गया और वे देश-दशा के सुधार के लिए आन्दोलन के वैध-मार्ग को त्याग कर बम, पिस्तौल, मारकाट, गुप्त-हत्या आदि का सहारा लेने लगे। धीरे-धीरे रूस के क्रान्तिकारी दल का नाम संसार में फैल गया और वह आश्चर्य, भय और विस्मय की दृष्टि से देखा जाने लगा। शुरू में छोटे-बड़े पुलिस कर्मचारियों और दमन करनेवाले अन्य सरकारी अफ़सरों को गोली का शिकार बनाया गया, और फिर स्वयम् ज़ार को ही क्रान्तिकारी दल की कार्यकारिणी कमेटी ने अपना लक्ष्य बनाया। एक बार उसकी स्पेशल ट्रेन सुरङ्ग लगाकर नष्ट कर दी गई और दूसरी बार उसके महल को डाइनामाइट से उड़ाया गया। पर दोनों बार वह भाग्यवश बच गया। अन्त में १३ मार्च १८८१ को क्रान्तिकारियों ने उसे बीच सड़क पर मार दिया। इसके दस दिन पश्चात् क्रान्तिकारी दल की कार्यकारिणी कमेटी ने नवीन ज़ार के नाम एक घोषणा-पत्र प्रकाशित कराया, जिसमें रूसी जनता की तरफ़ से अधिकारों की माँग पेश की गई थी और बतलाया था कि अगर जनता को ये साधारण अधिकार मिल जायँ तो हम मारकाट के उपायों को छोड़कर, वैध रीति से आन्दोलन करने को तैयार हैं। कार्यकारिणी कमेटी का वह घोषणा-पत्र पाश्चात्य देश-वासियों की दृष्टि में बड़ा महत्वपूर्ण समझा जाता है। रूस अथवा ज़ार सम्बन्धी प्रत्येक इतिहास में इसकी चर्चा मिलती है। पाठकों के मनोरञ्जनार्थ उसी का भाषान्तर नीचे दिया जाता है। घोषणा-पत्र ज़ार को सम्बोधन करके लिखा गया है :—

"बादशाह सलामत,—आपको इस समय जो मानसिक वेदना हो रही होगी उसे यह कार्यकारिणी कमेटी अच्छी तरह समझती है। पर तो भी यह इस बात को उचित नहीं समझती कि शिष्टाचार की ख़ातिर इस घोषणा-पत्र को प्रकट न किया जाय। क्योंकि मनुष्य की स्वाभाविक हार्दिक भावनाओं से भी एक बड़ी चीज़ है ; और वह है अपने देश के प्रति मनुष्य का कर्त्तव्य। इस कर्त्तव्य के लिए हर एक नागरिक को अपना, अपनी भावनाओं का और दूसरों की भावनाओं का भी बलिदान कर देने का अधिकार है। इसी कठोर-कर्त्तव्य से विवश होकर हम बिना विलम्ब किए आपके सामने अपना वक्तव्य पेश करना चाहते हैं, क्योंकि वर्तमान घटनाओं को देख कर हमें भविष्य में भयङ्कर हलचलों और ख़ून की नदियों के बहने का भय हो रहा है। इसलिए इस कार्य में विलम्ब करना किसी प्रकार उचित नहीं।

"कैथेराइन नहर पर जो रक्त-रञ्जित घटना (ज़ार का ख़ून) हुई है वह केवल संयोगवश अथवा अकस्मात नहीं हुई थी और न उससे किसी को आश्चर्य हुआ। गत दस वर्षों के इतिहास को देखते हुए यह घटना अनिवार्य थी, और यही इसका वास्तविक महत्व है, जिसे भलीभाँति समझ लेना उस व्यक्ति का कर्त्तव्य है जो भाग्य-चक्र से एक राज्य के प्रधान-पद पर विराजमान हुआ है।

"केवल वही मनुष्य, जो कि सार्वजनिक जीवन के रहस्य को समझ सकने में सर्वथा असमर्थ है, इस प्रकार की घटनाओं को कुछ व्यक्तियों या एक गिरोह का अपराध बतला सकता है। पिछले दस वर्षों में क्रान्तिकारियों का कड़े से कड़े उपायों से दमन किया गया है, और इस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए भूतपूर्व ज़ार की गवर्नमेण्ट ने स्वाधीनता, समस्त जनता के हित, व्यापार, व्यवसाय और इतना ही नहीं वरन् अपने आत्म-गौरव तक को तिलाञ्जलि दे दी थी। एक शब्द में कहा जाय तो गवर्नमेण्ट ने क्रान्तिकारी आन्दोलन को दबाने के लिए अपनी शक्ति भर सब उपायों से काम लिया, पर तो भी दबने के बजाय उसकी वृद्धि ही होती गई। रूस की सर्वोत्तम शक्तियाँ, वहाँ के सबसे बढ़ कर कर्मशील और बलिदान के लिए प्रस्तुत व्यक्ति आगे बढ़े और इस दल में समा गए। इस प्रकार पूरे तीन वर्ष से यह दल गवर्नमेण्ट के साथ जी तोड़ कर युद्ध कर रहा है।

"बादशाह सलामत, आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि भूतपूर्व ज़ार की गवर्नमेण्ट में क्रियाशीलता का अभाव नहीं था। निर्दोषी और दोषी समान रूप से फाँसी पर लटकाए गए और जेलख़ाने तथा कालापानी क़ैदियों से भर गए। नेता समझे जाने वाले दर्जनों व्यक्तियों को पकड़ कर मौत का दण्ड दिया गया। उन लोगों ने शान्तिपूर्वक और शहीदों के समान प्रसन्नता के साथ अपने प्राण दे दिए। पर इससे आन्दोलन रुक नहीं गया, वरन् इसके विपरीत बराबर बढ़ता गया और उसकी शक्ति भी अधिक होती गई।

"बादशाह सलामत, क्रान्तिकारी आन्दोलनों का आधार व्यक्तियों पर नहीं होता। यह समाज रूपी शरीर की एक क्रिया है, और वे मृत्यु-स्तम्भ, जिन पर इस क्रिया के करने वाले मुख्य प्रतिनिधियों को चढ़ाया जाता है, इसको रोक सकने में और इससे वर्तमान शासन-प्रणाली की रक्षा कर सकने में सर्वथा असमर्थ हैं।

"गवर्नमेण्ट जब तक चाहे लोगों को गिरफ़्तार कर सकती है और फाँसी पर चढ़ा सकती है, और सम्भव है कि वह किसी एक क्रान्तिकारी दल को दबाने में समर्थ हो जाय। हम यहाँ तक स्वीकार करने को तैयार हैं कि वह क्रान्तिकारी दल के मूल-सङ्गठन को भी नष्ट करने में शायद सफलता पा जाय, पर इससे परिस्थिति को नहीं बदला जा सकता। घटनाओं के फल से और समस्त जनता में फैले हुए घोर असन्तोष तथा आधुनिक सामाजिक आदर्शों के प्रति रूस-निवासियों के आकर्षण के कारण नवीन क्रान्तिकारियों का जन्म हो जायगा।

"कठोर उपायों द्वारा समस्त देश का दबाया जा सकना, और देश में फैले हुए असन्तोष को दबा सकना तो और भी असम्भव है। इसके विपरीत कठोर उपायों से लोगों की कटुता, क्रियाशीलता और शक्ति अधिक बढ़ती हैं। इससे स्वभावतः जनता का सङ्गठन मज़बूत होता जाता है और वे अपने अग्रगामियों के अनुभव से लाभ उठाते हैं। इस प्रकार जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, क्रान्तिकारी दल की संख्या और क्षमता बढ़ती जाती है। ठीक यही हमारा हाल है। गवर्नमेण्ट ने सन् १८७४ के 'डालसिजी' और 'किकोवजी' आन्दोलनकारियों का दमन करके क्या पाया? दल के भीतर अन्य नेता, जो उनकी अपेक्षा अधिक दृढ़ थे, उत्पन्न हुए और उनके स्थान पर काम करने लगे।

"गवर्नमेण्ट के १८७८ और १८७९ के दमन ने उग्र-क्रान्तिकारी दल को जन्म दिया। सरकार ने कोवालस्की, डुब्रोविन, ओसीनिस्की, लिसगुब की हत्या की, कितने ही क्रान्तिकारी दलों को नष्ट कर डाला, पर इससे कोई काम न हुआ। विकासवाद के प्राकृतिक चुनाव के नियमानुसार हीन-सङ्गठन वाले दलों के स्थान पर उत्तम-सङ्गठन वाले दलों का जन्म होता गया। अन्त में यह कार्यकारिणी कमेटी उत्पन्न हुई, जिसके विरुद्ध गवर्नमेण्ट बिना किसी प्रकार की सफलता पाए अभी तक उद्योग कर रही है।

"अगर हम पिछले दुःखप्रद दस वर्षों पर निष्पक्ष भाव से दृष्टि डालें तो हम सहज में स्पष्ट रूप से जान सकते हैं कि अगर गवर्नमेण्ट अपनी नीति न बदले तो क्रान्तिकारी आन्दोलन का क्या भविष्य होगा। इसकी वृद्धि होगी, इसका विस्तार बढ़ता जायगा, उग्र-क्रान्तिकारियों के कार्यों की तरफ़ लोगों का ध्यान अधिकाधिक आकर्षित होने लगेगा, और क्रान्तिकारियों का सङ्गठन अधिक सर्वाङ्ग-पूर्ण और शक्तिशाली बनता जायगा। इस बीच में जनता के असन्तोष को बढ़ाने के लिए नए-नए कारण उत्पन्न होते रहेंगे और गवर्नमेण्ट पर से जनता का विश्वास निरन्तर कम होता जायगा। क्रान्ति का विचार, उसकी सम्भावना और उसकी अनिवार्यता बराबर जड़ पकड़ती जायगी।

"अन्त में एक भीषण स्फोट (धड़ाका), एक ख़ूनी क्रान्ति, और देशव्यापी उथल-पुथल के फल से प्राचीन प्रणाली का सदा के लिए नाश हो जायगा।

"बादशाह सलामत, यह एक बड़ी दुःखप्रद और भयङ्कर बात है। निस्सन्देह यह दुःखप्रद और भयङ्कर है। यह मत समझिए कि ये केवल शब्द हैं। हम किसी भी अन्य व्यक्ति से बढ़ कर अनुभव करते हैं कि इस नाश और ख़ून-ख़राबी में बहुत अधिक ज्ञान, शक्ति और कार्य-शक्ति का क्षय होगा और यह बड़ी विपत्ति की बात होगी। इसी ज्ञान-शक्ति और कार्य-शक्ति का उपयोग अन्य प्रकार की परिस्थिति में लाभकारी कार्यों के लिए किया जा सकता था, इसके द्वारा सर्वसाधारण के ज्ञान की वृद्धि की जा सकती थी और सर्वसाधारण का बहुत कुछ हित साधन हो सकता था।

"प्रश्न किया जायगा कि इस ख़ून-ख़राबी की आवश्यकता ही क्या है?

"बादशाह सलामत, इसका कारण यह है कि हमारे देश में एक न्यायशील—वास्तव में न्यायशील गवर्नमेण्ट का अभाव है। गवर्नमेण्ट जिन मूल सिद्धान्तों पर आधार रखती है, उनके अनुसार उसका कर्त्तव्य है कि वह लोगों

की आकांक्षाओं के प्रतिबिम्ब स्वरूप हो और लोगों की इच्छाओं को पूर्ण करना ही उसका ध्येय हो। पर, यदि आप बुरा न मानें तो, हमारे यहाँ की गवर्नमेण्ट गुप्त चाल चलने वाले दरबारियों का एक गिरोह मात्र है। उसे यदि लुटेरों का दल कहा जाय तो भी कुछ अत्युक्ति नहीं है।

"बादशाह के निजी विचार कैसे भी हों, सरकारी अधिकारियों के कामों से जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति और उसके हित का कोई आभास नहीं मिलता।

"रूस की गवर्नमेण्ट बहुत दिनों से लोगों की व्यक्तिगत स्वाधीनता का अपहरण कर चुकी है और उनको सरदारों या ज़मीन्दारों का गुलाम बना चुकी है। अब वह सट्टे-बाज़ों और ग़रीबों को लूटने वाले बौहरों की भी सृष्टि कर रही है। जितने सुधार किए जाते हैं, उनके फल-स्वरूप जनता की दशा पहले की अपेक्षा भी ख़राब होती जाती है। रूस की गवर्नमेण्ट ने साधारण जनता को ऐसा दरिद्र और दुर्दशाग्रस्त बना दिया है कि वह किसी सार्व-जनिक हित के लिए भी स्वतन्त्रता पूर्वक उद्योग नहीं कर सकती और न ख़ास अपने घरों में होने वाले कलङ्क-पूर्ण धार्मिक अन्यायों से अपनी रक्षा कर सकती है।

"केवल ख़ून चूसने वाले सरकारी अधिकारी, जिन को अपने पाप-कर्म्मों के लिए कोई सज़ा नहीं मिलती, गवर्नमेण्ट और क़ानून के द्वारा सुरक्षित रहते हैं और सुख भोगते हैं।

"इसके विपरीत एक ईमानदार आदमी को, जो सार्वजनिक हित के लिए परिश्रम करता है, क्या-क्या यन्त्रणाएँ नहीं भोगनी पड़तीं! बादशाह सलामत, आप स्वयम् अच्छी तरह जानते हैं कि जिन लोगों पर अत्याचार किए जाते हैं या जिनको देश निकाला दिया जाता है, वे सब क्रान्तिकारी नहीं होते।

"यह किस तरह की गवर्नमेण्ट है जो इस प्रकार देश में 'शान्ति' क़ायम रखती है? क्या यह वास्तव में लुटेरों का दल नहीं है?

"यही कारण है कि रूस में जनता के ऊपर गवर्नमेण्ट का कोई नैतिक प्रभाव नहीं है; यही कारण है कि रूस में इतने अधिक क्रान्तिकारी पाए जाते हैं; यही कारण है कि ज़ार के ख़ून जैसी घटनाओं को देख कर भी लोग केवल सहानुभूति प्रकट करके चुप हो जाते हैं। बादशाह सलामत, आप ख़ुशामदियों की बातों से भुलावे में न पड़ें। भूतपूर्व ज़ार की हत्या को लोगों ने बहुत अधिक पसन्द किया है।

"इस दशा से छूटने के केवल दो ही मार्ग हैं। या तो राज्य-क्रान्ति होगी, जो कि लोगों को फाँसी पर चढ़ाने से स्थगित नहीं की जा सकती है न रोकी जा सकती है। अथवा बिना विलम्ब देश की सर्वोच्च सत्ता जन-साधारण के सुपुर्द कर दी जाय, जिससे वे शासन-सञ्चा-लन में भाग ले सकें।

"देश-हित की दृष्टि से और ज्ञान-शक्ति तथा कार्य-शक्ति के निरर्थक क्षय और उन भयङ्कर घटनाओं को रोकने के लिए, जो कि राज्य-क्रान्ति के साथ सदैव हुआ करती हैं, कार्य-कारिणी कमेटी श्रीमान् के सम्मुख यह वक्तव्य पेश करती है और आपको सम्मति देती है कि आप दूसरे मार्ग का अवलम्बन करें। आप यह विश्वास रखें कि जिस दिन से सचमुच सर्वोच्च-सत्ता (ज़ारशाही) की निरङ्कुशता का अन्त हो जायगा और वह सचमुच यह दिखला देगी कि उसने अब केवल जनता की इच्छा और आन्तरिक कामना के अनुसार कार्य करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है, उसी दिन से आपको अपनी ख़ुफ़िया पुलिस से छुटकारा मिल जायगा, जो कि गवर्नमेण्ट की बदनामी का कारण है; आप अपने शरीर-रक्षकों को बारकों में वापस भेज सकेंगे; और फाँसी के स्तम्भों को जला सकेंगे, जिनसे जनता का नैतिक पतन होता है।

"तब यह कार्यकारिणी कमेटी भी बिना विलम्ब अपनी कार्रवाइयों को बन्द कर देगी और उसने जिस शक्ति और साधनों का संग्रह किया है उनको वह आज़ाद कर देगी जिससे वे सभ्यता और संस्कृति का प्रचार और जनता के कल्याण के अन्य उपयोगी कार्य कर सकें।

"तब एक शान्तिमय विचार-संग्राम का श्रीगणेश होगा, और रक्तरञ्जित आन्दोलन का अन्त हो जायगा, जो कि हमको आपके सेवकों की अपेक्षा अधिक नापसन्द है और जिसको हमने केवल आवश्यकता से विवश होकर ग्रहण किया है।

"हम पुरानी घटनाओं से उत्पन्न पक्षपात और अविश्वास को त्याग कर श्रीमान के सामने यह वक्तव्य पेश करते हैं। हम इस बात को भुला देंगे कि आप एक ऐसी सत्ता के प्रतिनिधि हैं, जिसने लोगों को छला है और बहुत अधिक हानि पहुँचाई है। हम आपको एक नागरिक भाई और ईमानदार आदमी की तरह मान कर आपके सामने यह वक्तव्य पेश करते हैं।

कब तक

[श्री० देवीप्रसाद जी गुप्त, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

उठती हैं जो उमङ्गें उनको दबाएँ कब तक?
अरमान दिल के अपने दिल में छिपाएँ कब तक?
अपने वतन को अपने दिल से भुलाएँ कब तक?
दोज़ख़ की आग घर में अपने जलाएँ कब तक?
अब भी भविष्य अपना उन्नत न क्या करें हम?

अपना तो जिगर सारा चलनी-सा हो चुका है।
हर एक अपना भाई सर्वस्व खो चुका है।
इज्ज़त गवाँ चुका वह, असमत को रो चुका है!
राहों में अपनी दुश्मन काँटों को बो चुका है!!
अब भी भविष्य अपना उन्नत न क्या करें हम?

माना कि हाथ में अब हथियार कुछ नहीं है।
हमको किसी तरह का अधिकार कुछ नहीं है।
लेकिन हमें तो लेना दरकार कुछ नहीं है।
हमको फ़क़त है कहना सरकार कुछ नहीं है!
अब भी भविष्य अपना उन्नत न क्या करें हम?

बातों में उनकी आना ग़लती है—भूल है अब!
आज़ाद होके रहना अपना उसूल है अब।
'गुलज़ार' धमकियों से डरना फ़िज़ूल है अब।
जो कुछ सितम करें वो सहना क़बूल है अब!
अब भी भविष्य अपना उन्नत न क्या करें हम?

* * *

"हम आशा करते हैं कि व्यक्तिगत रोष का भाव आपके कर्तव्य-भाव अथवा सत्य की जिज्ञासा को दबा नहीं सकेगा।

"हम भी रोष कर सकते हैं। आपको अपने पिता से वञ्चित होना पड़ा है। पर हमको न केवल अपने पिताओं, वरन् भाइयों, पत्नियों, बेटों और आत्मीय मित्रों से भी वञ्चित होना पड़ा है। तो भी हम समस्त व्यक्तिगत द्वेष को भूल जाने को तैयार हैं, अगर रूस के कल्याण के लिए वैसा करने की आवश्यकता हो, और हम आपसे भी इसी प्रकार की आशा रखते हैं।

"हम आपके सामने किसी तरह की शर्तें पेश करना नहीं चाहते। क्रान्तिकारी आन्दोलन का अन्त होकर उसके स्थान में शान्तिमय विकास का आरम्भ होने के लिए जिन शर्तों की आवश्यकता है, वे हमारे द्वारा निश्चित नहीं की गई हैं, वरन् घटनाओं ने उनको जन्म दिया है। हम केवल यहाँ पर उनको लिपिबद्ध कर देते हैं। हमारी सम्मति में इन शर्तों का आधार इन दो मुख्य बातों पर है।

"सब से प्रथम समस्त राजनीतिक क़ैदियों को राजाज्ञा द्वारा छोड़ दिया जाय। क्योंकि इन लोगों ने कोई अप-राध नहीं किया है, केवल नागरिक की हैसियत से अपने कर्तव्य का पालन किया है।

"दूसरी बात यह है कि समस्त जनता के प्रतिनिधियों की एक सभा की जाय और उसमें निश्चय किया जाय कि किस प्रकार का सर्वश्रेष्ठ सामाजिक और राजनीतिक सङ्गठन जनता की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुकूल हो सकता है।

"पर साथ ही हम यह बतला देना भी आवश्यक समझते हैं कि जनता के प्रतिनिधियों द्वारा शासन-सत्ता का नियमन उसी दशा में हो सकता है जब कि चुनाव बिना किसी प्रकार के दबाव के हो। इस लिए चुनाव के पूर्व नीचे लिखी शर्तों का पूरा किया जाना आवश्यक है:—

(१) शासन-सभा के सदस्यों का चुनाव बिना किसी प्रकार के भेद-भाव के जनता की समस्त श्रेणियों द्वारा और नागरिकों की संख्या के अनुपात के अनुसार हो।

(२) शासन-सभा के उम्मेदवारों और वोटरों के सम्बन्ध में किसी प्रकार की शर्त न लगाई जाय।

(३) चुनाव और चुनाव के लिए आन्दोलन पूर्ण-तया स्वाधीनतापूर्वक हो और इसलिए सरकार शासन-सभा के चुनाव से पहले स्थायी रूप से निम्न-लिखित आज्ञाएँ दे:—

(क) अख़बारों की पूर्ण स्वाधीनता
(ख) भाषणों की पूर्ण स्वाधीनता
(ग) सार्वजनिक सभाओं की पूर्ण स्वाधीनता
(घ) चुनाव सम्बन्धी वक्तव्यों की पूर्ण स्वाधीनता

"केवल इन्हीं उपायों द्वारा रूस शान्तिमय और नियमानुकूल उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। हम अपने देश और समस्त संसार के सामने प्रतिज्ञा करते हैं कि ऊपर लिखी शर्तों के अनुसार जिस राष्ट्रीय शासन-सभा का सङ्गठन होगा, उसके सामने हमारी पार्टी बिना किसी प्रकार की शर्त के आत्मसमर्पण कर देगी और राष्ट्रीय शासन-सभा जिस प्रकार के शासन का निर्णय कर देगी उसका ज़रा भी विरोध न करेगी।

"बादशाह सलामत, अब आप जो उचित समझें, निर्णय कर सकते हैं। हम अपने हृदय में यही आशा करते हैं कि आपका न्याय-भाव और आपका विवेक आपको वही निर्णय करने की सम्मति देंगे जो कि रूस के कल्याण के, आपके बड़प्पन के और देश के प्रति आपके कर्तव्य के अनुकूल हों।

—कार्यकारिणी कमेटी
२३ मार्च, १८८१"

यही क्रान्तिकारियों की माँग थी जो उन्होंने एक बार नहीं, अनेक बार गवर्नमेण्ट के सामने पेश की। इसमें उन्होंने अपने लिए कोई ख़ास अधिकार नहीं माँगे थे, वरन् उनका एकमात्र कथन यह था कि जनता का शासन जनता की सम्मति द्वारा हो। आजकल संसार का कोई सभ्य मनुष्य अथवा सभ्य गवर्नमेण्ट इसे अनुचित अथवा अवैध नहीं बतला सकती। पर ज़ार की गवर्नमेण्ट ने इसका क्या जवाब दिया? अनेकों लोगों को फाँसी; हज़ारों को काला पानी, अख़बारों और समस्त उदार विचारों का दमन। सत्ता के मद में चूर होकर उसने कार्यकारिणी कमेटी के सदुपदेशों को पागलों की बकवाद समझा, और ख़्याल किया कि वह अपनी असीम शक्ति के द्वारा विद्रोही दल का मूलोच्छेद कर देगी। उसे इस कार्य में बहुत कुछ सफलता भी हुई और उसने अन-गिनती देश-भक्तों को अपने ज़बर्दस्त पञ्जे से पीस डाला, पर उनके स्थान में नए और अधिक भीषण लोगों का जन्म होता गया। अन्त में कार्यकारिणी कमेटी की भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई और ३६ वर्ष बाद ज़ारशाही शासन का ही नहीं, वरन् ज़ार और उसके वंश के बच्चे-बच्चे का नाम-निशान मिट गया।

सन्तान-निग्रह या युद्ध ?

जन-संख्या को सीमा के भीतर रखने की समस्या इस समय संसार भर को अपनी तरफ़ आकर्षित किए हुए है। अब लोग इस बात को अच्छी तरह समझ गए हैं कि पृथ्वी पर जितने भी युद्ध हुए हैं वे प्रायः सब के सब जन-संख्या की अपरिमित वृद्धि के फल से ही हुए थे। इसलिए मनुष्य यदि युद्धों को मानवीय सभ्यता के लिए हानिकारक या कलङ्क स्वरूप समझते हैं तो इसके लिए किसी न किसी उपाय से जन-संख्या को सीमा के भीतर रखना अनिवार्य है। इस प्रश्न पर कुछ दिन पहले मि० नॉर्टन नाम के एक सुयोग्य लेखक ने एक महत्वपूर्ण लेख अङ्गरेज़ी में प्रकाशित कराया था, जिसका भावार्थ हम "भविष्य" के पाठकों के लाभार्थ नीचे देते हैं :—

सन्तान-निग्रह या युद्ध ? जो इन दो में से एक को चुन लेते हैं, वे उनमें से दूसरे से पिण्ड छुड़ाने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। परन्तु जब हमें इस चुनाव के लिए मजबूर होना पड़ता है तो उसका परिणाम हितकर नहीं होता। नीति और चरित्र के लिहाज़ से जब हम उस पर विचार करने लगते हैं तो तर्कों की अधिकता के कारण मस्तिष्क भिन्ना उठता है और यदि हम उसके व्यवहारिक रूप पर विचार करते हैं तो उसकी कठिनाइयों का अन्त नहीं मिलता।

यह समस्या उस समय उपस्थित होती है, जब एक देश के लोग अपने देश की जन-संख्या की बाढ़ के कारण दूसरे देशों से अतिरिक्त लोगों की रक्षा के लिए उस देश का कुछ भाग माँगते हैं। ऐसे देशों में इटली का नम्बर पहला रहेगा; जर्मनी की लगातार अपने उपनिवेशों को वापस लौटाने की माँग भी यही सूचित करती है। और, यद्यपि जापान, जितनी चिल्लाहट दस वर्ष पहिले मचा रहा था उतनी अब नहीं मचाता, पर यह वह कभी नहीं भूलता कि वह पहाड़ों से भरे हुए एक छोटे से टापू में क़ैद है। एशिया के प्रायः सभी विद्वानों ने गोरों (यूरोपियनों) की इस नीति पर अत्यधिक असन्तोष और क्रोध प्रकट किया है कि वे पूर्वीय गोलार्द्ध की परती ज़मीन पर अपना अधिकार जमाते जाते हैं और वहाँ से काले लोगों को निकाल कर बाहर करते जाते हैं।

किसी देश या राष्ट्र की जनसंख्या के अनुसार न तो उसकी भूमि की सीमा ही परिमित है और न सीमा के अनुसार जन-संख्या ही। अब ज़रा इन निम्न देशों के अनुपात से इसका अन्दाज़ लगाइए। अमेरिका के संयुक्त राज्य में इतनी भूमि है कि वहाँ की जन-संख्या १२ करोड़ होने पर भी उन्हें किसी प्रकार की अड़चन मालूम नहीं होती, परन्तु जापान की इससे आधी जन-संख्या होने पर भी वहाँ की भूमि उतने लोगों के लिए पर्याप्त नहीं है। बात यह है कि संयुक्त राज्य से वहाँ का क्षेत्रफल दशमांश से अधिक नहीं है। ऐसी परिस्थिति में वहाँ की भूमि का अपर्याप्त होना बिलकुल स्वाभाविक है। संयुक्त राज्य में तो वहाँ के लोगों के अलावा ७० लाख ऑस्ट्रेलिया के लोग भी सुख-चैन से अपनी गुज़र कर सकते हैं।

जापान की तरह इटली के सामने भी भूमि की ऐसी ही समस्या उपस्थित है। इटली का क्षेत्रफल फ्रान्स से आधे से ज़्यादा न होगा; परन्तु उतने ही क्षेत्र में उसे फ्रान्स के बराबर ही ४ करोड़ मनुष्यों का निर्वाह करना पड़ता है। इन दो देशों का मिलान करने से हमारा मतलब यह है कि अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार ये दोनों देश अपनी उपजाऊ भूमि का बटवारा कर लें।

वास्तव में यदि भूमि का ऐसा बटवारा सम्भव हो सके तो अतिरिक्त जन-संख्या की रक्षा के लिए उससे अच्छा कोई उपाय नहीं। थोड़ी देर के लिए यह मान लीजिए कि ईश्वर ने अपने यहाँ से एक देव-दूत डिक्टेटर बना कर भेज दिया और उसने जन-संख्या के अनुपात के अनुसार दोनों देशों की भूमि का बटवारा कर दिया; और उससे दोनों देशों के लोग सुख-चैन से रहने लगे। अब मनुष्य की रचना को छोड़ कर प्रकृति की रचना पर आइए। आगे चल कर इनमें से कुछ कुटुम्ब तो ऐसे रहेंगे, जिनमें बच्चे बिलकुल न होने, या एक दो होने से, वे अपना जीवन शान्तिपूर्वक बिताते रहेंगे। परन्तु उन्हीं में से बहुत से कुटुम्ब ऐसे रहेंगे, जो छै, आठ और दस-दस बच्चों के बोझ से दबे होंगे। जब ये बच्चे बढ़ेंगे तब उनके निर्वाह के लिए क्या उन्हें भूमि की आवश्यकता न पड़ेगी ?

डिक्टेटर का कर्त्तव्य

ईश्वर के भेजे हुए इस डिक्टेटर को क्या करना चाहिए ? उसे फिर से उन सबमें भूमि का बटवारा करना चाहिए। और उसे सदैव एक निश्चित समय के उपरान्त बराबर बटवारा करते रहना चाहिए। कुछ ही वर्षों बाद जन-संख्या की बढ़ती बाढ़ को सँभालने के लिए एक-एक कुटुम्ब की भूमि के दस-दस टुकड़े करने पड़ेंगे। आख़िर इसका परिणाम क्या होगा ? सबसे पहिले मनुष्य को अपने सुख और शान्ति से हाथ धोकर सन्तोष का जीवन यापन करना पड़ेगा; उसके बाद ग़रीबी प्रारम्भ होगी; और फिर असन्तोष और नैतिक पतन का श्रीगणेश होगा; अन्त में जीवन और मरण का प्रश्न उनके सम्मुख आ जायगा। यहीं से मनुष्यों पर एक प्रकार का पागलपन सवार हो जायगा। पशु-पक्षियों की तरह वे धर्म, कर्म, दर्शन, साहित्य और सभ्यता को ठुकरा कर केवल अपने जीवन की रक्षा के लिए मर मिटने को तैयार हो जायँगे। संसार के इतिहास में इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण मिल सकते हैं।

जब एक देश की बढ़ती हुई जन-संख्या अपनी जीविका का प्रबन्ध करने लगती है तब वह अपने घर ही में नहीं लड़ती-मरती। उस समय वह देश अपने बच्चों के निर्वाह के लिए दूसरे देशों से भूमि माँगता है। परन्तु इस प्रकार भूमि का मिलना कोई आसान काम नहीं है; इसलिए वह अपने से निर्बल देशों से युद्ध करके भूमि छीनता है और उस पर अपना उपनिवेश स्थापित करता है।

जापान के संख्या-शास्त्र (statistics) के विशारदों ने इस बात का हिसाब लगाया है कि यदि सभी लोग जापानियों की तरह अपना रहन-सहन बना लें तो समस्त भूमण्डल पर दो अरब पचास करोड़ मनुष्यों का जीवन-निर्वाह अच्छी तरह हो सकता है, परन्तु यदि सभी लोग अमेरिकनों की तरह रहना चाहें तो एक अरब से ज़्यादा की गुज़र नहीं है। इसलिए उनका कहना है कि अमेरिकन अपने रहन-सहन का ख़र्च कुछ कम करके पृथ्वी के लाखों मनुष्यों का पोषण कर सकते हैं। परन्तु क्या अमेरिकन लोग इस नीति का पालन करने के लिए राज़ी हो सकते हैं ? अब इसी समस्या पर दूसरी दृष्टि से विचार कीजिए। चीन या भारत के रहन-सहन के अनुसार संसार में तीन अरब पचास करोड़ मनुष्यों का निर्वाह अच्छी तरह हो सकता है। क्या जापानी लोग अपना रहन-सहन भारतियों की तरह करके वहाँ के लाखों मनुष्यों की अतिरिक्त जन-संख्या को जीवन-निर्वाह की लड़ाई से मुक्त नहीं कर सकते ?

रहन-सहन

जन-संख्या के हद से अधिक बढ़ जाने की शिकायत विशेष कर उसी देश से आएगी, जहाँ के लोग अपने रहन-सहन से असन्तुष्ट होंगे। जापान के संख्या-शास्त्र विशारदों ने जो दवा बतलाई है, उससे जापानियों के रहन-सहन में कोई उन्नति होने की सम्भावना नहीं है। उनकी बतलाई हुई औषधि के अनुसार अमेरिका जैसे देश के ऊँचे रहन-सहन के लोगों को ही अपना ख़र्च घटाना चाहिए। और यदि जापान की बतलाई हुई इस औषधि के अनुसार ऊँचे रहन-सहन के लोग उसे नीचा करना प्रारम्भ कर दें तो कुछ समय बाद ऐसा अवसर आयेगा कि दोनों को अपना रहन-सहन निकृष्ट से निकृष्ट बना लेना पड़ेगा।

चाहे वह जापान हो या अमेरिका, जिन देशों का रहन-सहन भारत और चीन से ऊँचा है, वे उनकी तरह रहना कभी पसन्द न करेंगे। भारत और चीन की यह दशा क्यों हुई ? एक समय ऐसा था जब भारत, चीन, जापान और इटली की जन-संख्या अमेरिका के यूनाईटेड स्टेट्स से अधिक न थी। उस समय इन देशों के लोग भी अमेरिका की तरह अमन-चैन से रहते थे। परन्तु अपनी आर्थिक और राजनैतिक परिस्थिति की जाँच किए बिना ही इन देशों के लोगों ने बेहद जन-संख्या बढ़ा कर बच्चों पर ऐसी मुसीबत ढा दी है कि आज उनके सामने जीवन मरण की बड़ी भारी समस्या उपस्थित होगई।

भूमण्डल में जितनी एकड़ भूमि है उसके बहुत अधिक भाग की आवश्यकता इन लोगों को है। और उन्हें यह भूमि उस समय तक देना अत्यन्त घातक होगा, जब तक वे सन्तानोत्पत्ति की मर्यादा न बाँध दें। पहले उन्हें एक प्रान्त देना पड़ेगा फिर एक देश, इसके बाद भी यदि उनकी सन्तानोत्पत्ति बढ़ती गई तो पृथ्वी का अर्ध भाग भी उस जन-संख्या के लिए पर्याप्त न होगा, और अन्त में एक दिन ऐसा आएगा, जब भूमण्डल के समस्त भूभाग को वे उसी प्रकार खचाखच भर देंगे जैसे उन्होंने अपने देश को भर दिया है। जनसंख्या को इस प्रकार मर्यादा से अधिक बढ़ा लेने में उन्हें कुछ लाभ न होगा; साथ ही संसार के दूसरे देशों के सन्तोषी मनुष्यों का भी अस्तित्व डगमगाने लगेगा; वे इस संग्राम में पिस जायँगे; सभ्यता का नाम-निशान मिट जायगा; विश्व भर में रणचण्डी का ताण्डव नृत्य होने लगेगा और शान्ति और सुख केवल स्वप्न की बातें रह जायँगी।

ऊपर हमने यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि यदि भारत, चीन, जापान और इटली इसी गति से जनसंख्या की वृद्धि करते जायँ, तो एक समय ऐसा आएगा कि वे भूमण्डल के समस्त भूभाग को भर देंगे। परन्तु क्या दूसरे देशों के लोग मिट्टी के लोंदे हैं, जो उन्हें अपने देश पर आसानी से अधिकार कर लेने देंगे? यदि वे लोग सभ्यता का थोड़ा भी विचार रक्खेंगे तो उन्हें अपने निर्वाह के लिए न मालूम कितनी पीढ़ियों तक लगातार युद्ध करना पड़ेगा। जनसंख्या की वृद्धि के साथ भूभार बढ़ता ही जायगा और उनकी यह अतिरिक्त जनसंख्या उन लोगों के भोग विलास और सुख के साधनों पर धावा बोलने के लिए सदैव तैयार रहेगी, जिन्होंने त्याग और संयम द्वारा या अन्य उपायों से सन्तान-निग्रह करके, वे साधन एकत्र किए हैं। इन लोगों के आतङ्क से सभ्यता की रक्षा का केवल यही एक उपाय है कि उनकी अनधिकार चेष्टा को युद्ध द्वारा या अन्य किसी प्रकार से दबा दिया जाय। नहीं तो उस देश की सभ्यता का पराजित होना, बिलकुल स्वाभाविक परिणाम होगा। ऐसी पराजय में यह आवश्यक नहीं है कि उसका नाम-निशान ही मिट जाय। यह तो आतङ्क फैलाने वाली जाति के बल और विजित जाति के साधनों के नष्ट होने की मात्रा पर निर्भर है। जिन साधनों के द्वारा वे अपनी सभ्यता की रक्षा और उसका पोषण कर रहे थे, उनका जितना ही अधिक ध्वन्स या ह्रास होगा, सभ्यता की पराजय भी उतनी ही अधिक होगी। दूसरे देशों से लोगों के आकर उस देश में बस जाने से भी उन साधनों की न्यूनता हो जाती है। उसकी पूर्ण पराजय उस समय होती है, जब वह दूसरे देश के सामने अपना मस्तक बिलकुल नीचा कर लेता है।

असभ्य और अविकसित देशों में, दूसरे देशों की जन-संख्या के पालन-पोषण का काफ़ी क्षेत्र रहता है। परन्तु जैसे-जैसे उस देश में जन-संख्या बढ़ने लगती है और सभ्यता का प्रकाश फैलने लगता है, वैसे-वैसे उसका कार्य-क्षेत्र भी विस्तृत होने लगता है और उस देश की ऐसी परिस्थिति हो जाती है कि फिर यदि उसकी जन-संख्या में और वृद्धि हो जाय तो उसे अपने औसत दर्जे के रहन-सहन के निर्वाह में भी कठिनाई प्रतीत होने लगती है। परिणाम यह होता है कि इस वृद्धि के साथ उनकी ग़रीबी भी बढ़ती जाती है। रहन-सहन के लिहाज़ से किस देश को कितनी हानि होगी, इसका अनुमान ठीक-ठीक नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि यह प्रायः देश-देश के निवासियों के वैज्ञानिक विकास, सामाजिक सङ्गठन और मनोवृत्ति पर निर्भर रहता है। चीन देश का एक व्यक्ति यह कह सकता है कि अमुक देश में अभी लाखों मनुष्यों के निर्वाह का क्षेत्र है; परन्तु एक अङ्गरेज़ यह सुन कर अपने आपे में नहीं रह सकता।

संसार में शायद ही कोई ऐसा देश होगा, जिसकी जनसंख्या बढ़ी न हो। इटली, चीन, जापान और हिन्दुस्तान की संख्या तो अपनी सीमा को बहुत पहिले पार कर चुकी है। ऑस्ट्रेलिया और अर्जेन्टाइन में अभी यह नौबत नहीं आई है। परन्तु अमेरिका के संयुक्त राज्य में शीघ्र ही जन-संख्या वृद्धि का रोग फैल जायगा। यह इसी का परिणाम है कि आज प्रवासियों के बहुत से उपनिवेश स्थापित हो चुके हैं और बहुत से उपनिवेश बसाने के उपाय वे सोच रहे हैं। परन्तु अब भी ऐसे देश हैं जिन्हें इनमें से किसी उपाय के अवलम्बन करने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।

संयुक्त राज्य, कैनेडा और ऑस्ट्रेलिया में इस सम्बन्ध में जो क़ानून बने हैं, उनके समालोचक लोग कहते हैं कि वहाँ पर ऐसी अपरिमित उपजाऊ भूमि 'परती' पड़ी है जिसका कोई उपयोग नहीं होता। उनका कहना है कि इस भूमि पर अन्य देशों के लाखों अतिरिक्त मनुष्यों का निर्वाह हो सकता है। वे चाहते हैं कि यह भूमि अन्य देशों के प्रवासियों के लिए दे देना चाहिए। परन्तु उन देशों को ऐसी समालोचनाओं से सदैव सचेत रहना चाहिए। यह उपजाऊ और परती भूमि उस समय काम आयगी जब वहाँ के एक-एक कुटुम्ब के दस-दस कुटुम्ब बन कर वहाँ की जन-संख्या को बढ़ा देंगे। यही अतिरिक्त ऊसर भूमि, जिससे अभी अमेरिका, कैनेडा और ऑस्ट्रेलिया वालों को कुछ लाभ नहीं होता, उनका सबसे अधिक संरक्षण कर रही है और उसी के कारण उनका निर्वाह इतने उच्च रहन-सहन से साथ हो रहा है। यदि मर्यादा से अधिक सन्तान उत्पन्न करने वाले मनुष्यों को उस भाग में निवास के लिए भूमि दे दी जाय तो वह दिन शीघ्र आ जायगा जब उनके उच्च रहन-सहन की किश्ती उनके बोझ से समुद्र में ग़ोते लगाने लगेगी।

उपर्युक्त विवेचन के पश्चात् अतिरिक्त जन-संख्या के निर्वाह की इस विकट समस्या से छुटकारा पाने का केवल एक ही उपाय शेष रह जाता है; और वह यह है कि हर एक देश अपनी जनसंख्या को सन्तान-निग्रह के द्वारा इस प्रकार सीमित करने का प्रयत्न करे, जिससे उसका पालन-पोषण उस देश के निश्चित रहन-सहन के अनुसार उसी देश में होता रहे; और उसे अपनी अतिरिक्त जन-संख्या के भरण-पोषण के लिए किसी दूसरे देश को पराजित कर वहाँ उपनिवेश बसाने की आवश्यकता न पड़े। उसे अपनी अतिरिक्त जन-संख्या का बोझ दूसरे देशों के लोगों पर लादने का कोई अधिकार नहीं है। यदि एक राष्ट्र अपनी जन-संख्या के निर्वाह के लिए दूसरे देश में उपनिवेश स्थापित कर सकता है, तो दूसरे राष्ट्र को भी वही अधिकार है। और इसलिए सदैव अपने देश की सीमा के अनुसार जन-संख्या सीमित करना चाहिए, जन-संख्या के अनुसार देश की सीमा नहीं।

माल्थ्यूज़ के सिद्धान्त

ऊपर जिन सिद्धान्तों का विवेचन हो चुका है, माल्थ्यूज़ उनका आचार्य था। उसी ने जन-संख्या सम्बन्धी इन विकट समस्याओं को खोज कर पहिले-पहल संसार सम्मुख उपस्थित किया था। परन्तु जब इङ्गलैण्ड के कला-कौशल में विप्लव (Industrial revolution) प्रारम्भ हुआ उस समय लोग उसके इन सिद्धान्तों पर हँसते थे। उनका कहना था कि इङ्गलैण्ड का व्यापारिक विप्लव यह साफ़ ज़ाहिर करता है कि माल्थ्यूज़ के सिद्धान्तों का आधार ग़लत है। इङ्गलैण्ड के बारे में ये सिद्धान्त प्रायः ग़लत उतरते हैं। जब से इन सिद्धान्तों का आविष्कार हुआ है तब से इङ्गलैण्ड की जनसंख्या उसकी सीमा से दुगुनी-तिगुनी बढ़ चुकी है, तिस पर भी इङ्गलैण्ड अपनी बढ़ी हुई जनसंख्या का माल्थ्यूज़ के ज़माने से भी अच्छी तरह भरण-पोषण करने में समर्थ है। इसका कारण यह है कि इस व्यापारिक-विप्लव का प्रभाव इङ्गलैण्ड को छोड़ कर अन्य देशों पर नहीं पड़ा था। नई दुनिया (अमेरिका) पर उस समय भी जङ्गली रैड इण्डियनों का आधिपत्य था जिनके पास व्यापार और सभ्यता की गन्ध भी न पहुँची थी, और एशिया महाद्वीप के देश भी नींद में ग़ाफ़िल पड़े थे। सभ्यता में तो वे बहुत ऊँचे तक पहुँचे हुए थे। पर उन्हें इङ्गलैण्ड के इन आविष्कारों का पता न था। परिणाम यह हुआ कि इङ्गलैण्ड का व्यापार ख़ूब चमक उठा। राजसत्ता बढ़ी और इस प्रकार जन संख्या की बाढ़ के साथ-साथ वहाँ का धन-वैभव बढ़ता गया। यदि जनसंख्या दुगुने-तिगुने परिमाण में बढ़ी तो वहाँ की सम्पत्ति का परिमाण दस गुने हो गया। यही कारण है कि जनसंख्या को इस प्रकार सीमा के बाहर बढ़ा कर भी इङ्गलैण्ड के लोग माल्थ्यूज़ के ज़माने से बहुत ऊँचे पैमाने पर जीवन-निर्वाह कर रहे हैं। परन्तु अब वे दिन नहीं रहे। हर एक देश में अपनी आवश्यकताएँ अपने ही देश में पूरी करने की शक्ति आ गई है और इङ्गलैण्ड के इस व्यापारिक आधिपत्य के कारण वे उससे जलने लगे हैं।

इस व्यापारिक विप्लव से इङ्गलैण्ड का पेट भले ही भर गया हो, पर उससे एशिया की जनसंख्या की समस्या हल न हो सकी और न इटली को ही उसे सुलझाने में बहुत सहायता मिली। वैज्ञानिक आविष्कारों, सभ्यता के विकास और राष्ट्र-सङ्घ (League of Nations) की स्थापना से राष्ट्रों में जो जागृति और एकता उत्पन्न हुई है उससे माल्थ्यूज़ के सिद्धान्तों की सचाई अब सबको मालूम पड़ने लगी है। थोड़े समय के लिए इङ्गलैण्ड पर भले ही उनका प्रभाव न पड़ा हो, परन्तु आज दुनिया के सामने यह समस्या बड़े विकट रूप में उपस्थित है। यदि आज कोई इन सिद्धान्तों को असत्य सिद्ध करना चाहे तो उसके लिए यह आवश्यक है कि संसार भर में उसी प्रकार का व्यापारिक विप्लव हो जैसे इङ्गलैण्ड में हुआ था और साथ ही वह चिरस्थायी बना रहे।

व्यापार का इस प्रकार का विप्लव और उसकी चिरस्थिरता असम्भव है, इसलिये जन-संख्या की बाढ़ की समस्या हल करने और युद्ध में उसका संहार रोकने के लिए यह अत्यन्तावश्यक है कि सन्तान-निग्रह द्वारा जन-संख्या देश के क्षेत्रफल और आर्थिक परिस्थिति के अनुसार ही परिमित रक्खी जाय। यदि कोई जाति या राष्ट्र इन समस्याओं पर बिना विचार किए ही अपनी जनसंख्या सीमा के बाहर बढ़ाता जायगा तो उसकी नीयत अवश्य ही दूसरे देशों को हड़पने की होगी, और उसका अन्तिम परिणाम युद्ध द्वारा जन-संख्या का ह्रास होगा। युद्ध की काली घटाएँ संसार पर उस समय तक मँडराती रहेंगी, जब तक सन्तान-निग्रह द्वारा उसके आतङ्क का उपचार न किया जाएगा।

कुछ प्रसिद्ध और प्रभावशाली विद्वानों का यह कहना है कि सन्तान-निग्रह की प्रचलित प्रथा अत्यन्त हानिकारक और मनुष्य के चरित्र का पतन करने वाली है। जब इस सम्बन्ध में साहित्य का प्रचार किया जाता है तब बड़े-बड़े धार्मिक ग्रन्थों की युक्तियों के द्वारा उसकी धज्जियाँ उड़ाई जाती हैं। धार्मिक ग्रन्थों की दुहाई भले ही दी जाय, परन्तु व्यावहारिक रूप में उनके उच्च सिद्धान्त की कोई परवाह नहीं करता। मनुष्य के उच्च चरित्र का कितना ही अच्छा चित्रण किया जाय और सन्तान-निग्रह के उपचारों का धार्मिक युक्तियों से कितना ही खण्डन किया जाय, उससे हमारे उपर्युक्त सिद्धान्त का कोई सम्बन्ध नहीं है। चाहे वह उच्च धार्मिक सिद्धान्तों के आधार पर इन्द्रिय-निग्रह द्वारा हो या अप्राकृतिक उपचारों से हो, जब तक जन-संख्या सन्तान-निग्रह द्वारा सीमित न की जायगी तब तक उसे युद्ध में नष्ट होने से कोई शक्ति नहीं रोक सकती।

साधारण मनुष्य इन दो—सन्तान-निग्रह और युद्ध—में से एक के लिए भी तैयार न होंगे। युद्ध रोकने के लिए भी उतने ही उच्च चरित्र की आवश्यकता है, जितने उच्च चरित्र की आवश्यकता सन्तान-निग्रह के लिए! मनुष्य मात्र के सामने दो अत्यन्त जघन्य पाप हैं—सन्तान-निग्रह या युद्ध!! उनसे बचने के लिए कर्म और चरित्र की कितनी ही दुहाई दी जाय, कितनी ही नाक-भौं सिकोड़ी जाय; पर हम को दो में से एक चुनना ही पड़ेगा। इसके सिवाय हमारे लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

* * *

क्या प्रेम बीमारी है ?

प्रेम का विषय बड़ा गूढ़ है। हमारे यहाँ के विद्वान तो उसे स्वर्गीय पदार्थ समझ कर उसके विषय में केवल कल्पना से ही काम लेते हैं।

पर पश्चिमी देशों के भौतिक सभ्यता के अनुयाइयों ने अन्य पार्थिव पदार्थों की भाँति उसकी छान-बीन भी आरम्भ कर दी है। वहाँ प्रेम की परीक्षा भी मशीनों द्वारा होती है। अब फ़ान्स के एक डॉक्टर ने वैज्ञानिक ढङ्ग से खोज करके प्रेम को एक रोग माना है और एक दूसरे डॉक्टर साहब ने उसके लिए कुछ दवा भी तैयार की है। उक्त डॉक्टर साहब ने इस विषय पर फ़ान्सीसी भाषा में एक किताब लिखी है, जिसका खुलासा उर्दू के सहयोगी 'नैरङ्ग ख्याल' नामक मासिक पत्र में छपा है, नीचे हम उस लेख का भाषान्तर यहाँ देते हैं :—

पुराने ज़माने के चिकित्सकगण प्रेम को एक बीमारी माना करते थे; परन्तु वर्तमान समय में उनके इस विचार का कुछ भी महत्व नहीं समझा जाता था। अब फ़ान्स के सुप्रसिद्ध चिकित्साशास्त्र-ज्ञाता ने, जिनका नाम डॉ० पॉल है, एक किताब लिखी है, जिसमें उन्होंने साबित किया है कि प्रेम दरअसल एक दिमाग़ी बीमारी का नाम है। डॉक्टर साहब ने शुरू में ही यह बतला दिया है कि—"यह बीमारी प्राणघातक नहीं होती और प्रायः प्रेम की बीमारी का दौरा तीन महीने से लेकर एक बरस तक रहता है। उसके बाद रोगी अपने आप अच्छा होने लगता है। मगर कभी-कभी इस बीमारी का दौरा भयङ्कर रूप धारण कर लेता है, और रोग के मिट जाने पर भी रोगी परले सिरे का मूर्ख ही नहीं, वरन् दूसरी तरह की बीमारियों का घर भी बन जाता है।

बीमारी का इतिहास

कुछ प्रारम्भिक बातों का वर्णन करने के बाद डॉक्टर साहब ने इस रोग के इतिहास पर भी कुछ प्रकाश डाला है। वे कहते हैं कि—"यूनान और रोम की सभ्यता के पुराने ज़माने में कवियों ने औरतों की सुन्दरता और मर्दों की बहादुरी का वर्णन अत्यन्त अतिशयोक्तिपूर्ण ढङ्ग से किया था। पर उस ज़माने के लोगों ने उनको बहुत कम महत्व दिया और उन पर इन मिथ्या बातों का नाम मात्र को प्रभाव पड़ा। पर मध्य-युग से लोग इन बातों को विशेष महत्व देने लगे। औरतों ने काव्य-ग्रन्थों में मर्दों की बहादुरी और उनकी दूसरी विशेषताओं के सम्बन्ध में जो कुछ पढ़ा उसको अक्षर-अक्षर सच मान लिया। इसी तरह औरतों की सुन्दरता और कोमलता के सम्बन्ध में कवि लोग जो कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण बातें लिख गए थे, मर्दों ने उस पर पूर्ण रूप से विश्वास कर लिया। वर्तमान समय के उपन्यास और नाटक लिखने वालों तथा सिनेमा की तसवीरों ने भी लोगों के इस ख़्याल को बहुत कुछ पुष्ट किया है।

लक्षण

इसके पश्चात् उक्त डॉक्टर साहब ने बड़े परिश्रम के साथ इस बात को सिद्ध किया है कि—"प्रेम की बीमारी के लक्षण प्लेग से बहुत मिलते हैं। यह बीमारी प्रायः बसन्त ऋतु में फैलती है। किसी वर्ष इस बीमारी का प्रकोप अधिक होता है और किसी वर्ष न्यून। उदाहरणार्थ सन् १८३० में यह बीमारी यूरोप के महाद्वीप में बड़े भयङ्कर रूप में फैली और हज़ारों आदमी इसके शिकार बन गए। चेचक की तरह प्रेम का रोग भी एक नियत समय तक रहने वाली बीमारी है। पर विज्ञान की अभी तक इतनी उन्नति नहीं हुई है कि वह इस बीमारी की अवधि का ठीक-ठीक निर्णय कर सके। परन्तु इतना निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि शारीरिक स्वास्थ्य की विभिन्न दशाओं में इस बीमारी का दौरा विभिन्न समय तक रहता है। यह बीमारी ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है वैसे ही वैसे मस्तिष्क की विचार-शक्ति कम होती जाती है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि कितनी ही बार ऐसा देखने में आता है कि पुरुष किसी बहुत ही कुरूप स्त्री से प्रेम करने लग जाते हैं। जब कोई व्यक्ति इस व्याधि में ग्रस्त हो जाता है तो उसके लिए अपने प्रेम-पात्र से अलग रह सकना असम्भव हो जाता है। उस समय रोगी की दशा बड़ी ही दयाजनक हो जाती है, क्योंकि वह अपने प्रेम-पात्र से जितना अधिक मिलता है उसका रोग घटने के बजाय, उतना ही अधिक होता जाता है। प्रेम की आदत बिलकुल मदक, चण्डू या अफ़ीम के व्यसन की तरह होती है। जिसको इन चीज़ों की लत पड़ जाती है वह जान-बूझ कर ज़हर खाता है, यद्यपि वह अच्छी तरह जानता है कि इनकी प्रत्येक मात्रा ख़ून में विष का अंश बढ़ाती है, और इस बुरी आदत को दृढ़ बनाती जाती है। चूँकि प्रेम-व्यापार में वियोग-व्यथा का होना बनी-बनाई बात है; इसलिए इस बीमारी में रोगी की सुध-बुध नष्ट होती जाती है और मनुष्य बिजली की उस बैटरी की तरह होता जाता है, जिसकी ताक़त ख़त्म हो चुकी हो। आँखों की चमक कम हो जाती है, शरीर के रक्त की उज्ज्वलता और ताज़गी जाती रहती है, और समस्त शारीरिक सङ्गठन ढीला-ढाला पड़ जाता है। मनुष्य को अपना जीवन भारी मालूम पड़ने लगता है और उसके चित्त में प्रायः आत्महत्या का विचार आया करता है। युवती कन्याएँ इस बीमारी में फँस जाने पर डाली से टूटे हुए फूल की तरह सूखती चली जाती हैं। कभी-कभी तो यह बीमारी पागलपन के रूप में परिवर्तित हो जाती है।"

डॉक्टर साहब के सिद्धान्त के अनुसार प्रेम का प्रभाव स्त्रियों और पुरुषों पर एक सा नहीं होता। इसको प्रमाणित करने के लिए उन्होंने सुप्रसिद्ध फ़्रान्सीसी लेखक मिस्टर रे की सम्मति उद्धृत की है कि—"इश्क़ में फँसा हुआ पुरुष मूढ़ जान पड़ता है, पर स्त्रियों पर इसका प्रभाव इसके विपरीत होता है।" डॉक्टर साहब ने प्रेम की परिभाषा इस प्रकार की है कि—"प्रेम या इश्क़ एक ऐसी दिमाग़ी बीमारी का नाम है, जो बीमार मनुष्य की निर्णय-शक्ति को अपना गुलाम बना लेती है और उसको विचारों के हाथ में खिलौना बना देती है।"

रोग के कारण

"इस बीमारी का कारण यह होता है कि दिमाग़ में कुछ ऐसे रासायनिक अणु इकट्ठे हो जाते हैं जिनकी वजह से प्रेम-पात्र असल से ज़्यादा सुन्दर मालूम होने लगता है, और प्रेम-पात्र से सम्बन्ध रखने वाली अन्य सब चीज़ों को भी रोगी असल से ज़्यादा सुन्दर समझने लगता है। पुरुषों में यह बीमारी आँखों द्वारा प्रवेश करती है और स्त्रियों की सुन्दरता रोगी को कई गुना ज़्यादा मालूम होने लगती है। स्त्रियों का सङ्कोचपूर्ण व्यवहार और रहन-सहन का ढङ्ग बीमार के इस भ्रम को बहुत अधिक बढ़ा देते हैं। शरीर के आधे हिस्से को नङ्गा रखने वाली पोशाक की अपेक्षा सभ्यता, सुन्दरता, लज्जा की रक्षा करने वाली पूरी पोशाक पुरुष की निगाह में स्त्री को अधिक सुन्दर बना देती है। पुरुषों के दिमाग़ पर नाक के द्वारा भी प्रभाव डाला जा सकता है, और इसी सिद्धान्त के आधार पर दुनिया के तमाम इत्र के कारख़ाने चल रहे हैं।

"आँखों के द्वारा स्त्रियाँ इस बीमारी में बहुत कम फँसती हैं। इसलिए प्रायः बदसूरत पुरुषों पर स्त्रियाँ जी-जान से निछावर देखने में आती हैं। ईसा की अठारहवीं सदी में फ़्रान्स का एक प्रधान मन्त्री प्रेम-मार्ग का सबसे बड़ा आचार्य माना जाता था। परन्तु वह बहुत ही मोटा और कुरूप व्यक्ति था। उसके सिवाय भी संसार के ज़्यादातर पुरुष, जो कि अपने ज़माने में रमणी-समाज के सरताज रह चुके हैं, बाहरी सुन्दरता से वञ्चित थे। स्त्रियों को प्रसन्न करने में सुगन्ध भी एक ख़ास चीज़ मानी जाती थी। पर प्राचीन काल की प्रेम-प्रणाली आजकल बिल्कुल व्यर्थ हो गई है। क्योंकि सुगन्धित पदार्थों की तरह सुन्दरता की दवाइयाँ भी बाज़ार में बिकने लगी हैं और योरोप, अमेरिका में स्त्रियाँ प्रायः उनका उपयोग करती हैं। कुछ पुरुषों की बोली में ऐसा असर होता है कि स्त्रियाँ उसे सुन कर अपने आप मोहित हो जाती हैं। बहुत से लोगों का यह ख़्याल है कि टेलीफ़ोन में काम करने वाली लड़कियाँ बहुत बेवक़ूफ़ होती हैं। पर असल में बात यह है कि उन लोगों की आवाज़ उन लड़कियों को ऐसा मोहित कर लेती है कि उनका दिमाग़ ठिकाने नहीं रहता और वे कुछ का कुछ नम्बर मिला देती हैं।

रक़ाबत की गोलियाँ

"इस बीमारी के लिए, न तो आज तक कोई नुस्ख़ा तजवीज़ किया गया है, न कोई गोली बनाई गई है, न इसको रोकने के लिए किसी टीके का आविष्कार किया गया है।" पर डॉक्टर साहब का कहना है कि—"तो भी इसका इलाज कर सकना असम्भव नहीं है, वरन् मनुष्य की शक्ति के भीतर है।" इसको प्रमाणित करने के लिए उन्होंने डॉक्टर फ़्लोरी का उदाहरण दिया है। डॉक्टर फ़्लोरी ने रक़ाबत (प्रेम सम्बन्धी प्रतिद्वन्दिता) की गोलियाँ तैयार करने में सफलता प्राप्त की है। दूसरे लोगों की सम्मति के विपरीत डॉक्टर फ़्लोरी रक़ाबत के भाव को एक तरह की बीमारी मानते हैं, और उन्होंने इसकी चिकित्सा की खोज में दीर्घ-काल तक प्रयत्न किया है। कुछ समय तक खोज करने के पश्चात् उनको विदित हुआ कि रक़ाबत की बीमारी का दौरा रात के ग्यारह और बारह बजे के बीच में होता है। इसका कारण उन्होंने मेदे (आमाशय) का ख़ाली रहना बतलाया है। इसके पश्चात् डॉक्टर फ़्लोरी ने रात के समय किए जाने वाले विभिन्न भोजनों की परीक्षा की और अन्त में आपने ऐसी गोलियाँ बनाने में सफलता प्राप्त कर ली जो भोजन के ख़राब असर को नष्ट कर देती हैं। इस तरह आदमी इस बीमारी से सुरक्षित रह कर सुख की नींद सोता है।"

शुभ सम्मति

अन्त में डॉक्टर पॉल कहते हैं कि—"मनुष्य ख़ुद अपनी ग़लती से प्रेम की बीमारी में फँसते हैं। यह बीमारी अकस्मात और निगाह मिलते ही पैदा नहीं हो जाती। अधिकांश लोगों पर इसका प्रभाव धीरे-धीरे पड़ता है। अगर एक पुरुष और एक स्त्री में बहुत अधिक प्रेम हो तो उनको आपस में विवाह नहीं करना चाहिए। क्योंकि वे एक दूसरे को असलियत का विचार छोड़ कर अपनी कल्पना के अनुसार समझ लेते हैं। कुछ समय पश्चात् जब उनको वस्तु-स्थिति का ज्ञान होने लगता है तो वे दोनों अत्यन्त अप्रसन्न और दुःखी होते हैं और दोनों समझते हैं कि हमको धोखा या दग़ा दिया गया।

* * *

मध्य एशिया में बोलशेविक शासन

संसार भर की आँखें आज रूस की सोवियट सरकार और उसकी नई शासन-व्यवस्था की ओर लगी हुई हैं। केवल रूस ही में नहीं, अपने साम्राज्य के अन्तर्गत देशों में भी उसने नए साम्यवादी सिद्धान्तों का प्रचार किया है और उन्हें व्यावहारिक रूप दिया है। इन सिद्धान्तों का रूस के अन्तर्गत 'मध्य एशिया' पर क्या प्रभाव पड़ा है, इस सम्बन्ध में श्री० अब्दुलक़ादिर ख़ाँ

ने 'सेन्ट्रल एशिया सोसाइटी' के सम्मुख अपनी यात्रा के आधार पर एक व्याख्यान दिया था; उसी का सारांश यहाँ पर दिया जाता है।

जब से रूस में ज़ारशाही का अन्त और बोलशेविक राज्य की स्थापना हुई है, तभी से मध्य एशिया की समस्या को विशेष महत्व दिया जा रहा है। तुर्किस्तान की रहस्य-मय भूमि पर आज जो असाधारण प्रयोग किए जा रहे हैं, वे संसार के राजनीतिक इतिहास में अद्वितीय हैं। रूस की कम्यूनिस्ट (साम्यवादी) सरकार ये प्रयोग अपने अन्तर्गत राष्ट्रों में बड़ी तत्परता से आज़मा रही है।

पूर्व के इस अत्यन्त प्राचीन देश में जो नए परिवर्तन हो रहे हैं, उन्हें अपनी यात्रा में मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा और अनुभव किया है। तुर्किस्तान की यह यात्रा मैंने सन् १९२० में प्रारम्भ की थी। ख़ैबर घाटी पार करके मैं कुछ दिनों काबुल ठहरा और वहाँ से अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ों की हिमाच्छादित चोटियों को पार करता, और हिन्दू कुश पर्वत के ऊँचे-नीचे भयानक रास्तों और घाटियों को लाँघता हुआ मैं तख़्त बाज़ार के पास ही रूसी सीमा में प्रविष्ट हुआ।

काबुल से रूसी सीमा तक पहुँचने में मुझे घोड़े की सवारी पर अठारह दिन लगे; परन्तु जब से रूस से काबुल तक के लिए वायुयान की यात्रा का प्रबन्ध हो गया है तब से एक जगह से दूसरी जगह पहुँचने में पूरा एक दिन भी नहीं लगता। इस यात्रा की यह सुविधा दो-तीन सालों से ही हुई है और वायुयान प्रत्येक पक्ष में केवल एक बार टरमेज़ से काबुल आया-जाया करते हैं। अब तो इसका सम्बन्ध पर्शिया (फ़ारस) में 'जङ्कर' और मध्य एशिया के अन्य वायु-मार्गों से हो गया है, जिससे मास्को और पश्चिम के अन्य पास के देशों से काबुल केवल दो-तीन दिन का रास्ता रह जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के पिछले दस वर्षों में रूस ने मध्य एशिया के अधिकांश भाग को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया था और ताशकन्द को तुर्किस्तान की राजधानी बनाया था। तुर्किस्तान की राजधानी का यह नया शहर पुराने तुर्की शहर के पास ही नए ढङ्ग से बसाया गया था और उसमें वर्तमान ढङ्ग की सुन्दर सड़कें, पार्क और बग़ीचे लगाए गए थे। इसके साथ ही रूसी सरकार ने सीमा पर सेना की एक ज़बर्दस्त छावनी स्थापित करने और वहाँ तक रेल तथा आवागमन के अन्य आधुनिक साधनों के प्रस्तुत करने में भी अटूट धन-राशि ख़र्च की थी। यद्यपि रूसी साम्राज्य उस देश के अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में हस्तक्षेप करता था और देश की रक्षा और उसमें शान्ति स्थापित रखने का प्रधान ज़िम्मेदार था, परन्तु लोगों के सामाजिक रहन-सहन में वह बिलकुल हाथ नहीं डालता था। वहाँ मुसलमानी क़ानून उसी प्रकार प्रचलित रहे जिस प्रकार रूसी साम्राज्य की स्थापना के पहिले थे। रूसी गवर्नर-जनरल वहाँ के मुसलमान अमीरों और ख़ानों (सर्दारों और राजाओं) के आन्तरिक शासन-प्रबन्ध में भी कभी हस्तक्षेप नहीं करता था।

बुख़ारा का तीर्थस्थान

बुख़ारा का तीर्थ वहाँ के अमीरों की राजधानी थी। वह व्यापार का एक मुख्य केन्द्र था और सैकड़ों मस्जिदें उस शहर की पवित्रता के चिह्न-स्वरूप जगह-जगह सुशोभित थीं। व्यापार की तरह बुख़ारा शिक्षा का भी बड़ा भारी केन्द्र था और वहाँ से विद्वानों की कीर्ति सुन कर मध्य एशिया से चारों ओर के ज्ञानार्थी वहाँ एकत्र होते थे। बुख़ारा का अफ़ग़ानिस्तान होकर भारत से भी घनिष्ट व्यापारिक सम्बन्ध रहा है। वहाँ के धनी व्यापारी वहाँ से दरियाँ, रेशम और समूर या पक्षियों के पङ्ख भारत में बेचने लाते थे और उसके बदले में यहाँ से मेनचेस्टर का बना हुआ विलायती कपड़ा लाद कर ले जाते थे। परन्तु जब से वहाँ बोलशेविक शासन स्थापित हुआ है, तब से वहाँ का विलायती व्यापार बिलकुल नष्ट हो गया है। कराची बन्दरगाह में लङ्काशायर के कपड़े के व्यापार की कमी का एक यह भी प्रधान कारण है।

बोलशेविक शासन की स्थापना के अनन्तर जब से मास्को साम्यवादियों का मक्का बना है, तभी से सोवियट सरकार की अध्यक्षता में समस्त रूसी तुर्किस्तान में लेनिन और कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों का प्रचार होने लगा। चारों ओर लाल पल्टनों ने अपना अधिकार जमा कर समस्त मध्य एशिया के मुल्लाओं, बड़े-बड़े धनी व्यापारियों, ज़मींदारों और उन सब लोगों का, जो साम्यवाद के प्रचार में बाधक थे, बीन-बीन कर सफ़ाया कर डाला। उनकी ज़मीन और दूसरी जायदाद ज़ब्त कर ली गई। और प्राचीन काल के वे सब चिह्न नष्ट कर दिए गए, जो उनके मार्ग में रुकावट डालते थे। सरकार की इच्छा पूर्व में एक नया जीवन सञ्चार करने की थी और उसके लिए मध्य एशिया को समस्त पूर्व के सामने एक आदर्श के रूप में उपस्थित करना था।

धर्म के विरुद्ध युद्ध

मार्क्स के सिद्धान्तों के अनुसार दूसरा धावा धर्म पर बोला गया। उसके परिणाम-स्वरूप बुख़ारा विचार-स्वातन्त्र्य की शिक्षा का मुख्य केन्द्र हो गया। अनेक मौलवी और मुल्लाओं को साम्यवाद का कट्टर दुश्मन होने के कारण क़त्ल कर दिया गया और मस्जिदों और मौलवियों के मदरसों में लड़कों और लड़कियों के क्लब खोल दिए गए। स्त्रियाँ, जो कि सदियों से अपनी रूढ़ियों के अनुसार पर्दे में सड़ा करती थीं, सोवियट सरकार की स्वतन्त्र नागरिक बन गईं और उसके क़ानून ने पर्दे के चिथड़े उड़ा दिए। पर रूसी सरकार ने इन कट्टर मुसलमानों को दबाना जितना आसान समझा था, वह उतना ही कठिन निकला। इस सख़्ती की नीति से नाराज़ होकर बोलशेविकों के विरुद्ध उन्होंने 'धार्मिक-युद्ध' की घोषणा कर दी, जो 'बासमची विद्रोह' के नाम से प्रसिद्ध है। मुसलमानों का यह 'धार्मिक विद्रोह' उस समय परास्त हुआ जब सन् १९२३ में रूसी गवर्नमेण्ट ने अपने युद्ध-सचिव कामीनाफ़ को स्वयं फ़रग़ाना पहाड़ का विद्रोह दबाने के लिए भेजा। सन् १९२२ की बाकू-परिषद से जब अनवर पाशा की आँखें खुलीं और उन्हें बोलशेविकों की वास्तविक नीति का पता लगा, तब वे 'बासमची विद्रोह' में सम्मिलित होकर उसके प्रधान नायक बन गए। परन्तु वे भी विद्रोह में सफलता प्राप्त न कर सके और युद्ध में मारे गए।

राजनीतिक स्वतन्त्रता

बोलशेविक सरकार एशिया के अन्य भागों के मुसलमानों को क्रोधित नहीं करना चाहती थी; और इसलिए उसने उदाहरण-स्वरूप यह दिखलाने का निश्चय किया कि उसके राज्य में एशिया के पद्दलित लोगों को जो स्वतन्त्रता है वह कहीं नहीं है। उसने मध्य एशिया को छोटी छोटी सोवियट जनसत्तात्मक रियासतों या प्रान्तों में बाँट दिया, उनके नाम उज़्बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान और ताज़िकिस्तान रक्खे गए और उनमें से हर एक को अपने प्रतिनिधि मास्को की 'केन्द्रीय व्यवस्थापक सभा' (Central Executive Committee) में भेजने का अधिकार प्राप्त हो गया। एशिया में साम्यवादी नीति के प्रचार का यह प्रारम्भ था।

सोवियट सरकार ने जनसत्तात्मक शासन-पद्धति का यह प्रयोग प्रारम्भ ही में ऐसे लोगों पर किया था जिन्हें पहिले न तो शासन का अनुभव था और न उन्हें इस सम्बन्ध में कोई शिक्षा दी गई थी। इसलिए उन्हें इस प्रयोग में बिलकुल सफलता नहीं मिली। वोट देने के अधिकार का सच्चा उपयोग और चुने जाने पर अपना कर्तव्य वे ही लोग पालन कर सकते हैं, जिनमें धार्मिक भावनाएँ प्रबल रूप में नहीं हैं और जिनके पास राज्य की भूमि को छोड़ कर कोई दूसरी निज की भूमि नहीं है। अशिक्षित और अज्ञान सदस्य न तो अपनी ज़िम्मेदारी ही भली प्रकार समझ पाते हैं और न वे उन लोगों का, जो उन्हें चुन कर सभाओं में भेजते हैं, कुछ उपकार ही कर पाते हैं। वे अपने अधिकार का उपयोग या तो अपने स्वार्थ साधन में करते हैं या सरकार को प्रसन्न करने में। सदस्य बनते ही उन्हें अपने पुराने दुश्मनों या अत्याचारी मालिकों से बदला लेने का अच्छा मौक़ा मिल जाता है। अपनी साम्यवादी नीति का बहुत कुछ प्रचार करने पर भी मध्य एशिया की कम्यूनिस्ट सरकार ने लेनिन के सिद्धान्तों की बहुत-कुछ उपेक्षा कर दी है।

साम्यवाद का प्रचार

जहाँ कहीं सोवियट सरकार ने साम्यवाद के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए एशिया के युवकों को शिक्षा देने का प्रबन्ध किया है, वहाँ उसने अद्वितीय निपुणता दिखलाई है; और उसे सफल बनाने में कोई बात उठा नहीं रक्खी। ताशक़न्द, बुख़ारा और समरक़न्द की यूनीवर्सिटियों में हज़ारों विद्यार्थी वैकल्पिक विषयों में साम्यवाद ही चुनते हैं। वहाँ हर एक भाग में शिक्षा मातृभाषा में दी जाती है, परन्तु साथ ही रूसी भाषा की भी शिक्षा दी जाती है। गाँवों में जहाँ अशिक्षा और अज्ञान का अन्धकार फैला हुआ है, वहाँ शिक्षा का कार्य और साम्यवाद का प्रचार रेडियो और सिनेमा के द्वारा किया जाता है; और इस प्रकार पामीर के बीहड़ पहाड़ों तक के निवासी बिना अक्षर-ज्ञान के ही उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं। वर्तमान आविष्कारों ने मध्य एशिया का जितना उपकार किया है, उतना संसार के किसी अन्य भाग का नहीं। वहाँ की अज्ञान और अशिक्षा से आच्छादित जनता में इन आविष्कारों ने वैसा ही आश्चर्यजनक प्रभाव डाला है जैसा प्राचीन काल का जादू डालता था। रेडियो और सिनेमा के यन्त्रों ने साम्यवादी सरकार के अद्भुत लाभ पहाड़ों में रहने वाली उज़्बक, तुर्कमान और कुम्मी जातियों के लाखों मनुष्यों के हृदय में कान तथा नेत्रों द्वारा प्रविष्ट करा दिए हैं। इससे उसके सिद्धान्तों के प्रचार में अत्यन्त सहायता पहुँची है। ये यन्त्र उन लोगों को जादू के सिवाय कोई अन्य चीज़ प्रतीत नहीं होते। इस प्रकार के प्रचार-कार्य में मध्य एशिया के सामने भारत की कोई तुलना नहीं हो सकती।

मुसलमानों का विरोध

इतना प्रयत्न करने पर भी बोलशेविकों का, पूर्व के लोगों के मस्तिष्क में अपने सिद्धान्त ठूँसने का स्वप्न अभी तक पूरा नहीं हुआ है। मुसलमानी धर्म के अन्धभक्त, सोवियट सरकार के शासन से भयभीत होकर शहर छोड़, देश भर में फैल गए हैं और अब भी उसके विरुद्ध विद्रोह की अग्नि भड़काने से नहीं चूकते। इस विद्रोह की मुख्य जड़ पर्दे की प्रथा पर कुठाराघात है। इसी प्रथा के विरोध के कारण हज़ारों की क़ुरबानियाँ हुईं और लोग निर्दयता-पूर्वक दण्डित हुए; और यह सब इसलिए कि वहाँ के सम्माननीय मुसलमान यह नहीं सह सकते कि उनकी स्त्रियाँ पर्दा छोड़ बाज़ार में निकलें।

सोवियट सरकार ने अपनी शक्ति द्वारा और उपर्युक्त ढङ्ग से प्रचार-कार्य करके मध्य एशिया पर अपनी सत्ता जम जाने पर अब वहाँ के उद्योग-धन्धों और खेती की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया है। ज़मींदारों की ज़ब्त ज़मीनें अब किसानों को खेती के लिए दी जाने लगी हैं और वे सरकारी प्रबन्ध के अनुसार उसका उपयोग करने लगे हैं। यहाँ की भूमि में नदियों के द्वारा खनिज पदार्थ अत्यधिक रूप से मिल जाने के कारण वह उपजाऊ बहुत है! फ़रग़ाना की भूमि कपास की खेती के लिए प्रसिद्ध है; और बोलशेविकों को यह ज्ञान हो गया

है कि वे कपास की खेती की जितनी अधिक उन्नति करेंगे सरकार का ख़ज़ाना भी वे उतना ही अधिक भर सकेंगे। इसलिए सोवियट सरकार की आर्थिक नीति का उद्देश्य अपनी शक्ति को कपास पर ही केन्द्रित करने का है। जितनी हद में कपास की खेती हो सकती है, उतनी हद का उन्होंने एक अलग प्रान्त बना दिया है और अन्य प्रान्तों की तरह उसमें भी जनसत्तात्मक शासन की स्थापना की है। यद्यपि समरक़न्द, दोशम्बा और आशक़ाबाद जनसत्तात्मक प्रान्तों की राजधानियाँ हैं तो भी आर्थिक दृष्टि से ताशक़न्द का स्थान सबसे ऊँचा रहेगा।

शहरों के उद्योग-धन्धे

शहरों में कपास और सिल्क की बड़ी-बड़ी फ़ेक्टरियाँ बनाने का काम चल रहा है और 'पूर्व में मज़दूरों के शासन' की नींव दृढ़ करने की दृष्टि से इन फ़ेक्टरियों के मज़दूरों का शासन 'मज़दूर सभाओं' (Trade Unions) के हाथों में छोड़ दिया गया है। सोवियट सरकार का अन्तिम उद्देश्य मध्य एशिया की आर्थिक नीति का मास्को के बड़े ट्रस्ट से सम्बन्ध स्थापित करना है और इसीलिए मास्को की "केन्द्रीय आर्थिक कौन्सिल" (Central Economic Committee) ही वहाँ के उद्योग-धन्धों और खेती-बारी की नीति का सञ्चालन करती है। सोवियट सरकार मध्य एशिया में साम्यवाद का प्रचार करके अन्य पूर्वीय देशों के सम्मुख एक आदर्श उदाहरण रखना चाहती है और साथ ही वह वहाँ के युवकों को, निकट भविष्य में युद्ध की आशङ्का से, लड़ाई के लिए भी तैयार कर रही है। अपनी सेना के हर एक विभाग, पैदल, घुड़सवार और तोपख़ाने में उसने नए वैज्ञानिक यन्त्र और गैस आदि का उपयोग प्रारम्भ कर दिया है; और जहाँ कुछ समय पहिले आवागमन के साधन केवल ऊँट थे, वहाँ अब हवाई जहाज़ों का ताँता लग गया है।

सामाजिक वर्गों में युद्ध

सोवियट सरकार धनी वर्ग के लोगों और ग़रीबों के बीच में लड़ाई कराने का बराबर प्रयत्न करती रहती है। वहाँ के युवक यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि एशिया में सोवियट राज्य की सत्ता की रक्षा के लिए फ़ौजी शक्ति बढ़ाई जा रही है; और आवश्यकता पड़ने पर इस शक्ति से उन देशों को भी सहायता पहुँचाई जायगी जो 'संसार भर की क्रान्ति' की विजय के लिए युद्ध कर रहे हैं। राज्य की शिक्षा-संस्थाओं द्वारा ऐसे विचारों का प्रचार किया जा रहा है जिनमें लेनिन के सिद्धान्तों को मनुष्य-मात्र का उद्धारक बताया जाता है। सोवियट सरकार की नीति इन्हीं सिद्धान्तों को वहाँ का धर्म बनाना है; और उसके आगे और किसी धर्म का अस्तित्व वहाँ न रहने पाएगा। सोवियट राज्य में युवकों को जितने अधिकार प्राप्त हैं, संसार के और किसी देश के युवकों को उतने नहीं हैं। भविष्य का निर्णय ये ही युवक करेंगे, जिन्हें क्रान्तिकारी संस्थाओं में शिक्षा दी जा रही है। अपने इस नए धर्म के लिए लड़ना और प्राण निछावर करना ही उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

* * *

भारतीय वहिष्कार का प्रभाव

भारत के वर्तमान राजनीतिक आन्दोलन का सब से महत्वपूर्ण अङ्ग वहिष्कार है। इससे हमारे आन्दोलन को बहुत शक्ति प्राप्त हुई है और देश का करोड़ों रुपया विदेश जाने से बचने लगा है। पर कितने ही लोग वहिष्कार को सीमा के बाहर महत्व देने लगे हैं और समझते हैं कि इङ्गलैण्ड के व्यापार की जो कुछ दुर्दशा हो रही है, वह हमारे वहिष्कार के कारण ही हो रही है। इस मत में कुछ संशोधन करने की ज़रूरत है, क्योंकि यदि हम अपने हथियारों की शक्ति के विषय में बहुत बढ़ा-चढ़ा कर अनुमान कर लेंगे तो अन्त में हमको धोखा खाना पड़ेगा। इसलिए हम इस विषय पर एक विद्वान प्रोफ़ेसर की सम्मति पाठकों की सेवा में अर्पित करते हैं, जो कि ट्रिब्यून (लाहौर) में प्रकाशित हुई है।

वर्तमान आन्दोलन का कुछ ऐसा प्रभाव हुआ है कि उसके कारण एक ओर गवर्नमेण्ट के अफ़सर व्यापारिक क्षति का अर्थ कुछ का कुछ लगा कर लोगों को भ्रम में डाल रहे हैं और दूसरी ओर जनता भी विलायती वस्त्रों के वहिष्कार का प्रभाव अपने मन में कुछ का कुछ समझ कर स्वयं धोखे में पड़ रही है। इसलिए यहाँ इस विषय का सच्चा दिग्दर्शन अरुचिकर न होगा।

दो कारण

इस व्यापारिक क्षति के दो कारण हैं। एक तो वह जिसका सम्बन्ध रुपए से है और दूसरा वह जिसका सम्बन्ध माल से है। सर हैनरी स्ट्राकोश कहते हैं कि हर प्रकार के माल का भाव गिरने का कारण धन का अभाव और विनिमय की दर का गिरना है। भारत गवर्नमेण्ट के अर्थ-सचिव ने १९ दिसम्बर सन् १९२९ में जो विज्ञप्ति प्रकाशित की थी उससे पता चलता है कि सन् १९२९ में भारत में प्रचलित सिक्के में २० करोड़ की कमी थी। यह बात असत्य नहीं है कि विनिमय की दर १८ पेन्स पर स्थिर रखने के लिए सन् १९२९ में रुपए के बाज़ार में और भी अधिक कमी कर दी गई है; परन्तु गवर्नमेण्ट की ओर से अभी तक ऐसी कोई विज्ञप्ति प्रकाशित नहीं हुई जिससे उस रक़म का ठीक-ठीक पता चल सके। श्री० घनश्यामदास जी बिड़ला ने १२ करोड़ का अनुमान लगाया है।

वहिष्कार और लङ्काशायर

लङ्काशायर के कपड़े के व्यापार पर जो घातक प्रभाव पड़ा है, वह लोगों से छिपा नहीं है। वहाँ की मिलें दिन प्रतिदिन बेकाम होती जा रही हैं; बैङ्कों में गिरवी रक्खी जा रही हैं; और मामूली लोहे के दामों में नीलाम हो रही हैं। वहाँ के व्यापारियों की, मिल-मालिकों की और उनके साथ ही बैङ्कों की भी आज इतनी गिरी दशा है कि न मालूम वे कब दिवालिया हो जायँ। वहाँ के बेकार मज़दूरों की भी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। २० लाख से ऊपर तो केवल ऐसे मजदूर बेकार हो चुके हैं जिनके नाम रजिस्टर में दर्ज हैं; और उनकी संख्या प्रति सप्ताह प्रायः ४० हज़ार के हिसाब से बढ़ती जा रही है। कहा जाता है कि वहाँ का व्यापार आज उसी दशा में है जिस दशा में वह महायुद्ध के बाद सन् १९२१ में था। परन्तु जो लोग यह समझे बैठे हैं कि इसका मुख्य कारण भारत का वहिष्कार है, वे भूल में हैं। भारत के वहिष्कार-आन्दोलन का वहाँ के कपड़े के व्यापार पर प्रभाव अवश्य बहुत गहरा पड़ा है, पर साथ ही उसका एक कारण यह भी है कि भारत के साथ ही उसके कपड़े का वहिष्कार दूसरे देशों ने भी कर दिया है। नीचे के अङ्कों से यह साफ़ प्रकट हो जायगा कि केवल एक ही साल में ब्रिटेन के कपड़े के निर्यात (बाहर जाने वाले माल) में कितनी कमी हो गई है:—

इङ्गलैण्ड से एक छमाही में बाहर जाने वाले कपड़े में कमी।

जिन देशों में माल भेजा गया	१९३० लाख वर्ग गज़		१९२९ लाख वर्ग गज़
भारत ...	५९७०	...	७२७०
दक्षिण अमेरिका ...	१२५०	...	१८००
पूर्वीय अफ़्रिका ...	७८०	...	८००
ऑस्ट्रेलिया ...	७३०	...	७७०
इजिप्ट ...	६७०	...	८५०
स्विटज़रलैण्ड ...	३९०	...	४७०
ईस्ट इण्डीज़, चीन और हॉङ्कॉङ्ग	४२०	...	११३०
दूसरे देश ...	४२८०	...	९५९०
	१४८७०	...	९९३५०

विश्लेषण

जनवरी सन् १९३० से जून तक के उपर्युक्त अङ्कों का विश्लेषण करने से यह पता लगता है कि इङ्गलैण्ड के निर्यात व्यापार में भारत में केवल ४० फ़ी सदी माल आया, बाक़ी ६० फ़ी सदी दूसरे देशों को भेजा गया। हम यह अवश्य मानेंगे कि भारत, विलायती कपड़े का बहुत बड़ा ग्राहक है, परन्तु इससे यह नहीं कहा जा सकता कि केवल भारत ही ग्राहक है, दूसरे देश नहीं।

दूसरी बात यह मालूम होती है कि सन् १९२९ से १९३० में जनवरी से जून तक ४४७० लाख वर्ग गज़ कपड़ा सब देशों में कम भेजा गया। और भारत में कुल १३०० लाख वर्ग गज़ ही कम आया है। इस प्रकार भारत के वहिष्कार से ब्रिटिश के निर्यात-व्यापार में २९ प्रतिशत कमी हुई। बाक़ी ७१ प्रतिशत दूसरे देशों के कारण हुई।

कला-कौशल का विकास

भारत की तरह दूसरे देशों ने विदेशी कपड़े का वहिष्कार नहीं किया था; बल्कि उन सबने अपने ही देश में अपनी आवश्यक वस्तुओं को उत्पन्न करना प्रारम्भ कर दिया है। और इस प्रकार स्वभावतः उन देशों में विलायती माल का आयात (आना) बन्द होता जा रहा है। इन सब देशों में चीन ने बहुत अधिक जाग्रति की है। ऊपर के अङ्कों से मालूम हो जायगा कि एक ही साल के अन्दर उसने दो तिहाई माल अपने देश में मँगाना बन्द कर दिया। यह उसकी जाग्रति का बड़ा भारी चिह्न है। विलायत से तैयार माल मँगाने की अपेक्षा उसने भारत से कच्ची रुई का व्यापार बहुत बढ़ा दिया है। उसने भारत से सन् १९२७-२८ में २०,००० टन, सन् १९२८-२९ में ७२,००० टन और सन् १९२९-३० में १०,१,००० टन रुई ख़रीदी। इन अङ्कों से उसके कपड़े के व्यापार की द्रुतगति का ठीक-ठीक अनुमान लग जायगा।

अप्रेल से जून तक का आयात व्यापार

ऊपर हमने जनवरी से जून तक की व्यापारिक क्षति का इकट्ठा हाल जान लिया है, परन्तु हमारा आन्दोलन अप्रेल से प्रारम्भ होता है, इसलिए उसका प्रभाव जानने के लिए हमें अप्रेल से जून तक के ही अङ्कों का अध्ययन करना पड़ेगा। सन् १९२९ के अप्रेल से जून तक के अङ्कों का सन् १९३० के उन्हीं महीनों के अङ्कों से मिलान करने

से पता चलेगा कि सब देशों में कुल मिला कर १'७३ प्रतिशत माल कम भेजा गया। ये अङ्क इस प्रकार हैं :—

कपड़ा	१६२६ लाख गज़	१६३० लाख गज़	कमी प्रतिशत
चारख़ाना	... १२६०	... ८५७	... ३२
सफ़ेद	... १२४४	... १०३३	... १७
रङ्गीन	... ७४६	... ६४५	... १३'६
कुल	३२५३	... २५३५	... २२'१

क़ीमत के लिहाज़ से सन् १६२६ में ६ करोड़ ४ लाख का कपड़ा बाहर भेजा गया और सन् १६३० में ६ करोड़ २७ लाख का। इस प्रकार सन् १६३० में अप्रेल से जून तक २ करोड़ ७७ लाख रुपयों की हानि इङ्गलैण्ड को सहनी पड़ी।

परिणाम

उपर्युक्त अङ्कों से यह परिणाम निकलता है कि ब्रिटिश व्यापार को दो-तीन सालों के अन्दर बहुत हानि उठानी पड़ी है। परन्तु इससे यह नहीं कहा जा सकता कि उसका प्रधान कारण भारत का सत्याग्रह आन्दोलन है। पिछले वर्षों भारत में ब्रिटिश माल का आयात एक तो जापानी माल के यहाँ ज़्यादा मात्रा में आने से कम हुआ है, दूसरे भारत की मिलों की उन्नति होने के कारण भी उसका परिमाण घट गया है।

कपड़े की क़ीमत में कमी

हम ऊपर इस बात का उल्लेख कर चुके हैं कि सन् १६३० के जनवरी से जून तक २ करोड़ ७७ लाख रुपए का माल भारत में कम आया। परन्तु क़ीमत की इतनी कमी के दो कारण हैं, एक तो माल कम आने ही लगा है और दूसरे उस माल की क़ीमत भी कम हो गई है। नीचे के अङ्कों से क़ीमत की कमी बिलकुल स्पष्ट हो जायगी।

(सन् १६२६ और ३० के जून महीने की कपड़े की क़ीमत का प्रति गज़ के हिसाब से मिलान)

कपड़ा	जून, १६२६ रु०	आ०	पा०	जून, १६३० रु०	आ०	पा०
चारख़ाना ...	०	३	१०	... ०	३	०
सफ़ेद ...	०	४	८	... ०	३	१०
रङ्गीन आदि ...	०	५	१	... ०	४	६

लङ्काशायर की हानि

इस प्रकार यदि हम लङ्काशायर के कपड़े के व्यापार की हानि में से जो हानि क़ीमत कम होने से हुई है वह घटा दें तो उपर्युक्त २ करोड़ ७७ लाख रुपए की हानि से ४७ लाख और निकल जाते हैं। और वास्तविक हानि केवल २ करोड़ ३० लाख रुपए की रह जाती है। यदि इस हानि के साथ हम वह हानि भी, जो लङ्काशायर को भारतीय मिलों की उन्नति और भारत में जापानी कपड़े का आयात बढ़ जाने से हुई है, जोड़ दें तो बहिष्कार से जो हानि हुई है, वह साधारण सी रह जाती है। सन् १६३० के जनवरी से जून तक के अङ्कों का सन् १६२६ के उन्हीं महीनों के अङ्कों से मिलान करने से बहिष्कार की हानि केवल डेढ़ करोड़ रुपया रह जाती है।

डेढ़ करोड़ रुपए की हानि इङ्गलैण्ड जैसे वैभव-सम्पन्न देश के लिए कोई ऐसी हानि नहीं है जो उसे लँगड़ा कर दे। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे बहिष्कार के साथ यदि दूसरे देशों के आयात की कमी का योग न होता तो लङ्काशायर अपनी वर्तमान स्थिति पर कभी न पहुँच पाता। और इसलिए यदि भारत को केवल कपड़े के बहिष्कार से स्वराज्य मिल जाय तो उसे दूसरे देशों का बहुत कृतज्ञ होना पड़ेगा।

* * *

सफल क्रान्ति के कुछ आधार

[प्रोफ़ेसर बेनीमाधव जी अग्रवाल, एम० ए०]

भारतवासी स्वभाव से बड़े धार्मिक हैं। वे सन्त-महात्माओं का आदर करते हैं, क्योंकि वे उन्हें उच्चतम आदर्शों के प्रतिनिधि मानते हैं। यह एक बड़ा गुण है, किन्तु धर्मभीरुता कभी-कभी हानिप्रद हो जाती है। वे वाह्य रूप की पूजा करने लगते और पाखण्डियों के पञ्जे में फँस जाते हैं। अतएव हम मनुष्य के चरित्र को देखें, न कि उसके वाह्य आवरण को; गुण और कर्म पर ध्यान दें, न कि उसकी जाति व क्षमता पर और यह देखें कि वह स्वयं अपने विचारों और सिद्धान्तों पर कहाँ तक आचरण करता है। हम सच्चरित्र मनुष्य का मान करें, चाहे उसका धर्म, जाति व देश हमसे भिन्न हो। "हे वैद्य, पहिले तू अपना ही इलाज कर" यह अङ्गरेज़ी कहावत बड़ी सारगर्भित है। हमारी सरलता अथवा भोलेपन से कोई अनुचित लाभ न उठा सके, इसके लिए उपरोक्त आलोचनात्मक दृष्टि का विकास हमारे लिए आवश्यक है। यह सच्चे नेताओं को पहिचानने में हमारी सहायक होगी।

जिस प्रकार यूरोप में सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत आचार में (Public and private morality) भेद माना जाता है, वैसा भेद न भारत में है और न हो सकेगा। घर में एक प्रकार का आचरण और बाहर दूसरे प्रकार का आचरण, भारत में पाखण्ड के अन्तर्गत समझा जाता है। ऐसे लोग अपनी चातुरी व क्षमता से भले ही लोगों को दबा लें, परन्तु उनके व्यक्तित्व की ओर भारतवासियों को कदापि श्रद्धा नहीं हो सकती। महात्मा गाँधी के असीम प्रभाव का रहस्य समझना कठिन नहीं। लोगों को विश्वास हो गया है कि इस महापुरुष की आत्मा एवं बुद्धि का समुक्त निश्चय ही उसके वचनों और कार्यों द्वारा प्रकट होता है। वह जो सोचता है, वही कहता है, वही करता है। इसी कारण कभी-कभी उसकी आलोचना करते हुए भी, वे उसके सामने नत-मस्तक हो जाते हैं। यह गुण नेताओं के प्रभाव को गहरा एवं स्थायी बनाता है। बिना इसके, न नेतृत्व सम्भव है, और न नियमबद्धता !

क्रान्ति की सफलता उसी क्षण सुनिश्चित हो जाती है, जब कि हमारे विचार अपनी सचाई, विवेक तथा परिपक्वता के बल से दास-मनोवृत्ति को असम्भव बना देते हैं। विचार-स्वातन्त्र्य के सिद्धान्त जिस क्रान्ति को प्रेरित करते हों, वहाँ यह प्रश्न करने की ज़रूरत नहीं कि यह क्रान्ति सफल होगी व नहीं, वहाँ तो यही प्रश्न हो सकता है कि यह कब तक सफल होगी ? जो लोग अन्ध-विश्वास के साथ किसी समय मान्य रूढ़ि की पूजा करते रहते हैं अथवा जो किसी दूसरे के जीवन का अन्ध-अनुकरण करना चाहते हैं, वे अपनी उन्नति क्या करेंगे ? उन्होंने तो स्वयं अपने लिए ही एक मानसिक कारागार बना रक्खा है। विचार-स्वातन्त्र्य चरित्रवाद के मार्ग में बाधक नहीं, यह तो उसें और भी सरल तथा विस्तृत बना देता है। जो मनुष्य यह कहता है कि "जो मैं कहूँ उसे करो, जो मैं करता हूँ उसे न करो" उसका प्रभाव भले ही कम हो, किन्तु वह कदापि छली व पाखण्डी नहीं कहा जा सकता। देश के महान प्रश्नों के प्रति भी जो लोग इस नीति का पालन करते हैं, उन्हें हम कमज़ोर कह सकते हैं, हम कह सकते हैं कि वे परिस्थिति से ऊपर उठने में असहाय व असमर्थ हैं, परन्तु हम उन्हें देशद्रोही नहीं कह सकते।

इस सम्बन्ध में एक चेतावनी आवश्यक है। व्यक्तिगत शत्रुता अथवा ईर्ष्या से उत्तेजित होकर बहुधा लोग विचार-स्वातन्त्र्य के नाम पर दलबन्दी करने लगते हैं। इससे भेद-भाव बढ़ता और सभी की अन्त में क्षति होती है। इस नीच मनोवृत्ति के उदाहरणों से भी हमारा इतिहास वञ्चित नहीं। इसके दुष्परिणाम हमारे जातीय जीवन पर अङ्कित हो चुके हैं। जाति, समाज अथवा राष्ट्र के समष्टिगत हित व ध्येय के लिए व्यक्तिगत भावों का बलिदान कर देने का पाठ भी सीखना आवश्यक है। यदि हम तर्क व प्रमाणों द्वारा बहुमत को अपने पक्ष में नहीं कर सकते, तो हमें विचार-स्वातन्त्र्य का दम भरते हुए विद्रोह खड़ा करना उचित नहीं। यदि हमारी आत्मा हमारे भावों व सिद्धान्तों को बहुमत के सामने तिलाञ्जलि देने से रोकती है तो हमें शान्तिपूर्वक प्रयत्न में संलग्न रहना उचित है। स्वतन्त्रता के उदारतम वातावरण में भी कार्य-कुशलता व सुसङ्गठन के लिए बहुधा कुछ व्यक्तियों के विचारों की अवहेलना अनिवार्य हो जाती है। किन्तु सिवाय धैर्य के इसका कोई चारा नहीं। अन्त में सत्य की विजय होती है, सदा के लिए कोई सबको भुलावे में नहीं रख सकता। यह विरोधात्मक भले ही प्रतीत हो, किन्तु यह एक सत्य है कि स्वतन्त्रता के समष्टिगत आदर्श को जीवित व बलवान बनाए रखने के लिए व्यक्तिगत भावों का बलिदान करना पड़ता है ! इसे समझना और इसके अनुसार आचरण करना विचार-स्वातन्त्र्य को ढीला नहीं करता, प्रत्युत दूरदर्शिता को प्रकट करता है। जिन जातियों ने स्वतन्त्रता एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति की है, उनके इतिहास में हमें सैकड़ों उदाहरण ऐसे मिलेंगे, जहाँ पर कि देश व जाति के सङ्कट-काल में महापुरुषों ने अपने वैयक्तिक विचारों की बलि देकर, अपनी सेवा द्वारा जातीय-ध्येय की प्राप्ति में हाथ बँटाया। इटली की स्वतन्त्रता के संग्राम में मेज़िनी और गेरीबाल्डी से बढ़ कर कोई देश-भक्त नहीं हुआ। मेज़िनी चाहता था कि स्वतन्त्र इटली में प्रजातन्त्र स्थापित हो। गेरीबाल्डी चाहता था कि उसकी प्यारी जन्म-भूमि नीस नगर स्वतन्त्र इटली के अन्तर्गत हो। किन्तु जिन परिस्थितियों तथा घटनाओं द्वारा इटली को स्वतन्त्रता मिली, वे इन महापुरुषों की उपरोक्त प्यारी आकांक्षाओं की प्राप्ति में बाधक हुईं ! तथापि उन्होंने धैर्यपूर्वक इसे सहा। अमानुल्ला शाह का यह विश्वास है कि अफ़ग़ानियों ने उनके विरुद्ध बग़ावत करने में ग़लती की, तथापि वह ख़ून-ख़राबी कर अपने देश का नुक़सान नहीं करना चाहते और आज स्वदेश एवं राज्य-पद से निर्वासित होकर इटली में दिन काट रहे हैं !

आदर्श की प्राप्ति क्रान्ति का ध्येय है, किन्तु नियमानुशासन के बिना यह सम्भव नहीं। स्वतन्त्रता और उच्छृङ्खलता में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है। उच्छृङ्खल मनुष्य स्वार्थी व अदूरदर्शी होता है। स्वतन्त्रता से मनुष्यों को अधिकार अवश्य मिलते हैं, किन्तु इनके साथ ही साथ उन्हें अनेक कर्त्तव्यों को भी स्वीकार करना पड़ता है। यदि मेरा यह अधिकार है कि मैं सड़क पर बेरोक-टोक चल सकूँ, तो यह मेरा कर्त्तव्य भी है कि मैं उस मार्ग में स्वयं कभी कोई रोक-टोक उपस्थित न करूँ। जिस प्रकार सामाजिक एवम् व्यक्तिगत विकास के लिए मनुष्य को अधिकारों की ज़रूरत अनिवार्य है, उसी प्रकार समाज को छिन्न-भिन्न होने से बचाने के लिए कर्त्तव्य और नियम भी आवश्यक हैं। विचार-स्वातन्त्र्य का आदर्श है—उदार दृष्टि-कोण का विकास। नियमानुशासन ही—विचार-स्वातन्त्र्य को रचनात्मक रूप देता और उसे क्रान्ति की आधार-शिला बनाता है।

जिस देश ने सदियों से परतन्त्र रहने पर भी विश्व-प्रेम के आध्यात्मिक आदर्श की—कम से कम सिद्धान्त रूप में—उपासना की हो, जिस देश ने बारम्बार पराजित होते हुए भी यतो धर्मस्ततो जयः का मन्त्रोच्चार किया हो, उसी अद्भुत देश में यह भी सम्भव है कि अहिंसावाद क्रान्ति की प्रधान प्रेरक शक्ति घोषित की जाय ! देश की सर्वतोमुखी क्रान्ति को अहिंसा-तत्व की शृङ्खलाओं द्वारा नियमित करना वास्तव में संसार के इतिहास की एक अपूर्व घटना है। इसमें निरस्त्र देश के नेताओं की चातुरी ही नहीं, इसमें एक महात्मा के हृदय की विशालता एवम् दयाशीलता ही नहीं, इसमें भारतीय आत्मा की ध्वनि है, इसमें जातीय इतिहास व संस्कृति का उपदेश है, इसमें भारतीय मनोवृत्ति के गम्भीर ज्ञान की झलक है, इसमें संसार की विफल व अर्ध-सफल क्रान्तियों की चेतावनी है, इसमें भारत की बहुसंख्यक एवं जटिल समस्याओं की चेतनता है ! यह नीति मानती है कि हमारे विपक्षी व विरोधी के भी आत्मा है, उसमें भी सद्वृत्तियाँ हैं, उसे अपना मित्र व समर्थक बनाने में ही हमारी सच्ची विजय है। मनुष्यत्व का आध्यात्मिक तत्त्व इसकी प्रेरणा है, विश्वमैत्री का उदार आदर्श इसका ध्येय है। सदियों के तप एवं अध्यात्म-ज्ञान में दीक्षित भारतीय आत्मा इस नीति द्वारा संसार को आत्मोद्धार का नूतन पथ दिखला रही है। यह मानव-इतिहास में आत्मबल की अग्नि-परीक्षा है। इस प्रयोग द्वारा भारत संसार को नवीन शक्ति का सन्देश दे सकेगा।

बहुमत को शान्तिमय उपायों से अपने पक्ष में करना, प्रजातन्त्र के इस सिद्धान्त का समावेश भी अहिंसा की नीति में पाया जाता है। हमारी समस्याएँ कई हैं और कठिन हैं। हम किस प्रकार इनको हल करेंगे, इसके लिए कोई कटी-छटी योजना आज निश्चित नहीं की जा सकती। इसका विकास पारस्परिक सहयोग, प्रयत्न एवं सहानुभूति से ही होगा। हमारे यहाँ समाज में ऊँच-नीच का भाव है, राजनीति में साम्प्रदायिक प्रश्न हैं, आर्थिक अवस्था में ज़मींदार व किसान, पूँजीपति व मज़दूर आदि की अनेक समस्याएँ हैं। इनका समाधान हमें करना ही पड़ेगा। यदि ख़ून-ख़राबी हुई तो दलबन्दी होगी, प्रतिशोध व ईर्ष्या के भाव जाग्रत होंगे, उच्छृङ्खलता को उत्तेजना मिलेगी। इनका नतीजा यह होगा कि सर्वमान्य राष्ट्रीय समझौता असम्भव हो जावेगा। अपने ध्येय की सचाई को सिद्ध करने में तप और कष्ट सहन का जो प्रभाव पड़ता है, वह गहरा तथा स्थायी होता है। इतिहास में कितनी ही हिंसात्मक क्रान्तियाँ हुईं। जिन्हें सफलता मिली, उन्होंने न्याय-प्राप्ति के प्रयास में कितने ही अन्याय अथवा अत्याचार कर डाले ! जो असफल हुईं उनका दुष्परिणाम प्रतिक्रिया के रूप में प्रकट हुआ। किन्तु अहिंसात्मक क्रान्ति एक अपूर्व क्रान्ति है; उसमें प्रतिक्रिया को स्थान ही नहीं। उसकी जो कुछ भी यत्र-तत्र विजय होती है, वह सच्ची एवं स्थायी होती है। उसमें अनन्त विकास का तत्त्व निहित है। जो हिंसा से जीतना चाहता है वह हिंसा द्वारा निर्मूल भी किया जा सकता है। किन्तु जो सत्य द्वारा विजय-कामना करता है, उसको दबाने वाले अस्त्रों का प्रभाव क्षणभङ्गुर होता है। अहिंसात्मक क्रान्ति का सैनिक अपनी दृढ़ता, सत्यनिष्ठा, तप व कष्ट-सहन से विपक्षी के मानव-तत्त्व का अभिनन्दन करता हुआ उसे सत्य एवं न्याय की प्रभुता स्वीकार करने का निमन्त्रण देता है। कर्त्तव्य-पालन ही उसके लिए सब कुछ है—यही उसकी विजय का साधन है। जब तक वह इस पथ पर चलता है, उसे पराजय की शङ्का होती ही नहीं !!

सत्याग्रह-संग्राम की कुछ महत्वपूर्ण आहुतियाँ

महामना मालवीय जी

सरदार पटेल
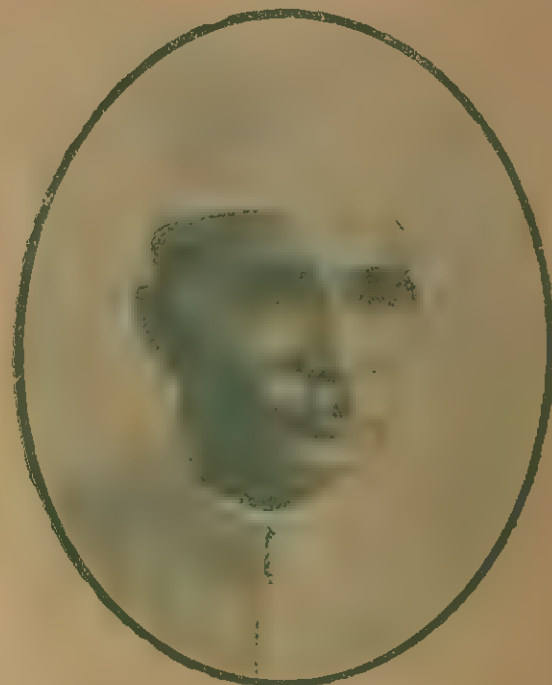
डॉक्टर अन्सारी

श्री० एम० वी० अभ्यङ्कर बार-एट-लॉ
(मध्य-प्रदेश के प्रथम डिक्टेटर)

महात्मा भगवानदीन जी
(मध्य-प्रदेश की "वार-कौन्सिल" के सदस्य)

श्री० पूनमचन्द राँका
(मध्य-प्रदेश के द्वितीय डिक्टेटर)

अजमेर के पण्डित गौरीशङ्कर भार्गव और उनकी धर्मपत्नी, जिन्हें सत्याग्रह के सम्बन्ध में क़ैद की सज़ा दी गई है। इस समय दोनों पत्ति-पत्नी जेल में हैं।

स्त्रियाँ क्या नहीं कर सकतीं ?

एक कैनेडियन महिला, जिसे साँप से खेलने का व्यसन है।
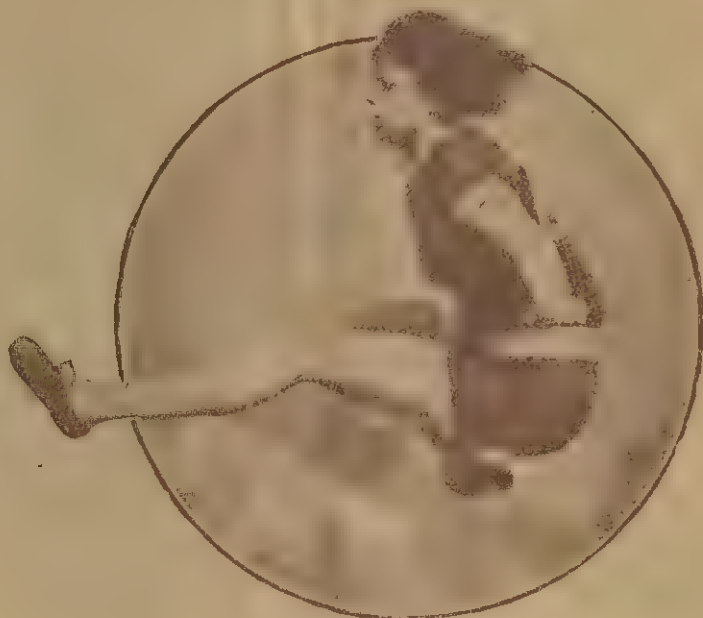
अमेरिका की प्रसिद्ध दौड़ने वाली रमणी हेलेन फ़िल्की

रूसी स्त्रियाँ फ़ौजी क़वायद कर रही हैं।

१४।। घण्टे में २१ मील तैर कर इङ्गलिश चैनल पार कर मर्दों के छक्के छुड़ाने वाली महिला, मिस इडर्ली।

मिस ए० जॉन्सन, जिन्होंने हवाई जहाज़ द्वारा इङ्गलैण्ड से ऑस्ट्रेलिया तक १३ हजार मील की यात्रा करके पुरुषों के दाँत खट्टे कर दिए हैं।

मैसूर की एक शिकारी महिला मिसेज़ व्यूवेल्ड, जो अपने शिकार पर बैठ कर इतरा रही है।

शिक्षा के मैदान में भारतीय महिलाओं की प्रगति

कुमारी राजदुलारी शर्मा, बी० ए० (ऑनर्स)
(देहली)

कुमारी प्राणुजम ठाकोर, बी० ए०
(बम्बई)

कुमारी तेजरानी दीक्षित, बी० ए०
(लखीमपुर-खीरी)

कुमारी पी० पारीजाठम, बी० ए०
(मद्रास)

कुमारी आशा सेन, बी० ए०
(देहली)

सत्याग्रह-संग्राम में भारतीय महिलाओं का भाग
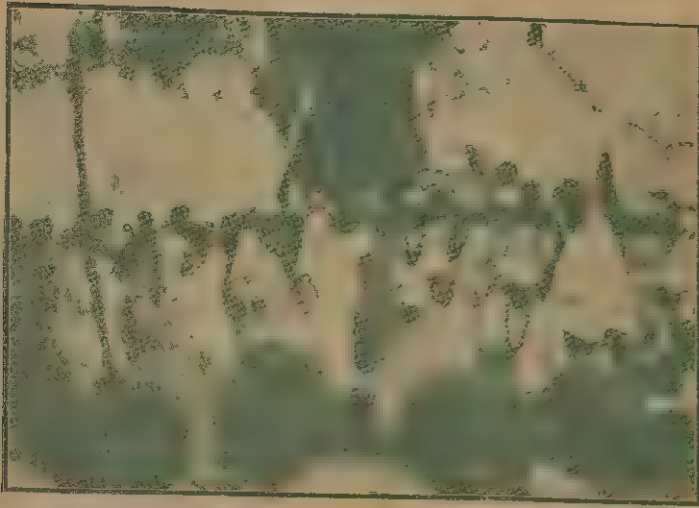
इलाहाबाद की हँडिया तहसील के नमक-सत्याग्रहियों को श्रीमती उमा नेहरू तिलक लगा रही हैं।

इलाहाबाद में विदेशी कपड़े की दुकानों पर महिलाएँ पिकेटिङ्ग कर रही हैं।

डॉक्टर मुथुलक्ष्मी रेड्डी
गवर्नमेण्ट की वर्तमान दमन-नीति के विरोध में आपने मद्रास काउन्सिल की सदस्यता और उसकी वाइस-प्रेज़िडेण्टशिप दोनों पदों से इस्तीफ़ा दे दिया है।

श्रीमती कस्तूरीबाई गाँधी
आप गुजरात के सत्याग्रह-आन्दोलन में अपार परिश्रम कर रही हैं।

आप हज़ारीबाग़ (बिहार) की एक प्रभावशाली राष्ट्रीय कार्यकर्ता हैं। आपको सत्याग्रह-आन्दोलन में ६ मास की सज़ा हुई है।

श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू (पं० मोतीलाल जी नेहरू की धर्मपत्नी) राष्ट्रीय स्वयंसेविका के वेश में।
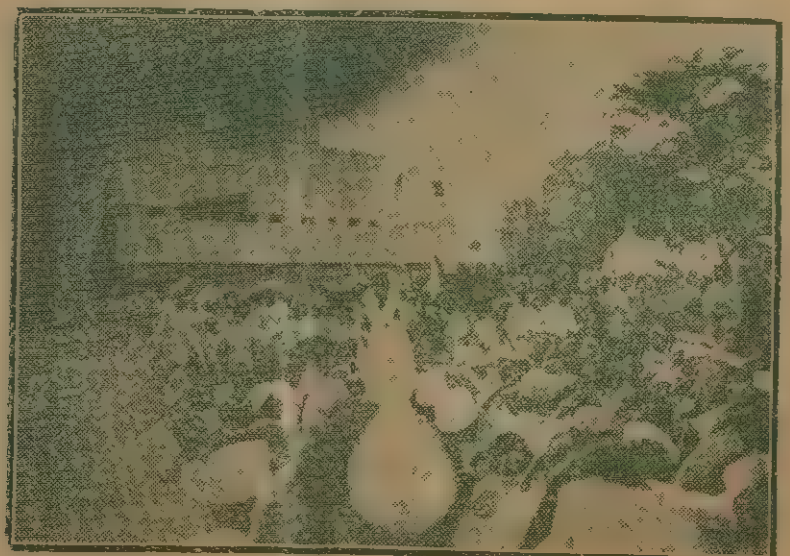
मोती-पार्क में इलाहाबाद के विद्यार्थियों की एक विराट सभा में श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित भाषण दे रही हैं।

तीसमार ख़ाँ की हजामत

(प्रहसन)

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अङ्क १—दृश्य—१

दारोग़ा तीसमार ख़ाँ का मकान

(कल्लू चौकीदार का बड़बड़ाता हुआ आना)

कल्लू—आजो कौनो ससुर नाऊ आवे के लिए नाहीं राजी भवा। दरोगा जी के करम में दाढ़ी मुड़ावे के बदे नाहीं है। हमार कौन दोष ? यही लायक हैं। इनके आगे मनई के कहे, कूकुरो नाहीं ठाढ़ होत है। चौकीदारी करत हमरो उमिर बीत गई। न जाने कितने दरोगा आए अउर गए ; मुल दादा ! इनके अस कौनो नाहीं रहे। अउर तो अउर ! इनके बाप मदारअली यही थाना के मुन्सी रहे तौनो अस आफती नाहीं रहे। वै बेचारे हमका कल्लू भइया छोड़, कब्बो दूसर लबज नाहीं कहिन। जब हुक्का पिए लागें तो सब से पहिले चिलम हमही का सुलगावे के देत रहे। अउर उनके पूत, जेहका हम कनैठी देत रहेन, तौन दरोगा होते हमही का जब सूअर-गदहा कहे लागे, तब हद होइ गवा। ऊ तो कहो हम इनके नस पहचानित है अउर बड़े हिकमत से चलित है। जेसे आबरू बच जात है ; नाहीं तो अब ताईं नोच खात। बस निबरे के मारे जानत हैं—करारे के नगीचे नाहीं जात हैं। नाव तो आपन तीसमार खाँव रक्खे हैं, मुल चोर बदमास के देखत इनका जूड़ी आवत है। अउर तेहा दिखावत हैं केह पर, जेह कर बापो कब्बो कोई पर हाथ न उठाइस हो ! एही लोगन के बाँधत-पकड़त हैं। एही से आजकल इनके मन अउरो बहक गवा है। वह लो ! ऐंठत आवत हैं जानो फुरे तीसमार खाँव हैं !! समनवा से डोल आई नाहीं एह साइत गर्मियान होइहें, देखते हमका हजार गारी देइहें।

(जाता है)

(दूसरी तरफ़ से दारोग़ा तीसमार ख़ाँ का परेशान आना)

तीसमार ख़ाँ—इन हरामियों के मारे खाना, पीना, सोना, सब हराम है। रोज़ ही दस-बीस का सर तोड़ता हूँ और दस-बीस को पकड़ कर जेलख़ाने भेजता हूँ, फिर भी जहाँ पीठ मोड़ी तहाँ फिर वही आवाज़ गूँज उठती है (चिल्ला कर)—"शराब पीना हराम है। विदेशी माल लेना हराम है × ×"

मुनुवा—(मकान से बाहर आकर) अब्बा जान आप हैं ? अले आप बी हलामी हो गए ? छचमुच ? (ताली बजाता हुआ) वाह ! वाह ! अब्बा हलामी ! अब्बा हलामी !!

तीसमार ख़ाँ—अबे ! अबे !! अबे !!! यह क्या ?

मुनुवा—लहने दीजिए। मैंने छुन लिया है। आप बी हलामी हैं।

तीसमार ख़ाँ—क्यों बे बदमाश, मैं हरामी हूँ ?

मुनुवा—पक्के हलामी। मैंने छुन लिया है। हाँ-हाँ मैंने छुन लिया है। आप अबी कहते थे छलाब पीना हलाम ! बिदेछी माल लेना हलाम !! जो हलाम कहे हलामी। अब्बा हलामी। (ताली बजा कर) वाह ! वाह ! अब्बा हलामी !!!

तीसमार ख़ाँ—(मुनुवा का कान पकड़ कर) हरामज़ादा सूअर का बच्चा, फिर नहीं मानता !

मुनुवा—(रोता हुआ) अले ! अले ! अले ! जो हलाम-हलाम चिल्लाते हैं, उनको तो आप लोज ही हलामी कहते हैं। मगल आपका कान कोई नहीं ऐंठता। हमाला काहे ऐंठते हैं ? ऊँ ऊँ ऊँ—आप बले खलाब हलामी हैं !!

तीसमार ख़ाँ—लाहौल बिलाक़ूवत ! इस दलील का मन्तक़ में भी जवाब न होगा। अच्छा चुप रह, चुप रह। ले एक पैसा ले और ख़बरदार ऐसी बात फिर मत कहना।

मुनुवा—(पैसा लेकर) ओहो ! तब तो आप बले अच्छे हलामी हैं। क्यों अब्बा ?

तीसमार ख़ाँ—(मारने को झपटता हुआ) फिर वही बेहूदापन ?

(मुनवा भाग जाता है)

तीसमार ख़ाँ—(अकेला) जाने दो। ग़लती की, जो मैंने इसे पैसा दिया। मुझे मारना चाहिए था। ख़ैर ! चौकीदार ! चौकीदार !......साला जवाब तक नहीं देता। यह कम्बख़्त पुराना नौकर क्या है, अपने को लाट साहब समझता है। चौकीदार !

कल्लू—(पर्दे के पीछे से) आयन हजूर ! तनी पगिया बाँध लेई।

तीसमार ख़ाँ—उफ़ ! ओ ! इसकी गुस्ताख़ी से नाक में दम है। मैं तो चीख़ रहा हूँ और साले को पगड़ी बाँधने की पड़ी है। चौकीदार !

कल्लू—(पर्दे के पीछे से) आयन-आयन हजूर। थोड़े अउर सबुर करी।

तीसमार ख़ाँ—रह हरामज़ादे। आज तेरी सारी गुस्ताख़ी का मज़ा चखाता हूँ।

(ग़ुस्से में जाता है। उसके बाद कल्लू जल्दी-जल्दी चिलम पीता हुआ भागता आता है और उसके पीछे तीसमार ख़ाँ मारने को झपटता हुआ आता है)

तीसमार ख़ाँ—(पीछा करता हुआ) क्यों बे सूअर के बच्चे ! तू चिलम पीता था या पगड़ी बाँधता था ?

कल्लू—(भागता हुआ) आपसे के कहिस रहा कि आप हमरे कोठरी में घुसुर के देखी कि हम चिलम पीइत है ?

तीसमार ख़ाँ—और ऊपर से ज़बान लड़ाता है। ठहर तो ज़रा हरामी के पिल्ले।

कल्लू—(भागता हुआ) हजूर गरियावे के मन होय वइसे गरियाए लेयो। मुल नगीचे न आयो। नाहीं कहूँ हमरे हाथ से चिलम छूट जाई तो आपे के देहवाँ बरे लागी।

तीसमार ख़ाँ—(रुक कर) अररररर ! अच्छा चिलम फेंक दे।

कल्लू—(रुक कर) बहुत अच्छा हजूर (जिधर तीसमार ख़ाँ खड़ा होता है उसी तरफ़ फेंकने का इशारा करता है।)

तीसमार ख़ाँ—अरे ! अरे ! इधर नहीं। (भाग कर दूसरी तरफ़ जाता है)

कल्लू—अच्छा तो ऐसी सही। (अब दूसरे तरफ़ फेंकना चाहता है)

तीसमार ख़ाँ—अबे...बे...बे...बे इधर नहीं, जल जाऊँगा।

कल्लू—आपे तो एहर-ओहर नाचित है हजूर। हम तो आपके घुड़की से अँधरियान हन। हमें ए साइत कहूँ कुछ सूझ पड़त है ? जब एहर फेकित है तब आप कहित है नाहीं, जब ओहर फेकित......

तीसमार ख़ाँ—हाँ-हाँ-हाँ, कहीं चिलम छोड़ न देना, मैं इसी तरफ़ खड़ा हूँ। ख़ूब मज़बूती से लिए रह।

कल्लू—का आपो पीयब ? पहिलवाँ काहे न बताएन। अच्छा लेई (चिलम आगे लिए बढ़ता है और तीसमार ख़ाँ घबड़ाया हुआ पिछड़ता है)

तीसमार ख़ाँ—अबे नहीं, नहीं, नहीं। दूर रह, दूर रह। ख़बरदार ! देख कहीं हाथ से तेरे छूट न जाए।

कल्लू—अरे ! तनी आप देखी तो। ख़ूब सुलगा है। आपके बाप मदारअली तो......

तीसमार ख़ाँ—चुप ! चुप ! चुप ! अब अगर बोलेगा तो मारे ढेलों के तेरी खोपड़ी तोड़ दूँगा। बस चुपचाप दूर खड़ा रह।

कल्लू—बहुत अच्छा हजूर।

तीसमार ख़ाँ—नाई बुलाने गया था ?

कल्लू—(चिलम फूँकता हुआ) जानो बुताय गा ! अब एका कहाँ रक्खे जाई। लाओ बाँध लेई। (कोयला फेंक कर चिलम को अपनी पगड़ी के सिरे में बाँध कर उस सिरे को अपनी कमर तक लटका देता है।)

तीसमार ख़ाँ—अरे ! बताता क्यों नहीं ? गया था ?......अबे ओ पगड़ी की दुम बाँधने वाले हरामज़ादे, मैं तुझी से पूछता हूँ।...फिर नहीं सुनता ?

कल्लू—सुनित तो है।

तीसमार ख़ाँ—तो जवाब क्यों नहीं देता ?

कल्लू—कसस बोली ?

तीसमार ख़ाँ—क्यों ?

कल्लू—हमें आपन खोपड़ी तोड़ावे के सौक नाहीं है। आपे तो कहेन है कि बोलेयो तो खोपड़ी फूटी।

तीसमार ख़ाँ—(मारने को झपटता हुआ) हात तेरे बेईमान की ऐसी-तैसी।......

कल्लू—अरे ! हजूर थमो-थमो-थमो।

तीसमार ख़ाँ—क्यों ? क्यों ? क्यों ?

कल्लू—गजब होय गवा ! अरे बाप रे, बाप रे बाप ! गजब होय गवा।

तीसमार ख़ाँ—(घबड़ा कर) क्या हुआ क्या ?

कल्लू—आप अस जोर से डपटेन कि हमरे घुमनी चढ़ गवा। हमार मूढ़ घूमे लाग। अब रोके नाहीं रुकत है। यह देखी।

(कल्लू तीसमार ख़ाँ के नज़दीक बड़े ज़ोर से घूमना शुरू करता है। और उसकी पगड़ी का चिलम बँधा हुआ सिरा घूमने से लम्बा होकर तीसमार ख़ाँ के बदन पर गदागद लगता है।)

तीसमार ख़ाँ—अरे ! अरे ! यह कौन सी आफ़त आगई। उफ़ !. खोपड़ी भिन्ना गई। हाय ! हाय ! पीठ टूट गई। अरे ! बाप रे बाप, मर गया।

(तीसमार ख़ाँ बचने के लिए इधर-उधर भागता है मगर कल्लू भी हर बार उसी के पास बना रहता है।)

तीसमार ख़ाँ—उफ़ ! उफ़ ! गर्दन-कन्धा सब ज़ख़्मी हो गया। हाय ! हाय ! अबे दूर हट मरदूद। उफ़ ! मार डाला।

कल्लू—का भवा ? का भवा सरकार ?

तीसमार ख़ाँ—(अपना बदन सहलाता हुआ) अब जो मेरे नज़दीक आएगा तो गोली मार दूँगा।

कल्लू—अरे ! हम तो पहिलवें मिनहा कीन रहा कि हमरे नगीचे न आयो सरकार, मुल आपे तो कूद-कूद हमरे पास आइत है।

तीसमार ख़ाँ—दूर हो कम्बख़्त । बदतमीज़ ! बेहूदा ! हट जा मेरी नज़रों के सामने से ।

कल्लू—बहुत अच्छा हजूर ।

तीसमार ख़ाँ—अबे ठहर । तूने नाई के बारे में कुछ नहीं बताया ।

कल्लू—(पलट कर आगे बढ़ता हुआ) भले चेत दिलायो सरकार ।......

तीसमार ख़ाँ—(पिछड़ता हुआ) अबे-अबे-अबे—बस दूर ही से बात कर । ख़बरदार ! इधर मत आना । हाँ वहीं से कह ।

कल्लू—अच्छा-अच्छा । मुल कही का आपन मूड़ । आप तो रोजे चलान कर करके सहरिया भर उजाड़ दीन है । जो कोऊ बचा है तौन देखते हमका कूकुर अस दुरियावत है । कहत हैं कि चलो-चलो । जे ससुर बेगुनाहन के कैद करावे, निबरे के मारे, बिन गारी के बात न करे ऊ सारे के मुँह न देखे जाब । तब कहाँ से हम नाऊ लाई...

तीसमार ख़ाँ—अबे चुप मरदूद । तमीज़ से बातें कर, नहीं ज़बान पकड़ के खींच लूँगा ।

कल्लू—आपे तो पूछित है सरकार । हम का करी ?

तीसमार ख़ाँ—कौन कम्बख़्त ऐसा कहता है बता तो सही ।

कल्लू—जेहके जीव गिरात है । जेहके काका-बाबा जेलखाना मा हन ।

तीसमार ख़ाँ—अबे गदहे तुझे उन हरामज़ादों के पास किसने भेजा था । तुझे तो मैंने नाई के पास जाने को कहा था ।

कल्लू—हाय ! दादा देसवा भर तो रोअत है । नाऊ का कहूँ देसवा से अलग बसे हैं ?

तीसमार ख़ाँ—उल्लू के पट्ठे ! हरामज़ादे !! सीधी तरह जवाब न देगा ? मैं पूछता हूँ नाई की बात और तो यह मरदूद बकने लगा अल्लम गल्लम । ज़रा पाजीपन देखो !

कल्लू—हजूर नउवन के बात आप न सुनी । नाहीं मारे रिस के आप अउर अगियाबेताल हो जाब । का कही वै लोग तो कहत हैं कि नउवे अब उनकर बार न बनइहें । तब हम बोलेन कि हमरे सरकार के दाढ़ी कसस मूड़ी जाई । एह पर जवाब मिला कि झाँवा से मुँह रगड़ लें, चिकन होइ जाए । हम कहेन वाह ! पन्द्रहइयन से दाढ़ी बाढ़ी है जस भटकटइया के झाड़ी । कहूँ झावाँ से साफ़ होए सकत है ? तब वे बोले दियासलाई बार के लगाय दो । बर जाए छुट्टी मिले ।

तीसमार ख़ाँ—(मारने को झपटता हुआ) चुप बदतमीज़ बेहूदा बदमाश......

कल्लू—(एकाएक घूमने लगता है) अरे ! अरे ! अरे ! फिरू घुमनी चढ़े लाग ।

तीसमार ख़ाँ—(पिछड़ता हुआ) ब...ब...ब... बस बस अबे ज़रा ठहर जा । ठहर जा ।

कल्लू—बहुत अच्छा सरकार, मुल जब आप खौलियाय के झपटित है तो हमार जीव मारे घबड़ेई के चकराय उठत है । बस हम चकराघिन्नी काटे लागित है ।

तीसमार ख़ाँ—तब तू बेवक़ूफ़ी की बातें क्यों करता रहता है ? तूने उन बदमाशों को मारा क्यों नहीं ? जानता नहीं कि तीसमार ख़ाँ की शान में इस तरह कहना खेल नहीं है । सालों को एकदम......

कल्लू—जेहल पठाय देई । यही न ? यह तो बाएँ हाथ का खेल है । मुल एहसे वै लोग अब डेराते नहीं । यही तो मुसकिल है ।

तीसमार ख़ाँ—नहीं बे । एकदम तोपदम करा दूँ ।

कल्लू—काहे नाहीं । आपके बड़ा अख़्तियार है । साहब आपका बहुत मानत है । आप तो उनके अस नकुना के बार हन कि जो आप उनसे दिन कही तो दिन जानें रात तो रात मानें । तब्बे तो देसवा आपके नाव पर का कही......

तीसमार ख़ाँ—फिर देश-देश बकने लगा, उल्लू का पट्ठा, तेरे देस की ऐसी-तैसी करूँ ।

कल्लू—ऊ तो आप करते हन । मुल सरकार का यू हमरे देस है आपके न होय ? आप हीयाँ नाहीं पैदा भयन हैं ?

तीसमार ख़ाँ—चुप बदमाश । देश भाड़ में जाय या जहन्नम में, हमसे मतलब ?

कल्लू—मतलब काहे नाहीं । देस महतारी-बाप कहा जात है । अपने दाना-पानी से पालत-पोसत है ।

तीसमार ख़ाँ—अजब बेवक़ूफ़ है । जानता नहीं हम हाकिम हैं, अफ़सर हैं, देस (क्या माँ-बाप) को भी गोली मारते हैं ।

कल्लू—फुरे कहेन । यह तो हम बिसर गैन रहा । तब तो आप गुसइयाँ का भी कुछ न समझित होबे । आपके बड़ा अख़्तियार है ।

तीसमार ख़ाँ—क्यों बे ? यह क्या बकता है ?

कल्लू—कुछ नाहीं । यही कहित है कि जे जस करत है वह बस कब्बो न पावत है ।

तीसमार ख़ाँ—तेरा सर । उल्लू कहीं का । भला तीसमार ख़ाँ का भी कोई कुछ बिगाड़ सकता है, जिसके नाम से बड़ों-बड़ों के होश गुम हो जाते हैं ।

कल्लू—यू न कही सरकार । आप तो पेड़े के पाता अस असमाने निहारित है । मुल जब पेड़े न रहि जाई तब पाता के कौन हवाल होई ? आपे सोची । आज नाऊ बिना आपके दाढ़ी अपने करम पर रोवत है जो कहूँ नउवन के देखा देखी भिस्ती, बवरची, दर्ज़ी, धोबी, भङ्गी सभै आपसे मुँह मोड़ लें तो तीसमार खाँव अपने मूड़े पर आपन मैला लादे कसस कौनो पर तेहा दिखाइहैं—

तीसमार ख़ाँ—क्यों बे बदमाश, तू मुझको लेक्चर देता है । इतनी हिम्मत ! ठहर जा अभी तेरा भी चालान करता हूँ ।

कल्लू—हमार चलान ? काहे हजूर ? हम कौन अपराध कीन है ?

तीसमार ख़ाँ—जानता नहीं हरामज़ादे कि लेक्चर देना हमने जुर्म कर रक्खा है । अब बचा मेरे फन्दे से कहाँ निकल कर जा सकते हो ? तेरी ऐसी-तैसी करूँ । बहुत दिनों से तूने सब को परेशान कर रक्खा था ।

कल्लू—तो के लिक्चर दिहिस है ? हम तो हजूर से साँच अउर नीक बात कहत रहेन ।

तीसमार ख़ाँ—बस-बस अपनी सफ़ाई अपने घर रख । अब आ गए बेटा तुम जुर्म के फन्दे में । सारी हेकड़ी का मज़ा मिल जाएगा ।

कल्लू—हाय दादा ! आप साँचो बोलब आफत कैदीन ? दयू मुँह दिहिन है साँच बोले के लिए, तौनो में आप ताला लगाय दीन ? अस जबरजस्ती ? चोरी-बदमासी, लूट-मार तो ज़ुलुम जानत रहेन । मुल नीक बात कहब और साँच बोलब कौन ढङ्ग के ज़ुलुम है, हम समझिन नाहीं पाइत है ।

(बटेर ख़ाँ कॉन्स्टेबिल का आना)

तीसमार ख़ाँ—अभी समझ में आता है ।...कौन बटेर ख़ाँ ? ख़ूब आए । बड़े मौक़े से आए । लो इस हरामज़ादे को फ़ौरन गिरफ़्तार करो ।

बटेर ख़ाँ—इसे हज़ूर ? यह तो बड़ा ही बेहूदा आदमी है । मैं इसकी ख़ुद शिकायत करने वाला था । यह जितना ही पुराना पड़ता जाता है, उतना ही गुस्ताख़ होता जाता है । सभों के नाक में दम किए हुए है । इसकी गिरफ़्तारी का हुक्म निकाल कर हज़ूर ने सचमुच बड़ा काम किया ।

कल्लू—यह देखो । थोड़ करें गाजी मियाँ बहुत करें डफाली । तब ससुर हीयाँ अन्धेर न मचे तो होय का ?

बटेर ख़ाँ—देखिए हज़ूर इसकी बातें ।

तीसमार ख़ाँ—अरे ! यह बड़ा ही बदमाश है । यह कम्बख़्त लेक्चर देता था—और मुझको !

बटेर ख़ाँ—हाँ ! ज़रूर देता होगा हज़ूर । देखिए खद्दर की धोती भी पहने हुए है ।

कल्लू—तो तोहरे बाप का का ? हम गरीब आदमी मोट-झोट न पहनी तो का कहूँ डाका डालित है कि मखमल के भगवा बाँधी । अपने घरे एका काता-बीना तो पहनी न ?

तीसमार ख़ाँ—ग़ज़ब ख़ुदा का, यह तो सचमुच खद्दर पहने हुए है और ख़ुद बनाता भी है । यह मुझे मालूम ही न था । उफ़ ! ओ इस सूअर के बच्चे को तो फाँसी की सज़ा मिलनी चाहिए ।

कल्लू—काहे ? का पहिरबो-ओढ़बो ज़ुलुम है ? अस अन्धेर तो हम कब्बो नाहीं देखेन रहा । अपने हीयाँ के बना कपड़ा हम न पहिरे पाइब तो दादा कुछ दिन माँ अपने हाथ के पोई रोटियो खाब मुसकिल होइ जाई । आप लोगे यहू के ज़ुलुम कै देब । नवा-नवा मनई नवा-नवा कानून !!

तीसमार ख़ाँ—(अपने कान उँगलियों से बन्द करके) उफ़ ! ओ ! यह कमबख़्त तो फिर लेक्चर देने लगा । अरे बटेर ख़ाँ, इस हरामज़ादे को जल्दी गिरफ़्तार करो जल्दी ! नहीं तो इसका लेक्चर कहीं असर न कर जाए ।

बटेर ख़ाँ—अभी लीजिए । चल बे गिरफ़्तार हो जा ।

कल्लू—तनी नकुना पर हाथ रख के बोलो । तोरे मेहरा की । हमहूँ का सुदेसी के बल्लमटेर होई कि हमका गिरिपतार होय के सौक है अउर हम कान दबाए चुपचाप गिरिपतार होय जाब ? बस नगीचे आयो न । कहे देइत है । ऊ दिन भूल गयो जब भाँटा अस नानमून रह्यो और चौक में जुआ खेलत हम तूका पकड़ेन रहा और तोहार बाप डल्लू भिस्ती हमरे गोड़े गिरिन तब खाली दुई लात लगाय के तूका हम छाड़ दिया रहा । नाहीं तो तूका भला नौकरी मिलत और आज तू सिपाही होय के फारसी भुँकतो है अउर हमरे जड़ खोदत्यो ?

तीसमार ख़ाँ—(कानो से अपनी उँगली हटा कर) बटेर खाँ, क्यों यह क्या कहता है ? गिरफ़्तार क्यों नहीं करते ?

बटेर ख़ाँ—हज़ूर यह अपने को गिरफ़्तार नहीं करने देता । गाली दे रहा है । बिना गारद बुलाए इसका गिरफ़्तार करना ठीक नहीं है । आदमी बहुत सरकश है ।

तीसमार ख़ाँ—आयँ ! यह हुकुमअदूली करता है ? अच्छा अभी जाकर मैं गारद भेजता हूँ । जब तक तुम इसकी निगहबानी करो ।

(जाना चाहता है)

कल्लू—(बटेर ख़ाँ से) चियूँटी के मारे के लिए भल तोप बताय दियो । अच्छा इनका जाय दो तब बताइत है ।

बटेर ख़ाँ—(तीसमार ख़ाँ को दौड़ कर रोकता हुआ) अरे ! हजूर आप तकलीफ़ न करें, मैं अभी गारद साथ लिए आता हूँ ।

(ख़ुद जाना चाहता है)

कल्लू—मारे बबड़ेई के हमार मूड़ बस अब घुमहिन चाहत है ।

तीसमार ख़ाँ—(बटेर ख़ाँ को दौड़ कर रोकता हुआ) नहीं-नहीं, अब तो मेरा ही जाना ठीक है ।

बटेर ख़ाँ—नहीं हुज़ूर मुझे......

तीसमार ख़ाँ—नहीं जी मैं .....

(दोनों एक-दूसरे को रोकते हैं)

कल्लू—अच्छा कोई न जाए । हम ही जाइत है सरकार । हीयाँ ठाड़े-ठाड़े हमरे घुमनी चढ़त है । अब रहाइस नाहीं होत है ।

(शेष मैटर ३३ पृष्ठ पर देखिए)

विद्याविनोद-ग्रन्थमाला

की

विख्यात पुस्तकें

मनोरमा

यह वही उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में क्रान्ति मचा दी थी !! बाल और वृद्ध-विवाह से होने वाले भयङ्कर दुष्परिणामों का इसमें नग्न-चित्र खींचा गया है। साथ ही हिन्दू-विधवा का आदर्श जीवन और पतिव्रत-धर्म का बहुत सुन्दर वर्णन है। मूल्य केवल २॥)

सतीदाह

धर्म के नाम पर स्त्रियों के ऊपर होने वाले पैशाचिक अत्याचारों का यह रक्त-रञ्जित इतिहास है। इसके एक-एक शब्द में वह वेदना भरी हुई है कि पढ़ते ही आँसुओं की धारा बहने लगेगी। किस प्रकार स्त्रियाँ सती होने को बाध्य की जाती थीं, जलती हुई चिता से भागने पर उनके ऊपर कैसे भीषण प्रहार किए जाते थे—इसका पूर्ण वर्णन आपको इसमें मिलेगा ! सजिल्द एवं सचित्र, मूल्य २॥)

आशा पर पानी

यह एक छोटा सा शिक्षाप्रद, सामाजिक उपन्यास है। मनुष्य के जीवन में सुख-दुख का दौरा किस प्रकार होता है; विपत्ति के समय मनुष्य को कैसी-कैसी कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ती हैं; परस्पर की फूट एवं वैमनस्य का कैसा भयङ्कर परिणाम होता है—इन सब बातों का इसमें बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलेगा। क्षमाशीलता, स्वार्थ-त्याग और परोपकार का बहुत ही अच्छा चित्र खींचा गया है। मूल्य केवल ॥=) स्थायी ग्राहकों से ।=)॥

सफल माता

गर्भावस्था से लेकर ९-१० वर्ष तक के बच्चे की देख-भाल एवं सेवा-सुश्रूषा का ज्ञान प्रदान करने वाली अनोखी पुस्तक। माताओं के लिए यह पुस्तक अत्यन्त आवश्यक है। एक बार अवश्य पढ़िए तथा अपनी धर्मपत्नी को पढ़ाइए ! मूल्य केवल २)

अपराधी

यह बड़ा ही क्रान्तिकारी, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है। एक सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा किस प्रकार नर-पिशाचों के चङ्गुल में पड़ कर पतित होती है और अन्त में उसे वेश्या होना पड़ता है—इसका बहुत ही रोमाञ्चकारी वर्णन किया गया है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों का जनाज़ा है! भाषा बहुत, सरल रोचक एवं मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

शुक्र और सोफ़िया

इस पुस्तक में पूर्व और पश्चिम का आदर्श और दोनों की तुलना बड़े मनोहर ढङ्ग से की गई है। यूरोप की विलास-प्रियता और उससे होने वाली अशान्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है। शुक्र और सोफ़िया का आदर्श जीवन, उनकी निस्वार्थ देश-सेवा; दोनों का प्रणय और अन्त में संन्यास लेना· ऐसी रोमाञ्चकारी कहानी है कि पढ़ते ही हृदय गद्गद हो जाता है। सजिल्द पुस्तक का मू० २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

दक्षिण अफ्रिका के मेरे अनुभव

जिन प्रवासी भाइयों की करुण स्थिति देख कर महात्मा गाँधी; मि० सी० एफ० एण्ड्रयूज़ और मिस्टर पोलक आदि बड़े-बड़े नेताओं ने ख़ून के आँसू बहाए हैं; उन्हीं भाइयों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने वाले पं० भवानीदयाल जी ने अपना सारा अनुभव इस पुस्तक में चित्रित किया है। पुस्तक को पढ़ने से प्रवासी भाइयों की सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति तथा वहाँ के गौराङ्ग प्रभुओं की स्वार्थ-परता, अन्याय एवं अत्याचार का पूरा दृश्य देखने को मिलता है। एक बार अवश्य पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए !! भाषा सरल व मुहावरेदार है; मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

शिशु-हत्या और नरमेध-प्रथा

इस पुस्तक में उस जघन्य एवं पैशाचिक कुप्रथा का वर्णन किया गया है, जिसके कारण किसी काल में असंख्य बालकों को मृत्यु के घाट उतार दिया गया। अविद्या, स्वार्थ एवं अन्धविश्वास के कारण उस समय जो भयङ्कर अत्याचार किए जाते थे, उनके स्मरण मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। एक बार पुस्तक को अवश्य पढ़िए और उस समय की स्थिति पर दो-चार आँसू बहाइए !! मूल्य केवल ।)

नयन के प्रति

इस पुस्तक में देश की वर्तमान दीनावस्था को लक्ष्य करके बहुत ही पश्चात्ताप एवं अश्रुपात किया गया है। पुस्तक पद्यमय है। भाषा, भाव एवं काव्य की दृष्टि से पुस्तक बहुत ही सुन्दर है। जिन ओज तथा करुणापूर्ण शब्दों में नयनों को धिक्कारा एवं लज्जित किया गया है, वह देखने ही की चीज़ है—व्यक्त करने की नहीं। एक बार अवश्य पढ़िए। दो रङ्गों में छपी, सुन्दर एवं दर्शनीय पुस्तक का मूल्य केवल ।=) स्थायी ग्राहकों से ।)॥

प्राणनाथ

यह वही उपन्यास है, जिसकी ६००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। इसमें सामाजिक कुरीतियों का ऐसा भण्डाफोड़ किया गया है कि पढ़ते ही हृदय दहल जायगा। नाना प्रकार के पाखण्ड, एवं अत्याचार देख कर आप आँसू बहाए बिना न रहेंगे। मूल्य २॥)

गौरी-शंकर

आदर्श भावों से भरा हुआ यह सामाजिक उपन्यास है। एक साहसी बालिका किस प्रकार दुष्ट पुरुषों को पराजित करके अपना मार्ग साफ़ कर लेती है; एक वेश्या की सहायता से वह अपना विवाह करके किस प्रकार आदर्श जीवन व्यतीत करती है—इसका बहुत सुन्दर और रोमाञ्चकारी वर्णन आपको इसमें मिलेगा। भाषा अत्यन्त सरल व मुहावरेदार है, मूल्य ॥=) स्थायी ग्राहकों से ।≡)॥

मानिक-मन्दिर

यह बहुत ही सुन्दर, रोचक, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है! इसके पढ़ने से आपको पता लगेगा कि विषय-वासना के भक्त कैसे चञ्चल, अस्थिर-चित्त और मधुर-भाषी होते हैं। अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए वे कैसे-कैसे जघन्य कार्य तक कर डालते हैं और अन्त में फिर उनकी कैसी दुर्दशा होती है—इसका बहुत ही सुन्दर तथा विस्तृत वर्णन किया गया है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल तथा मधुर है। मूल्य २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

गल्प-विनोद

इस पुस्तक में बहुत ही सुन्दर और रोचक सामाजिक कहानियों का अपूर्व संग्रह है। सभी कहानियाँ शिक्षाप्रद हैं और उनमें भिन्न-भिन्न सामाजिक कुरीतियों का नग्न-चित्र खींचा गया है। भाषा अत्यन्त सरल व मुहावरेदार; मूल्य केवल १); स्थायी ग्राहकों से ॥।) मात्र !

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद
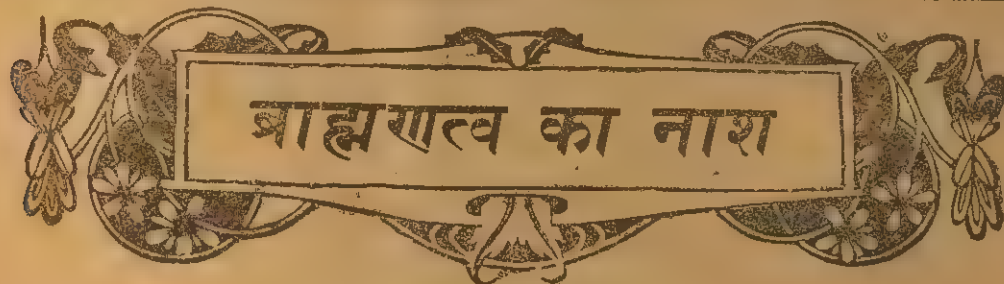
ब्राह्मणत्व का नाश

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

मेरी यह खुली राय है कि जब तक ब्राह्मणत्व का जड़-मूल से नाश न हो जायगा, तब तक हिन्दू-राष्ट्र का सङ्गठन होना किसी भी भाँति सम्भव नहीं। ये शब्द बहुत कठोर हैं, परन्तु आज २१ वर्ष से मैं इन्हें छाती में छिपाए बैठा हूँ। ये शब्द मैं दुनिया—ख़ास कर हिन्दू-समाज—के सम्मुख रक्खूँ या नहीं—इसकी विवेचना मैंने बड़ी ही बेचैनी से गत १० वर्षों में की है। मेरे ये शब्द नए, भाव कठोर और कानों को असह्य हो सकते हैं—परन्तु ऐ हिन्दू-जाति के बुद्धिमान भाइयो! ज़रा इस बात पर तो विचार करो, कि जो जाति की जाति यह दावा करे, कि हम चाहे जैसे भी मूर्ख, पाखण्डी, धूर्त, नीच, शराबी, व्यभिचारी, लम्पट, ख़ूनी, कलङ्की, चोर, लुटेरे, क़साई और विश्वासघाती एवं ग़ुलाम-चाकर हों; किन्तु फिर भी संसार के मनुष्य भर में सब से श्रेष्ठ और सभी के वन्दनीय हैं; यह श्रेष्ठता हमारा जन्म-अधिकार है; और हमसे भिन्न अन्य कोई भी मनुष्य, चाहे जैसा श्रेष्ठ, विद्वान, सदाचारी, धर्मात्मा, त्यागी, तपस्वी हो—वह हमसे निकृष्ट ही है—उसके प्रति उपरोक्त घृणा न प्रकट की जाय तो किया क्या जाय?

किसने हिन्दू-जाति को दिमाग़ी ग़ुलामी में फँसा कर इस लोक और परलोक के स्वार्थों की स्वतन्त्र चिन्तना के अधिकार छीन लिए हैं? इसी ब्राह्मणत्व ने! किसने असंख्य अन्ध-विश्वासों और ढकोसलों की सृष्टि करके हिन्दू-जाति को प्रपञ्ची बनाया है? इसी ब्राह्मणत्व ने! किसने स्वर्गों-नरकों के झूठे मनोरञ्जक और भयानक बच्चों के से क़िस्से बना कर पुनर्जन्म के दार्शनिक सिद्धान्तों पर दूर तक विचार करने वाली आज दिन हमारी सन्तान को कुसंस्कारी और वहमी बना दिया? इसी ब्राह्मणत्व ने! किसने हिन्दू-समाज को ऊँच-नीच, छुआछूत का भेद सिखा कर संसार की महाजातियों के मन में विरक्ति उत्पन्न की? ब्राह्मणत्व ने! किसने यन्त्र-तन्त्र, गण्डे-तावीज़, ढोंग, पाखण्ड, झूठ और अन्ध-विश्वासों की भावना को हिन्दू-सन्तान की नस-नस में भर दिया? ब्राह्मणत्व ने! किसने दान और यज्ञों के पाखण्ड और माहात्म्यों के थोथे आडम्बर में बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजाओं से व्यर्थ दिग्विजय और अश्व-रक्षा में रक्तपात और लूट-पाट करा कर सर्वस्व दक्षिणा में दे देने की बेवक़ूफ़ी सिखाई? ब्राह्मणत्व ने! किसने आज भी हिन्दू-जाति को कस कर पकड़ रक्खा है और नहीं उभरने देता? ब्राह्मणत्व ने! आज मैं ऐसे असंख्य विद्वान, सदाचारी, देश-सेवक और योग्य पुरुषों को बता सकता हूँ कि जिनकी बारह आना योग्यता इसलिए निकम्मी हो गई है, कि वे दुर्भाग्य से इस ब्राह्मणत्व के बोझ से दबे हुए हैं। ब्राह्मणत्व के बनाए हुए नियम, ग्रन्थ, विश्वास हिन्दू-समाज को पद-पद पर कायर, मूर्ख और मग़रूर बनाए हुए हैं!!

मध्यकाल में ब्राह्मणत्व का राजसत्ता पर असाध्य अधिकार था। और जन-समाज उनके विधान के आगे सिर न उठा सकता था। मनु आदि स्मृतियों में; जो वास्तव में तत्कालीन शासन-विधान की पुस्तकें थीं, ब्राह्मणत्व के प्रति अत्यन्त घृणास्पद पक्षपात प्रदर्शित किया है। जिस अपराध पर अन्य जाति के किसी भी पुरुष को प्राण-दण्ड देना चाहिए, उस दण्ड पर ब्राह्मण को केवल कुछ रुपए जुर्माने कर देने चाहिए। मनु के पक्ष-पातपूर्ण वर्णन तो देखिए—

"पृथ्वी पर ब्राह्मण का जन्म लेना ही श्रेष्ठ होता है। वह सब प्राणियों का स्वामी और धर्म का रक्षक है।" अ० १; श्लोक ६६।

"जगत में जो कुछ है—वह सब ब्राह्मण का है, वह श्रेष्ठ होने के कारण सबको ग्रहण करने का अधिकारी है।" अ० १; श्लोक १००।

"ब्राह्मण चाहे दान में प्राप्त किया अन्न खाय और वस्त्र पहने—यह वस्तुएँ उसकी अपनी ही हैं। और अन्य पुरुष चाहे अपना ही अन्न खाय या वस्त्र पहने, वे ब्राह्मणों का दिया खाते हैं।" अ० १; श्लोक १०१।

"विद्वान हो या मूर्ख, ब्राह्मण तो महान देवता ही है, अग्नि चाहे यज्ञ की हो या साधारण—वह देवता तो है ही।" अ० ६; श्लोक ३१७।

"जुर्माने में प्राप्त किया तमाम राज-ख़ज़ाना ब्राह्मण को और राज्य, पुत्र को देकर राजा युद्ध में प्राण त्यागे।" अ० ६; श्लोक ३२३।

"प्राणान्तक दण्ड के स्थान में ब्राह्मण का सिर मूँड़ देना ही काफ़ी है। पर औरों को प्राण-दण्ड ही देना चाहिए।" अ० ८; श्लोक ३७६।

"ब्राह्मण चाहे सब पापों में स्थित हो, फिर भी उसका वध करना उचित नहीं। उसे सब धन सहित और शरीर दण्ड-रहित राज्य से निकाल दे।" अ० ८; श्लोक ३८०।

क्या कोई भी बुद्धिमान इस प्रकार के पक्षपातों को न्याय का घातक मानने से इन्कार कर सकता है। इतिहास में इस बात के रोमाञ्चकारी प्रमाण हैं कि किस प्रकार ब्राह्मणत्व की सत्ता की ओट में अत्याचार और अन्यायाचरण किए गए हैं। राजा हरिश्चन्द्र को ठगना और उसे स्त्री-पुत्रों तक को बेचने और स्वयं भङ्गी की दासता तक करने को विवश करना—फिर भी कठोरता का त्याग न करना, प्रसिद्ध घटना है! आज लक्षावधि प्राणी हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा और दान-धर्म की प्रशंसा में आँसू बहाते और धन्य-धन्य करते हैं, परन्तु कोई भी उस निष्ठुर, स्वार्थी भिक्षुक के प्रति तिरस्कार के वाक्य नहीं कहता। कवि ने उस निष्ठुरता को इन्द्र आदि की कल्पना से मिला कर धर्म-परीक्षा का स्वरूप दिया है! परन्तु आज हिन्दू-घरों में ऐसे अन्ध-विश्वासी बच्चे नहीं पैदा होते, जो इन्द्र, देवता, अप्सरा और मृतक बालक के जी जाने, एवं नगर सहित हरिश्चन्द्र को स्वर्ग लोक जाने की कोरी कल्पना को सत्य घटना से पृथक् न कर सकें। ये कल्पनाएँ यदि निकाल दी जायँ तो कथा सिर्फ़ इतनी ही रह जाती है कि विश्वामित्र ने राजा से दान माँगा, राजा ने स्वभावानुसार यथेच्छ माँगने को कहा। विश्वामित्र ने समस्त राज्य माँगा, और वह दे दिया गया। परन्तु दान लेकर कोई ब्राह्मण अहसानमन्द नहीं होता। वह तो मानो ब्राह्मण पर भार है, वह उस भार उठाने की मज़दूरी दक्षिणा चाहता है। मानो ब्राह्मण को केवल दक्षिणा ही मिलती है और उसीके लोभ से वह दान का भार उठाता है। परन्तु दान लेने में ब्राह्मण का कुछ लाभ नहीं है—दाता का ही परलोक बनता है। इसलिए विश्वामित्र दक्षिणा माँगते हैं। और राजा को जो ज़िल्लत उठानी पड़ती है—वह प्रकट ही है!

इस कथानक के दूसरे पहलू पर क्या हम विचार नहीं कर सकते? राजा ने जो कष्ट भोगे और ज़िल्लत उठाई—वह तो प्रकट है। पर बिना ऐसे पवित्र राजा के प्रजा की क्या दशा हुई होगी—इस पर तो विचारिए। परन्तु भिक्षुक के इस असाध्य अधिकार को तो देखिए कि जिस धैर्य से उसके अत्याचार हरिश्चन्द्र ने सहे, उसी धैर्य से आज तक लाखों वर्ष से हिन्दू संस्कृति ने सहे और उसके विरुद्ध चूँ भी न की! कदाचित इस कर्म के लिए इस धृष्ट भिक्षुक की धर्षणा करने वाला मैं ही पहला व्यक्ति हूँगा, जिस पर यह लेख पढ़ते-पढ़ते लाखों आँखें क्रोध से लाल हो जावेंगी!

पर मुझे विचार तो यह करना है कि क्या इतनी नम्रता से राज्य-दान कर देना हरिश्चन्द्र को उचित था और उसे क्या इसका अधिकार था? राज्य तो राजा की सम्पत्ति नहीं। वह तो राष्ट्र की सम्पत्ति है; राजा उसका रक्षक और व्यवस्थापक है। वह प्रजा से धन लेकर कोष में सञ्चित करता है—इसलिए कि उसे प्रजा के सर्व-हितकारी कार्यों में ख़र्च करे, न कि इसलिए कि उसे मूर्ख भावुक की भाँति भिखारियों को दे दे। फिर वे भिखारी चाहे विश्वामित्र जैसे ऋषि ही क्यों न हों। हमें पुराणों के पढ़ने से पता लगता है कि अन्त में वह समय आया था कि बुद्धिमानों ने बलपूर्वक इस बात का निर्णय किया कि राजकोष राजा की सम्पत्ति नहीं है और उसे दान कर देने का या लुटा देने का राजा को कोई अधिकार नहीं है। मैं हैरान तो इस बात पर हूँ कि जो राजा इस प्रकार दान देने में शेख़ी समझते थे और जिनके द्वार पर ब्राह्मणों की भीड़ बनी रहती थी, वे राज्य की व्यवस्था सुधारने में क्या व्यय करते थे। और आज जब हम देखते हैं कि हमारी प्रबल गवर्नमेण्ट से लेकर, साधारण रियासत के अधिकारी तक, सदैव रुपए की तङ्गी से यथेष्ट सड़क, नहर, प्रबन्ध आदि की व्यवस्था नहीं कर सकते तो—वे कहाँ से इतना धन प्राप्त करते होंगे कि इन निठल्लों को भी मुँह-माँगा दें और राज्य-प्रबन्ध भी करें?

पर सब से अधिक सोचने की बात तो यह है कि राजा हरिश्चन्द्र और उन जैसे अनेकों धर्मात्मा क्षत्रियों के मन में इस प्रकार दान देने की भावना ही कैसे पैदा हुई? हमारे पास इसका एक ही उत्तर है कि ब्राह्मणत्व ने उनके मस्तिष्क को ग़ुलाम बना दिया और वे इसके विरुद्ध सोच ही नहीं सकते थे कि यह एक परम प्रशंसनीय और राजाओं को शोभा देने योग्य कार्य है।

अब मैं ब्राह्मणत्व की सर्व-श्रेष्ठता पर भी ज़रा विचार करना चाहता हूँ। जन्म के अधिकारों की बात ज़रा पीछे छोड़ दी जाय। गुण-कर्मों पर मैं विचार किया चाहता हूँ। आमतौर से यह कहा जाता है कि ब्राह्मण का अर्थ है—"ब्रह्म का जानने वाला"। मेरा कथन यह है कि उनका यह अर्थ सर्वथा भ्रमपूर्ण है। ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्मज्ञ कहलाता है, ब्राह्मण नहीं! उपनिषदों और अन्य प्राचीन ग्रन्थों को देखने से हमें यह पूर्ण रीति से विश्वास हो गया है कि ब्राह्मण प्राचीन काल में ब्रह्म-विद्या से अनभिज्ञ थे। ब्रह्म-विद्या के जानकार तो क्षत्रिय लोग थे और वे यत्नपूर्वक ब्राह्मणों से यह विद्या छिपाया करते थे, जैसा कि उपनिषदों से प्रकट है। यहाँ हम इस विचार की पुष्टि में छान्दोग्य उपनिषद का प्रमाण देते हैं।

"श्वेतकेतु आरुणेय, पाञ्चालों की एक सभा में गया। वहाँ प्रवाहन जैवलि राजा ने उससे पाँच प्रश्न किए, पर वह एक का भी उत्तर नहीं दे सका—क्योंकि यह ब्रह्म-विद्या सम्बन्धी प्रश्न थे। तब वह लज्जित होकर अपने पिता के पास आया और बोला कि उस राजन्य ने मुझसे पाँच प्रश्न किए, पर मैं एक का भी उत्तर

न दे सका। उसका पिता गौतम बोला—हे पुत्र ! इस विद्या को तो मैं भी नहीं जानता। तब वह पुत्र की सम्मति से समिधा हाथ में लेकर शिष्य की भाँति राजा के पास गया और कहा कि आप मुझे ब्रह्म-ज्ञान सिखाइए। तब राजा ने उसे ज्ञान दिया, और कहा—हे गौतम, यह ज्ञान तुम्हारे पहिले किसी दूसरे ब्राह्मण को प्राप्त नहीं था—ब्राह्मणों में सबसे प्रथम मैं तुम्हीं को यह विद्या सिखाता हूँ। क्योंकि यह विद्या क्षत्रिय जाति की ही है।" (छान्दोग्य उपनिषद् ५।६)

मेरे अभिप्राय को प्रकट करने के लिए यह अकेला ही उदाहरण यहाँ यथेष्ट है। अब मनुस्मृति के वर्णित ब्राह्मणों के लक्षण सुनिए।

वेद पढ़ना-पढ़ाना; दान लेना और देना; यज्ञ करना और कराना—ये ब्राह्मण के लक्षण हैं। अब ज़रा ग़ौर करके देखा जाय इनमें मनुष्य जाति में सर्वश्रेष्ठ होने योग्य कौन सा गुण है। लजा की बात तो यह है कि दान लेना भी गुणों में समझा गया है। जबकि कोई भी आत्माभिमानी किसी का दान नहीं स्वीकार कर सकता। परन्तु अधिक से अधिक वेद पढ़ना ऐसा गुण हो सकता है, जो ब्राह्मणत्व की प्रतिष्ठा बढ़ावे। परन्तु इस वेद पढ़ने का मूल सिर्फ़ उन्हें कण्ठ याद रखना और उनके द्वारा भिन्न-भिन्न आडम्बरों के द्वारा यज्ञ रचाना था—उनका अर्थ समझना नहीं।

गीता में जो ब्राह्मणत्व के लक्षण लिखे हैं, वे मनु की अपेक्षा कहीं उच्च हैं।

"शम, दम, तप, पवित्रता, क्षमा, सरलता, शास्त्र-ज्ञान, अनुभव-ज्ञान और आस्तिकता—ये ब्राह्मण के कर्म हैं।" गीता अ० १८; श्लोक ४२।

गीता-वर्णित गुणों से यह पता लगता है कि गीता का उद्गाता ब्राह्मणत्व को सुसंस्कृत करना चाहता था। यह ध्यान में रखने योग्य बात है कि वह ब्राह्मणत्व के ये स्वाभाविक कर्म बताता है।

अब क्या मैं यह पूछ सकता हूँ कि उत्कृष्ट मानवीय गुण हरिश्चन्द्र राजा में नहीं थे। यदि ब्राह्मणत्व श्रेष्ठ था तो क्यों राजा हरिश्चन्द्र को वह नहीं प्रदान किया गया? क्या युधिष्ठिर, विदुर, श्रीकृष्ण, राम और भर्तृहरि आदि-आदि व्यक्ति शम, दम, त्याग, वैराग्य, ज्ञान की चरम सीमा में पहुँचे हुए पुरुष न थे? परन्तु खेद की बात तो यह है कि वे ब्राह्मणत्व की अपेक्षा श्रेष्ठ स्वीकार ही नहीं किए गए।

मैं अभी आपको समझाऊँगा कि ब्राह्मणत्व की श्रेष्ठता में भेद क्या है। परन्तु मैं अब एक और उदाहरण आपको दूँगा। वह शतपथ ब्राह्मण का है। सुनिए :—

विदेह जनक की भेंट कुछ ऐसे ब्राह्मणों से हुई, जो अभी आए थे। ये श्वेतकेतु आरुणेय, सोमसुष्म सत्ययज्ञि और याज्ञवल्क्य थे। उसने उनसे पूछा—क्या तुम अग्निहोत्र करना जानते हो? तीनों ब्राह्मणों ने अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर दिया। पर ठीक उत्तर किसी का भी न था। याज्ञवल्क्य का उत्तर यथार्थ बात के बहुत निकट था। पर पूर्णतया ठीक न था। जनक ने उनसे ऐसा ही कह दिया और रथ पर चढ़ कर चल दिया।

ब्राह्मणों ने कहा—"इस राजन्य ने हमारा अपमान किया है।" याज्ञवल्क्य रथ पर चढ़ कर राजा के पीछे गया और उससे शङ्का निवारण की। (शतपथ ११।४।५) तब से जनक ब्राह्मण हो गया। (शतपथ ब्रा० ११ ६।२१)

अब ज़रा इस बात पर तो ग़ौर कीजिए कि हरिश्चन्द्र जैसा धीर, त्यागी, उदार, सत्यव्रती और इन्द्रिय-विजयी चरम कोटि के गुण दिखा कर भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त न हो सका, किन्तु जनक सिर्फ़ अग्निहोत्र की विधियाँ बता कर ब्राह्मण हो गया। बस ब्राह्मणत्व की असलियत यहीं खुल जाती है।

पुराणों में हमें कुछ ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं, जिनसे पता लगता है कि कुछ लोगों ने ब्राह्मण बनने की चेष्टा की और उनका बड़ा भारी विरोध किया गया। परन्तु इस विरोध का कारण मैं ठीक-ठीक समझ गया हूँ—सिर्फ़ दक्षिणा-प्राप्ति की स्पर्धा थी। क्योंकि दान का माहात्म्य ही वास्तव में ब्राह्मणत्व का उत्पादक है।

अस्तु, अब विचारने की बात तो यह है कि आज ब्राह्मणत्व की हमें आवश्यकता है या नहीं—अर्थात् वह हिन्दू-समाज के लिए कुछ उपयोगी भी है या नहीं? दूसरे उसमें संशोधन किया जाय या उसका नाश किया जाय?

मैं प्रथम प्रश्न के उत्तर में यह दृढ़तापूर्वक कहूँगा कि इस समय और भविष्य में भी हिन्दू-समाज को ब्राह्मणत्व की बिलकुल ज़रूरत नहीं है। इस समय पढ़ाने-लिखाने आदि गुरु का कार्य ब्राह्मण ही करे, इसका कोई प्रतिबन्ध नहीं है। चाहे भी जिस जाति का हिन्दू बच्चा चाहे भी जिस जाति का शिष्य बन जाता है, यह स्कूल-कॉलेज में हम देखते ही हैं। अलबत्ता संस्कृत शिक्षा-पद्धति में अभी ब्राह्मणत्व की बू है! एक तो संस्कृत पढ़ने और पढ़ाने वाले दोनों ही प्रायः ब्राह्मण होते हैं, परन्तु ब्राह्मण गुरु अब्राह्मण छात्रों से और ब्राह्मण शिष्य अब्राह्मण गुरु से ग्लानि करते हैं—जो कि इस भाग्यहीन जाति के उस झूठे गर्व का चिह्न है, जिसने उसे आज निकम्मी बना दिया है; फिर भी संस्कृत शिक्षा की परिपाटी तेज़ी से आधुनिक हो रही है और यह कट्टरता मिट जायगी। मैं यह भी आशा करता हूँ कि संस्कृत का सारा महत्व अति शीघ्र हिन्दी ले लेगी, और संस्कृत पढ़ने वाले छात्र आगामी १० वर्षों में बहुत कम रह जावेंगे। परन्तु ब्राह्मणों की सब से अधिक और अनिवार्य आवश्यकता तो धर्म-कृत्यों के लिए है। बिना ब्राह्मण के कोई भी संस्कार—शादी, ग़मी, गृह-प्रवेश, यात्रा आदि नहीं किए जाते। याजक, ज्योतिषी—और न जाने किस-किस रूप में ब्राह्मणत्व की आवश्यकता बनी ही रहती है। ब्राह्मण किसी भी घर में एक घण्टा किसी भी ग्रन्थ का जप कर जायगा और पत्रक्री लेकर उसका महातम गृहपति को बेच जायगा। वह यज्ञादि कर जायगा और दक्षिणा ले जायगा! संस्कार करा जायगा और दक्षिणा ले जायगा। इस प्रकार धर्म-कृत्यों का फल बेचना कितना हास्यास्पद है? और किराए के व्यक्ति से गृह-कृत्य कराना भी कम से कम मैं तो नहीं पसन्द करता।

मैं अत्यन्त प्राचीन काल के आर्यों के जीवन का उदाहरण देकर बता सकता हूँ कि तब प्रत्येक गृह का प्रधान गृहपति ही उसका पुरोहित होता था और वही सबके संस्कार कराता था। अब भी यही किया जा सकता है। पुरोहित वह है, जो सबसे प्रथम हित की बात सोचे। गृहपति को छोड़ और कौन ऐसा है? धर्म-विक्रेता?? छीः-छीः! आर्य-समाज ने इस बन्धन को डरते-डरते तोड़ा है—पर दिमाग़ी ग़ुलामी तो उसकी भी बपौती है, वहाँ जन्म के ग़ैर-ब्राह्मण व्यक्ति, जो साधारण संस्कार-विधि बाँच सकें और ज़रा ज़बाँदराज़ हों, पण्डित जी कहलावेंगे और दक्षिणा भी लेंगे—यह मैंने देखा है। यह तो वही बात हुई। प्रथम उनका ब्राह्मणत्व पैदा कर दिया गया! मैं ब्राह्मणों का विरोधी नहीं, ब्राह्मणत्व का हूँ; यह याद रखने की बात है। मैं तो यह चाहता हूँ कि प्रत्येक हिन्दू को अपने धर्म-ग्रन्थ, संस्कारों की रीतियाँ और मङ्गल कृत्य स्वयं जानने चाहिए। वे स्कूलों में भी अनिवार्य रीति से सिखाए जायँ। उनमें एक उत्सव की गम्भीरता और विनोद तथा आनन्द की भावना हो। जब कभी आवश्यकता हो, संस्कार आदि में जो उपस्थित व्यक्तियों में सर्व-श्रेष्ठ पुरुष हो, पुरोहित के स्थान पर बैठा दिया जाय, और सिर्फ़ शिष्टाचार और सम्मान किया जाय। दान-दक्षिणा की परिपाटी नष्ट कर दी जाय। ऐसी दशा में और किसी काम के लिए ब्राह्मणत्व की आवश्यकता नहीं रहेगी। ब्राह्मणत्व अब ऐसी वस्तु ही नहीं रही, जिसके बिना समाज का काम ही न चल सके। वह तो वक़्त ही अब लौट कर नहीं आ सकता, जब ब्राह्मणों के अधीन राजाओं को महाराज और महाराजाओं को सम्राट बना देने की शक्ति थी! यदि इस समय ब्राह्मणत्व नष्ट कर दिया जाय तो छुआछूत, ऊँच और नीच, अन्ध-विश्वास और बाह्याडम्बर बिलकुल मिट जाय।

ब्राह्मण यदि अपने को सर्व-श्रेष्ठ समझे और अन्य जातियों को अपने से नीचा समझे तो इसमें अन्य जातियों का क्या लाभ है? फिर वे भी अपने में से ऊँच-नीच चुनती जावेंगी। यदि ब्राह्मण क्षत्रिय के हाथ का भोजन करने से इनकार कर दे तो क्षत्रिय वैश्य और वैश्य शूद्र के हाथ का खाने से इनकार करेगा, यह परम्परा ही है।

अवश्य ही इन सब बातों के रहते यहाँ सङ्गठन तो नहीं हो सकेगा। और मैंने ख़ूब सोच-विचार कर देख लिया है कि हिन्दू जाति को उठ कर खड़ी होने के लिए प्रथम बार जो उद्योग करना है—वह ब्राह्मणत्व को नाश कर देना है। इसलिए मैं यही अपनी खुली सम्मति रखता हूँ कि इसे जड़मूल से नष्ट कर दिया जाय। ब्राह्मण मित्रों, सम्बन्धियों और प्रियजनों एवं बुज़ुर्गों से हमारे वही प्रेम और आदर के सम्बन्ध बने रहने चाहिएँ—किन्तु धर्म-कृत्य या वे काम, जिनकी दक्षिणा होती है, उनसे कदापि ब्राह्मण के नाते नहीं कराने चाहिए।

ब्राह्मण-भोजन भी इनमें से एक कर्म है—शादी और ग़मी में प्रथम ब्रह्म-भोज होता है। ऐसा न होकर एक पंक्ति में प्रीति-भोज होना चाहिए। अलबत्ता दान-खाते यदि कुछ अन्न, वस्त्र अथवा धन देना हो तो अनाथालय, अस्पताल आदि संस्थाओं को वह दिया जा सकता है!

* * *

गाँधी-टोपी !

[कविवर 'बिस्मिल']

हर बड़े-छोटे के सर पर है यह गाँधी टोपी !
एक दो घर नहीं, घर-घर है यह गाँधी टोपी !
पार्लामेण्ट में भी इसकी हुई आओ-भगत ?*
ख़ूब क़िस्मत की सिकन्दर है यह गाँधी टोपी !
सबने यह मान लिया ! मान लिया !! मान लिया !!!
हैट से, फ़ेल्ट से, बेहतर है यह गाँधी टोपी !
भूले भटके जो हैं वह राह पर आ जाते हैं,
हम समझते हैं कि रहबर है यह गाँधी टोपी।
आदमी इसको जो पहिने तो फ़रिश्ता हो जाय
यानी अख़लाक़ का ज़ेवर है यह गाँधी टोपी !
दिल में चुभती है, कलेजे में खटकती क्यों है ?
तुम समझते हो कि नश्तर है यह गाँधी टोपी !
कह गए दौरे मसीही में भी खुल कर 'बिस्मिल'
वक़्त की अपने पयम्बर है यह गाँधी टोपी !!

* पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि पार्लामेण्ट में वहाँ के शक्तिशाली मेम्बर ब्रॉकवे महोदय ने हाल ही में गाँधी टोपी पहन कर एक तहलका मचा दिया था।

—सं० 'भविष्य'

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्त्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ॥।) स्थायी ग्राहकों के लिए ॥-)

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है, बच्चों को भी—
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी!
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है—
लाख दो लाख में, बस एक है लम्बी दाढ़ी!!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !!

पुनर्जीवन

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति का हिन्दी अनुवाद है। यह उन्हें सबसे अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपनी आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है, और किस प्रकार अन्त में वह वेश्या-वृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूररों में सम्मिलित होना, उसको ऐसी अवस्था देख कर उसे अपने किए पर अनुताप होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एकमात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित भी करना चाहिए—सब दृश्य एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। भाषा अत्यन्त सरल तथा ललित है। मूल्य केवल लागत-मात्र ५) स्थायी ग्राहकों से ३॥।)

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है, जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ॥।) केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झञ्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

सप्रू-जयकर की सन्धि-योजना तो समाप्त हो गई; परन्तु गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स का कार्य जारी है। यह गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स क्या है? यह तो आप जानते ही होंगे। यह इङ्गलैण्ड के राजा आर्थर की ईजाद है। यह राजा छठवीं शताब्दी में हुआ था। इस राजा ने एक गोलमेज़ बनवाई थी, जिसके चारों ओर वह अपने 'नाइट' (मुसाहिबों) के साथ बैठा करता था। अतएव यह बड़ी पुरानी चीज़ है। भारत का भाग्य ही ऐसा है कि तमाम ज़माने की सड़ी-गली चीज़ें इसके हिस्से में पड़ती हैं। आर्थर राजा मर गया, गल गया; परन्तु उसकी गोलमेज़ अब तक काम दे रही है। अव्वल तो गोलमेज़ की ही क्या आवश्यकता थी। यदि लम्बी अथवा चौकोर ही मेज़ रक्खी जाती तो क्या हानि थी। मतलब तो काम होने से है। काम ठीक तरह से होना चाहिए—मेज़ चाहे जैसी हो, हमारी बला से। परन्तु इङ्गलैण्ड का तो बाबा-आदम ही निराला है। वहाँ तो मेज़-कुर्सी पहले देखी जाती है, काम की बातें पीछे। उस दिन बड़ी दिल्लगी रही। मैं बैठा हुआ सिलबट्टा खटका रहा था कि अकस्मात् मि० रामज़े मेकडॉनेल्ड, इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री साहब मेरे सम्मुख आकर खड़े हो गए। पहले तो मैं समझा कोई पुलीस ऑफ़िसर है, गिरफ़्तारी का वारण्ट लाया है; परन्तु जब ग़ौर से देखा तो पहचान लिया; क्योंकि अनेक बार इनकी फ़ोटो देखी थी, सिनेमा में हँसते और बातें करते हुए देख चुका था। उन्हें देख कर मैं पहले तो अवाक् रह गया कि यह बिना सूचना दिए हुए कैसे आ धमके। परन्तु फिर हवास ठीक करके मैंने उनका अभिवादन किया और बैठने के लिए एक चटाई डाल दी। मेकडॉनेल्ड साहब अपनी भाषा में बोले—"बैठने की कोई आवश्यकता नहीं, मैं चन्द मिनिट आपसे खड़े ही खड़े बातें करना चाहता हूँ।" मैंने पूछा—"आप अकेले ही हैं क्या?" वह बोले—"हाँ, अकेला ही हूँ।" बिल्कुल छिप कर आपसे मिलने आया हूँ। मेरे आने का पता लॉर्ड इरविन तक को नहीं है। मैं हवाई जहाज़ से आया हूँ और आज ही शाम को लौट जाऊँगा।" मैंने कहा—"ऐसी जल्दी क्या है, एकाध दिन इस ख़ाकसार के झोपड़े में बसेरा लीजिए—फिर चले जाइएगा। आपको 'केनेबिस इण्डिका' (भङ्ग) का आनन्द दिखाऊँगा। शाम्पीन क्लेरेट इत्यादि सब इसके सामने गर्द हैं।"

वह बोले—"नहीं, ठहर नहीं सकता, गोलमेज़ के सम्बन्ध में आपसे बातें करके चला जाऊँगा।" मैंने द्वार से बाहर की ओर झाँक कर देखा कि कहीं किसी छकड़े पर गोलमेज़ तो लदवा कर नहीं लाए; क्योंकि बिना गोलमेज़ के गोलमेज़ की गोलमोल बातें कैसे होंगी। परन्तु बाहर एक सन्तरी के अतिरिक्त और कोई नहीं था। मेकडॉनेल्ड साहब ने मुस्करा कर पूछा—"बाहर क्या झाँकते हो।" मैंने उत्तर दिया—"कुछ नहीं, गोलमेज़ देखता था।" उन्होंने कहा—"वह तो इङ्गलैण्ड में है, यहाँ नहीं है।" मैंने कहा—"आपने बड़ी ग़लती की, उसे साथ में लेते आते तो आनन्द से बातें होतीं, ख़ैर कहिए क्या आज्ञा है।"

उन्होंने कहा—मैं आपसे यह सलाह लेने आया हूँ कि कॉन्फ्रेन्स में किसे-किसे बुलाया जाय।

मैंने कहा—जितने आदमी हिन्दुस्तान में हैं, उनमें अपने राम को छोड़ कर और कोई कॉन्फ्रेन्स में बुलाया जाने योग्य नहीं है।

"परन्तु केवल आपके होने से काम नहीं चलेगा, और आदमी भी होने चाहिएँ।"

"बिल्कुल व्यर्थ है—और आदमी अण्ट-शण्ट बक कर मामला ख़राब कर देंगे, हम-आप होंगे तो सब मामला तय हो जायगा। हिन्दुस्तान स्वराज्य के योग्य है ही नहीं, इस कारण उसके सम्बन्ध में अपने राम बात करेंगे नहीं—और जो कुछ आप कहेंगे वह मान लिया जायगा।"

"नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। कॉन्फ्रेन्स में बहुत से आदमी होने चाहिएँ।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि इस भर्ती भरने से आप क्या लाभ सोचते हैं। यही न कि अधिक आदमी जिस बात को मान लेंगे वह भारतवासियों के लिए मान्य होगी। परन्तु यह आपका भ्रम है। भारतवासियों का स्वभाव बिल्कुल इक्के-ताँगे वालों तथा कुलियों का-सा है, इन्हें चाहे जितना दे दीजिए, परन्तु ये कभी सन्तुष्ट न होंगे—कम ही बतावेंगे। इसलिए आप इस झोल में न पड़िए—जो कुछ देना हो देकर गहरी छानिए और आराम से लम्बी तान कर सोइए। भारतवासी कुछ दिनों तक टाँय-टाँय करके चुप हो जावेंगे और जो कुछ आप देंगे उसके हिस्सा-बाँट करने में परस्पर लात-जूती करने लगेंगे।"

"आप बहुत समझदारी की बातें करते हैं।"

"मैं समझदारी का ठेका जो लिए हुए हूँ। इङ्गलैण्ड में कुछ लॉर्ड लोग समझदारी का ठेका लिए हुए हैं, और हिन्दुस्तान में अपने राम।"

"यह बात है?"

"हाँ, बिल्कुल यही बात है। आप सीधे-सादे आदमी ठहरे, आपको सब बेवक़ूफ़ समझते हैं। हालाँकि यह मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आप बिल्कुल बेवक़ूफ़ नहीं हैं—केवल समय देख कर काम करते हैं। यही होना भी चाहिए।"

"तो आपकी राय में हिन्दुस्तान अभी स्वराज्य के योग्य नहीं है।"

"बिल्कुल नहीं! और इस बात को आप भी मानेंगे, वैसे मुख से चाहे न कहें।"

"हाँ, मानता तो हूँ, परन्तु——।"

"इस अरन्तु-परन्तु के फेर में मत पड़िए, साफ़ बात कहिए।"

"ख़ैर कुछ भी हो, परन्तु कॉन्फ्रेन्स तो करनी ही पड़ेगी।"

"अजी कोई ज़बर्दस्ती है। कह दीजिए कि हम नहीं करते—बस!"

"नहीं, ऐसा करने से अमेरिका वाले जो बिगड़ जाएँगे! उनकी आँख में धूल तो झोंकना ही होगा, दुबे जी!"

"यह आप कह क्या रहे हैं? मैं तो कुछ नहीं समझा।"

"दुबे जी! आप इतनी साधारण सी बात भी नहीं समझ सकते। इस समय यहाँ के बॉयकॉट से सभी देशों का दिवाला पिट रहा है और सभी राष्ट्र हमारे ख़ून के प्यासे हो रहे हैं। सभी देशों के प्रतिनिधि हम पर दबाव डाल रहे हैं कि हिन्दोस्तान को जल्दी ठीक करो, समझे?"

"कोशिश तो समझने की कर रहा हूँ दोस्त! पर आख़िर यह ठीक होगा कैसे, यही एक ऐसी विकट समस्या है, जो समझ में नहीं आ रही है।"

"तब तो मैं यही कहूँगा कि आज आप भाँग ज़्यादा पी गए हैं! इतनी मोटी सी बात भी आपके ज़ेहन में नहीं आ रही है"—(उन्होंने अपनी भाषा में कहा था—"इटना मोटा बाट समझने नाईं साकटा" मैं पाठकों की 'सुविधा' के लिए उसका अनुवाद मात्र दे रहा हूँ)—"हम लोग हैं राजनीतिज्ञ और यही हमारा पेशा है, जिसके सहारे हम जी रहे हैं, समझे! हमने चुन-चुन कर 'जी हुज़ूरों' को बुलाया है। आपने क्या हमारी नामावलि नहीं देखी? इनमें से कोई सिर नहीं उठा सकता। आपने बन्दर का नाच देखा है?"

"जी हाँ! एक बार लङ्गा............"

"हाँ! हाँ!! लाला लाजपतराय!!!"

"अजी नहीं, मेरा लड़का।"

"ओह हम समझ गए, लाला लाजपतराय आपका लड़का था।"

मैंने मन में कहा—ख़ूब समझे, इसी समझ की बदौलत तो आज तुम लोगों की यह गति हो रही है! पर बात बना कर मैंने कहा—जनाब, हम लोग लड़के को 'लल्ला' ही कहते हैं।

"हाँ, हाँ! आपका लड़का......"

"जी हाँ, उसने एक रोज़ जब बहुत दिक़्क़ किया और लल्ला की महतारी भी बहुत गिड़गिड़ाई तो बन्दरों का नाच कराना पड़ा था।"

"ओह! आप बहुत अक़्लमन्द हैं, ठीक वैसा ही नाच हम कराना चाहते हैं।"

"सो कैसे?"

"हिन्दू-मुसलमानों का जो झगड़ा है, सो तो आप जानते ही हैं, कहिए हाँ......"

"जी हाँ!"

"बस सब लीडर लोग गोलमेज़ पर ख़ूब लड़ेंगे और सभापति डमरू बजाएगा, कहिए हाँ......"

"जी हाँ, सो तो प्रत्यक्ष ही है।"

"हिन्दू-सङ्गठन वाले भी चिल्लावेंगे और तनज़ीम वाले भी, कहिए हाँ।"

तीसमार ख़ाँ की हजामत

(२७वें पृष्ठ का शेषांश)

तीसमार ख़ाँ—हाँ-हाँ, तू ही जा। जल्दी जा। दौड़ता हुआ जा।

(कल्लू जाता है)

बटेर ख़ाँ—हुज़ूर यह बड़ा अच्छा हुआ कि वह बेवक़ूफ़ ख़ुद ही गारद बुलाने चला गया।

तीसमार ख़ाँ—तभी तो मैंने भी झट हाँ कर दिया। कैसी अक़्लमन्दी की अरे! यह क्या......

(पर्दे के पीछे कई आदमियों का शोर मचाना—शराब पीना हराम है!)

तीसमार ख़ाँ—अरे! इन हरामियों ने फिर ज़ोर बाँधा? कम्बख़्त ज़रा भी दम नहीं लेने देते। अच्छा आओ इस दफ़े इन पाजियों को ऐसा ठीक करता हूँ कि सारी ज़िन्दगी याद करेंगे।

(दोनों का जाना)

(क्रमशः)

* * *

"जी हाँ, इसमें अपने राम को ज़रा भी शक नहीं है।"

"फिर हम लोग अमेरिका वालों से तथा दूसरे राष्ट्रों से पूछेंगे कि जनाब! यह हाल है हिन्दोस्तान का! बतलाइए स्वराज्य देने पर क्या गति होगी?"—मैंने हाथ मार कर कहा—यार देखने में तो "बछिया के ताऊ" मालूम होते हो, पर समझते बड़े पते की हो! यह लोग आपस में ही लड़ मरेंगे, तुम पूछना कि आख़िर वे चाहते क्या हैं, यही न?"

"जी हाँ, अब समझे आप! सभी राष्ट्र भारतवासियों को मूर्ख और उन्हें स्वराज्य के अयोग्य समझ लेंगे और हम चूतड़ पीट-पीट कर हँसेंगे, कहो कैसी कही? बस गोलमेज़ का यही मतलब है। एक बात और भी है।"

"वह क्या?"

"सभी राष्ट्र कहते हैं इस कम्बख़्त बॉयकॉट मूवमेण्ट को बन्द करो और इस आन्दोलन को जल्द से जल्द समाप्त करो, और हमें अनुचित दबाव के कारण इसे बन्द तो करना ही होगा! और बिना यह सब जाल रचे यह आन्दोलन दबेगा कैसे? इसे भी तो दबाना है, इससे बड़ी हानि हो रही है।"

"अरे हाँ आन्दोलन—लीजिए इसे तो मैं बिल्कुल भूल ही गया था। वाक़ई आन्दोलन तो दबना ही चाहिए।"

"इसके दबाने की कोई युक्ति है?"

"युक्तियाँ सैकड़ों हैं, परन्तु कॉङ्ग्रेस वालों के सामने सब बेकार हो जाती हैं।"

"वाक़ई ये कॉङ्ग्रेस वाले सब मामला बिगाड़े हुए हैं, वरना सब काम ठीक हो जाता।"

"वक्त की बात है; इस समय हैज़ा-प्लेग भी चुप है, वरना कुछ तो कम हो ही जाते।"

"इस कमी से क्या हो सकता है दुबे जी, असल बात तो यह है कि इनका दिमाग़ ठीक होना चाहिए।"

"तो इन्हें जेलख़ाने न भिजवा कर, पागलख़ाने भिजवाया जाय। परन्तु इतने पागलख़ाने आवेंगे कहाँ से—यह भी तो कठिनता है। हाँ, एक युक्ति हो सकती है। जितने जेलख़ाने हैं सब पागलख़ाने बना दिए जायँ। परन्तु यह भी तभी हो सकता है, जब केवल कॉङ्ग्रेस वाले ही हों—जेलख़ानों में तो अन्य क़ैदी भी रहते हैं।"

"यही तो कठिनता है।"

"चारों ओर से कठिनता ही कठिनता है।"

"वक्त की बात है।"

"बिल्कुल वक्त की बात है। तो मेरी समझ में ऐसे लोगों को कॉन्फ़्रेन्स में बुलाइए, जो अधिक गड़बड़ न मचावें। आप लोगों की बातें मान लें।"

"हाँ, यही करना पड़ेगा। अच्छा, तो अब मैं जाता हूँ। मेरे आने का ज़िक्र किसी से मत कीजिएगा और आपको जो तकलीफ़ हुई है, उसके लिए माफ़ कीजिएगा।"

"बहुत अच्छा, जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा।"

मेकडॉनेल्ड साहब विदा हुए—मैं उन्हें द्वार तक पहुँचाने गया। उधर से लौटा तो सिल की ठोकर जो लगी तो मुँह के बल गिरा—और आँख खुल गई—देखा तो चारपाई के नीचे पड़ा हूँ। और 'लड़का की महतारी' बड़े ज़ोर से डपट रही हैं "का हौ ई गोलमेज; जाय भाड़ में! रात-दिन दहजरऊ के नाती चिल्लात हैं, गोलमेज! गोलमेज!! गोलमेज!!!" तब पता लगा कि यह तो कोरा स्वप्न था।

सम्पादक जी, मेरा स्वप्न सच्चा हो रहा है। कॉन्फ़्रेन्स में ऐसे ही लोग बुलाए जा रहे हैं जो बेचारे बिल्कुल गड़बड़ न करेंगे—करेंगे भी कैसे—वे बेचारे गड़बड़ करना जानते ही नहीं। जो दिया जायगा वह लेकर चले आवेंगे। चाहिए भी ऐसा ही। गड़बड़ करने से कोई नतीजा नहीं निकलेगा—जो कुछ मिलता होगा वह भी न मिलेगा। उनके लिए एक तो यही क्या कम गौरव की बात है कि कॉन्फ़्रेन्स में बुलाए जा रहे हैं। गवर्नमेण्ट ने उनकी बहुत बड़ी इज़्ज़त की तब तो निमन्त्रण दिया। यदि ऐसी दशा में वह ऊट-पटाँग बातें करके मुफ़्त में दिक़्क़त पैदा करें तो यह उनकी कृतघ्नता होगी। दूसरे यह लाभ है कि जो कुछ मिलेगा, इन्हीं लोगों को मिलेगा—कॉङ्ग्रेस वाले टापते ही रह जायँगे! बहुत नख़रे करने में यही होता है, यहीं जेलों में पड़े सड़ा करेंगे। कॉन्फ़्रेन्स में जो जायँगे उन्हें मज़े ही मज़े हैं। समुद्र की यात्रा और लण्डन की सैर होगी। 'डिनर' और 'बॉल' के आनन्द मिलेंगे। और जिस समय दिमाग़ गर्म होगा उस समय यही कहेंगे कि जो कुछ मिला बहुत मिला—इससे अधिक की योग्यता भी हममें नहीं है। चलिए अपना मज़ा हो गया, काम भी बन गया और सरकार भी प्रसन्न रही। लौट कर आवेंगे तो 'प्रेस-रिपोर्टरों' के अतिरिक्त और किसी से बात न करेंगे। वह ठाट रहेगा कि बस वाह! वाह!! अफ़सोस यही है कि हाय हुसैन! हम न होंगे। मेकडॉनेल्ड साहब स्वप्न में आए, इतनी देर बातें कीं, परन्तु अपने राम को न बुलाया। ख़ैर कभी मिले तो ऐसी लम्बी शिकायत करूँगा कि याद करेंगे। वायसराय साहब से अपने राम की कोई जान-पहचान नहीं, वरना वह अवश्य पूछते, बड़े शीलवान आदमी हैं। एक ग़लती हो गई। यदि अपने राम भी कॉन्फ़्रेन्स की चर्चा चलने के आरम्भ ही से ख़ूब पत्रों में आलोचना करते, प्रेस-प्रतिनिधियों को बुला कर अपनी राय देते, पत्रों में लेख लिखते, कभी सरकार की आलोचना करते, कभी कॉङ्ग्रेस वालों को कोसते, तो कदाचित हम भी कॉन्फ़्रेन्स में बुलाए जाते। ख़ैर भविष्य के लिए चेत हो गया, अब कभी अवसर आया, तो कदापि न चूकेंगे! सम्पादक जी, क्या आप सचमुच विलायत न जायँगे? सुना है, गवर्नर-इन-कौन्सिल ने आपको पास-पोर्ट न देने का निश्चय कर लिया है, क्या यह ठीक है?

भवदीय,
विजयानन्द (दुबे जी)

वी० पी० नहीं जायगी

जिन सज्जनों अथवा देवियों की सेवा में नमूने की कॉपियाँ भेजी गई हैं, उन्हें यदि पत्र पसन्द हो, जिसकी हमें पूर्ण आशा है, तो अपना चन्दा (वार्षिक चन्दा ६) रु० और छः माही ३॥) रु० है) तुरन्त मनीऑर्डर द्वारा मैनेजर "भविष्य" कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से भेज देना चाहिए। ज़रा भी देरी करने से आगामी अङ्क प्राप्त नहीं हो सकेगा, (क्योंकि 'भविष्य' का प्रकाशन एक निर्धारित संख्या में होता है) और फिर आप इसकी पूरी फ़ाइल न रख सकेंगे। आगामी अङ्क से कई लेख तथा उपन्यास आदि धारावाही रूप से प्रकाशित होंगे। 'भविष्य' वी० पी० द्वारा नहीं भेजा जायगा। सूचनार्थ निवेदन है।

एजन्टों को भी यह बात स्मरण रखनी चाहिए। उन्हें जितनी कॉपियाँ मँगाना हो, नियमानुसार उनको पेशगी मूल्य भेजना होता है। एजन्सी की नियमावली मँगा कर देखिए।

मैनेजर 'भविष्य'

स्त्रियों का ओज

लोहे का भय

[लेखक—???]

"महाराज की दुहाई, महाराज ग़ज़ब हो गया, महाराव रणबङ्का राठौर अमरसिंह मारे गए! और बादशाह सलामत की आज्ञा से उनकी लाश बुर्ज पर नङ्गी करके डाल दी गई है ताकि चील और कौवे उसे दुर्दशापूर्वक खा जायँ ; बहूरानी के पास जो थोड़ी सेना थी—वह लाश लाने के उद्योग में कट-मरी है राज-महल की रक्षा केवल कुछ बाँदियाँ कर रही हैं—बादशाह सलामत ने ग़ुस्से में आकर हुक्म दिया है कि महाराव का महल ज़मींदोज़ करा दिया जाय और उनके ख़ानदान का बच्चा-बच्चा गिरफ़्तार करके शाही हुज़ूर में दाख़िल किया जाय ! बहूरानी अकेली असहाय अबला हैं, आप उनके पूज्य श्वसुर के स्थानापन्न और महाराव के चचा हैं, बहूरानी ने आपकी शरण ली है। वे प्रार्थना करती हैं कि महाराज मेरी आबरू की रक्षा करें, अपने वंश की रक्षा करें और मुझे पति का शरीर ला दें और मुझे निर्विघ्न सती होने की व्यवस्था कर दें। इस विदेश में आप ही सगे हैं ?"

"अभी कल ही तो महाराव अमरसिंह हमसे मिल कर गए थे—एक ही दिन में यह क्या घटना हो गई ?"

"आज दर्बार में सलावत ख़ाँ ने उनका अपमान किया था उसे उन्होंने वहीं छाती में कटार मार कर मार डाला—फिर क़िले की सफ़ील कूद कर भाग भी आए। परन्तु महाराज ! नमकहराम अर्जुन गौड़ ने अनर्थ किया।"

"क्या किया ?"

"वह धोखा देकर महाराव को क़िले में ले गया, बहू-रानी की भी बहुत क़सम दे गया। वहाँ पीछे से अचानक वार करके राठौर को गिरा दिया।"

"हूँ, अब मुझसे क्या कहते हो ?"

"महाराज ! बहूरानी आपकी शरण हैं। अपनी और उनकी कुल-मर्यादा, धर्म और इज़्ज़त की रक्षा कीजिए।"

"(हँस कर) हम कब से उनके श्वसुर और चचा हुए हम बाँदी-पुत्र हैं और वे रणबङ्का राठौर हैं। हमारी उनकी बराबरी क्या है ? कल तक तो वे हमें विवाह-शादी, ग़मी—किसी में भी बराबर का आसन नहीं देते थे, इससे उनकी कुल कान चली जाती ? अब बहूरानी बाँदी-पुत्र की शरण क्यों ? उनसे कह दो कि बूँदी जाकर अपने उच्च कुलीन पीहर वालों को बुला लें, वे ही उनके कुल-धर्म और कुल-गौरव की रक्षा करेंगे ? हम बाँदी-पुत्रों का कुल-धर्म ही क्या और कुल-गौरव ही क्या ?"

"महाराज की जय हो। स्वामिन, इस अवसर पर ऐसी बात न करिए। वहाँ अकेली अबलाएँ तलवारें चला रही हैं, यह समय इन बातों का नहीं।"

"परन्तु हम बाँदी-पुत्र भी तो हैं ?"

"आपके रक्त में राठौर रक्त है।"

"फिर भी वह विशुद्ध नहीं।"

"यह समय इस विवेचना का नहीं"

"जब अच्छे दिनों में हम नीच और ग़ैर रहे तब अब सगे कैसे बनेंगे ?"

"महाराज यह क्षत्रियों का धर्म है ?"

"उनके लिए जो उनकी प्रतिष्ठा करे।"

"बहूरानी आपको पितृव्य की भाँति प्रतिष्ठा करती हैं।"

"इस मतलब के समय पर न ? और इस प्रतिष्ठा को हम प्राण देकर ख़रीद लें, जब कि जीवन भर हम बाँदी-पुत्र कह कर तिरस्कृत होते रहे। यह देखो हमारी छाती अपमान की आग से फुँकी पड़ी है।"

"महाराज ! रक्षा करो रक्षा करो, आपके भतीजे की लाश को कौवे-चील खा रहे हैं !!"

"हम उनके कुछ नहीं।"

"बहूरानी अभी शाही दर्बार में अपमानित होंगी, वे आपकी कुल-वधू हैं।"

"उनके पीहर वाले बूँदी से आ जावेंगे। वे बड़े बाँके योद्धा हैं, पल भर में उनके गौरव की रक्षा कर लेंगे।"

"तब क्या महाराज ! अबला असहाय राजपूतनी को सहाय न देंगे ?"

"वह हमारी कौन है ?"

"महाराज का अन्तिम उत्तर क्या है ?"

"बूँदी से पीहर वाले कुलीन वीर बुला कर बहूरानी की प्रतिष्ठा की रक्षा की जाय।"

२

"महारानी, अनर्थ हो गया। महाराव अमरसिंह मारे गए और उनकी रानी का महल शाही सेना ने घेर रक्खा है, अकेली स्त्रियाँ लोहा ले रही हैं। बहूरानी ने महाराज की शरण ली थी—उन्होंने अस्वीकार कर दिया।"

"सुन चुकी हूँ। तू ठहर और जो कुछ मैं कहती हूँ सावधानी से सुन—अभी महाराज भोजन करने भीतर पधारेंगे। तू सभी सोने-चाँदी के बर्तनों को उठा कर छिपा कर रख दे। और महाराज का भोजन लोहे के बर्तनों में परोस देना। यदि महाराज नाराज़ हों तो तू कुछ जवाब न देना। मैं सब देख लूँगी।"

"जो आज्ञा।"

३

"हैं, यह क्या बेवक़ूफ़ी है ? यह लोहे के बर्तनों में भोजन कैसा ? बाँदी ! कौन है ? किसने यह दुष्टता की है। मैं उसे कभी क्षमा न करूँगा। यह किस का काम है, सामने आ।"

महारानी सामने आकर "स्वामिन् क्या है ?"

"देखती हो, मेरा किसने अपमान किया है ? यह लोहे के पात्रों में भोजन......मैं अभी उसे तलवार से टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा, क्या मेरा क्रोध तुम पर विदित नहीं।"

"विदित है स्वामिन्, आपका क्रोध, आपका तेज, प्रतिष्ठा, सम्मान, वीरता इस तुच्छ नारी को विदित है। आख़िर यह आप की अर्धाङ्गिनी दासी ही तो है। यह दुष्टता किस दासी ने की है, उसे कभी क्षमा न करना—स्वामी ! नहीं तो आपका प्रताप आज ही नष्ट हो जायगा। (दासी से) अरी पापिष्ठ ! बोलती क्यों नहीं, अभागिनी क्या तू नहीं जानती कि महाराज लोहे से भय खाते हैं, तूने उन्हीं के सम्मुख लोहा रख दिया। तेरी इतनी मजाल ? अरी क्या तू यह नहीं जानती कि यह किसी राजपूत का चौका नहीं—बनिए का रसोई-घर है। यहाँ हीरे, मोती, सोना-चाँदी रहने चाहिएँ या लोहा। क्या तुझसे मैंने बारम्बार नहीं कहा था कि महाराज लोहे से डरते हैं, उनके सम्मुख कभी लोहा न लाना। ठहर मैं तुझे कुत्तों से नुचवाऊँगी।"

"महारानी ! तुम यह क्या बक रही हो ? क्या तुम पागल हो रही हो—क्या कहा—मैं लोहे से भय करता हूँ। इस भुजदण्ड के बल पर और इस तलवार के ज़ोर पर मैंने सहस्रावधि शत्रुओं के रुण्ड-मुण्ड पृथक् किए हैं—कौन वीर रण रङ्ग में मेरे सम्मुख खड़ा रह सकता है ; और आज तुम मेरा यह अपमान करती हो, मैं लोहे से डरता हूँ ? क्या मैं लोहे से डरता हूँ।"

"क्या तुम लोहे से नहीं डरते ? अभी तुम जो अपने इन निरर्थक भुजदण्डों की डींग हाँक चुके हो, क्या ये प्रकृत वीरों के भुजदण्ड हैं ? यदि तुम लोहे से भय न खाते होते तो क्या यह सम्भव था कि तुम्हारे वंश के अनमोल लाल की लाश, जिसकी वीरता की धाक राज-पूताने के घर-घर है—पशु की तरह नङ्गी चील-कौवों के लिए पड़ी होती—तुम्हारी पुत्रवधू की लाज लुट रही है—तुमने शरणागत होने पर भी स्त्री को निराश किया है और तुम इतने पर भी सोने-चाँदी के पात्रों में ३६ प्रकार के स्वादिष्ट भोजन गले से उतारने और इन वीर बाहुओं को पुष्ट करने—रसोई में पधारे हो। अरे नामर्द-कायर ! तेरी पत्नी होने में मुझे लाज लगती है, तू कहता है कि वे तुझे बाँदी-पुत्र कहते हैं। मैं कहती हूँ तू एक बार नहीं, सौ बार, लाख बार, करोड़ बार बाँदी-पुत्र है। बाँदी-पुत्र ही शरणागता अबला को निराश कर सकता है। प्रकृत-क्षत्रिय के प्राण और सर्वस्व तो शरणागत की रक्षा के ही लिए है, फिर वह शरणागत चाहे उसके प्राणों का जन्म-शत्रु ही क्यों न हो।

"बैठो स्वर्ण की चौकी पर, बाँदी ले आ सोने-चाँदी के थाल और परस दे षड्रस व्यञ्जन। यह बाँदी-पुत्र पेटू, भर पेट आज भोजन करेगा, क्योंकि इसके वीर-पुत्र की लाश चील-कौवे खाकर पेट भर रहे हैं, और इसकी शील-वती कुल-वधू, अपनी आबरू अपने हाथ में स्वयं तलवार लेकर बचा रही है।

"लाओ, यह तलवार मुझे दो। मैं देखूँगी कि राज-पूत बाला के हाथ की शक्ति सहन करना मुग़ल-तख़्त के बस का है या नहीं। (अपना सौभाग्य-सिन्दूर पोंछ कर और सौभाग्य-चूड़ियों को चूर-चूर करके) यह लो अप-वित्रता को मैंने दूर कर दिया। अब मैं बाँदी-पुत्र की पत्नी नहीं—मैं साक्षात् रणचण्डी क्षत्रिय बाला हूँ।"

"बस-बस-बस, महारानी बस, अधिक नहीं। ईर्ष्या ने मुझे नीच और अन्धा बना दिया था ! जब तक मैं वीर अमर की लाश लाकर वीरबाला बहू को प्रतिष्ठापूर्वक सती नहीं कर दूँगा, तब तक न अन्न ग्रहण करूँगा न जल, न मरूँगा, न हटूँगा, मैं प्रण करता हूँ। हे तेजस्विनी तुम धन्य हो, तुम बाँदी-पुत्र की पत्नी नहीं—तुम ओज-स्विनी क्षत्रिय बाला हो। लाओ मेरी तलवार !

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की खुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। भाषा अत्यन्त सरल। मूल्य केवल १॥)

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोद-पूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य केवल १)

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष नहीं रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; सजिल्द तथा सचित्र; तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य ३) स्था० ग्रा० से २।)

पुस्तक की उपयोगिता नाम ही से प्रकट है। इसके सुयोग्य लेखक ने यह पुस्तक लिख कर महिला-जाति के साथ जो उपकार किया है, वह भारतीय महिलाएँ सदा स्मरण रक्खेंगी। घर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः प्रत्येक बातों का वर्णन पति-पत्नी के सम्वाद-रूप में किया गया है। लेखक की इस दूरदर्शिता से पुस्तक इतनी रोचक हो गई है कि इसे एक बार उठा कर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से "गागर में सागर" वाली लोकोक्ति का परिचय मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में कुल २० अध्याय हैं; जिनके शीर्षक ये हैं :—

(१) अच्छी माता (२) आलस्य और विलासिता (३) परिश्रम (४) प्रसूतिका स्त्री का भोजन (५) आमोद-प्रमोद (६) माता और धाय (७) बच्चों को दूध पिलाना (८) दूध छुड़ाना (९) गर्भवती या भावी माता (१०) दूध के विषय में माता की सावधानी (११) मल-मूत्र के विषय में माता की जानकारी (१२) बच्चों की नींद (१३) शिशु-पालन (१४) पुत्र और कन्या के साथ माता का सम्बन्ध (१५) माता का स्नेह (१६) माता का सांसारिक ज्ञान (१७) आदर्श माता (१८) सन्तान को माता का शिक्षा-दान (१९) माता की सेवा-शुश्रूषा (२०) माता की पूजा।

इस छोटी सी सूची को देख कर ही आप पुस्तक की उपादेयता का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में होनी चाहिए। मूल्य १।); स्थायी ग्राहकों से ॥।≤)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के एक प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य केवल आठ आने!

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ॥।) स्थायी ग्राहकों से ॥-)।

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक़ एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक़ भी हैं। शीघ्र ही मँगाइए। मूल्य लागत-मात्र केवल ।) है।

महारानी ! विदा। अब हम उस लोक में मिलेंगे। यह मैं चला।"

"तब तुम सचमुच ही में स्वामी प्रतीत होते हो। आह ! मैं मूर्खा आपे से बाहर होकर क्या कह गई स्वामिन् ! क्षमा।"

"महारानी अब समय नहीं है, अब हम उस लोक में मिलेंगे।"

"अच्छा मेरे वीर-स्वामी ! मैं क्षण भर में ही तुम्हारे चरणों में आने का सब सरञ्जाम किए रखती हूँ, जाओ।

४

"महारानी, सब कुछ समाप्त हुआ !"

"बहू सती हो गई।"

"सती हो जाने पर ही महाराज गिरे।"

"महाराज गिरे ? क्या महाराज काम आए ?"

"महारानी, महाराज अमर हुए, ऐसा साका किसी ने न देखा होगा।"

"बहुत ठीक, अब तुम कितने बचे हो।"

"अकेला मैं।"

"महाराज का शरीर कहाँ है ?"

"महाराज के निज कक्ष में धरा है।"

"क्या शाही-सेना यहाँ आ रही है, यह कोलाहल कैसा है।"

अक़्ल की दाढ़

जॉनबुल—हाय बाप रे ! बड़ा दर्द होता है ! रात-दिन खाना और सोना हराम हो रहा है !!
लेडी-डैण्टिस्ट—ओ हो ! आपकी अक़्ल की दाढ़ (Wisdomtooth) बिल्कुल सड़ गई है !!

"मुझमें यथेष्ट धैर्य है, सब कुछ विस्तार से कहो। क्या अमरसिंह की लाश मिली ?"

"उसे सहस्रों नङ्गी तलवारों की कठिन मार में घुस कर मुर्दों की छाती पर पैर धरते हुए महाराज को बुर्ज से लाते और दोनों हाथों से तलवार चलाते हमने स्वयं देखा है।"

"लाश चिता तक सुरक्षित पहुँच तो गई न ?"

"महाराव के शयन-कक्ष को ही चिता बनाया गया था, वहाँ बहुत सा ज्वलनशील पदार्थ—घृत आदि जो था संग्रह करके तैयार किया गया था।"

"चिता में विधिवत अग्नि तो दे दी न !"

"महाराज तब तक स्थिर खड़े रहे, तलवार उनकी मुट्ठी में कस कर पकड़ी हुई थी।"

"महारानी शाही सेना इधर ही आ रही है।"

"अच्छा एक क्षण ठहरो, जाओ महाराज के शव को प्राङ्गण में ले आओ। यह द्वार पर धूमधाम क्या है ?"

"महारानी शाही सेना भीतर घुसने की चेष्टा कर रही है।"

"अब यह असम्भव है। अच्छा चिता में अग्नि दो और देखो भण्डार में सब कुछ प्रस्तुत है, आग लगा दो, क्षण भर में महल शाही सेना के लिए अगम्य हुआ जाता है।"

जय वीर माता की !

* * *

एशियाई महिला-सम्मेलन

'भविष्य' के गत अङ्क में 'एशियाई महिला-सङ्घ' शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ था, जिसमें एशिया महाद्वीप के समस्त राष्ट्रों की महिलाओं के एक सम्मेलन का प्रस्ताव किया गया है तथा उसकी आवश्यकता और उपयोगिता सिद्ध की गई है। हर्ष की बात है कि वह प्रस्ताव कार्य-रूप में परिणित होने को जा रहा है। अखिल भारतवर्षीय स्त्री-सभा बहुत दिनों से इसके लिए उद्योग कर रही थी। उसको इस सम्बन्ध में सभी देशों की महिलाओं की तरफ़ से उत्साहवर्द्धक और सहानुभूति-सूचक पत्र मिले हैं, और उक्त कॉन्फ्रेन्स की तैयारी होने लगी है।

यह कॉन्फ्रेन्स लाहौर में २३ से ३० जनवरी सन् १९३१ को होगी। इसका उद्देश्य इस प्रकार है :—(१) एशिया की स्त्रियों में पूर्वीय सभ्यता के नाते एकता की भावना उत्पन्न करना ; (२) पूर्वीय सभ्यता की विशेषताओं पर ध्यान देना और राष्ट्रीय तथा संसार की सेवा के लिए उनकी रक्षा करना ; (३) पूर्वीय सभ्यता में जो दोष प्रकट में दिखलाई पड़ रहे हैं (जैसे आरोग्यता का अभाव, निरक्षरता, दरिद्रता, मज़दूरी की नीची-दर, बाल-मृत्यु, विवाह-सम्बन्धी कुरीतियाँ) उनकी आलोचना करना और उनके सुधार के उपाय ढूँढ़ना ; (४) इस बात की जाँच करना कि पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव (जैसे शिक्षा, वेष-भूषा, स्त्रियों की सामाजिक स्वतन्त्रता, सिनेमा, मशीनें) एशिया के लिए कहाँ तक हितकर हैं ? (५) एशिया के विभिन्न देशों की स्त्रियों की दशा और अनुभव सम्बन्धी विचार-परिवर्तन द्वारा स्त्रियों के आन्दोलन को सुदृढ़ बनाना ; (६) समस्त संसार की शान्ति के लिए उद्योग करना।

इस कार्य में सहयोग देने के लिए पैलेस्टाइन, सीरिया, सीलोन, नैपाल, जापान, बर्मा, इराक़, स्याम, इण्डोचाइना, मलाया, हवाई, पर्शिया और बलूचिस्तान की तरफ़ से वायदे किए गए हैं।

भारतीय महिलाओं की तरफ़ से जो निमन्त्रण-पत्र भेजा गया था कितने ही देशों में उसके अनुवाद प्रकाशित किए गए हैं। इस कॉन्फ्रेन्स के सभापतित्व के लिए अब तक इन महिलाओं के नाम पेश किए जा चुके हैं :—मैडम नूर हमदा (अरब की महिला-कॉन्फ्रेन्स की प्रेज़िडेण्ट) ; मैडम नासिक आवेद ; मैडम एम० जमील बेहुम ; (अरब की एक सुप्रसिद्ध नेत्री) ; श्रीमती सरोजिनी नायडू ; मिसेज़ इनोये (जापान की सुप्रसिद्ध शिक्षाविज्ञ और सङ्गठनकर्त्री और मिसेज़ सनयात सेन (चीन की नेत्री)।

* * *

'चाँद' कार्यालय

की

अनमोल पुस्तकें

निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्य-पूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। यह उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, पृष्ठ-संख्या लगभग ५००, सजिल्द एवं तिरङ्गे कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य ३) रु०; स्थायी ग्राहकों से २।)

वीरबाला

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए, युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

अनाथ पत्नी

इस उपन्यास में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्त-र्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें!

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्त-काल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनोमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं! मूल्य केवल २)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

हिन्दोस्ताँ हमारा

[सर "इक़बाल" लाहौरी]

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा !
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलस्ताँ हमारा !!
ग़ुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में !
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहाँ हमारा !!
परबत वह सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का—
वह सनतरी हमारा, वह पासबाँ हमारा !
गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ !
गुलशन है जिनके दम से, रश्के जनाँ हमारा !!
ए आबेरोद गङ्गा, वह दिन है याद तुझको—
उतरा तेरे किनारे, जब कारवाँ हमारा !
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना—
हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दोस्ताँ हमारा !!
यूनानो, मिसरो, रूमा सब मिट गए जहाँ से !
अब तक मगर है बाक़ी, नामो निशाँ हमारा !!
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी !
सदियों रहा है दुश्मन, दौरे-ज़माँ हमारा !!
"इक़बाल" कोई महरम, अपना नहीं जहाँ में !
मालूम क्या किसी को, दर्दे-निहाँ हमारा ?

[नाख़ुदाय सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

हर भेद रह सकेगा, क्यों कर निहाँ हमारा !
मुख़बिर बना किसी का, जब राज़दाँ हमारा !!
फैला निफ़ाक़ बाहम, हो इत्तिफ़ाक़ क्यों कर—
कुछ है यक़ीं तुम्हारा, कुछ है गुमाँ हमारा !
रहती थीं मजलिसों में, इलमो अमल की बातें—
देता था लुत्फ़ क्या-क्या, हमको ब्याँ हमारा !
बरबाद हो गई अब, तौक़ीरे ख़ानदानी !
गुम नाम हो गया अब, हर ख़ानदाँ हमारा !!
इक़बाल की तरक्क़ी, कोशिश पर मुनहसिर है !
फिर है ज़मीं हमारी, फिर आसमाँ हमारा !!
कैसे रफ़ीक़ो मूनिस, कैसी वफ़ा शआरी—
हम नवहाख़वाँ हैं दिल के, दिल नवहाख़वाँ हमारा !!
अल्लाह से हम अपने, मज़हब की ख़ैर माँगें !
मिट जायगा किसी दिन, यह भी निशाँ हमारा !!
या हमसे दोस्ती का, दम लोग भर रहे थे—
या हो गया मुख़ालिफ़, सारा जहाँ हमारा !!
ऐ "नूह" शक्ल यह है, दावा फिर उस पे यह है—
हिन्दोसताँ के हम हैं, हिन्दोस्ताँ हमारा !!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

अब हाल हो गया क्या, ए बाग़बाँ हमारा
रश्के जनाँ कभी था हिन्दोस्ताँ हमारा
आगे निकल गए हैं, जापानो मिश्र वाले—
पीछे पड़ा हुआ है, क्यों कारवाँ हमारा ?
अहले वतन रहेगा, योंही जो अपने आलम
मिट जायगा किसी दिन, नामो निशाँ हमारा !
सब लोग जानते हैं, सब लोग मानते हैं !
सारे जहान में है, रौशन ब्याँ हमारा !!
किसको सुनाएँ जाकर, सुनता नहीं है कोई !
तकलीफ़ से भरा है, सारा ब्याँ हमारा !!
हम चैन लेंगे तो कब, मसरूर होंगे तो कब—
मिल जायगा हमें जब, हिन्दोस्ताँ हमारा !!
इख़लाक़ हमसे सीखा, तहज़ीब हमसे सीखी—
एहसान मानता है, सारा जहाँ हमारा !!
कब तक योंहीं रहें हम, किस दिल से ग़म सहें हम !
आख़िर क़ुसूर कोई, ए आस्माँ हमारा—
"बिस्मिल" यहीं रहेंगे, "बिस्मिल" यही कहेंगे
बढ़ कर बिहिश्त से है, हिन्दोस्ताँ हमारा !!

[जनाब "शातिर" इलाहाबादी]

क्यों हो न हमको प्यारा, हिन्दोस्ताँ हमारा !
हम हैं मकीं जो इसके, तो यह मकाँ हमारा !!
इलमो हुनर में आगे, सब से बढ़ा हुआ है—
पीछे रहा किसी से, कब कारवाँ हमारा ?

× × ×

धीमे सुरों में गङ्गा, यह गुनगुना रही है !
इमरत से भी है बढ़ कर, आबेरवाँ हमारा !!
क्यों हम डरें किसी से, क्यों हम दबें किसी से—
परबत हिमालिया का, है पासबाँ हमारा !!
ए गुलीसताँ के तिनको, इतना हमें बता दो !
सय्याद का यह घर है, या आशियाँ हमारा ?
मशरिक़ में रूह फूँकी, नाक़ूस की सदा ने
मग़रिब में रङ्ग लाया, शोरे अज़ाँ हमारा

× × ×

ख़िदमत तो कुछ भी "शातिर" होती नहीं किसी से !
लेकिन यह कहते हैं सब, हिन्दोसताँ हमारा !!

प्रश्नोत्तर

प्रश्न—शहद की मक्खी डङ्क कैसे मारती है ?

उत्तर—शहद की मक्खी अपनी रक्षा के लिए डङ्क मारती है। उसका डङ्क एक तेज़ और झुकी हुई सुई की तरह होता है, जो भीतर से पोला होता है। जब मक्खी डङ्क मारती है, तब इस छेद में से एक बूँद ज़हर बाहर निकल आता है। डङ्क केवल मज़दूर-मक्खियाँ ही मारती हैं, जो छत्ते में शहद लाने का काम करती हैं। अक्सर एक मक्खी एक ही बार डङ्क मार सकती है। क्योंकि मक्खी का डङ्क कटिया की तरह झुका होता है और जब यह किसी चीज़ में घुस जाता है तो वहीं अटक जाता है और मक्खी के शरीर से टूट कर अलग हो जाता है। इससे मक्खी घायल हो जाती है और अक्सर मर जाती है। इसलिए शहद की मक्खी बहुत अधिक दबने पर ही काटती है।

* * *

प्रश्न—आँसू खारे क्यों होते हैं ?

उत्तर—आँसुओं में नमक का कुछ भाग मिला होता है और इसी कारण वे खारे जान पड़ते हैं। वे आँखों के लिए लाभदायक हैं और उनके द्वारा आँखें धुल कर साफ़ हो जाती हैं। मनुष्य के शरीर के लिए साधारण नमकीन पानी बिलकुल शुद्ध पानी की अपेक्षा फ़ायदेमन्द होता है और इस कारण आँसुओं से किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचती।

* * *

प्रश्न—हमें छींक क्यों आती है ?

उत्तर—हमें छींक तब आती है, जब कि नाक के भीतर कोई ऐसी चीज़ पहुँच जाती है जो वहाँ नहीं होनी चाहिए थी। क्योंकि नाक साँस लेने के लिए है। ऐसी किसी चीज़ के पहुँचने पर उसको साफ़ करने के लिए ज़ोर से बहुत सी हवा निकलती है और वही छींक है। हम चाहें तो छींक को रोक भी सकते हैं। अगर हम नाक को नीचे की तरफ़ से, जहाँ कि हड्डी ख़तम होती है, दबा दें तो छींक रुक जाती है।

* * *

प्रश्न—रात को अँधेरा क्यों हो जाता है ?

उत्तर—अगर तुम एक गेंद लो और उसे रोशनी के सामने ले जाओ तो गेंद का आधा हिस्सा, जो रोशनी के सामने होगा, चमकता रहेगा और बाक़ी आधा हिस्सा, जो दूसरी ओर होगा, अँधेरा रहेगा। अगर तुम गेंद पर कोई निशान बना दो और तब गेंद को लट्टू की तरह घुमाना शुरू करो तो वह निशान थोड़ी देर तक दिखाई पड़ेगा और थोड़ी देर तक अँधेरे में चला जायगा। हम जिस पृथ्वी पर रहते हैं, वह भी गेंद की तरह गोल है और बराबर लट्टू की तरह घूमती रहती है, और इसलिए उसका आधा हिस्सा सूरज की रोशनी से हमेशा चमकता रहता है और आधे में अँधेरा रहता है। हम पृथ्वी पर जिस जगह रहते हैं, वह गेंद के निशान की तरह है। कुछ देर तक हमारी जगह सूरज के सामने आ जाती है और कुछ देर के लिए सूरज से दूसरी तरफ़ चली जाती है। जब हम सूरज से दूसरी ओर होते हैं, तब हमारे यहाँ अँधेरा रहता है और उसे हम रात कहते हैं। पर जो लोग पृथ्वी की दूसरी तरफ़ रहते हैं, उनके लिए इसी समय दिन होता है। हम जहाँ रहते हैं वहाँ चाहे जितना ज़्यादा अँधेरा हो, सूरज सदा कहीं न कहीं चमकता रहता है और पृथ्वी सदैव उसकी तरफ़ चलती रहती है!

* * *

'भविष्य' का स्वागत

[साहित्याचार्य "श्री हरिः"]

अनुभूत था वह भूत का,
गौरव कभी इस देश को—
फिर भूल सकते हैं कहो,
क्यों वर्तमान कलेश को !!
प्यारे "भविष्य" करें, भला क्या,
आज स्वागत आपका !
है जल रहा दावा यहाँ,
हृद्देश में सन्ताप का !!

* * *

मोती* जवाहर से पड़े
नर-रत्न जेलों में यहाँ !
लुटे गए हैं, लाल कितने,
हाय खेलों में यहाँ !!
सूनी हुई हैं गोदियाँ,
गृह-दीप कितने बुझ गए !
स्वातन्त्र्य के रण-रङ्ग में,
वर-वीर कितने जुझ गए !!

* * *

मोहन सरीखे साधु भी हैं—
आज कारागार में !
जो शान्ति, समता,
सत्य के अवतार हैं संसार में !!
हे प्रिय "भविष्य" तुम्हीं कहो,
क्या और होना शेष है ?
परतन्त्र भारत के लिए,
यह त्याग का निःशेष है।।

* * *

फूलीं-फलीं फुलवारियाँ,
नव-नेह-नन्दन-क्यारियाँ !
जननन्दिनी, जगवन्दिनी,
सुकुमारियाँ कुलनारियाँ !!
अपमानिता हो, कृष्ण—
जन्म-स्थान में डाली गई !
वे प्राण-प्रतिमा देश की,
जो प्रेम से पाली गई !!

* * *

कोमल कमल से बालकों पर—
गोलियाँ चलतीं यहाँ !
हम भारतीयों के हृदय में,
होलियाँ जलतीं यहाँ !!
आओ "भविष्य" शुभागमन में
बस, यही उपहार है !
इस दीन कुटिया में
बचा प्रेमाश्रु-मुक्ताहार है !!

* कविता लिखी जाने के बाद असाध्य बीमारी के कारण पं० मोतीलाल जी विगत ८ सितम्बर को एकाएक छोड़ दिए गए हैं।

—सं० 'भविष्य'

एक पथिक ने एक व्यक्ति से, जो लकड़ी काट रहा था, पूछा—क्यों भई, रामपुर गाँव का यहाँ से कितनी देर का रास्ता है ?

लकड़ी काटने वाले ने कोई उत्तर न दिया, मौन रहा। पथिक चल दिया। पथिक के थोड़ी दूर चलने पर लकड़ी काटने वाले ने उसे पुकारा। उसके निकट आने पर उसने कहा—आप आध घण्टे में रामपुर पहुँच जायँगे।

पथिक बोला—तुमने पहले क्यों न बताया ?

उसने उत्तर दिया—पहले मुझे यह पता नहीं था कि आप कितनी तेज़ी से चलते हैं, जब मैंने आपकी चाल देख ली तब बताया।

* * *

एक जौहरी एक हलवाई की दूकान में मिठाई लेने जाया करता था। मिठाई ख़रीदते समय वह दो-चार चीज़ें चखने के तौर पर उठा कर खा जाता था। हलवाई उसके स्वभाव से तङ्ग आकर एक दिन उसकी दूकान पर एक अँगूठी ख़रीदने गया। अँगूठी ख़रीदते समय उसने दो अँगूठियाँ उठा कर जेब में रख लीं। जौहरी ने उससे कहा—यह क्या ?

हलवाई बोला—कुछ नहीं, आप मेरी चीज़ें मुँह में रख कर ले जाते हैं, मैं जेब में रख कर लिए जा रहा हूँ।

* * *

एक व्यक्ति एक होटल में भोजन करने गया। जब उसके सामने बिल पेश किया गया तो वह उचित मूल्य की अपेक्षा कहीं अधिक था। भोजनकर्त्ता ने ख़ानसामाँ से कहा—अपने मैनेजर से कहना कि वह अपने हमपेशा लोगों से भी इतना अधिक चार्ज करता है।

कुछ ही क्षणों में मैनेजर बड़े नम्रभाव से आकर बोला—क्षमा कीजिए, मुझे यह पता नहीं था कि आप भी होटल का कार्य करते हैं।

भोजनकर्त्ता ने कहा—नहीं, मैं होटल का कार्य नहीं करता, मैं डाका डालता हूँ।

* * *

एक व्यक्ति एक चित्रकार से बोला—कल मैं नुमाइश में गया था, वहाँ आपका बनाया हुआ एक चित्र भी रक्खा था। उस चित्र को मैं आध घण्टे तक देखता रहा।

चित्रकार प्रसन्न होकर बोला—यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि वह आपको इतना पसन्द आया।

वह व्यक्ति बोला—हाँ, यह भी बात है और सच बात तो यह है कि दूसरे चित्रों के सामने बहुत भीड़ थी—केवल एक आपका ही चित्र ऐसा था, जहाँ मनुष्य कुछ देर एकान्त का आनन्द लूट सकता था।

* * *

भोजनकर्त्ता होटल के ख़ानसामाँ से बोला—आज का खाना बहुत उत्तम था—मैं मैनेजर से होटल के सुप्रबन्ध की प्रशंसा करूँगा।

ख़ानसामाँ बोला—ईश्वर के लिए ऐसा न कीजिएगा, अन्यथा मैनेजर मुझे नौकरी से अलग कर देगा; क्योंकि मैंने ग़लती से मैनेजर साहब का खाना आपको खिला दिया है।

* * *

Registered No. [illegible]

[illegible] परखें ज़रा जौ[illegible] जवाहरलाल के

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

एक अनोखा रिन्द [illegible] महफ़िल में है—
जिसकी हसरत, [illegible] हर किसी के दिल में है,
सहल मुशकिल हो [illegible] मुश्किल कहाँ मुशकिल में है —
क़ाफ़िले के [illegible] अब दामने-मंज़िल में है।
नाख़ुदाई के [illegible] हासल रवाई के लिए!
रहनुमा अच्छा [illegible] मिला है रहनुमाई के लिए!!

सादगी से सादगी के साथ [illegible] जोड़ कर—
ऐशो इशरत से हमेशा के लिए मुँह मोड़ कर।
सारी दुनिया छोड़ कर, सारा ज़माना छोड़ कर—
चैन अगर लेगा, तो [illegible] गुलामी तोड़ कर।
इन्क़लाबाते [illegible] कह रहे हैं हाल के!
जौहरी परखें ज़रा जौहर जवाहरलाल के!!

इसकी दुनिया और ही है, इसका आलम और है,
इसका दरमाँ और है [illegible] सका मरहम और है;
जो सिमट जाता है लहरा कर वह परचम और है,
सर कहीं ख़म हो [illegible] यह दम ख़म और है!
क़द्रो-क़ीमत [illegible] रक्खे दुरे नायाब है
आबरू "मोती" की है क्या ख़ूब आबो ताब है!!

धुन का पक्का है, [illegible] सौदा है अपने काम का,
नाम हो दुनिया [illegible] तालिब नहीं है नाम का।
सामना हर वक़्त [illegible] ने-बैठते आलाम का;
मशग़ला कब [illegible] कब तज़किरा आराम का?
ख़िदमते [illegible] को सौ जी से भिकारी बन गया!
यानी आज़ादी के मन्दिर का पुजारी बन गया!!

हर तरफ़ दुनिया मे है शोहरा जवाहरलाल का,
काम जो होता है वह अच्छा जवाहरलाल का।
बाँकपन एक-एक [illegible] देखा जवाहरलाल का,
मानते हैं अहले-दिल लोहा जवाहरलाल का।
ज़ोर की चलती हुई आँधी जवाहरलाल है!
दर हक़ीक़त दूसरे गाँधी जवाहरलाल है!!

कोई देखे तो [illegible] पर किस तरह क़ुर्बान है,
चलते-फिरते इसको आज़ादी ही का अरमान है।
सच कहा "बिस्मिल" ने प्यारी आन प्यारी शान है,
समझो तो है देवता, देखो तो यह इन्सान है!
क्या जवाहरलाल है सुन लो ज़बाने हाल से!
दो क़दम हर काम में आगे है मोतीलाल से!!

Printed and [illegible]blished by Mr. R. SAIGAL—(Editor). at [illegible] Printing Co[illegible]
28, Edmonstone Road, Chand[illegible]

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

लाहौर-षड्यन्त्र केस के अभियोगी

स्वर्गीय यतीन्द्रनाथ दास

श्री० विजयकुमार सिन्हा

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—१६ अक्टूबर, १९३० | संख्या ३, पूर्ण संख्या ३

पुलिसवालों की दाल नहीं गली !

'भविष्य' की शानदार विजय !!

पहिला अङ्क डाकख़ाने से छोड़ दिया गया !!!

पं० जवाहरलाल नेहरू का शंखनाद

कॉङ्ग्रेस गुप्त-नीति की पोषक कदापि नहीं है

अब लगान बन्दी का अन्दोलन शुरू होगा

पण्डित जवाहरलाल नेहरू के पास नैनी जेल में ११ ता० को तीन बजे उनके छुटकारे का सन्देश भेजा गया और साढ़े तीन बजे पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० मेजर्स अपनी मोटर पर उनको आनन्द भवन पहुँचा गए। श्री० कमला नेहरू उस समय आनन्द भवन में नहीं थीं।

अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस के सेक्रेटरी पण्डित गोविन्दकान्त मालवीय उस समय स्वराज्य भवन में थे। मोटर आती देख कर वे बाहर निकले और पण्डित जवाहरलाल को देख कर उन्होंने उन्हें छाती से लगा लिया। थोड़ी ही देर में यह ख़बर बिजली की तरह शहर भर में फैल गई और अपने हृदय-सम्राट के दर्शन तथा स्वागत के लिए विद्यार्थियों, मित्रों और जनता का आनन्द-भवन में ताँता लग गया। आधे ही घण्टे के उपरान्त वे कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस पहुँचे।

एक प्रेस-प्रतिनिधि के यह पूछने पर कि क्या वे कुछ दिनों आराम करेंगे, उन्होंने उत्तर दिया कि—"इस समय तक मैं करता क्या रहा हूँ ?"

पण्डित जवाहरलाल ने १२ ता० को सवेरे ८ बजे स्वराज्य भवन पर झण्डा फहराया। शहर के सब वालण्टियरों ने झण्डे का अभिनन्दन किया।

सन्ध्या को पाँच बजे राष्ट्रपति के स्वागत के लिए एक विराट जुलूस निकाला गया। जुलूस के आगे राष्ट्रपति और कॉङ्ग्रेस के सेक्रेटरी पं० गोविन्द मालवीय थे। उनके पीछे वानर सेना, महिलाएँ और अन्त में पुरुष थे। जनता राष्ट्रपति के दर्शनों के लिए इतनी उत्सुक थी कि पुरुष और स्त्रियाँ हज़ारों की संख्या में घरों की छतों पर से, इक्कों, ताँगों और गाड़ियों के ऊपर से उनके दर्शन कर रहे थे। कई जगह उन्हें भीड़ ने घेर लिया और वे जुलूस से अलग कर दिए गए; उनका आगे बढ़ना भी मुश्किल हो गया। और वालण्टियरों की सहायता की आवश्यकता पड़ी। जुलूस पुरुषोत्तमदास पार्क में आकर समाप्त हुआ।

विराट सभा

जुलूस के पुरुषोत्तमदास पार्क में पहुँचने के पहले ही सभा के लिए वहाँ हज़ारों आदमी एकत्रित हो गए थे। जुलूस वहाँ पहुँचने के बाद श्रीमती मालवीय के सभापतित्व में विराट सभा हुई। आज की सभा में जैसी भीड़ थी, वैसी बहुत कम अवसरों पर देखने में आई है।

राष्ट्रपति का भाषण

कई पुरुषों और एक स्त्री के बधाई देने के उपरान्त राष्ट्रपति ने अपना भाषण प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में उन हज़ारों स्त्री-पुरुषों को बधाई दी जिन्होंने देश के लिए अपनी आहुति दी, लाठियों के प्रहार सहे और जो अभी जेल के कष्ट भोग रहे हैं।

उन्होंने कहा कि जिस दिन वे जेल से मुक्त हुए वह एक पवित्र दिवस था, क्योंकि उसी दिन वायसराय ने एक नया ऑर्डिनेन्स जारी किया था। हमारे आन्दोलन की सफलता इन्हीं ऑर्डिनेन्सों से मापी जा सकती है, जो शिमला की फ़ैक्टरी से निकलते रहे हैं। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट दिन प्रति दिन इस प्रान्त में कॉङ्ग्रेस कमिटियों को ग़ैरक़ानून क़रार दे रही है। बनारस के बाद शीघ्र ही इलाहाबाद का नम्बर आने वाला है। वास्तव में अब ऐसा समय आ गया है, जब कि हम सब को ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के विरुद्ध बग़ावत कर देना चाहिए

लॉर्ड इर्विन को उत्तर

हाल ही में लॉर्ड इर्विन ने एक भाषण दिया है, जिसमें उन्होंने जयकर और सर सप्रू के सन्धि-प्रस्ताव के सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस की नीति की विवेचना की है। उन्होंने कॉङ्ग्रेस की नीति को 'गुप्त' बतला कर लाञ्छित किया है। परन्तु यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसी संस्था पर, जिसका सम्बन्ध महात्मा गाँधी से हो, 'गूढ़' या 'कूटनीति-पूर्ण' होने का लाञ्छन लगावे, तो उसकी उस नीति से आश्चर्यजनक अनभिज्ञता ही प्रतीत होगी। सचमुच लॉर्ड इर्विन एक ऐसे वातावरण से घिरे हैं, जिससे उन्हें देश का सच्चा-सच्चा हाल मालूम नहीं होने पाता। कॉङ्ग्रेस की नीति गुप्त नहीं है, वह तो उसका खुल्लमखुल्ला प्रचार करती है। सन्धि के समय वायसराय महोदय ने गुप्त रूप से कॉङ्ग्रेस के कई प्रस्तावों की मञ्ज़ूरी का विश्वास दिलाया था। परन्तु कॉङ्ग्रेस इस प्रकार के गुप्त समझौते से सन्तुष्ट नहीं हो सकती।

लॉर्ड इर्विन ने यह भी कहा है कि "कॉङ्ग्रेस ने जो शर्तें रक्खी थीं वे केवल ऊपरी दिखावे के लिए थीं और उनके अनुसार हमसे समझौता नहीं हो सकता।" यह आश्चर्य की बात है कि उन्होंने अभी तक इस बात का अनुभव नहीं किया कि यदि यह सब दिखावे के लिए होता तो लोग इस प्रकार बिना समझे-बूझे आग में न कूद पड़ते, गोलियों के शिकार न बनते और न लाठियों के आघात सहते। वे अपने कुटुम्बों को क्यों चौपट कर रहे और क्यों हज़ारों की संख्या में जेल जा रहे हैं ? आश्चर्य है कि वे आज तक भारतीयों की मनोवृत्ति न जान सके। उन्हें अब यह हमेशा याद रखना चाहिए कि हम लोगों ने अपनी नौकाएँ जला दी हैं और अब पीछे जाने का रास्ता बन्द हो गया है। सबको अब यह समझ लेना चाहिए कि कॉङ्ग्रेस का ध्येय स्वतन्त्रता प्राप्त करना है और वह उस समय तक भयानक युद्ध करेगी जब तक अपने उद्देश्य की प्राप्ति न कर लेगी। जो लोग कॉङ्ग्रेस की नीति को धिक्कारते हैं, उनमें केवल वे ही लोग सम्मिलित हैं, जो पर्दे में रहते हैं और जनता को अपना मुँह दिखाने में भी झेंपते हैं। वे पर्दे की ओट से ही अनाप-शनाप बकते रहते हैं।

(शेष मैटर आठवें पृष्ठ पर देखिए)

पाठक जानते हैं कि 'भविष्य' के पहले अङ्क की २२ हज़ार कापियाँ ३ तारीख़ को स्थानीय डाकख़ाने में रोक ली गई थीं। तब से बार-बार सरकारी अधिकारियों से उसके सम्बन्ध में पूछ-ताछ की गई पर कुछ ठीक पता न लग सका। ग्यारह दिन बीतने पर यकाएक १४ तारीख़ को दिन के साढ़े तीन बजे अफ़वाह सुनने में आई कि पुलिस ने उनको छोड़ दिया है और वह भेजी जा रही हैं। पत्र के सञ्चालक श्री० सहगल जी ने पत्र लिख कर डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट से पूछा कि क्या यह अफ़वाह सच है, तो वहाँ से, उत्तर मिला—"हाँ, सच है।"

देश के प्राङ्गण में

—लाहौर के स्त्री-कॉलेज की प्रोफ़ेसर जनककुमारी ज़ुत्शी ने प्रोफ़ेसरी से इस्तीफ़ा दे दिया। उन्होंने इस्तीफ़े में कॉलेज की प्रिन्सिपल को लिखा है कि :—

"मुझे गवर्नमेण्ट की दमन-नीति का अन्त नहीं दिखता। इसके कारण केवल लाठियों के प्रहार और हज़ारों स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों की गिरफ़्तारी ही नहीं हुई; लाहौर में मेरी माँ और सब बहिनों की गिरफ़्तारी भी इसी के कारण हुई है। इसलिए इस परिस्थिति में मेरा गवर्नमेण्ट से सम्बन्ध स्थापित रखना असम्भव है।

—मालूम हुआ है कि भगतसिंह के प्राण-दण्ड के विरुद्ध उनके पिता सरदार किशनसिंह प्रिवी कौन्सिल में अपील करेंगे।

—आगरे ज़िले में शीघ्र ही लगानबन्दी की तैयारी बड़े ज़ोर से हो रही है।

चमार और डोम कौन्सिल के मेम्बर

देहरादून से संयुक्त प्रान्त की कौन्सिल के लिए एक चमार चुना गया है। उसके विपक्ष में वहाँ के एक बैरिस्टर खड़े हुए थे।

बनारस शहर से चौधरी जगन्नाथप्रसाद (डोम) और बनारस ज़िले से चौधरी भरोस (डोम) संयुक्त प्रान्तीय कौन्सिल के लिए चुन कर भेजे गए हैं। राय-साहिब एस० पी० सन्याल को जो उनके विरुद्ध खड़े हुए थे; इतने कम वोट मिले कि उनकी ज़मानत ज़ब्त कर ली गई।

गाँधी जी की मूर्ति की पूजा

राजशाही (बङ्गाल) में ८ वीं अक्टूबर को वहाँ के सैकड़ों किसानों ने गाँधी जी की मूर्ति के आगे जमा होकर उन कीड़ों के नाश करने की प्रार्थना की जो उनकी चावल की खेती को हानि पहुँचा रहे हैं।

—कॉङ्ग्रेस के स्थानापन्न सभापति चौधरी ख़ली-क़ुज़्ज़माँ ने एक विज्ञप्ति हाल ही में प्रकाशित की है जिसमें उन्होंने लिखा है कि श्रीमती कमला नेहरू ने नैनी जेल में जवाहरलाल जी से भेंट की थी। भेंट में श्री० जवाहर-लाल ने कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी की बैठक, जो ७ अक्टूबर को लखनऊ में होने वाली थी, उनके जेल से छूट जाने के उपरान्त होने की इच्छा प्रकट की है। इसी-लिए बैठक अनिश्चित समय के लिए स्थगित कर दी गई।

—बम्बई की कॉङ्ग्रेस कमिटी ने विलायती औषधियों के बहिष्कार को दृढ़ करने का निश्चय कर लिया है। इसी उद्देश्य से 'प्रिन्सेज़ स्ट्रीट' और 'क्राफ़र्ड मार्केट' की दुकानों पर पिकेटिङ्ग ज़ोरों से होने लगी है। मालूम होता है कि विलायती दवाइयों और रासायनिक पदार्थों के दुकानदारों की एसोसियेशन ने भविष्य में विलायती दवाइयाँ न मँगाने की प्रतिज्ञा की है।

—बहिष्कार आन्दोलन के परिणाम स्वरूप पञ्जाब की धारीवाल मिल बिलकुल बन्द हो गई है और उसके २५०० श्रमजीवी बेकार हो गए हैं।

—सक्खर में हिन्दू-मुसलमानों के उपद्रव की जाँच करने के लिए गवर्नमेण्ट की ओर से एक कमिटी, जिसमें सक्खर के सिटी मैजिस्ट्रेट श्री० ऊधाराम, स्पेशल फ़र्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट ख़ान बहादुर पीरबख़्श और पुलिस के डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री० एट्स सम्मिलित थे, बैठी थी। उसने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि पुलिस ने गिरफ़्तार करने में अन्याय और ज़ुल्म किया है। कमिश्नर ने भी इसका समर्थन किया है।

—बनारस के ११२० स्त्री-पुरुषों ने महात्मा गाँधी की वर्षगाँठ के उपलक्ष में उन्हें अपने हाथ का कता हुआ सूत भेंट किया है।

—९वीं अक्टूबर को कानपूर में साइकिल-दिवस मनाया गया था। इस रोज़ कॉङ्ग्रेस के वालण्टियरों ने वहाँ के बहुत से साइकिल के व्यापारियों से भविष्य में ब्रिटिश साइकिलें, मोटर साइकिलें, और उनके पुर्ज़े न मँगाने की प्रतिज्ञाएँ लीं।

—आगरे में लाहौर कॉन्सपिरेसी-केस के फ़ैसले के विरोध में १० तारीख़ को हड़ताल रक्खी गई और काले फ़्रण्डों का जुलूस निकाला गया, जिसमें भगतसिंह के चित्र को फूलों की माला पहिना कर ले जा रहे थे। श्री० कृष्णदत्त पालीवाल ने भाषण देते हुए कहा कि भगत-सिंह और दूसरे लोग अवश्य ही वीर हैं, पर उन्होंने देश की आज़ादी के लिए जो रास्ता चुना वह उचित नहीं। वे सच्चे देश-भक्त हैं, पर ग़लत रास्ते पर चलने वाले हैं। सब लोगों को कॉङ्ग्रेस का उसूल मानना चाहिए और अहिंसा का पालन करना चाहिए।

—कानपुर की कॉङ्ग्रेस कमेटी ने डेरापुर गोली-काण्ड की जाँच के लिए ५ व्यक्तियों की एक कमेटी क़ायम की है।

—लाहौर केस के फ़ैसले के प्रतिवाद स्वरूप बनारस में पूर्ण हड़ताल मनाई गई। शाम को एक जुलूस निकाला गया और सभा हुई।

—मथुरा का ७ ता० का समाचार है कि वहाँ की जेल में दो राजनीतिक क़ैदियों को किसी छोटे से अपराध में टिकटी से बाँध कर तीस-तीस बेंत लगाए गए। वे बेहोश हो गए। इस अत्याचार के विरोध में वहाँ के राजनीतिक क़ैदियों ने अनशन व्रत धारण कर लिया है। उनका अपराध केवल इतना ही था कि वे सन्ध्या समय जाकर प्रार्थना करते थे। इस ख़बर से शहर में बड़ी सनसनी फैली है।

—'मिलाप' के अमृतसर स्थित सम्वाददाता का कहना है कि वहाँ की 'युद्ध-समिति' के जेलयात्री प्रधान मन्त्री कॉमरेड शमशुद्दीन को लाहौर सेन्ट्रल जेल में सरदार भगतसिंह से हाथ मिलाने के अपराध में डेढ़ माह तक चक्की पीसने की सज़ा दी गई है।

—लाहौर षड्यन्त्र-केस के फ़ैसले के प्रतिवाद स्वरूप लाहौर जेल में श्रीमती लाडोरानी ज़ुत्शी, पूरनदेवी और अन्य स्त्रियों ने २४ घण्टे उपवास किया।

—लाहौर षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों को दी गई कठोर सज़ा के प्रतिवाद स्वरूप दिल्ली में पूर्ण हड़ताल रही। थियेटर, सिनेमा और ट्राम गाड़ियाँ तक बन्द रहीं।

—दिल्ली की बिड़ला मिल में, लाहौर षड्यन्त्र-केस के फ़ैसले के विरोध में, आधे दिन मौन रक्खा गया।

—गत ९ वीं अक्टूबर को अमृतसर के घण्टा घर में टाइप किया हुआ लाल पर्चा चिपका पाया गया। पुलिस ने उसे देखते ही वहाँ से हटा दिया। पर्चे के कारण वह अब बहुत चौकस रहने लगी है।

—ब्यावर का ९ ता० का समाचार है कि ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर बाबू प्रह्लाद राय और अन्य तीन व्यक्ति, जिन्हें २२ वीं सितम्बर को क्रमशः ३ और ६ माह की सख़्त क़ैद की और प्रत्येक को २०० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई थी, अचानक अजमेर जेल से छोड़ दिए गए। जेल से छूटने के पहिले शरद पूर्णिमा के दिन अजमेर के जेलर ने सब राजनीतिक क़ैदियों को भोज दिया था। प्रकाशचन्द्र और हैरेन्ड दो क़ैदियों ने भोज के बाद भजन गाए। बाद में उपर्युक्त अभियुक्तों को दूसरे जेल के तबादले का हुक्म सुनाया। परन्तु जैसे ही वे जेल से बाहर आए उन्हें घर ले जाने के लिए ताँगे खड़े मिले।

—श्री० राघवेन्द्रराव, जो पहिले सी० पी० के मिनि-स्टर थे, अब श्री० ताम्बे की जगह पर वहाँ के होम-मेम्बर नियुक्त किये गए हैं। उन्होंने ८ वीं अक्टूबर से अपने नए पद का चार्ज ले लिया है।

—विलायती सिगरेट के बहिष्कार के कारण चीन भारत में अपने देश के सिगरेट बना कर भेजने लगा है। अभी हाल में नेशनल फ़्लैग मार्का के सिगरेट भारत में आए हैं।

जेल में बच्चा हुआ

—कलकत्ते का समाचार है कि महिला सत्याग्रह-समिति की प्रेसीडेण्ट श्रीमती चमेलीदेवी ने, जो प्रेज़ी-डेन्सी जेल में ६ मास का कारावास दण्ड भोग रही थीं, एक बच्चा प्रसव किया जो छः दिन का होकर मर गया। बच्चे का मृतक शरीर श्रीमती चमेलीदेवी के पति और कुटुम्बियों को दे दिया गया है। बाद में चमेलीदेवी भी सज़ा की म्याद पूरी होने के पहिले ही जेल से मुक्त कर दी गईं।

पुलिस के इस्तीफ़ों की भरमार

अलीबाग़ का ८ ता० का समाचार है कि उस तालुक़े के २० पुलिस के पटेलों ने इस्तीफ़ा दे दिया है। धारवाड़ के समाचारों से विदित होता है कि बेलगाँव ज़िले के मडगाड गाँव की गिरफ़्तारियों के विरोध में वहाँ के एक पटेल और दो कॉन्स्टेबिलों ने इस्तीफ़ा दे दिया है।

—बनारस के वस्त्र-विक्रेताओं का कहना था कि एक माह पहले जिन विदेशी-गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगाई गई थी उन्हें बेचने की अनुमति दी जावे। पर वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमेटी ने निश्चय किया है कि किसी हालत में भी कॉङ्ग्रेस की मुहर नहीं तोड़ी जायगी।

—मिदनापुर ज़िले में खड़गपुर से तीन मील दक्षिण हिजली नामक स्थान में राजनीतिक क़ैदियों को रखने के लिए ज़िला जेल की एक शाखा खोली गई है। उसमें केवल "सी" क्लास के चार हज़ार क़ैदियों के निवास का प्रबन्ध हुआ है।

—नवीन ऑर्डिनेन्स के कारण बम्बई की प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमेटी ने निश्चय किया है कि उसकी 'युद्ध-समिति' में सात के बजाय तीन सदस्य रहें और जो कितनी ही विभिन्न कमेटियाँ, जैसे बॉयकॉट कमेटी, रिलीफ़ कमेटी आदि, बनाई गई हैं, उनको तोड़ दिया जाय। नई 'युद्ध-समिति' के डिक्टेटर श्री० नगीनदास वालण्टियरों का पुनर्सङ्गठन कर रहे हैं और कैम्पों की संख्या घटा रहे हैं। यह भी निश्चय हुआ है कि श्रीमती कस्तूर बाई गाँधी की अपील के अनुसार कार्यकर्ताओं और फ़ण्ड को गुजरात के गाँवों में भेज दिया जाय।

—विलेपारले (बम्बई) की सत्याग्रह छावनी पर पुलिस का क़ब्ज़ा हो जाने से नए कैम्प की स्थापना की गई है और श्रीमती कमला बेन उसकी प्रेज़िडेण्ट नियुक्त की गई हैं। १२ तारीख़ को इसके उपलक्ष में वहाँ बड़ा उत्सव मनाया गया और नमक-सत्याग्रह किया गया।

—बम्बई के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने राष्ट्रीय स्वयंसेवकों को एसप्लेनेड मैदान में ड्रिल करने या दल बना कर चलने से रोकने की आज्ञा दी थी। अब यह आज्ञा दो महीने के लिए और बढ़ा दी गई है।

—कोकोनाडा (मद्रास) का समाचार है कि पुलिस ने ईस्ट गोदावरी कॉङ्ग्रेस-कमेटी के दफ़्तर की तलाशी ली। वह कोई ज़ब्त पर्चा ढूँढ़ रही थी। पर उसके न मिलने से ख़ाली हाथ लौट गई।

—दिल्ली कॉङ्ग्रेस कमेटी के भूतपूर्व डिक्टेटर मि० आसफ़ अली बैरिस्टर दिल्ली से गुजरात जेल भेज दिए गए हैं। 'सी' क्लास के २१ क़ैदी भी मुलतान जेल भेज दिए गए हैं।

—गोरखपुर के परमहंस राघवदास जेल से छूट गए। उनका स्वागत धूमधाम से किया गया और प्रधान बाज़ारों में होकर उनका जुलूस निकाला गया।

—अमृतसर में फागूमल नामक युवक, जो आत्म-हत्या के अभियोग में पकड़ा गया था, रिहा कर दिया गया। वह इण्डिया, ऑस्ट्रेलिया और चीन के चार्टर्ड बैङ्क की विदेशी कपड़े की भरी हुई लॉरी के सामने, जो बाहर जा रही थी, लेट गया था। प्रतिवादी की युक्ति थी कि वह वहाँ रुपया लेने गया था, परन्तु भीड़ में धक्का लग जाने के कारण वह गिर पड़ा था।

—श्री० सेन गुप्त ने १४ वीं ता० को कराची के व्यापारियों की एक सभा में भाषण देते हुए कहा कि उन व्यापारियों की प्रार्थना का विरोध किया जाय जो विदेशी कपड़े के मौजूदा स्टॉक को बेचने की स्वतन्त्रता चाहते हैं। उन्होंने उनसे महात्मा गाँधी और अन्य ५०,००० भारतीयों के बलिदान की ओर ध्यान देने की प्रार्थना की। उन्होंने यह भी कहा कि गोलमेज़ परिषद् को सफलता नहीं मिल सकती। जब भारत विजय प्राप्त कर लेगा तब एक बार उन्हें फिर कॉन्फ्रेंस करने की आवश्यकता पड़ेगी।

—बम्बई के विदेशी कपड़े के व्यापारियों का एक डेपुटेशन मसूरी में पण्डित मोतीलाल नेहरू के पास गया था कि दिवाली के दिनों में उनको विदेशी कपड़े बेचने की अनुमति मिल जाय। पर उनको इस उद्देश्य में सफलता प्राप्त नहीं हुई। इस पर 'नेटिव पीस गुड्स मरचैण्ट्स एसोसियेशन' ने अपनी एक बैठक में बाज़ार को फिर से खोलने और तमाम विदेशी कपड़े को, जिसकी क़ीमत ५ करोड़ रुपया है, बेच डालने का निश्चय किया। साथ ही उन्होंने भविष्य में विदेशी कपड़ा न मँगाने की भी प्रतिज्ञा की। १७ तारीख़ को जब कि बाज़ार खुलने वाला था बहुत से कॉङ्ग्रेस के नेता और वालण्टियर वहाँ पहुँचे और उन्होंने व्यापारियों को समझाया कि इस मौक़े पर जब कि समस्त भारत नेतृत्व के लिए बम्बई की तरफ़ देख रहा है, उनका यह कार्य उचित नहीं। इस पर अधिकांश व्यापारियों ने अपनी दुकानें नहीं खोलीं।

—अमृतसर की 'इण्डियन मरचेण्ट्स एसोसियेशन' ने ऑल इण्डिया कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट के पास तार भेजा है कि अमृतसर की कॉङ्ग्रेस कमिटी के अधिकारी विदेशी कपड़े के बेचने के सम्बन्ध में अपने नातेदारों और दोस्तों का पक्षपात कर रहे हैं और इस प्रकार वे लोग दूसरों की हानि करके हज़ारों रुपए कमा रहे हैं। इसलिए पिकेटिङ्ग और बायकॉट को उठा दिया जाय और सब व्यापारियों के साथ समान बर्ताव किया जाय।

* * *

—१० अक्टूबर को रङ्गपुर जेल के सिविल सर्जन और सुपरिण्टेण्डेण्ट डॉक्टर भौमिक के सिर पर किसी अज्ञात व्यक्ति ने दो लट्ठ जमा दिए, जिससे रक्त की धारा बह निकली। आप उठा कर घर लाए गए। अभी तक इस सम्बन्ध में कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई है।

—मैमनसिंह का १०वीं अक्टूबर का समाचार है कि ६ ता० को साढ़े सात बजे रात को तीन सशस्त्र नक़ाबपोश डाकुओं ने वहाँ के पोस्ट और टेलीग्राफ़ के सुपरिण्टेण्डेण्ट के घर में घुस कर उन पर आक्रमण किया। सुपरिण्टेण्डेण्ट के हल्ला मचाने पर नक़ाब-पोश भाग गए। भागते-भागते उन्होंने चपरासी को गोली मारी, पर किसी को लगी नहीं। पुलिस बड़ी सरगरमी से मामले की जाँच कर रही है।

—६ वीं अक्टूबर को नारायणगञ्ज के सिनेमा घर में तमाशा देखते समय नारायणगञ्ज 'चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स' के सेक्रेटरी श्री० जे० एच० कर्कलैण्ड अचानक गोली से घायल हो गए। मालूम होता है एक यूरोपियन दर्शक भरा हुआ तमञ्चा सिनेमा घर लेता गया था, जिसके गिरने से गोली चल गई और कर्कलैण्ड आहत हो गए। वे अस्पताल में अच्छे हो रहे हैं।

—२६ सितम्बर की रात्रि को एटा की डिस्ट्रिक्ट जेल से डकैती केस के २८ मुलज़िमों ने अपनी बारक के लोहे के सींकचे तोड़ कर भागने का प्रयत्न किया। जैसे ही वे

वायसराय घोड़े से गिरे

शिमला का ८ वीं अक्टूबर का समाचार है कि आज चाय पार्टी के समय वायसराय की ठुड्डी पर पट्टी बँधी देख कर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। मालूम हुआ है कि उसी दिन सवेरे वे घोड़े से गिर कर घायल हो गए थे।

स्त्रियों के वार्ड के ऊपर से फाँदने लगे, राजनीतिक क़ैदी श्रीमती सावित्रीदेवी चिल्ला उठीं जिसके कारण वहाँ के सन्तरी एकत्रित हो गए और उनमें से केवल छः ही भागने पाए। भागे हुए क़ैदियों का कोई पता नहीं है।

—गत ६वीं अक्टूबर का समाचार है कि मिदनापूर के डिस्ट्रिक्ट जज के चपरासी राजनरायण सिंह को बङ्गाल नागपुर रेलवे के दो सिक्ख कर्मचारियों को पानी में डूबने से बचाने के कारण 'रॉयल ह्यूमेन सोसाइटी' का मेडल और सर्टिफ़िकेट दिया गया है। राजनरायण ने इनकी रक्षा अपनी जान ख़तरे में डाल कर की थी।

—स्वामी सत्यानन्द सभापति हिन्दू मिशन, कलकत्ता और भगवानप्रसाद अग्रवाल ने प्रचार के लिए सन्थाल परगना (बिहार) में एक लम्बी यात्रा की है।

—यू० पी० गवर्नमेण्ट ने दो साल के लिए रायबरेली के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को बन्द कर दिया है और उसके चेयरमैन तथा मेम्बर को हुक्म दिया है कि अपने पदों को ख़ाली कर दें। कारण यह बतलाया गया है कि बोर्ड बराबर अपने कर्त्तव्य की अवहेलना करता रहा है। बोर्ड की आर्थिक दशा बहुत ख़राब थी और गत तीन वर्षों में बार-बार चेतावनी देने पर भी उसका सुधार नहीं किया गया।

—१२ तारीख़ की रात को देहली के चाँदनी चौक और पहाड़गञ्ज में दो स्थानों में आग लगी। पर फ़ायर ब्रिगेड की मुस्तैदी के कारण अधिक नुक़सान नहीं हुआ।

—हैदराबाद का १२ वीं ता० का समाचार है कि कल सक्खर में एक मोटर-दुर्घटना से उसके सभी यात्री घायल हो गए। वे सब अस्पताल में पहुँचा दिए गए हैं।

—अहमदाबाद की गुजरात जिनिङ्ग मिल के मज़दूरों ने १३ तारीख़ से हड़ताल कर दी है। वे कारख़ाने में गए, पर मशीनों के पास चुपचाप बैठे रहे। उनका कहना है कि उनकी मज़दूरी घटा दी गई है। रामकृष्ण मिल के मज़दूरों ने भी इसी कारण हड़ताल की है।

—रावलपिण्डी का समाचार है कि क्रान्तिकारी दल की खोज लगाने के लिए पुलिस ने बहुत से घरों की तलाशियाँ लीं और किशनलाल, गुरुबख़्शसिंह, सेवाराम, शारदासिंह, चार सुनारों और महाराज किशन को गिरफ़्तार किया। सुजानसिंह की हवेली और अस्तबल की तलाशी लेते समय पुलिस को दो बम ईंधन के कमरे में छिपे हुए मिले। वे भी गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बनारस का समाचार है कि ६ अक्टूबर को रामनगर स्टेट में पुलिस ने एक घर की तलाशी ली जिसमें उसे चार पिस्तौलें और कुछ कारतूस मिले। पुलिस एक आदमी को गिरफ़्तार कर ले गई।

लाहौर में पुलिस सार्जेण्ट पर गोली

१२ ता० की रात को लाहौर पुलिस का सार्जेण्ट स्माइथ बाहर से लौट कर जब अपने घर में घुस रहा था, उस समय दो नवयुवकों ने उस पर गोली चलाई। उनमें से एक को एक यूरोपियन दुकान के चपरासी ने बाईसिकल पर भागते देखा। आक्रमणकारियों ने तीन गोलियाँ चलाईं, पर स० स्माइथ को एक भी नहीं लगी।

—लाहौर में पुलिस जिस दूसरे कॉन्सपिरेसी केस की तैयारी कर रही है, उसके सम्बन्ध में अफ़वाह है कि एक कॉपोनवीस एप्रूवर बन गया है। उसके बतलाने पर पुलिस उसके घर के दरवाज़े को निकाल कर ले गई जिस पर पिस्तौल चलाने का अभ्यास किया जाता था। इस मुक़दमे में अब तक २५ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

—ढाके का ६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ ८ ता० की रात्रि को जगदीशचन्द्र नामक एक बङ्गाली युवक पर किसी ने घातक प्रहार किया, जिससे वह थोड़ी देर बाद मर गया। कहा जाता है कि वह पुलिस का भेदिया था और उसे गुप्त ख़बरें दिया करता था। इसके साथ के एक मुसलमान मित्र के सिर पर लोहे की छड़ी से प्रहार किया गया। वह मरा तो नहीं, पर चोट के कारण मिटफ़ोर्ड अस्पताल में पड़ा है। घातक का पता नहीं है और न इस सम्बन्ध में अभी तक कोई गिरफ़्तारी की गई है। श्री० पी० के० बोस, बैरिस्टर, शशाङ्क मोहन बोस और अन्य कई व्यक्तियों के घरों की तलाशी ली गई है।

—कलकत्ते का १४ ता० का समाचार है कि जमालपुर में पुलिस के एक सब-इन्स्पेक्टर और एक कॉन्स्टेबिल को जान से मारने का प्रयत्न किया गया था। घातकों का पता नहीं है। मालूम हुआ है ७॥ बजे सवेरे उनकी ओर ५ गोलियाँ दाग़ी गईं। पुलिस ने भी ६ गोलियाँ छोड़ीं। पुलिस वालों में कोई घायल नहीं हुआ। इसका पता नहीं लगा कि घातकों को भी गोली लगी या नहीं।

—बम्बई में १४ ता० को लेमिङ्गटन रोड की दुर्घटना के सम्बन्ध में तलाशी लेते समय दादर के एक अध्यापक के घर में पुलिस को बिना लैसन्स का एक रिवॉल्वर और कुछ कारतूस मिले हैं। इस सम्बन्ध में पुलिस ने तीन आदमियों को और भी गिरफ़्तारी की है। सब पुलिस की हवालात में भेज दिए गए हैं।

* * *

"हम भगतसिंह से सहानुभूति क्यों दिखाते हैं ?"

बम्बई में श्री० सेनगुप्त की गर्जना

बम्बई में लाहौर षड्यन्त्र केस के फ़ैसले के विरोध में आज़ाद मैदान में जो विराट सभा हुई थी उसमें भाषण देते हुए श्री० सेन गुप्त ने कहा है :—

"इसमें सन्देह नहीं कि भगतसिंह के कार्य कॉङ्ग्रेस के सिद्धान्तों के विरुद्ध थे। परन्तु वह देशभक्ति का जीता-जागता आगार था, जो राष्ट्रीय कॉङ्ग्रेस का उद्देश्य है, यद्यपि हम रक्त बहा कर स्वतन्त्रता प्राप्त करना नहीं चाहते तो भी हम उन सब देशभक्त युवकों के साथ अपनी सहानुभूति दिखाते हैं, जो लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों के रूप में अपना आत्म-बलिदान कर रहे हैं।

"दूसरे देशों के आलोचक यह कहने में कभी न चूकेंगे कि कॉङ्ग्रेस ऐसे षड्यन्त्रों से सम्बन्ध रखती है, परन्तु इसका उत्तर यह है कि कॉङ्ग्रेस अभियुक्तों का पक्ष नहीं लेती। वरन् वह गवर्नमेण्ट की उस अन्यायपूर्ण नीति का विरोध करती है, जिससे उनके मुक़द्दमे की कार्यवाही की गई है और उन्हें ऐसी सज़ा दी गई। इसके साथ यदि ऐसे युवकों के कार्यों को, जिनके हृदय में एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आग जल उठी है, गवर्नमेण्ट दोषपूर्ण ठहरा कर ऐसी अन्यायपूर्ण सज़ाएँ देगी, उन्हें जेल में ठूँसेगी, तो वे अधिकाधिक तादाद में हिंसात्मक आन्दोलन में सम्मिलित होंगे जैसा कि वे इस समय कर रहे हैं।"

उन्होंने यह भी कहा कि जो युवक हिंसात्मक क्रान्ति से उद्देश्य प्राप्ति करने में विश्वास करते हैं उन्हें भगतसिंह और उसके साथियों के भाग्य निर्णय से यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि हिंसात्मक उपायों से वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर सकते।

गुजरात में लगान-बन्दी का आन्दोलन

बोरसद में अनेकों गाँव ख़ाली हो रहे हैं

बोरसद ताल्लुक़े ने लगान न देने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। किसान अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए तैयार हो गए हैं। वहाँ का मामलातदार नित्य प्रति बीस सशस्त्र कॉन्स्टेबिलों के साथ गाँव-गाँव लगान वसूल करने के लिए घूमता है और पट्टीदार जाति के विरुद्ध, जो इस आन्दोलन का नेतृत्व कर रही है, लोगों को भड़काने का प्रयत्न कर रहा है, पर ताल्लुक़ा अपने निश्चय पर दृढ़ है। बोरसद के मामलातदार ने ९ अक्टूबर के पहिले लगान चुकाने का नोटिस निकाला था। उसके परिणाम स्वरूप, प्रायः सब गाँवों के किसान अपनी चल-सम्पत्ति लेकर उन गाँवों में चले गए हैं, जिनमें लगान-बन्दी का आन्दोलन प्रारम्भ नहीं हुआ है। कुछ गाँवों के लोग कुर्क़ी के क़ुर्कों से बचने के लिए घर छोड़ कर खेतों में झोंपड़ी बना कर रहने लगे हैं। मामलातदार के नोटिसों और हथियारबन्द पुलिस की गश्त से वहाँ के किसानों में सनसनी फैल गई है और वे पहले से ही साव-धान हो गए हैं। गत ३ अक्टूबर को वहाँ का कुर्क़ी क्लर्क और हथियारबन्द पुलिस के साथ बोरसद स्टेशन पर पहुँचा उसने बोरसद के पास बसना नामक गाँव के श्री० छगन भाई माथुर भाई पटेल की तम्बाकू की ३१ गाँठे क़ुर्क़ कर लीं। मालूम हुआ है कि छगन भाई के ऊपर पिछले साल के लगान की कोई बाक़ी नहीं थी, और उनके पिता को जो इस साल का लगान देना है उसकी म्याद बाक़ी है।

१० साल के बच्चे को तीन वर्ष का दण्ड

अमृतसर के एडीशनल ज़िला मैजिस्ट्रेट बाबा नानक सिंह ने हाल ही में १० वर्ष के नानकचन्द को ३ मास के कठिन कारावास का दण्ड दिया था। साथ ही उन्होंने उसे तीन साल के लिए दिल्ली के रिफ़ार्मेटरी स्कूल में भेजने का भी ऑर्डर दिया था। इस ऑर्डर के विरुद्ध सेशन्स जज की अदालत में अपील की गई थी। उस फ़ैसले में आपने लिखा कि अपराधी को कितना ही तुच्छ दण्ड दिया गया हो वह क़ानून के अनुसार रिफ़ार्मेटरी स्कूल भेजा जा सकता है। उन्होंने यह भी लिखा कि यद्यपि अपराधी बहुत कम उमर का है, परन्तु मालूम पड़ता है कि वह बहुत दिनों से गवर्नमेण्ट और पुलिस के विरुद्ध कॉङ्ग्रेस के सिद्धान्तों का प्रचार कर रहा है। अपील रद्द कर दी गई।

२० हज़ार महिलाओं का जुलूस

गाँधी दिवस के दिन बम्बई में २० हज़ार महि-लाओं का बड़ा शानदार जुलूस निकला था। जिस-जिस रास्ते पर से जुलूस निकला उस पर पुष्प-वर्षा की गई। इस एक मील लम्बे जुलूस का नेतृत्व श्रीमती परीबेन केप्टन; श्रीमती लीलावती मुन्शी और श्रीमती लुक़मानी ने किया। जुलूस आज़ाद मैदान में एक विराट सभा के उपरान्त समाप्त हुआ। मीरा बहिन ने सभा में अपने भाषण में कहा कि "जो अङ्गरेज़ संसार से कहते हैं कि सत्याग्रह आन्दोलन अन्तिम साँसें ले रहा है, उन्हें आकर आज़ाद मैदान की यह सभा देखना चाहिए। मैं बिहार, उड़ीसा और आसाम के दौरे से अभी वापस आई हूँ। वहाँ विदेशी का एक तार दिखाई नहीं देता। बम्बई की बहिनों को उन प्रान्तों का अनुकरण करना चाहिए।"

लाहौर में विराट जुलूस

लाहौर षड्यन्त्र केस के फ़ैसले के विरोध में लाहौर में एक विराट जुलूस निकाला गया। हज़ारों आदमी नङ्गे सिर जुलूस में सम्मिलित हुए। जुलूस परी-महल से उठ कर पापड़-मण्डी, चौक, चकला, लाहौरी गेट, अनारकली होता हुआ मोरी गेट पर रुका, जहाँ एक विराट सभा हुई। रास्ते भर 'इनक़िलाब ज़िन्दाबाद' और 'भगतसिंह ज़िन्दाबाद' के नारे लगाए गए। सभा में भगतसिंह के पिता और तीन छूटे हुए अभियुक्तों को सम्मान-पत्र दिया गया और फ़ैसले के विरोध में एक प्रस्ताव पास करने के बाद सभा समाप्त हुई।

६००० स्त्री-पुरुषों ने क़ानून-भङ्ग किया

कराड़ी (गुजरात) का समाचार है कि ४थी ता० की रात्रि को २॥ बजे से ही आस-पास के गाँवों के स्त्री-पुरुष नमक-क़ानून भङ्ग करने के लिए कराड़ी में, जहाँ महात्मा गाँधी का केम्प था, एकत्रित होने लगे। ३॥ बजे चर्खा और कपास की पूजा के उपरान्त लगभग ६००० के समूह ने जिसमें १२०० स्त्रियाँ सम्मिलित थीं, नमक-क़ानून भङ्ग किया।

बारह को आजन्म कालापानी

गत जून में चेचूहाट (दासपुर) में बलवा हो जाने के कारण पुलिस के चार कॉन्स्टेबिलों और दो सब-इन्स्पेक्टरों को मारने, उनके हथियार छीनने और उनमें से एक सब-इन्स्पेक्टर भोलानाथ घोष को मार डालने के अभियोग में ३३ बङ्गाली युवक गिरफ़्तार हुए थे। स्पेशल ट्रिब्यूनल ने २९ सितम्बर को उनके मुक़द्दमे का फ़ैसला सुना दिया। फ़ैसले के अनुसार १२ युवकों को आजन्म कालेपानी का और ९ को २-२ वर्ष के कठिन कारावास का दण्ड मिला। नौ निर्दोष कह कर छोड़ दिए गए। सात सबूत न मिलने के कारण पहिले ही छोड़ दिए गए थे।

मुरादाबाद कॉङ्ग्रेस पर धावा

गत ३री ता० को पुलिस के १० कॉन्स्टेबिलों और अफ़सरों ने रात्रि में ४ बजे मुरादाबाद कॉङ्ग्रेस कमिटी पर धावा किया। कॉङ्ग्रेस दफ़्तर का ताला बन्द होने के कारण पुलिस ने ताला तोड़ डाला और डैस्कें—जिनमें रजिस्टर, काग़ज़, दावातें, पेन्सिलें, पत्र, फ़ाइल, कम्बल, चाँदनी, वालण्टियरों के कपड़े, बेल्ट, झण्डे, लोटा और गिलास बन्द थे, उठा ले गई। पुलिस के हाथ में उस समय जो भी चीज़ आई सब ले गई। यहाँ तक कि नौकर की चिलम और तम्बाकू तक नहीं बचने पाया। शहर में १४ दिन के लिए-१४४ दफ़ा और भी बढ़ा दी गई है

उसी दिन कॉङ्ग्रेस वालण्टियर-सङ्घ के कप्तान श्री० रामग़ुलाम, जमाइत-उल-उलेमा के प्रेज़िडेण्ट मौलाना फ़ख़रुद्दीन अहमद और सेक्रेटरी मौलाना मुहम्मद अली गिरफ़्तार किए गए। वारण्ट दिखाते ही वे कोतवाली पहुँच गए। ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी बाबू सन्तसरन अग्रवाल भी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

'भारत अपना सर्वस्व निछावर करके स्वतन्त्र होगा'

वाशिङ्गटन (अमेरिका) का समाचार है कि अमे-रिका की "भारतीय नेशनल कॉङ्ग्रेस" के प्रेज़िडेण्ट श्री० शैलेन्द्रनाथ घोष ने, जो अमेरिका का दौरा करने के लिए निकले हैं, अपने भाषण में कहा है कि—"भारत के लोग अपना सर्वस्व निछावर करके भी स्वतन्त्रता लेंगे।"

* * *

—अमृतसर में जलियाँवाला बाग़ पर धावा बोल कर पुलिस वहाँ की 'युद्ध-समिति' के २२वें डिक्टेटर श्री० फ़तह मुहम्मद और दो अन्य सदस्यों को गिरफ़्तार कर ले गई।

—बाल-भारत सभा का उत्साही कार्यकर्ता, विश्वनाथ नामक एक ११ वर्ष का बालक लायलपुर में गिरफ़्तार कर लिया गया। उसे २॥ माह की क़ैद की सज़ा हुई है।

—लायलपुर का समाचार है कि पञ्जाब के युवक कवि श्री० हुबरात को छः मास के कठिन कारावास की सज़ा हो गई।

—रोपड़ का समाचार है कि बाल-भारत-सभा अम्बाला का प्रेज़िडेण्ट ओमप्रकाश नामक १२ वर्ष का बालक यहाँ मोरन्द से गिरफ़्तार कर लाया गया था। उसे मोटर पर लाने को कहा गया था, पर उसे १० मील से अधिक पैदल चलाया गया। रास्ते में प्यास लगने पर जब उसने पानी माँगा तब उसे पानी तक नहीं दिया गया।

श्रीमती ज़ुत्शी की चार लड़कियाँ गिरफ़्तार

लाहौर में षड्यन्त्र केस के फ़ैसले के, विशेषकर भगतसिंह और अन्य दो की फाँसी की सज़ा के, विरोध में पूर्ण हड़ताल रही। बहुत सी शिक्षा संस्थाएँ भी बन्द रहीं। जो संस्थाएँ बन्द न थीं उन पर पिकेटिङ्ग की गई। इस पिकेटिङ्ग में ११ स्त्रियाँ और विद्यार्थी गिरफ़्तार हुए। स्त्रियों में प्रोफ़ेसर जनक कुमारी ज़ुत्शी एम० ए०; स्टूडेण्ट्स यूनियन की प्रेज़िडेन्ट कुमारी मनमोहनी ज़ुत्शी; कुमारी श्यामा ज़ुत्शी, कृष्णा कुमारी ज़ुत्शी और स्वदेश कुमारी सम्मिलित हैं। पुरुषों में श्री० वीरेन्द्र, श्री० नरेन्द्र और रोशनलाल गिरफ़्तार हुए। गवर्नमेण्ट कॉलेज पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ३० विद्यार्थी गिरफ़्तार हुए।

—दिल्ली में राष्ट्रीय मुस्लिम यूनीवर्सिटी (जामिया मिल्लिया इस्लामिया) के प्रोफ़ेसर शफ़ीक़ुल रहमान को दफ़ा १२४ ए के अभियोग में एक साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—बैङ्कों के गोदामों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण दिल्ली के चार स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कानपुर में युवक-सङ्घ के संयुक्त मन्त्री श्री० शामाश्रय वाजपेयी और कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ता श्री० बी० एन० शर्मा, कौन्सिल पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए। अन्य पाँच वालण्टियर रेलवे के अहातों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण गिरफ़्तार किए गए।

—बलिया में पिकेटिङ्ग के अभियोग में ९ वालण्टियरों को ६-६ मास के कठिन कारावास और ५०-५० रुपए जुर्माने का दण्ड दिया गया।

—आगरे की सुप्रसिद्ध स्त्री कार्यकर्त्री श्रीमती शुकदेवी पालीवाल फ़ीरोज़ाबाद में गिरफ़्तार कर ली गईं।

—पटना का समाचार है कि वहाँ केवल एक दिन में गाँजा भाँग और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ४० गिरफ़्तारियाँ हुईं।

—नागपुर का समाचार है कि मराठी सी० पी० की 'युद्ध-समिति' के नौवें डिक्टेटर श्रीयुत शेरलेकर को छः मास की सख़्त सज़ा और २०० रुपए जुर्माने का दण्ड मिला है। जुर्माना न देने पर उन्हें १॥ मास की सख़्त क़ैद और भोगनी पड़ेगी। उनका स्थान कौन्सिल की भूतपूर्व सदस्य श्रीमती अनुसूया बाई काले ने ग्रहण किया है।

पुलिस की सङ्गीनों से दो मरे

नागपुर का समाचार है कि भण्डारे ज़िले की गोंदिया तहसील में अतिरिक्त पुलिस ने, उनका व्यक्तिगत कार्य करने से इन्कार करने के कारण, कोहीदी गाँव के तिम्भा और जन्याकेवल नामक दो आदमियों को सङ्गीनों से आहत कर दिया। गोंदिया की 'वार-कौन्सिल' ने नागपुर से सहायता माँगी और वहाँ से डॉक्टर सौनक और देशमुख वहाँ पहुँचे। परन्तु उनके वहाँ पहुँचने के पहले ही वे मर चुके थे। कुछ लोगों का कहना है कि पुलिस ने अपनी आत्म-रक्षा के लिए हथियारों का उपयोग किया था। गाँव के ४०० आदमियों ने मृतकों के शरीर का जुलूस निकाल कर गाँव भर में घुमाया।

—मदुरा कॉङ्ग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी श्री० सुन्दरम पिलाई को एक साल की सादी क़ैद की सज़ा हो गई।

—कानपुर का १३ ता० का समाचार है कि पण्डित श्रीरत्न शुक्ल एम० ए०, एल्-एल्० बी०, एडवोकेट, जो प्रॉविन्शल कॉङ्ग्रेस कमेटी के मेम्बर थे, १०८ दफ़ा में गिरफ़्तार कर लिए गए। बाबू हीरालाल बर्मा भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कानपुर के एक प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री० वीरभद्र तिवारी गत रविवार को गिरफ़्तार कर लिए गए। लाहौर कॉन्सपिरेसी-केस से रिहा होने वाले अभियुक्त अजयकुमार का तिलक-मैदान में स्वागत किया गया। पिकेटिङ्ग के अभियोग में ८ और ९ वर्ष की आयु के दो बालक भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—आगरे के चूलहाउली गाँव में तीन गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। श्रीमती पालीवाल का मुक़दमा अचानक दस तारीख़ को पेश हुआ और उनको छः महीने की सख़्त सज़ा दी गई। उनको 'ए' क्लास में रक्खा गया है।

—पेशावर में १२ और १३ तारीख़ को आठ लाल कमीज़ वाले वालण्टियर शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करते हुए गिरफ़्तार किए गए हैं।

सिवनी में गोली चली

सिवनी (सी० पी०) के तुरिया नामक गाँव में पुलिस का एक दल जङ्गल सत्याग्रह को रोकने के लिए गया था। उसके समझाने से सत्याग्रहियों ने अपना विचार छोड़ दिया। जब पुलिस वाले लौट रहे थे तो उनको लोगों का एक बड़ा समूह मिला जिसने उन पर लाठियों से हमला किया। पुलिस ने गोली चलाई। एक पुरुष तथा एक स्त्री के मरने तथा १७ लोगों के घायल होने की ख़बर है। ये सब लोग सिवनी के अस्पताल में लाए गए हैं।

—जमाय-तुल-उलेमा के प्रेज़िडेण्ट मौलवी मुफ़्ती क़िफ़ायतुल्ला को दिल्ली के मैजिस्ट्रेट मि० पूल ने छः मास की सज़ा दी है। उनको 'ए' क्लास में रक्खा गया है। १३ तारीख़ को इस सज़ा के विरोध में दिल्ली में पूर्ण हड़ताल मनाई गई और एक जुलूस भी निकाला गया।

सिलसण्डा (क़ायमगञ्ज) के श्रीयुत मेवाराम लोगों को भड़काने के अभियोग में पकड़े गए हैं। जब उनको पता लगा कि उनके नाम वारण्ट है तो वे कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस में पहुँच गए और वहाँ से लोगों ने जुलूस के साथ उनको थाने पहुँचाया।

—लाहौर के फ़ोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में दीवानचन्द और रामप्रकाश नामक दो विद्यार्थी गिरफ़्तार किए गए थे। उनको तीन-तीन महीने की सख़्त सज़ा दी गई।

—लाहौर सिटी कॉङ्ग्रेस कमिटी के चौथे डिक्टेटर मि० सुजानमल और दयालसिंह कॉलेज का विद्यार्थी चुन्नीलाल कोहली क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—दिल्ली में चार्टर्ड बैङ्क के गोदाम में विदेशी कपड़े की गाठों पर पिकेटिङ्ग करते हुए तीन स्वयंसेवक १० वीं अक्टूबर को गिरफ़्तार किए गए। कॉङ्ग्रेस कमिटी के ऑफ़िस में मि० महम्मद इस्माइल भी गिरफ़्तार कर लिए गए।

—दिल्ली की महिला स्वयंसेविकाओं की कप्तान मेमोबाई १२ ता० को गिरफ़्तार कर ली गईं। उसी दिन नौ स्वयंसेवक और चार कप्तान भी गिरफ़्तार किए गए।

—अकोला (बरार) के पारसी-तकली स्थान में श्री० अमृतराव देशमुख गिरफ़्तार किए गए। उनको सत्याग्रह करने के अभियोग में चार मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

हवड़ा में ५३ गिरफ़्तारियाँ

१३ तारीख़ को पुलिस ने हवड़ा के अनेक मकानों पर एक ही समय में धावा किया और ५३ नवयुवकों को गिरफ़्तार किया। ये गिरफ़्तारियाँ एक गाँव में वालण्टियरों द्वारा विलायती कपड़े के जलाए जाने के सम्बन्ध में हुई हैं। सन्तरागाछी कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस में पुलिस ने ताला लगा दिया है। हवड़ा कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस की भी तलाशी ली गई और तीन स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया गया।

—सूरत के नगर मजिस्ट्रेट ने वहाँ की "युद्ध परिषद्" के अध्यक्ष श्री० रतनभाई खाँडवाला और मन्त्री श्री० रतिलाल नाथभाई जारूवाला को १२७ ब और १४३ धाराओं के अनुसार क्रमशः १ वर्ष की कड़ी क़ैद और ३००) रुपए जुर्माने और ६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है ये लोग कौन्सिल-चुनाव में पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में पकड़े गए हैं।

—मुज़फ़्फ़रपुर का ता० ९ का समाचार है कि 'भोर' थाने में १८ वालण्टियर चौकीदारी टैक्सबन्दी के आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार हुए हैं। वहाँ गाँजा, भाँग और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में भी १३ वालण्टियर गिरफ़्तार हुए हैं। सगौली थाने के असेसर ने गवर्नमेण्ट की नीति के विरोध में अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

—लाहौर में ९ वीं अक्टूबर को नौजवान भारत-सभा के प्रेज़िडेण्ट श्री० मङ्गलदास को एक वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दे दी गई।

—१० अक्टूबर को मदारीपुर के श्री० अजयकुमार गुप्त बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए।

—पेशावर की एक तहसील चारसद्दा में शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ९ तारीख़ को २० आदमी गिरफ़्तार कर लिए गए।

* * *

—श्री० के० एफ़० नरीमेन ने राष्ट्रीय अदालतों के सम्बन्ध में जो विज्ञप्ति प्रकाशित की है उसके सम्बन्ध में इङ्गलैण्ड के 'डेली हेरल्ड' ने लिखा है कि 'भारतीय काँग्रेस सिनफ़ीन आन्दोलन की नक़ल कर रही है।' उसने एक सम्पादकीय लेख में इसे बहुत ख़तरनाक बतलाया है और गवर्नमेण्ट को उसका विरोध करने की चेतावनी दी है।

—जेरूसलम का ६ठी अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ के एक ईसाई सम्पादक की हत्या के अभियोग में १० अरब निवासियों पर, जिनमें तीन स्त्रियाँ भी सम्मिलित हैं, मुक़द्दमा चल रहा है। अरब के मुसलमानों और ईसाइयों के बीच में एक क़बरिस्तान के आधिपत्य के सम्बन्ध में झगड़ा हो जाने के कारण ही यह हत्या हुई है।

—कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर अमेरिका पहुँच गए हैं। वे वहाँ तीन माह तक संयुक्त राज्य में भाषण देंगे।

गवर्नमेण्ट (मज़दूर दल) के प्रतिनिधि :—

(१) प्रधान मन्त्री रेमज़े मेकडॉनल्ड
(२) लॉर्ड सेन्के
(३) मि० वेज़वुडबेन
(४) मि० आर्थर हेण्डरसन
(५) मि० जी० एच० टॉमस

जॉनबुल की जान सङ्कट में !

बेचारे भारत की ओर नज़र लगाए हुए हैं, पर अपने घर का पता नहीं रखते !

—श्री० रवीन्द्रनाथ टैगोर ने, जो हाल ही में इङ्गलैण्ड की यात्रा की थी, उसके उपलक्ष में वहाँ के लोगों ने शान्ति निकेतन की सहायता के लिए धन इकट्ठा करना आरम्भ किया है। वहाँ के कुछ लोगों के नाम से एक अपील निकाली गई है और लोगों से विश्व-भारती कोष में चन्दा देने के लिए अनुरोध किया गया है।

—ब्रिटिश पार्लामेण्ट से गोलमेज़ परिषद के लिए निम्न-सदस्य चुने गए हैं:—

कन्ज़र्वेटिव दल के प्रतिनिधि :—

(६) लॉर्ड पील
(७) सर एच० होर
(८) मार्किस ऑफ़ ज़ेटलेण्ड
(९) ऑनरेबिल ऑलीवर स्टेनले

लिबरल दल के प्रतिनिधि :—

(१०) लॉर्ड रीडिङ्ग
(११) मार्किस ऑफ़ लोदियन
(१२) सर आर० हेमिल्टन
(१३) मि० आइज़क फ़ूट

निम्न सज्जन सलाह-मशविरे के लिए कॉन्फ्रेन्स में उपस्थित रहेंगे।

(१४) यू० पी० के गवर्नर सर मॉल्कम हेली
(१५) सर चार्ल्स इन्स
(१६) मि० एच० जी० हेग

—न्यूयार्क (अमेरिका) का समाचार है कि ब्रेज़िल के बलवाइयों की ८५,००० सिपाहियों की एक सेना सावोपालो और रिओडेज़ेनीरो की ओर बढ़ रही है। ब्रेज़िल के डिपुटी लुज़ारडो का कहना है यह क्रान्ति अरजेन्टाइन की क्रान्ति की तरह है और इसका उद्देश्य स्वत्वाधिकारी शासन का अन्त करना और चुनाव के समय गुप्त बेलट का अधिकार प्राप्त करना है। इस क्रान्ति में वहाँ की रियासतें दिन प्रति दिन अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हो रही हैं। गवर्नमेण्ट ने अनिश्चित समय के लिए बैङ्क बन्द कर दिए हैं। हवाई मेल बन्द हो गई है और समस्त ब्रेज़िल में ३१ दिसम्बर तक के लिए मार्शल-लॉ जारी हो गया है। बलवाई ज़िलों का मार्ग रोकने के लिए लड़ाई के जहाज़ भी रवाना हो गए हैं। इस क्रान्ति में फ़ौज बलवाइयों का साथ दे रही है।

—भारतीय राष्ट्रीय महासभा की लन्दन की शाखा ने गोलमेज़ परिषद के विरोध के जुलूस में आयर्लैण्ड के प्रसिद्ध वीर डीवेलरा को निमन्त्रण भेजा था; परन्तु उन्होंने यह कह कर इन्कार कर दिया, कि वे आयर्लैण्ड से ही भारत की सहायता करेंगे।

—मर्वेड (इङ्गलैण्ड) में व्याख्यान देते हुए श्री० बी० शिवराव ने कहा है कि अङ्गरेज़ी शासन से भारत-वासियों के असन्तुष्ट होने का कारण यह है कि भारतवर्ष में फ़ौज पर जितना धन ख़र्च किया जाता है, उसके मुक़ाबले में जनता की शिक्षा और स्वास्थ्य पर बहुत ही कम ख़र्च किया जाता है। भारत में आज जो स्वतन्त्रता का आन्दोलन चल रहा है, वह सर्व-साधारण के निराश हो जाने का परिणाम है और जब तक यह समस्या हल न की जायगी तब तक यह बराबर बढ़ता रहेगा।

—३० सितम्बर को ख़त्म होने वाली तिमाही में हवाई डाक द्वारा इङ्गलैण्ड से भारत को ७,७१२ पौण्ड चिट्ठियाँ भेजी गईं। इससे पहली तिमाही में ६,९८८ पौण्ड चिट्ठियाँ आई थीं।

—बर्लिन में फ़ैसिस्ट दल वालों और कम्यूनिस्टों में दङ्गा हो गया। फ़ैसिस्ट एक बाज़ार में यहूदियों की दुकानों में घुस कर लूट करने लगे। पुलिस ने मौक़े पर पहुँच कर उनको रोका और पचास व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया। एक बड़े स्टोर की तमाम खिड़कियाँ तोड़ डाली गईं। इन लोगों ने जर्मन पार्लामेण्ट 'रीस्टॉग' के सामने भी जुलूस निकाला और उपद्रव किया। वहाँ पुलिस ने ८० उपद्रवी गिरफ़्तार किए।

—ऑस्ट्रेलिया का एक प्रसिद्ध उड़ाका फ़्रेड हैनक माथे पर जहाज़ के अगले हिस्से की चोट लग जाने से मर गया।

—दक्षिणी अफ़्रिका का उड़ाका कैस पैरूथस ६½ दिन में इङ्गलैण्ड से केपटाउन पहुँचा है।

—चीन में डाकुओं ने जहाज़ को पकड़ लिया। वे ३० यात्रियों को पकड़ ले गए और ६ हज़ार डॉलर की क़ीमत का माल उन्होंने लूट लिया।

—चीन के प्रेज़िडेण्ट चेङ्ग-काईशेक ने प्रकाशित कराया है कि चीन के विद्रोह में राष्ट्रीय दल के ३५ हज़ार सिपाही मारे गए और ६० हज़ार घायल हुए। उनके विरोधियों के डेढ़ लाख मनुष्य काम आए।

* * *

ऑर्डिनेन्स-शासन ज़ोर पकड़ रहा है

बम्बई में ८६ कॉङ्ग्रेस संस्थाओं पर प्रहार

वायसराय ने एक नया (नवाँ) ऑर्डिनेन्स 'ग़ैरक़ानूनी संस्था ऑर्डिनेन्स (Unlawful Association Ordinance) के नाम से जारी किया है, जिसके अनुसार प्रान्तीय गवर्नमेण्टों को ग़ैरक़ानूनी कॉङ्ग्रेस संस्थाओं की अचल सम्पत्ति पर अधिकार जमाने और चल सम्पत्ति को ज़ब्त करने के अधिकार दिए गए हैं।

ऑर्डिनेन्स की आवश्यकता बताते हुए वायसराय ने जो वक्तव्य दिया है उसका सार यह है:—

"भद्र अवज्ञा आन्दोलन को प्रारम्भ हुए अब प्रायः छः माह हो गए। इस अर्से में इसके प्रवर्तकों और समर्थकों ने क़ानून से स्थापित गवर्नमेण्ट का अन्त करने और जनता में क़ानूनी अधिकारों की अवज्ञा का भाव फैलाने में कुछ उठा नहीं रक्खा। उन्होंने अज्ञान और भोले-भाले लोगों को खुल्लम-खुल्ला क़ानून तोड़ने के लिए उकसाया और सरकारी कर न देने के लिए उत्तेजित किया। उन्होंने फ़ौज और पुलिस को राजविद्रोही बनाने का प्रयत्न किया। परोक्ष या प्रत्यक्षरूप से बहुत सी हिंसात्मक घटनाओं के लिए भी वे ही उत्तरदायी हैं। कॉङ्ग्रेस पर बहुत से मनुष्यों के जीवन और सम्पत्ति-नाश की ज़िम्मेदारी है और इसी के कारण हज़ारों निर्दोष व्यक्तियों को भीषण आर्थिक सङ्कटों का सामना करना पड़ रहा है। इसमें सम्मिलित होने वालों में अधिकांश भारतीय हैं, जिन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध इसमें लाया गया है।

"मसूरी में नेताओं की हाल ही की कॉन्फ्रेन्स में श्री० जे० एम० सेन गुप्त तथा श्री० के० एफ़० नरीमेन की विज्ञप्ति और पण्डित मोतीलाल नेहरू के व्यापारियों की आन्दोलन स्थगित करने की प्रार्थना को ठुकराने से मुझे यह प्रतीत होता है कि कॉङ्ग्रेस को कुचलने का अब आख़िरी प्रयत्न करना पड़ेगा और यही प्रयत्न इस ऑर्डिनेन्स द्वारा आज (शुक्रवार को) किया गया है।

"मुझे और मेरी गवर्नमेण्ट को यह स्पष्ट हो गया है कि १९०८ के 'क्रिमिनल-लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट" में वह शक्ति नहीं है जिससे वर्तमान स्थिति का पूर्णरूप से सामना किया जा सके। इसलिए इस आन्दोलन को कुचलने के लिए प्रान्तीय गवर्नमेण्टों को यह अधिकार प्राप्त होना चाहिए कि वे ग़ैरक़ानूनी संस्थाओं की अचल सम्पत्ति पर अपना अधिकार जमा सकें और उन संस्थाओं के उपयोग में आने वाली चल सम्पत्ति ज़ब्त कर सकें।

"यह भी मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि ये आदेश उन्हीं संस्थाओं के लिए हैं, जो ग़ैरक़ानूनी घोषित कर दी गई हैं और जो ऑर्डिनेन्स के घोषित होते ही जारी हो जायँ। पर यह ऑर्डिनेन्स उन संस्थाओं की सम्पत्ति के सम्बन्ध में लागू नहीं होगा जो इसके बाद ग़ैरक़ानूनी घोषित की जायँगी।

नए ऑर्डिनेन्स के जारी होते ही पहला प्रहार बम्बई पर हुआ। वहाँ के सरकारी गज़ट के असाधारण अङ्क में प्रकाशित एक विज्ञप्ति से पता चलता है कि बम्बई गवर्नमेण्ट ने ८६ कॉङ्ग्रेस संस्थाएँ (आश्रम या छावनियाँ) नए ऑर्डिनेन्स के अन्तर्गत ले ली हैं।

अहमदाबाद का ११वीं अक्टूबर का समाचार है कि गुजरात प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी ग़ैरक़ानूनी घोषित कर दी गई और उसके सेक्रेटरी श्री० एम० मुरारजी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। प्रान्तीय कमिटी के दफ़्तर पर वहाँ की पुलिस ने अपनी सील लगा कर क़ब्ज़ा कर लिया है।

बम्बई के अंगरेज़ सारजन्ट पर गोली चली

१५ गोलियाँ दाग़ी गईं :: सार्जेन्ट और उसकी स्त्री घायल

बम्बई का १०वीं अक्टूबर का समाचार है कि जब सार्जेण्ट टेलर अपनी पत्नी तथा श्रीमती किङ्ग के साथ सवेरे विक्टोरिया कार्निवल से लौट कर लैमिङ्गटन रोड के पुलिस थाने में प्रवेश कर रहे थे तब उन्होंने कुछ दूरी पर एक मोटर में तीन आदमियों को देखा। एक क्षण के बाद उसी ओर से गोलियाँ आने लगीं। जब तक सार्जेण्ट टेलर के हाथ में गोली नहीं लगी तब तक पुलिस अफ़सर गोलियों को पटाख़ों की आवाज़ समझता रहा। इसके बाद एक के बाद एक १५ गोलियाँ चलीं। एक श्रीमती टेलर की जाँघ में लगी और वे आहत हो गईं। गोलियाँ चला कर घातक मोटर पर पूरी तेज़ी से रफ़ूचक्कर हो गए। एक दूसरी मोटर में उनका पीछा करने की कोशिश की गई, पर उन्होंने उस मोटर के पहिए में पिस्तौल की गोली से पङ्क्चर कर दिया था। श्री० टेलर और उनकी पत्नी पुलिस अस्पताल भेज दिए गए हैं।

सी० आई० डी० पुलिस ने इस सम्बन्ध में श्री० कमलादेवी चट्टोपाध्याय और एक डॉक्टर के घर की तथा एक कपड़े की दूकान की तलाशी ली है। पुलिस ने स्वतन्त्र-भारत-सभा के, जो हाल ही में स्थापित हुई है, १८ सदस्यों को सन्देह में रोक लिया है। उनमें से किसी की उमर २० वर्ष से अधिक नहीं है। गिरफ़्तारों में अन्धेरी के ज़मींदार शङ्कर जी० शिन्दे भी हैं। जिनकी मोटर में, कहा जाता है कि बैठ कर घातक ने गोली चलाई थी। इनमें तीन, गवर्नमेण्ट के नौकर भी हैं। जाँच अभी जारी है।

जिस मोटर पर से यह काण्ड हुआ है, उसका ड्राइवर बापट गिरफ़्तार हो गया है। उसका कहना है कि मोटर में तीन घातकों के साथ एक स्त्री, उसका पति और उनका एक आठ वर्ष का लड़का भी था। इस काण्ड का मुख्योद्देश्य पुलिस अफ़सरों को मार कर भगतसिंह के दण्ड का बदला लेना था। पार्टी दिन भर पुलिस अफ़सरों की खोज में चक्कर लगाती रही और अन्त में टेलर के ऊपर आक्रमण किया। गुजराती स्त्री ने भी टेलर की ओर गोली चलाई थी। मालूम होता है इस मामले में बापट एप्रूवर बनाया जायगा।

बिहार में 'कॉङ्ग्रेस राज्य'

बिहार में 'कॉङ्ग्रेस की अदालतें'

बिहार प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी की (२७ सितम्बर से लेकर ३ अक्टूबर तक की) साप्ताहिक रिपोर्ट से मालूम पड़ता है कि इस सप्ताह में सारन, मुज़फ़्फ़रपुर, चम्पारन, मुँगेर और दरभङ्गा के बहुत से गाँवों में कॉङ्ग्रेस द्वारा पञ्चायतें स्थापित की गई हैं और वे अपने गाँवों के झगड़ों का फ़ैसला भी करने लगी हैं। चम्पारन ज़िले की सुगौली थाने की केवल एक पञ्चायत ने एक सप्ताह में २८० मामलों का फ़ैसला किया है। सरकारी अदालतों के बहिष्कार की ओर समस्त प्रान्त में धीरे-धीरे, पर गम्भीरता के साथ पग बढ़ाया जा रहा है। चौकीदारी करबन्दी की ओर पहिले ही से दृष्टि है। सभी ज़िलों के कार्यकर्ताओं ने यह अच्छी तरह समझ लिया है कि ग्राम्य-सङ्गठन की दृढ़ता पर ही चौकीदारी करबन्दी की सफलता निश्चित है। प्रान्त के अनेक अनुभवी नेताओं के जेलों से वापिस आ जाने के कारण आन्दोलन में नई स्फूर्ति आ गई है।

यद्यपि इस सप्ताह प्रान्त के सभी ज़िलों से गिरफ़्तारियों की पूरी रिपोर्ट नहीं मिली है, तथापि प्राप्त समाचार पत्रों से मालूम पड़ता है कि इस सप्ताह कुल २४१ व्यक्ति ही गिरफ़्तार किए गए हैं। प्रान्त के अब तक कुल ८,९२७ व्यक्ति गिरफ़्तार हो चुके हैं।

स्वयंसेवक विदेशी बहिष्कार का प्रचार करने के लिए सदैव शहरों की सड़कों पर गश्त लगाते पाए जाते हैं। समय-समय पर विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाती है। पटना ज़िले के गाँवों के मुखियों और चौधरियों से प्रतिज्ञा कराई जाती है कि वे अपने गाँव में विदेशी वस्त्र न बिकने दें। चम्पारन के गाँवों में तो यह प्रतिज्ञा कराई जा रही है कि जो व्यक्ति विदेशी वस्त्र ख़रीदेगा उसे ५ से लेकर २५ रुपया तक जुर्माना देना होगा जो कॉङ्ग्रेस के हवाले किया जायगा। पञ्चायतें उनका सामाजिक बहिष्कार भी कर सकती हैं। जनता समझने लगी है कि बहिष्कार द्वारा हमारी जेब में कुछ पैसे भी बढ़ेंगे। इसलिए और-और चीज़ों का बहिष्कार भी प्रारम्भ हो गया है। विदेशी चीनी का बहिष्कार हो गया है।

प्रान्त में सभी स्थानों पर शराब और गाँजे की दुकानों पर धरना जारी है। इधर सरकार भी शराब बिकवाने का मन्सूबा बाँधे हुए है। समाचार आया है कि सरकार ने गरखा थाने के बरामदे में भट्ठी खुलवाई है। पहिला ख़रीदार भी आबकारी सुपरिण्टेण्डेण्ट का मोटर ड्राइवर उनकी प्रेरणा से तैयार हुआ है। मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले के लालगञ्ज में आबकारी के सिपाही और गाँवों में चौकीदार शराब और गाँजे की फेरी कर बेंच रहे हैं। सोनपुर थाने की परमानन्दपुर की भट्ठी पर धरना देने वाले दो स्वयंसेवकों के छुरा भोंक दिया गया। भगवान की कृपा से चोट नहीं आई।

चौकीदारी करबन्दी आन्दोलन ज़ोर पकड़ रहा है। मुङ्गेर ज़िले के जमुई सब-डिवीज़न के सिकन्दरा थाने के बारह गाँवों ने चौकीदारी कर न देने का निश्चय कर लिया है। समय आने पर गाँव वाले गोली खाने तक को तैयार हैं। बरेजा में साल भर के लिए अतिरिक्त पुलिस बैठाई गई है। वहाँ पचास पञ्जाबी जवानों तथा पचास गोरखों ने डेरा जमा रक्खा है। इनका ख़र्च गाँव वालों से वसूल किया जायगा। इस केन्द्र में बीस गाँवों में चौकीदारी-कर बन्द है। खड़गपुर (मुङ्गेर) के तेरह चौकीदारों ने इस्तीफ़ा दे दिया है।

* * *

शहर और ज़िला

—इलाहाबाद में ९वीं अक्टूबर की रात्रि को बहादुरगञ्ज में गाँजा और भाँग की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण चार गिरफ़्तारियाँ हुईं। मालूम हुआ है कि कॉङ्ग्रेस वालण्टियरों को कुछ आदमियों ने मारा था। दो पर लाठियों की चोटें पड़ी हैं।

—पत्थर गली की शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में देव शङ्कर को छः मास की सख़्त क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई। जुर्माना न देने पर १॥ माह की क़ैद और भोगनी पड़ेगी।

—कटरा जत्था के श्री० किशोरीलाल को राजापुर की चरस की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण, ६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई। किन्तु इसके साथ पकड़े गए स्वयं सेवक को कुछ दूर ले जाकर छोड़ दिया गया।

—१५ अक्टूबर की शाम को कटरा सत्याग्रह-आश्रम और जत्थे का स्वयंसेवक पं० बालकृष्ण भट्ट भी राजापुर गाँजा-भाँग की दूकान पर धरना के अपराध में पकड़ा गया।

पं० कृष्णकान्त मालवीय को दण्ड

'अभ्युदय' के सम्पादक और एसेम्बली के भूतपूर्व सदस्य श्री० कृष्णकान्त मालवीय को कानपुर के ज़िलाधीश ने दफ़ा १२४ ए के अभियोग में एक साल की सख़्त क़ैद को सज़ा दी है। आप 'ए' क्लास में रक्खे गए हैं।

—'चाँद' के प्रकाशक श्रीयुत रामरखसिंह जी सहगल से यू० पी० गवर्नमेण्ट ने १०००) की जो ज़मानत माँगी थी, १३ अक्टूबर को वह जमा कर दी गई और अब 'चाँद' का अक्टूबर का अङ्क, जो छपा हुआ रक्खा था, प्रकाशित होगा। पाठकों को स्मरण होगा कि 'फ़ाइन आर्ट प्रिंटिङ्ग कॉटेज' (चाँद-प्रेस) से पहले ही एक हज़ार की ज़मानत ली जा चुकी है।

—इलाहाबाद के स्वराज्य-भवन में एक कॉङ्ग्रेस अस्पताल खोला गया है। इसका इन्तज़ाम डॉ० जे० एन० मल्लिक एम० बी० करते हैं।

—पं० जवाहरलाल नेहरू १४ तारीख़ को सुबह देहरादून पहुँच गए और दोपहर तक कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ताओं से भेंट करके मसूरी रवाना हो गए।

—विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग जारी है। कुछ दुकानदार विलायती कपड़े की सीलबन्द गाँठें सिविल लाइन में ले जाकर बेचने का प्रयत्न कर रहे हैं। गत ९ वीं अक्टूबर को जब श्री० बनवारीलाल गिरधारीलाल एक ठेले में अपना विलायती कपड़ा सिविल लाइन में लिए जा रहे थे, कॉङ्ग्रेस के वालण्टियरों ने घण्टाघर के पास ठेला रोक लिया। पुलिस ने जब उनसे सहायता लेने को कहा तो उन्होंने उसकी सहायता से साफ़ इनकार कर दिया। पीछे पुलिस ने इस सम्बन्ध में कोठापारचा में रहने वाले प्रो० एन० बी० मित्र के लड़के महेशचन्द्र मित्र को गिरफ़्तार किया। १३ ता० को उसका मुक़द्दमा मि० ग्रोस की अदालत में पेश हुआ। अभियुक्त ने बयान देने से इनकार किया और उसे छः मास की क़ैद तथा ५०) जुर्माने की सज़ा दी गई। जुर्माना न देने पर डेढ़ मास की क़ैद और भोगनी होगी।

पुरुषोत्तमदास टण्डन की घोषणा

शक्ति की आराधना करो

इलाहाबाद के भूतपूर्व 'डिक्टेटर' श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन जेल से छूट कर १४ तारीख़ को यहाँ आ गए। १२ तारीख़ को बस्ती जेल से छूटते ही उन्होंने अपना कार्य आरम्भ कर दिया और उसी दिन शाम को ३ बजे एक सार्वजनिक सभा में व्याख्यान दिया। एक सम्वाददाता से उन्होंने कहा कि—"जेल से बाहर आकर मुझे नए ऑर्डिनेन्स की ख़बर मालूम हुई और इससे मैं बड़ा प्रसन्न हूँ। अगर इसमें कुछ सचाई है तो हमको अब और भी दृढ़ बन जाना चाहिए, और कॉङ्ग्रेस के प्रोग्राम को नया स्वरूप देना चाहिए।" उन्होंने यह भी कहा कि बायकॉट बराबर जारी रहेगा। शाम के समय उनको बधाई देने के लिए पुरुषोत्तमदास पार्क में एक विराट सभा हुई। सभापति का आसन श्रीमती मदनमोहन मालवीय ने ग्रहण किया था। कितने ही प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं की बधाइयों के बाद टण्डन जी ने उठ कर सबको धन्यवाद दिया और कहा कि नए ऑर्डिनेन्स से यह सिद्ध होता है कि अभी कॉङ्ग्रेस का काम ठण्डा नहीं पड़ा है। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी शक्ति की परीक्षा का असली समय तो अब आ रहा है। संसार में जितने आन्दोलन होते हैं, चाहे वे हिंसात्मक हों या अहिंसात्मक, उनका आधार शक्ति पर ही रहता है, और हमको शक्ति की देवी की ही उपासना करनी चाहिए।

—ठाकुर बहादुरसिंह और रुद्रनाथ शुक्ल को विलायती कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ६ महीना की सख़्त क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई। जुर्माना न देने पर १॥-१॥ मास की क़ैद और भोगनी पड़ेगी।

—बहादुरगञ्ज की गाँजे-भाँग की दुकान पर जो चार स्वयंसेवक अब्दुल मुईद ज़ैदी, पुरुषोत्तमदास, नर्बदा और सीतला सहाय गिरफ़्तार हुए थे, उनका फ़ैसला १३ तारीख़ को सिटी मैजिस्ट्रेट मि० ग्रोस ने सुना दिया। नर्बदा ने कहा कि मैं पिकेटिङ्ग नहीं करता था। उसके क्षमा-प्रार्थना करने पर मैजिस्ट्रेट ने उससे छः महीने के लिए १००) का मुचलका लिखवा लिया। शेष तीन अभियुक्तों को छः-छः महीने की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—इलाहाबाद के ईविङ्ग क्रिश्चियन कॉलेज पर से किसी ने दशहरे की छुट्टियों में राष्ट्रीय झण्डे को हटा दिया था। १३ तारीख़ को दिन के एक बजे वह फिर प्रो० बी० एन० मित्र के हाथों लगवा दिया गया।

—९ वीं अक्टूबर को दारागञ्ज में श्री० महेशप्रसाद शराब की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। उनको छः मास की क़ैद और १५०) जुर्माने की सजा दी गई।

—इलाहाबाद यूनिवर्सिटी का वार्षिक उपाधिवितरण-उत्सव २२ नवम्बर को मनाया जायगा। इस अवसर पर भारत के सुप्रसिद्ध ऐतिहासज्ञ सर जदुनाथ सरकार भाषण देंगे।

* * *

—नजीबाबाद (बिजनौर) कॉङ्ग्रेस कमेटी के एक उत्साही कार्यकर्ता श्रीयुत लाल जी नगीना में गिरफ़्तार कर लिए गए। उन पर बिजनौर में मुक़द्दमा चलेगा।

—बिजनौर में बाबू सोमदेव शर्मा और पण्डित जगदीशप्रसाद पाठक दफ़ा १०८ के अनुसार पकड़े गए हैं।

—बिलारी (मद्रास) में कॉङ्ग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी श्री० के० सुब्बाराव को दफ़ा १०८ के अनुसार एक साल की सज़ा दी गई है।

—दिल्ली के एडिशनल मैजिस्ट्रेट ने प्रभूदयाल और मुहम्मद यूसफ़ को दफ़ा १७ में तीन-तीन महीने की क़ैद और ५०-५० रुपया जुर्माने की सज़ा दी है। महिला स्वयंसेविकाओं की कप्तान श्रीमती मेमो बाई को १००) रुपया जुर्माने या दो मास की क़ैद की सज़ा दी गई है।

* * *

(पहले पृष्ठ का शेषांश)

परन्तु आज कॉङ्ग्रेस में छोटी-बड़ी सभी जातियाँ सम्मिलित हैं और उन पर्दानशीन लोगों के लिए आन्दोलन को दबाना असम्भव है।

यदि लॉर्ड इर्विन या उनके सहयोगी भारतीयों की मनोवृत्ति का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, तो वे पहाड़ की शिखरों पर से उतर कर बाज़ारों, खेतों और फ़ैक्टरियों में क्यों नहीं जाते ? परन्तु वे यह करें ही क्यों ? उनका रास्ता तो दूसरा ही है। वे तो सत्य के ऊपर पर्दा डाल कर, उसे कुचल कर, ऑर्डिनेन्सों के द्वारा उसका प्रभाव रोकना चाहते हैं और फिर बाद में फ़ौज और पुलिस की प्रशंसा के पुल बाँधने लगते हैं।

कॉङ्ग्रेस के आगे के कार्य के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि जिस प्रकार अभी तक कॉङ्ग्रेस विदेशी कपड़े का बहिष्कार, विलायती माल का बॉयकॉट, नमक-सत्याग्रह और शराबबन्दी का आन्दोलन करती आई है वह उसी प्रकार जारी रहेगा और उनमें किसी से किसी प्रकार का समझौता नहीं हो सकता। व्यापारियों का त्याग निस्सन्देह बहुत प्रशंसा के योग्य है, पर किसी कॉङ्ग्रेस कमिटी को किसी विदेशी कपड़े के व्यापारी से समझौता करने का अधिकार नहीं है। देश के सामने नया कार्य लगानबन्दी का है। देश के कुछ भागों में यह आन्दोलन प्रारम्भ हो गया है, परन्तु अन्य भागों में अब इसका प्रचार किया जावेगा। हमारे इस युद्ध का पहला कार्य राष्ट्रीय जागरण था जो पूर्ण हो चुका है। अब आन्दोलन दूसरे क्षेत्र में पदार्पण कर रहा है—और वह क्षेत्र है भविष्य के स्वतन्त्र भारत की नींव स्थापित करना। और अब हर एक शहर, हर एक गाँव और हर एक मुहल्ले को भारत की विराट स्वतन्त्रता के लिए अपने बाह्य बन्धनों से मुक्त होकर स्वतन्त्रतावादी हो जाना चाहिए।

गोलमेज़ परिषद के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि "जब लन्दन में वकील लोग छोटी-छोटी बातों पर बहस करेंगे और मिथ्याधिकारों के लिए लड़ेंगे तब हम भारत में वास्तविक-शक्ति प्राप्त करने के लिए युद्ध करेंगे।"

अन्त में उन्होंने वायसराय की हिंसा और अहिंसा की विवेचना का उल्लेख करते हुए कहा कि "किसी ऐसे व्यक्ति के मुख से जो हिंसात्मक वायु-मण्डल में पला हो और जो सदैव हिंसा के पक्ष में रहा हो अहिंसा का उपदेश सुन कर हँसी आती है। भगतसिंह ने क़त्ल का अपराध किया है, परन्तु वह ब्रिटेन की आँखों में अपराधी नहीं है, क्योंकि हिंसा उसका धर्म है। अपराधी वह म० गाँधी की आँखों में है, जिनका समस्त जीवन ही अहिंसा का अवतार रहा है।" अहिंसात्मक आन्दोलन पर अपना दृढ़ विश्वास दिखाते हुए उन्होंने देश से अहिंसात्मक रहने की प्रार्थना की और कहा कि उसी में देश की मुक्ति है।

* * *

भविष्य की नियमावली

१. 'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२. किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३. लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४. हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५. कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६. लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७. समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८. परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९. सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०. किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

सम्पादकीय विचार

१६ अक्तूबर, सन् १६३०

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

अछूत

[डॉक्टर धनीराम 'प्रेम', लन्दन]

रामपुर, जहाँ मैं पैदा हुआ था, एक छोटा सा क़स्बा था। परन्तु सङ्गीत अच्छा जानने के कारण दूर-दूर के लोग मेरा नाम जानते थे। सङ्गीत एक प्रकार से मेरा पेशा हो गया था, क्योंकि महीने में पचीस दिन मैं बाहर गाने के लिए जाया करता था।

इस बार कासगञ्ज के एक रायसाहब के यहाँ वर्षों की कठिन तपस्या के बाद एक पुत्र उत्पन्न हुआ था; अतः उसके उपलक्ष में उन्होंने अनेकों मित्रों को निमन्त्रित करके पाँच दिन उत्सव मनाने का निश्चय किया। मुझे रायसाहब ने बुलाया तो मित्र की हैसियत से था, परन्तु था तो मैं एक गायक। लोगों के आग्रह से प्रत्येक सन्ध्या को मुझे कुछ गाने, गाने पड़े।

रायसाहब के घर के पास ही कुछ छोटी सी मड़ैयाँ कुछ चमारों ने डाल रक्खी थीं। अधिकांश इनमें से राज-मज़दूर थे। तीसरी सन्ध्या को मैं जब रायसाहब के द्वार से निकला तो मेरे सामने एक चौदह वर्ष की बालिका आकर खड़ी हो गई। मैं रुक गया। उसने एक गुलाब के फूलों का गुच्छा मेरी ओर करके नीचे को दृष्टि कर ली। मैंने गुच्छा उसके हाथ से लिया और पूछा :—कितने का है यह?

"कितने का भी नहीं।"

"इसका क्या अर्थ?"

वह चुप रही। मैंने कुछ क्रोध का भाव दिखा कर कहा—क्या बेचना नहीं है?

"नहीं।"

"तो यहाँ इसे लेकर क्यों खड़ी हो गई थी?"

"देने के लिए।"

"किसे?"

"आपको।"

"मुफ़्त?"

"भेंट।"

"भेंट? और मुझे?"—मैंने उत्सुक होकर पूछा।

"हाँ।"—उसने उसी सरलता से कहा।

"परन्तु मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं।"

"मैं आपको जानती हूँ।"

"वह कैसे?"

"आप रायसाहब की महफ़िल में गाना गाते हैं?"

"हाँ।"

"ऐसे।"

"परन्तु यह भेंट किस लिए?"

"एक गाने के लिए, केवल भक्ति-भाव से।"

"तुमने मुझे गाते हुए देखा था?"

"नहीं।"

"फिर तुम यह कैसे जानती हो कि मैं ही गाने गाता हूँ?"

"रायसाहब के नौकर ने कृपा करके बता दिया था।"

"तुम भीतर क्यों नहीं आईं?"

"मैं वहाँ कैसे जा सकती हूँ?"

"क्यों? वह तो सब के लिए खुली है!"

"परन्तु कुछ लोग हैं, जो सब में शामिल नहीं हैं।"

"क्यों?"

"क्योंकि वे अछूत हैं!"

"तुम अछूत हो?"—मैंने उछल कर पूछा।

"हाँ, मैं चमारी हूँ!"—उसने मर्म-भरी वाणी से कहा। मैं उससे एक क़दम दूर हट गया। मेरे माथे पर क्रोध से बल पड़ गए। मैंने उसे डाँटते हुए कहा—

"चमार की बच्ची, पहले ही क्यों न कह दिया?"—यह कह कर मैंने उसके फूल पृथ्वी पर फेंक दिए। उसके नेत्रों में आँसू छलछला आए। काँपते हाथों से उसने वे फूल उठाए और काँपते हुए शब्दों में वह बोली :—

"मैं नहीं जानती थी कि आप भी ऐसे ही होंगे। क्यों आप अपना गाना बाहर निकलते ही भूल गए? वह एकता और समानता का राग केवल महफ़िल के ही लिए था? मैं समझती थी कि आप ही संसार में ऐसे हैं, जो ऊँच-नीच का भेद नहीं मानते। मैं आप ही को भगवान समझने लगी थी। नित्य नियम से इस कोने पर आकर उस गाने को सुनती थी और नित्य मेरी भक्ति आप में बढ़ती जाती थी। परन्तु मुझे क्या मालूम था कि वह केवल एक गान था! ख़ैर! मेरी धृष्टता को क्षमा करना।" वह झोपड़ों की ओर मुड़ कर चलने लगी। मैंने उसे पुकार कर कहा—ठहरो!

वह खड़ी हो गई। मैंने उसके पास जाकर पूछा—वह कौन सा गान तुमने सुना था!

एक पिता के सब सन्तान?

"पूरा गा सकती हो?"

"हाँ।"

"सुना सकोगी?"

"सुना सकूँगी, परन्तु सुनाऊँगी नहीं।"

"मेरे व्यवहार के कारण? परन्तु यह मेरी भूल थी। वह गाना मैंने सैकड़ों बार गाया है, परन्तु कभी उसका अर्थ नहीं समझा। और लोगों ने उसे बीसियों बार सुना है, तालियाँ बजाई हैं, 'वन्समोर' के नारे बुलन्द किए हैं, परन्तु केवल मेरे स्वर के कारण। कितनों ने उसका अर्थ समझा था? आज तुम एक मिली हो, जिसने स्वर के लिए नहीं, प्रत्युत उसके अर्थ के लिए उस गान की प्रशंसा की है। यही नहीं, तुमने आज दो शब्द कह कर ही मुझे इसका अर्थ समझा दिया है। तुमने उसे एक ब्राह्मण के मुख से सुना था। मैं उसे एक चमारी के मुख से सुना चाहता हूँ। गाओगी?"

"अच्छा।"

"यहीं, उस नीम के नीचे, अभी।"

"अच्छा!"

उसने गाना गाया—

एक पिता के सब सन्तान,
कोई बड़ा न छोटा हममें, सब हैं एक समान
वैश्य, ब्राह्मण, चमार, नाई,
हिन्दू, मुस्लिम या ईसाई।
यह सब कृत्रिम भेद-भाव है, इनमें तत्व न जान;
लग जा सबके गले प्रेम से, तज झूठा अभिमान;
सबका एक वही भगवान॥
एक पिता के सब सन्तान,
कोई बड़ा न छोटा हममें, सब हैं एक समान॥

कमाल कर दिया था। दूर से सुनने पर भी, बिलकुल मेरी नक़ल की थी। स्वर में एक दलित-हृदय की वेदना थी, जिसने उसके गान में स्वाभाविकता कूट-कूट कर भर दी थी। मालूम होता था कि 'समता की देवी' स्वयं आकर वह सन्देश सुना रही थी। मैंने उसे शाबाशी देकर पूछा—तुम्हें यह गाना अच्छा लगता है?

"ख़ूब।"

"तुम बड़ा अच्छा गाती हो।"

"सुनने वाला कौन है?"

"तुम्हारे घर कोई नहीं?"

"नहीं।"

"माँ-बाप?"

"मर गए।"

"अकेली रहती हो?"

"एक दूर के चचा हैं, उनके पास।"

"करती क्या हो?"

"जो चमार करते हैं। गोबर बीन लाती हूँ और कण्डे बेच देती हूँ।"

"यह फूल कहाँ से लाई थीं?"

"मोल।"

"पैसे देकर?"

"कोई मुफ़्त भी चीज़ मोल देता है?"—वह हँस कर बोली।

"पैसे कहाँ से लाई थीं?"

"आज कण्डे बेचे थे।"

"खाने को अब कहाँ से लाओगी?"

"कल का थोड़ा सा आटा रक्खा है।"

मैंने उसके हाथ से फूल ले लिए और एक चवन्नी निकाल कर उसे दी। वह चवन्नी मेरे हाथ में लौटा कर बोली—यह मैं न लूँगी।

"तुमने मुझे फूल दिए हैं।"

"मैं यह नहीं चाहती।"

"फिर क्या चाहती हो?"

"देंगे आप?"

"अवश्य।"

"एक बार स्वयं इस गाने को गाकर सुना दीजिए!"

"बस?"

"यह क्या कम है? ख़ासकर एक चमारी के लिए।"

"कल तुम्हें यहीं आकर सुनाऊँगा?"

"मेरा नाम 'गङ्गा' है। आप पुकार लेंगे?"

"हाँ, गङ्गा!"

जब हम चलने लगे तो वह बोली—जाकर आपको स्नान करना पड़ेगा!

"क्यों?"

"एक चमारी से छू गए?"

"अब नहीं। एक अछूत से छूकर मैं पवित्र हो गया?"

* * *

दूसरे दिन मैं रायसाहब की कोठी के पास पहुँचा तो देखा कि गङ्गा मेरी प्रतीक्षा कर रही है। मुझे देखते ही वह प्रसन्न होकर बोली—आप आ गए?

"क्या तुम समझती थीं कि मैं नहीं आऊँगा?"

"मैं......मैं कुछ नहीं जानती।"

"नहीं, ठीक बताओ।"

"नाराज़ तो नहीं होंगे?"

"नहीं।"

"मैं समझती थी कि आप नहीं आएँगे।"

"क्यों?"

"क्योंकि आप पण्डित जी हैं और........"

"और तुम चमारी हो?"

"हाँ।"

"परन्तु पण्डित अपनी बात अवश्य रखते हैं।"

"सब?"

"सब।"

"शायद रखते हों।"

"देखो, मैं आया था नहीं ?"

"आप वैसे पण्डित थोड़े हैं। नहीं तो एक चमार की लड़की से कोई पण्डित इस प्रकार बातें करता ?"

"ठीक है, गङ्गा मैं 'पण्डित' नहीं हूँ।"

"यह ठीक है, आप 'पण्डित' नहीं हैं।"

"जानती हो, फिर मैं कौन हूँ ?"

"हाँ।"

"बताओ ?"

"देवता।"

वह नीचा सर किए कुछ देर खड़ी रही, फिर मैंने कहा—अच्छा गङ्गा, फिर देवता का गाना सुनोगी ?

"यहाँ ?"

"नहीं, तुम्हारे झोंपड़े के सामने।"

"वहाँ ?"

एक पिता के सब सन्तान।
कोई बड़ा न छोटा इम में, सब हैं एक समान॥

वह झूमने लगी। उसके नेत्रों से एक अपूर्व ज्योति निकल रही थी। वह यह भूल गई थी कि वह चमारी थी या मैं ब्राह्मण था। शायद उसके मस्तिष्क के सामने एक संसार घूम रहा था, जिसमें या तो एक भी प्राणी न था और या सब एक ही प्रकार के थे। वह स्वयं शान्त बैठी थी, परन्तु मेरे शब्दों के साथ वह अपने हृदय को नचा रही थी। मैं उसकी ओर देखता जाता था और गाता जाता था। उस गाने में मुझे कभी इतने आनन्द का आभास नहीं हुआ था। मुझे उसका आदि-अन्त सब भूल गया था। मैं समझ गया कि उसी राग को मेरी आत्मा वर्षों से गा रही थी, परन्तु मैंने सुना नहीं था। मेरा राग इसलिए बेसुर हो जाता था। परन्तु, आज ? आज आत्मा के स्वर के साथ मेरा स्वर मिल रहा था। मेरा भौतिक-राग आत्मा के उस अदृष्ट तथापि सत्य राग में लीन हो

गाएँगे ? क्या पुजारी जी सब को गले लगाने के लिए तैयार होंगे ? क्या चमार और भङ्गी से कोई घृणा न करेगा ?"

"परन्तु चमार-भङ्गी से घृणा करने का तो कारण है।"

"क्या ?"

"वे गन्दे कपड़े पहनते हैं।"

"उनका इसमें क्या दोष है ?"

"और किसका दोष है ? उनके कपड़े भी कोई और धो जायगा ? ज़रा सा साबुन लगाते हुए उनकी जान निकलती है ?"

"परन्तु इसमें उनका दोष कहाँ है ? उनके पास इतने पैसे कहाँ जो साबुन लाकर कपड़े धोवें ? खाने के तो लाले पड़े रहते हैं। यह सारा दोष इन ब्राह्मण और वैश्यों का है। उनसे गन्दे-गन्दे तो कराते हैं काम और फिर देते हैं दिन भर में चार टके। उसमें वे क्या-क्या कर लें ? क्या पहनें और क्या धोएँ ? यदि उनको भी दो

अछूतों का फ़ुटबॉल

पण्डित जी अछूतों के बहिष्कार का फ़तवा देकर उसे ठुकरा रहे हैं और मौलवी तथा पादरी साहब अछूत रूपी गेंद को लोक रहे हैं !!

"क्यों ?"

"वहाँ साफ़ जगह नहीं है।"

"कोई परवाह नहीं। किसी पेड़ के नीचे बैठ जायँगे।"

"अच्छा !"

गङ्गा की झोंपड़ी के सामने ही एक पीपल का पेड़ था। उसीके नीचे चमारों ने एक चबूतरा बना लिया था। मैं उसी चबूतरे पर बैठना चाहता था कि गङ्गा बोली—अभी ठहर जाइए।

"क्यों ?" मैंने पूछा।

"ज़रा सा ठहर जाइए"—कह कर वह वहाँ से एक झोंपड़े की ओर गई और कुछ ही देर में एक मोढ़ा लेकर आ गई। मैंने पूछा—यह किस लिए ?

"आपके बैठने के लिए। और हम ग़रीबों के यहाँ क्या है ?"

मैं मोढ़े पर बैठ गया। वह मेरे पास चबूतरे पर बैठ गई। मैंने गाना प्रारम्भ किया—

गया था, फिर मैं उसके आदि-अन्त को कैसे समझ पाता ? मेरी भाव-भङ्गी टूटी, जब कि मैंने गङ्गा को अपने साथ ही गाते हुए सुना—

यह सब कृत्रिम भेद-भाव है, इसमें तत्व न जान,
लग जा सबके गले प्रेम से, तज झूठा अभिमान।
सबका एक वही भगवान !

गङ्गा ने मेरे पैर को पकड़ कर मेरे जूते पर अपना सर रख दिया। उसके नेत्रों से आँसू निकल रहे थे। मैंने उसके सर पर हाथ रख कर कहा—गङ्गा।

"हाँ।"

"अब तुम सन्तुष्ट हो ?"

"सन्तुष्ट ? इससे अधिक गहरा कोई शब्द हो तो वह मैं हूँ। कई दिनों की मेरी कामना आज सफल हुई है। मैंने आपके मुख से स्वयं यह गान सुन लिया, मेरा यह सौभाग्य है। बताइए, क्या कभी सारे मनुष्य इसी प्रकार का गान गाने लगेंगे ? क्या रायसाहब इसी प्रकार कभी

रुपया रोज़ मिलें और घास, कण्डे, चमड़ा आदि से हाथ न लगा कर दफ़्तर में बैठ कर काम करने को मिले तो वे भी आप लोगों के से कपड़े पहनने लगें। और फिर क्या घृणा का यही कारण है ?"

"और क्या ?"—मैंने लज्जित होकर कहा। उसकी बातों का उत्तर मेरे पास क्या था। वह बोली—यदि मैले कपड़े ही घृणा का कारण हैं तो यह हलवाई रोज़ गन्दे कपड़े पहने रहते हैं, इनकी बनाई हुई मिठाई लोग क्यों खा लेते हैं ? भड़भूँजा गन्दे कपड़े पहनता है तो उसके हाथ का भुना हुआ दाना कैसे ग्रहण कर लेते हैं ? अनेकों ब्राह्मण गन्दे कपड़े पहन कर भीख माँगते फिरते हैं, उन्हें लोग फिर भी 'पण्डित जी' क्यों पुकारते हैं ? उनसे घृणा कर के उन्हें अछूत क्यों नहीं कह देते ?

मैं अपनी हार तो नहीं मानना चाहता था, परन्तु मन ही मन मैं अपने समाज के अन्याय के लिए लज्जित हो रहा था। उसे मैं क्या उत्तर देता ? वह ठीक कह रही

थी। हम पढ़े-लिखे उच्च वर्ण के लोग बहुधा इन 'गन्दे कपड़ों' की आड़ में ही अछूतों पर प्रहार करते हैं, परन्तु क्या वे गङ्गा के उन साधारण प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे ?

मैंने अपनी प्रतिष्ठा बचाए रखने के लिए उस बात को वहीं समाप्त करना चाहा। मैंने कहा—गङ्गा, अभी तुम इन बातों को समझती नहीं हो। परन्तु यदि अछूत शुद्धता से रहेंगे तो कुछ दिनों में उनसे कोई भी छुआछूत न रक्खेगा।

"तो क्या यदि हम लोग साफ़ कपड़े पहनें और सफ़ाई से रहें तो ऊँची जात वाले हमें अपना लेंगे ? हम भी उनके समान स्कूल में पढ़ सकेंगे ? भगवान के दर्शन कर सकेंगे ?"

"हाँ !"—मैंने धीरे से कहा, परन्तु मेरी आत्मा मुझे इस झूठ के लिए काट रही थी। क्या वह युग हिन्दू-समाज में इतना शीघ्र आ जायगा ? असम्भव ! परन्तु गङ्गा इससे बड़ी प्रसन्न हुई। शायद उसकी आत्मा इस असमानता पर जलती थी, इसीलिए समानता के समाचार उसके लिए इतने शान्ति और उल्लास के होते थे। वह चमारी थी, वह अपढ़ थी, वह मैली-कुचैली थी, परन्तु उसके भीतर एक सजीव हृदय और जागृत मस्तिष्क था। वह समझ सकती थी, वह अनुभव कर सकती थी। अछूतों की जिस जीवित आत्मा को ऊँचे हिन्दुओं ने कुचल कर नष्ट कर डाला है, उसका कुछ अंश उसमें शेष था। इसीलिए वह अपने सम्प्रदाय के लिए बलिदान कर सकती थी। जो अपने दिन भर की कमाई को समानता के एक गाने के लिए भेंट करके भूखी रहे, उसके समान हृदय नामधारी द्विजों में कितने निकलेंगे ? परन्तु वे हृदय अत्याचारियों की छातियों में नहीं, पीड़ितों की छातियों में ही निवास करते हैं।

२

रायसाहब के यहाँ का उत्सव समाप्त हो चुका था। गङ्गा को मैंने एक नया गीत सिखाया था; उस दिन सन्ध्या को वह उसे गाकर सुनाने वाली थी, अतः मैं उसके झोंपड़े की ओर को चल दिया। रायसाहब के मकान से कुछ दूर मेरे मार्ग में एक महादेव का मन्दिर था। जब मैं उसके पास पहुँचा तो जो कुछ देखा, उससे विस्मित रह गया। कई लोग गङ्गा को सड़क की ओर को घसीट रहे थे। मुझे यह देख कर क्रोध आ गया। इन लोगों का इतना पतन, एक असहाय बालिका पर इतना अत्याचार ! मैं दौड़ कर वहाँ पहुँचा और जिसने गङ्गा के कन्धे को पकड़ रक्खा था, उसका हाथ मैंने पकड़ लिया। वह और उसके साथी मेरी ओर विस्मय से देखने लगे और गङ्गा रोती हुई भाग कर मेरे पास खड़ी हो गई। मैंने उस मनुष्य से पूछा—इस लड़की को क्यों घसीट रहा है ?

"मन्दिर में घुसना चाहती थी।"

"फिर, क्या हर्ज था ?"

"भला कभी ऐसा हुआ है ? चमार की औलाद और मन्दिर के ऊपर चढ़ आवे। इसका इतना दुस्साहस ?"

"तो उसे सीधी तरह से क्यों नहीं कह दिया ? इस प्रकार घसीटने की क्या आवश्यकता थी ?"

"तो क्या उसके पैरों पड़ कर ख़ुशामद करते कि वह मन्दिर में न जाय ? इन नीच लोगों को जितना ही मुँह चढ़ाओ, उतने ही धृष्ट होते जाते हैं। इनके लिए एक ही दवा है कि इनका सर कुचल दिया जाय।"

"अच्छा, कुछ दिन और देखो, शायद यह दवा तुम्हीं को पीनी पड़ेगी।"—यह कह कर मैंने गङ्गा का हाथ पकड़ा और उसके घर की ओर को चल दिया। वे लोग कुछ देर तक तो अवाक् होकर मेरे पीछे देखते रहे, फिर यह कह कर कि—"घोर कलजुग आ गया बाबा, अब ब्राह्मण भी चमार-भङ्गी की हिमायत करने लगे"—वे मन्दिर की ओर चले गए।

मार्ग में गङ्गा ने पूछा—क्या आप मन्दिर में जायँगे ?

"क्यों ?"

"मैं यह फूल लाई थी, क्या आप महादेव जी पर चढ़ा देंगे ?"

"तुम महादेव जी पर फूल चढ़ाने क्यों गई थीं, गङ्गा ?"

"उस दिन आपने कहा था न ?"

"क्या कहा था ?"

"कि यदि मैं साफ़ कपड़े पहनूँगी तो भगवान के दर्शन हो जायँगे।"

"इसीलिए तुमने कपड़े धोए हैं ?"

"हाँ ! मुझे आशा थी यदि स्नान करके साफ़ कपड़े पहन कर मन्दिर में जाऊँगी तो भगवान अपने दर्शन कर लेने देंगे। इसीलिए आज मैंने साबुन से कपड़े धोए थे।"

"गङ्गा !"

"हाँ !"

"तुम एक बात सुनोगी ?"

"क्या ?"

"उस दिन मैंने झूठ बोला था।"

"झूठ ?"

"हाँ ! झूठ। मैंने तुमसे कहा था कि यदि चमार साफ़ कपड़े पहनेंगे तो ऊँची जाति वाले उन्हें अपना लेंगे। परन्तु यह सत्य नहीं है। उस दिन मेरे ब्राह्मणत्व के अभिमान ने मुझे अन्धा कर दिया था। इसीलिए मैंने तुमसे वे बातें कही थीं। मैं नहीं जानता था कि तुम्हारी बुद्धि इतनी कुशाग्र है कि तुम मन्दिर में जाने के लिए तैयार हो जाओगी।"

"तो मेरी बात ठीक थी ?"

"बिलकुल। अभी ब्राह्मण-वैश्यों में वह भाव उत्पन्न नहीं हुआ। कब होगा, कहा नहीं जा सकता। अभी एक 'अछूत' उनके लिए 'अछूत' है, चाहे वह पढ़ा-लिखा हो, शुद्ध-पवित्र रहता हो, सदाचारी हो, धनिक हो। उसने एक अछूत के घर उत्पन्न होने का जो अपराध किया है, वह समाज के न्यायालय में क्षम्य नहीं है। यह एक अत्याचार है, निरङ्कुशता है, हमारे समाज के नाम पर गहरी कलङ्क-कालिमा है; इसे कुछ लोग मानने लगे हैं, परन्तु वे असहाय हैं। समाज के सामने विद्रोह का झण्डा वे अभी उठा नहीं सकते।"

"परन्तु क्या महादेव जी भी इन बातों को नहीं समझते ?"

"कौन से महादेव जी ?"

"जो मन्दिर में बैठे हैं।"

"वे महादेव जी नहीं हैं।"

"तो फिर कौन हैं ?"

"वह तो पत्थर की मूर्ति है। उसमें कुछ समझने की शक्ति है न करने की। उसके नाम पर यह ऊँचे आदमी चाहे जो कुछ करते हैं। यदि महादेव जी इस मन्दिर में होते तो वे कभी तुम्हें इस प्रकार घसिटने न देते। उनके यहाँ सब एक बराबर हैं।"

"वे कहाँ रहते हैं ?"

"सब जगह।"

"यहाँ भी हैं ?"

"वे यहाँ हैं, तुममें हैं, मुझमें हैं, सब में हैं।"

"क्या वे ही महादेव जी गिर्जे में भी हैं ?"

"हाँ, सिर्फ़ नाम उनका वहाँ दूसरा है।"

वह बड़े भोलेपन से इन गुत्थियों को सुलझा रही थी। कुछ देर तक वह चुप रही और फिर बोली—आप कहते हैं कि महादेव जी ही गिर्जे में हैं ?

"हाँ।"

"परन्तु वहाँ वे मन्दिर के महादेव जी की भाँति निर्दय भेद-भाव रखने वाले और नीचों से घृणा करने वाले नहीं हैं। गिर्जे के महादेव जी दयालु हैं, सबको एक दृष्टि से देखने वाले हैं। हमारे पड़ोस का मुरली जब से क्रिस्तान हुआ है, तब से वह सबके साथ जाकर गिर्जे में बैठता है। सब ईसाई उससे हाथ मिलाते हैं। जो पादरी साहब हमारे यहाँ आया करते थे वे कभी-कभी उसके साथ खाना खाया करते हैं। यही नहीं, जब कभी वह यहाँ आता है तो रायसाहब की कुर्सी पर बैठता है। एक दिन वह कह रहा था—'हिन्दू अपने भगवान से ईसाइयों के भगवान की ज़्यादा इज़्ज़त करते हैं। क्योंकि जब मैं हिन्दू था तो कोई मेरी ओर देखता भी नहीं था और जब से ईसाई हुआ हूँ बड़े-बड़े हिन्दू हाथ मिलाते हैं और पास बिठाते हैं।' पुजारी जी के महादेव जी से तो ईसाइयों के महादेव जी अच्छे हैं।"

"क्या तुमने भी कभी ईसाई हो जाने का विचार किया है ?"

"किया था, एक बार।"

"फिर क्यों नहीं हुई ?"

"यह सोच कर कि शायद कभी हमारे महादेव जी ही अपने दर्शन देने की कृपा कर दें।"

"गङ्गा, तुम इतनी चतुर हो। कपड़े बेचना ही तुम्हारा काम नहीं है।"

"और हम लोगों के भाग्य में है ही क्या ?"

"तुमने कुछ पढ़ा-लिखा था ?"

"कौन पढ़ाता ? चमारों में कोई पढ़ा-लिखा नहीं। ऊँची जात वाला कोई हम लोगों के पास बैठ सकता है ? पादरी साहब पढ़ाना चाहते थे, परन्तु मैं उनके यहाँ नहीं गई।"

"तुम्हारी पढ़ने की इच्छा है ?"

"इच्छा है, परन्तु पढ़ाएगा कौन ? और पढ़ने कौन देगा ? पण्डितों को मालूम हो जायगा तो कहेंगे—'लो, चमार की लड़की अब पुस्तक पढ़ेगी !' इतने भाग्य कहाँ ? चमारों के लिए तो यह सब स्वप्न हैं।"—एक आह भर कर वह चुप हो गई।

उसके एक-एक शब्द से उसके हृदय की व्यथा टपकती थी। उन सरल परन्तु सच्चे शब्दों में, उच्च वर्णों के लिए उसके श्राप-घृणा-मिश्रित विद्रोह की गन्ध आती थी। एक चोट खाया हुआ पक्षी कुछ कहता नहीं है, परन्तु उसकी तड़पती हुई एक सिसकारी जो अर्थ रखती है, वह सहस्रों शब्दों में दिया हुआ श्राप नहीं रख सकता। यही दशा गङ्गा की आह की थी। वह बोली थी और बहुत कुछ बोली थी, परन्तु उन शब्दों ने मेरे हृदय पर वह प्रभाव न किया था, जो उसकी एक दबी हुई आह ने। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि हमारे निरङ्कुश समाज के पापों की कलुषित धारा मेरे सामने बह रही है और गङ्गा उस आह से मुझे फूँक कर उस धारा में फेंके दे रही है। गङ्गा ने कुछ कहा, पर मैं सुन न सका, क्या। परन्तु वह भयानक दृश्य मेरे सामने से हट गया। मैंने पूछा—क्या कहा, गङ्गा ?

"आप क्या सोच रहे हैं ?"

"मैं यह सोच रहा था कि हम लोग अछूतों पर कैसा अत्याचार कर रहे हैं। वे हमारे समाज के अङ्ग हैं, परन्तु हमारे लिए वे त्याज्य हैं। ईसाइयों के वे कुछ भी नहीं लगते, फिर भी वहाँ उनका स्वागत होता है।"

"परन्तु क्या किया जा सकता है ?"

"किया जा सकता है, बहुत कुछ।"

"कौन करेगा ?"

"समाज नहीं, व्यक्ति। उनमें से एक मैं हूँ।"

"आप ?"

"हाँ, मैं। मैंने तुम्हें समानता का राग सुनाया था। तुमने मुझे समानता का पाठ पढ़ाया है। समाज के पाप

का कुछ अंश धोने के लिए मैं तुम्हें अपने साथ रक्खूँगा। बोलो गङ्गा, तुम मेरे साथ चल कर मेरे घर रहोगी?"

"नहीं।"

"हाँ।"

"नहीं।"

"क्यों?"

"आपके ग्राम वाले क्या कहेंगे?"

"इसकी परवाह नहीं। वे मेरा बहिष्कार करेंगे, करें। मैं इसके लिए तैयार हूँ।"

"मेरे लिए इतना बड़ा दण्ड भोगेंगे।"

"तुम्हारे लिए नहीं, अपने अपराधों के लिए, अपने पुरखाओं के अपराधों के लिए!"

"मुझे क्या करना पड़ेगा?"

"तुम मुझे भोजन बना कर दिया करोगी और मैं तुम्हें पढ़ाऊँगा!"

"आप यह क्या कर रहे हैं? आप ब्राह्मण हैं, मैं चमारी हूँ। आप—मेरे हाथ का—खाना खाएँगे?"

"भूल गईं, मैंने तुम्हें क्या सिखाया था—

अछूतोद्धार

वैश्य, ब्राह्मण, चमार नाई।
हिन्दू, मुस्लिम या ईसाई।
यह सब कृत्रिम भेद-भाव हैं, इसमें तत्व न जान,
लग जा सबके गले प्रेम से, तज झूठा अभिमान।
सबका एक वही भगवान!!

"अच्छा!"

"तै रहा?"

"रहा।"

३

ग्राम में पहुँचते ही उपद्रव मच गया। जिस बात की आशा थी, वही हुई। उस खलबली पर मुझे आश्चर्य न हुआ, आश्चर्य तो तब होता, जबकि वह खलबली न मचती। सब जगह यही चर्चा होने लगी। पण्डित श्यामलाल के घर में एक चमार की लड़की रहती है, भला यह बिरादरी को कभी सह्य हो सकता था। पञ्चायतें होने लगीं और सब ने मिल कर मुझे दण्ड भी दे दिया। पञ्च कौन थे? बड़े-बड़े नामधारी ब्राह्मण, जिनकी चोटी कुएँ से जल खींच कर ला सकती थी, जिनके तिलक आकाश के इन्द्र-धनुष को भी मात करते थे, जिनके ओष्ठ 'राम-राम' कहते-कहते मोटे पड़ गए थे। परन्तु उनके भीतरी जीवन क्या थे? एक, दो-तीन गर्भ गिरा चुका था; दूसरा छिप-छिप कर शराब पिया करता था; तीसरे ने अपने पुत्र की वधू पर ही हाथ साफ़ किया था; चौथे का सम्बन्ध एक सुनारिन से था; पाँचवें ने अपनी पुत्री के श्वसुरालय का सारा धन हज़म किया हुआ था और वह पुत्री विधवा होकर मारी-मारी फिरती थी। यह थे 'पञ्च' जो लम्बे-लम्बे हाथ चला कर मेरा न्याय करने बैठे थे। उनके पास रुपया था, उनके पास शक्ति थी, अतः वे बिरादरी को जिधर चाहते थे, नचाते थे। जो उनका शत्रु था, वह बिरादरी का शत्रु था; जो उनका मित्र था, वह बिरादरी में मान्य था। वे इसी बल पर अपने काले कुकर्मों पर पर्दा डाल सकते थे। बिरादरी की पञ्चायतों के हाथ में और तो शक्ति रही नहीं है। हाँ हुक्का-पानी का बन्द करना उन्होंने हाथ में रक्खा है, जो पञ्चों के इशारों पर दुरुपयोग में लाया जा सकता है। मेरे पास हुक्मनामा आ पहुँचा। यदि पञ्चायतों का ही राज्य होता तो मेरा अपराध फाँसी के दण्ड से कम का नहीं था। परन्तु मेरे सौभाग्य से उतना अधिकार उन्हें नहीं था। मुझे "बहिष्कार" का दण्ड मिला था। मेरा हुक्का-पानी बन्द था। कब तक? जब तक कि मैं गङ्गा को घर से निकाल कर सारी बिरादरी को मिठाई-पूरी न खिलाऊँ और महादेव जी पर एक सौ एक रुपए और एक नरियल न चढ़ाऊँ।

मैं इससे विचलित न हुआ था। मैंने जो कार्य अपने ऊपर लिया था, उसके सङ्कटों को जानता था और उनका सामना करने के लिए तैयार था। मैं गङ्गा को योग्य बनाने का प्रयत्न कर रहा था और उसमें मुझे सफलता हो रही थी, इससे अधिक सन्तोष की बात मेरे लिए और क्या हो सकती थी? गङ्गा शुद्ध रहना सीख गई थी, भोजन अच्छा बनाने लगी थी, घर का प्रबन्ध करना उसे आ गया था। उसी गति से वह पढ़ने में भी आगे बढ़ रही थी। उसे ईश्वर ने बुद्धि दी थी और स्वर दिया था। मैं उन्हें उपयोगी साँचे में ढाल रहा था। सब से अधिक उन्नति उसने सङ्गीत में की थी। वह अच्छा गाने लगी थी और कुछ-कुछ सितार बजाने लगी थी। नित्य, नियम से, वह 'एक पिता के सब सन्तान' सितार पर गाया करती थी।

दिन इसी प्रकार बीतने लगे। कई महीने इसी प्रकार व्यतीत हो गए। गङ्गा अब पहले की गङ्गा नहीं रह गई थी। उसके हाव-भाव, वेश-भूषा, बोल-चाल, रङ्ग-ढङ्ग आदि को देख कर कोई नहीं कह सकता था कि वह एक अछूत की लड़की थी। और 'अछूत' शब्द चमारों के मस्तक पर थोड़े ही लिखा है। यदि उन्हें अच्छी परिस्थितियों में रक्खा जाय तो वे ब्राह्मण के पुत्रों को भी मात कर सकते हैं। ब्राह्मणों और उच्च वर्ण के हिन्दुओं की सन्तान ने ही संसार में सफल होने का ठेका थोड़े ही लिया है।

इटावा ज़िले में मेरा सम्बन्ध पक्का हो गया था। उधर से भी विरोध की मुझे आशा थी, परन्तु अभी तक उसके कोई लक्षण मुझे दिखाई नहीं पड़े थे। परन्तु इस प्रकार कब तक चल सकता था। मेरे श्वसुर भी तो एक कट्टर ब्राह्मण थे, वह भला यह कब सहन कर सकते थे कि जो एक अछूत को अपने घर में शरण दिए हुए है, उसके साथ उनकी कन्या का विवाह हो। आही तो धमके। लाल-पीले हो रहे थे, मानो मैं उनका भावी-जामाता नहीं, किन्तु कोई गिरा-पड़ा पापी हूँ।

"श्यामलाल!"—आप बोले।

"कहिए।"

"यह क्या कर रहे हो?"

"क्या?"

"एक चमार की लड़की को अपने घर में रख रहे हो, और क्या?"

"इसमें हर्ज क्या है? क्या और लोगों के यहाँ नौकर नहीं हैं?"

"नौकर हैं तो चमार तो नहीं हैं? अगर नौकर ही रखना था तो कोई ब्राह्मण नहीं मिलता था?"

"जब नौकर ही रखना है तो वह ब्राह्मण हुआ तो क्या, चमार हुआ तो क्या। कोई ब्राह्मण नौकर रखता है, कोई ठाकुर नौकर रखता है, कोई कहार नौकर रखता है, मैंने एक चमार नौकर रख लिया। काम कराने से मतलब।"

"तुम पर मुझे शर्म आती है।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुमने सारे पुरखाओं का नाम नीचा कर दिया। अगर तुम्हारे बाप ज़िन्दा होते तो तुम्हारा गला घोंट देते। तमाम बिरादरी चर्चा कर रही है। सुन कर हम रिश्तेदारों की भी नीची होती है।"

"पुरखाओं का नाम ही कब था, जो नीचा कर दिया। और रही बिरादरी की बात, सो बिरादरी के पास सिवाय ऐसी चर्चा करने के और काम ही क्या है?"

"लेकिन बिरादरी में रह कर बिरादरी की बात माननी ही पड़ती है।"

"वे दिन गए।"

"वे दिन नहीं गए, तुम्हें बिरादरी की बात माननी ही पड़ेगी।"

"हाँ?"

"हाँ, और इस लड़की को घर से निकालना ही पड़ेगा।"

"कहे जाइए।"

"और सारे ब्राह्मणों को जिमा कर महादेव जी पर नारियल चढ़ाना पड़ेगा।"

"और अगर मैं बिरादरी की बात न मानूँ?"

"तो मैं अपनी लड़की की सगाई वापस ले लूँगा!"

"यह बात?"—कह कर मैंने गङ्गा को आवाज़ दी। उसने भीतर आकर पूछा—"मुझे आप बुला रहे थे?"

"हाँ गङ्गा, एक गिलास में पानी दे जाओ।"

गङ्गा चली गई। वे उछल कर बोले—गिलास में पानी?

"जी हाँ।"

"किसके लिए?"

"आप न घबराइए, आप तो पी ही नहीं सकते।"

"क्या तुम पियोगे?"

"हाँ। प्यास लगी है।"

"चमारी के हाथ का पानी?"

"पानी कुँए का है, उसमें वह कुछ मिला थोड़े ही देगी।"

"तुम्हारा इतना साहस?"—वे क्रोधित होकर बोले।

"आप इसे साहस कहते हैं? बड़े हर्ष की बात है। परन्तु आप यह सुन कर प्रसन्न होंगे कि मैं इससे भी अधिक साहसी हूँ। मैं उसके हाथ का बनाया हुआ खाना भी खाता हूँ।"

"खाना? हरे, हरे, इसका भी कोई ठीक है। सारा धर्म नष्ट कर दिया। तीनों त्रिलोकी में आज तक कभी ऐसा न हुआ था। ऋषि-मुनियों ने जो मर्यादा बनाई थी, उस पर भी छुरी फेर दी। मैं तुम जैसे पापी का मुख अब नहीं देखना चाहता।" वह उठे। मैंने उन्हें प्रणाम करके कहा—कष्ट के लिए धन्यवाद है। बिरादरी से कह दीजिए कि उन्हें मिठाई-पूरी न मिल सकेगी। और आप यह याद रखिए कि मैं आपकी लड़की से विवाह नहीं कर सकता।

चलते-चलते रुक कर वह बोले—मैं जा रहा हूँ, परन्तु याद रक्खो कि मरते समय यम के दूत तुम्हें नरक में भी न ले जाएँगे।

"इसकी आप चिन्ता न कीजिए। आपको याद है कि एक मनुष्य मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' को पुकार रहा था, उधर यमदूतों ने जो सुना कि वह 'नारायण'-'नारायण' पुकार रहा है तो उसे स्वर्ग को ले गए। वही बात मेरे साथ होगी। इस लड़की का नाम गङ्गा है। जब मैं मरने लगूँगा तो इसे पुकार लूँगा और स्वर्ग पहुँच जाऊँगा। आपके यम के अन्धे दूत सलामत चाहिएँ, स्वर्ग क्या कठिन बात है।"

वे दाँत पीसते हुए चले गए। उधर से गङ्गा पानी लेकर आ गई। उसका मुख उदास था। मैंने आश्चर्य से पूछा—गङ्गा, क्या बात है?

"कुछ नहीं।"

"तो उदास क्यों हो?"

"मैं......मैं यहाँ से जाना चाहती हूँ।"

"जाना चाहती हो, क्यों?"

"क्योंकि मैं आपके लिए कण्टक के समान हूँ। जब तक मैं यहाँ रहूँगी, आपको दुःख ही उठाने पड़ेंगे।"

"तो क्या तुम्हें यहाँ कष्ट मिल रहा है?"

"मुझे कष्ट? इसकी कोई कल्पना भी कर सकता है? आपने मुझे गन्दे नाले से निकाल कर गुलाबों की वाटिका में ला बिठाया, मुझे पढ़ाया-लिखाया, पशु से मनुष्य बनाया। इतना एहसान एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर कर सकता है? विशेषकर जब कि वह दूसरा मनुष्य एक अछूत हो, एक दलित व्यक्ति हो, जिसका भाग्य ही ठोकर खाना, गिरना और उसके लिए ठोकर मारने वाले से क्षमा माँगना हो। मेरे लिए यह बहुत बड़ी बात है। एक अछूत बालिका इससे अधिक के लिए कामना भी नहीं कर सकती, इसे पाना तो उसके लिए असम्भव ही है। ऐसी दशा में क्या मैं आपको छोड़ कर जाने की बात कर सकती थी? यदि सहस्रों जन्म हों और प्रत्येक जन्म में नित्य आपके चरणों की धूल पोंछूँ, तब भी आपसे उऋण नहीं हो सकती। परन्तु मुझे जाना ही पड़ेगा, अपने लिए नहीं, आपके लिए!"

"मूर्ख मत बनो! मेरे लिए तुम्हें क्यों जाना पड़ेगा? क्या बिरादरी के बहिष्कार से डरती हो? उससे मुझे क्या कष्ट है? मैं बाहर गाने के लिए उसी प्रकार जाता हूँ। सब काम उसी प्रकार होते हैं। बिरादरी में दो-चार नवयुवक यदि अछूतों के प्रति सद्भाव दिखलाने लगेंगे तो बिरादरी भी कुछ दिनों में ठीक हो जायगी।"

"परन्तु यह बिरादरी का बहिष्कार ही नहीं है। यह उससे भी अधिक आवश्यक बात है। मैंने आपकी सब बातें सुनी थीं।"

"क्या तुम्हारा अर्थ है मेरा विवाह?"

"हाँ।"

"परन्तु उसमें क्या है? मैंने सम्बन्ध छोड़ दिया। उसका विवाह किसी और जगह हो जायगा।"

"क्या आप उससे प्रेम नहीं करते?"

"प्रेम? मैंने उसे देखा भी नहीं है। कई वर्ष हुए पिता जी यह सम्बन्ध पक्का कर गए थे। मैं केवल उनकी बात निभा रहा था।"

"परन्तु फिर भी, मुझे जाना ही पड़ेगा। यह न सही, आप किसी और से विवाह करेंगे ही। मैं व्यर्थ ही बाधा डालने का कारण हो जाऊँगी।"

मैंने उसकी ओर देखा। उसका शरीर काँप रहा था। पलक झपके जा रहे थे। मुख पीला पड़ता जा रहा था। मैं बोला—गङ्गा!

"हाँ!"—उसने धीरे से कहा।

"मेरी ओर देखो।"

उसने सर ऊपर को उठाया, उसके नेत्रों में दो बूँदें थीं—तुम इस घर को नहीं छोड़ रही हो। यह घर तुम्हारा हो जायगा, तुम्हें यह सँभालना पड़ेगा!

"यह कैसे?"

"मैं तुमसे विवाह करूँगा।"

"मुझसे, विवाह? ब्राह्मण और चमार का विवाह?"

धन्यवाद

पाठकों को जान कर प्रसन्नता होगी—और उसके प्रवर्तक के नाते हमें क्षणिक गर्व का होना बहुत स्वाभाविक है—कि "भविष्य" का हिन्दी-संसार में यथोचित आदर हुआ है, किन्तु हमें इस बात का खेद भी है कि रात-दिन सारा प्रेस चला कर भी हम २५,००० प्रतियों से अधिक छापने में सर्वथा असमर्थ हैं। जो सज्जन अथवा देवियाँ ग्राहक होना चाहती हों, उन्हें शीघ्रता करनी चाहिए, नहीं तो उनकी फ़ाइल अधूरी रह जायगी। पहिले अंकों की कॉपी आज ढूँढ़े नहीं मिल रही है!

"ब्राह्मण और चमार का विवाह नहीं, चमार और चमार का विवाह!"

"परन्तु आप तो ब्राह्मण हैं।"

"था, अब नहीं हूँ। ब्राह्मणों ने मुझे निकाल ही दिया है। अब मैं चमार हूँ, अछूत हूँ। याद नहीं है—

'एक पिता के सब सन्तान'"

वह कुछ न बोली, मेरा हाथ पकड़ कर वहीं बैठ गई, और हम गाने लगे—

> वैश्य, ब्राह्मण, चमार नाई,
> मुस्लिम, हिन्दू या ईसाई;
> यह सब कृत्रिम भेद-भाव है, इसमें तत्व न जान,
> लग जा सब के गले प्रेम से, तज झूठा अभिमान।
> सब का एक वही भगवान!

गाना समाप्त करके मैंने पूछा—कहो, तै रहा?

"रहा!"—उसने हँस कर कहा।

* * *

गङ्गा अब मेरी है। वह ब्राह्मणी है या मैं चमार हूँ, कह नहीं सकता। परन्तु इतना मैं जानता हूँ कि हम दोनों एक-दूसरे के साथ बड़े सुखी हैं। मूर्ख उसे चमारी कहें, अछूत कहें या कुछ भी कहें, वह चन्द्र-ज्योत्स्ना के समान विमल है, वसन्त के समान सौरभमयी है और इस अनन्त विश्व के समान विशाल हृदया है।

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

जगत जाग रहा था—

उसका सौभाग्य यौवन में भरपूर था। बेतोल सम्पदा भरी पड़ी थी। खा रहा था और बखेर रहा था। रात-दिन वहाँ समान थे। बिजली का तेज और वायु की गति लिए हुए—प्रकृति-वेश्या वहाँ हाज़िर थी, हाथ में रक्त, मद्य और नयनों में हलाहल कटाक्ष था। अन्धाधुन्ध ढाल रही थी। ज्ञान और विज्ञान उसके मुसाहिब थे, और वे अपने आप पर इतरा रहे थे।

उस समय विश्व-विभूतियाँ नग्ननृत्य कर रही थीं। और नर-लोक उस अकाण्ड-ताण्डव पर मुग्ध और लीन हो रहा था। मूर्ख न्याय ताल दे रहा था और निर्लज्ज नीति अट्टहास कर रही थी। रूढ़ि सभापति थी। पाखण्ड के हाथ प्रबन्ध था। और पाप स्वागत कर रहा था। असत्य के अन्ध दीप जल रहे थे। और सत्ता का महदा-लोक अप्रतिम चमक रहा था।

वहाँ! मानव उत्कर्ष का स्वच्छन्द उपहास हो रहा था। भीषणताएँ अदम्य वेग में भरी खड़ी थीं। प्रतिहिंसा जीभ लपलपा रही थी, और दासता दुम हिला रही थी।

हिंसा! हिंसा की ओर सब की दृष्टि थी। उसका कुञ्चित भृकुटी-विलास, कुटिल भ्रूभङ्ग, विकट दन्तपेषण, क्षण-क्षण में आशङ्का उत्पन्न कर रहा था।

विश्व-ध्वंसिनी ज्वालाएँ सङ्केत की बाट में हाथ बाँधे खड़ी थीं। सब तरफ़ लाल ही लाल दीखता था। एक अस्फुट किन्तु अशान्त ध्वनि सब से ऊपर उठ रही थी। न उसमें स्वर था न ताल—उसे सुन कर वातावरण में रह-रह कर कम्पन हो रहा था। कुछ होने वाला था।

भारत सो रहा था!!

२

भारत सो रहा था।

थकावट से चूर और बुढ़ापे से लाचार। वह सब कुछ कर चुका था, सब कुछ पा चुका था, उसकी कोई साधना न रह गई थी। इतिहास के हज़ारों-लाखों पृष्ठों पर उसके हाथ के हस्ताक्षर थे।

दूसरी जातियाँ उन्हें पढ़ और समझ रही थीं।

वीरता, विद्या, व्यापार और वैराग्य की वाटिकाओं में उसके हाथ का जो कुछ बचा था उसमें से जागती जातियों को जो कुछ मिल जाता था—निहाल हो जाती थीं।

वे उस पर लोट-पोट थीं। वे उससे ब्याह करने का चाव रखती थीं। बूढ़े को कुछ ख़बर न थी।

वह सो रहा था। थकावट से चूर और बुढ़ापे से लाचार!

वह सब कुछ कर चुका था, सब कुछ पा चुका था, उसकी कोई साधना न रह गई थी!

घर में सम्पदा, सुख और धर्म का मेह बरस रहा था। आँगन से स्वर्ग तक सरल सीढ़ियाँ लगी थीं।

अभ्युदय और निश्रेयस एकत्र घर को रख रहे थे।

देवता आ रहे थे, जा रहे थे।

रत्न-दीप जल रहे थे।

स्वर्ग-स्तम्भों पर बारहों राशियाँ दिप रही थीं।

जल-थल और आकाश उसके निःश्वासों की सुगन्ध से सुरभित हो रहे थे।

वे आईं और पास बैठ गईं। जो मिला सो खाया और वहीं सो गईं!!

यह बूढ़े की नींद का चमत्कार था!!!

* *

क्या दमन से राष्ट्रीय आन्दोलन दबेगा ?

[श्री० भोलालाल दास जी, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन के आरम्भ काल से ही दमन का चक्र जैसा अधिकाधिक भयानक हो रहा है, उससे यही विदित होता है कि कम से कम हमारे भाग्य-विधाताओं की यही निश्चित-धारणा है कि दमन से यह आन्दोलन अवश्यमेव दब जायगा। कुछ दिन पहले हमने अख़बारों में पढ़ा था कि शिमला-शैल के अधिकारीवर्ग का यह सिद्धान्त है कि दमन नहीं करने से आज ही इङ्गलैण्ड को भारत से हाथ धोना पड़ेगा, किन्तु दमन करके दबा देने से कम से कम एक सौ वर्षों तक और भी शासन किया जा सकता है। कहना व्यर्थ है, कि अधिकांश अङ्गरेज़ों का यही मत है। यही कारण है कि न केवल इस देश के रहने वाले अङ्गरेज़, बल्कि ख़ास विलायत के भी अधिकांश लोग दमन के ही पक्ष में हैं। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि अन्यान्य घराऊ बातों में चाहे विलायती पार्लामेण्ट में जितनी दलबन्दी हो, किन्तु भारतवर्ष को अधीन रखने के विषय में विलायत की भिन्न-भिन्न पार्टियों की राय एक ही है। यही क्यों, भारत-गवर्नमेण्ट जिस किसी नीति का अवलम्बन करती है उसका निश्चय विलायत में ही हुआ करता है। सुतराम् जैसे-जैसे दमन की कुञ्जी विलायत में ऐंठी गई है, वैसे ही वैसे भारत में इसका दौर-दौरा भीषण रूप से बढ़ता जा रहा है। अब समझौते की बात-चीत टूट जाने से दमन का चक्र और भी ज़ोरों के साथ चलाया जा रहा है। किन्तु अब प्रश्न यह है कि क्या इस दमन का परिणाम दमन होगा ?

यदि अधिकांश अङ्गरेज़ों की दमन के विषय में उपरोक्त धारणा है, तो कहना पड़ता है कि वे लोग भारी ग़लती में हैं। किसी जानकार राजनीतिज्ञ की यह अन्धी नीति नहीं हो सकती है कि भारतवर्ष कम से कम सौ ही वर्षों तक इङ्गलैण्ड के अधीन रहे, उसके बाद चाहे जो कुछ हो। ऐसी धारणा तो निम्न श्रेणी के मूर्खों की ही हो सकती है। फिर यदि उनकी बातों को एक क्षण के लिए सत्य भी मान लिया जावे कि दमन से यह राष्ट्रीय युद्ध दबा दिया जायगा तो यह कोई निश्चय नहीं कि पूरे सौ वर्षों या उससे भी अधिक दिनों तक शान्ति बनी रहेगी। बहुत सम्भव है यह आग फिर भी अधिक भीषण रूप से केवल दस-पन्द्रह वर्षों में भभक पड़े। उस समय की स्थिति और भी भयानक हो जायगी। अतः हमारे भाग्य-विधाताओं की भविष्यद्वाणी किस ज्योतिष या इलहाम पर अवलम्बित है, वे ही जानते होंगे। किन्तु मानव घटनाओं की जैसी अनुवृत्ति देख पड़ती है, उससे विदित होता है कि जिस जोश को जितनी ही तेज़ी से दबाया जाता है, वह या तो दबने के बदले और भी बढ़ता है अथवा यदि विशेष कारणों से दब भी गया तो उसका परिणाम कथमपि चिरस्थायी नहीं होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है। इसलिए कहना पड़ता है कि यद्यपि ऐसी धारणा अधिकांश अङ्गरेज़ों की है, तथापि यह भ्रममूलक है। वस्तुतः ऐसी धारणा तृतीय श्रेणी के लोगों की ही हो सकती है, जिनको अपने वर्तमान स्वार्थ-साधन के अतिरिक्त थोड़ी भी दूरदर्शिता नहीं है। आज इस आन्दोलन से लङ्काशायर और माञ्चेस्टर के व्यापारियों की क्षति होती हुई देख पड़ती है, बहुतों की रोज़ी छिनती चली जा रही है, तथा और भी कितनी स्वार्थहानि होती है। इसीलिए दमन का अवलम्बन करना इन लोगों का मुख्य उद्देश्य है, ताकि उन बुराइयों का मार्ग बन्द हो जाय। किन्तु ये सभी बातें क्षणिक हैं। इनके सुधर जाने से भी इङ्गलैण्ड या भारत की जनता का जो चिरस्थायी सम्बन्ध अभीष्ट है, उसमें कोई लाभ नहीं पहुँच सकता है, जब तक कि असन्तोष के मूल कारण को नहीं हटाया जायगा। कोई सद्वैद्य किसी व्याधि के बाहरी उपद्रवों को ही शान्त करने से उसके निर्मूल होने की आशा नहीं कर सकता। अतः कोई उच्च कोटि का अङ्गरेज़ राजनीतिज्ञ ऐसी लचर दलील के आधार पर दमन का अवलम्बन नहीं कर सकता।

यथार्थ पूछिए तो उनकी श्रेणी भिन्न है। इस श्रेणी के लोगों की राय यह है कि क़ानून और व्यवस्था (Law and Order) ऐसी चीज़ है जिसको पालन करना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है और उसका पालन करवाना गवर्नमेण्ट का धर्म है। यदि प्रजा इसकी अवहेलना करती है तो वह अपराधी है, उसे अवश्य दण्ड मिलना चाहिए और यदि गवर्नमेण्ट इसकी उपेक्षा करती है, तो वह गवर्नमेण्ट नहीं, बल्कि एक निर्जीव संस्था है। यथार्थ पूछिए तो इस दलील में अवश्य ही कुछ सार है, क्योंकि देश की शान्ति और राजा-प्रजा का पारस्परिक सम्बन्ध इसी कर्त्तव्य पर अवलम्बित है। किन्तु जब हम इस सिद्धान्त की सत्यता के ऊपर ध्यान देते हैं तो हमें इन राजनीतिज्ञों की दलील भी थोथी विदित होती है। गवर्नमेण्ट अपने क़ानून और व्यवस्था को अवश्य बनाए रक्खे तथा प्रजा भी उसको माने, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह क़ानून और व्यवस्था प्रजा की बुराई और अत्याचार के लिए हो। क़ानून और व्यवस्था, किसी भी गवर्नमेण्ट की, इसीलिए होती है कि उसके द्वारा भिन्न-भिन्न नागरिकों का पारस्परिक अधिकार और कर्त्तव्य न्यायपूर्वक सञ्चालित होवे, गवर्नमेण्ट से प्रजा को और प्रजा से राजा को लाभ तथा सन्तोष मिलता रहे। किन्तु हमारे देश की अवस्था भिन्न है। यहाँ राजा-प्रजा के स्वार्थ में एकता के बदले विरोध है। विदेशी गवर्नमेण्ट के लिए यह बात स्वाभाविक है।

आख़िर भारतीय आन्दोलन का अर्थ क्या है ? केवल यही न कि भारतवर्ष की दुःखी प्रजा सुखी होवे, ग़रीब और अशान्त लोग धनवान तथा शान्त बनें, मूर्खता, व्याधि, परतन्त्रता आदि दूर होवे। भला इन उद्देशों में प्रजा की भलाई है या बुराई ? गवर्नमेण्ट का स्वार्थ जब तक इससे भिन्न नहीं है, तब तक वह इन वस्तुओं की उन्नति में अपनी अवनति क्यों समझती है, वह इनमें साधक होने के बदले बाधक क्यों होती है ? फिर ज़रा क़ानून और व्यवस्था की हालत पर भी तो विचार कीजिए। विदेशी कपड़ों पर पिकेटिङ्ग करना, ताड़ी-शराब आदि मादक द्रव्यों को रोकने की चेष्टा करना, देश की हानि-लाभ वाली बातों को ज़रा स्वतन्त्रतापूर्वक लिखना या बोलना, देशसेवा के लिए स्वयंसेवकों को सङ्गठित करना आदि सभी बातें ऑर्डिनेन्स के पेंचीले दफ़ों में ग़ैरक़ानूनी हैं—यही नहीं, देश की सब से बड़ी राष्ट्रीय सभा कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति भी ग़ैरक़ानूनी संस्था क़रार दे दी गई है ! भला इन क़ानूनों का भी कोई जवाब है ? यदि इन आज्ञाओं का पालन सम्भव हो तो खाद्य, जल, वायु आदि के व्यवहार पर भी क़ानून क्यों नहीं बनेगा ? परन्तु सोचने की बात है कि क्या ऐसे क़ानून किसी देश की सरकार ने बनाने का प्रयास या साहस किया है ? यों तो अत्याचारी राजा या राजकीय संस्था सब कुछ कर सकती है और भारतवर्ष के ही इतिहास से विदित होता है कि बहुत से मुसलमान बादशाहों का क़ानून यह था कि हिन्दू हाथी-घोड़े या पालकी पर न चढ़ें, हिन्दू धर्म मानने के लिए एक प्रकार का टैक्स दें, इत्यादि। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या इन क़ानूनों से प्रजा की भलाई हो सकती है या हुई है ? ख़ासकर वह गवर्नमेण्ट जो अपने को न्यायी और प्रजावत्सल बतलाती है वह क्या इन क़ानूनों का समर्थन कर सकती है ? सच बात तो यह है कि इन क़ानूनों से प्रजा की प्रारम्भिक स्वतन्त्रता भी छिन जाती है, अतः लोकमत कभी इनके पक्ष में नहीं रह सकता। किन्तु पूछा जा सकता है कि नमक के क़ानून को क्यों तोड़ा जाता है ? यह तो कोई नया क़ानून नहीं है। यह तो आन्दोलन को दबाने की नीयत से नहीं बनाया गया है ? फिर इसको भङ्ग करना कैसे सह्य हो सकता है ? किन्तु इसके इतिहास पर काफ़ी प्रकाश डाला गया है, अतः इसके विषय में अधिक लिखना व्यर्थ है। एक शब्द में यही कहना चाहिए कि देश आजकल जिस सत्याग्रह पर चल रहा है, जिन-जिन क़ानूनों को तोड़ा जा रहा है या जो कुछ भी अवज्ञा की जाती है उसको किसी ऐसे क़ानून के भङ्ग से सरोकार नहीं है जिससे देश की शान्ति या व्यवस्था को कुछ धक्का लगे, प्रत्युत शान्ति और व्यवस्था को स्थिर रखने की ही पूरी चेष्टा की जाती है। सत्याग्रही न तो चोरी करते, न डाका डालते, न किसी के ऊपर हस्तक्षेप करते, न किसी का अपमान करते हैं, बल्कि वे लोग सभी प्रकार के अत्याचार ख़ुद सहते हैं। वे लोग देश-सेवा के अभिप्राय से स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार, विदेशी वस्त्रों और मादक पदार्थों का बहिष्कार तथा अन्यान्य देशोपकारी काम बहुत शान्तिपूर्वक करते हैं। यही नहीं, वे लोग उन कार्यों के अतिरिक्त और सब क़ानूनों को औरों की अपेक्षा अधिक मानते हैं। जेल जाते हैं, अपनी सम्पत्तियों को नीलाम होने देते हैं, मार खाते हैं, यहाँ तक कि अपनी जान भी खोते हैं, किन्तु कोई ऐसा काम नहीं करते जिससे शान्ति या व्यवस्था भङ्ग होवे। यह सब क्यों होता है ? केवल इसीलिए कि शान्ति और व्यवस्था क़ायम रहे। ऐसी स्थिति में पिकेटिङ्ग करने के लिए, या पुलिस आदि की मनमानी आज्ञा नहीं मानने के लिए एक ओर जहाँ वे लोग डण्डों की मार खाते रहते हैं, जेल में ठूँसे जाते हैं, उनके घर-बार की बार-बार तलाशी ली जाती है जिसमें बहुधा उनकी सम्पत्ति और प्रतिष्ठा बर्बाद कर दी जाती है और दूसरी ओर कोरे शान्ति और व्यवस्था के नाम पर केवल राष्ट्रीय

आन्दोलन को दबाने या लोगों को भयभीत करने के अभिप्राय से तरह-तरह की ज़्यादतियाँ की जाती हैं तो निष्पक्ष जनता की सहानुभूति स्वभावतः सत्याग्रहियों की ओर होती है। आख़िर सत्य और न्याय भी कोई चीज़ है जिसे हर एक मूर्ख और विद्वान अनायास समझता है। ऐसी स्थिति में गवर्नमेण्ट को भले ही पता न हो या हो भी तो गवर्नमेण्ट भले ही उसकी उपेक्षा करे, किन्तु दिनानुदिन अधिक लोग राष्ट्रीय आन्दोलन के पक्ष में आ रहे हैं और यह कहना बहुत यथार्थ है कि इस आन्दोलन का प्रचार जितना सरकारी दमन से हुआ है उतना कॉङ्ग्रेस के उपदेशों या प्रस्तावों से नहीं हुआ है।

अब हम इस द्वितीय श्रेणी की दलील का खोखलापन कुछ-कुछ समझ सकते हैं। क़ानून और व्यवस्था वस्तुतः बड़ी अच्छी चीज़ हैं, और उनका भङ्ग होना बड़ा बेजा है। केवल गवर्नमेण्ट ही क्यों सारी प्रजा-मण्डली और सारे संसार की जनता यही कहेगी कि इन्हें अच्छी तरह क़ायम रखिए और ख़ूब रखिए, किन्तु सत्यासत्य के विचार से, न्याय और अन्याय के ख़्याल से काम कीजिए। तभी दमन का अर्थ सार्थक होगा, अन्यथा उल्टा अर्थ प्रत्यक्ष ही हो रहा है। भला ऐसे दमन से भी राष्ट्रीय आन्दोलन दब सकता है, जिससे सच्चे देश-सेवक तो जेल में ठूँसे जायँ और चोर-बदमाश असली सज़ावार आदमी जेल से आज़ाद किए जायँ? इस अन्याय और अत्याचार का भी कोई ठिकाना है? इसका जो परिणाम होना उचित है, वह भी होता ही जा रहा है। जब वे बदमाश जेल से निकलते हैं तो महात्मा गाँधी की दुहाई देते हुए निकलते हैं और उनमें से बहुत तो कॉङ्ग्रेस के वालण्टियरों में भर्ती हो जाते हैं। बात भी यथार्थ है क्योंकि न तो महात्मा जी का आन्दोलन बढ़ता और न जेलें सत्याग्रहियों से ठसाठस भरतीं। उनका यह ख़्याल करना बहुत यथार्थ है कि उनको छुड़ाने वाली यथार्थ में गवर्नमेण्ट नहीं है, बल्कि गाँधी-आन्दोलन है। कल की बात है कि मेरे एक मित्र जो यहाँ वकील हैं, उनके घर को पुलिस ने लूट लिया है। बात यह है कि उनके भाई कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ता हैं और उनके नाम शायद वारण्ट निकल चुका है, किन्तु वे अन्यत्र कार्य करते थे जिससे उन्हें शायद मालूम नहीं हुआ। अतः वे हाज़िर न हो सके थे। ऐसी स्थिति में पुलिस का ज़्यादा से ज़्यादा कर्त्तव्य यह था कि उन्हें खोज कर गिरफ़्तार कर लेती। किन्तु ऐसा न करके दिन-दहाड़े उनके घर पर मानो डाका डाला गया। ४०-५० सिपाही बिना कुछ कहे-सुने उनके घर में घुस गए जिससे स्त्रियाँ डर के मारे भाग गईं। घर पर न तो वकील साहब थे और न उनके कार्यकर्ता भाई थे। भला कहिए तो उन स्त्रियों की दशा क्या हुई होगी। पुलिस ने पकाई हुई रसोई मज़े में भोजन कर ली और सब चीज़ों को तितर-बितर कर दिया। कहते हैं कि कुछ स्त्रियों के ट्रङ्क जिनमें कपड़े-ज़ेवर आदि थे तथा और भी कितनी ही चीज़ें दो-तीन गाड़ियों पर लाद कर पुलिस समस्तीपुर थाना ले गई। ४०-५० हज़ार की जनता शान्तिपूर्वक पुलिस की ज़्यादती देखती रही। यह तो एक उदाहरण मात्र है—वस्तुतः ऐसी घटनाएँ नित्य ही होती रहती हैं। भला इस दमन से भी कोई दमन हो सकता है। इससे तो साफ़ तौर से गवर्नमेण्ट जनता की आँखों में नीची गिर रहा है। जिस गवर्नमेण्ट से लोग न्याय की आशा करते हैं, उसका यह अन्याय देख कर कौन आदमी ऐसा होगा जो सरकार के प्रति अपनी सहानुभूति प्रगट कर सके? सब लोग जहाँ-तहाँ यही कहते हैं कि बड़ा भारी अन्याय हुआ, गवर्नमेण्ट हमें डराना चाहता है, इत्यादि। किन्तु लोग शान्तिपूर्वक तमाशा देखते रहे, इससे क्या यह पता नहीं चलता है कि लोगों में पूरा निर्भयता और आत्म-त्याग की मात्रा आ गई है?

किन्तु गवर्नमेण्ट यह समझती है कि इससे और कुछ नहीं तो लोग कम से कम डर जायँगे और राष्ट्रीय काम करना छोड़ देंगे। यह भी एक भारी भूल है क्योंकि लोगों को निर्भय बनाना, ख़ासकर अत्याचार का निर्भयतापूर्वक विरोध करना ही इस आन्दोलन का मूल-मन्त्र है। सब प्रकार की ज़्यादती और मुसीबत सह करके भी अपने व्रत पर अटल रहना इसकी पहली सीढ़ी है। ऐसी स्थिति में गवर्नमेण्ट का यह ख़्याल नितान्त भ्रम-मूलक है। यहाँ तक कि जो लोग इन अत्याचारों से वस्तुतः डर भी जायँगे, वे भी इसे अत्याचार ही समझेंगे और भीतर-भीतर उनकी श्रद्धा गवर्नमेण्ट के प्रति एकदम उठ जायगी। महात्मा गाँधी ने समझौते की चिट्ठी में ठीक ही कहा है कि अहिंसात्मक अस्त्र का सच्चा अर्थ गवर्नमेण्ट को नहीं मालूम है, क्योंकि उसने इसका कभी उपयोग ही नहीं किया है। क्या गवर्नमेण्ट को अपने दमन और राष्ट्र के अहिंसात्मक अस्त्र की ख़ूबी तब ज़ाहिर होगी जबकि गवर्नमेण्ट के ऊपर से सब की श्रद्धा उठ जायगी और सारा देश उसके विरुद्ध हो जावेगा?

अब कुछ इस बात के ऊपर भी विचार करना चाहिए कि इस आन्दोलन के पक्ष में कुछ सत्याधार है या नहीं। सत्याग्रही लोग केवल हुल्लड़बाज़ी मचाते हैं या वस्तुतः किसी सत्य के लिए लड़ रहे हैं। गवर्नमेण्ट ने यदि इस देश को तलवार के ज़ोर से जीता होता या आरम्भ में ही यह कह देती कि हम जैसे होगा आप्रलय हिन्दुस्तान को अपने क़ब्ज़े में रक्खेंगे तो बात दूसरी थी। गवर्नमेण्ट ने इसके प्रतिकूल बार-बार यह प्रतिज्ञा की है कि हम भारत को स्वराज्य के योग्य बनावेंगे और उसे स्वराज्य देंगे। लगभग १५० वर्ष बीत गए अङ्गरेज़ी शासन से न तो देश में आज तक सैकड़े दस से अधिक लोग शिक्षित हो सके और न कोई स्वराज्य मिला। शासन और सुव्यवस्था जो देख पड़ती है, उसे भारत ने बहुत मँहगा ख़रीदा है। जो देश संसार में सब से धनी था जहाँ किसी को अन्न-वस्त्र का कष्ट नहीं था, जहाँ घी-दूध की धारा बहती थी, जो सब कारीगरी और उद्योग-धन्धों का गुरु था, जहाँ की विद्या, कला, और सभ्यता संसार में सब से प्राचीन और उत्तम मानी जाती थी उस देश में आज अविद्या, दरिद्रता, व्याधि और कुरीतियों का घोर अन्धकार छाया हुआ है। वस्त्र तक बनाना लोग भूल गए—सब सामानों के लिए विदेशों के मुहताज हो रहे हैं। भारतवासी अब अपने को मनुष्य कह कर परिचय देने योग्य नहीं रहे। ऐसी स्थिति में यदि देश के नेताओं ने बारम्बार प्रार्थना, प्रस्ताव और लोकमत प्रगट किया तो गवर्नमेण्ट ने उसको ठुकरा दिया। लोगों की चार आना माँग भी पूरी नहीं की गई। मारटफ़ोर्ड स्कीम से देश के ख़र्चे का भार और भी बढ़ गया और साइमन रिपोर्ट तो उससे भी गई-गुज़री है जिससे स्पष्ट विदित है कि जनता जितना ही अपने अधिकारों की माँग उपस्थित करती है, गवर्नमेण्ट उतना ही उसको टालती जाती है, बल्कि राष्ट्रीय आन्दोलन को और भी निर्दयतापूर्वक दबाना चाहती है। ऐसी स्थिति में सत्य और न्याय किसके पक्ष में है कहने की आवश्यकता नहीं। इसलिए राष्ट्रीय आन्दोलन को दबाने का यथार्थ और एक मात्र मार्ग यही है कि गवर्नमेण्ट यथासम्भव जनता को उसकी माँग पूरी करके सन्तुष्ट करे न कि उसका उल्टे दमन करे।

अब हम लोग दमन के समर्थन करने वाले उस उच्च विचार वाले विद्वानों की कोटि में पहुँचते हैं, जो न केवल भारत और विलायत में, वरन अमेरिका, जापान आदि अन्यान्य देशों में भी गवर्नमेण्ट से यह सिफ़ारिश करते हैं कि भारत को स्वराज्य देकर आन्दोलन के मूल कारण को हटाइए और भारत तथा विलायत का चिर-सम्बन्ध विच्छेद होने से बचाइए। कहना नहीं होगा कि यही श्रेणी गवर्नमेण्ट की सच्ची हितेच्छु है और सौभाग्य से ऐसे लोगों की संख्या इङ्गलैण्ड में भी बढ़ती जा रही है। अमेरिका में भी कम नहीं है और भारतीय तो प्रायः सभी इस विषय में एकमत हैं। यद्यपि कॉङ्ग्रेस ने विवश होकर स्वतन्त्रता की घोषणा की है तथापि कुछ दिन पहले भारतीय सर्वदल सम्मेलन ने एक राय होकर, जो नेहरू रिपोर्ट तैयार की थी, उसके अनुसार यदि औपनिवेशिक स्वराज्य दे दिया गया तो अवश्यमेव शान्ति स्थापित हो जायगी और कॉङ्ग्रेस भी अपना प्रोग्राम बदल सकेगी। किन्तु जहाँ तक हमारा अनुमान है गवर्नमेण्ट को यह बात मञ्ज़ूर नहीं है—वह माण्टफ़ोर्ड रिपोर्ट से भी पीछे जाना चाहती है—ऐसी स्थिति में शान्ति की आशा करना निराशा मात्र है। तब देखना यह है कि दमन क्या रङ्ग लाता है।

हमारे जानते अङ्गरेज़ों की यह भारी भूल है कि औपनिवेशिक स्वराज्य दे देने से भारत या इङ्गलैण्ड की कोई क्षति होगी। चीन, जापान, इटली की भाँति भारत भी अपना अधिकार पाकर शीघ्र उन्नत होगा और जीवन का आदर्श जितना ही ऊँचा होगा उतना ही वह इङ्गलैण्ड के व्यापार को अधिक लाभ पहुँचाने की शक्ति लाभ करेगा। इस समय सैकड़े में नब्बे, जो पढ़े-लिखे नहीं हैं, उन्हें बहुत कम चीज़ों की ज़रूरत है, किन्तु यदि उनका जीवन उन्नत होगा तो उनकी माँग बढ़ जायगी और उससे विलायत को भारी लाभ होगा। इसके अतिरिक्त उन्नत और धनी भारत इङ्गलैण्ड की जितनी सहायता समय पड़ने पर कर सकेगा, दरिद्र और दुखी भारत कदापि नहीं कर सकता। उसके न्याय और उदारता की धाक ऐसी चिरस्थायी होगी जो दमन या रक्त-शोषण से कभी नहीं हो सकती है। किन्तु सरकारी दमन-नीति इन सब धारणाओं को चूर-चूर कर रही है। ऐसी स्थिति में दमन के बढ़ने से स्वतन्त्रता की लहर और भी ज़ोर पकड़ेगी—इसमें सन्देह नहीं रह जाता। क्या गवर्नमेण्ट अब भी चेतेगी?

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

बड़ा ग़ज़ब हुआ ! बड़ा अन्धेर हुआ ! मौलाना शौकतअली गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में आख़िर नहीं बुलाए गए ! इतने भारी-भरकम लीडर और कॉन्फ्रेन्स से अलक़त ! यह माना कि वह दो आदमियों का स्थान घेरते और शायद इसीलिए बुलाए भी नहीं गए कि वहाँ गिनी हुई सीटें हैं—यदि एक आदमी दो आदमियों की जगह घेर ले तो एक आदमी कम हो जाय। परन्तु फिर भी उन्हें बुलाना ज़रूर चाहिए था। वह तो इतने सीधे-सादे आदमी हैं कि जगह न होती तो खड़े ही रहते। और अब भी वह जायँगे अवश्य, चाहे कॉन्फ्रेन्स-भवन की परिक्रमा ही करते रहें। क्योंकि वह बड़े हठी और दृढ़-प्रतिज्ञ हैं। कोई आश्चर्य नहीं जो वहाँ सत्याग्रह ठान दें। यद्यपि सत्याग्रह के वह विरोधी हैं और मुसलमानों को यही शिक्षा दिया करते हैं कि सत्याग्रह से अलग रहो। और अधिकांश मुसलमानों ने उनकी यह बात मानी भी ख़ूब। लीडर की बात मानना ही चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि मौलाना सोचते बड़ी दूर की हैं। वह जानते थे कि सत्याग्रह करने से जानवरों की तरह जेल में बन्द कर दिए जायँगे और गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में नहीं जा सकेंगे। इसलिए सत्याग्रह से अलग रहना ही ठीक है। जेल के बाहर रहेंगे तो कॉन्फ्रेन्स में पहुँच ही जायँगे—सरकार नहीं बुलाएगी तो स्वयम् चले जायँगे। क्या उनके पास सफ़र-ख़र्च नहीं है। या उन्हें रास्ता नहीं मालूम ! सरकार ने उनके साथ थोड़ा-सा अन्याय किया। उन्होंने तो यह नेकी की कि मुसलमानों की एक बड़ी तादाद को सत्याग्रह से अलग रक्खा—केवल इसलिए कि सरकार उन्हें अपना दोस्त समझे; परन्तु सरकार ने उन्हें मौक़े पर पूछा तक नहीं। इसीसे कहना पड़ता है कि नेकी का ज़माना ही नहीं रहा। यदि मौलाना चाहते तो सब मुसलमानों को सत्याग्रह में जुटा देते। तब सरकार को मजबूरन स्वराज्य देना पड़ता। और अब भी मौलाना चाहें तो लेटे-लेटे स्वराज्य ले सकते हैं। और कॉन्फ्रेन्स में पहुँच जायँ तो खड़े-खड़े स्वराज्य टहला दें; क्योंकि वहाँ बैठने के लिए उन्हें जगह मिलेगी ही नहीं।

मुसलमानों में जितना आदर मौलाना का है उतना किसी का नहीं है। कुछ मुसलमान कॉङ्ग्रेस से रुपया लेकर कॉङ्ग्रेस का राग अलापने लगे; परन्तु मौलाना पर कॉङ्ग्रेस का जादू नहीं चल सका। इसीलिए उनका इतना आदर है कि मुसलमानों में जितने बहादुर और समझदार लोग हैं वे सब मौलाना के अनुयायी हैं। ठेले वाले, ताँगे वाले, क़साई, कुँजड़े, सब मौलाना की बात मानते हैं। और मानें क्यों नहीं ? मौलाना उनके मन की जो कहते हैं। मौलाना कहते हैं सत्याग्रह मत करो, जेल मत जाओ। कितनी प्यारी बात है। कॉङ्ग्रेस वाले कहते हैं, जेल जाओ, गोली खाओ, मर जाओ। ओफ़ ! कितनी दिमाग़ परेशान करने वाली बात है। स्वराज्य जब मिलेगा तो सबको मिलेगा। यह तो होगा नहीं कि हिन्दुओं को मिले और मुसलमानों को न मिले, अतएव मुफ़्त में मुसीबत उठाने से क्या लाभ ? जब स्वराज्य की हँडिया पक कर तैयार होगी तो हिस्सा बँटाने के लिए मुसलमान भाई दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए आ ही धमकेंगे। तब हिन्दुओं को मजबूर होकर हिस्सा देना ही पड़ेगा। अब कहिए—होशियार कौन है ? यह मौलाना के दिमाग़ की उपज है। फिर भी कुछ लोग मौलाना को बेवक़ूफ़ समझते हैं। हालाँकि वह जितने बेवक़ूफ़ समझे जाते हैं, उतने कदापि नहीं हैं।

दूसरे एक बात यह भी है कि शासन करने वाले ही शासकों की कठिनाइयों को समझ सकते हैं। ग़ुलाम लोग क्या समझेंगे। मुसलमान लोग उन्नीसवीं शताब्दी तक शासक रहे हैं—हिन्दुओं को ग़ुलामी करते सदियाँ बीत गईं। अतएव मुसलमान लोग अङ्गरेज़ों की कठिनाइयों को समझ कर उनसे सहानुभूति रखते हैं। मौलाना शौकतअली का भी यही कहना है कि हिन्दोस्तान में केवल मुसलमान ही शासन कर सकते हैं; क्योंकि उनके शरीर में हुकूमत का ख़ून अभी तक मौजूद है। कदाचित इसीलिए मुसलमान लोग सत्याग्रह से अलग रहते हैं कि सत्याग्रह में मार पड़ेगी, गोली चलेगी तो उसमें शरीर का रक्त निकलेगा। यदि यह हुकूमत से भरा हुआ ख़ून निकल गया तो फिर हुकूमत काहे से की जायगी। जब हुकूमत का रक्त ही न रहेगा तो हुकूमत करेगा कौन ? इसलिए मुसलमान भाई अपने रक्त की बड़ी हिफ़ाज़त कर रहे हैं। यदि यह डौल भी होता कि यह रक्त निकल जाने से इसकी फिर पूर्ति हो सकेगी तब भी ग़नीमत था; परन्तु ऐसा होता दिखाई नहीं देता। यदि तुर्किस्तान यह वचन दे दे कि जितना रक्त आवश्यक होगा उतना यहाँ से भेज दिया जायगा, तब तो मुसलमान भाई आँखें मीच कर सत्याग्रह में जुट पड़ें। परन्तु अब तुर्किस्तान वह तुर्किस्तान नहीं रहा—वह रक्त तो क्या, खारा पानी भी नहीं भेजेगा। इसलिए मुसलमान बेचारे मजबूर हैं।

इसके अतिरिक्त शासकों का काम क़ानून बनाना और उसे मनवाना होता है। सत्याग्रह में क़ानून तोड़ा जाता है। मुसलमान लोग जो अभी परसों तक शासक रहे हैं और अपनी तबीयत से अब भी हैं—वे क़ानून तोड़ना क्या जानें। न जानते ही हैं, और न उनकी इच्छा ही होती है। जहाँ क़ानून का नाम आया, वहीं उन्हें याद आ गया कि कभी हम भी इसी प्रकार क़ानून बनाते थे। यह याद आते ही उन्हें क़ानूनों से इतनी सहानुभूति उत्पन्न होती है कि वह उन्हें तोड़ने का ध्यान तक नहीं ला सकते। जिसके कभी सन्तान रही हो वही सन्तान की क़द्र समझ सकता है—निस्सन्तान नहीं समझ सकता।

विदेशी बॉयकॉट के सम्बन्ध में भी मुसलमान भाइयों का दृष्टि-कोण अपने राम की समझ में बहुत ठीक है। विदेशी का बॉयकॉट तो तब करें जब स्वदेशी मिले। सो हिन्दुस्तान में उन्हें स्वदेशी वस्तुएँ मिल कहाँ सकती हैं। हिन्दू हिन्दुस्तान की बनी हुई वस्तुओं को स्वदेशी समझते हैं; परन्तु मुसलमानों के लिए वह स्वदेशी नहीं है। उनके लिए तो वही वस्तु स्वदेशी हो सकती है, जो तुर्किस्तान अथवा अरब की बनी हुई हो।

सम्पादक जी, आप कदाचित सोचें कि अरब और तुर्किस्तान वाले तो इन्हें टके को नहीं पूछते और ये इनके विचार हैं। परन्तु आप मुसलमानों की सुशीलता को नहीं समझते। अपना भाई यदि नालायक़ निकल जाय और अपने को भाई न समझे तो अपना यह कर्त्तव्य नहीं है कि हम उसे भाई न समझें। अपना कर्त्तव्य तो यह है कि वह अपने को चाहे जूतों से पीटे, परन्तु हम उसे अपना भाई ही समझते रहें। मुसलमान लोग इसी सिद्धान्त पर जमे हुए हैं।

और सब से बड़ी बात तो धर्म की है। इसलाम धर्म कहता है कि इस मर्त्यलोक में जो वस्तु त्याग दी जायगी वह स्वर्ग लोक में प्रचुर परिमाण में और उत्तमोत्तम मिलेगी। शराब पीना इसलाम धर्म में हराम है। अतएव जो यहाँ शराब नहीं पीते, उन्हें स्वर्ग में बड़ी उत्तम शराब मिलती है और पेट भर मिलती है। जो लोग इस लोक में स्त्रियों का त्याग करते हैं उन्हें स्वर्ग में हूरें मिलती हैं। इसी प्रकार सब पदार्थों को समझ लीजिए। अतएव मुसलमान भाई इस लोक में स्वराज्य लेने की आकांक्षा इसीलिए नहीं रखते कि ऐसा करने से स्वर्ग में उन्हें अखण्ड स्वराज्य की प्राप्ति होगी। स्वर्ग के स्वराज्य के आगे इस लोक के स्वराज्य की क्या हस्ती है। इस लोक का स्वराज्य तो बहुत थोड़े दिनों भोगने को मिलेगा, परन्तु परलोक का स्वराज्य स्थायी वस्तु होगा। स्थायी वस्तु को छोड़ कर अस्थायी चीज़ के पीछे पड़ना महामूर्खता है। मुसलमान लोग यह भी समझते हैं कि वे संख्या में हिन्दुओं की अपेक्षा बहुत थोड़े हैं, इसलिए उन्हें सच्चा स्वराज्य कभी नहीं मिल सकता। सच्चा स्वराज्य मिलेगा भी तो केवल हिन्दुओं को। अतएव स्वयम् मर-खप कर हिन्दुओं को स्वराज्य दिलाना कहाँ की बुद्धिमानी है। यह तो अपने पैर में आप ही कुल्हाड़ी मारना है। सो जनाब, मुसलमान ऐसे बेवक़ूफ़ नहीं हैं जो ऐसा करें। ईश्वर ने यह बात हिन्दुओं को ही दी है कि पैर में क्या, ये लोग अपने हाथों से अपने सिर में कुल्हाड़ी मार लें। जो मुसलमान मुसलमानों से सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के लिए कह रहे हैं, वे नासमझ हैं, दूर की बातें सोचने का उनमें माद्दा ही नहीं। दूर की बात वे सोचते हैं जो राउण्डटेबुल कॉन्फ्रेन्स में जायँगे—विलायत की सैर करेंगे, अपने अधिकारों के लिए लड़ेंगे और लौटते हुए हज भी करते आवेंगे। बतलाइए—यह बुद्धिमानी है या यहाँ सत्याग्रह के पचड़े में पड़ कर लाठियाँ खाना और जेल में बन्द होना ? इसमें सन्देह नहीं, मुसलमान लोग बड़े बुद्धिमान हैं, क्यों सम्पादक जी, आपका क्या विचार है ?

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

स्त्रियों का ओज

पतिव्रत-धर्म

[लेखक—???]

(जोधपुर दुर्ग का अन्तःपुर—नेपथ्य में कोलाहल)

राजमहिषी—यह कैसा कोलाहल है, क्या सेना आ रही है? दासी, किसी से कहो, बुर्ज पर जाकर देखे।

(सैनिक का जल्दी से प्रवेश)

सैनिक—(मुजरा करके) महारानी की जय हो। श्रीमहाराजाधिराज युद्ध-क्षेत्र से पीछे पधार रहे हैं।

रानी—(खड़ी होकर) दुर्ग-रक्षक से कहो, महाराज की अभ्यर्थना की तैयारी करे, अभिवादन की तोपें दागना प्रारम्भ कर दो, दासी, तू मङ्गलाचरण और स्वस्ति उपचार की व्यवस्था कर; और देख आज दुर्ग के परिकोटा पर दीपावली होगी। कमला, पुत्री—वीर-पूजा का आयोजन कर, देखती नहीं, महाराज प्रतापी शत्रु को पद्दलित करके लौट रहे हैं। तलवार की पूजा तो तुझे ही करना है। तेरा थाल तैयार है न? (सैनिक से) ठाकराँ, श्रीमहाराज अधिक घायल तो नहीं हैं?"

सैनिक—राजमाता की जय हो, श्रीमहाराज के प्रत्येक अङ्ग में अनगिनत घाव हैं।

रानी—आह, अरी, बनिता, मन्त्री से कह, जल्दी राजवैद्य अपने उपचारों सहित उपस्थित हों। (सैनिक से) ठाकराँ, सेना की अधिक हानि तो नहीं हुई?

सैनिक—घणी खमा, उङ्गली पर गिने हुए योद्धा बचे हैं, सभी सिर से पैर तक घायल हैं।

रानी—विमला, सभी सैनिकों की सुश्रूषा तेरे सुपुर्द है, सावधान, बेटी—प्रमाद न करना। (सैनिक से) ठाकराँ, भला महाराज ने कैसा लोहा लिया?

सैनिक—माता, जैसे केसरी मृगों के झुण्ड में विचरता हो, किसी की सामर्थ्य थी कि श्रीमहाराज की शमशेर के सम्मुख जीवित रहे, परन्तु शत्रु की सेना असंख्य थी, महाराज का दोष नहीं?

रानी—(चमक कर) तुम्हारा वर्णन सन्दिग्ध है, तुम क्या कहना चाहते हो?

सैनिक—(धरती में घुटने टेक कर) घणी खमा अन्नदाता! सेवक का अपराध क्षमा हो?

रानी—झटपट निर्भय होकर सब कुछ ख़त्म करो।

सैनिक—माता, श्रीमहाराज युद्ध से विमुख होकर लौट रहे हैं।

रानी—(गर्ज कर) क्या कहा, विमुख होकर?

सैनिक—हाँ, महारानी।

रानी—ठाकराँ, क्या तुम पागल तो नहीं......?

सैनिक—(घुटने बैठ कर) राजमाता क्षमा हो।

रानी—तब राजा युद्ध में हार कर लौट रहा है?

सैनिक—शत्रु बहुत प्रबल था। और महाराज को समय पर सहायता न मिली।

रानी—(क्रुद्ध सर्पिणी की तरह फुफकार कर) राजा हार कर लौट रहा है?

सैनिक—(भयभीत होकर) परन्तु महाराज की वीरता...

रानी—(धरती पर पैर पटक कर) राजा हार कर लौट रहा है?

सैनिक—(धरती में लोट कर) हाँ माता हाँ,......

रानी—जीवित?

सैनिक—हाँ माता हाँ,......

रानी—और तुम लोग भी?

सैनिक—(चुप)

रानी—और तुम लोग राजपूत हो? (हटो सामने से)

२

दासी—महारानी, पूजा का थाल प्रस्तुत है।

"उसे फेंक दो"

"मङ्गलाचार?"

"बन्द कर दो।"

"क्या दीपावली न होगी?"

"नहीं, ये तोपों की ध्वनि कैसी है?"

"श्रीमती की आज्ञा से महाराज की अभ्यर्थना हो रही है।"

"उन्हें बन्द कर दो।"

"जो आज्ञा।"

"प्रधान दुर्गाध्यक्ष को अभी यहाँ भेज दो।"

"जो आज्ञा।"

"महारानी, राजवैद्य उपस्थित है।"

"उनसे कह दो, लौट जायँ, कोई काम नहीं है।"

"महारानी की जय हो; दुर्गाध्यक्ष उपस्थित है।"

"दुर्गाध्यक्ष, अभी क़िले के फाटक बन्द किए जायँ।"

"किन्तु महारानी, महाराज पुकार रहे हैं।"

"वे खेत में काम आए।"

"वे चिरायु हैं।"

"वे मर गए हैं।"

"वे पधार रहे हैं।"

"वे महाराज नहीं।"

"वे महाराज हैं।"

"वे भूत अथवा पिशाच हैं।"

"महारानी, मेरी प्रार्थना...।"

"दुर्गाध्यक्ष, मेरी आज्ञा है, क़िले के फाटक बन्द कर दिए जायँ।"

"क्या महाराज क़िले में न घुसने पावेंगे?"

"नहीं।"

"सैनिक?"

"एक भी नहीं।"

"जो आज्ञा" (प्रस्थान)

३

"पुत्री, वे तेरे पति हैं, उन्हें क्षमा करो।"

"माता, तुम क्यों आई?"

"पुत्री, महाराज छः मास से दुर्ग के बाहर घायल पड़े हैं, उन पर दया करो।"

"वे मेरे पति नहीं।"

"बेटी, ऐसा न कहो।"

"माता, आप मेवाड़ की लक्ष्मी हैं, आपकी पुत्री का पति कायर है—यह कह कर मेरा अपमान न करो।"

"बेटी, युद्ध में हार-जीत तो होती ही है।"

"मैं नहीं सह सकती।"

"उन्होंने शक्ति भर अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया।"

"वहीं खड़े-खड़े कट मरना उनका कर्त्तव्य था।"

"बेटी, वे फिर जीतेंगे।"

"कुल की आन तो गई।"

"वे बदला लेंगे।"

"राजपूती का तेज नष्ट हो गया।"

"फिर भी बेटी—तू क्षमा कर, मेरे कहने से।"

"नहीं माता, वे मेरे दुर्ग में न आने पावेंगे।"

"वे आरोग्य होते ही युद्ध करेंगे, और बिना विजय किए न फिरेंगे।"

"मैं उनका मुँह न देखूँगी।"

"अच्छा, परन्तु दुर्ग का द्वार खोल दे।"

"वे मेरे सम्मुख न आने पावेंगे।"

"न आवेंगे।"

"अच्छा, यह लो दुर्ग की चाबियाँ।"

४

"महारानी, मैं तुम पर गर्व करता हूँ।"

"स्वामिन्! दासी को यथेच्छ दण्ड दीजिए; मैं हाज़िर हूँ।"

"तुम मारवाड़ की प्रतिष्ठा हो।"

"मैंने महाराज का तिरस्कार किया।"

"तुमने कायरता का तिरस्कार किया।"

"मैंने इतना घायल होने पर भी आपको छः मास दुर्ग में न घुसने दिया!"

"मेरा अपराध ही ऐसा था। राठोरों के सिंहासन की राजमहिषी को यही उचित था।"

"आप मारवाड़ के स्वामी हैं।"

"वह काम इस पद के योग्य न था।"

"महाराज को कितना कष्ट हुआ—वह भी अपनी पत्नी के द्वारा।"

"महारानी, यही तुम्हारा पतिव्रत है, पति की अन्धी ग़ुलामी नहीं। तुम्हारी जैसी पतिव्रता जब देश में हों तो क्या कोई भी पुरुष कायर हो सकता है।"

"तब स्वामी, क्या दासी को क्षमा किया?"

"महारानी, मैं स्वयं तुम्हारे हाथ बिका हूँ।"

"तब इस विजय के उपलक्ष में रास-रङ्ग की आज्ञा दें।"

"प्रिये, यथेच्छ रास-रङ्ग करो, शत्रु के तुम्हारे पति ने ऐसे दाँत खट्टे किए हैं कि वह सदा याद रक्खेगा।"

* * *

सह-शिक्षा

[श्री० उमाशङ्कर जी उप-सम्पादक "आज"]

लड़के-लड़कियों को एक ही दर्जे में एक साथ पढ़ाने की बात अनेक सज्जनों को इतनी भयङ्कर और हानिकर मालूम होती है कि वे इस पर विचार करना भी नहीं चाहते। फिर जब कि बहुत थोड़े ही समय से लड़कियों को पढ़ाने की कुछ आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है तो बहुत से लोग लड़के-लड़कियों की सह-शिक्षा के प्रश्न पर विचार करना समय से पूर्व समझ सकते हैं।

कुछ समय पहले हमारे देश में लड़कियों को स्कूल भेजना भी सामान्यतः बड़ा भयङ्कर और हानिकर समझा जाता था। कहा जाता था कि स्कूल जाने से बाहर की हवा लगने से लड़कियाँ ख़राब हो जायँगी। उन्हें मकान के अन्दर रखने में ही उनकी रक्षा है। लड़कियों का काम घर के अन्दर ही है। वे पढ़-लिख कर क्या करेंगी? क्या उन्हें दफ़्तरों में काम करना है? अब लड़कियों को स्कूल भेजने के सम्बन्ध में ऐसी बातें नहीं कही जातीं। अब स्त्री-शिक्षा का महत्व बताने और इसके पक्ष में तर्क-वितर्क करने की सामान्यतः आवश्यकता नहीं रह गई है।

इसी तरह सह-शिक्षा प्रणाली पर बराबर विचार करते रहने से इस प्रश्न की भयङ्करता जाती रहेगी। इस प्रथा के प्रचलित होने पर इसके सम्बन्ध में जो नाना प्रकार के भ्रम फैले हुए हैं, वे दूर हो जायँगे। यह बात भी स्पष्ट हो जायगी कि इस प्रणाली से समाज की हानि नहीं है, बल्कि उसकी उन्नति में सहायता मिलेगी। बहुत ज़माने से हम लड़के-लड़कियों को अलग ही पढ़ते देखते आए हैं। उनके एक साथ पढ़ने के बारे में हम मुश्किल से ही कभी विचार करते हैं। इसलिए उनकी सह-शिक्षा हमें सर्वथा नई और अनोखी बात मालूम होती है। पर किसी नई बात से घबराने की आवश्यकता नहीं है। कम से कम हमें इस नई प्रणाली पर विचार करना चाहिए तथा इसकी परीक्षा करके सत्य का निश्चय करना चाहिए। बिना इस पर पर्याप्त विचार किए और बिना इसकी पर्याप्त परीक्षा किए इसके विरुद्ध राय क़ायम कर लेना उचित नहीं है।

सह-शिक्षा के ख़िलाफ़ जो मुख्य बात कही जाती है वह यह है कि इस प्रणाली के प्रचलित होने से लड़के-लड़कियों का चरित्र भ्रष्ट हो जायगा, उनकी ज़िन्दगी चौपट हो जायगी, उनके जीवन की सारी आशाओं पर पानी फिर जायगा और उनका भविष्य अन्धकारमय हो जायगा। इस सम्बन्ध में अङ्गरेज़ लेखक श्री० सेसिल-ग्राण्ट और श्री० नॉरमन हाजसन अपनी सह-शिक्षा विषयक पुस्तक में अपने अनुभव के आधार पर लिखते हैं :—

(१) स्कूल में लड़कियों की उपस्थिति से दुराचरण के सर्वथा प्रतिकूल वातावरण, उसी तरह उत्पन्न हो जाता है, जिस तरह शुद्ध वायु बीमारी के कीड़े के लिए प्रतिकूल है।

(२) अगर सह-शिक्षा वाले स्कूल ठीक तरह से चलाए जायँ, अच्छे स्कूलों में चरित्र के सम्बन्ध में जैसी देख-रेख होनी चाहिए वैसी ही सह-शिक्षा वाले स्कूलों में भी हो, तो ये स्कूल दुराचरण से उसी तरह बरी होंगे जिस तरह अच्छे स्कूल चेचक की बीमारी या चोरी की बुराई से बरी होते हैं।

(३) उक्त प्रकार के स्कूल गन्दी बातों और गन्दे क़िस्सों जैसी बुराइयों से भी बरी होंगे।

(४) उक्त प्रकार के स्कूल दुराचरण से बरी तो होंगे ही। इसके साथ ही वे उन लाभों से वञ्चित न होंगे जो उच्च श्रेणी के पृथक स्कूलों से हो सकते हैं।

(५) सह-शिक्षा प्रणाली के स्कूलों से लड़के-लड़कियों के आचरण बिगड़ते तो हैं ही नहीं, बल्कि उनसे उनके अनेक लाभ होते हैं।

इस प्रकार उक्त अङ्गरेज़ शिक्षण विशेषज्ञों के मतानुसार सह-शिक्षा प्रणाली से हानि तो बिलकुल है ही नहीं, उलटे इससे बड़ा लाभ है। उनका यह स्पष्ट मत है कि यदि सह-शिक्षा वाले स्कूलों में लड़के-लड़कियों की पर्याप्त देख-रेख रक्खी जाय तो उनका चरित्र बिगड़ नहीं सकता। उनका यह भी मत है कि इस प्रणाली से शिक्षा पाने वाले लड़के-लड़कियों की स्वाभाविक शक्तियों के विकास में बड़ी सहायता मिलेगी।

एक बार बम्बई के "इण्डियन डेली मेल" पत्र के प्रतिनिधि ने बम्बई के कुछ शिक्षण-विशेषज्ञों से शिक्षा विषयक अनेक प्रश्नों पर बातें कीं। प्रतिनिधि ने अन्य प्रश्नों के साथ सह-शिक्षा के प्रश्न पर भी मत प्राप्त किए। स्यूटोरियल हाई स्कूल के प्रिन्सिपल श्री० एम० एस० बैनर्जी ने कहा कि—"मैं सह-शिक्षा के प्रश्न पर कुछ अधिकार के साथ अपना मत प्रकट कर सकता हूँ, क्योंकि मैं सह-शिक्षा प्रणाली से चलने वाले भारत के सब से बड़े स्कूल में कुछ वर्षों तक रह चुका हूँ। सह-शिक्षा प्रणाली से कई लाभ हैं। सह-शिक्षा वाले स्कूल में लड़कियों की उपस्थिति से लड़कों में शिष्टता आती है। लड़कियों के साथ पढ़ने से लड़के झगड़ालू और उपद्रवी नहीं होते और गन्दी बातें नहीं बकते। उनका आचार-विचार, रहन-सहन तथा व्यवहार भी अच्छा होता है। लड़कियों की उपस्थिति से लड़के ज़्यादा मेहनत करते हैं, क्योंकि वे लड़कियों के सामने अपमानित होना पसन्द नहीं करते।" इसके साथ ही श्री० बैनर्जी ने कहा कि "सह-शिक्षा प्रणाली से कुछ बड़ी भयङ्कर हानियाँ भी । एक बड़ी हानि यह है कि लड़के और लड़कियाँ ऐसी उम्र में एक साथ पढ़ने से, जब कि उनके चरित्र दृढ़ नहीं हुए रहते, चरित्र-भ्रष्ट हो सकते हैं। यह प्रणाली यूरोप और अमेरिका में असफल प्रमाणित हुई है और भारत में भी कुछ वर्षों तक इसके सफल होने की सम्भावना नहीं है।"

स्पष्ट है कि श्री० बैनर्जी सह-शिक्षा के लाभ स्वीकार करते हैं, पर आपको लड़के-लड़कियों के एक साथ रहने से उनका चरित्र भ्रष्ट होने का भय है। अगर छोटे-छोटे शिक्षालय खोले जायँ और उनमें माता-पिता तुल्य शिक्षक-शिक्षिकाओं के पर्याप्त निरीक्षण में लड़के-लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करें तो उनके चरित्र-भ्रष्ट होने की सम्भावना न होनी चाहिए।

यहाँ पर यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि पृथक शिक्षालयों में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों के भी चरित्र भ्रष्ट पाए जाते हैं; यही नहीं, बल्कि जो लड़कियाँ या युवतियाँ ऐसी कोठरियों के अन्दर बन्द रक्खी जाती हैं, जहाँ बाहर की हवा पहुँच नहीं पाती, चरित्र-भ्रष्ट पाई जाती हैं। लोग आश्चर्य करके रह जाते हैं, लेकिन इसके प्रतिकार के उपाय पर विचार नहीं करते। वह उपाय यही है कि उन्हें अन्धकार से प्रकाश में लाकर अच्छे वातावरण में रक्खा जाय, उनकी अज्ञानता दूर की जाय, उनकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाय और उन्हें अच्छे कामों में लगाया जाय।

बम्बई के कैथडरल हाई स्कूल के प्रिन्सिपल श्री० डब्लू० एच० हैमण्ड ने उक्त पत्र-प्रतिनिधि से सह-शिक्षा के विषय में अपना मत देते हुए कहा कि "मैं सह-शिक्षा प्रणाली के पक्ष में नहीं हूँ, पर इसके समर्थकों के पक्ष में कुछ अच्छे तर्क हैं। मैं लड़के-लड़कियों को उनके आत्म-सम्मान और आत्म-संयम पर छोड़ने के विचार को पसन्द करता हूँ। लेकिन अभी लड़के-लड़कियों की ये योग्यताएँ आरम्भिक अवस्था में हैं। उनके चरित्र की काफ़ी उन्नति हो जाने से जब इन योग्यताओं की उन्नति हो जायगी तब सह-शिक्षा के प्रश्न पर विचार करने का समय होगा, इस समय उनके आत्म-सम्मान और आत्म-संयम पर अधिक निर्भर नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे लाभ होने की अपेक्षा, हानि ही अधिक होगी।"

वस्तुतः श्री० हैमण्ड सह-शिक्षा के विरुद्ध नहीं हैं, पर आपके मत से इसके लिए अभी अनुकूल समय नहीं है। प्रश्न यह है कि इस तरह विचार करने से सह-शिक्षा के अनुकूल समय कैसे आ सकता है? लड़के-लड़कियों को अलग रखने से उनमें आत्म-सम्मान का भाव और और आत्म-संयम की शक्ति कैसे आ सकती है? सच बात तो यह है कि सह-शिक्षा के अनुकूल स्थिति आप ही आप उत्पन्न न हो जायगी, बल्कि ऐसी स्थिति हमें लानी होगी। और अगर हम सह-शिक्षा के अनुकूल स्थिति लाना चाहते हों तो हमें लड़के-लड़कियों को आपस में मिलने और एक साथ पढ़ने का अवसर देना होगा। अगर लड़के-लड़कियों को मिलने-जुलने और एक साथ पढ़ने का अवसर न मिलेगा, तो सह-शिक्षा के अनुकूल स्थिति उत्पन्न नहीं हो सकती।

इस स्थान पर काशी-विद्यापीठ के सुयोग्य अध्यापक श्रीप्रकाश जी का मत उद्धृत करने से उक्त विषय पर कुछ अधिक प्रकाश पड़ेगा। आपने एक बार सह-शिक्षा के प्रश्न पर विचार करते हुए प्रयाग के "लीडर" पत्र में लिखा था—"उत्तर भारत के पुरुषों को समाज की स्त्रियों से मिलने-जुलने की आदत डालनी चाहिए। इसी प्रकार स्त्रियों को भी समाज के पुरुषों से मिलने-जुलने की आदत डालनी चाहिए। स्त्रियों और पुरुषों को शताब्दियों से एक-दूसरे से मिलने का अवसर नहीं मिला है। इससे स्त्रियों के बीच में पड़ने पर पुरुष उनके साथ उपयुक्त व्यवहार करना भूल गए हैं। दोनों का साथ होने से स्त्रियों से उचित प्रकार से मिलने का तरीक़ा पुरुष शीघ्र ही सीख लेंगे। यदि हमें सीखने का अवसर न मिलेगा तो यह निश्चित है कि हम कभी भी सीख न सकेंगे। अगर स्त्रियों और पुरुषों को घर, स्कूल, कॉलेज, समाज और सर्वत्र अलग रक्खा जाय, तो वे एक-दूसरे के साथ रहना उसी तरह न सीख सकेंगे जिस तरह कोई पानी में प्रवेश किए बिना तैरना नहीं सीख सकता। स्त्रियों और पुरुषों को परस्पर शिष्ट व्यवहार करना एक-दूसरे के सामने ही सीखना होगा।"

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सह-शिक्षा प्रणाली प्रचलित करने में ख़तरा है। यदि हम सह-शिक्षा के अनुकूल स्थिति उत्पन्न करना चाहते हों तो हमें यह ख़तरा मोल लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में एक ग्रेजुएट महिला ने उक्त पत्र में लिखा था—"इससे (सह-शिक्षा से) निःसन्देह ख़तरा है, लेकिन कौन बड़ा और अच्छा काम ख़तरा उठाए और असुविधाएँ सहे बिना कभी पूरा हुआ है? साहसी लोगों का नहीं, बल्कि कायरों का यह काम है कि ख़तरा मोल लेने और ज़िम्मेदारी उठाने से भागें।"

उक्त महिला ने सह-शिक्षा के समर्थन में अपना यह मत प्रकट किया था—"सह-शिक्षा से लाभ है और इसकी ज़रूरत भी है। अगर अध्ययन और परीक्षा के विषय एक ही जैसे हों तो शिक्षा भी एक साथ ही मिलनी चाहिए। पृथक रहने वाले स्त्री-पुरुषों की अपेक्षा ऐसे युवक और युवतियाँ, जो अपनी भलाई-बुराई समझ सकें, आदरणीय और योग्य अध्यापकों से शिक्षा प्राप्त करने के उच्च उद्देश्य के लिए एक ही स्थान पर मिलें तो स्त्रियाँ अधिक उदार और कम शोर व ग़ुल मचाने वाली होंगी और पुरुष अधिक शिष्ट व्यवहार करने वाले और बुरी भावनाओं से ज़्यादा बरी होंगे।"

अक्सर कहा जाता है कि प्रकृति ने स्त्री-पुरुषों में भिन्नता रक्खी है; उनकी मनोवृत्ति में भेद होता है और उनके कार्यक्षेत्र अलग-अलग होते हैं। इसलिए उनका कहना है कि लड़के-लड़कियों की शिक्षा भिन्न होनी चाहिए तथा उनकी शिक्षा के लिए अलग-अलग स्कूल होने चाहिएँ। बम्बई के मारदा न्यू हाई स्कूल के प्रिन्सिपल श्री० के० बी० मर्जबान ने बम्बई के "इण्डियन डेली मेल" पत्र के प्रतिनिधि से सह-शिक्षा के विषय में बातें करते समय भी उक्त प्रकार का मत प्रकट किया था। आपने कहा था—"मैं सह-शिक्षा लाभदायक नहीं मानता। कई स्कूलों में सह-शिक्षा प्रणाली का प्रयोग हुआ, लेकिन उनमें सफलता नहीं मिली। मैं नैतिक अधःपात के भय से सह-शिक्षा प्रणाली का विरोधी नहीं हूँ, बल्कि मैं इसके विरुद्ध इसलिए हूँ कि मेरा विचार है कि लड़के-लड़कियों की शिक्षा में भिन्नता होनी चाहिए। लड़कों को कड़े मिज़ाज का और लड़कियों को कोमल मिज़ाज का होना चाहिए। लड़कों को पुरुषोचित और लड़कियों को स्त्रियोचित गुणों से युक्त होना चाहिए। एक ही स्कूल में ये दोनों बातें नहीं हो सकतीं। दोनों जाति के विद्यार्थियों के पाठ्य-विषय, पुस्तकें, खेल और भवन भी भिन्न होने चाहिएँ। मेरे मन से लड़कों के स्कूल में स्त्री-शिक्षिका का और लड़कियों के स्कूल में पुरुष-शिक्षक का होना ठीक नहीं है। स्त्री-शिक्षा उतनी ही उच्च होनी चाहिए, जितनी पुरुष-शिक्षा, लेकिन दोनों की शिक्षा में भिन्नता होनी चाहिए।"

पहले तो यह समझ लेने की बात है कि प्रकृति ने स्त्रियों और पुरुषों को एक साथ ही जीवन बिताने के लिए बनाया है। दोनों से एक-दूसरे को सहायता मिलती है और एक के बिना दूसरे में अपूर्णता रह जाती है। दोनों को ज़बर्दस्ती अलग रखने का प्रयत्न करना प्रकृति के विरुद्ध चलना है। वस्तुतः शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य यह भी है कि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के साथ रहने और एक-दूसरे की सहायता करने के योग्य हों। जिस तरह माता-पिता अपने लड़के-लड़कियों का पालन-पोषण एक साथ ही करते हैं और उन्हें एक-दूसरे से पृथक नहीं रखते, उसी तरह माता-पिता तुल्य शिक्षकों और शिक्षिकाओं के पर्याप्त निरीक्षण में भाई-बहिन की तरह लड़के-लड़कियों की शिक्षा होनी चाहिए।

यह ठीक है कि कुछ ऐसे विषय हैं, जो विशेषतः लड़कों के सीखने के लायक़ होते हैं और कुछ ऐसे विषय हैं, जिनके सीखने की आवश्यकता मुख्यतः लड़कियों को होती है। लेकिन अन्य कई विषय ऐसे हैं, जो लड़के-लड़कियाँ दोनों के पढ़ने के होते हैं। पृथक स्कूलों और कॉलेजों में सब लड़के-लड़कियाँ सब विषय नहीं पढ़ते। उनके कुछ विषय समान होते हैं, और कुछ विशेष। इसी तरह सह-शिक्षा प्रणाली के स्कूलों में भी लड़के-लड़कियों के समान तथा विशेष विषयों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है। इन स्कूलों में धर्म, साहित्य, इतिहास, भूगोल, गणित आदि की शिक्षा लड़के-लड़कियों दोनों को समान रूप से मिल सकती है। लड़कों को कृषि, व्यापार, राज्य, और सेना आदि तथा लड़कियों को गृह-प्रबन्ध, पाक-शिक्षा, मातृत्व, शिशु-पालन, सीना-पिरोना, और गाना-बजाना आदि की विशेष शिक्षा दी जा सकती है। समान विषयों की शिक्षा एक ही साथ, एक ही दर्जे में और विशेष विषयों की शिक्षा पृथक दर्जों में हो सकती है। इस तरह समान और विशेष विषयों की शिक्षा एक हो स्कूल में हो सकती है। जो खेल केवल लड़कों के शरीर के अनुकूल हों, उनमें लड़कियाँ सम्मिलित न की जायँ।

हिन्दू-विश्वविद्यालय के आचार्य श्री० आनन्दशङ्कर ध्रुव के सह-शिक्षा विषयक विचार पाठक ज़रूर जानना चाहेंगे। आपने 'श्रीमती नाथीभाई दामोदर थैकरसी इण्डियन वीमेन्स यूनीवर्सिटी' के कनवोकेशन के अवसर पर अपने विचारपूर्ण भाषण में कहा था—"कहा जायगा कि लड़कों के कॉलेजों में लड़कियाँ भी पढ़ सकती हैं और इस प्रकार की सह-शिक्षा प्रणाली भारत के स्त्री-पुरुषों के वर्तमान पार्थक्य का अन्त करने के लिए वाञ्छनीय है। मैं सह-शिक्षा का लाभ मानता हूँ, क्योंकि मैं संसार से पृथक रहने से प्राप्त विशिष्ट प्रकार के सदाचार में विश्वास नहीं करता। लेकिन मेरे तुच्छ विचार में स्त्रियों के पृथक कॉलेजों के न होने से जो हानि होगी उसकी पूर्ति सह-शिक्षा वाले कॉलेजों के लाभ से न होगी। अगर समय-समय पर ऐसे व्याख्यान, वाद, खेल तथा उत्सव आदि किए जायँ जिनमें लड़के-लड़कियाँ दोनों सम्मिलित हो सकें, तो सह-शिक्षा के लाभ प्राप्त हो सकते हैं। लेकिन इस समय स्त्री-शिक्षा का प्रचार बढ़ाने की ज़रूरत है और यह स्त्रियों के लिए विशेष कॉलेज खोलने से ही हो सकता है।"

उक्त मत से पाठक समझ सकते हैं कि आचार्य ध्रुव सह-शिक्षा के लाभ मानते हैं। आपका कहना केवल यह है कि इस समय स्त्री-शिक्षा के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है और यह स्त्रियों के लिए विशेष कॉलेज खोलने से ही हो सकता। वर्तमान स्थिति में आप व्याख्यानों, खेलों और उत्सवों आदि में लड़के-लड़कियों दोनों को सम्मिलित करने के पक्ष में [illegible] स्त्री-शिक्षा प्रचार बढ़ाने के उद्देश्य से पृथक स्कूल और कॉलेज खोलने के विचार का विरोध करने की आवश्यकता नहीं है। इस उद्देश्य से पृथक स्कूल और कॉलेज खोले जा सकते हैं। तत्काल लड़कों के स्कूलों और कॉलेजों के अधिकारियों को इतनी बात तो ज़रूर ही मान लेनी चाहिए कि जो लड़कियाँ लड़कों के स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ना चाहें, उनके लिए कोई रुकावट न रहे। इसके साथ ही ऐसे छोटे-छोटे स्कूल और कॉलेज भी खुलने चाहिएँ जहाँ योग्य शिक्षकों और शिक्षिकाओं के निरीक्षण में सह-शिक्षा प्रणाली का उपयुक्त प्रबन्ध हो तथा जहाँ लड़के-लड़कियाँ एक साथ पढ़ने और खेलने के लिए उत्साहित की जायँ।

श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे प्रसिद्ध शिक्षा-विशेषज्ञ भी सह-शिक्षा प्रणाली के समर्थक हैं, क्योंकि उनके 'शान्ति-निकेतन' में यह प्रणाली प्रचलित है। श्री० अमूल्य सी० सेन यहाँ साल भर रह चुके हैं। आपने यहाँ के सह-शिक्षा सम्बन्धी अपने अनुभव कलकत्ते के "फ़ॉरवर्ड" पत्र में लिखते हुए अपना यह मत प्रकट किया था—"सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि स्कूल की पढ़ाई तक सह-शिक्षा से लड़के-लड़कियों का लाभ है। लड़के-लड़कियों का साथ होने से उनके चरित्र में दृढ़ता आती है। इससे छोटी उम्र और अपरिपक्व बुद्धि के लड़के लड़कियों में गन्दी बातें जानने की इच्छा उत्पन्न होने में रुकावट होती है। इससे स्त्री-पुरुष सम्बन्धी भाव दबते हैं। इससे अपरिपक्व बुद्धि के लड़के-लड़कियों में गन्दे ख़्याल नहीं आने पाते। इतना ही नहीं, बल्कि इससे लड़के-लड़कियों में एक दूसरे के प्रति पवित्र भाव उत्पन्न होता है। शान्ति-निकेतन के स्कूली लड़कों में लड़कियों के या स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध के बारे में जानने की इच्छा नहीं पाई जाती। शान्ति-निकेतन के लड़कों में बङ्गाल के किसी अन्य स्कूल के लड़कों की अपेक्षा स्त्री-पुरुष सम्बन्धी बुरे भाव कहीं कम होते हैं।"

श्री० अमूल्य सी० सेन ने तो सह-शिक्षा का पूर्ण समर्थन किया है, लेकिन आपका मत है कि यह शिक्षा-प्रणाली स्कूल तक ही होनी चाहिए। कुछ लोगों का मत है कि बड़ी उम्र के ऐसे युवकों और युवतियों की ही सह-शिक्षा होनी चाहिए जो अपनी भलाई-बुराई समझ सकें। वस्तुतः सब उम्र के लड़के-लड़कियों की सह-शिक्षा से लाभ है, और आवश्यक भी है; यही प्राकृतिक शिक्षा-प्रणाली है। इस शिक्षा-प्रणाली से लड़के-लड़कियों की विशेषताओं के विकास में सहायता मिलेगी और समाज अधिक उन्नत हो सकेगा। बहुत छोटी उम्र के लड़के-लड़कियों के लिए तो पृथक स्कूलों की कोई आवश्यकता ही नहीं मालूम होती। इन छोटे बच्चों के स्कूलों में शिक्षा देने का कार्य सुशिक्षित महिलाओं के सुपुर्द रखना उत्तम होगा। सह-शिक्षा वाले अन्य स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा का काम स्त्रियों और पुरुषों दोनों के सुपुर्द होना चाहिए। लड़कियों के विशेष विषयों की शिक्षा स्त्रियों द्वारा और लड़कों के विशेष विषयों की शिक्षा पुरुषों द्वारा सामान्यतः ज़्यादा अच्छा होगा। स्पष्ट है कि मातृत्व और शिशु-पालन आदि विषयों की शिक्षा के लिए स्त्रियाँ ही, और कृषि और सेना आदि शिक्षा के लिए पुरुष ही उपयुक्त हो सकते हैं।

वर्तमान स्कूलों और कॉलेजों में विद्यार्थियों की संख्या बड़ी होती है। इसका परिणाम यह होता है कि लड़कों की उपयुक्त शिक्षा नहीं हो पाती। शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक का अपने विद्यार्थियों से अति निकट सम्पर्क हो। वर्तमान बड़े-बड़े स्कूलों और कॉलेजों में यह सम्पर्क सम्भव नहीं है। सह-शिक्षा के स्कूलों के सम्बन्ध में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि ये स्कूल बहुत छोटे-छोटे हों, जिससे लड़के-लड़कियों की पर्याप्त देख-रेख रक्खी जा सके।

इस समय स्त्रियों और पुरुषों में बड़ा पार्थक्य है। दोनों का समाज अलग है। सह-शिक्षा प्रणाली प्रचलित होने पर यह पार्थक्य दूर होगा और दोनों के सहयोग से समाज की उन्नति होगी। हमें किसी नई बात के ग्रहण करने में व्यर्थ भय न करना चाहिए। उचित है कि शिक्षा से दिलचस्पी रखने वाले सज्जन स्वयं 'शान्ति-निकेतन' में रह कर सह-शिक्षा के परिणाम देखें और उन पर विचार करें तथा वहाँ की शिक्षा-प्रणाली के अनुसार नए-नए स्कूल स्थापित करें।

■ * *

राउन्डटेबिल-कॉन्फ्रेन्स के तीन आशान्वित प्रतिनिधि

श्री० एम० आर० जयकर

डॉ० ऑम्बेडकर

डॉ० बी० एस० मुञ्जे

कारूर (मद्रास) के महिला-गवर्नमेण्ट ट्रेनिङ्ग स्कूल की शिक्षिकाएँ और छात्राएँ

मलिक लाल खाँ
पञ्जाब की प्रान्तीय 'वार-कौन्सिल' के 'डिक्टेटर', जो जेल में हैं।

प्रोफ़ेसर कृष्णनारायण
आप बाँसुरी बजाने में अद्वितीय हैं

श्री० सकलातवाला
जो इङ्गलैण्ड में रह कर सदैव भारत के हित की चेष्टा करते रहते हैं।

भारतवर्ष में रेशम के व्यवसाय को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न

(ये चित्र ओल्लूर (कोचीन स्टेट, मद्रास) स्थित सेण्ट मेरी कॉवनेण्ट के हैं, जहाँ पर कीड़ों से रेशम उत्पन्न करने के लिए एक फ़ॉर्म खोला गया है, और उससे सूत तथा कपड़ा भी तैयार किया जाता है)
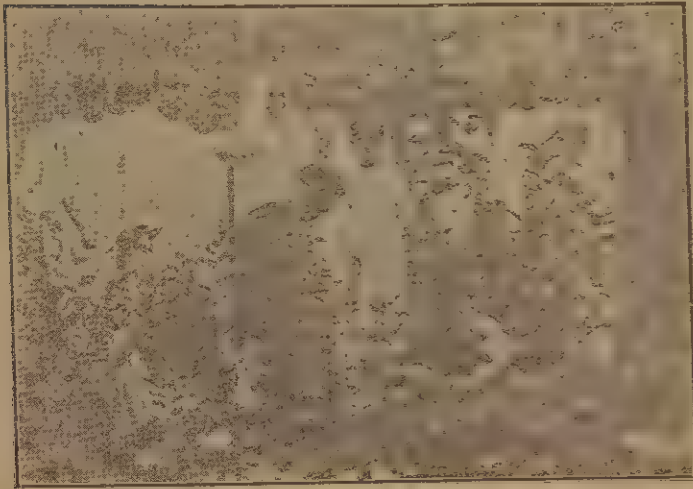
रेशम के कीड़ों का भोजनालय

यहाँ रेशम के कीड़े पाले जाते हैं

हैण्डलूमों पर रेशमी कपड़ा बुना जा रहा है

कच्चे सूत को धोने की प्रक्रिया
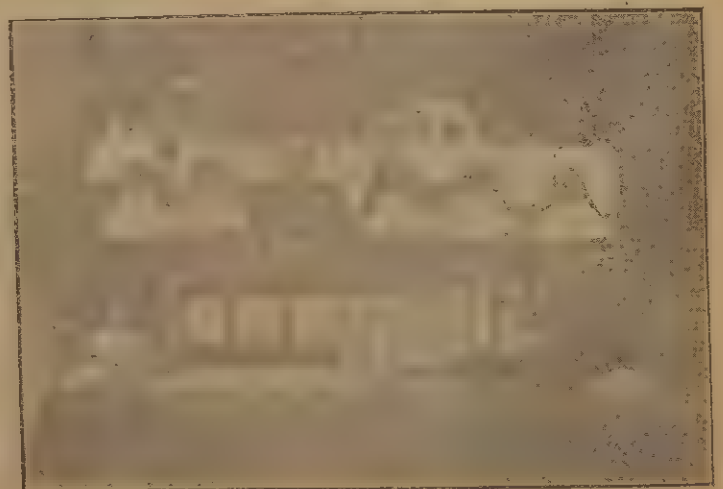
रेशम का सूत तैयार किया जा रहा है

उन्नति के मार्ग में महिलाओं की प्रगति

श्रीमती राजमानिकम अम्मल
ये मद्रास की अगमबादिया जाति की पहली हिन्दू-कन्या हैं, जो एस० एस० एल० सी० पास करके डॉक्टरी का अध्ययन कर रही हैं।

श्रीमती पी० जानकी अम्मल
आप ट्रावनकोर की निवासी हैं और हाल ही में सैलियर—महिला-सम्मेलन की सभापति नियुक्त की गई थीं।

मिस डोरोथी काल्डवेल्स
आपने विलायत की बुक-कीपिङ्ग और एकाउण्टैन्सी की परीक्षा में चार हज़ार प्रतियोगियों के होते हुए सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त किया है।
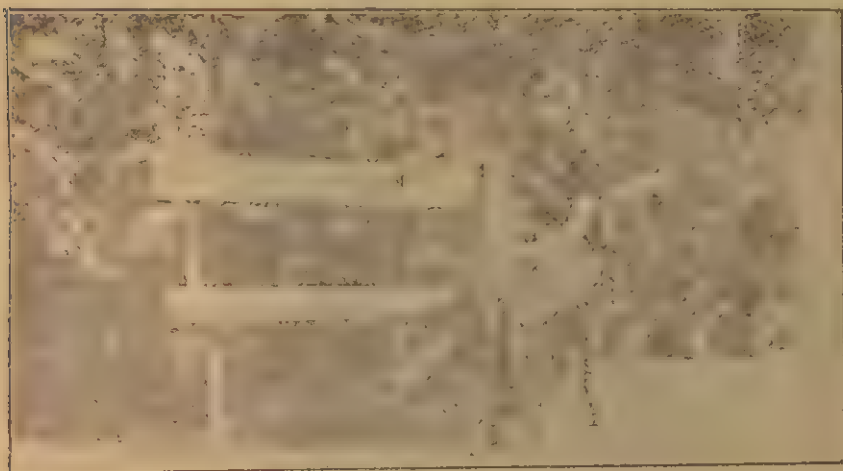
श्रीमती कृष्णाकुमारी सिन्हा
आप बनारस के हिन्दू विश्वविद्यालय की विद्यार्थिनी हैं। आजकल आप राष्ट्रीय आन्दोलन में बहुत अधिक भाग ले रही हैं।

मिस ए० जी० गिलेस्पी
आप हसन (मैसूर) के अस्पताल में लेडी डॉक्टर हैं और हाल ही में स्थानीय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की मेम्बर नियुक्त की गई हैं।

श्रीमती पी० विशालाक्षी अम्मा
आप त्रिचूर (ट्रावनकोर) में ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियत की गई हैं।

मिस इक़बालुन्निसा बेगम
आप बङ्गलोर (मैसूर) के उर्दू स्कूलों की लेडी इन्स्पेक्टर हैं। हाल ही में आपने बी० ए० की परीक्षा पास की है।

श्रीमती रत्नबाई
आप पुत्तूर (मद्रास) के 'भारतीय महिला-सङ्घ' की सेक्रेटरी चुनी गई हैं।

सत्याग्रह-संग्राम में महिलाओं का आत्मोत्सर्ग
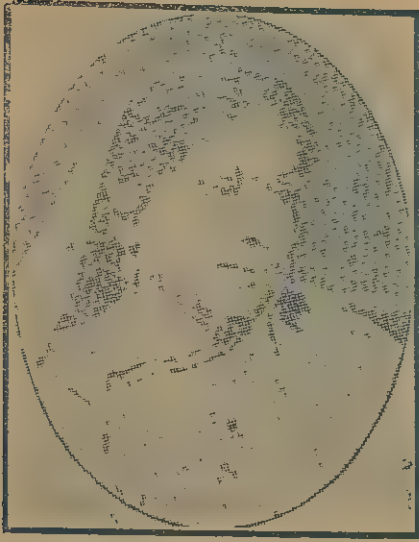
श्रीमती सरोजिनी नायडू (जेल में)
जिनको एशियाई महिला-सम्मेलन की सभापति नियुक्त करने का प्रस्ताव किया गया है।

श्रीमती मनी बहिन पटेल
आप सरदार वल्लभ भाई पटेल की सुयोग्य पुत्री और गुजरात के सत्याग्रह-संग्राम की एक प्रमुख कार्यकर्त्री हैं।

श्रीमती लावण्यप्रभा मित्र (कलकत्ता)
सत्याग्रह-आन्दोलन में आपको चार मास का दण्ड हुआ है।
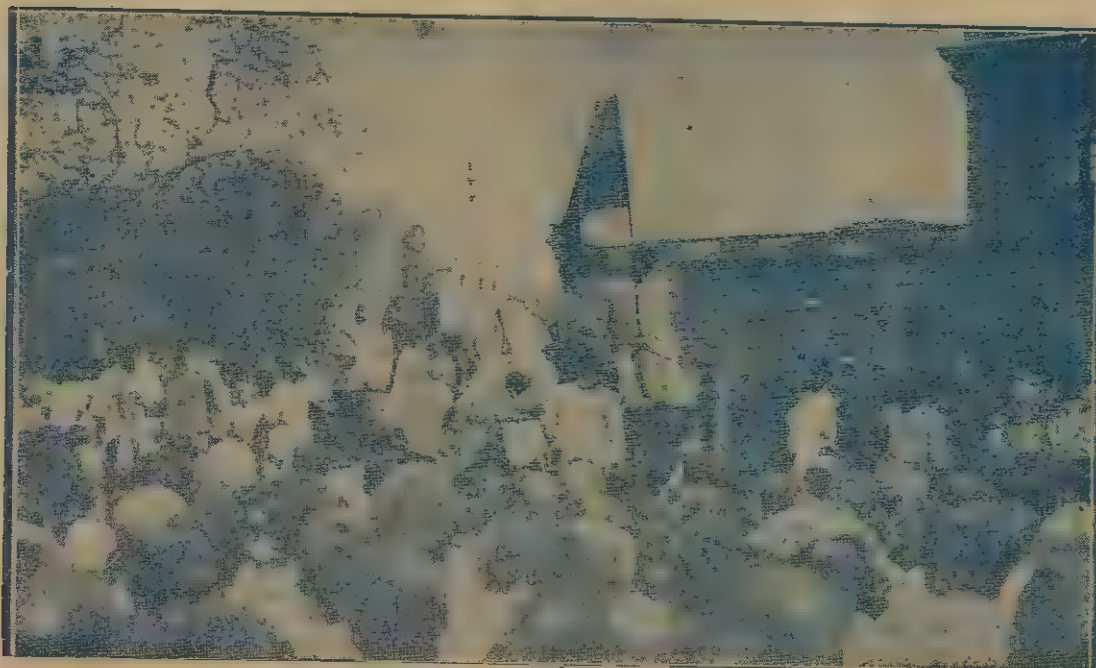
देहली में श्रीमती सत्यवती की जेल-यात्रा का दृश्य

श्रीमती अशोकलता दास (कलकत्ता)
आपको सत्याग्रह में चार मास की सज़ा मिली है।

श्रीमती शान्तिदास, एम० ए० (कलकत्ता)
आप श्रीमती अशोकलता दास की पुत्री हैं। आपको भी चार मास का दण्ड मिला है।

श्रीमती उर्मिला देवी, शास्त्री
मेरठ की महिला-स्वयंसेविकाओं की कप्तान, जिनको छः मास का दण्ड मिला है।
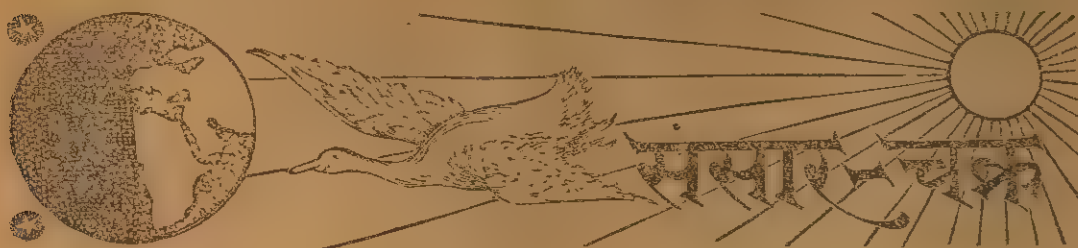
फ़िलीपाइन की स्वतन्त्रता का प्रश्न

[श्री० खण्डेलकर, एम० ए०]

फ़िलीपाइन लोगों की मनोवृत्ति का पता लगाना कोई आसान काम नहीं है; केवल पश्चिम के लोगों के लिए ही नहीं, स्वयं उनके लिए भी वह सदैव एक पहेली रहेगी। वहाँ की स्वतन्त्रता का प्रश्न लीजिए। जब से वहाँ के पूर्व-प्रेज़िडेण्ट मेकिनले ने इस बात का वचन दिया है कि एक दिन फ़िली-पाइन के लोग स्वतन्त्र होंगे, तब से स्वतन्त्रता वहाँ के लोगों की बातचीत का प्रधान विषय हो गया था। इससे पहले भी यह विषय उनके मस्तिष्क में घूमा करता था, परन्तु इतने वेग से नहीं। इसमें सन्देह नहीं कि वे लोग स्वतन्त्रता के सच्चे पुजारी हैं। पर इधर कुछ दिनों से यह भाव बहुत कुछ बदल गया है। बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि जो लोग रात-दिन स्वतन्त्रता का स्वप्न देखा करते थे, उन्होंने भी अब उसके पक्ष में बड़ी-बड़ी युक्तियों और प्रमाणों की चर्चा बन्द कर दी है। इसीसे उनकी इस विचित्र मनोवृत्ति के परिवर्तन का पता चलता है। परन्तु यह परिवर्तन क्यों हुआ, यह सदैव एक पहेली रहेगी।

फ़िलीपाइनों का नेता

फ़िलीपाइन की व्यवस्थापक कॉङ्ग्रेस के अधिवेशन के समय कमरा राजनीतिज्ञों से खचाखच भरा था और मीठे नम्र स्वर में एक मध्यम डील-डौल का पुरुष अपना भाषण दे रहा था; अपनी युक्तियों का महत्व दिखाने के लिए वह जोश से कभी दाईं ओर, और कभी बाईं ओर घूमता था। सभा और सीनेट के प्रतिनिधियों में सन्नाटा छाया हुआ था। वह उसका प्रेज़िडेण्ट था और उसका नाम था मैन्युएल क्वेज़न। उसकी वक्तृता के अन्तिम शब्द थे—"सज्जनगण, मैं फ़िलिपाइन लोगों के स्वतन्त्र राज्य में यहाँ के नरक में रहना पसन्द करता हूँ, परन्तु अमेरिका की परतन्त्रता में यहाँ के स्वर्ग में भी रहना नहीं चाहता।" क्वेज़न के ये शब्द, जिनकी अभ्यर्थना सभासदों ने घण्टे भर तक करतल-ध्वनि से की थी, महीनों फ़िलीपाइन के वायु-मण्डल में प्रतिध्वनित होते रहे। इन शब्दों को क्वेज़न के मुँह से निकले वर्षों व्यतीत हो गए, परन्तु वे अब भी वहाँ सुनाई देते हैं। परन्तु शब्दों की वह ध्वनि अब दिन प्रति दिन क्षीण होती जा रही है। इसमें कुछ भेद अवश्य छिपा है।

परिवर्तन

परिवर्तन का मुख्य कारण तो यह प्रतीत होता है कि वहाँ के भिन्न-भिन्न दलों के नेताओं की मनोवृत्ति 'अमेरिकन' हो गई है; अर्थात् वे लोग अमेरिका की शासन पद्धति से सहानुभूति दिखाने लगे हैं। अब 'शीघ्र और पूर्ण स्वतन्त्रता' की आवाज़ वहाँ नहीं गूँजती, उसके दिन निकल गए हैं। अब भी कुछ नेता पूर्ण-स्वतन्त्रता की आवाज़ उठाते हैं; परन्तु उसके साथ उनके हृदय की पूरी लगन नहीं रहती। इसका एक प्रधान कारण, इस बात की आशा मालूम होती है कि यदि वे एक बार अमेरिका से अपना दृढ़ सम्बन्ध स्थापित कर लें तो उन्हें अमेरिका जैसे धन-कुबेर देश से पूँजी की बहुत सहायता मिल जायगी।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति

डायर जैसे कॉङ्ग्रेस के कुछ सदस्य ऐसे हैं जो फ़िली-पाइन लोगों को यह सलाह देते हैं कि अमेरिकन कॉङ्ग्रेस के द्वारा वे अपने देश को स्वतन्त्र बना सकते हैं। परन्तु वास्तव में स्वतन्त्रता प्राप्ति का यह मार्ग उन लोगों को विशेष फलदायक नहीं है। साम्राज्यवादी राष्ट्रों में जो दोष स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं उनसे अमेरिका बच नहीं सकता। जब क़ानून बनाने का समय आता है तब कॉङ्ग्रेस गरम बहस करने के लिए तैयार अवश्य रहती है; परन्तु जब 'नीति' का प्रश्न उपस्थित होता है तब बड़े से बड़ा वक्ता और प्रभावशाली व्यक्ति उसके सदस्यों को अपने स्थान से एक सुई की नोंक के बराबर भी नहीं टल सकता। और उनकी दलील केवल यह रहती है कि 'वह उनकी नीति के विरुद्ध है।'

अमेरिका की उदासीनता

फ़िलीपाइन लोगों की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में अमेरिकनों की इस उदासीनता का पता उस समय लगता है, जब वहाँ की कॉङ्ग्रेस में इस सम्बन्ध का कोई प्रस्ताव आता है। उस समय पार्टियों का सङ्गठन हो जाता है—(इस प्रकार के प्रश्नों पर उनका सङ्गठन होते देर नहीं लगती)। और फिर संयुक्त राज्य जैसे दृढ़ जन-सत्तात्मक शासन यन्त्र में बिना छान-बीन के ही उसके भाग्य का निर्णय होने में देर नहीं लगती। प्रेज़िडेण्ट हर्बर्ट हूवर के ज़बरदस्त सङ्गठन और वहाँ के धन-कुबेरों की सहायता से यह एक पक्षीय निर्णय और भी अधिक दृढ़ हो जाता है। इस प्रकार फ़िलीपाइन की स्वतन्त्रता की बहुत सी समस्याओं में से एक भी समस्या हल नहीं होने पाती। परन्तु अब वह समय आ गया है जब अमेरिकन लोगों को समस्या का सहारा लेकर किनारा काटने के बदले, एक छोटी सी बात के आधार पर फ़िलीपाइनों से दृढ़ सौहार्द्य स्थापित कर लेना चाहिए।

इस प्रकार दो देशों में सम्बन्ध स्थापित हो जाने से अमेरिका की कुछ हेठी न हो जायगी; प्रत्युत एक तो इससे मित्रता दृढ़ हो जायगी और स्वतन्त्रताप्रिय अमे-रिकनों की स्वतन्त्रता से सच्ची सहानुभूति प्रगट होने लगेगी। यदि अमेरिकन कॉङ्ग्रेस फ़िलीपाइन की स्व-तन्त्रता पर पूर्ण रूप से विचार कर डाले और वहाँ के लोगों को अधिकार दे दे तो फ़िलीपाइन राष्ट्र से सच्चा और दृढ़ मित्र संसार में उसे कोई दूसरा राष्ट्र न मिलेगा।

फ़िलीपाइन के नेताओं का कर्त्तव्य

फ़िलीपाइन के नेताओं को इस बात का पूर्ण ज्ञान है कि यदि वे एक बार सब अमेरिकनों की कल्पना और मनोवृत्ति को जागृत कर दें तो उन्हें स्वतन्त्रता इतनी सरलता और शीघ्रता से प्राप्त हो जायगी कि किसी को उसका पता भी न लगने पावेगा। श्री क्वेज़न कहते हैं कि—"इससे सरल उपाय और दूसरा नहीं है; इस अवसर को हाथ से मत चूको; श्री० ओसमेना का मत है कि इस समय ग़लती न करना, आदि-आदि।" ये सब फ़िलीपाइन के आदरणीय और अत्यन्त प्रभावशाली नेता हैं। यदि ये सम्मिलित होकर उपर्युक्त कार्य कर डालें तो कुछ ही दिनों बाद अमेरिका की राष्ट्रीय ध्वजा उस देश पर से अपने आप नीचे उतार ली जायगी और कभी दूसरे राष्ट्र के झण्डे के ऊपर उड़ने का साहस न करेगी। फिर अपने 'सूर्य और तीन सितारों' वाले झण्डे को सब से ऊपर चढ़ा कर फ़िलीपाइन संसार के स्वतन्त्र राष्ट्रों के साथ अपने पैर आगे बढ़ाएगा। स्वतन्त्रता का वह दिन फ़िलीपाइन लोगों के अभिमान का दिन होगा।

इतना साहस किसमें है कि वह मनुष्य को उसके ईश्वरदत्त और जन्म-सिद्ध अधिकारों से वञ्चित कर सके। मि० जेम्स का कहना है कि अमेरिकन लोगों में नहीं, केवल जनता और कॉङ्ग्रेस की मनोवृत्ति जगा दो और तुम देखोगे कि पत्थर का हृदय भी पिघल कर तुम्हारे अधिकार तुम्हें समर्पित करने के लिए तैयार हो जाएँगे।

'चाँद' कार्यालय

की

अनमोल पुस्तकें

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्य-पूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। यह उन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, पृष्ठ-संख्या लगभग ५००, सजिल्द एवं तिरङ्गे कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य ३) रु०; स्थायी ग्राहकों से २)

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए, युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसको भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

इस उपन्यास में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें!

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनोमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं! मूल्य केवल २)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

तीसमार ख़ाँ की हजामत

(गताङ्क से आगे)

अङ्क—१, दृश्य—२

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

तीसमार ख़ाँ का ज़नानख़ाना

(तीसमार ख़ाँ की बीवी दिलारा बेगम)

दिलारा—आग लगे ऐसे अख़्तियार में कि निगोड़ी अङ्गिन तक भी बिला काम के झाँकने नहीं आती। माना कि मेरे मियाँ इतने बड़े दारोग़ा हैं और सारा काम हुकूमत के ज़ोर से करा लेते हैं। मगर हाय! डण्डों से हमदर्दी नहीं मिलती, मुहब्बत नहीं मिलती! जिसके लिए दिल रातों-दिन तरसा करता है। मेरे बाप एक मामूली आदमी हैं फिर भी जब तक वहाँ रहती हूँ, सारी दुनिया अपनी मालूम होती है। मगर यहाँ एक अदना पड़ोसिन भी मुझसे दिल खोल कर मिलने नहीं आती! और न कोई मुझी को अपने यहाँ किसी काम-काज में बुलाने की हिम्मत करती है। उफ़! ऐसे जीने पर लानत है। जानवर भी ऐसी ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकते।... कौन है धोबिन?

(रमझारी का कपड़ों का गिट्ठर लिए स्टेज के कोने में दिखाई देना)

रमझारी—नाहीं। हम इन उनके बिटिया रमझारी। लो आपन कपड़ा। (वहीं से कपड़ों का गिट्ठर फेंक देती है)

दिलारा—कल ही तो चौकीदार तेरी माँ को कपड़े दे आया था। क्या एक ही दिन में सब धुल गए?

रमझारी—नाहीं। अब आपके कपड़ा न धोआ जाई। हमरे हीयाँ पञ्चाइत भवा है कि विदेसी कपड़ा कोऊ न धोवे। जे धोई वहके हुक़ा-पानी बन्द होइ जाई।

दिलारा—क्या-क्या दारोग़ा जी का तुम लोगों को कुछ भी डर नहीं है? जानती हो आफ़त कर देंगे?

रमझारी—घलइया से।

दिलारा—हमारे कपड़े न धोए जाएँगे तो क्या हम लोग मैले-कुचैले रहें?

रमझारी—तो सुदेसी काहे नाहीं पहनित है? (लौट जाती है)

दिलारा—अरे! सुन-सुन-सुन तो।

रमझारी—(पलट कर) का होय?

दिलारा—तेरी माँ क्यों नहीं आई?

रमझारी—हमरे महतारी का पूछ कर का करब, आपका अपने कपड़वे से तो मतलब है।

दिलारा—सिर्फ़ कपड़ों ही से मतलब है? गोया मैं आदमी नहीं, मुझे आदमियों की सङ्गत पसन्द नहीं? क्यों? जा उसको भेज दे। मैं उसे समझा दूँ। वह ऐसा न करे। वरना दारोग़ा जी के कानों तक ख़बर पहुँचेगी तो......

रमझारी—तो का होई? सजा कराय देहैं। बस? अब बड़े-बड़े आदमी जेलख़ाना जात हैं। हम लोगन के कौन गिनती? एका अब हम सभे नाहीं डिराइत है।

दिलारा—(अलग) ग़ज़ब ख़ुदा का। जिस अख़्तियार के ज़ोम में हमारे मियाँ अन्धे हो रहे हैं। दीन-दुनिया भूले हुए हैं, आज उसकी यह हालत हो रही है कि इसकी परवा एक धोबिन की छोकड़ी भी नहीं करती। सच है अख़्तियार की शान जभी तक है जब तक इसका दबदबा रहता है। और दबदबा ज़ुल्म और बर्दी से नहीं, बल्कि हमदर्दी और इन्साफ़ से क़ायम रहता है। जहाँ यह बातें नहीं, तहाँ अख़्तियार काहे को, वह ख़ासी ज़िल्लत है। (रमझारी को जाते हुए देख कर) अरे! फिर चली। बात तो सुन ले। तू तो बड़ी तर्रार मालूम होती है। तेरी माँ से मुझे कुछ कहना है। जा उसे जल्दी से भेज दे। भूलना मत।

रमझारी—(पलट कर) वह नाहीं आय सकत है। आज हीयाँ के सब मेहररुवे गाँधी बाबा के झण्डा निकाले हैं। सुदेसी के परचार करिहैं। दीदी हुवाँ जइहैं कि आपके हीयाँ आइहैं?

दिलारा—क्या औरतें भी झण्डा निकालेंगी?

रमझारी—काहे? मेहररुवे मनई न होंय कि खाली मर्दने में दुम-पोंछ लाग है? अब तो मेहररुवे वह काम करते हैं कि मर्द का खाय के करिहैं? आपका का मालूम? आप तो पर्दे के बू-बू बनी घर माँ घुसरी रहित हैं।

दिलारा—उसमें कौन-कौन औरतें शामिल होंगी?

रमझारी—हिन्दू मुसलमान छोट बड़ी सभै। कोई घर बाक़ी न रही।

दिलारा—क्या पर्दे वाली भी जायँगी?

रमझारी—बड़ी-बड़ी रानी-महारानी तक जब सुदेसी के ख़ातिर घर से बाहर निकस पड़ीं तो अब पर्दा कहाँ रह गवा?

दिलारा—हाँ? औरतें इतनी आज़ाद हो गईं? अच्छा ज़रा अन्दर आकर इतमीनान से बैठ, ताकि मैं—

रमझारी—नाहीं दादा। आपके कपड़ा धोवब बन्द कै दीन हैं। कहूँ लोटा थरिया पकड़ाय के सजा कराय देव। कौन ठीक? आपके बड़ा अख़्तियार है।

(भाग जाती है)

दिलारा—(अकेली) भाग गई? उफ़! ऐसे अख़्तियार को झाड़ू मारूँ। जिसने मुझे दुनिया की निगाहों में ऐसी ज़लील कर रक्खा कि मैं एतबार की क़ाबिल भी नहीं समझी जाती। जैसा सलूक मियाँ दुनिया से साथ करते हैं, उसी का बदला आज दुनिया भी देने को तैयार हो गई। यह उसको ठोकर मारते थे और आज वही इनसे ठोकरों से बातें करती है। मगर हाय! उसकी चोट वह नहीं, मैं सह रही हूँ। वह अपनी जा-बेजा कारस्वाइयों से बुरे थे तो मैं उनके साथ क्यों बुरी समझी जाती हूँ? इसीलिए कि हिन्दुस्तानी औरतों की कोई हस्ती और कोई वक़अत नहीं है। हम लोग जानदार आदमी नहीं, बल्कि अपने-अपने मर्दों की महज़ बेजान दुम मानी जाती हैं। तभी तो हम लोग लाख अच्छी होने पर भी गेहूँ के साथ घुन की तरह अपने-अपने मर्दों की बुराइयों में पीसी जाती हैं। अल्लाह का शुक्र है कि यहाँ की औरतों को अपने निजी हस्ती का कुछ ख़्याल आया और पर्दा तोड़ कर अपनी आज़ादी की बुनियाद डाली। बस चले तो मैं भी उनका साथ दूँ। जब तक मैं दुनिया का साथ न दूँगी तब तक वह मुझे क्यों पूछने लगी? मियाँ दारोग़ा हैं मैं तो दारोग़ा नहीं हूँ। उन्हें सुदेसी से नफ़रत है। मगर मैं नफ़रत क्यों करूँ? तो क्या मैं भी झण्डे वाली औरतों के साथ जाऊँ? कहीं मियाँ बुरा न मानें—

(मुनुवा का तकली लिए आना)

मुनुवा—अम्मी तिकुली लाया। तिकुली लाया। यह देखो।

दिलारा—अरे! इसे कहाँ से लाया?

मुनुवा—एक लड़के से एक पैसे में मोल लिया है। अब्बा ने पैसा दिया था। अब हम बी सूत बनाएँगे।

दिलारा—तो तुझे यही ख़रीदना था बेवक़ूफ़ फेंक दे इसे। मकान से दूर जाकर फेंकना।

मुनुवा—काहे अम्मा?

दिलारा—तेरे अब्बा! इसे देखते ही तुझे फाड़ खाएँगे। जानता नहीं कि उन्हें सुदेसी बातों से इतनी नफ़रत है कि इसके बरतने वालों तक से बहुत ख़फ़ा होते हैं।

मुनुवा—नहीं अम्मा! अब्बा नहीं ख़फ़ा होंगे। अब तो वह बी इसलामी हो गए।

दिलारा—क्या?

मुनुवा—सचमुच अम्मा। हमने अपने कानों से सुना है। अब्बा भी कहते थे कि शराब पीना हराम है विदेसी माल लेना हराम है।

दिलारा—हाँ? सच?

मुनुवा—बिल्कुल सच अम्माँ। बड़े जोश से कहते थे।

दिलारा—वाह! तब तो जो हिचक थी जाती रही, अब मैं ज़रूर जाऊँगी।

मुनुवा—कहाँ अम्मा?

दिलारा—शहर भर की औरतों के साथ गाँधी बाबा का झण्डा निकालने।

मुनुवा—क्यों?

दिलारा—नहीं जानती। मगर जैसा सब करेंगी वैसा मैं भी आज से करूँगी। क्योंकि मैं भी दुनिया में रहती हूँ, अलग नहीं।

मुनुवा—तो अम्माँ हम बी चलेंगे।

दिलारा—नहीं बेटे। थक जावगे, यहीं खेलो।

मुनुवा—नहीं अम्माँ।

दिलारा—फिर नहीं मानते। जाओ खेलो।

(जाती है)

मुनुवा—(अकेला) अच्छा जाओ। हम बी पीछे-पीछे जाँयगे। जब घूम के ताकोगी तो भाग आएँगे।

(उसी तरफ़ जाता है)

अङ्क—१, दृश्य—३

(तीसमार ख़ाँ के मकान का सामना)

(तीसमार ख़ाँ का बड़बड़ाते हुए आना)

तीसमार ख़ाँ—वह साला चौकीदार गारद वालों के पास नहीं गया। न जाने कहाँ चला गया। मैं अब तक उसी की इन्तज़ार में थाने पर गारद लिए बैठा था।

(बटेर ख़ाँ का घबड़ाया हुआ आना)

बटेर—हुज़ूर ग़—ग़—ग़—ग़—ग़ज़ब हो गया।

तीसमार ख़ाँ (घबड़ा कर) क—क—क—क—क्या हुआ।

बटेर—अभी मुख़बिरों से ख़बर मिली है कि धरना देने के लिए तमाम शहर की औरतें फट पड़ी हैं।

तीसमार ख़ाँ—औरतें?

बटेर—जी हाँ औरतें! मगर इन्हें औरतें न समझिएगा। मर्दों की भी चची हैं चची!

तीसमार ख़ाँ—अरे बाप रे! क्या यह लोग रोक-टोक करने से कहीं हाथ तो नहीं चला बैठती हैं?

बटेर—नहीं। बस इतनी ही तो ख़ैरियत है।

निर्मला

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोल्ट और ब्रियो का "डैमेजड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर सर्वथा अवलम्बित होती है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारों का जनाज़ा है !!

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। मू० २॥) स्था० ग्रा० से-१॥।=)

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल ॥।); स्थायी ग्राहकों से ॥-)

नायक और नायिका के पत्रों के रूप में यह एक दुःखान्त कहानी है। हृदय के अन्तःप्रदेश में प्रणय का उद्भव, उसका विकाश और उसकी अविरत आराधना की अनन्त तथा अविच्छिन्न साधना में मनुष्य कहाँ तक अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति कर सकता है—ये बातें इस पुस्तक में अत्यन्त रोचक और चित्ताकर्षक रूप से वर्णन की गई हैं। आशा-निराशा, सुख-दुख, साधन-उत्कर्ष एवं उच्चतम आराधना का सात्विक चित्र पुस्तक पढ़ते ही कल्पना की सजीव प्रतिमा में चारों ओर दीख पड़ने लगता है। मूल्य केवल ३); स्थायी ग्राहकों से २।)

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ॥)

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। ऐसी कथाओं का भी सविस्तार वर्णन किया गया है। प्रत्येक त्योहार के सम्बन्ध में जितना अधिक खोज से लिखा जा सकता था, लिखा गया है। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी-सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-साहित्य को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुवन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुवन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

अधिक प्रशंसा न कर, हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। एक बार हाथ में लेते ही आप बिना समाप्त किए नहीं छोड़ेंगे। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। मूल्य केवल १); स्थायी ग्राहकों से ॥।)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

तीसमार ख़ाँ (ऐंठ कर) तब कुछ परवा नहीं। गारद लेकर फ़ौरन जाओ। और सुनो—(कान में कहता है)

बटेर—क्या औरतों पर भी?

तीसमार ख़ाँ—हाँ जी, मर्द, औरत, बच्चे सबको एक ही काठी से हम तो हाँकना जानते हैं। ऐसा न करें तो पबलिक हमको तीसमार ख़ाँ नहीं, गाजर-मूली ख़ाँ समझने लगेगी।

बटेर—मगर हुज़ूर, कहीं बड़े साहब जान गए तो हम लोगों की जान आफ़त में पड़ जायगी।

तीसमार ख़ाँ—अरे! हम क्या कोई चीज़ ही नहीं हैं। हम सब सँभाल लेंगे, किसकी मजाल है जो हमारी शिकायत उनसे करे। बस वही बात। समझे?

बटेर—तब हुज़ूर आप भी चलें। औरतों का मामला ठहरा। कहीं आफ़त न बरपा हो जाय।

तीसमार—अजब बेवक़ूफ़ हो। वह विलायती मेमें

तीसमार—अबे यह गारद है उल्लू के पट्ठे?

कल्लू—यू हम नाहीं जानित है, जेहका आप बुलावे कहेन रहा तेहका हम बुलाय लायन। सहर के कौनौ नाऊ नाहीं आए। तब देहात से एहका लायन हैं। बहुत नीक मूड़त है। एहके बाप बम्बई होय आवा है।

तीसमार—अबे गदहे तू तो गारद बुलाने गया था?

कल्लू—तो का नाऊ के जरूरत नाहीं है? (नाई से) अच्छा आओ भाई।

तीसमार—यह क्या करता है? जो पूछता हूँ उसका क्यों नहीं जवाब देता?

कल्लू—(नाऊ से) ठोल जाओ हो। तूका देख के केतिक गुस्सा होत हैं।

(नाई जाता है)

तीसमार—अबे! आयँ! उसे क्यों भगाए देता है? बुलाओ उसे। (कल्लू दूसरी तरफ़ जाने लगता है) और तू कहाँ चला?

तीसमार—अबे गारद गई ऐसी तैसी में। नाई को जल्दी बुला। उसे देखते ही मेरी दाढ़ी में खुजली मच गई है।

कल्लू—जुआँ पड़ गवा होई सरकार। अच्छा सबुर करो। अब्बै बुलाए देइत है।

(कल्लू जिधर नाई गया है उधर जाता है)

तीसमार—उफ़! बड़ी खुजली मची है। क्या करूँ।

(नाई के साथ कल्लू एक कुर्सी लिए आता है)

कल्लू—लो हजूर यह कुर्सी और यह नाऊ।

तीसमार—क्यों बे नाई के बच्चे हरामज़ादे! तुम लोगों को बड़ा मिज़ाज हो गया है। साले बुलाने से नहीं आते हो?

कल्लू—(अलग) अब दादा हमार हीयाँ गुज़र नाहीं।

(चुपके से भाग जाता है)

नाई—हम तो हजूर हीयाँ रहतो नाहीं हन, हमका

टग ऑफ़ वार

थोड़े ही होंगी? हिन्दुस्तानी औरतें होंगी, हिन्दुस्तानी। समझे? जिनके लिए हिन्दुस्तानियों का ख़ून कभी जोश ही नहीं खा सकता। यह हमने आज़मा कर ख़ूब देख लिया है।

बटेर—मगर हुज़ूर चलें ज़रूर।

तीसमार—हाँ, तुम आगे चल कर कार्रवाई करो, मैं अभी आता हूँ। ज़रा नाश्ता कर लूँ। दिन भर हो गए, घर के अन्दर क़दम रखने की मुहलत नहीं मिली।

(बटेर ख़ाँ जाता है, दूसरी तरफ़ से कल्लू आता है)

कल्लू—अरे! हजूर लायन लायन लायन। बड़े मुश्किल से मिला है।

तीसमार—क्या गारद?

कल्लू—हाँ! देखो। (जिधर से आया था उधर घूम कर) आओ हो नाऊ भाई।

(एक देहाती नाई का आना)

कल्लू—जाइत है गारद बुलावे।

तीसमार—अबे गारद के बच्चे। पहिले नाई को बुला ले।

कल्लू—(अपना कान पकड़ कर) नाहीं सरकार, अब अस गल्ती नाहीं होय सकत है। एक बाजी नाऊ बुलाए के भर पाएन।

तीसमार—हाय! हाय! तू तो बड़ा हुज्जती है हरामज़ादा! जब वह दूर निकल जायगा तब कहाँ बुलाने जाएगा?

कल्लू—हजूर हम अकेल जीव हन। चाहे हमसे आप गारद बुलवाए लेई चाहे नाऊ, दुनो काम नाहीं होय सकत है।

तीसमार—अच्छा नाई को तो बुला कम्बख़्त!

कल्लू—मुला पाछे गारद बुलवाए के तो न कहब? यू आप सोच लेइ।

आज के पहिले कबो नाहीं आप बुलवाएन हैं। नहवें आप रिसिया होइत है।

तीसमार—मैं नाहक़ ख़फ़ा होता हूँ? क्यों? यह तुम्हीं लोगों की बदमाशी से मेरी दाढ़ी की यह हालत है। साले एक-एक को भून के खा जाऊँगा। तेरी ऐसी तैसी करूँ—(मारता है)

नाई—अरे! अरे! बाप रे बाप! हम का बिगाड़ेन हैं।

तीसमार—चुप बदमाश! चल इधर। बनाओ हजामत।

नाई—(अपना बदन झाड़ता हुआ अलग) अच्छा हमहूँ अस हजामत बनाइब कि तू हूँ याद करिहो। पञ्छी में कउवा अऊर आदमी में नउवा सभै जानत हैं। एहकर कसर हम जो न निकारेन तो हम नाऊ नाहीं, चमार।

तीसमार—(कुर्सी पर हजामत बनाने की तैयारी में बैठा हुआ) अबे बनाता क्यों नहीं?

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्त्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ।।।) स्थायी ग्राहकों के लिए ।।-)

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है, बच्चों को भी—
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी!
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है—
लाख दो लाख में, बस एक है लम्बी दाढ़ी!!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !!

पुनर्जीवन

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति का हिन्दी अनुवाद है। यह उन्हें सबसे अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपनी आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है, और किस प्रकार अन्त में वह वेश्या-वृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूररों में सम्मिलित होना, उसकी ऐसी अवस्था देख कर उसे अपने किए पर अनुताप होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एकमात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित भी करना चाहिए—सब दृश्य एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। भाषा अत्यन्त सरल तथा ललित है। मूल्य केवल लागत-मात्र ५) स्थायी ग्राहकों से ३।।।)

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है, जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ।।।) केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झञ्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

नाई—(हाथ जोड़ कर) हुजूर हम नाऊ हन, घास नाहीं छोलित है।

तीसमार—यह क्या ?

नाऊ—हजूर हम खुर्पी नाहीं लायन है।

तीसमार—अरे ! यह कैसा गँवार नाई पकड़ लाया जो खुर्पी से दाढ़ी बनाता है। क्यों बे तू उस्तुरा नहीं रखता ?

नाई—हजूर हमारे पास सामान तो सब बम्बइया है। छूरा साबून बुरुस सब चीज़। मुल कहा मानी, आप यू दाढ़ी न मुड़वाई।

तीसमार ख़ाँ—तब क्या अपनी शकल रीछ सी ख़ब्बीस बनाए रहें ?

नाई—तौन नीक, मुल जहाँ आप दाढ़ी मुड़वाए देब तहाँ यह सूरत बानर अस निकस आई। यही तो बस दाढ़ी में खराबी है। हम कइयू बनाए के देख चुकेन है।

तीसमार ख़ाँ—तेरा सर ! बदमाश कहीं का। बहानेबाज़ी करता है।

नाई—बहाना नाहीं सरकार, साँचो कहित है। (दाढ़ी टटोल कर) बाप रे बाप ! यू दाढ़ी है कि ससुर झाऊ के जङ्गल। हजूर हाथ जोड़ित है, हम बहुत ग़रीब हन। हमरे छूरा के धार टूट जाई।

तीसमार ख़ाँ—अबे पहिले साबुन से भिगो ले तब देख बाल कैसे मुलायम पड़ जाते हैं।

नाई—साबुन कूची तो है, मुल सरकार हमरे बापी के होय। हम कब्बो साबुन से बनावा नाहीं है।

तीसमार ख़ाँ—अजब गँवार से पाला पड़ा। अबे गदहे ! कूची को पानी में डुबो कर साबुन से रगड़, उसके बाद उसे मेरी दाढ़ी पर लगा।

नाई—बहुत अच्छा। ऐसे सरकार बतावत जाई। हम गँवार मनई हन।

(कूची में साबुन लगा दूर खड़ा होता हैं। और जिस तरह से आतशबाज़ी में आग लगाई जाती है, उसी तरह से हाथ बढ़ा कर कूची को तीसमार ख़ाँ की दाढ़ी से एक जगह छुलाता है।)

तीसमार ख़ाँ—अबे इसको मेरी दाढ़ी पर रगड़।

नाई—नाहीं सरकार। यू हमसे न होई, हमार जीव बहुत डरात है। कहूँ आपके मुहें में हमार कूची घुसड़ जाई तो म़िलब मुसकिल होय आई। आपे ऐह पर आपन गाल रगड़ी।

तीसमार—मैं किस तरह रगड़ूँ बेवक़ूफ़ ?

नाई—आप आपन मूड़ी गिरगिट अस नीचे-ऊपर हलाई तो। हम समनवा कूची किए हन। हाँ हलाई।

तीसमार—अबे तू तो बड़ा उल्लू मालूम होता है। अच्छा यह ले। (अपना सर हिला कर कूची से अपना गाल रगड़ता है।)

नाई—अउर हाली-हाली। अस नाहीं अस। (दूसरे हाथ से तीसमार ख़ाँ का कान पकड़ कर ख़ूब कस-कस के झटका देता है।)

तीसमार—अबे यह क्या बेहूदा नाला × × ×

नाई—(तीसमार ख़ाँ का गाली देने के लिए मुँह खुलते ही अपनी साबुन की कूची उसमें गप से डाल देता है।) हाय ! हाय ! सरकार हमार कूची खाय लेब का ? हम गरीब आदमी हन। मुँह अउर खोली, नाहीं हम विलाय जाब। (एक हाथ से तीसमार ख़ाँ की नाक में दो उँगलियाँ डाल कर मुँह ऊपर को उठाता है, तब दूसरे हाथ से कूची उसके मुँह से अलग करता है।)

तीसमार—आख़ थू ! आख़थू—आँक छी ! आँक छी ! उफ़ ! मार डाला। यह साला नाई नहीं, पूरा क़साई है। उस पर से कम्बख़्त कभी कान पकड़ता है और कभी नाक !

"नाक-कान न पकड़ी तो यह डेढ़ पसेरी के मूड़ कोन चीज़ पकड़ के हलाइत। खोपड़ी में कहूँ खूँटी थोड़े गड़ी है।"

तीसमार—आ—आ—आक छीं ! अबे तूने मेरी नाक में उँगली क्यों खोंस दी ?

नाई—तो आपके मुहाँ खुलत कसस ? आपे तो हमार कुचिया सगरो भख लीन रहा। हम आपके कनवा न पकड़े होइत तो आप हमार हथवो लील लेइत।

तीसमार ख़ाँ—चुप रह। ला कूची हमें दे। हम इधर लगा लेंगे।

नाई—नाहीं सरकार। पहिले हम एक अलङ्ग बनाए लेई तब बाहर साबुना लगावा जाए, नाहीं तो चेहरा सब लसर-फसर होए जाई तो हम आपन चुटकी के टेक कहाँ लगाइब (दाढ़ी बनाता हुआ) हाँ सरकार, तनी आप मुँह खोली तेहमा गलुक्का के भीतर हवा जाए के बार के जड़ मुलायम कै दे। अब बन्द कै देई। फिर खोली। खूब फैलाई। अब बन्द करी। मूड़ी अस करी ? (कान पकड़ कर) अस नाहीं अस। अब एहर। अच्छा सरकार अब आप आपन नाक हाथ से पकड़ लेई। जोखिम जगह पर छूरा चलत है। हाँ कहूँ दाढ़ी के साथ नाको न साफ़ होए जाए। मुँह खोले रही। जेहमा ठुढी लटक के नकुवा से दूरे रहे। हजामत बनाइब खेल नाहीं है। बस एक अलङ्ग होय गवा अब सीसा में आपन मुँह तो देख लेई।

(एक तरफ़ की दाढ़ी मय उस तरफ़ की मूँछ के साफ़ कर देता है।)

तीसमार ख़ाँ—(शीशा देख कर) हाय ! हाय ! तूने इधर की मूँछें क्यों बना दीं ? हाय ग़ज़ब ! यह क्या किया ?

नाई—का मूछो बन गवा ? यही लिए कहा रहा सरकार कि साबुन न लगवाई। का कही एहर के दाढ़ी मूँछ दूनो एकै में लीप-पोत रहे। हमार छूरा न चीन्ह पाइस होई कि कौन मूँछ है अउर कौन दाढ़ी।

तीसमार ख़ाँ—तेरे उस्तुरे की ऐसी-तैसी करूँ सूअर के बच्चे। साले ने सूरत बिगाड़ दी।

नाई—हमार कौन दोस सरकार ? हम तो पहिलवें बताय दीन रहा कि अस दाढ़ी जहाँ बनाइ जात है वैसे बनरे अस मुँह निकर आवत है !

तीसमार ख़ाँ—(उसी धुन में) हाय ! हाय ! अब इधर की भी मूँछ बनवानी पड़ी।

नाई—काहे कौनो जबरदस्ती थोड़े है। एहर वाली मुछिया रहे देई।

तीसमार ख़ाँ—ऊपर से बातें बनाता है ? अच्छा ज़रा हजामत बन जाए तो बताता हूँ। ला इधर ला कूची।

नाई—(कूची देते हुए कूची तीसमार ख़ाँ की गोद में गिरा देता है।) च ! च ! च ! आपके कपड़ा खराब होय गवा, नाहीं नाहीं बच गवा। (तीसमार ख़ाँ की पोशाक का कपड़ा ग़ौर से देखता और टटोलता हुआ) भला यह बिदेसी तो न होय ?

तीसमार ख़ाँ—तब क्या हम सुदेसी पहनेंगे गदहे ? जानता नहीं हम दरोग़ा तीसमार ख़ाँ हैं।

नाई—तो फुरे यू सुदेसी न होय ?

तीसमार ख़ाँ—नहीं बे। अब ख़बरदार जो सुदेशी का नाम लेगा तो मारे जूतों के खोपड़ी फ़रोश कर दूँगा,

नाई—(चिल्ला कर रोता हुआ) हाय ! दादा करम फाट गवा। हम बिलाय गएन।

तीसमार ख़ाँ—अबे क्या हुआ क्या ?

नाई—(जल्दी-जल्दी अपना सामान समेटता हुआ) का बताई। धोखा होय गवा। हम जानित रहन कि आप सुदेसी पहने हन। सरकार हाथ जोड़ित है, गोड़े गिरित है, आप कोई से न बताइब कि हम आपके दाढ़ी बनायन हैं, नाही तो हमें रोटी पड़ जाई।

(अपना सामान लेकर जल्दी-जल्दी जाता है)

तीसरा—अबे-अबे आधी ही दाढ़ी बना कर चल दिया ? अबे ओ नाई के बच्चे, आधी वह भी बनाता जा कम्बख़्त।

नाई—(जाते-जाते कोने के पास से) नाहीं सरकार। अनजाने जौन खता होय गई, तौन होय गई। अब हाथ जोड़ित है, हमार कीन न होई।

(भाग जाता है)

तीसमार—हाय ! हाय। हरामज़ादा चला गया। अब क्या करूँ। कैसे उसके पीछे दौड़ूँ या किसी को अपने सामने बुलाऊँ ? हाय कम्बख़्त ने मुँह दिखाने लायक़ भी तो मुझे नहीं रक्खा। किस तरह सूरत छिपाऊँ ? एक तरफ की मूँछ भी तो नदारद है। कहीं कोई आ पड़ा तो क्या करूँगा। मकान के भीतर भी तो जाते नहीं बनता ! उफ़ ! उस नामाक़ूल ने बड़ा ही पाजीपन किया है। मिल जाता तो उसे कच्चा चबा जाता। (अपने बदन के कपड़ों से अपनी दाढ़ी और मूँछें छिपाने की कोशिश करता है।) नहीं ठीक बनता। हाय ! अब क्या करूँ ? वह लो, मुनुवा भी आ रहा (अपने मुँह को एक तरफ़ रूमाल से छिपा कर मुँह फेर कर खड़ा होता है।)

मुनुवा—ऊँ-ऊँ-ऊँ। अम्माँ ! हाय ! अम्माँ ! कहाँ गई ?

तीसमार—(मुँह फेरे हुए) क्यों बे मुनुवा, क्या हुआ ?

मुनुवा—अम्माँ की हलामिन बन के सब औरतों के साथ झण्डा उठाने गई थीं—

तीसमार—आयँ ? यह क्या ?

मुनुवा—सचमुच अब्बा। वह भी गई थीं। बज़ाज़ में बहुत बहुत औरतें थीं। अम्माँ भी थीं। बड़ सिपाई लोग उनके पीछे दौड़े। फिर नहीं मालूम अम्माँ किधर गायब होगई। हाय ! अम्माँ ! ऊँ-ऊँ-ऊँ !

तीसमार—(मुँह फेरे हुए) हाय ! ग़ज़ब ! यह क्या हुआ। अरे ! मुनुवा ! तू थाने पर जा और जल्दी से बटेर ख़ाँ को ढूँढ़ कर बुला ला। (मुनुवा जाता है)।

मुनुवा को तो मैंने किसी तरह अपने सामने से हटाया। जानता हूँ कि बटेर ख़ाँ वहाँ नहीं है। मगर अब करूँ क्या ? या मेरे अल्लाह ! मेरे सर पर यह कैसी आफ़त फट पड़ी ? उफ़ ! मैंने भी बटेर ख़ाँ को औरतों के साथ कैसा सलूक करने का हुक्म दे दिया है। क्या जानता था कि यह मुसीबत मेरे ही सर पड़ेगी। ख़ुद मेरी ही बीवी इसका शिकार होगी। सोचते ही अब रोंगटे खड़े होते हैं और कलेजा फटा पड़ता है। हाय ! बीवी और आबरू दोनों गई। मैं कहीं का भी न रहा। उस कम्बख़्त औरत का यकायक यह क्या सूझी ? मगर ख़ैर ! अब उसे इस तबाही से किस तरह बचाऊँ ? वह हमेशा पर्दे में रही। कोई उसे पहचानता भी तो नहीं है। और मैं यह शक्ल लेकर कैसे जाऊँ ? हात तेरे नाई की !...... अच्छा एक तरकीब सूझी। अपनी बीबी का बुर्क़ा पहन लूँ। बस-बस यही ठीक है। (मकान के भीतर जाता है। बुर्क़ा लेकर निकलता है और उसे पहन कर एक तरफ़ तेज़ी से जाता है।)

(क्रमशः)

* * *

जात-पाँत तोड़ डालो

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

अकेले ब्राह्मणत्व का नाश करके ही हिन्दुओं का उद्धार नहीं हो सकता। उन्हें जात-पाँत के कोढ़ को भी जड़-मूल से दूर करना होगा। ब्राह्मणत्व ही इस जात-पाँत के बखेड़े की जड़ है यह तो स्पष्ट है, परन्तु जात-पाँत ने स्वयं भी एक ऐसा कुसंस्कार हिन्दू जाति में उत्पन्न कर दिया है, कि जो उसे पनपने ही नहीं देता। कोई भी जाति चाहे भी जितनी नीच या निम्न श्रेणी की हो —पर जब कभी उसकी जातीय पञ्चायत होती है, तब उसकी अकड़-ऐंठ और खींच-तान की बहार देखने ही योग्य होती है। जाति के चौधरी और पञ्च अपने को धन्नासेठ का ससुर समझ कर इस तरह अकड़-अकड़ कर बातें करते हैं कि उनकी बणिकता पर वाह! कहने को जी चाहता है। जाति के लोग शराब पीकर मतवाले हो जाते हैं या मांसाहारी, व्यभिचारी और कुमार्गी हो रहे हैं, यह इन पञ्चों का विचारणीय विषय नहीं। इन पञ्चों का विचारणीय विषय तो यही है

अमुक ने अमुक विभिन्न नीच-ऊँच जाति की स्त्री या पुरुष से सम्बन्ध स्थापित कर लिया। अमुक ने अमुक का हुक़्क़ा पी लिया, इत्यादि!

ये चौधरी और पञ्च प्रायः मूर्ख और लालची एवं स्वार्थी होते हैं। और प्रायः दलबन्दी के कीचड़ में लतपत होते हैं। ऐसी दशा में इनके फ़ैसले में न्याय की गुञ्जाइश होना सम्भव ही नहीं। ये लोग बिरादरी के लोगों को अपनी पालतू भेड़ समझते हैं और उन्हें अपनी पञ्चायत के बाड़े में बन्द करके मनमाने ढङ्ग से उन्हें दाना-पानी दिया चाहते हैं। कभी-कभी तो इनके अत्याचारों से ग़रीब व्यक्ति का सर्वनाश ही हो जाता है। पर बहुधा यही देखने को मिलता है कि इन मूर्ख चौधरियों का इन बेचारे जाति के मनुष्यों पर वैसा ही असाध्य एकाधिपत्य रहता है, जैसा कि ब्राह्मणत्व का हिन्दुत्व पर है।

जाति की दीवारें बनीं कैसे? इसका इतिहास बड़ा मनोरञ्जक है और जहाँ तक मैं समझता हूँ—वह बहुत ही गुप्त भी है। आमतौर से लोग उसके अस्तित्व को नहीं जानते। इसलिए यहाँ संक्षेप में इसकी चर्चा चलाना अनुचित न होगा।

परन्तु जातियों के निर्माण और उनकी व्यवस्था का वर्णन करने से पूर्व मुझे वर्णों के सम्बन्ध में अपनी विवेचना पाठकों के सम्मुख रखनी है—क्योंकि जैसा कि पाठक देख चुके हैं कि मैं ब्राह्मणत्व के विनाश का पक्षपाती हूँ* उससे आप समझ गए होंगे कि मैं वर्ण-विभाग का भी उसी भाँति नाश कर देना चाहता हूँ, जिस भाँति ब्राह्मणत्व का और जातित्व का। और चूँकि वर्णों ने ही जातियों के भेद किए हैं, इसलिए वर्णों पर मैं प्रथम प्रकाश डाल कर तब जातियों के इतिहास की ओर झुकूँगा। प्राचीन वर्ण वेद के आधार पर हैं यह प्रायः कहा जाता है, परन्तु ऋग्वेद भर में चारों वर्णों की गन्ध भी नहीं पाई जाती। ऋग्वेद के अध्ययन से हम इस निश्चित परिणाम पर पहुँचते हैं—

१—'वर्ण' शब्द जिसका आधुनिक अर्थ जाति है। ऋग्वेद में केवल 'आर्यों और अनार्यों' में भेद प्रगट करने को आया है। आर्यों में भिन्न-भिन्न जातियाँ या वर्ण थे, ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं मिलता।

—मं० ३। सू० ३४। ऋ० ६ आदि

२—'विप्र' शब्द जिसका अर्थ आजकल ब्राह्मण किया जाता है 'मन्त्रद्रष्टा' के अर्थ में आया है। अथवा 'बुद्धिमान' के अर्थ का द्योतक है और वह देवताओं के विशेषण के तौर पर काम में लाया गया है।

३—'ब्राह्मण' शब्द जो आजकल एक जाति-विशेष या वर्ण-विशेष का द्योतक है, मन्त्र या पुरोहित के अर्थ में आया है।

—मं० ७। सू० १०३। ऋ० ८ आदि

४—'क्षत्री' शब्द कहीं नहीं आया है, 'क्षत्र' शब्द आया है और उसका अर्थ 'बलवान' है और वह देवताओं के विशेषण के तौर पर काम में लाया गया है।

—मं० ७। सू० ६४। ऋ० २ आदि

५—'वैश्य' शब्द कहीं भी नहीं है। 'विश' शब्द आया है और वह प्रजा के अर्थ में आया है, किसी वर्ण विशेष के अर्थ में नहीं।

६—'शूद्र' शब्द कहीं भी नहीं है। 'दस्यु' है, मगर वह अनार्यों के लिए है। आर्य और दस्यु इन शब्दों के आगे 'वर्ण' शब्द पाया जाता है।

७—केवल पुरुष सूक्त में प्रसिद्ध "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत" मन्त्र है। यह पुरुष सूक्त ऋग्वेद का बहुत पिछला भाग है।

८—ऋषियों की कोई प्रथक जाति या वर्ण न था। 'ऋषि' शब्द साधारणतया काम में लाया जाता था। और न ऋषिगण संसार से विरक्त होकर तप, ध्यान, ज्ञान आदि में समय व्यतीत करते थे, बल्कि वे संसार के साधारण मनुष्य जैसे ही होते थे। वे गृहस्थी रखते थे। खेती करते थे। युद्ध करते थे। अपने खेतों, पशुओं, शत्रुओं के नाश, शस्त्रों आदि के लिए प्रार्थनाएँ करते थे। प्रत्येक कुटुम्ब का एक मुखिया होता था और वही अपने घर में समस्त धर्म-कृत्य और संस्कार आदि करता था।

९—कुछ लोग बड़े-बड़े यज्ञ कराते थे। राजा आदि इन्हें बदले में धन देते थे, परन्तु इनकी भी कोई प्रथक जाति, या वर्ण न था! इनके रोटी-बेटी के सम्बन्ध सर्व-साधारण से थे। और उनके साथ युद्धादि में भी शरीक होते थे! उदाहरण सुनिए—

(क)—एक योद्धा ऋषि ऐसे पुत्र की कामना करता है कि वह युद्ध में शत्रुओं पर विजयी हो।

—मं० ५। सू० २३। ऋ० २

(ख)—एक ऋषि धन, खेत और वीर पुत्र की कामना करता है।

—मं० ६। सू० २७। ऋ० १

(ग)—एक ऋषि धन, घोड़ा, स्वर्ण, गौ, अन्न और सन्तान की कामना करता है। दूसरा अपने पशुओं पर ही सन्तुष्ट है।

—मं० ६। सू० २८। ऋ० ५

एक ही घर में कई वर्ण रहते थे, इसका उदाहरण देखिए—

"मैं सूक्त रचना करता हूँ, मेरा पिता वैद्य है, मेरी माता पत्थर का काम करती है। हम सब प्रथक-प्रथक कामों में लगे हुए हैं। जैसे गौएँ चारागाह में आहार के लिए घूमती हैं, वैसे ही हे सोम! हम भिन्न-भिन्न रीति से धन-सञ्चय करते हैं?"

—मं० ९। सू० ११२ ऋ०। ३

विश्वामित्र प्राचीन वैदिक ऋषि हैं। और वे उस प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र के द्रष्टा हैं, जिसे ब्राह्मण अत्यन्त पवित्र और गोपनीय गुरुमन्त्र समझते हैं। ये एक योद्धा ऋषि थे। पीछे पुरोहित का कार्य करने लगे थे। पर पौराणिक उपाख्यान में इनके प्रथम क्षत्रिय और पीछे ब्राह्मण होने की मनोहर कथा गढ़ दी गई है, हालाँकि वे न ब्राह्मण थे, न क्षत्रिय—प्रत्युत उस काल के ऋषि थे, जब कि ब्राह्मण और क्षत्रिय उत्पन्न ही नहीं हुए थे!

इन तमाम घटनाओं पर विचार करके यूरोप के तीन प्रकाण्ड वेद-विद्यार्थी इस विषय पर अपना नीचे लिखा मत प्रकट करते हैं:—

"तब यदि हम लोग इन सब प्रमाणों पर ध्यान देकर यह प्रश्न करें कि जाति, जैसा कि मनु के ग्रन्थों में अथवा आजकल है, वेद के प्राचीन धर्म का अङ्ग है या नहीं—तो हमको इसके उत्तर में निश्चय करके 'नहीं' कहना पड़ेगा।"*

"अब तक जातियाँ नहीं थीं। लोग अब तक एक में मिल कर रहते थे। और एक ही नाम से (अर्थात विसस्) पुकारे जाते थे।" †

डॉ० रॉथ, जो प्रख्यात वेद-व्याख्याता—यूरोप भर में प्रसिद्ध हैं, बताते हैं कि उस काल में राजाओं के घराने के पुजारी ब्राह्मण कहाने लगे थे, पर उनकी कोई जाति नहीं बन गई थी। आगे चल कर इस विद्वान ने बताया है कि महाभारत के काल में पहुँच कर यह पुजारियों का दल कितना प्रबल हो गया था। और उनकी एक पृथक जाति बन गई थी।‡

आर्य-जाति के मूल उत्पादक हम आठ ऋषियों का नाम यहाँ उल्लेख करना आवश्यक समझते हैं, जो कि हिन्दू-जाति मात्र के उत्पादक, आदि-पुरुष और गोत्र-उत्पादक हैं:—

१—वशिष्ठ
२—कुशिक (विश्वामित्र)
३—अङ्गिरा
४—वामदेव
५—भारद्वाज
६—भृगु
७—कण्व
८—अत्रि

इनका परिचय इस प्रकार है:—

विश्वामित्र—तीसरे मण्डल के ऋषि
वशिष्ठ—सातवें मण्डल के ऋषि
अङ्गिरा—नवम मण्डल के ऋषि

इनके विषय में विष्णु-पुराण (अं० ४। अ० २। श्लो० २) में लिखा है कि नभाग का पुत्र नाभाग। उसका अम्बरीष, उसका विरूप, उसका पृषदश्व हुआ और उसका रथीनर। ये लोग जो क्षत्रिय वंश के उत्पादक और अङ्गिरस गोत्र के थे व रथीनरों के सरदार थे।

वामदेव और भारद्वाज ऋग्वेद के चौथे और छठे मण्डल के ऋषि हैं। मत्स्य-पुराण (अध्याय १३२) में इन्हें अङ्गिरा ही का वंशज बताया गया है।

* 'भविष्य' के गताङ्क में लेखक महोदय का "ब्राह्मणत्व का नाश" शीर्षक एक विचारपूर्ण लेख प्रकाशित हो चुका है।
—सम्पादक 'भविष्य'

*Maxmullar's, *'Chips from a German workshop' Vol. ii (1867) p. 307.*

†Weber's *'Indian Literature'* (translation) *p. 38.*

‡As Quoted in *Muir's Sanskrit Texts Vol I (1872) p. 291.*

(२)

शैलबाला ... १)
विसर्जन ... ॥)
राजारानी ... ॥।)
नल-दमयन्ती ... ॥।)
सत्य-हरिश्चन्द्र ... ।≡)
अनुराग-वाटिका ... ।-)
बनारस ... १॥)
स्वयं स्वास्थ्य-रक्षक ... ॥।≡)
अजेय तारा ... १॥)
विश्राम बाग़ ... १॥)
पृथ्वीराज चौहान ... ॥।)
छत्रपति शिवाजी ... ॥।)
सहधर्मिणी ... ॥।)
रूपनगर की राजकुमारी... ३)
विचित्र डाकू ... १)
पाप की छाप ... २)
शैतान पार्टी ... ॥।)
रमणी-नवरत्न ... १)
विचित्र घटना ... ।)
सावित्री-सत्यवान ... ॥।)
अत्याचार का अंश ... ।)
सदाचार-दर्पण १॥),२), २॥)
भारत का इतिहास ... (सजिल्द) ३)
मज़ेदार कहानियाँ ... १)
सूक्ति-सरोवर ... २॥)
कौतूहल भण्डार ... १॥)
अन्त्याक्षरी ... ॥)
पहेली बुझौवल ... ॥)
सच्ची कहानियाँ ... ॥)
इक्कीस खेल ... ।≡)
नवीन पत्र-प्रकाश ... ॥≡)
वक्तृत्वकला ... १॥)
स्वदेश की बलिवेदिका ... ॥≡)
शाहज़ादा और फ़क़ीर ... ॥।)
बाल नाटकमाला ... ।≡)
गज्जू और गप्पू की मज़ेदार कहानियाँ ... ≡)
हल-बिल की कहानियाँ ... ≡)
विद्यार्थियों का स्वास्थ्य ... ।≡)
अदलू और बदलू की कहानियाँ ... ≡)
टीपू और सुलतान ... ।)
नटखटी रीछू ... ≡)
भिन्न-भिन्न देशों के अनोखे रीति-रिवाज ... ॥≡)
परीक्षा कैसे पास करना? ≡)
पत्रावली ... ।-)
पञ्चवटी ... ।≡)
रङ्ग में भङ्ग ... ।)
आत्मोपदेश ... ।)
स्वाधीनता के सिद्धान्त ... ॥)
सन्त-जीवनी ... ॥)
अमृत की बूँद ... २॥)
विचित्र परिवर्तन ... २)
पौराणिक गाथा ... ।-)
गुब्बारा ... ॥≡)
दस कथाएँ ... ।≡)॥
अनूठी कहानियाँ ... ।≡)
मनोहर कहानियाँ ... ।≡)
हँसी-खेल ... ॥।)

दल्लू और मल्लू ... ≡)
विज्ञान-वाटिका ... ।≡)
परियों का देश ... १)
खोपड़ेसिंह ... ।)
बालक ध्रुव ... ।)
बच्चू का ब्याह ... ।-)
नानी की कहानी ... ।≡)
मज़ेदार कहानियाँ ... ।-)
बाल कवितावली ... १)
रसभरी कहानियाँ ... ॥)
बहता हुआ फूल २॥), ३)
मि० व्यास की कथा २॥), ३)
प्रेम-प्रसून १≡), १॥≡)
विजया १॥), २)
भिखारी से भगवान ... १)
मूर्खमण्डली ॥≡), १≡)
जीवन का सद्व्यय १), १॥)
साहित्य-सुमन ॥), १)
विवाह-विज्ञापन ... १॥)
चित्रशाला (दो भाग) ३),४)
देव और बिहारी १॥), २)
मञ्जरी १), १॥)
कर्बला १॥), २)
रावबहादुर ... ॥)
प्राणायाम ॥≡), १≡)
पूर्व-भारत ॥≡), १≡)
बुद्ध-चरित्र ॥), १)
भारत-गीत ... ॥≡)
वरमाला ॥), १)
एशिया में प्रभात ॥), १)
कर्मयोग ।), ॥)
संक्षिप्त शरीर-विज्ञान ... ॥≡)
लबड़धौंधों ॥≡), १≡)
हठयोग ... १≡)
कृष्णकुमारी १), १॥)
प्राचीन पण्डित और कवि ॥≡), १≡)
जयद्रथवध ॥), १≡)
तात्कालिक चिकित्सा १), १॥)
किशोरावस्था ... ॥≡)
अद्भुत आलाप ... १)
मनोविज्ञान ॥), १)
अश्रुपात ... १)
ईश्वरीय न्याय ... १)
सुख तथा सफलता ... ।)
किसान की कामधेनु ... ।≡)
प्रायश्चित्त (प्रहसन) ... ≡)
संसार-रहस्य ... १॥)
नीति रत्नमाला ... ।)
मध्यम व्यायोग ... ≡)
सम्राट चन्द्रगुप्त ... ।)
वीर भारत ... ॥)
केशवचन्द्र सेन १≡),१॥≡)
बङ्किमचन्द्र चटर्जी १≡),१॥≡)
देशहितैषी श्रीकृष्ण ... ≡)
द्विजेन्द्रलाल राय ... ।)
भारत की विदुषी नारियाँ ॥)
वनिता-विलास ... १॥)
पत्राञ्जलि ... ॥)
लक्ष्मी ... ॥≡)
ऊषा ... ॥≡)

भगिनी-भूषण ... ≡)
सुघड़ चमेली ... ≡)
खिलवाड़ ... ।)
देवी द्रौपदी ... ॥)
महिलामोद ... ॥)
गुरु सन्देश ... ॥)
कमला-कुसुम ... १)
मिश्रबन्धु-विनोद (तीन भाग) ... ७)
शिवराज विजय ... २॥)
सत्य हरिश्चन्द्र (नाटक) ।≡)
माधव निदान ... १॥)
अनङ्ग-रङ्ग ... २)
कुटुम्ब-चिकित्सा ... १॥)
रामायण का अध्ययन ... ॥)
रचना नवनीति ... १)
प्रवेशिका व्याकरण बोध... १)
अयोध्याकाण्ड रामायण... ॥)
बाल महाभारत ... ।≡)
अलङ्कार चन्द्रिका ... ॥)
बालबोध रामायण ... ॥)
अपर प्रकृति पाठ ... ।≡)॥
मिडिल प्रकृति परिचय ...।-)॥
शिशुवर्ण परिचय ... -)
वर्णमाला और पहाड़े ... -)
शासन और सहयोग ... ≡)॥
शिशुकथा माला ... ≡)
कन्या-साहित्य ... ≡)॥
पत्र-चन्द्रिका ... ।)
बालक ... १)
स्वराज्य-संग्राम ... ॥≡)
आर्यसमाज और कॉङ्ग्रेस ।-)
हिन्दू-सङ्गठन ... १)
शिक्षा-प्रणाली ... १)
भारत-रमणी-रत्न ... ॥≡)
सन्ध्या पर व्याख्यान ... ।)
शिशु-सुधार ... ॥)
पुत्री-शिक्षक ... ॥)
स्त्री-शिक्षा ... ।≡)
मनोहर पुष्पाञ्जलि ... ॥)
गृहिणी-शिक्षा ... ॥)
गुलदस्ता ... ॥)
अक्षरबोध ... ॥)
उर्वशी ... १)
ब्रह्मचर्य-शिक्षा ... ॥≡)
तपस्वी भरत ... ।-)
दिलचस्प कहानियाँ ... ।≡)
सूखा हुआ फूल ... ≡)
हितोपदेश ... ॥)
पृथ्वीराज रासो ... ॥)
नवीन बीन ... २)
बिहार का साहित्य ... १॥)
जयमाल ... ।≡)
प्रेम ... ।≡)
मधु-सञ्चय ... ।≡)
अशान्त ... ॥)
लङ्कटसिंह ... ।)
विद्यापति ... ।)
अहिल्याबाई ... ।)
सौरभ ... १)
नवपल्लव ... १॥)

देहाती दुनिया ... १॥)
प्रेम-पथ ... २)
पुरुष-परीक्षा ... १)
सुधा-सरोवर ... १)
त्यागी भरत ... ।)
गुरु गोविन्दसिंह ... ।)
एकतारा ... १)
अशोक ... १॥)
निर्माल्य ... १)
बाल-विलास ... ।)
विपञ्ची ... ।)
दुलहिन ... ।)
शेरशाह ... ।)
शिवाजी ... ।)
माइकेल मधुसूदन ... ।)
भगवान बुद्ध ... १)
जङ्गल की मुलाक़ात ... -)
प्यार की अँगूठी ... ≡)
सूरजमुखी ... ।≡)
आसमानी लाश ... ≡)
चोर की तीर्थ-यात्रा ... ।)
आशिक़ की कमबख़्ती ... ≡)
सूर्यकुमार सम्भव ... ।)
भयानक विपत्ति ... ≡)
श्रीदेवी ... ≡)
भीषण सन्देह ... ॥)
माधवी ... ≡)
पिशाच पति ... ॥)
अद्भुत हत्याकारी ... ≡)
कविता-कुसुम ... ।)
बगुला भगत ... ॥)
बिलाई मौसी ... ॥)
सियार पाँड़े ... ॥)
पृथ्वीराज ... १॥)
शिवाजी ... १॥)
राजर्षि ध्रुव ... ॥≡)
सती पद्मिनी ... ॥≡)
शर्मिष्ठा ... ॥≡)
मनीषी चाणक्य ... १॥)
अर्जुन ... ॥≡)
चक्रवर्ती बप्पाराव ... ॥≡)
वेश्यागमन ... २)
नारी-विज्ञान ... २)
जनन-विज्ञान ... ३)
गृहिणी-भूषण ... ॥।≡)
भारतीय नीति-कथा ... ॥)
दम्पति शिक्षक ... ॥)
नाट्यकला दर्शन ... ॥।-)
शाही डाकू ... १॥)
शाही जादूगरनी ... १॥)
शाही लकड़हारा ... २)
शाही चोर ... ।)
गृहधर्म ... ॥)
बालराम कथा ... ॥)
माता और पुत्र ...१॥≡)
जातीय कविता ... १॥)
भागवन्ती २),२॥)
अनोखा जासूस ... २)
सुप्रभात ... १॥)
प्राचीन हिन्दू माताएँ ... १)
महाभारत ... १॥)

विधवाश्रम ... १॥)
चालाक बिल्ली ... ≡)
मुसाफ़िर की तड़प ... ।-)
यूरोपीय सभ्यता का दिवाला ।≡)
अमृत में विष ... ।≡)
मुसाफ़िर पुष्पाञ्जलि ... ।)
नया ... ।-)
मानवती ... ।-)
धर्म-अधर्म युद्ध ... ॥)
नवीन भारत ... ॥)
श्रीकृष्ण-सुदामा ... ।≡)
ग़रीब हिन्दुस्तान ... १॥)
भारतीय सभ्यता ... १)
हरफ़नमौला ... १)
हरद्वार का इतिहास ... ।≡)
बोल्शेविज़्म ... १≡)
मुसाफ़िर भजनावली ... ।≡)
असहयोग दर्शन ... १॥)
चेतावनी सङ्कीर्तन ... ।)
जन्मबधैया सङ्कीर्तन ... ।)
श्रीसतवानी सङ्कीर्तन ... ।≡)
महात्मा गाँधी ... ≡)
गँवार मसला ... ≡)॥
सेवाश्रम ... २॥)
महात्मा विदुर ... १)
महामाया ... ॥≡)
शकुन्तला ... १≡)
कृष्णकुमारी ... ।≡)
क्षात्रधर्म ... -)
बलिदान ... ≡)
भारतीय वेश ... ॥)
चित्रशाला ... ॥।)
दम्पति सुहृद ... १॥)
रानी जयमती ... ॥)
तपस्वी अरविन्द के पत्र ... ।)
सुभद्रा ... ॥)
हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास ।≡)
ग्रीस का इतिहास ... १≡)
श्रीबद्री-केदार यात्रा ... ।)
नवयुवकों स्वाधीन बनो... ॥)
असहयोग का इतिहास ... ॥।)
सफलता की कुञ्जी ... ।)
पाथेयिका ... १)
रोम का इतिहास ... ॥।)
अपना सुधार ... ॥)
महादेव गोविन्द रानाडे... ॥।)
दिल्ली अथवा इन्द्रप्रस्थ ... ॥)
गाँधी-दर्शन ... १)
बिखरा फूल ... १॥)
प्रेम ... ।≡)
इटली की स्वाधीनता ... ॥)
गाँधी जी कौन हैं? ... ।-)
फ़्रान्स की राज्य-क्रान्ति का इतिहास ... १≡)
आकाश की बातें ... ≡)
जगमगाते हीरे ... १)
मनुष्य-जीवनकी उपयोगिता ॥≡)
भारत के दस रत्न ... ।-)
वीरों की सच्ची कहानियाँ ॥।)
आहुतियाँ ... ।-)
वीर राजपूत ... १)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

गृत्समद ऋग्वेद के दूसरे मण्डल के ऋषि हैं। ये भी अङ्गिरस की शाखा के बताए जाते हैं। परन्तु पीछे से भृगुवंश में सम्मिलित हो गए थे। इस घटना की एक कथा भी महाभारत में बयान कर दी गई है। वायुपुराण और विष्णुपुराण में भी इस घटना का उल्लेख है। विष्णुपुराण (४ । ८) में भी स्पष्ट लिखा है कि गृत्समद का पुत्र सैनिक हुआ, जिससे चारों वर्णों की उत्पत्ति हुई है।

कण्व और अत्रि ऋग्वेद के आठवें मण्डल के ऋषि हैं। विष्णुपुराण (४ । १६) और भागवत (४।२०) में इन्हें पुरु की सन्तति बताया गया है—जो क्षत्रिय थे। पर फिर भी कण्व के वंशधर ब्राह्मण माने जाते हैं, विष्णुपुराण (४।१६) में लिखा है कि अजमीढ से कण्व और उससे मेधातिथि उत्पन्न हुआ, जिनके वंश में कन्वनप ब्राह्मण उत्पन्न हुए!

अत्रि का, जो ५ वे मण्डल के ऋषि हैं, विष्णुपुराण (४ । ६) में पुरुरवा का दादा कहा जाता है, जो प्रसिद्ध क्षत्रिय थे।

इन ऋषियों का यह परिचय जिन ग्रन्थों से दिया जा रहा है, वे निस्सन्देह उन वेदों से, जिनकी मण्डली के वे ऋषि या बनाने वाले थे, कई हज़ार वर्ष बाद बने हैं। परन्तु और कोई उपाय उनके परिचय का है ही नहीं। इस परिचय से यह हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि उक्त ऋषियों के काल में जाति-भेद तो था ही नहीं। वैदिक काल के इतने पाछे ये पौराणिक लोग उस काल के यथार्थ जीवन को नहीं समझे। न उन कथाओं का असली तथ्य ही उन्होंने समझा। पर वे अपनी पुरातन भक्ति के कारण उनका मटियामेट भी न कर सके—कथाएँ तो रखनी ही पड़ीं। पर वे यह सोच भी नहीं सकते थे कि पुरोहित और योद्धा एक ही कुल में हो सकते हैं। या योद्धा भी पुरोहित और पुरोहित भी योद्धा हो सकता है। परन्तु मत्स्यपुराण में ६१ ऐसे ऋषियों की सूचना दी गई है जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य स्वीकार किए गए हैं (अध्याय १३२)। इससे क्या यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि वह काल जाति-भेद से रहित था और वशिष्ठ, विश्वामित्र, अङ्गिरा और कण्व के वंश में से चाहे जो ब्राह्मण और क्षत्रिय हो सकते थे। यह स्वाभाविक भी है कि जिन ऋषियों ने पूर्व-काल में वेदों की ऋचाएँ भी पढ़ी हों, उनकी सन्तानों को दस्युओं से युद्ध करने पड़े हों। ऋग्वेद के ऋषिगण तो सूक्त रचना करते थे, शत्रुओं से युद्ध भी करते थे और पशु भी पालते थे—पर वे न ब्राह्मण थे, न क्षत्रिय और न वैश्य ही। इसका एक प्रबल प्रमाण तो आज यही है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों में एक ही गोत्र प्रायः पाए जाते हैं—और जिसका झूठा उत्तर यह दिया जाता है कि ब्राह्मणेतर-जनों को गुरु ने गोत्र दिया था।

वैदिक काल की समाप्ति पर उपनिषद्-काल या ब्राह्मण काल आता है और वेद को अध्यात्म रीति से अध्ययन करने वाले क्षत्रियों और उन्हें कर्म-काण्ड के ढङ्ग पर पढ़ने वाले ब्राह्मणों की स्पष्ट दो शाखाएँ हमको देखने को मिल जाती हैं।

यह वह काल है कि जब गङ्गा-जमुना की घाटियों तक आर्यों ने विस्तार कर लिया था और उन्हें उपजाऊ और रमणीक बना कर कई बड़े-बड़े राज्य बना लिए थे। दर्शन, विज्ञान, शिल्प की उन्नति कर ली थी। इस समय पुत्र लोग पिता का व्यवसाय करने लगे थे, और वर्णों का पृथक्करण हो गया था। धार्मिक रीतियों का आडम्बर भी बढ़ गया था। और क्षत्रियगण अनेकों यज्ञों को आडम्बर से कराने की रुचि रखते थे, इसलिए ब्राह्मण लोग धीरे-धीरे पृथक सङ्गठित होते गए और वे अपना जीवन उन्हीं धर्म-कृत्यों के सीखने में व्यतीत करते गए। और अन्ततः यह समझा जाने लगा कि वे ही परम्परा के लिए उन पवित्र धर्म-क्रियाओं के करने के पात्र हैं और क्षत्रिय केवल युद्ध-कला के अधिकारी हैं। विवाह-मर्यादा की फिर श्रेणियाँ होने लगीं। पर ब्राह्मण अन्य वर्णों से भी कन्या ले लेते थे। उधर क्षत्रिय भर मनुष्यों के नायक और रक्षक समझे जाने लगे। और उनको राजकन्याएँ भी अपने ही समव्यवसायियों में जाने लगीं। इस प्रकार ब्राह्मण और क्षत्रिय उल्लङ्घनीय नियमों द्वारा जुदे हो गए। यहाँ तक कि अति दरिद्र ब्राह्मण की कन्या भी अति धनी वैश्य को नहीं ब्याही जा सकती थी।

वायुपुराण में लिखा है कि सतयुग में जाति-भेद नहीं था, इसके बाद ब्रह्मा ने मनुष्यों के कार्य के अनुसार उनमें भेद किया। और पुराणों में भी ऐसे ही वर्णन पाए जाते हैं। रामायण के उत्तरकाण्ड में भी बताया गया है कि सतयुग में केवल तपस्वीजन होते थे। त्रेता में क्षत्रिय पैदा हुए और इसके बाद आधुनिक चार वर्ण बने।

महाभारत के शान्ति-पर्व (अ० १८८ के) में लिखा है—

"लाल अङ्ग वाले द्विज लोग जो सुख-भोग में आसक्त थे, क्रोधी और साहसी थे। यज्ञादि क्रियाओं को भूल गए थे, वे क्षत्रिय वर्ण हो गए। पीत रङ्ग वाले, जो गौ चराते और खेती करते थे, और अपनी धार्मिक क्रियाओं को नहीं करते थे वैश्य वर्ण में हो गए। काले द्विज लोग, जो अपवित्र, झूठे, दुष्ट और लालची थे और जो हर प्रकार के काम करके पेट भरते थे, शूद्र हो गए। इस प्रकार कर्मों से वर्ण-विभाग हुए।"

यह हम ऊपर बता आए हैं कि प्रथम चार वर्णों का विभक्तीकरण उस समय हुआ जब ब्राह्मण-ग्रन्थों का और उपनिषदों का निर्माण हो गया था और आर्य लोग गङ्गा की घाटी तक उतर आए थे! परन्तु यद्यपि उनके गुण कर्म पृथक हो गए थे, पर वह एक स्वतन्त्र जाति के स्वरूप में तब भी संयुक्त थे। अर्थात् उनके रोटी-बेटी के सम्बन्ध बराबर जारी थे। और मनुस्मृति के काल तक यह व्यवस्था रह गई थी कि उच्च वर्ण के पुरुष नीच वर्ण की कन्या ले लेते थे और रिश्तेदारियाँ हो जाती थीं।

यद्यपि क्षत्रियों और ब्राह्मणों के बढ़े-चढ़े वर्णन इस काल के ग्रन्थों में मिलते हैं और इनकी श्रेष्ठता की एक-एक से बढ़ कर डींग हाँकी गई है, परन्तु ब्राह्मण और क्षत्रिय बहुत ही कम, चुने हुए श्रेष्ठ पुरुष बन सके थे। शेष प्रजा में ज्यों-ज्यों राजव्यवस्था, समानता और सामाजिकता पैदा होती गई—एक तीसरे वर्ण में परिणत हो गई और यह तीसरा वर्ण वैश्य था, जो वास्तव में विश्व का विकृत रूप था—और जो वास्तव में साधारण प्रजा के अर्थ में ही आया था। क्योंकि मध्यम वर्ग के लोग, जो न पुरोहित हो सकते थे और न योद्धा, नाना प्रकार के वणिज-व्यापार तथा उद्योग में लग गए थे—उनका वर्ण वैश्य हुआ। इन्हीं तीनों की सङ्गठन शक्ति आर्य जाति के नाम से प्रख्यात रही। शूद्रों को केवल नाम मात्र को उन्होंने मिलाया—वास्तव में वे आर्यों के सभी स्वत्वों से हीन थे।

इस समय की जाति-व्यवस्था और पुरानी जाति-व्यवस्था में यही अन्तर पड़ गया है कि पुराने समय में जाति ने ब्राह्मणों को कुछ और तथा क्षत्रियों को कुछ विशेष अधिकार दिया था। पर ब्राह्मण, क्षत्री और साधारण लोग मिलकर अपने को एक ही जाति वाला समझते, एक ही धर्म की शिक्षा पाते थे। उनका साहित्य और कहावतें भी एक ही थीं। सब मिल कर एक साथ खाते-पीते, बेटी व्यवहार करते थे। परन्तु आजकल के जाति-सम्प्रदाय के भेदों ने उसे इस क़दर छिन्न-भिन्न कर दिया है कि शादी-व्यवहार की समानता तो दूर रही, हाथ का छुआ पानी और अन्न भी खाना अधर्म की बात समझी जाती है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐसे वाक्य मिलते हैं, जिनसे जान पड़ता है कि पहिले समय में जाति-भेद इतना कड़ा न था। ऐतरेय ब्राह्मण (६-२६) को देखिए :—

"जब कोई क्षत्रिय किसी यज्ञ में किसी ब्राह्मण का भाग खा लेता है तो उसकी सन्तान ब्राह्मण गुण वाली हो जाती है, जो दान लेने में तत्पर, सोम की प्यासी, और भोजन की भूखी होती है और अपनी इच्छा के अनुसार सब जगह घूमा करती है। और दूसरी व तीसरी पीढ़ी में वह ब्राह्मण हो जाती है। जब वह वैश्य का भाग खा लेता है तो उसकी सन्तान वैश्य गुण वाली होगी, जो दूसरे राजा को कर देगी और दूसरी व तीसरी पीढ़ी में वैश्य हो जाएगी। जब वह शूद्र का भाग खा लेता है तो उसकी सन्तान शूद्र गुण वाली हो जाती है, उन्हें उक्त तीनों वर्णों की सेवा करना होगी। और वे अपने मालिकों की इच्छानुसार निकाल दिए जावेंगे तथा पीटे जावेंगे। और दूसरी व तीसरी पीढ़ी में शूद्र हो जावेंगे।"

पाठक देखें कि परस्पर के अन्न खाने की परिपाटी को किस ढङ्ग से रोका गया है।

(शेष अगले अङ्क में देखिए)

■ * *

केसर की क्यारी

क्यों चुराते हो देख कर आँखें,
कर चुकीं मेरे दिल में घर आँखें।
न गई ताक-झाँक की आदत,
लिए फिरती हैं दर बन्दर आँखें।
"दाग़" आँखें निकालते हैं वह,
उनको दे दो निकाल कर आँखें

—महाकवि "दाग़"

* * *

कुछ दिल की सुनाओ कुछ जिगर की—
बैठो तो कहूँ इधर-उधर की।
क्यों ज़ुल्फ छुएँ सिड़ी नहीं हम—
ले कौन बला पराए सर की!
दामन को ज़रा बचाए रहना,
दुनिया नहीं, गर्द है सफ़र की।

—"शौक़" लखनवी

* * *

दिल कहाँ हर किसी से मिलता है,
अच्छे ही आदमी से मिलता है।
जिस तरह आप मुझसे मिलते हैं,
यूँ भी कोई किसी से मिलता है?
दिल मिलाता है ख़ाक में सब को,
कौन अपनी ख़ुशी में मिलता है?

—"नूह" नारवी

* * *

उस हसीं को जा पा गईं आँखें,
क्या तमाशा दिखा गईं आँखें,
शोख़ नज़रों पे दिल मिटा अपना,
आँखों-आँखों में खा गईं आँखें!
लाख पर्दों में वह छुपे जाकर,
लेकिन इस पर भी पा गईं आँखें।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

होती है देखने के लिए आँख में निगाह।
देखो तुम्हारी आँख है, मेरी निगाह में!
हम दूसरे को देख नहीं सकते उनके पास!
क्या आगया है फ़र्क़ हमारी निगाह में!!

—"दाग़" देहलवी

* * *

क्या ख़ुशी से हम आह करते हैं?
क्यों वह ऐसी निगाह करते हैं॥
अब अपने दिल की अक़ीदत पे रहम आता है।
यह देखता हूँ कि वह आपकी निगाह नहीं॥

—"अकबर" इलाहाबादी

आगाह कुछ तो आपका दिल भी हो चाह से।
मेरी नज़र को देखिए, मेरी निगाह से॥
मेरा भी हाल है सिफ़ते अक्से आइना।
मैं उनको देखता हूँ, उन्हीं की निगाह से॥
ग़म सैकड़ों मिलें तो मिलें, इसका ग़म नहीं!
लड़ती रहे निगाह, किसी की निगाह से॥
रुसवा हुआ, ज़लील हुआ, मैं बुरा हुआ!
अच्छों को देख-देख कर अच्छी निगाह से!!

—"नूह" नारवी

* * *

अपने पराए होगए, उलफ़त की राह में।
दुनिया बदल गई है, हमारी निगाह में॥
बैठा हूँ चुप लगाय, मुहब्बत की राह में।
तस्वीर उनकी फिरती है, मेरी निगाह में॥
आईना देखते हो जो तन-तन के बार-बार
देखो समा न जाओ ख़ुद अपनी निगाह में!!
तुम क्या समा गए हो, कि हमने समझ लिया।
दुनिया समा गई है, हमारी निगाह में॥

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

इस अदा से वह जफ़ा करते हैं,
कोई जाने कि वफ़ा करते हैं!
यह बताता नहीं कोई मुझको,
दिल जो आता है तो क्या करते हैं?
उसने एहसान जता कर यह कहा—
आप किस मुँह से गिला करते हैं?

—महाकवि "दाग़"

* * *

आपसे बेहद मुहब्बत है मुझे,
आप क्यों चुप हैं यह हैरत है मुझे।
दे दिया मैंने बिला शर्त उनको दिल
मिल रहेगी कुछ न कुछ क़ीमत मुझे।
बिरहमन से मैंने कर ली दोस्ती,
बुत भी अब कहने लगे हज़रत मुझे

—महाकवि "अकबर"

* * *

मैं किसी को देखते ही मर गया,
कुछ न करने पर भी सब कुछ कर गया!
हसरत आती है दिले-नाकाम पर,
आरज़ू की आरज़ू में मर गया!
कौन सी है यह बड़ी हैरत की बात,
मार डाला आपने, मैं मर गया!

—"नूह" नारवी

सामने तेरे हम जो रोते हैं,
बीज उलफ़त का दिल में बोते हैं!
रोऊँ भी मैं तो रो नहीं सकता।
मेरे आँसू मुझे डुबोते हैं!
बाद मरने के मेरी तुरबत पर
आप क्या याद करके रोते हैं?

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

न आया है, न आए उनके वादे का यक़ीं बरसों,
युहीं है आजकल, परसों; मगर मिलते नहीं बरसों!
यहीं रहना, यहीं सहना, यहीं मरना, यहीं भरना,
यही दर है, यही सर है, गुज़ारेंगे यहीं बरसों!!

—महाकवि "दाग़"

* * *

दोस्त मरने पे मेरे दादे-वफ़ा देते हैं,
हाय किस वक़्त मुहब्बत का सिला देते हैं!
दुश्मनों से भी मुझे तर्क वफ़ा मुशकिल है,
दोस्त बन कर मुझे कमबख़्त दग़ा देते हैं।

—"चकबस्त" लखनवी

* * *

ए जाँ शबे फ़ुरक़त में मैं सो ही नहीं सकता,
तुझ बिन मुझे नींद आए, यह हो ही नहीं सकता!
ख़ाके-क़दम उसने मेरी आँखों से लगा दी,
अब और मुसीबत है कि रो ही नहीं सकता!!

—महाकवि "अकबर"

* * *

यह हो कि मुझसे न मिलने की कुछ सज़ा मिल जाय,
कहीं अँधेरे उजाले वह, ए ख़ुदा मिल जाय!
दिल उसकी राह में खोया है, तो मैं कहता हूँ,
ख़ुदा करे वह उसी को, कहीं पड़ा मिल जाय!

—"शौक़" लखनवी

* * *

यह समझते हैं, यह सुनते हैं, यह हम देखते हैं;
देखता है जो उन्हें, वह उसे कम देखते हैं!
ग़ौर से देखते हैं आप हमारे दिल को,
आपके देखने को ग़ौर से हम देखते हैं

—"नूह" नारवी

* * *

उगल के ख़ून दिले दाग़ दार देख लिया,
ख़िज़ाँ में हमने यह रङ्गे बहार देख लिया!
झलक दिखा के वह परदे में बैठ जाते थे,
हज़ार बार छुपे, एक बार देख लिया।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

"हिन्दुस्तान-साम्यवादी प्रजातन्त्र-सेना" के कार्य

सॉण्डर्स-हत्याकाण्ड और एसेम्बली बमकाण्ड का रहस्योद्घाटन

लाहौर षड्यन्त्र केस का फ़ैसला

जब यह मुक़दमा आरम्भ हुआ था तो इसमें कुल मिला कर २४ अभियुक्त थे। इनमें से भगवानदास को भुसावल षड्यन्त्र केस में सज़ा हो चुकी है। पाँच अभियुक्त चन्द्रशेखर आज़ाद उर्फ़ पण्डित जी, कैलाशपति उर्फ़ कालीचरण, भगवतीचरण, यशपाल और सतगुरुदयाल पकड़े नहीं जा सके। शेष अट्ठारह में से तीन आग्याराम, सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय और बटुकेश्वरदत्त स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने मुक़दमा शुरू होने पर छोड़ दिए गए। तीन अभियुक्त फ़ैसला होने पर छोड़े गए हैं और बाक़ी बारह को दण्ड दिया गया है, जिसका विवरण 'भविष्य' के दूसरे अङ्क में प्रकाशित हो चुका है।

एप्रूवर

इस मुक़दमे में सात व्यक्ति एप्रूवर थे। इनमें से रामसरनदास और ब्रह्मदत्त ने बाद में अपने बयान वापस ले लिए। शेष पाँच एप्रूवर फनीन्द्रनाथ घोष, ललितकुमार मुकर्जी, मनमोहन बनर्जी, जयगोपाल और हंसराज बोहरा थे। फनीन्द्रनाथ घोष और मनमोहन बनर्जी ने विशेषकर बिहार और कलकत्ता की, ललितकुमार मुकर्जी ने इलाहाबाद और आगरा की, और जयगोपाल तथा हंसराज ने पञ्जाब की षड्यन्त्र सम्बन्धी कार्रवाइयों का वर्णन किया।

इनके सिवाय प्रेमदत्त, महावीरसिंह और गयाप्रसाद ने अदालत के सामने अपना दोष स्वीकार करके बयान दिया। गयाप्रसाद ने अपने को निर्दोष सिद्ध करने की चेष्टा की।

क्रान्तिकारी दल की वृद्धि

एप्रूवर फनीन्द्रनाथ के, जो बेतिया का निवासी है, बयान से मालूम होता है कि वह क्रान्तिकारी आन्दोलन में सन् १९१६ में सम्मिलित हुआ था। वह अनुशीलन समिति नाम की बङ्गाल की गुप्त सभा का मेम्बर था। १९१८ में उसे एक साल के लिए नज़रबन्द किया गया। १९१९ में उसकी पहिचान मनमोहन बनर्जी से हुई और उसके साथ वह तीन वर्ष तक बिहार में क्रान्तिकारी दल की स्थापना करने की चेष्टा करने लगा। १९२२ में उसने हिन्दुस्तानी सेवा-दल की स्थापना की, जिसका उद्देश्य राजनीतिक काम करना था।

काकोरी केस

१९२६ के आरम्भ में वह बनारस गया और संयुक्त प्रान्तीय क्रान्तिकारी दल के कुछ मेम्बरों से मिला। उस समय इस दल के कितने ही सदस्य काकोरी डकैती केस में पकड़े गए थे और उसकी हालत कमज़ोर थी। फनीन्द्रनाथ इलाहाबाद में शचीन्द्रनाथ सान्याल के भाई जतीन्द्रनाथ सान्याल से मिला और सन् १९२७ में उसे संयुक्त प्रान्तीय दल से कुछ रिवॉल्वर मिलीं। इसी वर्ष उसने कमलनाथ तिवारी को अपने दल का सदस्य बनाया।

बनारस में हत्या की चेष्टा

सन् १९२७ के अन्तिम भाग में जतीन्द्रनाथ सान्याल और विजयकुमार सिन्हा ने शिव वर्मा को बेतिया इसलिए भेजा कि वह फनीन्द्रनाथ से एक रिवॉल्वर माँग लावे। फनीन्द्रनाथ ख़ुद उसको लेकर बनारस आया और फिर यही ११ फ़रवरी १९२८ को सी० आई० डी० विभाग के राय बहादुर जे० एन० बनर्जी पर गोली चलाने के काम में लाई गई।

पञ्जाब

इधर पञ्जाब में सुखदेव ने सन् १९२६ में क्रान्तिकारी दल का सङ्गठन करना आरम्भ किया। उसका हेड-क्वार्टर लाहौर में था। उस समय एप्रूवर जयगोपाल नेशनल स्कूल का विद्यार्थी था। उसने अपने यहाँ के एक मास्टर यशपाल के मार्फ़त सुखदेव से जान-पहिचान कर ली और नवम्बर १९२६ में वह उसकी पार्टी का मेम्बर बन गया। उसने स्कूल की लायब्रेरी से स्फोटक पदार्थ बनाने की एक अङ्गरेज़ी किताब, दो थर्मामीटर, दो बैटरी और कुछ बम बनाने का मसाला चुरा कर सुखदेव को दिया। सुखदेव का दूसरा साथी हंसराज बोहरा था, जो उसका रिश्तेदार भी था।

पीला पर्चा

मेम्बर बनाते समय सुखदेव ने हंसराज को एक पीला पर्चा दिखलाया जिसमें उसकी पार्टी का कार्यक्रम और उद्देश्य बतलाए गए थे। इस संस्था का नाम उस समय 'हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र-समिति' था। इन सदस्य बनने वालों को सुखदेव क्रान्तिकारी पुस्तकें पढ़ने को दिया करता था। १९२७ में सुखदेव का परिचय भगतसिंह से भी हो गया।

क़ैदी को छुड़ाने की चेष्टा

३ री मार्च, १९२८ को फ़तेहगढ़ जेल में काकोरी केस के क़ैदियों से भेंट करने के लिए विजयकुमार सिन्हा और शिव वर्मा ने अर्ज़ी दी। इन क़ैदियों में से एक जोगेशचन्द्र चटर्जी था। जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट को शक हुआ कि ये लोग जोगेशचन्द्र के छुड़ाने के लिए कोई षड्यन्त्र रचना चाहते हैं और इसलिए उसने भेंट की आज्ञा न दी। इन दोनों का पीछा पुलिस ने किया और मालूम हुआ कि शिव वर्मा जलालाबाद में गयाप्रसाद नामक एक डॉक्टर के यहाँ गया है। इसके साथ शिव वर्मा की पहिचान थोड़े दिन पहले कानपुर में हुई थी।

छिपने का मुक़ाम

जुलाई १९२८ में कानपुर में एक मीटिङ्ग हुई, जिसमें गयाप्रसाद, शिव वर्मा और सुखदेव मौजूद थे। इसके फल स्वरूप सुखदेव, गयाप्रसाद को लाहौर ले गया। सुखदेव के कहने से गयाप्रसाद ने फ़ीरोज़पुर में डॉक्टरी की दुकान डॉ० बी० एस० निगम के नाम से खोली। जयगोपाल की गवाही से इस दुकान के खोलने के तीन उद्देश्य थे। पहला यह कि पञ्जाब से अन्य प्रान्तों को जाने वाले या अन्य प्रान्तों से पञ्जाब आने वाले षड्यन्त्रकारी वहाँ ठहर कर अपनी पोशाक आदि बदल सकें। दूसरा यह कि दुकान की मार्फ़त बम बनाने के मसाले ख़रीदे जायँ और तीसरा यह कि अगर कारबार जम जाय तो उससे पार्टी को आर्थिक सहायता भी प्राप्त हो सके।

गुप्त मीटिङ्ग

अगस्त १९२८ में विजयकुमार सिन्हा बेतिया जाकर फनीन्द्रकुमार से मिला। उसने कहा कि उसका इरादा भिन्न-भिन्न प्रान्तों की पार्टियों को मिला कर एक बड़ी पार्टी का सङ्गठन करने का है। उसने यह भी कहा कि इस कार्य के लिए ८ और ९ सितम्बर को दिल्ली में एक गुप्त मीटिङ्ग होने वाली है, इस मीटिङ्ग में पञ्जाब के कार्यकर्ता भगतसिंह और सुखदेव आदि, संयुक्त प्रान्त के शिव वर्मा और चन्द्रशेखर आज़ाद आदि सम्मिलित होंगे। उसने यह भी कहा कि वह अब जतीन्द्रनाथ की अध्यक्षता में काम नहीं करना चाहता, क्योंकि वह बहुत सुस्त आदमी है।

८ सितम्बर को फनीन्द्रनाथ दिल्ली पहुँचा, वहाँ विजयकुमार ने उससे कहा कि मीटिङ्ग कल होगी। ९ तारीख़ को सब सदस्य फ़ीरोज़शाह तुग़लक के क़िले में इकट्ठे हुए। उसमें षड्यन्त्रकारी आन्दोलन का सञ्चालन करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की गई, जिसमें सात मेम्बर थे—भगतसिंह, सुखदेव, विजयकुमार, शिव वर्मा, फनीन्द्रनाथ, कुन्दनलाल और चन्द्रशेखर आज़ाद।

इस मीटिङ्ग में यह भी निश्चित किया गया कि बङ्गाल की क्रान्तिकारी पार्टी से सम्बन्ध न रक्खा जाय, क्योंकि वह मार-काट के विरुद्ध है। सुखदेव पञ्जाब का इञ्चार्ज बनाया गया, शिव वर्मा संयुक्त प्रान्त का और फनीन्द्रनाथ बिहार का। चन्द्रशेखर सैनिक-विभाग का मुखिया बनाया गया और कुन्दनलाल को, जो झाँसी में रहता था, सेण्ट्रल ऑफ़िस का प्रबन्ध सौंपा गया। भगतसिंह और विजयकुमार विभिन्न प्रान्तों में सम्बन्ध स्थापित रखने के लिए नियुक्त किए गए। निश्चय हुआ कि डकैती, हत्या आदि के कार्य बिना सेण्ट्रल कमेटी की मञ्ज़ूरी के नहीं होंगे, पार्टी के हथियार और फ़ण्ड भी सेण्ट्रल कमेटी के अधिकार में रहेंगे।

क्रान्तिकारी योजनाएँ

इस मीटिङ्ग में काकोरी केस के क़ैदी जोगेशचन्द्र चटर्जी को, जो आगरा जेल में था, छुड़ाने का निश्चय किया गया और उसके लिए प्रबन्ध करने का भार विजयकुमार को सौंपा गया। शचीन्द्रनाथ सान्याल को छुड़ाने का प्रस्ताव भी किया गया, पर इस सम्बन्ध में कोई निश्चित-चेष्टा नहीं की गई। साइमन कमीशन के सदस्यों के विरुद्ध कार्रवाई करने का विचार भी किया गया और इसके लिए बङ्गाल से बम बनाने वालों को बुलाना सोचा गया। एक प्रस्ताव यह किया गया कि काकोरी केस के एप्रूवरों को मार डाला जाय। डाका डालने के लिए किसी जगह को ढूँढ़ने का प्रस्ताव किया गया और अन्त में बिहार में यह कार्य करना पक्का ठहरा।

बक्स में पिस्तौलें

१७ नवम्बर, १९२८ को लाला लाजपतराय का देहान्त हुआ। इसके कुछ समय पश्चात् पण्डित जी, (चन्द्रशेखर आज़ाद) एक बक्स लेकर लाहौर आया, जिसमें एक मौज़र पिस्तौल और चार रिवॉल्वरें थीं। उसी दिन सेण्ट्रल कमेटी के और भी कई मेम्बर आए।

९ दिसम्बर को पञ्जाब नेशनल बैङ्क पर डाका डालने का उद्योग किया गया। निश्चय हुआ कि भगतसिंह और महावीरसिंह टैक्सी गाड़ी लेकर शाम के तीन बजे बैङ्क पर पहुँचेंगे। कुछ मेम्बर चौकीदार और पहरे वालों को पकड़ लेंगे और जयगोपाल तथा किशोरीलाल ख़ज़ाञ्ची से रुपया छीन लेंगे। नियत समय पर लोग तैयार थे, पर भगतसिंह और महावीरसिंह जिस टैक्सी में बैठे वह रास्ते में रुक गई और महावीरसिंह उसे न चला सका। फल यह हुआ कि सारी योजना विफल हो गई।

सॉण्डर्स की हत्या

९ या १० दिसम्बर को "मोज़ङ्ग हाउस" (जो क्रान्तिकारियों का अड्डा कहा जाता है) में एक मीटिङ्ग हुई, जिसमें लाहौर के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० स्कॉट को मारने की सलाह की गई, क्योंकि क्रान्तिकारी दल की सम्मति में उसीने लाला लाजपतराय को चोट पहुँचाई थी। जयगोपाल को मि० स्कॉट की गति-विधि का निरीक्षण करने को नियुक्त किया गया और इसके लिए वह कई दिन तक लगातार पुलिस के ऑफ़िस के अहाते के आस-पास चक्कर लगाता रहा। चन्द्रशेखर ने १७ दिसम्बर का दिन हत्या के लिए मुक़र्रर किया और उस दिन के दो बजे इस सम्बन्ध में फिर एक मीटिङ्ग हुई, जिसमें चन्द्रशेखर के अलावा भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु और जयगोपाल उपस्थित थे। इसके दो दिन पहले १५ दिसम्बर को भगतसिंह ने जयगोपाल और हंसराज को कुछ गुलाबी पोस्टर दिखलाए थे, जिनमें लिखा था—'स्कॉट मर गया।'

१७ तारीख़ को सुबह के दस बजे जयगोपाल पुलिस के ऑफ़िस की तरफ़ गया और उसने एक अङ्गरेज़ पुलिस अफ़सर को मोटर साइकिल पर भीतर जाते देखा था। उसने उसी को स्कॉट समझा और इसकी ख़बर चन्द्रशेखर को दी। दो बजे दोपहर को मीटिङ्ग में हथियार बाँट दिए गए। चन्द्रशेखर ने मौज़र पिस्तौल, भगतसिंह ने ऑटोमेटिक पिस्तौल और राजगुरु ने रिवॉलवर लिया। यही तीनों व्यक्ति हत्या करने के लिए नियुक्त किए गए थे।

क़रीब ४ बजे शाम को मि० सॉण्डर्स मोटर साइकिल पर बाहर निकला। उसके साथ ही हेड कॉन्स्टेबिल चनर्नसिंह था। जयगोपाल के इशारा करने पर राजगुरु सॉण्डर्स की तरफ़ बढ़ा और जैसे ही वह नज़दीक आया उसने गोली चलाई। सॉण्डर्स घायल होकर मोटर साइकिल के साथ ही नीचे गिर गया और उसकी एक टाँग दब गई। इतने में भगतसिंह भी दौड़ कर वहाँ पहुँचा और उसने कई गोलियाँ चलाईं। इसके बाद ये दोनों, जयगोपाल के साथ भागे और चनर्नसिंह और ट्रैफ़िक इन्सपेक्टर मि० फ़र्न उनको पकड़ने को दौड़े। भगतसिंह ने पीछे मुड़ कर गोली चलाई और मि० फ़र्न० बचने के लिए नीचे गिर पड़े। चनर्नसिंह डी० ए० वी० कॉलेज के अहाते तक बराबर पीछा करता गया और वहाँ सम्भवतः चन्द्रशेखर ने उसे मौज़र पिस्तौल से मार दिया।

बम बनाए गए

जनवरी १९२७ में भगतसिंह और फनीन्द्रनाथ बम बनाना सीखने के लिए कलकत्ता गए। जतीन्द्रनाथ दास उनको कमलनाथ तिवारी के मकान में इस विषय की शिक्षा देता था। इन लोगों ने कितनी ही दुकानों से बम बनाने का बहुत सा मसाला भी ख़रीदा। १४ फ़रवरी को ये लोग आगरा आकर हींग की मण्डी में एक मकान में बम बनाने लगे। ये बम गणेशचन्द्र चटर्जी को छुड़ाने के उद्देश्य से बनाए गए थे, जो उन्हीं दिनों आगरे की जेल से लखनऊ भेजा जाने वाला था। १२ तारीख़ को जतीन्द्रनाथ दास ने एक बम बनाया। १६ तारीख़ की शाम को जोगेशचन्द्र चटर्जी आगरा से लखनऊ भेज दिया गया। भगतसिंह, विजयकुमार, चन्द्रशेखर आदि उसको हवालात से छुड़ाने के लिए कानपुर पहुँचे। पर वहाँ उनको पता लगा कि वे हवालात में से उसे नहीं छुड़ा सकते और इसलिए वे लौट आए।

एसेम्बली बम-काण्ड

क्रान्तिकारी दल ने साइमन कमीशन पर बम फेंकने का निश्चय किया था। पर बाद में ख़र्च की अधिकता के कारण यह स्कीम छोड़ दी गई और तय हुआ कि भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त एसेम्बिली में बम फेंकें। चन्द्रशेखर, जयगोपाल और राजगुरु उनको वहाँ से बचा कर लाने को नियुक्त किए गए थे। पर वे इसमें सफल न हो सके और भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ८ अप्रैल को बम फेंकने के बाद पकड़ लिए गए।

क्रान्तिकारियों की गिरफ़्तारी

१५ अप्रैल को जब सुखदेव, किशोरीलाल और जयगोपाल लाहौर में अपने स्थान "काश्मीर बिल्डिङ्ग" में बम बना रहे थे तो पुलिस ने धावा किया और इन तीनों को पकड़ लिया। जयगोपाल ने अपना क़सूर मञ्जूर कर लिया और एप्रूवर बन कर षड्यन्त्र का सारा भेद खोल दिया। २ मई को हंसराज वोहरा पकड़ा गया और वह भी एप्रूवर बन गया। १३ मई को सहारनपुर के अड्डे का पता लगा और वहाँ शिव वर्मा तथा जयदेव छः बम, तीन बम के खोल, तीन भरी हुई रिवॉलवर और बहुत से बम बनाने के मसाले के साथ पकड़े गए। ७ जून को बिहार प्रान्त के मलोनियाँ नामक स्थान में क्रान्तिकारी दल के पूर्व निश्चय के अनुसार मनमोहन बनर्जी और उसके साथियों ने डाका डाला, जिसमें एक आदमी जान से मारा गया।

* * *

लाहौर कॉन्सपिरेसी केस का फ़ैसला, जिसका सारांश ऊपर दिया गया है, फ़ुल्सकेप साइज़ के ४०० पृष्ठों में टाइप से छापा गया है। इसकी कॉपियाँ अख़बार वालों को २२५) रु० में मिल सकती हैं। यह पुस्तकाकार छापा जा रहा है और सम्भवतः तैयार हो गया होगा।

* * *

"मैं अपना बचाव करना नहीं चाहता"

सरदार भगतसिंह का पत्र अपने पिता के नाम

लाहौर कॉन्सपिरेसी-केस के सुप्रसिद्ध अभियुक्त श्री० भगतसिंह ने अपने पिता की अर्ज़ी के सम्बन्ध में, जो स्पेशल-ट्रिब्यूनल को दी गई थी (और जो 'भविष्य' के गताङ्क में पूरी प्रकाशित की गई है), एक पत्र अख़बारों में प्रकाशित कराया है, जो नीचे दिया जाता है। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि यह पत्र स्पेशल ट्रिब्यूनल के फ़ैसले और भगतसिंह को फाँसी की सज़ा मिलने के पहले ही लिखा गया था—

"मैं यह जान कर आश्चर्य-चकित हो गया कि आपने स्पेशल ट्रिब्यूनल के जजों के पास मेरे बचाव के सम्बन्ध में एक अर्ज़ी भेजी है। यह समाचार मेरे लिए एक ऐसी असह्य-चोट के समान है, जिसे मैं शान्तिपूर्वक सहन नहीं कर सकता। इसने मेरे मस्तिष्क की समस्त शान्ति को भङ्ग कर दिया है। मैं यह समझ सकने में असमर्थ हूँ कि आपने इस अवसर पर और इस परिस्थिति में इस प्रकार की अर्ज़ी पेश करना किस तरह उचित समझा। एक पिता की हैसियत से मेरे प्रति आपके जो भाव और ममता होगी, उसका ध्यान रखते हुए भी मैं नहीं समझता कि आपको मुझसे सलाह लिए बिना ही इस प्रकार का कोई कार्य करने का क्या अधिकार था? आप जानते हैं कि राजनीतिक मामलों में मेरे विचार सदैव आप से भिन्न रहे हैं, और मैंने इस बात का विचार छोड़ कर, कि आप मेरे कामों को पसन्द करते हैं या नापसन्द, सदैव स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य किया है।

"सम्भवतः आपको स्मरण होगा कि इस अभियोग के आरम्भ से ही आप मुझे यह समझाने की चेष्टा करते रहे थे कि मुझे यह मुक़दमा गम्भीरतापूर्वक लड़ना चाहिए और अपना अच्छी तरह से बचाव करना चाहिए। साथ ही आपको यह भी याद होगा कि मैंने आपकी बात का सदैव विरोध किया था। मुझे अपने बचाव करने की इच्छा नहीं थी और न मैंने कभी इस विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार किया, फिर चाहे मेरा यह काम भ्रान्तिपूर्ण आदर्शवाद समझा जाय और चाहे मेरे पास इसको उचित सिद्ध करने के लिए युक्तियाँ हों; यह प्रश्न सर्वथा पृथक् है और इसे यहाँ उठाना अनावश्यक है।

कर्तव्य-पालन

"आप जानते हैं कि इस अभियोग में हम एक निश्चित नीति का पालन कर रहे हैं। मेरा हर एक काम उस नीति, मेरे सिद्धान्त और प्रोग्राम के अनुकूल होना चाहिए। वर्तमान समय में तो समस्त परिस्थिति ही भिन्न थी, पर यदि परिस्थिति अन्य प्रकार की भी होती, तो भी मैं अपना बचाव कदापि न करता। इस समस्त अभियोग-काल में मेरे सामने सिर्फ़ एक विचार रहा है, और वह यह कि अपने ऊपर गम्भीर आरोपों के होते हुए भी इस मुक़दमे की तरफ़ मुझे पूर्णतया उपेक्षा का भाव दिखलाना चाहिए। मेरी सदा से यही सम्मति रही है कि तमाम राजनीतिक कार्यकर्ताओं को अदालतों की क़ानूनी कार्रवाई की तरफ़ सदैव उपेक्षा का भाव रखना चाहिए, कभी उनके विषय में चिन्तित न होना चाहिए, और उनको जो कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाय उसको वीरतापूर्वक सहना चाहिए। वे अपना बचाव कर भी सकते हैं, पर केवल राजनीतिक कारणों से ऐसा करना उचित है, व्यक्तिगत कारणों से नहीं। इस अभियोग में हमारी नीति सदैव इस सिद्धान्त के अनुकूल रही है। हम इस कार्य में सफल हुए या नहीं, इसका निर्णय मैं नहीं कर सकता। हम सदैव निष्काम भाव से अपने कर्तव्य का पालन करते रहे हैं।

"वायसराय ने 'लाहौर कॉन्सपिरेसी केस ऑर्डिनेन्स' के साथ जो बयान प्रकट किया था, उसमें कहा गया है कि हम क़ानून और न्याय दोनों को बेइज़्ज़त करने की चेष्टा कर रहे हैं। वर्तमान परिस्थिति ने हमको एक ऐसा अवसर प्रदान किया कि जिससे हम जनता को दिखला सकते हैं कि क़ानून की बेइज़्ज़ती हम कर रहे हैं या दूसरे लोग ऐसा कर रहे हैं? इस विषय में लोग हम से असहमत हो सकते हैं और सम्भव है कि आप भी उन्हीं में से एक हों। पर इसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि आप बिना मुझसे परामर्श किए, इतना ही नहीं, वरन् मुझे किसी प्रकार की इत्तला भी न देकर, ऐसा कोई काम कर सकें। मेरा जीवन कम से कम मेरे लिए इतना अधिक मूल्यवान नहीं है, जैसा कि सम्भवतः आप उसे समझते हों। वह इस लायक़ तो कभी नहीं है कि मैं उसे अपने सिद्धान्तों को बेच कर ख़रीदूँ। मेरे और भी कितने ही साथी ऐसे हैं, जिनका अभियोग मेरे

(शेष मैटर ४० वें पृष्ठ के दूसरे कॉलम में देखिए)

"आपको किसी नौकर की आवश्यकता तो नहीं है, यदि हो तो मैं हाज़िर हूँ।"

"हमें नौकर की आवश्यकता नहीं है, हम अपना सब काम ख़ुद कर लेते हैं।"

"तब तो बड़ी अच्छी बात है, मैं भी ऐसी ही जगह नौकरी करना चाहता हूँ।"

* * *

एक मुक़द्दमे में वादी के वकील ने बहस समाप्त करते हुए जज से कहा—इसी तरह का एक मुक़द्दमा अभी हाल ही में एक विख्यात जज ने जिताया है।

जज ने प्रतिवादी के वकील की ओर देख कर पूछा—कहिए, इस पर आप क्या कहते हैं?

प्रतिवादी का वकील बोला—मैं केवल इतना कहता हूँ कि जिस मुक़द्दमे के जीतने की बात मेरे लायक़ दोस्त (वादी के वकील) ने कही है वह मुक़द्दमा हाईकोर्ट में जाकर गिर गया।

वादी के वकील ने अपने मुवक्किल के कान में कहा—ओफ़ ओह! इस झूठ का भी कुछ ठिकाना है, मैंने जिस मुक़द्दमे की बात कही वह बिल्कुल बनावटी थी, ऐसा कोई मुक़द्दमा हुआ ही नहीं।

* * *

एक भिखारी एक मकान के द्वार पर खड़ा गा रहा था। मालिक मकान ने उसके कर्कश स्वर से तङ्ग आकर उसे दो पैसे दिए और पूछा—तुम दिन भर में कितना पैदा कर लेते हो।

"यही रुपया डेढ़ रुपया।"

"हैं! रुपया डेढ़ रुपया! और इस गाने की बदौलत!"

"जी नहीं, गाने की बदौलत नहीं, गाना बन्द करके चले जाने की बदौलत।"

* * *

एक व्यक्ति शराबख़ाने में गया और बोला—मुझे जल्दी से शराब पिला दो, आज यहाँ झगड़ा होगा।

शराब देकर दूकानदार ने कुछ घबराहट के साथ उससे पूछा—क्यों, झगड़ा होगा?

शराबी बोला—ठहरो अभी बताता हूँ।

यह कह कर उसने आराम से शराब पी। शराब पीने के पश्चात दूकानदार से बोला—हाँ तुम क्या पूछते थे?

"यहाँ झगड़ा क्यों होगा?"

"इसलिए कि मेरे पास शराब के दाम चुकाने के लिए एक पैसा भी नहीं है।"

* * *

एक व्यक्ति एक तालाब के किनारे बैठा मछली मार रहा था। इसी समय एक सज्जन वहाँ पर आकर बोले—कहो कुछ मिला?

"जी हाँ, अभी तक पन्द्रह मछलियाँ पकड़ चुका हूँ।"

"अच्छा! परन्तु तुम्हें यह भी मालूम है कि यह जगह मेरी है, बिना मेरी आज्ञा के तुम यहाँ मछली क्यों पकड़ते हो?"

वह व्यक्ति बोला—तो आपको भी यह मालूम होना चाहिए कि मैं एक परले सिरे का गप्पी आदमी हूँ, अभी तक मैंने एक भी मछली नहीं पकड़ी।

* * *

पिता—(पुत्र से) तुम कुछ कमाते क्यों नहीं? मैं जब तुम्हारी उम्र का था तब मैंने एक दूकान में नौकरी की थी और पाँच बरस के अन्दर ही दूकान का मालिक हो गया था।

पुत्र—आजकल ऐसा होना असम्भव है। हिसाब-किताब की बहुत जाँच रक्खी जाती है।

* * *

"तुम बसन्तलाल के मित्र हो न?"

"मैं उस नालायक़ का मित्र क्यों हूँ? दो कौड़ी का आदमी है।"

"ऐसा मत कहो। तुम्हें पता नहीं, इधर उसने दो लाख रुपया पैदा किया है।"

"अच्छा! आदमी बड़ा चतुर है और मेरा तो बड़ा पुराना मित्र है।"

* * *

(३६ वें पृष्ठ का शेषांश)

बराबर ही सङ्गीन है। हमने एक ही नीति का अवलम्बन करना निश्चित किया है और अब तक उसी पर जमे हुए हैं, और अन्त तक उसी प्रकार जमे रहेंगे, फिर चाहे हमको व्यक्तिगत रूप से इसके लिए कितना भी अधिक मूल्य क्यों न चुकाना पड़े।

"पिता जी, मैं बहुत ही व्याकुल हो गया हूँ। मुझे भय है कि मैं सभ्यता के साधारण नियमों का भी उल्लङ्घन कर रहा हूँ और मेरी भाषा आपके इस कार्य की आलोचना करते हुए कुछ अधिक कठोर हो गई है। मैं साफ़ कहना चाहता हूँ कि मुझे ऐसा अनुभव होता है मानो किसी ने पीछे से छुरी मार दी हो। अगर किसी और व्यक्ति ने ऐसा काम किया होता तो मैं इसे घोर विश्वासघात से कम नहीं समझता। पर आपके लिए मैं यही कह सकता हूँ कि यह आपकी कमज़ोरी है—सबसे ख़राब कमज़ोरी।

"यह ऐसा समय है जब कि मनुष्य—हर एक मनुष्य—की असलियत की परीक्षा होती है। पर पिता जी, मैं स्पष्ट कहूँगा कि आप इसमें अनुत्तीर्ण हुए। मैं जानता हूँ कि आप वास्तव में एक सच्चे देशभक्त हैं। मैं जानता हूँ कि आपने अपने जीवन को भारत की स्वाधीनता के लिए अर्पित कर दिया है। पर आपने इस अवसर पर यह कमज़ोरी क्यों दिखलाई, मैं इसे समझ सकने में असमर्थ हूँ।

"अन्त में मैं आपको, अपने दूसरे दोस्तों को और उन तमाम लोगों को, जो इस मामले में दिलचस्पी रखते हैं, बतला देना चाहता हूँ कि मैंने आपके कार्य को स्वीकृत नहीं किया है! मैं अभी तक किसी तरह का बचाव पेश करने के पक्ष में बिलकुल नहीं हूँ। अगर अदालत ने उस अर्ज़ी को मञ्ज़ूर भी कर लिया होता, जो मेरे कुछ साथी अभियुक्तों ने बचाव पेश करने आदि के सम्बन्ध में दी थी तो भी मैं अपनी तरफ़ से किसी तरह का बचाव नहीं करता। मैंने अपने अनशन के समय मुलाक़ात के सम्बन्ध में ट्रिब्यूनल को जो अर्ज़ी दी उसका ग़लती यह मतलब समझ लिया गया था कि मैं अपना बचाव पेश करना चाहता हूँ। पर वास्तव में मैं कभी किसी प्रकार का बचाव पेश करना नहीं चाहता था। मैं अब भी पूर्ववत् उसी विचार पर दृढ़ हूँ। मेरे दोस्त जो बोरस्टल जेल में बन्द हैं, आपकी इस अर्ज़ी से समझ रहे होंगे कि मैंने उनके साथ विश्वासघात किया। मुझे इसका अवसर भी नहीं मिलेगा कि मैं उनके सामने अपनी स्थिति को स्पष्ट कर सकूँ।

"मेरी आकांक्षा है कि जनता इस पेचीदा मामले की सब बातों से परिचित हो जाय और इसलिए मैं अपने इस पत्र को प्रकाशित करने की प्रार्थना करता हूँ।"

* * *

स्वागत

[श्री० शोभाराम जी धेनुसेवक]

स्वागत तेरा! हे स्वतन्त्रता—
के निर्भीक पुजारी!
आ! निर्भय कर्त्तव्य-क्षेत्र में,
बन भारत-हितकारी!!

तुझे सहायक लख कर,
तुझसे निर्बल बल पा जावें!
अत्याचारी त्याग 'पाप-पथ',
सत्पथ पर आ जावें!!

उतर पड़ा जब कार्यक्षेत्र में,
तो मत पीछे हटना!
रक्षित रखना शान, मान पर—
हँसते ही मर मिटना!!

तुझे विदित है, मार्ग कर्म—
का कण्टकपूर्ण गहन है!!
वहाँ विजय है, जहाँ अहिंसक,
बन कर कष्ट सहन है!!

चमके तू राष्ट्रीय गगन में,
भाग्य-सितारा बन कर!
सम्मानित हो बढ़े—
देश का वीर दुलारा बन कर!!

साथ राष्ट्र-सेवा के तुझको,
सामाजिक जीवन में—
लाना है शुचिता, सुन्दरता,
साहस हिन्दूपन में!!

सामाजिक उत्थान बिना,
कब राष्ट्रोद्धार हुआ है?
सामाजिक उन्नति से ही,
उन्नत संसार हुआ है!!

आशामय उज्ज्वल 'भविष्य'—
का तू सन्देश सुना दे।
आलोकित कर, वर्तमान,
का तम-नैराश्य नशा दे!!

गौरव-गरिमा पूर्ण जहाँ का,
युग अतीत अनुपम था।
सदा उदित था भाग्य-भास्कर,
नहीं निराशा-तम था!!

आशामय सुन्दर भविष्य पर—
उसके क्या संशय है?
नहीं रहेगा दलित, हिन्द की,
फिर भी विश्व विजय है॥

सीखेगा जिस दिन "भविष्य" पर,
भारत जीना-मरना!
कठिन न होगा, तुझे—
दासता-तम से उस दिन तरना॥

भारत के उज्ज्वल "भविष्य" हे,
तेरा शुभ स्वागत है!
"जीवन की आशा", तुझ पर—
ही तो जीवित भारत है!!

* * *

Registered No. A—2085

Printed and Published by Mr. R. SAIGAL— [illegible], at the Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, [illegible] Allahabad.

सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा
वार्षिक ६) रु०
छः माही ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य ≶)
Annas Two per Copy

एक प्रार्थना

[illegible] मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—२३ अक्टूबर, १६३० | संख्या ४, पूर्ण संख्या ४

भारत की भावी-आशा

हाल के कौन्सिल-चुनाव में चुने जाने वाले कुछ सदस्यगण

श्रीयुत भीखन मेहतर

आप मेरठ-अलीगढ़ विभाग की तरफ़ से संयुक्त प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य चुने गए हैं।

चौधरी रामदयाल चमार

आप लखनऊ शहर की तरफ़ से संयुक्त प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य चुने गए हैं।

श्रीयुत रामजी दास नाई

आप अमृतसर की तरफ़ से पञ्जाब प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य चुने गए हैं।
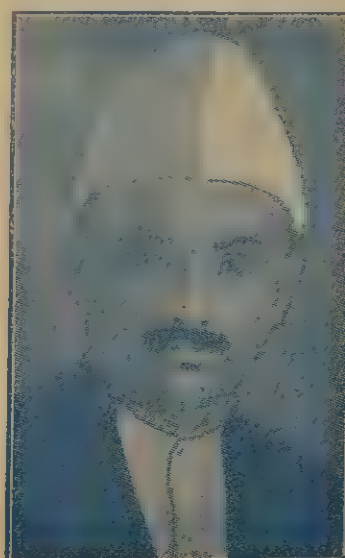
श्रीयुत डालू मोची

आप पूर्वी-सिन्ध की तरफ़ से बम्बई प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य चुने गए हैं।

भगत चन्दीमल चमार

आप दिल्ली-प्रान्त की तरफ़ से लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य चुने गए हैं।

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे!!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—२३ अक्टूबर, १६३० | संख्या ४, पूर्ण संख्या ४

पं० जवाहरलाल फिर गिरफ्तार

'भविष्य' पर एक के बाद दूसरा प्रहार

बम्बई में फिर लाठियाँ चलाई गईं

इलाहाबाद में वालण्टियर कॉन्फ्रेन्स

प्रायः एक सप्ताह की स्वतन्त्रता के बाद रविवार को राष्ट्रपति फिर गिरफ़्तार कर लिए गए। जिस समय रात्रि को ८॥ बजे पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपनी पत्नी तथा पुत्री के साथ पुरुषोत्तमदास पार्क की सभा के अनन्तर मोटर पर आनन्द भवन लौट रहे थे। उस समय घर से लगभग दो सौ गज़ की दूरी पर भारद्वाज आश्रम के पास उनकी मोटर एक पुलिस के सिपाही ने ड्राइवर का लायसेन्स देखने के बहाने रोक ली। उसी समय पुलिस के सिटी डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट इकराम हुसैन ने उन्हें दफ़ा १२४-ए का वारण्ट दिखा कर गिरफ़्तार कर लिया। आनन्द भवन उस स्थान से आँखों के सामने था। प० जवाहरलाल ने, पण्डित मोतीलाल से मिलने की आज्ञा माँगी, जो उसी दिन अस्वस्थावस्था में मसूरी से इलाहाबाद वापिस आए थे। परन्तु उन्हें अपने पिता से मिलने की आज्ञा नहीं दी गई। इसके अनन्तर वे अपनी मोटर से उतर आए और पुलिस उन्हें अपनी मोटर में बैठा कर नैनी जेल ले गई। उनका सामान बाद में जेल भेजा गया। राष्ट्रपति की इस अचानक गिरफ़्तारी से उनकी माता मूर्छित हो गईं और कई घण्टे के बाद होश में आईं। उनकी पत्नी भी बड़ी देर तक बेहोश रहीं। दीपावली जैसा त्योहार होने पर भी शहर में दूसरे दिन पूर्ण हड़ताल रही।

कानपूर ज़िले में नया ऑर्डिनेन्स

कानपूर ज़िले के अकबरपूर तहसील की कॉङ्ग्रेस कमिटी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई। वहाँ के डिक्टेटर बाबू किशनलाल गुप्त और ६ वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए। पुलिस ने कॉङ्ग्रेस के दफ़्तर में अपना ताला डाल दिया है।

बम्बई में भीषण अवस्था

चार दिन की हड़ताल के बाद रविवार ता० १६ को मङ्गलदास मार्केट और पास के स्थानों की विदेशी कपड़े की दुकानें खुलीं, तो लगभग १०० स्त्री और पुरुष वालण्टियरों ने उन पर ज़ोरों से पिकेटिङ्ग प्रारम्भ की। इस प्रकार की लगातार पिकेटिङ्ग के कारण वहाँ के व्यापारी एक सभा में एक माह की हड़ताल करने का निश्चय करने वाले हैं।

क्रॉफ़ोर्ड मार्केट में मेसर्स कुर्मीगार की शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करते समय भीड़ पर पुलिस ने कई बार लाठियों का प्रहार किया। पिकेटिङ्ग के कारण दुकान पर ४६ वालण्टियरों की गिरफ़्तारी हुई। वो वालण्टियरों के एक बैच के गिरफ़्तार हो जाने पर दूसरा बैच उनका स्थान ले लेता था।

माण्डवी में प्रायः १५०० घर और दुकानों पर 'माण्डवी ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी' के तख़्ते लगा दिए गए हैं। मालूम होता है बम्बई में प्रत्येक घर कॉङ्ग्रेस हाउस हो जायगा।

'भविष्य' से ज़मानत माँग ली गई

.ली
त श्रेय

जिस दिन से 'भविष्य' का जन्म हुआ है उसी
से उसके ऊपर एक के बाद दूसरा प्रहार हो
उसके पहले ही अङ्क को पुलिस ने ग्यारह दिन त
ख़ाने में रोक करके जो असीम हानि पहुँचाई
ज़िक्र ही करना व्यर्थ है। अब उससे पाँच
ज़मानत माँगी गई है। अभी 'भविष्य' के केव
प्रकाशित हुए हैं, इधर प्रेस-ऑर्डिनेन्स भी
है, तो भी अधिकारीगण 'भविष्य' पर यह
का लोभ सम्वरण न कर सके। हमें पूर्ण
अपने पाठकों और सहायकों के सहयोग
इन प्रहारों से दबने के बजाय बराबर
और चिरञ्जीव होकर अपना कर्त्तव्य

कार्यकर्ता
सवेरे देहान्त
थे और कल-
प्रेजुएट थे।
जीवन समर्पित

अवसर पर सेन्ट
प्रिन्सिपल ने विद्या-
आने से मना किया।
थ गाँधी टोपी लगाए
ठियाँ चला कर उनको

रविवार होने के कारण अधि
फेरियाँ राष्ट्रीय गीत और नारे लगाते
उधर पुलिस भी सब शहर में फैली
फेरी को लाठियों की मार से अछूता
फेरियों के राष्ट्रीय झण्डे उसने छी
करतूत से स्त्रियों ने फेरियाँ निका
नहीं बोली। लाठियों के प्रहार से १
से २ कॉङ्ग्रेस अस्पताल में हैं।

ग्वालिया तालाब के मैदान में
छोटे-छोटे बच्चों ने अपनी 'रैली'
के एक कोने में क़वायद कर रहे
साथ कुछ लठैत सिपाहियों य

र के लिए मङ्गलोर में
र कॉङ्ग्रेस आन्दोलन
रनाई गई। स्वागतार्थ
वर्नर के आने के पहिले

सभाएँ रोकने के लिए
की मियाद २ महीने

र राउण्डटेबुल कॉनफ़्रेन्स
ना हो गए। वे कहते हैं
आशा है।
न सेनगुप्त सपत्नीक कराची
ते ग कराची में आपका

उनसे वहाँ से चले जाने के लिए कहा। १६ वर्षीय केप्टन बटुक देसाई ने 'सेना' को तो वहाँ से हटा लिया पर वह स्वयं डटा रहा। वह गिरफ़्तार कर लिया गया। बाद में बच्चे, कोलटार रोड पर गिरफ़्तारी का हाल लिखने के कारण और गिरफ़्तार कर लिए गए।

इलाहाबाद वालण्टियर कॉन्फ्रेन्स

इलाहाबाद में विशम्भर पैलेस में ज़िला वालण्टियर कॉन्फ्रेन्स पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुई जिसमें ज़िले भर के गाँवों के १४६३ वालण्टियर्देशी प्रतिनिधि उपस्थित थे। कॉन्फ्रेन्स की का फिर सब तथा कुल गुप्त थी और प्रेस-प्रतिनिधियों को से सहायता देना की आज्ञा नहीं थी। वालण्टियरों
अन्दर आ सकते थे, जिनके पास जगह पर सर जॉर्ज लेम्बर्ट
ख़ती टिकिट था। मालूम क किए गए हैं। सर मालकम
पुरुषोत्तमदास राउण्डकॉन्फ्रेन्स के सम्बन्ध में विलायत जा
बहादुर और अन्
हरलाल न मीयतुल-उलेमा के प्रेज़िडेण्ट मौलाना किफ़ा-
मग की गिरफ़्तारी के बाद मौलाना हुसेन अहमद
हुए उसके प्रेज़िडेण्ट बनाए गए हैं।

—पं० हृदयनाथ कुँजरू पूर्व अफ़्रिका निवासी भारतीयों के राजनैतिक अधिकारों का दावा पेश करने शीघ्र ही लन्दन जावेंगे।

—यह निश्चित रूप से मालूम हुआ है कि लॉर्ड इरविन ने वाइसराय के पद पर फिर से नियुक्त होने से साफ़ इन्कार कर दिया है।

—शिमला का समाचार है कि अगले साल से श्री० एस० एन० गुप्त, आई० सी० एस० हेमबर्ग में भारत के ट्रेड कमिश्नर नियुक्त हुए हैं।

—करेन्सी ऑफ़िस में काम करने वालों की शिकायतों की तहक़ीक़ात करने के लिए एक ख़ानगी कमेटी बैठी है। पहिले श्री० एन० एम० जोशी के हिन्दुस्तान में न होने के कारण यह कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दी गई थी, पर अब वे लौट आए हैं, इससे यह अब बम्बई से अपना काम शुरू करेगी।

—देहरादून का १७ ता० का समाचार है कि जब राष्ट्रपति जवाहरलाल नेहरू मन्सूरी से लौट कर देहरादून की एक विराट सभा में अपना भाषण प्रायः समाप्त कर चुके थे; तब वहाँ के सिटी कोतवाल श्री० दरबारसिंह एकाएक मञ्च पर आए और उन्होंने दफ़ा १४४ का ऑर्डर पण्डित जी को दिखाया, जिसमें ख़तरनाक होने के कारण उनका भाषण देहरादून में रोका गया था। साथ ही उन्हें यह चेतावनी भी दी गई थी कि यदि वे आज्ञा का उल्लङ्घन करेंगे तो गिरफ़्तार कर लिए जायँगे। पण्डित जी अपना भाषण समाप्त कर चुके थे और वे कुछ ही समय बाद देहरादून एक्सप्रेस से लखनऊ के लिए रवाना होने वाले थे। इसलिए ऑर्डर देख कर वे वहाँ से चले गए। ऑर्डर पर देहरादून के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० पी० मेसन आई० पी० एस० के दस्तख़त थे।

* * *

—चिदगाँव के उपद्रव के सम्बन्ध में फ्रान्सीसियों के उपनिवेश चन्द्रनगर में जो गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, उनकी तहक़ीक़ात करने के लिए फ़्रान्स के औपनिवेशिक मन्त्री तथा भारत स्थित फ़्रेञ्च प्रान्तों के गवर्नर जनरल शीघ्र ही आने वाले हैं।

—राउण्डटेबल कॉन्फ़्रेन्स में जाने वाले भारतीयों के स्वागत के लिए लन्दन के विक्टोरिया स्टेशन पर प्रबन्ध किया गया है। पञ्जाब के राजाओं की ओर से इनको मानपत्र दिया जावेगा। ये सब लन्दन के सेन्ट जेम्स पैलेस में ठहराए जावेंगे, जहाँ पर कमरे गरम रखने का ख़ास प्रबन्ध किया गया है। २४वीं अक्टूबर को प्रिन्स ऑफ़ वेल्स (युवराज) ने इन लोगों को दावत दी है।

—राउण्डटेबल कॉन्फ़्रेन्स में जाने वाले लोगों का एक दल, जिसमें सर तेज बहादुर सप्रू, श्रीयुत जयकर, मौलाना मुहम्मदअली इत्यादि हैं, विलायत पहुँच गया। विक्टोरिया स्टेशन पर उनका स्वागत किया गया। कहा जाता है कि मौलाना मुहम्मदअली की पार्टी अब काफ़ी ढीली पड़ गई है। हिन्दुस्तान की हवा छोड़ते ही उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी का ख़याल आया और वे अब पहिले भारत का कल्याण और बाद को जातीयता का ध्यान रक्खेंगे। अब शायद कॉन्फ़्रेन्स में हिन्दू-मुसलिम-दङ्गल न होगा।

—ब्रिटिश नेताओं का यह ख़्याल है कि राउण्डटेबल कॉन्फ़्रेन्स में इतने लोग बुला लिए गए हैं कि काम ठीक व जल्दी नहीं हो सकता। इसलिए शायद एक वर्किङ्ग कमेटी बनाने की आवश्यकता पड़ेगी।

—ब्रिटिश कन्सरवेटिव दल के एक प्रधान पुरुष सर सेमुअल होर कहते हैं कि राउण्डटेबल कॉन्फ़्रेन्स इसलिए नहीं की गई है कि भारतवासी सब मिल कर एक तरफ़ हो जावें और अङ्गरेज़ एक तरफ़; और दोनों अधिकारों के लिए लड़ें। कॉन्फ़्रेन्स तो परस्पर सहानुभूति तथा सहायता की सूचक है। वे चाहते हैं कि कॉन्फ़्रेन्स में जो बातें तय की जावें, उनमें काली या गोरी जातीयता की बू न आवे और भारतवासियों की प्रत्येक बात उनकी योग्यता ध्यान में रखते हुए तय की जावे।

—इम्पीरियल कॉन्फ़्रेन्स ने, जो लन्दन में हो रही है, साम्राज्य के देशों का व्यापार बढ़ाने के उपाय निकालने के लिए एक कमेटी बैठाई है।

—इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री मिस्टर मेकडॉनल्ड ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है कि इम्पीरियल कॉन्फ़्रेन्स ठीक तरह से चल रही है। आपस में लेन-देन का कोई झगड़ा नहीं हो रहा है। बस यदि सब केवल एक दूसरे के बनाये माल को ख़ास तौर पर पसन्द करें तो सब काम सहूलियत से हो जावे व पूरे साम्राज्य का फ़ायदा हो। अभी तक यह पता नहीं लगता कि यह काम कहाँ तक सम्भव है। पर सब लोग इसके लिए बहुत प्रयत्न कर रहे हैं।

—लिबरल दल के नेता लॉयड जॉर्ज कहते हैं कि बेकारी का प्रश्न, जैसा कि मज़दूर दल कहता है, पेन्शन द्वारा तय नहीं हो सकता। इसके लिए तो ऊपरी ख़र्च कम करने की ज़रूरत है, जिससे कि माल सस्ता बने और बिक्री ज़्यादा हो और इस तरह से बेकारी दूर हो। पेन्शनें देना बेकारी बढ़ाने का उलटा रास्ता है।

—इङ्गलैण्ड के कन्ज़रवेटिव दल के नेता ने लिबरल दल का विदेशी माल पर टैक्स लगाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। प्रधान मन्त्री ने इस पर विज्ञप्ति निकाली है कि यह प्रस्ताव मान कर एक तरह से कन्ज़रवेटिव दल ने लिबरल दल से हार मान ली है। अब ये दोनों दलों के मिल जाने की सम्भावना है। यदि भारत तथा अन्य उपनिवेशों की नीति के विषय पर मज़दूर गवर्नमेण्ट में भेद हो गया तो शीघ्र ही नए चुनाव की सम्भावना है।

—विलायती ख़ुफ़िया पुलिस ने पता लगाया है कि इङ्गलैण्ड के पूर्वीय समुद्र तट पर बहुत से व्यापार टैक्स से बचने के लिए चोरी की जाती है। टैक्स-योग्य माल को लोग छिपा कर ऐसी चीज़ों के साथ लाते हैं, जिन पर टैक्स नहीं लगता है। बहुत सा रेशम और शराब इस तरह चुपचाप अँधेरे में समुद्रतट से थोड़ी दूर पर जहाज़ों पर से उतार लिया जाता है और मोटर-बोट में भर कर चुपचाप ले जाया जाता है। इसे रोकने के लिए पूर्वीय समुद्र तट पर कड़ा पहरा लगाया गया है। पहरे वाले भी मोटर-बोट पर चक्कर लगाया करते हैं।

—इङ्गलैण्ड से ऑस्ट्रेलिया में एक तक और नई वायुयानों की दौड़ हो रही है। इङ्गलैण्ड से किङ्ग्ज़फ़ोर्डस्मिथ विङ्ग कमाण्डर और फ़्लाइट लेफ़्टनेण्ट हिल ये दोनों सज्जन दौड़ लगा रहे हैं। आपस में ख़ूब प्रतिस्पर्धा हो रही है। बाद का समाचार है कि हिल का हवाई जहाज़ रास्ते में टूट गया। किङ्ग्ज़फ़ोर्ड १९ तारीख़ को ऑस्ट्रेलिया पहुँचने वाला था।

—लन्दन में हैदराबाद का तैराक शफ़ीअहमद दुनिया में सब से ज़्यादा समय तक तैरने की कोशिश कर रहा है। माल्टा का निवासी रिज़ो कुछ दिन पहिले ६८ घण्टे ११ मिनट तक लगातार तैरा था। शफ़ी इससे भी ज़्यादा देर तैरने की कोशिश करेगा। लन्दन के मेयर स्वतः इस प्रतियोगिता को देखने आए थे।

—डॉक्टर मेरिया मोन्टेसोरी, इटली की सुप्रसिद्ध शिक्षाप्रेमी महिला, जो कि हाल में हिन्दुस्थान में आने वाली थीं, अभी नहीं आवेंगी।

—मि० जे० बी० हॉब्ज़ और मि० सटक्लिफ़, जो कि विलायत के बड़े प्रसिद्ध क्रिकेट खेलने वाले हैं, हिन्दोस्तान आ रहे हैं। वे महाराज कुमार विज़ियानगरम् के अतिथि होकर रहेंगे।

—'आर १०१' के तीन बचे हुए उड़ाकू इस दुर्घटना से ज़रा भी साहसहीन नहीं हुए हैं। वे फिर उड़ने को तैयार हैं।

—डी० पी० राय, भूतपूर्व प्रोफ़ेसर डी० ए० वी० कॉलेज, लाहौर, साइकिल पर लन्दन पहुँच गए हैं। उन्होंने लाहौर १ली जनवरी १९२९ को छोड़ा था और वे बलूचिस्तान, परशिया, इराक़, सीरिया, इजिप्ट, ग्रीस, फ़्रान्स, इत्यादि देशों को पार करते हुए वहाँ पहुँचे हैं। वे अमेरिका, जापान, चीन तथा अन्य देशों को भी साइकिल पर जाने वाले हैं।

—ऑग्सबर्ग में प्रोफ़ेसर पिकार्ड ने बैलून द्वारा ६०,००० फ़ीट ऊपर आकाश में उड़ने का प्रयत्न किया, पर वह न उड़ सके। इससे वे निराश नहीं हुए हैं। फिर प्रयत्न करने वाले हैं।

—बर्लिन में हड़तालियों की सभा से लौटते वक़्त साम्यवादियों ने पुलिस के ऊपर गोलियाँ चला दीं और पत्थर फेंके। इस पर पुलिस ने भी गोलियाँ चलाईं और उनको भगा दिया। इस सम्बन्ध में क़रीब ६० गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—गेहूँ की क़ीमत गिर जाने के कारण किसानों की सहायता करने के लिए जर्मन गवर्नमेन्ट ने विदेशी गेहूँ पर टैक्स लगाना निश्चय किया है।

—मज़दूरी घटा देने के कारण बर्लिन के खनिज पदार्थों के कारख़ानों के १,२०,००० मज़दूरों ने हड़ताल कर दी है

—लॉर्ड टॉमसन की जगह पर लॉर्ड अमलरी वायुयानों के मन्त्री नियुक्त हुए हैं। आपने 'आर १०१' की घटना का पता लगाने के लिए एक कमेटी नियुक्त की है।

—जाहोर (मलाया) के सुल्तान का विवाह एक विलायती महिला के साथ होने वाला है।

—जेक डाइमन्ड, अमेरिका के एक प्रसिद्ध डाकू को गोली से मार दिया गया है। उसने कई ख़ून किए व डाके डाले पर किसी ने पकड़ने में नहीं आया। कहते हैं, आपस में झगड़ा हो जाने से उसके साथियों ने ही उसे गोली मारी है। एक नर्तकी, जो उसकी मित्र थी, सन्देह में पकड़ी गई है।

—बेलजियम के राजदम्पति ख़ानगी तौर से आजकल लन्दन में रह रहे हैं।

—ब्रेज़िल के कुछ बन्दरगाह क्रान्तिकारियों के हाथ में आ गए हैं। इससे वहाँ की सरकार ने जहाज़ों के आने की मनाई कर दी है।

—अमेरिका ने ब्रेज़िल देश को सेना तथा गोला-बारूद द्वारा सहायता देना निश्चय किया है। ब्रेज़िल में कुछ विद्रोही वहाँ की सरकार को तङ्ग कर रहे हैं।

—मक्का की 'पवित्र-भूमि' में राजा इब्ने-सऊद ने बेतार का तार लगाने की आज्ञा दे दी है। अब सारे संसार में मक्का की आवाज़ पहुँच सकेगी।

—लन्दन की परशियन-कला प्रदर्शनी के लिए परशिया से बहुत सी बहुमूल्य चीज़ें भेजी गई हैं। स्वयम शाह ने २० लाख पौण्ड क़ीमत की चीज़ें भेजी हैं। ये चीज़ें 'बहारिस्तान' नामक जहाज़ द्वारा पहुँचाई गई हैं।

—ब्रिटिश पार्लामेण्ट के मेम्बर सर रिचर्ड बारनेट का १७ तारीख़ को देहान्त हो गया। आपकी अवस्था ६७ साल की थी। आप पार्लामेण्ट में लन्दन ख़ास के सदस्य थे।

—प्रोफ़ेसर कोटमेन सी० आई० ई० ने गोलमेज़ परिषद् के लिबरल प्रतिनिधियों का सेक्रेटरी होना स्वीकार कर लिया है।

—इथियोपिया (अफ़्रीका) के सम्राट के राज्याभिषेक में शामिल होने के लिए इङ्गलैण्ड से ड्यूक ऑफ़ ग्लाउसेस्टर अबेसीनिया गए हुए हैं। सम्राट जॉर्ज की ओर से वे एक बड़ी भेंट ले गए हैं।

कविवर रवीन्द्र का सुख-स्वप्न

डॉक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जो कि आजकल रूस की यात्रा कर रहे हैं, कहते हैं कि रूस ने शिक्षा में आश्चर्यजनक उन्नति कर दिखाई है। मॉस्को की एक विशाल सभा में भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा द्वारा संसार की सब कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं। हमारे रोग, दरिद्रता, उद्योग-धन्धों का अभाव, झगड़े-फ़िसाद आदि सब दोष हमारी ख़राब तथा अपूर्ण शिक्षा के फल हैं। मैं यहाँ यह देखने आया था कि आप लोग इस समस्या को किस तरह हल कर रहे हैं। आपकी उन्नति का वेग देख कर मुझे आश्चर्य है। साम्यवाद की सब भलाइयाँ आपके देश में देख कर मेरा हृदय उत्साहित हो रहा है। मैं उस भावी स्वप्न को देख रहा हूँ, जब मेरी मातृभूमि में भी समता और शिक्षा का सुखमय राज्य होगा।

* * *

—डायमण्ड हारबर का १६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० गङ्गाधर हाल्दार को पिकेटिङ्ग के अभियोग में ६ माह की सादी क़ैद और ५०० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई है। जुर्माना न देने पर उन्हें ७ सप्ताह अधिक जेल में रहना पड़ेगा।

—मुरादाबाद में २६ सितम्बर को पुलिस के गोली चलाने के पहिले जिन ४६ आदमियों की गिरफ़्तारी हुई थी, उनमें से ५ छोड़ दिए गए और ४१ को सज़ा हो गई। वालण्टियरों के कमाण्डर महेन्द्रनाथ को ६ माह की सादी क़ैद की सज़ा और ३६ को ६ माह की सख़्त क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा दो दफ़ाओं में अलग-अलग हुई। एक को केवल १० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई। सज़ा दोनों दफ़ाओं की साथ-साथ चलेंगी।

—आगरे के दसवें डिक्टेटर बाबू नारायणसिंह बी० ए०, दफ़ा १२४-ए के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। ज़मानत देने से इन्कार करने पर उन्हें एक साल की क़ैद की सज़ा हुई है। वे 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं।

—हरदोई की कॉङ्ग्रेस-डिक्टेटर श्री० रानी विद्यादेवी को १६ ता० को पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६ माह की सादी क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई है। जुर्माना न देने पर १ माह की क़ैद उन्हें और भोगना पड़ेगी। वे 'ए' क्लास में रक्खी गई हैं।

—आगरे में 'माहेश्वरी' के सम्पादक पण्डित विशम्भरदयाल जी शर्मा की स्त्री श्रीमती शान्तिदेवी को सत्याग्रह में छः माह की सादी क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई। जुर्माना न देने पर उन्हें एक माह की सज़ा और भोगनी पड़ेगी।

—कानपूर का समाचार है कि वहाँ १५ ता० को जमशेद की और मियाँवाल की शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में पुलिस ने १४ कुलीन स्त्रियों, वानर सेना के ८ से १४ वर्ष की आयु के कुछ लड़कों और १२ वालण्टियरों की गिरफ़्तारी की। पुलिस लाठियाँ लिए खड़ी है और गिरफ़्तारियों का ताँता लगा हुआ है। इस घटना से शहर में सनसनी फैल गई है।

—१० वीं अक्टूबर को आज़मगढ़ में ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के वाइस प्रेज़िडेण्ट बाबू सीतारास अस्थाना एडवोकेट और संयुक्त-मन्त्री ठाकुर शिवफेरसिंह और अहरौला तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी को पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार क्रमशः छः माह की सादी और छः और चार माह की कड़ी क़ैद और १२० तथा ५० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई है। श्री० अस्थाना 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं। मुक़द्दमे के समय कॉङ्ग्रेस के किसी कार्यकर्ता को अन्दर जाने की इजाज़त नहीं दी गई।

—लाहौर में १२ वीं अक्टूबर को कॉलेजों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में कॉलेज के निम्न विद्यार्थियों को ४-४ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हो गई:—श्री० पन्नालाल, रामचन्द्र, वीरेन्द्र, बल्देवराय (लाला लाजपत राय के पौत्र), सोमनाथ, वेदप्रकाश, शामलाल महाजन, महेश्वरीप्रसाद और हरदत्त।

—लाहौर का १२ ता० का समाचार है कि वहाँ के कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्री० मङ्गतराय से २००० रुपयों की ज़मानत माँगी गई थी, इन्कार करने पर उन्हें १ वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई।

—अमृतसर में श्री० हरवंशलाल को पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार, हड़ताल के दिन ताँगे रोकने के अभियोग में तीन माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के नए डिक्टेटर श्री० उस्मान सोभानी गिरफ़्तार कर लिए गए। उनके स्थान पर अब मीर नूर मुहम्मद अहमद नए डिक्टेटर हुए हैं।

—बम्बई में १२ वीं अक्टूबर को श्री० के० एफ़० नरीमेन होवहर को अपने मकान पर गिरफ़्तार कर लिए गए। उन्हें छः माह की सादी क़ैद की सज़ा हुई है। जब से सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तब से जेल जाने का उनका यह तीसरा अवसर है। चार माह की क़ैद की सज़ा काट कर वे हाल ही में जेल से मुक्त हुए थे।

—बम्बई की 'युद्ध-समिति' के प्रेज़िडेण्ट श्री० नगीनदास टी० मास्टर को भी श्री० नरीमेन के साथ ही छः माह की क़ैद की सज़ा दे दी गई है। जेल जाते समय उन्होंने बम्बई के नर-नारियों से अपना हर एक घर कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस बना देने की अपील की है। उन्होंने व्यापारियों से विदेशी कपड़े का व्यापार शुरू करने की हठ छोड़ देने और विद्यार्थियों से भारत के कला-कौशल की वृद्धि में सहायता करने की प्रार्थना की है।

—फूलगाड़ी में गाँजे की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में श्री० आशुतोषकर को छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—दिल्ली में १६ तारीख़ तक सत्याग्रह आन्दोलन के सम्बन्ध में एक हज़ार गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं। हाल में श्रीमती चन्दा बीबी पकड़ी गई हैं, जो कि एक भूतपूर्व पब्लिक प्रॉसिक्यूटर की पुत्री हैं।

बहिष्कार का प्रभाव

भारत सरकार के व्यापारिक विभाग ने हाल ही में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है, जिससे मालूम होता है कि भारत की समुद्र और ज़मीन की चुङ्गी की आमदनी सितम्बर १९३० में ३,४८,३७,००० रुपया है। सन् १९२९ के सितम्बर मास में यही आमदनी ४,०१,२८,००० रुपया थी और सन् १९२८ के सितम्बर में ४,०१,-७०,००० रुपया। सन् १९३० में सितम्बर तक की कुल आमदनी २३,३७,८४,००० रुपया हुई है। यही आमदनी सन् १९२९ के सितम्बर मास तक २४,८१,८२,००० रुपया थी और सन् १९२८ के सितम्बर तक की २३,९३,९२,००० रुपया थी। चुङ्गी की आमदनी का सन १९३०-३१ के बजट में औसत ५९,४८,६०,००० रुपया है। मालूम होता है पिछले वर्षों के हिसाब से बजट के औसत में ५ करोड़ की कमी हो जायगी। चुङ्गी की आमदनी में यह कमी विशेषतः विदेशी कपड़े के बहिष्कार के कारण हुई है।

पाँच चपरासी मारे गए

पटना का १८ वीं अक्टूबर का समाचार है कि चम्पारन ज़िले के भिटहा गाँव में ज़मींदारों के चपरासियों की पार्टी पर हथियारबन्द झुण्ड ने धावा किया। कहा जाता है कि भीड़ के गोली चलाने से ५ चपरासी मर गए। लोग उनके मृतक शरीर भी ले गए। झगड़े की जड़ ज़मीन के सम्बन्ध में कुछ खटपट बतलाई जाती है।

* * *

—कलकत्ते में एक छोटी सी बात पर भयङ्कर दुर्घटना हो गई। बैलगार्ड नामक एक एङ्ग्लो इण्डियन ने एक मुसलमान दर्ज़ी से कोट सिलवाया था, परन्तु वह उसकी इच्छानुसार न बन सका। इसी पर बातों-बातों में हाथापाई हो गई और बहुत से मुसलमानों की भीड़ बैलगार्ड के घर के सामने जमा हो गई। उन्होंने उसे बहुत धमकाया और उसके घर में पत्थर भी फेंके, जिससे उसका बहुत नुक़सान हुआ। पुलिस ने आकर लोगों को भगा दिया, परन्तु भीड़ फिर एकत्र हो गई और उसने फिर उसके घर पर पत्थर बरसाना प्रारम्भ कर दिया। अन्त में पुलिस ने बड़ी कठिनाई से लोगों को हटाया।

—बनारस में २६ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक समस्त एशिया के विद्या-प्रचारकों की एक विशाल सभा होने वाली है। एशिया के समस्त देशों से सदस्य आने वाले हैं। सदस्यों के मनोरञ्जन तथा स्वागत के लिए पूर्ण प्रबन्ध किया जा रहा है।

—भारत के भूतपूर्व वाइसराय लॉर्ड हार्डिञ्ज जाड़ों में हिन्दोस्तान आने वाले हैं। वे यहाँ पर बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय का, जिसकी नींव उन्होंने डाली थी, निरीक्षण करेंगे।

—साँगली स्टेट के शिवलिंगप्पा नामक व्यक्ति को किसी साधू ने बतलाया है कि मारीहल गाँव की टेकरियों में पुराने राजाओं के महल तथा उनका धन गड़ा हुआ है। इस साल तक प्रार्थना करने के बाद उसे टेकड़ियाँ खोदने की इजाज़त मिली है। खुदाई हो रही है, पर अभी तक कुछ भी नहीं मिला है।

—बम्बई में नेपियन समुद्र रोड पर एक मोटर दुर्घटना के कारण श्री० बरजोर जी जहाँगीर वाड़िया नामक एक पारसी सज्जन की मृत्यु हो गई। रात्रि में एक बजे जब वे अपनी मोटर साइकिल पर चढ़े अल्टिस टावर के बङ्गले के सामने से निकल रहे थे, उसी समय उनकी साइकिल की एक मोटर से टक्कर लग गई और उनका सिर फट गया।

—शेख़ूपुरा की ख़बर है कि एक लड़की को उसकी माता ने बहुत दिनों तक लड़के के वेश में रक्खा। लोगों को इसका पता ही नहीं चला। कहा जाता है कि कुछ बदमाशों के डर से माता ने ऐसा किया था। एक दिन जब माँ बहुत बीमार पड़ी तब उसने गुरुद्वारा से ग्रन्थी जी को बुलाया व अपनी लड़की का हाल कह कर उनसे उसकी शादी करवा देने का आग्रह किया।

—भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल वारन हेस्टिङ्ग्ज़ के दो पिस्तौल हाल में विक्टोरिया मेमोरियल में भेजे गए हैं। इतिहास पढ़ने वालों को याद होगा कि हेस्टिङ्ग्ज़ में और कौन्सिल के दूसरे मेम्बर फ़िलिप फ़्रान्सिस में बड़ी दुश्मनी थी। एक वक़्त पिस्तौल व राइफ़िलें तक चल गई थीं। कहा जाता है कि वह यही पिस्तौल है, जिससे हेस्टिङ्ग्ज़ ने फ़्रान्सिस को आहत किया था।

—रामदेव सिंह नाम का डकैत, जो कि छपरा जेल में बन्द था, गए महीने में जेल से निकल भागा है। उसने तिरहुत ताल्लुक़े में कई डाके डाले हैं। इसके पकड़ने के लिए २०० रुपए का पुरस्कार रक्खा गया है।

—पेराम्बटूर (ट्रावनकोर) में एक स्कूल पर बिजली गिरने से पाँच विद्यार्थी मर गए। कई को चोटें आई हैं। स्कूल की इमारत के कई भाग गिर पड़े।

* * *

'पिकेटिङ्ग का यह असर है जो दिवाला निकल गया'

भारतीय बहिष्कार आन्दोलन का ब्रिटेन के व्यापार पर भयङ्कर प्रभाव

ब्रिटेन के कपड़े के व्यवसाय का भारत के बहिष्कार आन्दोलन से किस प्रकार ह्रास हुआ है, इसका पता निम्न अङ्कों से लगता है। व्यवसाय के ह्रास के साथ ही वहाँ की बेकारी की भी बढ़ती हुई संख्या का इन अङ्कों से पता लग जायगा। सन् १९२९ के जुलाई मास में ब्रिटेन से सब क़िस्म का माल ५ करोड़ ३२ लाख पौण्ड का बाहर भेजा गया था। परन्तु सन् १९३० के जुलाई में केवल ३ करोड़ ९७ लाख पौण्ड का ही भेजा गया। कपड़े का निर्यात् तो पिछले साल की अपेक्षा ५० प्रति शत कम हो गया है।

ब्रिटेन का निर्यात्

जुलाई, १९२९ ...	... ५ करोड़	३२	लाख
जनवरी, १९३० ...	... ४	,,	४७	,,
फ़रवरी, १९३० ...	... ४	,,	१२	,,
मार्च, १९३० ...	... ४	,,	२५	,,
अप्रैल, १९३० ...	... ३	,,	६७	,,
मई, १९३० ...	... ३	,,	९८	,,
जून, १९३० ...	... ३	,,	३८	,,
जुलाई, १९३० ...	... ३	,,	९७	,,

ब्रिटेन से कपड़े का निर्यात्

	पौण्ड
अगस्त, १९२९	८७,७५,४२९
जनवरी, १९३०	८०,७५,९९७
फ़रवरी, १९३०	७५,२०,००८
मार्च, १९३०	६९,११,२०३
अप्रैल, १९३०	५४,०९,१५७
मई, १९३०	५४,१०,६९९
जून, १९३०	४१,७५,८५८
जुलाई, १९३०	५१,७४,८८४
अगस्त, १९३०	४४,३५,२३०

ब्रिटेन से लोहे (स्टील) का निर्यात्

	पौण्ड
अगस्त, १९२९	५५,७२,५३९
जनवरी, १९३०	५४,७१,३५८
फ़रवरी, १९३०	४७,२४,११८
मार्च, १९३०	५१,९३,६४०
अप्रैल, १९३०	४२,२४,३५२
मई, १९३०	४९,४२,२८१
जून, १९३०	४१,०३,४८९
जुलाई, १९३०	४८,९४,२००
अगस्त, १९३०	३६,०६,०२८

ब्रिटेन में बेकारों की संख्या

अगस्त, १९२९	११,९९,०००
जनवरी, १९३०	१५,२०,०००
फ़रवरी, १९३०	१५,८३,०००
मार्च, १९३०	१६,९४,०००
अप्रैल, १९३०	१७,६१,०००
मई, १९३०	१८,५६,०००
जून, १९३०	१९,१२,०००
जुलाई, १९३०	२०,७०,०००
अगस्त, १९३०	२०,३६,१३२
सितम्बर, १९३०	२१,०९,६५८

सन् १९३० में भारत में सूती कपड़े का आयात

	लाख रुपयों में
जनवरी, ...	४८९
फ़रवरी, ...	३९९
मार्च, ...	४५४
अप्रैल, ...	३९७
मई, ...	३२४
जून, ...	२१४
जुलाई, ...	१६५

नीचे इङ्गलैण्ड के बहुत से व्यवसायी केन्द्रों की सितम्बर मास की रिपोर्टों का सार दिया जाता है :—

लोहा और स्टील

बर्मिङ्घाम—स्टील का व्यवसाय अत्यधिक शान्त है।

शैफ़ील्ड—पिछले महीने की अपेक्षा इस माह का हाल बहुत ख़राब है।

ग्लासगो—बाज़ार बहुत मन्दा और गिरा हुआ है।

सूती कपड़ा

सूती कपड़े के सम्बन्ध में जो रिपोर्टें आई हैं, उनका सार यह है कि जब तक भारत और चीन के बाज़ारों में वर्त्तमान समय की तरह गड़बड़ी रहेगी, तब तक सूती कपड़े के व्यवसाय में कोई उन्नति होने की आशा नहीं है।

अन्य व्यवसाय

प्रायः सभी केन्द्रों में व्यापार बिलकुल सुस्त है। चमड़े और बूट का व्यवसाय बिलकुल मन्दा है; और यद्यपि उनका मूल्य बहुत कम हो गया है, परन्तु ख़रीदारों में कुछ उत्साह नहीं है।

'भारत स्वराज्य चाहता है'

छोटे-छोटे अधिकारों के देने का समय अब चला गया

श्रीयुत सप्रू तथा जयकर ने विलायत में पहुँचते ही एक विज्ञप्ति निकाली है। वे कहते हैं कि राउन्डटेबल कॉन्फ्रेन्स के आरम्भ होते ही हम लोग उन अधिकारों की एक सूची पेश करेंगे, जो अधिकार कि हम कम से कम चाहते हैं। और जब तक यह स्वीकार नहीं किया जायगा कि इन अधिकारों से युक्त शासन-प्रणाली ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को मन्जूर है, तब तक हम लोग कॉन्फ्रेन्स में भाग न लेंगे। वे कहते हैं कि जिस दिन गवर्नमेन्ट भारतीयों को औपनिवेशिक स्वराज्य देने के लिए तैयार हो जावेगी, सम्भव है कि उसी दिन भारतीय अपने घर के जातीय झगड़ों को सुलझा सकें। इसलिए वे अपने विचार पहिले से ही ज़ाहिर कर देते हैं। यदि और दल भी यह अनुभव करते हैं कि भारत स्वराज्य से कम किसी चीज़ से सन्तुष्ट न होगा तथा हम लोग केवल इसी बुनियाद पर सन्धि करने आए हैं, तो सुलह होने में देर न लगेगी।

भारत अब अङ्गरेज़ों की बातों पर ज़रा भी विश्वास नहीं करता। इस बात को हम बिलकुल साफ़ कह देना चाहते हैं, जिससे कि इस समस्या को भारत की असली हालत न जानने वाले लोग ठीक तरह से हल कर सकें।

महात्मा गाँधी की तरकीबें सही हों या ग़लत हों, पर वे भारतीयों के दिमाग़ में भरी हैं और उन्हें आन्दोलन करने के लिए उत्साहित कर रही हैं। यदि ब्रिटिश नेता इस बात का अनुभव न करेंगे कि भारत को छोटे-छोटे अधिकार देने के दिन अब चले गए, और केवल उदारता से अब काम चल सकता है, तो राउन्डटेबल कॉन्फ्रेन्स असफल होगी। इसी तरह यदि हिन्दुस्तानी आपस की घरेलू बातें ठीक तय नहीं कर सकेंगे तो काम पूर्ण न हो सकेगा। काम तो भारतीय तथा ब्रिटिश दोनों दलों की बुद्धिमानी तथा उदार राजनीतिज्ञता से ही हो सकता है। यदि केवल प्रान्तों को ही अधिकार दिया गया तथा केन्द्रीय सरकार जैसी की तैसी रखी गई, तब भी आपत्ति का सामना करना पड़ेगा। इन सब बातों को कॉन्फ्रेन्स को हल करना पड़ेगा।

स्वराज्य-आश्रम पर धावा

सूरत का ११ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बड़े सवेरे वहाँ की पुलिस के २०० सिपाही, नए ऑर्डिनेन्स के अनुसार स्वराज्य-आश्रम पर क़ब्ज़ा करने आ धमके। पाटीदार आश्रम से स्वराज्य-आश्रम तक उन्होंने केवल इसलिए दौड़ लगाई कि जिसमें आश्रम में सोने वाले उठ कर कहीं भाग न जायँ। वहाँ की चीज़ों की एक फ़ेहरिस्त बना कर पुलिस ने राष्ट्रीय पताका उतार दी और उसके स्थान पर यूनियन जैक चढ़ा कर आश्रम में अपना ताला डाल दिया। कहा जाता है कि पुलिस के एक उच्च यूरोपियन पदाधिकारी ने आश्रम के कार्यकर्ता श्री० केशवराम को बेंतों से पीटा।

छः वर्ष की लड़की से बलात्कार

लाहौर के मैजिस्ट्रेट श्री० डिक्सने ने रामेश्वर माली को अपने मालिक की एक छः वर्ष की पारसी कन्या के साथ, जो वहाँ के एन० डब्ल्यू० रेलवे स्कूल में पढ़ती थी, बलात्कार करने के अभियोग में सात वर्ष की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है।

स्वराज्य की नई स्कीम

गोलमेज़ सभा में गए हुए भारत की रियासतों के सदस्यों ने एक नई स्कीम तैयार की है, जो उनकी राय से क़रीब-क़रीब पूर्ण औपनिवेशिक स्वराज्य की स्कीम है। अखिल भारतीय सभा में दो भाग होंगे। पहिले में रियासती सदस्य तथा प्रान्तीय कौन्सिलों के प्रतिनिधि होंगे और दूसरे में अखिल भारतीय सदस्य होंगे। यह आजकल की असेम्बली की तरह होगा। सेना-विभाग में भारतीयों को पूर्ण स्वतन्त्रता न होगी व उनके चुने मन्त्री इसके सिवाय अन्य सब बातों का निरीक्षण करेंगे।

मुरादाबाद में लाठियाँ चलीं

कुछ कॉङ्ग्रेस के नेताओं की गिरफ़्तारी की ख़बर सुन कर क़रीब ३०० आदमी एकत्रित हो गए। भीड़ में बड़ा उत्साह था, वे नेताओं से बोलने के लिए आग्रह करने लगे। इतने में कुछ पत्थर चले। भीड़ को हटाने के लिए पुलीस ने लाठियाँ चलाईं। कितने ही लोग घायल हुए हैं।

लाहौर में नए षड्यन्त्र केस की तैयारी

अभियुक्तों की गिरफ़्तारी के लिए भारी इनाम की घोषणा

पञ्जाब सरकार व संयुक्त प्रान्त की सरकार ने लाहौर षड्यन्त्र तथा एक और नए बड़े षड्यन्त्र में फँसे हुए अभियुक्तों का पता लगाने वालों के लिए २०,००० रुपयों से अधिक इनाम देने की घोषणा की है।

सी० आई० डी० के इन्सपेक्टर जनरल ने नोटिस निकाला है कि जो व्यक्ति इन अभियुक्तों में से किसी को भी अपने घर में स्थान देगा या और किसी तरह से उनकी सहायता करेगा, उसे सात साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी जायगी।

पण्डित जी

चन्द्रशेखर आज़ाद उर्फ़ पण्डित जी, वल्द बैजनाथ-राम उर्फ़ सीताराम, ज़ात ब्राह्मण, बैजनाथ टोले के, पूर्व-निवासी मेलूपुर थाना (बनारस)—ये सायडर्स की हत्या के अभियुक्त हैं। संयुक्त प्रान्त की सरकार ने भी इन पर काकोरी डकैती का तथा अन्य कई हिंसापूर्ण कार्यों में भाग लेने का अभियोग लगाया है।

यशपाल

यशपाल वल्द हीरालाल, ज़ात खत्री, नाधौंन ज़िला काँगड़ा के पूर्व निवासी, हाल में बच्छोवाली लाहौर के रहने वाले—ये लाहौर षड्यन्त्र में भाग लेने के अभियुक्त हैं।

कैलाशपति

कैलाशपति वल्द हृदयनारायण कायस्थ मौग्रंवान ज़िला आज़मगढ़ के निवासी। सन् १६२७—२८ में ये गोरखपुर ज़िले के बहालगञ्ज पोस्ट ऑफ़िस में क्लर्क थे, और पोस्ट ऑफ़िस का ३००० रुपया लेकर भाग गए हैं।

इनका पता लगाने वालों के लिए ४५० रुपए का पुरस्कार है, जिसमें से २००) संयुक्त प्रान्त के पोस्टमास्टर जनरल तथा शेष संयुक्त प्रान्त की पुलिस देगी। इन पर लाहौर षड्यन्त्र में भाग लेने का भी अभियोग लगाया गया है।

निम्न-लिखित व्यक्ति नए षड्यन्त्र तथा उसमें की गई हत्याओं, चोरियों और डाकों के अभियुक्त हैं।

हंसराज

हंसराज उर्फ़ "वायरलेस" की गिरफ़्तारी के लिए १५०० रुपए का इनाम है। ये लायलपूर के निवासी हैं, ज़ात ब्राह्मण तथा पिता का नाम गिरधारीलाल है।

सुखदेवराज

इनकी गिरफ़्तारी के लिए २०००) का इनाम है। ये असल में दीनानगर (गुरदासपुर) के निवासी हैं, पर हाल में कूचा चिड़ीमाराँ, मोरी दरवाज़ा लाहौर में रहते थे।

शिवचरन

शिव उर्फ़ शिवचरन बनिया की गिरफ़्तारी के लिए यू० पी० सरकार ने १५००) का पुरस्कार रक्खा है।

लेखराम

लेखराम वल्द कन्हैयाराम ब्राह्मण साकिन डिङ्गसराय, ज़िला हिसार की गिरफ़्तारी के लिए १५००) का पुरस्कार है। ये रोहतक में आर्य-समाज के मन्दिर के समीप वैद्यक का पेशा करते थे।

रामकिशन

ये मोहनलाल रोड लाहौर में भारत घी स्टोर्स में काम करते थे। और लाहौर की नौजवान भारत-सभा के प्रेज़िडेण्ट थे।

धनवन्त्री

धनवन्त्री वल्द दुर्गादत्त ब्राह्मण के पकड़ने के लिए ५००) का पुरस्कार है। ये गुरुदासपुर के पूर्व निवासी हैं पर अब लॉज रोड लाहौर में नम्बर पाँच के मकान में रहते थे। ये लाहौर की नौजवान भारत-सभा के एक प्रधान कार्यकर्ता थे।

प्रेमनाथ

इनकी गिरफ़्तारी के लिए १०००) का पुरस्कार रक्खा गया है। ये लाहौर के डिप्टी कमिश्नर के ऑफ़िस के सुपरिण्टेण्डेण्ट के पुत्र हैं।

प्रकाशो देवी

प्रकाशो देवी लाहौर के एक बैरिस्टर की पुत्री हैं, जिनके ऊपर प्रेमनाथ के साथ भाग जाने का इलज़ाम लगाया गया है। इनकी गिरफ़्तारी के लिए ५००) का पुरस्कार है।

विशेश्वरनाथ

विशेश्वरनाथ, वल्द ज्ञानचन्द ब्राह्मण, कनोहा, ज़िला रावलपिण्डी के निवासी हैं। इनकी गिरफ़्तारी के लिए ५००) का इनाम है।

दुर्गा देवी

ये भगवतीचरण की, जो कि लाहौर षड्यन्त्र में भगतसिंह के मुख्य सहायक थे, धर्मपत्नी हैं। १५ वीं अप्रैल को जो लाहौर में बम का कारख़ाना पकड़ा गया था, वह मकान भगवतीचरण ने ही किराए पर लिया था। ख़बर है कि वह जङ्गल में बम बनाने में विस्फोटन द्वारा मर गए। दुर्गा देवी नए षड्यन्त्र की अभियुक्त हैं।

सुना जाता है कि नए षड्यन्त्र के सम्बन्ध में अभी २५ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। क़रीब १२ अभियुक्त और हैं। हाल में दो अभियुक्त कलकत्ते में गिरफ़्तार किए गए हैं और लाहौर लाए गए हैं। कोई दो दिन पहिले रावलपिण्डी में भी छः आदमी इसी अभियोग में पकड़े गए हैं।

इस नए षड्यन्त्र की खोज अभी चल रही है और पूर्ण नहीं हुई है।

एक देशभक्त का बलिदान

लखनऊ शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट श्री० इम्तियाज़ अहमद अशर्फ़ी की ६ अक्टूबर को अपने गाँव में मृत्यु हो गई। उनको नमक-क़ानून तोड़ने के अभियोग में १४ अप्रैल को डेढ़ वर्ष के कठिन कारावास का दण्ड मिला था। लखनऊ जेल में उनके शरीर में क्षयरोग के चिन्ह मालूम होने लगे थे और इसलिए उन्होंने किसी पहाड़ी स्थान पर तब्दील कर देने की इच्छा प्रकट की थी। पर वे पहाड़ी स्थान में न भेजे जाकर, सुल्तानपुर जेल में भेज दिए गए, जहाँ उनकी दशा और भी ख़राब हो गई। जुलाई में वे बिना किसी शर्त के जेल से रिहा कर दिए गए। श्री० अशर्फ़ी अलीगढ़ यूनीवर्सिटी के ग्रेजुएट थे और दैनिक 'हमदम' के सम्पादकीय विभाग में काम करते थे।

भारत के सर पर नया बोझ

लन्दन का १४वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ भारत के लिए क़र्ज़ लिया जा रहा है। यह क़र्ज़ १ करोड़ २० लाख पौण्ड का है, जो सन् १६३५—३७ में वापस दिया जायगा। इस क़र्ज़ पर ब्याज की दर ६ प्रतिशत है। मालूम हुआ है कि इस 'लोन' की माँग कुछ ही घण्टों में पूरी हो गई और १० बजे बैङ्क खुलने के बाद ही बन्द कर देनी पड़ी।

इस सम्बन्ध में शिमला स्थित 'लीडर' का सम्वाददाता लिखता है कि गवर्नमेण्ट ने लन्दन में जो १ करोड़ २० लाख पौण्ड का क़र्ज़ ६ प्रति शत ब्याज की दर से लिया है, उसकी नीति का पता नहीं चलता। कुछ ही दिन पहिले इङ्गलैण्ड की मज़दूर गवर्नमेण्ट ने २ प्रति शत कम रेट से क़र्ज़ लिया था, फिर भारत के लिए इतना अधिक ब्याज देने की क्या आवश्यकता थी? इससे केवल यही सार निकाला जा सकता है कि सर जॉर्ज शुस्टर ने केवल अपने ही निर्णय के आधार पर लन्दन में हर एक बात तय की है। इस प्रकार वे लन्दन केवल भारतीय असेम्बली को अर्थ-विभाग दे डालने के विरुद्ध लड़ने ही नहीं गए हैं, बल्कि साथ ही वे वहाँ अपने शासन काल में उपस्थित होने वाली भारत सरकार की आर्थिक समस्याओं के सम्बन्ध में लन्दन के नागरिकों से सलाह भी लेंगे। यद्यपि सर जॉर्ज शुस्टर ने पिछले वर्ष असेम्बली के एक भाषण में भारत के आर्थिक पुनर्जीवन की बात कही थी, परन्तु मालूम होता है कि उनके भाग्य में इस पुनरुत्थान के उपलक्ष में भारतीयों का धन्यवाद पाना नहीं बदा है। वे स्पष्ट रूप से देख रहे हैं कि उन्हें अगले दो सालों में विकट आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ेगा जो क़र्ज़ लेकर ही हल किया जा सकता है।

कल का बादशाह आज का फ़क़ीर

दो साल पहिले जो अमानुल्ला ख़ाँ अफ़ग़ानिस्तान का सम्राट था और करोड़ों रुपयों का मालिक था, कहते हैं कि, आजकल रोम में उसे रुपए की कमी के कारण बहुत कष्ट है। भूतपूर्व बादशाह तथा महारानी सोरिया आजकल निर्वासित अवस्था में इटली की राजधानी रोम में रह रहे हैं।

अफ़ग़ानिस्तान के शाह नादिरशाह के अख़बार से मालूम होता है कि अमानुल्ला ख़ाँ ने हाल में तीन बार अपनी बुरी आर्थिक दशा की सूचना शाह को दी थी। अफ़ग़ानिस्तान के मन्त्री शाह वली ख़ाँ को उन्होंने लिखा था कि यदि वह काबुल में छोड़ी हुई उनकी तथा रानी सोरिया की जायदाद को किसी तरह से बिकवा सके तो अच्छा हो। नादिरशाह को, जो कि एक समय उसका सेनापति था, उसने इसी सम्बन्ध में दरख़्वास्त दी थी। पर उसने कहा कि आजकल अफ़ग़ानिस्तान की आर्थिक दशा अच्छी नहीं है, इससे मैं स्वतः कुछ नहीं कर सकता। उसने वह दरख़्वास्त 'जिरगा' के सामने रक्खी। जिरगा ने उसे नामञ्ज़ूर कर दी है व अमानुल्ला की सारी जायदाद ज़ब्त कर ली है। वे कहते हैं कि भूतपूर्व शाह के पास काफ़ी रुपया है, फिर वह अफ़ग़ानिस्तान के सारे जवाहिरात ले गया है, पेन्शन भी मिलती है। इतना ज़रूरत से भी ज़्यादा है।

भारत के भावी-वायसराय

कहा जाता है कि लॉर्ड इरविन के बाद लॉर्ड जेटलैण्ड भारत के वायसराय होकर आवेंगे। पर यदि उन्होंने यह पद स्वीकार न किया तो शायद सर हरबर्ट सेमुएल चुने जावेंगे। लॉर्ड इरविन आगे वायसराय नहीं रहना चाहते।

* * *

शहर और ज़िला

—इलाहाबाद ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'पब्लिसिटी ऑफ़िसर' श्री० श्रीनाथसिंह एक विज्ञप्ति में लिखते हैं कि यू० पी० कॉङ्ग्रेस के प्रेज़िडेण्ट को बहादुरगञ्ज के मकान नं० ८२ के मालिक ने ज़ब्ती के डर से, मकान ख़ाली करने का नोटिस दिया है। इस मकान में यू० पी० कॉङ्ग्रेस के सभी ऑफ़िस थे। एक इसी आशय का दूसरा नोटिस कटरे के मकान नं० ५२४ के मालिक ने श्रीमती कमला नेहरू को दिया है। इस मकान में कटरे का सत्याग्रह-आश्रम है। अभी तक यह निश्चित नहीं हुआ कि ऑफ़िस यहाँ से उठ कर कहाँ जायँगे।

—इलाहाबाद में संयुक्त प्रान्तीय कमिटी की जो बैठक १२ वीं अक्टूबर को हुई थी, उसमें एक प्रस्ताव पास हुआ है कि—यह कौन्सिल विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के प्रस्ताव का समर्थन करती हुई समस्त ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटियों का ध्यान उसके बहिष्कार की ओर आकर्षित करती है।

"स्वराज्य-भवन" पर पुलिस का धावा

१६ तारीख़ को पुलिस ने स्वराज्य-भवन पर धावा किया। समय दोपहर का था। आने-जाने वालों को फाटक पर पुलिस न होने के कारण कुछ सन्देह भी न हुआ। तलाशी के समय पं० मोहनलाल नेहरू, पं० चन्द्रकान्त मालवीय, तथा अवधेशनन्दन सहाय एडवोकेट मौजूद थे। एक अमेरिकन महिला मिस ख़िएडो, जिन्होंने अपना नाम कमला बेन रक्खा है और हिन्दुस्तानी साड़ी भी पहिनती हैं, साबरमती आश्रम से यहाँ आई हैं। वे भी उस वक़्त वहाँ थीं। तीन घण्टे तक तलाशी ली गई। सब कमरे, स्नानागार तक वालण्टियरों ने खोल कर दिखा दिए। एक कमरे की चाभी नहीं मिलती थी, पुलिस वालों ने उसका ताला तोड़ कर उसकी तलाशी ली। वे वर्किङ्ग कमिटी के प्रस्ताव की कॉपियाँ, कुछ पत्र तथा कॉङ्ग्रेस बुलेटिन की कॉपियाँ, उठा ले गए हैं। शहर में श्री० अब्दुल मोहीद, अब्दुल वहीद, अहमद हुसेन के घरों में तलाशियाँ ली गईं। श्री० अब्दुल वहीद के मकान पर पेशावर इनक्वाइरी की एक रिपोर्ट, सोवियट रूस, तथा डुप्लीकेटर मशीन पाई गई। कहते हैं कि इसी पर "क्रान्ति" नामक पर्चा छापा जाता है। पुलिस ये सब चीज़ें उठा ले गई।

बहिष्कार को ढीला करने का किसी प्रकार का अधिकार किसी कमिटी को नहीं है। कौन्सिल व्यापारियों के त्याग की हृदय से सराहना करती है और उनसे ऐसे कठिन समय में हानि उठा कर भी विदेशी वस्त्रों का पूर्ण बहिष्कार करके राष्ट्रीय आन्दोलन में सहायता पहुँचाने की प्रार्थना करती है।

—इलाहाबाद में १७ वीं अक्टूबर को सवेरे पहले-पहल एक स्त्री की गिरफ़्तारी हुई। श्रीमती किशोरी देवी सवेरे ८ बजे दारागञ्ज में पुलिस और फ़ौज को भड़काने के अभियोग में गिरफ़्तार कर ली गईं। वे वहाँ की लड़कियों के स्कूल में शिक्षिका हैं। पुलिस स्कूल के अहाते में, जहाँ वे रहती हैं, पहुँची और उन्हें गिरफ़्तार कर एक इक्के में लेकर चुपचाप चली गई। केस चल रहा है।

—मालूम हुआ है कि १८ वीं अक्टूबर को श्री० पण्डित मोतीलाल के दामाद श्री० आर० एस० पण्डित की मोटर, जो कि पुलिस ने जुर्माना वसूल करने के लिए ५०० रुपया में क़ुर्क़ कर ली थी, छोड़ दी गई है। बम्बई के किसी मुसलमान ने यह जुर्माना अदा कर दिया है। मोटर इलाहाबाद की 'यूनाइटेड मोटर्स लिमिटेड' कम्पनी में भेज दी गई है, जिसे एक नई मोटर के बदले में वह दी गई थी।

—१८ वीं अक्टूबर को इलाहाबाद में कालूराम नामक वालण्टियर को जनता को भड़काने के अभियोग में छः माह की सख़्त क़ैद और २० रुपया जुर्माने या डेढ़ माह की क़ैद की सज़ा दी गई।

—१८ वीं ता० को प्रभू को शिवगढ़ (इलाहाबाद) की दवाइयों की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—इलाहाबाद में १७वीं अक्टूबर को स्थानीय बॉयकाट सब-कमिटी की ओर से एक जुलूस चौक बाज़ार में निकाला गया था, जिसमें एक गदहे के ऊपर दो लकड़ी की सन्दूक़ें लदी हुई थीं। जिन पर 'ब्रिटिश माल का बहिष्कार करो' लिखा हुआ था। जुलूस के साथ बहुत सी तख़्तियाँ भी थीं, जिनमें 'ब्रिटिश माल का बहिष्कार करो'—'स्वदेशी को अपनाओ' और 'विदेशी माचिसों का बहिष्कार करो' लिखा हुआ था। इसी प्रकार के जुलूस शहर के अन्य भागों में निकालने का प्रबन्ध हो रहा है।

—इलाहाबाद की म्यूनिसिपेलिटी ने एक अजायबघर तथा एक पशुघर खोलने का निश्चय किया है।

—शनिवार ११वीं अक्टूबर को इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध पारसी नागरिक श्री० ए० एस० गज़्दर का देहान्त हो गया।

* * *

—कॉङ्ग्रेस की सब इमारतें तथा चीज़ें ज़ब्त हो जाने के कारण नड़ियाद के नेताओं ने एक नया आविष्कार किया है। कॉङ्ग्रेस सभाएँ एक विशाल छाते के नीचे हुआ करती हैं। जहाँ पुलिस वालों के आने की शङ्का नहीं होती, वहीं यह छाता गाड़ दिया जाता है व सभा कर ली जाती है। इस तरह बिना मकान के वहाँ का काम ठीक तरह चला जा रहा है।

—सहारनपुर का १६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि यहाँ की कचहरी में 'ए' क्लास के राजनीतिक क़ैदी चौधरी मङ्गलसिंह एक दीवानी के केस में हाथों में हथकड़ी डाल कर लाए गए थे। इससे वहाँ की जनता में बहुत असन्तोष फैला है।

—जब राष्ट्रपति जवाहरलाल मसूरी में थे तब कलकत्ते से श्री० सुभाषचन्द्र बोस ने उनसे पण्डित मोतीलाल जी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूछा था। उन्होंने एक तार द्वारा निम्न सन्देश भेजा है।

"पिता जी का स्वास्थ्य सन्तोषजनक नहीं है। हालत चिन्ताजनक हो चली है।"

—बनारस का १६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बनारस और चन्दौली तहसीलों के ३० मुखियों ने अपने इस्तीफ़े कॉङ्ग्रेस डिक्टेटर के पास भेजे हैं, जिन्होंने वे कलेक्टर के पास पहुँचा दिए। पटेलों की तरह इन मुखियों का कार्य गवर्नमेण्ट की ओर से गाँव के लोगों से लगान वसूल करना है।

* * *

पहाड़ी लोगों की पुलिस से मुठभेड़

पूना का १७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि जुनेर के आसपास की पहाड़ियों में वहाँ के कोलियों ने गाँधी-राज्य की स्थापना की घोषणा की है। दशहरे को शिवाजी के जन्म-स्थान शिवनेरी के क़िले पर राष्ट्रीय पताका फहराते ही वहाँ के कोली लोग उद्दण्ड हो गए। पहिले उन्होंने एक 'फ़ॉरेस्ट गार्ड' को नङ्गा कर बेतों से मारा, जिससे उसे अपनी रक्षा के लिए एक पास के पुलिस-थाने में भागना पड़ा। इसी प्रकार १० ता० को मण्डवा गाँव के लोगों ने पुलिस सब-इन्सपेक्टर का विरोध किया और उससे गाँव छोड़ देने को कहा, जिसके परिणाम-स्वरूप पुलिस को गाँव छोड़ देना पड़ा। इस घटना के बाद पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० स्टीवर्ट, ५० हथियारबन्द सिपाहियों और अफ़सरों के साथ मौक़े पर पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर उन्हें मालूम हुआ कि कोलियों ने अपने पहाड़ी गाँव पर ऐसे सिलसिले से पहरे बैठा दिए हैं कि पहाड़ पर पुलिस का चढ़ना ख़तरे से ख़ाली नहीं है। उन्होंने पहाड़ के तङ्ग रास्ते पर अपने आदमी इस प्रकार खड़े कर रक्खे थे कि केवल छः आदमी पुलिस के सब रिसाले का मुक़ाबला कर सकते थे। पुलिस पार्टी ने जब वहाँ अपने गुप्तचर भेजे तो उन्हें गाँव वालों ने लड़ कर अधिकार जमाने का चेलेञ्ज दिया। पुलिस ने अर्ध रात्रि में गाँव पर अधिकार जमा लिया। इस पर गाँव वालों ने मण्डवा गाँव ख़ाली कर पहाड़ियों पर क़तारबन्दी कर ली और धावे की राह देखने लगे। यह दशा छः घण्टे तक रही—बाद में स्त्रियाँ और बच्चे गाँव में लौट आए। साथ ही अहमदनगर ज़िले की पार्टी ने भी कोलियों को गाँव की ओर खदेड़ दिया। इसके बाद जब जङ्गल का लगान चुकाने के सम्बन्ध में बातचीत हुई तब कोलियों ने कहा कि शिवनेरी पर राष्ट्रीय झण्डा फहराते-समय यह कहा गया था कि अब गाँधी-राज्य की स्थापना हो गई है, और इसीलिए उन्होंने लगान देने से इन्कार किया। बाद में समझौता होने पर लोगों ने रुपया न देकर, लगान में स्त्रियों के ज़ेवर दिए। गाँव के कुछ नेताओं की गिरफ़्तारी भी हुई है।

कलकत्ते में भीषण डकैती और हत्याकाण्ड

कलकत्ते का १८ वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ आर्मीनियन स्ट्रीट की नं० ४२ की इमारत में मेसर्स मानिकचन्द गोकुलचन्द की गद्दी में डाकू बीस हज़ार रुपया लूट कर ले गए। साथ ही डाकुओं ने एक जमादार की हत्या भी की है। सन्ध्या को ६ बजे, जब कि मालिक अपने कर्मचारियों के साथ दिन भर का हिसाब साफ़ कर रहे थे, तब एकाएक एक युवक पञ्जाबी कुर्ता और धोती पहिने हुए अन्दर घुस आया और छुरा दिखा कर तिजोरी की चाबी माँगने लगा। उसके पीछे कमरे के तीन दरवाज़ों पर तीन बङ्गाली युवकों को रिवॉल्वर लिए खड़ा देख कर सबके होश उड़ गए। डाकू बीस हज़ार के नोट और रुपए लेकर भाग गए। जमादार के रोकने पर उन्होंने उसे गोली से मार डाला। उनमें से एक डाकू गिरफ़्तार कर लिया गया है। पुलिस मामले की जाँच कर रही है।

तिजोरी खोल कर जुर्माना वसूल किया गया

कराँची का १६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ की पुलिस ने सवेरे ६ बजे सेठ शिवनदास से जुर्माने के ५०० रुपया वसूल करने के लिए उनके कमरे पर धावा किया। कहा जाता है कि पुलिस उनकी लोहे की तिजोरी को खोल कर उसमें से ५०० रुपए निकाल ले गई।

* * *

भविष्य की नियमावली

१. 'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ९ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२. किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३. लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४. हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५. कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६. लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७. समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८. परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९. सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०. किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

२३ अक्तूबर, सन् १९३०

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

डोरा

[डॉक्टर धनीराम जी 'प्रेम', साहित्य-कोविद, एस० सी० पी० एस०, एडिनबर्ग]

भारतवासियों में स्वास्थ्य-सुधार के लिए विलायत आना फ़ैशन हो गया है। मैं धनवान् हूँ, कुछ लम्बा-चौड़ा कार्य भी नहीं करता। तबियत कवियों की सी पाई है। कुछ समय से शरीर ठीक न रहता था। अतः जब मित्रों ने विलायत जाने की सम्मति दी, तब मैंने पी० एण्ड ओ० को एक सीट के लिए लिख दिया।

मैं लन्दन पहुँच गया। परन्तु दो मास रहने के पश्चात् मुझे तो समझ नहीं पड़ा कि भारतीय धनिक लन्दन में 'स्वास्थ्य' के लिए आकर क्यों रहते हैं। वास्तव में उनका मुख्य उद्देश्य 'आधुनिक मनोरञ्जन' होता है और कदाचित् उस मनोरञ्जन में ही वे अपने रोग को भूल जाते हैं; परन्तु मेरा स्वास्थ्य यहाँ तनिक भी नहीं सुधर रहा था। अतः मैंने स्कॉटलैण्ड के हाईलैण्ड्स में जाकर रहने का निश्चय कर लिया।

स्कॉटलैण्ड में प्रकृति का सब से सुन्दर दृश्य 'ट्रोसाख़' तथा 'लौख़ लोमॉण्ड' (एक झील) में देखने को मिलता है। मनोरम हरी-भरी घाटियाँ नेत्रों को अत्यन्त प्रिय लगती हैं। इन्हीं घाटियों के एक ग्राम में मैंने अपना निवास-स्थान बनाया। महान् अन्तर! एक दूसरा संसार !! कहाँ लन्दन का कृत्रिम जीवन और कहाँ इस ग्राम का प्राकृतिक, साधारण तथा सत्यता का जीवन। जिससे मिलो, जिससे वार्तालाप करो, सच्चाई तथा प्रेम से पूरित। प्रकृति के दिए हुए सारे गुण इन ग्रामीणों में उपस्थित हैं, परन्तु नगरों के सभ्यता-जन्य दोष इनसे दूर हैं।

२

इस देश में गर्मी में दिन बहुत लम्बे होते हैं। रात्रि को ग्यारह बजे तक प्रकाश रहता है। मैं रात्रि का भोजन करके एक छोटी सी पहाड़ी पर सैर के लिए चल दिया। सुगन्धित वायु बह रही थी। वृक्षों पर कोमल नवपल्लव नृत्य कर रहे थे। पास के एक ऊँचे पत्थर पर बैठ कर मैं ध्यान-मग्न हो गया। कुछ लिखना चाहता था; परन्तु विषय न मिलता था। इतने ही में एक ओर से आर्त्तनाद सुनाई पड़ा! मैंने घूम कर देखा, नीचे घाटी में एक युवती एक शिकारी कुत्ते से भिड़ी हुई है। मैंने अपना पिस्तौल निकाला और दौड़ कर एक ख़ाली वार किया, कुत्ता भाग खड़ा हुआ। मैं धीरे-धीरे युवती के पास पहुँच गया।

युवती की आयु बीस के लगभग थी। चेहरा सुडौल था, रङ्ग गोरा था, नाक रक्त-भरी नलियों की सी। जिस समय मैं पहुँचा, वह युवती भुजा के उस घाव को देख रही थी, जो दुष्ट कुत्ते के कारण हो गया था। उसकी आँखें उठीं। कितनी आकर्षक, कितनी रस-भरी, कितनी छेदने वाली; परन्तु इन आँखों में लन्दन की सुन्दरी युवतियों का सा बनावटी हाव-भाव न था, बल्कि था भोलापन। चुलबुलापन न था, सादगी थी। मैंने अपनी टोपी उठा कर अभिवादन किया। उसने आँखें नीची कर लीं। मैं यह भी न देख सका कि बिहारी का 'अमिय हलाहल मद भरे'...यहाँ लागू हो सकता था या नहीं। नीचे ही को दृष्टि करके वह मधुर स्वर में बोली—"महाशय, अनेक धन्यवाद! आप समय पर सहायता न करते, तो कुशल न थी!" एक-एक शब्द तोल कर बोला गया था। भोलेपन की कुछ सीमा थी? इङ्गलैण्ड की एक बालिका में इतनी लज्जा, इतना शील! मैं आश्चर्य में आ गया। मैंने उत्तर में कहा—"यह तो मेरा कर्त्तव्य था! मुझे हर्ष है कि आपके काम आ सका! चोट गहरी तो नहीं आई?"

"धन्यवाद! मुझे अधिक चोट नहीं आई। थोड़ा ख़राश है; ठीक हो जायगा।"

"क्या घाव को मैं देख न सकूँगा?"

युवती ने कुछ उत्तर न दिया—केवल अपनी सुन्दर भुजा मेरी ओर कर दी। मैंने देखा, घाव में से थोड़ा मांस भी कट गया था। मैंने अपना रूमाल फाड़ कर उस स्थान पर बाँध दिया। वह कुछ न बोली। मैंने रूमाल बाँध कर उसका हाथ छोड़ दिया। युवती एक बार मेरी ओर देख कर मुस्कुराई और बिना कुछ कहे ग्राम की ओर भाग गई।

कितनी भोली बालिका है, लज्जाशील है, सुन्दर है। उसे तो भारत में पैदा होना था? परन्तु उसने यह क्या किया? पता तक नहीं दिया, नाम तक नहीं बताया—एक शब्द तक न कहा और भाग गई। पहले तो मुझे क्रोध आया; परन्तु फिर उसके नेत्रों की वही झलक सामने आ गई। मालूम होने लगा कि वह कह रही है:—

मज़ा बरसात का चाहो तो इन आँखों में आ बैठो।
सफ़ेदी है, सियाही है, शफ़क़ है, अब्रे-बाराँ है।

मैं उसी स्थान पर बैठ गया। मुझे मेरा विषय मिल गया। वहीं पद्य बनाने लगा।

ऊजड़ था उद्यान, हो चुका था हरियाली का बस अन्त।
तुमने आते ही सरसाया इसमें शोभावान बसन्त॥

३

युवती चली गई थी; परन्तु अपना प्रभाव छोड़ गई थी! यह मेरे जीवन में एक नई बात थी। यूरोप की स्त्रियों के प्रति मेरा बड़ा विलक्षण विचार था। मैं किसी पर विश्वास न कर सकता था। लन्दन की एक से एक सुन्दरी युवती से मिलने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ था। उनके हाव-भाव देखे थे, उनके कटाक्ष देखे थे, उनकी मदमस्त चितवन के इशारे देखे थे, परन्तु उनका कुछ भी प्रभाव मेरे हृदय पर अब तक न हुआ था। एक बार एक युवती बोली—तुम कितने आकर्षक हो; कितने मोहक हो, ऐसा लावण्य कहाँ से लाए?

मैंने उपेक्षा की हँसी हँस कर कहा—"तुम पर मुझे हँसी आती है।" परन्तु इस भोलेपन में कुछ अपूर्व आकर्षण था। मैं 'तेरी भोली चितवन ने जादू डाला' गाता हुआ होटल की ओर चल दिया।

ठीक समय पर नित्य जिस प्रकार मुल्ला नमाज़ पढ़ने जाता है, तथा पुरोहित आरती उतारने जाता है, मैं भी नित्य सायङ्काल को उसी घाटी में जाने लगा। सोचा—कदाचित् किसी दिन फिर उसके दर्शन हों। सातवें दिन मैं ध्यान में बैठा हुआ, एक कविता लिख रहा था कि एकाएक वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और बोली—"विघ्न के लिए क्षमा करें।" मैं चौंक पड़ा। टेढ़ा-सीधा अभिवादन करके बोला—"हैं! आप यहाँ?"

"आपका रूमाल वापस लाई हूँ। उस दिन के लिए एक बार फिर धन्यवाद!" रूमाल लेकर मैंने देखा, दोनों फटे हुए टुकड़े रेशमी धागे से बड़ी ख़ूबी के साथ सी दिए गए थे। रूमाल धोकर स्तिरी किया हुआ था और एक किनारे पर रेशमी धागे से उस पर "D" टँका हुआ था। मैं बोला—"आपने मुझ पर बड़ा अत्याचार किया है।"

"मैं अब जाने की आज्ञा चाहती हूँ।"

"तो फिर आप आई ही क्यों थीं? क्या थोड़ी देर बैठ कर आप अपना नाम-वाम भी न बताएँगी?"

बिना कुछ कहे युवती पास की हरी घास पर बैठ गई। पास ही मैं भी बैठ गया। मैं उसकी ओर देख रहा था और वह पृथ्वी की ओर देख रही थी। दोनों ही नीरव प्रकृति की भाँति शान्त थे। मैंने ही वह समा भङ्ग किया—"आपका नाम क्या है?"

"डौरोथी नैर्था विल्सन"

"इसका अर्थ क्या है?"

"अर्थ पूछ कर क्या करोगे?"—वह मुस्कुरा कर बोली।

"देखना चाहता हूँ कि जैसी आप हैं वैसा ही आपका नाम भी है या नहीं।"

"'डौरोथी' का अर्थ है 'ईश्वर का उपहार' तथा 'नैर्था' का अर्थ है 'सुन्दर' और 'विल्सन' मेरा पैतृक नाम है।"

"वास्तव में आप 'ईश्वर का सुन्दर उपहार' हैं। लोग आपको क्या कह कर पुकारते हैं?"

"डोरा।"

"डोरा! बड़ा प्यारा शब्द है, मिस विल्सन!"

"आप मुझे डोरा कह कर पुकारिए। मैं तकल्लुफ़ पसन्द नहीं करती। भारतीय तो लन्दन वालों की भाँति तकल्लुफ़बाज़ नहीं हैं, आप में यह कहाँ से आ गया?"

"जो आपकी आज्ञा! लन्दन ने ही मुझे तकल्लुफ़ सिखाया था।"

"मुझे भी आपसे कुछ पूछने का अधिकार है?"

"शौक़ से!"

"आपका क्या नाम है?"

"मुझे लोग 'मोहन' कहते हैं।"

"ईश्वर को धन्यवाद है कि यह इतना सरल है! मैं समझती थी कि बड़ा कठिन होगा! इसका अर्थ क्या है?"

"मोहित करने वाला!"

"आप यहाँ स्वास्थ्य के लिए आए हैं या सैर के लिए?"

"आया तो स्वास्थ्य सुधारने को हूँ, परन्तु एक सप्ताह से एक और रोग मोल ले लिया है।"

"क्या?"

"क्या आप डॉक्टर हैं?"

"नहीं तो। परन्तु शायद नर्स का काम कर सकूँ!"

"मेरे बड़े भाग्य। यदि डॉक्टर भी बन सको तो?"

वह कुछ न बोली, नीचे दृष्टि किए बैठी रही।

"आप चुप क्यों हैं?"

"अब जाने दीजिए।"—कह कर वह खड़ी हो गई।

"फिर मिलोगी?"

"शायद!"

"इस रविवार को?"

"शायद!"

"इसी स्थल पर?"

"शायद!"

"इसी समय?"

"शायद!"

मैं और कुछ पूछना चाहता था; परन्तु वह एक साथ भाग खड़ी हुई। थोड़ी दूर जाकर वह मुड़ी, हाथ हिलाया और दृष्टि से ओझल हो गई! मैं धीरे-धीरे गाने लगा:—

तुम्हीं ने दर्द दिया है, तुम्हीं दवा देना!

४

रविवार को डोरा आई। हमने दिल खोल कर बातें कीं। एक-दूसरे के हृदय को समझने लगे। डोरा एक भोली ग्रामीण बालिका थी; परन्तु उसकी शिक्षा बड़ी उच्च थी। अतः उसके विचार भी समुन्नत थे। उसने इतिहास पढ़ा था; भूगोल में उसका अच्छा ज्ञान था। वह देहली, आगरा, बम्बई, कलकत्ता आदि नामों को तोते की भाँति गा सकती थी। साहित्य में भी उसकी अच्छी पहुँच थी। शेक्सपियर के कई ड्रामे पढ़ चुकी थी। वड्सवर्थ, गोल्डस्मिथ, कौलेरिज, स्टीवेन्सन आदि ज़बानी सुना सकती थी। साधारण बातों में उपमा-अलङ्कार आदि का प्रयोग करती। इसके अतिरिक्त कुछ लिखने का भी शौक़ था। माता-पिता का हाल ही में देहान्त हो चुका था। स्वयं अपना जीवन व्यतीत करती थी। उसका सबसे सुन्दर गुण था—उसका विमल चरित्र। उसके इन गुणों ने मुझे उसकी ओर खींच लिया था। मैं समझता था कि हम दोनों का मिलन कठिन है; परन्तु फिर भी उसके अन्दर कोई शक्ति थी, जो सदा मुझे उसकी ओर आकर्षित करती रहती थी। मैं यह भी देखता था कि उसके हृदय में मेरी ओर कुछ झुकाव पैदा हो गया था। इन दिनों में हम लोग कई बार मिले थे। साथ-साथ घाटियों में घूमे थे। अखरोट जङ्गली वृक्षों के नीचे संसार के न जाने कितने विषयों पर वार्तालाप कर चुके थे।

* * *

एक रोज़ उसने मुझे चाय के लिए बुलाया। मैं अपना सन्ध्या का सूट पहन कर उसके घर पहुँचा। एक छोटे से बग़ीचे में एक छोटा सा, परन्तु शोभायमान, बँगला बना हुआ था। एक ओर एक खपरैल के नीचे दो गाएँ बँधी हुई थीं। दूसरी ओर एक छोटी सी लैण्डो थी। द्वार पर डोरा हाथ में एक फूल लिए खड़ी थी। मेरे पहुँचते ही उसने अपनी मधुर मुस्कान के साथ फूल मेरे कोट के छेद में लगा दिया। गायों को देख कर मैं बोला—डोरा, तुम भी गाएँ रखती हो?

"तो क्या गाय रखने का ठेका भारतवासियों ने ही ले रक्खा है?"

मैं शर्मा गया। हम लोग डॉइङ्ग-रूम में पहुँच चुके थे। वहाँ एक ३५ वर्ष के महाशय खड़े हुए थे। कपड़े तो धनिकों के से थे, परन्तु शक्ल से उजड्ड से ही दीख पड़ते थे। डोरा ने हम दोनों का परिचय कराया। आपका नाम था मि० लन। पहले तो आपका नाम सुन कर ही मुझे हँसी आई। फिर आपका भीषण भाषण हुआ। शब्दों का उच्चारण विलक्षण था। Money को 'मैनी' तथा Country को 'कौन्ट्री' बोलते थे। जले-भुने से बातें कर रहे थे। शायद उन्हें हमारी घनिष्ठता खटकती थी।

भोजन पर हम लोग बैठे। डोरा बोली—"मोहन! तुम्हारे लिए मैंने स्वयं कुछ तश्तरियाँ तैयार की हैं। सब खानी पड़ेंगी।" उसने सामने एक प्रकार का सूप (शोरवा) रख दिया। मैंने पूछा—"यह क्या है?"

"नाम पूछने की नहीं ठहरी। पहले खाओ, पीछे बातें करो।"—वह हँस कर बोली! सूप बड़ा स्वादिष्ट था, उसमें लाल-मिर्च भी पड़ी थी। मैं बोला—"डोरा! तुम क्या भारत में भी रही हो?"

"क्यों?"

"यह मिर्चें खाना तुमने कहाँ से सीख लिया?"

"मैं जानती थी कि तुम यह वस्तु पसन्द करते हो, मैंने एडिनबरा से मँगा ली।"

"अब तो इसका नाम बताओ।"

"इसे स्कॉच ब्रौथ कहते हैं। पूरा बनस्पति भोजन है।"

"डोरा! तुम जानती हो, आज तुम कितनी प्यारी लगती हो?"

डोरा इसका उत्तर न दे पाई थी कि मि० लन की त्यौरियों में बल पड़ गए। तीव्रता से बोले—"आजकल भारतीय अधिक स्वतन्त्रता दिखाते हैं; परन्तु हैं इङ्गलैण्ड के शासित ही।" मेरा मुख तमतमा गया। मैं क्रोध से बोला—"यहाँ इङ्गलैण्ड के शासन की बात मत करो, मि० लन! कुछ दिनों की बात है।"

डोरा से यह सहन न हो सका। वह मि० लन से बोली—लन! तुम्हारा यह व्यवहार मूर्खतापूर्ण है! तुम्हें शर्म आनी चाहिए!

मि० लन चुप हो गए। अब हम लोग डोरा के बैठने के कमरे में आए। डोरा ने ग्रामोफ़ोन पर नाच की एक ध्वन का रिकॉर्ड चढ़ा दिया। मैंने नाच के लिए डोरा का हाथ पकड़ा। इतने ही में मि० लन बोल उठे—"मेरा डान्स, डोरा!"

"खेद है, मि० लन! परन्तु मैं मोहन से प्रतिज्ञा कर चुकी हूँ।" मि० लन चुपचाप कुर्सी पर बैठ गए। हम लोगों ने कुछ देर नृत्य किया। मि० लन यह सहन न कर सकते थे। उन्होंने एक बहाना निकाल कर डोरा से बिदा ली।

डोरा बोली—मि० लन के व्यवहार को बुरा न मानना, मोहन!

"यह महाशय कौन हैं, डोरा?"

"यह मेरे पिता के एक मित्र हैं। मृत्यु के समय पिता इन्हें कभी-कभी मेरी देख-रेख करने को कह गए थे—परन्तु यह समझते हैं कि यह मेरे मालिक हैं। एक बार मुझसे विवाह तक का प्रस्ताव कर चुके हैं, परन्तु मैंने अस्वीकार कर दिया है!"

"क्यों, क्या तुम विवाह नहीं करना चाहतीं?"

"विवाह मैं अवश्य करना चाहती हूँ, मोहन! परन्तु मैं उन सब प्रथाओं के विरुद्ध हूँ, जो आजकल हमारे समाज में प्रचलित हो गई हैं। आजकल की लड़कियाँ बहुत स्वेच्छाचारिणी हो गई हैं। वे बिना सोचे-समझे विवाह करती हैं। उसका अन्त या तो व्यभिचार है या तलाक़। इङ्गलिश-समाज में घरों की दशा बड़ी शोचनीय है। पति-पत्नी में आपस में न सच्चा प्रेम है, न विश्वास। वे विवाह को पवित्र बन्धन नहीं, प्रत्युत एक शर्तनामा समझते हैं। मैं एक बार विवाह करूँगी, परन्तु ऐसे मनुष्य से, जिसकी होकर मैं सदा रह सकूँ। आज यहाँ बहुत कम ऐसे मनुष्य हैं!"

"डोरा, मुझे आश्चर्य होता है, तुम्हारा आदर्श एक भारतीय ललना का सा है!"

"क्या पूछते हो, मोहन! कितनी बार मैंने चाहा है कि मैं भारत में पैदा होती।"

"यह तो लन्दन में भी बीसियों लड़कियाँ चाहती हैं!"

"परन्तु भिन्न उद्देश्य से। वे किसी धनवान् भारतीय को फाँसना चाहती हैं। प्रेम के लिए नहीं, धन के लिए, गौरव के लिए!"

डोरा के लिए मेरे हृदय में और भी श्रद्धा बढ़ गई। मन ही मन मैं उसकी इन सच्ची बातों की प्रशंसा करने लगा। शब्द साधारण थे; परन्तु कितने मार्मिक, कितने सजीव, कितने उथल-पुथल मचा देने वाले! मैंने पूछा—डोरा, यह इतने उच्च विचार कहाँ से ले आई हो तुम?

"पुस्तकों से, मोहन! देखते हो, सामने मेरी पुस्तकों का संग्रह।"

एक छोटी सी आलमारी में दो सौ के लगभग पुस्तकें रक्खी थीं। राजनीति, इतिहास, साहित्य—सभी विषय उपस्थित थे। इतिहास के ख़ाने में मैं 'मदर-इण्डिया' देख कर चौंक पड़ा।

डोरा विस्मय से बोली—क्या हुआ, डीयर?

"तुमने 'मदर-इण्डिया' पढ़ी है?"

"हाँ!"

"किसलिए? किस उद्देश्य से?"

"यह जानने के लिए कि एक स्वार्थी व्यक्ति अपनी शक्ति के मद में एक निर्बल तथा पीड़ित राष्ट्र के विरुद्ध कितना असत्य लिख सकता है।"

"तो क्या तुम इसे सत्य नहीं मानती हो?"

"इसके उत्तर के लिए पास की पुस्तक देखो!"

मैंने पास की पुस्तक उठा कर देखी। हैं! यह तो लाला लाजपतराय की Unhappy India (दुःखी-भारत) थी। मैं विस्मय से खड़ा रह गया।

डोरा बोली—"आश्चर्य क्यों करते हो? मैं भारत के विषय में बहुत पढ़ चुकी हूँ। गाँधी की फ़िलॉसफ़ी को मैं श्रद्धा की दृष्टि से देखती हूँ। रवीन्द्र की 'गीताञ्जलि' के मैं कई पाठ कर चुकी हूँ। इसीलिए मैंने लाजपतराय की पुस्तक पढ़ी थी। किसी भी पददलित देश का नागरिक इससे ज़ोरदार पुस्तक अपनी मातृभूमि के लिए नहीं लिख सकता था। हम पश्चिम के लोग इस नवीन सभ्यता में इतने अन्धे हो रहे हैं कि दूसरे के गुण भी हमें दोष प्रतीत होते हैं। जो समाज गाँधी, रवीन्द्र तथा मेरे मोहन जैसे व्यक्ति पैदा कर सकता है, वह दोषों से भरा हुआ समाज कदापि नहीं है। अमेरिकन समाज के माथे व्यभिचार का भारी कलङ्क लगा हुआ है। फ़्रान्स तथा इङ्गलैण्ड के समाज के आचार-विचार भी रसातल को जा चुके हैं। भारत की रस्म-रिवाजें हमें हास्यजनक प्रतीत भले ही हों, परन्तु उन्होंने भारतीयों के चरित्र की काफ़ी रक्षा की है।"

उसके मुख पर एक अपूर्व प्रतिभा की झलक दीख रही थी। मैंने उसका हाथ पकड़ कर कहा—तुम स्वर्ग की देवी हो मेरी डोरा! यदि संसार के सारे प्राणियों के यही विचार हों, तो विश्व में कितनी शान्ति हो जाय! उसने दृष्टि नीचे को कर ली। फिर वह एक भोली बालिका बन गई। कौन कह सकता था कि इस ग्रामीण बालिका के हृदय में इतने विशाल भाव भरे थे।

कुछ देर तक शान्ति रही। वह कुछ बोल न सकी, मेरे पास भी कुछ बोलने को न रहा! उसके ओष्ठ हिले, शान्ति भङ्ग हुई। वह बोली—मैंने कुछ लाइनें लिखी हैं।

"पियानो पर गाकर सुनाना होगा।"

"वैसे ही सुन लो।"

"तो मैं नहीं सुनता।" वह पियानो पर गाने लगी—

No rose in all the world, until you came.
No Star, until you shone upon Life's sea.
No song in all the world, until you spoke.
No hope, until you gave your heart to me.

भावार्थ—

जब तक तू आया न, पुष्प था खिला न बन में।
चमका था नक्षत्र न मेरे जीवन-घन में॥
तू बोला, सङ्गीत-सुधा की वर्षा आई।
आशा-रश्मि, हृदय देकर तूने झलकाई॥

५

सूर्य भगवान् अस्त हो गए थे। रात्रि अन्धकार का आभरण पहने अपने आगमन की सूचना दे रही थी। मैं उसी घाटी में घास पर पड़ा था, जहाँ डोरा का प्रथम दर्शन हुआ था। तब में और अब में कई मास का अन्तर हो गया था और इस बीच में मैंने इस ग्राम में बैठे हुए अपने विचारों में अनेकों परिवर्त्तन किए थे। समय किधर मुझे ले जायगा? डोरा के उस प्रेम-नाटक का क्या अन्त होगा? जिस प्रकार नाट्य-मन्दिर में बैठे हुए दर्शक एक पहेली वाले नाटक का अन्त जानने को आतुर हो उठते हैं, वही दशा मेरी थी। मैं ही उस नाटक का नायक हूँ और मुझी को उसके अन्त का कुछ ज्ञान न हो! रह-रह कर मेरा चित्त व्याकुल हो उठता था। क्या

डोरा को अपना प्रेम प्रकट कर दूँ ? परन्तु क्या मैं उससे विवाह कर सकूँगा ? क्यों, आपत्ति ही क्या है ? मैं तो अन्तर्जातीय विवाह का पक्षपाती हूँ। समाज उँगली उठाएगा, उठाया करे क्या सच्चा प्रेम उस पर बलिदान कर दूँ ? परन्तु क्या डोरा इस विवाह के लिए सहमत होगी ? उसके हृदय में मेरे लिए कितना प्रेम है, कितनी श्रद्धा है ! परन्तु कदाचित् पीछे से कुछ × × × परन्तु छिः ! उस देवी से ऐसी आशा ? यदि मैंने उसका प्रेम स्वीकार न किया तो उसका हृदय टूट जायगा। वह इसे सहन न कर सकेगी ! यही विचार मेरे हृदय में उथल-पुथल मचा रहे थे कि मुझे किसी के आने का शब्द सुनाई दिया। मैंने समझा, वह डोरा है परन्तु उठ कर देखा तो मि० लन सामने से आ रहे थे। मैं अपना हाथ आगे बढ़ा कर बोला—हैलो ! मि० लन, इस समय इधर कैसे आना हुआ ?

लन तड़क कर बोले—मैं तुमसे हाथ मिलाने नहीं आया, लड़के ! तुम्हें सावधान करने आया हूँ !

"कहिए, क्या हुआ ?"

"तुम डोरा तथा मेरे बीच में आकर अच्छा नहीं कर रहे हो।"

"इसका अर्थ ?"

"तुम डोरा से प्रेम करते हो ?"

"हाँ, परन्तु आपसे उसका सम्बन्ध ?"

"सुनो, डोरा मेरी है। जब तक मैं जीवित हूँ, तब तक कोई उसे अपनी बनाने की चेष्टा भी नहीं कर सकता। ईसा के नाम पर मैं कहता हूँ कि जो मेरे मार्ग में आएगा, उसे मेरी छुरी अपना भोजन बना लेगी !"

"महाशय, छुरी पर इतना भरोसा न करो। कहीं आप ही को उसका भोजन न बनना पड़े। डोरा का नाम आप भूल जाइए, वह आपसे घृणा करती है !"

लन एक विकट हँसी हँस कर बोला—मुझसे घृणा करती है और एक काले आदमी को प्यार करती है ! अहा, लड़के ! मैं एक हिन्दुस्तानी को अपने ऊपर विजयी न होने दूँगा !

क्रोध से मेरे नथने फूल गए। मेरा देश परतन्त्र है, ठीक है; परन्तु हम लोगों ने राष्ट्रीय गौरव तथा सम्मान को अभी तिलाञ्जलि नहीं दे दी। मैंने लन का कॉलर पकड़ कर कहा—बेहूदे, अपनी जिह्वा को वश में करके बात कर; नहीं तो सारी सफ़ेद चमड़ी को धूल में मिला दूँगा !

लन लाल होकर बोला—कॉलर छोड़ दे, यू इण्डियन डॉग !

उसका वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि मैंने उसको दो घूँसे लगा कर पृथ्वी पर गिरा दिया और उसकी छाती पर बैठ कर मैं उसका कण्ठ दबाने लगा। लन धीरे-धीरे बोला—"क्षमा करो मोहन ! मेरा अर्थ अपमान करना न था। ईर्ष्या से मैंने ऐसा किया !" मैंने उसे उठा कर कहा—"जा, वह तेरा मार्ग पड़ा है। अब किसी भारतीय से इस प्रकार छेड़-छाड़ न करना !"

लन अपना टोप उठा कर अपना गाल सुहलाता हुआ चला गया !!

६

दूसरे दिन मैं डोरा से मिलने गया। उसे रात्रि की घटना का कुछ पता न था। मेरा मन खिन्न था, परन्तु ऊपर से मैं प्रसन्न था। कुछ देर मेरी ओर देख कर डोरा बोली—तुम्हारे मुख पर आज अनुपम तेज झलक रहा है, मोहन !

"तुम तो पगली हो डोरा !"

"मैं पगली हूँ सही; परन्तु तुममें बहुत परिवर्त्तन हो गया है। यदि कुछ दिन इसी प्रकार स्कॉच ब्रौथ तथा स्कॉच पौरिज खाओ, तो स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो जायगा।"

"परन्तु यह वस्तुएँ अब अधिक दिवस खाने को न मिल सकेंगी डोरा !" डोरा का मुख निस्तेज हो गया, मुख की मुस्कान मुख ही में रह गई। वह धीमे स्वर से बोली—"क्यों ?"

"मैं शीघ्र ही लन्दन जा रहा हूँ !"

"इसका अर्थ है वियोग ?"

"शायद !"

"क्या स्कॉटलैण्ड से जी ऊब गया ?"

"जिस स्कॉटलैण्ड की शोभा डोरा बढ़ा रही हो, उससे किसी का भी जी नहीं ऊब सकता !"

"तब क्या डोरा से कुछ अपराध हो गया ?"

"डोरा जैसी पवित्र आत्मा अपराधी नहीं हो सकती। अपराधी मैं ही हूँ। अच्छा होता, मैं यहाँ न आता। मैं तुम्हारे तथा किसी अन्य प्राणी के बीच में आ रहा हूँ !"

डोरा मेरा हाथ पकड़ कर पृथ्वी पर झुक गई। उसके नेत्रों में आँसू आ गए थे। मद के स्थान में करुणा थी। रोते-रोते वह बोली—तुम नहीं देखते, डीयरेस्ट, मैं तुमसे प्रेम करती हूँ !

"मैं इसे जानता हूँ डोरा, इसीलिए तो मैं अपराधी हूँ। मैं एक परदेशी हूँ। मैं तुम्हारे प्रेम के योग्य हूँ, इसमें सन्देह है। हम दोनों के जीवन में काफ़ी अन्तर है और रहेगा !"

"तुमने प्रेम को क्या समझा है मोहन ? क्या प्रेम देश, जाति, धर्म आदि का अन्तर देखता है ? हम सब उसी जगदीश्वर की सन्तान हैं। फिर यदि दो हृदय एक होकर सुखी होना चाहते हैं, तो जीवन के छोटे-छोटे मत-भेद उस सुख में क्योंकर बाधा डाल सकते हैं ! क्या तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते ? क्या मैं तुम्हारे जीवन की छाया बन कर तुम्हारे साथ नहीं रह सकती ?"

"डोरा ! मुझे शान्ति से जाने दो ! तुम्हारे प्रेम के योग्य अनेकों मनुष्य हैं।"

"अच्छा मोहन, जाओ ! मैं तुम्हारे मार्ग में बाधा न डालूँगी; परन्तु तुम यह न समझना कि मैं दूसरे की हो सकती हूँ। जिसकी मूर्त्ति हृदय में बैठाई है, उसी की स्मृति में जीवन व्यतीत हो जायगा !"

मेरे हृदय में उथल-पुथल हो रहा था। मैं एक ओर एक कोच पर बैठ गया। पियानो पास रक्खा था। डोरा उस पर अपना सिर रख कर रोने लगी। कुछ देर बाद उसकी उँगलियाँ पियानो पर चलने लगीं। पियानो रोती हुई ध्वन निकाल रहा था। थोड़ी देर में डोरा का मर्म भरा स्वर उसके साथ मिलने लगा। वह गा रही थी :—

By the parting of our ways,
You took all my happy days
And left me lonely nights.

मैं धीरे-धीरे उठा तथा उसके पीछे आकर खड़ा हो गया। वह गाने में मस्त थी।

Morning never comes too soon,
I can face the afternoon,
But Oh, those lonely nights.
I feel your arms around my neck,
Your kisses linger yet,
You taught me how to love you,
Now teach me how to forget.

मैंने उसके हाथ पर हाथ रख दिया। वह मेरी ओर मुड़ी। मैंने कहा—"मेरी डोरा, मैं लन्दन नहीं जा रहा हूँ। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" उसके नेत्र चमक उठे। पियानो छोड़ कर वह मेरे सम्मुख आ खड़ी हुई और बोली—"नहीं, मोहन ! तुम मुझे भुलावा दे रहे हो ! क्या मैं इतनी भाग्यशालिनी हो सकती हूँ ? एक बार फिर कह दो—'तुम्हें प्रेम करता हूँ', ओह, मोहन, प्रियतम !"

"डोरा, डार्लिङ्ग ! तुम मेरे हृदय की रानी हो, तुम्हें विलग नहीं कर सकता।" डोरा ने अपनी भुजाएँ मेरे गले में डाल दीं। इतने ही में एकाएक द्वार खुला और मि० लन ने प्रवेश किया। डोरा उन्हें देख कर क्रोध में भर कर बोली—"मि० लन, इस समय तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

"डोरा, तुम यह उचित कार्य नहीं कर रही हो !"

"तुम अपना काम देखो, मैं उचित-अनुचित सब समझती हूँ।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा। अच्छा, गुडबाई !"

डोरा की ओर से लन मेरी ओर आया तथा मेरा हाथ पकड़ कर कहने लगा—तनिक खिड़की तक आइए, आपसे कुछ कहना है !

मैं उसके साथ खिड़की तक गया। डोरा वहीं खड़ी रही। मेरा ध्यान खिड़की के बाहर वाले खेत की ओर था कि डोरा चीख़ पड़ी—"मोहन, मोहन !" मैं हक्का-बक्का होकर देखने लगा—लन की छुरी मेरे हृदय की ओर वेग से आ रही थी। मैं कुछ कर भी न पाया कि डोरा मेरे तथा लन के बीच में विद्युत् की भाँति आ खड़ी हुई तथा एक सेकेण्ड के उपरान्त कटे हुए वृक्ष की भाँति पृथ्वी पर गिर पड़ी। सर्वनाश हो गया !! लन की छुरी उसके हृदय के पार हो गई थी। मैंने नीचे झुक कर देखा, चोट घातक थी। मुख निस्तेज हो गया था। शरीर मुरझाए फूल की भाँति पड़ा था। टकटकी मेरी ओर लग रही थी। मैंने डोरा को उठा कर कोच पर लिटाया और बच्चे की भाँति रोने लगा। वह बोली, प्रतीत होता था कि वे शब्द एक अन्ध-कूप से आ रहे हैं। मैंने सुना—"मोहन !" मैंने उसका शिर अपनी गोद में रख लिया। वह फिर बोली—"क्यों रोते हो, प्यारे ! आज हमारे प्रेम का दिन है—अनन्त प्रेम का दिन !! मैं बड़ी भाग्यशालिनी हूँ, जो तुम्हारे लिए मर रही हूँ तथा तुम्हारे मुख से यह सुनने के अनन्तर कि तुम मुझसे प्रेम करते हो ! अब तुम मेरे हो। कभी, किसी जीवन में, पुनर्मिलन होगा ! मेरा सोच न करना। समझना कि एक स्वप्न था, बीत गया ! छाया थी, मिट गई। तुमने देखा, भारत के आदर्श को सामने रखने वाली नारियाँ इङ्गलैण्ड में भी हैं ! मुझे अपना हाथ दो !"

मैं रोते-रोते बोला—"डोरा, हृदयेश्वरी ! तुम मेरे योग्य नहीं थीं। नहीं-नहीं, इस संसार के योग्य नहीं थीं। जाओ, वहाँ तुम सम्राज्ञी होकर विराजोगी। आज तुम्हारे सम्मुख प्रण करता हूँ कि जीवन के शेष दिन तुम्हारी स्मृति में व्यतीत होंगे !" वह अवसर ऐसा था, जब भाव अनेकों थे; परन्तु उनके लिए शब्द न मिल सकते थे। मुझसे अधिक न बोला गया। हम दोनों ने एक-दूसरे का अन्तिम चुम्बन किया। वह शहद से भी मधुर था, शान्ति से भी नीरव था, मृत्यु से भी भयङ्कर था।

कुछ घण्टों के उपरान्त अस्पताल में डोरा उड़ गई। लन पुलिस के हवाले हुआ।

* * *

भारत से टूटा हुआ शरीर लेकर गया था, विलायत से हृदय भी तोड़ लाया। जब डोरा की याद आती है, उस रेशमी रूमाल को देख कर रो लेता हूँ। उसकी स्मृति का वही शेष चिन्ह है। जब वह थी, फटा हुआ रूमाल जोड़ कर ले आई थी। आज हृदय टूटा हुआ पड़ [illegible], परन्तु उस [illegible] ए डोरा कहाँ है ?

* * *

नवीन मुस्लिम संसार

[श्री० मथुरालाल जी वर्मा, एम० ए०]

एक समय था, जब स्पेन से मक्का तक तथा उत्तरी अफ़्रीका से मङ्गोलिया तक इस्लाम का दबदबा फैला हुआ था। इस्लाम के विजयी सैनिकों, प्रतापशाली सम्राटों तथा धुरन्धर विद्वानों और कट्टर विचारों ने संसार की सभ्यता को और का और ही कर दिया था। उस समय सम्पूर्ण जगत इस्लाम का लोहा मानने लगा था। लेकिन समय ने पलटा खाया और मुसलमानों का बल-वैभव छिन्न-भिन्न होने लगा। १८ वीं शताब्दी के अन्त तक भारतवर्ष से, उत्तरी अफ़्रीका और स्पेन से तथा पश्चिमी तुर्किस्तान से मुसलमानों का राज्य नष्ट हो चुका था। उस समय काबुल से क़ुस्तुन्तुनिया तक मुसलमानों का राज्य अवश्य था, परन्तु वहाँ भी पश्चिम की गोरी जातियाँ अपना प्रभाव जमाने लगी थीं। इन देशों पर उनका प्रभाव इतने वेग से फैला कि १९वीं सदी में तो एक भी मुस्लिम राज्य ऐसा न रह गया, जिस पर यूरोप के किसी न किसी राज्य का काफ़ी प्रभाव न हो। इस काल में अफ़ग़ानिस्तान को अङ्गरेज़ दो बार हरा चुके थे। ईरान में दक्षिण की ओर से अङ्गरेज़ तथा उत्तर की ओर रूसी बढ़ते चले जा रहे थे। तुर्की की अवस्था भी कुछ अच्छी न थी। फ़्रेञ्च, रूसी और यूनानी लोगों की दृष्टि में तुर्की सरकार की कोई प्रतिष्ठा न थी, यहाँ तक कि तुर्की राज्य "यूरोप का मरीज़" कहलाने लगा। मिश्र में फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड का अड्डा जम चुका था तथा उत्तरी अफ़्रीका में मोरक्को आदि प्रदेशों पर फ़्रान्स और स्पेन का क़ब्ज़ा हो गया था।

यूरोपीय महासमर से पूर्व मुसलमानों की आबादी मक्का से स्पेन तक तथा उत्तरी अफ़्रीका से बेकाल की झील तक फैली हुई थी। इन देशों में इस्लामी सभ्यता का ज़बर्दस्त प्रचार था। लेकिन इस समय भी मुसलमानों की राजनीतिक शक्ति शून्य के बराबर थी। भारतवर्ष के मुसलमान निःशस्त्र तथा अङ्गरेज़ों के दास थे, स्पेन के मुसलमान स्पेनिश सरकार के अधीन थे। उत्तरी अफ़्रीका के देश छिन्न-भिन्न और अशिक्षित तथा फ़्रान्स और स्पेन से दबे हुए थे। अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, तुर्की तथा दो-एक और छोटे-मोटे देश कहने को स्वतन्त्र अवश्य थे, लेकिन उनमें न कोई शक्ति थी न मज़बूत सङ्गठन। युद्ध आरम्भ होने के बाद जब तुर्की जर्मनी के साथ मिल गया और अङ्गरेज़ों ने मिश्र पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया तो संसार के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ यह अनुमान करने लगे कि महासमर का परिणाम और चाहे जो कुछ भी हो, परन्तु इसका यह परिणाम अवश्य होगा कि मुस्लिम-सत्ता पृथ्वीतल से नष्ट हो जावेगी। समर के अन्त में जब विजयी मित्रों ने तुर्की को पङ्गु बना कर एक ओर रख दिया और क़ुस्तुन्तुनिया पर अधिकार जमा लिया तो राजनीतिज्ञों का पूर्वानुमान और भी दृढ़ हो गया। उस समय यूरोप के प्रायः सभी राजनीतिज्ञ समझने लगे थे कि "यूरोप के मरीज़" की क़ब्र तैयार हो गई, अब उसकी ज़िन्दगी के केवल गिनती के कुछ दिन बाक़ी हैं।

सन् १९०८ के आस-पास तुर्की का राज्य बसरा से लेकर एक ओर युगोस्लाविया तक और दूसरी ओर ट्रिपोली तक फैला हुआ था। लेकिन युद्ध के पश्चात् यह सङ्कुचित होकर केवल क़ुस्तुन्तुनिया से ईरान की उत्तर-पश्चिमी सीमा तक ही रह गया। ईराक़, सीरिया, पैलेस्टाइन और अरब को पहिले तो विजयी मित्रों ने स्वातन्त्र्य का लोभ दिखा कर अपनी ओर मिला लिया था, परन्तु जब युद्ध का अन्त हो गया तो उन्हें "रक्षित स्वतन्त्र राष्ट्र" कह कर उन लोगों ने उन्हें अपने ही क़ब्ज़े में बनाए रक्खा। विजेताओं के दबाव में पड़ कर अगस्त सन् १९२० में सेवर की सन्धि में तुर्की सरकार ने यह स्वीकार कर लिया कि सीरिया फ़्रान्स के, तथा ईराक़ और पैलेस्टाइन अङ्गरेज़ों के रक्षित राष्ट्र बना दिए जायँ। इसके अतिरिक्त तुर्की के अन्दर भी अरमेनिया का एक पृथक राज्य खड़ा कर दिया गया और थ्रेस तथा स्मरना के आस-पास का देश यूनान के सिपुर्द कर दिया गया। इस प्रकार जब मुसलमानों के सब से शक्तिशाली राज्य का अङ्ग-भङ्ग हो गया, और सम्पूर्ण इस्लामी जगत के सरदार ख़लीफ़ा ने यूरोपीय विजेताओं का लोहा मान लिया तो फिर मुसलमानों का रह ही क्या गया? मिश्र पर अङ्गरेज़ों ने पहिले ही से अधिकार कर लिया था, और ईरान तथा अफ़ग़ानिस्तान कोई उन्नत राज्य नहीं थे। इसके सिवा ईरान को एक ओर से अङ्गरेज़ों ने और दूसरी ओर से रूसियों ने दबा रक्खा था। अफ़ग़ानिस्तान भी इन्हीं दोनों शक्तियों के बीच में पड़ कर पिसा जा रहा था। भारत, स्पेन तथा उत्तरी अफ़्रीका के मुसलमान परतन्त्र होने के कारण किसी गिनती में ही नहीं थे। अतः यह प्रत्यक्ष जान पड़ता था कि संसार के भावी इतिहास के निर्माण में इस्लाम का कोई हाथ न रहेगा—जगतीतल पर इस्लाम के राजनीतिक जीवन की लीला समाप्तप्राय है।

परन्तु यह किसको पता था कि २५ करोड़ मुस्लिम जनता में एकाएक नवजीवन का सञ्चार हो जायगा और संसार के देखते-देखते ही मुस्लिम देशों में रूपान्तर होकर वे स्वतन्त्र, सभ्य, सुदृढ़ तथा प्रजासत्तात्मक राज्य बन जाएँगे। पिछले केवल ११-१२ वर्षों के भीतर ही भीतर मुस्लिम जगत का सम्पूर्ण रूपान्तर वैसा ही आकस्मिक और कल्पनातीत है, जैसे नेपोलियन का उदय और मराठों का अधःपतन। युद्ध समाप्त भी न होने पाया था, समर-भूमि में रक्त अभी सूखा भी न था कि विजेताओं का विजयोल्लास भली प्रकार प्रकट होने के पहिले ही क़ुस्तुन्तुनिया से अफ़ग़ानिस्तान तक, बल्कि इससे भी आगे कलकत्ता तक मुस्लिम जगत में आज़ादी के नारे सुनाई देने लगे। चार सौ वर्षों का मरीज़ इस्लाम एकाएक रुस्तम की भाँति संसार के सामने अपना पौरुष प्रकट करने के लिए खड़ा हो गया। परिस्थिति के अनुकूल उसका नवीन पौरुष कई रूपों में प्रकट हुआ। भारत में उसने निःशस्त्र ख़िलाफ़त आन्दोलन का रूप धारण किया तो अफ़ग़ानिस्तान में उसने सशस्त्र स्वातन्त्र्य घोषणा का आकार पकड़ा, ईरान में वह राज्य-सुधार की लहर बन गया तो ईराक़, सीरिया आदि में वह विदेशी शासकों के प्रति घोर असन्तोष के रूप में प्रकट हुआ। उसी नवीन पौरुष का फल था कि मोरक्को, अलजीरिया, ट्रिपोली तथा तुर्की ने स्वतन्त्रता की प्राप्ति और प्रजातन्त्र की स्थापना के लिए युद्ध आरम्भ कर दिया, मिश्र में नवीन विचारों की बाढ़ अङ्गरेज़ी सत्ता के बेड़े को डावाँडोल करने लगी। आश्चर्यचकित होकर यूरोप के राष्ट्र इस नवीन मुस्लिम संसार की ओर देखने लगे। मरीज़ क्यों उठ खड़ा हुआ, मुर्दे में जान कैसे आ गई, यही यूरोप के राजनीतिज्ञों की चिन्ता का सब से प्रधान विषय बन गया।

मुस्लिम जगत के इस नवीन जागरण के तीन मुख्य स्वरूप थे—स्वाधीनताभिलाषा, सामाजिक सुधार तथा धार्मिक रूपान्तर; और इन तीनों ही अङ्गों पर पश्चिमीय विचारों का गहरा प्रभाव था। १९ वीं शताब्दी के अन्त तक मुसलमानों ने ईसाई सभ्यता, ईसाइयों की शासन-प्रणाली, उनकी भाषा तथा विज्ञान को घृणा की दृष्टि से देखा था, लेकिन २० वीं शताब्दी के आरम्भ से वे अनुभव करने लगे कि पश्चिमी सभ्यता की उपेक्षा करना, सभ्यता की दौड़ में पिछड़ना है। इसलिए शासन-प्रणाली, आन्दोलन-शैली, सैनिक सङ्गठन, शिक्षा-प्रचार, समाज-सुधार आदि सभी क्षेत्रों में वे यूरोपीय सभ्यता का अनुकरण करने लगे। जापान की भाँति वे भी यूरोप को, यूरोप जैसा बन कर ही मात कर देने का प्रयत्न करने लगे; और कहना न होगा, इस कार्य में उन्हें आशातीत सफलता मिली। जिन मुस्लिम देशों में यूरोप का जितना ही अनुकरण किया गया, वे देश उन्नति और विकास की प्रभा से उतना ही प्रकाशमान हो उठे।

अगस्त सन् १९२० में क़ुस्तुन्तुनिया की त्रस्त सरकार ने तुर्की साम्राज्य के बटवारे को स्वीकार कर लिया। दूसरी ओर यूनान की सेनाएँ अपने कल्पित अधिकारों की प्राप्ति के लिए स्मरना की ओर बढ़ने लगीं। इन दोनों घटनाओं ने तुर्कों के जीवन में एक नवीन स्फूर्ति का सञ्चार कर दिया। क़ुस्तुन्तुनिया-सरकार की कायरता से मुस्तफ़ा कमाल पाशा को बहुत ही दुःख हुआ। उन्होंने फ़ौरन जनता का नेतृत्व ग्रहण करके क़ुस्तुन्तुनिया-सरकार को दरकिनार किया, तथा अङ्गोरा में नवीन सरकार की स्थापना करके स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। जब उन्होंने आरमेनिया के नवीन राज्य को भी नष्ट कर दिया और रूस के साथ पृथक सन्धि कर ली तो यूरोप की आँखें खुलीं। यूरोपियन शक्तियाँ सेवर की सन्धि में परिवर्तन करने की बात सोच ही रही थीं कि कमाल पाशा अपनी सेना के साथ पश्चिम की ओर बढ़े और सन् १९२२ के सितम्बर में यूनानी तथा अङ्गरेज़ी सेनाओं को हरा कर उन्होंने स्मरना पर अधिकार कर लिया। उसी मास में फ़्रान्स तथा इटली की सेनाएँ युद्धक्षेत्र से वापिस लौट गईं तथा इसके एक मास बाद लोसान नगर में बाक़ायदा सन्धि-परिषद् की बैठक शुरू हो गई। इस प्रकार दो वर्षों के भीतर ही भीतर नवीन तुर्की ने यूरोप के छल और बल दोनों पर विजय प्राप्त कर ली।

सन् १९१९ से ईरान की सेना तथा सरकार अङ्गरेज़ों की अधीनता में थीं। इस समय ईरान-सरकार की लगभग वही दशा थी जो क्लाइव के समय में मीरजाफ़र की और महादजी सींधिया के समय में शाहआलम की थी। ईरान का बादशाह नाम मात्र का बादशाह था। राज्य अङ्गरेज़ों का था और नाम था बादशाह का। तुर्की के साथ ही साथ ईरान में भी स्वतन्त्रता की लहर उमड़ी और फ़रवरी सन् १९२१ में रिज़ा ख़ाँ के नेतृत्व में एक भारी क्रान्ति हो गई, जिसके फल स्वरूप ईरान का नामधारी शाह ईरान को छोड़ कर यूरोप भाग गया और रिज़ा ख़ाँ ईरान के प्रधान सचिव बना दिए

गए। कुछ दिनों के बाद उन्होंने सम्राट के सिंहासन को भी सुशोभित किया। रिज़ा ख़ाँ भी मुस्तफ़ा कमाल-पाशा की भाँति एक चतुर सैनिक तथा पश्चिमीय विचारों के अनन्य समर्थक सिद्ध हुए।

अफ़ग़ानिस्तान भी इस लहर से अछूता न रह सका। सन् १९१७ में उसके उत्तर-पश्चिमी सीमा पर रूस का कोई प्रभाव न रह गया था, लेकिन उसके पूर्वी भाग पर अङ्गरेज़ों का दाँत अभी लगा हुआ था। युद्ध के बाद जब अन्य मुस्लिम देशों में स्वतन्त्रता की लहर उमड़ी तो अफ़ग़ानिस्तान ही उससे अलग कैसे रह सकता था। सन् १९१९ में अमीर अमानुल्ला के राज्यसिंहासन पर बैठते ही अफ़ग़ानिस्तान की निर्बलता उन्हें अखरने लगी। उन्होंने शीघ्र ही युद्ध की तैयारी करना आरम्भ कर दिया। अफ़ग़ानिस्तान की स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र भी उन्होंने अपने देश तथा भारत में वितरण करवाया। उसी साल ६ मई को अफ़ग़ानिस्तान की सेना भारत की ओर बढ़ी तथा उसने सीमा प्रदेश की कई जातियों को अधिकृत कर लिया। इस युद्ध में अङ्गरेज़ों ने वायुयान यथा अन्य वैज्ञानिक साधनों का उपयोग किया, अफ़ग़ानी सेना भी पश्चिमी ढङ्ग से लड़ी। सेनापति नादिरशाह ने खेल की घाटी में अद्भुत रण-पाण्डित्य तथा नेतृत्व-कौशल का परिचय देकर अङ्गरेज़ों को दङ्ग कर दिया। सैनिक विजय किसकी हुई, यह कहना कठिन है, लेकिन सन् १९२२ की सन्धि में अङ्गरेज़ों ने अफ़ग़ानिस्तान का पूर्ण स्वातन्त्र्य स्वीकार कर लिया। इसके बाद से अफ़ग़ानिस्तान पर किसी भी विदेशी शक्ति का प्रभाव न रह गया। हाल ही में अफ़ग़ानिस्तान में जो युद्ध हुआ है वह घरेलू युद्ध था और यदि उसका सम्बन्ध किसी विदेशी राज्य से रहा भी हो तो वह अल्प और परोक्ष था।

युद्ध के समय कूटनीतिज्ञ अङ्गरेज़ों ने धन तथा स्वतन्त्रता का लोभ देकर अरब के सरदारों को तुर्की के विरुद्ध भड़का दिया था और उनसे तुर्की साम्राज्य पर आक्रमण करवाया था। अरब के अमीर हुसेन और उसके पुत्र फ़ैज़ल तथा नज्द के अमीर इब्नसऊद—तीनों को अङ्गरेज़ सरकार ने तुर्की के विरुद्ध उपद्रव तथा युद्ध करने के लिए आर्थिक सहायता अर्थात भारी रिश्वतें दी थीं। इन दोनों सरदारों को अङ्गरेज़ों ने सब मिला कर लगभग साढ़े नौ करोड़ रुपए दिए थे। युद्ध के अन्त में जब अङ्गरेज़-सरकार से रुपया मिलना बन्द हो गया तो अमीर हुसेन और अमीर इब्नसऊद दोनों आपस में ही लड़ने लगे। सन् १९२४ में इब्नसऊद के आक्रमणों ने अमीर हुसेन को नितान्त अशक्त कर दिया। इब्नसऊद वहाबियों का सरदार था। इस युद्ध में वहाबियों ने मक्का पर भी गोलेबारी की और वहाँ के पवित्र स्थानों को तोड़ गिराया। भारत, जावा, मिश्र तथा अफ़्रीका के मुसलमान एक तो वहाबियों को यों ही कट्टर मुसलमान नहीं मानते, इस भयङ्कर गोलेबारी से इन लोगों के मन में वहाबियों तथा उनके नेता इब्नसऊद के प्रति और भी असन्तोष फैला। परन्तु इब्नसऊद ने अपनी नीतिज्ञता और चातुरी से इस असन्तोष को शीघ्र ही दूर कर दिया। सन् १९२५ में यात्रीगण पुनः मक्का की यात्रा करने लगे। इसके अगले साल सन् १९२६ में सब मुसलमान राज्यों ने एक स्वर से इब्नसऊद को हजाज़ का बादशाह स्वीकार कर लिया। इसी साल के जून महीने में मक्का में संसार भर के मुसलमानों की एक महती सभा हुई, जिसमें तुर्की, अफ़ग़ानिस्तान, मिश्र, भारत आदि देशों ने अपने-अपने प्रतिनिधि भेजे। केवल ईरान ने वहाबियों के कृत्यों को निन्दनीय समझ कर इस सभा में सहयोग नहीं दिया। इस सभा ने यात्रियों की सुविधा के लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी साधनों, सड़कों, रेल आदि पर विचार किया। इसमें मुसलमान-जगत से दास-प्रथा को हटा देने के सम्बन्ध में भी एक प्रस्ताव पास हुआ। यह निश्चित हुआ कि मुस्लिम संसार की परिस्थिति पर विचार करने के लिए मक्का में प्रति वर्ष इस प्रकार की एक सभा की जावे। नाना देश-देशान्तर के मुसलमानों का अपने तीर्थ-स्थान में मिल कर अपनी परिस्थिति पर विचार करना इस्लाम के इतिहास में एक अपूर्व घटना थी। यह घटना बिना किसी सन्देह के मुस्लिम जगत के पुनरुज्जीवन की सूचना देती थी।

युद्ध की समाप्ति के बाद ईराक़, सीरिया तथा पैलेस्टाइन में भी घोर असन्तोष फैला। उन देशों में हलचल और असन्तोष का एक तूफ़ान आ गया। स्थान-स्थान पर उपद्रव होने लगे। ईराक़ के निवासियों को न तो अङ्गरेज़ों का सैनिक शासन ही सह्य था, और न वे यही सहन कर सकते थे कि अमीर फ़ैज़ल, जो अङ्गरेज़ों के हाथ की कठपुतली मात्र था, राजसिंहासन पर बैठे। अङ्गरेज़ों के मसूलनगर पर अधिकार कर लेने से तो इस आन्दोलन में और भी एक नई जान आ गई। अन्त में अङ्गरेज़ों के साथ सन्धि की बातचीत शुरू हुई। बहुत दिनों तक बातचीत होने तथा कई बार सन्धि की शर्तों में उलट-फेर होने के बाद ईराक़ के मन्त्रि-मण्डल ने बहुमत से अङ्गरेज़ों की अधीनता तो मान ली, परन्तु जब मसूलनगर से अङ्गरेज़ी सेना हटने लगी तो वहाँ अनेक अङ्गरेज़ अफ़सरों को क़त्ल कर दिया गया। अब भी ईराक़ में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध आन्दोलन जारी ही है। थोड़े दिन पहिले अङ्गरेज़ों की नीति से तङ्ग आकर तथा नामधारी बादशाह के दब्बूपन से परेशान होकर ही मन्त्रि-मण्डल ने त्याग-पत्र तक दे दिया था।

सीरिया और पैलेस्टाइन में युद्ध के बाद और भी अधिक असन्तोष और उपद्रव की ज्वाला धधकने लगी। वास्तव में ईराक़, अरब, सीरिया और पैलेस्टाइन केवल स्वतन्त्रता के लोभ से ही अङ्गरेज़ों तथा फ़्रान्सीसियों के भड़काने पर तुर्की के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे। उनको यह पता न था कि फ़्रान्स अपनी प्राचीन नीति के अनुसार रूम सागर के पूर्वी तट पर कुछ अधिकार प्राप्त करना चाहता था, और इङ्गलैण्ड भारत के मार्ग को निष्कण्टक बनाने के लिए समुद्र-तट पर कुछ भूमि हड़प लेना चाहता था। संस्कृत, भाषा और धर्म के लिहाज़ से सीरिया और पैलेस्टाइन एक ही देश है, लेकिन फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड ने इस देश के दो भाग करके आपस में बाँट लिए। दोनों भागों में ये देश अपने-अपने स्वार्थ के अनुकूल पृथक-पृथक नीति का अनुसरण करने लगे। इन देशों की मुसलमान आबादी को निर्बल तथा अपने पक्ष को सबल बनाने के अभिप्राय से सीरिया में फ़्रेञ्च सरकार यहूदियों को और पैलेस्टाइन में अङ्गरेज़ सरकार ईसाइयों को अनेक सुविधाएँ देकर बसने के लिए उत्साहित करने लगीं। जो यहूदी या ईसाई इन देशों में पहिले से बसे हुए थे उनको सहायता दी जाने लगी। यह स्वाभाविक बात थी कि इस नीति से इन देशों के बहुसंख्यक वास्तविक निवासियों में असन्तोष बढ़ता। परिणाम यह हुआ कि सीरिया में घोर उपद्रव हो गया, जिससे फ़्रान्स को फ़ौजी शासन की घोषणा करनी पड़ी, परन्तु जब इससे भी काम न चला तो दमसकस में वायुयान द्वारा गोले बरसाए गए और मशीनगन, टैङ्क आदि भीषण वैज्ञानिक अस्त्रों द्वारा हज़ारों नर-नारियों का संहार किया गया। कभी समझौता, कभी युद्ध, इस प्रकार कई साल तक यही स्थिति बनी रही। अन्त में फ़्रान्स के आतङ्क से दब कर सीरिया प्रत्यक्ष में तो शान्त हो गया, लेकिन विदेशी शासन के प्रति सीरिया-निवासियों के हृदय में घृणा का बीज मज़बूती से जड़ पकड़ गया है, आज़ादी की तमन्ना उनके दिलों में दिनोंदिन बढ़ती जाती है, और कौन जानता है कि यह तीव्र स्वाधीनताभिलाषा किस दिन भयङ्कर विभीषिका के रूप में प्रगट हो जायगी?

फ़्रान्सीसियों की भाँति अङ्गरेज़ों ने भी पैलेस्टाइन में यहूदियों की संख्या बढ़ाने और उनको नाना प्रकार की सुविधाएँ देकर मुसलमानों का पक्ष निर्बल करने की नीति ग्रहण की—यहाँ तक कि पैलेस्टाइन का प्रथम हाई-कमिश्नर भी एक यहूदी ही बनाया गया। यहाँ के अधिकांश मुसलमान सुन्नी सम्प्रदाय के हैं, जिनको एक यहूदी का शासन सहन न हो सका। इस कारण सम्पूर्ण देश में अशान्ति की लहर फैल गई। सन् १९२२ में जब इङ्गलैण्ड के उपनिवेश-शासन के ढङ्ग की एक व्यवस्थापिका सभा की योजना की गई और उसके लिए सदस्यों का निर्वाचन होने लगा तो मुसलमानों ने असहयोग कर दिया, जिससे वह निर्वाचन न हो सका। इसके बाद अङ्गरेज़ों ने कुछ रिआयतें देकर लोगों को शान्त करना चाहा, लेकिन इससे मुसलमानों को सन्तोष न हुआ। मुसलमानों ने यरूशलम और जफ़्फ़ा में फिर बलवे किए, जो शस्त्र-प्रयोग से ही दबाए जा सके। उसके बाद से अङ्गरेज़ों ने पैलेस्टाइन में नाममात्र के कई सुधार किए हैं। देश की आर्थिक दशा को भी सुधारने के ऊपरी यत्न जारी हैं, किन्तु इससे मुसलमानों को सन्तोष नहीं हो सका है। वे इस समय भी ग़ुलामी के जुए को उतार फेंकने के लिए उत्सुकता के साथ उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पैलेस्टाइन के पास का एक छोटा सा भूभाग अब ट्रान्स जारडेनिया कहलाने लगा है। यह प्रान्त अमीर अब्दुल्ला के अधिकार में है। वहाँ के मुसलमानों का असन्तोष शान्त करने के लिए अङ्गरेज़ों ने अमीर अब्दुल्ला को वहाँ का शासक बना रक्खा है। यहाँ भी अङ्गरेज़ों का आधिपत्य काफ़ी प्रबल है, लेकिन अमीर अब्दुल्ला की नीतिज्ञता तथा देश की अशिक्षा के कारण यहाँ अभी तक विशेष उपद्रव नहीं हुए हैं। परन्तु नवीन विचार-धारा वहाँ भी पहुँच गई है। वह दिन दूर नहीं मालूम होता जब यह विचार-धारा यहाँ भी विद्रोह और क्रान्ति के रूप में फूट निकलेगी।

एशियाई मुसलमानों की भाँति उत्तरी अफ़्रीका की मुस्लिम क़ौमों में भी नवीन जागृति और स्फूर्ति के लक्षण दिखाई पड़ने लगे हैं। जिस समय तुर्की जर्मनी के साथ हो गया था, उस समय अङ्गरेज़ों ने भारत के जल-मार्ग की रक्षा के निमित्त मिश्र पर क़ब्ज़ा कर लिया और युद्ध की समाप्ति के बाद वे उस पर अपने प्रभुत्व को और भी मज़बूत बनाने का यत्न करने लगे। मिश्र में अङ्गरेज़ों के कई अमानुषिक कृत्यों के कारण पहिले से ही अशान्ति फैली हुई थी। युद्ध की समाप्ति होने पर जब राष्ट्रपति विल्सन ने अपने चौदह सिद्धान्तों की घोषणा की तो मिश्रवासियों की स्वातन्त्र्य-पिपासा और भी भड़क उठी, और वे अपने देश से विदेशी शासन को मिटा देने की प्रबल चेष्टा करने लगे। समरभेरी बन्द होते ही ज़ग़लुल-पाशा मिश्र के राष्ट्रीय दल का प्रतिनिधि बन कर अङ्गरेज़ी सरकार के सामने मिश्र की माँगें उपस्थित करने के लिए इङ्गलैण्ड गए, लेकिन वहाँ उनकी किसी ने न सुनी। इससे आन्दोलन ने और भी ज़ोर पकड़ा। इस आन्दोलन को दबा देने के अभिप्राय से ज़ग़लुल पाशा को गिरफ़्तार करके माल्टा भेज दिया गया तथा और भी कई प्रकार की सख़्तियाँ की जाने लगीं। परन्तु जनता का असन्तोष निरन्तर बढ़ता ही गया। हज़ारों विद्यार्थियों ने आज़ादी के समर्थन में जुलूस निकाले, विदेशी सरकार ने उन पर गोलियों की वर्षा की; इसके बदले में अङ्गरेज़ी अफ़सरों का क़त्ल हुआ, जगह-जगह हड़तालें हुईं, बलवे होने लगे; मिश्रवासियों की स्वातन्त्र्याभिलाषा इतनी अदम्य हो गई कि सन् १९१९ में परिस्थिति की जाँच करने के लिए लॉर्ड मिलनर की अध्यक्षता में एक कमीशन नियत किया गया। मिश्र देश के दूरदर्शी राजनीतिज्ञों ने इस कमीशन का पूर्ण बहिष्कार किया। जब यह बहिष्कृत कमीशन इङ्गलैण्ड वापस लौटा तो मिश्र की राष्ट्र-परिषद् ने ज़ग़लुल के नेतृत्व में स्वराज्य की

घोषणा कर दी। अन्त में सब तरह से हार मान कर सन् १९२२ में ब्रिटिश सरकार ने कुछ शर्तों के साथ मिश्र की स्वतन्त्रता स्वीकार की। संसार के सभी प्रसिद्ध राष्ट्रों को इस निश्चय की सूचना दे दी गई। परन्तु इतना होने पर भी अङ्गरेज़ों ने मिश्र पर से अपना सैनिक क़ब्ज़ा नहीं हटाया। इससे वहाँ के राष्ट्रीय दल के असन्तोष ने एक बार फिर तीव्र रूप धारण किया और सन् १९२२-२३ में कई अङ्गरेज़ अफ़सर क़त्ल कर दिए गए। मिश्र के षड्यन्त्रकारियों ने १७ मास के भीतर १८ अफ़सरों का वध तथा लगभग ३० को ज़ख़्मी कर दिया इस कारण षड्यन्त्रियों को पकड़-पकड़ कर फाँसियाँ दी जाने लगीं। साधारण लोगों पर सख़्ती बढ़ी। परन्तु इससे मिश्र की स्वाधीनता के आन्दोलन में ज़रा भी शिथिलता नहीं आई। सन् १९२३ के चुनाव में ज़गलुल पाशा के दल का ज़ोर पुनः बढ़ा और वह प्रधान मन्त्री बना दिए गए। उस समय, इङ्गलैण्ड में मज़दूर-दल का शासन था। इससे उत्साहित होकर ज़गलुल पाशा ने फिर मिश्र की पूर्ण स्वतन्त्रता को स्वीकृत कराने के लिए इङ्गलैण्ड जाकर यत्न किया; पर फल कुछ भी न हुआ। इसी बीच मिश्र में अङ्गरेज़ों के प्रधान सेनापति तथा गवर्नर जनरल सर ली स्टेक का क़त्ल हो गया। इससे अङ्गरेज़ों ने मिश्र को ख़ूब रौंदा और अपराधियों को प्राणदण्ड देने के बाद देश से ७५ लाख रुपए जुरमाना भी वसूल किया। परन्तु इससे भी मिश्री स्वाधीनता के आन्दोलन की शक्ति में कमी न पड़ी। यद्यपि इसके बाद भी मिश्र में अङ्गरेज़ों की सेना रहती ही आई और एक प्रकार से आज भी मिश्र पर अङ्गरेज़ों का सैनिक प्रभाव ज्यों का त्यों ही बना हुआ है, परन्तु अभी हाल में मिश्र के साथ इङ्गलैण्ड की जो सन्धि हुई है, उसके अनुसार मिश्री जनता स्वाधीनता के मार्ग पर एक क़दम और भी आगे बढ़ गई है और उसे अपने देश के भीतरी मामलों में बहुत कुछ अधिकार प्राप्त हो गये हैं। आशा की जाती है कि वह कुछ ही दिनों में पराधीनता के रहे-सहे बन्धन को भी उतार फेंकेगी।

मोरक्को, अलजीरिया तथा ट्यूनिस पर स्पेन और फ़्रान्स ने वर्षों से दाँत लगा रक्खा था। युद्ध समाप्त होते ही स्पेन और फ़्रान्स ने मोरक्को के दो हिस्से करके आपस में बाँट लिए। इन भागों पर अधिकार जमाने के लिए स्पेन तथा फ़्रान्स की सेनाएँ भेजी गईं और दोनों राष्ट्रों के सेनापति एक के बाद दूसरे ज़िले को जीतते हुए आगे बढ़े। मोरक्को आदि देशों के अशिक्षित निवासी अधिकांश निर्धन किसान हैं, और जो इने-गिने लोग नवशिक्षित तथा सम्पन्न हैं वे भी यूरोपियनों के पीछे लगे रहते हैं। ऐसी दशा में मोरक्को की रक्षा हो ही कैसे सकती थी? परन्तु तो भी देशभक्त अब्दुल करीम ने राष्ट्रीय झण्डे के नीचे कुछ सेना एकत्र करके अकेले दो उन्नत राष्ट्रों का काफ़ी अर्से तक मुक़ाबिला किया। अब्दुल करीम का यह विराट प्रयत्न राष्ट्रीयता के इतिहास में सदा के लिए अमर रहेगा। एक ओर यूरोप के दो उन्नत राष्ट्रों की सुसज्जित सेनाएँ थीं और दूसरी ओर थीं देशभक्त अब्दुल करीम के झण्डे के नीचे खड़ी हुई, पहाड़ी मुसलमानों की एक छोटी सी फ़ौज। इसी छोटी सी फ़ौज के सहारे वीर अब्दुल करीम ने वर्षों तक स्पेन और फ़्रान्स दोनों के छक्के छुड़ा दिए थे; परन्तु विशाल सैन्य-समूह के सामने देशभक्तों की मुट्ठी भर फ़ौज कब तक ठहरती? सन् १९२६ में अब्दुल करीम को आत्म-समर्पण कर देना पड़ा। इसके बाद मोरक्को, अलजीरिया और ट्यूनिस में आततायियों का अनियन्त्रित शासन स्थापित हो गया। इस समय इन देशों के मुसलमान भारतीय मुसलमानों की भाँति निःशस्त्र तथा असहाय हैं, परन्तु वे मुर्दा नहीं हैं। उनमें भी जागृति तथा जीवन आ चुका है।

इस महान राजनैतिक परिवर्तन के साथ ही साथ मुस्लिम जगत की परम्परागत शासन-प्रणाली, उसकी सामाजिक रूढ़ियाँ तथा शिक्षा-पद्धति में भी परिवर्तन हो रहा है। तुर्की में ख़लीफ़ा के शासन का अन्त करके प्रजातन्त्र की स्थापना हुई है। ईरान में रिज़ा ख़ाँ ने यद्यपि शाह की उपाधि धारण कर रक्खी है, तथापि वह निरङ्कुश शासक नहीं हैं। उनका राजकार्य एक प्रतिनिधि-मण्डल की सम्मति से होता है। अफ़ग़ानिस्तान में अमीर अमानुल्ला ने स्वयं एक जिरगा (प्रतिनिधि परिषद्) स्थापित किया था, जिससे शासन तथा व्यवस्था में परामर्श लिया जाता था। ईराक़, पैलेस्टाइन, सीरिया, मिश्र आदि देशों में भी अनियन्त्रित शासन का ख़ात्मा हो चुका है। इस प्रकार किसी न किसी रूप में समस्त मुस्लिम जगत में प्रजासत्ता की स्थापना हो गई है। शासन में प्रजा का हाथ होना इस्लाम के इतिहास में अपूर्व बात है और नवीन जागृति का चिन्ह है।

अफ़ग़ानिस्तान, ईरान तथा तुर्की की सेनाएँ भी पश्चिमी ढङ्ग पर सङ्गठित हुई हैं। वे आधुनिक शस्त्रों का प्रयोग करती हैं। उनकी वरदी और क़वायद भी पश्चिमी ढङ्ग की ही होती है। इन देशों में कई सैनिक कॉलेज खुल गए हैं, जिनमें पश्चिमी ढङ्ग पर शिक्षा दी जाती है। फ़्रान्स, जर्मनी, रूस आदि देशों के रण-विशारद इन कॉलेजों में शिक्षक नियुक्त हुए हैं। अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, तुर्की, मिश्र, इन सब देशों के अनेक विद्यार्थी विज्ञान तथा साहित्य की शिक्षा प्राप्त करने के लिए पश्चिमी देशों में जाते हैं। क़ुरान को बिना समझे कण्ठाग्र करना, अरबी के अतिरिक्त दूसरी भाषाओं से घृणा करना, धर्म के अतिरिक्त अन्यान्य उपयोगी विषयों की उपेक्षा करना—आदि बातें मुस्लिम जगत से धीरे-धीरे उठती जा रही हैं, और तुर्की से तो बिलकुल ही उठ गई हैं।

इस अर्से में मुस्लिम महिला-जगत में भी अद्भुत जागृति तथा क्रान्ति हुई है। एक समय तुर्की में स्त्रियों को परदे में बन्द रहना पड़ता था। बाहर जाते समय उनको एक भारी बुर्क़ा पहनना पड़ता था, जिससे उनके अङ्ग के आकार का पता न लग सके। सूर्यास्त के पश्चात कोई स्त्री बाहर नहीं रह सकती थी और न किसी पुरुष के साथ घूम सकती थी, बातचीत करने की तो बात ही क्या? इन नियमों का उल्लङ्घन होने पर उन्हें राज्य से दण्ड दिया जाता था, लेकिन अब स्थिति बिलकुल बदल गई है। तुर्की से परदे का तो नामो-निशान उठ गया है। वहाँ की स्त्रियाँ कॉलेजों में विभिन्न विषयों का अध्ययन करती हैं, वे अनेक संस्थाओं में काम करती हैं, बाज़ारों में खुले मुँह आज़ादी से घूमती हैं, पश्चिमी पोशाक पहनती हैं, मित्रों से मिलती-जुलती हैं, दावतों में पुरुषों के साथ बैठ कर खाती हैं और नाच-घरों में जाती हैं। मिश्र देश की मुसलमान स्त्रियाँ भी तुर्की स्त्रियों की भाँति स्वतन्त्र हैं। अरब, ईराक़ और ईरान में अभी ऐसी स्वतन्त्रता का उदय नहीं हुआ है, लेकिन वहाँ भी स्त्रियाँ स्वतन्त्रता की ओर बढ़ रही हैं परदा तो प्रायः सभी देशों में शिथिल होता दिखाई पड़ रहा है। अफ़ग़ानिस्तान में अमीर अमानुल्ला ने न केवल परदे की प्रथा को तोड़ा था, बल्कि उन्होंने अफ़ग़ानी युवतियों को पश्चिमी देशों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भी भेजा था। इस जागृति में राष्ट्रपति कमाल पाशा की सुयोग्य तथा सुशिक्षिता पत्नी श्रीमती लतीफ़ा हानूम, अफ़ग़ानिस्तान की महारानी सूर्या, प्रसिद्ध तुर्की नेत्री हालिदा अदीब हानूम तथा नूरहम दाबे का बड़ा हाथ है।

* * *

मर्दुमशुमारी में अपने को हिन्दू लिखाओ!

आज जागृति और उन्नति के युग में हर एक क़ौम अपनी-अपनी संख्या बढ़ाने की कोशिश में कटिबद्ध है और परिश्रम करने से बहुत सी क़ौमों को सफलता भी प्राप्त हो चुकी है। परन्तु यह हमारी हिन्दू क़ौम दिन प्रति दिन घटने के सिवाय बढ़ने का पाठ ही पढ़ना नहीं चाहती। सन् १९११ और १९२१ की मर्दुमशुमारियों का हिसाब देखने से साफ़ पता चलता है कि सन् ११ में हिन्दुओं की संख्या जितनी थी सन् २१ में उससे घट गई। इसका मुख्य कारण आलस्यवश हिन्दुओं का अपने भाइयों की सम्हाल न रखना है। हर एक नया फ़िरक़ा, जो उत्पन्न होता है, इस हिन्दू जाति से ही निकलता है और फिर इसी का शत्रु बन जाता है। यानी अपना निराला ही मत सिद्ध करता है। जैसे सिक्ख, जैनी, समाजी आदि सब हिन्दू सन्तान होते हुए भी अपने आपको हिन्दुओं से अलग मानने लग गए हैं। वे यह नहीं समझते कि जुदा-जुदा होने से इसमें कितनी कमज़ोरी आ गई है। इसी फूट के कारण हिन्दू क़ौम पर आज अनेकों भयङ्कर विपत्तियाँ आई हुई हैं। इसलिए सज्जनो! अब भी मौक़ा है। सभी हिन्दू भाई मिल कर आगामी मर्दुमशुमारी में अपने आपको ग़ैर-मुस्लिम न लिखा कर 'हिन्दू' लिखावें, जो शास्त्र-प्रतिपादित, पवित्र और उत्तम शब्द है। किसी के समझाने-बुझाने से हमको अपनी क़ौमियत का त्याग न कर देना चाहिए। चाहे हम सबों के मत (सम्प्रदाय) अलग-अलग रहें, पर क़ौम सब की एक हिन्दू ही हो। जैसे मुसलमानों में फ़िरक़े बहुत हैं, पर क़ौम सब एक ही अर्थात् मुसलमान लिखाते हैं। फ़िरक़े (मत) अलग होने से क़ौम अलग नहीं हुआ करती। हम सनातनी, आर्यसमाजी, जैन, सिख आदि सब हिन्दू भाई हैं। इस बात पर ध्यान देते हुए आगामी मर्दुमशुमारी में कोई भी हिन्दू अपने आपको ग़ैर-हिन्दू लिखाने की ग़लती न करे और इस तरह भारत को दुर्बल बनाने का पातक अपने सर पर न ले।

नोट—हर एक हिन्दू अख़बार वाले को चाहिए कि जब तक मर्दुमशुमारी का काम चल रहा है तब तक अपने अख़बार में एक-दो कॉलम इस विषय पर लिख कर हिन्दुओं को समझाता रहे।

हिन्दू क़ौम का शुभचिन्तक,
(स्वामी) हरिनाम दास
श्री० साधुबेला तीर्थ (सक्खर)

* * *

भारत की "वीर और लड़ाकू" जातियाँ

[श्री० नीरदचन्द्र चौधरी "माडर्न रिव्यू से"]

मनुष्य स्वभाव से ही इतना दुर्बल है कि उसकी जाति के हर एक सदस्य से अत्यधिक त्याग और बलिदान की आशा नहीं की जा सकती। उसमें चाहे बलिदान और वीरता की मात्रा हो या न हो; परन्तु अपनी प्रशंसा के पुल बाँध कर उस जाति के दुर्गुण दिखाना और निन्दा करना अपमान की इतिश्री है और इसलिए जब एक के बाद दूसरा ब्रिटिश अफ़सर यहाँ आकर हमसे कहता है कि हम में वीरत्व के भाव और लड़ाई की योग्यता का बिलकुल अभाव होने के कारण ही, उसे इङ्गलैण्ड का विलास और आनन्दमय जीवन छोड़ कर हमारी रक्षा के लिए भारत की गर्मी की धधकती हुई आग में सन्तप्त होने के लिए लाचार होना पड़ता है, तभी हमारी निद्रा भङ्ग होती है और हम विचार-सागर में डूब जाते हैं। सब से अधिक दुःख तो इस बात का है कि मन्त्र-मुग्ध की नाईं उनके थोथे तर्कों के प्रवाह में हम यह सर्वथा भूल जाते हैं कि जो अपनी बहादुरी की इतनी डींग मारते हैं, उन्होंने तो भारत को निरस्त्र कर उसे निर्बल और बुज़दिल बना दिया है; अस्त्र-शस्त्र छुड़ा कर अपने प्यारे देश, अपने जीवन और अपने धन-मान की रक्षा करने में उन्हींने तो हमें अशक्त और असहाय बनाया है।

हमारे इस पतन का कारण ठहराया जाता है हमारा दार्शनिक और धार्मिक जीवन और आत्म-ममत्व; और इन्हीं दुर्गुणों के कारण सिद्धान्त रूप से यूरोप की जातियाँ पूर्वीय जातियों से अधिक वीर और आदर्श मान ली गई हैं। परन्तु इतने ही से हमारे अपमान की इतिश्री नहीं हो जाती। भारत की 'वीर और लड़ाकू' जातियों की, जिनका वर्णन साइमन कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में दिया है, एक अलग श्रेणी बना कर हमारे हृदय के गहरे घाव पर नमक छिड़का गया है। रिपोर्ट ने इन इनी-गिनी 'वीर' जातियों के सिर पर केवल क्षत्रित्व का मौर ही नहीं बाँधा है; वरन यह कह कर उनकी प्रशंसा भी की है कि इनके सिवाय ऐसी कोई जाति भारत में नहीं है जिनके कन्धों के ऊपर भारत की रक्षा का भार सौंपा जा सके। इनके वीरत्व का इस प्रकार अत्यधिक रूप से गुण-गान करके पीछे से उन पर यह लाञ्छन भी लगा दिया है कि यदि हमारे 'ब्रिटिश-रक्षक' अपने प्रभाव और बल से इन्हें दबा कर न रक्खें तो वे अन्य अशक्त और वीरता-हीन जातियों के गले काटने और निगल जाने में कोई कसर न उठा रक्खें।

साइमन रिपोर्ट का कहना है कि "इन दो कारणों के अलावा जिनसे भारत और अन्य औपनिवेशिक राज्यों में विभिन्नता उत्पन्न होती है एक तीसरा कारण और है। औपनिवेशिक राज्यों की ही नहीं, बल्कि समस्त संसार की अपेक्षा भारत में केवल एक-दूसरे से बिलकुल विरोधी अगणित धर्मों और विभिन्न जातियों का ही सम्मिश्रण नहीं है, वरन उन जातियों की लड़ाई की योग्यता में भी बहुत अधिक भेद है। मोटी दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि जिन जातियों में सब से अधिक योग्य और बहादुर सैनिक उत्पन्न होते हैं, वे उन जातियों में नहीं हैं, जो परीक्षा में अपनी चमत्कृत प्रतिभा दिखाती हैं और मस्तिष्क की लड़ाई में मोरचा मार ले जाती हैं। भारत की उन जातियों में, जो सशक्त और बहादुर हैं और जो इनके विपरीत हैं, जो भौगोलिक विभिन्नता पाई जाती है वह यूरोप में कहीं ढूँढ़े नहीं मिलेगी। भारत में एक ओर यदि लड़ाकू जातियों में बच्चा-बच्चा बलवान और दिलेर मिलेगा तो दूसरी ओर वहाँ ऐसी जातियों की भी कमी नहीं है जिनमें फ़ौज के लिए एक सिपाही भी मिलना कठिन हो जायगा।

"..........यह प्रायः निश्चित मालूम होता है कि भारत के सामने फ़ौजी ख़र्च कम करने की जो बड़ी भारी समस्या उपस्थित है उसके ख़्याल से भारत को हर एक जाति में एक सी फ़ौजी योग्यता मिलना असम्भव है। ऐसी परिस्थिति में भारत में ब्रिटिश फ़ौजों और ब्रिटिश अफ़सरों की उपस्थिति से, भारत की लड़ाकू फ़ौज़ें, यद्यपि उनमें उन वीर जातियों की संख्या बहुत थोड़ी है, उन करोड़ों निवासियों के ऊपर अत्याचार न ढा सकेंगी, जो शान्तिपूर्वक अपना कारबार करते हैं और जिन्हें इस बात की कल्पना तक नहीं है कि यदि भारत से अङ्गरेज़ी फ़ौज और अङ्गरेज़ी अफ़सर हटा लिए जायँ और वहाँ की फ़ौजों में केवल देशी वीर जातियों के सिपाही रह जायँ, तो उन पर कैसे-कैसे भीषण अत्याचार होंगे।"*

यदि साइमन कमीशन का यह निदान हम सच्चा मान लें तो वास्तव में इस अभागे देश का भविष्य पूर्ण अन्धकार में है। परन्तु सच बात तो यह है कि हम केवल रिपोर्ट के सिद्धान्तों के आधार पर भारत के भाग्याकाश का सितारा डूबा हुआ नहीं मान सकते। साइमन कमीशन के पदार्पण के, जिसका मुख्योद्देश्य भारत में स्वराज्य स्थापन के मार्ग में विरोध का ऊँचा पहाड़ खड़ा करना है, बहुत पहिले भी इन 'वीर' कहाने वाली जातियों के सिद्धान्तों के अनुसार दो विभिन्न राजनैतिक और फ़ौजी विभागों का अस्तित्व रहा है। यदि हम भूल नहीं करते तो इन सिद्धान्तों के अनुसार राजनैतिक विभाग का जन्म सन् १९१९ में उसी समय हो चुका था, जब कि सुधारी हुए कौन्सिलों में 'वीर' और 'लड़ाकू' जातियों के प्रतिनिधि तिवाना के कर्नल सर मलिक उमर हयात ख़ाँ ने बुलन्द आवाज़ से आने वाले सुधारों की प्रशंसा के गीत गाए थे। अब रहा फ़ौजी-विभाग—उसका जन्म बलवे के बाद ही हिन्दुस्तानी फ़ौज का पुनः सङ्गठन होने पर हो गया था। यदि हम कर्नल सर उमर हयात ख़ाँ की महत्वाकांक्षाओं और उनकी राजनीतिक योग्यता को महत्व न दें तो सर जॉन साइमन और उनके साथी हमें कृपया क्षमा कर देंगे। परन्तु उन सिद्धान्तों के फ़ौजी विभाग में हमें ज़्यादा अन्दर घुसने की आवश्यकता नहीं है। ऊपर जो इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है कि भारत के एक निश्चित भौगोलिक भाग की ही जातियाँ अधिक बलवान, लड़ाकू और फ़ौज के योग्य हैं; यह कितना पोला है इसका पता केवल इस बात से लग जाता है कि जिस समय देश भर के भयानक बलवे से अङ्गरेज़ों के ऊपर आपत्ति का एक पहाड़ टूट पड़ा था, उस समय अङ्गरेज़ अफ़सरों को इस बात की आवश्यकता प्रतीत हुई थी कि फ़ौज में सब जातियों और प्रान्तों के सिपाही रखना बहुत ख़तरनाक है। और पञ्जाब और उसके आस-पास के प्रान्तों के राजभक्त सिपाहियों के रखने से ही उनकी रक्षा और राज्य-सञ्चालन सुचारु रूप से हो सकता है। उसके पहिले फ़ौज के सेनापतियों को इस बात का विचार न रहता था कि सिपाही किस जाति या किस प्रान्त का है, वे अपनी सेना के लिए हृष्ट-पुष्ट और वीर आदमी चुन लेते थे। भारत की तीन प्रेज़िडेन्सियों की फ़ौजों का चुनाव, जिनके बल से ब्रिटिश राज्य आज सारे भारत में फैला हुआ है, इसी सिद्धान्त के अनुसार हुआ था। उदाहरणार्थ मद्रास की सेना में तामिल और तेलगू प्रदेशों से, बम्बई की सेना में भारत के पश्चिमी भाग से और बङ्गाल की सेना में कुछ बङ्गाल और अधिकांश में यू० पी० और बिहार से भर्ती होती थी। जब क्लाइव ने १८ वीं शताब्दी के मध्यकाल में कम्पनी की फ़ौज का पुनः सङ्गठन किया था तभी से फ़ौज में भर्ती इसी प्रकार होती आई। यह रूढ़ि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य काल—अर्थात् बलवे के पहिले तक रही और जगह-जगह से भर्ती किए हुए इन्हीं सिपाहियों के बल से अङ्गरेज़ों ने भारत में अपना शासन स्थापित किया। सन् १८५७ में बङ्गाल की फ़ौज के बलवाई हो जाने के बाद ही अङ्गरेज़ों का उस पर से बिलकुल विश्वास उठ गया और उसके बाद से ही उन्होंने उत्तरीय भारत की फ़ौज में केवल पञ्जाब, सीमा-प्रान्त और नैपाल के पहाड़ी भाग की उन जातियों में से भर्ती करना प्रारम्भ कर दिया, जिनकी सामयिक सहायता से अङ्गरेज़ लोग हिन्दुस्तानी सिपाहियों के विद्रोह का दमन करने में सफल हुए थे। और अङ्गरेज़ों की दूसरी बातों की तरह बिना किसी सिद्धान्त के अवलम्बन के ही, फ़ौज में पञ्जाबी और पहाड़ी सिपाही भर्ती करने की भी रूढ़ि सी निकल पड़ी। उस समय इनमें कोई ऐसा विश्वास न फैला था कि भारत में केवल उन्हीं की जातियों के लोग 'वीर और लड़ाकू' होते हैं। इस रूढ़ि का सिद्धान्त के रूप में प्रचार तो उस समय हुआ जब आयरलैण्ड के लॉर्ड राबर्ट्स ने, जो सन् १८८५ से १८९३ तक भारत के कमाण्डर-इन-चीफ़ रहे थे, इस बात की घोषणा कर दी थी कि उत्तर-पश्चिमीय सीमा-प्रान्त और नैपाल की जातियाँ ही हिन्दुस्तान भर में सब से अधिक 'वीर और लड़ाकू' हैं और भारतीय सेना में केवल उन्हीं की भर्ती होनी चाहिए। परन्तु साथ ही यह न भूल जाना चाहिए कि ये महाशय उन लोगों में थे जो भारतियों को उच्च फ़ौजी शिक्षा देने के कट्टर विरोधी थे। उनके बाद से ही इस सिद्धान्त ने अङ्गरेज़ अफ़सरों के हृदय में स्थान कर लिया; और उसकी जड़ धीरे-धीरे इतनी गहरी हो गई कि वे अभी तक उससे अपना पिण्ड नहीं छुड़ा सके हैं।

साइमन रिपोर्ट में जिन तर्कों के सहारे उपर्युक्त सिद्धान्त की पुष्टि की गई है उससे न तो उसके महत्व का ही अन्दाज़ा लगता है और न उसकी शैली के प्रभाव का ही; जिसके द्वारा उस सिद्धान्त को अलङ्कृत करने का प्रयत्न किया गया है। अपने इस विवेचन के निष्कर्ष के लिए हमें ब्रिटिश फ़ौजी लेखकों का सहारा लेना पड़ेगा; जिनमें से एक भारत के भूतपूर्व 'क्वार्टर-मास्टर जनरल' सर जार्ज मैकमन हैं। वे लिखते हैं:—

"पूर्व में किसान को छोड़ कर सभी शहर-निवासी, व्यापारी, कारीगर और नौकरपेशा अत्यन्त अशक्त हैं। फ़ौज के लायक़ शारीरिक शक्ति तो उनमें रत्ती भर नहीं है। यदि उनके हृदय भी ठीक हों तो भी उनकी मांस-पेशियों और स्नायुओं में इतनी शक्ति नहीं है कि वे किसी प्रकार के फ़ौजी अस्त्र-शस्त्र अपने कमज़ोर हाथों से सम्हाल सकें। यूरोप की दशा से वहाँ की दशा बिलकुल भिन्न है। 'नॉर्डिक' जातियों से तो उनकी कोई तुलना ही नहीं की जा सकती, जिसका एक अवारा आदमी भी ऊँचे दर्जे का सिपाही बनाया जा सकता है।"†

* साइमन रिपोर्ट भाग पहला, पृष्ठ ९६-९८; दूसरे भाग के छठें अध्याय के पृष्ठ १६७ से १७७ तक भी देखिए।

† लेफ़्टिनेण्ट जनरल सर जार्ज मैकमन कृत 'दी आर्मी' (१९२९) पृष्ठ ७०-७२।

उच्च श्रेणी के लोगों का तो और भी ख़राब हाल है। उनका कहना है कि—

"यह बात तो सर्वत्र प्रसिद्ध है कि भारत में मस्तिष्क से काम करने वाली श्रेणी के लोगों में अपना कार्य करने की भी साधारण शक्ति नहीं है ; और यहाँ के ३३ करोड़ से अधिक जन-समूह में से यदि फ़ौज के योग्य सिपाही निकालने का प्रयत्न किया जाय तो उनकी संख्या अँगुलियों पर गिनने लायक़ होगी !"*

जनरल मैकमन इस बात पर अत्यन्त आश्चर्य प्रगट करते हैं कि—

"बङ्गाल में ऊँची श्रेणी की जातियों के मनुष्य भी अत्यन्त डरपोक, निकम्मे और निर्बल हैं। और इससे अधिक खेद और आश्चर्य की तो कोई बात ही नहीं हो सकती कि काश्मीरी जैसे बड़े डील-डौल वाले और सशक्त पुरुषों में एक औन्स भी शक्ति न हो, परन्तु बात ऐसी ही है। और न उनमें ऐसी सुन्दरता ही पाई जाती है जिसके लिए उन्हें कोई सम्मान दिया जाय। भारत के मर्दानगी रखने वाले मनुष्य प्रायः कुरूप होते हैं।"†

विद्वानों का कहना है कि पूर्वीय और पश्चिमी या 'नार्डिक' जातियों और संसार की शेष जातियों में यही प्रधान भेद है जिसके कारण यूरोप की तरह हर जाति और हर प्रान्त के लोगों को भारत की सेना में भर्ती नहीं किया जा सकता ; और इसी कारण से ब्रिटिश अफ़सरों को देश के किसी निश्चित भाग की जातियों में से फ़ौज में ऐसे लोगों की भर्ती करने के लिए लाचार होना पड़ता है—"जिनके हृदय में यह ख़्याल रहता है कि जीविकोपार्जन के लिए जीवन में फ़ौजी नौकरी ही सब से अधिक सम्माननीय पद और सब से बड़ा साधन है ; जो ज़मींदारों के या राजाओं के लड़के हों, या किसानों की श्रेणी में ब्राह्मण आदि जाति के हों, और जब वे फ़ौज की नौकरी पूरी कर अपने कन्धे पर से हथियार उतारें तब लड़ाई के ब्रिटिश तग़मों से अपना सीना भर कर, अभिमान से झूमते हुए अपनी किसानी में जुट जायँ।"

कोई भी समझदार आदमी इसमें सन्देह न करेगा कि आवश्यकता के दबाव ने बड़े-बड़े घरानों के लोगों को सैनिक जीवन व्यतीत करने के लिए लाचार कर दिया था। परन्तु यदि इस बात पर से कि हिन्दुस्तानी सेना में उन्हीं सिपाहियों की भर्ती होती है जो 'लड़ाई के ब्रिटिश तग़मों' के लिए अपने प्राण निछावर करते और उन पर 'अभिमान से झूमते' हैं, यह सिद्ध किया जाय कि भारत का बचा हुआ जन-समुदाय डरपोक और लड़ाई के अयोग्य है, तो उन 'वीर और लड़ाकू' जातियों का, जो धन के प्रलोभन में आकर या शिक्षा के अभाव से ब्रिटिश अफ़सरों की आज्ञा पाते ही बिना किसी आना-कानी के अपने ही देशवासियों की छाती से गोली पार कर देती हैं, और जिनकी व्याख्या अभी साइमन रिपोर्ट में चिकनी चुपड़ी भाषा में की गई है, इससे अधिक अपमान नहीं हो सकता। रॉयल कमीशन के मुँह से, जिसका सभापति इङ्गलैण्ड का एक सुप्रसिद्ध और प्रतिभाशाली वकील हो, ऐसी व्याख्या निकलना वास्तव में अत्यन्त लज्जास्पद है। हम अपने मन से साइमन कमीशन की रिपोर्ट में उल्लिखित बातों की विवेचना नहीं करना चाहते। हमारे इस लेख का उद्देश्य तो भारतीय फ़ौजों की प्रारम्भ से लेकर अभी तक की संख्या और उनकी भर्ती की नीति के इतिहास की व्याख्या करना है; जिससे हमें इस बात का सच्चा पता लग जाय कि समय-समय पर भर्ती की इस नीति में कौन-कौन से उतार-चढ़ाव हुए हैं और कमीशन के सिद्धान्तानुसार 'वीर और लड़ाकू' जातियों पर उसका कहाँ तक प्रभाव पड़ा है ?

नीचे की सूची में भारतीय पैदल और घुड़सवार सेना में जिन-जिन जातियों से भर्ती की गई है उनकी औसत, उनके नाम, पता और अलग-अलग प्रान्तों की क्रम-संख्या का उल्लेख किया गया है। इन संख्याओं से इस बात का पता लग जायगा कि साइमन रिपोर्ट ने जिन जातियों और प्रान्तों की चर्चा की है वह अधिकांश में सत्य है। भारतीय सेना के १,५५,००० सिपाहियों में से आधे से अधिक उत्तरीय भारत—अर्थात् पञ्जाब और सीमा-प्रान्त—के हैं, लगभग एक चौथाई सिपाही नैपाल, गढ़वाल और कुमाऊँ के पहाड़ों के रहने वाले हैं। इस प्रकार ऐसे सिपाहियों की संख्या, जिनकी भर्ती भारत के अन्य प्रान्तों में से हुई है, मुश्किल से एक चौथाई रह जाती है।

भारतीय सेना में विभिन्न जातियों का औसत

इस सूची में भारतीय सेना में हर एक जाति की औसत का उल्लेख है, जिसमें पैदल सेना के ८२ शिक्षित और १८ शिक्षा प्राप्त करने वाले बैटेलियन; भारतीय घुड़सवार सेना की २१ रेजिमेण्ट्स; और पैदल गोरखा सेना के २० बैटेलियन सम्मिलित हैं।

नम्बर	जाति	प्रान्त	पैदल सेना में औसत: गोरखा सेना निकाल कर औसत	पैदल सेना में औसत: गोरखा सेना मिला कर औसत	घुड़सवार सेना में औसत
१	पञ्जाबी मुसलमान	पञ्जाब	२७	२२·६	१४·२८
२	गोरखा	नैपाल	...	१६·४	...
३	सिक्ख	पञ्जाब	१६·२४	१३·५८	२३·८१
४	डोगरा	उत्तरी पञ्जाब और काश्मीर	११·४	९·५४	९·५३
५	जाट	(१) राजपूताना यू० पी० और पञ्जाब	९·५	७·९४	१९·०६
६	पठान	(२) सीमाप्रान्त	७·५७	६·३५	४·७६
७	मरहठा	कोकन	६·३४	५·३३	...
८	गढ़वाली	(३) गढ़वाल	४·५३	३·६३	...
९	यू० पी० के राजपूत	यू० पी०	३·०४	२·५५	४·७६
१०	राजपूताना के राजपूत	राजपूताना	२·८	२·३५	४·७६
११	कुमायूँ निवासी	कुमायूँ	२·४४	२·०५	......
१२	गूजर	उत्तर-पूर्वीय राजपूताना	१·५२	१·२८	......
१३	पञ्जाबी हिन्दू	पञ्जाब	१·५२	१·२८	......
१४	अहीर	,,	१·२२	१·०२४	......
१५	मुसलमान राजपूत —रङ्गड़	दिल्ली के आस-पास के राजपूताना	१·२२	१·०२४	७·१४
	—क़ायमखानी		......	......	४·७६
१६	काचिन	ब्रह्मा	१·२२	१·०२४	......
१७	चिन	ब्रह्मा	१·२२	१·०२४	......
१८	करन	ब्रह्मा	१·२२	१·०२४	......
१९	दक्षिणी मुसलमान	दक्षिण	......	......	४·७६ (४)
२०	हिन्दुस्थानी मुसलमान	(प्रधानतया यू० पी० के)	......	......	२·३८ (४)
कुल औसत	हिन्दू और सिक्ख		६०·५५	५०·५५४	६१·९२
	गोरखा		......	१६·४	......
	मुसलमान		३५·७६	२९·९७४	३८·०८
	बर्मा निवासी		३·६६	३·०७२	......

(१) जाटों की तीन भिन्न जातियाँ हैं, उनकी यहाँ केवल एक जाति बतलाई गई है १—पञ्जाब के जाट २—पूर्वीय पञ्जाब और यू० पी० के जाट ३—राजपूताना के जाट। इन तीनों में एक-दूसरे से काफ़ी अन्तर है।

(२) ये पठान सीमा-प्रान्त के पहाड़ी फ़िरक़ों के हैं। जिन फ़िरक़ों में से ये पठान भारतीय सेना में भरती किए गए हैं—वे ये हैं :—१—खट्टक २—यूसफ़ ज़ाई ३—ओरकज़ाई ४—मलिकदीन खेल और कम्बर खेल (ये दोनों अफ़रीदी हैं) ५—बङ्गश (इनमें से दो फ़िरक़ों की एक अफ़ग़ान कम्पनी बनी है।)

(३) गढ़वाली ब्राह्मण और गढ़वाली राजपूत अलग-अलग बेटेलियनों में सम्मिलित हैं। गढ़वाली ब्राह्मणों की केवल दो पल्टनें पञ्जाब के ४१वें रिसाले में हैं।

(४) इन दो जातियों की संख्या बहुत ही कम है। दोनों के मिला कर कुल सौ सिपाही होंगे।

नोट—इस सूची में (क) 'भारतीय पहाड़ी आर्टिलरी की बैटरियाँ (ख) खदानों और इञ्जीनियरी के ३ रिसाले (ग) भारतीय सिगनल कोर और (घ) भारतीय पायनियर की ४ कम्पनियाँ सम्मिलित नहीं हैं। इनमें से हर एक में पञ्जाबी मुसलमान, सिक्ख, पठान, हिन्दुस्तानी हिन्दू और मुसलमान, मद्रासी, और सब फ़िरक़ों के हज़ारा अफ़ग़ान शामिल हैं। परन्तु इन जातियों के इस सम्मेलन से सूची की औसत में कोई विशेष गड़बड़ नहीं होती। इस सूची में वे भारतीय भी सम्मिलित नहीं हैं जो अङ्गरेज़ी पैदल सेना और आर्टिलरी में भरती हैं।

(क्रमशः)

* पूर्वोल्लिखित पुस्तक पृष्ठ ८७

† मैकमन और लोवेट-कृत 'दी आर्मीज़ ऑफ़ इण्डिया' (१९११)

जात-पाँत तोड़ डालो

गताङ्क का शेषांश

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

पीछे हमने शतपथ ब्राह्मण (११।६।२।१) का हवाला देकर बताया था कि किस भाँति जनक राजा ब्राह्मण कहलाने लगा। और एतरेय ब्राह्मण (२।१९) में इलुषा के पुत्र कवच का वृत्तान्त दिया है, जिसे धूर्त दासी का पुत्र कह कर सभा में से निकाल दिया था। परन्तु देवताओं ने उसे ऋषियों की श्रेणी में रक्खा। इसी प्रकार छान्दोग्य उपनिषद (४।४) में सत्यकाम जाबाल की कथा है, जिसमें उसने स्पष्ट अपने को जार-पुत्र स्वीकार किया था और गुरु ने उसके सत्य भाषण से सन्तुष्ट होकर उसे शिष्य बनाया था। पीछे यह ऋषि बड़ी-बड़ी सभाओं में प्रतिष्ठित ऋषि गिना गया था।

यज्ञोपवीत, जो आजकल जाति का एक बंदा चिन्ह है, उस काल में नहीं था। इसका प्रचार भी ब्राह्मण-काल में हुआ है। शतपथ ब्राह्मण (२।४।२) में लिखा है कि सब लोग प्रजापति के यहाँ आए तो देवता और पितृ लोग भी यज्ञोपवीत पहिने हुए आए। और कौशीतकि उपनिषद (२।७) में लिखा है कि विजयी कौशीतकि यज्ञोपवीत पहन कर उदय होते हुए सूर्य की पूजा करता था।

उस समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य यज्ञोपवीत को केवल यज्ञ करते समय ही पहनते थे। अब तो वह हर समय की गले की फाँसी हो गया है। यज्ञोपवीत का विधान आश्वलायन गृह्यसूत्रों में, पारस्कर गृह्यसूत्रों में, मनुस्मृति और शतपथ ब्राह्मण में है। किसी भी वेद में नहीं।

अब हम आर्यों के तीसरे युग में प्रवेश करते हैं। यह वह युग था जब दर्शन शास्त्रों और तर्क का ज़ोर हुआ। आत्मा की दुरूह पहेली को विचारते-विचारते और लम्बे-लम्बे यज्ञ करते-करते आर्यों ने उन भौतिक पदार्थों और नियमों पर भी ध्यान दिया, जो इन्द्रिय-गोचर और अगोचर के मध्यस्थ थे।

इस समय तक पराजित अनार्यों की बहुत सी जातियाँ आर्यों में मिल गई थीं, और चार वर्णों में ही विभाजित रहना आर्यों को शक्य न रहा ; क्योंकि ऊँच-नीच और छुआछूत एवं कुलीनता का भूत तो उनमें लग गया था ; फलतः उक्त चारों वर्णों की अनेक उपशाखाएँ होकर उपजातियाँ बनीं, परन्तु इन उपजातियों का निर्माण हुआ सङ्करत्व के आधार पर।

वशिष्ठ स्मृति में लिखा है :—

(१) लोग कहते हैं कि शूद्र पुरुष से ब्राह्मण स्त्री में जो पुत्र होगा वह चाण्डाल होता है।

(२) क्षत्रिया स्त्री में शूद्र पुरुष से जो सन्तान होती है वह "वैन" कहाती है।

(३) वैश्य स्त्री में, शूद्र पुरुष से जो पुत्र होता है वह "अगस्त्या वसाहन" होता है।

(४) ब्राह्मणी में वैश्य से "रामकु" होता है।

(५) क्षत्रिया में वैश्य का "पौलशक" कहाता है।

(६) ब्राह्मणी में क्षत्रिय से "सूत" कहाता है।

(७) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य पुरुषों के अपने से नीचे की पहली, दूसरी और तीसरी जातियों की स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न होता है वह क्रम से 'अम्बष्ठ' 'उग्र' और 'निषाद' होते हैं।

(८) ब्राह्मण पुरुष और शूद्र स्त्री से जो पुत्र हो वह 'पार्सव' होता है।

—वशिष्ठ १८

इस मन्तव्य में बौधायन का थोड़ा मतभेद है—

(१) ब्राह्मण का क्षत्रिया स्त्री में जो पुत्र हो वह 'ब्राह्मण' होता है, वैश्य स्त्री में 'अम्बष्ठ' होता है, शूद्रा में 'निषाद' होता है।

(२) किसी-किसी के मत से पार्सव होता है।

(३) क्षत्रिय का वैश्य स्त्री में जो पुत्र होगा वह 'क्षत्रिय', शूद्रा में जो होगा वह 'उग्र' कहा जाता है।

(४) वैश्य का शूद्र स्त्री से उत्पन्न हुआ पुत्र 'रथकार' कहा जाता है।

(५) शूद्र का वैश्य स्त्री में जो पुत्र होगा वह 'मागध' क्षत्रिया में "क्षत्रिय" और ब्राह्मण में 'चाण्डाल' होगा।

(६) वैश्य का क्षत्रिया स्त्री में जो पुत्र होगा वह 'आयोगव' और ब्राह्मणी में 'सूत' होता है। इसी प्रकार 'उग्र' पिता और क्षत्रिया माता से 'स्वपाक', 'वैदेहक' पिता और 'अम्बष्ठ' माता से 'वैन', 'निषाद' पिता और शूद्रा माता से 'पौलशक', शूद्रा पिता और 'निषाद' माता से "कौकुटक" होता है।

—बौधायन १। ६। १७

गौतम का नियम इन सब से संक्षिप्त और सुथरा हुआ प्रतीत होता है—

(१६) उच्च जाति की उससे नीचे की पहली, दूसरी व तीसरी जाति से जो सन्तति हो वह क्रम से अम्बष्ठ, उग्र, निषाद, दौश्यन्त, और पार्सव होती है।

(१७) उल्टे क्रम से (उच्च जाति की स्त्रियों से जो पुत्र हों वे सूत, मगध, आयोगव, क्षत्रिय, वैदेहक और चाण्डाल होते हैं।

(१८) कुछ का मत है कि ब्राह्मणी में जो चारों जाति से पुत्र हों वे क्रमशः ब्राह्मण, सूत, मगध और चाण्डाल होते हैं।

(१९) इसी भाँति क्षत्रिय स्त्री में चारों जातियों से उत्पन्न पुत्र क्रमशः 'मूर्द्धाभिसिक्त' 'क्षत्रिय' 'धीवर' और 'पौलशक' कहाते हैं।

(२०) वैश्य स्त्री में चारों जातियों से जो पुत्र हों वे क्रमशः भृज्जकेथ, माहिश्य, वैश्य और वैदेह होते हैं।

(२१) शूद्रा स्त्री में चारों जातियों से क्रमशः पार्सव, यवन, करन और शूद्र होते हैं।

—गौतम ४

ये वे प्रामाणिक उद्धरण हैं, जिन्हें कोई कट्टर व्यक्ति भी अस्वीकार नहीं कर सकता। यहाँ पाठक देखेंगे कि अनुलोम और प्रतिलोम दोनों ही प्रकार के विवादों से सङ्कर जातियाँ बनती चली गईं हैं। पाठक इस बात पर भी विचार करें कि मागध और वैदेह, जोकि भिन्न जातियाँ थीं, चाण्डाल और पौलशक, जो निस्सन्देह अनार्य जाति थीं, यवन जो बैक्ट्रिया के विदेशी थे, सबको इसी कठोर नियम में ला डाला गया है, और सभी की उत्पत्ति उपरोक्त चारों वर्णों से की गई है।

अब एक महत्वपूर्ण बात यह रह जाती है कि अभी तक जो उपजातियाँ बनाई गई हैं, उनमें उन लोगों को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो पेशे और व्यवसाय के कारण आजकल जाति के रूप में बन गए हैं, जैसे सुनार, लुहार, दर्ज़ी, जुलाहा, मोची आदि।

परन्तु हम वेदों में शिल्प-जीवियों को प्रतिष्ठित रूप में पाते हैं,—और उन्हें आचार्य और ऋषि पद प्राप्त था—यह हमें पता लगता है। जैसे तैत्तिरीय अरण्यक प्र० १ अनु० ७; ऋग्वेद अष्टक ८ अ० २ व० १ ; ऋग्वेद अ०८। अ० १। व० २६।१७; ऋग्वेद अ० २।२।२४।१; यजुर्वेद अ० ५ प्रपा० १। अनु० ११ प० ३-४ आदि-आदि।

परन्तु ज्यों-ज्यों क्षत्रिय और ब्राह्मण शिल्प से हटते गए, त्यों-त्यों जनसाधारण, जो उस समय वैश्य कहाते थे, भिन्न-भिन्न शिल्पों को भी करते रहे। पीछे जब सङ्कर जातियाँ बनने लगीं, और बौद्धों ने वर्ण-संस्कृति को सर्वथा लोप करना चाहा तब भिन्न-भिन्न पेशे की भी जातियाँ बन गईं।

इन विशेष अधिकारों के परम्परागत चलने में बुराइयाँ उत्पन्न होना अनिवार्य था। ब्राह्मणों ने, जो न तो क्षत्रियों के से जान-जोखिम के काम में ही थे और न जनसाधारण की भाँति हाथ से परिश्रम ही करते थे, सरलता से परिश्रमी जातियों के धन में से खाना प्रारम्भ कर दिया। और जिस योग्यता के कारण उन्हें यह विशेष अधिकार मिला था वह भी उन्होंने प्राप्त करने की कोई चिन्ता नहीं की। वशिष्ठ ने यह अन्याय भी देखा और इस पर कड़े नियम बनाए। सुनिए —

१—जो ब्राह्मण न तो वेद पढ़ते न पढ़ाते हैं और न पवित्राग्नि को रखते हैं वे शूद्र के समान हैं।

(४) राजा को उस गाँव को दण्ड देना चाहिए जहाँ ब्राह्मण लोग अपने पवित्र धर्म का पालन नहीं करते, और वेद नहीं जानते और भिक्षा माँग कर रहते हैं। क्योंकि ऐसा गाँव लुटेरों का पोषण करता है।

(६) मूर्ख लोग अज्ञानता और पवित्र नियमों को न जानने के कारण जिस पाप को धर्म कहते हैं, वह पाप उन लोगों के सिर पर सौ गुना होकर गिरेगा, जो लोग कि उसे धर्म बताते हैं।

(७) लकड़ी का बना हुआ हाथी, और वेद रहित ब्राह्मण ये नाम मात्र के हैं।

—वशिष्ठ ३

उस समय क्षत्रियों का कर्तव्य था कि वे अपने कर्म के अतिरिक्त युद्ध करें, विजय करें, राज्य करें, रथ का प्रबन्ध करें, वाण-विद्या का अभ्यास रक्खें, युद्ध में दृढ़ खड़े रहें, और मुँह न मोड़ें।

—गौ० १०। १५। १६

वैश्यों का मुख्य काम था व्यापार करना, खेती, पशु-पालन, द्रव्य उधार देना, और, लाभ के लिए परिश्रम करना।

—गौ० १०। ४९

शूद्र का काम तीनों जातियों की सेवा करना था, पर वे धन-उपार्जन के लिए परिश्रम भी कर सकते थे।

—गौ० १०। ४२

पाठक देखते हैं कि मनुस्मृति के बताए नियमों में और इनमें कितना अन्तर पड़ गया था।

मेगस्थनीज़, जो अब से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व भारत-वर्ष में था और मगध-नरेश के दर्बार में यूनान के साम्राज्य का राजदूत था, सात जातियों का ख़ास कर उल्लेख करता है। ब्राह्मणों के विषय में वह लिखता है—

"बालक लोग एक मनुष्य के उपरान्त दूसरे मनुष्य की रक्षा में रक्खे जाते हैं। और ज्यों-ज्यों वे बड़े होते हैं त्यों-त्यों उत्तरोत्तर अधिक योग्य गुरु को प्राप्त करते जाते हैं।

"दार्शनिकों का निवास नगर के बाहर किसी कुञ्ज में किसी साधारण लम्बे-चौड़े घेरे में होता है। वे बड़ी सीधी चाल से रहते हैं। फूस की चटाइयों व मृगछाला पर सोते हैं। मांस और शारीरिक सुखों से परहेज़ रखते हैं। और अपना समय धार्मिक वार्तालाप करने में व्यतीत करते हैं।

"३७ वर्ष तक गुरु के पास रह कर प्रत्येक पुरुष अपने घर को लौट आता है। और अपने शेष दिन शान्ति से व्यतीत करता है। तब वह उत्तम मलमल और उँगलियों और कान में सोने के आभूषण पहनता है। मांस खाता है, परन्तु परिश्रम में लगे हुए पशुओं का नहीं। वह गर्म और अधिक मसालेदार भोजनों से परहेज़ रखता है। वह जितनी स्त्रियों से चाहता है, विवाह कर सकता है। इसलिए कि बहुत सी सन्तान उत्पन्न हों, इससे यह लाभ होता है कि उसे अपनी सेवा के लिए दास नहीं रखने पड़ते।

"श्राउन लोग जङ्गलों में रहते और पेड़ों के फल और पत्तियाँ खाते तथा वृक्षों की छाल पहनते हैं। वे उन राजाओं से बातचीत करते हैं जो दूतों के द्वारा भौतिक पदार्थों के विषय में उनकी सम्मति लेते हैं। और जो उनके द्वारा देवताओं की पूजा और प्रार्थना करते हैं।

"औषध विद्या को जानने के कारण वे विवाहों को फलदायक कर सकते हैं। और गर्भस्थ सन्तान को पुरुष या स्त्री दोनों के विषय में बता सकते हैं। वे बहुत करके औषध द्वारा नहीं, वरन् भोजन के प्रबन्ध द्वारा रोग को अच्छा करते हैं। उनकी सर्वोत्तम औषध मरहम और लेप है।"

दार्शनिकों के विषय में वह और कहता है—"वे सर्वसाधारण के कामों से बचे रहने के कारण न तो किसी के मालिक और न किसी के नौकर हैं। परन्तु लोग उन्हें यज्ञ करने या मृतक क्रिया करने को बुलाते हैं। वे एकत्रित भीड़ को वर्षा होने या न होने के विषय में तथा लाभकारी दवाओं और रोगों के विषय में भविष्यवाणी बताते हैं।"

ब्राह्मण, जिन्हें मेगस्थनीज़ पृथक जाति समझता है, उनके विषय में कहता है—"वे राजाओं के राज-काज के सम्बन्ध में सम्मति देते। ख़ज़ाना रखते, दीवानी और फ़ौजदारी मुक़दमों का फ़ैसला करते हैं। पढ़े-लिखे लोग धर्म सम्बन्धी बातों में उनकी सम्मति और बड़े-बड़े यज्ञों में उनकी सहायता लेते हैं। और खेती करने वाले पण्डितों से वर्ष भर का हाल पूछते हैं।"

पाठक देखें कि किस प्रकार वह जाति, जो सब प्रकार से लोगों द्वारा सम्मानित थी, धीरे-धीरे अपने विशेषाधिकारों को पूरे प्रकार से काम में लाने लगी और मिथ्या बातों के द्वारा उस श्रेष्ठता को दृढ़ करने का प्रयत्न करने लगी—जो प्रथम विद्या या पवित्र जीवन के कारण उसे प्राप्त थी।

क्षत्रियों के सम्बन्ध में मेगस्थनीज़ कहता है—"वे युद्ध के लिए सज्जित और तैयार रहते थे। परन्तु शान्ति के समय वे आलस्य और तमाशे में लगे रहते थे। सारी सेना—शस्त्रधारी सिपाही, घोड़े, हाथी आदि का ख़र्च राजा के सिर होता था।

"ओवरसियर, राज्य में सब बातों का पता लगाते और राजा को बताते थे।"

वैश्यों और शिल्पियों के विषय में वह कहता है कि—"वे अन्य साधारण कामों से बचे रहने के कारण पूरा समय खेती में लगाते थे। शत्रु उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचाते थे। वे राजा को भूमि-कर देते थे, क्योंकि सारा भारतवर्ष राजा की सम्पत्ति थी। और कोई मनुष्य भूमि का मालिक न था। भूमि-कर के सिवा वे चौथाई पैदावार राज-कोष में देते थे।

"शिल्पी कुछ शस्त्र बनाते हैं और कुछ अन्य खेती सम्बन्धी औज़ारों को। इन्हें कोई कर नहीं देना पड़ता, उल्टे उन्हें राज्य से सहायता मिलती है।"

पाठक देखें कि यह विदेशी उस समय के जाति-विभाग का कैसा आँखों देखा स्पष्ट और पक्षपात रहित वर्णन करता है।

अब पाठक इसके बाद के उस काल पर भी दृष्टि डालें, जब भारत में बौद्धों का दौर-दौरा हो गया था। हिन्दू-धर्म और बौद्ध-धर्म शताब्दियों तक एक-दूसरे के साथ चले गए। उच्च कुल के लोग ब्राह्मण धर्मी तथा सर्वसाधारण बौद्धधर्मी बहुतायत से बनते थे। पीछे जब राजाओं ने बौद्ध-धर्म ग्रहण किया, तब उसका रूप बदल गया।

वर्तमान मनु का संस्कृत संस्करण बौद्ध-काल में हुआ है, और उसमें बौद्धकालीन हिन्दुओं का सामाजिक जीवन ही वर्णित किया गया है। प्राचीन सूत्रों का सम्बन्ध किसी न किसी वैदिक शाखा से था, परन्तु मनु का सम्बन्ध किसी शाखा से नहीं था। वह वास्तव में वैदिक आर्यों और पौराणिक हिन्दुओं के मध्य का एक बड़ा भारी पुल है।

फिर भी उसने उपजातियों की उत्पत्ति प्राचीन सूत्रकारों ही के ढङ्ग पर मानी है। इसके मत में एक विशेषता यह है कि प्रथम श्रेणी के तीन वर्णों से नीचे की तीन वर्णों की स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न होता है वह अपने पिता के वर्ण का होता है। नई जाति का नहीं। मनु ने अपनी सूची को बहुत लम्बा किया है। इस पर भी इसने अन्य जाति के लोगों को भी सम्मिलित कर लिया है। पौण्ड्रक (उत्तरीय बङ्गवासी), उद्र (उड़िया) द्रविड़ (दक्षिणी) काम्बोज (क़ाबुली), यवन (बैक्ट्रिया के यूनानी), शक (तूरानी जाति के आक्रमक), पारद पह्लव (फ़ारस के लोग), चीन (चीनी), किरात (पहाड़ी) बरद-खस आदि भी इसी प्रकार की जातियों में मिला दिए हैं। यह आश्चर्य की बात है कि जहाँ इस पुस्तक में आर्य-अनार्य सभी जातियों को गिन लिया है वहाँ पेशेवर आदमियों को जाति की शकल में नहीं गिना गया। मनु सुनार-लुहार आदि का ज़िक्र तो करता है, पर वह उन्हें दूसरी जाति में नहीं गिनता। इससे यह निश्चय होता है कि उस समय तक भी ये व्यवसाय ही माने जाते थे।

अब हम पौराणिक काल की तरफ़ झुकते हैं, जहाँ यह जात-पाँत का बन्धन एकदम भयानक रूप धारण कर लेता है। इसी काल में भिन्न-भिन्न व्यवसाय करने वालों की जातियाँ बन गईं। और यह बदनसीब हिन्दू जाति इस बन्धन में पिस मरी और हिन्दुओं की जातीयता एवं राष्ट्रीयता सर्वथा ही नष्ट हो गई।

प्रथम के तीनों वर्णों को इस काल तक भी धर्म-विधानों को करने तथा वेद पढ़ने की आज्ञा थी, और तीनों वर्णों के गुण-कर्म भी स्मृतियों के अनुकूल थे। परन्तु शिल्प कर्म शूद्र का क़रार दे दिया गया और अनेक शिल्पी जातियाँ शूद्रों में मिल गईं।

—विष्णुपुराण २

सिर्फ़ याज्ञवल्क्य (१। १२०) उसे वाणिज्य का अधिकार देते हैं। याज्ञवल्क्य ने १३ मिश्रित जातियों का उल्लेख किया है, जो लगभग वैसी ही हैं जैसी कि हम पूर्व में बता चुके हैं।

—याज्ञ० १।९१।९५

इन १३ मिश्रित जातियों में भी व्यवसाय करने वाली जातियाँ नहीं हैं। बल्कि कई उन आदि-वासियों के नाम हैं, जो धीरे-धीरे हिन्दू-धर्म के अन्दर मिल गई थीं। याज्ञवल्क्य यह बात जानता था और उसने लिखा है कि ७ वें और ५ वें युग में या कर्मों के अनुसार नीच जाति उच्च पद प्राप्त कर सकती है।

—याज्ञ० १। ९६

, मनु ने कायस्थों के विषय में कुछ नहीं लिखा। मगर पुराणों में कायस्थों की ख़ूब निन्दा की है। इसका कारण स्पष्ट है। कायस्थ पौराणिक काल में और मुग़लों के समय में भी राज-सम्बन्धी आय, कर, वसूली, हिसाब आदि के उच्च पदों पर थे। मृच्छकटिक में कायस्थ को न्यायाधीश की सेवा में पाया जाता है। कल्हण ने अपनी राजतरङ्गिणी में राजा के हिसाब रखने वालों, कर उगाहने वालों, कोषाध्यक्ष के पद पर कायस्थों का ज़िक्र किया है। वे शीघ्र ही ब्राह्मणों के कोप में पड़े। वे सभी से कर उगाहते थे। किसी पर न छोड़ते थे। कल्हण ने स्वयं उनकी बड़ी कड़ी निन्दा की है? यह जाति मुसलमानों के काल में स्वतन्त्र जाति बन गई। याज्ञवल्क्य (१। ३२) में कहता है कि राजा को ठगों, चोरों, बदमाशों, डाकुओं और ख़ास कर कायस्थों से अपनी प्रजा की रक्षा करनी चाहिए।

यह कायस्थ वास्तव में जाति न थी; क्योंकि विष्णु-पुराण में लिखा है कि—"राज-दर्बार में दस्तावेज़ पर राजा की सही तब की जाती है, जब कि वह राज की ओर से नियुक्त कायस्थ के द्वारा लिखा हो।" डॉ० जौली ने इसीलिए 'कायस्थ' शब्द का अर्थ मुहर्रिर किया है।

याज्ञवल्क्य ने वैद्यों की गणना भी चोरों और वेश्याओं के साथ की है और उन्हें इस योग्य बताया है कि उनका भोजन न ग्रहण किया जाय।

—याज्ञ० १।१६२

यहाँ हम यह बता देना चाहते हैं कि सूत्रकारों, मनु तथा याज्ञवल्क्य ने अम्बष्ठ जाति को वैद्यों में गिना है। वशिष्ठ ने अम्बष्ठों की उत्पत्ति ब्राह्मण और क्षत्रियों के मिश्रण से तथा मनु और याज्ञवल्क्य ने ब्राह्मणों और वैश्यों से लिखी है। मनु ने अम्बष्ठों को वैद्यक जानने वाला भी लिखा है।

—मनु० १०। ४७

इन उद्धरणों से हम नतीजा निकाल सकते हैं कि यद्यपि ये व्यवसाय जातियाँ नहीं बने थे, पर अपमान की दृष्टि से अवश्य देखे जाते थे।

यह संक्षिप्त इतिहास है उस विपत्ति का या सर्वनाश के बीज का, जिसने हिन्दू जाति को छिन्न-भिन्न कर दिया। वह ग़ारत हो गई है। मैं ऊँची आवाज़ से सारे हिन्दुओं से यह पूछता हूँ कि वे यह तो बतावें कि इस जात-पाँत से क्या लाभ है? इससे कौन सा इस लोक का या परलोक का मतलब हल होता है? मेरे साथ आओ, मैं लाखों ब्राह्मणों को वेश्याओं का थूक चाटते आपको दिखा दूँ। हज़ारों वैश्यों को होटल में मांस और शराब गटकते दिखा दूँ। इसमें इनका धर्म नहीं बिगड़ता। बिरादरी चूँ भी नहीं करती। चाहे भी जिस जाति की स्त्री से पाप-कर्म करने में जाति कुछ नहीं कहती, मगर विवाह करके उन्हें पत्नी बनाना पाप समझती है। मैं पूछता हूँ—पाप व्यभिचार है या पाप वह है जो नीति का पालन किया जाय। क्या ऊँची जाति के लोगों का शरीर हाड़-मांस का नहीं? हम बेवक़ूफ़ घमण्डी उच्च जाति वालों को मुसलमानों और अङ्गरेज़ों के सामने कुत्ते की तरह दुम हिलाते तो ज़रा भी ग़ैरत नहीं आती, मगर घर में आते ही हम अपनी कुलीनता की डींग हाँकते हैं। मैं उन पुरुषों को भी जातीय मामलों में कड़ी अकड़ से ऐंठता देख चुका हूँ जिन्हें दूसरी जाति वाले तुच्छ समझते हैं। यह कैसे शोक और पश्चात्ताप का विषय है।

हाँ, मैं यह कहता हूँ कि वर्ण-व्यवस्था भी नष्ट कर दो। यह तो मैं ख़ास तौर पर ज़ोर देकर पहले ही कह चुका हूँ कि ब्राह्मणत्व का तत्काल नाश कर देना चाहिए। मेरा कहना यह है कि अन्य वर्णों के विभाग की भी ज़रूरत नहीं है। चाहे भी जो व्यक्ति चाहे भी जो व्यवसाय अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार करेगा—जिसका

(शेषमैटर २०वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

तीसमार ख़ाँ की हजामत

(शेषांश)

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

दृश्य—४

रास्ता

(बटेर ख़ाँ का शेख़ी हाँकते आना)

बटेर—वाह रे मैं ! आज ऐसी बहादुरी दिखाई है कि देखने वालों के छक्के छूट गए। औरतें बहुत दिलेर बन कर आई थीं, मगर मेरी शहज़ोरी के आगे उनकी एक न चली। उन्हें भागते ही बन पड़ा। और भागीं भी तो ऐसी बदहवास होकर कि दो-चार लँगड़ी-लूली भी हो गई हों, तो कोई ताज्जुब नहीं। मगर हाय ! कोई हत्थे नहीं चढ़ी। यही अफ़सोस है। जहाँ एक के पीछे पड़ता था, तहाँ उसके साथ दस-बीस और गिरफ़्तार होने के लिए झट फट पड़ती थीं। इसीसे तो मुझे और ग़ुस्सा चढ़ गया। और बहादुरी ही दिखाता रह गया। क़िस्मत से अभी-अभी एक अकेली भी मिल गई थी और मैं उसे डरा-धमका कर अपने साथ ले भी चला था कि कमबख़्त कलुआ ने आकर सब गड़बड़ कर दिया। उस हरामज़ादे का सर तोड़ दूँगा—साले ने मेरे मनसूबों का प्रोग्राम उलट दिया (एक तरफ़ देख कर) अरे ! एक आ रही है, वह आ रही है। वाह री तक़दीर, बिल्कुल अकेली है। (इधर-उधर देख कर) कलुआ तो नहीं है। नहीं-नहीं कोई नहीं है। (उसी तरफ़ देख कर) बुर्क़ा पहने हुए है। ओहो! क़सम ख़ुदा की बड़ी हसीन होगी तभी तो। इसको मैं ज़रूर अपने मकान ले जाऊँगा।

(तीसमार ख़ाँ का बुर्क़ा पहने आना और बटेर ख़ाँ को देख कर लौटने की कोशिश करना)

तीसमार—(अलग) अरे ! मैं किधर निकल आया ? यह तो बटेर ख़ाँ है। अब क्या करूँ (लौटना चाहता है)

बटेर—उधर कहाँ ? उधर कहाँ ? चल इधर।

(तीसमार ख़ाँ घबड़ा कर लौटने की कोशिश करता है)

बटेर—फिर नहीं सुनती, चल इधर। अरे ! यह तो भागने की कोशिश करती है। तेरी ऐसी तैसी। भागती है हरामज़ादी ? (मारता है) फिर भागेगी ? चल इधर।

(तीसमार ख़ाँ सामने से भागता है और बटेर ख़ाँ उसके पीछे दौड़ता हुआ जाता है।)

दृश्य—५

जङ्गल

(दिलारा का ग़ुस्से में आना)

दिलारा—ग़ज़ब ख़ुदा का ऐसा अन्धेर ? औरतों के साथ यह बरताओ ? हम लोग आदमी न हुई गोया कुत्ता-बिल्ली हुई जो पकड़-पकड़ के जङ्गलों में बदमाशों की ख़ूराक बनने के लिए छोड़ दी गई। लानत है हमारे मियाँ पर, जिनके हुक्म से उनकी माँ-बहिनों की ऐसी बेइज़्ज़ती हुई। यह अब जाना। मैं नहीं जानती थी कि वह यहाँ तक गए-गुज़रे हैं। मेरे लिए ऐसे ख़सम की बीबी होकर रहना चुल्लू भर पानी में डूब मरना है। मैं आज से उनका मुँह तक न देखूँगी। हम लोग औरत ज़ात जो ख़ुद अपनी परछाहीं से डरती हैं और जिन्हें अगर सीधी सड़क पर भी अकेली छोड़ दो तो वह अपने घर का रास्ता नहीं पा सकतीं। उन बेचारियों को ऐसे सूनसान मैदान और झाड़ी-जङ्गलों में रास्ता भला कहाँ मिल सकता है ? हाय ! किधर जाऊँ ?

(एक तरफ़ जाती है)

(दूसरी तरफ़ से बटेर ख़ाँ तीसमार ख़ाँ को ढकेलता हुआ आता है।)

बटेर—चलो इधर। बहुत नख़रे दिखा चुकी। अच्छा अब ज़रा अपना बुर्क़ा उठाओ, तुम्हारा मुँह तो देखें जानमन। अरे ! नाहक़ इतना शर्माती हो, यहाँ कोई नहीं है। (मुँह खोलने की कोशिश करता है, मगर तीसमार ख़ाँ खोलने नहीं देता है) ओहो ! इतनी शर्म ? अच्छा तो फिर चलो उस झाड़ी की आड़ में। वहाँ तो मुँह दिखाने में न शर्माओगी ? अरे ? अरे ! यह तो फिर अड़ गई ? चल हरामज़ादी इधर।

(एक झाड़ी पर तीसमार ख़ाँ को ढकेलता है और झाड़ी में से घबड़ा कर कल्लू लोटा हाथ में लिए निकलता है।)

कल्लू—अरे ! बाप रे बाप ! यह के होय सार टट्टी बइठब आफत कै दिहिस ? (तीसमार ख़ाँ को बुर्क़ापोश देख कर) अरे ! यह तो ... मेहरारू होय ! (हाथ पकड़ कर) करे तू अस मस्तान है कि झाड़ी में घुसुड़-घुसुड़ मर्दन पर भड़रात फिरत है। तोरे छिनार की। फिर अस बदमासी करिहे ? (लात से मारता है।) (बटेर ख़ाँ को देख कर) अउर तू के हो सरऊ ? अरे बटेरू ? कहो अबकी इनका बुरका ओढ़ाय के लायो है ? तू का दुनिया में अउर ठौर नहीं रहा ? जब देखो तब हमरे मूड़े पर कोदो दले के है। मारत मारत सरऊ अचार निकार लेब। मुल पहिले इनकेर छिनरपन छुड़ाय देई।

(तीसमार ख़ाँ को फिर मारता है।)

बटेर—(अलग) लाहौल बिलाक़ूवत ! इस मरदूद ने फिर गड़बड़ कर दिया।

(दिलारा का आना)

दिलारा—किससे रास्ता पूछूँ ? अरे ! यह कौन औरत है ? यह तो मेरा बुर्क़ा पहने हुए है। यह इसे कहाँ से चुरा के लाई ?

(तीसमार ख़ाँ के सर से बुर्क़ा घसीट लेती है)

कल्लू—अरे ! एहमाँ से यह के निकल पड़ा ? दरोगा जी !

बटेर—तौबा ! तौबा ! लाहौल बिलाक़ूवत ! इन्ना-लिल्ला !

दिलारा—कौन मेरे मियाँ ?

तीसमार—कौन मेरी बीबी ? हाय ! तुम कहाँ थीं ?

दिलारा—तुम्हारी कारस्वाइयों का तमाशा देख रही थी। चलो दूर हो मेरे सामने से। तुम्हारा मुँह नहीं देखना चाहती।

तीसमार—अरे !

कल्लू—मत घबड़ाई। लाली वही अलङ्ग नाहीं देखे लायक़ है। आप एहर से देखी। ऐसी मूछ-दाढ़ी कुछू नाहीं है। चेहरा बिलकुल साफ़ है जस मेहरारू के।

तीसमार—हाय ! हाय ! इसका ख़्याल तो था ही नहीं। (मुँह छिपा कर) बस-बस अब ज़्यादा ज़लील न करो। मैं अपने अख़्तियार का ख़ुद ही शिकार होकर उसकी हक़ीक़त अच्छी तरह से देख ली और समझ गया कि हाँ ख़ुदा भी कोई चीज़ है।

दिलारा—शुक्र है कि तुममें इतनी समझ तो आई। और इसी के साथ यह भी समझो कि तुम ख़ुदा के बन्दे अपने मुल्क के बाशिन्दे और पबलिक के हौवा नहीं, बल्कि एक सच्चे ख़ैरख़्वाह हो।

कल्लू—एही बात पर हजूर हमका माफ़ी दीन जाए। हम हजूर का बहुत मारा है।

तीसमार—अबे चुप !

बटेर—हाँ हज़ूर धोखे में मुझसे भी ग़लती हो गई।

तीसमार—अरे लिल्लाह ! इस वक़्त चुप रहो।

कल्लू—नाहीं हज़ूर हाथ जोड़ित है। हजूर की दाढ़ी छुइत है। कइयू लात हम अनजाने मार बैठेन है। माफ़ करी। (दाढ़ी छूने के बहाने तीसमार ख़ाँ के मुँह पर से उनके हाथों को हटा देता है)

दिलारा—अरे इनकी शकल कैसी बनी है ?

तीसमार—लाहौल बिलाक़ूवत ! (भाग जाता है)

(उसके पीछे दिलारा देखें-देखें कहती जाती है।)

कल्लू—(बटेर ख़ाँ से) अरे ! तू हूँ लपक के देख लेयो। अस खच्चड़ मुँह तोहार बापो न देखिन होइहें।

(यह दोनों भी उसके पीछे जाते हैं)

पटाक्षेप

* * *

(१६ वें पृष्ठ का शेषांश)

भी उसे सुभीता होगा। आज ब्राह्मण हलवाई हैं, ख़ोमचा बेचते हैं, रसोई करते हैं, पानी भरते हैं, मुनीम हैं, चपरासी हैं, साहूकार हैं, वकील हैं, और ऊँचा-नीचा ऐसा कोई पेशा नहीं जिसमें वे न हों। फिर भी ब्राह्मण हैं। यह स्मरण रखने का एक तो यह कारण हो सकता है कि वे ब्राह्मणों में रोटी-बेटी करें, दूसरा दुनिया से वे अपने को सर्वश्रेष्ठ समझें। ये दोनों ही अधिकार जितनी जल्दी हो सके, उनको नष्ट कर देने चाहिए।

बेशक मैं क्षत्रियों के वर्ण की भी आवश्यकता नहीं समझता। निकट भविष्य में जो नया राष्ट्र बनेगा उसके लिए हिन्दुस्तान के प्रत्येक युवक को क्षत्रियों के गुणों को सीखना होगा। और उनकी राष्ट्रीय सेना जब भी देश की ज़रूरत होगी, देश के लिए लोहू बहाने को तैयार मिलनी चाहिए। अब यदि युद्ध होंगे भी तो उस प्रकार के न होंगे, जिस प्रकार के कि ह्वेनसाँग ने या मेगस्थनीज़ ने देखे थे कि शत्रु किसानों और व्यवसायियों को छेड़ते तक न थे। अब—जब भी जहाँ युद्ध होगा—विध्वंस होगा। इसलिए देश की तमाम शक्ति को वर्णों या जातियों में विभक्त करने से नहीं, बल्कि उसकी महा-जाति बनने में ही उसका कल्याण है।

वैश्य वृत्ति के लिए किसी जाति को रिज़र्व करना मूर्खता है। शान्ति के समय में ब्राह्मण और योद्धा क्या करेंगे ? धर्म-कार्यों को किराए पर कराना तो घृणास्पद है ही—शान्ति में योद्धा लोग क्या नाच-रङ्ग में पड़े रहेंगे, जैसा कि पहले होता था ? क्या आज भी सभी जातियाँ सब प्रकार के व्यापार नहीं कर रही हैं ? क्या युद्ध-जीवन ठण्डा होते ही आज करोड़ों राजपूत—जाट, गूजर आदि जो क्षत्रिय हैं, खेती नहीं कर रहे हैं—पशु-पालन नहीं कर रहे हैं, जो वास्तव में वैश्य का कर्त्तव्य है ? फिर वे झूठ-मूठ को क्षत्रिय या राजपूत क्यों कहलाते हैं ? इसलिए हम कहते हैं कि हम वर्ण और जाति की व्यवस्था को ही नष्ट कर दें। हम सारे भारत की एक जाति निर्माण करें। और रोटी-बेटी के सम्बन्ध न केवल भारत भर में, प्रत्युत संसार की मनुष्य जाति भर में जायज़ हो जायँ। तभी एशिया का यह सर्व-प्रधान देश अपने व्यक्तित्व को उदय करेगा और इसकी वह सत्ता चमकेगी, जो यूरोप के शायद ही किसी देश की चमकी हो।

* * *

नवीन मुस्लिम संसार के निर्माता

अफ़ग़ानिस्तान के वर्तमान सम्राट नादिरशाह

तुर्की की प्रसिद्ध महिला-नेत्री श्रीमती हलीदा अदीब हानूम

तुर्की का वर्तमान विधाता मुस्तफ़ा कमाल पाशा

ईरान के वर्तमान सम्राट क्रान्तिकारी रिज़ाशाह

अफ़ग़ानिस्तान के देशभक्त सुधार-प्रिय शाह अमानुल्ला

मोरक्को का बहादुर नेता अब्दुलकरीम

कमाल पाशा की सुयोग्य धर्मपत्नी श्रीमती लतीफ़ा हानूम
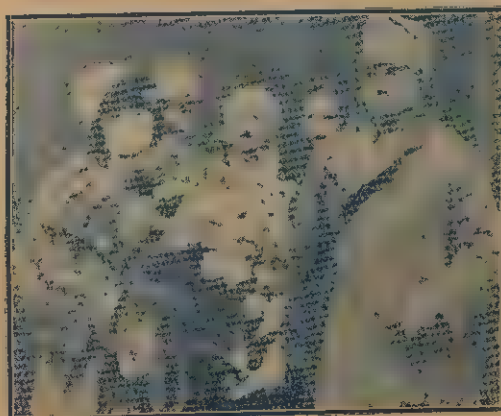
अफ़ग़ानिस्तान की भूतपूर्व सम्राज्ञी सुरिया अपने पति के साथ

तुर्की की आधुनिक महिलाए

लाहौर-षड्यन्त्र केस के अभिनेता

(गताङ्क से आगे)

डॉ० गयाप्रसाद

श्री० बटुकेश्वर दत्त
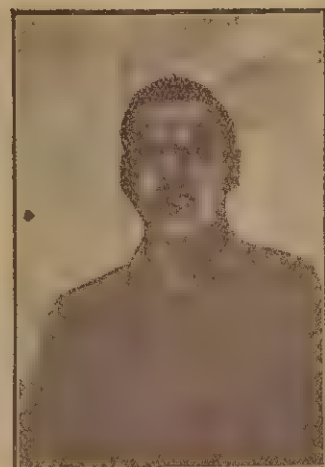
श्री० जयदेव कपूर

श्री० कमलनाथ तिवारी

श्री० प्रेमदत्त
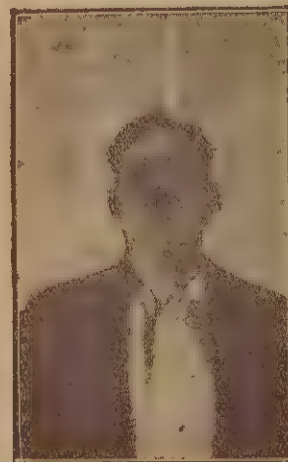
श्री० महावीर सिंह

श्री० जे० एन० सान्याल

श्री० कुन्दनलाल

भारतीय महिलाओं की प्रभावशाली संस्था
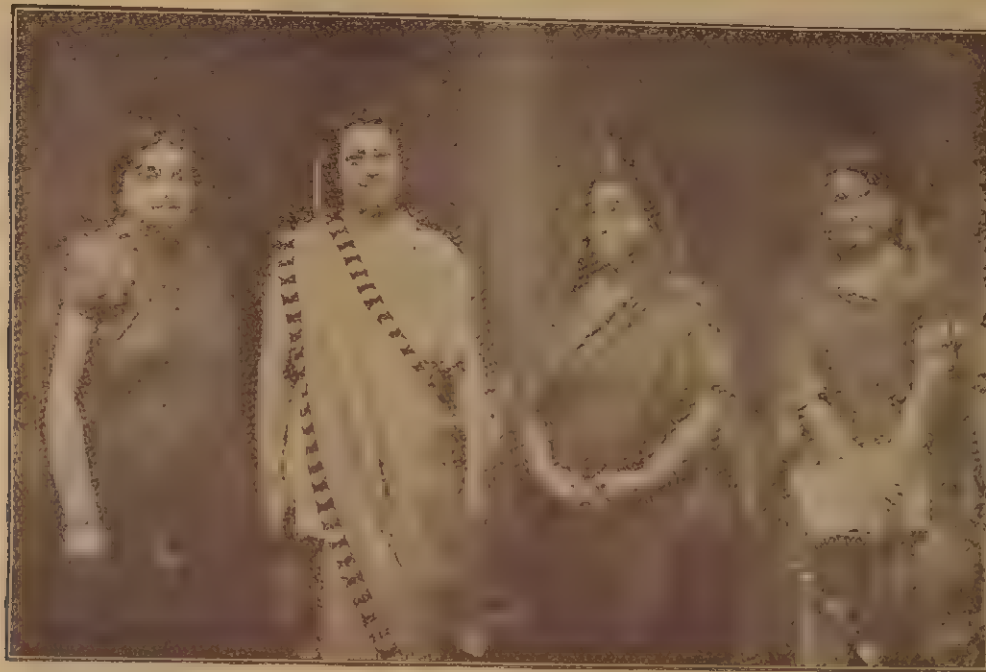
बम्बई महिला कॉन्फ़्रेन्स की प्रधान कार्यकर्त्री

☞ श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय, लेडी ताता, श्रीमती सरोजिनी नायडू और श्रीमती हन्सा मेहता

गत जनवरी मास में बम्बई में होने वाली अखिल भारतवर्षीय महिला कॉन्फ़्रेन्स में सम्मिलित होने वाली गण्य-मान्य महिलाएँ। बीच में कॉन्फ़्रेन्स की अध्यक्षा श्रीमती सरोजिनी नायडू बैठी हैं।

मिसेज़ एम० ई० कजिन्स

अ० भा० महिला कॉन्फ़्रेन्स की मन्त्रिणी

श्रीमती सुषमा सेन

अ० भा० महिला कॉन्फ़्रेन्स की प्रधान कार्यकर्त्री

मिसेज़ ह्यइडे कूपर

अ० भा० महिला कॉन्फ़्रेन्स की उप सभानेत्री

सेठ जी की राय

रायबहादुर सेठ मुच्छन्दरमल जी म्युनिसिपिल कमिश्नर हैं। आप अङ्गरेज़ी नहीं जानते। जब किसी प्रस्ताव पर बहस होती है, आप जेब से चिट्ठियाँ निकाल, पढ़ने बैठ जाते हैं। और सदा साहेब की राय का अनुमोदन करते हैं।

साहेब प्रस्ताव पर राय ले रहे हैं, सेठ जी चिट्ठी पढ़ रहे हैं।

साहेब की काँई राय है ?

बकरीद के अवसर पर कितने बकरे काटे जायँ—१००० या २००, यह प्रस्ताव था। प्रस्ताव पर साहब बोल रहे थे, सेठ जी चिट्ठियों में डूब रहे थे। जब आपसे पूछा गया—सेठ जी आपकी क्या राय है, तो घबरा कर एक मेम्बर के कान में पूछा—"साहेब की काँई राय है ?"

"उनकी राय १००० की है।"

"म्हारी राय दो हज्जार की है !!"

"म्हाँ की राय दो हज्जार की है।"

(प्रस्ताव पास होने पर)

मेम्बर—धिकार ! धिकार !! जैनी होकर दो हज़ार बकरा काटने की राय दी !!

"म्हारी राय कोनी—म्हारी राय कोनी !!"

सेठ जी—(घबरा कर) बकरा किशा ? किशा बकरा ??

मेम्बर—बकरीद पर काटने के लिए !

सेठ जी—म्हारी राय कोनी—म्हारी राय कोनी ! म्हें तो रुपैया खरच की बात समझी ही।

स्त्रियों का ओज

अस्मत पर हाथ

[लेखक—???]

बूँदी के राजमहलों में नाच-रङ्ग के दौर-दौरे थे। छोटे महाराज का विवाह था। डाढिनें गा रही थीं। भाट विरद वर्णन कर रहे थे। बाँके राजपूत अपनी-अपनी बाँकी अदा दिखा कर मस्ती दिखा रहे थे।

कुँवर साहेब उठती उम्र के अल्हड़ युवक थे। वे एक बढ़िया क़ालीन पर समवयस्कों के साथ मस्नद के सहारे पड़े शराब की प्यालियाँ ख़ाली कर रहे थे। ख़वास और गोले ख़िदमत में हाज़िर थे। कुँवर साहेब ने हँस कर एक दोस्त से कहा—यार, बूँदी में सब से ज़्यादा सुन्दर स्त्री कौन है?

"ओह, क्या महाराज कुमार को इसका पता ही नहीं, अजी आपकी बड़ी साली साहिबा के मुक़ाबिले की स्त्री इस समय बूँदी तो क्या राजपूताने भर में नहीं है"—एक मित्र ने उत्साह से कहा।

"क्या सत्य?"

"कुमार चाहे जब आज़मा लें, अब तो आप नातेदार हो गए। और नाता भी ऐसा कि दो बात उल्टी-सीधी भी हो जायँ तो निभाव हो जाय।"

कुमार हँस पड़े। बोले—तब आज ज़रा उस मुख-चन्द्र की बहार देखी जायगी।

"मगर कुमार, यह वादा कीजिए कि जो कुछ गुज़रेगी सब मित्रों को बताना पड़ेगा।"

"लो हम हाथ पर हाथ मारते हैं।"

एक बार यार लोग ठहाका मार कर हँस पड़े। और एक-एक प्याला और पीकर उन्होंने एक साँस ली।

२

महल में बाँदियों ने कुँवर साहेब को ले जाकर एक गद्दी पर बैठा दिया। ऊपर चन्दोवा तान दिया। एक ने सुराही से शराब भर कर कुँवर साहेब को दी; उन्होंने उसे पीकर प्याला अशर्फ़ियों से भर कर लौटा दिया। दूसरी ने पान की गिलोरियाँ पेश कीं। कुँवर साहेब ने उस पर अपनी मोतियों की माला और एक कटाक्ष फेंक दिया।

तीसरी बाँदी ने आगे बढ़ कर मुजरा करके कहा—कुँवर साहेब! हुक्म हो तो कुछ गाना-बजाना हो।

कुँवर साहेब ने हँस कर कहा—यह तो कहो, तुममें राजकुमारी कौन सी है?

"सरकार हम लोग तो बाँदियाँ हैं, हुक्म हो सो बजा लावें।"

"तब क्या बड़ी बाई साहिबा भी हमसे छिप कर बैठेंगी?"

"हुज़ूर, छिप कर क्यों; वे तो आपके ब्याह की तैयारी में हैं।"

"उन्हें ज़रा बुलाओ तो।"

बाँदी दौड़ी गई। क्षण भर बाद महाराज कुमारी उपस्थित थीं। उन्होंने मुस्कुरा कर कहा—बींद राजा का क्या हुक्म है?

राजकुमार की आँखें उस रूप को देख कर झँप गईं। उन्होंने मुस्कुरा कर कहा—हुक्म देने वाले तो यहाँ हाज़िर नहीं हैं, कहें तो जैसलमेर साँडनी सवार भेज दिया जाय।

"इतना कष्ट क्यों, उनका हुक्म लेकर तो यहाँ आई ही हूँ, आज आपका भी हुक्म बजा लाया जाय।"

"इस तुच्छ पर इतनी कृपा का कारण?"

"कारण? कारण की एक ही कही।"

"फिर भी।"

"आप बींद राजा हैं—हमारे मान हैं—महमान हैं—यहाँ महाराज पर भी हुक्म करें तो उसे बजा लाना ही होगा।"

राजकुमार हँसने लगे। राजकुमारी ने और निकट आकर कहा—बैठिए, खड़े कब तक रहेंगे, मैं आपके लिए जलपान.........

राजकुमार ने अनायास ही कुमारी का हाथ पकड़ कर कहा—आप भी तो बैठिए; दासी.........

कुमार पूरी बात कह न सके, एक प्रबल धक्का खाकर वे धरती में जा गिरे!

क्षण भर बाद उन्होंने उठ कर देखा—वह रूप-राशि सुकुमार महिला सिंहनी की भाँति ज्वालामय नेत्रों से उन्हें ताक रही है। उसके नथने फूल गए हैं और श्वास में तूफ़ान के चिन्ह देख पड़ते हैं।

राजकुमार काँप उठे। उनके मुख से बात न निकली। कुमारी ने वज्र गर्जन की भाँति कहा—कायर, पापिष्ट!! अधम!!!

इसके बाद ही उसने अपने वस्त्रों से कटार निकाला और देखते-देखते अपनी उस सुन्दर सुकुमार कलाई को खट से काट डाला।

रक्त की धार बह चली। दासी-बाँदी हक्का-बक्का खड़ी रह गईं। देखते ही देखते महल के सभी छोटे-बड़े वहाँ इकट्ठे हो गए। महाराज ने आकर कहा—बेटी, यह क्या किया?

"इस पापिष्ट ने मुझे छू लिया।"

"बेटी, यह नाता ही ऐसा है।"

"पिता जी, चुप रहो।"

महाराज ने गर्दन नीची कर ली। कुमारी शीघ्र ही मूर्च्छित होकर धरती में गिर गईं।

३

"वीरेन्द्र!"

"अन्नदाता, महारानी।"

"अभी जैसलमेर को साँडनी रवाना कर दो। वह बिना मञ्ज़िल लिए जाय और महारावल से सब हक़ीक़त बयान कर दे। और अभी हमारे कूच की भी तत्काल तैयारी कर दो।"

"जो महारानी की आज्ञा।"

बूँदी भर के छोटे-बड़े राजवर्गी इकट्ठे हो गए। सभी ने कुमारी को समझाया, पर उसने हठ न छोड़ी! उसके मुख पर शब्द थे—अस्मत! अस्मत! होठ मानो आप ही फड़क रहे थे और उनमें से 'अस्मत' की ध्वनि फूटी पड़ती थी।

* * *

सबने समझ लिया कि ख़ैर नहीं। सारा रस-रङ्ग फीका पड़ गया। सबके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। महाराज ने वर-पक्ष से कहला भेजा कि लड़की का डोला तैयार है, उत्तम यही है कि झटपट विदा हो जाइए। यदि जैसलमेर की सेना आ गई तो एक भी मर्द बच्चा जीवित न बचेगा?

रो-रोकर दुलहिन विदा हुई। इसके भाग्य में कै घड़ी का सुहाग था? कौन जाने? राजमहल में कुहराम मच रहा था। थोड़ी ही देर में दुलहिन की पालकी को बीच में डाले वर-पक्ष की सेना सर्प की भाँति दुर्ग से बाहर जा रही थी।

* * *

दो ही मञ्ज़िल के बाद गर्द उड़ती देख वर-पक्ष ने समझ लिया कि काल मण्डराता हुआ आ रहा है। इधर सेना बहुत कम थी। पर जितने भी थे, वे मोर्चेबन्दी करके तलवारें सूत कर मरने को खड़े हो गए!

४

"इस सेना का मुखिया कौन है?"

"यह सेना नहीं, बारात है।"

"इस बारात में हमारा गुनहगार है, उसे हमारे सुपुर्द किया जाय।"

"वह कौन है?"

"बींदराज।"

"उन्हें हम प्राण रहते सुपुर्द नहीं कर सकते।"

"तुम्हारे प्राण रहने ही न पावेंगे।"

"हमें इसकी परवा नहीं। पर बारात पर अकस्मात यों चढ़ दौड़ना वीरता नहीं।"

"यहाँ वीरता का प्रश्न नहीं, यहाँ शत्रु से युद्ध नहीं, यहाँ अपराधी को गिरफ़्तार करके दण्ड देना है।"

"उसका अपराध क्या है?"

"उसने स्त्री की अस्मत पर हाथ डाला है।"

"वह साधारण दोष था।"

"उसकी सज़ा मौत है।"

"यह साधारण काम नहीं।"

"यदि राजपूताने की तलवारें भी आकर उसकी रक्षा करना चाहें तो बचा नहीं सकतीं।"

बाँके वीर टूट पड़े। खटाखट तलवारें चलीं और देखते ही देखते ख़ून की नदी बह निकली। जैसलमेर की सेना विजयी हुई। सेना के सर्दार ने लाशों में से दूल्हा की लाश निकाल कर, उच्च स्वर से कहा—प्रिये! अपराधी को दण्ड मिल गया।

"स्वामिन! अब एक और कर्त्तव्य शेष रह गया है।"

यह कह कर ज्येष्ठ राजकुमारी डोले में से निकल कर लाशों को पैरों से रौंदती हुई—दुलहिन के डोले के पास पहुँची। देखा, दुलहिन की आँखों में आँसू नहीं हैं। उसने अपने हाथ से माथे का सिन्दूर पोंछ लिया है और अपनी सुहाग की चूड़ियाँ चूर-चूर कर डाली हैं। बहिन

को देखते ही वह सहसा हँस पड़ी। उसने कहा—जीजा जी कहाँ हैं?

वह क्रुद्ध वीर—जो अब तक बघेरे की भाँति तलवार लिए फिरता था, चुपचाप विनयपूर्वक आ खड़ा हुआ। उसने विनम्र स्वर से कहा—बाई जी को मुजरा है।

"जीजा जी! जीजी के मन का तो तुमने किया—अब कुछ मेरा भी उपकार कर दो।"

"जो आज्ञा।"

"क्या मेरे ससुराल वालों में कोई जीवित बचा है?"

"एक भी नहीं।"

"तब तुम्हीं चिता चुन दो, पति की लाश को स्नान करा—चन्दन चर्चित कर—रख दो, जीजी आग दे देगी। मैं अब सती होऊँगी। जीजा जी, यह कष्ट तो करना होगा।"

वीर राजपूत की आँखों में एक बूँद आँसू आकर ढलक गया। उसने वीरबाला का सैनिक सलाम किया और पीछे हट गया।

* * *

सूर्य छिप रहा था। और चिता बड़ी-बड़ी लपटों को उड़ा कर धक-धक जल रही थी! बड़ी-बड़ी लकड़ियों के लाल-लाल अङ्गारे मानो हँस-हँस कर उस खेल को देख रहे !!

मुसलमान स्त्रियों को तलाक़ का अधिकार

श्रीमती शरीफ़ा हमीदअली ने स्त्रियों के तलाक़ के अधिकारों के सम्बन्ध में भारतीय स्त्री-कॉन्फ्रेन्स की कमेटी की सदस्याओं को एक नोटिस बँटवाया है, जिसका सार निम्न प्रकार है:—

प्यारी बहिनो,

आपको याद होगा कि दिल्ली की स्त्रियों ने कॉन्फ्रेन्स के बम्बई के अधिवेशन में इस आशय का एक प्रस्ताव भेजा था कि—'शरायत के अनुसार मुसलमान स्त्रियों का तलाक़ का अधिकार ब्रिटिश इण्डिया में माना जाना चाहिए।' उस समय स्टैण्डिङ्ग कमेटी ने मुझसे इस सम्बन्ध में मौलवियों, क़ाज़ियों और वकीलों की राय लेने के लिए कहा था। इस निर्णय के अनुसार मैंने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की थी, जिसके उत्तर में मुझे केवल दो सज्जनों की राय मिली; उनमें से एक तो पटना के श्री० सैयद हसन इमाम बैरिस्टर की है और दूसरी बम्बई के बैरिस्टर फ़ैज़ तैयब जी की। इन दोनों महाशयों की राय से मुझे निश्चय गया है कि ब्रिटिश इण्डिया में मुसलमान स्त्रियों का तलाक़ का अधिकार माना जाता है।

श्री० तैयब जी ने लिखा है कि—"आपके पत्रोत्तर में मैं आपको सदैव यह बात हृदय में रखने की सलाह देता हूँ, कि प्रचलित क़ानून के अनुसार यदि शादी के समय तलाक़ की शर्तें तय हो जायँ तो स्त्री को तलाक़ का सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हो जाता है।" वे यह भी कहते हैं कि—"हर एक फ़िर्क़े के लोगों को इस बात की इत्तला दे देनी चाहिए कि बिना क़ानून के सहारे या दूसरी दिक़्क़त उठाए वर-वधू की इच्छानुसार शादी की शर्तें तय की जा सकती हैं।

"मैं आपका ध्यान क़ानून के निम्न प्रमाणों की ओर आकर्षित करता हूँ।

पत्नी को कई प्रकार से तलाक़ का अधिकार प्राप्त हो सकता है:—

(१) शादी के समय एक ऐसी शर्त के द्वारा कि स्त्री को तलाक़ का अधिकार होगा।

(२) पति की आज्ञा से।

(३) इस सम्बन्ध में अपने पति की प्रतिनिधि नियुक्त होकर।

(४) यदि किसी संयोगवश पति तलाक़ दे दे तो; संयोग ऐसा हो जिसमें स्त्री का अधिकार हो।"

तैयब जी कृत 'मुहम्मडन लॉ' की दफ़ा १४४ में तलाक़ की जो हिदायत की गई है, उसके सम्बन्ध में सैय्यद साहिब अमीरअली लिखते हैं:—

"शादी की शर्तों के सम्बन्ध में इस दफ़ा का हर एक पद (Clause) मिलता-जुलता है। यदि पति एक शादी हो चुकने पर दूसरी शादी कर ले तो सुन्नी लॉ में उसकी पहिली शादी झूठी सिद्ध हो जायगी और दूसरी स्त्री रख लेने पर यह समझा जायगा कि उसने अपनी पहिली शादी तोड़ दी है।" ऐसी स्थिति में यदि पहिली शादी की सब रस्में अदा हो चुकी हैं, तो वे ही रस्में फिर से होंगी।

तलाक़ के सम्बन्ध में 'शिया लॉ' 'सुन्नी लॉ' से भिन्न नहीं है। तैयब जी कृत मुहम्मडन लॉ की दफ़ा १२९ में उसका उल्लेख इस प्रकार है:—

"पति क़ानून के अनुसार अपनी स्त्री या दूसरे पुरुष को अपनी ओर से तलाक़ के एलान को मञ्ज़ूर या खण्डित करने का अधिकार दे सकता है।"

मैं स्टैण्डिङ्ग कमेटी के सदस्यों के सम्मुख इस बात पर अधिक ज़ोर इसलिए देती हूँ कि शादी के समय शर्त द्वारा स्त्री केवल तलाक़ का ही अधिकार प्राप्त नहीं कर सकती, वरन उसी समय एक अलग शर्त द्वारा दूसरी शादी रोकने का भी वह अधिकार प्राप्त कर सकती है।

इसलिए मेरी हार्दिक इच्छा यही है कि 'मुस्लिम लॉ' के ज्ञान के प्रसार में हर एक व्यक्ति भरसक सहायता करे, जिससे शादी के समय वधू या उसके रिश्तेदार कन्या की रक्षा के निमित्त समुचित शर्तें रख सकें। जिस प्रकार शादी में 'महर' होता है उसी प्रकार पत्नी को तलाक़ का अधिकार भी निम्न परिस्थितियों में प्राप्त होना चाहिए:—

भारतीय स्त्रियों का जेल

(क) पति के दूसरा विवाह कर लेने पर (ख) पत्नी के साथ क्रूर व्यवहार करने पर (ग) उसके व्यभिचारी हो जाने पर और (घ) इस्लाम के अनुसार विवाह के कर्त्तव्यों का पालन और भरण-पोषण न करने पर।

यदि स्टैण्डिङ्ग कमेटी ने अपनी अनुमति दी तो हम अङ्गरेज़ी और उर्दू दोनों भाषाओं में शादी के नियम-पत्र कॉन्फ्रेन्स के वार्षिक अधिवेशन में वितरण करवाने का प्रबन्ध करेंगे। इससे लोगों में केवल 'मुस्लिम लॉ' का ज्ञान ही न फैलेगा; साथ ही वे उसका व्यावहारिक उपयोग भी समझ जायँगे।

* * *

[कुँवर जगदीशसिंह गहलोत, एम आर० ए० एस०]

इस भूतल पर अनेक मनुष्य मर चुके, प्रति दिन मर रहे हैं और मरते रहेंगे ; परन्तु कुछ ही मनुष्य ऐसे मिलेंगे, जिन्होंने अपना जीवन सफल किया है। वे मर चुके, किन्तु ज़िन्दा हैं ; उनका हाड़-मांस का शरीर छूट गया है, परन्तु कीर्ति के अमर शरीर में वे चिरञ्जीवी हो गए। चिरञ्जीवी बनने के लिए असाधारण अलौकिकता की ज़रूरत है। इस पृथ्वी पर जितने भी मनुष्य चिरञ्जीवी बने हैं, भले ही वे पौराणिक कथाओं के नायक हों, अथवा ऐतिहासिक घटनाओं के मूलाधार हों—सभी अलौकिक थे। वे मनुष्य से माधव बने थे, नर से नारायण हुए थे। प्राचीन तथा अर्वाचीन काल के सभी अलौकिक पुरुष, वीर, वैज्ञानिक, त्यागी, साधु, जिन्होंने समस्त संसार का, अखिल मानव जाति का एक क़दम आगे बढ़ाया, उसका जीवन महान बनाया, सुख की वृद्धि की, बुद्धि के द्वार को खोला—वे लोग मर कर भी जीवित हैं—अजर हैं, अमर हैं। उनकी काया नहीं है, किन्तु छाया मौजूद है। संसार की उन्नति में, देश की स्वाधीनता में, अपने मानमर्यादा एवम् स्वाभिमान की रक्षा में अपनी आहुति देने वालों को किसने नहीं पूजा ?

वीर दुर्गंदास राठौड़ ऐसे ही पुरुषों में से थे। वे एकदेशीय थे, परन्तु उनके अन्दर भारत में स्वराज्य-स्थापन करने की आग धधक रही थी। वे मारवाड़ की भूमि में पैदा होकर भी समस्त भारत को अपना समझते थे। राठौड़ क्षत्रिय होकर भी सभी स्त्री-पुरुषों को अपने कुटुम्बी जन मानते थे। उनमें देश-सेवा का रस बह रहा था। उनमें एक प्रकार की आग सी थी, दीवानापन था। अपने उद्देश्य की सिद्धि में एक प्रकार की विस्मृति थी। विस्मृति भी कैसी ? जो असंख्य कठिनाइयों को, गहन परिस्थितियों को, विघ्न-बाधाओं को, हृदय में प्रज्वलित होने वाली आग के साथ ही व्यक्ति को भी बहुत ऊँचा और बहुत दूर ले जाना चाहती हो। वीर दुर्गंदास में एक मानसिक नशा था। वह आज़ादी का दीवाना था और स्वाभिमान की जागृत मूर्ति था। उसने अपना एक रास्ता बना लिया था और एक ही उद्देश्य निश्चित कर लिया था। उसने कभी परिस्थिति की जटिलता का विचार करने में अपना समय नष्ट नहीं किया। सांसारिक सफलता का उसने अपने जीवन में कभी हिसाब नहीं लगाया। वह कर्मवीर था, साहसी था, शूर था, नीतिज्ञ था। वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के पहिले किसी से कोई बात सुनने को तैयार नहीं था। वह निर्भयतापूर्वक अपने निश्चित पथ पर चलने वाला नर-वीर था।

वीर दुर्गंदास का जीवन इसलिए महान नहीं था, कि उसने औरङ्ग़ज़ेब जैसे अत्याचारी बादशाह की कूट-नीति को कुण्ठित बना दिया, दुर्गंदास की महत्ता इसमें नहीं थी कि उसने युद्ध-क्षेत्र में अपने राजपूत सैनिकों के साथ वह बाहुबल दिखाया कि विपक्षी भी घबरा गए। ये बातें उसकी महानता प्रदर्शित अवश्य करती हैं, परन्तु ये बातें दूसरे कई व्यक्तियों के चरित्र में भी देखी जा सकती हैं। भारतीय इतिहास में ऐसे कई वीर पुरुष दिखाई पड़ते हैं। चिलियानवाला और नैपाल के युद्ध शूरवीरता में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। दुर्गंदास की महत्ता उसके दृढ़ निश्चय में है, उसके स्वाभिमान में है, अपने लक्ष्य तक पहुँचने में है, उसके त्याग में है और स्वातन्त्र्य-प्रियता में है। वह अपने ध्येय की पूर्ति में दिन-रात, वर्षा-धूप, शीत, आँधी, दुःख-सुख—कुछ भी नहीं देखता था। वह अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्राणों को बाज़ी लगाए था। दृढ़ता, लगन, और स्वार्थ-त्याग—ये तीन बातें वीर दुर्गंदास को अन्य राजपूतों से ऊपर आसीन करती हैं।

अनेक बातों पर विचार करने के बाद हम यह कह सकते हैं कि स्वतन्त्रता-प्रेम की दृष्टि से संसार के इतिहास में दुर्गंदास का नाम स्वर्णाक्षरों में अङ्कित किए जाने योग्य है। संसार में स्वतन्त्रता के लिए अनेक स्थानों पर अनेक संग्राम हुए, जिनमें अनेक वीरों तथा स्वतन्त्रता के पुजारियों ने सेनापति का पद ग्रहण किया। वे लोग अपने-अपने कार्यों से इस संसार में अपनी कीर्ति अमर कर गए। इनसे वीर दुर्गंदास की तुलना करने से हमारे कथन की पुष्टि हो जायगी।

भारतीय इतिहास में महाराणा प्रताप का पद बहुत ही ऊँचा है। वे अपनी धुन के पक्के और हिन्दुत्व के अवतार थे। आर्यों का पवित्र रक्त उनकी नस-नस में बहता था। परन्तु समय की गति उन दिनों विचित्र ही थी। उन दिनों हिन्दुओं में स्वार्थ और आपसी फूट की आग धधक रही थी। देश छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हो चुका था। क्षत्रिय लोग किसी उच्च उद्देश्य के लिए आपस में मिलने को तैयार नहीं थे। धर्म के विषय में हिन्दुओं को कुछ कहने-सुनने की ज़रूरत थी ही नहीं, क्योंकि अकबर जैसा कूटनीतिज्ञ शासक हिन्दू-धर्म की कायापलट करने में एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहा था। हिन्दू नरेश अपनी बहिन-बेटियों का विवाह अकबर से कर चुके थे। अकबर की उदार तथा राजनैतिक नीति ने हिन्दुओं को मन्त्र-मुग्ध कर रक्खा था। ऐसे समय में राणा प्रताप ने स्वातन्त्र्य शङ्ख फूँक कर लोगों को आश्चर्य में डाल दिया। आमेर, जोधपुर, बीकानेर आदि के नरेशों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। अकबर ने इन्हीं नरेशों की मदद से मेवाड़ पर आक्रमण किया। चित्तौड़ का पतन होते ही राणा उदयसिंह भाग गए। समय पाकर महाराणा प्रतापसिंह ने स्वतन्त्रता का झण्डा फहराया, परन्तु खुले आम किसी हिन्दू शक्ति ने उनका साथ नहीं दिया। महाराणा प्रताप अपने बाहुबल पर ही शत्रु से टकराया और अकबर को बादशाह नहीं माना—उसे अपना मस्तक नहीं झुकाया। उसके देश-भाई और धर्म-भाई लड़े, परन्तु वह वीर अपने प्रण पर अटल ही बना रहा।

परन्तु वीर दुर्गंदास के समय में तो मारवाड़ की बहुत ही बुरी दशा थी। वह जोधपुर, जो अकबर के समय में अपने राज्य का स्वामी था, इन दिनों अत्याचारी औरङ्ग़ज़ेब के हाथों बर्बाद किया जा चुका था। जोधपुर लुट चुका था, देव-मन्दिर तोड़-फोड़ दिए गए थे, मूर्त्तियाँ तोड़ कर फेंक दी गई थीं। गाँवों में आग लगा कर मैदान कर दिए गए थे। मारवाड़ का कोई धनी-धोरी नहीं था। मारवाड़ की प्रजा अनाथ होकर शाही अत्याचारों से बुरी तरह कुचली जा रही थी, यहाँ तक कि राजवंश भी आपदाओं से घिरा हुआ था। विपत्तियों के काले बादल मारवाड़ पर मँडरा रहे थे। ऐसे समय में दुर्गंदास ने जो अद्भुत कार्य कर दिखाया, वह अद्वितीय कहा जा सकता है। दुर्गंदास ने जिस अदम्य-उत्साह और त्याग-बुद्धि के साथ अपना कार्य किया और पशुबल से टक्कर की, उसके फल-स्वरूप विजय-श्री ने अपने हाथों उनके गले में जयमाल पहनाई।

यदि महाराजा शिवाजी के साथ दुर्गंदास की तुलना की जाय तो दोनों की परिस्थिति में भिन्नता मिलेगी। जितने साधन छत्रपति शिवाजी को प्राप्त थे उतने दुर्गंदास को उपलब्ध न थे। जिस स्वातन्त्र्य-गगन में शिवाजी उदय हुए थे, उसकी सामग्री पहले ही तैयार थी। शाहजहाँ और औरङ्ग़ज़ेब की अनुदार नीति से हिन्दुओं की नींद खुल चुकी थी। हिन्दुओं में स्वदेश एवम् स्वधर्म-रक्षा के लिए क्रान्ति के भावों का उदय होने लगा था। महात्मा रामदास, सन्त तुकाराम, और प्राणनाथ जैसे त्यागी महापुरुषों ने भूमिका तैयार कर दी थी। सारांश यह कि विराट आन्दोलन की समस्त सामग्री पहले से ही तैय्यार थी। केवल एक योग्य नेता की आवश्यकता थी। शिवाजी ने झण्डा उठाया और कार्य आरम्भ कर दिया। ईंधन तैयार था, बस आग सुलगा कर प्रज्वलित कर दी। परन्तु दुर्गंदास के लिए इतने अच्छे साधन उपस्थित न थे। इतना होने पर भी वह अपने कार्य में सफल-मनोरथ हुआ, यह कुछ साधारण बात नहीं है।

विदेशी वीरों से यदि दुर्गंदास की तुलना की जाय तो कई बातों में दुर्गंदास का पलड़ा भारी रहेगा। स्कॉटलैण्ड के प्रसिद्ध योद्धा रॉबर्ट ब्रूस को ही लीजिए। उसने स्कॉटलैण्ड का उद्धार किया। उसने अपने देश के लिए दुर्गंदास से कुछ कम कष्ट नहीं सहे। उसने अन्त में विजय प्राप्त अवश्य की ; किन्तु अपने शत्रु वीर एडवर्ड प्रथम के मर जाने पर और उसकी गद्दी पर कमज़ोर एवं आलसी एडवर्ड द्वितीय के बैठ जाने पर ! रॉबर्ट ब्रूस की उचित माँगों का स्कॉटलैण्ड के बच्चे-बच्चे ने समर्थन किया था। परन्तु वीर दुर्गंदास की परिस्थिति इससे भिन्न थी। औरङ्ग़ज़ेब का प्रताप-सूर्य आकाश में प्रखर किरणों से तप रहा था। मारवाड़ के कई क्षत्रिय मुसलमानों का पक्ष लेकर अपने देश-भाई और जाति-भाइयों का ख़ून बहाने को सर्वदा उद्यत रहते थे। यहाँ तक कि दुर्गंदास जिनके लिए अपना प्राण तक निछावर करने को उद्यत थे, वे जोधपुर-नरेश भी अपने मुँह-लगे सरदारों के बहकाने में आकर उनके प्रति सन्देह और मनमुटाव रखते थे। इसका इससे अधिक और क्या प्रमाण होगा कि दुर्गंदास को अन्त में मारवाड़ से बाहर जाकर अपना शेष जीवन व्यतीत करना पड़ा। इतना होते हुए भी राठौड़ वीर दुर्गंदास ने कर्त्तव्य-पालन से कभी पीछे पग नहीं हटाया। अतएव कहा जा सकता है कि स्कॉटलैण्ड के रॉबर्ट ब्रूस से दुर्गंदास का पद ऊँचा है।

अमेरिका के जार्ज वाशिङ्गटन वहाँ के स्वातन्त्र्य-युद्ध के सेनापति थे। वे विजयी हुए, परन्तु उनकी परिस्थिति दुर्गंदास से भिन्न थी। उनके साथ अमेरिका की सहानुभूति थी, और स्पेन, फ़्रान्स आदि देशों की उन्हें पूरी-पूरी मदद थी, इसी कारण वे सफल हुए। पर वीर दुर्गंदास ? वीर दुर्गंदास तो अकेला ही था, जो अपने इने-गिने साथियों को लेकर अपने देश को स्वतन्त्र बनाने के लिए दीवाना बना घूमता था। परिस्थिति उसके अनुकूल नहीं होती थी, किन्तु परिस्थिति को वह अपने अनुकूल तैयार कर लेता था। उसने अपना एक मार्ग चुन लिया था और जब तक वह रास्ता ख़त्म न हो जाय, वह कोई दूसरी बात सुनना अथवा जानना नहीं चाहता था।

उन्नीसवीं शताब्दी में स्वतन्त्रता की आग इटली में बड़े ज़ोरों से धधक उठी थी। किन्तु वहाँ सारा राष्ट्र

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए बेचैन हो रहा था। मेज़िनी अपने जोशीले विचारों से नवयुवकों के उष्ण रक्त में उफ़ान पैदा कर दिया। गेरीबाल्डी की तलवार और कावूर की कूट-नीति ने विजय-प्राप्ति में सहायता पहुँचाई। यह आन्दोलन राष्ट्रीय था, और उसके नेता राष्ट्र की जगी हुई शक्ति के केवल सूत्रधार मात्र थे। परन्तु दुर्गादास के साथ यह बात नहीं थी। उसके आन्दोलन का जन्म उसी के मस्तिष्क से हुआ था। दुर्गादास के प्रयत्न से मारवाड़ ने अपने खोए हुए गौरव और सम्मान को पुनः प्राप्त कर अपने प्राचीन यश को अक्षुण्ण रक्खा। वह स्वाधीनता का पुजारी था, उसकी महानता उसके अटल निश्चय में थी। वह कार्य करते समय सफलता और असफलता का हिसाब लगाने नहीं बैठता था। वह वीर था, शूर था, और सच्चा क्षत्रिय था। ऐसे ही वीरों के कार्यों को देख कर विदेशी विद्वानों ने कहा है कि—

"The Rajpoot mother claims her full share in the glory of her son, who imbibes at the maternal fount his first rudimments of chivalry; and the importance of his parental instruction cannot be better illustrated than in the ever-recurring simile—'Make thy mother's milk resplendent.'"

अर्थात्—क्षत्रियों की माता को ही अपने पुत्र की कीर्ति का यश मिलना चाहिए, क्योंकि वह पहले-पहल क्षात्र-धर्म की शिक्षा अपनी माता की गोदी में ही प्राप्त करता है। उसके पिता का शिक्षा का महत्व इस प्रसिद्ध युक्ति से भलीभांति समझ में आ जाता है कि—"देखना अपनी माता का दूध न लजाना।"

तात्पर्य यह है कि सच्चा क्षत्रिय हमेशा अपनी आन पर, अपनी शान रखने के लिए प्राणोत्सर्ग के लिए तैयार रहता है। वीर दुर्गादास एक सच्चा राजपूत था, उसने अपना जीवन देश और धर्म की रक्षा में समर्पण कर दिया था। लाख-लाख प्रलोभनों से भी वह अपने महान उद्देश्य से तिल भर नहीं डिगा। वह अपने पथ पर मेरु की तरह अटल रहा। लेफ़्टिनेण्ट जनरल हिज़हाईनेस महाराजा रीजेण्ट सर प्रताप ने अपने आत्म-चरित में वीर-शिरोमणि दुर्गादास के विषय में लिखा है:—

"Several times Aurangzeb held out tempting offers to Durgadas Rathor that if he would make over Young Maharajah Ajitsingh to him, the whole of Marwar would be his reward. But Durgadas was a true Kshatriya and a loyal and faithful servant of his Maharaja and there was no place in his heart for harbouring such a thought, as long as lived, he devoted his body and soul to the preservation of the independence of his country and the life of his Chief. For which reasons the following verses referring to him are familiar all over Rajputana.

जननी सुत ऐसो जने, जैसो दुरगादास।
बाँध मुँडासो राखियो, बिन थम्बै आकास॥

अर्थात्—"कई बार औरङ्गज़ेब ने दुर्गादास से कहा कि यदि तुम अपने स्वामी अजीतसिंह को हमारे सुपुर्द कर दोगे तो हम तुम्हें सारे मारवाड़ का राजा बना देंगे। परन्तु दुर्गादास एक सच्चा क्षत्रिय था, उसे कोई प्रलोभन विचलित न कर सका। दुर्गादास जब तक जिए उन्होंने अपना शरीर और अपनी आत्मा अपने देश तथा अपने स्वामी के ही हितचिन्तन में अर्पित की। इसीलिए मारवाड़ में उपरोक्त दोहा आज भी प्रत्येक नर-नारी की ज़बान पर है।"

इतने विवेचन से यह सिद्ध है कि दुर्गादास एक दैवी विभूति था, उसने अपना जीवन देश-भक्ति और स्वामि-भक्ति की वेदी पर चढ़ा दिया था। वह देश का एक चमकता हुआ नक्षत्र था—परोपकार और औदार्य की सजीव मूर्ति था। उसने अपने गुणों से यश प्राप्त किया था।

भारतीय इतिहास ऐसे नर-रत्नों के सुयश से ही जगमगा रहा है, वह हमें अपने अतीत की याद दिला कर हममें साहस और स्फूर्ति उत्पन्न करता है। भारतीय इतिहास में वीर दुर्गादास का स्थान उच्च है। वह उन समस्त उत्कृष्ट गुणों की मूर्ति थे, जो कि एक सच्चे क्षत्रिय में स्वभावतः होते हैं। शारीरिक बल, शौर्य, वीरोचित दाक्षिण्य, स्वदेशानुराग और उच्चाशयता आदि विविध गुण उनमें पूर्णतः विकसित थे। संसार में जब तक सद्गुणों के प्रति आदर रहेगा, तब तक उनका नाम अपनी जाति के इतिहास में चमकते रहना अनिवार्य है।

* * *

(३५ वें पृष्ठ का शेषांश)

एक सज्जन बोल उठे—फ़िलहाल इतना काफ़ी है, आगे फिर जैसा होगा, देखा जायगा।

मैंने कहा—यारो, ज़रा मेरी ख़ूब तारीफ़ें करते रहो, जिससे लोग मेरी ही ओर आकर्षित हों।

एक महाशय बोले—तारीफ़ों के तो पुल बँध रहे हैं। रोज़ एक पुल तैयार हो जाता है। चुनाव का समय आ जाने तक सैकड़ों पुल तैयार हो जायँगे और आप उन्हीं पुलों पर से खट-खट करते हुए काउन्सिल में जा विराजेंगे—क्यों, कैसी कही?

सब चिल्ला उठे—वाह! वाह! वल्लाह, क्या कही है, वाह! क्या पुल बाँधे हैं। मालूम होता है, आप ठेकेदारी करते हैं।

वह साहब यह सुनते ही जामे से बाहर हो गए, कड़क कर बोले—ठेकेदारी करने वाले पर लानत भेजता हूँ, मैं शायर हूँ—समझे?

मैंने कहा—चलो अच्छा है कि शायर लोग पुल भी बाँध लेने लगे। कोई हर्ज नहीं! यह बड़ी अच्छी बात है, एक विद्या है। ईश्वर की दया से हमारे साथ सब तरह के आदमी हैं।

सो सम्पादक जी, अब मैं 'नेक्स्ट वीक' से गश्त लगाना आरम्भ करूँगा। काउन्सिल के लिए खड़े होने से एक लाभ तो हुआ और वह यह कि 'नेक्स्ट वीक' के अर्थ तुरन्त मालूम हो गए और आगे भी पढ़ने-लिखने का प्रबन्ध हो गया। शेष हाल अगली चिट्ठी में दूँगा।

भवदीय,
विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

यह बूढ़े की नींद का चमत्कार था!!

प्रभात आया और गया।

जातियाँ जागीं, उठीं और वहीं अपनी आयु शेष कर गईं।

मनु-कुल के वंश-बीज ने मद्य पी।

उत्तराखण्ड के प्रशान्त वातावरण में काम, क्रोध, होड़, बदाबदी, ईर्ष्या, कलह, स्वार्थ और पाखण्ड भर गया।

दुर्धर्ष क्षोभ हुआ।

हाहाकार मच गया।

मनुष्य घोड़ों की तरह दौड़े, भेड़ की तरह मरे और गधे की तरह पिसे!

यज्ञस्तूप जला कर मिलों की चिमनियाँ बना डाली गईं।

तपोवनों में कम्पनियाँ खुलीं।

समाधि के स्थलों पर ऑफ़िस बने।

ध्यान के समय काम का दौर-दौरा हुआ!!

गङ्गा और यमुना की कोमल देह कुल्हाड़ों से क्षत-विक्षत कर डाली गई!

यज्ञ-धेनुओं के मांस-खण्ड प्रिय खाद्य बने।

असूर्यपश्या महिलाएँ सार्वजनिक हुईं।

अबोध बालिकाओं ने वैधव्य का वेश पहना और निबाहा।

स्त्रैण नर वरों ने प्रथम लाज खण्ड पर और पीछे जीवन की श्वासों पर अभ्युदय और निःश्रेयस बेच डाला!

अन्नपूर्णा ने भीख माँगी।

इन्द्र ने दासता के टुकड़े खाए।

विश्वदेवा और रुद्र, वसु, यम पदच्युत हुए।

विशुद्ध आर्यत्व की मर्यादा गई।

उसी अन्धकार में नैतिक प्रलय का स्फोट हुआ, उसीमें नीति, धर्म, समाज और तत्व छिन्न-भिन्न और लीन हुए!!!

अब उसकी नींद खुली—

* * *

अब उसकी नींद खुली।

उसने देखा—

अँधेरा है।

उसी अँधेरे में, अन्धकार के अभ्यासी—कुछ अपरिचित जन्तु सर्वस्व खा और बखेर रहे हैं।

और—

वह कस कर बँधा पड़ा है। और उसके शरीर का क्रय-विक्रय हो रहा है।

पड़े ही पड़े, दृष्टि की कोर से, दृष्टि के छोर तक उसने देखा, सब कुछ नष्ट हो चुका है।

अब वह उस घर का ही न था।

अब वह उसका कुछ घर भी न था।

उसने अपने पुराने अभ्यास की एक गर्जना की।

उसने उबाल खाकर एक झटका दिया—बल लगाया—क्रोध किया।

पर, पुराना पुरुषार्थ योग्य न था।

अन्त में उसने हाय की, और अश्रुपात किया।

निर्दय, हृदयहीन, अकृतज्ञ जन्तु ठठा कर हँस पड़े।

एक पापकामा व्यभिचारिणी ने उसे ख़रीद लिया!!!

* * *

उत्तमोत्तम पुस्तकों का भारी स्टॉक

माधुरी ... ।)
विचित्र ख़ून ... ।)
विधाता की लीला ... ।)
विद्याधरी ... =)
मीराबाई ... ≡)
विक्रमादित्य ... -)
सभाविलास ... ।)
बालोपदेश ... ।)
कुसुमकुमारी ... १॥)
सुनहला विष ... ।=)
सत्य हरिश्चन्द्र ... ।=)
सूर रामायण ... ।=)
बदरुन्निसा की मुसीबत ... ≡)
भाषा सत्यनारायण कथा ... =)
भारत की देवियाँ ... ।-)
मायाविनी ... =)
बसन्त का सौभाग्य ... ।)
वसुमती ... ≡)
रसराज ... ।)
कुलटा (उपन्यास) ... ≡)
सरोजिनी (नाटक) ... ॥)
अन्योक्ति कल्पद्रुम ... ।=)
श्रृङ्गार दर्पण ... ॥)
जय नारसिंह की ... =)
कविराज लछीराम ... -)॥
सुर असर जादू ... ॥)
ललना-बुद्धि-प्रकाशिनी ... -)॥
अनेकार्थ और नाममाला ।)
अकबर ... ॥)
राजस्थान का इतिहास ... (१-९ भाग) ... २॥)
चन्द्रकान्ता ... १॥)
सुरसुन्दरी ... १॥)
प्रेम का मूल्य ... ॥।)
कुसुमलता (दो खण्ड) ३॥)
अभागिनी ... ॥)
अमृत पुलिन ... ॥)
क़िले की रानी ... ॥।)
खोई हुई दुलहिन ... ।)
हृदय-कण्टक ... ।-)
सुलोचना ... ... =)
वीरेन्द्रवीर या कटोरा भर ख़ून (दो भाग) १)
अत्याचार (उपन्यास) ।)
सिद्धेश्वरी ... ।)
चित्रकार ... ।)
लैला-मजनू ... ।)
विचित्र चोर ... ।)
बङ्गाली बाबू ... ।)
विष-विवाह ... ।)
समझ का फेर ... ।)
पकौड़ीमल ... ।)
आत्मत्याग ... ।)
श्यामा ... ।)
ख़ूनी की आत्म-कथा ... ।)
ग़रीब की लड़की ... ।)
मित्र ... ... ।)

माधुरी ... ... ।)
रामरखा का ख़ून ... ।)
रूप का बाज़ार ... ।)
गर्म राख ... ।)
कठपुतली ... ।)
योगिनी-विद्या ... ।)
संसार-विजयी ... ॥)
ललिता ... ॥)
हवाई डाकू ... १॥)
अद्भुत भूत ... ।)
छाती का छुरा ... -)
अज्ञातवास (नाटक) ... १)
अधःपतन ... ॥)
धनकन्या ... ।=)
दलित कुसुम ... ॥)
सूर-रामायण ... ।=)
विनय रसामृत ... -)
किरण-शशि ... ।-)
प्रेम का फल ... ।=)
कुली-कहानी ... ।-)
नागानन्द (नाटक) ... ।)
कपटी मुनि (नाटक) ... ।)
मदालसा ... ।-)
बिना सवार का घोड़ा ... ।≡)
मरता क्या न करता ... =)
सौतेली माँ ... =)
अब्दुल्ला का ख़ून ... =)
अवध की बेगम (दो भाग) ॥=)
साहसी डाकू ... १)
परिणाम ... १)
ज़बर्दस्त की लाठी ... ॥)
इन्द्र-सभा ... =)
ईश्वरी लीला ... =)
मजमुआ नज़ीर ... ।)
कुण्डलिया गिरधरदास ... ॥-)
क्या इसीको सभ्यता कहते हैं ? ... =)
चन्द्रकुमार ... =)
हवाई नाव ... ।)
पद्मिनी ... =)
व्यङ्गार्थ कौमुदी ... १)
स्वर्णबाई ... ।-)
क़िस्मत का खेल ... ॥)
लावण्यमयी ... =)
नाट्य सम्भव (रूपक) ।=)
जीवन-सन्ध्या ... १॥)
बजरङ्ग-बत्तीसी ... -)
कोकिला ... ।)
बालचर जीवन ... १)
लक्ष्मण-शतक ... ≡)
श्रृङ्गारदान ... ≡)
पद्मावती (नाटक) ... ।=)
दादाभाई नौरोजी ... -)॥
सूरदास (जीवन-चरित) =)
कलियुग-पचीसी ... =)
दिल दिवाली ... -)॥
अनुताप ... ।)

चित्र ... ... ≡)
गङ्गावतरण ... ॥)
भक्त सूरदास ... ॥=)
देश-दशा ... ॥।)
दो ख़ून ... =)
निर्धन की कन्या ... ॥)
हँसाने की कल ... =)
दुश्मने-ईमान ... ॥=)
वीर कर्ण ... १॥)
काला चाँद ... ।=)
द्रौपदी-स्वयम्बर (नाटक) ।=)
आतशी नाग ... ॥)
धर्मोजय ... ॥।)
कलियुग का बुख़ार ... =)
सत्य हरिश्चन्द्र ... ॥=)
सौभाग्य-सुन्दरी ... ॥।)
शैदे-हवस ... ।≡)
गौतम-अहिल्या ... ॥-)
ख़ूने-नाहक ... ।≡)
धर्मयोगी ... ॥।)
नौलखा हार ... =)
भूतों की लड़ाई ... -)॥
विश्वामित्र ... ॥।)
उषा-अनिरुद्ध ... ॥)
सम्राट अशोक ... ॥।-)
मेरी आशा ... १)
ख़ून का ख़ून ... ।≡)
एक प्याला ... १)
सती सुलोचना ... ॥।)
काली नागिन ... ॥=)
शरीफ़ बदमाश ... ॥=)
ख़ूबसूरत बला ... ॥)
ख़्वाबहस्ती ... ।≡)
सती सुनीति ... ॥।)
आँखों का गुनाह ... ॥।)
वीरबाला वा जयश्री ... ॥)
चन्द्रशेखर ... १।-)
सोने की कण्ठी ... १)
तेग़ेसितम वा नर-पिशाच ॥।)
रामप्यारी ... १)
राजदुलारी ... १)
वीर वाराङ्गना ... ॥)
रमणी-रहस्य ... ॥)
दर्प-दलन ... ॥।=)
भूला मसख़रा ... -)
दिल्लगी का ख़ज़ाना ... =)
शिवाजी की चतुराई ... =)
रानी दुर्गावती ... =)
कालग्रास ... ।)
क़हक़हे दीवार ... ≡)
राजरानी ... ≡)॥
श्रृङ्गार तिलक ... =)
रणबाँकुरा चौहान ... १)
मेवाड़ के महावीर ... १॥)
नैतिक जीवन ... १)
जेहाद ... ॥)
मातृ-भाषा ... ॥)

तक़दीर का फ़ैसला ... ॥)
ऊषा-अनिरुद्ध ... ॥।)
परिवर्तन ... १)
मशरक़ी हूर ... १)
रुक्मिणी मङ्गल ... ॥।)
परम भक्त प्रह्लाद ... १)
भारतमाता ... ।)
छत्रपति शिवाजी ... १॥)
मीठी गुआर ... =)
पद्य पुष्पाञ्जलि ... -)
मोहन गीतावली ... ≡)
बसन्त-वाटिका ... =)
राधेश्याम-कीर्तन ... ॥)
कुसुमकुञ्ज ... =)
रसीली तान ... =)
मुसाफ़िर की पॉकेट बुक ... ॥)
गृहिणी गीताञ्जलि ... ।)
वियोग-कथा ... ।)
शतलड़ी ... ॥।)
अजायबघर ... ॥)
बिजली ... १॥)
विनयपत्रिका ... २)
प्रेतलोक ... १)
भक्त स्त्रियाँ ... ॥)
योग-वाशिष्ठ-सार ... ।)
भीष्म-प्रतिज्ञा ... ।)
भीष्म-पराक्रम ... ।)
पाण्डव-जन्म ... ।)
महिषासुर वध ... ।)
शुभ का उत्पात ... ।)
चामुण्डा का पराक्रम ... ।)
अर्जुन-मोह ... ≡)
आत्मा की अमरता ... ≡)
कर्मयोग ... ≡)
विराट रूप दर्शन ... ≡)
जीव-ब्रह्म विवेक ... ≡)
अर्जुन का समाधान ... ≡)
द्रौपदी-लीला ... ≡)
ध्रुव-चरित्र ... ।)
प्रह्लाद-चरित्र ... ।)
सुदामा-चरित्र ... ।)
सत्यनारायण की कथा ... ।)
बोध-प्रकाशी ... ।)
सीता-बनवास ... ।)
रामाश्वमेध ... ।)
लवकुश की वीरता ... ।)
सतवन्ती सीता की विजय ।)
अहिरावण-बध ... ≡)
राधेश्याम विलास ... ॥।)
काव्योपवन ... ॥।)
उपासना-प्रकाश ... ॥)
जाति-भेद ... ॥।)
रजनी ... ... ॥)
पुण्यकीर्तन ... १)
आल्हा-रहस्य ... ॥=)
मन की लहर ... ≡)॥
निर्मला ... =)॥

इतिहास-समुच्चय ... २)
दशावतार कथा ... ॥)
मृण्मयी ... ॥।)
चरित्र-सुधार ... ॥।=)
उषाङ्गिनी ... १)
कृष्णकान्त का दान-पत्र ... ॥।)
भारतीय स्त्रियों की योग्यता (दो भाग) १)
रघुवीर रसरङ्ग ... ॥=)
श्रीरघुवीर गुण-दर्पण ... ॥=)
देवी चौधरानी ... ॥)
दुर्गेशनन्दिनी ... ॥।=)
सुख शर्वरी ... ।-)
केला ... -)
विज्ञान-प्रवेशिका (दो भाग) १)
सुवर्णकारी ... ।)
लाख की खेती ... ।)
कपास की खेती ... ॥)
देशी खेल ... ॥)
गृहिणी-गौरव १॥), २)
पुनरुत्थान ... ॥।=)
राजपथ का पथिक ... ।-)
दरिद्रता से बचने का उपाय =)
विधवा-प्रार्थना ... ।-)
स्वदेशी धर्म ... ।)
रोहिणी ... ।≡)
मोहिनी ... ॥=)
संसार सुख साधन ... ।≡)
अनन्तमती ... ॥।=)
गङ्गावतरण ... ॥)
अमरकोष ... ।)
गोरक्षा का सरल उपाय ...)॥
गोपीचन्द भरथरी ... ।=)
कुण्डलिया गिरधर राय ... -)॥
कायाकल्प ... ३॥)
प्रेम-प्रतिमा ... २)
वैताल-पचीसी ... ।)
मनुस्मृति (भाषा टीका) ३॥)
प्रेम-सागर ... २)
लोकवृत्ति ... १)
बदरीनाथ-स्तोत्र ... -)
चन्द्रावली (नाटक) ... ।)
भारतवर्ष का इतिहास ... २॥।)
कल्याण-मार्ग का पथिक १॥)
प्राचीन भारत ३॥।-)
जापान की राजनीतिक प्रगति ... ... २॥।=)
संसार के व्यवसाय का इतिहास ... ॥=)
अङ्गरेज़ जाति का इतिहास २॥)
इटली के विधायक महात्मा-गण ... २)
रोम साम्राज्य ... २॥)
एब्राहम लिङ्कन ... ॥)
गृह-शिल्प ... ॥)
अवध के किसानों की बरबादी ।)
कुसुम-संग्रह ... १॥)

शैलबाला ... १)
विसर्जन ... ॥)
राजारानी ... ॥)
नल-दमयन्ती ... ॥।)
सत्य-हरिश्चन्द्र ... ।=)
अनुराग-वाटिका ... ।-)
बनारस ... १॥)
स्वयं स्वास्थ्य-रक्षक ... ॥।=)
अजेय तारा ... १॥)
विश्राम बाग़ ... १॥)
पृथ्वीराज चौहान ... ॥)
छत्रपति शिवाजी ... ॥।)
सहधर्मिणी ... ॥।)
रूपनगर की राजकुमारी... ३)
विचित्र डाकू ... १)
पाप की छाप ... २)
शैतान पार्टी ... ॥)
रमणी-नवरत्न ... १)
विचित्र घटना ... ।)
सावित्री-सत्यवान ... ॥।)
अत्याचार का अंश ... ।)
सदाचार-दर्पण १॥),२), २॥)
भारत का इतिहास ...
(सजिल्द) ३)
मज़ेदार कहानियाँ ... १)
सूक्ति-सरोवर ... २॥)
कौतूहल भण्डार ... १)
अन्त्याक्षरी ... ॥)
पहेली बुझौवल ... ॥)
सच्ची कहानियाँ ... ॥)
इक्कीस खेल ... ।≡)
नवीन पत्र-प्रकाश ... ॥=)
वक्तृत्वकला ... १॥)
स्वदेश की बलिवेदिका ... ॥=)
शाहज़ादा और फ़क़ीर ... ॥।)
बाल नाटकमाला ... ।=)
गज्जू और गप्पू की मज़ेदार
कहानियाँ ... ≡)
इल-बिल की कहानियाँ ... ≡)
विद्यार्थियों का स्वास्थ्य ... ।=)
बदलू और बदलू की कहानियाँ
... ≡)
टीपू और सुल्तान ... ।)
नटखटी रीछू ... ≡)
भिन्न-भिन्न देशों के अनोखे
रीति-रिवाज ... ॥=)
परीक्षा कैसे पास करना? =)
पत्रावली ... ।-)
पञ्चवटी ... ।=)
रङ्ग में भङ्ग ... ।)
आत्मोपदेश ... ।)
स्वाधीनता के सिद्धान्त ... ॥)
सन्त-जीवनी ... ॥)
अमृत की घूँट ... २॥)
विचित्र परिवर्तन ... २)
पौराणिक गाथा ... ।-)
गुब्बारा ... ॥=)
दस कथाएँ ... ।=)॥
अनूठी कहानियाँ ... ।=)
मनोहर कहानियाँ ... ।=)
हँसी-खेल ... ॥।)

इल्लू और मल्लू ... ≡)
विज्ञान-वाटिका ... ।=)
परियों का देश ... १)
खोपड़ेसिंह ... ।)
बालक ध्रुव ... ।)
बच्चू का ब्याह ... ।-)
नानी की कहानी ... ।=)
मज़ेदार कहानियाँ ... ।-)
बाल कवितावली ... १)
रसभरी कहानियाँ ... ॥)
बहता हुआ फूल २॥), ३)
मि० व्यास की कथा २॥), ३)
प्रेम-प्रसून १=), १॥=)
विजया १॥), २)
भिखारी से भगवान ... १)
मूर्खमण्डली ॥=), १=)
जीवन का सद्व्यय १), १॥)
साहित्य-सुमन ॥), १)
विवाह-विज्ञापन ... १॥)
चित्रशाला (दो भाग) ३),४)
देव और बिहारी १॥।), २)
मञ्जरी १), १॥।)
कर्बला १॥), २)
रावबहादुर ... ॥।)
प्राणायाम ॥।=), १=)
पूर्व-भारत ॥।=), १=)
बुद्ध-चरित्र ॥।), १)
भारत-गीत ... ॥।=)
वरमाला ॥), १)
एशिया में प्रभात ॥), १)
कर्मयोग ॥), ॥।)
संक्षिप्त शरीर-विज्ञान ... ॥=)
लबड़धोंधों ॥।=), १=)
हठयोग ... १=)
कृष्णकुमारी १), १॥)
प्राचीन पण्डित और ...
कवि ॥।=), १=)
जयद्रथबध ॥।), १=)
तात्कालिक चिकित्सा १), १॥।)
किशोरावस्था ... ॥=)
अद्भुत आलाप ... १)
मनोविज्ञान ॥), १)
अश्रुपात ... १)
ईश्वरीय न्याय ... ॥)
सुख तथा सफलता ... ।)
किसान की कामधेनु ... ॥=)
प्रायश्चित्त (प्रहसन) ... ≡)
संसार-रहस्य ... १॥)
नीति रत्नमाला ... ।)
मध्यम व्यायोग ... =)
सम्राट चन्द्रगुप्त ... ।)
वीर भारत ... ॥।)
केशवचन्द्र सेन १≡),१॥=)
वङ्किमचन्द्र चटर्जी १≡),१॥=)
देशहितैषी श्रीकृष्ण ... =)
द्विजेन्द्रलाल राय ... ।)
भारत की विदुषी नारियाँ ॥)
वनिता-विलास ... ॥।)
पत्राञ्जलि ... ॥)
लक्ष्मी ... ॥=)
ज़ाब्ता ... ॥।=)

भगिनी-भूषण ... =)
सुघड़ चमेली ... =)
खिलवाड़ ... ।)
देवी द्रौपदी ... ॥)
महिलामोद ... ॥)
गुप्त सन्देश ... ॥)
कमला-कुसुम ... १)
मिश्रबन्धु-विनोद (तीन
भाग) ... ७)
शिवराज विजय ... २॥।)
सत्य हरिश्चन्द्र (नाटक) ।=)
माधव निदान ... १॥)
अनङ्ग-रङ्ग ... २)
कुटुम्ब-चिकित्सा ... १॥)
रामायण का अध्ययन ... ॥।)
रचना नवनीति ... १)
प्रवेशिका व्याकरण बोध... १)
अयोध्याकाण्ड रामायण... ॥)
बाल महाभारत ... ।=)
अलङ्कार चन्द्रिका ... ॥)
बालबोध रामायण ... ॥)
अपर प्रकृति पाठ ... ।=)॥
मिडिल प्रकृति परिचय ... ।-)॥
शिशुवर्ण परिचय ... -)
वर्णमाला और पहाड़े ... -)
शासन और सहयोग ... =)॥
शिशुकथा माला ... =)
कन्या-साहित्य ... =)॥
पत्र-चन्द्रिका ... ।)
बालक ... १)
स्वराज्य-संग्राम ... ॥।=)
आर्यसमाज और कॉङ्ग्रेस ।-)
हिन्दू-सङ्गठन ... १)
शिक्षा-प्रणाली ... १)
भारत-रमणी-रत्न ... ॥।=)
सन्ध्या पर व्याख्यान ... ।)
शिशु-सुधार ... ॥)
पुत्री-शिक्षक ... ॥)
स्त्री-शिक्षा ... ।=)
मनोहर पुष्पाञ्जलि ... ॥)
गृहिणी-शिक्षा ... ॥)
गुलदस्ता ... ॥।)
अक्षरबोध ... ॥।)
उर्वशी ... १)
ब्रह्मचर्य-शिक्षा ... ॥=)
तपस्वी भरत ... ।-)
दिलचस्प कहानियाँ ... ।=)
सूखा हुआ फूल ... ≡)
हितोपदेश ... ॥)
पृथ्वीराज रासो ... ॥)
नवीन बीन ... २)
बिहार का साहित्य ... १॥)
जयमाल ... ।=)
प्रेम ... ... ।=)
मधु-सञ्चय ... ।=)
अशान्त ... ॥)
लङ्गर्टसिंह ... ।)
विद्यापति ... ।)
अहिल्याबाई ... ।)
सौरभ ... १)
नवपल्लव ... १)

देहाती दुनिया ... १॥)
प्रेम-पथ ... २)
पुरुष-परीक्षा ... १)
सुधा-सरोवर ... १)
त्यागी भरत ... ।)
गुरु गोविन्दसिंह ... ।)
एकतारा ... १)
अशोक ... १)
निर्माल्य ... १)
बाल-विलास ... ।)
विपञ्ची ... ।)
दुलहिन ... ।)
शेरशाह ... ।)
शिवाजी ... ।)
माइकेल मधुसूदन ... ।)
भगवान बुद्ध ... १)
अक़्ल की मुलाक़ात ... -)
यार की अँगूठी ... =)
सूरजमुखी ... ।=)
आसमानी लाश ... =)
चोर की तीर्थ-यात्रा ... ।)
आशिक़ की कमबख़्ती ... =)
सूर्यकुमार सम्भव ... ।)
भयानक विपत्ति ... =)
श्रीदेवी ... =)
भीषण सन्देह ... ॥)
माधवी ... =)
पिशाच पति ... ॥)
अद्भुत हत्याकारी ... ≡)
कविता-कुसुम ... ।)
बगुला भगत ... ॥)
बिलाई मौसी ... ॥)
सियार पाँड़े ... ॥)
पृथ्वीराज ... १)
शिवाजी ... १)
राजर्षि ध्रुव ... ॥=)
सती पद्मिनी ... ॥=)
शर्मिष्ठा ... ॥=)
मनीषी चाणक्य ... १)
अर्जुन ... ॥=)
चक्रवर्ती बप्पाराव ... ॥=)
वेश्यागमन ... २)
नारी-विज्ञान ... २)
जनन-विज्ञान ... ३)
गृहिणी-भूषण ... ॥।=)
भारतीय नीति-कथा ... ॥।)
दम्पति शिक्षक ... ॥)
नाट्यकला दर्शन ... ॥।-)
शाही डाकू ... १॥।)
शाही जादूगरनी ... १॥)
शाही लकड़हारा ... २)
शाही चोर ... ।)
गृहधर्म ... ॥।)
बालराम कथा ... ॥।)
माता और पुत्र ... १॥=)
जातीय कविता ... १॥)
भागवन्ती २),२॥)
अनोखा जासूस ... २)
सुप्रभात ... १॥)
प्राचीन हिन्दू माताएँ ... १)
महाभारत ... १)

विधवाश्रम ... १॥)
चालाक बिल्ली ... =)
मुसाफ़िर की तड़प ... ।-)
यूरोपीय सभ्यता का दिवाला ।=)
अमृत में विष ... ।=)
मुसाफ़िर पुष्पाञ्जलि ... ।)
नया ... ... ।-)
मानवती ... ।-)
धर्म-अधर्म युद्ध ... ॥।)
नवीन भारत ... ॥।)
श्रीकृष्ण-सुदामा ... ।=)
ग़रीब हिन्दुस्तान ... १)
भारतीय सभ्यता ... १)
हरफ़नमौला ... १)
हरद्वार का इतिहास ... ।=)
बोल्शेविज़्म ... १=)
मुसाफ़िर भजनावली ... ।≡)
असहयोग दर्शन ... १)
चेतावनी सङ्कीर्तन ... ।)
जन्मबधैया सङ्कीर्तन ... ।)
श्रीसतवानी सङ्कीर्तन ... ।=)
महात्मा गाँधी ... ≡)
गँवार मसखा ... =)॥
सेवाश्रम ... २॥)
महात्मा विदुर ... १)
महामाया ... ॥=)
शकुन्तला ... १=)
कृष्णकुमारी ... ।=)
क्षात्रधर्म ... -)
बलिदान ... ≡)
भारतीय देश ... ॥)
चित्रशाला ... ॥।)
दम्पति सुहृद ... १॥)
रानी जयमती ... ॥)
तपस्वी अरविन्द के पत्र ... ।)
सुभद्रा ... ... ॥)
हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास ।=)
ग्रीस का इतिहास ... १=)
श्रीबद्री-केदार यात्रा ... ।)
नवयुवको स्वाधीन बनो... ॥)
असहयोग का इतिहास ... ॥।)
सफलता की कुञ्जी ... ।)
पाथेयिका ... १)
रोम का इतिहास ... ॥।)
अपना सुधार ... ॥)
महादेव गोविन्द रानाडे... ॥।)
दिल्ली अथवा इन्द्रप्रस्थ ... ॥)
गाँधी-दर्शन ... १)
बिखरा फूल ... १॥)
प्रेम ... ... ।=)
इटली की स्वाधीनता ... ॥)
गाँधी जी कौन हैं? ... ।-)
फ़्रान्स की राज्य-क्रान्ति का
इतिहास ... १=)
आकाश की बातें ... ≡)
जगमगाते हीरे ... १)
मनुष्य-जीवनकी उपयोगिता ॥=)
भारत के दस रत्न ... ।-)
वीरों की सच्ची कहानियाँ ॥।)
आहुतियाँ ... ।-)
वीर राजपूत ... १)

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

भई, इस समय काउन्सिल के अतिरिक्त और कुछ अच्छा नहीं लगता। जहाँ देखिए, इसी की चर्चा है। क्या पढ़े-लिखे और क्या बे पढ़े—सब इसी की बातचीत किया करते हैं। पिछली चिट्ठी में मैंने आपको सूचना दी थी कि मैं भी काउन्सिल के लिए खड़ा हो गया हूँ। बड़ी दिल्लगी रही। मेरे खड़े होने का समाचार फैलते ही, नाई, धोबी, कहार, मनिहार, गुण्डे, ढिलुहे, पहलवान, कवि, शायर, लेखक, सम्पादक वग़ैरह-वग़ैरह, सब चींटी-दल की तरह घर घेरने लगे। अब जिसे देखिए वही कहता है—"हमारी बात मानिए, हमारे कहे अनुसार काम कीजिए तो इस तरह काउन्सिल में घुस जाइए जैसे सुई में डोरा घुसता है।" भई वाह ! क्या कही है, सुई में डोरा घुसने की ख़ूब कही। यह एक शायर साहब की उक्ति है। चित्त प्रसन्न हो गया।

मैंने कहा—"कोई है ? इन शायर साहब को चार पैसे इनाम दे दो।" इतना सुनना था कि शायर साहब मचल गए, बोले—"चार पैसे ! आपने भी मुझे कोई भिखमङ्गा समझा है।" मैंने कहा—"अजी वाह, आप भी क्या बातें करते हैं। फ़िलहाल चार पैसे की रेवड़ियाँ खाइए, मुँह मीठा कीजिए, जब काउन्सिल में पहुँच जाऊँगा तो किसी दिन पँचमेल मिठाई खा लीजिएगा।" यह कह कर शायर साहब को ठण्डा किया। एक मित्र महोदय ने द्वार पर रौशनचौकी लाकर बिठा दी। अब मैं लाख कहता हूँ कि अरे भाई, यह क्या वाहियातपन है ! पर वह कब मानते हैं। अतएव मैं चुप होकर घर में बैठ रहा। एक घण्टे भर बाद द्वार पर ढोलक बजने की आवाज़ सुनाई पड़ी। मैंने सोचा, देखूँ यह कौन-सी बला आई। द्वार खोल कर क्या देखता हूँ, चार-पाँच 'ज़नख़े' ढोलक बजा-बजा कर गा रहे हैं—"सुहागिन ज़चा मान करे नन्दलाल।" देखते ही आँखों में ख़ून उतर आया। मैंने डाँट कर उन्हें रोका और पूछा—यह क्या वाहियात बात है, तुम लोग क्यों गा रहे हो ?

उनमें से एक बोला—सलामती रहे; दरवाज़े पर नौबत झड़ती देख, हमने समझा कोई ख़ुशी का काम है—हम तो ऐसे ही मौक़ों पर आती हैं ! अल्ला, ज़चा और बचा, दोनों को सलामत रक्खे।

मैंने कहा—कुछ घास तो नहीं खा गए हो, कैसी ज़चा और कहाँ का बचा, ख़ैरियत इसी में है कि चुपचाप चले जाओ, नहीं ढोलक-वोलक फोड़ डाली जायगी।

वहीं पर एक व्यक्ति खड़ा था। वह उनसे बोला—यहाँ लड़का-वड़का कुछ नहीं हुआ। बात सिर्फ़ इतनी है कि हमारे पण्डित जी काउन्सिल में जा रहे हैं।

यह सुन कर उनमें से एक नाक पर हाथ रख कर बोला—ऊई अल्लाह ! तो यह क्या कम ख़ुशी की बात है। गाओ री गाओ !

यह कह कर उसने पुनः ढोलक बजानी आरम्भ की और सबने गाना शुरू किया—'अरे मेरा बना चला काउन्सिल को।'

यह सुनते ही उपस्थित लोगों ने मुँह फेर-फेर कर मुस्कराना आरम्भ किया और मेरे मिज़ाज का पारा, जो है सो, ३६० डिग्री पर पहुँचा। मैंने पुकारा—'कोई है ?' होने को वहाँ और कौन था—द्वार पर दुबे जी महाराज और घर के भीतर लल्ला की महतारी। परन्तु फिर भी न जाने कहाँ से आठ-दस आदमी दौड़ पड़े, बोले—क्या हुक्म है सरकार ?

मैंने कहा—इन सबको शहर से निकाल दो।

सम्पादक जी, मेरा मतलब था कि यहाँ से हटा दो, परन्तु आठ-दस आदमियों ने जो एकबारगी कहा—'क्या हुक्म है सरकार' तो कुछ थोड़ा सुरूर हो आया और मुँह से निकल गया—इन सबको शहर से निकाल दो।

ख़ैर साहब, वे सब किसी न किसी प्रकार वहाँ से हटाए गए। जब ज़रा मिज़ाज ठण्डा हुआ तो मैंने सोचा—काउन्सिल में जाना भी बड़े सौभाग्य की बात है। अभी वहाँ पहुँचे भी नहीं और सब तरह के लोग बिना बुलाए दौड़े आने लगे। जब पहुँच जायँगे तब तो हम एक मुहल्ला ही अलग बसा लेंगे।

समाचार पाकर हमारे पण्डित जी भी दौड़े आए। आते ही पहले बोले—अब आप काउन्सिल में ज़रूर पहुँच जायँगे—ज़नख़ों का आना बड़ा शुभ होता है। ये लोग हर्ष और आनन्द की मूर्त्ति हैं और ऐसे अवसर पर ही किसी के द्वार पर जाते हैं। ये लोग बिना बुलाए आपके द्वार पर आ गए—बड़े शुभ लक्षण हैं, अब आप निश्चय काउन्सिल में जायँगे। परन्तु आपने उनको ख़ाली लौटा दिया, यह अच्छा नहीं किया—उन्हें कुछ दे देना चाहिए था।

मैंने कहा—ख़ैर, अब दे दिया जायगा। परन्तु आप ज़रा मेरी जन्मपत्री देखिए कि मैं काउन्सिल में पहुँच जाऊँगा या नहीं।

पण्डित जी महाराज बड़ी देर तक जन्मपत्री देखते रहे, अन्त में बोले—आपका काउन्सिल में पहुँचने का योग पूरा है; पर कुछ जाप करा डालिए, एक उद्यापन कर डालिए। केवल तीन-चार सौ का ख़र्च है—अधिक नहीं।

"केवल तीन-चार सौ !" केवल की एक ही कही।

मैंने कहा—सोच कर बताऊँगा।

इसी प्रकार जिसे देखिए वह यही कहता था कि बस अब आप पहुँच गए। मगर आप अब ज़रा बाहर घूमा कीजिए। घर में बैठने से काम न चलेगा।

मैंने पूछा—बाहर घूमने का क्या मतलब ?

बोले—शहर में गश्त लगाइए, वोटरों से मिलिए, तब तो आपको वोट मिलेंगे—ऐसे घर बैठे कोई वोट थोड़ा दे देगा।

मैंने कहा—क्या गश्त भी लगानी होगी ?

लोग-बाग बोले—और क्या, बिना गश्त लगाए कुछ नहीं होगा।

मैंने सोचा—अब तो खड़े ही हो गए—बिना काउन्सिल पहुँचे बनेगा नहीं, इसलिए अब सब नाच नाचने पड़ेंगे।

मैंने कहा—जिस दिन कहिए, उस दिन चलूँ।

एक सज्जन बोले—एक दिन चलने से काम नहीं चलेगा—रोज़ चलना पड़ेगा। आप तो हई हैं, घर का एक-आध आदमी और साथ हो तो अच्छा है, बाक़ी हम लोग रहेंगे।

मैंने कहा—घर में फ़िलहाल फ़क़त लल्ला की महतारी है। कहो तो उसे भी साथ ले लिया करूँ।

एक दूसरे सज्जन बोले—यह ठीक नहीं है—हालाँकि इससे वोट बहुत मिलेंगे और जल्दी मिल जायँगे, अधिक मेहनत नहीं पड़ेगी—मगर इसमें बदनामी की बात है।

मैंने कहा—बदनामी-वदनामी का ख़्याल मत करो, जिससे मैं काउन्सिल में पहुँच जाऊँ, वह करो। चाहे जो करो, पर काउन्सिल में पहुँचा दो।

एक तीसरे सज्जन बोले—आप काउन्सिल में अवश्य पहुँच जायँगे, इसकी चिन्ता मत कीजिए। हाँ, तो मेरा प्रस्ताव यह है कि 'नेक्स्ट वीक' से यह कार्य आरम्भ कर दिया जाय।

मैंने सोचा या भगवान्, यह 'नेक्स्ट वीक' क्या बला है, कई वर्षों तक सोचता रहा, पर कुछ समझ में न आया। अन्त में मैंने पूछा—'नेक्स्ट वीक' से आपका क्या तात्पर्य है ?

यह सुनते ही एक महोदय बोले—'नेक्स्ट वीक' का मतलब 'अगला हफ़्ता'। दुबे जी, अब आप काउन्सिल में जा रहे हैं, थोड़ी अङ्गरेज़ी भी पढ़ लीजिए। एक मास्टर रख लीजिए, वह एक घण्टा पढ़ा जाया करे। जब तक काउन्सिल में पहुँचो, तब तक थोड़ी-बहुत अङ्गरेज़ी भी आ जाय।

मैंने सोचा, यह अच्छी बला लगी। इस काउन्सिल के पीछे न जाने क्या-क्या करना पड़ेगा। अपने राम की चिड़िया सी जान ठहरी—अकेला क्या-क्या करूँगा। मैंने कहा—अच्छी बात है, जो कहिएगा वह करूँगा। कहिए मास्टर रख लूँ, कहिए स्कूल में भर्ती हो जाऊँ।

एक महोदय बोले—स्कूल में भर्ती होना उचित नहीं—उससे अन्य कामों का हर्ज होगा। आप मास्टर से घर पर ही पढ़ लिया कीजिए। कोई मिडिल पास ढूँढ़ देंगे—वह पढ़ा जाया करेगा।

मैंने कहा—कोई बी० ए० पास क्यों न रख लिया जाय, वह जल्दी पढ़ा देगा। पर इसकी किसी ने राय न दी। लोग कहने लगे—अभी आपके पढ़ाने को मिडिलची ही काफ़ी है, मिडिलची तो आपको अभी तीन बरस पढ़ा सकता है, इसके पश्चात् ग्रेजुएट रख लिया जायगा।

यह मसला तय होने के पश्चात् यह बात उठी कि—'वोटरों के पास किस तरह चलना चाहिए।'

एक सज्जन बोले—आगे-आगे रौशनचौकी अवश्य बजती चले, जिसमें दूर ही से लोग जान जायँ कि दुबे जी वोट माँगने आ रहे हैं। औरतें घरों से निकल-निकल कर छज्जों पर आ जायँगी, वह भी देखेंगी कि हाँ, कोई काउन्सिल में जा रहा है। सब अपने-अपने आदमियों पर ज़ोर डालेंगी कि दुबे जी ही को वोट देना।

मैंने कहा—बात तो दूर की सोची; परन्तु रौशनचौकी के बजाय अङ्गरेज़ी बाजा क्यों न रहे। उसकी आवाज़ दूर तक पहुँचती है।

एक दूसरे सज्जन बोले—मेरा प्रस्ताव यह है कि बाजा चाहे जो रहे ; पर आगे-आगे एक भङ्गी तुरही बजाता अवश्य चले, जैसा कि ब्याह-बारातों में होता है, इससे बड़ा प्रभाव पड़ेगा।

यह सलाह भी सबके पसन्द आ गई।

मैंने कहा—और भी जो बात करनी हो, सोच लो, पीछे फिर यह न कहना कि अमुक बात रह गई।

(शेष मैटर ३१ वें पृष्ठ के दूसरे कॉलम में देखिए)

साम्यवाद

[श्री० यदुनन्दनप्रसाद जी श्रीवास्तव]

इस समय संसार में साम्यवाद की धूम मची हुई है। साम्यवाद का मुख्य सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार हों। यों तो प्रत्येक बात में समान अधिकार का होना साम्यवादी को इच्छित है, किन्तु यह वैश्य-युग है, इसलिए इस समय साम्यवादियों की आँख धन के समान वितरण पर ही विशेष है।

इस समय गृह-धन्धों का ह्रास हो जाने और पूँजीपतियों के हाथ में शासनाधिकार रहने के कारण धन का बँटवारा ठीक से नहीं हो रहा है। फल-स्वरूप हर मुल्क में धन कुछ इने-गिने व्यक्तियों के हाथों में ही आ पड़ा है; अधिकांश जन-समुदाय इस समय धन की कमी से ही पीड़ित है। यही कारण है कि साम्यवाद का आह्वान लोगों को इस समय बड़ा प्रिय मालूम पड़ता है।

अन्य लोगों को यह सिद्धान्त प्रिय लगे, तो विशेष आश्चर्य का कोई कारण नहीं दीखता, किन्तु 'आत्मा' और 'परलोक' में आस्था रखने वाले भारतीयों का साम्यवाद पर मुग्ध होना, निश्चय ही विचार करने योग्य एक जटिल समस्या बन जाती है।

साम्यवाद के समान अधिकार वाले सिद्धान्त को स्वीकार करने के पूर्व हमारे लिए विचारणीय प्रश्न यह है कि हमारे अधिकार की उत्पत्ति कैसे होती है। अधिकार लेन-देन अथवा बँटवारे की वस्तु तो है ही नहीं। अधिकार की उत्पत्ति तो सामर्थ्य से होती है और सामर्थ्य आत्मा का गुण है। जितना विकसित हमारी आत्मा होगी, सत्, रज अथवा तम का जिस मात्रा में हमारे आत्मा में विकास होगा, हममें सामर्थ्य भी उसी मात्रा में घटेगा अथवा बढ़ेगा। इसी के अनुसार हमारे अधिकार भी होते हैं। वास्तव में इसी सिद्धान्त की बुनियाद पर हमारे समाज की रचना की गई है।

इन सिद्धान्तों की सत्यता अथवा असत्यता पर इस छोटे से लेख में विचार नहीं किया जा सकता। यहाँ पर केवल इतना ही कहना यथेष्ट होगा कि ये सिद्धान्त अत्यन्त प्राचीन हैं और समय तथा अनगिनती विद्वानों ने इनकी परीक्षा कर इन्हें सत्य पाया है। साथ ही ये ऐसे सिद्धान्त हैं कि समय अथवा परिस्थिति के कारण इनमें कोई फ़र्क़ नहीं आ सकता।

प्रत्येक सभ्यता की एक मूल विचार-धारा होती है और जिस प्रकार सूर्य के आस-पास सौर जगत के सारे नक्षत्र चक्कर लगाते हैं, किसी भी जाति अथवा समाज के सारे विचार, सारी नीति ठीक उसी प्रकार इस मूल विचार-धारा के आस-पास चलते हैं। कोई भी सुधार करते समय कोई भी परिवर्तन करते समय, हम इस मूल विचार-धारा अथवा अपनी सभ्यता की आत्मा का विस्मरण नहीं कर सकते। यदि हमने ऐसी ग़लती की तो हमारा अस्तित्व भारी ख़तरे में पड़ जावेगा।

संसार में अवस्था अथवा अधिकार का जो भेद दिखलाई देता है वह कोई कृत्रिम भेद नहीं है, और न वह केवल वर्तमान काल की परिस्थिति का ही परिणाम है। यह भेद पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर वर्तमान परिश्रमों के फल स्वरूप है। चाहे कितनी ही अच्छी या बुरी अवस्था देश अथवा समाज की हो, सब व्यक्तियों की अवस्था एक सी हो ही नहीं सकती। भारतवर्ष की दशा इस समय बहुत ही ख़राब है, और यद्यपि यहाँ के अधिकांश अधिवासी ग़रीब और दुखी हैं, फिर भी यहाँ धनी और सुखी लोगों का अभाव नहीं है। इसी तरह यद्यपि इङ्गलैण्ड की दशा बहुत उन्नत है और वहाँ धनी तथा सुखी लोगों की संख्या अधिक है, फिर भी वहाँ ग़रीब और दुखियों का अभाव नहीं है।

महात्मा गाँधी का उदाहरण ले लीजिए। देश में दरिद्रता है, दुःख है, ग़ुलामी है और है साम्यवाद का अभाव। किन्तु उनकी दृष्टि में साम्य है और वे दुःख, दरिद्रता तथा ग़ुलामी से परे हैं; ये चीज़ें उन्हें व्यापतीं ही नहीं। कारण क्या है? क्या यह उनके विगत २० वर्षों के प्रयत्न मात्र का ही फल है या वे किसी चमत्कार अथवा जादू के बल पर इस अवस्था को प्राप्त कर सके हैं? विचार करने पर पता चलेगा कि यह उनके निरन्तर के—जन्म-जन्मान्तर के प्रयत्नों का फल है।

ऐसा कभी नहीं हुआ और न कभी हो सकता है कि सब की दशा एक सी हो जाय। हमारे ग्रन्थों के अनुसार तो संसार की उत्पत्ति ही असाम्य से होती है। जब तक साम्य रहता है तब तक सब शून्य और शान्त रहता है, किन्तु 'अहं' के भाव के साथ सत्, रज और तम की स्थिरता, साम्य अथवा शान्तता में क्षुब्धता या असाम्य आने से ही सृष्टि का प्रारम्भ होता है। जिस समय सत्, रज और तम का असाम्य नष्ट होकर साम्यावस्था प्राप्त हो जावेगी, उस दिन तो हमारे इस संसार का ही लोप अथवा प्रलय आ घटेगा।

अधिकार और अवस्था का सम्बन्ध सामर्थ्य अथवा योग्यता से है। शारीरिक और मानसिक योग्यता की दृष्टि से संसार के मनुष्यों में बड़ी विभिन्नता दृष्टि-गोचर होती है। यदि दो मनुष्यों के शारीरिक बल में—परिश्रम करने की योग्यता में, भेद है तो उनकी मज़दूरी एक कैसे हो सकती है और यदि दो व्यक्तियों की दिमाग़ी क़ुवत में फ़र्क़ है तो उनके राजनैतिक अथवा शासन में भाग लेने के अधिकार एक कैसे हो सकते हैं? यदि विशेष योग्यता वाले को विशेष अधिकार न दिया गया तो विशेष उद्योग वह क्यों करेगा? परिणाम-स्वरूप केवल व्यक्ति-विशेष के विकास में ही बाधा न पड़ेगी, बल्कि ऐसे व्यक्तियों का सारा राष्ट्र या समाज भी अधोगति को प्राप्त होगा।

साम्यवाद शरीर-बल अथवा परिश्रम को अग्र स्थान देता है। कहने की ग़रज़ यह कि हमारी समाज-रचना में जो अधिकार 'ब्राह्मणत्व' को दिया गया है, साम्यवाद में वह स्थान 'शूद्रत्व' को दिया जावेगा।

मस्तिष्क और शरीर-बल की तुलना में अधिक समय ख़र्च न कर हम केवल इतना ही कहना यथेष्ट समझते हैं कि शरीर-बल कभी भी मस्तिष्क का मुक़ाबला नहीं कर सकता, न वह मस्तिष्क को अग्र स्थान से अधिकार-च्युत ही कर सकता है। यदि ऐसा होता तो आज संसार में मानवी सभ्यता का बोल-बाला न रहता और न मनुष्य संसार का सर्व-श्रेष्ठ प्राणी बन कर संसार पर राज्य ही कर सकता। वैसी दशा में तो आज शेर अथवा हाथी का साम्राज्य दिखाई देता।

मनुष्य और इतर जीवधारियों में यही अन्तर है न कि मनुष्य सबुद्धि (Rational) प्राणी है। शूद्रत्व अथवा परिश्रम को समाज-रचना में अग्रस्थान देने का अर्थ तो अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारने के बराबर होगा। और शूद्रत्व की प्रधानता में वह राष्ट्र अथवा देश भगवान कृष्ण के शब्दों में :—

आसुरीं योनि मापन्ना मूढ़ा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्॥

—गीता २०। १६

सदैव आसुरी योनि को पाकर अर्थात दुर्गुणों की वृद्धि के कारण यह मूर्ख समाज व राष्ट्र बिना परमात्मा को प्राप्त किए याने बिना उन्नत दशा को पाए अथवा बिना सद्गुणों की वृद्धि के अन्त में अत्यन्त अधोगति को पाता है अर्थात अपनी सभ्यता से पतित होकर नाश को प्राप्त होता है।

* * *

वर्तमान बुख़ारा

बुख़ारा किसी समय मध्य एशिया का प्रधान शहर था और अपने चारों ओर बनी हुई उत्तुङ्ग सुरक्षित चहारदीवारी, धन-वैभव और गगनचुम्बी सुन्दर भवनों के लिए प्रसिद्ध था। परन्तु सोवियट सरकार की 'लाल पल्टन' (Red Army) की सहायता से जब से वहाँ सन् १९२० में राजनीतिक क्रान्ति हुई है, तभी से वहाँ की कायापलट हो गई है। वहाँ का पुराना वैभव अब वहाँ से कूच कर गया है। तिस पर भी जो चिह्न वहाँ शेष बचे हैं, उनसे उस वैभव की झलक अवश्य मिलती है। वहाँ की प्राचीन काल की कारीगरी और उस काल के अन्य दृश्य; धूल-धूसरित, तङ्ग और साँप की नाईं लहराती हुई चक्करदार सड़कें; सूर्य के आताप से पके हुए रङ्ग के समतल छप्पर के घर, मधुमक्खियों के छत्तों और घोंसलों से आच्छादित मीनारें, सङ्गमर्मर और रङ्ग-बिरङ्गे काँच के टुकड़ों से जड़े हुए लुभावने भवन, जिनसे प्राचीन महलों या शिवालयों का बोध होता है; और वहाँ के बचे-खुचे कुछ प्रचलित रीति-रिवाज—आज भी दर्शकों को मन्त्र-मुग्ध की भाँति आकर्षित कर लेते हैं।

बुख़ारा का क्षेत्रफल पन्द्रह वर्ग-मील है, और वह चारों ओर दृढ़ दीवाल से सुरक्षित है। शहर में प्रवेश करने के लिए इस क़िलेबन्दी में ग्यारह फाटक हैं। शहर में ३६० मस्जिदें, २२ सराएँ, बहुत से जलाशय और बाज़ार, प्रायः एक सौ सुन्दर और भड़कीले कॉलेज, और ११०० वर्ष पूर्व आरलिन ख़ाँ का बनवाया हुआ 'आर्क' नामक एक पुराना राजमहल है। बुख़ारा के इस प्राचीन वैभव को तेरहवीं शताब्दी में अत्याचारी चङ्गेज़-ख़ाँ के ख़ूनी हाथों ने चौपट करने में कुछ उठा न रक्खा था, और परिणाम-स्वरूप उसके अवशिष्ट चिन्हों से ही हम अब उसके वैभव का पता लगा सकते हैं। मुसलमानों का यह तेजस्वी बुख़ारा आज रूस के साम्यवादी साम्राज्य के अन्तर्गत है।

नई जागृति

रूस की साम्यवादी सरकार की सत्ता स्थापित हो जाने के बाद बुख़ारा में जो परिवर्तन हुए हैं, वे उसकी नई जागृति को सूचित करते हैं। वहाँ की मस्जिदों में अब स्त्रियों के क्लब स्थापित हो गए हैं और यह हुआ है उस शहर में, जहाँ पहिले स्त्रियाँ बहुत यत्न के साथ घर के एकान्त कोने में छिपा कर रक्खी जाती थीं और जहाँ धर्मगुरु बैठे-बैठे ये सिद्धान्त गढ़ा करते थे कि स्त्रियों के आत्मा ही नहीं होती! मुल्लाओं और मौलवियों के जितने मदरसे थे उनमें से कुछ में व्यवसाय सङ्घों (Trade Unions) के दफ़्तर हैं और बाक़ी में युवक उज़बक विद्यार्थियों को क़ुरान की आयतों के बदले, कॉर्ल मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों की शिक्षा दी जाती है।

बुख़ारा जैसे कट्टर मुसलमान शहर में, यह कम आश्चर्य की बात नहीं है, कि वहाँ की स्त्रियाँ आज बुर्क़े को चीर-फाड़ कर खुले-आम बेपर्दा निकलती हैं। जन-संख्या के अनुपात से समरक़न्द और ताशक़न्द से, जहाँ रूस का अधिक प्रभाव है, और जहाँ बुख़ारा से बहुत पहिले उसकी सत्ता स्थापित हो चुकी है, बुख़ारा में ऐसी—बेपर्दा—स्त्रियों की संख्या बहुत अधिक मिलेगी। छने हुए जल का वैज्ञानिक ढङ्ग से प्रबन्ध हो जाने के कारण वहाँ के लोगों को अब उन कीड़ों से काटे जाने का भय नहीं रहा, जो पहले उनके शरीरों को पानी भरते समय चीथ डालते थे और कभी-कभी पेट में पहुँच कर सैकड़ों रोग उत्पन्न कर देते थे। कुछ अधेड़ उम्र के लोग, जिन्हें पवित्रता की

धुन है और पानी के कीड़ों के हानिकारक प्रभाव का पता नहीं है, अब भी अपनी मशकों में पीने के लिए पानी उन्हीं गन्दे जलाशयों में से भरते हैं!

बुख़ारा अपने बाज़ारों के जिस वैभव के लिए प्रसिद्ध था, अब वही एक चौथाई भी नहीं रहा। वहाँ का रेशम, दरियों, ग़ालीचों, क़ालीनों, साफ़े को छोटी ज़रीदार टोपियों, बर्तनों और चाँदी-सोने आदि का जो रहा-सहा व्यापार है, उसकी भी नीति सर्कार के हाथों में रहती है।

मध्य एशिया में सुधार

मध्य एशिया में सोवियट राज्य के प्रधान शहरों समरक़न्द और ताशक़न्द की भी प्रायः वही दशा है, जो बुख़ारा की। पिछले दस सालों में सोवियट सर्कार ने अपनी नीति से इस देश में जो क्रान्ति उत्पन्न कर दी है, उससे पूर्वीय मुसलमानों की प्राचीन सभ्यता और उनके शान्त और क्रियाहीन जीवन में एक विचित्र परिवर्तन हो गया है। इस परिवर्तन के बहुत से रूप हैं। स्त्रियों का पर्दा चीर कर खुले आम बाहर निकलना; मध्य-एशिया भर के स्कूलों में अरबी शब्दमाला का लेटिन में परिवर्तित होना; स्कूल की लड़कियों का लाल रूमाल पहिनना और बच्चों का साम्यवादी ढङ्ग पर सङ्गठन होना—इस क्रान्ति के प्रधान चिन्ह हैं। इस क्रान्ति से वे होटल और जलपान के स्थान भी अछूते नहीं बचने पाए, जो उज़बक लोगों के प्रधान विश्राम-स्थल हैं। उनकी दीवालों पर कई भाषाओं में क्रान्तिकारी उद्गार लिखे हुए हैं और साम्यवाद के आचार्यों और बड़े-बड़े नेताओं के चित्र टँगे हुए हैं। इस प्रकार सोवियट सर्कार ने समस्त मध्य एशिया में क्रान्ति का एक नया वायु-मण्डल उत्पन्न कर दिया है।

रूस की साम्यवादी सर्कार ने मध्य एशिया को चार जनसत्तात्मक प्रान्तों में बाँटा है। इन सभी प्रान्तों में उसने राज्य की ओर से प्रान्तीय थियेटर और नाचघर बनवाए हैं और उन प्रान्तों के शासन-विभाग में बड़े-बड़े पद वहीं के लोगों को दिए गए हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि वहाँ के कुटुम्बों की सदियों की रूढ़ियों की जड़ कट गई है और समस्त प्राचीन धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक विचारों में एक विचित्र उथल-पुथल मच गई है।

* * *

केसर की क्यारी

"रहते-रहते दिल में तेरा दर्द भी दिल हो गया"

नज़अ में ऐसा सुकूँ, कुछ मुझको हासिल हो गया।
काम जो आसान था, अब वह भी मुश्किल हो गया!
मेरी नाउम्मीदियों का इससे अन्दाज़ा करो—
जिसको अपना दिल समझता था, वह क़ातिल हो गया!
शमआ भी बुझने को है, बीमार भी अब ख़त्म है!
जो शबे-फ़ुरक़त का मतलब था, वह हासिल हो गया!
ले चला था दिल मुझे कब बज़्मे-जानाँ में "अज़ीज़"
चलते-चलते राह में, बेचारा ग़ाफ़िल हो गया!

—"अज़ीज़" लखनवी

* * *

जल्वा गाहे नाज़े-जानाँ, जब मेरा दिल हो गया।
सामना "फ़ानी" मुझे दिल का भी मुश्किल हो गया!
करके दिल का ख़ून क्या बेताबियाँ कम हो गईं?
जो लहू आँखों से दामन पर गिरा, दिल हो गया!
सुन के तेरा नाम आँखें खोल देता था कोई,
आज तेरा नाम लेकर, कोई ग़ाफ़िल हो गया!
तूर ने जल कर हज़ारों तूर पैदा कर दिए!
ज़र्रा-ज़र्रा मेरे दिल की, ख़ाक का दिल हो गया!
मौत आने तक न आए, अब जो आए हो तो हाय!
ज़िन्दगी मुश्किल ही थी, मरना भी मुश्किल हो गया!

—"फ़ानी" बदायूनी

* * *

ऐ निगाहे-पास यह क्या रङ्गे महफ़िल हो गया?
मैंने जिस दिल की तरफ़ देखा, मेरा दिल हो गया!
मुझको वह लज़्ज़त मिली, एहसास मुश्किल हो गया!
रहते-रहते दिल में तेरा, दर्द भी दिल हो गया!
लुत्फ़ एकरङ्गी मुहब्बत में यह हासिल हो गया!
दर्द मेरा दिल बना, मैं दर्द का दिल हो गया!
ले ही पहुँचा बेख़ुदी से, शौक़ बज़्मे-यार तक!
गो मुझे यक-यक क़दम, एक-एक मञ्ज़िल हो गया!
इबतिदा वह थी कि था, जीना मुहब्बत में मुहाल,
इन्तिहा यह है कि अब मरना भी मुश्किल हो गया!!
एक ही जलवे के मज़हर हैं यह दोनों ऐ "जिगर"
कोई क़ातिल हो गया, और कोई बिस्मिल हो गया!

—"जिगर" मुरादाबादी

इश्क़ो उलफ़त में मेरा दिल, आपका दिल हो गया।
मुझको जीना और मरना, दोनों मुश्किल हो गया!
बसअ़ते दुनियाए दर्दोग़म में कामिल हो गया।
बढ़ते-बढ़ते एक क़तरा ख़ून का दिल हो गया!
रूह क्या निकली; ग़मे दुनिया से फ़ुरसत मिल गई!
मरने वाले का जो मतलब था, वह हासिल हो गया!!
बेतरह दरियाए ग़म में, मुझको मौजें ले उड़ीं;
दूर मैं साहिल से, मुझसे दूर साहिल हो गया!
एक के कहने से तो, मिलता नहीं ऐसा लक़ब—
जिसको दुनिया ने कहा क़ातिल, वह क़ातिल हो गया!
रूह आई जब तने-ख़ाकी में, आज़ादी कहाँ?
मैं उसी लहजे से पाबन्दे सलासिल हो गया!
हुस्न की दुनिया में फैली, है इसी की रौशनी;
आसमाने-इश्क़ का, तारा मेरा दिल हो गया!
ज़िन्दगी जब तक रही, आफ़त रही, ज़हमत रही!
मौत मुझको आ गई, आराम हासिल हो गया!!
आशियाँ छूटा, न छूटा गरदिशे क़िस्मत का साथ!
लो क़फ़स में भी ठहरना, मुझको मुश्किल हो गया!!
जिस जगह "बिस्मिल" गए, रौनक़ वहीं की बढ़ गई!
देखिए क्या था अभी, क्या रङ्गे-महफ़िल हो गया!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

शिद्दते आज़ार से, यह फ़ैज़ हासिल हो गया;
ख़ूगरे ग़म रफ़्ता-रफ़्ता अब मेरा दिल हो गया!
रूए रौशन पर किसी के, मैंने अपनी जान दी;
मिस्ले परवाना, निसारे शमआ महफ़िल हो गया!
नातवानी से हमीं एक पा-शिकस्ता रह गए;
क़ाफ़िला अपना रवाना, सूए मञ्ज़िल हो गया!
लुत्फ़ कर, या क़हर कर, इससे मुझे मतलब नहीं;
मैंने तुझको दे दिया दिल, अब तेरा दिल हो गया!
बहरे उलफ़त में डुबोने पर तुला गरदाबे शौक़,
कश्तिये-दिल का उभरना और मुश्किल हो गया!
सौ अदा से जो चुभा था, आपका तीरे-नज़र!
रहते-रहते अब वही दिल में, रगे-दिल हो गया!!
और पहले से ज़्यादा, दिल की वहशत बढ़ गई;
तर्के उलफ़त का नतीजा, हमको हासिल हो गया!
हुस्नो-उलफ़त ने दिखाया, ऐ "ज़या" उलटा असर!
लेके मेरा दिल वह मुझसे, और बददिल हो गया!!

"ज़या" देवानन्दपुरी

लड़की—(अपनी माँ से) माँ, स्कूल की शिक्षा समाप्त हो गई, अब मैं कॉलेज जाऊँगी।

माँ—नहीं, अब तू विवाह करने के योग्य हो गई। फिर मर्द तो इस बात की परवाह ही नहीं करते कि 'बीवी' पढ़ी है या बे पढ़ी।

लड़की—माँ! तुम्हारे में यही तो बुराई है कि तुम सबको मेरे बाप के समान ही समझती हो।

*　　*　　*

"मैं तुम्हें नौकर रख सकता हूँ। परन्तु तुम्हारे पास मुन्शी महादेव प्रसाद का सार्टीफ़िकेट नहीं है।"

"हुज़ूर सार्टीफ़िकेट की ज़रूरत क्या है। यदि कहें तो मैं उनकी वह घड़ी दिखा दूँ, जिस पर उनका नाम खुदा हुआ है।"

*　　*　　*

मियाँ बीबी दोनों रात में सो रहे थे। कुछ खटका हुआ, बीबी ने कहा देखो तो—"शायद कोई चोर है।" मियाँ ने कमरे के दरवाज़े के पास पहुँच कर पुकारा—"कौन है।" जवाब मिला—"कोई नहीं।" जवाब विश्वसनीय था, केवल सवेरे कुछ चीज़ें ग़ायब थीं।

*　　*　　*

एक स्त्री—बहिन, अपने हाथ से खाना बनाने में लाभ और बचत होती है।

दूसरी स्त्री—बेशक, जब से मैं अपने हाथों से खाना बनाने लगी हूँ, तब से मेरा पति पहले से आधा भी नहीं खाता।

*　　*　　*

डॉक्टर—तुमने मेरे कहने के अनुसार खाना खाया?

रोगी—जी हाँ, आपके कथनानुसार मैंने तीन वर्ष के बच्चे की ख़ूराक अर्थात् दो मुट्ठी मिट्टी, कुछ नारङ्गी का छिलका, एक बटन और थोड़ी सी चिलम की जली तमाखू बड़ी मुश्किल से खाई है।

*　　*　　*

पहला—तुम आजकल क्या करते हो?

दूसरा—मैं बिना सींग के बकरों का व्यापार करता हूँ।

पहला—मगर ....

दूसरा—'मगर' से मैं कोई सम्बन्ध नहीं रखता।

*　　*　　*

सिपाही—तुम्हारे पास लाइसेन्स है?

मोटर ड्राइवर—'हाँ'

सिपाही—कहाँ है?

मोटर ड्राइवर—जेब में।

सिपाही—अच्छा जब तुम्हारे पास लाइसेन्स है तो देखने की ज़रूरत क्या? अगर न होता तो ज़रूर देखता।

*　　*　　*

एक आलसी आदमी सफ़र के लिए निकला। रास्ते में रुक-रुक कर आगे बढ़ने लगा। एक बार एक कुँए में गिर पड़ा। जब ग़ोता खा चुका और होश में आया तो मन में कहने लगा—"ख़ैर, एक दिन यहीं विश्राम करूँगा।"

*　　*　　*

विद्यार्थी ने पाठशाला में पहुँच कर शिक्षक को एक पत्र दिया। पत्र विद्यार्थी की माँ का था। उसमें लिखा था :—

"बन्दगी, मेरा लड़का बहुत ही सुकुमार है और डरता भी अधिक है। यदि यह कभी शरारत करे (यह अक्सर शरारत करता है) तो कृपया इसके बग़ल वाले लड़कों की ख़ूब ख़बर लीजिए। आशा है, इससे लड़के की शरारत छूट जायगी।"

*　　*　　*

बीबी—मैंने तुमसे इसलिए विवाह किया था कि तुम पर मुझे तरस आगया। नहीं तो तुमसे कोई बात भी नहीं पूछता था।

मियाँ—परन्तु अब तो मुझ पर सभी तरस खाते हैं।

*　　*　　*

दो मित्र मोटर पर चले जा रहे थे, सहसा मोटर का ब्रेक ख़राब हो गया और वह तेज़ी से भाग निकली। उसमें से एक बहुत घबड़ा गया और चिल्ला कर कहने लगा—अरे मुझे बचाओ, मोटर रोको, मेरी सारी जायदाद लो......

दूसरे ने, जो बनिया था, कहा—तुम्हें मोटर रोकने के लिए कौड़ी भी ख़र्च न करनी पड़ेगी। जहाँ उस पेड़ से लड़ी कि फिर अपने आप बन्द हो जायगी।

*　　*　　*

"मैं एक बलवान आदमी चाहता हूँ।"

उम्मीदवार—मैं यथेष्ट बलवान हूँ।

"इसका प्रमाण?"

"जब मैं आया तब आपके द्वार पर दस उम्मीदवार खड़े थे, मैं उन सबको भगा कर आया हूँ।"

*　　*　　*

दो दर्शक नाटक देख कर बाहर आए। एक ने पूछा—तुम्हें इस खेल में कौन सा एक्टर पसन्द आया?

दूसरा—वही जो नाटा और मोटा था और जिसकी नाक बहुत लम्बी थी।

वह—वाह, वह तो बिल्कुल गधा था, न एक्ट कर सकता था और न गा सकता था।

दूसरा—तो इससे क्या, उस बेचारे ने मुझे हमेशा देखने को मुफ़्त पास तो दिया था।

*　　*　　*

स्वदेशी

[श्री० देवीप्रसाद जी गुप्त, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अब तक तो रहे मुफ़लिसो-नादार स्वदेशी।
पर अब हैं तरक़्क़ी के तलबगार स्वदेशी।
गाँधी से मसीहा ने उन्हें दी है दवा ख़ूब।
थे मर्ज़े-ग़ुलामी से जो बीमार स्वदेशी!
हर दिल में हुआ पैदा है, सौदाए-वतन अब!
ग़ाफ़िल नहीं, तो हो गए हुशियार स्वदेशी।
ज़ुल्मों के मिटाने के लिए ख़ूब सम्हल कर—
हाथों में उठाया है अब हथियार स्वदेशी!
हर सिम्त से आती हैं यही अब तो सदाएँ,
ग़ैरों के गुलों से हैं, भले ख़ार स्वदेशी!

प्रश्न—कुत्ता अनजान आदमी को कैसे पहचानता है?

उत्तर—कुत्ते की आँखें बड़ी तीक्ष्ण होती हैं, परन्तु उससे भी अधिक आश्चर्यजनक उसकी गन्ध-शक्ति होती है। हमारी गन्ध-शक्ति स्वयं इतनी निर्बल और अनावश्यक होती है कि जब तक हम जानवरों की इस शक्ति का बहुत समय तक अध्ययन न करें, तब तक हमें उनकी उपयोगिता प्रतीत नहीं होती। कुत्ता एक अनजान व्यक्ति को इसीलिए पहचान लेता है, कि उसकी गन्ध निराली होती है। यदि कोई व्यक्ति कुत्ते के मालिक के कपड़े पहन ले, तो कुत्ता पहिले भले ही उसे अपना मालिक समझ ले, परन्तु कुछ समय के बाद अवश्य वह व्यग्र मालूम होने लगेगा और उसकी गति-विधि से पता लग जायगा कि वह कुछ भूल कर बैठा है। इन सबका पता वह अपनी गन्ध-शक्ति से ही लगाता है।

*　　*　　*

प्रश्न—क्या पौधे रात्रि में सोते हैं?

उत्तर—हाँ, पौधे रात्रि में सोते हैं। उनके सोने के कई कारण हैं। जिस प्रकार संसार के जीवधारी प्राणप्रद वायु के लिए पौधों और पेड़ों पर निर्भर रहते हैं, उसी प्रकार पौधे और पेड़ भी अपने जीवन के लिए सांसारिक जीवधारियों पर निर्भर रहते हैं। पौधे वायु में से कार्बन ऑक्साइड लेते हैं। उसमें से वे अपना जीवन धारण करने के लिए कार्बन खींच लेते हैं और ऑक्सिजन छोड़ देते हैं, जिससे जीवधारियों के जीवन का पोषण होता है। इसी प्रकार जीवधारी मनुष्य और पशु अपने श्वास के साथ कार्बोनिक एसिड गैस फेंकते हैं, जो वनस्पति संसार को जीवित रखती है।

परन्तु जब तक सूर्य की रश्मियाँ संसार में बिखरी रहती हैं, तब तक पौधे कार्बन ऑक्साइड गैस खींचने में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें ऑक्सिजन बाहर फेंकने का समय नहीं मिलता। सूर्य के अस्त होते ही पौधे कार्बन खींचना बन्द कर देते हैं और सोते समय ऑक्सिजन बाहर फेंकते हैं।

*　　*　　*

प्रश्न—फ़व्वारा कैसे चलता है?

उत्तर—कुछ लोग सोचते हैं कि पानी का स्वभाव तो नीचे की तरफ़ बहने का है, वह फ़व्वारों में ऊपर की तरफ़ क्यों जाता है? इसका भेद यह है कि फ़व्वारे के लिए पानी बहुत अधिक ऊँचाई से एक छोटे नल में लाया जाता है और बाहर की तरफ़ ज़ोर से निकलना चाहता है। अगर हम इसे नल के मुँह के ऊपर की तरफ़ कर दें तो पानी ऊपर की तरफ़ जाकर नीचे को गिरेगा, यही फ़व्वारा है। पानी पर हवा या किसी गैस का दबाव डाल कर भी फ़व्वारा चलाया जा सकता है, जैसे सोडावाटर की बोतल में गैस दबा-दबा कर भर दी जाती है। अगर ढक्कन को हटा दिया जाय तो गैस के ज़ोर से सोडावाटर फ़व्वारे की तरह निकलने लगेगा।

*　　*　　*

Registered No. A—2085

Printed and Published by Mr. R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

व्यङ्ग चित्रावली

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—३० अक्टूबर, १६३० | संख्या ५, पूर्ण संख्या ५

राष्ट्रपति को २८ मास की सख़्त क़ैद

'भारत के इतिहास में तुमने एक स्वर्ण-पृष्ठ लिख दिया है'

पण्डित जवाहरलाल का सीमा-प्रान्त को सन्देश

सीमा-प्रान्त के स्त्री-पुरुषों को सन्देश भेजते हुए राष्ट्रपति जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है :—

"पिछले सात महीनों में भारत ने वीरता, साहस और आत्म-त्याग के बहुत से नमूने देखे हैं। ऐसे पुरुषों की सूची देना सचमुच बहुत कठिन है, जिन्होंने अपने देश को स्वतन्त्र करने के लिए अपनी आहुति दी है। जेल से मुक्त होते ही मेरा पहिला कार्य इन वीरों और वीराङ्गनाओं को हार्दिक बधाई देना था। मैं सीमाप्रान्त के उन वीरों का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहता हूँ, जिन्होंने अपनी अपूर्व शान्ति और आश्चर्यजनक त्याग से भारत और संसार को चकित कर दिया है। पठान अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं, परन्तु उन्होंने यह स्पष्ट दिखा दिया है कि हमारे अहिंसात्मक सङ्ग्राम में भी वे अगुआ बन सकते हैं और ऐसा उदाहरण रख सकते हैं, जो ढूँढ़े भी न मिल सके। इसलिए मैं सीमाप्रान्त के अपने सभी भाइयों को, चाहे वे जेल में हों या जेल से बाहर, अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पण करता हूँ। जो अपने प्राणों की आहुति चढ़ा चुके हैं, वे अब हमारे साथ नहीं हैं, परन्तु उनकी स्मृति हमारे साथ है और सदैव रहेगी।

"पहिले सीमा-प्रान्त में सुधारों की चर्चा हुआ करती थी। आज हम सुधारों के लिए नहीं, बल्कि स्वतन्त्रता के लिए युद्ध कर रहे हैं। हमारे सीमा-प्रान्त के भाइयों ने आहुति की अग्नि में तप कर यह बतला दिया कि वे किस धातु के बने हैं। हम सबकी इन आहुतियों में से ही स्वतन्त्र भारत का जन्म होगा, जिसमें सीमा-प्रान्त को मिला कर, हम सब बराबर हिस्सेदार होंगे। सीमा-प्रान्त के स्त्री-पुरुषों ने अपने त्याग और रक्त के बलिदान द्वारा स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्त कर लिया है। इन वीरों की वीरता के लिए कोई उपयुक्त पुरस्कार नहीं दिया जा सकता, और जो मरना जानते हैं, वे स्वतन्त्र मनुष्य की तरह रहना भी जानते हैं।

"सीमा-प्रान्त के स्त्री-पुरुषो, तुमने भारत के इतिहास में एक स्वर्ण-पृष्ठ लिख दिया है। उससे हमें सदैव उत्साह और साहस मिलेगा और भविष्य में हम उसकी स्मृति हृदय में रक्खेंगे। भारत उन्हें कभी नहीं भूल सकता, जिन्होंने उसे स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सहायता दी है।"

'आन्दोलन ज़ोरों से चल रहा है'

'सरकारी रिपोर्ट दूसरे देशों को दिखाने के लिए है'

श्रीयुत के० एम० मुन्शी ने बम्बई से एक विज्ञप्ति निकाली है कि मैं हाल में इलाहाबाद में हिन्दुस्तान के इकट्ठे हुए नेताओं से मिल कर आया हूँ। अख़बारों में जो ख़बरें निकलती हैं उनसे आन्दोलन के ज़ोर का ठीक पता नहीं चलता। आन्दोलन बिना ढीलेपन के बड़े ज़ोरो से चल रहा है। सरकारी साप्ताहिक रिपोर्ट, जो कहती है कि आन्दोलन ठण्डा पड़ रहा है, बिलकुल झूठ है और केवल दूसरे देशों को दिखाने के लिए है। सारे देश में दमन भी बड़े ज़ोरों से चल रहा है। राजनैतिक क़ैदियों पर लम्बे जुर्माने किए जा रहे हैं. जो कि उनके देने से इन्कार करने पर उनके रिश्तेदारों से वसूल कर लिए जाते हैं, चाहे वह आन्दोलन से कुछ भी सम्बन्ध न रखते हों।

हम लोगों ने आपस में सलाह करके अगले कार्य-क्रम के लिए कुछ प्रस्ताव स्वीकृत किए हैं। पहिला प्रस्ताव यह है कि कोई भी कॉङ्ग्रेस कमिटी विदेशी कपड़े के व्यापारियों से किसी तरह की भी सुलह न करे ; दूसरा काम यह है कि लोग प्युनिटिव टैक्स तथा अन्य नए लगाए हुए टैक्स न दें। फिर मर्दुमशुमारी में बिलकुल भाग न लें और उसमें काम करने वाले ऑफ़िसरों को किसी भी तरह की सहायता न दें।

सब से बड़ा प्रस्ताव यह स्वीकार हुआ है कि नए ऑर्डिनेन्स द्वारा जितनी सम्पत्ति सरकार ज़ब्त करे, उसे कोई भी न ख़रीदे। यदि कोई इसे ख़रीदेगा तो कॉङ्ग्रेस इस ख़रीद को ग़ैर-क़ानूनी समझेगी और ब्रिटिश सरकार से सुलह होने पर या आन्दोलन जारी रहने पर भी वह बिना हर्जाना दिए उससे ले ली जायगी। सुना जाता है कि लोग इनकम-टैक्स बन्द कर रहे हैं। हम लोगों ने यह अभी स्वीकार नहीं किया है। इससे बेहतर होगा कि इसे छोड़कर स्वीकृत काम ज़ोरों से किया जाय।

बम्बई में एक और काला-दिन

लाठियों की मार से २५० घायल हुए

तारीख़ २६ इतवार को बम्बई की 'वार-कौन्सिल' ने झण्डा अभिवादन का निश्चय किया था। यह आज़ाद मैदान में, जिसमें मीटिङ्ग करना मना है, होने वाला था। पाँच सौ लाठीधारी पुलिस और एक सवारों व सारजेण्टों के झुण्ड ने वहाँ इकट्ठे हुए शान्तिमय लोगों पर लाठियों का वार किया और उन्हें दौड़ा-दौड़ा कर मारा। डॉक्टरों का मत है कि अब तक लाठी द्वारा जितनी बार पिटाई हुई है, उन सब में यह मार बड़ी भयङ्कर थी। चार घण्टे तक तो आज़ाद मैदान बिलकुल पुलिस के क़ब्ज़े में रहा और वहाँ एक भी ऐसा व्यक्ति दिखाई नहीं दे सकता था, जो पिटने के लिए तैयार न हो। कॉङ्ग्रेस वाले यह दृढ़ निश्चय करके आए थे कि हम अपना कार्य पूरा करेंगे और इनको रोकने के लिए पुलिस ने २५ बार लाठियों का वार किया, जिससे २५० आदमियों को चोटें आईं। ज़्यादातर लोगों को सिर पर चोटें आईं। २० आदमियों को तो वहीं पर इलाज करने की ज़रूरत पड़ी। एक आदमी की दशा बहुत ख़राब है। कहा नहीं जा सकता कि वह बचेगा या नहीं।

इस पर भी पुलिस कॉङ्ग्रेस का कार्य-क्रम न रोक सकी। ठीक आठ बजे श्रीमती अवन्तिका बाई गोखले बम्बई की डिक्टेटर राष्ट्रीय झण्डा लेकर मैदान में घुस पड़ीं। वे उस जगह पर पहुँच गईं, जहाँ पर झण्डे का अभिवादन होने वाला था। हिन्दुस्तानी-सेवा-दल की २० स्वयंसेविकाओं ने चारों ओर घेरा बना लिया था। यह देख कई सार्जेण्ट वहाँ दौड़े, पर वे कार्य में विघ्न न डाल सके। ज़बरदस्ती करने पर भी स्वयंसेविकाओं ने घेरा नहीं टूटने दिया। कार्य पूर्ण हो जाने पर श्रीमती गोखले तो चली गईं, पर सब स्वयं-सेविकाएँ गिरफ़्तार कर के हवालात में बन्द कर दी गईं।

इस पर स्वयंसेवकों के दल के दल झण्डा लेकर मैदान में घुस पड़े। पुलिस ने उन्हें लाठी मार-मार कर

(शेष ५वें पृष्ठ के अन्त में देखिए)

जवाहरलाल जी के मुक़दमे का फ़ैसला

२६ अक्टूबर को दिन के ११॥ बजे पं० जवाहरलाल नेहरू के मुक़दमे का फ़ैसला नैनी जेल में सुना दिया गया। उनको दफ़ा १२४-ए में १८ महीने की सख़्त क़ैद और ५०० रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर ३ महीने की क़ैद और होगी। दफ़ा ११७ आई० पी० सी० में ६ महीने की सख़्त क़ैद और १०० रुपया जुर्माना हुआ है। जुर्माना न देने पर १ महीने की क़ैद और होगी। ऑर्डिनेन्स नं० ६ की ३री धारा में ६ महीने के सख़्त क़ैद और १०० रुपया जुर्माना हुआ है। जुर्माना न देने पर १ महीने की क़ैद और होगी। पिछली दो सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी। इस प्रकार कुल मिला कर २ वर्ष ४ महीने की सख़्त [illegible]द की सज़ा दी गई है।

'सरकारी कर्मचारी स्वयं क़ानून तोड़ते हैं'

गवर्नमेण्ट की नीति पर महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ़ कामर्स का आक्षेप

हाल में ही पास हुए नवें ऑर्डिनेन्स के सम्बन्ध में महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स की कमिटी ने गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया के सेक्रेटरी को एक पत्र भेजा है, वे कहते हैं कि यह नवाँ ऑर्डिनेन्स साफ़ ज़ाहिर करता है कि अब भी भारत की गवर्नमेण्ट कड़ा शासन करने की नीति को स्थिर रखना चाहती है। इसके विरुद्ध हम लोग अपना विरोध प्रदर्शित करते हैं। दुर्भाग्य तो यह है कि देश में इतनी जागृति होने के बाद भी गवर्नमेण्ट की आँखें नहीं खुली हैं। और वह पुराने दमन के साधनों को, जो ऐसे मौक़ों पर सदैव निष्फल सिद्ध हुए हैं, नहीं छोड़ती। छः महीने के अन्दर ही धड़ाधड़ नौ ऑर्डिनेन्स जारी किए जा चुके हैं। इसका मतलब तो यह है कि शासन-पद्धति बिलकुल उलट दी गई है। ऑर्डिनेन्स से पुलीस तथा मैजिस्ट्रेटों के हाथ में अनियमित शक्ति दे दी गई है और इसमें सन्देह नहीं कि कई बार उसका दुरुपयोग किया गया है। जैसे एक ओर आन्दोलन के क़ानून तोड़ने वाले हैं, उसी तरह गवर्नमेण्ट की ओर से भी सरकारी क़ानून तोड़ने वाले तैयार कर दिए गए हैं। इससे यह ज़ाहिर होता है कि क़ानून का तो नाश ही हो चुका है। सरकार के पदाधिकारियों ने स्वतः क़ानून की अवहेलना करना आरम्भ कर दिया है।

नए क़ानून द्वारा प्रजा का एकत्रित होने का अधिकार छीन लिया गया है और व्यक्तिगत धन के अधिकार पर भी धावा बोल दिया गया है। इसके जारी होने से न्याय-सङ्गत तथा शान्त लोगों को भी, जो इस आन्दोलन से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखते, बहुत कष्ट व नुक़सान पहुँचेगा। अब सम्पत्ति, धन तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता सब में खटका हो गया है और यह आजकल के गिरे हुए व्यापार को और भी धक्का पहुँचाएगा। हमारा तो यह ख़्याल है कि शान्ति स्थापित करने के बजाय, यह मनुष्यों के आत्म-बलिदान करने के निश्चय को और भी दृढ़ बनावेगा और स्वतन्त्रता की अग्नि को सुलगावेगा। यह प्रजा का चित्त गवर्नमेण्ट की ओर से हटावेगा और सुलह में बड़ी भारी बाधा डालेगा।

प्रजा में शान्ति तथा प्रेम ही राज्य की नींव है और उसका सुख ही उसकी शक्ति का सूचक है। इसलिए हम लोगों का मत है कि गवर्नमेण्ट इस बात पर ध्यान दे और अपनी नीति को बदले। हम लोगों का यह पूर्ण विश्वास है कि यह लड़ाई बहुत ही निश्चयात्मक है और भूतपूर्व आन्दोलनों से कहीं ज़्यादा ज़ोरदार है। और इस जागृति में केवल देश के एक भाग ने नहीं, वरन् सब लोगों ने भाग लिया है। इन सब बातों का ख़्याल करते हुए यहाँ की गवर्नमेण्ट को चाहिए कि वह अपनी नीति को बदले। यदि यह नहीं किया गया तो अभी और नए ऑर्डिनेन्स जारी करने पड़ेंगे और दमन के साथ ही साथ प्रजा में और ज़्यादा घृणा फैलेगी। इसलिए मौक़ा निकल जाने के पहिले आप अपने साधनों को बदलें तथा देश में शान्ति व सुख स्थापित करें।

लाहौर षड्यन्त्र केस की अपील

फाँसी स्थगित कर दी गई

मेहता अमरनाथ ने १६ ता० को पञ्जाब गवर्नमेण्ट के नाम जो चिट्ठी भेजी थी; गवर्नमेण्ट ने उसका निम्न उत्तर देने की कृपा की है:—

महाशय जी,

गवर्नर-इन-कौन्सिल की आज्ञानुसार मैं आपको १६वीं अक्टूबर सन् १९३० के भेजे हुए पत्र की स्वीकृति भेजता हूँ और उत्तर में यह इत्तला देना चाहता हूँ कि किशनसिंह के लड़के भगतसिंह, हरिराज गुरु के लड़के शिवराम राजगुरु और रामलाल के लड़के सुखदेव की फाँसी स्थगित करने के ऑर्डर पास हो गए हैं।

आपको ६ नवम्बर, १९३० तक इस बात का सबूत देना पड़ेगा कि आपने आवश्यक काग़ज़ात, जिनमें छपी हुई काग़ज़ों की पुस्तक की दो प्रतियाँ और ट्रिब्यूनल के फ़ैसले की एक सर्टिफ़ाइड कॉपी सम्मिलित हैं—लन्दन के किसी सॉलिसिटर के स्वीकृत फ़र्म को प्रिवी-कौन्सिल की जुडीशियल कमेटी से अपील की आज्ञा लेने के लिए भेज दी है। गवर्नमेण्ट को सॉलिसिटर का नाम और पता भेजना अत्यन्तावश्यक है और यह ध्यान में रक्खा जाय कि बैरिस्टर के पास काग़ज़ात सीधे नहीं भेजे जा सकते; वे सॉलिसिटर के फ़र्म को ही भेजे जाने चाहिएँ।

मैं आपको यह भी इत्तला करता हूँ कि आपको इस बात का सबूत देना पड़ेगा कि लन्दन में सॉलिसिटरों को २० गिन्नियाँ (४२ पौण्ड १० शिलिङ्ग या भारतीय सिक्के में क़रीब ८०० रुपए) अपील के लिए भेज दिए गए हैं; क्योंकि यह प्रायः निश्चित हो गया है कि जब प्रिवी कौन्सिल में अपील दायर करने के लिए केवल एक कौन्सिल नियुक्त किया जाता है, तब कम से कम इतना ही ख़र्च होता है। सबूत में या तो तार के मनीऑर्डर की रसीद और या बैङ्क के ड्राफ़्ट की दूसरी प्रति या इसी प्रकार का दूसरा सबूत पेश करना चाहिए, जिससे इस बात का पता लग जावे कि रुपया भेज दिया गया है। इस सम्बन्ध में यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि जब मामला आगे बढ़ेगा तब ३० से ४० गिन्नियाँ (या २०० रुपया तक) के ख़र्चे की और भी आवश्यकता पड़ेगी।

यदि पहिले पैराग्राफ़ में उल्लिखित तारीख़ तक इस प्रकार का सबूत पेश न किया जायगा तो ७वीं नवम्बर १९३० को अपराधियों की फाँसी का ऑर्डर निकाल दिया जायगा।

* * *

इनकम-टैक्स-दफ़्तर पर पिकेटिङ्ग

बम्बई का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि 'पीपुल्स बैटेलियन' के तीन सदस्य इनकमटैक्स दफ़्तर पर पिकेटिङ्ग करने के कारण गिरफ़्तार कर लिए गए। वे लोगों से इनकमटैक्स न देने का अनुरोध कर रहे थे। प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने उनमें से प्रत्येक को ८-८ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है।

कॉङ्ग्रेस वालण्टियर गोली से मारे गए

मुज़फ़्फ़रनगर का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ के शामली नामक स्थान से दो मील आगे केसरवा एक गाँव है और उसके प्रायः सभी निवासी कॉङ्ग्रेस-वादी हैं। मालिन्दी की लूट के पश्चात कुछ दिनों तक वहाँ भी यह अफ़वाह रही कि इस गाँव पर भी गुण्डे धावा करेंगे।

कहा जाता है कि १९वीं अक्टूबर को क़रीब १० बजे रात्रि में गुण्डों ने लाला प्रभूलाल वैश्य के घर पर धावा किया। बन्दूक़ की आवाज़ें सुन कर गाँव वाले रक्षा के लिए दौड़े। उनमें गाँव के पण्डित श्रीराम के दो लड़के राजाराम और मामराज सिंह, जो कॉङ्ग्रेस के वालण्टियर थे, सम्मिलित थे। धावा करने वालों ने उन्हें जान से मार डाला। कॉङ्ग्रेस का दूसरा वालण्टियर जहाँगीरसिंह भी, जिसने प्रभूलाल की सन्दूक़ खोलने से इन्कार किया था, सख़्त घायल हुआ और दूसरे दिन उसका भी प्राणान्त हो गया।

प्रभूलाल और उनकी पत्नी को भी सख़्त चोट आई। उनकी स्त्री मुज़फ़्फ़रनगर के सिविल अस्पताल में पड़ी है। मालूम हुआ है कि पुलिस ने प्रभूलाल को केसरवा गाँव छोड़ने की आज्ञा नहीं दी। प्रभूलाल के ६ माह के लड़के के साथ भी दुर्व्यवहार किया गया था और अस्पताल में उसका भी इलाज हो रहा है। इनके साथ और बहुत से आदमियों को सख़्त चोटें आईं। गुण्डे जो नग़दी और ज़ेवर ले गए हैं, उसकी क़ीमत क़रीब ७-८ हज़ार रुपए होगी।

तीनों मृतक शरीर मुज़फ़्फ़रनगर पोस्ट मार्टम के लिए भेजे गए। उसके बाद लोग जुलूस में उन्हें श्मशान ले गए। ज़िले भर में बड़ी सनसनी फैली है। इस दुर्घटना के कारण मुज़फ़्फ़रनगर में दिवाली नहीं मनाई गई। बड़ा असन्तोष फैल रहा है।

कॉङ्ग्रेस के नए प्रेज़िडेण्ट गिरफ़्तार

२६ वीं अक्टूबर का अमृतसर का समाचार है कि कॉङ्ग्रेस के नए प्रेज़िडेण्ट श्री० सेन गुप्त जलियानवाले बाग़ में दफ़ा १४४ तोड़ने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। जलियानवाला बाग़ के चारों ओर घेरा डाले हथियारबन्द पुलिस का रिसाला खड़ा था। जैसे ही सभा प्रारम्भ हुई, एक पुलिस अफ़सर उनके पास दफ़ा १४४ का ऑर्डर लेकर पहुँचा, जिसमें ज़िला मैजिस्ट्रेट ने उन्हें भाषण देने से रोका था। उन्होंने कहा कि वे नोटिस सभा समाप्त हो जाने के बाद पढ़ेंगे, तब मैजिस्ट्रेट ने नोटिस पढ़ा और थोड़ी ही देर के भाषण के बाद वे गिरफ़्तार कर मोटर में कोतवाली भेज दिए गए। अर्धरात्रि को वे फ़्रण्टियर मेल से दिल्ली भेज दिए गए, जहाँ उन पर राजविद्रोह के अभियोग में मामला चलाया जावेगा। उनका दफ़ा १४४ का अभियोग उठा लिया गया है। उनकी गिरफ़्तारी के कारण देश में जगह-जगह हड़तालें मनाई गईं।

यूरोपियनों पर पत्थरों की वर्षा

पूना का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बेलगाँव में कुछ यूरोपियनों पर पत्थर फेंके गए और उन्हें चिढ़ाया गया। कहा जाता है कि मेजर केसलैण्ड और उनकी स्त्री पर पत्थर फेंके गए, परन्तु वे सुरक्षित निकल गए। मद्रास के ब्रिगेडियर गिलीज़ जब प्रातः व्यायाम के बाद वापस लौट रहे थे, तब बेलगाँव से २ मील की दूरी पर एक गाँव के पास उनकी मोटर को रास्ते में रोक कर उनके ऊपर पत्थरों की बौछार की गई, जिससे वे सख़्त घायल हो गए। फ़ौजी दफ़्तर में दुर्घटना की रिपोर्ट पहुँच गई है।

देश के प्राङ्गण में

—कलकत्ते की अर्मीनियन स्ट्रीट वाली डकैती के सम्बन्ध में जो क्षितीशचन्द्र बनर्जी नामक व्यक्ति पकड़ा गया था, उसे चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने १ नवम्बर तक हवालात में रखने की आज्ञा दी है।

—कलकत्ते के डलहौज़ी स्क्वायर में मि० टेगार्ट के ऊपर बम फेंकने के सम्बन्ध में प्रतूलचन्द्र मुकर्जी नाम का युवक गिरफ़्तार किया गया था। २४ ता० का समाचार है कि चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने उसे रिहा कर दिया।

—ढाका का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि नवाबपुर में जो बम का कारख़ाना पकड़ा गया था उसके सम्बन्ध में श्रीयुत गौरीकिशोर नायक, श्रीमती त्रिपुर सेन और डॉ० अतुल भट्टाचार्य तथा उनकी पत्नी और पुत्री गिरफ़्तार हुई थीं। वे सब ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं।

—ढाका में मि० लोमेन की हत्या के अभियोग में तेजोमय घोष, सैलेशराय और ज्योतिर्मय गुह नामक तीन व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं। सेशन जज ने उनको एक-एक हज़ार की ज़मानत पर छोड़ने का हुक्म दिया है।

—२३ ता० को श्री० सेन गुप्त ने एक सम्वाददाता से बात करते हुए कहा है कि वे पं० जवाहरलाल नेहरू के कथनानुसार चुने हुए क्षेत्रों में टैक्सबन्दी के आन्दोलन को चलाना पसन्द करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि महात्मा गाँधी और पं० मोतीलाल नेहरू ने सर तेजबहादुर सप्रू के सामने जो शर्तें रक्खी थीं, उनसे कम पर भारत और ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट के बीच समझौता नहीं हो सकता। उन्होंने म्यूनिसिपल पुलिस टैक्स को न देने तथा आगामी मर्दुमशुमारी का बॉयकॉट करने का भी विचार प्रकट किया।

—पं० जवाहरलाल नेहरू और मुफ़्ती किफ़ायतुल्ला की गिरफ़्तारी पर खीरी (लखीमपुर) में एक झण्डा-जुलूस निकाला गया और एक सार्वजनिक सभा में बधाई का प्रस्ताव पास किया गया।

—नागपुर के चार विदेशी कपड़े के मुख्य व्यापारियों ने २२ अक्टूबर की शाम को 'क्लॉथ मरचेण्ट एसोसिएशन' की मुहर को तोड़ कर विदेशी कपड़ा बेचना आरम्भ किया। दूसरे दिन सुबह से ही १० स्वयंसेविकाएँ और ६० स्वयंसेवक उनकी दुकानों पर ज़ोरों से पिकेटिङ्ग करने लगे। व्यापारियों ने जब देखा कि बिक्री हो सकना असम्भव है तो उन्होंने फिर कपड़े को कॉङ्ग्रेस की मुहर में बन्द कराना मन्ज़ूर कर लिया। विदेशी कपड़े की अन्य चार दुकानों और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग पूर्ववत जारी है। कोई गिरफ़्तारी नहीं की जाती। कॉङ्ग्रेस कमेटी विदेशी सूत का बॉयकॉट करने की कोशिश कर रही है। अम्बर नामक क़स्बे के कपड़ा बुनने वालों ने विदेशी सूत इस्तेमाल न करने की प्रतिज्ञा की है। यह क़स्बा हाथ से बुनी जाने वाली साड़ियों के बनाने का सब से बड़ा केन्द्र है। अब अम्बर की साड़ियों पर कॉङ्ग्रेस कमेटी की मुहर रहेगी और वे ही स्वदेशी समझी जायँगी।

—नागपूर का समाचार है कि श्री० वी० डी० कुलकर्णी, एक क़ानून के विद्यार्थी, जिन्हें सत्याग्रह आन्दोलन में एक वर्ष की सख़्त सज़ा दी गई थी, नागपूर सेन्ट्रल जेल में 'सी' क्लास में रक्खे गए हैं। उन्हें जेल में चक्की चलानी पड़ती है, गिट्टी तोड़ना पड़ता है और कोल्हू चलाना पड़ता है। इससे उनके स्वास्थ्य में बहुत हानिकारक प्रभाव हुआ है। नागपुर के लॉ कॉलेज के वे प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे।

—अकोले में पं० जवाहरलाल नेहरू की गिरफ़्तारी की ख़बर पहुँचने पर दुकानदारों ने ४ बजे शाम तक हड़ताल मनाने का निश्चय किया। वह दिवाली का दिन था तो भी तमाम बाज़ार, यहाँ तक कि मिठाई की दुकानें भी पूर्णतया बन्द रहीं। शाम को धार्मिक रूढ़ि को पालन करने के लिए थोड़ी सी रोशनी हुई। पटाख़े और आतिशबाज़ी का चलना क़तई बन्द रहा।

—लाहौर के गवर्नमेण्ट कॉलेज के प्रिंसिपल कर्नल गैरट ने प्रस्ताव किया था कि श्रीमती मनमोहिनी ज़ुतशी की एम० ए० की डिग्री उनके राजनीतिक कार्यों में भाग लेने के कारण रोक ली जाय। पर सीनेट में यह प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया। क्योंकि वर्तमान नियमों के अनुसार इस प्रकार का कार्य नियम-विरुद्ध था।

—२५ ता० को श्री० सेन गुप्त सपत्नीक अमृतसर पहुँचे। उन्होंने वहाँ कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ताओं और कपड़े के दुकानदारों से मुलाक़ात की। इस सम्बन्ध में एक सम्वाददाता से बात करते हुए उन्होंने कहा कि कपड़े के व्यापारियों के पास मौजूदा विदेशी कपड़े के बेचने के सम्बन्ध में रियायत करना ठीक नहीं। अमृतसर की कमिटी ने इस सम्बन्ध में बहुत बड़ी ग़लती की है। उन्होंने कहा कि मेरी राय में प्रत्येक दशा में हमको विदेशी माल का पूर्ण बॉयकॉट करना आवश्यक है।

—लाहौर का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि लाला दुनीचन्द बैरिस्टर और श्रीयुत पुरुषोत्तमलाल सोंधी जेल से छोड़ दिए गए।

—लुधियाना का समाचार है कि वहाँ के एक स्वादी नामक गाँव में बम फट पड़ा। कहा जाता है कि एक सुनार, जो कि उसे तैयार कर रहा था, सख़्त घायल हो गया है।

—अमृतसर का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि स्थानीय काँङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट मौलाना इस्माइल ग़ज़नवी के पास, जिन पर राजनीतिक मामला चल रहा है, उनकी पत्नी स्थानीय सब-जेल में यह कहने गई थीं कि उनका लड़का डबल निमोनिया से पीड़ित है और उसके जीवन की बहुत आशा नहीं है। उनसे ज़मानत देकर जेल से बाहर जाने को कहा गया। परन्तु उन्होंने ज़मानत देने से साफ़ इन्कार कर दिया और कहा कि मैं अपने सिद्धान्तों के आगे अपने लड़के के जीवन की परवाह नहीं करता।

—पण्डित हृदयनाथ कुँज़रू २७ अक्टूबर को इलाहाबाद से रवाना होकर दिल्ली होते हुए ३० ता० को बम्बई पहुँचेंगे। और वहाँ से १ नवम्बर को एक इटालियन जहाज़ से लन्दन के लिए रवाना होंगे। वे इङ्गलैण्ड पार्लियामेण्ट के दोनों हाउसों की संयुक्त निर्वाचित कमिटी (Joint Select Committee) में बम्बई की 'इम्पीरियल इण्डियन सिटीज़नशिप एसोसिएशन' की ओर से प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित होंगे। इङ्गलैण्ड में वे पूर्वीय अफ़्रिका के डेपूटेशन का भी नेतृत्व करेंगे।

—अमृतसर का समाचार है कि वहाँ के एक विदेशी कपड़े के व्यापारी का सामाजिक बहिष्कार राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के निर्णय के अनुसार किया गया है। उसे मकान के मालिक ने एक नोटिस दिया है, जिसके अनुसार एक सप्ताह के अन्दर या तो वह दुकान ख़ाली कर दे या कॉङ्ग्रेस से समझौता करे और कैन्टोन्मेन्ट में जो उसने नई विदेशी कपड़े की दुकान खोली है उसे बन्द करे। उस पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा है।

—बम्बई के श्री० के० एम० मुन्शी कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के सदस्य नामज़द किए गए हैं।

—बारदौली का समाचार है कि बारदौली तालुक़े के सारमान गाँव के पास बाबला के किसानों को अधिकारियों ने नोटिस दिया है कि यदि वे तीन दिन के अन्दर लगान न दे देंगे, तो उनकी ज़मीन ज़ब्त कर ली जायगी। इस पर गाँव वालों ने गाँव बिलकुल ख़ाली कर दिया है।

बड़ौदा-स्टेट गवर्नमेण्ट को मदद देगी

बम्बई के 'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' का कहना है कि बड़ौदा स्टेट की सरकार ने लगानबन्दी के सम्बन्ध में गवर्नमेण्ट को सहायता देने का निश्चय कर लिया है। बड़ौदा ने असाधारण कार्यवाही के अनुसार उन वालण्टियरों को ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के सुपुर्द कर देना मन्ज़ूर कर लिया है, जो नवें ऑर्डिनेन्स के अनुसार अपराध कर बड़ौदा रियासत की सीमा में भाग आए हैं। बड़ौदा ने ब्रिटिश प्रजा के उन लोगों को भी निर्वासित करना मन्ज़ूर कर लिया है जो रियासत में सत्याग्रह का प्रचार कर रहे हैं।

वालण्टियर सेक्रेट्रियट में घुस गए

बम्बई का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि 'पीपुल्स बैटेलियन' के चार वालण्टियर सवेरे सेक्रेट्रियट में घुस गए और होम मेम्बर के ऑफ़िस के अन्दर जाने लगे। परन्तु जब फाटक के सिपाहियों ने उन्हें रोका तब वे 'होम' विभाग के डिपुटी सेक्रेटरी के ऑफ़िस में घुस गए और ख़ाली कुर्सियों पर बैठ गए और उस समय तक बैठे रहे, जब तक वे धक्के मार कर न निकाल दिए गए। शीघ्र ही पुलिस बुलाई गई, परन्तु जब पुलिस पहुँची तब वालण्टियर वहाँ न थे। इसके कुछ ही देर बाद वे फिर आगए और आगे-पीछे दरवाज़ों पर खड़े होकर राष्ट्रीय नारे लगाने और राजविद्रोहात्मक पर्चे बाँटने लगे। पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और पैदल एसप्लेनेड हवालात में ले गई।

—पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपनी गिरफ़्तारी की आशङ्का के कारण गिरफ़्तार होने के पहले ही सरदार वल्लभ भाई पटेल को कॉङ्ग्रेस का प्रेज़िडेण्ट चुन गए थे। परन्तु जब तक वे जेल से मुक्त न हो जायँ, तब तक के लिए प्रेज़िडेण्ट चुनने का अधिकार पण्डित मोतीलाल को दे गए थे। पण्डित मोतीलाल ने उनके जेल से मुक्त होने तक श्री० जे० एम० सेन गुप्त को कॉङ्ग्रेस का प्रेज़िडेण्ट चुना था। वे भी पकड़ लिए गए।

* * *

—सर तेजबहादुर सप्रू, श्रीयुत जयकर, मुञ्जे, मौलाना मुहम्मद अली इत्यादि कई राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेन्स के सदस्य १८ तारीख़ को लन्दन पहुँच गए। वे अब आपस में सलाह करना प्रारम्भ करेंगे। सर सप्रू ने 'रायटर' अख़बार के प्रतिनिधि से कहा कि हम लोग पूर्ण मित्रता से ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के साथ सलाह करने आए हैं। भारत की दशा आजकल बहुत ही नाज़ुक है। पर मैत्री भाव दिखाने से वह सुधर सकती है। हम लोग औपनिवेशिक स्वराज्य लेने के लिए तैयार हैं और उसकी शासन प्रणाली बनाने के लिए यहाँ आए हैं। जो अधिकार अभी भारतीयों को पूर्णतया नहीं सौंपे जा सकते हैं, उन अधिकारों के देने के लिए हम लोग नियमित समय देने को तैयार हैं। अभी हम लोगों में भेद अवश्य है, पर जिस दम ब्रिटिश सरकार हमें औपनिवेशिक स्वराज्य देना स्वीकार कर लेगी, हम लोग सब एक होकर शासन-प्रणाली बना सकेंगे।

—डॉक्टर मुञ्जे ने कहा कि विलायत वाले अब समता का पद देकर ही भारतीयों को अपने साथ रख सकते हैं। भारत में कई सैनिक जातियाँ हैं, जो कि अपने देश की रक्षा पूरी तौर से कर सकती हैं। केवल उन्हें शिक्षा की आवश्यकता है।

—यह आशा की जाती है कि राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेन्स १२ नवम्बर से प्रारम्भ होगी। इस अवसर पर सम्राट पञ्चम जॉर्ज एक अभिभाषण देंगे। इसके बाद कॉन्फ्रेन्स का काम कुछ दिनों के लिए स्थगित किया जावेगा। पहिली सभा १७ नवम्बर को सेन्ट जेम्स पैलेस में होगी। कॉन्फ्रेन्स सम्बन्धी सभाएँ पैलेस के क्वीन एनी के बड़े कमरे तथा अन्य कमरों में होंगी। हिन्दू-मुस्लिम एकता हो जाने की आशा की जाती है। रियासतों के प्रतिनिधियों को २४ नवम्बर को राजकुमार ने भोज दिया है। सदस्यों के लिए २६ फ़ीट लम्बी एक अण्डाकार टेबुल बनाया गया है। भारतीय सदस्यों का स्वागत अन्य उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की तरह नहीं हुआ है। इस पर लन्दन निवासी भारतीयों को बहुत खेद हो रहा है।

—राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेन्स के लिए विलायत में एकत्रित नेता प्रति दिन ख़ानगी सभाएँ करके हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल करने का प्रयत्न कर रहे हैं। बहुत सी बातों में सुलह हो गई है। मिस्टर जिन्ना ने अपनी १४ शर्तें सबके सामने रक्खी थीं और उन पर ध्यान दिया गया। आख़िरी शर्तें ब्रिटिश नेताओं से मुलाक़ात हो जाने के बाद तय की जावेंगी।

—लॉर्ड ज़ेटलैण्ड ने गृह-बन्धनों के कारण भारत के भावी वायसराय होना अस्वीकार कर दिया। इसलिए ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को कोई दूसरा आदमी तलाश करना पड़ेगा। यह तो निश्चित है नया वाइसराय राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेन्स के समाप्त हो जाने के बाद ही आवेगा। प्रधान मन्त्री मिस्टर मेकडॉनल्ड ने इस विषय पर राउण्ड टेबुल के लिए गए हुए भारतीयों की सलाह लेने का इरादा किया है।

—राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेन्स के लिए भारतीय सरकार ने जो मेमोरेण्डम भेजा है वह शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

—११ नवम्बर को इस साल फिर महायुद्ध का सन्धि-दिवस मनाया जावेगा। पार साल की तरह विलायत में ११ बजे सब काम २ मिनट के लिए बन्द कर दिए जावेंगे। सम्राट पञ्चम जॉर्ज ने अपनी इच्छा प्रकट की है कि सारे साम्राज्य में इसी तरह सन्धि-दिवस मनाया जावे। भारत की सरकार ने विज्ञप्ति प्रकाशित की है कि आशा है भारत की राजभक्त प्रजा सम्राट की इच्छा का पालन करेगी।

—भारतीय हवाई डाक में अब रोशनी का इन्तज़ाम होने वाला है। इससे हवाई जहाज़ रात में भी यात्रा कर सकेंगे। अगली गर्मी तक यह प्रबन्ध पूर्ण हो जाने के कारण विलायत से भारत तक सफ़र और भी जल्द तय हो सकेगा।

—लन्दन में एक नई रेल तैयार की गई है, जो कि एक घण्टे में ६३ मील जा सकती है। एक डब्बा जिसमें ४३ यात्री बैठ सकते हैं हवाई जहाज़ के समान इञ्जिन से खींचा जाता है। डब्बे में इतने अच्छे स्प्रिङ्ग लगाए गए हैं कि अन्दर बैठने वाले ज़रा भी हिलते-डुलते नहीं हैं और यदि यात्री आँखें मूँद लें तो उन्हें यह भी नहीं मालूम होता कि गाड़ी चल रही है।

—प्रसिद्ध वैज्ञानिक ईंस्टन को विलायत में २८ अक्टूबर को भोज दिया जावेगा। मिस्टर बरनर्डशॉ, रॉथ्स चाइल्ड और कई और बड़े सज्जन तथा विद्वान भी इसमें भाग लेंगे।

—लङ्काशायर की औद्योगिक दशा का निरीक्षण करने तथा उसकी उन्नति के साधन निश्चित करने के लिए होम सेक्रेटरी मिस्टर जे० आर० क्लाइन्स तथा व्यापार सङ्घ के अध्यक्ष मिस्टर विलियम ग्रेहम गए हुए हैं।

—बग़दाद-हइफ़ा रेलवे लाइन के बनाने के लिए ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने इम्पीरियल डेवेलपमेण्ट फ़ण्ड में से ५५,००० पौण्ड देना निश्चय किया है।

खान में २३५ मर गए

—जर्मनी की एक खान में धड़ाका होने के कारण २३५ श्रमजीवी दब कर मर गए। २१ व्यक्तियों का अभी तक पता नहीं चला है। धड़ाका इतने ज़ोर से हुआ था कि खदान के क़रीब के मकान तथा गाँव तक गिर पड़े। बचाने की बहुत कोशिश की जाने पर २८ मनुष्य, जो कि घायल हैं, बाहर निकाले जा सके हैं।

—२४ तारीख़ की ख़बर है कि ब्रेज़िल में पल्टन तथा उपद्रवियों ने बलवा करके वहाँ की गवर्नमेण्ट को उलट दिया है। राज्य अब सैनिकों के एक दल के हाथ में आ गया है, जिसके नेता सेनोर टेसो फ्रेगोसो तथा जनरल बरेटो हैं। राज्य के प्रेज़िडेण्ट डॉक्टर वाशिङ्गटन लुई को ज़बरदस्ती त्याग-पत्र देना पड़ा है। उपद्रवियों के झुण्ड ने सड़कों में घूम-घूम कर समाचार-पत्रों के स्थान तोड़ डाले हैं। शहर के सारे घर तथा दुकानें बन्द पड़ी हैं।

—मिस्टर हेरी गौसलिङ्ग, जो कि ब्रिटिश श्रमजीवियों के एक बड़े नेता थे, २० तारीख़ को मर गए। ये कई बड़े श्रमजीवी सङ्घों के अध्यक्ष रह चुके थे।

—आँधी के कारण ब्रिटनी के सामुद्रिक मछुओं के जहाज़ उलट जाने से २०३ मछुओं की मृत्यु हो गई है। ये १२७ विधवाएँ तथा, १७३ अनाथ बालक छोड़ कर मरे हैं, जिनकी आर्थिक दशा बहुत ही शोचनीय है।

—बलगेरिया के राजा बोरिस का ब्याह राजकुमारी गिओवाना के साथ इटली के असीसी नगर में हुआ है। सारा शहर रोशनी व तोरन से सजा था। इटली के राजा तथा अन्य राजकुमार व सिग्नार मसोलिनी इस अवसर पर उपस्थित थे।

—इन्दौर के भूतपूर्व महाराजा तुकोजी राव के महल के चौकीदार को कोर्ट की तरफ़ से हर्जाना देना मन्ज़ूर हो गया है, पर महाराजा ने इस पर अपील की है कि चौकीदार किसी दूसरे की नौकरी पर था, इसलिए उसे जो चोट लगी है उसके लिए महाराजा का हर्जाना देना न्याय-सङ्गत नहीं है। बड़ी अदालत ने अपील मन्ज़ूर कर ली है और महाराज को हर्जाना देने से बरी कर दिया है।

—रबर और टिन का भाव बेतरह गिर जाने के कारण स्ट्रेट-सेटलमेण्ट में रहने वाले हज़ारों भारतीय तथा यूरोपियन बेकार हो गए हैं। रबर की बहुत सी इस्टेंटस और कई टिन की खानें बन्द हो गई हैं। हाल में २५,००० भारतीय हिन्दुस्तान वापस आने के लिए चल दिए हैं। बहुत से चीनी कुली भी अपने देश को लौट गए हैं।

—दो लम्बी उड़ान लगाने वाले उड़ाकू गिलबर्टलेन तथा पीअरे निकोलस सिल्वरबाम, जो कि कैरी से एडिस अबाबा तक उड़ने का प्रयत्न कर रहे थे—हवाई जहाज़ टूट जाने के कारण एक घर पर गिरे व आग लगने से जहाज़ सहित जल कर मर गए।

—राउण्ड टेबिल कॉन्फ्रेन्स के लिए गए हुए भारतीय रियासतों के महाराजाओं को सम्राट् तथा सम्राज्ञी ने ४थी नवम्बर को बकिङ्घम पैलेस में दावत दी है।

—मिस्टर क्लाइन्स ने, जो कि ब्रिटिश सेक्रेटरी हैं, अपने वक्तव्य में कहा है कि हमारी राजनीति ने भारतीयों को हमारा दुश्मन बना दिया है। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि इस समय वे हमारे माल को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते हैं। वे उसे सड़कों पर जलाते हैं। यह बड़े दुःख की बात है कि हम लोगों ने अपनी बुरी शासन-पद्धति से इङ्गलैण्ड के नाम को घृणित बना दिया है तथा भारतीयों के प्रेम और व्यापार को खो दिया है।

—कविवर रवीन्द्र ठाकुर अमेरिका से १२वीं नवम्बर तक भारत के लिए रवाना होंगे। वे फ़िलेडेल्फ़िया शहर में अपने चित्र बेचने का प्रयत्न कर रहे हैं।

—चीन देश की नेशनेलिस्ट सरकार के प्रेज़िडेन्ट चियाङ्ग-काइ-शेक ने क्रिश्चियन धर्म स्वीकार कर लिया है।

—पैलेस्टाइन की नई नीति का विरोध करते हुए जनरल स्मट्स ने ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मेकडॉनल्ड को लिखा है कि इसको सुन कर मुझको बहुत खेद है। अन्य ब्रिटिश दलों के नेता भी कहते हैं कि इस नवीन नीति को स्वीकार करके गवर्नमेण्ट ने ब्रिटेन का दिया हुआ वचन तोड़ दिया है।

—ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्री मिस्टर स्कलिन ने अपने वक्तव्य में कहा है कि ऑस्ट्रेलिया के देशीय क़र्ज़ की अवहेलना करने की ख़बर, जो बड़े ज़ोरों से उड़ रही है, ग़लत है। हमारे देश के ९८ फ़ी सदी निवासी ब्रिटिश हैं और हम सदा इङ्गलैण्ड से सम्बन्ध रखना चाहते हैं। इसलिए हम लोगों को क़र्ज़ की अवहेलना करने का कोई भी कारण नहीं हो सकता।

—ठण्ड के कारण राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेन्स में गए हुए बहुत से सदस्यों को बड़ी तकलीफ़ है। कुछ लोग अस्वस्थ भी हैं। सर तेजबहादुर सप्रू उनमें से एक हैं।

—यह सुना जाता है कि ख़ानगी तौर से बहुत से बड़े-बड़े लोग विलायत में और हिन्दुस्तान में गवर्नमेण्ट से आग्रह कर रहे हैं कि जिस रोज़ राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेंस अपना कार्य आरम्भ करे उस दिन ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को जेल में बन्द भारतीय नेताओं को छोड़ कर व ऑर्डिनेन्स हटा कर अपनी नेक नीयती का परिचय देना चाहिए। पर कुछ लोग यह भी कह रहे हैं इस पर कॉङ्ग्रेस कुछ भी ध्यान न देगी और आन्दोलन में ज़रा भी कमी न करेगी, इसलिए इससे कुछ लाभ नहीं है।

* * *

—मेरठ की तीन प्रसिद्ध महिला कार्यकर्त्रियों—श्रीमती प्रकाशवती सूद, विद्यावती और कमला देवी चौधरी को २४ अक्टूबर को ४-४ मास की क़ैद और १५०)-१५०) जुर्माने की सज़ा दी गई। जुर्माना न देने पर डेढ़-डेढ़ महीने की सज़ा और होगी। कॉङ्ग्रेस के तीन नेता—क़ाज़ी निज़ामुद्दीन, श्री० नूरुद्दीन और राधेमोहन बरी कर दिए गए। पं० इन्द्रमणि और राधेलाल पर दफ़ा १७ का अभियोग लगाया गया है।

—२४ ता० की ख़बर है कि पुलिस ने बनारस के सत्याग्रह-आश्रम पर धावा किया और भोजन-सामग्री, कपड़ा आदि जो चीज़ें वहाँ मिलीं, उठा ले गई। एक क्लर्क और दो अन्य व्यक्ति जो वहाँ मौजूद थे, गिरफ़्तार कर लिए गए। २३ तारीख़ को शाम को श्री० उदितनारायण कप्तान, वासुदेव, श्री० सीताराम, पं० जगन्नाथ मिश्र और श्री० रामनाथ विदेशी कपड़े की दुकानों के सामने गश्त लगाते पकड़ लिए गए। इनके सिवाय और भी तीन क़स्बों के कार्यकर्ता गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कानपुर में २४ वीं अक्टूबर को एक राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध में साप्ताहिक उर्दू पत्र 'कृष्ण' के सम्पादक पण्डित राजाराम सबिर गिरफ़्तार कर लिए गए।

—शाहदरा (दिल्ली) के एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्री० विद्यारत्न को २४ वीं अक्टूबर को छः मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—दिल्ली में श्री० माखनलाल और छत्तरसिंह दो वालण्टियर लालदीवार के पास मर्केण्टाइल बैङ्क के गोदामों पर, जहाँ पुलिस की सहायता से विलायती कपड़े की गाँठें पहुँचाई जा रही थीं, पिकेटिङ्ग करने के कारण गिरफ़्तार कर लिए गए।

—अम्बाला में प्रातःकाल की फेरी में चार आदमी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। वहाँ के कण्टोन्मेण्ट में १४४ दफ़ा लगा कर जुलूस वग़ैरह निकालना बन्द कर दिया गया है।

—२४वीं अक्टूबर को लाहौर के उर्दू दैनिक 'मिलाप' के सम्पादक श्री० ख़ुशालचन्द का १० वर्ष का लड़का यशपाल राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिया गया।

—सक्खर का समाचार है कि वहाँ के 'डिक्टेटर' श्री० घनश्यामदास, कप्तान और दो वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। पहिले दो को तीन माह की सख़्त क़ैद और ५० रुपए जुर्माना या दो सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा हुई। एक वालण्टियर को तीन माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई और एक छोड़ दिया गया।

—१९ और २० ता० को बम्बई के आसपास के स्थानों में आठ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए थे। मुक़दमा चलने पर उनमें एक छोड़ दिया गया और सात को ६-६ मास की सख़्त क़ैद की सज़ा और ५०) से ३००) तक जुर्माना हुआ।

—अहमदाबाद का २२ अक्टूबर का समाचार है कि नदियाद में विदेशी कपड़े और शराब पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ३२ स्त्रियाँ गिरफ़्तार की गईं, जिनमें से १६ छोड़ दी गई हैं। जिस समय स्त्रियाँ गिरफ़्तार की जा रही थीं, उस समय भीड़ भगाने के लिए पुलिस ने लाठी प्रहार भी किया था।

—बिहार के प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस और हिन्दू-सभा के कार्यकर्ता बाबू जगतनारायण लाल दूसरी बार गिरफ़्तार किए गए हैं और उन पर मुक़दमा चलाया जा रहा है। 'सर्चलाइट' के मैनेजर बाबू अम्बिकाकान्त सिंह भी दूसरी बार गिरफ़्तार हुए हैं, पर उनका मुक़दमा अभी आरम्भ नहीं हुआ।

—२४ ता० को पटना में १३ स्वयंसेवक, जो बाज़ार में विदेशी कपड़े के बॉयकॉट का प्रचार कर रहे थे, गिरफ़्तार कर लिए गए। उनके साथ कुछ महिलाएँ भी थीं, जिन्होंने अपने को गिरफ़्तार कराना चाहा, पर पुलिस ने उनको नहीं पकड़ा।

—मद्रास की २५ ता० की ख़बर है कि श्री० राजगोपालाचारी पुलिस का नोटिस पाकर पुलिस कोर्ट में उपस्थित हुए। नोटिस में उनसे एक वर्ष तक शान्ति-रक्षा के लिए ५००) का मुचलका माँगा गया था। कारण यह बतलाया गया था कि १२ अक्टूबर को उन्होंने मद्रास में जो व्याख्यान दिए उसमें लोगों से सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने और आगामी मर्दुमशुमारी का बॉयकॉट करने का अनुरोध किया था। श्री० राजगोपालाचार्य ने मुचलका देने से इन्कार किया, इस पर वे जब तक मुचलका न लिखें तब तक के लिए जेल भेज दिए गए। उन्होंने अपनी जगह श्री० सत्यमूर्ति को, जो अदालत में उपस्थित थे, तामिल नाडु कॉङ्ग्रेस का अस्थायी प्रेज़िडेण्ट नियत किया है। जेल जाते समय उन्होंने सन्देश दिया है कि—"सरकार को तत्काल ही मेरी आवश्यकता थी, इसलिए मैं ख़ुशी के साथ जाता हूँ। अब कोई भी स्वाभिमानी भारतवासी और ख़ास कर कॉङ्ग्रेसमैन जेल के बाहर ख़ुश नहीं रह सकता। इस सुनिश्चित विजय के अवसर पर देश के लिए कष्ट सहन करना वास्तव में सौभाग्य की बात है।"

राष्ट्रीय झण्डा पुलिस को देने से इन्कार

दिल्ली का २३वीं अक्टूबर का समाचार है कि पहाड़ी धीरज में राष्ट्रीय झण्डा फहराते समय ८ वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए और दो स्त्रियाँ इसलिए गिरफ़्तार की गईं कि उन्होंने राष्ट्रीय झण्डा पुलिस को देने से इन्कार किया था।

—छपरा का १५वीं अक्टूबर का समाचार है कि सारन की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दी गई है। पुलिस ज़िले के प्रायः सभी थानों के बहुत से गाँवों में जायदादें क़ुर्क़ कर रही है। बरेज़ा के एक सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता बाबू बावन सिन्हा गिरफ़्तार कर लिए गए।

—लाहौर का २०वीं अक्टूबर का समाचार है कि लुधियाना महिला-सत्याग्रह-दल की प्रेज़िडेण्ट, श्रीमती प्रकाशवती देवी को चार मास की क़ैद और १५० रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है। वे 'ए' क्लास में रक्खी गई हैं।

—पेशावर का २०वीं अक्टूबर का समाचार है कि पिकेटिङ्ग करने के कारण वहाँ केवल एक दिन में ३१ गिरफ़्तारियाँ हुईं। उनमें से १७ को ६-६ माह की सख़्त सज़ा हुई और एक को 'फ़्रान्टियर क्राइम रेगूलेशन' के अनुसार तीन साल की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई।

—छपरा कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर पं० वेदव्रत जी वानप्रस्थ १९वीं सितम्बर को गिरफ़्तार किए गए थे। उन को एक महीने हवालात में रखने के बाद एक साल की सादी सज़ा दी गई है!

—कलकत्ते का २० वीं अक्टूबर का समाचार है कि खुलना बम केस के सम्बन्ध में मेडिकल कॉलेज के एक छठवें वर्ष के विद्यार्थी की गिरफ़्तारी हुई है।

—मद्रास का समाचार है कि बेलारी म्युनिसिपल-क्षेत्र में कॉङ्ग्रेस का प्रचार रोकने के लिए वहाँ १४४ दफ़ा लगा दी गई है। वहाँ के ५ सत्याग्रहियों को, ज़मानत देने से इन्कार करने पर, ज़िला मैजिस्ट्रेट ने १-१ वर्ष की सादी क़ैद की सज़ा दी है। कालीकट में भी ज़िला मैजिस्ट्रेट के ऑर्डर के विरुद्ध ताड़ी की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ८ सत्याग्रही वालण्टियरों को ४-४ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—पटना का २८वीं अक्टूबर का समाचार है कि बिहार प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी की रिपोर्ट के अनुसार वहाँ एक सप्ताह में १८४ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—ब्रह्मनवरिया (टिपरा) के कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस पर पुलिस ने २७वीं अक्टूबर को धावा किया और ३० वालण्टियरों को गिरफ़्तार किया। उनमें छोटी उमर के लड़के भी सम्मिलित थे।

—कानपूर में २७वीं अक्टूबर को विदेशी कपड़े की गाँठें रोकने के कारण पृथ्वीनाथ भार्गव गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कलकत्ते का २७वीं अक्टूबर का समाचार है कि कलकत्ता महिला सङ्घ की सेक्रेटरी वाञियाबाई को, जिनकी उमर ५० वर्ष की है 'एन्टी पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स' के अनुसार ३ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—नागपूर का २८वीं अक्टूबर का समाचार है कि तुमसर की कॉङ्ग्रेस के प्रेज़िडेण्ट और दो अन्य प्रसिद्ध कार्यकर्ता गिरफ़्तार कर लिए गए।

—नई दिल्ली का २८वीं अक्टूबर का समाचार है कि एक मुसलमान की विदेशी कपड़े की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ४० पुरुषों और १३ स्त्रियों की गिरफ़्तारी हुई है। स्त्रियों में डॉक्टर ब्रजरानी—वालण्टियरों की कप्तान भी सम्मिलित हैं।

—कलकत्ते का २७वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में दो विद्यार्थियों की गिरफ़्तारी हुई है और वासुदेव नामक व्यक्ति और दो वैद्यों के घरों की तलाशी ली गई। पुलिस वासुदेव के घर से भगतसिंह और दत्त की तस्वीरें ले गई है।

—बम्बई में हिन्दुस्तानी सेवा-दल की छः स्वयंसेविकाओं ने मेसर्स ब्रिण्डले एण्ड को० और मेसर्स स्पिनर एण्ड को० के गोदामों पर पिकेटिङ्ग की, जहाँ पर विदेशी कपड़ा बन्द है। मालूम हुआ कि और सब गोदामों पर भी, जिनमें विदेशी कपड़ा बन्द है, इसी प्रकार पिकेटिङ्ग की जायगी। यद्यपि देशसेविका सङ्घ और हिन्दुस्तानी सेवा-दल ग़ैरक़ानूनी घोषित किए जा चुके हैं, तो भी इन संस्थाओं की महिला स्वयंसेविकाएँ बराबर विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिङ्ग कर रही हैं। कॉङ्ग्रेस बुलेटिन भी नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है।

* * *

(पहले पृष्ठ का शेषांश)

भगाया। सारा मैदान "राष्ट्रीय झण्डा ऊँचा रहे" "यूनियन जेक नीचे गिरे" की ध्वनि से गूँज रहा था। पुलिस ने ३५ कॉङ्ग्रेस के स्वयंसेवक और गिरफ़्तार किए। १४ अन्य औरतें गिरफ़्तार हुईं, जिन्हें मोटर में बैठा कर सारजेण्ट लोग जङ्गल में ले गए और वहाँ छोड़ दिया। इत्तिफ़ाक़ से एक सज्जन वहाँ मोटर पर पहुँच गए और उन्हें क़रीब के स्टेशन पर ले जाकर बम्बई का टिकट कटा दिया।

* * *
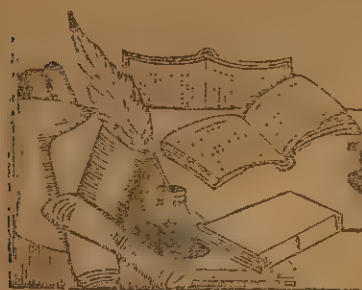
—बनारस का २४ अक्टूबर का समाचार है कि प्रेस ऑर्डिनेन्स की अवधि समाप्त हो जाने पर २६ अक्टूबर से दैनिक 'आज' फिर प्रकाशित होने लगेगा।

—यू० पी० के प्रायः हर एक ज़िले में सुप्रसिद्ध ज़मींदारों की ज़िला कमिटियाँ सत्याग्रह आन्दोलन का विरोध करने और उसके विरुद्ध आन्दोलन करने के लिए स्थापित हो रही हैं।

—दिल्ली का समाचार है कि पण्डित मुकुन्द राम, जो चेलपुरी में एक जैन मन्दिर के पुजारी हैं और उनका लड़का चन्द्र और भतीजा बुद्ध जो दूसरे मन्दिरों में पुजारी थे, विदेशी कपड़े की दुकान खोलने के कारण मन्दिरों से निकाल दिए गए। पुलिस की सहायता से कपड़े की गाँठें कटरा अशर्फ़ी ले गए थे जिस पर पिकेटिङ्ग करने के कारण दो वालण्टियर गिरफ़्तार हुए। मुकुन्द-राम ४० वर्ष से पुजारी का काम करते थे।

—नई दिल्ली में रेलवे लाइन के पास किसी आदमी का अधकटा शरीर पड़ा पाया गया है। आधे शरीर का मांस गिद्ध और सियार आदि खा गए। इस बात का पता अभी तक नहीं चला कि यह दुर्घटना अचानक हुई थी या उसने आत्म-हत्या की थी।

—सर शहाबुद्दीन तीसरी बार पञ्जाब प्रान्तीय कौन्सिल के प्रेज़िडेण्ट नियत किए गए हैं। उनका यह चुनाव सर्व-सम्मति से हुआ है और इसके लिए समस्त सदस्यों ने उनको बधाई दी। श्री० वंशी मेहतर ने भी उनका समर्थन किया। उसने अपने भाषण में यह भी कहा कि जैसा बहुत से लोग उसके बारे में कहते हैं, वह केवल मिट्टी का पुतला नहीं है, वरन् उन्हीं की तरह एक आदमी है। इस पर सरकारी और ग़ैर सरकारी सदस्यों ने ख़ूब हर्ष-ध्वनि की।

—२३ ता० को पेशावर के अन्दर शहर मुहल्ले में आग लगने से पाँच मकान, जिनका बीमा हो चुका था, जल गए और कितने ही अन्य मकानों को भी बहुत कुछ हानि पहुँची। तङ्ग गलियों के कारण फ़ायर-ब्रिगेड को आग बुझाने में बड़ी कठिनाई पड़ी। क़रीब ५० हज़ार का नुक़सान हुआ समझा जाता है।

—क्वेटा के पीपिल्स बैङ्क में ४१ हज़ार रुपए की चोरी के सन्देह में बैङ्क का मैनेजर और तमाम अन्य कर्मचारी गिरफ़्तार कर लिए गए थे। कहा जाता है ख़ज़ाञ्ची के यहाँ से रुपए बरामद हुए हैं।

—२२ अक्टूबर को दिवाली के दिन क्वेटा (बलोचिस्तान) में डेयरी मार्केट में आग लग जाने से क़रीब ५० हज़ार की हानि हुई।

—मद्रास का समाचार है कि विल्लुपुरम जङ्क्शन स्टेशन के प्लेट फ़ॉर्म से जब नं० २ बोट मेल मद्रास के लिए रवाना हो रही थी तब मुनुस्वामी गौदन नामक एक पोर्टर गाड़ी के साथ दौड़ते समय प्लेट-फ़ॉर्म और रेल की पटरी के बीच फिसल कर गिर पड़ा और रेल के नीचे दब कर उसी समय मर गया।

—बन्दुरूमल्ले (मद्रास) स्टेशन के पास जब कि एक ३० वर्षीय मदिरा वृचिया नामक व्यक्ति पैसेञ्जर गाड़ी आते समय रेलवे लाइन पार कर रहा था, तब एञ्जिन की ठोकर लग जाने से वह उसी समय मर गया।

—मद्रास का समाचार है कि सैदापेट की एक ३९ वर्षीय पूना अम्मल नामक स्त्री एक ज़मींदार की मोटर के नीचे दब कर मर गई। कहा जाता है कि जब मोटर रास्ते पर जा रही थी, स्त्री के रास्ता पार करते समय अचानक मोटर सामने आ गई और मोटर से दब गई। ज़मींदार तुरन्त उसे जनरल अस्पताल में ले गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई।

—मद्रास का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि डॉक्टर एनी बिसेण्ट यूरोप से बम्बई होकर मद्रास वापस आ गई हैं।

—मद्रास कौन्सिल में जस्टिस पार्टी के नेता दीवान बहादुर मनुस्वामी नायडू ने नवीन मन्त्रि-मण्डल का सङ्गठन किया है।

—शान्ति-निकेतन में एक सन्देश आया है, जिससे मालूम हुआ है कि अमेरिका से कविवर रवीन्द्रनाथ टागोर के डॉक्टर, टी० इम्ब्रेस ने 'मॉडर्न रिव्यू' के सम्पादक बाबू रामानन्द चटर्जी के पास एक केबिल भेजा है जिसमें उन्होंने लिखा है कि "यद्यपि कवि को हृदय की बीमारी के कारण पूरे आराम की आवश्यकता है, तथापि चिन्ता का कोई कारण नहीं है।"

—कलकत्ते में तल्ला की एक जूट-मिल में आग लग जाने के कारण १२ हज़ार का नुक़सान हुआ।

—कलकत्ते में मिसेज़ बेकर नाम की एक ऐंग्लो इण्डियन स्त्री और हरिकृष्ण नाम का एक चपरासी दो हज़ार रुपए का चोरी का माल लेने और उसे बेचने के अभियोग में पकड़े गए हैं। उन पर चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट की अदालत में मुक़दमा चल रहा है।

—दार्जिलिङ्ग का २३ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बङ्गाल के गवर्नर इन्फ़्लूएन्ज़ा से पीड़ित हैं।

—बर्मा की ऑल बर्मीज़ एसोसिएशन ने ब्रिटिश और भारतीय गवर्नमेण्ट के अधिकारियों को तार द्वारा सूचित किया है कि बर्मा भारतवर्ष से अलहदा होना नहीं चाहता। इस सम्बन्ध में बर्मा की लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सदस्यों ने जो अलग होने का प्रस्ताव पास किया उसका कोई महत्व नहीं, क्योंकि वे सदस्य जनता के सच्चे प्रतिनिधि नहीं हैं।

—सम्बलपुर के बारपाली नामक गाँव में सात वर्ष की आयु के एक बालक का बलिदान कर दिया गया। इस सम्बन्ध में जादो सुनारी नाम की एक स्त्री पकड़ी गई है, जो किसी जादूगर की चेली है। उसके घर से ताड़ के पत्तों पर लिखी एक किताब भी मिली है जिसमें पशुओं के बलिदान का विधान है। इस सम्बन्ध में और भी कितने ही व्यक्ति पकड़े गए हैं।

—कराची का समाचार है कि श्री० आसपी इञ्जिनियर जिन्होंने अकेले लन्दन से कराची उड़ कर आग़ा ख़ाँ का पुरस्कार प्राप्त किया था, का हवाई जहाज़ १९ ता० को भुज कच्छ स्टेट में १ से १६ मील की दूरी पर एञ्जिन बिगड़ जाने से टकरा गया। एक पहाड़ी के पास उतरते समय उसकी मशीन का एक पङ्खा टूट गया और चश्मा टूट जाने से उनकी नाक पर एक ज़ख़्म हो गया। गाँव के आदमियों ने उन्हें रेल से पूना आराम से भेज दिया। जहाज़ कराची भेजा गया है।

—भारतीय श्रमजीवियों की जाँच करने वाला रॉयल कमीशन आजकल बर्मा में भ्रमण कर रहा है। २३ अक्टूबर को उसने नामटू की कोयले की खानों का निरीक्षण किया और खानों के कॉरपोरेशन के जेनरल मि० होगन टेलर की गवाही ली। वहाँ से कमीशन माण्डले जाने वाला था।

—नई दिल्ली का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि सम्राट ने फ़ील्ड-मार्शल सर विलियम रिडेल बर्डवुड बर्ड के स्थान में, उनका पद ख़ाली होने पर, ए० डी० सी० जनरल, जनरल सर फ़िलिप चाल-हाउस को गवर्नर-जनरल की 'एक्ज़ीक्यूटिव कौन्सिल' का सदस्य नियुक्त किया गया है।

—तञ्जोर का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बरसात के कारण वहाँ सब ओर की रेलवे लाइनें और रास्ते बिगड़ गए हैं। छः दिन की बरसात के बाद पानी बन्द हुआ है। तञ्जोर स्टेशन पर १००० ग़रीब यात्री रुके पड़े हैं, जिनका पालन शहर के दानी और धार्मिक पुरुष कर रहे हैं।

—मद्रास का २६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि साउथ-इण्डियन रेलवे की पोडानूर-डिण्डीगाल लाइन पर पोलाची और कोविलिपालायम स्टेशनों के बीच में कल शाम को एक एञ्जिन और ४ गाड़ियाँ पटरी से उतर जाने के कारण एक फ़ायरमैन और एक स्त्री की, जो पास ही में जानवर चरा रही थी, मृत्यु हो गई। इस दुर्घटना के कारण का अभी तक पता नहीं लगा।

—पटना का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि 'पटना पब्लिशिङ्ग एण्ड एजेन्सी कम्पनी लिमिटेड' के डायरेक्टरों ने जनवरी से 'गार्जियन' नामक एक अङ्गरेज़ी पत्र निकालने का निश्चय किया है।

—लाहौर का २० ता० का समाचार है कि एक स्थानीय कॉलेज की मेनेजिङ्ग कमिटी के निर्णय के कारण वहाँ के प्रिन्सिपल और दो प्रोफ़ेसरों ने इस्तीफ़े दे दिए। कहा जाता है कि प्रिन्सिपल ने कॉलेज के एक विद्यार्थी पर, जो मेनेजिङ्ग कमिटी के एक सदस्य का सम्बन्धी था, दुर्व्यवहार के कारण जुर्माना किया था, परन्तु मेनेजिङ्ग कमिटी ने अपनी एक बैठक में उसका जुर्माना वापिस कर देने का निर्णय किया। इस पर प्रिन्सिपल और दो प्रोफ़ेसरों ने इस्तीफ़े दे दिए हैं। विद्यार्थियों ने कमिटी के इस निर्णय का घोर विरोध किया है।

—शान्ति-निकेतन का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि रोमाँ रोलाँ ने कविवर टागौर के जन्म-दिवस उत्सव के उपलक्ष में 'माडर्न रिव्यू' के सम्पादक श्री० रामानन्द चटर्जी को, जो इस समय शान्ति-निकेतन में हैं, एक सन्देश भेजा है, जिसके अन्त में उन्होंने लिखा है कि—"मैं आप से कह नहीं सकता कि मैं और मेरी बहिन आपके देश की वीरतापूर्ण घटनाओं को कितनी सहानुभूति के साथ देख रहे हैं।"

—मुज़फ़्फ़रपुर का २६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि अलवर राज्य के राज-गुरु श्री० स्वामी परमहंस हंसस्वरूप जी महाराज का देहान्त हो गया। स्वामी जी का घर मुज़फ़्फ़रपुर में था। अलवर का डॉक्टर उनकी चिकित्सा करता था और वहाँ के अर्थ-सचिव उनकी मृत्यु के समय वहाँ उपस्थित थे। उनकी लाश अलवर में उस समय तक सुरक्षित रक्खी जायगी, जब तक अलवर महाराज पेरिस से लौट कर न आ जायँगे।

—दिल्ली का समाचार है कि पुलिस ने सवेरे 'महाराष्ट्र सङ्घ' के प्रधान दफ़्तर पर धावा किया और उसकी तलाशी ली। तलाशी झाँसी के विश्वनाथ की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में ली गई है।

* * *

'स्वतन्त्रता हमारा दरवाज़ा खटखटा रही है'

बम्बई की 'डिक्टेटर' कुमारी सोमजी की गिरफ़्तारी

बम्बई का २३ अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ की 'युद्ध-समिति' की प्रेज़िडेण्ट कुमारी सोफ़िया सोमजी को बृहस्पतिवार के सवेरे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० ओस्कर ब्राऊन ने ६ माह की सादी क़ैद की सज़ा सुना दी। उनके ऊपर दो अभियोग लगाए गए थे। एक तो यह कि वे ग़ैरक़ानूनी सभा की सदस्या हैं और दूसरा यह कि वे उनके कार्यों के प्रचार और सभाओं में सहायता करती हैं। दोनों अभियोगों में उन्हें अलग-अलग ६-६ माह की सज़ा दी गई थी, परन्तु दोनों की सज़ा साथ ही साथ चलेगी। जेल जाते समय जब जनता ने सन्देश का अनुरोध किया तब आपने कहा कि—"मैं क्या सन्देश दूँ? महात्मा जी का सन्देश आप सब के सामने है। जनता ने उसे शिरोधार्य कर हज़ारों की आहुति दी है।। गवर्नमेण्ट का अत्याचार बढ़ रहा है और हम अपने स्वतन्त्रता के युद्ध को और अधिक बढ़ा कर ही उसका उत्तर दे सकते हैं। इन थोड़े से ही महीनों में हमने आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कर ली है और स्वतन्त्रता हमारा दरवाज़ा खटखटा रही है। हमें केवल अधिक साहस और बल के साथ संग्राम को तीव्र करने की देर है, जिससे स्वतन्त्रता हमें जल्दी से जल्दी अपनी छाती से लगा ले। हमारी बहिनों ने भाइयों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर आन्दोलन में अपनी जो आहुतियाँ दी हैं वह दृश्य केवल देवताओं के देखने का है। मैं अपनी मुसलमान बहिनों से प्रार्थना करती हूँ कि वे जो अभी तक इस संग्राम में पीछे रही हैं, अब आगे क़दम बढ़ावें।"

जिस समय कुमारी सोमजी का मुक़दमा अदालत में चल रहा था उस समय बहुत सी मुसलमान स्त्रियाँ वहाँ उपस्थित थीं। उन्होंने कुमारी सोमजी के गले में फूलों की मालाएँ पहिना कर उनका स्वागत किया। कुमारी सोफ़िया सोमजी की आयु इस समय १९ वर्ष से अधिक नहीं है। वे कॉलेज की विद्यार्थिनी थीं और वहाँ के सुप्रसिद्ध सॉलिसिटर सोमजी की सुपुत्री हैं। कॉङ्ग्रेस की डिक्टेटर होने के साथ ही वे वहाँ की नेशनल गर्ल्स ब्रिगेड की प्रेज़िडेण्ट भी थीं। वे अपने स्थान पर बम्बई कॉरपोरेशन की सदस्य और वहाँ की सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री श्रीमती अवन्तिका बाई गोखले को बम्बई प्रान्तीय 'युद्ध-समिति' की प्रेज़िडेण्ट नियुक्त कर गई थीं। २७ अक्टूबर की शाम को वे भी कॉरपोरेशन हाल के बाहर गिरफ़्तार कर ली गईं।

कुमारी सोमजी के साथ 'युद्ध-समिति' के वाइस प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत सैयद नूर अली और 'कॉङ्ग्रेस-बुलेटीन' के सम्पादक श्रीयुत कासुम अली मुहम्मद अली भी गिरफ़्तार किए गए थे। उन्हें क्रमशः १० माह और ७½ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

कलकत्ते का विदेशी व्यापार नष्ट हो चला

कपड़ा, शराब और तम्बाकू के आयात में भारी कमी

कलकत्ते में सितम्बर मास में विदेशों से जो माल आया है, उसमें पिछले महीने की अपेक्षा क़रीब एक करोड़ से अधिक की कमी हो गई है। अगस्त में ४ करोड़ ५९ लाख रुपए का माल आया था, परन्तु सितम्बर में केवल ३ करोड़ ३९ लाख का आया।

परन्तु भारत के निर्यात व्यापार में पिछले मास से अच्छी उन्नति हुई है। चुङ्गी के कलेक्टर ने एक विज्ञप्ति निकाली है जिससे पता चलता है, कि निर्यात ७ करोड़ १ लाख से बढ़ कर ८ करोड़ ४४ लाख हो गया है।

अङ्कों से पता लगता है कि आयात में सबसे अधिक कमी कपड़े में हुई है। पिछले वर्ष ७ करोड़ गज़ कपड़ा आया था, परन्तु इस वर्ष उतने ही समय में केवल २ करोड़ १० लाख गज़ कपड़ा आया। रुपयों के हिसाब से पिछले साल यहाँ १ करोड़ ७१ लाख का कपड़ा आया, परन्तु इस वर्ष केवल ४२ लाख का। इङ्गलैण्ड और जापान से इस वर्ष क्रमशः १ करोड़ ५० लाख और ६० लाख गज़ कपड़ा आया। उन्हीं देशों से पिछले साल क्रमशः ५ करोड़ और १ करोड़ ८० लाख गज़ कपड़ा आया था।

पिछले साल ५१ लाख की ३२ हज़ार टन सफ़ेद विदेशी शक्कर आई थी, परन्तु इस साल घट कर ६१ हज़ार टन रह गई, जिसका मूल्य ३५ लाख रुपया होता है। इसी प्रकार लोहे और स्टील का आयात भी ४२ लाख से घट कर २१ लाख रुपया रह गया है। विदेशी शराब पिछले वर्ष ८ लाख ५८ हज़ार रुपए की आई थी, परन्तु इस वर्ष केवल ४ लाख ३७ हज़ार की आई। तम्बाकू के आयात में कुछ कम घटी नहीं हुई। पिछले साल तम्बाकू का आयात ४ लाख ७४ हज़ार रुपए का था, परन्तु इस वर्ष केवल १ लाख १८ हज़ार का रह गया है।

पेलेस्टाइन में अङ्गरेज़ी माल का बॉयकॉट

पेरिस का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि फ़्रान्स की ज़िआनिस्ट कमेटी के वाइस प्रेज़िडेण्ट हिल्लेल राटोपोस्की ने, एक मुलाक़ात में कहा है कि ब्रिटेन ने पेलेस्टाइन सम्बन्धी अपनी नीति का जो ऐलान किया है उससे वहाँ के लोगों में बहुत असन्तोष फैल गया है और वहाँ के लोग महात्मा गाँधी के शिष्यों के ढङ्ग से ब्रिटिश बहिष्कार प्रारम्भ करेंगे। एम० राटोपोस्की ने ब्रिटेन की बाल्फ़ोर घोषणा की इस अवज्ञा की तुलना जर्मनी की बेल्जियम सम्बन्धी अवज्ञा से की है। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि पेलेस्टाइन में ज्यू लोगों का प्रवेश रोका जायगा, तो वे फ़्रान्सीसी झण्डे के नीचे सीरिया में एक 'होम' की स्थापना करेंगे।

फ़्रान्स चीफ़ रब्बी, बहुत से ज्यू बैङ्करों और दूसरे लोगों ने इसका घोर विरोध किया है और विरोध-सभाएँ हो रही हैं।

भगतसिंह कहाँ हैं ?

शेख़ूपुरा का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि एक व्यक्ति रावलपिण्डी से आया है, जिसका कहना है कि सरदार भगतसिंह रावलपिण्डी लाए गए हैं। कहा जाता है कि जिस समय रात्रि को ११ बजे सरदार भगतसिंह स्टेशन पर पहुँचे थे उस समय स्टेशन के भारतीय अधिकारी एवं कार्यकर्ता हटा दिए गए थे।

कॉन्स्टेबिल पर बम

राजशाही का २२वीं अक्टूबर का समाचार है कि कल रात्रि को बोलिया पुलिस थाने के सामने एक कॉन्स्टेबिल पर बम फेंकने के अपराध में एक युवक गिरफ़्तार कर लिया गया है।

थाने के सामने मनुष्यों की भीड़ लग गई और उसने युवक को छोड़ने के लिए कहा। इसके बाद ख़तरे की घण्टी बजाई गई और झगड़ा हो गया। इसमें एक आदमी को चोट आई। एक कॉन्स्टेबिल के साथ भी दुर्व्यवहार हुआ। वह युवक ज़मानत पर छोड़ दिया गया है।

प्रोफ़ेसर का अनशन

तिलक-विद्यालय के प्रोफ़ेसर बी० जी० कोठारी २५ ता० को अनशन करके साइन्स कॉलेज के दरवाज़े पर बैठ गए। उनका कहना था कि लड़के पढ़ना छोड़ कर कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन में भाग लें। उनके इस कार्य का क्या परिणाम हुआ, यह अभी मालूम नहीं हो सका है।

दुनिया का सब से बड़ा तैराक शफ़ी

हैदराबाद निवासी शफ़ी, जो कि लन्दन में दुनिया में सब से ज़्यादा देर तैरने का प्रयत्न कर रहा था, अपने कार्य में सफल हो गया। वह ६९ घण्टों तक बराबर तैरता रहा। इसके पहिले माल्टा निवासी रिन्जो सब से ज़्यादा देर तैरा था। पर वह केवल ६८ घण्टे ११ मिनट तक पानी में रह सका था।

पोस्ट ऑफ़िस में बम

रङ्गून का समाचार है कि वहाँ के व्यापारिक क्षेत्र के पाज़ुनडौङ्ग पोस्ट ऑफ़िस में २२ ता० को सवेरे १० बजे एक बम फट गया। बम फटने से पोस्ट ऑफ़िस का रामकरन मिश्री नामक चपरासी घायल हो गया और अस्पताल में पड़ा है। पोस्ट ऑफ़िस के एक बर्मी क्लर्क को भी, जो पास ही में खड़ा था, कुछ चोट आई है। बम का ज़हरीला धुँआ चारों ओर फैल गया था। बम एक पार्सल में बन्द था, जो बम्बई से भेजा गया था।

गवर्नमेण्ट हाउस में अज्ञात युवकों का प्रवेश

लाहौर का २४वीं अक्टूबर का समाचार है कि पिछली रात्रि को ११ बजे दो युवक अज्ञात रूप से गवर्नमेण्ट हाउस में घुसे। दिन-रात कड़ा पहरा रहने पर भी कोई उन्हें प्रवेश करते न देख सका। जब नौकरों ने उन्हें देखा तो वे रफ़ूचक्कर हो गए। उनका अभी तक कोई पता नहीं लगा। अभी यह नहीं कहा जा सकता कि वे वहाँ गुप्त रीति से किसी षड्यन्त्र के लिए ही घुसे थे।

पोस्ट ऑफ़िस में बम फटा

हैदराबाद (सिन्ध) का २३ वीं अक्टूबर का समाचार है कि स्थानीय पोस्ट ऑफ़िस में दो लिफ़ाफ़ों में दो बम मिलने के कारण वहाँ बड़ी सनसनी फैली है। उनमें से एक लिफ़ाफ़ा पोस्ट मास्टर के नाम था और दूसरा हैदराबाद के सिटी मैजिस्ट्रेट के नाम। जिस समय एक लिफ़ाफ़े पर मुहर लगाई जा रही थी, एक बम फट गया। सी० आई० डी० विभाग मामले की जाँच कर रहा है।

शहर और ज़िला

—दारागञ्ज की श्रीमती किशोरी देवी ने अदालत में कहा था कि वे अपने मुक़दमे में श्रीमती श्यामकुमारी नेहरू को बुलाना चाहती हैं। २५ अक्टूबर को श्रीमती श्यामकुमारी उनके मुक़दमे के लिए मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित हुईं। मैजिस्ट्रेट ने पूछा कि "अब आपका एडवोकेट उपस्थित है, क्या आप सफ़ाई के गवाह पेश करेंगी?" किशोरी देवी ने कहा कि मैं सफ़ाई नहीं देना चाहती, मैंने वे पर्चे, जिनके लिए यह मुक़दमा चलाया गया है, पुलिस कॉन्स्टेबिल को दिए थे और जब तक मैं ज़िन्दा हूँ, बराबर पुलिस वालों से इस काम के लिए कहती रहूँगी। २७ ता० को मैजिस्ट्रेट ने उनको २ महीने की सख़्त क़ैद और ३० रु० जुर्माने की सज़ा दी। जुर्माना न देने पर १ महीने की क़ैद और होगी।

कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी गिरफ़्तार

कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी पण्डित गोविन्द मालवीय २४ वीं अक्टूबर को २ बजे, जब कि वे पण्डित जवाहरलाल नेहरू का मुक़दमा सुन कर जेल से बाहर निकल रहे थे, जेल के फाटक पर ही गिरफ़्तार कर लिए गए। इन पर ८ अक्टूबर के भाषण पर, जो उन्होंने इलाहाबाद में एक आम सभा में दिया था, राजविद्रोह का अभियोग चलाया गया है।

जिस समय पण्डित जवाहरलाल का मुक़दमा हो रहा था, पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० मेज़र्स उनके नाम का वारण्ट लिए थे और मुक़दमे के बाद जैसे ही वे बाहर निकले, उन्होंने सैयद इकरामहुसेन को उन्हें गिरफ़्तार करने के लिए बाहर भेजा। वे पण्डित गोविन्द मालवीय के साथ बाहर आए और उन्हें वारण्ट दिखा कर फिर अन्दर ले गए। बाहर खड़ी हुई जनता को, जो पण्डित जवाहरलाल का मुक़दमा सुनने आई थी, जब उनकी गिरफ़्तारी का हाल मालूम हुआ, तब उसने राष्ट्रीय नारे लगाने प्रारम्भ किए।

जब उनके भाई पण्डित चन्द्रकान्त मालवीय उनसे मिलने अन्दर आए, तब प० गोविन्द मालवीय उन्हें कुछ काग़ज़ सुपुर्द करने एकान्त में ले गए। जैसे ही उन्होंने काग़ज़ देने के लिए पॉकेट से निकाले, सैयद इकरामहुसेन वहाँ आ पहुँचे और वे काग़ज़ उन्होंने ले लिए। पण्डित मालवीय का कहना है कि उनमें से कुछ काग़ज़ पुलिस के काम के निकल आवें, परन्तु बाक़ी उनके निजी काग़ज़ात थे। जब उन्होंने काग़ज़ वापस माँगे तो उत्तर मिला कि वे उनके मुक़दमे के बाद मिलेंगे।

—पं० गोविन्द मालवीय की गिरफ़्तारी के कारण २५ ता० को इलाहाबाद में हड़ताल मनाई गई। कितने ही दुकानदारों ने अपनी दुकान शाम के चार बजे के पश्चात खोल लीं। क्योंकि मालूम हुआ कि कॉङ्ग्रेस कमिटी ने ऐसा ही निश्चय किया है, जिससे दुकानदारों का हड़ताल से ज़्यादा नुक़सान न हो। शाम को मोती-पार्क में एक सभा हुई, जिसमें प० गोविन्द मालवीय को बधाई दी गई। मालूम हुआ है उनको नैनी जेल में उनके पिता पं० मदनमोहन मालवीय के साथ रक्खा गया है।

—२५ ता० को दोपहर के समय ईविङ्ग क्रिश्चियन कॉलेज के विद्यार्थियों की एक सभा हुई, जिसमें पं० गोविन्दकान्त मालवीय को उनकी गिरफ़्तारी पर बधाई दी गई और सरकार के इस कार्य की तीव्र निन्दा की गई।

—क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज की सरकारी सहायता बन्द हो जाने से उसकी सहायता के लिए चन्दा एकत्रित करने की बड़ी कोशिश की जा रही है। श्रमी कुमारी श्यामकुमारी नेहरू, जो उसकी मैनेजिङ्ग कमेटी की सदस्या हैं, इस कार्य के लिए सिन्ध तक गई थीं। हैदराबाद में दो-एक दिन के भीतर उनको १,१००) चन्दा प्राप्त हुआ। लोगों इस सम्बन्ध में बड़ा उत्साह प्रदर्शित कर रहे हैं।

—इलाहाबाद में दिवाली में जुआ के सम्बन्ध में केवल दो दिन में १२६ गिरफ़्तारियाँ हुईं। मालूम हुआ है कि गिरफ़्तार मनुष्यों में ४१ मुसलमान, ४३ भङ्गी, २ पासी, ९ कुरमी और २९ ब्राह्मण और ठाकुर हैं। वर्तमान राजनीतिक उथल-पुथल के, और विशेष कर पण्डित जवाहरलाल नेहरू की गिरफ़्तारी के कारण, इस साल दिवाली का कोई उत्सव उत्साहपूर्वक नहीं मनाया गया।

—संयुक्त प्रान्त की पोस्टल और रेलवे मेल सर्विस ऐसोसिएशन का नवम् वार्षिकोत्सव इलाहाबाद में २६ ता० को हो गया। उसके प्रेज़िडेण्ट श्री० सी० एस० रङ्गाअय्यर एम० एल० ए० थे और स्वागत-समिति के प्रधान थे प० निरञ्जनलाल भार्गव।

—हण्डिया (इलाहाबाद) के सब डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट ख़ान साहिब मुन्शी रहमान बख़्श क़ादिरी ने २८वीं अक्टूबर को ऑर्डिनेन्स नं० ६ के अनुसार गिरजानन्द ब्राह्मण को छै माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। अभियुक्त ने यह मञ्ज़ूर किया कि उसने सैदाबाद के बाज़ार में लोगों को ज़मींदारों को लगान न देने के लिए भड़काया है। इन्हीं मैजिस्ट्रेट ने सैदाबाद के उदितनारायण ब्राह्मण को भी ऑर्डिनेन्स ९ की दफ़ा ४ के अनुसार ६ माह की सख़्त क़ैद और २५ रुपया जुर्माने की सज़ा दी है। जुर्माना न देने पर डेढ़ माह की सज़ा उन्हें और भोगनी पड़ेगी।

—१६ अक्टूबर को आगरा-प्रान्त की ज़मींदार एसोसिएशन की मैनेजिङ्ग कमेटी की मीटिङ्ग मेस्टन मेन्शन, इलाहाबाद में हुई। अन्य कार्य होने के बाद एक प्रस्ताव पास किया गया कि—"हम लोग निश्चय करते हैं कि सरकार का ध्यान गिरे हुए नाज के भाव पर आकर्षित किया जावे। सरकार को चाहिए कि नाज बिकने के मार्ग ढूँढ़ निकाले, जिससे इस भयानक दशा का अन्त हो। सरकार को यह भी विचार करना अत्यावश्यक है कि विदेशी नाज ख़ास कर गेहूँ आना बन्द कर दिया जावे जिससे भाव और न गिरे।"

फिर कमेटी कॉङ्ग्रेस के आरम्भ किए हुए लगानबन्दी के आन्दोलन को रोकने का विचार बहुत देर तक करती रही। कुछ बहस के बाद यह तय हुआ कि लाला बिहारीलाल की अध्यक्षता में एक कमिटी बनाई जावे, जो कि हर जगह इस आन्दोलन के विरुद्ध काम करे और ज़मींदार व रिआया की भलाई के उपाय सोचे।

—इलाहाबाद जेल से २७ ता० को 'बी' क्लास के तीन क़ैदी, विशम्भरनाथ गुप्त, के० एफ़० गाँधी और अमरनाथ कपूर फ़ैज़ाबाद जेल भेज दिए गए हैं। वे सवेरे की गाड़ी से गए थे। प्रयाग स्टेशन पर उनका स्वागत किया गया।

गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के प्रतिनिधियों का अपमान

लन्दन का २६वीं अक्टूबर का समाचार है कि गोलमेज़ के प्रतिनिधियों का वहाँ पिछले शनिवार को ही स्वागत हुआ था, परन्तु केवल एक सप्ताह के बाद ही एक घटना के कारण उनका उत्साह बहुत-कुछ ठण्डा पड़ गया है। प्रतिनिधियों में से बहुत से हवाई फ़ौज के खेलों में निमन्त्रित किए गए थे। उसमें इम्पीरियल कॉन्फ़्रेन्स के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। भारतीयों ने उनका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और क्रायडन के लिए रवाना हो गए। परन्तु जब वे ऐरोड्रोम में पहुँचे तब उन्हें एक कोने में खड़ा कर दिया गया और उन्हें दो घण्टे तक वहाँ सर्द हवा में बिलकुल खुले मैदान में खड़ा रहना पड़ा। उनके बैठने के लिए भी कोई प्रबन्ध न था। इसके साथ ही इम्पीरियल कॉन्फ़्रेन्स के प्रतिनिधियों का, जो वहाँ निमन्त्रित किए गए थे और जिनके साथ प्रधान मन्त्री स्वयं उपस्थित थे; पदाधिकारियों की ओर से विशेष स्वागत किया गया था।

भारतीय प्रतिनिधि इस व्यावहारिक भेद-भाव के कारण बहुत असन्तुष्ट हो गए और विरोध-स्वरूप खेल प्रारम्भ होने के पहिले ही वहाँ से सब के सब वापस चले आए। 'फ़्री प्रेस' को पता चला है कि बाद में उसी दिन सर फ़िग्डलेटर स्टीवर्ट और भारतमन्त्री मि० वेजवुड बेन के प्राइवेट-सेक्रेटरी मि० मायटीथ प्रतिनिधियों से चेस्टरफ़ील्ड बाग़ में मिले और भारत-मन्त्री की ओर से उनसे माफ़ी माँगी।

—श्रीमती कमलेश्वरी सप्रू का, जो कि हिन्दी की सुलेखिका थीं और बहुत दिनों तक कानपुर से निकलने वाले "स्त्री-दर्पण" पत्र की सहकारी सम्पादिका रही थीं, गत १३ नवम्बर को फ़ीरोज़पुर में स्वर्गवास हो गया। 'चाँद' में भी उनके लेख छपते थे और पाठकों ने उनकी प्रशंसा की थी। हम इस शोक के अवसर पर उनके कुटुम्बियों के प्रति अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं।

—दीवान बहादुर सर टी० विजयराघवाचार्य अन्तर्राष्ट्रीय कृषि संस्था के वाइस प्रेज़िडेण्ट चुने गए हैं। समस्त ब्रिटिश साम्राज्य में ये ही एक व्यक्ति हैं, जो इस संस्था के पदाधिकारी हैं।

—अहमदाबाद का २४ वीं अक्टूबर का समाचार है कि महात्मा गाँधी के सेक्रेटरी श्रीयुत महादेव देसाई आज सवेरे साबरमती जेल से सज़ा की मियाद पूरी होने पर, मुक्त कर दिए गए। वे गाँधी जी के आश्रम में ठहरे हुए हैं। आप कॉङ्ग्रेस के नए सेक्रेटरी बनाए गए हैं।

—नागपुर का २८वीं अक्टूबर का समाचार है कि गोंदिया में ५-६ को छोड़ कर विदेशी कपड़े के सब व्यापारियों ने विदेशी कपड़े पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवा ली है।

—देहरादून नगर काङ्ग्रेस कमिटी और नवजवान भारत-सभा के प्रेज़िडेण्ट स्वामी विचारानन्द फ़ैज़ाबाद जेल से छोड़ दिए गए।

—पूना का २७ वीं अक्टूबर का समाचार है कि सर इब्राहीम रहमतुल्ला स्वास्थ्य ख़राब होने के कारण राउण्ड-टेबिल कॉन्फ़्रेन्स में न जायँगे।

—इलाहाबाद में २८वीं अक्टूबर को चौक में पिकेटिङ्ग के अभियोग में ६ बजे सवेरे अभिलोचन्द्र चक्रवर्ती की गिरफ़्तारी हुई है।

* * *

"गवर्नमेण्ट के विरुद्ध बग़ावत करना भारतीयों का धर्म हो गया है"

अदालत में राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की गर्जना

इलाहाबाद २४ अक्टूबर

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने जेल से मुक्त होने पर १२ अक्टूबर को पुरुषोत्तमदास पार्क में जो भाषण दिया था, उसके सम्बन्ध में उन पर तीन अभियोग लगाए गए थे। पहला दफ़ा १२४-ए में राजविद्रोह फैलाने का, दूसरा नमक-एक्ट के अनुसार ८००० मनुष्यों को भड़काने का और तीसरा 'अनलॉफ़ुल इन्स्टीगेशन ऑर्डिनेन्स' की दफ़ा ३ के अनुसार ८००० मनुष्यों को गवर्नमेण्ट का टैक्स अदा न करने के लिए बहकाने का।

मुक़दमा नैनी सेण्ट्रल जेल के अन्दर हुआ था। बहुत बड़ी भीड़ मुक़दमे के समय जेल के फाटक पर खड़ी थी और समय-समय पर राष्ट्रीय नारे लगाती जाती थी। मामले के समय पण्डित मोतीलाल, उनके कुटुम्बी, श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन, कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी श्री० गोविन्द मालवीय और शहर के बहुत से गण्य-मान्य सज्जन और देवियाँ उपस्थित थीं।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अदालत में जो अपना लिखित बयान पढ़ा था, उसका सार नीचे दिया जाता है :—

"मैं पाँचवीं बार गिरफ़्तार किया गया हूँ और ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के पदाधिकारियों ने मुझ पर बहुत से अभियोग लगाए हैं। और मुझे इसमें बिलकुल सन्देह नहीं है कि पाँचवीं बार भी मुझे सज़ा दी जायगी। मैंने अभी तक इस मुक़दमे में कोई भाग नहीं लिया और न भाग लेने की मेरी कोई इच्छा है, परन्तु मैं इस विज्ञप्ति द्वारा अपने विचार, केवल इसलिए प्रकट करना चाहता हूँ कि जिससे उन लोगों को, जो आज मेरा मुक़दमा कर रहे हैं, और मेरे उन देश-भाइयों को, जिन्होंने मुझे हद से अधिक सम्मान दिया है, यह मालूम हो जावे कि मेरे दिल में क्या है।

"मेरे ऊपर राजविद्रोह और ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट के प्रति घृणा फैलाने का अभियोग लगाया गया है। साढ़े आठ साल पहिले भी मेरे ऊपर यही अभियोग लगाया गया था और उस समय मैंने कहा था कि भारत की मौजूदा गवर्नमेण्ट के विरुद्ध बग़ावत फैलाना भारतियों का धर्म हो गया है।" लाहौर के पूर्ण-स्वतन्त्रता वाले प्रस्ताव का उल्लेख करते हुए और उसका गूढ़ अर्थ समझाने के बाद आपने कहा :—

"मेरे कुछ बहके हुए और पथ-भ्रष्ट भाइयों ने देश की इस आवश्यकता के समय उसके साथ विश्वासघात किया है और उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य से सन्धि करने की सूझी है। परन्तु देश ने अपने सर्व-श्रेष्ठ नेता के प्रथम प्रदर्शन और नेतृत्व में एक दूसरा ही पथ निर्दिष्ट कर लिया है और वह उस समय तक पथ-भ्रष्ट न होगा, जब तक सफलता प्राप्त न कर लेगा। स्वतन्त्रता की वेदी पर अभी तक हमारे देश भाइयों ने जो कष्ट भोगे हैं और जो आहुतियाँ चढ़ाई हैं; हमारी देवियों ने जो आश्चर्यजनक साहस दिखाया है; और बहादुर किसानों ने जिस अपरिमित शक्ति और पराक्रम का परिचय दिया है, सारे संसार ने उसे अपनी आँखों से देख लिया है।

"हमारे नेता ने सिद्धान्त के जिस अटल विश्वास के साथ उन्हें उत्तेजित किया है, उससे उन्होंने सहर्ष अपने धन-वैभव और सांसारिक सुख-भाग को लात मार दी है और भारत के वृहत-इतिहास में एक उज्ज्वल और रोमाञ्चकारी अध्याय लिख दिया है।

"अङ्गरेज़ लोगों से हमारा कोई झगड़ा नहीं है और न अङ्गरेज़ श्रमजीवियों से ही। हमारी तरह वे भी साम्राज्यवाद के शिकार रह चुके हैं और हम साम्राज्यवाद के विरुद्ध ही लड़ रहे हैं। उसके साथ हमारा समझौता नहीं हो सकता।

"मेरी श्रद्धा केवल भारतीय लोगों पर है, किसी विदेशी गवर्नमेण्ट पर नहीं। मैं केवल भारतीयों का सेवक हूँ, किसी दूसरे मालिक को नहीं मानता।

"मेरे पास भारतीय लोगों के विश्वास और प्रेम के लिए कृतज्ञता दिखाने को शब्द नहीं हैं। इस संग्राम में थोड़ा सा हाथ बटाने में मुझे जो सुख मिला है वह जीवन भर में मुझे कभी नहीं मिला। मेरी यही अभिलाषा है कि मेरे देश के स्त्री और पुरुष अविराम रूप से इस संग्राम को उस समय तक जारी रक्खेंगे, जब तक हम अपने स्वप्न के भारत को प्राप्त न कर लें। स्वाधीन-भारत चिरञ्जीव हो।"

इसके बाद उन पर चार्ज लगाया गया। उन्होंने कार्यवाही में हाथ बँटाने से साफ़ इन्कार कर दिया।

गवर्नमेण्ट की नीति का दिवाला

बारदौली के खेतों की कुर्क़ी में भयङ्कर घाटा

'बॉम्बे क्रॉनीकल' के एक सम्वाददाता ने अपने पत्र में लिखा है कि :—

बारदौली के किसान ४० लाख की फ़सल छोड़ कर चले गए। इस समय अफ़सर लोग चावल की फ़सल कुर्क करने में व्यस्त हैं और इस अवसर पर गवर्नमेण्ट के दृष्टिकोण से उसके लाभ-हानि का विचार आवश्यक प्रतीत होता है।

एक बीघा ज़मीन पर दो गाड़ी धान उत्पन्न होता है, जिसमें ४ हर या २८ मन चावल निकलता है। धान कटा हुआ खेतों में पड़ा है और सबसे पास के थाने में, जो वहाँ से लगभग दो मील दूर है, लाया जा रहा है। दो गाड़ियों में १०० बण्डल रहते हैं, जो एक बीघे की उपज है। एक मज़दूर यदि दिन भर में चार फेरियाँ भी करे तो वह चार बण्डलों से अधिक थाने तक नहीं पहुँचा सकता। इस प्रकार एक बीघे ज़मीन की उपज १०० बण्डलों को भेजने में २५ मज़दूरों की आवश्यकता पड़ती है और १४ आने रोज़ की मज़दूरी के हिसाब से केवल उसकी ढुलाई का ख़र्च २१ रु० १२ आना पड़ जाता है।

जब धान थाने में जाता है तो उसका भूसा निकालने की आवश्यकता पड़ती है। इस क्रिया में एक दिन में ५ मज़दूर लगते हैं, जिनकी मज़दूरी ४ रु० ६ आना हो जाती है। धान की रक्षा के लिए पुलिस के १० सिपाही पहरा देते हैं, जिनका प्रतिदिन का ख़र्च १२ रु० ८ आना पड़ जाता है। मि० जहाँगीर या मि० धालू देसाई (जो इस कार्य के लिए अफ़सर नियुक्त हुए हैं) का अलाउन्स ४ रु० प्रति दिन होता है। इसमें उच्च पदाधिकारियों का वेतन सम्मिलित नहीं है। इस प्रकार एक बीघे पर कुल ख़र्च निम्न रीति से होता है :—

	रु०	आ०	पा०
खेतों से ढुलाई	२१	१४	०
सफ़ाई	४	६	०
पहरेदारी	१२	८	०
अफ़सरों का अलाउन्स ...	४	०	०
कुल	४२	१२	०

गवर्नमेण्ट ने गाँवों में डुग्गी पिटवा कर प्रति हर का या ७ मन का रेट ४ रुपया नियत किया है। इस प्रकार एक बीघे भूमि की उपज के २८ मन चावल का मूल्य उसे १६ रुपया मिलेगा और वह भी उस समय जब सब चावल बिक जावे। जब तक उसकी पूरी बिक्री न हो जायगी तब तक उस पर पुलिस की रखवाली का ख़र्च बढ़ता जायगा। इस प्रकार १ बीघे पर गवर्नमेण्ट का कुल ख़र्च ४२ रु० १२ आ० होता है। उसका कुल मूल्य उसे १६ रुपया मिलता है, और २६ रु० १२ आ० की घटी उठानी पड़ती है !!

पता नहीं, गवर्नमेण्ट को उस चावल की बिक्री के लिए ग्राहकों की कब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

* * *

कराची बन्दर के आयात में कमी

कराची के चुङ्गी-कलक्टर ने सितम्बर १९३० की जो रिपोर्ट प्रकाशित की है, उससे उस माह के आयात की कमी का स्पष्ट रूप से पता लगता है। सितम्बर का कराची का कुल आयात १ करोड़ २२ लाख का हुआ है और पिछले साल के सितम्बर की अपेक्षा उसमें १ करोड़ १ लाख की घटी रही है। इसी प्रकार भारतीय माल का सितम्बर का निर्यात भी १ करोड़ ६ लाख का रहा है और सितम्बर सन् १९२९ की अपेक्षा उसमें २४ लाख की घटी रही है। १९३० में सितम्बर मास तक विभिन्न प्रकार के आयात में ३ करोड़ ४० लाख रुपया या २८ प्रतिशत की कमी रही और निर्यात में ३ करोड़ ३१ लाख या २० प्रतिशत की।

कपड़े के आयात में सब से भारी कमी फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड के ऊनी कपड़े और इटली के कम्बलों में रही। जावा से इस बीच में २००० टन शक्कर कम आई, जिसका मूल्य ७ लाख रुपया होता है। सितम्बर सन् १९३० तक शक्कर का आयात केवल ८६,२०० टन रहा है। यही आयात सन् १९२९ में सितम्बर तक १,०२,६०० टन था।

* * *

सत्याग्रह आन्दोलन में बम्बई की आहुति

२,७०० जेल गए और ३,००० ज़ख़्मी हुए

बम्बई के एक सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता ने वहाँ के छः माह के कार्यों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के, जो ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दी गई है, २ लाख सदस्य हो गए हैं। उसके ७,१०० वालण्टियर हैं, जिनको सैनिक शिक्षा का प्रबन्ध वह कमिटी करती है। हर एक जाति और धर्म के व्यापारियों ने कॉङ्ग्रेस को रुपया और माल से बहुत सहायता पहुँचाई है।

बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'राजनीतिक कमिश्नर' ने आन्दोलन के प्रारम्भ अर्थात् ६ अप्रैल से उसकी प्रगति का उल्लेख इस प्रकार किया है :—

अधिकांश में बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस के कार्यों के परिणाम-स्वरूप ब्रिटिश व्यापार को सत्याग्रह-संग्राम के प्रारम्भ से जुलाई तक १ करोड़ ११ लाख पौण्ड की हानि उठानी पड़ी। ५ करोड़ रु० का कपड़ा व्यापारियों के स्टॉक में बन्द पड़ा है। शहर की आबकारी की आमदनी में ३ लाख की कमी हो गई है; पिछले चुनाव के समय वोटरों में से केवल २॥ प्रतिशत वोटर वोट देने अन्दर जा पाए। २,७०० व्यक्तियों को जेल की सज़ा हुई और ३००० लाठियों के प्रहार से ज़ख़्मी हुए। केवल विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण १६०० व्यक्ति जेल गए।

बम्बई में आन्दोलन का विकास

वायसराय का नौवाँ ऑर्डिनेन्स, जिसका प्रधान उद्देश्य कॉङ्ग्रेस आन्दोलन की मौत का डङ्का बजाना था, बड़ी क्रूरता और निर्दयता से उपयोग में लाया जा रहा है। परन्तु क्या इससे बम्बई में कॉङ्ग्रेस दबाई जा सकती है? जिन लोगों ने पिछले छः महीनों में बम्बई की राजनीतिक उथल-पुथल का अध्ययन किया है वे इस प्रश्न का उत्तर स्वयं दे लेंगे। छः माह की इस अल्प अवधि में ही कॉङ्ग्रेस आन्दोलन की प्रगति भयङ्कर वेग से बढ़ी है और २० हज़ार आदमियों की एक छोटी सी संस्था दो लाख स्त्री-पुरुषों के एक विराट सङ्गठन में परिवर्तित हो गई है। गवर्नमेण्ट के ज़ोर-ज़ुल्म के हर एक प्रहार के साथ उसके सदस्यों की संख्या बढ़ती गई और जिस दिन वह ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई थी, उस दिन बम्बई शहर का षष्ठमांश जन-समूह अपनी छाया उस पर फैलाए हुए था।

यद्यपि अस्थायी रूप से वालण्टियरों का सङ्गठन असङ्गठित कर दिया गया है, और पुलिस ने कॉङ्ग्रेस-हाउस पर अपना आधिपत्य जमा लिया है, परन्तु उसकी विशाल इमारत की दीवारों पर उसकी अतुल शक्ति, अपूर्व प्रसिद्धि और विशाल कीर्ति के उत्थान की करुण और रोमाञ्चकारी कहानी लिखी हुई है।

जिस समय महात्मा गाँधी ने मार्च मास में डाण्डी की अपनी चिरस्मरणीय यात्रा की थी और वहाँ पहुँच कर सत्याग्रह आन्दोलन का श्रीगणेश किया था, उस समय बड़े से बड़े कॉङ्ग्रेसवादी को भी उसकी सफलता में सन्देह था, और उस आन्दोलन में भाग लेने की बम्बई से तो किसी को कोई आशा न थी। बम्बई वालों को स्वयं महात्मा गाँधी 'अत्यधिक भोग-विलासी' कहा करते थे। परन्तु उन्हें इस बात का स्वप्न में भी ख़याल न था कि उसी के गर्भ में आन्दोलन की आश्चर्यजनक सफलता छिपी हुई है।

बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी ने अपने कार्यों का श्रीगणेश ६ अप्रैल को नमक-क़ानून भङ्ग करके किया था। उसी दिन सन्ध्या को चौपाटी में एक विराट सभा में क़ानून भङ्ग किया गया और उस समय के विराट जन-समूह के उत्साह से यह प्रतीत हो गया था कि वे कॉङ्ग्रेस के साथ हैं।

गवर्नमेण्ट ने यह समझ कर, कि यह नवजात शिशु पोषण न मिलने से अपनी मौत मर जायगा, विरक्तता का रूप धारण कर लिया। वहाँ उस नवजात आन्दोलन ने जनता के उत्साह और उसकी सहानुभूति से पल्लवित होकर उग्ररूप धारण कर लिया और कॉङ्ग्रेस भीषण वेग से सत्याग्रह और सङ्गठित कार्यक्रम में संलग्न हो गई। इसके अनन्तर लाठियों, बन्दूकों और तोपों से सुसज्जित गवर्नमेण्ट की पुलिस और फ़ौज और कॉङ्ग्रेस की निहत्थी, अहिंसात्मक और सत्याग्रही फ़ौज में संग्राम प्रारम्भ हो गया।

वालण्टियरों का अपूर्व सङ्गठन

बम्बई में कॉङ्ग्रेस के कार्यक्रम की इस आश्चर्यजनक सफलता का कारण वहाँ के वालण्टियरों का अपूर्व सङ्गठन है। जिस समय कॉङ्ग्रेस ने अपना कार्य प्रारम्भ किया था, उस समय कॉङ्ग्रेस के वालण्टियरों की संख्या १०० से अधिक न थी और वह भी असङ्गठित थे। परन्तु कुछ ही महीनों में कॉङ्ग्रेस की इस फ़ौज में ७५०० वालण्टियर भर्ती हो गए। कॉङ्ग्रेस की यह सफलता, विशेषतः ऐसी परिस्थिति में, जब कि वालण्टियर को अधिक से अधिक उत्तेजना के समय भी अहिंसात्मक रहने और देश-सेवा के समय आहत हो जाने या मृत्यु तक हो जाने पर कॉङ्ग्रेस से उसके उपलक्ष में कुछ न लेने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी, कुछ कम न थी।

बम्बई के वालण्टियरों का सङ्गठन चार प्रकार का था :—

(१) कॉङ्ग्रेस सत्याग्रही वालण्टियर, जिनका प्रधान कार्य नमक की फ़ैक्टरियों पर धावा करना, पिकेटिङ्ग करना और अवसर आने पर लाठियों के प्रहार सहना था।

(२) हिन्दुस्तानी सेवा-दल, जो कॉङ्ग्रेस के सङ्गठित कार्यक्रम का प्रचार करता था और जिसके सदस्य शिक्षित श्रेणी के होते थे। इस दल की लड़कियों ने पिकेटिङ्ग में बहुत अधिक सहायता पहुँचाई।

(३) राष्ट्रीय सेना (National Militia) जिसमें केवल विद्यार्थी सम्मिलित थे।

(४) देश-सेविका-सङ्घ, जो स्त्रियों की जागृति का परिणाम था। इसमें सुशिक्षित युवती स्त्रियाँ भरती होती थीं। उनकी मुख्य पोशाक नारङ्गी रङ्ग की भगवा साड़ी थी। इस सङ्घ की लगन, अभूतपूर्व जागृति और त्याग का पता तो कौन्सिल के चुनाव के समय लगा था, जब एक के बाद दूसरा दल गिरफ़्तारी के लिए आगे आता जाता था और केवल एक दिन में ३८२ स्त्रियाँ गिरफ़्तार हो गई थीं। सङ्घ की प्रायः उतनी ही स्वयंसेविकाएँ अपनी आहुति के लिए और तैयार बैठी थीं।

बधाई

श्री० जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज' बी० ए०, काशी से लिखते हैं :—

'भविष्य' की पहिली संख्या नहीं मिल सकी, शेष मिल रही है। बहुत अच्छा निकल रहा है, बधाई! भगवान आपकी परीक्षा ले रहे हैं। आपका 'भविष्य' उज्ज्वल है।

जनता की सहानुभूति

कॉङ्ग्रेस के ७,१०० वालण्टियरों में से प्रतिदिन प्रायः १००० वालण्टियर कार्य करते थे और उनके भोजन और कपड़े का सारा बोझ कॉङ्ग्रेस पर था। परन्तु इस ख़र्च के लिए कॉङ्ग्रेस के ख़ज़ाञ्ची को शायद ही कभी कॉङ्ग्रेस की थैली में हाथ लगाने की आवश्यकता पड़ी हो। बहुत से कपड़े के व्यापारी वालण्टियरों की वर्दियाँ सदैव मुफ़्त देते रहने के लिए तैयार हो गए। ग़ल्ले के व्यापारियों ने कॉङ्ग्रेस से प्रतिदिन के आवश्यक भोजन के लिए अनाज स्वीकार करने की प्रार्थना की। इसी प्रकार दूध, घी, फल-फूल और तरकारियों की आवश्यकता भी पूरी होती गई। प्रतिदिन सवेरे नाइयों की एक पूरी फ़ौज 'स्वतन्त्रता के योद्धाओं' की सेवा का सौभाग्य प्राप्त करने कॉङ्ग्रेस-हाउस के सम्मुख उपस्थित रहती थी।

कॉङ्ग्रेस के पास कुल ६२,००० रुपया था, जिसमें हाथ नहीं लगाया गया। ख़र्च का औसत प्रायः ७०० रुपया रोज़ था, जो सामान और नक़दी के रूप में जनता और व्यापारियों से नित्य-प्रति प्राप्त होता जाता था। कॉङ्ग्रेस की सेवा में मोटरों और लॉरियों का एक झुण्ड रहता था।

लाठियों का प्रहार

नमक-क़ानून भङ्ग होने और ग़ैर-क़ानूनी नमक बनाने के साथ ही लाठियों के प्रहार प्रारम्भ हो गए। इनके सिवाय सभाओं, साधारण जुलूसों और शोलापुर-दिवस, गढ़वाल-दिवस और तिलक-जयन्ती आदि में भी प्रहार कम नहीं हुए। २१ जुलाई तक कॉङ्ग्रेस-अस्पताल में आए हुए आहतों की संख्या २,३३४ थी, जिसमें से ४८ प्रति सैकड़ा वालण्टियर और बाक़ी जनता के लोग थे। इन आहतों में ७८ स्त्रियाँ भी हैं। उनमें सब से छोटी उमर का एक १० वर्ष का लड़का है, जिसके सिर पर लाठी का प्रहार किया गया था, और सब से अधिक उमर का एक वृद्ध था। कुछ लोग घोड़े के नीचे दब कर भी आहत हुए थे।

३००० घायल

२१ जुलाई के पश्चात् बहुत से लाठी-प्रहार हुए, परन्तु उनमें सब से भयानक प्रहार कौन्सिल के चुनाव के समय टाउन हाल पर हुआ था। उसमें लगभग २५० घायल हुए थे और अब संख्या प्रायः ३,००० पर पहुँच गई होगी।

वडाला में नमक-डिपो पर धावा करते समय बहुत से घायल हुए। वहाँ पहले १०६ वालण्टियरों का एक दल भेजा गया था और उसके बाद जनता ने उस पर दो बार धावा किया। इन धावों के समय लगभग ६०० व्यक्ति गिरफ़्तार हुए थे, जिन्हें ३ से लेकर ६ माह तक की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई थी।

कॉङ्ग्रेस की शक्ति अभी तक दो कार्यों में विभाजित रही है—(१) गवर्नमेण्ट के ऑर्डरों का विरोध करना और सत्याग्रह करना और (२) विदेशी कपड़े के बहिष्कार, ब्रिटिश माल के बॉयकॉट और शराब बन्द करने का सङ्गठित कार्य करना।

* * *

भविष्य की नियमावली

१. 'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२. किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३. लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४. हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५. कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६. लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७. समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८. परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९. सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०. किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

३० अक्तूबर, सन् १९३०

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

[श्री० प्रेमचन्द जी, बी० ए०]

ईरान और यूनान में घोर संग्राम हो रहा था। ईरानी दिन-दिन बढ़ते जाते थे और यूनान के लिए सङ्कट का सामना था। देश के सारे व्यवसाय बन्द हो गए थे, हल की मुठिया पर हाथ रखने वाले किसान तलवार की मुठिया पकड़ने के लिए मजबूर हो गए थे, डण्डी तोलने वाले भाले तौलते थे। सारा देश आत्म-रक्षा के लिए तैयार हो गया था। फिर भी शत्रु के क़दम दिन-दिन आगे ही बढ़ते आते थे। जिस ईरान को यूनान कई बार कुचल चुका था, वही ईरान आज क्रोध के आवेग की भाँति सिर पर चढ़ा आता था। मर्द तो रणक्षेत्र में सिर कटा रहे थे और स्त्रियाँ दिन-दिन की निराशाजनक ख़बरें सुन कर सूखी जाती थीं। क्योंकर लाज की रक्षा होगी? प्राण का भय न था, सम्पत्ति का भय न था, भय था मर्यादा का। विजेता गर्व से मतवाले हो-होकर यूनानी ललनाओं की ओर घूरेंगे, उनके कोमल अङ्गों को स्पर्श करेंगे, उनको क़ैद कर ले जाएँगे! उस विपत्ति की कल्पना ही से इन लोगों के रोएँ खड़े हो जाते थे।

आख़िर जब हालत बहुत नाज़ुक हो गई तो कितने ही स्त्री-पुरुष मिल कर डेल्फ़ी के मन्दिर में गए और प्रश्न किया—देवी, हमारे ऊपर देवतों की यह वक्र दृष्टि क्यों है? हमसे ऐसा कौनसा अपराध हुआ है? क्या हमने नियमों का पालन नहीं किया, क़ुरबानियाँ नहीं कीं, व्रत नहीं रक्खे? फिर देवतों ने क्यों हमारे सिरों से अपनी रक्षा का हाथ ऊपर उठा लिया है?

पुजारिन ने कहा—देवतों की असीम कृपा भी देश को द्रोही के हाथ से नहीं बचा सकती। इस देश में अवश्य कोई न कोई द्रोही है। जब तक उसका वध न किया जायगा, देश के सिर से यह सङ्कट न टलेगा।

"देवी, वह द्रोही कौन है?"

"जिस घर से रात को गाने की ध्वनि आती हो, जिस घर से दिन को सुगन्ध की लपटें आती हों, जिस पुरुष की आँखों में मद की लाली झलकती हो, वही देश का द्रोही है।"

लोगों ने द्रोही का परिचय पाने के लिए और भी कितने ही प्रश्न किए, पर देवी ने कोई उत्तर न दिया।

२

यूनानियों ने द्रोही की तलाश करनी शुरू की। किसके घर में से रात को गाने की आवाज़ें आती हैं? सारे शहर में सन्ध्या होते स्यापा-सा छा जाता था। अगर कहीं आवाज़ें सुनाई देती थीं तो रोने की, हँसी और गाने की आवाज़ कहीं न सुनाई देती थी।

दिन को सुगन्ध की लपटें किस घर से आती हैं? लोग जिधर जाते थे उधर से दुर्गन्धि आती थी। गलियों में कूड़े के ढेर पड़े थे, किसे इतनी फ़ुरसत थी कि घर की सफ़ाई करता, घर में सुगन्ध जलाता; धोबियों का अभाव था, अधिकांश लड़ने चले गए थे, कपड़े तक न धुलते थे; इत्र-फुलेल कौन मलता।

किसकी आँखों में मद की लाली झलकती है? लाल आँखें दिखाई देती थीं, लेकिन यह मद की लाली न थी, यह आँसुओं की लाली थी। मदिरा की दूकानों पर ख़ाक उड़ रही थी। इस जीवन और मृत्यु के संग्राम में विलास की किसे सूझती। लोगों ने सारा शहर छान मारा, लेकिन एक भी आँख ऐसी नज़र न आई जो मद से लाल हो।

कई दिन गुज़र गए। शहर में पल-पल भर पर रण-क्षेत्र से भयानक ख़बरें आती थीं और लोगों के प्राण सूखे जाते थे।

आधी रात का समय था। शहर में अन्धकार छाया हुआ था, मानो श्मशान हो। किसी की सूरत न दिखाई देती थी। जिन नाट्यशालों में तिल रखने की जगह न मिलती थी वहाँ सियार बोल रहे थे, जिन बाज़ारों में मनचले जवान अस्त्र-शस्त्र सजाए ऐंठते फिरते थे वहाँ उल्लू बोल रहे थे, मन्दिरों में गाना होता था न बजाना। प्रासादों में भी अन्धकार छाया हुआ था।

एक बूढ़ा यूनानी, जिसका एकलौता लड़का लड़ाई के मैदान में था, घर से निकला और न-जाने किन विचारों की तरङ्ग में देवी के मन्दिर की ओर चला। रास्ते में कहीं प्रकाश न था, क़दम-क़दम पर ठोकरें खाता था, पर आगे बढ़ता चला जाता था। उसने निश्चय कर लिया था कि या तो आज देवी से विजय का वरदान लूँगा या उनके चरणों पर अपने को भेंट कर दूँगा।

३

सहसा वह चौंक पड़ा। देवी का मन्दिर आ गया था और उसके पीछे की ओर किसी घर से मधुर सङ्गीत की ध्वनि आ रही थी। उसको आश्चर्य हुआ। इस निर्जन स्थान में कौन इस वक़्त रङ्गरेलियाँ मना रहा है। उसके पैरों में पर से लग गए, उड़ कर मन्दिर के पिछवाड़े जा पहुँचा।

उसी घर से, जिसमें मन्दिर की पुजारिन रहती थी, गाने की आवाज़ें आती थीं। वृद्ध विस्मित होकर खिड़की के सामने खड़ा हो गया। चिराग़-तले अँधेरा! देवी के मन्दिर के पिछवाड़े यह अन्धेर?

बूढ़े ने द्वार से झाँका; एक सजे हुए कमरे में मोम-बत्तियाँ झाड़ों में जल रही थीं, साफ़-सुथरा फ़र्श बिछा हुआ था और एक आदमी मेज़ पर बैठा हुआ गा रहा था। मेज़ पर शराब की बोतल और प्यालियाँ रक्खी हुई थीं। दो ग़ुलाम मेज़ के सामने हाथ में भोजन के थाल लिए खड़े थे, जिनमें से मनोहर सुगन्ध की लपटें आ रही थीं।

बूढ़े यूनानी ने चिल्ला कर कहा—यही देश-द्रोही है, यही देश-द्रोही है!

मन्दिर की दीवारों ने दुहराया—द्रोही है!

बाग़ीचे की तरफ़ से आवाज़ आई—द्रोही है!

मन्दिर की पुजारिन ने घर में से सिर निकाल कर कहा—हाँ, द्रोही है।

यह देश-द्रोही उसी पुजारिन का बेटा पासोनियस था। देश में रक्षा के जो उपाय सोचे जाते, शत्रुओं का दमन करने के लिए जो निश्चय किए जाते, उनकी सूचना वह ईरानियों को दे दिया करता था। सेनाओं की प्रत्येक गति की ख़बर ईरानियों को मिल जाती थी और उन प्रयत्नों को विफल बनाने के लिए वे पहले से तैयार हो जाते थे। यही कारण था कि यूनानियों को जान लड़ा देने पर भी विजय न होती थी। इस देश-द्रोह के पुरस्कार में पासोनियस को मुहरों की थैलियाँ मिल जाती थीं। इसी कपट से कमाए हुए धन से वह भोग-विलास करता था। उस समय जब कि देश पर घोर सङ्कट पड़ा हुआ था, उसने अपने स्वदेश को अपनी वासनाओं के लिए बेच दिया था। अपने विलास के सिवा उसे और किसी बात की चिन्ता न थी, कोई मरे या जिये, देश रहे या जाय, उसकी बला से। केवल अपने कुटिल स्वार्थ के लिए देश की गरदन में ग़ुलामी की बेड़ियाँ डलवाने पर तैयार था। पुजारिन अपने बेटे के दुराचरण से अनभिज्ञ थी, वह अपनी अँधेरी कोठरी से बहुत कम निकलती, वहीं बैठी जप-तप किया करती थी। परलोक-चिन्तन में उसे इहलोक की ख़बर न थी, मनेन्द्रियों ने बाहर की चेतना को शून्य-सा कर दिया था। वह इस समय भी कोठरी के द्वार बन्द किए, देवी से अपने देश के कल्याण के लिए वन्दना कर रही थी कि सहसा उसके कानों में आवाज़ आई—यही द्रोही है, यही द्रोही है!

उसने तुरन्त द्वार खोल कर बाहर की ओर झाँका, पासोनियस के कमरे से प्रकाश की रेखाएँ निकल रही थीं, और उन्हीं रेखाओं पर सङ्गीत की लहरें नाच रही थीं। उसके पैर-तले से ज़मीन-सी निकल गई, कलेजा धक से हो गया। ईश्वर! क्या मेरा बेटा ही देश-द्रोही है?

आप ही आप, किसी अन्तःप्रेरणा से पराभूत होकर, वह चिल्ला उठी—हाँ, यही देश-द्रोही है!

४

यूनानी स्त्री-पुरुष झुण्ड के झुण्ड उमड़ पड़े और पासोनियस के द्वार पर खड़े होकर चिल्लाने लगे—यही देश-द्रोही है!

पासोनियस के कमरे की रोशनी ठण्डी हो गई थी; सङ्गीत भी बन्द था, लेकिन द्वार पर प्रतिक्षण नगर-वासियों का समूह बढ़ता जाता था और रह-रह कर सहस्रों कण्ठों से ध्वनि निकलती थी—यही देश-द्रोही है!

लोगों ने मशालें जलाईं, और अपने लाठी-डण्डे सँभाल कर मकान में घुस पड़े। कोई कहता था—सिर उतार लो। कोई कहता था—देवी के चरणों पर बलिदान कर दो। कुछ लोग कोठे से नीचे गिरा देने पर आग्रह कर रहे थे।

पासोनियस समझ गया कि अब मुसीबत की घड़ी सिर पर आ गई। तुरन्त ज़ीने से उतर कर नीचे की ओर भागा और कहीं शरण की आशा न देख कर देवी के मन्दिर में जा घुसा।

अब क्या किया जाय। देवी के शरण जाने वाले को अभयदान मिल जाता था। परम्परा से यही प्रथा थी। मन्दिर में किसी की हत्या करना महापाप था।

लेकिन देश-द्रोही को इतने सस्ते कौन छोड़ता। भाँति-भाँति के प्रस्ताव होने लगे—

"सुअर के हाथ पकड़ कर बाहर खींच लो।"

"ऐसे देश-द्रोही का वध करने के लिए देवी हमें क्षमा कर देंगी!"

"देवी आप उसे क्यों नहीं निगल जातीं?"

"पत्थरों से मारो, पत्थरों से, आप निकल कर भागेगा।"

"निकलता क्यों नहीं रे कायर! वहाँ क्या मुँह में कालिख लगा कर बैठा हुआ है?"

रात-भर यही शोर मचा रहा और पासोनियस न निकला! आख़िर यह निश्चय हुआ कि मन्दिर की छत खोद कर फेंक दी जाय और पासोनियस दोपहर की तेज़ धूप और रात की कड़ाके की सर्दी में आप ही आप अकड़ जाय। बस फिर क्या था। आन की आन में लोगों ने मन्दिर की छत और कलस ढा दिए।

अभागा पासोनियस दिन-भर तेज़ धूप में खड़ा

रहा। उसे ज़ोर की प्यास लगी, लेकिन पानी कहाँ? भूख लगी पर खाना कहाँ? सारी ज़मीन तवे की भाँति जलने लगी, लेकिन छाँह कहाँ? इतना कष्ट उसे जीवन-भर में न हुआ था। मछली की भाँति तड़पता था और चिल्ला-चिल्ला कर लोगों को पुकारता था, मगर वहाँ कोई उसकी पुकार सुनने वाला न था। बार-बार क़समें खाता था कि अब फिर मुझसे ऐसा अपराध न होगा, लेकिन कोई उसके निकट न आता था। बार-बार चाहता था कि दीवार से सिर टकरा कर प्राण दे दे, लेकिन यह आशा रोक देती थी कि शायद लोगों को मुझ पर दया आ जाय। वह पागलों की तरह ज़ोर-ज़ोर से कहने लगा—मुझे मार डालो, मार डालो, एक क्षण में प्राण ले लो, इस भाँति जला-जला कर न मारो, ओ हत्यारो, तुमको ज़रा भी दया नहीं।

दिन बीता और रात—भयङ्कर रात—आई। ऊपर तारागण चमक रहे थे, मानो उसकी विपत्ति पर हँस रहे हों। ज्यों-ज्यों रात भीगती थी, देवी विकराल रूप धारण करती जाती थीं। कभी वह उसकी ओर मुँह खोल कर लपकतीं, कभी उसे जलती हुई आँखों से देखतीं। उधर क्षण-क्षण सरदी बढ़ती जाती थी, पासोनियस के हाथ-पाँव अकड़ने लगे, कलेजा काँपने लगा, घुटनों में सिर रख कर बैठ गया और अपनी क़िस्मत को रोने लगा; कुरते को खींच कर कभी पैरों को छिपाता, कभी हाथों को, यहाँ तक कि इस खींचा-तानी में कुरता भी फट गया। आधी रात जाते-जाते बर्फ़ गिरने लगी। दोपहर को उसने सोचा था कि गरमी ही सब से अधिक कष्ट-दायक है, अब इस ठण्ड के सामने उसे गरमी की तकलीफ़ भूल गई।

आख़िर शरीर में गरमी लाने के लिए उसे एक हिकमत सूझी। वह मन्दिर में इधर-उधर दौड़ने लगा, लेकिन विलासी जीव था, ज़रा देर में हाँप कर गिर पड़ा।

५

प्रातःकाल लोगों ने किवाड़ खोले तो पासोनियस को भूमि पर पड़े देखा। मालूम होता था, उसका शरीर अकड़ गया है। बहुत चीख़ने-चिल्लाने पर उसने आँखें खोलीं, पर जगह से हिल न सका। कितनी दयनीय दशा थी, किन्तु किसी को उस पर दया न आई। यूनान में देश-द्रोह सब से बड़ा अपराध था और द्रोही के लिए कहीं क्षमा न थी, कहीं दया न थी।

एक—अभी मरा नहीं है!

दूसरा—द्रोहियों को मौत नहीं आती!

तीसरा—पड़ा रहने दो, मर जायगा!

चौथा—मक्र किए हुए है!

पाँचवाँ—अपने किए की सज़ा पा चुका, अब छोड़ देना चाहिए!

सहसा पासोनियस उठ बैठा और उद्दण्ड भाव से बोला—कौन कहता है कि इसे छोड़ देना चाहिए! नहीं, मुझे मत छोड़ना, वरना पछताओगे; मैं स्वार्थी हूँ, विषय-भोगी हूँ, मुझ पर भूल कर भी विश्वास न करना। आह! मेरे कारण तुम लोगों को क्या-क्या झेलना पड़ा, इसे सोच कर मेरा जी चाहता है कि अपनी इन्द्रियों को जला कर भस्म कर दूँ। मैं अगर सौ बार जन्म लेकर इस पाप का प्रायश्चित्त करूँ तो भी मेरा उद्धार न होगा। तुम भूल कर भी मेरा विश्वास न करो। मुझे स्वयं अपने ऊपर विश्वास नहीं। विलास के प्रेमी सत्य का पालन नहीं कर सकते। मैं अब भी आपकी कुछ सेवा कर सकता हूँ। मुझे ऐसे-ऐसे गुप्त रहस्य मालूम हैं जिन्हें जान कर आप ईरानियों का संहार कर सकते हैं। लेकिन मुझे अपने ऊपर विश्वास नहीं है और आप से भी यही कहता हूँ कि मुझ पर विश्वास न कीजिए। आज रात को देवी की मैंने सच्चे दिल से वन्दना की है और उन्होंने ने मुझे ऐसे यन्त्र बताए हैं जिनसे हम शत्रुओं को परास्त कर सकते हैं, ईरानियों के बढ़ते हुए दल को आज भी आन की आन में उड़ा सकते हैं। लेकिन मुझे अपने ऊपर विश्वास नहीं है, मैं यहाँ से बाहर निकल कर इन बातों को भूल जाऊँगा, बहुत संशय है कि फिर ईरानियों की गुप्त सहायता करने लगूँ, इसलिए मुझ पर विश्वास न कीजिए।

एक यूनानी—देखो देखो, क्या कहता है?

दूसरा—सच्चा आदमी मालूम होता है!

तीसरा—अपने अपराधों को आप स्वीकार कर रहा है।

ग़रीब किसान

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

रो के कल कह रहा था एक किसान,
सख़्त आफ़त में फँस गई मेरी जान।
तीसरे-चौथे रोज़ पटवारी,
ज़ोर से खींचता है दोनों कान।
और है गाँव में जो चौकीदार,
वह सताता है हर घड़ी हर आन।
आ के तहसीलदार दौरे पर,
करते हैं बेतरह मुझे हलकान।
गाँव के चौधरी का क्या कहना,
छेड़ता है अलग वह अपनी तान।
है ज़मींदार भी लिए डण्डा,
नज़र के साथ माँगता है लगान।
क्या कहूँ हाल में घेराआत का,
न चना घर में है न खेत में धान।
जब मनीआर्डर कोई आया,
डाकिया सर पे धर गया एहसान।
अलग़रज़ सब के सब सताते हैं,
यह ख़ता है कि हूँ ग़रीब किसान।

* * *

चौथा—इसे क्षमा कर देना चाहिए, और वह सब बातें पूछ लेनी चाहिए।

पाँचवाँ—देखो, यह नहीं कहता कि मुझे छोड़ दो, हमको बार-बार याद दिलाता जाता है कि मुझ पर विश्वास न करो!

छठा—रात-भर के कष्ट ने होश ठण्डे कर दिए, अब आँखें खुली हैं!

पासोनियस—क्या तुम लोग मुझे छोड़ने की बात-चीत कर रहे हो। मैं फिर कहता हूँ, मैं विश्वास के योग्य नहीं हूँ। मैं द्रोही हूँ। मुझे ईरानियों के बहुत से भेद मालूम हैं, एक बार उनकी सेना में पहुँच जाऊँ तो उनका मित्र बन कर सर्वनाश कर दूँ, पर मुझे अपने ऊपर विश्वास नहीं है।

एक यूनानी—धोखेबाज़ इतनी सच्ची बात नहीं कह सकता!

दूसरा—पहले स्वार्थान्ध हो गया था, पर अब आँखें खुली हैं!

तीसरा—देश-द्रोही से भी अपने मतलब की बातें मालूम कर लेने में कोई हानि नहीं है। अगर यह अपने वचन पूरे करे तो हमें इसे छोड़ देना चाहिए।

चौथा—देवी की प्रेरणा से इसकी यह कायापलट हुई है।

पाँचवाँ—पापियों में भी आत्मा का प्रकाश रहता है और कष्ट पाकर जाग्रत हो जाता है। यह समझना कि जिसने एक बार पाप किया वह फिर कभी पुण्य कर ही नहीं सकता, मानव-चरित्र के एक प्रधान तत्व का अपवाद करना है।

छठा—हम इसको यहाँ से गाते-बजाते ले चलेंगे। जन-समूह को चकमा देना कितना आसान है। जन-सत्तावाद का सब से निर्बल अङ्ग यही है। जनता तो नेक और बद की तमीज़ नहीं रखती, उस पर धूर्तों, रँगे सियारों का जादू आसानी से चल जाता है। अभी एक दिन पहले जिस पासोनियस की गरदन पर तलवार चलाई जा रही थी, उसी को जलूस के साथ मन्दिर से निकालने की तैयारियाँ होने लगीं, क्योंकि वह धूर्त था और जानता था कि जनता की कील क्योंकर घुमाई जा सकती है।

एक स्त्री—गाने-बजाने वालों को बुलाओ, पासोनियस शरीफ़ है।

दूसरी—हाँ-हाँ, पहले चल कर उससे क्षमा माँगो, हमने उसके साथ ज़रूरत से ज़्यादा सख़्ती की।

पासोनियस—आप लोगों ने पूछा होता तो मैं कल ही सारी बातें आपको बता देता। तब आपको मालूम होता कि मुझे मार डालना उचित है या जीता रखना।

कई स्त्री-पुरुष—हाय! हाय! हमसे बड़ी भूल हुई। हमारे सच्चे पासोनियस!

सहसा एक वृद्ध स्त्री किसी तरफ़ से दौड़ती हुई आई और मन्दिर के सब से ऊँचे ज़ीने पर खड़ी होकर बोली—तुम लोगों को क्या हो गया है? यूनान के बेटे, आज इतने ज्ञानशून्य हो गए हैं कि झूठे और सच्चे में विवेक नहीं कर सकते! तुम पासोनियस पर विश्वास करते हो! जिस पासोनियस ने सैकड़ों स्त्रियों और बालकों को अनाथ कर दिया, सैकड़ों घरों में कोई दिया जलाने वाला न छोड़ा, हमारे देवतों का, हमारे पुरुषों का, घोर अपमान किया, उसकी दो-चार चिकनी-चुपड़ी बातों पर तुम इतने फूल उठे। याद रक्खो, अबकी पासोनियस बाहर निकला तो फिर तुम्हारी कुशल नहीं, यूनान पर ईरान का राज्य होगा और यूनानी ललनाएँ ईरानियों की कुदृष्टि का शिकार बनेंगी। देवी की आज्ञा है कि पासोनियस फिर बाहर न निकलने पाए। अगर तुम्हें अपना देश प्यारा है, अपने पुरुखों का नाम प्यारा है, अपनी माताओं और बहिनों की आबरू प्यारी है तो मन्दिर के द्वार को चुन दो, जिसमें इस देश-द्रोही को फिर बाहर निकलने और तुम लोगों को बहकाने का मौक़ा न मिले। यह देखो, पहला पत्थर मैं अपने हाथों से रखती हूँ।

लोगों ने विस्मित होकर देखा—यह मन्दिर की पुजारिन और पासोनियस की माता थी।

दम के दम में पत्थरों के ढेर लग गए और मन्दिर का द्वार चुन दिया गया। पासोनियस भीतर दाँत पीसता रह गया।

वीर माता, तुम्हें धन्य है! ऐसी ही माताओं से देश का मुख उज्ज्वल होता है, जो देश-हित के सामने मातृ-स्नेह की धूल-बराबर भी परवा नहीं करतीं। उनके पुत्र देश के लिए होते हैं, देश पुत्र के लिए नहीं होता।

* * *

जेकोस्लोवेकिया का प्रजातन्त्र

[श्री० देवकीनन्दन जी 'विभव']

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति ने जिस तरह यूरोप के मानचित्र को बिलकुल बदल दिया था, इसी तरह यूरोपीय महायुद्ध के बाद संसार के राजनीतिक प्रवाह में भारी क्रान्ति हुई है। शताब्दियों से यूरोप की बड़ी-बड़ी शक्तियाँ छोटे-छोटे राष्ट्रों को हड़पती जाती थीं, यूरोपीय महायुद्ध ने उनके पञ्जे को ढीला कर दिया और अनेक छोटे-छोटे राष्ट्रों ने दासत्व का जुआ फेंक कर स्वतन्त्र प्रजातन्त्र की स्थापना कर ली। जेकोस्लोवेकिया का प्रजातन्त्र भी उसी महायुद्ध का परिणाम है। महायुद्ध ने मध्य-यूरोप को छिन्न-भिन्न कर दिया था, ऑस्ट्रिया-हङ्गरी और जर्मनी की बड़ी शक्तियाँ टूट रही थीं, उस समय जेक (जो ऑस्ट्रिया के अधीन थे), स्लोवक (जो हङ्गरी के अधीन थे) और रूथेनिया और जर्मनी की अन्य कुछ छोटी जातियों ने सङ्गठित होकर एक दृढ़ प्रजातन्त्र स्थापित कर लिया। यही जेकोस्लोवेकिया का प्रजातन्त्र है।

जेक अथवा बोहीमिया राष्ट्र सन् १५२६ तक स्वतन्त्र था। सन् १५२६ में उसे और हङ्गरी को, जहाँ उस समय एक स्वतन्त्र पृथक सरकार थी, प्रतिभाशाली सोलीमन ने मोहक्स के युद्ध में पराजित किया और ऑस्ट्रिया के साथ एक साम्राज्य में जोड़ दिया। उस समय से ऑस्ट्रिया का सम्राट ही बोहीमिया पर भी शासन करता आता था। परन्तु जेक जाति में एक स्वतन्त्र राष्ट्र होने की आकांक्षा विलीन नहीं हुई थी और तब से ही उनमें एक स्वाधीन शासन-प्रणाली प्राप्त करने की आकांक्षा चली आती थी। महायुद्ध के आगमन से उनके भावों को आकस्मिक सहायता मिली। इस समय उन्हें एक ऐसा नेता मिल गया, जिसकी योग्यता, दृढ़ता और स्वार्थ-त्याग के कारण उनका स्वप्न वास्तविक कार्यरूप में परिणत हो गया। यह मनुष्य डॉक्टर मसारीक था।

थोमस गेरीग मसारीक का जन्म सन् १८५० में मोरेविया के एक नगर होडोनीन में हुआ था। उसके पिता एक सरकारी रियासत में रेञ्जर थे। बालक मसारीक वीना में एक चाबी बनाने वाले के यहाँ नौकर हो गए, परन्तु फिर एक पादरी सज्जन की कृपा से उन्हें वीना और लिपज़ीग के विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल गया। वे जब विद्यार्थी ही थे तभी उनकी प्रतिभा चमकने लगी थी और फिर तो वे वीना में तत्वज्ञान के ख्याता हो गए। उनकी पुस्तक "A study on suicide as a pathological symptom of the condition of contemporary Europe" बहुत प्रसिद्ध हुई। इस पुस्तक में आपने बतलाया था कि यूरोप के वर्तमान अधःपतन का कारण धार्मिक भावना की कमी है।

सन् १८८२ से प्रेग की जेक यूनिवर्सिटी में डॉक्टर मसारीक तत्वज्ञान के प्रोफ़ेसर हो गए और धीरे-धीरे उनका प्रभाव बढ़ने लगा, फिर तो वे शीघ्र ही राष्ट्रीय नेता हो गए। प्रेग में डॉक्टर मसारीक न केवल जेक जाति में, वरन् ऑस्ट्रिया की दक्षिणीय स्लेव जाति में भी पूजनीय समझे जाते थे। इसमें सन्देह नहीं कि जेक और स्लेव जातियों को एक तन्त्र में जोड़ देने का बहुत कुछ श्रेय मसारीक को प्राप्त है। एक जर्मन ने मसारीक के सम्बन्ध में लिखा था—"The lonely slovak at Prague who, a mixture of Tolstoy and Whiteman, seems to some a heretic, to others an ascetic, and to all an enthusiast."

ज्योंही महायुद्ध का बिगुल बजा, त्योंही डॉक्टर मसारीक ने समझ लिया कि जेकोस्लोवेकिया के स्वतन्त्र करने का समय आ गया। वह दिसम्बर सन् १९१४ ई० को प्रेग से चल पड़ा और इटली पहुँच गया। इस समय उसने अपनी जाति जेक और दक्षिणीय स्लेवों को एक आधार पर खड़ा करने के लिए महान प्रयत्न किया और अन्त में वह सफल हुआ।

मसारीक इटली होता हुआ पेरिस पहुँच गया, जहाँ उसे मित्र-शक्तियों से बहुत सहायता मिलने की आशा थी। यहाँ उसने डॉक्टर बीन्स और कर्नल स्टीफ़ेनिक के सहयोग से जेकोस्लोवेक राष्ट्रीय शासन सभा स्थापित की। इस समय इस राष्ट्रीय प्रजातन्त्र के अधिकार में कोई प्रदेश नहीं था और न अधिक साधन थे। परन्तु स्वाधीनता के पुजारी कुछ व्यक्ति प्रजातन्त्र को वास्तविक शक्ति बनाने की उधेड़-बुन में लगे हुए थे और शीघ्र ही उन्होंने यह दिखला दिया कि वे मित्र-शक्तियों से न केवल सहायता चाहते ही हैं, बल्कि उनका यह दूर देश स्थित प्रजातन्त्र उनकी बहुत बड़ी सहायता कर भी सकता है। इस प्रजातन्त्र के आन्दोलन का प्रभाव यह हुआ कि जेकोस्लोवेक सैनिक मोर्चों पर से ऑस्ट्रिया की सेना को छोड़-छोड़ कर मित्र-शक्तियों की सेना में आकर मिल जाते थे और कुछ युद्ध में क़ैद कर लिए जाते थे। इस तरह सन् १९१९ के अन्त तक मित्र-शक्तियों के मोर्चों में ७५,००० से १,००,००० जेकोस्लोवेक इकट्ठे हो गए। यह प्रजातन्त्र की प्रेरणा से मित्र-शक्तियों की ओर से लड़ने को तैयार हो गए और इन्हें फ़्रान्स, इटली या रूस की यूनीफ़ॉर्म पहिना कर शत्रुओं से लड़ने के लिए आगे भेज दिया गया। इन राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित सैनिकों का त्याग अत्यन्त महान था, क्योंकि वे अपने प्रजातन्त्र के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा रहे थे, लड़ाई में मारे जाने पर तो वे अपनी जान से हाथ खोते ही, परन्तु यदि शत्रु उन्हें पकड़ ले जाते तो ऑस्ट्रिया की सेना से भाग जाने या विद्रोह के अपराध में गोलों से उड़ा दिए जाते थे।

मसारीक ने प्रेग छोड़ने से पहले ही अपना ताना-बाना बुनना प्रारम्भ कर दिया था। मार्न के युद्ध के बाद, जब कि जर्मनी की अजेयता का मन्त्र दाबा जाता रहा, तब लन्दन के एक प्रसिद्ध सम्पादक से एक मोटा दाढ़ी वाला आदमी मिला। इस भेंट का उद्देश्य यह था कि रूसी सैनिक जेक सैनिकों पर, जो वास्तव में रूसी सेनाओं में मिलने को आगे बढ़ते हैं, गोलियाँ न चलावें। यह मनुष्य, जिसका नाम वोस्का था, एक जेक था, पर अमरीका में रहने के कारण वह अमरीकन नागरिक बन गया था। यह प्रेग से अमरीका को लौट रहा था। डॉक्टर मसारीक ने उक्त सन्देश मित्र-शक्तियों के पास उसके द्वारा भेजना उचित समझा। उस लन्दन पत्र के सम्पादक मि० स्टीड ने मसारीक से यह समझौता करा दिया कि जब जेकोस्लोवेक अपना राष्ट्रीय गीत गावें तब रूसी सैनिक इसे आत्म-समर्पण का चिह्न समझ कर चुपचाप अपने मोर्चों में आ जाने दें।

मित्र-शक्तियाँ डॉक्टर मसारीक से पूर्ण सहानुभूति रखती थीं; इसलिए नहीं, क्योंकि वे जेकोस्लोवेक स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे थे, बल्कि इसलिए कि वे उनके एक बड़े दुश्मन ऑस्ट्रिया-हङ्गरी की कमर तोड़ने में बहुत बड़े सहायक थे। डॉक्टर मसारीक का हेड क्वॉटर सन् १९१५ के प्रारम्भ से लेकर रूसी क्रान्ति के प्रारम्भ होने तक विशेषतः लन्दन में ही रहा। यहाँ भी एक जेक राष्ट्रीय परिषद का सङ्गठन किया गया, परन्तु आन्दोलन का केन्द्र अब भी पेरिस ही में था। ऑस्ट्रिया की सब ही मुख्य-मुख्य राजनैतिक और सेना सम्बन्धी सूचनाएँ डॉक्टर मसारीक को मिलती रहती थीं, जिन्हें वे मित्र-शक्तियों को भेजते रहते थे। इस कार्य में डॉक्टर बीन्स मसारीक का दाहिना हाथ था और पेरिस का सारा सङ्गठन उसी के अधीन था। वह राष्ट्रीय फ़ण्ड का अधिष्ठाता था। इस फ़ण्ड में अमरीका के आठ लाख जेक आर्थिक सहायता देते थे। इस तरह जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र के पास कोई शासन के साधन और शक्ति न होने पर उसको आर्थिक तङ्गी न सहनी पड़ी।

डॉक्टर मसारीक का कार्य जेकोस्लोवेक सैनिकों को ही उभाड़ कर समाप्त न हुआ। उसने अक्टूबर, १९१६ से 'न्यू यूरोप' नामक एक साप्ताहिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया, जिसके द्वारा वह मध्य और दक्षिण-पूर्वीय यूरोप के प्रश्नों पर अपने पक्ष में सार्वजनिक मत का सङ्गठन करने में बहुत कुछ सफल हुआ।

पेरिस की जेकोस्लोवेक राष्ट्रीय परिषद प्रजातन्त्र की पूर्व-रूप थी। डॉक्टर मसारीक उसका अध्यक्ष था, और डॉक्टर बीन्स वैदेशिक मन्त्री था। फ़्रान्सीसी सरकार के वैदेशिक मन्त्री एम० पिचन ने फ़्रान्सीसी सरकार की तरफ़ से उक्त परिषद को जेकोस्लोवेक सरकार का प्रथम आधार (the first basis of the future Czechoslovak Government) मान लिया था। डॉक्टर बीन्स ने लन्दन में सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट मि० बाल्फ़ोर और उनके सहायक लॉर्ड रॉबर्ट सिसिल से भी फ़्रान्स की तरह उक्त समझौता करने के लिए बातचीत की, परन्तु अङ्गरेज़ सरकार इसे स्वीकार कर लेने के लिए तैयार नहीं थी, क्योंकि डॉक्टर मसारीक की परिषद को जेकोस्लोवेक सरकार का 'प्रथम-आधार' मान लेने पर जेकों से शासन-प्रणाली चुनने का अधिकार छिन जाता था। परन्तु 'प्रथम-आधार' की जगह 'ट्रस्टी' शब्द के परिवर्तन करने पर अङ्गरेज़ सरकार ने इसे मान लिया।

सन् १९१८ में मसारीक न्यूयार्क पहुँचा और वहाँ उसका सारा समय एक जगह से दूसरी जगह की यात्रा में ही व्यय होता था। इस समय संसार की राजनीति का प्रवाह बहुत कुछ संयुक्त राज्य अमरीका पर ही अवलम्बित था और अमरीका की सरकार को प्रभावान्वित करने का एक मार्ग अमरीका के सार्वजनिक भक्त को, जो सदा आदर्शवादी रहा है, उत्तेजित कर देना था। जेक जाति के अमरीकन नागरिकों ने फ़र्वरी, १९१८ में 'बोहीमियन नेशनल ऐलायन्स' नाम की संस्था का सङ्गठन किया और उसका केन्द्र वाशिङ्गटन में रक्खा। जुलाई, १९१८ में जब मसारीक अमरीका में आया तो संयुक्त-राज्य के जेकों का घोषणा-पत्र प्रेज़िडेन्ट विल्सन के पास भेजा गया, जिससे एक जेकोस्लोविक राज्य की स्थापना के ध्येय का समर्थन किया गया।

जिस समय रूस में क्रान्ति हुई और उसने जर्मन की गवर्नमेण्ट से प्रथम सन्धि कर ली, उस समय रूसी झण्डे के नीचे पचास हज़ार जेकोस्लोवेक सैनिक मध्य-शक्तियों से लड़ रहे थे। अब मसारीक ने रूस से फ़ैसला किया कि जेकोस्लोवेक सैनिक साइबेरिया में होते हुए व्लाडीवोस्टक पहुँच जायँ, जहाँ से वे फ़्रान्स में लड़ने के लिए जहाज़ों द्वारा भेजे जाने वाले थे, परन्तु २७ जुलाई, १९१८ को जेकोस्लोवेक सेना के कमाण्डर-इन-चीफ़ की स्थिति से मसारीक ने उक्त सेना को आज्ञा दी कि यदि मित्र-शक्तियाँ वर्सेलीज़ में फिर 'रूस-जर्मन-मोर्चा' स्थापित करना तय करें, तो वह सर्बिया में ही रुक जाय।

जून, १९१८ को मसारीक प्रेज़िडेण्ट विल्सन से मिले। फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड की गवर्नमेण्ट से उन्हें जो सफलता मिली थी उसका एक मुख्य कारण यह था कि वे उन्हें यह समझाने में समर्थ हुए थे कि जेकोस्लोवेक स्वतन्त्र-राज्य की स्थापना से ही जर्मनी की आकांक्षाओं को तोड़ा जा सकता है और उसकी 'जर्मनी बग़दाद रेलवे' स्थापित करने की योजना में सफलतापूर्वक बाधा पहुँचाई जा सकती है। यही बात डॉक्टर मसारीक ने प्रेज़िडेण्ट विल्सन के सामने भी रक्खी और इस बात का ज़ोरों से प्रतिपादन किया कि स्वतन्त्र जेकोस्लोवेक राज्य का स्थापना हो जाने से यूरोप में बहुत कुछ स्थायी शान्ति स्थापित हो जायगी। प्रेज़िडेण्ट विल्सन पर डॉक्टर मसारीक के तर्क से भी अधिक प्रभाव, आठ लाख जेक अमरीकन नागरिकों का, जो कि जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र के लिए भारी आलोचना कर रहे थे, पड़ा। ३ सितम्बर को सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट मि० लानसिङ्ग ने संयुक्त-राज्य अमरीका की ओर से जेकोस्लोवेक राष्ट्र को एक स्वतन्त्र राष्ट्र स्वीकार कर लिया और जेकोस्लोवेक राष्ट्रीय परिषद का (—de-facto belligerent Government clothed with proper authority to direct the military affairs of the Czechoslovaks) जेकोस्लोवेक सेना को सञ्चालित करने का अधिकार मान लिया।

अब इटली और जापान की सरकारें भी जेकोस्लोवेक की प्रजातन्त्र को स्वीकार कर चुकी थीं। जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र की इस समय वही स्थिति थी जो बेलजियम और सर्बिया की सरकारों की थी। जर्मनी ने इनके पूरे देश पर अधिकार कर लिया था और इनके अधिकार में अपने देश की भूमि का एक टुकड़ा भी बाक़ी नहीं रहा था और उक्त सरकारों को अपने हेड-क्वार्टर अस्थायी रूप से विदेशों में स्थापित करने पड़े थे। परन्तु मित्र-शक्तियाँ जर्मनी द्वारा जीते हुए उनके देश पर उनके वास्तविक अधिकार को स्वीकार करती थीं।

इसके बाद अमरीका में कुछ मास मसारीक प्रकाशन कार्य में अत्यन्त व्यस्त रहा। जेकोस्लोवेक-राष्ट्रीय परिषद का केन्द्र अब भी पेरिस में था, पर उसकी एक मज़बूत शाखा वाशिङ्गटन में भी क़ायम हो गई थी। १८ अक्टूबर को पेरिस से अस्थायी सरकार ने एक घोषणा प्रकाशित की कि जेकोस्लोवेक एक स्वतन्त्र और आज़ाद राष्ट्र है और उस पर ऑस्ट्रिया के हेप्सबर्ग वंश का शासन करने का कोई अधिकार नहीं है।

इसके बाद जिनेवा में संसार के जेकोस्लोवेक जाति के प्रतिनिधियों की एक सभा हुई और वहाँ मसारीक प्रजातन्त्र के सभापति चुने गए। १२ नवम्बर को जिस दिन महायुद्ध बन्द हुआ उसी दिन मसारीक के चुनाव की सूचना अमरीका के सरकारी विभाग द्वारा प्रकाशित की गई और डॉक्टर मसारीक को तुरन्त ही प्रेग जाने का आदेश किया गया।

२१ नवम्बर, १९१८ को डॉक्टर मसारीक यूरोप के लिए रवाना हो गए और ३० नवम्बर को लन्दन पहुँचने पर उनका वहाँ सरकारी स्वागत हुआ। ७ दिसम्बर को वे पेरिस पहुँचे और २० तारीख़ को उनकी ट्रेन प्रेग जा पहुँची। जनता ने अपने प्रिय नेता का पूरे उत्साह से स्वागत किया। वर्सेलीज़ की सन्धि द्वारा जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र का अधिकार मध्य-यूरोप में जेकोस्लोवेक राज्य पर, जिसमें हङ्गरी का एक बहुत बड़ा टुकड़ा सम्मिलित था, मान लिया गया। मध्य एशिया में जेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र की स्थिति बहुत मज़बूत हो गई और वह शक्तिशाली राष्ट्रों में से एक समझा जाता है, जैसा कि एक अङ्गरेज़ लेखक की निम्न पंक्तियों से मालूम होगा:—

'Czechoslovakia became a pivotal state, powerful enough to make itself respected, solid enough to be a pillar of stability in what might otherwise have been a fluid part of Europe.'*

* * *

* The History of European Diplomacy pp. 117

भारत की "वीर और लड़ाकू" जातियाँ

(गताङ्क से आगे)

यहाँ पर यह भी बतलाना अनुपयुक्त न होगा कि भारतीय सेना के १,५८,८०० सैनिकों में से किस प्रान्त से कितने सैनिक भर्ती किए गए हैं। नीचे हम उनकी सूची साइमन रिपोर्ट के आधार पर देते हैं:—

पञ्जाब ८६,०००; नैपाल १९,०००; यू० पी० (गढ़वाल और कुमाऊँ मिला कर) १६,५००; राजपूताना १०,०००; बम्बई १०,०००; काश्मीर ६,५००; सीमाप्रान्त ५,६००; मद्रास ४,०००; ब्रह्मा ३,०००; हैदराबाद ७००; बलूचिस्तान ३००; मध्य भारत २००; मैसूर १००, मध्य प्रान्त १००; विभिन्न १९००।

भारतीय सेना में सिपाहियों की भर्ती ख़ास प्रान्तों की कुछ चुनी हुई किसान जातियों में से ही नहीं होती, वरन उसके जातीय सङ्गठन में इतनी जटिलताएं हैं जितनी हिन्दू जाति में भी न मिलेंगी। भारतीय सेना में जाति-विशेष को गुज़र नहीं है। उसके बैटेलियनों, कम्पनियों, यहाँ तक कि प्लेटूनों में भी भर्ती, जाति के अनुपात के अनुसार बड़ी सफ़ाई से की जाती है; और कोई आदमी, चाहे उसकी फ़ौजी योग्यता कितनी ही अधिक क्यों न हो, जब तक उनकी इच्छित जाति का न होगा, फ़ौज में भर्ती नहीं हो सकता। जातियों के ये टुकड़े बैटेलियनों में इस सिलसिले से बाँटे गए हैं कि वे लोग अपनी जाति की रूढ़ियों का आसानी से पालन कर सकें और अपने पूर्वजों की और अपनी जाति की पुरानी राज-भक्ति को अच्छी तरह निभा सकें। उदाहरण के लिए भारतीय सीमाप्रान्त की पैदल सेना का १ला ११२ वाँ रिसाला लीजिए; इसमें एक मुसलमान सैनिकों की कम्पनी, एक डोंगरों की, एक (खट्टक और ओरकजाई) पठानों की और एक सिक्खों की कम्पनी है। घुड़सवार सैनिकों के पहले रिसाले के ½ स्क्वाड्रन में (एक स्क्वाड्रन में १२० से लेकर २०० तक सवार होते हैं) हिन्दुस्तानी मुसलमान, ½ स्क्वाड्रन में मुसलमान राजपूत (राँगड़), एक में यू० पी० और पूर्वीय पञ्जाब के राजपूत; और एक में जाट सैनिक सम्मिलित हैं। महाराजा पञ्चम जॉर्ज के सैपर्स और माइनर्स रिसाले में भी ½ सिक्ख, ½ पठान, पञ्जाबी और हिन्दुस्तानी मुसलमान और ½ गढ़वाली और राजपूत हिन्दू हैं। गोरखा पैदल सेना के २०, मरहठों के ५, सिक्खों के ३, डोंगरों के ४, गढ़वालियों के ७, कुमायुनियों का १ बैटेलियन; हज़ारा अफ़ग़ानों का १ कोर (Corp) और मद्रासी एम० और एम० के रिसाले के अतिरिक्त भारत में जितनी पैदल घुड़सवार और अन्य प्रकार की सेनाएँ हैं उन सब में इसी जाति-पाँति के भेद के अनुसार सैनिक भर्ती किए जाते हैं। एक जाति की सेना के सिपाही को दूसरी जाति की सेना को कम्पनी में भर्ती होने की आज्ञा नहीं मिल सकती।

भारतीय सेना के इस प्रकार के सङ्गठन से उसमें कुछ गुणों के साथ ही बहुत से दोष घुस गए हैं। युद्ध-विद्या के बड़े-बड़े विशारदों का कहना है कि भारतीय सेना युद्ध की कला में यूरोप की किसी भी सेना से टक्कर ले सकती है। परन्तु कभी-कभी वे यह भी कहने लगते हैं कि इन उत्तम गुणों के होते हुए भी यूरोप का वर्तमान सेनाओं से उनमें बहुत अन्तर है। किन-किन बातों में यूरोपीय सेनाओं से भारतीय सेनाएँ हेठा उतरती हैं, इस सम्बन्ध में ये युद्ध-विशारद चुप साध लेते हैं। हमारी बुद्धि से तो इस अन्तर को जड़ सेनाओं में भर्ती करने की नीति ही मालूम पड़ती है। इस अन्तर के और भी मोटे-मोटे कारण संक्षेप रूप से इस प्रकार गिनाए जा सकते हैं —

(१) भारतीय सेना जाति और धर्म के छोटे-छोटे समूहों में बटी होने के कारण उसमें उस राष्ट्रीय ऐक्य और भक्ति का अभाव है, जो इन भेद-भावों को मिटा कर ही उत्पन्न किए जा सकते हैं। वर्तमान फ़ौजों के सङ्गठन और गुणों में इस राष्ट्रीय भावना का प्रादुर्भाव एक अतीव आवश्यक गुण माना जाता है। इस गुण की आवश्यकता पर, जिस पर सब बड़े-बड़े सेना-सञ्चालकों और विचारकों ने ज़ोर दिया है, अधिक लिखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। सब से नया 'फ़ील्ड सर्विस' रेगूलेशन्स (Field Service Regulations) कहता है, कि "युद्ध में विजय प्राप्त करना जितना चारित्रिक गुणों पर निर्भर रहता है उतना शारीरिक गुणों पर नहीं, वह शक्ति जो विजय की राष्ट्रीय भावना से उत्पन्न होती है, न तो फ़ौजों की संख्या, निरस्त्रीकरण और दूसरे बड़े-बड़े साधनों से उत्पन्न हो सकती है, और न डरपोक और हृदयहीन फ़ौज की चतुराई ही उस भावना के सामने टिक सकती है।"*

भारतीय सेना में इस सद्भावना का बिलकुल ही अभाव है। दूसरे व्यवसायों की तरह फ़ौज में भर्ती होना भी एक व्यवसाय हो गया है। भारतीय सैनिकों को जो उत्साह राष्ट्रीयता की भावना से मिलना चाहिए था वह उत्साह उन्हें फ़ौजी उजड्डता, बर्बरता और मासिक वेतन से मिलता है।

(२) शिक्षा के अभाव से भारतीय सेना में ऐसी फ़ौजी योग्यता के ऐसे पुरुषों का अभाव है जो अपनी शक्ति से सेना का ठीक-ठीक सङ्गठन और सुचारु रूप से उसका सञ्चालन कर सकें, और जो सेना का नेतृत्व-भार उठाने के योग्य हों। यदि आज ब्रिटिश अफ़सर भारतीय फ़ौज में से हटा लिए जायँ तो युद्ध में भारतीय फ़ौज के टुकड़े-टुकड़े हुए बिना नहीं रह सकते। सेना के भारतीय अफ़सर, जो वाइसराय के कमीशन में रहने का

* 'फ़ील्ड सर्विस रेगुलेशन' भाग दूसरा (१९२४) अध्याय १, सेक्शन ३, पैरा २

दावा करते हैं, केवल नीचे दर्जे के अच्छे अफ़सर हो सकते हैं। उनमें फ़ौज के बड़े-बड़े मर्दों की ज़िम्मेदारी पूरी करने की शक्ति बिलकुल ही नहीं है। एक पुराने भारतीय अफ़सर ने लॉर्ड रॉबर्ट्स को अपनी योग्यता का परिचय इन शब्दों में दिया था :—

"साहब हम लोग लड़ाई में बहुत तेज़ हैं, मगर जङ्ग का बन्दोबस्त नहीं जानते।"

भारतीय अफ़सरों की इस अयोग्यता के सम्बन्ध में सर वेलेन टाइन चिरोल लिखते हैं कि :—

"जब तक भारतीयों को उच्च फ़ौजी शिक्षा देने का प्रयत्न न किया जायगा, और उन्हें छोटे-छोटे ओहदों से उठा कर बड़े ओहदे न दिए जायँगे, तब तक उनकी फ़ौजी अयोग्यता दूर करने में किसी भी दूसरी रीति से सफलता नहीं मिल सकती।"

लॉर्ड रॉलिन्सन को भी वर्तमान भारतीय अफ़सरों की फ़ौजी योग्यता में विश्वास नहीं था। उन्होंने लिखा है कि :—

"क्या हमें कभी भी ज़मींदारों की 'लड़ाकू' जातियों में ऐसे सुशिक्षित और वीर युवक मिल सकेंगे जो बाबूपन को घृणा की दृष्टि से देखते हों; और जिनके हाथों में हम युद्ध के समय निर्भय होकर मनुष्यों के जीवन सौंप सकें?"

(३) भारतीयों को केवल छोटी-छोटी जगहों पर रखने और उन्हें बड़े-बड़े ओहदों की ज़िम्मेदारी और अनुभव से दूर रखने से उनमें उस विकास का अभाव रह गया है, जिसके सहारे वे फ़ौज का सञ्चालन और उसका नेतृत्व करने में समर्थ हो सकते।

(४) भारतीय सेना को अयोग्य रखने में राजनीतिक परिस्थिति का कुछ कम हाथ नहीं है। लन्दन से प्रकाशित 'टाइम्स' के भारतीय विशेषाङ्क में, भारतीय सेना पर एक लेख निकला था, उसके लेखक ने इस बात पर प्रकाश डालते हुए लिखा है :—

"भारतीय सैनिक प्रधानतः सीधे-सादे और किसान होते हैं। उनका पालन-पोषण गाँव-खेड़ों के स्वस्थ और शुद्ध वायुमण्डल में होता है, इसलिए व्यावसायिक क्रान्तिवादियों की अपीलों पर वे सहज में राजनीति में भाग नहीं लेते।"

भारतीय सेना की इस अयोग्यता और उनकी शक्ति में उपर्युक्त अभावों का भर्ती के सिद्धान्तों से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। भर्ती की इस नीति में किसी प्रकार का परिवर्तन करने का भारतीय सेना पर निःसन्देह गहरा प्रभाव पड़ेगा; और शायद अङ्गरेज़ों की दृष्टि में यह परिवर्तन भारतीय सेना का पतन होना जान पड़े। और यदि इस नीति में कोई परिवर्तन न हुआ तो सर वेलेनटाइन चिरोल के शब्दों में "भारतीय युद्ध-कला में प्रवीण भले ही बने रहें, परन्तु वे अपनी रक्षा करने में सदैव असमर्थ रहेंगे।"

अङ्गरेज़ों के भाग्याकाश का दीप्तिमान तारा अभी अविराम गति से चमक रहा है और उसके प्रताप से उन्हें वे सब सहूलियतें और अधिकार बिना कष्ट के अपने आप प्राप्त हो जाते हैं, जो भारतवासियों को स्वप्न में भी नसीब नहीं होते। साइमन कमीशन ने भारतीय सेना पर अयोग्यता और बर्बरता का लाञ्छन तो लगा दिया, परन्तु उसके सदस्यों ने इस बात के उल्लेख की आवश्यकता नहीं समझी कि भारतवासी उन्हीं की कूटनीति और करतूतों का ही तो यह फल भोग रहे हैं। उनकी राय से तो भारतीय सेना के इस पतन के कारण सैनिकों का जातीय सङ्गठन और उनकी पैतृक सैनिक अयोग्यता ही है। उन्होंने सैनिकों की महायुद्ध की भरती का अच्छा अध्ययन किया है, क्योंकि उससे उन्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति में बहुत सहायता मिली है; परन्तु उन्होंने बलवे के इतिहास का अध्ययन करने का कष्ट नहीं उठाया, क्योंकि उससे उनकी नीति का भण्डाफोड़ हो जाता। हमने जैसा बोया है उसी का फल भोग रहे हैं। बलवे के बाद से ब्रिटिश अफ़सरों ने जिस नीति से काम लिया है उससे भारतीयों का फ़ौजी जीवन बिलकुल बदल गया है। अर्द्ध शताब्दी तक जिस नीति का अवलम्बन किया गया हो वह ग्रेटब्रिटेन की आपत्ति के समय उनकी इच्छा मात्र के इशारे पर एक क्षण में नहीं बदली जा सकती थी। बलवे के समय की भारतीय सेना की शक्ति और उसकी योग्यताओं पर ध्यान-पूर्वक विचार करने से हमें उसी समय उनकी वर्तमान नीति की चाल का पता लग जायगा। और यदि हम फ़ौज के वर्तमान जातीय सङ्गठन और उससे उत्पन्न दोषों का ठीक-ठीक पता लगाना चाहें तो सिपाही-विद्रोह का इतिहास हमें शीघ्र ही उसकी तह में पहुँचा देगा।

सिपाही-विद्रोह के पहिले की बङ्गाल की सब से बड़ी फ़ौज हर प्रकार से युद्ध-कला में प्रवीण मानी जाती थी। जब विद्रोह की समाप्ति के उपरान्त ही उसका भी अन्त कर दिया गया, तब लॉर्ड एलिनबरा ने इन शब्दों में खेद प्रकट किया था :—

"मुझे यह सोच कर अत्यन्त दुःख होता है कि भारतीय सिपाहियों की जैसी योग्य सेना का अन्त कर दिया गया है वैसी सेनाएँ अब हमें देखने को भी न मिलेंगी। वह एक ऐसी सेना थी जो अपने योग्य और श्रद्धेय जनरल की अध्यक्षता में डारडेनलीज़ पर भी विजय प्राप्त करती।

परन्तु यह वह फ़ौज थी, जिसका सङ्गठन वर्तमान भारतीय फ़ौजों से बिलकुल निराले ढङ्ग पर हुआ था। पहिले उसमें प्रधानतः बिहार और दोआबा के हिन्दुस्तानी सिपाही भरती होते थे, और बाद में सिक्खों और पञ्जाबियों की थोड़ी संख्या सम्मिलित कर ली गई थी। इस फ़ौज में मुख्यतः ब्राह्मण, राजपूत और अहीर जातियों के व्यक्ति थे। फ़ौज में अधिकांश हिन्दू ही थे; और कुल रिसाले में मुसलमानों की संख्या २०० से अधिक न होगी।

परन्तु यू० पी० और बिहार की ऊँची जातियों के पुरबिए अब 'वीर लड़ाकू' जातियों में नहीं गिने जाते। वे 'वीर' भले ही न गिने जावें। परन्तु जनरल मैकमन का तो उनके सम्बन्ध में यही कहना है कि "वे लोग हृष्ट-पुष्ट बलिष्ट हैं; उनके चेहरे और शारीरिक सङ्गठन से वीरता चमकती है और वे अत्यन्त विनीत और आज्ञापालक होते हैं।"

विद्रोह के समय की सेना की दूसरी विशेषता यह थी कि "उस समय की सेना में जातीय भेद-भाव न था। कम्पनियाँ और पल्टनें जातियों के समूह में बँटी हुई न होती थीं। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और पुरबिए सब हिलमिल कर रहते थे, जिससे उनमें जाति-पाँति का भेद-भाव न रहता था और सबके हृदय में एक सी भावना रहती थी।"

विद्रोह के बाद ही जो जाँच कमेटी नियुक्त हुई थी और उसमें फ़ौजी अफ़सरों ने जो गवाहियाँ दी थीं उनमें से प्रायः सबने इस बात पर बहुत अधिक ज़ोर दिया था कि यदि सेनाओं में भर्ती करने की यही नीति रही तो भारत में ब्रिटिश-सत्ता की रक्षा होना एकान्त असम्भव हो जायगा।

पील-कमीशन के सम्मुख, पञ्जाब के चीफ़ कमिश्नर सर जॉन लॉरेन्स ने (जो बाद में भारत के वाइसराय और गवर्नर-जनरल होकर आए थे) जो मेमोरेण्डम रिपोर्ट पेश की थी उसमें उन्होंने लिखा था कि :—

"(विद्रोह के पहले की) फ़ौज में जो बहुत से दुर्गुण थे, उनमें से एक जिसने हमारे ऊपर भयानक आघात किया था, बङ्गाली सेना का ऐक्य और उनका भ्रातृ-भाव था; और इसके लिए केवल दो ही औषधियाँ हैं। पहिली तो यह कि भारत में ब्रिटिश सेना की संख्या ख़ूब बढ़ा दी जाय और दूसरे उनके जातीय ऐक्य में भेद-भाव उत्पन्न कर दिया जाय। यदि इन औषधियों का प्रयोग भारतीय सेना पर दस वर्ष पहिले कर दिया गया होता तो आज बङ्गाली फ़ौज बहुत अयोग्य और राज-भक्त सिद्ध होती।"*

भारतीय सेना के स्टॉफ़ के प्रमुख, मेजर जनरल डबल्यू० आर० मैन्सफ़ील्ड ने यह बात और भी अधिक स्पष्ट कर दी है। उनका कहना है कि :—

"फ़ौज के सम्बन्ध में केवल इतना ही कहना काफ़ी है कि जिस नीति से सेना में भर्ती की गई थी उससे उसमें पेशावर से कलकत्ता तक और हिमालय से नर्मदा तक एकता और भ्रातृ-भाव उत्पन्न हो गया था। नर्मदा के उस पार से इस भ्रातृ-भाव का अभाव हो गया और वहाँ की सेना ने यहाँ की सेना के विद्रोही भावों या उनकी आज्ञाओं को मञ्ज़ूर करने से इन्कार कर दिया।

"बम्बई गवर्नमेण्ट ने सबसे पीछे अवध के पुरबियों के सुन्दर होने के कारण जो उन्हें अपनी फ़ौज में भरती करने की नीति ग्रहण की थी, उससे उसने अपनी और बङ्गाल की फ़ौज में भ्रातृ-भाव उत्पन्न करने में बड़ी सहायता पहुँचाई। परन्तु हमारे सौभाग्य से वहाँ यह उत्पात पूर्ण रूप से न फैल पाया और इससे विद्रोह सफल न हो सका।"†

और फिर :—

"पुरानी रीति के अनुसार ब्रिटिश अफ़सरों के भारत की उच्च श्रेणी की जातियों से मिले रहने और नीच जातियों से अलग रहने के कारण उनमें वही भेद-भाव उत्पन्न हो गया था, जो एक राज्य में दूसरा राज्य स्थापित हो जाने से हो जाता है। विद्रोह की आग फैलने का मुख्य कारण यही था। फ़ौजों के इस विश्वास ने, कि उनके कर्नल उच्च जाति के सुन्दर और पढ़े-लिखे सैनिकों के प्रभाव में आकर ब्राह्मण बन गए हैं, उस आग को और भी अधिक भड़का दिया।"‡

इसका प्रभाव यह हुआ कि फ़ौज में बिहार और यू० पी० की उच्च जातियों में से सैनिकों की भर्ती बन्द हो गई और तभी से बैटेलियनों में हर प्रकार की जातियों की छोटे-छोटे समूहों में भरती करने की प्रथा चल पड़ी थी। इस सम्बन्ध में सर जॉन लॉरेन्स ने लिखा है कि :—

"उस जातीय भेद-भाव को सदैव बनाए रखने के लिए, जो हमारी सत्ता की रक्षा के लिए अमूल्य है, और जिसके कारण एक प्रान्त का मुसलमान, दूसरे प्रान्त के अपने ही मुसलमान भाई को घृणा और अवज्ञा की दृष्टि से देखने लगता है, इस बात की आवश्यकता है कि पल्टनें (Corps) आगे प्रान्तीय रहें, और उस प्रान्त में किसी ऐसे प्रान्त की जातियों के सैनिकों को भर्ती न किया जाय जिन्हें अन्य सैनिक घृणा की दृष्टि से देखते हैं। एक प्रान्त के हिन्दू मुसलमानों को उसी प्रान्त की सेना में भर्ती करो, किसी दूसरे प्रान्त की सेना में नहीं। यह आपस का भेद-भाव उस समय काम आएगा जब हम पर फिर कोई आपत्ति आएगी। इस प्रकार की नीति से भारतीय सेना में दो ज़बर्दस्त दुर्गुणों का प्रवेश हो जायगा। एक तो उनके हृदय से भ्रातृ-भाव, जातीयता और राष्ट्रीयता निकल जायगी और दूसरे वे कोई ऐसे राजनीतिक असन्तोष या कुटिलता न फैलाने पाएँगे,

(शेष मैटर १७वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

* पील कमीशन की रिपोर्ट (१८५९) पुनः सङ्गठन सम्बन्धी पत्र, पृष्ठ १४।

† पील रिपोर्ट (१८५९) पृष्ठ ५७ और ३७

‡ पील रिपोर्ट पृष्ठ ९९।

बिहार के गाँधी त्यागमूर्त्ति बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी

[एक सत्याग्रही विद्यार्थी]

आज भारतमाता पराधीनता की बेड़ियों से जकड़ी हुई नाना प्रकार के अत्याचार सह रही है। सौभाग्य से माता की बेड़ी काटने वाले भी अनेक वीर पैदा हो गए हैं। उन वीरों में 'बिहार के गाँधी' कहलाने वाले श्री० राजेन्द्रप्रसाद जी का स्थान बहुत ऊँचा है।

जन्म और वंश-परिचय

श्री० राजेन्द्र बाबू का जन्म सन् १८८४ ई० की तीसरी दिसम्बर को बिहार प्रान्त के छपरा-ज़िलान्तर्गत जीरादेई नामक ग्राम में हुआ था। आपके पूज्य पिता वैद्य-भूषण बाबू महादेवसहाय जी एक सुप्रसिद्ध कायस्थ ज़मींदार एवम् यशस्वी वैद्य थे। बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी दो भाई हैं। आपके बड़े भाई माननीय बाबू महेन्द्रप्रसाद जी हैं, जो पहले काउन्सिल ऑफ़ स्टेट के प्रभावशाली सदस्य थे। परन्तु काँग्रेस की आज्ञा पालन कर उक्त पद त्याग कर देश-सेवा कर रहे हैं। राजेन्द्र बाबू के दो सुपुत्र भी हैं। बड़े का नाम बाबू मृत्युञ्जयप्रसाद जी, बी० ए० है तथा छोटे का नाम बाबू धनञ्जयप्रसाद है, जो वर्तमान आन्दोलन में छपरा ज़िला के 'डिक्टेटर' हैं। आपका सारा परिवार ही देश-सेवा में लीन है।

विद्यार्थी जीवन

श्री० राजेन्द्र बाबू का विद्यार्थी-जीवन आदर्श जीवन है। पहले-पहल आप ग्राम की एक पाठशाला में बैठाए गए। आपको उर्दू और फ़ारसी की शिक्षा दी गई। केवल आठ साल की छोटी आयु में आपने फ़ारसी की अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। इसके बाद पटने के एक मिडिल स्कूल में आप हिन्दी-अङ्गरेज़ी पढ़ने लगे। मिडिल परीक्षा में आप सर्व-प्रथम आए। छात्रवृत्ति के साथ ही आपको एक रजत-पदक भी मिला। यहीं से जो स्कॉलरशिप मिलना आरम्भ हुआ, विद्यार्थी-जीवन तक मिलता ही गया। इसके बाद छपरा ज़िला स्कूल से कलकत्ता युनिवर्सिटी में एन्ट्रेन्स परीक्षा में आप युनिवर्सिटी भर में फ़र्स्ट हुए। आपके पहले कोई भी बिहारी कलकत्ता युनिवर्सिटी में फ़र्स्ट नहीं हुआ था। इसलिए आप 'बिहार-रत्न' कहलाने लगे। छात्र-वृत्ति के साथ ही स्वर्ण-पदक तथा कई अन्य पारितोषिक भी आपको मिले। अब आप कलकत्ता के प्रेज़िडेन्सी कॉलेज में पढ़ने लगे। क्रमशः एफ़० ए० और बी० ए० में भी आप कलकत्ता युनिवर्सिटी में फ़र्स्ट हुए। छात्र-वृत्ति के साथ ही कई स्वर्ण-पदक मिले। इसी समय आपका परिचय एक अङ्गरेज़ से आपके प्रिन्सिपल ने यह कहते हुए कराया था कि—" This is the man who never stood second in the University " अर्थात्—"यह वही आदमी है जो कभी भी युनिवर्सिटी में सेकेण्ड नहीं हुआ।" पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि आप 'फ़ुटबॉल' आदि खेलों के भी अच्छे खिलाड़ी थे। बी० ए० पास करने के बाद आप अपनी फ़ुटबॉल-टीम के कैप्टेन भी हो गए। इस खेल में भी आपको पारितोषिक मिला था। जब आप एम० ए० क्लास में पढ़ रहे थे, उसी समय क़ानून का भी अध्ययन करने लगे। एम० ए० परीक्षा के साथ ही बी० एल० परीक्षा भी दी। दोनों में प्रथम श्रेणी में छात्रवृत्ति के साथ पास हुए। परन्तु अबकी बार युनिवर्सिटी में फ़र्स्ट नहीं हुए। इससे आपको हार्दिक दुःख हुआ। पुनः युनिवर्सिटी भर में फ़र्स्ट होने की आपने दृढ़ प्रतिज्ञा ठानी। कुशाग्र बुद्धि तथा परिश्रम द्वारा एम० एल० परीक्षा में आप इतने अधिक नम्बर लाए कि उतने कलकत्ता युनिवर्सिटी में उस समय तक कोई नहीं ला सका था। अबकी बार आप सारे भारतवर्ष में फ़र्स्ट हो गए। आपका नाम सारे देश और विदेशों में भी फैल गया। आप विद्यार्थी-समाज के आराध्य एवं पथ-प्रदर्शक नेता बन गए। विद्यार्थी जीवन ही में आपने 'बिहारी-छात्र सम्मेलन" नाम की संस्था को जन्म दिया, जो अब तक बिहारी विद्यार्थियों का उपकार कर रही है। आप लड़कपन ही से सादे वेष में रहते हैं। आज तक किसी ने आपको पान तक खाते हुए न देखा होगा। आप के विद्यार्थी जीवन का फ़ोटो मैंने अपनी आँखों से देखा है। उस समय आप किसी गुरुकुल के ब्रह्मचारी प्रतीत होते थे। शौक़ की तो क्या बात, कोट तक बदन पर नहीं है। केवल एक धोती, एक कुरता, एक सादी टोपी तथा एक पञ्जाबी जूता पहने हुए हैं।

अध्यापकी और वकालत

विद्यार्थी जीवन के बाद श्री० राजेन्द्रप्रसाद जी कलकत्ते के प्रेज़िडेन्सी कॉलेज में अङ्गरेज़ी के प्रोफ़ेसर हुए। आप विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त राजनैतिक एवं धार्मिक उपदेश भी देते थे। इसी समय से धर्म और नीति का अध्ययन करने लगे। कुछ दिनों के बाद आप मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार) के भूमिहार-ब्राह्मण-कॉलेज में अङ्गरेज़ी के प्रोफ़ेसर होकर चले गए। आप ही इस कॉलेज के प्रिन्सिपल भी होने वाले थे; पर कई अनिवार्य कारणों से आपने कॉलेज से सम्बन्ध छोड़ दिया। सन् १९११ ई० में ३७ वर्ष की उम्र में कलकत्ता हाईकोर्ट में आप वकालत करने लगे। आपके क़ानून सम्बन्धी ज्ञान का लोहा बड़े-बड़े जज तक मानते थे। आप शीघ्र ही कलकत्ते के एक सुप्रसिद्ध वकील हो गए। सन् १९१६ ई० में पटना हाईकोर्ट खुलने पर आप पटना में वकालत करने लगे। पटना हाईकोर्ट में आपकी वकालत यहाँ तक चमकी कि शीघ्र ही हाईकोर्ट की जजी के लिए आपका नाम लिया जाने लगा। उस समय आपकी मासिक आमदनी लगभग पन्द्रह हज़ार के थी। अपनी चलती वकालत त्याग कर आप महात्मा गाँधी के साथ चम्पारन चले गए। यहीं से आपका सार्वजनिक जीवन आरम्भ हुआ।

चम्पारन-सत्याग्रह

सन् १९१७ ई० के अप्रैल मास में महात्मा गाँधी जी पहले-पहल बिहार में आए। आपने राजेन्द्र बाबू का नाम सुन रक्खा था। अतएव आते ही वे पटना में राजेन्द्र बाबू के यहाँ पहुँचे। आपने राजेन्द्र बाबू की सहायता चाही, और वे फ़ौरन अपने परम मित्र बिहार के वयोवृद्ध नेता ब्रजकिशोर बाबू के साथ चम्पारन गए। उस समय निलहे-गोरों का अत्याचार ग़रीब किसानों पर अत्यन्त बढ़ गया था। चारों तरफ़ त्राहि-त्राहि मची हुई थी। उस समय राजेन्द्र बाबू और ब्रजकिशोर बाबू आदि नेताओं के साथ चम्पारन का सत्याग्रह महात्मा जी ने चलाया। सत्याग्रह का शङ्ख बजा और घोर आन्दोलन शुरू हुआ। राजेन्द्र बाबू तथा ब्रजकिशोर प्रसाद जी ने सारा ख़र्च अपनी जेब से दिया। सत्याग्रह की विजय हुई, निलहों का राज्य सर्वदा के लिए चम्पारन से चला गया। राजेन्द्र बाबू के सेवा-भाव को देख कर महात्मा जी भी दङ्ग रह गए। आपकी प्रशंसा करते हुए महात्मा जी ने 'अपनी आत्म-कथा' के दूसरे भाग में लिखा है कि—"राजेन्द्र बाबू और ब्रजकिशोर बाबू की जोड़ी अद्वितीय है। आपने प्रेम से मुझे ऐसा अपङ्ग बना डाला है कि आपके बिना मैं एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता हूँ।" पाठकों को चम्पारन का सत्याग्रह का इतिहास जानना हो तो राजेन्द्र बाबू की लिखी 'चम्पारन में महात्मा गाँधी' नामक प्रसिद्ध पुस्तक पढ़ें। सन् १९१७ ई० से आप कॉङ्ग्रेस में भाग लेने लगे।

असहयोग आन्दोलन

आप सन् १९२० ई० से पूर्ण असहयोगी बन गए। कम से कम बिहार प्रान्त में तो आपके समान कोई भी त्याग न कर सका। आपने महात्मा गाँधी का सन्देश बिहार के देहातों तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया। सारे प्रान्त में घूम-घूम कर असहयोग का प्रचार किया। फलस्वरूप अनेक वकीलों ने अपनी चलती वकालत त्याग दी। जिनमें से बहुत से वर्तमान आन्दोलन में भी जेल में तपस्या कर रहे हैं। राजेन्द्र बाबू ने असहयोग आन्दोलन में कॉलेज और स्कूलों के बहिष्कार का प्रचार करते हुए सन् १९२० ई० में पटने में 'बिहार-विद्यापीठ' नामक राष्ट्रीय कॉलेज स्थापित किया, जो अब भी अनेक देश-भक्तों को तैयार कर रहा है। आपके इस कॉलेज को, अभी थोड़े दिन हुए, बिहार के एक शिक्षा-प्रेमी ने तीन लाख रुपया दिया है। आप पहले उक्त कॉलेज में प्रिन्सिपल के पद पर थे। अब भी उसके वाइस-चान्सलर हैं। आपने ख़ास कर बिहार में चर्ख़े और खद्दर का प्रचार बहुत ही अच्छे ढङ्ग से किया और अब भी कर रहे हैं। स्वयं महात्मा जी ने आपकी प्रशंसा करते हुए 'हिन्दी-नवजीवन' में लिखा था—"बिहार-रत्न राजेन्द्र बाबू जिस प्रकार चर्ख़े और खद्दर का प्रचार कर मेरी सहायता कर रहे हैं, यदि सब प्रान्त के नेता वैसी ही सहायता करें, तो मैं विश्वास

(पृष्ठ १६ का शेषांश)

जिनकी उत्पत्ति प्रान्तों में एक दूसरी जाति के सम्मिश्रण से होती है।"*

जनरल मैन्सफ़ील्ड की भी यही सलाह थी कि—"हमें कोई ऐसी केन्द्रीय बड़ी सेना उत्पन्न न होने देना चाहिए जैसा कि हाल में हमने तोड़ी है। उसके बदले हमें जगह-जगह ऐसी प्रान्तीय सेनाओं का सङ्गठन करना चाहिए जो एक दूसरे से बिलकुल भिन्न रहे।"

अपने इन विचारों को व्यावहारिक रूप देने के लिए जनरल मैन्सफ़ील्ड ने निम्न लिखित उपाय बतलाए थे :—

"प्रान्तीय सेनाओं में मुसलमान और अन्य जातियों का अनुपात समान रहे। सेनाओं को नाची जाति की सेना और मुसलमानों की सेना में विभाजित किया जा सकता है। दूसरे रिसालों में हर एक जाति की अलग-अलग कम्पनियाँ बनाई जा सकती हैं, परन्तु जहाँ तक हो सके, हर एक रिसाले में दो कम्पनियाँ मुसलमानों की अवश्य हों। इस सम्बन्ध में जातियों की एकता कभी न रखना चाहिए; हर एक रिसाले में जितनी ही अधिक जातियों का समावेश हो सके, हमारे हक़ में उतना ही अच्छा है। इससे भविष्य में किसी विद्रोह या क्रान्ति में उनका सङ्गठित होना असम्भव हो जायगा।"†

(अगले अङ्क में समाप्त)

* * *

* पील कमीशन रिपोर्ट पृष्ठ ३०

† पील रिपोर्ट पृष्ठ १००

दिलाता हूँ कि स्वराज्य बहुत जल्द आप से आप मिल जाय। मुझे दूसरा कुछ काम करने की आवश्यकता ही न पड़े।" राजेन्द्र बाबू अखिल भारतवर्षीय चर्खा-सङ्घ के सम्माननीय ऐजेण्ट हैं। खद्दर-प्रचार में महात्मा गाँधी के बाद आप ही का स्थान माना जाता है। आप नित्य नियमपूर्वक चर्खा कातते हैं। आप कई प्रकार की हाथ की कारीगरी भी जानते हैं।

अन्य सेवाएँ

पटना यूनिवर्सिटी स्थापित होने पर आप ही उसके सीनेटर के पद पर बैठाए गए। आप कलकत्ता और पटना यूनिवर्सिटी के एम० ए० और क़ानून के परीक्षक भी होते थे। आपके समय में यूनिवर्सिटी का बहुत सुधार हुआ। 'अण्डर-एज' (Under age) का झगड़ा पटना यूनिवर्सिटी से आप ही ने मिटाया। आप पटना म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन भी थे, परन्तु रचनात्मक काम में बाधा पड़ने से उक्त पद आपने त्याग दिया। आप हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं सुलेखक हैं। पटने का राष्ट्रीय पत्र 'देश' आप ही ने निकाला। बहुत दिन तक आप ही उसके सम्पादक भी थे। आपकी हिन्दी-सेवा से प्रसन्न होकर हिन्दी संसार ने आपको अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-समेलन कोकोनाडा तथा बिहार प्रान्तीय सप्तम हिन्दी साहित्य-सम्मेलन दरभङ्गा का सभापति बनाया था। उक्त सम्मेलन जब पटना और कलकत्ता में हुआ था, तब आप ही स्वागत-मन्त्री थे। कायस्थ महासभा, जौनपुर के भी आप सभापति थे और कायस्थ जाति तो आपको श्री० चित्रगुप्त जी का दूसरा अवतार ही मानती है। सन् १९२८ ई० में आप यूरोप गए थे। कई भागों में भ्रमण कर भारत के दुःख की कथा विदेशियों को आपने सुनाया था, फ्रान्स का जगत-प्रसिद्ध विद्वान रोमाँ रोलाँ ने आपके आचरण पर मुग्ध हो आपको कई दिन तक अपने यहाँ ठहराया था। आप कई भाषाओं के विद्वान् हैं, जैसे अङ्गरेज़ी, फ़ारसी, बँगला, हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, मराठी आदि। आप अछूतोद्धार सभा के सभापति भी रह चुके हैं।

वर्तमान आन्दोलन

सत्याग्रह संग्राम में बिहार प्रान्त के आप 'डिक्टेटर' तथा प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस के सभापति थे। आप अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस महासभा की कार्यकारिणी के सदस्य थे। आप महासभा के प्रधान मन्त्री भी रह चुके हैं। वर्तमान आन्दोलन में बिहार का नेतृत्व करते हुए तारीख़ ५ जुलाई को छपरा में आप गिरफ़्तार कर लिए गए। ऑर्डिनेन्स ५-६ के अनुसार आपको छै मास की सादी क़ैद की सज़ा दी गई और आज बिहारियों का हृदय-सम्राट त्यागमूर्ति हज़ारीबाग़ जेल में तपस्या कर रहा है!

* * *

आर्य-समाज में संशोधन की आवश्यकता

ऋषि दयानन्द का कार्य

["एक आर्य"]

बाईस करोड़ अधमरे-हिन्दुओं में आज जो राष्ट्रीयता और जीवन की नई लहर हमें दीख पड़ती है, इसका श्रेय उस पुरुष-श्रेष्ठ को है, जो आर्य-समाज के प्रवर्तक के नाम से प्रसिद्ध है। उसने जो आग अपने तेज और तप से जलाई, उसने हिन्दुओं की लाखों वर्ष की ग़ुलामी और गन्दगी को भस्म कर दिया। उसने सोई हुई हिन्दू-जाति को ठोकर मार कर कहा—उठ! उठ!! ओ महाजातियों की माता उठ!!! भारत का यह विख्यात विद्वान, तपस्वी और इन्द्रिय-विजयी पुरुष जन्म भर विरोधों को अपनी मुट्ठमर्दी से कुचलता हुआ आगे ही बढ़ा चला गया। उसने उस प्रचीन दीवार को ढा दिया, जिसमें हिन्दू-जाति क़ैद थी, उसने दिमाग़ी ग़ुलामी के सभी कारणों पर चोट की और विशुद्ध भारतीयता और विशुद्ध वैदिक धर्म के अनुसार, जहाँ तक मानव-समाज अध्यात्म या आधिभौतिक रीति से सुधारा जा सकता है, वहाँ तक उसे साहसपूर्वक सुधारा।

आज जो आतङ्क राजनीति का है—और लोगों के मन में उसकी उत्क्रान्ति होने से जैसा प्रबल आन्दोलन खड़ा हो गया है, उन दिनों वही आतङ्क धार्मिक विश्वास का था। क्या मजाल थी, कि कोई हिन्दू-धर्म की सत्यानाशी रूढ़ियों के विरुद्ध आवाज़ उठा सके। यह वह समय था, जब मुग़ल-साम्राज्य विध्वंस हो चुका था, जब सन् ५७ का विप्लव एक बार हिन्दू-समाज को ज़ोर से हिलाकर बेहोश कर चुका था और अङ्गरेज़ी सत्ता और भी अधिक ज़ोर से जम कर बैठ गई थी!

उस समय विधवाओं का विवाह उच्च हिन्दुओं के लिए अतिशय भयानक पाप था। उससे थोड़े ही काल पूर्व तक विधवाएँ मुर्दे पति के साथ जीती जलाई जाती रही थीं और हिन्दुओं की सभी उन धर्म-पुस्तकों में, जो आम तौर से हिन्दू गृहस्थों में पढ़ी जातीं तथा आदर से देखी जाती थीं—स्त्रियों की कठोर और एक देशीय पातिव्रतधर्म की शिक्षा दी गई थी! पति ही उनका देवता—पति ही उनका परमेश्वर—पति ही उनका पूज्य पुरुष था—फिर वह पति चाहे कोढ़ी, कलङ्की, लुच्चा, लबार, बदमाश, शराबी, व्यभिचारी, चोर और नीच वृत्ति का ही क्यों न हो। धर्म-ग्रन्थों में ऐसे ही पतित पति की तन, मन, धन से सेवा किए जाना पतिव्रता का आदर्श बखाना गया था—और पति को पत्नी के प्रति कैसा रहना चाहिए—इसकी कोई मर्यादा न थी—प्रत्युत जहाँ जीते जी ऐसे भयानक घृणास्पद पति की देवता के समान पूजा करना उसका धर्म था—और उसके मर जाने पर जीवित उसके साथ जल जाने का विधान था, वहाँ पुरुषों को चाहे भी जितने विवाह कर लेने की खुली छुट्टी थी!!

बालिकाएँ अबोधावस्था में ब्याही जाती थीं और रजस्वला कुमारी को देखने से ही उन बदनसीब पिताओं को पाप लगता था। और प्रायः बड़े-बड़े वरों की कन्याएँ शैशव अवस्था ही में ब्याही जाती थीं और वे समर्थ होने से प्रथम ही प्रायः विधवा हो जाती थीं। न स्त्रियों को—न बालिकाओं को विद्या पढ़ाने का रिवाज था। न लड़कों की भाँति उनका सम्मान था, न उनका आदर से पालन होता था। वे पराए घर की कूड़ा-कर्कट समझी जाती थीं। ऐसा कोई घर न था, जहाँ विधवाओं का विलाप न हो, जहाँ नारियाँ पालतू पशुओं की भाँति उद्देश्यहीन अपने जीवनों को अन्धकार में व्यतीत न करती हों!

अछूत और निम्न श्रेणी के पुरुष और स्त्रियों का जीवन हाहाकारपूर्ण था। वे सर्वथा मनुष्यता और नागरिकता के अधिकारों से पतित और तिरस्कारपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। वे पीढ़ियों से गन्दे काम करते, गन्दे रहते, जूठन और सड़ी-गली वस्तु खाते और घृणास्पद स्थानों में रहते थे, फिर उनके प्रति समाज की तनिक भी सहानुभूति न थी। छोटे और बड़ेपन की नीच भावना प्रत्येक के मन में थी, प्रत्येक पुरुष कुल-जाति में जिसको उच्च समझता था, उसके द्वारा चुपचाप अपमान सहन कर लेता था और जिसे अपने से नीचा समझता था उसका स्वयं अपमान करता था! उनको न इस लोक की किसी सुन्दरता का ज्ञान था—न परलोक का। विवेक और आत्मा सम्बन्धी बातें सुनने तक की सज़ा मृत्यु थी! वे अभागे मनुष्यों की योनि में जन्म लेकर करोड़ों की संख्या में अत्यन्त घृणास्पद नारकीय जीवन चुपचाप व्यतीत करते आ रहे थे।

ईसाई और मुसलमानों ने अपने-अपने ढङ्ग पर हिन्दुओं को ख़ासकर उन अभागी और पतित नीच जातियों को अपने अन्दर लेना प्रारम्भ कर दिया था। और कोई भी हिन्दू—चाहे वह अति नीच ही क्यों न हो, किसी भी ईसाई या मुसलमान की छुई कोई वस्तु खा लेने पर ही जाति-बहिष्कृत समझा जाता था और उसका हिन्दू-समाज में रहना असम्भव समझा जाता था! दिन पर दिन हिन्दू-जाति का ह्रास हो रहा था। वे ही नीच हिन्दू ईसाई और मुसलमान होकर, उनकी शह पाकर हिन्दुओं पर अधिकाधिक अत्याचार करते और अपने अपमानों का बदला लेते थे! लगातार सैकड़ों वर्षों से ग़ुलामी के वातावरण में पिस कर हिन्दुओं में किसी भी प्रकार का कोई वीरतापूर्ण मुक़ाबला करने की सामर्थ्य नहीं रही थी। वे केवल कायर आक्रमण करते थे, और झूठे गर्व और थोथी बड़प्पन की डींग में ही अपनी शान समझते थे। हिन्दुओं की पुरानी संस्कृति खो गई थी। उनकी जातीयता नष्ट हो चुकी थी। वह अनगिनत जातियाँ और सम्प्रदायों में छिन्न-भिन्न हो रहे थे। जैसे कोई बड़ा भारी महल खण्डहर होकर ढह गया हो। उसमें न जीवन के लक्षण थे; न ज्योति थी! वह पुराने गौरवमय इतिहास की लोथ थी, जिसे ईसाई और मुसलमान बेफ़िक्री से पेट भर कर खा रहे थे, और कोई उन्हें रोकने वाला न था!

वह समय था; जब ऋषि दयानन्द ने जन्म लिया। वेदों का अध्ययन किया और सत्य मार्ग को खोजना प्रारम्भ किया। उसने मनन, विवेक और साहस एवं प्रतिभा से अपना नया मार्ग चुना। उसने अन्धविश्वासों और रूढ़ियों के विपरीत आवाज़ ऊँची की और वीरतापूर्वक वह लोगों के द्वार-द्वार जाकर चिल्ला कर सत्य का सन्देश देता रहा। उसने कष्टों की, विरोधों की, ख़तरों की, पर्वाह न की। उसने हिन्दू-धर्म का, हिन्दू-समाज का, हिन्दू संस्कृति का इस ढङ्ग से संशोधन करना चाहा कि उसकी मौलिकता और आत्मा का घात न हो। उसने पुराणों और ग़लत बातों में फँसे लोगों को प्राचीन वेद पढ़ने की सलाह दी, तन्त्र-मन्त्र में उल्लू बने लोगों को दर्शन

और उपनिषदों से आत्म-तत्व सीखने की रीति बताई। उसने असंख्य देवताओं के स्थान पर एक सर्व-शक्तिमान परमेश्वर की उपासना की सम्मति दी। उसने सब अन्ध-विश्वासों, सब कुरीतियों, सब मूर्खताओं को छोड़ कर, अन्तःकरण और विवेक से जीवित रहने की शिक्षा दी। उसने कन्याओं और स्त्रियों को शिक्षित करने का खुला विधान बता कर, उन्हें मानव समाज में बराबर का अधिकारी बताया। उसने धर्म-भ्रष्ट हिन्दुओं को फिर से शुद्धि करके हिन्दुओं के ह्रास को रोका। उसने विधवा-विवाह पर प्रकाश डाला और अछूतों के विषय में उदारता और न्याय से व्यवहार करने की सम्मति दी। उसने राजाओं को प्रजारञ्जन और प्रजा को राजा का आज्ञाकारी बनने की सलाह दी। उसने स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य, और यम-नियम के पालन पर ज़ोर दिया। उसने शिल्प, व्यापार, सङ्गठन और समाज-शास्त्र के सच्चे और उन्नत उपायों को मनुष्यों के सम्मुख पेश किया और इस प्रकार वह प्रसिद्ध और महान धर्माचार्य और समाज-सुधारक हिन्दू जाति का एक सच्चा और साहसी सुधारक सिद्ध हुआ।

उसकी नैतिक सफलता आज बिल्कुल स्पष्ट है। हिन्दुओं की वह पुरानी दीवारें टूट गईं, हिन्दू जाति स्वतन्त्रता और विवेक से तेज़ी के साथ सभी सुधारों को कर रही है। हिन्दू घरों में आज असंख्य युवती कुमारिकाएँ बी० ए०, एम० ए०, एल०-एल० बी०, प्रोफ़ेसर, बैरिस्टर बनी हुई हैं। बाल-विवाह का तेज़ी से मूलोच्छेद हो रहा है। कन्या-शिक्षा और स्त्रियों के समानाधिकार की शैली क्या कुछ नहीं हो गई। अछूत लोगों को आज समाज में कन्धे से कन्धा भिड़ा कर देश के प्राङ्गण में खड़े होने के हौसले हुए हैं। और उन हिन्दुओं ने, जिन्होंने इन अछूतों को कभी नगर में भी गत ३ हज़ार वर्षों से बसने नहीं दिया था, उन्हें लाट साहेब की कौन्सिल का सफल सदस्य बना दिया है! ईसाई और मुसलमान, जो २२ करोड़ हिन्दुओं को अपना नर्म भोजन समझते थे—और २२ करोड़ हिन्दू उनसे सदैव भयभीत रहते थे, आज वे ९ लाख आर्यों से, न केवल भयभीत हैं; प्रत्युत उनकी प्रगति एकदम रुक गई है। आज हिन्दू समाज ने खुल्लमखुल्ला शुद्धि को अपना लिया है। लाखों परिवार फिर से सैकड़ों वर्ष बाद हिन्दू होकर बिरादरी में मिल गए हैं, और मिलते जा रहे हैं!

जब मैं गत दो हज़ार वर्षों के हिन्दू-धर्म के इतिहास पर दृष्टिपात करता हूँ, तो मैं कह सकता हूँ कि ऋषि दयानन्द जैसा सफल और तेजस्वी धर्म और समाज का संशोधक इस बीच में नहीं पैदा हुआ। और हिन्दू जाति को नवयुग का उन्नत रूप देने का सच्चा श्रेय उसी ब्रह्मचारी पुरुष-श्रेष्ठ को मिलना चाहिए। उस पुरुष-श्रेष्ठ की मृत्यु को आज ४७ वर्ष व्यतीत हो गए। इस ऋषि ने ६० वर्ष शरीर धारण किया और सिर्फ़ २० वर्ष तक उन्होंने अपने सिद्धान्तों का प्रचार और आविष्कार किया। जिसमें प्रारम्भ के ११ वर्ष तक वे केवल अपने सिद्धान्तों पर मनन करने, विचारों को स्थिर करने, एवं भारत भर में भ्रमण करने और छोटी-छोटी कुरीतियों के विरुद्ध साहसपूर्ण उपदेश करने में लगे रहे। मृत्यु से ९ वर्ष प्रथम उन्होंने लेखनी पकड़ी और नौ वर्ष के अन्दर उन्होंने इतने ग्रन्थ लिखे।

१—पाखण्ड खण्डन—जिसमें भागवत का खण्डन है। यह रिसाला आगरे में लिखा गया था। वह आगरा दर्बार पर और सं० १८७४ के हरिद्वार कुम्भ पर बाँटा गया था।

२—अद्वैत मत खण्डन—नवीन वेदान्त के खण्डन में संस्कृत और हिन्दी में १८७० में छापा गया।

३—शास्त्रार्थ काशी—जो दुर्गा-कुण्ड पर काशी-नरेश के समक्ष स्वामी विशुद्धानन्दादि से हुआ था। १८६९ में छपा।

४—प्रतिमा-पूजन विचार—१८७७ में कलकत्ते में छपा, जब ताराचरण तर्करत्न भट्टाचार्य से शास्त्रार्थ हुआ।

५—पञ्च महायज्ञ विधि—सम्वत् १९३० में छपा, जब गङ्गातट पर स्वामी जी थे।

६—सत्यार्थप्रकाश—सन् १८७४ में लिखवाया गया। जिसमें बहुत से शास्त्रार्थों के नोट और व्याख्यानों के मसाले का संग्रह पण्डितों से करा लिया गया था। सन् १८७५ में स्टार प्रेस बनारस में राजा जयकृष्णदास ने अपने ख़र्च से छपाया। यह ४०० पृष्ठों का अपूर्ण ग्रन्थ था। वह फिर संशोधित होकर सन् १८८२ में प्रयाग में छापा गया। वह तीसरी बार स्वामी जी की मृत्यु के बाद सन् १८८७ में छापा गया।

संस्कार विधि—जिसमें १६ संस्कारों का वर्णन है, प्रकाशित की गई।

इनके सिवा—आर्याभिविनय; बल्लभाचार्य मत खण्डन; स्वामीनारायण-मत खण्डन; वेदान्त भ्रान्ति-निवारण आदि छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी और छापी गईं। इसके बाद ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और वेद-भाष्य लिखे गए।

इस महान कार्य का आरम्भ सन् १८७५ से हुआ और इसके आठ वर्ष बाद सन् १८८३ में उनकी मृत्यु हुई। इस प्रकार ८ वर्षों में उन्होंने यजुर्वेद सम्पूर्ण और ऋग्वेद तीन-चौथाई का भाष्य किया और भूमिका लिखी, जो वैदिक साहित्य में अद्वितीय है।

यह समस्त साहित्य क्राउन साइज़ १६ पेजी के लगभग १७ हज़ार पृष्ठ का हो जाता है, जो जीवन के अन्तिम नौ वर्ष में उन्होंने लिखा था। इसी बीच में उन्होंने लगभग १९ हज़ार मील की यात्रा की (उन दिनों रेल का सर्वत्र सुभीता न था) ३००० व्याख्यान दिए, १२० शास्त्रार्थ किए। विद्यार्थियों को पढ़ाना; प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मुलाक़ात और चर्चा चलाना सब इसके साथ है।

इस प्रकार यह तेजस्वी तपस्वी इतना अधिक कार्य अपने जीवन के नौ वर्ष में कर गया, जिसने भारत की प्राचीन संस्कृति पर नवीन जीवन का सिक्का बैठा दिया। परन्तु उसकी मृत्यु के बाद आर्य-समाज जो उसका स्थानापन्न संस्था थी, कितना आगे बढ़ी और उसने क्या किया। इस पर विचार करना हमारे लिए परमावश्यक है। पाठकगण 'भविष्य' के आगामी अङ्क की प्रतीक्षा करें।

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

एक पापकामा व्यभिचारिणी ने उसे ख़रीद लिया!!!

उसने—

उसके महाकाय भवन को पुरातत्व विभाग का कौतुकागार बनाया। अधम प्राणी की तरह उस महान बूढ़े को पींजरे में एक कौतुक-द्रव्य की तरह उस कौतुकागार के द्वार पर लटका दिया। जिन जातियों की माताएँ उस पर मोहित थीं—वे—विज्ञान और अर्थवाद की अन्धी बालिकाएँ—गर्वित-ग्रीवा उन्नत किए—उसे और उसके घर को अपने मनोरञ्जन के लिए देखने आईं।

देव-दुर्लभ रजकण, अपदार्थ और सर्व सुलभ हुए।

रहस्यमयी ज्ञान-गुहा विदीर्ण हुई।

अगम्य पन्थ सर्वालोकित हुए।

वहाँ की अप्रतिभ रत्न-राशि उन बालिकाओं की क्रीड़ा-कन्दुक बनी।

युगों की परिश्रम-साध्य-सम्पदा जीर्ण-शीर्ण और छिन्न-भिन्न हो गई।

हठात् निर्धूमोदय हुआ।

* * *

हठात् निर्धूमोदय हुआ।

कर्मयोग का पुण्य पर्व आया।

कैलाशी रौद्र तेज से ओत-प्रोत हो, उत्तर के उत्तुङ्ग हिमाचल-शृङ्ग से उठ कर दक्षिण में आसीन हुए।

यम ने दक्षिण दिशा का त्याग किया।

भारत के भाग्य फिरे।

दक्षिण में भारत का ध्रुव उदय हुआ।

पुण्यवती पूना को तिलक मिला।

नव्य काल का महाभाग बाल वहाँ अवतीर्ण हुआ।

पृथ्वी ने उसे गरिमापूर्ण गाम्भीर्य दिया।

जल ने उसका हृदय निर्माण किया।

तेज स्वयं शुभ दृष्टि में आसीन हुआ।

वायु ने सूक्ष्म गमन की शक्ति प्रदान की।

आकाश ने विविध विषय व्यापकता दी।

चण्डातप ने दुर्धर्ष तेज दिया।

वज्रपाणि ने दन्तावलि को वज्रद्युति दी।

यम ने अमरत्व का पट्टा दिया।

महालक्ष्मी उसके दुपट्टे की कोर पर बैठी।

शारदा कण्ठ का हार बनी।

बालारुण ने रश्मियों के प्रतिबिम्ब से पगड़ी को लाल किया।

इस प्रकार वह देवजुष्ट सत्व तिलक बन कर भारत के मस्तक पर शोभायमान हुआ।

* * *

इस प्रकार वह देवजुष्ट सत्व तिलक बन कर भारत के मस्तक पर शोभायमान हुआ।

एक बार वह भूखण्ड सुशोभित हुआ।

करोड़ों हृदयों से चिरञ्जीव होने की कामनाएँ प्रस्फुटित हुईं।

वह, महाप्राण, महाघोष, महानस्वर, अरुण अग्नि-शिखा और धवल यश के समान केसरी आरूढ़ हुआ।

महामाया ने आँचल डाल कर बलैयाँ लीं। पद्मा शुभ्र शरद के श्वेत पद्म पर बैठ कर रत्न-थाल लेकर पूजने आई। सरस्वती ने वीणा लेकर ताल-स्वर-मूर्च्छनायुक्त विरदावली गाई। रणचण्डी ने भीषण अट्टहास किया, वह उल्लसित होकर, किलकारी भर कर, नर-खप्पर हाथ में लेकर उठी।

तब तक?

* * *

एशियाई महिला कॉन्फ़्रेन्स को फ़ारस का पत्र

तेहरान से फ़ारस की 'देश-भक्त महिला सभा' (Society of Patriotic Women) की अध्यक्षा ने, 'एशियाई महिला कॉन्फ़्रेन्स' की ऑनरेरी सेक्रेटरी रानी लक्ष्मीबाई जी, राजवाड़े को कॉन्फ़्रेन्स के निमन्त्रण-पत्र के उत्तर में निम्न आशय का पत्र भेजा है :—

आपका १४ वीं जून का सम्माननीय पत्र और मेरी विदुषी बहिनों की छपी हुई विज्ञप्ति, जिसमें पूर्वीय स्त्रियों के आवश्यक सुधारों और उनके सङ्गठन का सन्देश निहित था, मुझे यथा-समय प्राप्त हुई और मैंने उसे बड़े आदर और आनन्दपूर्वक पढ़ा, क्योंकि वह विभिन्न पूर्वीय राष्ट्रों की स्त्रियों के उद्भव की आशा का स्रोत थी; और उससे उनकी उत्सुकता और उत्साह टपकता था। पूर्वीय स्त्रियों में बहुत काल से इस प्रकार के सङ्गठन और सम्मेलन की आवश्यकता थी ; और यह बात बिलकुल स्वाभाविक थी और मैं आप सहृदय बहिनों को, पूर्वीय राष्ट्रों की स्त्री-कॉन्फ़्रेन्स के सङ्गठन और सञ्चालन के लिए, अपनी ओर से तथा 'फ़ारसी महिला-सभा' की सदस्याओं की ओर से हार्दिक धन्यवाद देती हूँ; और सर्व-शक्तिमान से उसकी सफलता के लिए प्रार्थना करती हूँ। आपने कॉन्फ़्रेन्स में सम्मिलित होने का जो निमन्त्रण-पत्र भेजा है, उसके लिए मैं आपकी अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, परन्तु दुर्भाग्यवश गत महासमर में मेरे कुटुम्ब को बहुत हानि और क्षति पहुँचने के कारण, मैं उसके सञ्चालन और प्रबन्ध के लिए बाध्य हो गई हूँ और इसलिए इस सम्मान और अपूर्व अवसर का लाभ उठाने में असमर्थ हूँ। तिस पर भी मैं कॉन्फ़्रेन्स में एक फ़ारसी प्रतिनिधि भेजने का प्रबन्ध अवश्य करूँगी और यदि यह सम्भव न हो सका, तो मैं विश्वास दिलाती हूँ कि भविष्य में हमारा एक प्रतिनिधि उसमें अवश्य उपस्थित रहेगा।

गार्हस्थ्य सुधारों की न्यूनता

यद्यपि सम्राट 'शाह' ने बुर्क़ा छोड़ कर बाहर निकलने की आज्ञा दे दी है और फ़ारसी महिलाएँ अपने पतियों के साथ थियेटर, सिनेमा, नाच-घरों और इसी प्रकार के अन्य तमाशों में जा सकती हैं, तो भी मुझे यह अत्यन्त शोक के साथ कहना पड़ता है कि फ़ारसी स्त्रियाँ, पेरिस की नए से नए फ़ैशन की नक़ल करने के लिए लालायित रहने पर भी, गार्हस्थ्य सुधारों की अवहेलना करती हैं ; और इसलिए वे सामाजिक और नागरिक अधिकारों और स्वयं अपने स्वत्वों की परवाह नहीं करतीं। यह हमारे देश की थोड़ी सी स्त्रियों के अथक परिश्रम, प्रबल और असाधारण क्षमता का ही परिणाम है कि यूरोप और एशिया की विभिन्न सभाओं का ध्यान हमारी ओर आकर्षित होने लगा है; और यदि हमारी सभा की सदस्याओं में वह सहनशक्ति और प्रतिरोध शक्ति न होती, जिसका परिचय उन्होंने उसके उद्देश्यों के प्रचार में दिया है, तो हमें बाहरी संसार से इस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करने का सुअवसर प्राप्त न होता। मैं आशा करती हूँ कि हम उन बहिनों की सहायता और सहानुभूति से, जो स्त्री-जाति की भलाई और उनके उत्थान का अविरल प्रयत्न कर रही हैं, अपनी कठिनाइयों और कुप्रथाओं पर विजय प्राप्त कर सकेंगी।

सामाजिक असुविधाएँ

मुझे विश्वास है कि आपको पूर्वीय स्त्रियों की उस कॉन्फ़्रेन्स का हाल ज्ञात होगा जो इसी वर्ष डिमॉस्कस (सीरिया) में नूरी ख़ानूम हिमादे बेग के सभापतित्व में हुई थी और जिसमें फ़ारस, ईजिप्ट, सीरिया, टर्की, पेलेस्टाइन, इराक़ और भारत की प्रतिनिधि महिलाएँ उपस्थित थीं और जिसमें कोदशे ख़ानूम अशराफ़, जो आजकल बेरूट में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, हमारी प्रतिनिधि होकर गई थीं। उपर्युक्त कॉन्फ़्रेन्स की कार्यवाही ने यह साफ़ ज़ाहिर कर दिया कि जब तक हम मुसलमान स्त्रियाँ अपने मनुष्यत्व के अधिकारों को प्राप्त न कर लेंगी, तब तक हम अपनी उन्नति और आदर्श के पथ पर कभी अग्रसर न हो सकेंगी और न अपनी ग़ुलामी की बेड़ियाँ ही काट कर फेंक सकेंगी। इसलिए हमें अपने वर्तमान पारिवारिक सङ्गठन की पोल खोलने और कॉन्फ़्रेन्स में निम्न प्रश्नों पर प्रस्ताव पेश करने के लिए बाध्य होना पड़ा था :—

(१) लड़कियों का विवाह १६ वर्ष की आयु से कम में न होने पावे।

(२) बहु-विवाह की प्रथा उठा दी जाय।

(३) स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा और उन्हें यूरोप और अमेरिका के सभ्य देशों की स्त्रियों की तरह सुविधाएँ देने के लिए तलाक़ के क़ानून में सुधार किए जायँ।

जिन-जिन देशों की प्रतिनिधि-महिलाएँ कॉन्फ़्रेन्स में उपस्थित थीं, उन सभी देशों की गवर्नमेण्टों से हमने एक विज्ञप्ति द्वारा इन माँगों पर विचार करने की प्रार्थना भी की थी। मैंने इस सम्बन्ध में 'अस्थायी पत्नियाँ' शीर्षक एक लेख लिख कर सुप्रसिद्ध स्थानीय पत्र शफ़ीक़े-ए-सुर्ख़ (Shaipek-i-Sorkh) में प्रकाशित किया था। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि उस समय तक खुले-आम कोई ऐसे विषयों पर विचार तक न कर सकता था; और यद्यपि मुझे इस सम्बन्ध में कुछ सुशिक्षित स्त्री-पुरुषों की सहानुभूति और सहायता प्राप्त हुई है, तिस पर भी उनमें से एक भी स्त्री या पुरुष मुझसे सहमत नहीं हैं। कुछ भी हो, इन तीन प्रश्नों के सम्बन्ध में इस कॉन्फ़्रेन्स में कोई प्रस्ताव पास न हो सका।

पूर्व की दूसरी सभाओं और सङ्घों के सम्बन्ध में मैं आपको नूरी ख़ानूम हिमादे बेग को पत्र लिखने का परामर्श दूँगी, क्योंकि पूर्वीय देशों को निमन्त्रण-पत्र उन्होंने दिए थे और उस सम्बन्ध में उन्हें ही अधिक ज्ञान है। कोदशे ख़ानूम अशराफ़ भी इस सम्बन्ध में आपको बहुत-कुछ बतला सकेंगी। यदि आपको समुचित ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है तो ग़ुलीउल्ला ख़ाँ कुरबान, जो बेरूट में औषधि-शास्त्र का अध्ययन कर रहे हैं, आपकी चिट्ठियाँ नूरी ख़ानूम हिमादे बेग और कोदशे ख़ानूम अशराफ़ के पास पहुँचा देंगे।

तुर्किस्तान की स्त्रियों के सम्बन्ध में, वहाँ बोल्शेविक राज्य की स्थापना के बाद से मुझे कुछ विशेष हाल मालूम नहीं है। बोल्शेविक उथल-पुथल के पहले ट्रान्स-काकेशिया की स्त्रियों की सङ्गठित संस्थाएँ थीं ; और कज़न की स्त्रियाँ बहुत उन्नत थीं। जिन शिक्षित कज़न स्त्रियों और लड़कियों से मुझे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ, उनमें से मैंने बहुतों के विचार समुन्नत पाए।

* * *

वैज्ञानिक उन्नति और मज़दूर

[श्री० प्रकाशचन्द्र जी, बी० ए०]

साम्यवादियों की बातें सुन कर बहुधा लोगों को यह सन्देह होता है कि वैज्ञानिक उन्नति ने ही मज़दूरों को पूँजीपतियों का ग़ुलाम बना दिया है। बहुधा लोग यह समझते हैं कि इस उन्नति से मज़दूरों को नुक़सान के अतिरिक्त कुछ भी फ़ायदा नहीं है। पर यह मत सर्वथा ग़लत है। विज्ञान स्वतः ख़राब नहीं है। असल बात इसके बिलकुल विपरीत है। विज्ञान से मनुष्य जाति मात्र का, न कि केवल जाति विशेष का, लाभ हो सकता है। हाँ, यह ज़रूर सच है कि आजकल के पूँजीवाद वाले समाज में इससे मज़दूरों को बहुत हानि भी पहुँची है।

विज्ञान के द्वारा ही हम लोग बहुत से ऐसे कार्य कर सके हैं, जो कि मनुष्य के बाहुबल के बाहर हैं। आधुनिक वैज्ञानिक उन्नति के पहिले लोगों की जो दशा थी, वह कई तरह से बहुत ख़राब थी। अकाल पड़ने पर दूर से अन्न ही नहीं आ सकता था और एक जगह के रहने वालों का जीवन केवल वहाँ उत्पन्न होने वाली वस्तुओं पर ही अवलम्बित था। अब हमको दुनिया की सारी चीज़ें बहुत सस्ती क़ीमत पर घर-बैठे मिल सकती हैं। हमारे पूर्वज रात-दिन के कठिन परिश्रम के बाद प्रकृति की भरी खानों में से केवल बहुत छोटे से भाग का उपभोग कर सकते थे। उनका परिश्रम केवल उनके बाहुबल पर आधार रखता था और उनके हथियार केवल अनगढ़ लकड़ी-लोहे या पत्थर के थे, जिनसे दिन-रात परिश्रम करने के बाद भी वे जीवन की सुविधा की चीज़ें नहीं पा सकते थे।

अब हमारी सेवा में प्रकृति की बड़ी-बड़ी शक्तियाँ उपस्थित हैं। बिजली, हवा, पानी, भाफ़ ऐसी शक्तियाँ हैं, जो करोड़ों मनुष्य की शक्ति को अपने सामने कुछ नहीं समझतीं, ये विज्ञान द्वारा ही हमारे वशीभूत होकर काम कर रही हैं। हम अब सब भारी तथा परिश्रम के काम इन शक्तियों को सौंप सकते हैं। पानी भरना, पङ्खा सींचना लोहा ठोकना, चूल्हा धौंकना और अन्य अगणित कष्ट-साध्य तथा परिश्रम के कार्य उन्नतिशील देशों में बहुत कम लोग करते हैं। यदि हम यह कहें कि मज़दूरों को विज्ञान का विरोध इसलिए करना चाहिए, चूँकि वह परिश्रम के कष्ट-साध्य कामों को संसार से उठाए दे रहा है, तो यह मूर्खता नहीं तो और क्या है ? विज्ञान में हमको मज़दूरों के दुःख दूर करने का बीज देखना चाहिए। थोड़े परिश्रम से ज़्यादा और अधिक उपयोगी उत्पत्ति हो, इससे अच्छी संसार के लिए और कौन सी बात हो सकती है ? पूँजीवादी देशों में विज्ञान का दुरुपयोग अवश्य किया जाता है, पर यह एक अलग बात है और उसके सुधार के उपाय दूसरे हैं। पर इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि वैज्ञानिक उन्नति द्वारा मज़दूरों का कल्याण होगा, यदि उसका सदुपयोग किया जाय !

गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में देशी रियासतों की ग़रीब प्रजा के प्रतिनिधि

महाराजा बड़ौदा

सर मिर्ज़ा मुहम्मद इस्माइल

नवाब सर मुहम्मद अकबर हैदरी

महाराजा दरभङ्गा

सर प्रभाशङ्कर पट्टनी

सैयद सर सुलतान अहमद
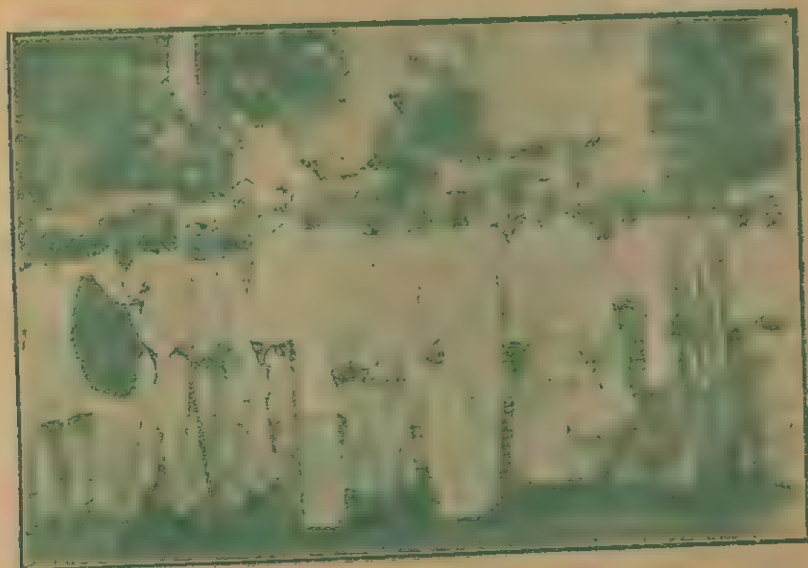
अभी हाल में मिस स्लेड (मीराबाई) कोकोनाडा के गाँधी-स्कूल का निरीक्षण करने गई थीं। यह चित्र उसी अवसर पर लिया गया था।

श्री० के० एफ़० नरीमैन
बम्बई के प्रचण्ड उत्साही और निर्भीक नेता

राजनीतिक क्षेत्र में भारतीय महिलाओं का पदार्पण

(२)

(३)

(१) श्रीमती शुकदेवी पालीवाल, जो आगरे की एक सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री हैं और जिन्हें हाल ही में छः मास को सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

(२) श्रीमती कोहली—आप दिल्ली के महिला-वालन्टियर दल की प्रधान सञ्चालिका थीं, आजकल राष्ट्रीय आन्दोलन में जेल में सज़ा पूरी कर रही हैं।

(३) श्रीमती विद्यावती—आप आगरे की एक उत्साही कार्यकर्त्री हैं।

(४)
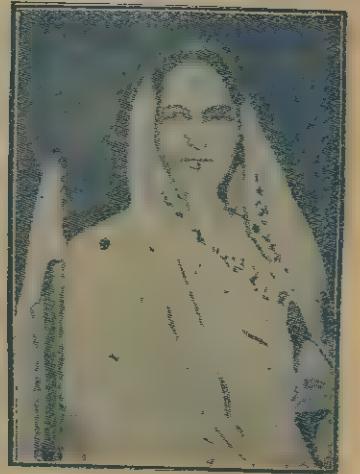
(४) श्रीमती पार्वती देवी डिडवानिया, जो दिल्ली की एक प्रभावशाली प्रचारिका हैं और जिन्हें दफ़ा १२४-ए में छः मास का दण्ड दिया गया है।

(५) श्रीमती मीराबाई, (मिस स्लेड) जो यूरोपियन होते हुए महात्मा गाँधी और भारतीय आदर्श की अनन्य भक्त हैं और तन-मन से भारत की सेवा में लगी हुई हैं;

(६) श्रीमती छोटाबाक घेलाभाई गाँधी मानिक झवेरी—आप भड़ोंच (गुजरात) की एक प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्त्री हैं।

(५)

(६)

उन्नति के मैदान में भारतीय महिलाओं की दौड़

श्रीमती मथुरा रामराव नादकर्नी
आप बम्बई के सुन्दरदास मेडिकल कॉलेज में अध्ययन करती हैं। और कन्वोकेशन में दो पदक प्राप्त किए हैं।

मिसेज़ ए० स्कॉट
आप नागापटम (मद्रास) के बॉय स्काउट की प्रेज़िडेण्ट हैं, और हाल ही में वहाँ की हेल्थ एसोसिएशन की भी वाइस-प्रेज़िडेण्ट नियत की गई हैं।

श्रीमती धर्मशीला जायसवाल, एम० ए०
आप बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने विलायत गई हुई हैं।

मिस एल० डी० मौत्रा, बी० एस-सी० (लन्दन)
आप वानीविलास इन्स्टाट्यूट, बङ्गलौर की हेडमास्टर नियत की गई हैं।
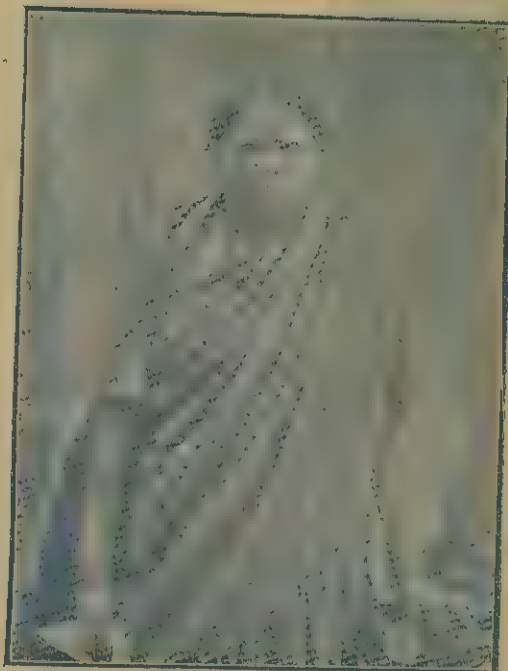
श्रीमती बी० शेषम्मा
आप कोकोनाडा (मद्रास) की सुप्रसिद्ध स्त्री-शिक्षा प्रचारिका हैं। 'हिन्दू-सुन्दरी' नामक एक मासिक पत्र का सञ्चालन भी करती हैं।

श्रीमती गौरी पवित्रम, बी० ए०, एल० टी०, एम० एल० सी०
आप चित्तूर (मद्रास) के गर्ल्स हाईस्कूल की अध्यापिका नियत की गई हैं।

श्रीमती अमिया बन्द्योपाध्याय, एम० ए०
आप स्टेट स्कॉलरशिप पाकर ऑक्सफ़र्ड में साहित्य

श्रीमती पार्वतीबाई कानिक
आप थाना (बम्बई) के काङ्ग्रेस स्वयंसेविका सङ्घ

मिस सिबिल मेल कुड
आप सिर्फ़ १६ वर्ष की आयु में न्यूडाटन की लिबरल

पशु-जगत के कुछ अद्‌भुत नमूने

गेरेञ्जा
यह अफ़्रीका में पाया जाने वाला एक बन्दर है, जिसके पैरों में अँगूठा नहीं होता

ओरङ्गूटन
यह लाल रङ्ग का बन्दर है, जो बनमानुस की तरह होता है।
यह सुमात्रा और बोर्नियो में पाया जाता है।

लम्बी नाक वाला बन्दर
यह भी बोर्नियो में पाया जाता है, इसका रङ्ग और आकृति दोनों ही बड़े चित्ताकर्षक होते हैं।

सफ़ेद बालों वाला गेरेञ्जा
यह लङ्गूर से मिलता जुलता एक बन्दर है, जो अफ़्रीका के न्यज़ा प्रदेश में पाया जाता है। इसके बालों से बने मफ़लर बहुत बढ़िया समझे जाते हैं।

नवीन अफ़ग़ानिस्तान के वर्तमान भाग्य-विधाता नादिरशाह

["राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी"]

संसार के उन मुकुटधारियों की सूची में, जिन्होंने अपने जीवन का कुछ भाग भारत की भूमि पर बिताया है तथा जो भारत के वैभवशाली इतिहास, अलौकिक कला, और विज्ञान का अध्ययन कर जीवन-संग्राम में प्रोत्साहित हुए हैं, उनमें अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह नादिर शाह का भी नाम है। निर्भीक, कार्यशील, निरभिमानी नादिरशाह को अफ़ग़ानिस्तान की गद्दी पर बैठने की कभी इच्छा या लालसा न थी। अफ़ग़ानिस्तान के राजाओं से उसका हरदम निकट का सम्बन्ध रहा, पर राजसिंहासन पर बैठने की अभिलाषा कभी उसके दिल में नहीं उठी थी।

नादिरशाह संयुक्त प्रान्त के देहरादून नगर में पैदा हुआ था। जब वह बीस वर्ष से कम का था, तभी उसके माता-पिता भारत छोड़ कर काबुल को चले गए थे। इसी तरह उसने अपने जीवन के लगभग बीस वर्ष भारत की रहस्यमयी भूमि पर बिताए हैं और देहरादून की वन्य सुन्दरता का आस्वादन किया है।

वह अफ़ग़ानियों की दुर्रानी जाति की मुहम्मदज़ई शाखा में पैदा हुआ है, और इसी तरह भूतपूर्व राजा अमानुल्ला और नादिरशाह के पूर्वज एक ही हैं। इसलिए इस नए परिवर्तन से राजवंश में कोई फ़रक़ नहीं हुआ है।

नादिरशाह के पिता भूतपूर्व सरदार मुहम्मद यूसुफ़ ख़ाँ थे, जो कि अमीर हबीबुल्ला ख़ाँ के दरबार में माननीय उमरा थे। इनका देश में बड़ा मान था और लोगों पर इनका बड़ा प्रभाव था। अमीर को स्वयम् इन पर इतना अधिक विश्वास था कि ये उनके हरदम के साथी थे और इनके पूछे बिना वह कोई भी काम नहीं करते थे। इनकी बुद्धिमत्ता के ही कारण अमीर हबीबुल्ला राज्य में शान्ति स्थापित कर सके थे और मज़बूत स्वाधीन राष्ट्र की नींव डाल सके थे। विदेशी कार्यों में स्वाधीनता दिखाने की नीति तो असल में अमीर हबीबुल्ला ने ही शुरू की थी, और इसमें सरदार मुहम्मद यूसुफ़ ख़ाँ का पूरा हाथ था। नादिरशाह ऐसे बेढब राजनीतिक आचार्य का लड़का है। उसने अपने पिता की कार्यशीलता, चारित्रिक दृढ़ता तथा राजनैतिक दूरदर्शिता पूरी तरह से पाई है।

भारत से काबुल पहुँचने पर युवक-नादिर फ़ौजी कॉलेज में भर्ती हुआ और पूरी शिक्षा पाने के बाद उसने अफ़ग़ानी फ़ौज में नए अफ़सर का पद ग्रहण किया। आरम्भ से ही उसने बड़ी बुद्धिमानी तथा साहस दिखाया और उसे बड़ी ज़िम्मेदारी के काम दिए जाने लगे। इसलिए पहले से ही अफ़ग़ानिस्तान की भीतरी और बाहिरी रक्षा की बातों से उसका सम्बन्ध हो गया था और इन समस्याओं को हल करने में वह बड़ी बुद्धिमानी दिखाता था। उसकी उन्नति बड़े वेग से हुई, पर वह उसके योग्य भी था। धीरे-धीरे वह अफ़ग़ानिस्तान का सेनापति हो गया। उसने फ़ौज में बड़े-बड़े सुधार किए। रङ्गरूटों की भरती, जो कि बड़ी निर्दयता के साथ की जाती थी, सुधारी गई। नाज व कपड़ा देने के बजाय, सेना में तनख़्वाह देने की व्यवस्था की गई। इसका पुराने लोगों ने, जो कि पुरानी संस्था के आविष्कारक थे, व जिससे उन्हें घूँस लेने का मौक़ा मिलता था, बहुत विरोध किया। नादिरशाह इस सब विरोध को साहसपूर्वक सहन करता रहा और अपने सुधारों के समर्थन में लगा रहा। धीरे-धीरे इन सुधारों ने जड़ पकड़ ली, सैनिकगण ज़्यादा सुखी रहने लगे, उनके वस्त्र ज़्यादा साफ़ रहने लगे, व उनकी आर्थिक दशा में भी बहुत कुछ सुधार हो गया। लोगों को वह इतना प्रिय हो गया, कि जब वह सेना के निरीक्षण के लिए देश के भिन्न-भिन्न भागों में जाता था, तो प्रत्येक स्थान में सिपहसालार के दर्शन के लिए औरतों और बच्चों की बड़ी भीड़ इकट्ठी हो जाती थी।

अमानुल्ला के शासन के पहिले चार वर्षों तक, राजा तथा सेना-नायक का सम्बन्ध सन्तोषजनक रहा। परन्तु तब भी विच्छेद करने वाले कारणों ने अपना काम शुरू कर दिया था। आख़िर अमानुल्ला ने विरुद्ध-दल का कहना मान लिया और नादिरशाह को सेना-नायक के पद से हटा कर, उसे अफ़ग़ानी-सरकार का प्रतिनिधि बना कर पेरिस भेजा दिया।

शीघ्र ही सेना उसके विरोधियों के हाथ में पड़ गई। उसकी बुरी हालत कर दी गई और उसमें घूँस तथा अन्य दुर्गुण फैल गए। उसका फल यह हुआ कि कुछ हज़ार क्रान्तिकारियों ने बलवा करके पूरी राज्य-सत्ता अपने हाथ में कर ली!

एकदम देखने से नादिरशाह उच्च कोटि का सैनिक नहीं मालूम होता, शक्ल से तो वह कॉलेज का एक प्रोफ़ेसर मालूम होता है। वह हिन्दुस्तानी व अङ्गरेज़ी बहुत अच्छी तरह से बोल लेता है। और साहित्य से उसे बहुत प्रेम है। वह सब के राजनैतिक विचारों को जानने के लिए इतना उत्सुक रहता , कि सबके विचार धैर्यपूर्वक अन्त तक सुन लेता है; चाहे वह नौकर, रसोइया या मोटर-ड्राइवर ही क्यों न हो। उसे फ़ोटोग्राफ़ी का बड़ा शौक़ है और उसके पास बहुत से बहुमूल्य केमरे हैं।

प्रधान मन्त्री मोहम्मद हाशिम ख़ाँ

मोहम्मद हाशिम ख़ाँ नादिरशाह के छोटे भाई हैं। ये अपने कठोर शासन के लिए प्रसिद्ध हैं। अमानुल्ला के राज्य-काल में ये जलालाबाद के गवर्नर थे, जहाँ पर उन्होंने डाकुओं के उपद्रव का अन्त करके, शान्ति स्थापित की थी। उनको इन्होंने कठिन दण्ड दिया था। फिर वे रूस में अफ़ग़ानिस्तान के प्रतिनिधि होकर रहे। नादिरशाह के सेना-नायक के पद से इस्तीफ़ा देने के बाद इन्होंने भी अपना त्याग-पत्र दे दिया था। ये देश के अन्दरूनी शासन के लिए विशेषकर योग्य समझे जाते हैं। कठोर दण्ड तथा दृढ़-शासन द्वारा वे अपना मान प्रजा में रख सके हैं।

सेना-मन्त्री शाह महमूद ख़ाँ

ये सेना-नायक तथा सेना-मन्त्री हैं। आप भी नादिरशाह के भाई हैं। आपने अमानुल्ला के राज्यकाल में फ़ौज में बहुत से ऊँचे पद सुशोभित किए थे तथा उन पर अपने साहस तथा बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था। अफ़ग़ानिस्तान इत्यादि पुराने देशों में, ऊँचे घराने का बड़ा मान होता है और इसी कारण अमानुल्ला के समय में कई सङ्कट पड़ने पर भी इनका बड़ा मान और दबाव रहा।

भूतपूर्व राजा के राज्य में ये बड़े योग्य समझे जाते थे, पर तब भी आप सेना-नायक नहीं हो सके थे। अफ़ग़ानिस्तान ऐसे देशों में जो व्यक्ति ज़्यादा योग्यता दिखाते हैं, उनसे लोगों को प्रतिस्पर्धा होने लगती है और लोग उन्हें गिराने के लिए उनकी बुराई करने लगते हैं। इसी कारण नादिरशाह व उनके भाइयों को बहुत सी कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ी हैं।

जब बच्चासक़ा ने अमानुल्ला पर धावा किया, तब उन्होंने बादशाह की बड़ी भक्ति से सेवा की। जब कि बच्चासक़ा आँधी की तरह राज्य की फ़ौजों को उड़ाता चला जा रहा था; और जब कि राज्य का सेना-नायक अपनी प्राण की रक्षा के लिए अपने घर में छुपा था और अमानुल्ला की सेना उसे छोड़ कर भाग रही थी, तो शाह महमूद ही एक ऐसा अफ़सर था, जो उसके साथ लड़ रहा था।

साहसी शाह महमूद ने अन्त तक बच्चासक़ा का स्वामित्व स्वीकार नहीं किया। जबकि दूर-दूर के प्रान्त बच्चासक़ा के क़ाबू में आ चुके थे और उसे राजा मान रहे थे, तब भी शाह महमूद निर्भीकता से अपने देश की सेवा के लिए उस समय तक लड़ता रहा, जब तक कि पूरा देश उसके भाई के हाथ में नहीं आ गया। नादिरशाह के आने पर शाह महमूद बच्चासक़ा की सेना को परास्त कर उसे, तथा उसके साथियों को जीता पकड़ लाया। अब वह अफ़ग़ानी सेनाओं का प्रधान सेनापति है।

अफ़ग़ानिस्तान का इतिहास यदि सच पूछा जाय तो अभी भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है, अतएव निश्चयपूर्वक किसी व्यक्ति-विशेष के सम्बन्ध में राय प्रगट करना एक बार ही असम्भव है। अफ़ग़ानिस्तान का इतिहास एशियाई देशों के इतिहास का परिशिष्ट होगा, इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता।

* * *

फ़रियादे बिस्मिल

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

तालीम का असर है जो साँचे में ढल गए,
मालूम क्या नहीं तुम्हें क्यों तुम बदल गए!

* * *

मिस्टर "फ़ुलर" का रब्त बढ़ा "शियोटहल" के साथ,
मोटर की दौड़ ख़ूब नहीं इस बहल के साथ!

* * *

हम उमीदे इरतिबाते दिल किसी से क्या करें,
दोस्ती दुनिया में ऐ "बिस्मिल" किसी से क्या करें!

* * *

दर्दमन्दे इश्क़ो-उलफ़त को सज़ा मिलती रही,
दम में उसके दम रहा जब तक दवा मिलती रही!
उनके बँगले पर था नूर आँखों में दिल में था सुरूर,
रोशनी बिजली की, बिजली की हवा मिलती रही!
दिल लगाने का नतीजा मैं यही देखा किया,
ज़िन्दगी में मुझको मरने की दुआ मिलती रही!
हज़रते "बिस्मिल" ने लूटे दर्दे उलफ़त के मज़े,
मुफ़्त इनको "डॉक्टर झा*" की दवा मिलती रही!

* प्रयाग के मशहूर डॉक्टर कृष्णाराम झा से मतलब है।

—लेखक

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आख़िर 'नेक्स्ट वीक' भी आ ही कूदा। न आता तो अच्छा था; क्योंकि—'जो मज़ा इन्तज़ार में पाया, वह नहीं वस्ले-यार में पाया।' अगर योंही इन्तज़ार ही इन्तज़ार में जीवन व्यतीत हो जाय तो अच्छा है। बहुत कट गई थोड़ी रही है, वह भी एक न एक दिन कट ही जायगी—रहेगी नहीं। नेक्स्ट वीक आते ही सवेरे चार बजे लोग-बाग आ धमके। बोले—'चलिए!' सवेरे उठने की इच्छा तो होती नहीं थी; परन्तु काँख-कूँख कर उठा। एक बार मन में आया कि अच्छे फँसे चट्टा गुरुघंटाल! आराम से दिन चढ़े तक पैर फैला कर सोते रहते थे, सो अब मुँह अँधेरे उठ कर दर-दर अलख जगाओ। अच्छा भाई, अब तो फँसे ही हैं, सब कुछ करना पड़ेगा। मुझे कुछ बदमज़े देख कर एक साहब बोले—इस समय तो आपको यह सब कुछ अखर रहा है; परन्तु इसका मज़ा तब मिलेगा जब काउन्सिल की कुर्सी पर जाकर बैठिएगा। जनाब, यह भी एक प्रकार की तपस्या है। बिना तपस्या के सुख नहीं मिलता।

मैंने कहा—तो तपस्या करना भी हमारा ही काम है, दूसरा यह काम कर भी नहीं सकता।

एक महाशय बोल उठे—इसलिए दूसरा काउन्सिल में जा भी नहीं सकता। कैसी कही! वाह-वाह! क्या कही है! ऐसी कही कि भोर हो गया।

मैंने कहा—भोर हो गया तो अब चलना चाहिए, देर करना ठीक नहीं। मगर यारो, यह क्या अन्धेर है, न बैण्ड बाजा, न शहनाई, न तुरही। उस रोज़ क्या-क्या प्रस्ताव पास हुए, कैसे-कैसे मसविदे बने और आख़िर में सब टाँय-टाँय फ़िश! हमारे ख़ज़ाञ्ची साहब कहाँ हैं?

ख़ज़ाञ्ची साहब बोले—मैं हाज़िर तो हूँ—कहिए!

मैं—क्यों साहब, यही आपका इन्तज़ाम है?

ख़ज़ाञ्ची—मेरा इसमें ज़रा भी क़ुसूर हो तो कहिए। जिन्हें बैण्ड ठीक करने के लिए रुपए दिए थे, वह अपनी ससुराल चले गए। उनके साले को ज़ुक़ाम हो गया है। ससुराल से तार आया था।

मैंने कहा—ज़ुक़ाम तो कोई ऐसा कठिन रोग नहीं है।

ख़ज़ाञ्ची—यह न कहिए। ज़ुक़ाम के बराबर कठिन रोग कोई है ही नहीं।

मैंने आश्चर्य से अन्य लोगों की ओर देखा—क्यों साहब, ज़ुक़ाम तो ऐसा भयानक रोग नहीं है?

एक महोदय बोले—ज़ुक़ाम होता तो बहुत ख़तरनाक है—ज़ुक़ाम से ही तपेदिक़, न्यूमोनिया इत्यादि कठिन रोग हो जाते हैं। जब तक ज़ुक़ाम बिगड़े नहीं, तभी तक ख़ैरियत है; लेकिन जहाँ बिगड़ा, बस पूरी मुसीबत समझिए।

मैं—तो क्या उनके साले का ज़ुक़ाम बिगड़ उठा है?

ख़ज़ाञ्ची—ऐसा ही मालूम होता है, नहीं तो तार क्यों आता?

मैंने कहा—ख़ैर, वह तो यों गए, मगर तुरही क्यों नहीं आई?

ख़ज़ाञ्ची—अजी जब बैण्ड नहीं तो ख़ाली तुरही किस काम की।

एक दूसरे महोदय बोल उठे—और काम की हो तब भी इस समय तुरही मिल नहीं सकती। सवेरे का वक़्त है, भङ्गी सब अपने-अपने काम में लगे हैं—हाँ, शाम होती तो मिल जाते!

मैं—और रोशनचौकी क्यों नहीं आई?

ख़ज़ाञ्ची—दिन में रोशनचौकी किस काम की, रोशनचौकी तो रात में मज़ा देती है। किसी दिन रात में निकलिए तो रोशनचौकी मँगा ली जाय।

मैं—बिना बाजों के तो मामला फीका रहेगा। लोगों को पता कैसे लगेगा कि दुबे जी वोट माँगने आ रहे हैं।

एक महाशय बोले—इसकी तो बहुत सहल तरकीब है—चार-पाँच आदमी आगे-आगे चिल्लाते चलें 'आए! आए!'

मैं—यह ठीक नहीं, इससे लोग कहीं होली का स्वाँग न समझ लें।

वह व्यक्ति—आप भी बच्चों की सी बातें करते हैं,

भविष्य

[श्री० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"]

जिस भूतल का भूत-काल
भव-विभव कहाया।
अपनी विजय-विभूति
किस लिए वह खोवेगा।
जिसने अपना वर्त्तमान
बहु-भव्य बनाया।
भला क्यों न उसका भविष्य
उज्ज्वल होवेगा?

आजकल कुछ फागुन थोड़ा ही है, जो होली का स्वाँग समझ लेंगे।

एक अन्य सज्जन बोल उठे—अच्छा आए-आए न कहा जाय। केवल एक आदमी आगे रहे। वह यह कहता चले—होशियार, ख़बरदार, सोने वाले जागो, दुबे जी महाराज आ रहे हैं।

यह राय सबको पसन्द आई। ख़ैर साहब, सब लोग चले।

एक आदमी ने आगे बढ़ कर वहीं हाँक लगाई। उसके आवाज़ लगाते ही बहुत से मकानों के द्वार फटाफट बन्द हो गए—औरतों ने अपने बच्चों को गोद में छिपा लिया। दो-चार आदमी डण्डे लेकर अपने-अपने द्वार पर आ बैठे और बोले—'आने देखो साले को, हम भी देखें कौन है, मालूम होता है कोई बड़ा शोरे-पुश्त डाकू है।" आवाज़ लगाने वाले महोदय तो आवाज़ लगा कर आगे बढ़ गए। जब हम लोग वहाँ पहुँचे तो एक बोले—क्यों भइया, यह दुबे जी कौन हैं?

हममें से एक बोला—दुबे जी हमारे नगर के एक प्रतिष्ठित आदमी हैं, वह काउन्सिल में जा रहे हैं, सो भाई आप सब लोग उन्हीं को वोट देना। देखो यह दुबे जी हैं। यह कह कर एक आदमी ने मुझे आगे कर दिया। सब देख-सुन कर वह आदमी बोला—यह अच्छी रही, एक आदमी अभी चिल्लाता गया है कि दुबे जी आ रहे हैं—होशियार रहो! हम समझे कि दुबे जी कोई चोर-बदमाश हैं। राम! राम!

मैंने कहा—यह तरकीब ठीक नहीं, उस आदमी को मना कर दो कि आवाज़ न लगावे।

उसी समय एक आदमी दौड़ाया गया। मैंने उस व्यक्ति से कहा—भाई साहब, मैं आपका एक तुच्छ सेवक हूँ, आप ही की सेवा करने काउन्सिल में दौड़ा जा रहा हूँ, इसलिए कृपा करके मेरा ध्यान रखिएगा।

वह व्यक्ति बोला—हाँ, यह तो ठीक है, मगर हमने तो आपको आज ही देखा है। अच्छा, अब दो-चार दिन आइए-जाइए तब बतायेंगे।

मैंने हाथ जोड़ कर कहा—भइया, मैं आपका दास हूँ। कहो तो दिन में दस बेर आपके दरवाज़े आऊँ—यह कौन सी बात है।

हमारे एक साथी ने लिस्ट और पेन्सिल निकाल कर कहा—हाँ, ज़रा अपना नाम तो बताना।

वह—मेरा नाम ननकू है।

"जाति?"

वह—धानुक!

मेरे मुँह से निकला—हैं; धानुक!

वह मेरी ओर घूर कर बोला—हाँ धानुक! कहिए।

यह सुनते ही मुझे क्रोध आ गया। मैंने कहा—क्यों बे आदमी नहीं देखता, नवाबज़ादा बना बैठा है, उठ के खड़ा हो अदब से।

वह बोला—क्यों खड़े हों? क्या तुम्हारे नौकर हैं! ऐसे ही बड़े अफ़लातूँ के नाती थे तो घर में ही बैठे रहते, काहे को सवेरे-सवेरे दरवाज़ा घेरा है। चले तो हैं भीख माँगने और अकड़ इतनी दिखाते हैं। जाओ, हम नहीं जानते वोट-फोट।

इतना सुनते ही मेरे साथी मुझ पर बिगड़े। बोले—यह आप क्या ग़ज़ब कर रहे हैं, इस तरह तो एक भी वोट नहीं मिलेगा।

मैं—तो क्या इस धानुक के हाथ जोड़ूँ?

एक सज्जन बोले—हाथ जोड़ना क्या, आपको पैर तक छूने होंगे। काउन्सिल में पहुँचना कुछ दिल्लगी थोड़ा ही है।

मैंने कहा—चाहे प्राण चले जायँ, पर मुझसे यह नहीं होगा। ऐसे काउन्सिल जाने पर लानत है!

मेरे साथी बोले—तब तो आप देश-सेवा कर चुके।

मैंने कहा—देश-सेवा करने के सैकड़ों मार्ग हैं।

साथी लोग बोले—सब से महत्वपूर्ण मार्ग तो यही है।

मैंने कहा—हाँ, महत्वपूर्ण तो बेशक है—जेब भी गरम होती है, इज़्ज़त भी बढ़ जाती है, साधारण नागरिक की अपेक्षा काउन्सिल का मेम्बर कुछ अधिक शक्तिशाली हो जाता है—ये सब बातें उसके महत्व को प्रकट करती हैं; परन्तु भाई, इस तरह दर-दर की ठोकरें खाकर, घुड़की-झिड़की सह कर, गाली-गलौज, जूती-पैज़ार करके काउन्सिल में पहुँचे भी तो किस काम का? हम ऐसी देश-सेवा को दूर ही से प्रणाम करते हैं।

यह सुनते ही सब चिल्ला उठे—आप देश-द्रोही हैं, धोखेबाज़ हैं।

वह सब चिल्लाते ही रहे और मैं जो रस्सियाँ तुड़ा कर भागा तो सीधे घर में आकर दम लिया। सम्पादक जी, यह काउन्सिल की मेम्बरी हमारे बस का रोग नहीं है।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

मज़दूर सरकार का सच्चा स्वरूप

[डॉक्टर "पोलखोलानन्द भट्टाचार्य" एम० ए०, पी० एच-डी०]

इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट में जब मज़दूर दल की जीत हुई, तो हम भारतीयों के हृदय में भी कुछ गुदगुदी सी उत्पन्न हुई थी। हमारे कुछ नेताओं ने भी समझा कि मज़दूर दल हमारी स्वतन्त्रता की माँग पर उदारता से विचार करेगा। अनेकों ने समझा कि भारत का सौभाग्य है जो रिफ़ॉर्म मिलने के समय मज़दूर दल शक्तिशाली हो गया है। एक समय था, जब कि मज़दूर दल कहता था कि उदार दल में जितने भी स्थायी गुण हैं, वे सब हममें मौजूद हैं और रेडिकल-दल में जो स्वतन्त्रता के लिए प्रेम का अङ्कुर था, उसे हमने बढ़ा कर एक वृक्ष के रूप में खड़ा किया है। परन्तु जब मज़दूर दल एक राज-सत्तात्मक संस्था का पोषक हो गया, तब उसमें स्वतन्त्रता का प्रेम न रह गया। यहाँ तक कि एक मज़दूर दल के ही लेखक ने लिखा है, कि हमने उदार-दल से केवल उसकी आर्थिक धारणा को लिया है और रेडिकल-दल में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिए जो अखण्ड प्रेम, तथा मत-स्वातन्त्र्य की अभिलाषा थी, उसे हम लोगों ने अपने अन्दर से निकाल दिया है।

मज़दूर दल की इस नीति के अनेकों उदाहरण हैं। सब से बड़ा अनुदार उदाहरण लियॉन ट्रॉटसकी का है। लियॉन ट्रॉटसकी किसी समय रूस के प्रथम श्रेणी के नेताओं में थे, किन्तु आज वे रूस से निर्वासित कर दिए गए हैं। उन्होंने चाहा कि इङ्गलैण्ड उनको शरण दे, परन्तु मज़दूर सरकार ने यह नामञ्ज़ूर कर दिया। इङ्गलैण्ड में एक क़ानून है, जिसे 'Right of Asylum' (शरणागतों का अधिकार) कहते हैं। इसका मतलब यह है कि इङ्गलैण्ड को इस बात का अधिकार है कि वह शरण में आए हुए किसी भी देश के आदमी को अपने यहाँ रख सकता है। उदार और अनुदार दल वालों ने, जिनमें स्वतन्त्रता से इतना प्रेम नहीं था, जितना मज़दूर सरकार का दावा है, अनेकों बार वैयक्तिक स्वतन्त्रता के पक्षपाती बन कर क्यसूथ विक्टर ह्यूगो, कार्ल मार्क्स गैरीबाल्डी इत्यादि को शरण में रहने की आज्ञा दी थी। मज़दूर सरकार ने किस कारण ट्रॉटसकी को शरण नहीं दी, इसका कारण कभी नहीं बताया गया। मज़दूर सरकार को इस बात का विश्वास दिला दिया गया था कि ट्रॉटसकी देश के सार्वजनिक जीवन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करेगा, न वह किसी आम सभा में भाग लेगा और न अपने को किसी प्रकार से प्रसिद्ध करने की चेष्टा करेगा। परन्तु तो भी मज़दूर सरकार ने उसे अपने यहाँ आने की आज्ञा क्यों नहीं दी, इसका कारण यह बताया जाता है कि सम्भव था कि कोई मनुष्य अपने स्वार्थों के लिए उसकी हत्या कर देता। पर ऐसे मनुष्य कौन हो सकते हैं, उसकी कोई ख़बर नहीं। पता नहीं सरकार को इसलिए भय था कि उसने रूस की क्रान्ति में भाग लिया था अथवा इस बात का भय था कि वह रूस की वर्तमान शासन प्रणाली के विरुद्ध था?

वर्तमान सरकार के अधीन जो पुलिस है उसने लोगों की स्वतन्त्रता में बड़ा विघ्न डाल रक्खा है। हम तो इस बात के सुनने के आदी हो गए हैं कि फ़लाँ-फ़लाँ किताबें ज़ब्त हो गईं—फ़लाँ किताबें या पत्र रोक लिए गए। पर इङ्गलैण्ड भी सरकार की ओर से की गई ऐसी ज़्यादतियों से बरी नहीं है। जो किताबें, जो अख़बार सरकार समझती है कि जनता तक नहीं पहुँचना चाहिए वे पोस्ट-ऑफ़िस में रोक लिए जाते हैं। इङ्गलैण्ड साम्यवाद का शत्रु है। वह साम्यवाद से बहुत डरता है। वह नहीं चाहता कि साम्यवादी विचार जनता में फैलें। इस कारण साम्यवादियों का एक अख़बार, जिसका नाम 'Inprecorr' है, सदैव देश में आने से रोक लिया जाता है। पोस्ट ऑफ़िस को ताकीद कर दी गई है कि उसकी तमाम प्रतियों को रोक ले। कहाँ मज़दूर दल की स्वतन्त्रता का पक्षपाती बनने का दावा और कहाँ यह विचार-स्वातन्त्र्य की हत्या!

हम अपने पाठकों को एक और उदाहरण दें, जिसका सम्बन्ध भारतवासियों से है। भारत की शिक्षित जनता मि० रेज़ीनॉल्ड रेनॉल्ड के नाम से अवश्य ही परिचित होगी। रेनॉल्ड ही, महात्मा गाँधी का वह पत्र, जिसमें उन्होंने सविनय आज्ञा-भङ्ग आन्दोलन की बात लिखी थी, वाइसराय के पास ले गए थे। उन्होंने कहा है कि वे जब से भारत से लौट कर इङ्गलैण्ड आए हैं तब से राजनैतिक विभाग के दो सी० आई० डी० सदा उनके पीछे-पीछे लगे रहते हैं। वे उनके तमाम भाषणों की रिपोर्ट करते हैं।

इससे रेनॉल्ड महोदय को कोई कष्ट तो नहीं, पर असुविधा अवश्य हुआ करती है। जब वे पहले ही दिन इङ्गलैण्ड पहुँचे। तो उन्होंने देखा कि दो आदमी उनके पीछे लगे हैं। दूसरे दिन भी यही बात हुई। उन्हें शङ्का हुई और उनसे पूछताछ करने के पश्चात रेनॉल्ड ने उनसे परिचय प्राप्त कर लिया। सी० आई० डी० के इन दो सिपाहियों का काम है, कि रेनॉल्ड जहाँ-जहाँ भी आएँ-जाएँ वे सदा उनके पीछे रहें। रेनॉल्ड ने उनसे एक प्रकार की मैत्री-सी कर ली है और उनसे एक दिन पहले ही अपने आने-जाने का प्रोग्राम वे बता देते हैं। एक दिन की बात है कि रेनॉल्ड मि० फ़ेनर ब्रॉकवे से हाउस ऑफ़ कॉमन्स में मिलने के लिए गए। मि० ब्रॉकवे ने रेनॉल्ड से एक-दो और सभासदों से मिलने लिए कहा। रेनॉल्ड ने रुकना चाहा, पर उन्हें याद आई कि सी० आई० डी० के आदमियों से तो उन्होंने ढाई बजे तक ही हाउस ऑफ़ कॉमन्स में रहने का ज़िक्र किया था, अतएव वे फ़ौरन दौड़ते हुए इनके पास गए और बतला आए कि अब वे यहाँ साढ़े चार बजे तक रहेंगे!!!

मज़दूर दल की इस सङ्कीर्णता को प्रदर्शित करने वाला हम एक और उदाहरण देते हैं, और वह बड़े महत्व का है। अभी हाल में लन्दन में एक अन्तर्राष्ट्रीय नीग्रो मज़दूर सभा करने का विचार उपस्थित किया गया था। ऐसी आशा की गई थी कि मज़दूर सरकार एक ऐसी सभा के होने में रुकावट डालने का तो ज़िक्र ही क्या, उसमें सब प्रकार से सहायता करने को तैयार होगी। परन्तु हुक्म बिलकुल इसके विपरीत सादिर हुआ। इस सभा के होने की आज्ञा ही न दी गई। 'डेली हेरल्ड' का कथन है कि बन्दरगाह के अफ़सरों को सरकार की ओर से इस बात की हिदायत कर दी गई थी, कि यदि कोई नीग्रो प्रतिनिधि देश में प्रवेश करना चाहे तो उसे रोक दिया जाय। मज़दूर-सरकार के ऐसे व्यवहार से उन तमाम लोगों की आशाओं पर बड़ा कुठाराघात हुआ है, जिन्होंने यह समझ रक्खा था कि मज़दूर सरकार यूरोप के मज़दूरों तथा अफ़्रीका और एशिया के मज़दूरों में ऐक्य स्थापन करने में सहायक होगी।

इन सब बातों से हमें एक परिणाम निकालना चाहिए कि हम 'मज़दूर' शब्द के नाम से धोखा न खा जायँ और हमेशा याद रक्खें कि एक राजसत्ता की पोषक मज़दूर सरकार केवल 'मज़दूर' नाम रखने के कारण ही मज़दूरों और ग़रीबों की पक्षपाती नहीं मानी जा सकती।

* * *

ब धा ई

इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के अर्थ-शास्त्र के प्रोफ़ेसर श्री० दयाशङ्कर दुबे, एम०ए०, एल्०एल्०बी० लिखते हैं :—

'भविष्य' के प्रथम तीन अङ्क यथासमय मिले। उच्च कोटि का सचित्र साप्ताहिक पत्र इतनी अच्छी तरह से निकालने के लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं इस पत्र की उत्तरोत्तर वृद्धि चाहता हूँ। नवम्बर मास के अन्त तक एक लेख भेजने का प्रयत्न करूँगा।

प्राचीन भारतीय शिल्पकला

[श्रीमती लक्ष्मी देवी, बी० ए०]

भारत की कलाओं में से जिस कला को पश्चिमी देशों के कलाविद् बहुत मुश्किल से समझते हैं, वह शिल्पकला है। उस कला की विचित्र मूर्तियाँ उनकी अद्भुत मुद्राएँ, उनके अनोखे विषय और आन्तरिक भावों का पत्थर पर दर्शाने का ख़ास तरीक़ा इतना अद्वितीय है, कि जो उससे परिचित नहीं है, उसके लिए उन्हें समझ सकना बहुत ही कठिन होता है। शिल्पकार को हर वक़्त आर्यों, धार्मिकों तथा ऋषियों के विचारों को रूप देना पड़ता था। वे अपनी कल्पना से कुछ नहीं करते थे। कल्पना की उत्पत्ति ऋषि-मुनि तथा साधकों के हृदय में होती थी। इस कल्पना को मूर्ति का रूप देना शिल्पकार का काम था। इसलिए शिल्पकार केवल सौन्दर्य की सेवा की इच्छा से अच्छे या बुरे स्वरूप नहीं बनाता था। जो भी मूर्तियाँ बनती थीं, जो भी प्रिय या भयानक भाव उनके मुख पर दर्शाए जाते थे, वे सब ऋषियों की आज्ञानुसार होते थे। कभी-कभी तो उन्हें देख कर अशिक्षित मनुष्य को बड़ा आश्चर्य होता है। कोई महाकाली या शिव या कालियामर्दन की मूर्तियाँ देखे, तो उनके युद्ध में होते हुए भी उनके मुख का शान्त भाव देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि शिल्पकार युद्धोचित वीर भाव को मुख पर नहीं ला सका है। पर यह ख़्याल ग़लत है। गीता का अनुकरण करने वाले मुनियों की आज्ञा द्वारा उन्हें मूर्तियों में यह दिखाना पड़ता था कि युद्ध में होने पर भी उनका चित्त शान्त है। इसलिए प्राचीन भारतीय शिल्पकला को समझने के लिए प्राचीन भारत का पूर्ण परिचय होना चाहिए। फिर स्त्रियों की आदर्श सुन्दरता दर्शाने में, तो पश्चिमीय शिल्पकारों ने ज़्यादातर नग्न सुन्दरता का सहारा लिया है। पर भारत में स्त्रियों की सुन्दरता तथा उनके अमूल्य भाव माता, शक्ति, माया इत्यादि रूपों में दर्शाए गए हैं, जो कि संसार में अद्वितीय हैं।

* * *

अतीत स्मृतियाँ

चन्द्रनगर

[श्री० रतनलाल जी मालवीय, बी० ए०]

फ़्रान्स का उपनिवेश चन्द्रनगर, जहाँ कुछ दिन पहले फ़्रान्सीसी और कलकत्ते की पुलिस ने चिटगाँव के उपद्रवकारियों पर धावा किया था, कलकत्ते से क़रीब २३ मील की दूरी पर हुगली नदी के दाएँ किनारे पर बसा हुआ है। उस समय की राजनीतिक घटनाओं में, जब कि बङ्गाल में यूरोप-निवासी पहले व्यापारिक आधिपत्य और बाद में साम्राज्य स्थापित करने की लालसा से पारस्परिक युद्ध में संलग्न थे, चन्द्रनगर का प्रधान हाथ था। उसका यह प्राचीन इतिहास अत्यन्त रोचक है।

हुगली, चिनसुरा और सीरामपुर की तरह बङ्गाल के इस छोटे से "फ़्रान्स" का भविष्य भी उतना ही उज्ज्वल और वैभवपूर्ण मालूम पड़ता था, जितना आजकल कलकत्ते का है। परन्तु सन् १७५७ में क्लाइव ने उस पर जो भयङ्कर आघात किया था उससे सदैव के लिए उसकी हड्डी टूट गई और भारत के सब से अधिक महत्वाकांक्षी, शक्तिशाली और बुद्धिमान फ़्रान्सीसी राजनीतिज्ञ डूप्ले का भारत में फ़्रान्सीसी साम्राज्य स्थापित करने का स्वप्न केवल स्वप्न ही रह गया।

वर्तमान चन्द्रनगर

आज चन्द्रनगर अपने वक्षस्थल पर, नदी के किनारे सुरक्षित और महलों की तरह बड़ी-बड़ी वैभवपूर्ण अट्टालिकाएँ लादे, शान्ति की मूर्ति बना हुआ खड़ा है। उसकी स्वच्छ और सुन्दर सड़कों के साथ बड़े-बड़े फ़्रान्सीसी राजनीतिज्ञों और जनरलों की स्मृतियाँ सन्निहित हैं और उसका गिरजा और दूसरी इमारतें उसके प्राचीन वैभव के अवशेष चिन्ह हैं। एक सुखद और महत्वाकांक्षी स्वप्न की रेखा—चन्द्रनगर—में यात्रियों और सौन्दर्योपासकों के आकर्षण के लिए अब भी यथेष्ट सामग्री मौजूद है। आस-पास के शहरों और व्यावसायिक केन्द्रों के लोग मिलों, फ़ेक्टरियों और सप्ताह भर के कोलाहलपूर्ण व्यापारिक जीवन से जी ऊब जाने पर शरीर को स्वस्थ और मन को शान्त करने के लिए उसी स्थान का आश्रय लेते हैं।

डूप्ले का आगमन

सन् १७३१ में डूप्ले के आने के पहले चन्द्रनगर एक नगण्य उपनिवेश था। पाण्डचेरी से शासन-भार सँभालने के लिए डूप्ले के यहाँ आते ही चन्द्रनगर में आश्चर्यजनक जागृति हो गई। उसका कारण यह था कि डूप्ले ने पाण्डचेरी में जो असीम सम्पत्ति एकत्रित की थी, वह सब उसने चन्द्रनगर को समृद्ध बनाने में लगा दी। उसने बहुत बड़ी तादाद में जहाज़ ख़रीदे, पूर्वीय मनुष्यों के हृदयों में विश्वास उत्पन्न किया और भारतीय व्यापारियों को आकर्षित किया। इससे फ़्रान्स का व्यापार ख़ूब चमका और लगभग ५० व्यापारिक जहाज़ दूर-दूर के बन्दरगाहों तक चक्कर लगाने लगे। चन्द्रनगर के इस व्यापारिक उत्कर्ष के परिणाम-स्वरूप पटना, ढाका और अन्य स्थानों में बहुत सी नई फ़ेक्टरियाँ भी खुल गईं। उसके सामने उस समय का कलकत्ता बिलकुल नगण्य था।

पतन का प्रारम्भ

चन्द्रनगर के ये वैभव, सुख और समृद्धि के दिन इने-गिने थे और डूप्ले के प्रस्थान के साथ ही इस उपनिवेश के भी ह्रास के चिन्ह प्रकट होने लगे। पूँजी की कमी, मरहठों के धावे, डूप्ले के स्थानापन्न अफ़सरों की निर्बलता आदि ऐसे ही कारणों में से थे, जिन्होंने उपनिवेश को खोखला करना प्रारम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त वहाँ अङ्गरेज़ों का प्रभाव भी दिन प्रति दिन बढ़ता जाता था।

अन्त में वही हुआ जो किसी प्रकार बहुत दिनों से टलता आ रहा था। यूरोप में फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड के बीच जो महासमर हुआ, भारत उसके प्रभाव से अछूता न बच सका; और अन्त में हुगली के युद्ध ने भारत में फ़्रान्सीसियों के भाग्य का निर्णय कर दिया। क्लाइव ने सन् १७५७ में उनके राजनीतिक पतन का डङ्का बजा ही दिया। उस समय इस फ़्रान्सीसी उपनिवेश का गवर्नर रेनॉल्ट था। हुगली में बङ्गाल के नवाब सिराजुद्दौला पर विजय प्राप्त कर लेने के उपरान्त क्लाइव को उन पर और रेनॉल्ट पर किसी षड्यन्त्र का सन्देह हुआ और उसने रेनॉल्ट से षड्यन्त्र स्वीकार करने के लिए कहा; परन्तु वह चुप रहा। परिणाम स्वरूप उन दोनों में वैमनस्य हो गया और युद्ध ठन गया। फ़्रान्सीसी नगर की रक्षा के लिए केवल १४६ यूरोपियन और ३०० भारतीय सिपाही थे। यहाँ एडमिरल वॉट्सन के नेतृत्व में बहुत से दक्ष अङ्गरेज़ सेनापति हुगली के लिए रवाना हो गए। उनके बाद क्लाइव भी स्वयं पहुँच गया। 'ओर लीन्स' क़िले पर धावा बोल दिया गया। पाँच दिन तक फ़्रान्सीसियों ने बहादुरी से क़िले की रक्षा की, परन्तु अन्त में उन्हें पराजय स्वीकार करनी पड़ी। इस पराजय के साथ ही फ़्रान्सीसी राज्य का अन्त हो गया। अपनी इस विजय के उपरान्त अङ्गरेज़ों ने वहाँ की बहुत सी वैभवपूर्ण इमारतों और क़िले को ढाकर उस सुन्दर उपनिवेश को तहस-नहस कर दिया।

पुनः फ़्रान्सीसी राज्य

सन् १७६३ की पेरिस की सन्धि के अनुसार सन् १७६५ में चन्द्रनगर फिर से फ़्रान्सीसियों को वापस दे दिया गया। परन्तु शर्त यह थी कि फ़्रान्सीसी लोग न तो क़िलेबन्दी करेंगे और न फ़ौज रक्खेंगे। इसके बाद भी कई बार चन्द्रनगर अङ्गरेज़ों के हाथ में आया और इङ्गलैण्ड में सन्धि होने पर फिर वापिस दे दिया गया। परन्तु सन् १८१६ से वहाँ के सरकारी दफ़्तरों पर फ़्रान्सीसियों का तिरङ्गा झण्डा लगातार फहराता रहा है।

फ़्रान्स के इस उपनिवेश का क्षेत्रफल प्रायः चार वर्ग मील है। दक्षिण में एक बड़ी खाई उसे अङ्गरेज़ी राज्य से जुदा करती है, और उत्तर में एक बड़े फाटक का खण्डहर।

सौन्दर्य-स्थल

वर्तमान चन्द्रनगर अत्यन्त रमणीक और साफ़-सुथरा नगर है; यूरोपियनों के रहने के स्थान तो सौन्दर्य के रम्य स्थल हैं। वहाँ की प्रसिद्ध इमारतें गवर्नमेण्ट हाउस, कॉन्वेण्ट, जेल और होटल—नदी किनारे एक अत्यन्त सुन्दर कुञ्ज में बनी हुई हैं। 'के डूप्ले' और 'र्‍यू मार्टिन' वहाँ की दो साफ़-सुथरी सड़कें हैं। 'र्‍यू मार्टिन' के सामने सन् १७२६ में बना हुआ सेण्ट लुइस का गिरजाघर और पास ही क़बरस्तान है।

चन्द्रनगर के वैभव के दिनों का अब अन्त हो गया है। इस छोटे से नगर की प्रशान्त मुद्रा देख कर किसके हृदय में यह भावना उठ सकती है कि किसी समय यह नगर एक लाख मनुष्यों की कोलाहलपूर्ण बस्ती था?

* * *

हमारे रेलवे स्टेशनों का दृश्य

सब लोग जिधर 'वह' है, उधर देख रहे हैं! हम देखने वालों की नज़र देख रहे हैं !!

देशी रियासतों का भविष्य

["बड़े पते की एक प्रजा"]

भारत के एक प्रसिद्ध विद्वान सर एम० विश्वेसरैया ने हाल में एक लेख लिख कर देशी नरेशों से इस बात की अपील की है कि वे नवयुग के साथ-साथ चल कर प्रजासत्ता और प्रजा की उन्नति में सहायक हों। वे लिखते हैं कि उनके अधिकारों की मुख्य आधार-शिला उनकी प्रजा की भक्ति और अनुराग है। अगर वे समय के साथ-साथ चलेंगे और राष्ट्र की उन्नति और सङ्गठन में सहायता करेंगे, तो वे अपने भावी स्थान को बहुत दृढ़ बना सकेंगे।

भारतीय रियासतों की प्रजा का स्थान बिलकुल विचित्र-सा है। साइमन कमीशन ने अपनी "समस्त भारत की एक सभा" वाली स्कीम में तो उनका अस्तित्व ही उड़ा दिया है। ऐसा समझा गया था कि कमीशन कोई ऐसी योजना ढूँढ़ निकालेगा, जिससे नियम-बद्ध शासन में उन्नति हो सकेगी; किन्तु कमीशन ने देशी रियासतों में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की चर्चा तक नहीं की, यद्यपि माण्टेगू चेम्सफ़र्ड रिपोर्ट में इस ओर सङ्केत किया गया था।

देशी रियासतों की प्रजा उतनी स्वतन्त्रता के साथ आन्दोलन नहीं कर सकती, जितनी कि ब्रिटिश भारत की प्रजा। इसका कारण यह है कि वे एक दोहरे शासन के अन्दर हैं। देशी रियासतों की कार्यकारिणी समितियाँ साधारणतया अनियमित हैं, और ज़्यादातर रियासतों में वे प्रजा के आन्दोलन को पूर्ण रूप से दबा सकती हैं। कभी-कभी तो इनके दबाने के लिए वे अनुचित उपायों तक को काम में ला सकती हैं। वर्तमान समय में ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के सामने स्वयं इतनी आपत्तियाँ उपस्थित हैं, कि उसे देशी रियासतों में हस्तक्षेप करने की फ़ुरसत नहीं है।

यदि आज देशी रियासतों की प्रजा अपने हक़ों और अधिकारों की माँग कर रही है, तो इसमें अनोखी कौन सी बात है? सभी नीचे पड़े हुए लोग ऊपर उठने को प्रयत्नशील हैं। प्रजा की ऐसी इच्छा राजाओं की स्वयं ऐसी इच्छाओं का प्रतिबिम्ब है। आज राजे और महाराजे अपने सन्धि-अधिकारों और हक़ों की ओर गवर्नमेण्ट का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। पर क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि आज से बीस-पच्चीस वर्ष पहले उनका क्या स्थान था? उन्हें बिना सरकार की आज्ञा के न एक-दूसरे से पत्र-व्यवहार करने की आज्ञा थी और न एक-दूसरे से मिलने की!!

यदि ब्रिटिश सरकार ने या साइमन कमीशन ने, एक फ़िडरल-यूनियन से देशी रियासतों तथा देश को होने वाले लाभों की ओर राजाओं का ध्यान आकर्षित किया होता और उनके सामने प्रत्येक रियासत में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन का प्रस्ताव रक्खा होता तो इसमें सन्देह नहीं कि उनकी अधिक संख्या ने इस पर विचार करने से इन्कार न किया होता। अब भी हमें यही आशा है, और अभी बहुत विलम्ब नहीं हुआ है।

अगर सरकारी सूबों की प्रजा ने उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्राप्त कर लिया तो देशी रियासतों की प्रजा भी नियम-बद्ध शासन की माँग करने में देर न लगाएगी। इस प्रकार के शासन का सब से पहला नियम यह है कि बिना प्रजा-प्रतिनिधित्व के टैक्स न दिया जाय। चूँकि देशी रियासतों की प्रजा के ऊपर दो शासन हैं और दोनों ही उससे कर वसूल करते और उसके लिए क़ानून बनाते हैं। इसलिए उनकी यह माँग होगी कि केन्द्रीय शासन और आन्तरिक शासन—दोनों में उनके प्रतिनिधि मौजूद हों—केन्द्रीय शासन में उसी हद तक, जहाँ तक कि उसकी कार्यवाहियों से उनका सम्बन्ध है।

यह बात, कि रियासतों के कुछ लोग कार्यरूप से फ़िडरल-गवर्नमेण्ट में भाग लेने के पक्ष में हैं, उनके समय-समय पर पास हुए प्रस्तावों से स्पष्ट है। जनवरी, सन् १९२८ में जो देशी रियासतों की प्रजा की सभा त्रिवेन्द्रम, ट्रावनकोर में हुई थी, उसमें फ़िडरल व्यवस्थापिका सभाओं में प्रतिनिधि भेजने की एक ब्योरेवार स्कीम उपस्थित की गई थी।

हिज़ हाइनेस महाराजा बीकानेर ने अपने एक भाषण में कहा था कि फ़िडरल-शासन-प्रणाली से राजाओं को तथा देशी रियासतों की सरकार को किसी प्रकार का भय नहीं है। अगर सरकार इस विषय में अपना विचार पक्का कर ले तो फ़िडरल के सिद्धान्तानुसार शासन सञ्चालन में आरम्भ से ही किसी प्रकार की बाधा न आवेगी।

शुरू-शुरू में जब तक कि तमाम रियासतें फ़िडरेशन में सम्मिलित न हों, साइमन कमीशन के प्रस्तावानुसार समस्त भारत के लिए एक चुनी हुई शासन सभा के प्रति कोई एतराज़ नहीं किया जा सकता। ऐसा समझा जाता है कि कुछ राजे प्रारम्भ ही से व्यवस्थापिका सभा में अपने प्रतिनिधि न भेजेंगे। कमीशन द्वारा प्रस्तावित सभा ऐसी रियासतों से सम्बन्ध रखने वाले प्रश्नों का विवेचन कर सकती है, किन्तु केवल कुछ ही समय के लिए। लेकिन अन्त में जब फ़िडरल यूनियन सुचारु रूप से कार्य करने लगे, उस समय उपरोक्त सभा के काम सीमित कर दिए जावें और साथ ही साथ नरेन्द्र-मण्डल का कार्य भी राजाओं के व्यक्तिगत अधिकारों और स्वत्वों की रक्षा तक ही परिमित रहे।

राजाओं को इस बात के समझने का प्रोत्साहन कभी नहीं दिया गया, कि नृशंस राज्य करने से नियम-बद्ध राज्य करना, अधिक गौरव और सुभीते की बात है। इस प्रजासत्ता के युग में यह बात असम्भव है कि सिवा पूर्ण सामर्थ्यवान और कुशल राजाओं के, कोई अपने स्थान पर पहले की तरह मौजूद रह सके। यह सम्भव है कि इन परिवर्तनों से सम्बन्धित कतिपय प्रस्ताव उन्हें पहले-पहले बहुत कड़ुवे प्रतीत हों, लेकिन गम्भीरतापूर्वक विचार करने से इस बात का उन्हें पता चलेगा कि शासक का चरित्र चाहे कैसा ही क्यों न हो, प्रजा की दृष्टि से नियम-बद्ध शासन ही सदा आदरणीय और उच्च श्रेणी का शासन समझा जायगा। यह बात सदा स्मरण रखनी चाहिए कि शासक में चाहे जैसी त्रुटियाँ क्यों न हों, राजा के ही वंशजों का राजगद्दी पर अधिकार और ख़ज़ाने की रक्षा, नियम-बद्ध शासन प्रणाली में—जो प्रजा की इच्छा के आधार पर निर्मित है—अधिक निश्चित है।

ऐसी आशा रक्खी जाती है कि देशी राजे कमीशन की राय के भुलावे में न आ जावेंगे, बल्कि मौक़ा हाथ से निकल जाने के पहले ही वे एक फ़िडरल व्यवस्थापिका सभा की शुरू से माँग करेंगे। एक सुदृढ़ व्यवस्थापिका सभा, जिसमें देश-हितकारी सभी पहलुओं के प्रतिनिधि उपस्थित हों, जिसकी कैबिनेट बिलकुल भारतीय हो और जो देशाधिपति की आज्ञा से जनता की इच्छाओं को कार्य रूप में परिणत करे, ऐसी संस्था उभय पक्ष के हित और देशभक्ति दोनों कारणों से देशी राजाओं को स्वीकृत होनी चाहिए। इस प्रकार देशी रियासत और ब्रिटिश भारत की प्रजाओं के एक नियम-बद्ध शासन-सूत्र में बँधने से राष्ट्रीय सङ्गठन की दृढ़ता में बड़ी उन्नति होगी और देशी नरेशों को भी इस बात का अभिमान होगा कि उनकी मातृभूमि के शासन में उनका भी हाथ है।

ऐसा समझा जाता है कि कुछ दूरदर्शी राजे अपनी तरफ़ से ही इस ओर क़दम बढ़ा रहे हैं। इस बात का स्मरण रखते हुए कि उनके अधिकारों की मुख्य आधार-शिला उनकी प्रजा की भक्ति और प्रेम है, यदि वे समय के साथ आगे बढ़ेंगे और देश में एकता और राष्ट्रीयता स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे, तो वे केवल अपनी महत्ता का ही परिचय न देंगे, वरन अपनी भावी स्थिति को भी दृढ़ कर सकेंगे।

जहाँ तक देशी नरेशों के सामने उनके आन्तरिक प्रबन्ध के उत्तरदायित्व का प्रश्न है, उन्हें जापान के सरदारों के महान त्याग की ओर दृष्टिपात करना चाहिए। जिन्होंने सन् १८७१ में अपने देश की पुकार पर अपने अधिकारों को केवल इसलिए छोड़ दिया कि उनके देश में एकता और सामाजिक सङ्गठन की पूर्ण वृद्धि हो सके। वह त्याग, जिसके लिए आज हम अपने देशी नरेशों का आवाहन कर रहे हैं जापानी भूमि-पतियों के त्याग से कहीं छोटा होगा। देशी नरेशों से जो कुछ भी करने के लिए कहा जाता है, वह केवल इतना ही कि वे अपना प्रबन्ध समयानुसार और अपनी प्रजा के सुयोग्य सज्जनों के सहयोग से करें। उनसे स्वयम् ही उन परिवर्तनों को करने की प्रार्थना की जा रही है, जो उन्हें कुछ वर्षों के बाद करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा!

हम एक प्रतिस्पर्धायुक्त और घोर परिवर्तनशील संसार में रह रहे हैं और जीवन-संग्राम प्रति दिन भीषण होता जाता है। रियासतों के लोग भी अपने आर्थिक जीवन को अच्छा बनाने के लिए स्वतन्त्रता और प्रोत्साहन चाहते हैं। उनके प्रति यह बड़ा अन्याय होगा यदि जाति की दौड़ में उन्हें पीछे रोक रक्खा जाय। जनता मसोलिनी अथवा कमालपाशा जैसे प्रजा-प्रेमी सर्वाधिकारियों की कभी-कभी अनुगामी भले ही हो जाय, पर ऐसे महान पुरुष संसार में बहुत थोड़ी संख्या में उत्पन्न होते हैं।

सब बातों को तौलने के पश्चात् यह अब एक अविवादग्रस्त बात है, कि प्रजासत्तात्मक शासन प्रणाली अपनी अनेक त्रुटियों के होते हुए भी, केवल एक ही शासन प्रणाली है; जिसमें वर्तमान समय में कोई जाति समृद्ध और समुन्नत हो सकती है। मि० फ़ोर्ड ने कहा है कि—"हम प्रजासत्तात्मक राज्य में विश्वास रखते हैं, क्योंकि एक बुद्धि की अपेक्षा सम्मिलित बुद्धि अच्छी है।" मनुष्यों के एक साथ विचार करने से, एक साथ उपाय करने से—और एक साथ काम करने से ही, बड़ी से बड़ी उन्नति सम्भव है। यह काम सब देशी नरेशों तथा उनकी प्रजाओं के साथ-साथ करने का है। इसी प्रकार हर एक रियासतें उन्नति करेंगी। देशी रियासतों और ब्रिटिश सूबों के सहयोग से देश बड़े वेग से आगे बढ़ेगा और शीघ्र ही सारा देश इतना समृद्ध और सुरक्षित हो जायगा, जितना एकतन्त्र-शासन के अन्दर कभी नहीं हो सकता।

* * *

मधुवन

[प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०]

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-साहित्य को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुवन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुवन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। पुस्तक को सचित्र प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

हिन्दू-त्योहारों का इतिहास

[श्री० शीतलासहाय, बी० ए०]

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है! वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १॥) ; स्थायी ग्राहकों से १=)

निर्मला

[श्री० प्रेमचन्द, बी० ए०]

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। पुस्तक का मूल्य २॥) ; स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र!

अपराधी

[श्री० यदुनन्दन प्रसाद श्रीवास्तव]

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉलस्टॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "ला मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोस्ट और ब्रियो का "डैमेज्ड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर अवलम्बित होती है।

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। मूल्य २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

लम्बी दाढ़ी

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव]

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है
बच्चों को भी—
बड़ी मासूम, बड़ी नेक
है लम्बी दाढ़ी!
अच्छी बातें भी बताती है,
हँसाती भी है—
लाख दो लाख में, बस एक—
है लम्बी दाढ़ी!!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और २,००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र!!

बाल-रोग-विज्ञानम्

[प्रोफ़ेसर धर्मानन्द शास्त्री]

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल-मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम ख़र्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्त्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है और वे शिशु सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार कर सकती हैं। मूल्य लागत मात्र २॥) रु०

देवताओं के गुलाम

[श्री० सत्यभक्त]

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामे एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कुकर्मों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। पढ़िए और आँसू बहाइए!! मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २।)

चुहुल

[श्री० त्रिवेणीलाल श्रीवास्तव, बी० ए०]

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ।॥) केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

[इन प्राप्त-पत्रों का उत्तर व्यक्तिगत समझना चाहिए]

"प्रिय सम्पादक जी,

मेरी आयु १६ वर्ष की है। और मेरे विवाह को हुए ७ वर्ष हो गए। परन्तु आज तक मैंने अपनी स्त्री का मुख तक नहीं देखा है। मेरे माता-पिता ने मुझसे बिना ही पूछे मेरा विवाह कर दिया था। तब मुझे किसी प्रकार का ज्ञान भी न था। अब मैंने इस विषय पर विचार किया है। अख़बारों और पुस्तकों में भी पढ़ा है कि जवान स्त्री-पुरुषों को परस्पर एक-दूसरे को पसन्द करके विवाह करना चाहिए। मैं इस समय एफ़० ए० में पढ़ रहा हूँ और विचार बी० ए० तक तो पढ़ने का है ही, आगे ईश्वर की इच्छा। मेरी इच्छा है कि मैं अपने पसन्द की लड़की से विवाह करूँ और इस स्त्री को स्त्री ही न समझूँ। अब उसके पत्र भी आने लगे हैं। लिखने का ढङ्ग बहुत ही करुण और मर्मस्पर्शी है, पर भाषा और अक्षर उतने शुद्ध नहीं। उन्हें देख कर हृदय पर एक बोझ तो उत्पन्न होता है—परन्तु उसके प्रति प्रेम का भाव नहीं पैदा होता! साथी लोगों में कोई तो मज़ाक़ उड़ाते हैं और कोई कहते हैं यार, पढ़ी-लिखी किसी मज़े की छोकरी से शादी करो। आप से सत्य बात भी मैं छिपाना नहीं चाहता, यहाँ मेडिकल स्कूल की एक लड़की से मेरा प्रेम-भाव भी हो गया है। वह भी मुझसे प्रेम करती है और यदि मैं यह प्रमाणित कर दूँ कि प्रथम स्त्री से मेरा कोई सम्बन्ध न रहेगा, तो वह मुझसे विवाह करने को तैयार है। आपने संसार के ऊँच-नीच देखे हैं, इसलिए मैंने मन की बात आपको लिख दी है कि आप मुझे उचित सलाह दें, कि मैं क्या करूँ? और मेरा कर्त्तव्य क्या है? मेरी आत्मा तो उसे स्त्री मानने को राज़ी ही नहीं होती, जिसे न कभी देखा न सुना। मैं इस बात में स्वतन्त्र हूँ कि जिसे चाहूँ विवाहूँ। आशा है, आप मेरी द्विविधा को मिटावेंगे। कृपा कर मेरा नाम पता—यदि मेरा पत्र आप प्रकाशित करें, तो प्रकट न करें।

[illegible]

......................"

* * *

नोट—प्यारे युवक, विवाह की गम्भीरता पर और स्त्री जाति के प्रति पुरुषों के उत्तरदायित्व पर विचार करते हुए, तुम्हें इस विषय का निर्णय करना उचित है। यह सत्य है कि यह विवाह तुम्हारी अनुमति के बिना उस समय हुआ, जब कि तुम अबोध बालक थे। और अब तुम्हारा प्रेम एक अन्य युवती से भी हो रहा है। परन्तु, विचारणीय बात तो यह है कि अधिकांश भारतवासियों का मत है कि विवाह के बीच में 'प्रेम' मुख्य प्रश्न नहीं होना चाहिए। 'प्रेम' का स्थान तो विवाह में सिर्फ़ इतना ही है, जितना रसोई में नमक का, जो स्वाद मात्र उत्पन्न कर देता है। विवाह का मतलब हिन्दू सिद्धान्त के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति है। इन चार पदार्थों की प्राप्ति के लिए ही विवाह होता है—यदि इनकी प्राप्ति की चेष्टा में प्रेम के विपरीत भी चलना पड़े तो स्त्री-पुरुषों को चलना चाहिए। प्रेम का इस प्रकार का बलिदान हमें इतिहास में भी मिलता है। राम का सीता-त्याग, जसवन्तसिंह की रानी का पति का तिरस्कार और अन्य भी ऐसी ही घटनाओं की कमी नहीं।

हमारी निजी सलाह तो यह है कि तुम प्रथम अपनी उस स्त्री से परिचय प्राप्त करो। तुम लिखते हो कि उसके पत्रों का विषय करुण है, यह उसकी उस वेदना का चिन्ह है, जो तुम्हारे उपेक्षा-भाव से अब उसके हृदय में उत्पन्न हुई है—जब कि उसे तुम्हारे और अपने सम्बन्ध का ज्ञान हुआ है। और यह निश्चय ही उसके हृदय का अप्रकट शुद्ध प्रेम का चिन्ह है। वह निश्चय ही तुम्हें प्यार करती है। यह सम्भव है कि तुम भी उसे देखने और बर्तने पर प्यार करने लगो। तुम्हारा कहना है कि लिखने में बहुत त्रुटियाँ हैं। यह भी सम्भव है कि वह शिक्षिता न हो। परन्तु देखो, स्त्री का शिक्षिता होना उतना आवश्यक नहीं है, जितना सुशीला और सेवाव्रती। तुम्हारी माताएँ और दादियाँ तो सुशिक्षिता न थीं, पर उन्होंने जैसी सरलता से गृहस्थी की भारी गाड़ी चलाई, क्या तुम्हारे शिक्षित मित्रों की सुशिक्षिता स्त्रियाँ वैसा चला रही हैं?

रह गई तुम्हारे उस प्रेम की बात, जो तुमने किसी मेडिकल स्कूल की कन्या से किया है। देखो, पहली बात तो यह है कि विवाह की मर्यादा में प्रेम पीछे और कर्त्तव्य प्रथम है। दूसरे प्रेम एक ऐसा धोखा देने वाला पदार्थ है, कि ख़ासकर नवयुवक इसमें बहुत ठगे जाते हैं। प्रायः उन्हें प्रेम के नाम पर हल्दी की गाँठ ही मिलती है। युवकों को हमारा तो खुला उपदेश है कि वे प्रेम के पचड़े में ज़्यादा न पड़ें। और ज्ञान-वृद्धि में मन लगावें। प्रत्येक युवक के सम्मुख जीवन-युद्ध है। विद्या पढ़ना, जीविका योग्य कार्य चुनना, उसमें सफल होना, ये तीन बातें साधारण नहीं। हम देखते हैं कि युवकों को इनकी परवाह नहीं होती, वे "प्रेम-प्रेम" चिल्लाते हैं और पेट पीटते फिरते हैं। पीछे उनका प्रेम भूखा-नङ्गा फिरते-फिरते असमय में ही मर जाता है। इसलिए मित्र! जिससे तुम्हारे सम्बन्ध स्थापित हो गए हैं, उनसे ही प्रेम करो। प्रेम को बिखेरते न फिरो, न प्रेम की दुकान लगाओ, न उसका जुआ खेलो। उसे सब ख़तरों से बचा कर, छिपा कर रक्खो—जब सब धन नष्ट हो जाता है, तब प्रेम-धन मनुष्य को बड़ी तस्कीन देता है।

देखो, कल्पना करो! तुम्हारे बहिन-भाई, पुत्र आदि यदि कुरूप और मूर्ख हों—या दुर्गुणपूर्ण हों, तो क्या तुम उन्हें छोड़ कर पड़ोस के सुन्दर बच्चे या किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम करोगे? वही ममता तुम्हें उस स्त्री से भी करनी चाहिए, जो वास्तव में तुम्हारी पत्नी हो चुकी है। तुम्हें इस बात पर भी विचारना चाहिए कि कम्बख़्त हिन्दू-धर्म और हिन्दू क़ानून एक बार जिस स्त्री का ज्ञान या अज्ञान में किसी भाँति विवाह हो जाय, उसे सब तरह उसी पुरुष से बाँध देता है। उसके लिए जीवित रहते, सब द्वार बन्द हो जाते हैं! इसलिए बिना अपराध उस बालिका पर निठुर न बनो, यदि वह परिश्रमी, दयालु, प्रेमी, गृह-कार्यों में चतुर, स्त्री-गुणों के योग्य है तो तुम उसे ही ग्रहण करो। सन्तोष और धैर्य बड़ी चीज़ हैं, इन्हें न खोओ, लिप्सा और महत्वाकांक्षा में मत उड़ो। अलबत्ता यदि वह तुमसे प्रेम न करती हो और जैसे तुम्हारे विपरीत विचार हैं, वैसे ही उसके भी हों, वह उतनी साहसी भी हो—जितना कि समाज की इस रूढ़ि के विरुद्ध खड़े होने के लिए होना अनिवार्य हो—तो तुम अपनी इच्छानुसार उसे त्याग कर अपने पसन्द की स्त्री से विवाह कर सकते हो। परन्तु स्मरण रखना—रूप, शृङ्गार, बनाव और मधुर बातें ही स्त्री का भूषण नहीं। पत्नित्व के गुण बड़े गम्भीर हैं। तुम सदैव ही अपनी माता, दादी और अन्य वृद्ध बुज़ुर्ग स्त्रियों के गुणों पर विचार करना और देखना कि जो भी स्त्री तुम्हारी पत्नी कहावे—उसमें उनके जैसे मौलिक गुण हैं भी या नहीं। आशा है तुम पथ-भ्रष्ट होकर चिन्ता पल्ले न बाँधोगे। जब तक देश का क़ानून इतना अन्धा है, तब तक इसके अतिरिक्त दूसरी कोई सलाह सम्भव भी तो नहीं है!

—सम्पादक

* * *

"श्रद्धेय सम्पादक जी,

मैं आपसे कुछ परामर्श लेना चाहता हूँ। ६ मास हुए मेरा विवाह हो गया है। मेरी उम्र इस समय २४ वर्ष की है। यह विवाह मेरे पिता ने ज़बर्दस्ती मेरी रुचि के विपरीत किया है। सङ्कोच और विनयवश मैंने चुप-चाप उनकी आज्ञा मान ली थी—मगर अब मेरे मन में द्वेष और क्रोध की आग धधक रही है और मैं घर छोड़ कर चले जाने और जन्म भर अज्ञात रहने की बात सोच रहा हूँ। एक यूरोपियन लड़की से मैंने विवाह करने का निश्चय कर लिया था। वह मुझे पसन्द भी ख़ूब थी और प्रेम भी करती थी। अब भी वह मेरी प्रतीक्षा में है और उसे इस बात का ज़रा भी ज्ञान नहीं, कि मैं इस प्रकार फँस गया हूँ। मैंने समझा था कि इतने आग्रह से यह विवाह किया जाता है, तो कुछ तो ख़ास बात होगी। सम्भव है लड़की ख़ूब योग्य हो। मगर मैंने देखा—इसमें न रूप है न गुण! स्वभाव में भी एक ही अक्खड़ और लड़ाका सी प्रतीत होती है। संस्कार इतने बुरे हैं कि आते ही अलग होने की सम्मति दे रही है। नित्य नई वस्तुओं की फ़र्माइशों का ताँता लगा रहता है। मैं अनसुनी करता हूँ, तो निखट्टू आदि उपनामों से याद करती है। कहती है, जब कमाते नहीं और मुझे जो मैं चाहती हूँ, वस्तु तक नहीं लाकर देते—तो ब्याह क्यों? वह बारम्बार उन विवाहार्थी युवकों की एक सूची सुनाती है, जो उसके पिता के पास आते थे। वह मेरा तिरस्कार भी करती है; शायद प्रेम भी नहीं करती और मैं तो करता ही नहीं, यह साफ़ बात है। पर अब मैं करूँ क्या, यह समझ में नहीं आता। मैं घुल-घुल कर सूख रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि पिता के विरुद्ध आचरण करूँ—मगर सहनशीलता की भी एक हद होनी चाहिए। क्या आप मुझे उचित सलाह देंगे?

—एक युवक"

* * *

नोट—भाई, मैं तुम्हारे प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता हूँ! और तुम्हारे कष्ट को भी समझता हूँ। पर मैं तुम्हारा ध्यान अपने उन विचारों की तरफ़ भी आकृष्ट किया चाहता हूँ, जो अभी मैंने एक युवक के पत्र के उत्तर में ऊपर प्रकट किए हैं। तुम भी उन पर विचार करो।

(शेष मैटर ३६वें पृष्ठ पर देखिए)

केसर की क्यारी

दम मेरा ख़ञ्जर में है, ख़ञ्जर कफ़े-क़ातिल में है !

सादगी पर उसके मर जाने की हसरत दिल में है,
बस नहीं चलता, कि फिर ख़ञ्जर कफ़े-क़ातिल में है।
देखना तक़रीर की लज़्ज़त, कि जो उसने कहा—
मैंने यह जाना, कि गोया यह भी मेरे दिल में है।
गरचे है किस-किस बुराई से वले बाईं हमा,
ज़िक्र मेरा मुझसे बेहतर है, कि उस महफ़िल में है।
रञ्ज रह क्यों खींचिए वामाँदगी को इश्क़ है
उठ नहीं सकता, हमारा जो क़दम मञ्ज़िल में है।

—"ग़ालिब" देहलवी

* * *

किस ग़ज़ब में है, किस आफ़त में है, किस मुशकिल में है !
दम मेरा ख़ञ्जर में है, ख़ञ्जर कफ़े-क़ातिल में है !
काम क्या करना है, कोई काम अब करना नहीं,
क्या मेरे दिल में है, अब मरने की हसरत दिल में है !
अब हमारे क़त्ल की दे, तो शहादत कौन दे ?
एक दम था तेरा का, वह क़ब्ज़ए-क़ातिल में है।
ढूँढ़ने वाली निगाहों का, पता मिलता नहीं;
इसके दिल में, उसके दिल में, कोई किसके दिल में है !
ग़ैर को इज़्ज़त मिली, मुझको हुई ज़िल्लत नसीब,
यह भी है, वह भी है, सब कुछ, आपकी महफ़िल में है।
आप हैं मेरी नज़र में, आप मेरे दिल में हैं,
कौन है किसकी नज़र में, कौन किसके दिल में है !
बज़्मे जानाँ का तसौवर, कोई दम जाता नहीं,
हम अकेले हैं, हमारा दिल भरी महफ़िल में है !
आज ख़ुश तक़दीर मुझ-सा कौन है, कोई नहीं ;
दिल मेरे पहलू में, वह दिलबर भी मेरे दिल में है !
ऐशो-राहत लुत्फ़ का, बाहर पता मिलता नहीं,
तेरे कूचे में, तेरे घर, में तेरी महफ़िल में है !
कोई आया भी, मिला भी, अपने घर भी चल दिया ;
जो मेरे दिल में तमन्ना थी, वह अब तक दिल में है !
सैकड़ों आज़ार हैं, आलाम हैं, अफ़कार हैं ;
एक मेरी जान, वह भी "नूह" किस मुशकिल में है !

"नूह" नारवी

सर में सौदा इश्क़ का है, और वह सूरत दिल में है,
यक क़दम है रास्ते में, यक क़दम मञ्ज़िल में है !
किस क़यामत की कशिश, यह जज़्बए कामिल में है,
तीर उनके हाथ में, पैकाँ हमारे दिल में है !
आँख से सीने में, सीने से कभी यह दिल में है ;
क्या कहूँ तेरी तमन्ना को, कि किस मुश्किल में है !
सौ बहारें उस पै सदक़े, लाख गुल उस पर निसार ;
वह लहू का एक क़तरा, जो हमारे दिल में है !
अल्ला-अल्ला यह मेरी, मश्क़े-तसव्वर का कमाल ;
मैं हूँ इस महफ़िल में, और महफ़िल की महफ़िल दिल में है !
हर तड़प के साथ आ जाती है मुझमें ताज़ा रूह ;
शुक्र है इतना असर तो, इज़्तिराबे-दिल में है !

—"जिगर" मुरादाबादी

* * *

देखना है किस क़दर दम, ख़ञ्जरे-क़ातिल में है ?
अब भी यह अरमान, यह हसरत दिले-बिस्मिल में है !
ग़ैर के आगे न पूछो, इसमें है एक ख़ास राज़;
फिर बता देंगे तुम्हें, जो कुछ हमारे दिल में है !
खींच कर लाई है सब को, क़त्ल होने को उमीद,
आशिक़ों का आज जमघट, कूचए क़ातिल में है !
वह कभी आते नहीं, वह हमको बुलवाते नहीं,
क्या कहें, किससे कहें, हसरत जो मेरे दिल में है ?
एक जानिब है मसीहा, एक जानिब है क़ज़ा;
किस कशाकश में पड़ी है, जान किस मुश्किल में है !
जामे-जम की कुछ हमें हाजत नहीं, परवा नहीं;
दोनों आलम का खिंचा, नक़्शा हमारे दिल में है !
एक से करता नहीं क्यों, दूसरा कुछ बातचीत;
देखता हूँ मैं जिसे, वह चुप तेरी महफ़िल में है !
ज़ख़्म खाकर भी उसे है, ज़ख़्म खाने की हवस !
हौसला कितना तड़पने का तेरे 'बिस्मिल' में है !!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

यह बहरे-ग़म में थी उम्मीद, अब मैं पार उतरता हूँ;
डुबो दी "नूह" ने कश्ती, मेरी टकरा के साहिल से !!

—"नूह" नारवी

* * *

न हो इतना मिज़ाजे यार, बरहम नालए दिल से,
यह बेचारा अभी वाक़िफ़ नहीं, आदाबे-महफ़िल से !
मुझे अब ख़ौफ़ ही क्या, हिज्र में तनहाइए दिल से ?
हज़ारों महफ़िलें लेकर, उठूँगा तेरी महफ़िल से !
समझ कर फूँकना इसको, ज़रा ऐ दाग़े नाकामी ;
बहुत से घर भी हैं आबाद, इस उजड़े हुए दिल से !
मुहब्बत में क़दम रखते ही, गुम होना पड़ा मुझको;
निकल आईं हज़ारों मनज़िलें, एक-एक मनज़िल से !
बढ़ी जब वहशते दिल, गिर पड़ेंगी आप ज़ञ्जीरें !
तेरे दीवाने डरते हैं, कहीं क़ैदे सलासिल से ?

—"जिगर" मुरादाबादी

* * *

कभी सुन ले, अरे ओ साज़े-इशरत छेड़ने वाले !
अजब आवाज़ आती, है, मेरे टूटे हुए दिल से !
बुझी जाती हैं शमएँ, दिल हिले जाते हैं सीनों में !
बता देना, कि वह उठ कर चला है, कौन महफ़िल से ?
नहीं है आह में तासीर, ख़ैर, अच्छा निकलवा दो—
बता देता मैं वर्ना, इस तरह उठते हैं महफ़िल से !!
अरे ओ पूछने वाले, सबब मेरे न हँसने का,
मुझे रोना भी अब, मुद्दत हुई, आता है मुशकिल से !
ज़माने में, जब आधी रात को होता है सन्नाटा !
बराबर आपकी आवाज़, आती है मेरे दिल से !!

—"जोश" मलीहाबादी

* * *

नज़र मिलती है आसानी से, दिल मिलता है मुशकिल से !

ख़ुदा महफ़ूज़ रक्खे, इश्क़ के जज़बाते-कामिल से—
ज़मीं गर दूँ से टकराई, जहाँ दिल मिल गया दिल से !
हिजाबे नाज़ से आरास्ता होकर, न यों निकलो !
अभी वाक़िफ़ नहीं अच्छी तरह, तुम रङ्गे-महफ़िल से !!
किसी को और क्या समझा सकेगा, मुद्दआ दिल का;
समझता हो, ख़ुद अपने दिल की बातों को जो मुशकिल से !
अभी पैवस्त हैं, काफ़िर निगाहें, शोख़ अदा उनकी !
किसी दिन देखना, बिजली गिराऊँगा इसी दिल से !
सँभल ऐ गरदिशे-दौराँ ! यही मञ्ज़ूर है उनको ;
दिखा दूँ, उठने वाले, किस तरह उठते हैं महफ़िल से !
यह क्या था, यूँ तो वह देखा किए, दम तोड़ना मेरा !!
मगर अँगड़ाई ली, एक रूह निकली, जब मेरे दिल से !
"अज़ीज़" ए-जाज़ हुस्ने-रूह परवर की, कोई हद है ?
हज़ारों दिल बना डाले, मेरे टूटे हुए दिल से !!

—"अज़ीज़" लखनवी

* * *

वह फ़रमाते थे यह अरमाँ, तेरा निकलेगा मुशकिल से ;
जब आँखों से लड़ीं आँखें, तो दिल ख़ुद मिल गया दिल से !
जो आए हों दिले-पुर-आरज़ू में, सख़्त मुशकिल से ;
उन्हें मैं दिल से जाने की इजाज़त दूँ, तो किस दिल से ?
सुनी यह बात हमने इश्क़ में, एक मर्दे-कामिल से ;
नज़र मिलती है आसानी से, दिल मिलता है मुशकिल से !
कोई पहलू रहा बाक़ी, न अब इज़हारे-उलफ़त का ;
वह दिल लेकर यह कहते हैं, हमें चाहोगे किस दिल से !
हमारा ख़ाक उड़ाना, क्या यूँही बेकार जाएगा ;
रहेंगे तेरे दिल में, हम निकल कर तेरी महफ़िल से !
ख़ुदाई भर का ज़िम्मा तो, यह बन्दा ले नहीं सकता ;
कोई चाहे न चाहे आपको, चाहूँगा मैं दिल से !
हमें ऐ आरज़ूए-मर्ग, अब क्या हुक्म होता है ?
क़ज़ा से हम मिलें पहिले, कि पहिले अपने क़ातिल से !
मुझे सब नियामतें दुनिया की मिल जाएँ, जो मिल जाएँ—
तेरी जादू भरी आँखें, मेरे हसरत भरे दिल से !

कोई क्योंकर वहाँ जाए, अगर जाए तो किस दिल से ?
पलट कर, आज तक दुनिया न आई कूए-क़ातिल से !
जनाज़ा वह उठाए भी, तो क्यों कर, और किस दिल से ?
गिराए जिसने दो आँसू, मेरे मरने पे मुशकिल से !
बहुत मुशकिल हुआ, दरियाए-ग़म का पार कर जाना ;
कि मौजें दूर रखती हैं, मेरी कश्ती को साहिल से !
वह लड़ते हैं लड़ें, हमको नहीं ग़म इस लड़ाई का;
असर होगा मुहब्बत में, तो दिल मिल जायगा दिल से !
न आना हो उन्हें तो, वह न आने की ख़बर कर दें ;
यहाँ एक-एक घड़ी इस फ़िक्र में, कटती है मुशकिल से !
वह क्यों नाराज़ होते हैं, वह क्यों बेज़ार होते हैं ?
चला जाता हूँ महफ़िल से, उठा जाता हूँ महफ़िल से !
नहीं मालूम, अब क्या इनक़िलाब आएगा आलम में—
मरीज़े-ग़म तुम्हारा, साँस भी लेता है मुशकिल से !
इधर मैं डूबने आया हूँ, दरियाए-मुहब्बत में !
उधर दुनिया बुलाती है, मुझे घबरा के साहिल से !
जो तुम मुझसे मिलो, तो कुछ यक़ीं आए मुहब्बत का !
यह क्योंकर मैं समझ लूँ दिल में अब, दिल मिल गया दिल से !
कोई देखे तो अन्दाज़े-करम, बेदर्द क़ातिल का !
बुरा भी जानता है वह, मगर मिलता है "बिस्मिल" से !!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

कुछ चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकें

भारत की विदुषी नारियाँ (गं० पु० मा०) ॥)
भारतवर्ष की सच्ची देवियाँ (शि० व्र० ला० व०) ॥=)
भारतीय ललनाओं को गुप्त-सन्देश (गं० पु० मा०) ॥)
भारतीय स्त्रियाँ („ „) १॥)
भारतीय विदुषी (इं० प्रे०) ॥)
भारतीय स्त्रियों की योग्यता (दो भाग) (ख० वि० प्रे०) १)
भार्या-हित (न० कि० प्रे०) ॥=)
भार्या हितैषिणी (प्रा० वा० मा०) १॥)
मँझली दीदी (इं० प्रे०) ॥)
मणिमाला („) २)
„ (चाँ० का०) ३)
मदालसा (ख० प्रे०) ।-)
मदर-इण्डिया (उमा नेहरू) २॥)
मदर-इण्डिया का जवाब (गं० पु० मा०) १)
मनोरञ्जक कहानियाँ (चाँ० का०) १॥)
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ (चाँ० का०) २)
मनोरमा (चाँ० का०) २॥)
महारानी पद्मावती (ल० प्रे०) ।=)
महारानी वृन्दा (एस्० आर० बेरी) १)
महारानी शशिप्रभा देवी (बेल० प्रे०) २)
महारानी सीता (ब० प्रे०) २॥), २॥), ३)
महासती अनुसूया (एस्० आर० बेरी) ॥=)
महासती मदालसा (ब० प्रे०) १॥), २), २)
महिला-महत्व (हिं० पु० भं०) २)
महिला-मोद (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥)
महिला-व्यवहार-चन्द्रिका (रा० द० अ०) ॥)
महिला-स्वास्थ्य-सञ्जीवनी (गृ० ल०) १)
मङ्गल-प्रभात (चाँ० का०) ४)
मञ्जरी (गं० पु० मा०) १), १॥)
माता का पुत्री को उपदेश (रा० प्रे०) ≡)
माता के उपदेश (सर० भं०) ।-)
माता-पुत्र (ना० स० ऐ० सं०) १॥=)
मानव-सन्तति-शास्त्र (ख० वि० प्रे०) १)
मानिक-मन्दिर (चाँ० का०) २॥)

मिलन-मन्दिर (हिं० पु०) २॥)
मितव्ययिता (हिं० ग्रं० र०) ॥=)
मीराबाई (ख० वि० प्रे०) ≡)
मुस्लिम-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
मूर्खराज (चाँ० का०) २)
मेहरुन्निसा (चाँ० का०) ॥)
युगलाङ्गुलीय (इं० प्रे०) ।-)
युवती-योग्यता (इं० प्रे०) =)
युवती-रोग-चिकित्सा (चि० भ० गु०) ।=)
रजनी (उ० ब० आ०) ॥=)
रमणी-कर्त्तव्य („) ॥=)
रमणी-पञ्चरत्न (रा० प्रे०) ।)
„ „ (उ० ब० आ०) २॥)
रमणी-रत्नमाला (रा० प्रे०) ।=)
उमासुन्दरी (ह० दा० कं०) २)
रङ्गभूमि (गं० पु० मा०) ४), ६)
राजस्थान की वीर रानियाँ (ल० रा० स०) १)
राधारानी (ख० वि० प्रे०) ।=)
रामायणी कथा (अभ्यु०) १)
लक्ष्मी (इं० प्रे०) ॥=)
„ (ओं० प्रे०) ।)
„ (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥=)
लक्ष्मी-चरित्र (स० सा० प्र० मं०) १)
„ „ (उ० ब० आ०) ।=)
लक्ष्मी-बहू (गृ० ल०) ।≡)
लक्ष्मी-सरस्वती सम्वाद (न० कि० प्रे०) ≡)
लच्छमा (ह० दा० कं०) १॥)
ललना-बुद्धि-प्रकाशिनी (मा० प्र० बु०) ।=)
ललना-सहचरी (सु० ग्रं० प्र० मं०) १॥)
बनमाला (चाँ० का०) ३)
वनिता-विनोद (मा० प्र०) ॥=)
वनिता-विलास (गं० पु० मा०) ॥)
बनिता-हितैषिणी (रा० प्रे०) ।=)
विजया (गं० पु० मा०) १॥)
विदुषी-रत्नमाला (रा० प्रे०) ।=)
विदूषक (चाँ० का०) १)
विधवा-आश्रम (ना० द० स०) ४)
विधवा-कर्तव्य (हिं० ग्रं० र०) ॥)
विधवा-प्रार्थना (ग्रं० मं०) ।-)
विधवा-विवाह-मीमांसा (चाँ० का०) ३)
„ „ (ब० प्रे०) ।=)
विमला (गु० च०) ॥)
विरागिनी (ह० दा० कं०) १)

विलासकुमारी या कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥)
विवाहित प्रेम (स० आ०) १॥), १॥)
विष्णु-प्रिया चरित्र (इ० प्रे०) =)
वीर और विदुषी स्त्रियाँ (ल० बु० डि०) ॥)
वीर माताएँ („) ॥)
„ „ (श्या० ला० व०) ॥)
वीर माता का उपदेश (अ० सा० मं०) ।)
वीरबाला पञ्चरत्न (उ० ब० आ०) २)
वैधव्य कठोर दण्ड है या शान्ति (सा० भ० लि०) ॥≡), १।-)
वैवाहिक अत्याचार और मातृत्व (अ० प्रे०) ॥)
वीर वीराङ्गना (उ० ब० आ०) ॥)
वीराङ्गना (स० आ०) ॥)
व्यञ्जन-प्रकाश (न० कि० प्रे०) ।)
व्यञ्जन-विधान (दो भाग) १)
शकुन्तला की कथा (रा० द० अ०) ।-)
शकुन्तला (ब० ऐं० कं०) ॥=)
„ (न० द० स० ऐं० सं) ॥)
„ (ब० प्रे०) २), २), २॥)
„ (पॉपूलर) ॥=)
„ (ल० प्रे०) ।)
शर्मिष्ठा (उ० ब० आ०) ॥)
शर्मिष्ठा-देवयानी (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
शान्ता (चाँ० का०) ॥)
शिव-सती (ब० प्रे०) ॥=)
शिशु-पालन (इं० प्रे०) १)
„ „ (स० आ०) १)
शैलकुमारी (चाँ० का०) २)
शैलबाला (ह० दा० कं०) १)
शैव्या (उ० ब० आ०) ।), ।=)
शैव्या-हरिश्चन्द्र (ब० प्रे०) २॥), २॥), ३)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
सखाराम (चाँ० का०) १)
सचित्र द्रौपदी (बेल० प्रे०) ॥)
सच्ची देवियाँ (ला० रा० सा०) ॥)
सच्ची स्त्रियाँ („) ॥)
सती (इं० प्रे०) ।)
सती-चरित्र-चन्द्रिका (नि० बु० डि०) २)
सती-चरित्र-संग्रह (ल० प्रे०) २)
सती-चिन्ता (ब० प्रे०) १॥), १॥), २)

सती चिन्ता (उ० ब० आ०) ॥)
सती दमयन्ती (ब० प्रे०) ॥=)
„ „ (उ० ब० आ०) ॥)
सती-दाह (चाँ० का०) २॥)
सती पद्मिनी (गृ० ल०) ।=)
सती पार्वती (गं० पु० मा०) १)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
„ „ (ब० प्रे०) २), २), २॥)
सती-बेहुला (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
सती मदालसा (उ० ब० आ०) ॥)
सती-महिमा (उ० ब० आ०) १), १॥)
सती-वृत्तान्त (ला० रा० सा०) १॥)
सती शकुन्तला (ब० प्रे०) ॥=)
सती शुक्ला (उ० ब० आ०) ॥)
सती-सतीत्व (उ० ब० आ०) १)
सती-सामर्थ्य („) ॥), १)
सती सावित्री (ना० द० स० ऐं० सं०) ।=), १)
„ „ (ब० प्रे०) ॥=)
„ „ (उ० ब० आ०) ॥)
सती सीता (ब० ऐं० क०) ॥=)
„ (ब० प्रे०) ॥=)
„ (उ० ब० आ०) १)
सती सीमन्तिनी (एस्० आर० बेरी) ॥)
सती सुकन्या (ब० प्रे०) १), १॥), १॥)
„ (उ० ब० आ०) ॥)
सती सुचरित्र (उ० ब० आ०) १)
सती सुनीति (उ० ब० आ०) ॥)
सती सुलक्षणा (एस्० आर० बेरी) ॥)
सप्त-सरोज (हिं० पु० ए०) ॥)
सफल-गृहस्थ (सा० भ० लि०) ॥)
सदाचारिणी (गृ० ल०) १।-)
सफल माता (चाँ० का०) २)
समन्वय (भा० ग्रं० भं०) ३॥)
समाज की चिनगारियाँ (चाँ० का०) ३)
सरल व्यायाम (बालिकाओं के लिए) (इं० प्रे०) ।=)
सन्तति-विज्ञान (वे० प्रे०) ॥=)
सन्तान-कल्पद्रुम (हिं० ग्रं० र०) १)
सन्तान-शास्त्र (चाँ० का०) ४)
संयुक्ता (पॉपूलर) ॥=)
संयोगिता (मा० का०) ॥)
संयोगिता (ह० दा० कं०) ।-)
संसार की असभ्य जाति की स्त्रियाँ (प्रका० पु०) २॥)

सावित्री (ब० प्रे०) ।=)
„ (हिं० पु० भं०) ।)
„ (हरि० कं०) १॥)
सावित्री और गायत्री (बेल० प्रे०) ॥)
सावित्री-सत्यवान (उ० ब० आ०) ॥)
„ „ (ब० प्रे०) १॥), १॥), २)
„ „ (स० आ०) ॥), १)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
सीता की अग्नि-परीक्षा (स० सा० प्र० मं०) ।-)
सीता-चरित्र (इं० प्रे०) १॥)
सीता जी का जीवन-चरित्र (रा० प्रे०) १)
सीताराम (उ० ब० आ०) १)
सीता-वनवास (इं० प्रे०) ॥=)
„ „ (ब० ऐं० को०) ॥=)
„ (स० आ०) ॥=, १=)
सीता (सचित्र) (ब० प्रे०) २॥)
सीतादेवी (पॉपूलर) ॥=)
सुकुमारी (ओं० प्रे०) ॥=)
सुखी गृहस्थ (प० ला० सिं०) ॥)
सुघड़ चमेली (गं० पु० मा०) =)
सुघड़ दर्ज़िन (इं० प्रे०) ॥)
सुघड़ बेटी (सर० प्रे०) ॥)
सुनीति (उ० ब० आ०) ॥)
सुभद्रा (ब० प्रे०) २), २), २॥)
सुहागरात (इ० प्रे०) ४)
सुर-सुन्दरी (ग्रं० मं०) ।-)
सुशीलाकुमारी (सर० प्रे०) ॥)
सुशीला-चरित (इं० प्रे०) १॥)
सुशीला विधवा (वें० प्रे०) १)
सुन्दरी (श्री० वि० ल० ज्ञा० मं०) ॥)
सुभद्रा (पॉपूलर) ॥=)
सौभाग्यवती (इं० प्रे०) १)
सौरी-सुधार (इं० प्रे०) ॥)
सौन्दर्यकुमारी (ओं० प्रे०) ≡)
स्त्रियों की पराधीनता (बद्रीनाथ भट्ट) ॥)
स्त्रियों की स्वाधीनता (श्री० वि० ल० ज्ञा० मं०) ॥)
स्त्री के पत्र (चन्द्रशेखर) १)
स्त्रियों के रोग और उनकी चिकित्सा (इं० प्रे०) १)
स्त्री-रोग-विज्ञानम् (चाँ० का०) ३)
स्त्री-उपदेश (न० कि० प्रे०) ।=)
स्त्री और पुरुष (स० सा० प्र० मं०) ।=)
स्त्री-कर्तव्य (ख० वि० प्रे०) ॥)
स्त्री-चर्या (ब० कं०) ≡)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

डॉक्टर—कहिए श्रीमती जी, आपके पति अच्छे हैं ? वही खाना खाते हैं न, जो मैंने उनके लिए बताया है ?

श्रीमती—नहीं, वह कहते हैं कि चार दिन और ज़िन्दा रहने की ख़ातिर, मैं भूखों मरना नहीं चाहता।

* * *

एक साहब बहादुर एकाएक अपनी लड़की के कमरे में घुस आए, जहाँ वह एक शिक्षक से पियानो बजाना सीखती थी। संयोगवश उस समय शिक्षक महाशय लड़की का चुम्बन ले रहे थे। यह हाल देख कर साहब बहादुर बिगड़ कर बोले—क्यों जी, क्या इसीलिए मैं तुमको तनख़्वाह देता हूँ ?

शिक्षक—(मुस्तैदी से) नहीं जनाब, यह काम तो मैं बिना किसी तनख़्वाह के ही करता हूँ।

* * *

एक साहब की सास साहबा को अपना अँगूठा चबाने की बुरी आदत थी। एक दिन साहब बहादुर ने इस आदत को छुड़ाने के लिए एक डॉक्टर से तरकीब पूछी। डॉक्टर साहब ने कहा—बुढ़िया के अँगूठे में कुछ लगा दो।

कई दिनों के बाद साहब बहादुर से जब डॉक्टर की मुलाक़ात हुई तो डॉक्टर ने पूछा—कहिए, आपकी सास की अँगूठा चबाने की आदत छूटी ?

साहब—धन्यवाद ! हमेशा के लिए छूट गई। हमने आप ही के कहने के अनुसार काम किया था।

डॉक्टर—आख़िर आपने उसके अँगूठे में क्या लगाया था ?

साहब—संखिया !

* * *

पति—क्या तुम माँ की तरह खाना बना सकती हो ?

पत्नी—क्यों नहीं ? बशर्ते कि तुम अपने बाप की तरह बदहज़मी बरदाश्त करना क़बूल करो।

* * *

मेम साहबा—(एक लँगड़े फ़क़ीर से) ले लँगड़े, एक पैसा ले। तेरे लँगड़ेपन पर मुझे तर्स आता है। ख़ैर, फिर भी अन्धा होने से तो लँगड़ा होना अच्छा है।

लँगड़ा—आप ठीक कहती हैं ; क्योंकि जब मैं अन्धा था तो लोग मुझे खोटा पैसा दिया करते थे।

* * *

ख़ुशामदी प्रेमी—(कमरे के भीतर आते हुए) प्रिये, तुम तो हारमोनियम ख़ूब बजाती हो। मैं बाहर खड़ा-खड़ा सुन रहा था।

प्रेमिका—मैं बजाती नहीं थी, बल्कि हारमोनियम पर की गर्द झाड़ रही थी।

* * *

ख़रीदार—तुमने कहा था कि मेरी दवा एक ही रात में फ़ायदा करती है। मगर कल मैंने उसे खाया, कुछ भी फ़ायदा न हुआ।

दवा बेचने वाला—मगर यह मैंने कब कहा था कि यह किस रात को फ़ायदा करती है ?

* * *

एक मशहूर दिल्लगीबाज़ बुढ़ापे में सख़्त बीमार पड़ा। उसने अपने एक मित्र से पीने के लिए दवा माँगी और हमने भूल से दवा के बदले ग्लास में स्याही भर कर उसे पिला दी। जब उसे अपनी ग़लती मालूम हुई तो चिल्ला कर बोला—अरे दोस्त, ग़ज़ब हो गया, मैंने तुमको दवा के बदले स्याही पिला दी।

दिल्लगीबाज़—ख़ैर, कोई हर्ज नहीं, मैं ब्लॉटिङ्ग पेपर के चार तख़्ते (शीट) खा लेता हूँ।

* * *

प्रेमी संसार-भ्रमण के लिए रवाना हो रहा था और उसकी प्रेमिका उसके गले में बाँह डाल कर स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्म पर सिसक रही थी।

प्रेमिका—प्यारे, तुम मेरा दिल लिए जाते हो। अब तो मेरे लिए जीना मुश्किल हो गया। अच्छा जाते तो हो, मगर एक बात का वायदा किए जाओ कि हर शहर से, जहाँ तुम ठहरोगे, मुझे पत्र भेजते रहोगे।

प्रेमी ने अपनी प्रेमिका को हृदय से लगा कर चुम्बन लेते हुए पूछा—क्यों प्यारी, क्या सचमुच प्यार के मारे ऐसा कहती हो या तुम्हें संसार के विभिन्न देशों के डाक के टिकटों को इकट्ठा करने का शौक़ है ?

* * *

फ़रियादे बिस्मिल

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

कुछ सड़क में आ गए घर, कुछ सड़क में नप गए !
इश्तिहाराते तबाही अब गज़ट में छप गए !
पेट के धन्धों से फ़ुरसत हमको मिलनी है मुहाल,
सब से अच्छे वह थे जो दिन-रात हर को जप गए !
आप थे जीने की ख़ातिर, चार-छः दस-बीस दिन,
सब थे मरने के लिए, आख़िर को सब मर खप गए !
हज़रते "बिस्मिल" अब अपनी और क्या तौक़ीर हो
हमको है इसकी मसर्रत "पानियर" में छप गए !

* * *

जो ये फ़रमाते हैं, यह ऐसे हैं वह ऐसे हैं !
वह बुरे सब से हैं, वह कौन बहुत अच्छे हैं !
हमको दुनिया के झमेलों का कुछ अहसास नहीं !
एक कोने में अलग सब से जुदा बैठे हैं !!
मुद्दआ कुछ नहीं, और उनका सभा से "बिस्मिल"
अपनी शोहरत के लिए, जान दिए देते हैं !!

* * *

आवाज़ दूर ही से सोहाती है ढोल की !
सूरत नज़र न आई कहीं मेल-जोल की !!

* * *

किस काम का वह काम निहाँ, जिसमें घात हो,
मतलब की जब है बात, कि मतलब की बात हो !

* * *

संसार के भिन्न-भिन्न देशों की स्त्रियों की ख़ासियतें

पेरिस के एक होटल के मालिक ने भिन्न-भिन्न देशों की स्त्रियों की ख़ासियतें इस तरह बतलाई है :—

अमेरिकन औरतें अपने कपड़े कभी ठीक नहीं रखतीं। अलमारी में जूते और धुले कपड़े साथ ही मिलते हैं। उनकी मेज़ पर शराब का अद्धा ज़रूर मिलेगा।

रूसी स्त्रियाँ बहुत शोर करती हैं। वे रात-रात भर ज़ोरों से गप्पें लड़ाया करती हैं और सवेरे बहुत देर से उठ, फिर चिल्लाने लगती हैं।

ईजिप्ट की स्त्रियाँ अब भी ज़नानख़ानों में रहना पसन्द करती हैं। वे अपने साथ कई मित्र महिलाएँ ले आती हैं। फिर रात को कमरे भर में कुर्सी पर, ज़मीन पर, मेज़ पर, यहाँ तक कि ग़ुसलख़ाने तक में सब सो जाती हैं।

चीन की स्त्रियाँ अख़बार की इतनी शौक़ीन होती हैं कि होटल में टिके हुए सारे व्यक्तियों को जितने अख़बारों की आवश्यकता नहीं होती, उतनी ज़रूरत एक चीनी महिला को होती है।

अङ्गरेज़ी औरतें बिना ठीक कपड़े पहिने कभी बाहर नहीं निकलतीं। कभी अपने कमरे में लोगों से नहीं मिलतीं। शराब के बिना उन्हें तकलीफ़ नहीं होती, पर तब भी बोतलें कमरे भर में पड़ी मिलेंगी।

* * *

(३५वें पृष्ठ का शेषांश)

इसके सिवा देखो, एक यह नियम है कि कल्याण में किसी की तृप्ति नहीं होती। अच्छी बात जितनी भी हो, उतनी ही थोड़ी है। आज लाखों स्त्री-पुरुष तुमसे भी बुरी दशा में हैं। परन्तु बिगड़े को सुधारना बड़ा काम है। तुम्हीं तो कहते हो कि पिता के सम्मुख शील को खोना नहीं चाहते—पर प्रथम तो तुम्हारा यह कर्त्तव्य था कि तुम उनके सामने विवाह के पूर्व अपनी इच्छा किसी भी भाँति स्पष्ट रख देते। और यदि वे इसके विरुद्ध करते, तब तुम्हें वह करना था, जो तुम अब करना चाहते हो। परन्तु अब भाग जाना मानो उस शील का चौगुना दुरुपयोग करना है, जिसका तुम्हें घमण्ड है !

यह भी सम्भव है कि इस समय जितना बुरा तुम अपनी पत्नी को समझते हो, उतनी वह न हो। जब तुम उसे न प्रेम करते हो, न आदर ! तो वह भी मान करती है। नव-विवाहिता रमणियाँ तो बड़े-बड़े अरमान मन में रखती ही हैं, इसलिए हमारी सम्मति है कि उसके साथ दया, कृपा, क्षमा, उदारता वा सहनशीलता का व्यवहार करो, कुसंस्कारों को दूर कर, अच्छी सोहबत, अच्छी शिक्षा, अच्छी भावना उत्पन्न करो, यह असम्भव नहीं कि वह तुम्हारी सुयोग्य पत्नी बन सके। क्या तुमने वह दोहा नहीं सुना—

देख पराई चूपरी, मत ललचावे जी।
रूखा-सूखा खाय कर, ठण्डा पानी पी ॥

—सम्पादक

* * *

आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says:

Dear Mr Saigal,

Your album is a production of great taste & beauty & has come to me as a pleasant surprise as to what a press in Allahabad can turn out. Moon worshipped & Visit to the Temple are particularly charming pictures, life like & full of details. I congratulate you on your remarkable enterprise & thank you for a present which has given & will continue to give me a great deal of pleasure.

Yours Sincerely B. J. Dalal.

The Hon'ble Mr. Justice Lal Gopal Mukerjea of the Allahabad High Court:

. . . The Pictures are indeed very good and indicate, not only the high art of the painters, but also the consumate skill employed in printing them in several colours. I am sure the Album ADARSH CHITRAWALI will be very much appreciated by the public.

The Hon'ble Sir Grimwood Mears, Chief Justice Allahabad High Court:

. . . I am very glad to see that it is so well spoken of in the Foreign Press.

The Indian Daily Mail:

. . . The Album ADARSH CHITRAWALI is probably the one of its kind in Hindi—the chief features of which are excellent production, very beautiful letter-press in many colours, and the appropriate piece of poem which accompanies each picture . .

W. E. J. Dobbs, Esq., I. C. S., District Magistrate and Collector, Allahabad:

I am glad that Allahabad can turn out such a pleasing specimen of the printers art.

Sam Higginbottom, Esq., Principal Allahabad Agricultural Institute:

. . . I think it is beautifully done. Most of the guests who come into the Drawing room pick it up and look at it with interest.

A. H. Mackenzie Esq., Director of Public Instruction, U. P.:

. . . I congratulate your press on the get-up of the Album, which reveals a high standard of fine Art Printing.

मूल्य केवल ४) रु०
डाक-व्यय अतिरिक्त

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Price Rs. 4/- Nett.
Postage extra.

सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा
वार्षिक ६) रु०
छः माही ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य ≥)
Annas Two per Copy

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने से पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक हम पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार ६ नवम्बर, १९३० | संख्या ६, पूर्ण संख्या ६

राउण्डटेबिल-कॉन्फ़्रेन्स के सदस्य लॉर्ड इर्विन के जाल में

आए सब लन्दन के माहीगीर की क्या चाल में !
मछलियाँ बन कर फँसे हैं देखो कैसा जाल में !!
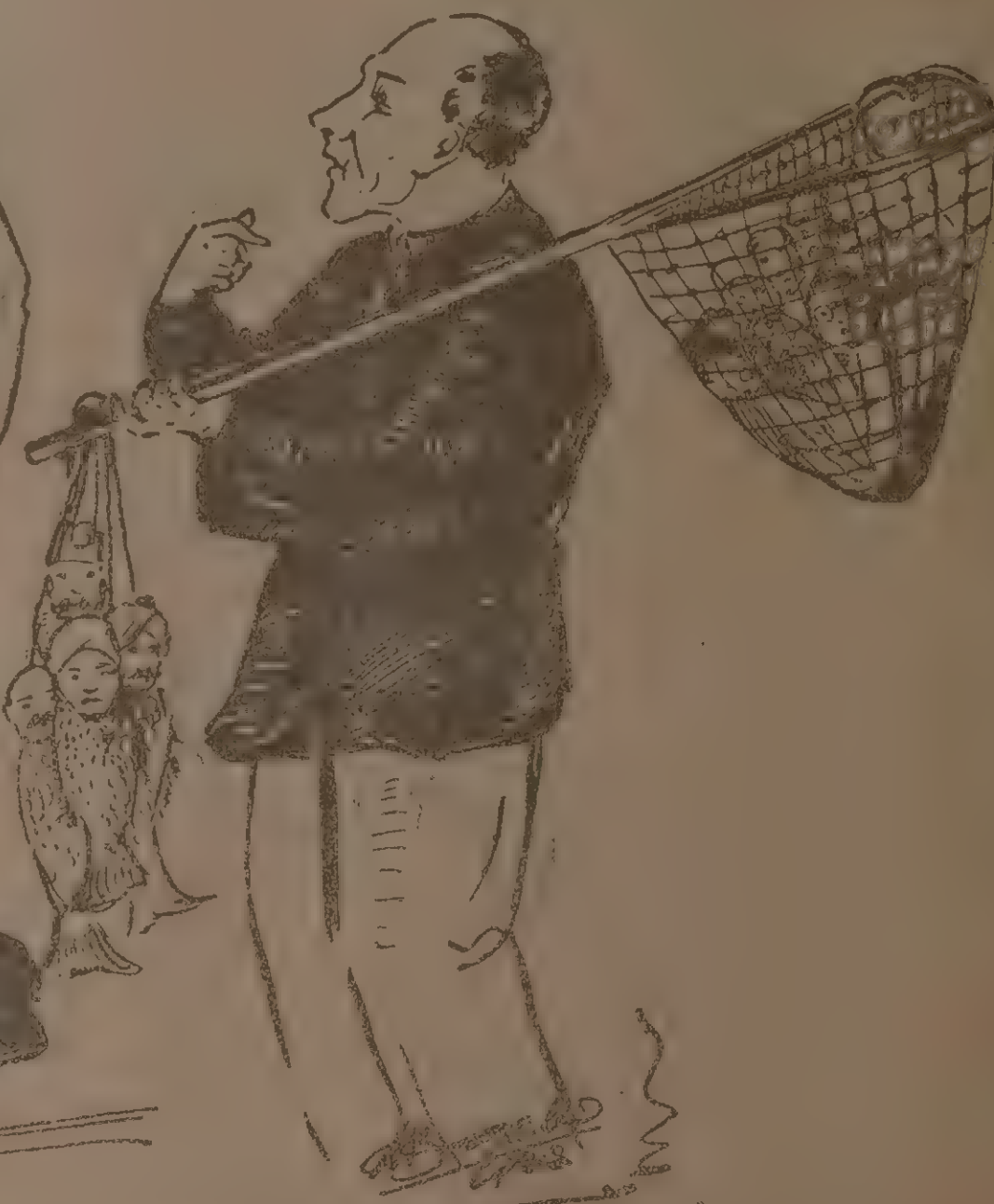
लॉर्ड इर्विन—कहो दोस्त मैक ! (मि० रामज़े मैकडॉनल्ड, प्रधान सचिव) इतना अधिक विरोध होते हुए भी 'गोलमेज़' के लिए कैसा फाँसा ?
मि० मैक—यार यह तुम्हारा ही काम था; पर मुझे अफ़सोस इस बात का है कि तुम कुछ दिन भारत में और न रहे। मुझे हिन्दोस्तानी तुम्हारी बड़ी प्रशंसा करते रहे हैं।

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—६ नवम्बर, १९३० | संख्या ६, पूर्ण संख्या ६

१६ ता० को सब जगह राजद्रोह का क़ानून तोड़ा जायगा

समुद्र के बीच में झण्डा-अभिवादन

लाहौर में पुलिस पर फिर गोली चलाई गई

बम्बई में लोग डाकख़ाने से रुपया निकाल रहे हैं

[५वीं नवम्बर की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार]

बम्बई में गाँधी—दिवस

२० हज़ार से अधिक मनुष्यों ने समुद्र में राष्ट्रीय झण्डे का अभिवादन किया

मारवाड़ी युवक-सङ्घ के द्वारा बम्बई में आज गाँधी-दिवस मनाया गया और चौपाटी पर राष्ट्रीय-झण्डे का अभिवादन सफलतापूर्वक किया गया। पताका अभिवादन का निश्चित समय प्रातःकाल के ८॥ बजे का था, परन्तु पुलिस ने उसे रोकने के लिए प्रातःकाल ६ बजे से ही इस स्थान पर चारों ओर से घेरा डाल रक्खा था। ठीक समय पर देश-सेविकाएँ केसरिया रङ्ग की साड़ी पहिने हज़ारों की संख्या में अभिवादन के लिए एकत्रित हो गईं। पुलिस के निश्चित स्थान के घेर लेने के कारण समुद्र में बहुत दूर पानी में राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया और किनारे पर से बीस हज़ार से अधिक मनुष्यों ने उसका अभिवादन किया। समुद्र में राष्ट्रीय झण्डा फहराने के साथ ही टेलीफ़ोन के तारों पर भी बहुत से झण्डे आरोपित किए गए थे। जब पुलिस ने तारों पर झण्डे देखे तो एक मुठभेड़ के बाद बड़ी कठिनाई से वे झण्डे उतारे, परन्तु जो झण्डा समुद्र के बीच में आरोपित किया गया था पुलिस उसे न छीन सकी। अधिकारियों में बहुत देर तक काना-फूसी होती रही, परन्तु अन्त में पुलिस अपना-सा मुँह लेकर लौट गई। पुलिस के चले जाने के बाद कार्यक्रम के अनुसार चौपाटी पर झण्डा-अभिवादन हुआ। बड़ा भारी झण्डा फहराया गया और हज़ारों ने उसकी वन्दना की। शहर ने आज हड़ताल मनाई। सन्ध्या समय के लिए 'युद्ध-समिति' ने एक विराट सभा की घोषणा की है, परन्तु ऐसा मालूम होता है कि पुलिस सभा न होने देगी।

—कलकत्ता में स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने अलीपुर के उस पुलिस अफ़सर ने, जिसने डॉ० नारायण के घर की तलाशी ली थी, एक गुप्त-पत्र पेश किया है, जो टॉमस कुक ने कलकत्ते के ऑक्सफ़ोर्ड मिशन के डी० पी० राय को लिखा था। उस पर तारीख़ २२वीं अगस्त, १९२७ पड़ी है। पत्र में लिखा है कि—"बर्लिन के ट्रङ्क के सम्बन्ध में हमें हमवर्ग के दोस्त ने लिखा है कि पिस्तौलें और समाचार-पत्र आपके लिखे अनुसार डॉक्टर वेजनेर के सुपुर्द कर दिए गए हैं। उन्होंने लिखा है कि वे जहाज़ पर थोड़े दिनों में भेज दी जायँगी। जहाज़ सम्बन्धी दूसरी बातें थोड़े दिनों बाद भेजूँगा।"

राजद्रोह का क़ानून भङ्ग

भारतीय कॉङ्ग्रेस के स्थानापन्न सेक्रेटरी ने पत्रों में समाचार भेजा है कि पं० मोतीलाल जी के आदेशानुसार भारतीय कॉङ्ग्रेस के प्रेज़िडेण्ट पण्डित जवाहरलाल को बर्बरतापूर्ण सज़ा देने के उपलक्ष में १६ नवम्बर को भारत भर में 'जवाहर दिवस' मनाया जाय और सब कॉङ्ग्रेस कमिटियों से प्रार्थना की गई है कि इस अवसर पर विराट जुलूसों की आयोजना की जाय और उन्हें शहर या गाँव के मुख्य-मुख्य रास्तों पर घुमा कर अन्त में सभा की जाय। सभा में उनके भाषण में से वे वाक्य पढ़े जायँ, जिनके आधार पर मैजिस्ट्रेट ने उन्हें सज़ा दी है। एक व्यक्ति उन वाक्यों को पढ़ता जाय और जनता उसके साथ उन्हें दुहराती जाय।

लाहौर में फिर गोली चली

कल रात्रि को लाहौर में नहर के किनारे, जहाँ एक माह पहिले पुलिस सुपरिटेण्डेण्ट ख़ान बहादुर अब्दुल अज़ीज़ पर गोली चलाई गई थी, फिर गोली चल गई। कहा जाता है कि दो युवक नहर के किनारे घूम रहे थे और पुलिस के उनके वहाँ घूमने का कारण पूँछने पर उनमें से एक ने पुलिस पर गोली चला दी। पुलिस ने भी उन पर गोली चलाई और उनमें से एक घायल हो गया। दूसरा युवक लापता है।

—दिल्ली में बम फ़ैक्टरी की खोज के सम्बन्ध में पुलिस ने 'यूनीवर्सल ड्रग कम्पनी' के मालिक बाबूराम कपूरचन्द केमिस्ट के कम्पाउण्डर बालकिशन और खादी भण्डार के श्री० प्रबोधचन्द्र बनर्जी को गिरफ़्तार किया है। गिरफ़्तारी के बाद पुलिस ने सुखलाल के पिता की दस घण्टे तक तलाशी ली।

—डिब्रूगढ़ (आसाम) का समाचार है कि गुणराम दास नामक व्यक्ति पर, जो मर्दुमशुमारी के निरीक्षक नियुक्त किए गए थे, कार्य करने से इनकार करने के कारण ३० रुपया जुर्माना हुआ है।

—घाटकोपर (बम्बई) म्युनिसिपिलिटी ने अपनी एक बैठक में एक प्रस्ताव इस आशय का पास किया है कि वह १९३१ में होने वाली मर्दुमशुमारी में आर्थिक या अन्य किसी प्रकार की सहायता न देगी।

लेजिस्लेटिव कौन्सिल-हॉल में झण्डा

गाँधी-दिवस के उपलक्ष में आज बम्बई में पूरी हड़ताल रही और जुलूस निकाले गए। अधिकांश कपड़े के कारख़ाने और कॉलेज तथा स्कूल बन्द रहे। जो स्कूल खुले उन पर पिकेटिङ्ग की गई। कालकादेवी से एक तकली-जुलूस निकाला गया और महिलाओं ने जेल की रोटियाँ बाज़ारों में नीलाम कीं। 'पीपिल्स बैटेलियन' के वालण्टियरों ने लेजिस्लेटिव कौन्सिल हॉल और कॉङ्ग्रेस हाउस पर झण्डा लगा दिया। पुलिस को मालूम होने पर उसने आकर झण्डा हटाया, पर वालण्टियर पकड़े न जा सके।

—मद्रास चिदम्बरम् यूनीवर्सिटी के वाइस चॉन्सलर ने, उन विद्यार्थियों के नाम एक नोटिस निकाला है, जिन्होंने पं० जवाहरलाल नेहरू की गिरफ़्तारी के विरोध-स्वरूप हड़ताल की थी, कि वे ग़ैर-हाज़िरी के लिए सन्तोषजनक कारण बतलावें। कारण न बतलाने और उसके लिए खेद प्रकट न करने पर उनकी पाँच दिन की ग़ैर-हाज़िरी कर दी जायगी। यूनीवर्सिटी के अहाते में किसी प्रकार का राजनीतिक जलूस वग़ैरह निकालने का भी निषेध कर दिया गया है।

—कानपुर के पं० बालकृष्ण शर्मा, जो हाल ही में जेल से छूटे थे, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए। कारण अभी तक मालूम नहीं।

सरदार पटेल और हार्डीकर छोड़ दिए गए

वल्लभ भाई पटेल यरवदा जेल से बम्बई लाकर छोड़ दिए गए हैं। वे बड़ी देर तक कॉङ्ग्रेस के नये सेक्रेटरी श्री० महादेव देसाई से बातें करते रहे। उन्होंने बम्बई के प्रधान व्यापारियों से भी, जिनमें सर लल्लूभाई सामलदास, श्री० लालजी नारायणजी भी थे, बातचीत की और एकत्रित जन-समूह को दर्शन दिए। आप शीघ्र ही इलाहाबाद पं० मोतीलाल नेहरू से मिलने जा रहे हैं। कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के सदस्य श्री० जैरामदास दौलतराम और हिन्दुस्तानी सेवा-दल के प्रधान डॉ० हार्डीकर भी छोड़ दिए गए हैं।

—बम्बई की युद्ध-समिति की प्रार्थना पर वहाँ के लोगों ने सेविङ्ग बैङ्कों से रुपया निकालना और कैश सर्टिफ़िकेट भी उन्होंने वापिस देना प्रारम्भ कर दिया है। सेवादल के वालण्टियरों ने शहर के सब पोस्ट-ऑफ़िसों पर पिकेटिङ्ग की और इश्तहार बाँट कर जनता से सेविङ्ग बैङ्कों का बहिष्कार करने की प्रार्थना की। दो वालण्टियर, एक जनरल पोस्ट ऑफ़िस में, और एक कालबादेवी पोस्ट ऑफ़िस में गिरफ़्तार किए गए। वहाँ स्त्रियों का जो अपमान हुआ है, उसके सम्बन्ध में बम्बई के शेरिफ़ों की सभा तारीख़ ६ की सन्ध्या को 'इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बर ऑफ़िस' में होगी।

"गवर्नमेण्ट-कर्मचारी उसके नाश की दिन-रात प्रार्थना करते हैं।"

अदालत में श्री० सेन गुप्त की हुङ्कार :: एक वर्ष की क़ैद

देहली के मि० एफ़० बी० पूल अतिरिक्त ज़िला मैजिस्ट्रेट की अदालत में श्री० सेन गुप्त के मामले की कार्यवाही ३० ता० को प्रारम्भ हुई। श्रीमती गुप्त कार्यवाही के समय अदालत में उपस्थित थीं।

पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट राय बहादुर देवीदयाल ने उन पर पहिले १२४ए- धारा का ही अभियोग लगाया था, परन्तु बाद में उन पर दण्ड-विधान की धारा १७ (१) और इंस्टिगेशन ऑर्डिनेन्स की इसी धारा के अनुसार दो अभियोग उनके ६ठीं अक्टूबर के भाषण पर और लगाए गए। अदालत में भाषण का जो सार सुनाया गया, उसके सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि पुलिस ने उनके भाषण की हत्या कर डाली है। जब अदालत ने उनसे यह पूछा कि क्या वे अपने भाषण की रिपोर्ट देखना चाहते हैं, तो उन्होंने कहा कि—"जो कुछ मैंने कभी कहा नहीं, उसे देख कर मुझे ग़ुस्सा आ जायगा।"

श्री० सेन गुप्त ने अदालत की कार्यवाही में कोई भाग नहीं लिया, परन्तु अपना निम्न-लिखित वक्तव्य पेश किया :—

"मैं यहाँ एक बैरिस्टर के रूप में उपस्थित नहीं हो रहा हूँ और न क़ानून की नुक़्ताचीनी करने वाले एक अभियुक्त के रूप में ही, जिससे पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की कार्यवाही में लौट-फेर का किसी प्रकार का डर हो।

"मि० मैजिस्ट्रेट, आपने जो प्रश्न मुझसे किए हैं उनसे निस्सन्देह यह साबित हो जाता है कि जब ब्रिटेन के स्वार्थों पर कुठाराघात होता है, तब न्याय किस प्रकार अपने (उज्ज्वल) रूप पर (काला) पर्दा डाल देता है। आजकल जितने राजनीतिक भाषण होते हैं, उनमें से क्या एक भी ऐसा होता है, जो दण्ड-विधान के सिद्धान्तों के विरुद्ध नहीं होता। मैं यह केवल आजकल के उन मैजिस्ट्रेटों की मनोवृत्ति बतलाने के लिए कहता हूँ, जो हज़ारों राजनीतिक मामलों का फ़ैसला करते हैं।

"मेरे ऊपर राजविद्रोह का अभियोग लगाया गया है। यह कहना कि इङ्गलैण्ड अपने स्वार्थ के लिए भारत पर शासन कर रहा है राजविद्रोह है, तिस पर भी क्या कोई पवित्र हृदय से यह कह सकता है कि उपर्युक्त अभियोग या यह कथन कि भारत पर से इङ्गलैण्ड के प्रभुत्व का अन्त कर देना चाहिए—राजविद्रोह है? हज़ारों भारतीय यही कहने के कारण जेल में ठूँस दिए गए हैं और गवर्नमेण्ट-कर्मचारियों सहित लाखों व्यक्ति गुप्त या स्पष्ट रूप से भारत में ब्रिटिश शासन का अन्त होने की रात-दिन प्रार्थना करते हैं। एक भारतीय के लिए इससे अधिक कोई महत्वाकांक्षा नहीं हो सकती कि भारत ब्रिटेन के शिकञ्जे से मुक्त हो जाय।

स्वतन्त्र भारत इसका उत्तर माँगेगा

"मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि आप मुझे जेल भेजेंगे और मैं अपने हृदय में यह विश्वास रख कर प्रसन्नतापूर्वक जेल में जाऊँगा, कि वह दिन शीघ्र आ रहा है जब स्वतन्त्र भारत की ओर से उसके वे सुपुत्र और सुपुत्रियाँ, जो आज जेल में बन्द हैं, तुम्हारे मालिक ब्रिटिश लोगों से एक शताब्दी से अधिक समय तक इस गन्दे तरीक़े से शासन का नियन्त्रण करने का उत्तर माँगेंगे। इससे अधिक मुझे और कुछ नहीं कहना है।"

इसके उपरान्त ऑर्डिनेन्स के अभियोग में तीन गवाहों के बयान हुए। उन्होंने कहा कि श्री० सेन गुप्त ने विद्यार्थियों से कलकत्ते के विद्यार्थियों की तरह कॉङ्ग्रेस के लगानबन्दी के सम्बन्ध में सहायता देने की अपील की।

तीसरी तारीख़ को फ़ैसला सुनाया गया। मैजिस्ट्रेट ने श्री० सेन गुप्त को एक साल की क़ैद की सज़ा दी।

"भारत एक वर्ष में स्वतन्त्र हो जायगा"

ब्रिटेन पर भयङ्कर आपत्ति :: जर्मन-ज्योतिषी की भविष्यवाणी

"इङ्गलैण्ड २२वीं मार्च सन् १९३१ को पानी के कारण भयङ्कर आपत्ति में फँस जायगा। अगले साल इङ्गलैण्ड और स्कॉटलैण्ड का आपस में मन-मुटाव हो जायगा। सन् १९३१ का अन्त होने के पहिले ही भारत में ब्रिटिश शासन का अन्त हो जायगा और इसी साल जापान और इङ्गलैण्ड चीन में अपना शिकञ्जा मज़बूत करने के लिए मजबूर हो जायँगे।"

ये भविष्यवाणियाँ जर्मनी के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी डॉ० मैक्स हेन्फ़ की हैं, जो मैक्सिको सिटी में रहते हैं। ब्रिटिश उपनिवेश के सदस्य इससे प्रसन्न हुए हैं, परन्तु मेक्सिकन लोग 'ऋषि' की इस भविष्यवाणी से बहुत भयभीत हो गए हैं कि २४वीं अक्टूबर के पहिले भूकम्प के कारण उस प्रजातन्त्र को बहुत हानि उठानी पड़ेगी। पाटूकैट, रोड द्वीप, अमेरिका के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी प्रोफ़ेसर एडविन हेण्डरसन ने अपने देश के दैनिक समाचार-पत्रों में इन भविष्यवाणियों का समर्थन किया है।

इस देश के निवासियों का विश्वास है कि भूकम्प सम्बन्धी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होगी, क्योंकि पिछले जुलाई मास में डॉ० हेन्फ़ ने जो भविष्यवाणियाँ की थीं वे सब सत्य हुई हैं। इस भविष्यवेत्ता ने पिछली २९वीं जुलाई को यह भविष्यवाणी की थी, कि मेक्सिको के अमुक रोमन केथोलिक आर्क बिशपों की मृत्यु हो जायगी; पेरू और अरजेण्टाइन में राजविद्रोह की आग भड़केगी, सेण्टोडोमिनगो में भयङ्कर उत्पात होगा, और इटली में भूकम्प से बहुत हानि होगी!

जर्मनी के इस भविष्यवेत्ता ने कहा है कि दक्षिण अमेरिका में, ब्रेज़िल में उथल-पुथल होगी और उसके कारण अमेरिका के संयुक्त-राज्य को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

डॉ० हेन्फ़ का कहना है कि संसार पर शीघ्र युद्ध के काले बादल मँडराने वाले हैं; यह युद्ध यूरोप में होगा और पोलैण्ड और बालकन की स्टेटों का उसमें प्रमुख भाग रहेगा। यह युद्ध या तो सन् १९३१ की शरद ऋतु में होगा या सन् १९३० के बसन्त में, और वह ज़ोर देकर कहता है कि—"मनुष्य मात्र के लिए यह युद्ध पिछले महासमर से अधिक भयानक होगा।"

बनारस में लाठियों का प्रहार

महिलाओं पर बल-प्रयोग

बनारस में २७ वीं अक्टूबर को सन्ध्या समय पुलिस ने काशी बङ्गाली-टोला कॉङ्ग्रेस कमिटी पर तीन बार धावा किया, जिससे वहाँ सनसनी फैल गई है। प्रायः १२ कॉन्स्टेबिलों को लेकर पुलिस-इन्सपेक्टर ने ८॥ बजे बङ्गालीटोला कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस और केम्प पर धावा किया और झण्डा तथा साइनबोर्ड उठा ले गया। दूसरी बार ५० लट्ठबन्द कॉन्स्टेबिलों के साथ वही सब-इन्सपेक्टर ६॥ बजे फिर आया, और कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस के पास पहुँच कर उसने कॉन्स्टेबिलों को झण्डा और साइनबोर्ड उतार लेने का हुक्म दिया। परन्तु भूतपूर्व अध्यक्ष श्री० विभूतिभूषण भट्टाचार्य की स्त्री श्रीमती लक्ष्मी देवी, चारुबाला देवी, कुसुम कुमारी देवी, प्रभावती घोष और मोक्षदा सुन्दरी दासी राष्ट्रीय झण्डे को घेर कर खड़ी हो गईं। इस पर पुलिस ने बलपूर्वक स्त्रियों के हाथ से राष्ट्रीय झण्डा छीन लिया जिसके परिणाम स्वरूप कुसुम कुमारी देवी, मोक्षदा सुन्दरी दासी, चारुबाला देवी और प्रभावती देवी को हलकी चोटें आईं। पुलिस की लाठी-वर्षा के कारण कॉङ्ग्रेस के सहकारी मन्त्री श्री० अमरनाथ चटर्जी और अन्य दो व्यक्ति ज़ख़्मी हुए।

शाम को ७ बजे इन्सपेक्टर ने कॉङ्ग्रेस पर फिर चढ़ाई की। इस बार पुलिस ने वाड़ा का फाटक बन्द कर लिया और वालण्टियरों के कप्तान बाबू प्राणकृष्ण राय और तीन वालण्टियरों को गिरफ़्तार किया। गिरफ़्तार सत्याग्रहियों के पीछे हज़ारों आदमियों की भीड़ थाने तक गई।

अलीगढ़ जेल में अनशन

अलीगढ़ का २९ वीं अक्टूबर का समाचार है कि २० वीं अक्टूबर को यू० पी० के होम मेम्बर नवाब सर मुहम्मद मुज़म्मिलुल्ला ख़ाँ अलीगढ़ जेल गए थे। राजनैतिक क़ैदियों से, जिनमें से कुछ उनसे परिचित थे, जेल के व्यवहार के सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने पर उन्होंने वहाँ के दुर्व्यवहार की कहानी कहना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु जेल के अधिकारी अपने सम्बन्ध में कोई लाञ्छन न सह सकते थे इसलिए सुपरिण्टेण्डेण्ट ने होम मेम्बर के सामने दुर्व्यवहारों का हाल कहने से रोका। उसी समय से राजनैतिक क़ैदियों के साथ पाशविक व्यवहार करना आरम्भ कर दिया गया है और इसके कारण २१ वीं अक्टूबर से प्रायः ४० क़ैदियों ने अनशन प्रारम्भ कर दिया है। कहा जाता है कि उनसे साधारण क़ैदियों की तरह बहुत सख़्त काम लिया जाता है और न होने पर उन्हें सज़ा मिलती है। उन्हें परेड में सम्मिलित होना पड़ता है और हाज़िरी के समय उपस्थित होना पड़ता है, और भोजन जो उन्हें दिया जाता है वह मनुष्य के लिए खाना असह्य है। उनको हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ पहिनाई जा रही हैं। मुलाक़ात एकदम बन्द कर दी गई है। जिनका अभी केस चल रहा है उनकी भी स्थिति अच्छी नहीं है। उन्हें हथकड़ियाँ पहिना दी गई हैं। कुछ 'ए' और 'बी' क्लास के क़ैदियों ने भी भूख-हड़ताल कर दी है।

* * *

इस 'महर्षि' का यह भी कहना है कि—"एक यूरोपीय बादशाह का, जिसे अभी बाहरी सहायता है, भयङ्कर पतन होगा; और जापान ज्वालामुखी पर्वतों की धधक, भूकम्प ज्वार-भाटे आदि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण बहुत कुछ तहस-नहस हो जायगा।"

* * *

—इटावा का ३१ वीं अक्टूबर का समाचार है कि परसों जो १६ वालण्टियर गिरफ़्तार हुए थे, उनमें से १२ छोड़ दिए गए थे। कल ८ वालण्टियर गिरफ़्तार हुए थे उनमें से केवल एक हवालात में बन्द किया गया था और बाक़ी छोड़ दिए गए थे। आज अभी तक ६ वालण्टियर गिरफ़्तार हुए हैं। औरैया तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट पं० श्रीकृष्ण, जो फ़िजी से लौटे हैं और उपदेश कार्य कर रहे हैं, वहाँ से गिरफ़्तार कर कल यहाँ लाए गए। आज १०८ वीं दफ़ा में ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के मेम्बर और एक उत्साही कार्यकर्ता भी गिरफ़्तार हुए हैं। राष्ट्रीय कार्य अबाध रूप से चल रहा है। म्युनिसिपिल प्रदर्शनी स्थगित करने के सम्बन्ध में पदाधिकारियों से कहा गया है। जनता प्रदर्शिनी के ख़िलाफ़ है और इसलिए उसे सफलता मिलने की सम्भावना नहीं है।

—इटावे में ३० वीं अक्टूबर को मोटर के नीचे दो लड़के दब गए। जिनमें से एक मर गया है।

—इटावा का समाचार है कि २१ वीं अक्टूबर को यू० पी० के होम मेम्बर ने वहाँ के जेल की जाँच की थी और जब वे राजनीतिक क़ैदियों के वार्ड में पहुँचे तब उन्होंने राष्ट्रीय नारों से उनका स्वागत किया। इसके कारण वहाँ के सब राजनीतिक क़ैदियों को बेड़ियाँ पहिना दी गई हैं। एक दर्ज़ी की दुकान पर, जो विलायती कपड़ा भी बेचता था, पिकेटिङ्ग करने के कारण २९ वीं अक्टूबर को ६ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—मुरादाबाद का ३० वीं अक्टूबर का समाचार है कि चन्दौसी से तीन मील की दूरी पर गुमथल गाँव में भयानक दङ्गा हो गया है। बदायूँ और बुलन्दशहर ज़िले के कुछ कार्यकर्त्ताओं ने ३००० किसानों की एक सभा की थी, जिसमें ३ सब-इन्स्पेक्टर और ११ कॉनिस्टेबिल उपस्थित थे।

—दूसरी अक्टूबर के यू० पी० गवर्नमेण्ट गज़ट में एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है, जिससे गवर्नमेण्ट ने १९०८ के क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार अमन-चैन में ख़लल डालने के कारण मुरादाबाद की सब कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी हैं।

—मालूम हुआ है कि बाबू मोहनलाल सक्सेना कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य चुन लिए गए हैं।

—बम्बई स्टूडेण्ट्स ब्रदरहुड के अहाते के पास सैयद मुहम्मद, सैयद हाशिम को तीन सार्जण्टों ने बहुत बुरी तरह पीटा। वे वहाँ मुँह की सीटी के द्वारा एक गाना गा रहे थे। कॉङ्ग्रेस अस्पताल में उनका इलाज हो रहा है।

—बम्बई की 'युद्ध-समिति' के डिक्टेटर को मालूम हुआ है कि २६वीं अक्टूबर को आज़ाद मैदान में झण्डा अवरोहण के समय एक चीनी व्यक्ति पर भी लाठी का प्रहार हुआ है। प्रेज़िडेण्ट ने इस बात पर दुःख प्रगट किया कि वे अपने चीनी भाई की स्वयं अपने देश में रक्षा करने में असमर्थ हैं।

—बम्बई 'युद्ध-समिति' की तेरहवीं डिक्टेटर श्रीमती अवन्तिका बाई गोखले को वहाँ के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने ६ माह की सादी सज़ा सुना दी। उनके स्थान पर सुप्रसिद्ध कवि और नाट्यकार श्रीमती सरोजनी नायडू के भाई श्री० हीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय वहाँ के अगले डिक्टेटर हुए हैं। 'युद्ध-समिति' के प्रेज़िडेण्ट की हैसियत से उन्होंने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसमें उन्होंने कहा है कि—"किसान और मज़दूर हमारी किताब बना रहे हैं, और हमें उसी किताब में से बोलना चाहिए। आज के घाव कल के लेप होंगे और यद्यपि इस यात्रा में हमारे पैरों में छाले पड़ जायँ और उनमें ज़ख़्म हो जायँ, परन्तु हम उसे साहस, वीरता और विश्वासपूर्वक पूरी करेंगे।" श्री० चट्टोपाध्याय की भगिनी और उनकी पत्नी श्रीमती कमलादेवी जेल में अपनी सज़ा पूरी कर रही हैं। वे स्वयं विदेश-यात्रा से, जहाँ उनकी प्रतिभा की तूती बोलती है, हाल ही में लौटे हैं।

—कलकत्ते में २८ वीं अक्टूबर को एक स्टीमर की देशी नाव से हुगली के पास टक्कर लग जाने के कारण नाव टुकड़े-टुकड़े हो गई और उसमें लदा हुआ चावल और सारे मल्लाह डूब गए।

—कलकत्ते का २९ वीं अक्टूबर का समाचार है कि श्री० ब्रजेन्द्रलाल सेन, कालीपद घोष, जोगेश चन्द्र और गोविन्द बनर्जी जो हाल ही के बम उपद्रव के सम्बन्ध में गिरफ़्तार हुए थे, चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट द्वारा दोपहर को रिहा कर दिए गए। परन्तु बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार वे फिर गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कलकत्ते का २९ वीं अक्टूबर का समाचार है कि श्री० शशधर आचार्य की धर्मपत्नी सुहासिणी देवी, जो चिटगाँव आरमरी धावे के सम्बन्ध में चन्द्रनगर में गिरफ़्तार कर ली गई थीं, चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट द्वारा रिहा कर दी गईं।

—लाहौर में ३० वीं अक्टूबर को चोरी से कोकीन बेचने के कारण एक व्यक्ति को डेढ़ वर्ष की सख़्त क़ैद और २०० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई है।

—हैदराबाद का २८ वीं अक्टूबर का समाचार है कि लेम्बर मार्केट में बम फटने के कारण दो पञ्जाबी युवक गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—नई दिल्ली का समाचार है कि सरदार पटेल के शीघ्र ही छूटने की सम्भावना के कारण श्री० सेनगुप्त ने अपने स्थान पर किसी को कॉङ्ग्रेस का प्रेज़िडेण्ट नामज़द नहीं किया है।

—बङ्गलोर में ३०वीं अक्टूबर को 'बङ्गलोर टेम्परेन्स फ़ेडरेशन' की सभा में मि० जे० आर० आइज़क ने कहा है कि बिना पिकेटिङ्ग के जनता में शराब के विरुद्ध आन्दोलन करने और उस सम्बन्ध में शिक्षा प्रचार करने के लिए मैसूर गवर्नमेण्ट १० हज़ार हर साल ख़र्च करने के लिए तैयार है। मैसूर के एकसाइज़ कमिश्नर ने उसी समय दो हज़ार रुपए देने का वचन दिया। इस कार्य के लिए फ़ेडरेशन ने गाँवों में शराब के विरुद्ध शिक्षा प्रचार करने की एक सब-कमिटी नियुक्त की है जो उसका कार्यक्रम निर्धारित करेगी।

—त्रिचनापल्ली में तालाबों के बाँध टूट जाने से त्रिची इलाक़े के ८ गाँवों के ५०० मकान बह गए हैं। कई रेलों के मुसाफ़िर स्टेशनों पर भटक रहे हैं। बङ्गाल की एक कुली-स्त्री त्रिची स्टेशन पर मर गई; और सेकिण्ड क्लास में सफ़र करने वाली एक दूसरी महिला के स्टेशन के कमरे में बच्चा पैदा हुआ है।

—क़रीब एक महीना हुआ तब चारपारा के बाबू सतीशचन्द्र राय की बन्दूक़ चोरी चली गई, जिसका कुछ पता नहीं चला है। इस घटना के बाद बाबू प्रमथनाथ दत्त राय की बन्दूक़ को पुलिस ने छीन लिया है। कारण कुछ भी नहीं मालूम हुआ है।

—सोनपुर के मेले में विदेशी वस्त्र पर धरना दिए जाने के डर से सारन के अधिकारियों ने सोनपुर कॉङ्ग्रेस कमिटी को ग़ैर-क़ानूनी ठहरा दिया है। सशस्त्र पुलिस भी कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन को रोकने के लिए तैनात की गई है।

—सर पी० सी० राय आज कल मध्य प्रान्त में भ्रमण कर रहे हैं। दुग की म्युनिसिपेलिटी ने उन्हें मान-पत्र दिया था। उसके उत्तर में उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में ज़्यादातर चावल पैदा होता है और कई महीनों तक किसान बेकार रहते हैं, इसलिए उन्हें चरख़ा चलाना चाहिए। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम मेल तथा अछूतों से प्रेम करने का उपदेश दिया।

—कामिला के नेता श्री० फणीन्द्र मोहन नाग व पुलिन बिहारी गुप्त ३० तारीख़ को जेल से छूट आए हैं।

—यू० पी० कॉङ्ग्रेस कमेटी की नई रिपोर्ट से मालूम होता है कि कई जगह के व्यापारियों ने विदेशी कपड़े को बेचने की कोशिश की, पर कॉङ्ग्रेस ने उनसे सुलह न करने की आज्ञा दे दी थी। यू० पी० की कुल गिरफ़्तारियों की संख्या ७,२७३ तक पहुँच गई है।

—तीस अक्टूबर की ख़बर है कि टङ्गेल के छः स्वयंसेवक शराब की दूकानों पर धरना देने पर पकड़े गए थे। कुछ देर बाद वे छोड़ दिए गए।

—भारत के विदेशी सिगरेट के बहिष्कार करने से लाखों रुपए की बचत हुई है। सन् १९२९ के सितम्बर में १३ लाख रुपए की विदेशी सिगरेट भारत ने ख़रीदी थी। सन् १९३० के सितम्बर में केवल २ लाख की सिगरेट आई है। इस तरह देश को १२ लाख रुपयों की केवल सिगरेट में बचत हुई है।

—विदेशी वस्त्र बहिष्कार के कारण हिन्दुस्तान के करोड़ों रुपए बचे हैं। भारत में ख़रीदे गए विदेशी वस्त्र का मूल्य यों है:—

	१९२९ में		१९३० में
ग्रे ...	... १६ करोड़	...	३३ करोड़
सफ़ेद	... ११ करोड़	...	३० करोड़
रङ्गीन	... १५ करोड़	...	५४ करोड़

—नई दिल्ली का २ री नवम्बर का समाचार है कि कल रात्रि को चाँदनी चौक में पुलिस ने, एक पुलिस के सिपाही को गोली से मार डालने का प्रयत्न करने के अभियोग में जिस मनुष्य की गिरफ़्तारी की है, वह लाहौर षड्यन्त्र केस का भागने वाला धनवन्तरी है, जिसके पकड़ने के लिए पुलिस ने एक बड़ा इनाम निश्चित किया था।

—नई दिल्ली का २री नवम्बर का समाचार है कि आज दिल्ली और पञ्जाब की पैदल और घुड़सवार पुलिस कल रात्रि को गोली चला कर भागने वालों की तलाश में ख़ूब चक्कर लगाती रही और उनमें से एक को गिरफ़्तार भी किया है। गवर्नमेण्ट ने उनका पता देने वालों को १६०० रुपए का इनाम देना निश्चित किया है। पुलिस वालों को पता लगा है कि भागने वाले आस-पास ही कहीं छिपे हैं और इसलिए कई दिनों तक उसकी दौड़-धूप इसी प्रकार होती रहेगी।

* * *

—यू०पी० कॉङ्ग्रेस के भूतपूर्व 'डिक्टेटर' श्री० मञ्ज़र अली सोख़्ता फ़ैज़ाबाद जेल से कल इलाहाबाद आ गए। श्री० सोख़्ता ने जुलूस इत्यादि के लिए मना कर दिया था और इसलिए कोई जुलूस नहीं निकाला गया।

—आज़मगढ़ का ३१ वीं अक्टूबर का समाचार है कि घोषी के दो सुप्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं, श्री० रामचन्द्र राय और श्री० लालबहादुर राय को पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अभियोग में ६-६ माह की सख़्त क़ैद और १००-१०० रुपए के जुर्माने की सज़ा हुई है। वहाँ से अभी तक ७६ सत्याग्रही जेल जा चुके हैं।

—अलीगढ़ का ३१ वीं अक्टूबर का समाचार है कि अलीगढ़ ज़िला जेल में राजनीतिक क़ैदियों ने जो अनशन किया था वह समाप्त हो गया। उसका कारण किसी बात के सम्बन्ध में ग़लत-फ़हमी थी और वह किसी हितैषी ने दूर कर दी है।

—नई दिल्ली का ३१ वीं अक्टूबर का समाचार है कि श्रीमती वेदी के स्थान पर वहाँ के पाँचवें डिक्टेटर नेशनल मुस्लिम यूनिवर्सिटी दिल्ली के रजिस्ट्रार हाफ़िज़ मुहम्मद फ़ैज़ चुने गए हैं। श्रीमती राजरानी के स्थान में श्रीमती मालती देवी स्त्री-वालण्टियरों की कमाण्डर नियुक्त हुई हैं।

—लाहौर का ३१ ता० का समाचार है कि सवेरे पुलिस ने दयालसिंह कॉलेज होस्टल पर धावा किया, दो विद्यार्थियों के कमरों की तलाशी ली और उन्हें गिरफ़्तार करके ले गई।

—श्री० राधामोहन गोकुल जी, जिनको राजद्रोह के अभियोग में उन्नाव में दो वर्ष की सज़ा दी गई थी, फ़तेहपुर जेल में रक्खे गए हैं। यद्यपि वे एक लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक और राजनीतिक कार्यकर्ता हैं तथा उनकी उम्र भी क़रीब ६७ वर्ष की है, तो भी मालूम हुआ है, कि उनको 'सी' क्लास में रक्खा गया है और जेल के कष्टों के कारण उनका वज़न १२ पौण्ड घट गया है।

—दिल्ली का ३री नवम्बर का समाचार है कि दिल्ली कॉङ्ग्रेस कमिटी के नए डिक्टेटर और राष्ट्रीय मुस्लिम यूनीवर्सिटी के रजिस्ट्रार श्री० हाफ़िज़ फ़याज़ुद्दीन कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस में कल शाम को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—अहमदाबाद का ३री नवम्बर का समाचार है कि कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी श्री० महादेव देसाई बम्बई चले गए हैं। वहाँ से वे पूना जायँगे और श्री० वल्लभ भाई पटेल के छूटने पर उनसे मिलेंगे। वहाँ से वे दोनों पण्डित मोतीलाल से मुलाक़ात करने इलाहाबाद आएँगे।

—कलकत्ते का १ली नवम्बर का समाचार है कि बङ्गाल स्त्री-सत्याग्रह कमिटी की सेक्रेटरी, जिन्हें पिछली २६ जून को छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई थी स्वास्थ्य ख़राब होने के कारण जेल से रिहा कर दी गईं।

—बनारस का ३री नवम्बर का समाचार है कि काशी विद्यापीठ के पं० वासुदेव झा शास्त्री और 'आज' के सहायक सम्पादक गोंडा में दफ़ा १०७ में गिरफ़्तार कर लिए गए। वे वहाँ कॉङ्ग्रेस का कार्य करने गए थे।

—कानपुर का १ली नवम्बर का समाचार है कि फ़ीलख़ाना मुहल्ले की १५ आदमियों की एक 'प्रभात टोली' बिना किसी नोटिस के या ग़ैरक़ानूनी क़रार दिए बिना ही गिरफ़्तार कर ली गई। उनके साथ कुछ लड़के और लड़कियाँ भी गिरफ़्तार किए गए थे परन्तु बाद में छोड़ दिए गए। शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के जनरल सेक्रेटरी श्री० बद्रीनाथ, वानर-सेना के प्रेज़िडेण्ट श्री० मदनमोहन टण्डन और ८ वालण्टियर भी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—लाहौर का २री नवम्बर का समाचार है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमिटी ने विदेशी कपड़े और शराब पर से पिकेटिङ्ग केवल इसलिए हटा लिया है कि व्यापारियों ने उनकी आज्ञा पालन करना स्वीकार कर लिया।

—लखनऊ ज़िले में भी 'अनलॉफ़ुल इन्सटिगेशन ऑर्डिनेन्स' जारी कर दिया गया है।

—पुलिस ने २री नवम्बर को बनारस म्युनिसिपैलिटी के एजूकेशन सुपरिण्टेण्डेण्ट के घर पर धावा किया, और कुछ चीज़ें, जिनमें उनकी पत्नी के कपड़े और फटे जूते भी सम्मिलित थे क़ुर्क़ कर ले गई। प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के क्लर्क श्री० शाहदेवसिंह भी ३ ता० को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बनारस का १ली नवम्बर का समाचार है कि बनारस ज़िला जेल के 'सी' क्लास के १४ राजनीतिक क़ैदियों ने दुर्व्यवहार के कारण अनशन प्रारम्भ कर दिया है।

—कलकत्ते का १ली नवम्बर का समाचार है कि पुलिस ने रामराजतला गाँव को चारों ओर से घेर कर उस पर धावा किया और लगभग १०० वालण्टियर गिरफ़्तार किए। पुलिस ने बहुत सी किताबों, काग़ज़ों और वालण्टियरों की चीज़ों पर कब्ज़ा कर लिया है। आलम बाज़ार के कॉङ्ग्रेस केम्प पर भी धावा कर पुलिस ने ५० वालण्टियरों की गिरफ़्तारी की है।

दिल्ली में २४ घण्टे में दो बार गोली चली

नई दिल्ली का १ली नवम्बर का समाचार है कि क्वीन्स गार्डन में से सी० आई० डी० पुलिस पर गोली चलाई गई। कहा जाता है कि एक अव्यक्त व्यक्ति सेण्ट्रल पुलिस के पास ८ बजे रात्रि को घूमता हुआ देखा गया और पुलिस को उस पर सन्देह होने पर उससे खड़े होने को कहा, परन्तु वह वेगपूर्वक जल्दी-जल्दी क्वीन्स गार्डन की ओर जाने लगा, पुलिस ने भी उसका बड़ी तेज़ी से पीछा किया। क्वीन्स गार्डन में पहुँच कर उसने पुलिस के ऊपर गोली चलाई परन्तु उनमें कोई घायल नहीं हुआ। दूसरी गोली एक मुसलमान राहगीर, लतीफ़ हुसेन को उसकी दाहिनी जाँघ में लगी। वह शीघ्र ही ताँगे पर अस्पताल में पहुँचाया गया।

२४ घण्टे के अन्दर ही एक ऐसी ही दुर्घटना चाँदनी चौक में हो गई। लगभग ४ बजे शाम को पुलिस ने एक व्यक्ति पर सन्देह किया और उसका पीछा किया। परन्तु उस व्यक्ति ने एकाएक घूम कर पुलिस पर जल्दी-जल्दी तीन गोलियाँ चलाईं जिससे एक सिपाही की पसलियों में चोट लगी। परन्तु पुलिस ने उसका तेज़ी से पीछा किया और जब उसने एक दुकान में घुस कर शरण ली, तब इन्स्पेक्टर अब्दुल वहीद ने उसे पकड़ लिया और उसकी रिवॉल्वर छुड़ा कर उसे गिरफ़्तार कर लिया। मालूम हुआ है कि अपराधी लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों में से एक है और ऐसा सन्देह किया जाता है कि उसीने क्वीन्स गार्डन में से भी गोली चलाई थी। कॉन्स्टेबिल अस्पताल भेज दिया गया है। अपराधी के साथ एक और व्यक्ति यूरोपीय वेश में था, परन्तु वह भीड़ में लापता हो गया। पुलिस सरगर्मी से तहक़ीक़ात कर रही है।

—हरिद्वार का ३१वीं अक्टूबर का समाचार है कि गुरुकुल यूनीवर्सिटी के रजिस्ट्रार और गुरुकुल कॉङ्ग्रेस कमिटी तथा गुरुकुल स्नातक समिति के प्रेज़िडेण्ट श्री० प्रोफ़ेसर सत्यव्रत गुरुकुल के अहाते में दण्ड-विधान की १०८ वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर सहारनपूर जेल भेज दिए गए। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रावती एम० ए० भी सहारनपूर गई थीं।

—अजमेर का ३१वीं अक्टूबर का समाचार है कि कपड़े की मिल 'न्यू वीविङ्ग एण्ड ट्रेडिङ्ग कम्पनी लिमिटेड' पर पिकेटिङ्ग जारी है। कहा जाता है कि यद्यपि मिल के मैनेजिङ्ग प्रोप्राइटर विदेशी सूत और उस सूत से बने हुए कपड़े को बन्द कर उस पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवाने के लिए तैयार हैं, परन्तु वे लिखित प्रतिज्ञा करने के लिए तैयार नहीं हैं। मालूम होता है कि शीघ्र ही कोई समझौता हो जायगा। अभी तक पुलिस ने इस सम्बन्ध में दख़ल नहीं दिया, परन्तु कुछ कॉन्स्टेबिल उस स्थान पर नियुक्त कर दिए गए हैं। पिकेटिङ्ग दिन-रात जारी रहती है।

—अम्बाला का ३१ वीं अक्टूबर का समाचार है कि पुलिस ने प्रभातफेरी के ६ वालण्टियरों को गिरफ़्तार कर लिया है। कहा जाता है कि वालण्टियर बुरी तरह पीटे गए और उन्हें पास की नाली में ढकेल दिया गया। उनमें से ५ छोड़ दिए गए और ४ पर कैण्टोण्मेन्ट एक्ट की दफ़ा ११८ का अभियोग लगाया गया। परन्तु बाद में वे भी छोड़ दिए गए।

—अम्बाला का ३१वीं अक्टूबर का समाचार है कि श्री० विट्ठल भाई पटेल का वज़न ८॥ पौण्ड घट गया है।

—पेशावर का १ली नवम्बर का समाचार है कि पिछली रात्रि को ६-१० बजे क़िस्साख़ानी बाज़ार में रास्ते की पटरी पर एक देशी बम फट जाने से एक वकील का मुन्शी घायल हो गया। अभी तक कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई। पुलिस मामले की जाँच कर रही है।

५० विद्यार्थी निकाल दिए गए

—बनारस का ३ री नवम्बर का समाचार है कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू की गिरफ़्तारी के कारण हड़ताल मनाने की वजह से वहाँ के सेण्ट्रल हिन्दू हाई-स्कूल के ५० विद्यार्थी स्कूल से निकाले गए और उन्हें कोलुआ बो ङ हाउस छोड़ देने के आज्ञा दे दी गई।

—बम्बई का ३१वीं अक्टूबर का समाचार है कि 'पीपुल्स बैटेलियन' के कमाण्डर के गिरफ़्तार हो जाने पर भी उसके कार्यों की प्रगति प्रबल वेग से बढ़ती जा रही है। उसके बहुत वालण्टियरों ने समुद्र के किनारे डैक पर धावा किया और मज़दूरों को इस आशय के इश्तहार बाँटे कि वे जहाज़ों से ब्रिटिश माल न उतारें। एक वालण्टियर ने जनरल पोस्ट ऑफ़िस में वहाँ के कर्मचारियों को गवर्नमेण्ट की नौकरी से इस्तीफ़ा देने के इश्तहार बाँटे। यह वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिया गया।

—लखनऊ का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि लखनऊ ज़िले में मलीहाबाद में श्री० हरसिंह बालचन्द्र की विदेशी कपड़े की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ५ वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। वहाँ की कॉङ्ग्रेस ने इस पर दुकान मालिक तथा उनके नौकरों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया है और उसने कलकत्ता, बम्बई, और कानपुर की कॉङ्ग्रेस कमिटियों से प्रार्थना की है कि जहाँ कहीं उस दुकान की शाखाएँ हों, सभी का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए।

१६० जापानियों की हत्या

टोकियो (जापान) का २८ वीं अक्टूबर का समाचार है कि मध्य फ़ारमोसा के देशी लोगों के विद्रोह के कारण १६० जापानी, जिनमें २० स्कूल की लड़कियाँ भी सम्मलित थीं, क़त्ल कर दिए गए। मूशा की एक स्कूल में जब कि एक खेल सम्बन्धी सभा हो रही थी देशी लोगों ने अचानक धावा कर दिया। विद्रोह के स्थान पर ६०० हथियारबन्द पुलिस भेज दी गई है। बाद का २६ वीं अक्टूबर का तयहाकू (उत्तरीय फ़ारमोसा) का समाचार है कि ८६ जापानियों की लाशों में, जो निर्दयतापूर्वक क़त्ल की गई हैं, २३ स्त्रियाँ, १७ लड़कियाँ, २१ लड़के, १३ पुलिस के और १२ सिविल अफ़सर सम्मिलित हैं।

* * *

—देहरादून का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि कॉङ्ग्रेस के दो प्रसिद्ध कार्यकर्ता चौधरी हुलास वर्मा और अमरनाथ वैद्य पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार शाम को गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। एक और कार्यकर्ता भी, जो महात्मा गाँधी के आश्रम के इन्सपेक्टर थे, दण्ड-विधान की १०६वीं धारा में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कानपुर का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि कानपुर ज़िला जेल से स्त्रियाँ फ़तहगढ़ सेन्ट्रल जेल भेज दी गई हैं। कानपुर के लोगों को यह जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ है कि फ़तहगढ़ के जेल-अधिकारियों ने उनके हाथों में से ज़बर्दस्ती चूड़ियाँ उतार ली हैं।

—लाहौर का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि दण्ड-विधान की धारा १०८ के अनुसार श्री० फ़ैज़ मुहम्मद, अब्दुल करीम और मुहम्मद इकराम को १-१ वर्ष की सादी क़ैद की सज़ा हुई है।

—लाहौर का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि तीन अकालियों को विदेशी कपड़े की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ६-६ माह की सख़्त क़ैद और २५-२५ रु० जुर्माना या डेढ़ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—पेशावर में चारसदा के चार वालण्टियर क़िस्सा-ख़ानी बाज़ार में शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बम्बई का ३० वीं अक्टूबर का समाचार है कि युवक-सङ्घ के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता और 'पीपिल्स बैटेलियन' के सङ्गठनकर्ता दफ़ा १२४-ए में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—जलालपुर में श्री० नाथूभाई, खुशालभाई, वल्लभभाई, लालभाई और अम्बालाल को ६-६ माह की सख़्त क़ैद और २०-२० रुपए जुर्माना या १-१ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—पनवेल का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि श्री० प्रभाकर केशवराव गुप्त को, जो कॉङ्ग्रेस-कमिटी के ग़ैर क़ानूनी क़रार देने के समय उसके 'डिक्टेटर थे, और जिन्होंने नए कॉङ्ग्रेस हाउस का उद्घाटन किया है, १२ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—धारवाड़ के श्री० बाबूराव मुतालिक को दण्ड-विधान की १७७ वीं धारा के अनुसार छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—बलिया ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी और ज़िला सत्याग्रह-समिति के मन्त्री पण्डित रामदहिन ओझा को ५ मास की सादी क़ैद और ५० रुपए जुर्माना की सज़ा सुना दी गई। उन्हें एक माह तक हवालात में रक्खा गया था।

—क़न्नौज का ३१वीं अक्टूबर का समाचार है कि कल शराब की दुकान पर १५ गिरफ़्तारियाँ हुईं और एक सराय मैरन पर। पिकेटिङ्ग बहुत ज़ोरों से चल रही है।

—कानपुर का ३१ वीं अक्टूबर का समाचार है कि आज सवेरे पुलिस की लॉरी शहर में चक्कर लगा रही थी, जिससे मालूम होता था कि बहुत सी गिरफ़्तारियाँ होने वाली हैं। पर निम्न १० आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं—श्री० बुद्धूलाल मेहरोत्रा, महावीरप्रसाद ओझा, कालिका प्रसाद, काशी नारायण, बालीराम, गङ्गादीन, चौनी वाला, समलू बाबा, मदनमोहन पाण्डे, श्याम मनोहर और मदनमोहन अग्रवाल।

—मुज़फ़्फ़रनगर का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि लाला सुमतप्रसाद, बी० ए० वकील और बाबू केशव गुप्त, बी० ए०, एल्-एल्० बी० को, जो प्रायः एक माह पहिले गिरफ़्तार किए गए थे, इमर्जेन्सी मिडेशन आर्डिनेन्स के अनुसार ६-६ माह की सख़्त क़ैद और क्रमशः १०० और ५० रुपए जुर्माने की सज़ा हुई है। वे 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं। डॉ० द्वारकाप्रसाद गोयल और लाला अम्बाप्रसाद पुस्तक-विक्रेता को भी ६-६ माह की सज़ा हुई है और वे 'सी' क्लास में रक्खे गए हैं।

—नागपुर का ३० वीं अक्टूबर का समाचार है कि गोंदिया 'युद्ध-समिति' में ६३े डिक्टेटर श्री० बिहारीलाल शर्मा गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। उनके स्थान पर श्री० श्रावन पटेल डिक्टेटर नियुक्त हुए हैं।

—कालीकट में समुद्र के किनारे नमक बनाने के कारण दो कॉङ्ग्रेस वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए।

—किशोरगञ्ज के तीन विद्यार्थी नगेन्द्रचन्द्र सरकार, नवद्वीप साहा और जोगेन्द्र चन्द्र दास १० बजे रात को गिरफ़्तार किए गए हैं। यह कहा जाता है कि इनके रहने के घर में ज़मीन पर एक तमञ्चा पड़ा मिला है।

—बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी श्रीयुत शिवचरण राय सिनेमा से लौटते वक्त २० अक्टूबर को गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। यह गिरफ़्तारी बनारस दुर्गाकुण्ड में मिले हुए बम के सम्बन्ध में की गई है।

—सिराजगञ्ज के तीन स्वयंसेवक २६ वीं अक्टूबर को शराब की दुकान पर धरना देने के अपराध में पकड़े गए हैं।

—संत्रागाची के कॉङ्ग्रेस-भवन की तलाशी ली गई और २० स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए।

—अमरावती (सी० पी०) से वर्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में ८०१ मनुष्य जेल जा चुके हैं।

—छपरा की ख़बर है कि पं० शिवकुमार मिश्र सेक्रेटरी इवमा कॉङ्ग्रेस कमिटी, बाबू ईश्वरदेव सिन्हा और पं० रामकिशोर भारती को ६ महीने की सज़ा दी गई है। छपरा की मुफ़स्सिल कॉङ्ग्रेस कमिटी के कोषाध्यक्ष, सेक्रेटरी व प्रेज़िडेण्ट भी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—मुक्तेश्वर धोबी व महेन्द्रचन्द्र चक्रवर्ती धनकुनिया की शराब की दूकान पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—पेशावर का २री नवम्बर का समाचार है कि पटना के एक अभियुक्त को, जो पेशावर के कन्टोन्मेण्ट में पकड़ा गया था, वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट कैप्टन क्रॉब ने ६ साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है।

—लाहौर का ३री नवम्बर का समाचार है कि विदेशी कपड़े की दूकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण कल जिन १३ वालण्टियरों की गिरफ़्तारी हुई थी उनमें से ६ को ६-६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दे दी गई।

—दार्जिलिङ्ग का १ली नवम्बर का समाचार है कि पटुआख़ाली सत्याग्रह के सुप्रसिद्ध श्री० सतीन सेन को हाथ का अँगूठा देने के इनकार करने पर तीन माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—पेशावर का २री नवम्बर का समाचार है कि हस्तनागढ़ क्षेत्र के कोट्टाज़ाई गाँव के ६ वालण्टियर शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करते समय गिरफ़्तार कर लिए गए।

—मुज़फ़्फ़रनगर का १ली नवम्बर का समाचार है कि बाबू द्वारकाप्रसाद मित्तल, बी० ए०, एल्-एल्० बी० वकील को सत्याग्रह के सम्बन्ध में ६ माह की सख़्त क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई है। वहाँ अभी तक १२० गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

"कोई भी इज़्ज़त वाला आदमी जेल के बाहर नहीं रह सकता"

अहमदाबाद में अभी एक नवीन कॉङ्ग्रेस-भवन का उद्घाटन किया गया है। नवें ऑर्डिनेन्स द्वारा अहमदाबाद का पुराना कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस बन्द कर दिया गया है।

अहमदाबाद की डिक्टेटर श्रीमती अम्बालाल देसाई ने उसका उद्घाटन किया, व उस पर राष्ट्रीय पताका फहराई। पुलिस वहाँ उपस्थित थी और उन्होंने मकान-के मालिक को गिरफ़्तार कर लिया। इसके उत्तर में मकान मालिक ने कहा कि यह मकान मैंने कॉङ्ग्रेस को मुफ़्त दिया है और मैं अपनी सब इमारतें कॉङ्ग्रेस के कार्य के लिए मुफ़्त दूँगा।

श्रीमती अम्बालाल एक बहुत धनी ख़ानदान की महिला हैं। उनकी एक साल पहिले की दशा तथा आजकल की हालत में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। यह धनी महिला जो फ़ैशनेबिल कपड़ों में समाज की दावतों में शामिल हुआ करती थीं, आज बिलकुल सफ़ेद खद्दर की साड़ी में सड़कों पर पैदल फिरा करती हैं। कॉङ्ग्रेस की अन्य सेविकाओं में और इनमें कुछ भी अन्तर नहीं मालूम होता। अपनी लड़कियों के साथ वे हर रोज़ विदेशी कपड़े की तथा शराब की दूकानों पर धरना देती हैं। वे बिलकुल किसानों से मिल गई हैं व महात्मा जी का सन्देश घर-घर पहुँचा रही हैं।

जब यह पूछा गया कि आपने अपनी पूर्व शान-शौक़त को छोड़ कर आन्दोलन के कष्ट को क्यों पसन्द किया, तो उन्होंने उत्तर दिया कि मैं और क्या कर सकती थी? जब महात्मा जी जेल में हैं; जब जवाहरलाल, जो मुझे अपने पुत्र के समान प्यारा है, पाँचवीं बार जेल जा रहा है; जब भारत के सब स्वदेश-भक्त नेता जेल में पड़े हैं और जब वायसराय के ऑर्डिनेन्स ने हमारी केवल शारीरिक व साम्पत्तिक स्वतन्त्रता को नहीं, वरन् शान्ति युक्त समाज-सुधार के कार्य तक को धक्का दिया है, तब ऐसा कौन इज़्ज़तदार मनुष्य है जो जेल के बाहर रहना पसन्द करेगा? यह कार्य स्वतः मुझी को पसन्द नहीं है। ऑर्डिनेन्स ने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया है।

* * *

—पटना का ३री नवम्बर का समाचार है कि कॉङ्ग्रेस वालण्टियर अनिल दे, श्री० अजय दे और त्रिदल भट्टाचार्य को पुलिस-एक्ट का विरोध करने के अभियोग में चार माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—पटना का ३री नवम्बर का समाचार है कि अखिल भारतवर्षीय हिन्दू महासभा के सेक्रेटरी और एक उत्साही कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता बाबू जगतनारायण लाल को दण्ड-विधान की ५०५वीं धारा के अभियोग में ६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हो गई। वे 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं।

—मिदनापुर का ३री नवम्बर का समाचार है कि चेचूहाट के हल्क़े में सब-इन्स्पेक्टर भोलानाथ घोष की हत्या के सम्बन्ध में श्री० कवन पुजारी को आजन्म कालेपानी की सज़ा दी गई है। कहा गया है पुजारी का ३री जून की इस घटना में काफ़ी हाथ था।

—मद्रास का १ली नवम्बर का समाचार है कि मदुरा के कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्री० सुन्दरम पिल्लई को पुलिस में अविश्वास फैलाने और उसे भड़काने के अभियोग में ६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

* * *

बारदोली में स्त्रियों के प्रति निर्दयता

पुलिस की बर्बरता का नमूना : किसानों का गवर्नमेण्ट को मुँहतोड़ जवाब

गुजरात के कमिश्नर मिस्टर इस्माइल देसाई के साथ बारदोली में भ्रमण कर रहे हैं। उनका उद्देश लोगों को गाँव छोड़ने से रोकने का है। उन्होंने सिकेर के दो आदमियों से पूछा कि आप लोग गाँव में आकर क्यों नहीं रहते और फ्रिज़ूल में ये दुःख क्यों सहन करते हैं। उन्होंने तुरन्त जवाब दिया कि वे इस्माइल देसाई व पुलिस के अत्याचार के कारण गाँव छोड़ रहे हैं। फिर वे लगान भी नहीं देना चाहते।

कमिश्नर सारभोन ताल्लुक़े में भी गए थे। जब लोग उस स्थान को छोड़ कर जाने लगे तो उन्होंने उन्हें रोक कर कहा मैं तुम्हें मारने या गिरफ़्तार करने के लिए नहीं आया हूँ, मैं तुम से कुछ बातचीत करना चाहता हूँ। जब कमिश्नर ने उनसे पूछा आप लोग लगान क्यों नहीं देते, तब किसानों ने उत्तर दिया कि यदि महात्मा जी और सरदार वल्लभ भाई पटेल छोड़ दिए जावें और यदि वे उनसे लगान देने के लिए कहें तभी वे लगान दे सकते हैं। इस पर कमिश्नर ने कहा वे भला कैसे छूट सकते हैं। आप लोग कॉङ्ग्रेस की आज्ञा पालन कर रहे हैं, इससे देश भर में अशान्ति फैली हुई है। यदि आप लोग यह समझते हो कि १९२८ की तरह तुम्हारी ज़मीन तुम्हें वापस दे दी जावेगी, तो यह ख़याल बिलकुल ग़लत है। आप लोग जाइए और अपने गाँव में सुख से रहिए। पुलिस आप लोगों को तङ्ग नहीं करेगी। पर उन्हें निराश होकर जाना पड़ा। बाँकानेर में ज़ब्त ज़मीन कोई भी नहीं ख़रीद रहा है।

वामनी में पुलिस ने एक मकान घेर लिया था। एक बूढ़ी महिला, जो उसमें रहती थी उसे पुलीस ने मारा था और एक कमरे में बन्द किया था। दो दिन तक भोजन न मिलने के कारण वह बेहोश हो गई। अब वह अस्पताल में रक्खी गई है।

कुम्भिया में पुलिस ने स्त्रियों से अपने लिए पानी भराया। जब कुछ मनुष्य उनकी रक्षा के लिए गए तब पुलिस ने उनसे कहा कि यदि तुम स्त्रियों के साथ रहोगे तो हम तुम्हारी हड्डियाँ तोड़ देंगे।

सातेम में कुछ औरतें मवेशी के लिए घास काटने गई थीं। पुलिस ने उन्हें बहुत धमकाया और दबाया और उनके अँगूठे के निशान लिए। सारपुर में १३७ रु० लगान के एवज़ में एक किसान के बैलों की जोड़ी छीन ली गई।

जलालपुर केम्प का एक वालण्टियर सातेम के खेतों की तरफ़ अपना केमरा लेकर गया था। पुलिस ने केमरा छीन कर उसे पटक कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कहा कॉङ्ग्रेस बुलेटिन में अपने फ़ोटो छपवा कर हम लोग अपनी हतक़-इज़्ज़ती नहीं कराना चाहते।

जलालपुर ताल्लुक़े के बचे हुए गाँव भी ख़ाली हो रहे हैं। जब कभी लोग ऑफ़िसरों की मोटर का भोंपू सुनते हैं, झट अपने मकानों में ताला लगा कर बाहर चले जाते हैं। ३ कॉङ्ग्रेस के आदमियों को ६ मास की कड़ी सज़ा व २०) रुपए जुर्माना हुआ है।

'इस्तीफ़ा देकर राष्ट्रीय संग्राम में भाग लो'

अदालत में श्रीमती आसफ़ अली का ओजस्वी बयान

दिल्ली में श्रीमती मिसेज़ आसफ़ अली का मुक़द्दमा मिस्टर इसर के सामने शुरू हुआ। चार सरकारी गवाह ने अपने बयानों में कहा कि इन्होंने मज़दूरों को आन्दोलन में भाग लेने के लिए उभाड़ा था। इन्होंने सभा में यह भी कहा था कि हम लोगों को चाहिए कि इस विदेशी शासकों को, जो हम लोगों की रोटी छुड़ा रहे हैं, निकाल बाहर करें। जब श्रीमती आसफ़ अली से पूछा गया कि आप कुछ कहना चाहती हैं तब उन्होंने कहा कि मैं इस मुक़द्दमे की कार्यवाही में भाग नहीं लेना चाहती, क्योंकि मैं ब्रिटिश लोगों के न्याय पर विश्वास नहीं रखती। यदि स्वदेश को प्यार करना व उसकी स्वतन्त्रता के लिए लड़ना जुर्म है, तो मैं अवश्य अपराधी हूँ। और जब तक मेरा देश विदेशियों के पञ्जे से नहीं छूटेगा, मैं इस जुर्म को करती रहूँगी। ब्रिटिश साम्राज्य के जीवन के बहुत कम दिन बाक़ी रह गए हैं। चाहे भारतीय स्वतन्त्रता की सेना के सारे सिपाही भी जेल में बन्द कर दिए जावें, तो भी यह घटना अब रोकी नहीं जा सकती। मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या मैंने सब सच नहीं कहा है। क्या मैंने कुछ स्वतन्त्रता के धर्म के विरुद्ध कहा है। यदि हृदय से मेरे मत में विश्वास रखते हो तो मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम अपने पद से इस्तीफ़ा दे दो और इङ्गलैण्ड के मान को लात मार कर वीर हिन्दुस्तानी की तरह संग्राम में कूद पड़ो।

मुक़द्दमा समाप्त होने पर उनसे एक साल के लिए नेकचलनी का मुचलका देने को कहा गया। उनके इनकार करने पर साल भर की सज़ा दी गई। वे 'ए' क्लास में रक्खी गई हैं।

श्रीमती सेन गुप्त गिरफ़्तार

नई दिल्ली का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि श्रीमती सेन गुप्त कॉङ्ग्रेस कमिटी की 'डिक्टेटर' श्रीमती वेदी और कुछ वालण्टियर क्वीन्स गार्डेन में ग़ैर क़ानूनी सभा के सदस्य होने के कारण गिरफ़्तार कर लिए गए। गिरफ़्तार वालण्टियरों में कुछ गोरखे भी हैं। उनकी गिरफ़्तारी के विरोध में दिल्ली में हड़ताल मनाई गई।

सरदार पटेल की मोटर कुर्क हुई

सूरत का २९ वीं अक्टूबर का समाचार है कि बारदोली में जिस मोटर का उपयोग सरदार वल्लभ भाई पटेल करते थे, वह कुर्क़ कर ली गई है और ताल्लुक़े का चक्कर लगाते समय पुलिस कमिश्नर मि० गेरेट अब उसका उपयोग करते हैं। सरदार पटेल का बारडोली ताल्लुक़े में जैसा दबदबा है, वह विख्यात ही है अतएव इस घटना से सारे ताल्लुक़े में बड़ा असन्तोष फैल गया है।

"बम्बई में मार्शल-लॉ घोषित करो"

'लन्दन टाइम्स' अख़बार में एक पत्र प्रकाशित हुआ है जिसमें एक 'पाठक' ने लिखा है कि भारत की वर्तमान क्रान्ति का मुख्य कारण यह है कि कॉङ्ग्रेस को अपना उत्पात फैलाने के लिए बम्बई के धनिक धन से हर प्रकार की सहायता दिए हुए हैं। इसी धन के सहारे कॉङ्ग्रेस नीची जाति के मुसलमानों को कॉङ्ग्रेस में भरती करती है और उनके कुटुम्बों के पालन-पोषण के लिए रुपया देती है। कॉङ्ग्रेस यह धन बहुत ही घृणित तरीक़े से एकत्रित करती है। अब कॉङ्ग्रेस ने लगानबन्दी का नया उत्पात प्रारम्भ किया है और इसे दबाने के लिए गवर्नमेण्ट के ज़बरदस्त पञ्जे की आवश्यकता है। भारतीय गवर्नमेण्ट की इच्छा थी कि कॉन्फ्रेन्स शान्तिमय वायु-मण्डल में हो, परन्तु इस शान्ति के लिए बहुत अधिक मूल्य देना होगा। इसका अनुभव गवर्नमेण्ट सीमा-प्रान्त में कर चुकी है। जिस प्रकार मार्शल-लॉ से वहाँ शान्ति स्थापित हुई है, बम्बई शहर में भी मार्शल-लॉ उतना ही लाभदायक होगा।

विद्यार्थी कॉलेज छोड़ने लगे

नागपुर का ३० वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ के तिलक विद्यालय से सम्बन्धित फ़ाइन आर्ट्स कॉलेज के प्रिंसिपल श्रीयुत बी० जी० कोठारी के विरुद्ध, जो २४ वीं अक्टूबर से कॉलेज-बहिष्कार के सम्बन्ध में साइन्स कॉलेज के मुख्य द्वार पर अनशन कर रहे थे, पुलिस ने रिपोर्ट की जिसके कारण नागपुर के सिटी मैजिस्ट्रेट ने उनके नाम पर एक ज़मानती वारण्ट निकाला था। परन्तु ज़मानत देने से इनकार करने पर वे दण्ड-विधान की धारा २९० के अनुसार जनता में असन्तोष फैलाने के अभियोग में गिरफ़्तार कर, सेन्ट्रल जेल भेज दिए गए। ३० ता० को सवेरे जब साढ़े पाँच बजे वे गिरफ़्तार किए गए थे तब उनके अनशन का १४३ वाँ घण्टा था। वे बहुत प्रबल मालूम होते थे। अनशन के परिणाम स्वरूप उनके और विद्यार्थियों के बीच में गुप्त बातचीत प्रारम्भ हो गई थी और वे कॉलेज के अन्दर कॉङ्ग्रेस का साथ देने को तैयार भी हो चले हैं। वे इस सम्बन्ध में कोई कार्यक्रम निर्धारित करने वाले हैं। श्री० कोठारी के साथ सहानुभूति दिखाने के लिए मॉरिस कॉलेज के श्री० शेवड़े ने कॉलेज छोड़ दिया है।

"औपनिवेशिक राज्य की योजना नहीं कर रहे हैं"

मि० चर्चिल ने चिङ्गफ़ोर्ड के अपने एक भाषण में कहा है कि—"भारत के लोग यह समझ रहे हैं कि गोलमेज़ परिषद् औपनिवेशिक राज्य के विधान की तैयारी करेगी। यह अत्यन्तावश्यक है कि यह विचार मस्तिष्क से निकाल दिया जाय और यह स्पष्ट कर दिया जाय कि परिषद् को औपनिवेशिक राज्य का विधान तैयार करने का कोई अधिकार नहीं है। वह तो केवल एक शासन-विधान की सिफ़ारिश कर सकती है, जिसके आधार पर पार्लामेण्ट के दोनों हाउस एक्ट निर्धारित करेंगे।"

भैंस सात रुपए में नीलाम

बोरसद का २९ वीं अक्टूबर का समाचार है कि किसान खुले मैदानों में पड़े हैं। दो दिन से वर्षा होने के कारण उन्हें बहुत कष्ट झेलने पड़े हैं। इसके साथ ही डाकू अनाज चुरा ले जाते हैं और ख़ूब फली-फूली फ़सल में आग भी लगा देते हैं।

मालूम हुआ है कि दो आदमी पिता-पुत्रों को किसी ने घायल कर दिया है और वे अस्पताल में पड़े हैं। एक १०० रुपए की भैंस केवल सात रुपए में नीलाम कर दी गई है !!

गोलमेज़ परिषद या कौआ-भोज?

"तुम में क्या कोई अंगरेज़ी जानता है ?"

श्री० ताम्बे और जयकर की छीछालेदर !!

भारतीय प्रतिनिधियों का घोर अपमान !!!

लन्दन से २६ वीं अक्टूबर को मद्रास के दैनिक 'हिन्दू' को 'इण्डियन डेली मेल' के सम्पादक मि० एफ़० डबल्यू० विल्सन ने एक विशेष तार भेजा है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि गोलमेज़ परिषद के सभासदों का गवर्नमेण्ट ने जो आतिथ्य-सत्कार किया है उसका परिणाम बहुत भयङ्कर हुआ है।

"अवसर क्रायडन में हवाई खेलों का था और उसमें इम्पीरियल कॉन्फ्रेन्स के प्रतिनिधियों के स्वागत के लिए खूब शानदार तैयारी की गई थी। परन्तु जब भारतीय प्रतिनिधि वहाँ पहुँचे तो उन्होंने अपने को बिलकुल विपरीत परिस्थिति में पाया, और उस समय उन्हें यह जानने का अच्छा अवसर मिला कि—"औपनिवेशिक राज्य देने की तैयारी हो रही है।"

भारतीयों के लिए न तो वहाँ बैठने के लिए कोई प्रबन्ध था और न था भोजन का और न उनका कोई स्वागत ही हुआ।

"सेण्डविचेज़ (एक प्रकार का अङ्गरेज़ी खाना) जल्दी से मँगाया गया और वह भी हमारे प्रतिनिधियों ने उसी प्रकार खाया, जिस प्रकार 'कौए मकान के छप्पर पर बैठ कर खाते हैं।' जिस समय उनका यह 'कौआ-भोज' हो रहा था पास ही से प्रधान मन्त्री मेकडॉनल्ड वहाँ से निकले और दृष्टि बचा कर निकल गए।"

इस स्वागत की इतिश्री तो उस समय हुई, जब एक उच्च पदाधिकारी ने श्री० ताम्बे से पूछा कि "क्या प्रतिनिधियों में से कोई अङ्गरेज़ी भी जानता है?" श्री० जयकर की मनोवृत्ति ने एक विचित्र रूप धारण कर लिया है। उनका कहना है कि "यदि गवर्नमेण्ट के आतिथ्य और स्वागत का यह नमूना है तो मैं ऐसे स्वागत को कभी स्वीकार न करूँगा।"

"गोलमेज़-परिषद के बहुत से सदस्य हताश होकर वहाँ से जल्दी उठ कर चले आए। ब्रिटिश अफ़सरों ने अपनी अज्ञानता और उदासीनता का एक विचित्र नमूना दिखाया है। इस व्यवहार से उनकी अदूरदर्शिता झलकती है।"

दीवार पर बैठे दोनों काग-महाशय :—क्या हम एक टुकड़ा भी न पाएँगे !

* * *

गोलमेज़ की सफलता के लिए गिर्जे में प्रार्थना

लन्दन में केण्टरबरी और यार्क के आर्क-बिशप (बड़े पादरी) और इवेनजेलीकल्फ़ो चर्च के नेताओं ने शहर के निवासियों के नाम एक अपील निकाली है कि १६ ता० को और उसके बाद जब तक गोलमेज़ परिषद की बैठक होती रहे, शहर के हर एक गिर्जे में उसकी सफलता के लिए प्रार्थना की जाय जिससे उसमें सात्विक भावनाओं, सदिच्छाओं, हेल-मेल के भावों और परस्पर सहानुभूति का उद्भव हो !!

* * *

"नमकहराम पुलिस को जुलूस पर वार करने के लिए मेरी और इस बुढ़िया की लाश पर से जाना होगा।"

—पं० मोतीलाल नेहरू

जवाहर सप्ताह की शानदार तैयारी : जुलूस ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दिया गया।

३ री नवम्बर से इलाहाबाद में 'जवाहर-सप्ताह' मनाना प्रारम्भ हुआ, और पहले ही दिन की घटना ने शहर भर में सनसनी फैला दी। जुलूस खद्दर-भण्डार से उठ कर शहर में घूमता हुआ ६ बजे शाम को केनिङ्ग रोड और एलबर्ट रोड के चौराहे पर पहुँचा। यहाँ श्रीमती कमला नेहरू को इस बात की इत्तिला दी गई कि जुलूस १० बजे के पहिले कैनिङ्ग रोड के उत्तर की ओर न जाय; क्योंकि उससे रास्ता रुकने की सम्भावना है।

परन्तु जुलूस आगे बढ़ता गया और गज़दर कम्पनी के पास डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने उस पर दफ़ा १४४ लगा कर उसे ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दिया। पुलिस रास्ता रोक कर खड़ी हो गई और उसने जुलूस की गति रोक दी। जुलूस में सम्मिलित स्त्री-पुरुषों ने सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया और वे स्त्रियों को बीच में कर वहीं बैठ गए। कुमारी श्यामकुमारी नेहरू, श्रीमती कमला नेहरू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित और कुमारी कृष्णा नेहरू राष्ट्रीय भजन गाती थीं और बाद में जुलूस में सम्मिलित जनता उसे दुहराती जाती थी। जुलूस में सम्मिलित होने वाले शहर के अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों में पं० मदनमोहन मालवीय की धर्मपत्नी, पं० जवाहरलाल की पुत्री कुमारी इन्दु, पं० मोहनलाल नेहरू, पं० सुन्दरलाल जी, यू० पी० के भूतपूर्व डिक्टेटर श्री० मञ्ज़रअली सोख़्ता और पं० केशवदेव मालवीय थे। जुलूस में कुछ देर तक पं० सुन्दरलाल, पं० मोहनलाल नेहरू, श्री० विजयलक्ष्मी पण्डित और पण्डित केशवदेव मालवीय के भाषण भी हुए। उनमें से सभी ने यह कहा कि यह उनकी परीक्षा का समय है और उन्हें पूर्ण-रूप से शान्त रहना चाहिए।

९ बजे के क़रीब पण्डित मोतीलाल अपनी धर्मपत्नी के साथ जुलूस में आए। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि "मैंने जिस समय यह सुना कि जुलूस रोका गया है मेरी प्रबल आकांक्षा थी कि मैं उसी समय वहाँ पहुँचूँ; परन्तु मेरी साँस ज़ोरों से चल रही थी और मैं खड़ा भी न हो सकता था। परन्तु जैसे ही साँस शान्त हुई, मैं यहाँ आ गया। मुझे आप लोगों से जैसी आशा थी, आपने वैसा ही कर दिखाया। इस समय मेरी ख़ुशी की सीमा नहीं है। मुल्क के इन नमकहराम पुलिस वालों को पहिले मेरी और इस बुढ़िया की लाश पर से जाना होगा तब वे आप लोगों पर वार कर सकेंगे। पुलिस को अपनी इस कृतघ्नता के लिए जुर्माना देना होगा। मेरी समझ में, मेरे लिए और देश के लिए तो स्वराज्य हो चुका।" उनके बाद उनकी धर्मपत्नी श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू ने भी छोटा सा भाषण दिया। उन्होंने भी कहा कि "आप लोगों पर वार करने के लिए सब से पहले इन पुलिस वालों को मेरी लाश पर से जाना होगा।" अस्वस्थता के कारण पण्डित जी क़रीब आधे घण्टे के बाद वहाँ से चले गए।

जुलूस के ग़ैरक़ानूनी क़रार देने की बात शहर में बिजली की भाँति फैल गई और क्षण भर में शहर भर की दुकानें बन्द हो गईं। जुलूस में सम्मिलित होने के लिए शहर के स्त्री-पुरुषों की भीड़ उमड़ पड़ी। जब तक जुलूस ने सत्याग्रह किया, उसके भीषण राष्ट्रीय नारों से आकाश गूँज उठा। पुलिस अधिकारियों से जुलूस निकलने का उपाय पूछने पर पण्डित सुन्दरलाल जी को उत्तर मिला कि १० बजे पुलिस वहाँ से हटा ली जायगी और तब जुलूस निकल सकेगा। वापिस जाकर उन्होंने लोगों से आवश्यकता पड़ने पर कल तक बैठे रहने के लिए कहा। कॉङ्ग्रेस की ओर से जुलूस के जलपान का प्रबन्ध हुआ था और लगभग ९॥ बजे मिष्टान्न और फल बाँटे गए थे। बहुत से कॉनिस्टबिलों के साथ घुड़सवार पुलिस भी काफ़ी तादाद में वहाँ उपस्थित थी। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० मेजर्स और सिटी कोतवाल मि० इकरामहुसेन भी वहाँ अन्त तक उपस्थित रहे।

जब तक जुलूस बहादुरगंज, हिवेट रोड, सिटी रोड और स्टेनली रोड पर से चलता रहा, तब तक आगे-आगे आदमी घोड़ों पर चल रहे थे और उनमें से दो बिगुल बजा रहे थे। उनके बाद जुलूस की नेत्री श्रीमती कमला नेहरू थीं और बाद में जुलूस। जुलूस के साथ गाड़ियों पर ७ चौकियाँ भी चल रही थीं, जिनमें विदेशी कपड़ा व मर्दुमशुमारी के बहिष्कार की घोषणा की जा रही थी। अन्य चौकियों में जेल में जवाहरलाल, चर्ख़ा कातती भारत माता, जनरल डायर और पुलिस के दृश्य दिखाए गए थे। एक बैलगाड़ी पर स्वदेशी पदार्थों की प्रदर्शिनी थी।

१० बजे रात्रि को जब पुलिस एलबर्ट रोड से हटा ली गई, तब जुलूस श्रीमती कमला नेहरू के नेतृत्व में आगे बढ़ा। आज के जुलूस में युनिवर्सिटी के विद्यार्थी बहुत बड़ी तादाद में उपस्थित थे। जुलूस के ग़ैरक़ानूनी क़रार देने की ख़बर पहुँचते ही प्रायः सब होस्टल ख़ाली हो गए थे।

जुलूस के सम्बन्ध में गिरफ़्तारियाँ

४ थी नवम्बर को इलाहाबाद में, एलबर्ट रोड पर कॉङ्ग्रेस जुलूस को ग़ैर क़ानूनी क़रार देने के सम्बन्ध में चार गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। श्री० मञ्ज़र अली सोख़्ता और पण्डित सुन्दरलाल तीन बजे शाम को गिरफ़्तार हुए थे और पण्डित केशवदेव मालवीय और श्री० गुरुनरायण खन्ना दफ़ा १४३ के अनुसार संध्या समय गिरफ़्तार किए गए। जब तक फ़ैसला न हो जायगा वे इलाहाबाद की ज़िला जेल में रक्खे जायँगे।

पं० गोविन्द मालवीय को दो साल की सख़्त क़ैद

लाहौर षड्यन्त्र केस के पश्चात कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी पण्डित गोविन्द मालवीय ने पुरुषोत्तमदास पार्क में जो व्याख्यान दिया, उसी के सम्बन्ध में उन पर दफ़ा १२४-ए में राजविद्रोह का अभियोग लगाया गया था! ३ री नवम्बर को नैनी सेण्ट्रल जेल में डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० बम्फ़र्ड ने दोपहर के बाद उनका फ़ैसला सुना दिया। उन्हें उपर्युक्त अभियोग में डेढ़ वर्ष की सख़्त क़ैद और ५०० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई है। जुर्माना न देने पर छः माह की सख़्त सज़ा उन्हें और भोगना पड़ेगी। जब तक गवर्नमेण्ट का कोई ऑर्डर न आ जायगा तब तक वे बी० क्लास में रक्खे जायँगे। पण्डित मालवीय फ़ैसला सुनते समय प्रसन्नचित थे, परन्तु उनकी धर्मपत्नी और माता खिन्न थीं।

—लन्दन का ३० वीं अक्टूबर का समाचार है कि भारत का हवाई डाक का जहाज़ कोलों के निकट दोपहर को एञ्जिन ख़राब होने के कारण नष्ट हो गया। और उसके कारण मि० स्ट्रीट और मि० मेलन मर गए तथा मेकेनिक जेम्स और फ़्लिन और दो यात्री घायल हुए हैं। कहा जाता है डाक सुरक्षित है।

—लन्दन का २९ वीं अक्टूबर का समाचार है कि सेण्ट-जॉर्ज-अनुदार-सभा में गवर्नमेण्ट की भारतीय नीति की समालोचना करते हुए लार्ड लॉयड ने कहा है कि भारत में बादशाह की गवर्नमेण्ट का बहुत अपमान हुआ है और खुले रूप से उसका विरोध किया गया है, और यदि सख़्ती से काम लिया जाता, तो राजविद्रोह इतना अधिक न बढ़ने पाता, जितना वहाँ आज बढ़ गया। अन्त में उन्होंने कहा कि भारत जितना अधिक राजविद्रोह और अशान्ति फैलाएगा उसे उतने ही कम सुधारों की आशा करनी चाहिए; उससे हमारी कोई हानि नहीं होती।

—लन्दन का २९ वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ की पी० एण्ड ओ० स्टीम और नेवीगेशन कम्पनी ने, शेयरों पर बिना इन्कम टैक्स के ५ प्रतिशत लाभ घोषित किया है। पिछली साल यही लाभ १२ प्रतिशत घोषित किया गया था। इससे मालूम होता है कि जहाज़ों के व्यापार में भी भारी कमी हुई है।

—२९ वीं अक्टूबर को लन्दन में हाउस ऑफ़ कामन्स में विदेश सचिव मि० हेण्डरसन ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा है कि वे सोवियट रूस के राजदूत से मिले थे और उससे कहा था कि रूसी गवर्नमेण्ट अपने प्रचार कार्य द्वारा एङ्गलोरशियन सन्धि तोड़ रही है। रूसी राजदूत ने उन्हें इस बात का विश्वास दिलाया कि रूस ने अभी तक अपने वचन का पालन किया है और वह पालन करेगा। परन्तु वह 'थर्ड इण्टरनेशनल' (साम्राज्यवाद के विरुद्ध क्रान्ति करने वाला दल) की कार्यवाहियों को नहीं रोक सकता।

—कहा जाता है कि तुरङ्गज़ाई के हाजी मलिक महारुख के साथ सीमा प्रान्त की सरहद पर लौट आए हैं। उनके आने का उद्देश्य गुप्त है।

—पेरिस का ३१ वीं अक्टूबर का समाचार है कि मौलाना मुहम्मद अली वहाँ हृदय-रोग से पीड़ित हैं और उनके विशेषज्ञ डॉक्टर ने ८ वीं नवम्बर तक वहीं इलाज कराने का परामर्श दिया है। डॉक्टर ने उन्हें विश्वास दिलाया है कि वे उस इलाज के बाद गोलमेज़ परिषद में भाग ले सकेंगे।

दो दिन में १६ गिरफ़्तारियाँ

इलाहाबाद में २री नवम्बर को पिकेटिङ्ग के अभियोग में १६ गिरफ़्तारियाँ हुई थीं। मि० मुज़फ़्फ़रहुसेन को मिला कर १० आदमी विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में चौक में, और पण्डित रङ्गनाथ शर्मा और ५ अन्य व्यक्ति शाम को ५ बजे कीटगञ्ज में गिरफ़्तार हुए थे।

—३री नवम्बर को श्री० सीताराम गुरुठे दारागञ्ज में शराब की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए।

बारदोली का बलिदान

गाँवों में पुलिस का अखण्ड राज्य

गाँव स्मशान बने हुए हैं ; लाख के घर ख़ाक में मिल रहे हैं

सत्याग्रह-आश्रम की श्रीमती मीरा बहिन ने गए हफ़्ते में बलाबपुर तथा बारदोली ताल्लुक़ा में भ्रमण किया है। साथ में ब्रिटिश मज़दूर-दल के सुप्रसिद्ध नेता और लेखक मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड भी थे। वे भारत की दशा देखने को ही यहाँ आए हैं। हर जगह निर्वासित किसान उनसे ख़ुशी से मिले। मीरा बहिन यह देख रही थीं कि इन किसान कुटुम्बों में चर्ख़े का क्या स्थान है। मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड इस नवीन देश की दशा का अध्ययन कर रहे थे। वह विशेष कर यह देखने का प्रयत्न कर रहे थे, कि किसानों का ह्रास गुण क्या है। वे अपने आश्चर्य को बहुत दबाने का प्रयत्न करते थे, पर इस पर भी जो शब्द उनके मुख से निकलते थे वे उनके आन्तरिक भावों का परिचय दे रहे थे। ऐसा मालूम होता था कि वे जो बातें यहाँ देख रहे थे उन्होंने संसार के किसी भाग में नहीं देखी थीं। नवसारी से वे लोग महात्मा जी की कुटिया देखने के लिए कराडी गए। कुटिया में घुसने के पहिले मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड ने आदरपूर्ण भाव से अपने जूते बाहर ही उतार दिए। एक सम्माननीय किसान अन्दर बैठा हुआ चरख़ा कात रहा था। ये श्रीयुत पन्ना-भाई पटेल थे। १९२० के असहयोग आन्दोलन के आरम्भ से ही उन्होंने सरकार को एक पाई लगान देने से इनकार कर दिया था। कई साल हुए तब उनकी ज़मीन ज़ब्त कर ली गई और बेच दी गई। पर आज तक कोई उसे जोत नहीं सका है। उसी ज़ब्त की हुई ज़मीन पर एक ऊँचे बाँस पर राष्ट्रीय झण्डा फहराता है। वहाँ एक सभा का प्रबन्ध किया गया। श्रीमती मीरा बहिन ने उन्हें आन्दोलन जारी रखने का उपदेश दिया और कहा कि सारा भारतवर्ष तुम्हारी ओर देख रहा है, इसलिए तुम्हें अपनी वीरता व साहस का पूर्ण परिचय देना चाहिए। उन्होंने हर मनुष्य, स्त्री व बच्चे को खद्दर बनाने व पहिनने का उपदेश दिया। मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड का कहना है कि वहाँ मुझे खद्दर के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखाई दिया। वे उस जगह भी गए, जहाँ पर सब लोगों ने मिल कर नमक-सत्याग्रह किया था।

ठीक दोपहर को वे बरोदा रियासत को पार करके वागेच नामक ग्राम में पहुँचे। उसे देखते ही मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड ने कहा कि मालूम होता है कि हम लोग बारदोली ताल्लुक़े में पहुँच गए। मोटर पर से उतर कर वे लोग सारे गाँव में घूमे, पर उन्हें केवल एक किसान व मन्दिर का रखवाला; बस यही दो आदमी एक बरामदे में बैठे मिले। इन दो व्यक्तियों के सिवाय और सब लोग गाँव छोड़ कर चले गए थे। मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड यह देख कर इतने आश्चर्यान्वित हुए कि वे कहने लगे कि मैं परियों की कहानियों में जो क़िस्से पढ़ा करता था, वह आज मैं साक्षात देख रहा हूँ। उन्होंने उस किसान से पूछा कि तुमने लगान दे दिया? उसकी आँखें चमक उठीं और वह बोला—"नहीं, जब तक महात्मा जी व सरदार जेल में हैं, तब तक यह नहीं हो सकता।" उसका निश्चय देख कर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। इसके बाद वे एक दोमञ्ज़िले मकान में घुसे, जिसमें ताला नहीं लगा था। वह बिलकुल ख़ाली पड़ा था।

वे फिर कुछ देर के लिए सारोभोन स्वराज्य-आश्रम में ठहरे। एक पुलिसमैन उसकी रक्षा कर रहा था। एक-एक करके वहाँ दस पुलिसमैन आकर खड़े हो गए मानो सब ज़मीन से पैदा हो गए हों। वहाँ बहुत अच्छा खादी का काम होता है। वहाँ यह मालूम हुआ कि ग़रीबों का दातव्य अस्पताल भी सरकार ने ज़ब्त कर लिया है।

जल्दी-जल्दी खाना ख़तम करके वे लोग रायम पहुँचे। इस गाँव का कार्य मिस्टर कालू देसाई के हाथ में सौंपा गया है। गाँव के द्वार पर ही पुलिस ज़ब्त किए हुए धान की रक्षा कर रही थी। यह धान २४ तारीख़ को चार रुपए में ७ मन के हिसाब से बेचा जाने वाला था। फिर वे हरीपुरा गए। वहाँ बहुत दिनों से पुलिस का घेरा लग रहा था। न कोई बाहर जा सकता था न कोई गाँव के अन्दर आ सकता था। अभी हाल में सूरत के भूतपूर्व एम० एल० सी० मिस्टर चुन्नीलाल गाँधी बार-

---

लीडर ग़रीब गाँधी है !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

हर एक छोटे-बड़े का, हबीब गाँधी है ;
वफ़ा की ख़ाक का पुतला, ग़रीब गाँधी है !
सबब यही है जो क़ुर्बान; जानो-दिल से हैं सब ,
कि सब का दोस्त है, सब का हबीब गाँधी है !
जो लोग देखते हैं उसको, शाद होते
.ख़ुशी भी कहती है, क्या .ख़ुश-नसीब गाँधी है ;
वह बदनसीब हैं, जो दूर-दूर रहते हैं,
नसीब उनके हैं, जिनके क़रीब गाँधी है !
यह सब पे हो गया ज़ाहिर; कि वह है दिल का अमीर;
कहे न भूल के कोई, ग़रीब गाँधी है !
जो उसके दोस्त हैं, उनका तो कोई ज़िक्र नहीं;
कि दुश्मनों को भी, दिल से हबीब गाँधी है !
अदब के साथ झुकाते हैं; अपना सर लीडर ;
कि लीडरों का यह लीडर, ग़रीब गाँधी है !
वतन के वास्ते दुनिया का ऐश भूल गया ;
यह बात सच है कि, सच्चा हबीब गाँधी है !
बँधी है धाक ज़माने में, इसकी ऐ "बिस्मिल" ;
.ख़ुदाई क्यों न कहे, .ख़ुशनसीब गाँधी है !!

दोली ताल्लुक़े में भ्रमण करने आए थे। हरीपुरा में उन्हें पुलिस ने रोक दिया। ख़ैर किसी तरह ये लोग अन्दर घुसे, पर पुलिसमैन पीछे लगा रहा। वहाँ कई मकानों पर तलाटी के हस्ताक्षर किए हुए नोटिस लगे हुए थे। उन नोटिसों में लिखा था कि सरकार ने उनका लगान वसूल कर लिया है, इसलिए मकान-मालिक घर लौट सकते हैं। इससे यह मालूम होता था कि सरकार के नोटिस देने पर ये लोग घर छोड़ कर चले गए थे।

हरीपुरा से ये लोग खोज पहुँचे। यह बारदोली ताल्लुक़े के कुछ गाँवों में से एक है, जिसके प्रत्येक किसान ने लगान देने से इनकार कर दिया है। सरकारी अत्याचार का यहाँ कुछ भी असर नहीं हुआ। खोज निवासी कहते हैं—"स्वराज नहीं तो लगान भी नहीं।" खोज ही एक गाँव था, जिसके सब निवासी घर छोड़ कर नहीं चले गए थे। पचास साहसी और दृढ़ निश्चयी किसानों के एक झुण्ड ने घर न छोड़ने का निश्चय कर लिया है। उन्होंने लुटेरों और हत्यारों के झुण्डों से गाँव की रक्षा करने का निश्चय किया है। वे ख़ुशी से लाठी की मार खाते हैं व लगान देने से इनकार करते हैं। उन लोगों ने बतलाया कि तीन महीने हुए यहाँ एक बूढ़े किसान की हत्या हुई है, पर इसके सम्बन्ध में अभी तक कोई तहक़ीक़ात नहीं की गई।

शाम के छः बजते-बजते वे लोग वराड पहुँचे। ज़ब्ती के लिए पुलिस ने मकानों के ताले तोड़ डाले थे। एक मकान से १००० रुपए का सामान ज़ब्त कर लिया था। तीस गुना लगान वसूल कर लेने पर भी ज़मीन ज़ब्त हो जाने की घोषणा की गई है। मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड ने पुलिस द्वारा पीटे गए किसानों का बयान लिया। एक को पुलिस ने इसलिए पीटा कि वह पुलिस का कार्य चुपचाप देखता फिरता था। दूसरा इसलिए पीटा गया कि एक और किसान ने, जिससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, लगान देने से इनकार कर दिया था।

एक शराब का दुकानदार मिस्टर जहाँगीर वराड का नया पुलिस पटेल है। उसके मकान के सहन में ज़ब्त किए गए धान का ढेर लगा हुआ था। उसके नौकर उसकी रक्षा कर रहे थे। एक किसान के ज़ब्त किए गए बैल उसकी गाड़ी में जुते थे व उसका सेहन ठीक करने के लिए मिट्टी ढो रहे थे।

जब वे लोग गाँव से जाने लगे तो एक पुलिसमैन ने उन्हें रोक लिया और कहा कि बिना पुलिस पटेल के आज्ञा-पत्र के हम किसी को गाँव के बाहर नहीं जाने दे सकते। इस बर्ताव से मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड अधीर हो उठे। उन्होंने कहा कि तुमने क्यों रोका। पुलिस वाले ने झट जवाब दिया कि इसका उत्तर कप्तान साहब से पूछो। फिर उन्होंने उसका नम्बर पूछा। फिर वही जवाब मिला, नाम पूछने पर भी वही उत्तर मिला। मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड ने बहुत ढूँढ़ा, पर उसके पास कोई नम्बर नहीं था।

दूसरे दिन वे लोग अरवा नामक गाँव में पहुँचे। गाँव बिलकुल ख़ाली-सा पड़ा था। कहीं-कहीं कुछ लोग फिर रहे थे। ज़ब्ती करने वाले ने कई मकानों के दरवाज़े तोड़ डाले थे। जो थोड़े से लोग खेतों में या घरों में मिले, उन्हें पुलिस ने गालियाँ दीं, पीटा व धमकी दी। लाठी की मार से उनके हर एक जोड़ों में दर्द हो रहा था।

फिर वे बोरिया में ठहरे। वहाँ बाँकानेर और सिकेर के क़रीब १०० कुटुम्ब, जो घर छोड़ कर जा रहे थे, बसे हुए थे। इनमें से एक युवक हाल में जेल से लौट कर आया था। कुछ औरतें भी, जो मीठा बेन पेटिट के साथ धरना देने का काम कर रही थीं, इन नए निर्वासितों को सहायता देने के लिए आ पहुँची थीं। मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड ने उनसे बातचीत की। उन लोगों ने उन्हें बतलाया कि पुलिस के अत्याचारों के कारण हम लोग घर छोड़ कर जा रहे हैं और जब तक स्वराज्य न मिल जावेगा, नहीं लौटेंगे।

सब जगह किसानों की दशा बहुत ही शोचनीय थी। उनकी दरिद्रता देख कर जी काँप उठता था। खादी के प्रचार के कारण कपड़े की तो कुछ कम तकलीफ़ है, पर खाना बिलकुल ही ख़राब मिलता है। इस भ्रमण भर में मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड इस दशा के विषय पर कुछ नहीं बोले। वे केवल सब चीज़ों को नोट करते गए और किसानों के दुःखों को अच्छी तरह समझने की कोशिश करते रहे।

* * *

बम्बई के सत्याग्रहियों पर ज़ुल्म का पहाड़

भारतीय महिलाओं की इज़्ज़त पर आक्रमण

बम्बई के इस्प्लेनेड हवालात में बन्द तीन स्वयं-सेविकाओं ने मैजिस्ट्रेट के सामने बयान किया है कि जब वे हवालात में बन्द थीं तो आधी रात बीत जाने पर सारजण्ट मेकेन्ज़ी व कॉन्स्टेबिल विकारे ने उनके पास पहुँच कर उनसे अनुचित प्रस्ताव किया। कोर्ट में उन महिलाओं ने सारजण्ट मेकेन्ज़ी को पहिचान लिया। पर विकारे रात की ड्यूटी में होने के कारण वहाँ नहीं आ सका, इसलिए मैजिस्ट्रेट ने इन्सपेक्टर को उसे शाम को कोर्ट में पेश करने का हुक्म दिया।

एक और महिला मिस बाबूराव पारकर ने 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्वाददाता से कहा कि आज़ाद मैदान में मेरे ऊपर पुलिस वाले दौड़ते हुए निकल गए, मुझे मारा गया और सारजण्टों ने मेरे हाथ से राष्ट्रीय झण्डा ज़बरदस्ती छीन लिया। मुझे वे अन्य देशसेविकाओं तथा प्रभातफेरी वाली स्त्रियों के साथ गिरफ़्तार करके ट्रेन पर ले गए। ट्रेन घाटकोपर तथा भाण्डूप स्टेशनों के बीच में खड़ी की गई और हम लोग उतार लिए गए। इसके बाद वे हमें एक एकान्त मकान में ले गए, जहाँ उन्होंने हमें ठोकरें लगाईं व हमारे ऊपर थूका। इसके बाद हम लोग छोड़ दी गईं। पर हम लोगों के घर लौटने का कोई भी प्रबन्ध नहीं किया गया। किसानों की सहायता से हम लोग भाण्डूप स्टेशन पहुँचे, वहाँ से बम्बई आए। मुझे स्वयंसेवक कॉङ्ग्रेस के 'फ़्री इमरजेन्सी' अस्पताल में ले गए। ठोकरों से मारे जाने के कारण मेरा पेट दुख रहा था। वहाँ पर मेरा इलाज हुआ।

डॉक्टर बी० के० कोठारी, जो कि 'फ़्री इमरजेन्सी' अस्पताल के सुपरिण्टेण्डेण्ट हैं, लिखते हैं कि इतवार का लाठियों का वार पिछले लाठी-वारों से कहीं ज़्यादा ख़राब है। क़रीब-क़रीब प्रत्येक घायल के सिर से बुरी तरह से ख़ून निकल रहा था और ज़्यादातर चोटें सिर पर लगी थीं। दो घण्टे के अन्दर ख़ून से लाल ७५ आहत हमारे अस्पताल में आए, जिनमें से १५ तो ऐसे थे, कि यदि उनका तुरन्त उपचार न होता तो ख़ून के बहने के कारण ही उनकी मृत्यु हो जाती। ज़्यादातर लोग बेहोश थे और सबको एक साथ उपचार की आवश्यकता थी। दो केस तो ऐसे थे कि जिनमें तुरन्त ऑपरेशन की आवश्यकता थी। ऐसा कोई भी नहीं था जो यदि उपचार न होता तो ख़ून के बहने के कारण मर न जाता।

निर्दयता से मारी गई चोटों और आहतों की प्रसन्नचित्तता का वर्णन करना बहुत ही कठिन है। बार-बार मार खाने को तैयार होने का साहस उत्पन्न हो जाना, यह बताता है कि हम अब सिद्धि-स्थान के क़रीब हैं। मेरा तो पूर्ण विश्वास है कि ऐसी चोटें कभी किसी मौक़े पर नहीं मारी गई थीं।

अस्पताल में लाए गए मरीज़ों की संख्या ८१ है। इनमें से ६५ फ़ी सदी मनुष्यों के सिर पर, ४ फ़ी सदी के पेट में, ३० फ़ी सदी के जोड़ों पर और १ फ़ी सदी के गुप्त अङ्गों में चोट थी। मैदान में ३० अन्य व्यक्तियों का उपचार किया गया था। औरतों पर भी मार पड़ी थी और उन्हें चोटें आई थीं।

दिल्ली में लाठी-प्रहार

नई दिल्ली का २६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि विज्ञापन के अनुसार क्वीन्स गार्डन में वहाँ की डिक्टेटर श्रीमती डॉ० बेदी के सभापतित्व में सभा हुई थी, जिसमें श्रीमती सेन गुप्त भी उपस्थित थीं। जिस समय एक व्यक्ति कविता पढ़ रहा था, सिटी मैजिस्ट्रेट मि० ईसर पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट के साथ वहाँ पहुँचे और उन्होंने उस व्यक्ति को गिरफ़्तार कर लिया। इससे सभा में असन्तोष फैल गया और भीड़ में से किसी ने एक पत्थर फेंका, जिससे मि० ईसर का चश्मा फूट गया और उनकी आँख पर चोट आई। इसके बाद सभा लाठी-प्रहार द्वारा तितर-बितर कर दी गई और पुलिस सभा की दरियाँ, डायस और लैम्प उठा ले गई। लोगों ने वहाँ से हट कर घण्टाघर के पास दूसरी सभा की।

चन्दौसी के पास गोली चली

लखनऊ की एक गवर्नमेण्ट विज्ञप्ति से पता चलता है कि चन्दौसी के पास के एक गाँव में कॉङ्ग्रेस की ओर से अहीरों और पासियों की एक सभा लगानबन्दी के सम्बन्ध में विचार करने के लिए हुई थी, जिसमें पुलिस उपस्थित थी। २-३ हज़ार की भीड़ ने उनके ऊपर पत्थर फेंके और उसने भी आत्म-रक्षा के लिए रिवॉल्वर से १३ गोलियाँ चलाईं। कहा जाता है कि पत्थरों के फेंकने से एक सब-इन्सपेक्टर, एक हेड कॉन्स्टेबिल और एक कॉन्स्टेबिल सख़्त घायल हुए और दो सब-इन्सपेक्टरों और सात कॉन्स्टेबिलों को मामूली चोट आई। कुछ आदमी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

कलकत्ते में फिर बम

कलकत्ते का २६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि असिस्टेण्ट पुलिस कमिश्नर मि० ए० के० रॉबर्टसन के घर पर जो मैक्लिऑड स्ट्रीट में रहते हैं, डेढ़ बजे रात्रि को बम फेंका गया। परन्तु खिड़कियों के कुछ काँच फूटने के सिवाय और कुछ नुक़सान नहीं हुआ। बम मि० रॉबर्टसन के सोने के कमरे में फेंका गया था, पर अपने सौभाग्य से वे दूसरे कमरे में सो रहे थे। बम मकान की दीवाल के पास से फेंका गया था। दीवाल के पास खड़ाउओं का एक जोड़ा और एलुमिनियम के टुकड़े मिले थे। बाद का समाचार है कि बम केवल एक बड़ा पटाख़ा था और किसी नौकर ने फेंक दिया था। अभी तक कोई गिरफ़्तार नहीं किया गया।

दिल्ली में बम

नई दिल्ली का २६ वीं अक्टूबर का समाचार है कि पुलिस ने सीताराम बाज़ार में एक मकान की लगातार सात घण्टे तक तलाशी ली है और उसमें उसे ४ ख़ाली बम, १०० कारतूस, एक पाँच कारतूस का भरा हुआ तमञ्चा, २० बोतलें रासायनिक पदार्थों की और कुछ विद्रोहात्मक साहित्य मिला है। श्री० शीतलप्रसाद, जो उस मकान में छः माह से रह रहे थे, गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। पुलिस ने उनकी बहिन और दो अन्य व्यक्तियों को भी गिरफ़्तार किया है।

सीमा-प्रान्त में पुलिस और फ़ौज की नादिरशाही

ख़ान फ़ैज़ुल्ला ख़ाँ का अदालत में जोशीला वक्तव्य

लाहौर का २५ वीं अक्टूबर का समाचार है कि जब फ़र्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट दीवान हरिवंशलाल की अदालत में जब ख़ान फ़ैज़ुल्ला ख़ाँ का मुक़द्दमा प्रारम्भ हुआ तब उन्होंने अपना एक लिखित वक्तव्य अदालत में पेश किया, जिसमें उन्होंने पुलिस और फ़ौज पर भयानक दोषारोपण किया है।

वक्तव्य में उन्होंने कहा कि उनके ऊपर यह अभियोग उनके लाहौर और बन्नू के भाषणों पर लगाया गया है। इन भाषणों के सम्बन्ध में जो गवाह पेश किए गए हैं, वे या तो पुलिस के अफ़सर थे और या वे लोग, जो पुलिस से मिले-जुले थे। इसके साथ ही भाषणों की रिपोर्ट भी बहुत बढ़ा कर की गई है। उन्होंने बन्नू में भाषण पश्तो में दिए थे जो सब-इन्सपेक्टरों की मातृ-भाषा न थी और इसलिए उन्हें उनके नोट उर्दू में लेने पड़े थे। वे २० वीं जुलाई को बन्नू कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य हुए थे, क्योंकि सब लोगों की गिरफ़्तारी के कारण वहाँ लोगों का नेतृत्व करने के लिए कोई नेता न बचा था और पाशविक और निर्दयी दमन के कारण लोगों का अहिंसा पर से विश्वास उठ रहा था। उन्होंने अपने सब भाषणों में लोगों को अहिंसात्मक रहने का आदेश दिया और उनसे प्रार्थना की कि वे आम सभा में बन्दूक़ें लेकर न आया करें। लोगों ने उनके आदेश को शिरोधार्य किया और जब तक वे बन्नू कॉङ्ग्रेस कमिटी के संरक्षक रहे, तब तक हिंसा का एक भी उदाहरण नज़र नहीं आया।

ख़ान फ़ैज़ुल्ला ख़ाँ ने बन्नू में फ़ौज और पुलिस के नादिरशाही अत्याचारों का उल्लेख करने के उपरान्त कहा कि इन अत्याचारों के समय जनता बिलकुल अहिंसात्मक रही और यह शान्तिमय वायु-मण्डल उत्पन्न करने का सब श्रेय अभियुक्त को है। अधिकारियों की कार्यवाही ऐसी निर्दयता और क्रूरतापूर्ण थी कि उससे पुलिस और जनता में सदैव मुठभेड़ की सम्भावना रहती थी। ठीक ऐसे ही समय में ख़ान फ़ैज़ुल्ला ख़ाँ बन्नू की कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य हुए थे और उन्होंने वहाँ शान्ति स्थापित की थी।

अपने वक्तव्य के अन्त में उन्होंने कहा कि—"मैंने बन्नू के आन्दोलन का एक दृश्य उपस्थित किया है और यह भी बतला दिया है कि मेरा उसमें कितना हाथ था। मैंने लोगों में शान्ति स्थापित की है, परन्तु बिना ज़मानत के मेरा घूमना ख़तरनाक माना गया है। मैंने जनता और अधिकारियों की मुठभेड़ बचाने का सदैव प्रयत्न किया है, परन्तु मुझे राजविद्रोही क़रार दिया गया है, और अपने भाइयों के कष्टों की हृदय-द्रावक कहानी कहने के अपराध में मैं जेल में ठूँस दिया गया हूँ।

"अस्तु, यदि शान्ति का उपदेश देना, पैशाचिक अत्याचारों का विरोध करना और अपने दुःख-दर्द की आवाज़ उठाना राजविद्रोह है तो मैं अपराधी हूँ। आप कृपा कर एक बात ध्यान में रक्खेंगे कि पञ्जाब की एक्ज़ीक्यूटिव ने, जहाँ मैंने बहुत से भाषण दिए हैं, मेरे विरुद्ध मुक़द्दमा चलाना उचित नहीं समझा। परन्तु पुलिस को बन्नू की काली करतूतों के उल्लेख से उस पर आतङ्क छा गया है और उसने मेरे मुँह पर ताला डालने की कोशिश की है।"

"बम्बई में दो गवर्नमेण्टों का राज्य"

स्वयंसेवक-दल का आश्चर्यजनक सङ्गठन

भारतीय सत्याग्रह-सङ्ग्राम का मुख्य केन्द्र बम्बई है। इस आन्दोलन में धन और जन की जितनी आहुति बम्बई शहर ने दी है, उतनी किसी दूसरे शहर ने नहीं दी। बम्बई का यह बलिदान वास्तव में अभूतपूर्व और आशा से परे है। बम्बई के लोग लक्ष्मी के उपासक और अपने सुख का ध्यान रखने वाले समझे जाते थे, और उनके सम्बन्ध में किसी को यह ख़्याल न था, कि वे त्याग और कष्ट-सहन का ऐसा नमूना दिखला सकेंगे। अब तक बम्बई को लोग अगर किसी दृष्टि से उपयोगी समझते थे तो इसीसे, कि वहाँ से आन्दोलन के लिए चन्दा मिल सकता है। पर यह चन्दा कोई बड़ी चीज़ न था। जिस शहर में करोड़पतियों और लखपतियों की एक बड़ी संख्या मौजूद है और जहाँ के लोग व्यापार में हर रोज़ लाखों खोना और लाखों कमाना साधारण बात समझते हैं, वहाँ से अगर राष्ट्रीय कार्य के लिए आवश्यकता पड़ने पर दस-बीस लाख या अधिक रुपया दे दिया जाय, तो इसमें कौन सी कठिनाई है, पर इस बार बम्बई आन्दोलन में जिस तरह भाग ले रहा है उसकी बात ही अलग है। इस बार उसने अपने उस व्यापार को ही ख़तरे में डाल दिया है, जिसकी बदौलत वह धन-कुबेर बना हुआ था और चन्दा वग़ैरह देकर दूसरों की सहायता किया करता था। साथ ही वहाँ के निवासियों ने शारीरिक कष्ट उठाने में भी पीछे पैर नहीं रक्खा है। जिन महिलाओं का जीवन ऐश-आराम में ही व्यतीत हुआ था और जिनको संसार में किसी प्रकार की सामग्री की कमी न थी, वे भी जेलों के कष्ट और लाठियों की चोटें सहन कर रही हैं। जान पड़ता है मानों समस्त बम्बई में एक दैवी उन्माद व्याप्त हो गया है और वह अपने हानि-लाभ अथवा दुःख-सुख का ध्यान भूल कर उन्मत्त के समान आगे बढ़ता चला आ रहा है। बम्बई की इस काया-पलट का वर्णन एक लेख में मि० ब्रेल्सफ़ोर्ड ने बड़ी अच्छी तरह किया है। एक विदेशी के मुख से अपनी आलोचना सुनना आत्म-प्रशंसा की अपेक्षा कहीं अच्छा है। हम लोग, जो इस आन्दोलन में बहे जा रहे हैं, इसकी ख़ूबियों और त्रुटियों को उतनी अच्छी तरह नहीं समझ सकते, जितना कि इस देश में एक नया आया हुआ निष्पक्ष दर्शक। मि० ब्रेल्सफ़ोर्ड एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं और इङ्गलैण्ड के मज़दूर-दल के वे एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। उनके लेख इङ्गलैण्ड, अमेरिका आदि के साम्यवादी पत्रों में प्रायः छपते रहते हैं। वे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के भी अच्छे ज्ञाता हैं। मि० ब्रेल्सफ़ोर्ड कहते हैं :—

जिस दिन मैं हिन्दुस्तान की ज़मीन पर उतरा, मैंने एक ऐसा दृश्य देखा, जिसे सम्भवतः अब कोई भी नहीं देख सकेगा। वह दृश्य था बम्बई के ऊपर दो गवर्नमेण्टों का राज्य। एक तरफ़ बम्बई के यूरोपियन अधिवासी, सरकारी सिपाही, कुछ बड़े-बड़े धन-कुबेर व्यापारी और पुराने ढर्रे के मुसलमान, अङ्गरेज़ी सरकार तथा उसके क़ानून और शक्ति की सत्ता को स्वीकार करते थे। दूसरी तरफ़ शेष तमाम बम्बई ने एक ऐसे व्यक्ति की सत्ता को स्वीकार कर लिया था, जोकि अङ्गरेज़ी गवर्नमेण्ट का एक क़ैदी है। महात्मा गाँधी जेल में बैठे हुए हैं और वहाँ से अपने त्याग और तपस्या के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में प्रति सप्ताह एक लेख भेजते रहते हैं, जो किसी तरह वार्डरों से बच कर जेल की दीवारों के बाहर पहुँच जाता है और हिन्दुस्तान के तमाम अख़बारों में छप जाता है। उन्हीं के नाम पर कॉङ्ग्रेस इस शहर के ऊपर शासन करती है। इसकी एक साधारण आज्ञा का भी पालन किया जाता है। वह जब चाहती है और जितनी बार चाहती है सड़कों को जन-समूह से ओत-प्रोत कर देती है। साथ ही उसके एक इशारे पर बाज़ार की हर एक दुकान का दरवाज़ा बन्द हो जाता है। उसकी बिना रज़ामन्दी के कोई कारख़ाना अपना फाटक नहीं खोल सकता। इसके एक ज़रा से रङ्गीन काग़ज़ के टुकड़े—परवाने को पाकर—ही कोई गाड़ीवान माल लाद सकता है और गाड़ी को व्यापार के मुख्य स्थानों में ले जा सकता है, जहाँ इसके पहरेदार दिन-रात निगरानी रखते हैं।

प्रातःकाल का दृश्य

प्रत्येक दिन सर्व-प्रथम ईश्वर-प्रार्थना और भजन होते हैं। समस्त शहर इसमें भाग लेता है। सुबह होते ही अथवा उससे भी पहले हर एक सड़क पर एक छोटा सा जुलूस निकलता है, जिसमें सब लोग सफ़ेद पोशाक पहिने होते हैं। यह पोशाक हाथ के सूत से बनी हुई खादी की होती है और यह इस बात का चिन्ह है कि भारतवर्ष ने अपनी आवश्यकताओं को स्वयं ही पूरा करने का निश्चय कर लिया है। सब लोगों के सरों पर सफ़ेद गाँधी टोपी दिखलाई पड़ती है। कुछ लोगों के पास देशी ढङ्ग के ढोल आदि बाजे रहते हैं, और सब मिल कर गाते रहते हैं। इस आन्दोलन के अधिकार में कितने ही अङ्गरेज़ी पत्र हैं, जो शिक्षित व्यक्तियों तक इसका सन्देश पहुँचा सकते हैं। इसके अधिकार में देशी भाषाओं के भी अनेक पत्र हैं, जिनके द्वारा उन लोगों को जो केवल भारतीय भाषाओं को जानते हैं, समझाया जा सकता है। पर उस विशाल जन-समूह को, जिसको किसी तरह का अक्षर-ज्ञान नहीं है, इन्हीं गानों द्वारा इस आन्दोलन के नेता का महत्व, अङ्गरेज़ी माल को बॉयकॉट करने की आवश्यकता और स्वाधीनता प्राप्त करने अथवा उसके लिए मर-मिटने की प्रतिज्ञा का रहस्य समझाया जा सकता है। इन छोटे जुलूसों में कभी दस-बारह पुरुष, कभी बच्चे और कभी औरतें होती हैं। तुम कदापि उनसे बच कर नहीं जा सकते—तुम कभी उनको भुला नहीं सकते। हर एक आदमी अपने ऑफ़िस या दुकान में घुसने के पहले उनके गानों को सुन लेता है। वे जो कुछ कहते हैं खुल्लमखुल्ला कहते हैं, सरकारी अफ़सरों के सामने भी उनका राग जारी रहता है।

महिला स्वयंसेविकाएँ

जैसे दिन चढ़ता जाता है तमाम बाज़ारों में, उनमें भी, जहाँ पर यूरोपियन रहते हैं, जगह-जगह कुछ दुकानों के सामने कुर्सियों पर दो-दो, एक-एक महिलायें बैठी दिखलाई पड़ती हैं। वे सब सुन्दर भारतीय पोशाक पहने होती हैं और उन सब की साड़ी नारङ्गी रङ्ग की होती है, जो कि इस देश में प्राचीन काल से वीर-भाव का सूचक रङ्ग समझा जाता है। इन दुकानों में बहुत थोड़े लोग घुसते हैं। आप उन दुकानों के मालिकों को कुछ पढ़ते या ताश खेलते देखेंगे। यदि कोई व्यक्ति ऐसी किसी दुकान में घुसना चाहता है तो महिला स्वयं-सेविका उसे विनयपूर्वक हाथ जोड़ कर रोकती है, आरज़ू-मिन्नतें करती है, दलीलें देती है, और यदि किसी उपाय से उसे कामयाबी नहीं होती तो वह दरवाज़े के सामने ज़मीन पर लेट जाती है, जिससे वह व्यक्ति उसके शरीर पर पैर रक्खे बिना भीतर जा ही नहीं सकता। इन दुकान वालों ने कॉङ्ग्रेस के कथनानुसार इस बात का वादा नहीं किया कि वे विदेशी अथवा अङ्गरेज़ी चीज़ें नहीं बेचेंगे। यह कार्य-प्रणाली सफल भी हो रही है। यूरोपियन लोग जो चाहें ख़रीद सकते हैं, उनसे कोई पिकेटर प्रार्थना नहीं करता। पर भारतवासियों में से शायद ही कभी कोई उनके अनुरोध की अवज्ञा करता है। इन पिकेटरों में से सैकड़ों जेल भेजे जा चुके हैं, पर उनकी जगह सदा उनसे अधिक लोग तैयार हो जाते हैं। अभी थोड़े दिन हुए दुकानदारों ने अपनी तरफ़ से एक अर्ज़ी इस आशय की सरकारी अधिकारियों को दी थी कि उनको इस शान्तिपूर्ण पिकेटिङ्ग के विरुद्ध किसी तरह की शिकायत नहीं है और तब से गिरफ़्तारियों का होना कम हो गया है।

शक्ति का स्रोत

कष्ट-सहन के लिए यह तत्परता ही इस आन्दोलन की सब से बड़ी शक्ति है। जहाँ हज़ारों आदमी ख़ुशी से जेल जाते हैं, वहाँ उनसे दस गुने धन द्वारा सहायता देने को तैयार हो जाते हैं और लाखों आज्ञा मानने को राज़ी होते हैं। इस आन्दोलन को देख कर मुझे इङ्गलैण्ड की वोट का अधिकार माँगने वाली स्त्रियों की याद आती है। उनके उग्र-आन्दोलन का स्वरूप इससे बहुत कुछ मिलता-जुलता था। इन दोनों में अन्तर यही है कि भारतीय आन्दोलनकारी बल-प्रयोग से बचे रहने की बहुत अधिक कोशिश करते हैं।

भारतवर्ष के इन निहत्थे लोगों ने, जिनको किसी प्रकार की सैनिक शिक्षा प्राप्त करने का कोई मौक़ा नहीं मिला है, इस कार्य-क्रम को स्वभावतः स्वीकार कर लिया है। इस कार्य-क्रम का स्वरूप कष्ट-सहन को स्वेच्छापूर्वक स्वीकार करना, और एक उच्च तथा साथ ही निश्चयपूर्ण साहस के साथ उसका सामना करना है। कुछ लोगों का ख़्याल है कि इस कार्य-क्रम की विधायक स्वभावतः स्त्रियाँ ही हैं। सैकड़ों वर्षों के एकान्त-जीवन के पश्चात् देश-भक्ति की पुकार सुन कर इन्होंने इस क्षेत्र में पदार्पण किया है, और इस समस्त आन्दोलन में सब से अधिक महत्वपूर्ण वस्तु उनका प्रसन्नतायुक्त सेवा-भाव ही है। अगर वे भारत के लिए स्वराज्य न भी प्राप्त कर सकीं, तो कम से कम उन्होंने अपना उद्धार तो कर ही लिया। पर्दा और घूँघट का बम्बई में तो अन्त ही हो गया है, और अब वहाँ की दशा देख कर यह विश्वास ही नहीं होता कि वहाँ कभी उनका अस्तित्व था!

एक स्मरणीय सफलता

कॉङ्ग्रेस की शक्ति की परीक्षा का एक मौक़ा मेरे आगमन से तीसरे दिन पेश आया। विदेशी कपड़े के व्यापारियों ने बाहर से कपड़ा मँगाना तो छः महीने से बिलकुल बन्द ही कर रक्खा है, पर उनकी दुकानों में २ करोड़ रुपए का पुराना कपड़ा रक्खा हुआ है। वह केवल भारतवासियों के ही इस्तेमाल के लायक़ है। इसलिए किसी अन्य देश में भी नहीं भेजा जा सकता और दुकानों में पड़ा-पड़ा ख़राब हो रहा है। व्यापारियों ने एक सभा की और एक क्षमा-प्रार्थना के ढङ्ग के प्रस्ताव द्वारा प्रकट किया कि वे इस पुराने माल को बेच डालेंगे और भविष्य में नया माल क़तई न मँगावेंगे। कॉङ्ग्रेस ने समझौता करने से इनकार किया और बाद की घटना से सिद्ध हो गया कि उन्होंने अपनी शक्ति का अन्दाज़ा करके ही यह निश्चय किया था। सैकड़ों महिला स्वयंसेविकाएँ

(शेष मैटर १२ वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिये)

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

६ नवम्बर, सन् १९३०

एक आवश्यक निवेदन

पाठकों को शायद यह बतलाना न होगा कि 'भविष्य' का प्रकाशन एक ऐसी सङ्कटपूर्ण एवं विकट परिस्थिति में शुरू किया गया था, जब कि देश का राजनैतिक वातावरण एक बार ही उसके विरुद्ध था। जिन-जिन आपत्तियों और अत्याचारों का उसे अब तक शिकार होना पड़ा है, पाठकों से यह बात भी छिपी न होनी चाहिए, अस्तु।

यह सत्य है कि 'प्रेस-ऑर्डिनेन्स' २१ अक्टूबर को समाप्त हो गया, किन्तु अभी उसके भाई-बन्धु आठ दूसरे ऑर्डिनेन्स हमारे सामने आजकल का शासन इतना निरङ्कुश है, कि उसे देखते हुए हम अपने को किसी भी समय सुरक्षित नहीं समझ सकते। अतएव जब तक परिस्थिति से मुक़ाबला करने के लिए हम तय्यार न हो लें, अपने मनोभावों को निर्भीकतापूर्वक व्यक्त कर, हम आपत्ति मोल लेने के पक्ष में नहीं हैं। इसका परिणाम यह होगा कि जो थोड़ी-बहुत सेवा इस समय "भविष्य" द्वारा हो रही है, उसमें भयङ्कर बाधा उपस्थित हो जायगी! हम सचाई और वास्तविकता की ओर से अपनी दृष्टि फेर कर केवल काग़ज़ काला करने की रस्म अदा करना नहीं चाहते; अतएव कुछ दिनों तक हमने 'सम्पादकीय विचार' शीर्षक स्तम्भ को जान-बूझ कर सूना रखने का निश्चय किया है।

परिस्थिति के अनुकूल हम अधिक से अधिक सुदृढ़ प्रबन्ध करने की चेष्टा कर रहे हैं, जैसे ही हमारी इच्छानुकूल प्रबन्ध हुआ, उसी क्षण से हम अपने निर्भीक विचार पाठकों के सामने उपस्थित करने लगेंगे—फिर उसका परिणाम चाहे जो भी हो। कुछ दिनों के लिए पाठक हमें क्षमा करें!

—रामरखसिंह सहगल

* * *

(११वें पृष्ठ का शेषांश)

बाज़ार में पहुँचीं। उनका निश्चय हर एक दुकान पर पिकेटिङ्ग करने का था। कुछ ने यह भी कहा कि जब तक व्यापारी अपने प्रस्ताव को वापस न लेंगे, तब तक वे अनशन करेंगी। एक सभा हुई, जिसमें कई राष्ट्रीय नेताओं के भाषण हुए, और उसके पश्चात् पिकेटिङ्ग आरम्भ होने से पहले ही मामला ख़तम हो गया। मुनीमों और नौकरों ने दुकानों का ताला खोलना भी अस्वीकृत किया और कहा कि वे कपड़े की एक गाँठ भी न उठावेंगे। इस प्रकार कॉङ्ग्रेस की जीत हो गई। कम से कम भारत के इस भाग में तो उसके शब्द ही क़ानून हैं, यद्यपि इसके फल से व्यापारियों का सत्यानाश और बेकार श्रमजीवियों की संख्या-वृद्धि हो रही है। कॉङ्ग्रेस ने जिन सोलह मिलों को इस आधार पर कि, उनके मालिक विदेशी कपड़ा भी मँगाते हैं, बन्द करा दिया है, वे आज तक बन्द हैं और उनके ३२,००० मज़दूर या तो गाँवों में चले गए हैं या अपनी अँधेरी कोठरियों में पड़े हुए, ख़ून चूसने वाले पठानों से क़र्ज़ लेकर पेट भर रहे हैं। इस प्रकार इस अहिंसात्मक संग्राम के फल से अनेकों के प्राण भी जा रहे हैं।

शानदार जुलूस

शाम के वक़्त प्रायः जुलूस और प्रदर्शन देखने में आते हैं। मैं जिस दिन उतरा, उसी दिन मैंने एक ऐसा जुलूस देखा। वालण्टियर क़ायदे के साथ क़तार बना कर चल रहे थे, क्योंकि यह शान्तिमय आन्दोलन कितने ही अंशों में सैनिक ढङ्ग पर सङ्गठित है। जुलूस के सामने तिरङ्गा भारतीय झण्डा था। स्त्रियाँ नारङ्गी रङ्ग के वस्त्र पहिने हुई थीं और पुरुषों के शरीर पर खादी के बने हुए स्वच्छ और श्वेत कपड़े थे। ये रोशनी में बड़े भड़कीले दिखलाई पड़ते थे। स्त्रियाँ बहिष्कार-सम्बन्धी गीत बड़े भावपूर्ण लहजे में गा रही थीं। कभी-कभी उनकी निगाहों से विनोद का भी आभास होता था, जैसा कि उन्होंने मेरे सिर पर अङ्गरेज़ी टोप को देख कर प्रकट किया। समुद्र के किनारे पर क़रीब दस हज़ार (कुछ लोगों की सम्मति में बीस हज़ार) मनुष्यों का समूह श्री० सेन गुप्त का भाषण सुनने को ज़मीन पर बैठा था। उनके भाषण के पहले एक उग्र विचारों का मुसलमान नवयुवक कुछ देर तक बोला। उसने अपने भाषण में इस बात का इशारा किया कि शायद अब वह मौक़ा नज़दीक आता जाता है जब कि हमको 'अहिंसात्मक' उपायों के सिवाय दूसरे तरीक़ों से भी काम लेना पड़े। श्री० सेन गुप्त ने उसको ख़ूब डाँटा। जब सब कार्यवाही समाप्त हो गई तो वालण्टियर फिर क़तार बना कर मार्च के लिए तैयार हो गए।

इसके पाँच दिन बाद बम्बई की दूसरी गवर्नमेण्ट सामने आई। इसने कॉङ्ग्रेस हाउस को बन्द कर दिया, उसके दरवाज़े पर ताला लगा दिया, उसकी समस्त कार्यवाही को ग़ैरक़ानूनी क़रार दिया, और उसके क़रीब दो सौ नेताओं को तीन से छः महीने तक के लिए जेल में भेज दिया। इसके फल से राष्ट्रीय-गान कुछ कम हो गए, और सभाओं की संख्या भी घट गई। पर विदेशी माल की दुकानें अभी तक ज्यों की त्यों बन्द पड़ी हैं। बम्बई ने अपनी अदृश्य गवर्नमेण्ट को भुला नहीं दिया है और राष्ट्र की क्षीण आवाज़ भी उसी प्रकार श्रवण-गोचर हो रही है, जिस प्रकार विजयी गवर्नमेण्ट की आज्ञा।

[श्री० प्रेमचन्द जी, बी० ए०]

सन्ध्या का समय था। कचहरी उठ गई थी। अहलकार और चपरासी जेबें खनखनाते घर जा रहे थे। मेहतर कूड़े टटोल रहा था कि शायद कहीं पैसे-वैसे मिल जायँ। कचहरी के बरामदों में साँड़ों ने वकीलों की जगह ले ली थी। पेड़ों के नीचे मुहर्रिरों की जगह कुत्ते बैठे नज़र आते थे। इसी समय एक बूढ़ा आदमी, फटे-पुराने कपड़े पहने, लाठी टेकता हुआ, जण्ट साहब के बँगले पर पहुँचा और सायबान में खड़ा हो गया। जण्ट साहब का नाम था मिस्टर जी० सिनहा। अरदली ने दूर ही से ललकारा—कौन सायबान में खड़ा है? क्या चाहता है?

बूढ़ा—ग़रीब बाह्मन हूँ भैया, साहब से भेंट होगी?

अरदली—साहब तुम-जैसों से नहीं मिला करते!

बूढ़े ने लाठी पर अकड़ कर कहा—क्यों भाई, हम खड़े हैं, या डाकू-चोर हैं, कि हमारे मुँह में कुछ लगा हुआ है?

अरदली—भीख माँग कर मुक़दमा लड़ने आए होगे?

बूढ़ा—तो कोई पाप किया है? अगर घर बेच कर मुक़दमा नहीं लड़ते तो कुछ बुरा करते हैं। यहाँ तो मुक़दमा लड़ते-लड़ते उम्र बीत गई, लेकिन घर का पैसा नहीं खरचा। मियाँ की जूती मियाँ का सिर करते हैं। दस भलेमानसों से माँग कर एक को दे दिया। चलो छुट्टी हुई। गाँव भर नाम से काँपता है। किसी ने ज़रा भी टिर-पिर की और मैंने अदालत में दावा दायर किया।

अरदली—किसी बड़े आदमी से पाला नहीं पड़ा अभी!

बूढ़ा—अजी, कितने ही बड़ों को बड़े घर भिजवा दिया, तुम हो किस फेर में। हाईकोर्ट तक जाता हूँ सीधा। कोई मेरे मुँह क्या आएगा बेचारा? गाँठ से तो कौड़ी जाती नहीं, फिर डरें क्यों? जिसकी जिस चीज़ पर दाँत लगाए, अपना करके छोड़ा। सीधे से न दिया तो अदालत में घसीट लाए और रगेद-रगेद कर मारा। अपना क्या बिगड़ता है। तो साहब से इत्तला करते हो कि मैं ही पुकारूँ?

अरदली ने देखा, यह आदमी यों टलने वाला नहीं, तो जाकर साहब से उसकी इत्तला की। साहब ने हुलिया पूछा, और ख़ुश होकर कहा—फ़ौरन बुला लो।

अरदली—हुजूर, बिलकुल फटे हाल है।

साहब—गुदड़ी ही में लाल होते हैं। जाकर भेज दो।

मिस्टर सिनहा अधेड़ आदमी थे, बहुत ही शान्त, बहुत ही विचारशील। बातें बहुत कम करते थे। कठोरता और असभ्यता, जो शासन का अङ्ग समझी जाती है, उनको छू भी नहीं गई थी। न्याय और दया के देवता मालूम होते थे। निगाह ऐसी बारीक पाई थी कि सूरत देखते ही आदमी पहचान जाते थे। डील-डौल देवों का सा था और रङ्ग आबनूस का सा। आरामकुरसी पर लेटे हुए पेचवान पी रहे थे। बूढ़े ने जाकर सलाम किया।

सिनहा—तुम हो जगत पाँड़े! आओ बैठो। तुम्हारा मुक़दमा तो बहुत ही कमज़ोर है। भले आदमी, जाल भी न करते बना?

जगत—ऐसा न कहें हजूर, ग़रीब आदमी हूँ, मर जाऊँगा।

सिनहा—किसी वकील-मुख़्तार से सलाह भी न ले ली?

जगत—अब तो सरकार की सरन आया हूँ।

सिनहा—सरकार क्या मिसिल बदल देंगे, या नया क़ानून गढ़ेंगे। तुम गच्चा खा गए। मैं कभी क़ानून के बाहर नहीं जाता। जानते हो न, अपील से कभी मेरी तजवीज़ रद्द नहीं होती!

जगत—बड़ा धरम होगा सरकार! (सिनहा के पैरों पर गिन्नियों की एक पोटली रख कर) बड़ा दुखी हूँ सरकार!

सिनहा—(मुस्करा कर) यहाँ भी अपनी चालबाज़ी से नहीं चूकते? निकालो अभी और। ओस से प्यास नहीं बुझती। भला दहाई तो पूरी करो।

जगत—बहुत तङ्ग हूँ दीनबन्धु!

सिनहा—डालो-डालो कमर में हाथ। भला कुछ मेरे नाम की लाज तो रक्खो।

जगत—लुट जाऊँगा सरकार!

सिनहा—लुटें तुम्हारे दुश्मन, जो इलाक़ा बेच कर लड़ते हैं। तुम्हारे जजमानों का भगवान भला करें, तुम्हें किस बात की कमी है!

मिस्टर सिनहा इस मामले में ज़रा भी रिआयत न करते थे। जगत ने देखा कि यहाँ काइयाँपन से काम न चलेगा तो चुपके से ४ गिन्नियाँ और निकालीं। लेकिन उन्हें मिस्टर सिनहा के पैरों पर रखते समय उसकी आँखों से ख़ून निकल आया। यह उसकी वर्षों की कमाई थी। बरसों पेट काट कर, तन जला कर, मन बाँध कर, झूठी गवाहियाँ देकर, उसने यह थाती सञ्चय कर पाई थी। उसका हाथों से निकलना प्राण निकलने से कम दुखदाई न था।

जगत पाँड़े के चले जाने के बाद, कोई ९ बजे रात को, जण्ट साहब के बँगले पर एक ताँगा आकर रुका और उस पर से पण्डित सत्यदेव उतरे, जो राजा साहब शिवपुर के मुख़्तार थे।

मिस्टर सिनहा ने मुस्करा कर कहा—आप शायद अपने इलाक़े में ग़रीबों को न रहने देंगे। इतना ज़ुल्म!

सत्यदेव—ग़रीबपरवर, यह कहिए कि ग़रीबों के मारे अब इलाक़े में हमारा रहना मुश्किल हो रहा है। आप जानते हैं सीधी उँगली घी नहीं निकलता। ज़मींदार को कुछ न कुछ सख़्ती करनी ही पड़ती है, मगर अब यह हाल है कि हमने ज़रा चूँ भी की तो उन्हीं ग़रीबों की त्योरियाँ बदल जाती हैं। सब मुफ़्त में ज़मीन जोतना चाहते हैं। लगान माँगिए तो फ़ौजदारी का दावा करने को तैयार! अब इसी जगत पाँड़े को देखिए। गङ्गा-क़सम है हुज़ूर, सरासर झूठा दावा है। हुज़ूर से कोई बात छिपी तो रह नहीं सकती। अगर जगत पाँड़े यह मुक़दमा जीत गया तो हमें बोरिया-बँधना छोड़ कर भागना पड़ेगा। अब हुज़ूर ही बसाएँ तो बस सकते हैं। राजा साहब ने हुज़ूर को सलाम कहा है और अर्ज़ की है कि इस मामले में जगत पाँड़े की ऐसी ख़बर लें कि वह भी याद करे।

मिस्टर सिनहा ने भवें सिकोड़ कर कहा—क़ानून मेरे घर तो नहीं बनता?

सत्यदेव—हुज़ूर के हाथ में सब कुछ है।

यह कह कर गिन्नियों की एक गड्डी निकाल कर मेज़ पर रख दी। मिस्टर सिनहा ने गड्डी को आँखों से गिन कर कहा—इन्हें मेरी तरफ़ से राजा साहब की नज़र कर दीजिएगा। आख़िर आप कोई वकील तो करेंगे ही। उसे क्या दीजिएगा?

सत्यदेव—यह तो हुज़ूर के हाथ में है। जितनी ही पेशियाँ होंगी उतना ही ख़र्च भी बढ़ेगा।

सिनहा—मैं चाहूँ तो महीनों लटका सकता हूँ।

सत्यदेव—हाँ, इससे कौन इनकार कर सकता है?

सिनहा—पाँच पेशियाँ भी हुईं तो आपके कम से कम एक हज़ार उड़ जायँगे। आप यहाँ उसका आधा पूरा कर दीजिए, तो एक ही पेशी में वारा-न्यारा हो जाय! आधी रक़म बच जाय।

सत्यदेव ने १० गिन्नियाँ और निकाल कर मेज़ पर रख दीं और घमण्ड के साथ बोले—"हुक्म हो तो राजा साहब से कह दूँ कि आप इतमीनान रक्खें, साहब की कृपा-दृष्टि हो गई है।" मिस्टर सिनहा ने तीव्र स्वर में कहा—"जी नहीं, यह कहने की ज़रूरत नहीं। मैं किसी शर्त पर यह रक़म नहीं ले रहा हूँ। मैं करूँगा वही जो क़ानून की मन्शा होगी। क़ानून के ख़िलाफ़ जौ भर भी नहीं जा सकता। यही मेरा उसूल है। आप लोग मेरी ख़ातिर करते हैं, यह आपकी शराफ़त है। मैं उसे अपना दुश्मन समझूँगा जो मेरा ईमान ख़रीदना चाहे। मैं जो कुछ लेता हूँ, सचाई का इनाम समझ कर लेता हूँ।"

२

जगत पाँड़े को पूरा विश्वास था कि मेरी जीत होगी, लेकिन तजवीज़ सुनी तो होश उड़ गए। दावा ख़ारिज हो गया। उस पर ख़र्च की चपत अलग। "मेरे साथ यह चाल! अगर लाला साहब को इसका मज़ा न चखा दिया तो बाम्हन नहीं, हैं किस फेर में? सारा रोब भुला दूँगा। यहाँ गाढ़ी कमाई के रुपए हैं। कौन पचा सकता है? हाड़ फोड़-फोड़ कर निकलेंगे। इसी द्वार पर सिर पटक-पटक कर मर जाऊँगा।"

उसी दिन सन्ध्या को जगत पाँड़े ने मिस्टर सिनहा के बँगले के सामने आसन जमा दिया। वहाँ बरगद का एक घना वृक्ष था। मुक़दमे वाले वहीं सत्तू-चबेना खाते और दोपहरी उसी की छाँह में काटते थे। जगत पाँड़े उनसे मिस्टर सिनहा की दिल खोल कर निन्दा करता। न कुछ खाता, न पीता, बस लोगों को अपनी राम-कहानी सुनाया करता। जो सुनता वह जण्ट साहब को चार खोटी-खरी कहता—आदमी नहीं पिशाच है, इसे तो ऐसी जगह मारे जहाँ पानी न मिले, रुपए के रुपए लिए, ऊपर से ख़रचे समेत डिग्री कर दी। यही करना था तो रुपए काहे को निगले थे! यह है हमारे भाई-बन्दों का हाल। यह अपने कहलाते हैं! इनसे तो अङ्गरेज़ ही अच्छे। इस तरह की आलोचनाएँ दिन भर हुआ करतीं। जगत पाँड़े के पास आठों पहर जमघट लगा रहता।

इस तरह चार दिन बीत गए और मिस्टर सिनहा के कानों में भी बात पहुँची। अन्य रिशवती कर्मचारियों की तरह वह भी हेकड़ आदमी थे। ऐसे निर्द्वन्द्व रहते मानो उनमें यह बुराई छू तक नहीं गई है। जब वह क़ानून से जौ भर भी न टलते थे तो उन पर रिशवत का सन्देह हो ही क्योंकर सकता था, और कोई करता भी तो उसकी मानता कौन? ऐसे चतुर खिलाड़ी के विरुद्ध कोई ज़ाब्ते की कारवाई कैसे होती? मिस्टर सिनहा

अपने अफ़सरों से भी ख़ुशामद को व्यवहार न करते। इससे हुक्काम भी उनका बहुत आदर करते थे। मगर जगत पाँड़े ने वह मन्त्र मारा था, जिसका उनके पास कोई उत्तर न था। ऐसे बाँगड़ आदमी से आज तक उन्हें साबिक़ा न पड़ा था। अपने नौकरों से पूछते—"बुड्ढा क्या कह रहा है?" नौकर लोग अपनापन जताने के लिए झूठ के पुल बाँध देते—"हुज़ूर, कहता था भूत बन कर लगूँगा, मेरी बेदी बने तो सही। जिस दिन मरूँगा उस दिन एक के सौ जगत पाँड़े होंगे।" मिस्टर सिनहा पक्के नास्तिक थे, लेकिन यह बातें सुन-सुन कर सशङ्क हो जाते; और उनकी पत्नी तो थरथर काँपने लगतीं। वह नौकरों से बार-बार कहतीं—"उससे जाकर पूछो, क्या चाहता है। जितने रुपए चाहे ले ले; हमसे जो माँगे वह देंगे, बस यहाँ से चला जाय।" लेकिन मिस्टर सिनहा आदमियों को इशारे से मना कर देते थे। उन्हें अभी तक आशा थी कि भूख-प्यास से व्याकुल होकर बुड्ढा चला जायगा। इससे अधिक यह भय था कि मैं ज़रा भी नरम पड़ा और नौकरों ने मुझे उल्लू बनाया।

छठे दिन मालूम हुआ कि जगत पाँड़े अबोल हो गया है, उससे हिला तक नहीं जाता, चुपचाप पड़ा आकाश की ओर देख रहा है, शायद आज रात को दम निकल जाय। मिस्टर सिनहा ने लम्बी साँस ली और गहरी चिन्ता में डूब गए। पत्नी ने आँखों में आँसू भर कर आग्रहपूर्वक कहा—तुम्हें मेरे सिर की क़सम, जाकर किसी तरह इस बला को टालो। बुड्ढा मर गया तो हम कहीं के न रहेंगे। अब रुपए का मुँह मत देखो। दो-चार हज़ार भी देने पड़ें तो देकर उसे मनाओ। तुमको जाते शर्म आती हो तो मैं चली जाऊँ।

सिनहा—जाने का इरादा तो मैं कई दिन से कर रहा हूँ, लेकिन जब देखता हूँ, वहाँ भीड़ लगी रहती है, इससे हिम्मत नहीं पड़ती। सब आदमियों के सामने तो मुझसे न जाया जायगा, चाहे कितनी ही बड़ी आफ़त क्यों न आ पड़े। तुम दो-चार हज़ार को कहती हो, मैं दस-पाँच हज़ार देने को तैयार हूँ। लेकिन वहाँ जा नहीं सकता। न जाने किस बुरी साइत में मैंने इसके रुपए लिए। जानता कि यह इतना फ़िसाद खड़ा करेगा तो फाटक में घुसने ही न देता। देखने में तो ऐसा सीधा मालूम होता था कि गऊ है। मैंने पहली बार आदमी पहचानने में धोखा खाया।

पत्नी—तो मैं ही चली जाऊँ? शहर की तरफ़ से आऊँगी और सब आदमियों को हटा कर अकेले में बातें करूँगी। किसी को ख़बर न होगी कि कौन है। इसमें तो कोई हर्ज नहीं है?

मिस्टर सिनहा ने सन्दिग्ध भाव से कहा—ताड़ने वाले ताड़ ही जाएँगे, चाहे तुम कितना ही छिपाओ।

पत्नी—ताड़ जाएँगे ताड़ जायँ, अब इसकी कहाँ तक डरूँ। बदनामी अभी क्या कम हो रही है जो और हो जायगी। सारी दुनिया जानती है कि तुमने रुपए लिए। यों ही कोई किसी पर प्राण नहीं देता। फिर अब व्यर्थ की ऐंठ क्यों करो?

मिस्टर सिनहा अब मर्मवेदना को न दबा सके। बोले—प्रिये, यह व्यर्थ की ऐंठ नहीं है। चोर को अदालत में बेत खाने से उतनी लज्जा नहीं आती, स्त्री को कलङ्क से उतनी लज्जा नहीं आती, जितनी किसी हाकिम को अपनी रिशवत का परदा खुलने से आती है। वह ज़हर खाकर मर जायगा, पर संसार के सामने अपना परदा न खोलेगा। वह अपना सर्वनाश देख सकता है, पर यह अपमान नहीं सह सकता। ज़िन्दा खाल खिंचने, या कोल्हू में पेरे जाने के सिवा और कोई ऐसी स्थिति नहीं है जो उससे अपना अपराध स्वीकार करा सके। इसका तो मुझे ज़रा भी भय नहीं है कि ब्राह्मण भूत बन कर हमको सताएगा, या हमें उसकी बेदी बना कर पूजनी पड़ेगी; यह भी जानता हूँ कि पाप का दण्ड भी बहुधा नहीं मिलता; लेकिन हिन्दू होने के कारण संस्कारों की शङ्का कुछ-कुछ बनी हुई है। ब्रह्म-हत्या का कलङ्क सिर पर लेते हुए आत्मा काँपती है। बस इतनी बात है। मैं आज रात को मौक़ा देख कर जाऊँगा और इस सङ्कट को टालने के लिए जो कुछ हो सकेगा, करूँगा। ख़ातिरजमा रक्खो।

४

आधी रात बीत चुकी थी। मिस्टर सिनहा घर से निकले और अकेले जगत पाँड़े को मनाने चले। बरगद के नीचे बिलकुल सन्नाटा था। अन्धकार ऐसा था मानो निशा देवी यहीं शयन कर रही हों। जगत पाँड़े की साँस ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी, मानो मौत ज़बरदस्ती घसीटे लिए जाती हो। मिस्टर सिनहा के रोएँ खड़े हो गए। बुड्ढा कहीं मर तो नहीं रहा है? जेबी लालटेन निकाली और जगत के समीप जाकर बोले—पाँड़े जी, कहो क्या हाल है?

जगत पाँड़े ने आँखें खोल कर देखा और उठने की असफल चेष्टा करके बोला—मेरा हाल पूछते हो? देखते नहीं हो, मर रहा हूँ।

सिनहा—तो इस तरह क्यों प्राण देते हो?

जगत—तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं क्या करूँ?

सिनहा—मेरी तो यह इच्छा नहीं, हाँ तुम अलबत्ता मेरा सर्वनाश करने पर तुले हुए हो। आख़िर मैंने तुम्हारे डेढ़ सौ रुपए ही तो लिए हैं। इतने ही रुपयों के लिए तुम इतना बड़ा अनुष्ठान कर रहे हो?

जगत—डेढ़ सौ रुपए की बात नहीं है जी, तुमने मुझे मिट्टी में मिला दिया। डिग्री हो गई होती तो मुझे दस बीघे ज़मीन मिल जाती और सारे इलाक़े में नाम हो जाता। तुमने मेरे डेढ़ सौ नहीं लिए, मेरे पाँच हज़ार बिगाड़ दिए। पूरे पाँच हज़ार। लेकिन यह घमण्ड न रहेगा, याद रखना। कहे देता हूँ, सत्यानाश हो जायगा। इस अदालत में तुम्हारा राज्य है, लेकिन भगवान के दरबार में विप्रों ही का राज्य है। विप्र का धन लेकर कोई सुखी नहीं रह सकता।

मिस्टर सिनहा ने बहुत खेद और लज्जा प्रकट की, बहुत अनुनय-विनय से काम लिया और अन्त में पूछा—सच बतलाओ पाँड़े, कितने रुपए पा जाओ तो यह अनुष्ठान छोड़ दो।

जगत पाँड़े अब की ज़ोर लगा कर उठ बैठे और बड़ी उत्सुकता से बोले—पाँच हज़ार से कौड़ी कम न लूँगा।

सिनहा—पाँच हज़ार तो बहुत होते हैं। इतना ज़ुल्म न करो।

जगत—नहीं, इससे कम न लूँगा।

यह कह कर जगत पाँड़े फिर लेट गया। उसने ये शब्द इतने निश्चयात्मक भाव से कहे थे कि मिस्टर सिनहा को और कुछ कहने का साहस न हुआ। रुपए लाने घर चले। लेकिन घर पहुँचते-पहुँचते नीयत बदल गई। डेढ़ सौ के बदले पाँच हज़ार देते कलक हुआ। मन में कहा—मरता है मर जाने दो, कहाँ की ब्रह्म-हत्या और कैसा पाप! यह सब पाखण्ड है। बदनामी ही न होगी? सरकारी मुलाज़िम तो यों ही बदनाम होते हैं, यह कोई नई बात थोड़े ही है। बचा कैसे उठ बैठे थे! समझा होगा अच्छा उल्लू फँसा। अगर ६ दिन के उपवास करने से पाँच हज़ार मिलें तो मैं महीने में कम से कम पाँच मरतबा यह अनुष्ठान करूँ। पाँच हज़ार नहीं, कोई मुझे एक ही हज़ार दे दे। यहाँ तो महीने भर नाक रगड़ता हूँ तब जाके ६००) के दर्शन होते हैं। नोच-खसोट से भी शायद ही किसी महीने में इससे ज़्यादा मिलता हो। बैठा मेरी राह देख रहा होगा। लेना रुपए, मुँह मीठा हो जायगा!

वह चारपाई पर लेटना चाहते थे कि उनकी पत्नीजी आकर खड़ी हो गईं। उनके सिर के बाल खुले हुए थे, आँखें सहमी हुईं, रह-रह कर काँप उठती थीं। मुँह से शब्द न निकलता था। बड़ी मुश्किल से बोलीं—आधी रात तो हो गई होगी? तुम जगत-पाँड़े के पास चले जाओ। मैंने अभी ऐसा बुरा सपना देखा है कि अभी तक कलेजा धड़क रहा है, जान सङ्कट में पड़ी हुई थी। जाके किसी तरह उसे टालो।

मिस्टर सिनहा—वहीं से तो चला आ रहा हूँ। मुझे तुमसे ज़्यादा फ़िक्र है। अभी आकर खड़ा ही हुआ था कि तुम आईं।

पत्नी—अच्छा! तो तुम गए थे! क्या बातें हुईं, राज़ी हुआ?

सिनहा—पाँच हज़ार रुपए माँगता है!

पत्नी—पाँच हज़ार!

सिनहा—कौड़ी कम नहीं करता और मेरे पास इस वक़्त एक हज़ार से ज़्यादा न होंगे।

पत्नी जी ने एक क्षण सोच कर कहा—जितना माँगता है उतना ही दे दो, किसी तरह गला तो छूटे। तुम्हारे पास रुपए न हों तो मैं दे दूँगी। अभी से सपने दिखाई देने लगे हैं। मरा तो प्राण कैसे बचेंगे। बोलता-चालता है न?

मिस्टर सिनहा अगर आबनूस थे तो उनकी पत्नी चन्दन। सिनहा उनके ग़ुलाम थे। उनके इशारों पर चलते थे। पत्नी जी भी पति-शासन-कला में कुशल थीं। सौन्दर्य और अज्ञान में अपवाद है। सुन्दरी कभी भोली नहीं होती। वह पुरुष के मर्मस्थल पर आसन जमाना ख़ूब जानती है।

सिनहा—तो लाओ देता आऊँ, लेकिन आदमी बड़ा चघड़ है, कहीं रुपए लेकर सबको दिखाता फिरे तो?

पत्नी—इसको इसी वक़्त यहाँ से भगाना होगा।

सिनहा—तो निकालो दे ही दूँ। ज़िन्दगी में यह बात भी याद रहेगी।

पत्नी जी ने अविश्वास के भाव से कहा—चलो मैं भी चलती हूँ। इस वक़्त कौन देखता है।

पत्नी से अधिक पुरुष के चरित्र का ज्ञान और किसी को नहीं होता। मिस्टर सिनहा की मनोवृत्तियों को उनकी पत्नी जी ख़ूब जानती थीं। कौन जाने रास्ते में रुपए कहीं छिपा दें और कह दें, दे आए। या कहने लगें, रुपए लेकर भी नहीं टलता तो मैं क्या करूँ। जाकर सन्दूक़ से नोटों के पुलिन्दे निकाले और उन्हें चादर में छिपा कर मिस्टर सिनहा के साथ चलीं। सिनहा के मुँह पर झाड़ू सी फिरी हुई थी। लालटेन लिए पछताते चले जाते थे। ५०००) निकले जाते हैं! फिर इतने रुपए कब मिलेंगे, कौन जानता है! इससे तो कहीं अच्छा था कि दुष्ट मर ही जाता। बला से बदनामी होती, कोई मेरी जेब से रुपए तो न छीन लेता। ईश्वर करे मर गया हो!

अभी दोनों आदमी फाटक ही तक आए थे कि देखा, जगत पाँड़े लाठी टेकता चला आता है। उसका स्वरूप इतना डरावना था मानो श्मशान से कोई मुरदा भागा आता हो।

इनको देखते ही जगत पाँड़े बैठ गया और हाँफता हुआ बोला—बड़ी देर हुई, लाए?

पत्नी जी बोलीं—महाराज, हम तो आ ही रहे थे, तुमने क्यों कष्ट किया। रुपए लेकर सीधे घर चले जाओगे न?

जगत—हाँ-हाँ, सीधा घर जाऊँगा। कहाँ हैं रुपए, देखूँ!

पत्नी जी ने नोटों का पुलिन्दा बाहर निकाला और लालटेन दिखा कर बोलीं—गिन लो। पूरे ५०००) रुपए हैं!

पाँड़े ने पुलिन्दा लिया और बैठ कर उसे उलट-पुलट कर देखने लगा। उसकी आँखें एक नए प्रकाश से चमकने लगीं। हाथों में नोटों को तौलता हुआ बोला—पूरे पाँच हज़ार हैं?

पत्नी—पूरे। गिन लो!

जगत—पाँच हज़ार में तो टोकरी भर जायगी! (हाथों से बता कर) इतने सारे हुए पाँच हज़ार!

सिनहा—क्या अब भी तुम्हें विश्वास नहीं आता?

जगत—हैं-हैं, पूरे हैं, पूरे पाँच हज़ार! तो अब जाऊँ, भाग जाऊँ?

यह कह कर वह पुलिन्दा लिए कई क़दम लड़खड़ाता हुआ चला, जैसे कोई शराबी; और तब धम से ज़मीन पर गिर पड़ा। मिस्टर सिनहा लपक कर उठाने दौड़े तो देखा, उसकी आँखें पथरा गई हैं और मुख पीला पड़ गया है। बोले—पाँड़े-पाँड़े, क्या कहीं चोट आ गई?

पाँड़े ने एक बार मुँह खोला, जैसे मरती हुई चिड़िया सिर लटका कर चोंच खोल देती है। जीवन का अन्तिम धागा भी टूट गया। ओंठ खुले हुए थे और नोटों का पुलिन्दा छाती पर रक्खा हुआ था। इतने में पत्नी जी भी आ पहुँचीं और शव देख कर चौंक पड़ीं।

पत्नी—इसे क्या हो गया?

सिनहा—मर गया, और क्या हो गया?

पत्नी—(सिर पीट कर) मर गया! हाय भगवान! अब कहाँ जाऊँ!

यह कह कर वह बँगले की ओर बड़ी तेज़ी से चलीं। मिस्टर सिनहा ने भी नोटों का पुलिन्दा शव की छाती पर से उठा लिया और चले।

पत्नी—ये रुपए अब क्या होंगे?

सिनहा—किसी धर्म-कार्य में दे दूँगा।

पत्नी—घर में मत रखना, ख़बरदार! हाय भगवान!

५

दूसरे दिन सारे शहर में ख़बर मशहूर हो गई—जगत पाँड़े ने जण्ट साहब पर जान दे दी। उसका शव उठा तो हज़ारों आदमी साथ थे। मिस्टर सिनहा को खुल्लमखुल्ला गालियाँ दी जा रही थीं।

सन्ध्या-समय मिस्टर सिनहा कचहरी से आकर मन मारे बैठे थे कि नौकरों ने आकर कहा—सरकार, हमको छुट्टी दी जाय! हमारा हिसाब कर दीजिए। हमारी बिरादरी के लोग धमकाते हैं कि तुम जण्ट साहब की नौकरी करोगे तो हुक्का-पानी बन्द हो जायगा।

सिनहा ने झल्ला कर कहा—कौन धमकाता है?

कहार—किसका नाम बताएँ सरकार! सभी तो कह रहे हैं।

रसोइया—हजूर, मुझे तो लोग धमकाते हैं कि मन्दिर में न घुसने पाओगे।

सिनहा—एक महीने की नोटिस दिए बग़ैर तुम नहीं जा सकते।

साईस—हजूर, बिरादरी से बिगाड़ करके हम लोग कहाँ जायँगे। हमारा आज से इस्तीफ़ा है। हिसाब जब चाहे कर दीजिएगा।

मिस्टर सिनहा ने बहुत धमकाया, फिर दिलासा देने लगे, लेकिन नौकरों ने एक न सुनी। आध घण्टे के अन्दर सबों ने अपना-अपना रास्ता लिया। मिस्टर सिनहा दाँत पीस कर रह गए। लेकिन हाकिमों का काम कब रुकता है। उन्होंने उसी वक्त कोतवाल को ख़बर दी और कई आदमी बेगार में पकड़ आए। काम चल निकला।

उसी दिन से मिस्टर सिनहा और हिन्दू-समाज में खींच-तान शुरू हुई। धोबी ने कपड़े धोना बन्द कर दिया। ग्वाले ने दूध लाने में आनाकानी की। नाई ने हजामत बनानी छोड़ी। इन विपत्तियों पर पत्नी जी का रोना-धोना और भी ग़ज़ब था। उन्हें रोज़ भयङ्कर स्वप्न दिखाई देते। रात को एक कमरे से दूसरे में जाते प्राण निकलते थे। किसी का ज़रा सिर भी दुखता तो नहों में जान समा जाती। सब से बड़ी मुसीबत यह थी कि अपने सम्बन्धियों ने भी आना-जाना छोड़ दिया। एक दिन साले आए, मगर बिना पानी पिए चले गए। इसी तरह एक दिन बहनोई का आगमन हुआ। उन्होंने पान तक न खाया। मिस्टर सिनहा बड़े धैर्य से यह सारा तिरस्कार सहते जाते थे। अब तक उनकी आर्थिक हानि न हुई थी। ग़रज़ कि बावले झक मार कर आते ही थे और नज़र-नज़राना मिलता ही था। फिर विशेष चिन्ता का कोई कारण न था।

लेकिन बिरादरी से बैर करना पानी में रह कर मगर से बैर करना है। कोई न कोई ऐसा अवसर अवश्य ही आ जाता है जब हमको बिरादरी के सामने सिर झुकाना पड़ता है। मिस्टर सिनहा को भी साल के अन्दर ही ऐसा अवसर आ पड़ा। यह उनकी पुत्री का विवाह था। यही वह समस्या है जो बड़े-बड़े हेकड़ों का घमण्ड चूर-चूर कर देती है। आप किसी के आने-जाने की परवा न करें, हुक्का-पानी, भोज-भात, मेल-जोल, किसी बात की परवा न करें, मगर लड़की का विवाह तो न टलने वाली बला है। उससे बच कर आप कहाँ जाएँगे। मिस्टर सिनहा को इस बात का दग़दग़ा तो पहले ही था कि त्रिवेणी के विवाह में बाधाएँ पड़ेंगी, लेकिन उन्हें विश्वास था कि द्रव्य की अपार शक्ति इस मुश्किल को हल कर देगी। कुछ दिनों तक उन्होंने जान-बूझ कर टाला कि शायद इस आँधी का ज़ोर कुछ कम हो जाय; लेकिन जब त्रिवेणी का सोलहवाँ साल समाप्त हो गया तो टाल-मटोल की गुञ्जायश न रही। सन्देशे भेजने लगे। लेकिन जहाँ सन्देसिया जाता वहीं जवाब मिलता—'हमें मञ्ज़ूर नहीं।' जिन घरों में साल भर पहले उनका सन्देशा पाकर लोग अपने भाग्य को सराहते, वहाँ से अब सूखा जवाब मिलता था—'हमें मञ्ज़ूर नहीं।' मिस्टर सिनहा धन का लोभ देते, ज़मीन नज़र करने को कहते, लड़के को विलायत भेज कर ऊँची शिक्षा दिलाने का प्रस्ताव करते, किन्तु उनकी सारी आयोजनाओं का एक ही जवाब मिलता था—'हमें मञ्ज़ूर नहीं।' ऊँचे घरानों का यह हाल देख कर मिस्टर सिनहा उन घरानों में सन्देशा भेजने लगे, जिनके साथ पहले बैठ कर भोजन करने में भी उन्हें सङ्कोच होता था। लेकिन वहाँ भी वही जवाब मिला—'हमें मञ्ज़ूर नहीं।' यहाँ तक कि कई जगह वह ख़ुद दौड़-दौड़ कर गए, लोगों की मिन्नतें कीं, पर यही जवाब मिला—'साहब, हमें मञ्ज़ूर नहीं।' शायद बहिष्कृत घरानों में उनका सन्देशा स्वीकार कर लिया जाता, पर मिस्टर सिनहा जान-बूझ कर मक्खी न निगलना चाहते थे। ऐसे लोगों से सम्बन्ध न करना चाहते थे, जिनका बिरादरी में कोई स्थान न था। इस तरह एक वर्ष बीत गया।

मिसेज़ सिनहा चारपाई पर पड़ी कराह रही थीं, त्रिवेणी भोजन बना रही थी और मिस्टर सिनहा पत्नी के पास चिन्ता में डूबे बैठे हुए थे। उनके हाथ में एक ख़त था, बार-बार उसे देखते और कुछ सोचने लगते थे। बड़ी देर के बाद रोहिणी ने आँखें खोलीं और बोलीं—अब न बचूँगी। पाँड़े मेरी जान लेकर छोड़ेगा—हाथ में कैसा काग़ज़ है?

सिनहा—यशोदानन्दन के पास से ख़त आया है। पाजी को यह ख़त लिखते हुए शर्म नहीं आती। मैंने इसकी नौकरी लगाई, इसकी शादी करवाई और आज उसका मिज़ाज इतना बढ़ गया है कि अपने छोटे भाई की शादी मेरी लड़की से करना पसन्द नहीं करता। अभागे के भाग्य खुल जाते!

पत्नी—भगवान, अब ले चलो। यह दुर्दशा नहीं देखी जाती। अँगूर खाने का जी चाहता है, मँगवाए हैं कि नहीं?

सिनहा—मैं ख़ुद जाकर लेता आया था।

यह कह उन्होंने तश्तरी में अँगूर भर कर पत्नी के पास रख दिए। वह उठा-उठा कर खाने लगीं। जब तश्तरी ख़ाली हो गई तो बोलीं—अब किसके यहाँ सन्देशा भेजोगे?

सिनहा—किसके यहाँ बताऊँ। मेरी समझ में तो अब कोई ऐसा आदमी नहीं रह गया। ऐसी बिरादरी में रहने से तो यह हज़ार दरजा अच्छा है कि बिरादरी के बाहर रहूँ। मैंने एक ब्राह्मण से रिशवत ली, इससे मुझे इनकार नहीं, लेकिन कौन रिशवत नहीं लेता। अपने गौं पर कोई नहीं चूकता। ब्राह्मण नहीं, ख़ुद ईश्वर ही क्यों न हों, रिशवत खाने वाले उन्हें भी चूस ही लेंगे। रिशवत देने वाला अगर निराश होकर अपने प्राण दे देता है तो मेरा क्या अपराध? अगर कोई मेरे फ़ैसले से नाराज़ होकर ज़हर खा ले तो मैं क्या कर सकता हूँ। इस पर भी मैं प्रायश्चित्त करने को तैयार हूँ, बिरादरी जो दण्ड दे उसे स्वीकार करने को तैयार हूँ। सब से कह चुका हूँ कि मुझसे जो प्रायश्चित्त चाहो करा लो, पर कोई नहीं सुनता। दण्ड अपराध के अनुकूल होना चाहिए, नहीं तो यह अन्याय है। अगर किसी मुसलमान का छुआ हुआ भोजन खाने के लिए बिरादरी मुझे कालेपानी भेजना चाहे तो मैं उसे कभी न मानूँगा। फिर अपराध अगर है तो मेरा है। मेरी लड़की ने क्या अपराध किया है। मेरे अपराध के लिए मेरी लड़की को दण्ड देना सरासर न्याय-विरुद्ध है।

पत्नी—मगर करोगे क्या? कोई पञ्चायत क्यों नहीं करते?

सिनहा—पञ्चायत में भी तो वही बिरादरी के मुखिया लोग ही होंगे, उनसे मुझे न्याय की आशा नहीं। वास्तव में इस तिरस्कार का कारण ईर्षा है। मुझे देख कर सब जलते हैं! और इसी बहाने से मुझे नीचा दिखाना चाहते हैं। मैं इन लोगों को ख़ूब समझता हूँ।

पत्नी—मन की लालसा मन ही में रह गई। यह अरमान लिए संसार से जाना पड़ेगा। भगवान की जैसी इच्छा। तुम्हारी बातों से मुझे डर लगता है कि मेरी बच्ची की न जाने क्या दशा होगी। मगर तुमसे मेरी अन्तिम विनय यही है कि बिरादरी से बाहर न जाना, नहीं तो परलोक में भी मेरी आत्मा को शान्ति न मिलेगी। यही शोक मेरी जान ले रहा है। हाय! मेरी बच्ची पर न जाने क्या विपत्ति आने वाली है।

यह कहते-कहते मिसेज़ सिनहा की आँखों से आँसू बहने लगे। मिस्टर सिनहा ने उनको दिलासा देते हुए कहा—इसकी चिन्ता मत करो प्रिये, मेरा आशय केवल यह था कि ऐसे भाव मेरे मन में आया करते हैं। तुमसे सच कहता हूँ, बिरादरी के अन्याय से कलेजा चलनी हो गया है।

पत्नी—बिरादरी को बुरा मत कहो। बिरादरी का डर न हो तो आदमी न जाने क्या-क्या उत्पात करे। बिरादरी को बुरा न कहो। (कलेजे पर हाथ रख कर) यहाँ बड़ा दर्द हो रहा है। यशोदानन्दन ने भी कोरा जवाब दे दिया? किसी करवट चैन नहीं आता। क्या करूँ भगवान!

सिनहा—डॉक्टर को बुलाऊँ?

पत्नी—तुम्हारा जी चाहे बुला लो, लेकिन मैं बचूँगी नहीं। ज़रा तिब्बी को बुला लो, प्यार कर लूँ। जी डूबा जाता है। मेरी बच्ची! हाय मेरी बच्ची!

* * *

कोरिया का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

जापान के पास महासागर के किनारे कोरिया नाम का एक छोटा सा देश है। यहाँ की जन-संख्या प्रायः एक लाख और क्षेत्रफल ८१,१८० वर्ग मील है। व्यवसाय-वाणिज्य के लिए कोरिया, आज से कुछ वर्ष पहले एशिया के प्रधान देशों में था। कोरियन बड़े परिश्रमी, स्वतन्त्र प्रकृति वाले और अध्यवसायी थे। अपने परिश्रम और अध्यवसाय द्वारा वे अपनी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लिया करते थे। अभागे भारतवर्ष की तरह उन्हें कपड़े के लिए इङ्गलैण्ड का, और अन्यान्य आवश्यकीय चीज़ों के लिए अन्यान्य विलायतों का मुँह नहीं ताकना पड़ता था। वे अपनी उदर-पूर्ति के लिए अन्न और शरीर ढकने के लिए कपड़े स्वयं तैयार कर लिया करते थे। उन्हें न 'ऊधो का लेना था और न माधो का देना।' न उन्हें विदेशों में अपना वाणिज्य फैलाने की इच्छा थी और न किसी विदेशी को अपने देश में घुसने देना चाहते थे। राज्य-शासन एक स्वतन्त्र नरेश के द्वारा होता था। उसकी अपनी फ़ौज थी और अपनी पुलिस। राज्य-व्यवस्था एक सुयोग्य मन्त्रि-मण्डल द्वारा होती थी। प्रजा राज-भक्त थी और राजा प्रजा-पालक। प्रजा की भलाई ही राज्य-शासन का उद्देश्य था। ग़र्ज़ कि कोरिया एक सुखी और समृद्धि-शाली देश था।

परन्तु कोरिया का यह विभव और कोरियनों की स्वतन्त्रता साम्राज्य-लोलुप जापान से न देखी गई। उन्नीसवीं शताब्दी में, जापान के सम्राट मिकाडो महोदय ने कोरिया-नरेश के पास अपना एक दूत भेज कर वहाँ अपना व्यापार फैलाने की इच्छा प्रगट की, परन्तु चीन को यह बात नहीं जँची। उसने जापान की इस चेष्टा में बाधा डालनी आरम्भ की। कोरिया नरेश सम्पूर्ण स्वतन्त्र होने पर चीन-सम्राट के पुराने मित्र थे। इसलिए चीन की सलाह मान कर उन्होंने जापान की प्रार्थना अस्वीकृत कर दी। जापान इससे कुछ रुष्ट हुआ, पर हताश नहीं। उसने सन् १८९२ में हिडेयोशी नाम के एक चतुर और धूर्त जापानी को अपना दूत बना कर कोरिया भेजा। हिडेयोशी असाधारण बुद्धिमान और कूट-नीतिज्ञ मनुष्य था। उसने नाना छल-छन्दों का आश्रय लेकर कोरियनों पर जापान की वदान्यता और सौजन्यता का प्रभाव डालना आरम्भ किया। परन्तु कोरियन निरे मूर्ख न थे। वे शीघ्र ही हिडेयोशी को पहचान गए और चीन की मदद से उसे अपने राज्य से निकाल बाहर किया। साथ ही जापानियों के लिए कोरिया का द्वार भी बन्द कर दिया गया। परन्तु सारे एशिया प्रान्त पर साम्राज्य विस्तार की आकांक्षा रखने वाले जापान को यह कब मञ्जूर था? उसने कोरिया-सरकार की इस निषेधाज्ञा को ठुकरा कर गुप्त रूप से अपने देश के वणिकों को कोरिया भेजने का निश्चय किया। सन् १८७६ में कुछ जापानी बनिए चोरी से कोरिया में घुस आए और अपना माल बेचने की चेष्टा करने लगे। जब कोरियनों को इस बात का पता लगा तो कोरियनों के एक दल ने उन्हें जान से मार डाला। इससे नाराज़ होकर जापान की सरकार कोरिया के विरुद्ध युद्ध का आयोजन करने लगी। कोरिया का राजा एक कमज़ोर दिल का आदमी था। जापान के आयोजन का समाचार पाकर वह डर गया; और सन्धि के लिए प्रार्थना करने लगा। जापान तो यह चाहता ही था। सन्धि हुई और उसके अनुसार उसे कोरिया के प्रधान बन्दरगाह पर अबाध रूप से वाणिज्य करने का अधिकार मिल गया। इसके बदले में जापान की सरकार ने कोरिया सम्राट की पूर्ण स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली। उद्देश्य यह था कि कोरिया को चीन के मित्रता-पाश से मुक्त कर लिया जाय।

इसके बाद से जापान धीरे-धीरे कोरिया को अपने चङ्गुल में फँसाने लगा। छल-बल तथा कौशल से सारे कोरिया में अपने व्यापार का विस्तार करने लगा। इसी समय अमेरिका और रूस की नज़र भी कोरिया पर पड़ी। संसार की ये दोनों प्रबल शक्तियाँ भी कोरिया में अपने वाणिज्य का विस्तार करने की चेष्टा में लगीं। परन्तु विख्यात रूस-जापान समर के कारण जापान का ही प्रभाव कोरिया पर रहा। अमेरिका और रूस की दाल नहीं गलने पाई। जापान का प्रभाव कोरिया पर जैसे-जैसे विस्तार-लाभ करने लगा, वैसे ही वैसे उसकी स्वेच्छाचारिता भी दिन दूनी और रात चौगुनी तरक़्क़ी करने लगी। धीरे-धीरे कोरिया का दुर्बल-हृदय राजा सम्पूर्ण रूप से जापान के शिकञ्जे में कस गया। कोरिया की सारी शासन-व्यवस्था जापान की आज्ञा अथवा परामर्श के अनुसार होने लगी। कोरिया की विशेषता और स्वतन्त्रता जापान के उदर में चली गई और वह जापान-साम्राज्य का एक अङ्ग माना जाने लगा!

परन्तु कोरिया की प्रजा ने इस व्यवस्था को बिलकुल पसन्द नहीं किया। उसने एक जातीय दल का सङ्गठन कर जापान की स्वेच्छाचारिता का विरोध आरम्भ किया। ज़ोर-शोर से आन्दोलन होने लगा। जापान की सरकार ने भी उग्र मूर्ति धारण की। प्राण-दण्ड, निर्वासन और काराद‌ण्ड का बाज़ार गर्म हो उठा। राष्ट्रीय दल के प्रधान नेता श्री० सीफ़ूमेनरी को फाँसी की आज्ञा दी गई और इससे पहले उन्हें सात महीने तक लोहे की ज़ञ्जीरों में जकड़ कर कालकोठरी में रक्खा गया! मातृभूमि के उद्धार के लिए इस वीर पुरुष ने जितने अत्याचार सहे, उनमें बहुत कम देशभक्तों को नसीब हुए होंगे। अन्त में दीर्घ छः वर्षों के बाद उस अभागे को मुक्ति मिली। भूल से एक दूसरा व्यक्ति फाँसी पर लटका दिया गया। इसलिए बेचारे सीफ़ूमेनरी का प्राण बच गया। इसके बाद वह अमेरिका चले गए और दर्शन-शास्त्र की आलोचना में समय अतिवाहित करने लगे।

अब जापान की स्वेच्छाचारिता और भी अबाध गति से चलने लगी। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के परिचालन के लिए कोरियन मन्त्री की जापानी मन्त्री नियुक्त हुआ! पोस्ट और तार-विभाग पर जापान ने अपना सम्पूर्ण अधिकार जमा लिया। बिना अनुमति के कोरियन राज-नीतिक सङ्घ स्थापित करने की मुमानियत कर दी गई। सारे राजनीतिक काग़ज़ात पर जापानी सेन्सर ने अपना अधिकार जमा लिया! जिन कोरियनों ने जापान की स्वेच्छाचारिता का विरोध किया था—या जिन लोगों ने अख़बारों में उसकी आलोचना की थी, वे जेलख़ानों में बन्द कर दिए गए। इनमें जो बाक़ी बचे, कोरिया से निकाल दिए गए! कोरिया में मज़दूरी करने के लिए हज़ारों जापानी क़ुली बुलाए गए और यह नियम बना दिया गया कि इन क़ुलियों पर कोरियन सरकार का कोई आधिपत्य नहीं रहेगा। इसका परिणाम यह हुआ कि जापानी क़ुली दिन-दहाड़े कोरियन गृहस्थों को लूटने-पीटने और हत्या करने लगे! सारे देश में चोरी, लूट तथा मार-पीट का बाज़ार गर्म हो उठा और कोरियन-सरकार चुपचाप यह तमाशा देखने लगी। कोरिया को सम्पूर्ण रूपेण हड़प जाने के लिए वहाँ के शहरों के नाम तक बदल कर, जापानी नाम रक्खे जाने लगे! इसके बाद सारे देश में 'सामरिक नियम' (मार्शल लॉ) जारी कर दिया गया! और इसी सामरिक क़ानून के बहाने समस्त देश की रेलवे लाइनों के आसपास की भूमि अत्यन्त स्वल्प मूल्य देकर ख़रीद ली गई और जापानी बसा दिए गए! इस तरह सारा कोरिया जापानी उपनिवेश बन गया। जापानियों ने बड़ी-बड़ी इमारतें बना लीं। अपने कारख़ाने खोले, और दूकानें स्थापित कीं।

परन्तु, इतने से ही जापान की मनोकामना पूरी न हुई। उसने कोरिया के दो तृतियांश में जापानियों को बसाने की चेष्टा की। यह जान कर कोरिया की प्रजा एकदम घबरा उठी और जापान की इस मनोवृत्ति का घोर प्रतिवाद आरम्भ हुआ। इतने में जापान सरकार ने कोरिया के राजा के पास अपना एक दूत भेज कर यह इच्छा प्रगट की कि समस्त अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार जापान-सरकार के अधिकार में रहेगा और कोरिया की शासन-प्रणाली के संरक्षण जापानी मन्त्रियों को सौंप देना होगा! पहले तो कोरिया के सम्राट ने इस प्रस्ताव को नामञ्जूर कर दिया और साफ़-साफ़ कह दिया कि हमें मर जाना मञ्जूर है, परन्तु जापान की यह गन्दी ग़ुलामी मञ्जूर नहीं; परन्तु उस दुर्बल-हृदय मनुष्य में इतनी शक्ति न थी कि अपनी इस प्रतिज्ञा पर अटल रह सकता! शीघ्र ही डर गया और जापान की सारी अन्यान्यपूर्ण माँगें स्वीकार कर लीं!!

कोरियन युवकों ने यह ख़बर सुनी तो एकदम क्रुद्ध हो उठे। समस्त कोरियन सरदारों और भूतपूर्व प्रधान मन्त्रियों का एक 'डेपूटेशन' सम्राट के पास गया और उन से कहा गया कि जापान के साथ उन्होंने नई सन्धि की है, उसे तुरन्त वापस ले लें। सम्राट ने कहा, कि हमने सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किया है, परन्तु उन्होंने साफ़ शब्दों में यह नहीं बताया कि किसी नई शर्त के अनुसार उन्होंने सन्धि नहीं की है! सुतराम् जनता ने यह सिद्धान्त कर लिया कि सम्राट ने नई शर्तें स्वीकार कर ली हैं और अब वह झूठ बोल कर प्रजा को धोखे में रखना चाहते हैं। इससे राजभक्त कोरियन सरदारों को इतनी बड़ी मर्म-वेदना हुई, कि कितने ही स्वाभिमानी सरदारों ने घर आकर आत्म-हत्या कर ली!! इसका प्रभाव कोरिया के सम्राट के ऊपर भी पड़ा, परन्तु बेचारा अपनी दुर्बलता से विवश था! अन्त में अपने कई पार्श्ववर्तियों की सलाह से सम्राट ने अमेरिकन राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के पास अपना एक दूत भेज कर, उनसे केवल सहानुभूति की प्रार्थना की। इससे पहले, सन् १८८२ में अमेरिका की राष्ट्र सभा ने प्रस्ताव स्वीकार किया था, कि कोरिया की स्वाधीनता की रक्षा में सहायता दी जाएगी। परन्तु उस प्रतिज्ञा की रक्षा करना तो दूर रहा, प्रेज़िडेण्ट रूज़वेल्ट ने कोरियन दूत से मुलाक़ात तक न की; बल्कि उत्तर में कहला

भेजा कि "जो जाति स्वयं अपनी मर्यादा की रक्षा नहीं कर सकती, उस जाति का किसी दूसरी जाति से सहानुभूति की आशा करना पागलपन है।" यह निष्ठुर किन्तु सत्य (!!!) उत्तर सुन कर कोरियन दूत वापस चला आया !!!

हताश कोरिया-सम्राट ने अन्त में हेग-पञ्चायत की शरण ली, उन्हें आशा थी कि कमज़ोर जातियों के हितों की रक्षा की डींग हाँकने वाली हेग की सभा इस मामले में हस्तक्षेप करेगी और अभागा कोरिया जापान के सर्वग्रासी चङ्गुल से बच सकेगा; परन्तु हेग के सरदारों ने कोरियन दूत को सभा में घुसने तक की आज्ञा न दी। वहाँ से भी बेचारे को हताश होकर ही लौटना पड़ा! इधर जापान ने सुना कि कोरिया की सरकार ने बिना उसकी अनुमति लिए ही हेग की सभा में दूत भेजा था, तो वह आगबबूला हो उठा और कोरिया के सम्राट को सिंहासनच्युत करके, उसके हीन-वीर्य लड़के को कोरिया का राजा बनाया और उससे अपनी नई शर्तें भी स्वीकार करा लीं! इस शर्त के अनुसार क़ानून बनाने तथा नवीन राजकर्मचारी नियुक्त करने का सारा अधिकार जापानी मन्त्रियों के हाथ में चला गया; अस्तु।

कुछ दिनों के बाद, प्रेज़िडेण्ट रूज़वेल्ट के मरने पर उनके पुस्तकालय में एक पर्चा मिला। उससे मालूम हुआ कि कोरिया की स्वतन्त्रता छीनने में जापान की सहायता करने के लिए वह वचन-बद्ध हो चुके थे, इसीसे उन्होंने कोरियन दूत से मुलाक़ात तक न की और न उसके प्रति कोई सहानुभूति ही प्रगट की! हेग की सभा में इन्हीं महात्मा के कारण बेचारे को घुसने तक नहीं दिया गया था; क्योंकि ये ही उस सभा के सभापति थे। साथ ही इस घटना ने यह भी अच्छी तरह साबित कर दिया, कि यूरोपियन जातियों का वह गुट्ट, जो शान्ति-सभा के नाम से बना है, पराधीन जातियों को पीसने के लिए ही है !!

इस घटना से कोरिया वाले अत्यन्त हताश हुए और उन्हें मालूम हो गया कि संसार में कमज़ोरों का कोई मददगार नहीं है। गिरिधर कवि के कथनानुसार यहाँ—"सभी सहायक सबल के, दुर्बल कोउ न सहाय; पवन जगावत आग को दीपहिं देत बुझाय।" ख़ैर, शीघ्र ही कोरियनों की मोह-निद्रा भी भङ्ग हो गई और वे अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए स्वयं कटिबद्ध हुए। इधर जापान ने भी भीषण मूर्ति धारण की। जापानियों के अत्याचार से कोरियनों का अपने देश में रहना तक मुश्किल हो गया। हज़ारों कोरियन अपनी जन्म-भूमि और वासस्थान छोड़ कर मञ्चूरिया चले जाने के लिए विवश हुए! इस यात्रा में उन्हें नाना प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ा। कितने ही अभागों को भूख, प्यास तथा शीत के कारण रास्ते में ही प्राण विसर्जन कर देना पड़ा! कितने नाना प्रकार के रोगों से मरे और कितने ही डाकुओं द्वारा लूटे गए! परन्तु आश्चर्य है, कि इन तमाम कष्टों के होते हुए भी किसी ने कोरिया वापस आने की इच्छा न की। इससे अनुमान किया जा सकता है कि किस गम्भीर मनोवेदना के कारण इन कोरियनों ने अपना देश परित्याग किया था!

परन्तु अधिकांश कोरियन युवकों को इस तरह अपना देश छोड़ कर भागना पसन्द न था। उन्होंने निश्चय किया कि या तो स्वतन्त्र रहेंगे या स्वतन्त्रता-प्राप्ति की चेष्टा में मर मिटेंगे। उन्होंने "धर्म-सेना" नाम का अपना एक दल बनाया और कोरिया के दुर्गम बनों तथा पर्वत की कन्दराओं में छिप कर रहने लगे। इन 'धर्म-सेना' के पास लड़ाई का कोई सामान न था। था केवल अदम्य उत्साह और अटूट देश-प्रेम! इन्होंने समय-समय पर छोटे-छोटे हमले करके, अपने जापानी-प्रभुओं के आराम में ख़लल डालना आरम्भ किया। इन मुट्ठी भर कोरियन युवकों को पकड़ने के लिए बड़ी-बड़ी चेष्टाएँ हुईं। जापानी फ़ौज और पुलिस ने सिर-तोड़ परिश्रम किया, परन्तु सफलता न मिली। उनके अतर्कित आक्रमण से जापानी अफ़सरों की नींद-भूख हराम हो गई! अन्त में उन्होंने इन उत्साही युवकों के आक्रमणों का बदला लेने के लिए एक पैशाचिक उपाय ढूँढ़ निकाला। अकारण ही गाँव के गाँव जला कर भस्म किए जाने लगे! जो सामने पड़ा, वही तलवार के घाट उतारा गया। असंख्य कोरियन महिलाओं पर भी पैशाचिक अत्याचार हुए। ऐसे-ऐसे राक्षसी कार्य आरम्भ हुए, कि उनका उदाहरण संसार के इतिहास में दुर्लभ है! गाँवों के गिरजाघरों में तमाम स्त्री-पुरुष और बच्चे एकत्र कर लिए जाते थे और गिरजा में आग लगा दी जाती थी! जो प्राण बचाने के लिए भागने की चेष्टा करता था, वह गोली से मार दिया जाता था! सभ्य कहलाने वाले जापानियों ने बेचारे कोरियनों पर जो अत्याचार किए, उसकी कहानी इतनी मर्मस्पर्शी—इतनी रोमाञ्चकारी है, कि उसकी कल्पना भी हम नहीं कर सकते! इन अत्याचारों की कहानी पढ़ कर सहसा यह विश्वास नहीं होता कि मनुष्य मनुष्य पर इतना ज़ुल्म कर सकता है।

अस्तु, इस भीषण अत्याचार की इति-श्री यहीं नहीं हुई। जापान के प्रधान सेनापति वीरवर (!) रोटिची की नज़र कोरिया के ईसाइयों पर पड़ी। उन्हें पता लगा, कि जापान के प्रभुत्व के प्रधान बाधक यही पादड़ी हैं। इसलिए सेनापति महोदय ने १४६ पादड़ियों और शिक्षकों को गिरफ़्तार किया। कोरिया के 'सिउल' नामक स्थान में इन अभागों का विचार आरम्भ हुआ। वर्षों तक विचार-प्रहसन चलता रहा। इनमें तीन तो हवालात में ही चल बसे! तेईस को देश निकाले का दण्ड दिया गया!! सौ हत्या करने की साज़िश के अपराध में जेल भेजे गए!!! नाना प्रकार के घृणित और अमानुषिक अत्याचार करके, इनसे अपराध स्वीकार कराया गया था। यद्यपि विचार के समय उन्होंने साफ़-साफ़ कह दिया था कि हम निर्दोष हैं, पुलिस के अत्याचारों से घबरा कर हमने स्वीकारोक्ति पर हस्ताक्षर किया है, परन्तु अदालत ने उनके कथन पर विश्वास नहीं किया। इस विचार-प्रहसन में देश-भक्त बैरनहिचो तथा अन्य पाँच अभियुक्तों को दस वर्ष कठोर कारावास की सज़ा दी गई! अट्ठारह सात-सात वर्ष के लिए जेल भेजे गए, चालीस ६ वर्ष के लिए, और ४२ पाँच वर्ष के लिए क़ैद रक्खे गए और न्याय की नाक की रक्षा के लिए सत्तर बेदाग़ छोड़ दिए गए! हवालात में इन अभागों पर जो अत्याचार किए गए थे, उसका वर्णन प्रकाशित करने की उन्हें कोई सुविधा न दी गई थी; परन्तु तो भी अमेरिका तथा यूरोप में इस जापानी निष्ठुरता की घोर निन्दा हुई। यहाँ तक कि जापान को इस मामले के पुनर्विचार के लिए बाध्य होना पड़ा; और क़ैदियों को अपनी सफ़ाई के साथ ही पुलिस के अत्याचारों की कथा-कहानी सुनाने की पूर्ण सुविधा और स्वतन्त्रता दी गई। एक अपराधी ने अपील-अदालत के सामने पुलिस के अत्याचार का जो रोमाञ्चकारी विवरण सुनाया था, उसे सुन कर लोग हैरान हो गए। हवालात में अपराध स्वीकार कराने के लिए उन पर ऐसे-ऐसे भीषण अत्याचार हुए, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

अस्तु, प्रायः डेढ़ महीने के बाद पुनर्विचार समाप्त हुआ। निन्नानवे मनुष्य—जिन पर भीषण अपराध लगाए गए थे और जो दस-दस वर्षों के लिए जेल भेजे गए थे, या आजन्म कालेपानी की सज़ा पाए हुए थे, निरपराध साबित हुए। छः अपराधियों को दो-दो साल की साधारण सज़ा दी गई। परन्तु यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि अपील-अदालत में पुलिस हत्या तथा राजद्रोह का अपराध प्रमाणित नहीं कर सकी। केवल निम्न अदालत की मान की रक्षा के लिए दर्जनों आदमियों को जेल जाना पड़ा।

इसी समय यूरोप का महासमर समाप्त हुआ था। प्रेज़िडेण्ट विलसन ने विश्व-राष्ट्र-सङ्घ सङ्गठित करने की घोषणा प्रकाशित की। साथ ही यह भी आशा दी गई कि छोटे-छोटे राष्ट्रों की स्वाधीनता स्वीकार की जाएगी। कोरियावासी इससे अत्यन्त आनन्दित हुए और पेरिस के अधिवेशन में अपना एक प्रतिनिधि भेजने की चेष्टा करने लगे। अमेरिका प्रवासी तीन कोरियन प्रतिनिधि निर्वाचित हुए। किन्तु उन्हें अमेरिका से पेरिस जाने के लिए 'पास-पोर्ट' ही नहीं मिला। 'किउसिक किन' नाम का कोरियन-प्रतिनिधि किसी तरह पेरिस पहुँचा भी तो उससे मित्र राष्ट्रों में प्रतिनिधियों ने मुलाक़ात ही न की।

अब कोरियनों को अच्छी तरह मालूम हो गया कि स्वयं मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखाई देता। नवयुवकों ने निश्चय किया कि जापान के पशु-बल का उत्तर पशु-बल द्वारा ही दिया जावे; परिणाम चाहे जो कुछ भी हो। परन्तु नेताओं ने ऐसा नहीं करने दिया, उन्होंने असहयोग का अवलम्बन करने की सलाह दी।

इसी समय कोरिया के सिंहासनच्युत सम्राट के मृत्यु की घोषणा प्रचारित हुई। कोरियन नेताओं ने इस अवसर से लाभ उठाया। सम्राट का अन्तिम संस्कार जातीय भाव से किया गया और साथ ही स्वाधीन प्रजातन्त्र की घोषणा भी प्रकाशित कर दी गई। नेताओं ने स्वाधीनता का एक घोषणा-पत्र तैयार किया और विश्वस्त मनुष्यों द्वारा उसकी नक़ल कोरिया के प्रत्येक नगर और गाँव में भेज दी गई। सम्राट के अन्तिम संस्कार के दिन प्रत्येक प्रमुख स्थान में एक महती सभा करने का आदेश दिया गया और यह भी निश्चय हुआ कि इसी दिन स्वाधीनता की घोषणा भी कर दी जावे। इस घोषणा-पत्र की हज़ारों प्रतियाँ छपवा कर विद्यालयों के विद्यार्थियों को दे दी गई थीं और उन्हें हिदायत कर दी गई थी कि जिस समय सम्राट के संस्कार की सभा समाप्त होने पर हो, उसी समय वे इसे पढ़ना आरम्भ कर दें। इधर जापानी अधिकारियों ने घोषणा की थी कि सम्राट् के समाधि के दिन कोई सभा न की जाए। परन्तु कोरियन नेताओं ने निर्दिष्ट तिथि से एक दिन पहले ही समाधि-दिवस मना डालने का सङ्कल्प कर लिया था। साथ ही इस बात की सिरतोड़ चेष्टा भी की गई थी कि इसी दिन स्वाधीनता की घोषणा भी कर दी जावे। यह सारा आयोजन अत्यन्त गुप्त रीति से किया गया था। जापानी अधिकारियों को इस आयोजन की बिलकुल ख़बर न थी।

स्वाधीनता-प्रेमी कोरियन नायकों ने जिस ढङ्ग से अपने देश की स्वाधीनता की घोषणा की थी, वह बड़ा ही रोचक है। उन्होंने जो घोषणा-पत्र तैयार किया था, उस पर तैंतीस प्रमुख नेताओं के हस्ताक्षर थे। इन्होंने जापानी अफ़सरों को एक 'प्रीति-भोज' देने का आयोजन किया। जब आहारादि सम्पन्न हो गया और जापानी प्रभुगण अपनी स्तुतिवाद सुनने की आशा में बैठे थे, उसी समय राष्ट्रीय दल के प्रधान ने घोषणा-पत्र निकाल कर गम्भीरतापूर्वक पढ़ना आरम्भ किया। जापानी अफ़सर यह लीला देख कर अवाक् रह गए। इसके बाद प्रधान ने टेलीफ़ोन उठाया और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट को ख़बर दी कि हम लोगों ने पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा कर दी है, इसलिए गिरफ़्तार करने के लिए आप क़ैदियों की गाड़ी लेकर फ़ौरन चले आइए। हम आपके शुभागमन की प्रतीक्षा में हैं। थोड़ी देर के बाद सुपरिण्टेण्डेण्ट महोदय गाड़ी लेकर आ पहुँचे और बत्तीस नेताओं को उन्होंने गिरफ़्तार कर लिया। तैंतीसवें सज्जन किसी आवश्यक कार्य में लगे रहने के कारण भोज-सभा में, उन लोगों के गिरफ़्तार हो जाने के बाद

(शेष मैटर १८ वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

मैथिल महासभा और सौराठ सभा

[एक मैथिल]

इस वर्ष मैथिल महासभा का २१ वाँ अधिवेशन दरभङ्गा में तारीख़ १८, १९ और २० अप्रैल को दरभङ्गा के महाराजाधिराज श्रीमान कामेश्वरसिंह बहादुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मैथिल महासभा एक निर्जीव संस्था है, इसका पर्याप्त प्रमाण इस अधिवेशन ने जनता को दिया। यह बात सच है कि इस संस्था का राजनीति से सम्बन्ध नहीं है, सामाजिक और आर्थिक उन्नति इसका मूल उद्देश्य है और इन्हीं दोनों उद्देश्यों को सामने रख कर यह सभा कार्य करती आई है। आरम्भ में इस संस्था ने कुछ काम किया था और उस समय यह मैथिल जाति के प्रतिनिधित्व का दावा भी कर सकती थी। यद्यपि दरभङ्गा-नरेश इसके आजीवन सभापति थे, तथापि बनैली, श्रीनगर, रजौर, खड़हरा तथा दरभङ्गा राज्य से सम्बन्ध रखने वाले सभी बाबुआना राज्यों के राजे और बाबू इसमें सम्मिलित होते थे और जातीय कार्य में भाग लेते थे। किन्तु समयानुकूल नियमों का पालन न करने से किसी संस्था की जैसी दुर्गति होती है, वैसी ही मैथिल महासभा की हुई। दुनिया भर की एकतन्त्रता नष्ट हो गई, ख़लीफ़ा और पोप उठ गए, मुल्ला और पण्डितों का साम्राज्य चला गया; किन्तु मैथिलों के जातीय जीवन से एकतन्त्रता का नाश अभी तक नहीं हुआ है! इनमें समानता के सिद्धान्त पर किसी सामूहिक शक्ति का उपयोग अभी तक नहीं हो सका है। इसीसे समझा जा सकता है कि हम लोग कहाँ तक गिरे हुए हैं। फिर मिथिला भी आख़िर इसी दुनिया में है और संसार की लहरें यहाँ भी टकराती ही हैं। अतः अन्यान्य समझदार लोगों एवं श्रीमानों की श्रद्धा इस विचित्र संस्था से दिनानुदिन कम होती गई और यह महासभा मैथिल जाति की कोई प्रतिनिधयात्मक संस्था न रह कर, एक दरबार बन गई! सुतराम् कुछ ही दिनों के पश्चात् जाति के सच्चे सेवकों और निस्स्वार्थ भक्तों ने इसमें आना-जाना छोड़ दिया। अब इसमें प्रायः वही लोग सम्मिलित होते हैं, जिन्हें या तो नाम के लिए पदाधिकारी होने का भूत सवार है अथवा जो दरबार से कुछ स्वार्थ-साधन करना चाहते हैं। जिस जनता की भलाई के लिए सभा की स्थापना हुई थी, उसकी अवस्था का यहाँ कुछ भी विचार नहीं होता और न किसी प्रकार का उसे नेतृत्व ही मिलता है! इन्हीं बातों से ऊब कर कुछ दिन पूर्व कलकत्ता के कुछ मैथिल विद्वानों ने एक अलग सम्मेलन किया था। किन्तु दुर्भाग्यवश वह मैथिल युवकों की उदासीनता या अकर्मण्यता से एक ही वर्ष के बाद बन्द हो गया और महासभा की निरंकुशता बढ़ती ही गई। इस बार मालदह में फिर भी अखिल भारतीय मैथिल युवक-सम्मेलन की बैठक श्रीमान कुमार गङ्गानन्दसिंह साहेब, एम० ए० की अध्यक्षता में हुई है। इस सम्मेलन ने हम लोगों को बहुत कुछ आशा बँधाई है तथा गणतन्त्रात्मक रीति-नीति का सूत्रपात किया है। इसमें सन्देह नहीं कि यदि इस सम्मेलन ने अपने को सङ्गठित किया एवं इसके अनुकूल कुछ कार्य हुआ तो देश और जाति का अशेष कल्याण होगा। मैथिल महासभा में ऐसी अनेक त्रुटियाँ हैं, जिनका सुधार हुए बिना इससे कोई लाभ नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए निम्नलिखित पंक्तियों से इसकी कतिपय त्रुटियों का पता लग जायगाः—

मैथिल महासभा के इस अधिवेशन में कोई प्रस्ताव काम में आने वाला पास नहीं हुआ। एक तो हमारा मैथिल समाज अपनी सङ्कीर्णता और रूढ़ियों से अन्यान्य समाजों की अपेक्षा कहीं बेतरह जकड़ा हुआ है, तिस पर इस महासभा ने तो मानो इसकी पराकाष्ठा ही कर दी। जैसे प्राचीन काल से उपनयन-संस्कार के लिए ब्रह्मा, आचार्य और याचक आदि की रूढ़ियाँ मनाई जाती हैं—यद्यपि उनका वास्तविक अर्थ कुछ नहीं होता—उसी प्रकार आरम्भ से ही मैथिल महासभा में राजभक्ति, विद्या-प्रचार, परस्पर-विरोध-परिहार, वाणिज्य-व्यवसाय, वैवाहिक सुधार, मातृभाषा की उन्नति आदि सात विषयों पर व्याख्यान और प्रस्ताव पास होते आए हैं, किन्तु किसी निर्णय पर कार्य नहीं होता। इस बार भी इन्हीं विषयों पर कुछ व्याख्यान होकर थोड़े से टकसाली प्रस्ताव पास हुए। हाँ, राजभक्ति पर कोई प्रस्ताव या व्याख्यान नहीं हुआ। यह आश्चर्य की बात अवश्य हुई। किन्तु राजभक्ति का परिचय भरपूर दिया गया। इसी अभिप्राय से खद्दर पहिनने का प्रस्ताव पास नहीं हुआ। विषय-निर्वाचिनी सभा में स्वतन्त्र विचार के आदमी बहुत कम घुसने पाए, क्योंकि सभापति की आज्ञा से दो-तीन घण्टा पूर्व यह घोषणा कर दी गई कि जो व्यक्ति कम से कम आठ रुपए दें वे ही प्रवेश कर सकेंगे। इसलिए यह प्रस्ताव विषय-निर्वाचिनी सभा में ही बहुमत से अस्वीकृत कर दिया गया। एक सज्जन ने कई व्यक्तियों से हस्ताक्षर करा कर उसे महासभा के खुले अधिवेशन में उपस्थित करना चाहा, किन्तु उन्हें ऐसा करने का मौक़ा ही नहीं दिया गया। इस राष्ट्रीय क्रान्ति के समय में स्वदेशी और खद्दर के प्रस्ताव की यह दुर्दशा हो, यह क़यास के बाहर की बात है। किन्तु मैथिल महासभा में यही बात चरितार्थ हुई। दूसरा महत्वपूर्ण प्रस्ताव था—हिन्दू महासभा के अछूतोद्धार, शुद्धि और सङ्गठन विषयक प्रस्तावों के प्रति सहानुभूति मात्र प्रगट करना, किन्तु उसकी भी वही दुर्दशा हुई, जो खद्दर वाले प्रस्ताव की हुई थी। मानो मैथिल जाति अपने को हिन्दू-जाति से बहिष्कृत समझती है। ज़रा सोचने की बात है, यह स्थिति इस जाति के लिए कितनी भयानक है! इसका कारण यह बताया जाता है कि अछूतोद्धार, शुद्धि और सङ्गठन के प्रति सहानुभूति प्रगट करना भी सनातनधर्म के विरुद्ध है! एक और प्रस्ताव की हालत सुनिए। हिन्दी-संसार को मैथिल-भाषा की उन्नति से विरोध है और बिहार प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन मैथिल भाषा के आन्दोलन को कड़ी नज़र से देखता है, किन्तु तो भी कुछ मैथिल, जो हिन्दी को राष्ट्र-भाषा मान कर उसकी सेवा करते हैं, मैथिली के प्रति सद्भाव रखते हैं और उसकी उन्नति प्रान्तीय रीति पर करना चाहते हैं। मैथिल महासभा भी आज २० वर्षों से इसी भाषा में अपनी कार्यवाही करती रही है और केवल नाम के लिए उसकी उन्नति का राग अलापती आई है। किन्तु जब मैथिली भाषा की एक मात्र मासिक पत्रिका 'मिथिला' को स्थायी बनाने का प्रस्ताव आया तो चारों ओर से "उठा लीजिए, उठा लीजिए" "वापस लीजिए, वापस लीजिए" का शोर मच गया और प्रस्तावक को अन्त में उसे उठा ही लेना पड़ा। इसका कारण यह है कि उक्त पत्रिका कुछ गर्म लेख लिखा करती है। ज़रा इसकी गर्मी का हाल भी सुनिए। इसने पर्दा-प्रथा के बहिष्कार, स्त्री-शिक्षा के प्रचार, शारदा-क़ानून और अछूतोद्धार के समर्थन में कुछ लेख छापे। बस इसी कारण वह गर्म हो गई और उसकी मातृभाषा की सारी सेवा मिट्टी में मिल गई! एक महाशय को यहाँ तक उत्साह हुआ कि हाल में शारदा-ऐक्ट के भय से मैथिल समाज में—विशेषतः श्रोत्रियवर्ग में—जो अनेकानेक बाल-विवाह हुए हैं, उनकी निन्दा की जाय और विधवा-विवाह का समर्थन किया जाय। अब ज़रा विचार किजिए, जहाँ पर्दा-प्रथा और स्त्री-शिक्षा विषयक प्रस्तावों की ऐसी दुर्दशा हुई, वहाँ इन प्रस्तावों की क्या हालत होगी? नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़ वाली कहावत चरितार्थ हुई, प्रस्तावक महोदय को अपना प्रस्ताव उपस्थित करने का अवसर ही नहीं मिला। इस प्रकार मैथिल महासभा का तमाशा ख़तम हुआ। ऐसी संस्था से इस जाति की क्या उन्नति हो सकती है? बहुतों को यह आशा थी कि इस बार नवीन मिथिलेश के सभापतित्व में कई सुधार के प्रस्ताव स्वीकृत होंगे, किन्तु वह सब आशा दुराशा मात्र सिद्ध हुई। इस बार कई बातें पहले की अपेक्षा और भी निराशाजनक हुईं। जब कि दरभङ्गा की जनता सत्याग्रह के राष्ट्रीय समर में आगे बढ़ रही थी, उस समय मैथिल जाति व्यर्थ अपना समय खो रही थी। यह महासभा नवीन मिथिलेश की प्रशंसा का पुल बाँधती हुई समाप्त हुई। महासभा को कई वर्षों पर चार-पाँच हज़ार रुपए मिले, यही उसकी एक मात्र सफलता है।

अब सौराठ सभा का भी कुछ हाल सुनिए। 'चाँद' के इन्हीं स्तम्भों में उक्त सभा का बहुत विवरण प्रकाशित हो चुका है, पाठक उससे परिचित ही हैं; पर इस वर्ष मैंने देखा था, आपके विशेष प्रतिनिधि ने कई फ़ोटो लेने का भी प्रबन्ध किया था। आशा है, आप उसका चित्र भी प्रकाशित कर सकें। अतः विशेष विवरण न देकर, केवल इतना ही लिखना हम अलम् समझते हैं कि इस बार हैज़े के प्रकोप से उसकी उपस्थिति सन्तोषजनक नहीं थी, तथापि उसकी संख्या पचास और साठ हज़ार के बीच में थी। इस बार की सभा के विषय में महाराजाधिराज के पत्र "मिथिला-मिहिर" ने जो लेख लिखा है, उसके कुछ आवश्यक अंशों का अनुवाद इस प्रकार है:—

"सौराठ सभा की आधुनिक स्थिति यथावत् निम्नलिखित है:—श्रीमान मिथिलेश से पञ्जीकार लोगों ने अनुमति लेकर वैशाख सुदी पञ्चमी को सभा का श्रीगणेश किया तथा वे लोग अपनी-अपनी पञ्जी लेकर 'सभागाछी' में रहने लगे। परम्परा से निर्धारित एवं निर्दिष्ट स्थान पर वरप्रद वरों के साथ उपस्थित होने लगे एवं कन्याप्रद अपने कुल, शील और परिचय प्रभृति के अनुसार वरों के गुणों की स्वयं परीक्षा करके अधिकारानुसार अपनी-अपनी कन्याओं के पाणिग्रहण का निश्चय करने लगे। अस्तु, 'सौराठ' नामक एक श्रेष्ठ

(१७ वें पृष्ठ का शेषांश)

आए, इसलिए उन्हें गिरफ़्तार होने के लिए अपनी ही गाड़ी पर कोतवाली जाना पड़ा।

जिस समय इन वीर बन्दियों की गाड़ी कोतवाली की ओर जाने लगी थी, उस समय 'कोरिया माता' की जय-ध्वनि से आकाश गूँज उठा। जापानियों ने आज्ञा दी थी कि जो कोरियन अपने पास जातीय झण्डा रक्खेगा, उसे फाँसी की सज़ा दी जाएगी, परन्तु कोरियन आज इस आज्ञा को भूल गए थे। उस दिन प्रत्येक गृह-चूड़ा पर राष्ट्रीय झण्डा फहरा रहा था—प्रत्येक कोरियन के हाथ में राष्ट्रीय पताका थी। आज वे स्वाधीन थे, मौत का डर उन्हें विचलित नहीं कर सकता था।

अगले अङ्क में समाप्त

* * *

ग्राम मधुबनी से प्रायः ढाई कोस पश्चिम अवस्थित है, जिसके वायव्य कोण में एक विशाल आम का बाग़ और उसमें एक बृहत्काय शिवालय है। इस शिवालय के प्रतिष्ठाता श्री० ५ मान मिथिलेश के पूर्वज थे। उसी बाग़ में वैवाहिक सम्मेलन होता है। इस वर्ष शुद्ध के शेष दिनों में साठ हज़ार से कम मनुष्यों का जमाव नहीं था।

"सभा में उपस्थित होने वाले लोगों की विभिन्न संख्या—इस सभा में प्रायः ६५ प्रतिशत मैथिल ब्राह्मण और शेष इतर लोग रहते हैं। उपर्युक्त ६५ प्रतिशत संख्या में से ४० प्रतिशत वर-कन्या के अभिभावक तथा शेष व्यक्ति (यानी ४५ प्रतिशत) विवाहार्थी वर रहते हैं। उपर्युक्त ४५ प्रतिशत वरों में से २० प्रतिशत की अवस्था इतनी कम थी कि उन्हें बाल-वर कहना उचित होगा।

"सभा में उपस्थित होने वाले लोगों की अभिरुचि—प्रायः सभा में जाते समय प्रत्येक यात्री अपनी वेश-भूषा अपने-अपने विभव के अनुसार सजा लिया करता है। लाल धोती और लाल चद्दर प्रायः उम्मीदवार वरों का चिन्ह है। सभा में छल-कपट का समावेश कुछ-कुछ इस वर्ष भी देखा गया। (लोग ?) अपनी वस्तुस्थिति को छिपा लेते हैं। परस्पर कटु वाक्यों का प्रयोग, किलकारी भरने और थपड़ी बजाने किम्बा कुचेष्टा करने की प्रबलेच्छा का समूल नाश नहीं हुआ है। केवल पगड़ी मात्र अब भी सुरक्षित देखी जाती है। अनेक नई सभ्यता के प्रेमी, नवीन रुचि-सम्पन्न मैथिल युवकों को साहस नहीं होता है कि साँची (धोती), पाग (पगड़ी) और चन्दन को तिलाञ्जलि देकर सभा में उपस्थित होवें। सच पूछिए तो मैथिलत्व का यथार्थ रूप यहीं देखने में आता है। × × ×

"वैवाहिक विचार—थोड़े व्यक्ति कौलिक प्रतिष्ठा के पक्षपाती, और थोड़े केवल धन तथा अङ्गरेज़ी शिक्षा मात्र के इच्छुक देखे जाते हैं। किन्तु सम्प्रति कौलिक प्रतिष्ठा की रक्षा की तादृश तत्परता नहीं देखी जाती। एक हीन कुलोत्पन्न सम्पन्न बी० ए० का वैवाहिक मूल्य हज़ारों रुपए था, किन्तु उसके प्रतिकूल श्रेष्ठकुलोत्पन्न दरिद्र वर का उतना आदर नहीं था। सभा के अन्तिम दिन तक अधिकांश उपन्यास (अर्थात् विवाह की बातचीत) स्थगित ही रहते हैं। प्रत्येक पक्ष को यही आशा बनी रहती है कि 'अन्ततो गत्वा' कम ख़र्च में अच्छा घर-वर मिल ही जायगा। फलतः अन्त में बड़ी जल्दीबाज़ी की जाने लगती है और उस गड़बड़ी में कुलग्न और सुलग्न दोनों में विवाह हो जाता है। अधवेसू (अर्थात् न वृद्ध न युवा) उम्मीदवार (वर) जब लाल धोती पहने, आसन लगा कर बैठते हैं तो उनकी रसिकता का अन्त नहीं रहता। वर लोग प्रति क्षण अपने-अपने उपन्यासों के निश्चित होते-होते पुनः अनिश्चित हो जाने से कठिन मनोवेदना का अनुभव करने लगते हैं। पूर्वकाल में जातीय दण्ड-स्वरूप कन्याप्रद किम्बा वरप्रद द्रव्य ग्रहण करते थे, किन्तु अब जातीयता का विषय ताक़ पर रख दिया जाता है। वरप्रद अपने-अपने विभव और गौरव के अनुसार हज़ारों का तोड़ा गिनाने पर तत्पर हो गए हैं। ऐसी स्थिति में कहीं-कहीं कन्याप्रद वर को फुसलाने का यत्न भी करते हैं।

"सभा की परिस्थिति—सभा के समीप एक पोखरा और एक कुँआ है। दोनों का जल प्रायः पेय नहीं है, किन्तु आवश्यकता पड़ने से वही अमृत हो जाता है। सभागाछी में जीवन-यात्रा के आवश्यकीय पदार्थों का हाट-बाज़ार भी लग जाता है। मैथिलेतर प्रान्त के कितने लोगों की धारणा है कि सभागाछी में कन्या और वर दोनों उपस्थित होते हैं तथा यह लड़के-लड़कियों का मेला है। उन लोगों की ऐसी धारणा मूर्खतापूर्ण है। मिथिला के समान पर्दा-प्रेमी प्रान्त की सलज्जा कन्याएँ पितृ-गृह, मातृ-गृह किम्वा ससुराल को छोड़ कर केवल तीर्थस्थानों में ही जाती हैं। भला सभागाछी में वे क्यों आने लगीं ? यह भ्रान्ति एकदम निर्मूल है। साथ ही साथ वृद्ध-विवाह, बहु-विवाह आदि जो कुछ वैवाहिक कुरीतियाँ समाज में प्रविष्ट हो गई थीं, सहर्ष कहना पड़ता है कि उनका अब अङ्कुर भी देखने में नहीं आता।"

इसके उपरान्त सभा द्वारा विवाह-प्रणाली के लाभालाभ का विचार करते हुए यह पत्र परामर्श देता है कि सभा में कुछ दुर्गुण अवश्य घुस पड़े हैं, किन्तु उनका सुधार होना आवश्यक है, इस संस्था का ही नाश करना उचित नहीं, क्योंकि इससे लाभ ही अधिक है। आगे यह इस प्रकार निष्कर्ष निकालता है :—

"निष्कर्ष विचार—अतः कहना पड़ता है कि जो कुछ दुर्गुण इस संस्था में घुस गए हैं, उनका निराकरण-परिचालन सुष्ठुरूप से किया जाय। यह प्राकृतिक नियम है कि कृत्रिम वस्तु का सुधार समय-समय पर किया जाय। प्राकृतिक वस्तु का सुधार स्वयं प्रकृति ही किया करती है, किन्तु मानव कृतियों की सुरक्षा मनुष्य ही से हो सकती है। प्रत्येक वस्तु—यथा पोखरा, कुँआ, सड़क आदि की यदि दस वर्ष पर भी मरम्मत न की जाय तो वह क्या होकर रहेगी? अतः कहना पड़ता है कि सौराठ सभा मानुषी संस्था होने के कारण इसमें आपेक्षिक परिशोधन की ओर भी आवश्यकता है। कन्या देने का विषय, वर की पात्रता, कन्या और वर के प्रति द्रव्य-ग्रहण का निषेध, श्रोत्र तथा सदाचार का पालन, इत्यादि-इत्यादि विषयों के सुधारार्थ थोड़े ही यत्न की आवश्यकता है। आशा है, यदि श्रीमान मिथिलेश के सभापतित्व में एक प्रहर भी लगातार चार-पाँच वर्ष तक उपर्युक्त विषयों के ऊपर विचार हो तो अनायास ऐसी संस्था विलक्षण विचक्षण लोगों का सम्मेलन तथा सर्व-हितकारिणी हो जायगी।"

सुना आपने 'मिथिला-मिहिर' क्या कहता है ? यह पत्र इतना नर्म और सनातनधर्म का पक्षपाती है कि मैथिल जनता में भी इसका प्रचार 'नहीं' के बराबर है। तथापि इस बार इसने सभा की वर्तमान अधोगति को देख कर इतना लिख ही डाला ! हो सकता है 'चाँद' की ही समालोचनाओं से क्षुब्ध होकर इतना दोष स्वीकार करने पर यह पत्र बाध्य हुआ हो। हम इस स्पष्टवादिता के लिए इसकी प्रशंसा करते हैं और आशा करते हैं कि आगे यह और भी ज़ोरों से सुधार का समर्थन करेगा। किन्तु यथार्थ पूछिए तो इस संस्था में केवल इतनी ही गुञ्जाइश सुधार की नहीं है। एक मित्र, जो सभा से लौटे थे, यह कहते थे कि पहले तो वहाँ म्युनिसिपैलिटी का ही प्रबन्ध होना आवश्यक है। गवर्नमेण्ट इस सभा को सामाजिक सम्मेलन जान कर इसके कार्यों और प्रबन्ध में कुछ दख़ल नहीं देती है। किन्तु विचारने की बात है कि दो-दो सप्ताहों तक जहाँ लाखों मनुष्यों का जमाव रहता है, वहाँ खाने-पकाने, पाख़ाना-पेशाब से ही नहीं, वरन् थूकने-पीकने और चलने-फिरने से भी कितनी गन्दगी होती होगी। तिस पर भी यदि कोई प्रबन्ध जनता या गवर्नमेण्ट की ओर से सफ़ाई का न रहे, जैसा कि सभा में आमतौर से किसी साल नहीं रहता, तो हालत क्या होगी, इसका अन्दाज़ा आसानी से लगाया जा सकता है। वहाँ एक तालाब है, जिसे "लघियाही पोखर" कहते हैं, क्योंकि उसीमें सब लोग लघुशङ्का (पेशाब) करते हैं। कहते हैं कि एक-एक बार कई सौ आदमी, चारों ओर पानी के किनारे-किनारे बैठ कर पेशाब करते हैं और उसी अपवित्र पानी से शौच करके पवित्र होते हैं ! यह क्रिया मेले के दिनों में अविराम बारह-चौदह घण्टे नित्य चला करती है। अन्तिम दिन तक उस पोखरे में इतना पेशाब जमा हो जाता है कि उसके पानी की सतह कई इञ्च ऊँची उठ आती है। फिर उसी जल से भोजन बनाना, उसी में नहाना और धोना कहाँ तक सनातनधर्म की रक्षा करना है, इसके विषय में क्या कहा जाय !!! यह तो एक ऐसा प्रश्न है, जिसका उत्तर कोई सनातनधर्मी मैथिल ही दे सकता है। पहले यह नियम था कि सौराठ और उसके आस-पास के गाँव वाले पहले ही से सभा की मेहमानदारी के लिए प्रस्तुत हो जाते थे। दिन भर सभा करके मेले के अधिकांश व्यक्ति उन्हीं गाँवों में किसी न किसी के यहाँ 'मान न मान, मैं तेरा मेहमान' वाली कहावत चरितार्थ करते थे ! इसका नतीजा यह होता था कि मेले के दिनों में दरिद्र से दरिद्र ब्राह्मण के यहाँ भी, नित्य तीस-चालीस व्यक्तियों का भोज हुआ करता था। जो लोग ज़रा धनी होते थे, उनकी हालत का, तो कुछ पूछना ही नहीं। यद्यपि यह प्रथा आज भी बहुत कुछ बची हुई है, तथापि खाद्य पदार्थों की मँहगी के कारण लोगों में अतिथि-पूजा का वह पुराना उत्साह अब नहीं रहा और भलेमानस स्वयं भी किसी के यहाँ जाने में हिचकते हैं। इसलिए अब अधिक लोग अपने खाने-पकाने का प्रबन्ध स्वयं करते हैं। ऐसे लोग सभागाछी में ही रसोई बना लिया करते हैं। सफ़ाई का कोई प्रबन्ध तो होता नहीं, चारों ओर हाँड़ियों का ढेर लग जाता है। चूल्हों के कारण ज़मीन गड्ढों से भर जाती है, माँड़ और जूठी पत्तलों के इधर-उधर फैले रहने का कोई ठिकाना नहीं रहता है। पान और खैनी के कारण जिधर देखिए उधर ही की ज़मीन पीक और थूक से सनी रहती है। इसलिए लोगों को बैठने की जगह नहीं मिलती। अन्यान्य स्थानों की सभाओं में भी थोड़े बहुत ये दोष पाए जाते हैं, किन्तु कहीं भी म्युनिसिपैलिटी या सेवा-सङ्घ आदि की ओर से सफ़ाई का कुछ प्रबन्ध नहीं किया जाता। हम भारतीयों की दशा ही ऐसी गई-गुज़री है कि हम सफ़ाई का महत्व तक नहीं जानते, किन्तु धार्मिक रीति से सफ़ाई का बहुत सा ढोंग रचते हैं ! हमें सफ़ाई का क-ख-ग-घ भी नहीं आता। ऐसी ही परिस्थिति में सौराठ की यह महती सभा लगती है !!

सभा के भीतरी दुर्गुणों का ब्योरा और भी भयानक है। "मिथिला-मिहिर' की रिपोर्ट से विदित होता है कि वैवाहिक दुर्गुणों का अन्त हो गया है। और जो थोड़े-बहुत दुर्गुण बचे हैं, उनके लिए अल्प श्रम की आवश्यकता है। इसमें शक नहीं कि वृद्ध-विवाह और बहुविवाह अब प्रायः नहीं होता है, फिर भी उसका समूल नाश नहीं हुआ है। सच्ची बात तो यह है कि जहाँ वृद्ध-विवाह और बहुविवाह की कमी हुई है, वहाँ बाल-विवाह और तिलक की प्रथा बेहद बढ़ गई है। स्वयं 'मिहिर' भी इसे अस्वीकार नहीं कर सका कि ४५ प्रतिशत विवाहार्थियों में से २० प्रतिशत बच्चे ही होते हैं। यही नहीं, 'मिथिला' नाम की मासिक पत्रिका में एक वकील साहब ने लिखा है—"शिक्षित वरों के ग्राहक बहुत थे, किन्तु शिक्षित वर प्रायः सभी छात्रावस्था में ही थे। पाँच या सात व्यक्तियों को छोड़ और सब बारह से सोलह वर्ष के बीच की अवस्था में थे।" इसीसे अनुमान लगाया जा सकता है कि बाल-वरों की संख्या सभा में कितनी होगी। यथार्थ पूछिए तो मैथिल ब्राह्मणों में इस मेले के कारण लड़कों की नीलामी बोली बड़ी द्रुत गति से बढ़ रही है। शास्त्रों में यदि बाल-विवाह का कोई वचन पाया जाता है तो वह कन्याओं के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, लड़कों के लिए नहीं। जब लड़कों के बाल-विवाह का सनातनधर्म ज़ोरों से विरोध करता है, तब यह आसुरी प्रथा इस समाज में कैसे बढ़ रही है, यह बात समझ में नहीं आती। उक्त वकील साहब लिखते हैं कि ये लड़के स्वयं विवाह से भागते थे, किन्तु उनके अभिभावकगण

बलात् उन्हें विवाह-बन्धन में बाँध देते थे। वरों का दाम अधिक पाने के लिए उन्हें झूठ-मूठ स्कूल या पाठशाला में भर्ती कराने का ढोंग भी रचा जाता है। फिर विवाह सम्पन्न हुआ नहीं कि उनकी पढ़ाई-लिखाई एकदम बन्द कर दी जाती है। प्राइमरी शिक्षा पाने वाले वरों की बोली साधारणतः एक हज़ार होती है। बहुत रोने-पीटने पर कहीं पाँच या सात सौ में सौदा तय हो पाता है। उच्च शिक्षित वरों का मूल्य तो विरला ही कोई दे सकता है। ऐसी स्थिति में उक्त वकील साहब का यह लिखना एकदम यथार्थ है कि यह प्रथा देख कर मैथिल-समाज का भविष्य बहुत अन्धकारमय दीख पड़ता है !!

बाल-विवाह और तिलक के अतिरिक्त एक और भी भीषण रोग इस सभा के द्वारा समाज में फैल रहा है। पहले हरिसिंह देव की व्यवस्था के अनुसार वर या कन्या-पक्ष वाले अपने कुल की बड़ाई-छोटाई के अनुसार एक-दूसरे से रुपया लेते थे। यह यथार्थ में वर या कन्या का मूल्य नहीं था, बल्कि उनके वंशों की प्रतिष्ठा का पुरस्कार था, किन्तु अब कन्या और वर का मूल्य बिलकुल बाज़ारू तरीक़े पर वसूल किया जाता है। अब उसमें वंश की प्रतिष्ठा का भाव बिलकुल नहीं रहा। जिस प्रकार लड़कों की अङ्गरेज़ी शिक्षा की योग्यता के अनुसार भिन्न-भिन्न श्रेणी का मूल्य कम या अधिक होता है, उसी प्रकार कन्याओं का मूल्य उनकी उम्र के अनुसार कम या बेशी होता है। जितने वर्षों की कन्या होती है, प्रायः उतने ही सौ रुपए उसका मूल्य होता है अर्थात् वह यदि ४ वर्ष की हुई तो ४००) और ६ वर्ष की हुई तो ६००) रुपए ऐंठे जाते हैं ! इस प्रकार अधिक मूल्य पाने के लिए छोटी-छोटी लड़कियाँ बड़ी उम्र की बतलाई जाती हैं। सभा में कन्या तो रहती ही नहीं कि उसे तत्काल देखा जा सके, इसलिए उसकी अनुपस्थिति से घटक और अभिभावक लोग खुल कर अनुचित लाभ उठाते हैं। घटक लोग अपनी दलाली पाने के लिए कन्याओं के युवती होने का वर्णन बड़ी वीभत्स, किन्तु रोचक रीति से करते हैं। उनके लम्बे-लम्बे बाल, बड़ी-बड़ी आँखें और पूर्ण यौवना होने का इङ्गित इस प्रकार किया जाता है कि उम्मीदवारों के मुँह से लार टपकने लगती है और वे फ़ौरन अधिक मूल्य देने पर तैयार हो जाते हैं !! स्मरण रखना चाहिए कि ऐसे उम्मीदवार दूरदेशी गङ्गा पार के दक्षिण वाले धनी ब्राह्मण होते हैं अथवा इस पार के वे व्यक्ति होते हैं, जो धन और विद्या से वञ्चित हैं। ऐसे लोगों का विवाह होना बहुत ही कठिन हो गया है और अनेक व्यक्ति रुपए के अभाव से जन्म भर कुँवारे ही रह जाते हैं। वे बेचारे पूरब में नौकरी करके या अपने खेत वग़ैरह बेच कर रुपए लाते हैं, इस पर भी यदि कमी रह जाती है तो सभा में अपने गाँव के किसी धनी आदमी से या कन्या-पक्ष से ही हैण्डनोट लिख कर ऋण लेते हैं ! तब कहीं जाकर उनके विवाह का निश्चय हो पाता है। इतना होने पर भी जब उन्हें विवाह के उपरान्त कन्या का दर्शन होता है तो उनकी सारी आशाओं पर पानी फिर जाता है और बहुधा अपने को धोखे में पाते हैं !! चाहे तो कन्या वैसी रूपवती नहीं होती, जैसा कि उन्हें बताया गया था अथवा उस उम्र की नहीं होती, जिसका मूल्य उन्होंने दिया है ! कहीं-कहीं दूसरी ही कन्या विवाह के लिए उपस्थित कर दी जाती है !! कहीं पर तो किसी लड़के के साथ ही झूठ-मूठ का विवाह करा दिया जाता है तथा किसी बहाने से बूढ़े को जल्दी बिदा कर दिया जाता है, फिर पीछे उसे ख़बर दे दी जाती है कि लड़की मर गई ! परसाल एक मामला दरभङ्गा में इसी प्रकार का उठा था, जिसमें वर-पक्ष ने यह दावा उपस्थित किया था कि मुझसे १०००) या ६००) रुपए ठग कर एक लड़के के साथ मेरी शादी कर दी गई। सौभाग्य से कुछ ले-दे करके आपस में सुलह हो गई। यद्यपि इस प्रकार की ठगी बहुत कम होती है, फिर भी सभा की प्रथा के कारण इसमें कुछ साहाय्य अवश्य मिलता है। यदि इन सब आपत्तियों का ख़्याल छोड़ भी दिया जाय तो विचारने की बात यह है कि दरिद्र लोग अपने बचे हुए खेत वग़ैरह बेच कर या जन्म भर की कमाई कन्या के मूल्य में देकर, उसको किस प्रकार अपने यहाँ सुख से रख सकते हैं ? और अनेक व्यक्ति, जो अविवाहित ही रह जाते हैं, उनकी क्या गति होगी ?

'मिथिला-मिहिर' यद्यपि यह स्वीकार करता है कि २० प्रतिशत उम्मीदवार बच्चे ही रहते हैं, तथापि वह इन अमित बाल-विवाहों का कहीं ज़िक्र तक नहीं करता।

धन्यवाद

जब से 'भविष्य' प्रकाशित हुआ है, मेरे पास अनेक भाई-बहिनों के हज़ारों पत्र, रजिस्ट्री और तार 'बधाई' के मिले हैं जिसमें 'भविष्य' की बड़ी प्रशंसा की गई है। इस संस्था के शुभचिन्तकों को शायद यह बतलाना न होगा कि 'चाँद' जैसे विशाल पत्र के साथ ही साथ, एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन-भार लेकर मेरी ज़िम्मेदारी कई गुना अधिक बढ़ गई है। इस समय हिन्दी 'चाँद' का विशेषाङ्क, उर्दू 'चाँद' का विशेषाङ्क—फिर एक राजनैतिक साप्ताहिक का समय पर प्रकाशित करना—ये सारी ज़िम्मेदारियाँ ऐसी हैं, जिन्हें अनुभवी पाठक-पाठिकाएँ ही समझ सकते हैं। मुझे इस समय १८ से २२ घण्टे नित्य कार्य करना पड़ता है। ऐसी हालत में मेरे लिए आए हुए व्यक्तिगत-पत्रों का उत्तर देना एक बार ही असम्भव है। अतएव ऐसे पत्र-प्रेषकों को उनकी शुभकामना के लिए मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ और अपने मित्रों से प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरे पास कम से कम पत्र भेजने की कृपा करें। वर्तमान परिस्थिति में रहते हुए अधिक पत्र-व्यवहार करना मेरे लिए सम्भव ही नहीं है—और फिर बधाई तथा पत्र की प्रशंसा करने की आवश्यकता भी तो नहीं है। मैं जो कुछ भी सेवा कर रहा हूँ, उसे अपना कर्तव्य समझ कर, देश पर अहसान नहीं।

इस संस्था पर गवर्नमेन्ट द्वारा किए गए अत्याचारों को देख कर, जिन भाई-बहिनों ने सहानुभूति एवं समवेदना के भाव प्रकट किए हैं, उनका भी मैं आजीवन ऋणी रहूँगा।

—रामरखसिंह सहगल

मिथिला की पण्डित-मण्डली यद्यपि कन्या के बाल-विवाह के समर्थन में शास्त्रों की बाल की खाल निकालती रहती है, तथापि इन पण्डितों में से कोई यह आपत्ति करने का साहस नहीं करता है कि भई ! लड़कों का बाल-विवाह शास्त्र-विरुद्ध है, इसे क्यों करते हो ? वे जिस तत्परता से शारदा-क़ानून के खण्डन में व्यस्त हैं, यदि उसकी आधी या चतुर्थांश तत्परता भी इस ओर लगाई जाती तो कुछ सन्तोष का विषय था, किन्तु वे स्वयं इन शास्त्र-विरुद्ध, लोक-विरुद्ध और युक्ति-विरुद्ध बाल-विवाहों में हाथ बटाते हैं और अपने-अपने लड़कों का विवाह बारह-चौदह वर्ष की उम्र में कर डालते हैं ! इस प्रथा के बढ़ने से दूसरी आपत्ति यह उपस्थित हुई है कि कितनी लड़कियों का अपने समान या अपने से भी छोटे लड़कों के साथ गँठजोड़ हो जाता है। बाल्यावस्था में लड़कों की शादी हो जाने से उनके भविष्य पर तुषार-पात हो जाता है और जातीय शक्ति का क्षय होता है, किन्तु इस ओर किसी का कुछ भी ध्यान नहीं है। मैथिल महासभा ने एक छोटा सा आदेश-पत्र सभा में बँटवाया था, किन्तु उससे क्या होता है ? बाल-विवाह, तिलक और कन्या-विक्रय का बाज़ार गर्म ही रहा, यद्यपि इस वर्ष कन्या-विक्रय में बहुत कमी देखी गई। इसके अतिरिक्त, जैसा 'मिथिला-मिहिर' का कहना है, वस्तुस्थिति को छिपा लेना, ठगपनी करना, हड़बड़ी में पड़ कर कुलक्ष-सुलक्ष का ख़्याल न रखना, विवाह को बाज़ारू सौदा बना देना आदि, इस प्रथा की आनुसङ्गिक बुराइयाँ हैं ! कुल बातों को मिला कर देखने से इसे वैवाहिक मेला कहना कदापि असङ्गत नहीं है, तो भी 'मेले' के नाम से अच्छे-अच्छे मैथिल भी चिढ़ते हैं। इससे स्पष्ट है कि वे विवाह को मेले की चीज़ नहीं बनाना चाहते हैं, किन्तु तो भी हम यह कहने के लिए मजबूर हैं कि सचमुच के मेले इन वैवाहिक मेलों से अच्छे होते हैं, क्योंकि वहाँ वस्तुओं की ख़रीद-बिक्री होती है और यहाँ व्यक्तियों की ! यदि व्यक्तियों की ख़रीद-बिक्री अच्छी होती तो संसार की और-और जातियाँ भी करतीं। आजकल ऐसी बर्बरतापूर्ण प्रथा का नामोनिशान संसार से लगभग मिट चुका है। शायद प्राचीन काल में रोमन लोगों के यहाँ दासों और स्त्रियों की हाट लगती थी और कुछ असभ्य जातियों में अब भी लगती है, किन्तु सभ्य जातियों में तो ऐसी प्रथा कहीं नहीं दीख पड़ती है। सब से बड़े आश्चर्य की बात यह है कि मैथिल जनता को इस प्रथा में बुराई की अपेक्षा भलाई ही अधिक दीखती है। इतना तो सत्य है कि एक जगह भिन्न-भिन्न स्थानों के लोगों के एकत्र होने से वरान्वेषण में कन्या-पक्ष को सुविधा अवश्य होती है और यदि वे चाहें तो इस संस्था का सदुपयोग कर सकते हैं—बहुत आदमी करते भी हैं—तथापि इससे वर्तमान समय में लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक है।

आजकल अधिकांश व्यक्ति मूर्ख और धर्महीन हैं, स्वार्थ के लिए सब कुछ कर सकते हैं। जब तक मैथिल जाति इस प्रथा को घृणित नहीं समझती है, तब तक इसके निराकरण का उपाय सोचना व्यर्थ है। हाँ, इसके सुधार पर विशेष ध्यान देना निस्सन्देह आवश्यक है। 'मिहिर' के लेखानुसार इसके लिए अल्प श्रम की आवश्यकता है। परन्तु यह कथन कदापि ठीक नहीं है। वस्तुतः मैथिल जाति के समक्ष वैवाहिक सुधार का महान प्रश्न उपस्थित है, जिसका उत्तर किसी ज़बरदस्त सङ्गठनात्मक क्रिया से ही मिल सकता है। जिस प्रकार विदेशी कपड़ों के बहिष्कार के लिए चारों ओर पिकेटिङ्ग जारी है, उसी प्रकार यहाँ भी इन कुरीतियों के विरुद्ध ज़बरदस्त सत्याग्रह की आवश्यकता है। यह काम सुधार-प्रिय मैथिल युवकों को अपने हाथ में लेना चाहिए, उन्हें इसके लिए महान परिश्रम करना चाहिए, स्वयं सभा में जाकर उपदेश द्वारा तथा लैण्टर्न स्लाइड आदि के ज़रिए इन बुराइयों का दुष्परिणाम दिखलाना चाहिए और प्रत्येक विवाह पर कड़ी दृष्टि रखना चाहिए, शारदा-क़ानून की उपयोगिता लोगों को समझानी चाहिए, इसका विरुद्धाचरण करने वालों को सामाजिक दण्डों का भय दिखाना चाहिए और यदि वे केवल भय दिखाने से न मानें तो उन्हें सचमुच दण्ड भी दिलाना चाहिए। धीरे-धीरे यह आदर्श उपस्थित करना होगा कि सभा के बाहर—'शुद्ध' के पहले ही—घर-वर देख कर विवाह का निश्चय करना इससे श्रेयस्कर है।

* * *

आजकल के कुछ प्रमुख व्यक्ति

मि० ए० रामाराव बी० ए०, आई० ई० एस०
राजमहेन्द्री के ट्रेनिङ्ग-कॉलेज के नए प्रिन्सिपल

नवाबज़ादा सआदतुल्ला ख़ाँ, एम० ए० (ऑक्सिफ़न)
बलूचिस्तान के कृषि-विभाग के नए डायरेक्टर

सर राजेन्द्र मुकर्जी
बङ्गाल वायुयान-क्लब के प्रेज़िडेण्ट

श्री० जी० के० देवधर
आप पूना की सर्वेण्ट ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी के प्रेज़िडेण्ट नियत हुए हैं।

श्री० चुन्नीलाल भाईचन्द मेहता
आपने बम्बई में एक दातव्य आयुर्वेदिक औषधालय की स्थापना के लिए ३५ हज़ार रु० दान दिया है।

रायबहादुर हीरालाल, बी० ए०
आप आगामी दिसम्बर में पटने में होने वाली ऑल-इण्डिया ओरियण्टल कॉन्फ्रेन्स के प्रेज़िडेण्ट नियत किए गए हैं।

दीवान बहादुर ए० बी० लट्ठ, एम० ए०, एल-एल० बी०
आप कोल्हापुर के दीवान हैं और राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेन्स [illegible]

मि० एच० टिङ्कर, आई० ई० एस०
आप इलाहाबाद के ट्रेनिङ्ग कॉलेज के प्रिन्सिपल नियत किए गए हैं।

मि० एफ़० ए० करीम नक़वी
आप यू० पी० सिविल सर्विस के मुसलमान उम्मेदवारों में सर्व-प्रथम उत्तीर्ण हुए थे।

पुरुषों के कार्य-क्षेत्र पर महिलाओं का आक्रमण

मिसेज हेलिन राएटोकोका खान के एक बड़े पुर्जे की सफ़ाई कर रही हैं।

मिसेज कएटङ्ग बिजली का कार्य सीख रही हैं।
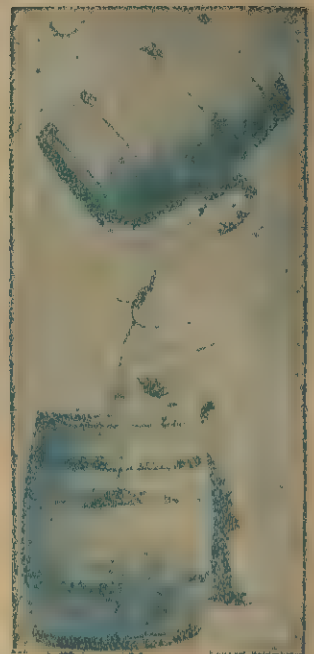
शराब का पूरा पीपा उठाए हुए मिसेज फ़्रांसिस्का

मिसेज वलजन सूर्य की किरणों की परीक्षा कर रही हैं।

वायुयान द्वारा आखेट करने वाली महिला

मिसेज पार्क बढ़ई का काम कर रही हैं।

अमेरिका की खुफ़िया पुलिस (सी० आई० डी०) की एक उच्च पदाधिकारिणी महिला।

मिसेज मर्था हॉफ़मैन लोहारी का कार्य कर रही हैं।

मिस थेल्मा हौलीडे मैशीन की मरम्मत कर रही हैं।

आस्ट्रेलेशिया के आदिम निवासियों के विचित्र रीति-रिवाज

सालोमन द्वीप का एक पुरुष जिसके गले में मछली, कुत्ते तथा अन्य जानवरों के दाँतों का हार पड़ा है।

लड़ाकू नर-भक्षकों की फ़ौज का एक सरदार जिसके मस्तक में काले पर लगे हुए हैं।

यह भी एक सरदार है, जिसका चिन्ह गले में पड़ा गोलाकार आभूषण है।

न्यूगायना की एक जाति के सैनिक, जिनको देखने मात्र से भय मालूम होता है।
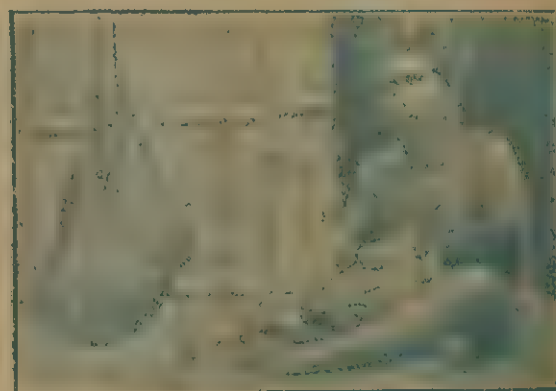
एक स्त्री ने अपना बच्चा झोले में डाल कर लटका रक्खा है।

दो जङ्गली बाजा बजा रहे हैं, जो इनके देवता को

यह विचित्र पोशाक किसी विशेष नृत्य में
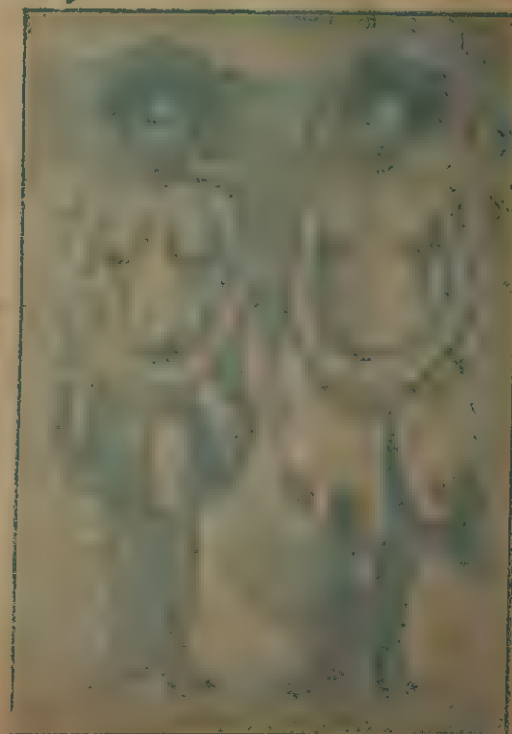
'रीगो' की स्त्रियाँ अपनी सर्वोत्तम पोशाक में

मैथिल-महासभा और सौराठ-सभा के कुछ दृश्य
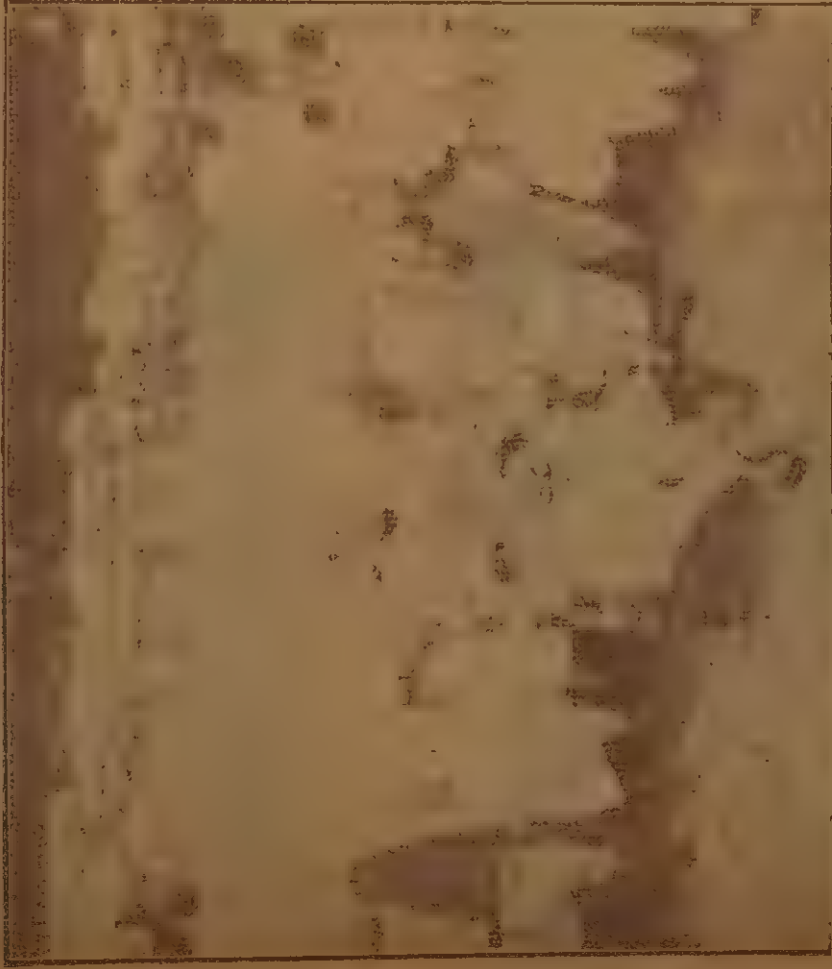
मैथिल महासभा के प्रधान श्रीमान दरभङ्गा-नरेश (कुर्सी पर बैठे हुए) और कुछ विशिष्ट सदस्य।

मिथला के अन्तर्गत सौराठ गाँव का सुप्रसिद्ध शिवालय, जहाँ मैथिलों की सब से बड़ी वैवाहिक सभा लगती है। मन्दिर के सामने उन नर-पुङ्गवों का एक दल खड़ा है, जो वर-कन्याओं की खरीद-फरोख्त के लिए एकत्रित हुए हैं।
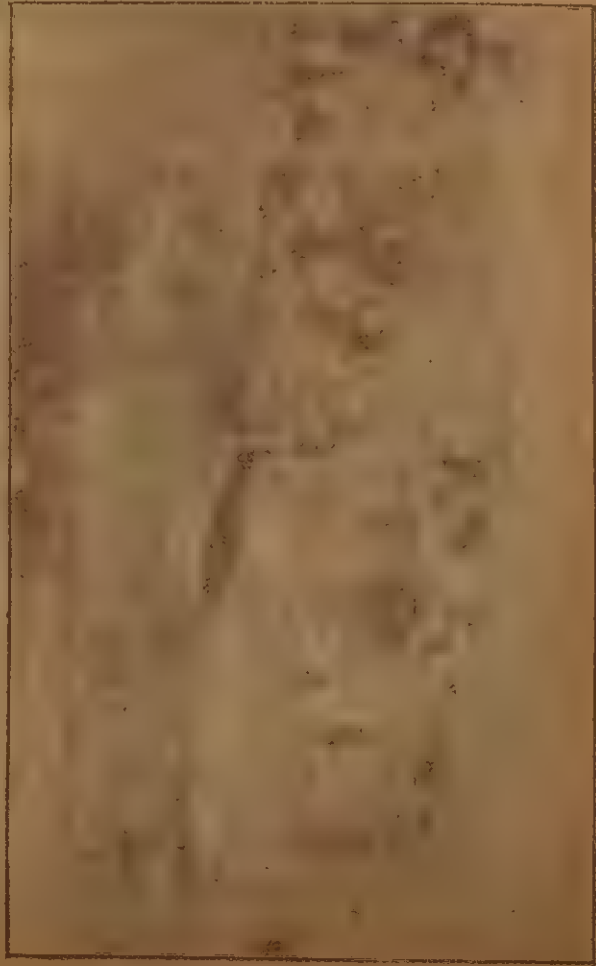
मैथिल महासभा के कुछ दर्शक जमीन पर बैठे हुए तमाशा देख रहे हैं।

सौराठ सभा में एकत्रित विवाहार्थी लोगों का एक दल परस्पर वार्तालाप कर रहा है।
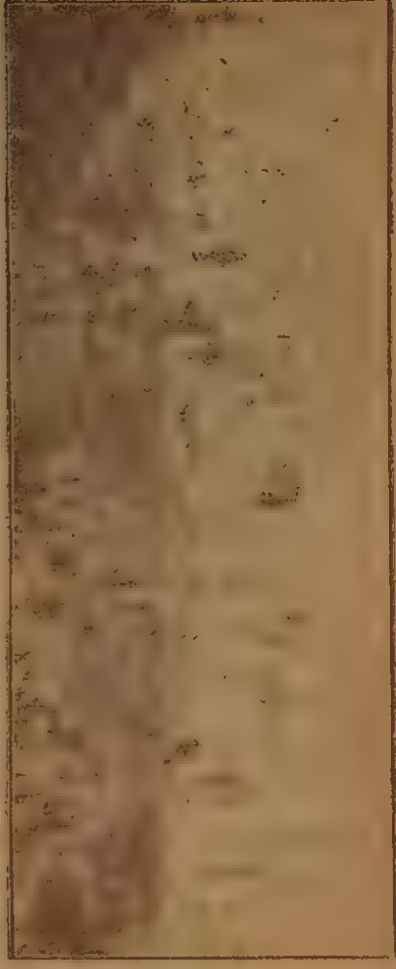
केसर की क्यारी

अभी हाल ही में एक अखिल भारतीय 'मशायरा' (उर्दू कवि सम्मेलन) कानपूर में हुआ था, जिसमें उर्दू के लगभग सभी प्रतिष्ठित कवि उपस्थित थे। अपने ढङ्ग का यह 'मशायरा' बड़ा सफल समझा गया था। इस स्तम्भ के सम्पादक कविवर 'बिस्मिल' ने पाठकों के मनोरञ्जनार्थ कुछ चुनी हुई पंक्तियों का बड़ा अपूर्व संग्रह किया है, जो नीचे दिया जा रहा है। हमें पूर्ण आशा है, पाठकगण इसे बहुत पसन्द करेंगे।

—सं० 'भविष्य'

आई

तीलियाँ सब्ज़ हुई जाती हैं, देख ऐ सय्याद !
यूँ क़फ़स में ख़बरे फ़सले बहार आई है !!

—बलीग़, लखनवी

फिर मुझे लोग लिए जाते हैं ज़िन्दाँ की तरफ़,
ये नहीं साफ़ बताते कि बहार आई है !
मुज़दए मौसमे-गुल, मुझसे छिपे क्या मुमकिन,
कोई यह कान में कह देगा, बहार आई है !

—नूह, नारवी

दरे-ज़िन्दाँ की तरफ़, देख के रह जाता हूँ !
जब यह सुनता हूँ, कि दुनिया में बहार आई है !!

—मजज़ूब, लखनवी

अदम आबाद में दीवानों ने हलचल कर दी,
बाद मरने के ये सुन कर, कि बहार आई है !

—शफ़ीक़, लखनवी

कह गए अहले-चमन, ये तेरे दीवानों से,
होश में आओ, ज़माने में बहार आई है !
फूट कर पाँवों के छाले, मेरे लाए ये रङ्ग !
बाग़ तो बाग़ है, सहरा में बहार आई है !!

—बिस्मिल, इलाहाबादी

हम तो मर जाएँगे बेमौत, तड़प कर सैयाद !
क्या यह सच है, कि गुलिस्ताँ में बहार आई है ?

—सफ़ा, अकबराबादी

गुल हँसे, बर्क़ नशेमन पे गिरी, मैं हुआ क़ैद !
मेरे गुलशन में, ख़िज़ाँ बन के बहार आई है !!

—क़दीर, लखनवी

और सब कहना असीराने-क़फ़स से सय्याद !
यह न कहना, कि गुलिस्तों में बहार आई है !!

—बशीर, लखनवी

फिर भी कहते हो, कि है क़िस्सए-ग़म बेतासीर,
कोशिशों की हैं हँसी की, तो हँसी आई है !

—सिराज, लखनवी

वह दम नज़ा मेरे पास है, यकजाई है ;
तफ़रुक़ा डालने, किस वक़्त क़ज़ा आई है !!

—महदी, लखनवी

देखते रहते हैं मरक़द में भी ख़्वाबे-हस्ती,
मौत आई है हमें, या हमें नींद आई है !

—शातिर, इलाहाबादी

ज़िन्दगी में तो शबे-ग़म न कभी आँख लगी,
गोशए-क़ब्र में आया हूँ, तो नींद आई है !

—सरशार, लखनवी

मुझसे पूछे कोई, मैं ख़ूब समझता हूँ इसे,
जान लेने के लिए याद तेरी आई है !

—ग़ाफ़िल, इलाहाबादी

सब्ज़ए ख़त है रुख़े-यार पर या काई है ?
पेशख़ीमा है ख़िज़ाँ का, कि बहार आई है ?

—शोख़, लखनवी

अँगड़ाई

दस्तबर्दारिए उल्फ़त की तमन्नाई है,
मैं समझता हूँ, ये जैसी तेरी अँगड़ाई है !
पूछिए बहरे ग़मे इश्क़ का रुतबा हमसे,
इसमें जो मौज है, वह हुस्न की अँगड़ाई है !
हाथ मुझको दिले-मुज़्तर से उठाना ही पड़ा,
किस क़दर सब्रशिकन, आपकी अँगड़ाई है !
नाज़ो-अन्दाज़ में, आज़ारो-सितम ढाने में !
तुझसे दो हाथ ज़ियादा तेरी अँगड़ाई है !!

—नूह, नारवी

खुल गए नज़्अ में, असरारे तिलस्मे-हस्ती,
ज़ीस्त कहते हैं जिसे, मौत की अँगड़ाई है !!
मैं किसी रोज़ दिखाऊँ दिले सदचाके अदा !
तुझको मालूम तो हो, क्या तेरी अँगड़ाई है !!
जलवए रोज़ अज़ल ने मुझे बेचैन किया !
पहली दुनिया में, ये पहली तेरी अँगड़ाई है !!

—बिस्मिल, इलाहाबादी

झोंक खाकर हुई, किस नाज़ से सीधी क़ातिल,
ये लचक तेग़ की है, या तेरी अँगड़ाई है ?

—मुनीर, लखनवी

फूक दी पैकरे जज़बात ने रूहे-मस्ती,
मौज सहबा तेरी बेसाख़्ता अँगड़ाई है !

—ख़ुमार, सलोनवी

मुतमइन बैठ सकूँ, बज़्म-जहाँ में क्योंकर ?
गरदिशे लैलोनिहार आपकी अँगड़ाई है !
कौंद जाती है ज़माने की नज़र में बिजली,
बर्क़-लरज़ाँ मेरे महबूब की अँगड़ाई है !

—शातिर, इलाहाबादी

सब मेरे दिल की रगें खिच गईं ओ मस्ते-शबाब !
तू तो ये कह के बरी हो गया, अँगड़ाई है !!

—सेहर, लखनवी

चौंक कर जाग उठे, क़ब्र में सोने वाले ;
यह क़यामत भी, किसी शोख़ की अँगड़ाई है !

—ग़ाफ़िल, इलाहाबादी

सौदाई

कूचए इश्क़ में दे कौन मुझे नेक सलाह,
इस जगह देखिए जिसको, वही सौदाई है !

—नूह, नारवी

जितने आते हैं, वह इलज़ामे जुनूँ देते है,
सबका मुँह देखने वाला, तेरा सौदाई है !!
चारागर अपनी कह जाते हैं नासेह अपनी,
कुछ कहे कोई, मगर चुप तेरा सौदाई है !

—बहार, लखनवी

जब यही हुस्न का मंशा है, यही शाने शबाब !
फिर जिसे चाहिए, कह दीजिए सौदाई है !!

—गुहर, लखनवी

तनहाई

दिल में सिर्फ़ उनके तसव्वर ने जगह पाई है,
क्या कहूँ इसको, न मजमा है, न तनहाई है !
ख़त्म हो जाएँगे हम, ख़त्म यह होने की नहीं,
ग़ैर महदूद बलाए शबे-तनहाई है !
क्यों कहूँ झूठ अकेला हूँ, अकेला तो नहीं ;
एक मैं, एक ये मेरी शबे-तनहाई है !!

—नूह, नारवी

दो घड़ी दिल के बहलने का सहारा भी गया,
लीजिए आज तसव्वर में भी तनहाई है !
सुबह तक होगा मेरे घर पे हुजूमे-ख़लक़त,
रात की रात फ़क़त, आलमे-तनहाई है !!

—मज्तर, लखनवी

शर्त बद कर तो क़यामत से नहीं आई है,
हाय कम्बख़्त यह कैसी शबे-तनहाई है !

—अज़ीज़, सलोनवी

रात भर शमा जलाता हूँ, बुझाता हूँ सिराज !
बैठे-बैठे यही शग़ले शबे-तनहाई है !!

—सिराज, लखनवी

झिलमिलाते हुए तारों को ये मालूम नहीं,
दिल का हर दाग़ चिराग़े शबे-तनहाई है !

—ख़ुमार, सलोनवी

काश यह ख़्वाब मुझे, फिर मेरी क़िस्मत दिखलाए !
कि वही मैं हूँ, वही तुम, वही तनहाई है !!

—मुनीर, लखनवी

तमाशाई

ग़ौर करने पे हक़ीक़त ये नज़र आई है,
ख़ुद तमाशा भी है वह, ख़ुद ही तमाशाई है !
ये समझ कर कोई पर्दे से निकलता ही नहीं !
कि ख़ुदाई मेरे जलवे का तमाशाई है !!

—बिस्मिल, इलाहाबादी

वह जो देखें मुझे, आईना बना कर अपना,
फिर तो कोई न तमाशा, न तमाशाई है !

—शफ़ीक़, अकबराबादी

या इलाही ये ग़श आया है, कि मौत आई है !
आँखें क्यूँ बन्द किए उनका तमाशाई है ?

—अज़ीज़, सलोनवी

क्या नज़र सोज़ तेरा जलवए ज़ेबाई है,
गुम है नज़ारा ज़ख़ुद रफ़्ता तमाशाई है !!

—ख़ुमार, सलोनवी

दिल मेरा देख सके, हुस्न के जलवे क्योंकर,
सौ तमाशे हैं, मगर एक तमाशाई है !

—शातिर, इलाहाबादी

दिल की हैरत ने बनाया उन्हें महवे हैरत !
जिसको समझे थे तमाशा, वह तमाशाई है !!

—ग़ाफ़िल, इलाहाबादी

आज ख़लवत में जो वह महवे ख़ुद-आराई है,
आईना है मेरी हैरत का, तमाशाई है !

—मुनीर, लखनवी

(शेष फिर कभी)

कुछ नवीन और उत्तमोत्तम पुस्तकें

दुबे जी की चिट्ठियाँ

शिक्षा और विनोद का यह अपूर्व भण्डार है। इसमें सामाजिक कुरीतियों तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों का विवेचन बहुत ही सुन्दरतापूर्वक किया गया है। हिन्दी-संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी पुस्तक है। भाषा अत्यन्त सरल है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। मूल्य केवल ३); ले० 'दुबे जी'।

मणिमाला

अत्यन्त मनोरञ्जक, शिक्षा और विनोद से भरी हुई कहानियों का अनोखा संग्रह। प्रत्येक कहानी में सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया गया है। उन कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भयङ्कर अनर्थों की भी भरपूर चर्चा की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य केवल ३); ले० 'कौशिक' जी।

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, महान सांसारिक आपत्तियों तथा यातनाओं से आजीवन खेलने वाले, इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र सांसारिक मनुष्य के लिए अमृत के तुल्य है। इसके केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में महान परिवर्तन हो जायगा—एक दिव्य ज्योति उत्पन्न हो जायगी। सचित्र और सजिल्द मूल्य २॥)

विवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अश्लील धारणाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन दुखी और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा उनका सुख-स्वाच्छन्नपूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रता-पूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥)

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झञ्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्म-बल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना आपने एकदम बिसार दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का ख़ून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों से १=) ले० 'वर्मा' एम० ए०।

मनोरञ्जक कहानियाँ

इस पुस्तक में १७ छोटी-छोटी, शिक्षाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ संग्रह की गई हैं। कहानियों को पढ़ते ही आप आनन्द से मस्त हो जायँगे और सारी चिन्ताएँ दूर हो जायँगी। बालक-बालिकाओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। केवल एक कहानी उनको सुनाइए—ख़ुशी के मारे उछलने लगेंगे, और पुस्तक को पढ़े बिना कदापि न मानेंगे। मनोरञ्जन के साथ ही प्रत्येक कहानियों में शिक्षा की भी सामग्री है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी कॉपियाँ और शेष हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ

इस पुस्तक में पूर्वीय और पाश्चात्य, हिन्दू और मुसलमान, स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं। केवल एक बार के पढ़ने से बालक-बालिकाओं के हृदय में दयालुता, परोपकारिता, मित्रता, सच्चाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के अङ्कुर उत्पन्न हो जायँगे और भविष्य में उनका जीवन उसी प्रकार महान और उज्ज्वल बनेगा। मनोरञ्जन और शिक्षा की यह अपूर्व सामग्री है। भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥); ले० ज़हूरबख़्श।

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ॥); स्थायी ग्राहकों के लिए ॥-)

लालबुझक्कड़

जगत्प्रसिद्ध नाटककार 'मोलियर' की सर्वोत्कृष्ट रचना का यह हिन्दी अनुवाद है। नाटक आदि से अन्त तक हास्यरस से भरा हुआ है। शिक्षा और विनोद की अपूर्व सामग्री है। मनोरञ्जन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों का भी दिग्दर्शन कराया गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३); ले० जी० पी० श्रीवास्तव

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से ॥-)

आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियाँ

छोटे-बड़े सभी के मुँह से आज यह सुनने में आ रहा है कि भारतवर्ष आयरलैण्ड बनता जा रहा है। उस आयरलैण्ड ने अङ्गरेज़ों की ग़ुलामी से किस तरह छुटकारा पाया और वहाँ के सिनफ़ीन दल ने किस कौशल से लाखों अङ्गरेज़ी सेना के दाँत खट्टे किए, इसका रोमाञ्चकारी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। इसमें आपको इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। मूल्य केवल दस आने। ले० सत्यभक्त।

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से ।=)

गुदगुदी

हास्य तथा मनोरञ्जन भी स्वास्थ्य के लिए एक अनोखी औषधि है। किन्तु इसका उपाय क्या है? उपाय केवल यही कि इस पुस्तक की एक प्रति मँगा लीजिए और काम की थकावट तथा भोजन के बाद पढ़िए। इसका केवल एक ही चुटकुला एक घण्टे तक आपको हँसाएगा। ले० जी० पी० श्रीवास्तव; मूल्य ॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

भारत की "वीर और लड़ाकू" जातियाँ

(शेषांश)

अन्य बड़े-बड़े फ़ौजी अफ़सरों ने भी इसी प्रकार की सलाह दी। कमान्डर-इन-चीफ़ लॉर्ड क्लाइड ने कहा कि :—

"जिन-जिन जातियों में से सैनिक भरती किए गए थे वे इनी-गिनी थीं। मेरी राय से तो भरती हर एक जाति और हर एक ज़िले से होनी चाहिए। हर एक पल्टन (Corp) में जितना ही अधिक भेद-भाव हो उतना ही अधिक अच्छा है। एक रिसाले में जितनी कम्पनियाँ हों उनमें से एक में यदि बहुत सी जातियों के सैनिक सम्मिलित हों तो दूसरी में किसी ख़ास जाति के ही हों। यदि एक में किसी एक ज़िले के सैनिक हों तो दूसरी में हर एक ज़िले और हर एक जाति के। यदि उपर्युक्त बातों में सेना में एकता रहेगी तो ब्रिटिश-सत्ता की स्थिरता और रक्षा के लिए बहुत ख़तरनाक है। परन्तु जब किसी रिसाले में बहुत सी जातियाँ सम्मिलित होंगी, तो आसानी से उनकी बहुत सी कम्पनियाँ बनाई जा सकेंगी।"*

भारतीय गवर्नमेण्ट के फ़ौजी मन्त्री मेजर जनरल वर्च लिखते हैं कि :—

"यदि किसी एक जाति या फ़िरक़े के लोग कोई विद्रोह या आतङ्क फैलाने में एक हो जावें तो उनकी शक्ति बहुत बढ़ जायगी। और इस प्रकार का ऐक्य उसी समय सम्भव है, जब रिसालों में जातियों का ऐक्य हो। यदि मेरे हाथ में भरती का कार्य छोड़ दिया जाता तो मैं भरती कभी एक ही ज़िले से न करता। मैं तो किसी रिसाले में थोड़े से ब्राह्मण और बाक़ी मुसलमान, राजपूत और सिक्खों की भरती करूँगा।"*

लेफ़्टिनेण्ट जनरल सर हैरी स्मिथ का कहना है कि :—

"इस बात से अधिक और किसी बात की आवश्यकता नहीं है कि बङ्गाल की भारतीय फ़ौज को बहुत सी जातियों और समूहों में सङ्गठित किया जाय। अलग-अलग जाति की एक-एक कम्पनी बना देना उचित है। इससे एक तो भेदभाव फैल जायगा और दूसरे विद्रोहादि के समय वे एक दूसरे से सम्मिलित न हो सकेंगे।"*

कर्नल बर्न का कहना है कि :—

"मेरी राय में प्रत्येक रिसाले की भरती कुछ चुने हुए ज़िलों में से हो तो उसका प्रभाव बहुत लाभदायक होगा। यदि जातियों के भेदभाव के हिसाब से भरती हो तो और भी अच्छा। अवध और बिहार के लोग एक दूसरे से बहुत जलते हैं और इसका प्रत्यक्ष लाभ उस समय लाहौर में मालूम हुआ था जब सेना में से इन दोनों को अलग-अलग कर दिया था।"*

लॉर्ड एलिनबरा ने अपनी राय इस प्रकार दी थी :—

"भारतीय सेना में जितनी अधिक जातियों, धर्मों और प्रान्तीयताओं का सम्मेलन होगा, हम लोग उतने अधिक सुरक्षित रहेंगे।"*

परन्तु इन सबों की गवाही में मेजर जनरल टूकर का मेमोरेण्डम सब से अधिक ख़ुलासा है। उसमें ही उन्होंने लिखा है कि :—

"हम अपने बुज़ुर्गों की राजनैतिक कुशलता और राज्य-सञ्चालन की योग्यता और उसके कामों की प्रशंसा के पुल चाहे बाँध दें, पर यह मानना ही पड़ेगा कि हम लोग विदेशी हैं और दूसरों का हक़ हड़प किए बैठे हैं; और जब तक हम अपने को भारतीयों से चरित्र-बल और बुद्धि में अधिक उच्च समझ कर उन्हें घृणा और अवहेलना की दृष्टि से देखेंगे तब तक हम पर यूरोपीय चरित्र की हठ और अपने झूठे रोब की छाप लगी रहेगी; और तभी तक हम अपने किए हुए उपकारों का मूल्य भी बहुत अधिक समझते रहेंगे। इसका परिणाम यह होगा कि भारतीय कभी भी हृदय से हमारा शासन पसन्द न करेंगे। इस बात पर अच्छी तरह से विचार किसी ने नहीं किया। परन्तु मेरा यह कथन सत्य है और कभी न कभी इसकी सत्यता का प्रमाण अवश्य मिल जावेगा। मेरे इस कथन के अनुसार इस बात की अत्यन्तावश्यकता प्रतीत होती है कि हमारे पूर्वीय उपनिवेशों के राज्यकर्त्ता वहाँ की फ़ौजों को राष्ट्रीयता, जाति और धर्म के बहुत से समूहों में बाँट दें; तभी हमारे उपनिवेशों की रक्षा हो सकती है और तभी वे लोग, जो उपनिवेशों की रक्षा की प्रतिज्ञा करके वहाँ आते हैं, साम्राज्य को मुसीबतों और टुकड़े-टुकड़े होने से बचा सकते हैं। उनकी प्रतिज्ञा और उनका कर्त्तव्य उन्हें इस नीति का अवलम्बन करने के लिए बाध्य करता है।

"बङ्गाल की सेना में प्रधानता सिक्ख, राजपूत और गोरखा सिपाहियों की है। इसके अलावा उसमें और भी बहुत सी जातियाँ सम्मिलित हैं। इस आपत्ति (विद्रोह) के बाद, जिसका अनुभव किए हमें बहुत दिन नहीं हुए, नीची जातियों की फ़ौजें भी हमसे सहानुभूति दिखाने लगी हैं। परन्तु उन नीची जातियों से हमें उतना ही सावधान रहना चाहिए जितना ऊँची जातियों से; और सिक्खों पर सदैव कड़ी दृष्टि रखना और उनसे सावधान रहना चाहिए। यदि गोरखों और दूसरी पहाड़ी जातियों के सैनिक काफ़ी तादाद में मिलें तो उनके साथ एक चौथाई सिक्खों की सेना रखने से किसी प्रकार का भय न रहेगा। क्योंकि गोरखे भी बल और युद्ध-कला में उतने ही प्रवीण हैं जितने सिक्ख। परन्तु सच्चे गोरखे अधिक संख्या में नहीं मिलते; इसलिए एक चौथाई में नीची जातियों के और बाक़ी में हिन्दू और मुसलमानों की हर एक जाति और धर्म के लोगों को सेना में भर्ती करना चाहिए। यदि सम्भव हो तो मैं तो अफ़्रिका, मलाया और अरब तक के आदमियों को सेना में भर्ती करने की सलाह दूँगा। सारांश यह कि हमारी पूर्व की फ़ौजों में जितनी अधिक जातियाँ, प्रान्तीयताओं और जितने अधिक धर्मों के सैनिक रहेंगे, उनकी शक्ति उतनी ही कम रहेगी और हमें उनसे उतना ही कम भय रहेगा।"*

इस बात पर गवाहियों की राय इतनी अधिक संख्या में मिलती-जुलती थी कि उनके मतानुसार पील कमीशन ने इस बात की सिफ़ारिश की थी कि भविष्य में "भारतीय सेनाओं के प्रत्येक रिसाले में कई प्रकार की प्रान्तीयताओं और जातियों के सम्मेलन का क़ायदा बन जाना चाहिए।"*

इन नीति सम्बन्धी वक्तव्यों के आधार पर ही हम साइमन कमीशन की निम्न लिखित राय की सचाई की जाँच करेंगे :—

"साफ़ बात तो यह है कि भारत में ऐसी राष्ट्रीय सेना का सङ्गठन, जिसका एक सैनिक सेना के अन्य सैनिकों से भ्रातृभाव रक्खे, जिसके भारतीय अफ़सर अनेक जातियों के सैनिकों का नेतृत्व कर सकें, और जिसमें जनता का विश्वास हो, अत्यन्त कठिन ही नहीं, बल्कि एक प्रकार से असम्भव है। भारत के बहुत से राजनीतिज्ञ जनता में नागरिकता के उच्च भावों का समावेश करने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं और जो भारत को एकता के सूत्र में बँधा हुआ देखना चाहते हैं, उनकी उनके साथ पूर्ण सहानुभूति है। भारत की आर्थिक दशा, जलवायु और जातियों की अदरय, पर दृढ़ रूढ़ियों के कारण जो अनैक्य और फूट फैली हुई है, उसे दूर करने की भारतीय राजनीतिज्ञों की तरह फ़ौजी अफ़सर भी कोशिश कर रहे हैं।"*

लॉर्ड रॉलिन्सन की निम्न राय को भी हम उपर्युक्त वक्तव्यों के सहारे जाँच कर सकते हैं :—

"जब हिन्दुस्तान अपने जातीय झगड़ों, धार्मिक विरोधों और अपनी पूर्वीय रूढ़ियों से मुक्त हो जायगा और उसमें एक ही राष्ट्रीयता की लहर बहने लगेगी तभी वह अपनी रक्षा अपने आप करने की योग्यता प्राप्त कर सकता है। परन्तु ऐसा कब सम्भव है?"†

हम यह जानते हैं कि ऐसे मौक़े पर इस बात पर ज़ोर दिया जायगा कि बलवे के बाद सेना के पुनः सङ्गठन से भारतीयों के हृदय में जो अविश्वास और सन्देह घुस गया है, समय के परिवर्तन से वह दूर हो गया है। परन्तु इसका सीधा और छोटा सा उत्तर यह है कि यद्यपि उन्होंने बातों से अपने दृष्टि-कोण में परिवर्तन होने पर अधिक ज़ोर दिया है, परन्तु कार्य-रूप में उनकी इस नीति में सुधार और परिवर्तन का आभास नहीं मिलता। और जब तक यह हालत बनी रहेगी तब तक भारतीयों के मुँह से अपनी सदिच्छाओं की प्रशंसा कराना वैसा ही होगा जैसा कि उस व्यापारी से, जिसका पहिला ऋण अभी बाक़ी हो, और अधिक रुपए की प्रार्थना करना।

अङ्गरेज़ों की फ़ौजी नीति पर अविश्वास होने के दो कारण हैं। पहिला तो यह है कि भारतीय सैनिकों को वैज्ञानिक और अस्त्र-शस्त्र की पूर्ण शिक्षा नहीं दी जाती, उन्हें लड़ाई के वर्तमान और अत्यन्त घातक गैसों और अन्य यन्त्रों के प्रयोग की शिक्षा से अनभिज्ञ रक्खा जाता है; और दूसरे फ़ौज के भारतीयकरण में बहुत आना-कानी की जाती है। पहिला प्रश्न यह कह कर टाल दिया जाता है कि भारतीयों में वर्तमान वैज्ञानिक यन्त्रों और गैसों के प्रयोग की योग्यता नहीं है। और दूसरे प्रश्न पर साहब लोग कहने लगते हैं कि—"सैनिक-जीवन व्यतीत करने की इच्छा भारतीयों के हृदय में नहीं रहती।"‡ साइमन-कमीशन ने यह राय लॉर्ड रॉलिन्सन के विचारों के आधार पर, जिन्होंने महायुद्ध के बाद भारतीय सेना का पुनः सङ्गठन किया था, क़ायम की है। उन्होंने अपनी डायरी में यह लिखा था कि—"यदि भारतीय सेना का पूरा भारतीयकरण किया जाय तो इस बात में सन्देह है कि हमें सैनिक-प्रवृत्ति के भारतीय काफ़ी तादाद में मिल भी सकेंगे या नहीं। इङ्गलैण्ड के स्कूलों में पढ़ने वाले हर एक लड़के के हृदय में नेतृत्व करने और सैनिक बनने की महत्वाकांक्षा रहती है। परन्तु भारतीय स्कूलों के लड़के इन महत्वाकांक्षाओं से बिलकुल सूने रहते हैं। न तो उनके हृदय में अभी यह महत्वाकांक्षा है और न मुझे इस बात पर विश्वास है कि भारतीय अपनी मातृ-भूमि के लिए अपने प्राण अर्पण करने को कभी हथियार उठावेंगे।"§

भारतीयों की योग्यता में जो ये दोष लगाए गए हैं उनका उत्तर अङ्गरेज़ अफ़सरों के निम्न दो उद्धरणों से

* पील रिपोर्ट पृ० नं० ६३, ७८, २३३, १५७, ६

* पील रिपोर्ट पृ० १०, १४

* साइमन रिपोर्ट भाग १, पृष्ठ ९७

† मॉरिस लिखित 'लॉर्ड रॉलिन्सन की जीवनी', पृ० ३४९

‡ साइमन रिपोर्ट भाग १, पृष्ठ ९६

§ मॉरिस कृत 'लॉर्ड रॉलिन्सन की जीवनी' पृ० ३३२

मधुबन

[प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०]

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-साहित्य को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुबन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुबन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। पुस्तक को सचित्र प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

हिन्दू-त्योहारों का इतिहास

[श्री० शीतलासहाय, बी० ए०]

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है! वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १।।) ; स्थायी ग्राहकों से १=)

निर्मला

[श्री० प्रेमचन्द, बी० ए०]

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। पुस्तक का मूल्य २।।) ; स्थायी ग्राहकों से १।।।=) मात्र!

अपराधी

[श्री० यदुनन्दन प्रसाद श्रीवास्तव]

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोर्स्ट और ब्रियो का "डैमेज़्ड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर अवलम्बित होती है।

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। मूल्य २।।); स्थायी ग्राहकों से १।।।=)

लम्बी दाढ़ी

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव]

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है
बच्चों को भी—
बड़ी मासूम, बड़ी नेक
है लम्बी दाढ़ी!
अच्छी बातें भी बताती है,
हँसाती भी है—
लाख दो लाख में, बस एक—
है लम्बी दाढ़ी!!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ६,००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २।।); स्थायी ग्राहकों से १।।।=) मात्र!!

बाल-रोग-विज्ञानम्

[प्रोफ़ेसर धर्मानन्द शास्त्री]

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल-मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम ख़र्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्त्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है और वे शिशु सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार कर सकती हैं। मूल्य लागत मात्र २।।) रु०

देवताओं के गुलाम

[श्री० सत्यभक्त]

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामे एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। पढ़िए और आँसू बहाइए!! मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २।)

चुहल

[श्री० त्रिवेणीलाल श्रीवास्तव, बी० ए०]

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ।।।) केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

सरलतापूर्वक किया जा सकता है। ये दोनों उद्धरण पील-कमीशन के सम्मुख दी हुई गवाहियों में से दिए गए हैं, जिसने भारतीयों को भविष्य में आर्टिलरी में से अलग कर देने की सिफ़ारिश की थी। पहला उद्धरण बम्बई के गवर्नर लॉर्ड एलफ़िन्सटन के मेमोरेण्डम का है। उसमें उन्होंने लिखा था कि—

"जिन लोगों का यह मत है कि भारतीयों को तोपों के उपयोग की शिक्षा न देना चाहिए, उनसे हम पूर्ण रूप से सहमत हैं। वे तोपों के उपयोग में बहुत दक्ष होते हैं और उस कला को सीखने का बहुत प्रयत्न करते हैं; परन्तु केवल इसी कारण से ही उनके हाथों में तोपें देना बहुत ख़तरनाक है।"

दूसरे उद्धरण में लॉर्ड एल्जिनबरा कहते हैं कि—"सभी लोगों की प्रायः यही सम्मति है कि आर्टिलरी को हमें अपने ही हाथों में रखना चाहिए। भारतीय तोपें चलाने में प्रतिभासम्पन्न और दक्ष होते हैं; और उन्हें तोपों से सदैव दूर रखना चाहिए। इस विद्रोह में उन्हें तोपों के उपयोग का वैसा ही अभ्यास हो गया है जैसा हम लोगों को है।"

इन दो महाशयों की रायों के उद्धरण के बाद साइमन कमीशन के लाञ्छन का उत्तर देने के लिए कुछ और लिखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। अब रहा दूसरा लाञ्छन। उसके सम्बन्ध में लॉर्ड रॉलिन्सन ने भारत में पदार्पण करने के पहले ही विलायत वालों की राय इन शब्दों में प्रगट की थी:—

"यहाँ के लोग फ़ौज के भारतीयकरण की चर्चा से बहुत घबराते हैं और पुराने अफ़सर कहते हैं कि भारतीयों के नीचे काम करने को हम अपने लड़कों को वहाँ की फ़ौज में भरती न करेंगे। मैं यह मञ्ज़ूर करता हूँ कि नई पद्धति के अनुसार कार्य किया जाय, पर उसके लिए बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। उसको प्रारम्भ करने का केवल यही रास्ता है कि भारतीय अफ़सरों के हाथ में थोड़ी सी पल्टनें दे दी जायँ !!!

"इसके उपरान्त दूसरा प्रश्न भारतीय और ब्रिटिश अफ़सरों के आपस के सम्बन्ध का है। यदि इस सम्बन्ध में ज़रा भी असावधानी हुई तो अङ्गरेज़ अफ़सरों की भारतीय फ़ौजों में आवश्यकता रहते हुए भी उनका मिलना असम्भव सा हो जायगा। मेरी राय से तो पहले कुछ घुड़सवार और पैदल सेना भारतीय कर दी जाय। इससे दो बातें होंगी। एक तो अङ्गरेज़ अफ़सरों को भारतीय अफ़सरों के नीचे न रहना पड़ेगा और दूसरे इस परिवर्तन का प्रभाव भी मालूम पड़ जायगा।"

यदि कोई यह कहे कि लॉर्ड रॉलिन्सन के यहाँ पदार्पण करने के पहिले या इस समय भी भारतीयों में भारत की सब फ़ौज का बन्दोबस्त करने की योग्यता है तो उसे पागलपन ही कहना होगा। फ़ौजी अफ़सरों को दक्ष बनाने के लिए बहुत समय और शिक्षा की आवश्यकता है। लॉर्ड रॉलिन्सन ने फ़ौज के भारतीयकरण की इस सङ्कुचितता का कारण भारतीय सिपाहियों की अयोग्यता नहीं बतलाई है, वरन् यहाँ की जातियों की बर्बरता और भेद-भाव बतलाया है। यदि हम श्री० काये के निम्न उद्धरण पर विश्वास करें तो उससे साफ़ मालूम हो जायगा कि १८ वीं शताब्दी से ही ईस्ट-इण्डिया कम्पनी की फ़ौज में से उच्च जाति के भारतीयों को अलग करने और सैनिकों को मामूली सिपाही के पद से ऊपर उठने न देने की रीति प्रारम्भ हो गई थी। उसने लिखा है कि:—

"भारतीय सेना की स्थापना करने वालों ने पहिले ही इस बात का निश्चय कर लिया था कि सेना के मामूली सिपाहियों की भरती भारतीयों में से ही की जाय; और उसका सञ्चालन ब्रिटिश अफ़सर करें। विजेता जाति के ये उच्च अफ़सर प्रारम्भ से ही अपने नीचे के लोगों को दबा-दबा कर आज्ञापालक बनाने लगे। जैसे-जैसे हमारी सत्ता भारत में जमने लगी उन्होंने भारतीय अफ़सरों को निकालना और उनकी जगह ब्रिटिश अफ़सरों को भरती करना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार थोड़े समय के पश्चात् वे ही भारतीय अफ़सर, जो अपने बैटेलियन में बड़े सम्माननीय माने जाते थे और जो स्वयं अपनी वीरता और फ़ौजी प्रवीणता के लिए प्रसिद्ध थे, उन पदों से निकाल कर बाहर कर दिए गए और उनके पद और अधिकार ब्रिटिश अफ़सरों को सौंप दिए गए। इस नीति का प्रयोग यहाँ तक हुआ कि अन्त में उच्च पदों पर भारतीयों का नामनिशान न रह गया।

"भारतीय अफ़सरों का पतन होते ही 'सिपाही-फ़ौज' की काया-पलट हो गई। उसी समय से उसमें ऐसे वीर और उच्च जाति के सैनिकों की भरती बन्द हो गई जो फ़ौजी नौकरी को पद, अधिकार और अपनी वीरता का जौहर दिखाने का क्षेत्र और साधन समझते हों। तभी से हम फ़ौज में नीची जातियों के लोगों को भरती करने लगे और ब्रिटिश भारत के उन सच्चे वीरों ने ब्रिटिश राज्य की सीमा पार कर देशी रियासतों में राजाओं को अपनी सेवाएँ अर्पण कर दीं।"*

फिर सन् १८८९ तक भारतीयों को फ़ौज के ऊँचे पद देने की चर्चा बिलकुल बन्द रही। १८८९ में गवर्नर जनरल की कौंसिल के फ़ौजी सदस्य जनरल सर जॉर्ज चैसने ने यह प्रस्ताव पेश किया कि भारतीयों को फ़ौज के ऊँचे पदों से अलग कर देने से फ़ौज बहुत पतित हो गई है। लॉर्ड रॉबर्ट्स ने उसी समय अङ्गरेज़ों का गुणगान करते हुए इसके विरोध में कहा कि "भारतीयों में न तो उनके बराबर शारीरिक शक्ति है और न उतना चरित्र ही।" उन्होंने कहा कि "यूरोपियनों के अपने को उच्च समझने के भाव के कारण ही हमने भारत पर विजय प्राप्त की है। भारतीय चाहे कितना ही शिक्षित और दक्ष क्यों न हो और वह हमसे फ़ौजी योग्यता में कितना ही अधिक प्रवीण और वीर क्यों न हो, उसे ब्रिटिश अफ़सर की बराबरी का पद कभी नहीं मिल सकता और न ब्रिटिश सिपाही उसको वह सम्मान दे सकता है, जो एक ब्रिटिश अफ़सर को। इसलिए कुछ भी हो, वर्तमान में किसी भारतीय को ब्रिटिश अफ़सरों के बराबर कोई भी पद देना मेरी राय में घृणास्पद और लज्जाजनक है।"†

इस उत्तर से जॉर्ज चैसने अवसर न देख कर कुछ समय के लिए तो चुप हो गए, पर दो साल बाद उन्होंने फिर वही प्रश्न उठाया:—

"भारतीय सरकार के फ़ौजी सदस्य ने दो वर्ष पहिले के भेदभाव-पूर्ण व्यवहार का अन्त समझकर उच्च घरानों के भारतीयों के लड़कों के लिए एक फ़ौजी स्कूल स्थापित करने की सिफ़ारिश की। लार्ड रॉबर्ट्स ने इस सिफ़ारिश का घोर विरोध किया और 'सिपाही-विद्रोह' की घटनाओं और उसके प्रभावों का उल्लेख करते हुए उन्होंने भारत-सरकार से यह प्रार्थना की कि यदि भारतीयों की उच्च फ़ौजी शिक्षा के लिए स्कूल खोल दिया जायगा तो उसमें से निकले हुए दक्ष सेनापति (कमाण्डर) उस फ़ौजी प्रवीणता का उपयोग हम लोगों के पक्ष में नहीं, बल्कि विपक्ष में करेंगे।" इसका परिणाम यह हुआ कि यह प्रश्न फिर दो साल के लिए स्थगित हो गया। परन्तु दो वर्षों के बाद महाशय चैसने ने फिर से भारत-सरकार के सम्मुख यही समस्या उपस्थित की। लॉर्ड राबर्ट्स ने फिर से उनका प्रतिवाद करते हुए कहा कि—"भारतीयों की फ़ौजी शिक्षा का स्कूल चाहे कितना ही छोटा और नगण्य खोला जाय, मैं उसके विरुद्ध आन्दोलन करूँगा।"*

लॉर्ड रॉबर्ट्स के बाद उनके तीन स्थानापन्न अफ़सरों ने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं किया। परन्तु जब लॉर्ड किचनर भारत के कमान्डर-इन-चीफ़ होकर आए तब यह प्रश्न आगे के लिए स्थगित न हो सका। उन्होंने इस विषय में जो रिपोर्ट पेश की थी उसमें लिखा था कि—"इस विवाद-ग्रस्त समस्या का सुलझाना कुछ आसान काम नहीं है, क्योंकि यद्यपि भारतीय सेनाओं के उच्च ब्रिटिश अफ़सरों की राय है कि भारतीय सेना में सुधारों की कोई योजना पेश करने की अत्यन्तावश्यकता है, परन्तु जब उसे कार्यरूप में परिणत करने का समय आता है तो किसी प्रस्ताव को पास करने के लिए काफ़ी वोटों का मिलना असम्भव सा हो जाता है। इसके दो कारण हैं। एक तो यह है कि भारतीय सेना को वे सच्चा अधिकार देने के बिलकुल विरुद्ध हैं और दूसरा यह कि वे अपने जात्याभिमान के कारण कोई ऐसा सुधार भारतीयों को नहीं देना चाहते जिससे फ़ौज में ब्रिटिश अफ़सरों को भारतीय अफ़सरों की मातहती में रह कर उनकी आज्ञा का पालन करना पड़े। साथ ही इसका एक और मुख्य कारण ब्रिटिश अफ़सरों के हृदयों में जमा हुआ यह विश्वास है—जो कि बिलकुल बेबुनियाद नहीं है—कि ब्रिटिश अफ़सरों के स्थान पर भारतीय अफ़सरों को रखना फ़ौज की योग्यता के लिए घातक होगा।"*

इन उपर्युक्त घटनाओं ने फ़ौजी वायुमण्डल में एक ऐसा परिवर्तन कर दिया था कि जिससे हर एक ब्रिटिश अफ़सर के हृदय में भारतीयों के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न हो गए थे। और तब से अभी तक उसका प्रभाव अक्षुण्ण रूप से बना हुआ है। भूतकाल के इन अनुभवों के आधार पर तो हम भारत के भविष्य के सम्बन्ध में यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जब तक भारत पर अङ्गरेज़ों की सत्ता रहेगी, हमें भारतीय फ़ौज के उत्थान की आशा स्वप्न में भी न करना चाहिए।

* * *

* काये और मैलीसन कृत 'भारतीय-विद्रोह का इतिहास' भाग १, पृष्ठ १५३-१५४।

† आर्थर कृत 'लॉर्ड किचनर का जीवन' भाग २, पृष्ठ १७७

उत्तमोत्तम पुस्तकों का भारी स्टॉक

स्त्रियोपयोगी

अदृष्ट (ह० द० कं०) ३)
अपराधी (चाँ० का०) २॥)
अश्रुपात (गं०पु०मा०) १), १॥)
अरक्षणीया (इं० प्रे०) १)
अनन्तमती (अं० मं०) ॥=)
अनाथ-पत्नी (चाँ० का०) २)
अनाथ बालक (इं० प्रे०) १)
" " (ह० दा० कं०) १।)
अबलाओं का इन्साफ़ (चाँ० का०) ३)
अबलाओं पर अत्याचार (चाँ० का०) २॥)
अबलोन्नति पद्य-माला (गृ० ल०) =)॥
अभागिनी (ह० दा० कं०) १)
अभिमान (गृ० का०) १)
अमृत और विष (दो भाग) (चाँ० का०) ४)
अवतार (सर० प्रे०) ॥)
अहल्याबाई (इं० प्रे०) १)
" " (हि० पु० भं०) ।)
अञ्जना देवी (न० दा० स० ऐं० सं०) ॥=)
अञ्जना सुन्दरी (भ्रा०कु०मा०)१)
अञ्जना-हनुमान (स० आ०) १॥), १॥)
आदर्श चाची (व०प्रे०) १), १॥)
आदर्श दम्पति (ग्रं० भं०) १), १)
आदर्श पत्नी (स० आ०) ॥)
आदर्श बहू (ग्रं० भं०) ॥), १)
आदर्श बहू (उ० ब० आ०) ॥)
आदर्श भगिनी (ख०वि०प्रे०) ।)
आदर्श महिला (इं० प्रे०) २॥)
आदर्श महिलाएँ (दो भाग) (रा० द० अग्र०) १।)
आदर्श रमणी (निहाल-चन्द) ॥=)
आदर्श ललना (उ० ब० आ०) ॥)
आरोग्य-साधन (महात्मा गाँधी) ।=)
आर्य-महिला-रत्न (व० प्रे०) २), २॥)
आशा पर पानी (चाँ० का०) ॥)
इन्दिरा (ख० वि० प्रे०) ॥)
" (ह० दा० कं०) १)
ईश्वरीय न्याय (गं० पु० मा०) ॥)
उत्तम सन्तति (जटा० वै०) १॥)
उपयोगी चिकित्सा (चाँ० का०) १॥)
उमासुन्दरी (चाँ० का०) ॥)
उमा (उ० ब० आ०) १)

कन्या-कौमुदी (तीन भाग) ॥=)
कन्या-दिनचर्या (गृ० ल०) ।)
कन्या-पाकशास्त्र (ओं० प्रे०) ।)
कन्या-पाठशाला २॥)
कन्या-बोधिनी (पाँच भाग) (रा० न० ल०) १॥)
कन्या-शिक्षा (स० सा० प्र० मं०) ।)
कन्याओं की पोथी १)
कन्या-शिक्षावली (चारों भाग) (हिं० मं०) ॥=)
कपाल-कुण्डला (ह० दा० कं०) १)
कमला (ओं० प्रे०) १॥)
कमला-कुसुम (सचित्र) (गं० पु० मा०) १)
कमला के पत्र (चाँ० का०) ३)
" " (अङ्गरेज़ी) ३)
कृष्णाकुमारी ॥)
करुणा देवी (बेल० प्रे०) ॥=)
कलङ्किनी (स० सा० प्र० मं०) ॥=)
कल्याणमयी चिन्ता (क० म० जी०) ॥)
कुल-लक्ष्मी (हिं० मं०) १)
कुल-कमला ॥)
कुन्ती देवी १॥)
कुल-ललना (गृ० ल०) ॥=)
कोहेनूर (व० प्रे०) १॥), २)
क्षमा (गृ० ल०) ॥)
गर्भ-गर्भिणी ॥)
गल्प-समुच्चय (प्रेमचन्द) २॥)
ग्रह का फेर (चाँ० का०) ॥)
गायत्री-सावित्री (बेल० प्रे०) ।)
गार्हस्थ्य शास्त्र(त० भा० ग्रं०) १)
गीता (भाषा) १॥)
गुदगुदी (चाँ० का०) ॥)
गुणलक्ष्मी (उ० ब० आ०) ।=)
गुप्त सन्देश (गं० पु० मा०) ॥=)
गृहदेवी (म० प्र० का०) ।-)
गृह-धर्म(व० द०स० ऐं० सं०)॥)
गृह-प्रबन्ध-शास्त्र (अभ्यु०) ॥)
गृह-वस्तु-चिकित्सा (चि० का०) ॥)
गृहलक्ष्मी (मा० प्रे०)) १)
" (उ० ब० आ०) १)
गृह-शिक्षा (रा० पू० प्रे०) =)
गृहस्थ-चरित्र (रा० प्रे०) ।)
गृहिणी (गृ० ल०) १)
गृहिणी-कर्त्तव्य (सु० ग्रं० प्र० मं०) २॥)
गृहिणी-गीताञ्जलि (रा० श्या०) ॥)
गृहिणी-गौरव (ग्रं० मा०) १॥), २)

गृहिणी-चिकित्सा (ल० ना० प्रे०) २॥)
गृहिणी-भूषण (हिं० हि० का०) ॥)
गृहिणी-शिक्षा (क०म०जी०)१)
गौने की रात (प्रा० का० मा०) ३)
गौरी-शङ्कर (चाँ० का०) ।=)
घरेलू चिकित्सा (चाँ० का०)१॥)
चिन्ता (सचित्र) (उ० ब० आ०) ॥)
चिन्ता (व० प्रे०) १॥)
चित्तौड़ की चढ़ाइयाँ (व० प्रे०) ॥=)
चित्तौड़ की चिता(चाँ०का०)१॥)
चौक पूरने की पुस्तक (चित्र० प्रे०) १)
छोटी बहू (गृ० ल०) १)
जनन-विज्ञान (पा० ऐं० कं०) ३), ३॥)
जननी-जीवन (चाँ० का०) १)
जननी और शिशु (हिं० ग्रं० रा०) ॥=)
जपाकुसुम (ल० ना० प्रे०) २)
जया (ल० रा० सा०) ।-)
ज्ञाना (गं० पु० मा०) ॥=)
जासूस की डाली (गं० पु० मा०) १)
जीवन-निर्वाह (हिं० ग्रं० र०) १)
जेवनार (हिं० पु० ए०) ।-)
तरुण तपस्विनी (गृ० ल०) ।)
तारा (इं० प्रे०) १)
दक्षिण अफ़्रिका के मेरे अनुभव (चाँ० का०) २॥)
दमयन्ती (हरि० कं०) =)॥
" (इं० प्रे०) ।)
दमयन्ती-चरित्र (गृ० ल०)=)॥
दम्पति-कर्तव्य-शास्त्र (सा० कुं०) १)
दम्पत्ति-मित्र (स० आ०) २॥)
दम्पति-रहस्य (गो० ह्वा०) १)
दम्पति-सुहृद (हिं० मं०) १)
दाम्पत्य जीवन (चाँ० का०)२॥)
दाम्पत्य-विज्ञान (पा० ऐं० कं०) २)
दिव्य-देवियाँ (गृ० ल०) १॥=)
दुःखिनी (गृ० ल०) ॥-)
दुलहिन (हि० पु० भं०) ।)
देवबाला (ख० वि० प्रे०) ॥)
देवलदेवी (गृ० ल०) ।-)
देवी चौधरानी (ह० दा०कं०)२)
देवी जोन (प्रका० पु०) ।=)
देवी पार्वती (गं० पु० मा०) १), १॥)
देवी द्रौपदी (पॉपूलर) ॥=)

देवी द्रौपदी (गं० पु० मा०) ॥)
देवी सती " ॥=)
द्रोपदी (ह० दा० कं०) २॥), ३)
धर्मात्मा चाची और अभागा भतीजा (चि०भ० गु०) ।-)
ध्रुव और चिलया (चि० शा० प्रे०) ।-)
नवनिधि (प्रेमचन्द) ॥)
नल-दमयन्ती (सचित्र) व० प्रे०) १॥), १॥), २)
" " (पॉपूलर) ॥)
" " (गं० पु० मा०) ॥)
नवीन शिल्पमाला (हेमन्त-कुमारी) ३)
नन्दन-निकुञ्ज (गं० पु० मा०) १), १॥)
नवीना (हरि० कं०) १॥)
नारायणी शिक्षा (दो भाग) (चि० भ० गु०) ३)
नारी-उपदेश (गं० पु० मा०) ॥)
नारी-चरितमाला (न० कि० प्रे०) ॥=)
नारी-नवरत्न (म० मा० हिं० सा० स०) =)
नारी-महत्त्व ॥)
नारी-नीति (हिं० ग्रं० प्र०) ॥=)
नारी-विज्ञान (पा० ऐं० कं०) २), २॥)
नारी-धर्म-विचार १॥)
निर्मला (चाँ० का०) २॥)
पतिव्रता (इं० प्रे०) १)
" (गं० पु० मा०) १=), १॥=)
पतिव्रता-धर्मप्रकाश १)
पतिव्रता अरुन्धती (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता गान्धारी(इं० प्रे०)॥=)
पतिव्रता मनसा (एस० आर० बेरी०) ॥)
पतिव्रता-माहात्म्य (वें० प्रे०) १)
पतिव्रता रुक्मिणी (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता स्त्रियों का जीवन-चरित्र १=)
पत्नी-प्रभाव (उ० ब० आ०) १)
परिणीता (इं० प्रे०) १)
पत्राञ्जलि (गं० पु० मा०) ॥)
पण्डित जी (इं० प्रे०) १॥)
पाक-कौमुदी (गृ० ल०) १)
पाक-प्रकाश (इं० प्रे०) ।=)
पाक-विद्या (रा० ना० ला०) =)
पाक-चन्द्रिका (चाँ० का०) ४)
पार्वती और यशोदा (इं० प्रे०) ॥=)

प्राचीन हिन्दू-माताएँ (ना० दा० स० ऐं० सं०) १)
प्राणघातक-माला (अभ्यु०) ॥=)
प्राणनाथ (चाँ० का०) २॥)
प्रेमकान्त(सु० ग्रं० प्र० मं०)१॥)
प्रेम-गङ्गा (गं० पु० मा०) १), १॥)
प्रेमतीर्थ (प्रेमचन्द) १॥)
प्रेम द्वादशी १), १॥)
प्रेमधारा (गु० ला० चं०) ॥)
प्रेम-परीक्षा (गृ० ल०) १=)
प्रेम-पूर्णिमा (प्रेमचन्द) (हि० पु० ए०) २)
प्रेम-प्रतिमा (भा० पु०) २)
प्रेम-प्रमोद (चाँ० का०) २॥)
प्रेमाश्रम (हिं० पु० ए०) ३॥)
प्रेम-प्रसून (गं० पु० मा०) १=), १॥=)
बच्चों की रक्षा (हि०पु०ए०)।-)
बड़ी बहू(रा० ना० ला०) ॥=)
बहता हुआ फूल (गं० पु० मा०) २॥), ३)
बड़ी दीदी (इं० प्रे०) १)
वरमाला (गं० पु० मा०) ॥)
बाला पत्र-बोधिनी (इं० प्रे०) ॥)
बाला-बोधिनी (२ भाग) (रा० ना० ला०) १॥)
बाला-विनोद (इं० प्रे०) ।=)
बालिकाओं के खेल (वें० प्रे०) =)
विराजबहू (शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय) (सर० मं०)॥=)
वीर-बाला (चाँ० का०) ४)
ब्याही बहू (हिं० ग्रं० र०) ।)
भक्त स्त्रियाँ (रा० श्या०) ॥)
भक्त विदुर (उ० ब० आ०) ॥)
भगिनीद्वय (चि० शा० प्रे०) ।-)
भगिनी-भूषण(गं० पु० मा०)=)
भारत-सम्राट् (उ० ब० आ०) १॥)
भारत की देवियाँ (ल० प्रे०)।-)
भारत के स्त्री-रत्न(स० सा० प्र० मं०) १=)
भारत-महिला-मण्डल (ल० प्रे०) १)
भारत-माता (रा० श्या०) ।)
भारत में बाइबिल (गं० पु० मा०) ३), ४)
भारत-रमणी-रत्न (ला० रा० सा०) ॥=)
भारतवर्ष की माताएँ (श्या० ला०) ॥)
भारतवर्ष की वीर और विदुषी स्त्रियाँ (श्या० ला०द०) ॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

सनातनधर्म रसातल को चला

[श्री० दीपनारायण गुप्त]

"बाबू रूपनारायण घर में हैं ?"—एक आगन्तुक ने घर का द्वार पीटते हुए कहा।

"कौन, देवेन्द्र ! आया"—कहते हुए रूपनारायण ने घर का द्वार खोल दिया।

देवेन्द्र—अरे यार, दो दिनों से कहाँ गुम हो गए थे ?

रूपना०—कुछ कार्यवश बाहर गया हुआ था। वहाँ एक बोर्डिङ्ग में ठहरा। उसी बोर्डिङ्ग में दो पण्डित जी भी रहते हैं। वे ऐसे बेढब हैं कि तुम सुनो तो दाँतों तले अँगुली काटो।

देवेन्द्र—कहो भी तो।

रूपना०—अपनी आदत के अनुसार कल मैं गण्डक के तट पर वायु-सेवन के लिए गया। मेरे साथ दोनों पण्डित जी भी हो लिए। मेरे ये दोनों साथी अपनी जाति सुलभ सङ्कीर्णता के उतने ही दास थे जितने इनके जाति वाले होते हैं। हम लोग कुछ ही दूर गए होंगे कि देश की सामयिक बातों पर बातचीत होने लगी ! दोनों पण्डितों का नाम जगदीश मिश्र तथा रमापति झा है। मैंने उनसे बातों ही बातों में पूछा कि आपने इस सप्ताह का इलस्ट्रेटेड 'टाइम्स' देखा है।

जगदीश—देखा क्यों नहीं ? इस बार तो राउण्ड-टेबुल में शरीक होने वाले प्रतिनिधियों का चित्र भी छापा गया है।

मैं—तब तो आपने देख ही लिया होगा कि इस प्रतिनिधि-मण्डल में एक बात विशेष आश्चर्य की है। आपने दरभङ्गा नरेश का भी चित्र उसमें पाया होगा। पता नहीं सनातनधर्म-सभा के सभापति, मैथिल-सभा के सभापति तथा रूढ़ि और कट्टरता के पोषक दरभङ्गा के महाराज किस प्रकार समुद्र-यात्रा के लिए प्रस्तुत हो गए। महाराज सदा से मैथिलों के शिरमौर रहे हैं और आज भी हैं। सुना है कि मैथिलों ने हज़ार चेष्टा की, पर हमारे नए महाराज ने एक नहीं माना और समुद्र-यात्रा के लिए उतारू हो ही गए। कहिए पण्डित जी, अब आप लोगों की नाक कैसे बचेगी ?

जगदीश—महाराज हैं तो क्या—उन्हें इङ्गलैण्ड से वापस आते ही जातिच्युत कर दिया जायगा—और तब सारी शेख़ी भूल जायगी।

रमापति—इनको क्या पड़ी थी ? जाति के मैथिल, उसमें भी श्रोत्र, छिः। इन्होंने गद्दीनशीन होते ही दरभङ्गा राजवंश के विमल यश पर कालिमा पोत डाली।

मैं—सेण्टजेम्स पैलेस तथा लण्डन शहर देखने का शौक़ चर्राया होगा। यह क्या कम है ?

जगदीश—हाँ यही तो बात है। मगर इस थोड़े से शौक़ के लिए धर्मधुरीण होकर धर्म की हत्या करना कितना अनुचित है ?

मैं—धर्म की क्या हत्या इसमें होती है, मैं नहीं समझ पाता ! यह अवश्य कह सकते हैं कि दरभङ्गा नरेश की बहुकाल की मर्यादित प्रथा की हत्या हो रही है।

जगदीश—नहीं साहब, इसमें धर्म की हत्या होती है।

मैं—कैसे ?

जगदीश—क्योंकि धर्म-ग्रन्थ इसका निषेध करते हैं।

मैं—नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। और थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाय कि वे इसे निषिद्ध बताते हैं, तो परमात्मा ने हम लोगों को भी अक़्ल विचारने के लिए दी है। यदि विचार से भी यह बुरा हो तो अवश्यमेव हेय है।

जगदीश—विचार से भी यह बुरा प्रतीत होता है ?

मैं—तब तो निस्सन्देह त्याज्य है। मगर आपने किस तरह विचारा, यह मुझे भी बताने का कष्ट उठाइए।

जगदीश—समुद्र पार रहने वालों की सभ्यता बहुत बुरी है—उनका रहन-सहन बुरा है और उनके सामाजिक नियम अश्लीलता के प्रचारक हैं।

मैं—यदि कोई वहाँ जाकर केवल अपने निश्चित उद्देश्य की ही सिद्धि में व्यस्त रहे और वहाँ की सभ्यता में बिलकुल ही न रँगे तो क्या यह तब भी अनुचित है ?

जगदीश—यह अनहोनी बात है।

मैं—सो कैसे ?

जगदीश—जैसे कोई काजल की कोठरी से बिना दाग़ के नहीं लौट सकता।

मैं—मैं उदाहरण पेश कर सकता हूँ।

जगदीश—कीजिए।

मैं—महात्मा गाँधी ही को लीजिए। इङ्गलैण्ड जाते समय उनसे यह कहा गया था कि वहाँ की सभ्यता में मत रँग जाना अर्थात् वहाँ जाकर मदिरा, मांस तथा महिला से सदा अलग रहना। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा का एक-एक अक्षर पूरी सच्चाई के साथ निभाया। इस तरह के अनेक उदाहरण आपको मिल सकते हैं।

जगदीश—मगर सब महात्मा गाँधी ही नहीं होते।

मैं—इसमें क्या शक है ? तब तो आपके विचार से प्रौढ़ दिल वालों पर यह बात लागू नहीं है—यही तो ?

जगदीश—नहीं, सो बात नहीं। धर्म सभी को मना करता है।

मैं—तब तो धर्म की यह ज़्यादती है।

जगदीश—ज़्यादती कैसे ?

मैं—जिन पर विदेशियों की सभ्यता का कोई असर नहीं पड़ सकता वह उन्हें भी रोकता है।

जगदीश—धर्म एक के लिए नहीं होता, सर्वसाधारण के लिए होता है।

मैं—ठीक है। मगर सर्वसाधारण में तो प्रौढ़ दिल वाले भी आ जाते हैं। धर्म के इस नियम में अपवाद की आवश्यकता है। शायद आप इसको महसूस करते होंगे ?

जगदीश—नहीं, अपवाद की कोई आवश्यकता नहीं। सभी अपने को समुद्र-यात्रा करते समय प्रौढ़ दिल वाले समझते हैं, मगर होता ठीक उससे उलटा ही है।

मैं—ख़ैर जाने दीजिए। यह बताइए कि विदेशियों की सभ्यता में क्या-क्या बुरा है। जिसे आप विषाक्त बता रहे हैं।

जगदीश—एक हो तो कहा जाय, यहाँ तो इतने दोष हैं जिनकी गिनती नहीं हो सकती।

मैं—आख़िर।

जगदीश—औरतों की ही बात लीजिए, कैसी आज़ादी दे डाली है; बिलकुल सर पर ही चढ़ा रक्खा है।

मैं—तो क्या आप उन्हें नकेल में नाथ कर पशुओं की तरह बाँध कर रखने के पक्षपाती हैं ?

जगदीश—उन्हें दबा कर रखना ही चाहिए। हम क्या हमारे धर्म-ग्रन्थ सभी इसकी पुष्टि करते हैं। तुलसी दास जी ने औरतों को "ताड़न के अधिकारी" लिखा ही है। और नीति के ग्रन्थों ने उन्हें सदा परवश रखने की सम्मति दी है।

मैं—इसके अलावा और कौन-कौन ख़राबी उनकी सभ्यता में है ?

जगदीश—विदेशियों का धर्म अपने हिन्दू-धर्म का प्रबल शत्रु है। हिन्दू गाय की पूजा करते हैं और वे उसे काटते और खाते हैं। हिन्दू राम कृष्ण की पूजा करते हैं और वे उनकी खिल्ली उड़ाते हैं। वे अपनी माँ और सगी बहन को छोड़ सभी से शादी कर लेते हैं। कहाँ तक गिनाऊँ, उनकी सारी सभ्यता ही उलटी है।

मैं—क्या उसी तरह का आचरण करने वाले अपने भारत में नहीं हैं, जिनके साथ हम लोग सदियों से रहते आए हैं ?

जगदीश—हैं क्यों नहीं, पर उन विदेशियों की संख्या अँगुली पर गिनी जाने लायक़ है। और जितने हैं भी वे नुक़सान पहुँचा ही रहे हैं।

मैं—विदेशियों की बात जाने दीजिए। मैं पूछता हूँ जैसे पुरुषों के आचार-व्यवहार आदि की जो तसवीर आपने खींची है, क्या वैसे यहाँ के निवासी नहीं हैं ? क्या यहाँ पर अपनी माँ-बहन को छोड़ कर शादी करने वाले नहीं हैं ?

जगदीश—आपका इशारा मुसलमानों की ओर है ?

मैं—बेशक।

जगदीश—सो तो ठीक है, मगर लाचारी है।

मैं—तो जब आप वैसे वायु-मण्डल में रह ही रहे हैं, तो फिर समुद्र-यात्रा कर लेने से क्या बिगड़ जायगा ?

जगदीश—जो कुछ भी हो, मैं इसका उत्तर दे चुका हूँ।

मैं—अच्छा फ़र्ज़ कीजिए कि समुद्र का कोई टापू वीरान है और वहाँ बहुत अच्छी सभ्यता वाले लोग आज बस जाते हैं, तो क्या उस टापू में भी समुद्र-यात्रा कर पहुँचना निषिद्ध होगा ?

रमापति—अवश्य होगा।

मैं—वह क्यों ?

रमापति—चूँकि ऐसी प्रथा बहुत दिनों से चली आई है, इसलिए अब उसमें हेर-फेर कौन करे ?

मैं—छिः, आप किसी चीज़ को इसलिए नहीं सुधारना चाहते कि उसकी प्राचीनता नष्ट हो जायगी। देखिए, जो वक़्त की ज़रूरतों को पूरा नहीं करते उन्हें वक़्त बरबाद कर देता है। प्रथा के पिता पुरुष होते हैं, इसलिए उसके संहारकर्त्ता भी दूसरे नहीं होते। उनका संहार भी उन्हीं के द्वारा होता है।

रमापति—जो भी हो, मैं इसे धर्म-विरुद्ध तथा प्रथा-विरुद्ध समझता हूँ। इसके अतिरिक्त अपने में इतनी शक्ति भी नहीं रखता हूँ कि चिरकालीन सामाजिक प्रथा के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाऊँ।

मैं—बस इतनी देर में एक ही सत्य बात आपने कही है कि आपमें उन कुप्रथाओं को तोड़ने की शक्ति नहीं है।

* * *

रूपना०—उपर्युक्त बातों में सन्ध्या हो गई। हम लोग बोर्डिङ्ग लौट आए। मैंने वहाँ रात बिताई और सुबह साढ़े नौ बजे गाड़ी से यहाँ चला आया। भाई, क्या बताऊँ जब तक उन्नति के मार्ग में रोड़े अटकाने वाली ऐसी सड़ी खोपड़ियाँ मौजूद रहेंगी तब तक देश के उद्धार की कोई आशा नहीं। इन लोगों के विचार इतने दूषित तथा सङ्कीर्ण हो गए हैं कि ज़रा से सुधार पर ये कहने लगते हैं कि यह आर्यसमाजी हो गया है या क्रिस्तान होना चाहता है।

देवेन्द्र—न जाने कब ऐसे भूभारों से भारत का पिण्ड छूटेगा। परमात्मा न करें कि ऐसे कूप-मण्डूकों से मुझे कभी पाला पड़े।

रूपना०—ये लोग समाज की गर्दन को पृथ्वी पर ज़ोर से दबाए रखना चाहते हैं ताकि कभी कोई उन्नति न कर सके।

देवेन्द्र—ओह, पूरे वज्र-मूर्खों से तुम्हें काम पड़ा था।

रूपना०—क्या कहूँ—वे क्या थे ?

* * *

कुछ चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकें

भारत की विदुषी नारियाँ (गं० पु० मा०) ॥)
भारतवर्ष की सच्ची देवियाँ (शि० व० बा० व०) ॥=)
भारतीय ललनाओं को गुप्त-सन्देश (गं० पु० मा०) ॥)
भारतीय स्त्रियाँ (,, ,,) १॥)
भारतीय विदुषी (इं० प्रे०) ॥)
भारतीय स्त्रियों की योग्यता (दो भाग) (ख० वि० प्रे०) १)
भार्या-हित (न० कि० प्रे०) ॥|=)
भार्या हितैषिणी (प्रा० का० मा०) १॥)
मँझली दीदी (इं० प्रे०) ॥)
मणिमाला (,,) २)
,, (चाँ० का०) ३)
मदालसा (ल० प्रे०) |-)
मदर-इण्डिया (उमा नेहरू) २॥)
मदर-इण्डिया का जवाब (गं० पु० मा०) १)
मनोरञ्जक कहानियाँ (चाँ० का०) १॥)
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ (चाँ० का०) २)
मनोरमा (चाँ० का०) २॥)
महारानी पद्मावती (ल० प्रे०) |=)
महारानी वृन्दा (एस्० आर० बेरी) १)
महारानी शशिप्रभा देवी (बेल० प्रे०) २)
महारानी सीता (ब० प्रे०) २॥), २|||), ३)
महासती अनुसूया (एस्० आर० बेरी) ॥=)
महासती मदालसा (ब० प्रे०) १|||), २), २|)
महिला-महत्व (हिं० पु० भं०) २)
महिला-मोद (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥)
महिला-व्यवहार-चन्द्रिका (रा० द० अ०) |||)
महिला-स्वास्थ्य-सञ्जीवनी (गृ० ल०) १)
मङ्गल-प्रभात (चाँ० का०) ५)
मञ्जरी (गं० पु० मा०) १), १|||)
माता का पुत्री को उपदेश (रा० प्रे०) ≡)
माता के उपदेश (सर० भं०) |-)
माता-पुत्र (ना० स० ऐ० सं०) १॥=)
मानव-सन्तति-शास्त्र (ख० वि० प्रे०) १)
मानिक-मन्दिर (चाँ० का०) २॥)

मिलन-मन्दिर (हिं० पु०) २॥)
मितव्ययिता (हिं० ग्रं० र०) ॥=)
मीराबाई (ख० वि० प्रे०) ≡)
मुस्लिम-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २), २|), २|||)
मूर्खराज (चाँ० का०) २)
मेहरुन्निसा (चाँ० का०) ॥)
युगलाङ्गुलीय (इं० प्रे०) |-)
युवती-योग्यता (इं० प्रे०) =)
युवती-रोग-चिकित्सा (चि० भ० गु०) |=)
रजनी (उ० ब० आ०) ॥=)
रमणी-कर्त्तव्य (,,) ॥=)
रमणी-पञ्चरत्न (रा० प्रे०) १)
,, ,, (उ० ब० आ०) २॥)
रमणी-रत्नमाला (रा० प्रे०) |=)
उमासुन्दरी (ह० दा० कं०) २|)
रङ्गभूमि (गं० पु० मा०) ५), ६)
राजस्थान की वीर रानियाँ (ल० रा० स०) १)
राधारानी (ख० वि० प्रे०) |=)
रामायणी कथा (अभ्यु०) १)
लक्ष्मी (इं० प्रे०) ॥=)
,, (ओं० प्रे०) १)
,, (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥=)
लक्ष्मी-चरित्र (स० सा० प्र० मं०) १)
,, ,, (उ० ब० आ०) |=)
लक्ष्मी-बहू (गृ० ल०) |≡)
लक्ष्मी-सरस्वती सम्वाद (न० कि० प्रे०) ≡)
लच्छमा (ह० दा० कं०) १|||)
ललना-बुद्धि-प्रकाशिनी (मा० प्र० बु०) |=)
ललना-सहचरी (सु० ग्रं० प्र० मं०) १॥)
वनमाला (चाँ० का०) ३)
वनिता-विनोद (मा० प्र०) ॥=)
वनिता-विलास (गं० पु० मा०) |||)
वनिता-हितैषिणी (रा० प्रे०) |=)
विजया (गं० पु० मा०) १॥)
विदुषी-रत्नमाला (रा० प्रे०) |=)
विदूषक (चाँ० का०) १)
विधवा-आश्रम (ना० द० स०) ४)
विधवा-कर्तव्य (हिं० ग्रं० र०) ॥)
विधवा-प्रार्थना (ग्रं० सं०) |-)
विधवा-विवाह-मीमांसा (चाँ० का०) ३)
,, ,, (व० प्रे०) |=)
विमला (गु० च०) |||)
विरागिनी (ह० दा० कं०) १|)

विलासकुमारी वा कोहेनूर (व० प्रे०) १॥)
विवाहित-प्रेम (स० आ०) १॥), १|||)
विष्णु-प्रिया चरित्र (इ० प्रे०) =)
वीर और विदुषी स्त्रियाँ (ल० बु० डि०) ॥)
वीर माताएँ (,,) |||)
,, ,, (श्या० ला० व०) |||)
वीर माता का उपदेश (अ० सा० मं०) १)
वीरबाला पञ्चरत्न (उ० ब० आ०) २)
वैधव्य कठोर दण्ड है या शान्ति (सा० भ० लि०) ॥≡), १|-)
वैवाहिक अत्याचार और मातृत्व (अ० प्रे०) ॥)
वीर वीराङ्गना (उ० ब० आ०) ॥)
वीराङ्गना (स० आ०) ॥)
व्यञ्जन-प्रकाश (न० कि० प्रे०) १)
व्यञ्जन-विधान (दो भाग) १)
शकुन्तला की कथा (रा० इ० प्र०) |-)
शकुन्तला (ब० ऐं० कं०) ॥=)
,, (न० द० स० ऐं० सं) |||)
,, (ब० प्रे०) २), २|), २॥)
,, (पॉपूलर) ॥=)
,, (ल० प्रे०) १)
शर्मिष्ठा (उ० ब० आ०) ॥)
शर्मिष्ठा-देवयानी (ब० प्रे०) २|), २॥), २|||)
,, ,, (पॉपूलर) ॥)
शान्ता (चाँ० का०) |||)
शिव-सती (ब० प्रे०) ॥=)
शिशु-पालन (इं० प्रे०) १)
,, ,, (स० आ०) १)
शैलकुमारी (चाँ० का०) २)
शैलबाला (ह० दा० कं०) १)
शैव्या (उ० ब० आ०) १), |=)
शैव्या-हरिश्चन्द्र (ब० प्रे०) २॥), २|||), ३)
,, ,, (पॉपूलर) ॥)
सखाराम (चाँ० का०) १)
सचित्र द्रौपदी (बेल० प्रे०) |||)
सच्ची देवियाँ (ला० रा० सा०) |||)
सच्ची स्त्रियाँ (,,) ॥)
सती (इं० प्रे०) १)
सती-चरित्र-चन्द्रिका (नि० बु० डि०) २)
सती-चरित्र-संग्रह (ल० प्रे०) २)
सती-चिन्ता (व० प्रे०) १॥), १|||), २)

सती चिन्ता (उ० ब० आ०) |||)
सती दमयन्ती (ब० प्रे०) ॥=)
,, ,, (उ० ब० आ०) ॥)
सती-दाह (चाँ० का०) २॥)
सती पद्मिनी (गृ० ल०) |=)
सती पार्वती (गं० पु० मा०) १)
,, ,, (पॉपूलर) ॥)
,, ,, (ब० प्रे०) २), २|), २॥)
सती-बेहुला (ब० प्रे०) २|), २॥), २|||)
सती मदालसा (उ० ब० आ०) ॥)
सती-महिमा (उ० ब० आ०) १), १॥)
सती-वृत्तान्त (ला० रा० सा०) १॥)
सती शकुन्तला (ब० प्रे०) ॥=)
सती शुक्ला (उ० ब० आ०) ॥)
सती-सतीत्व (उ० ब० आ०) १)
सती-सामर्थ्य (,,) |||), १)
सती सावित्री (ना० द० स० ऐं० सं०) १=), १)
,, ,, (ब० प्रे०) ॥=)
,, ,, (उ० ब० आ०) ॥)
सती सीता (ब० ऐं० कं०) ॥=)
,, (ब० प्रे०) ॥=)
,, (उ० ब० आ०) १)
सती सीमन्तिनी (एस्० आर० बेरी) |||)
सती सुकन्या (ब० प्रे०) १), १॥), १|||)
,, (उ० ब० आ०) ॥)
सती सुचरित्र (उ० ब० आ०) १)
सती सुनीति (उ० ब० आ०) |||)
सती सुलक्षणा (एस्० आर० बेरी) ॥)
सप्त-सरोज (हिं० पु० ए०) ॥)
सफल-गृहस्थ (सा० भ० लि०) |||)
सदाचारिणी (गृ० ल०) १|-)
सफल माता (चाँ० का०) २)
समन्वय (भा० ग्रं० भं०) ३|||)
समाज की चिनगारियाँ (चाँ० का०) ३)
सरल व्यायाम (बालिकाओं के लिए) (इं० प्रे०) |=)
सन्तति-विज्ञान (वे० प्रे०) ॥|=)
सन्तान-कल्पद्रुम (हिं० ग्रं० र०) १)
सन्तान-शास्त्र (चाँ० का०) ४)
संयुक्ता (पॉपूलर) ॥=)
संयोगिता (मा० का०) ॥)
संयोगिता (ह० दा० कं०) |-)
संसार की असभ्य जाति की स्त्रियाँ (प्रका० पु०) २॥)

सावित्री (ब० प्रे०) |=)
,, (हिं० पु० भं०) ॥)
,, (हरि० कं०) १॥)
सावित्री और गायत्री (बेल० प्रे०) ॥)
सावित्री-सत्यवान (उ० ब० आ०) |≡)
,, ,, (ब० प्रे०) १॥), १|||), २)
,, ,, (स० आ०) ॥), १)
,, ,, (पॉपूलर) |||)
सीता की अग्नि-परीक्षा (स० सा० प्र० मं०) |-)
सीता-चरित्र (इं० प्रे०) १॥)
सीता जी का जीवन-चरित्र (रा० प्रे०) १)
सीताराम (उ० ब० आ०) १)
सीता-वनवास (इं० प्रे०) ॥=)
,, ,, (ब० ऐं० को०) ॥=)
,, (स० आ०) ॥|=), १=)
सीता (सचित्र) (ब० प्रे०) २॥)
सीतादेवी (पॉपूलर) ॥=)
सुकुमारी (ओं० प्रे०) ॥=)
सुखी गृहस्थ (प० ला० सिं०) ॥)
सुघड़ चमेली (गं० पु० मा०) =)
सुघड़ दर्ज़िन (इं० प्रे०) ॥)
सुघड़ बेटी (सर० प्रे०) ॥)
सुनीति (उ० ब० आ०) ॥)
सुभद्रा (ब० प्रे०) २), २|), २॥)
सुहागरात (इं० प्रे०) ४)
सुर-सुन्दरी (ग्रं० भं०) |-)
सुशीलाकुमारी (सर० प्रे०) ॥)
सुशीला-चरित (इं० प्रे०) १॥)
सुशीला विधवा (वें० प्रे०) ५)
सुन्दरी (श्री० वि० ल० ज्ञा० मं०) ॥)
सुभद्रा (पॉपूलर) ॥=)
सौभाग्यवती (इं० प्रे०) ५)
सौरी-सुधार (इं० प्रे०) ॥)
सौन्दर्यकुमारी (ओं० प्रे०) ≡)
स्त्रियों की पराधीनता (बदरीनाथ भट्ट) ॥)
स्त्रियों की स्वाधीनता (श्री० वि० ल० ज्ञा० मं०) ॥)
स्त्री के पत्र (चन्द्रशेखर) ५)
स्त्रियों के रोग और उनकी चिकित्सा (इं० प्रे०) ५)
स्त्री-रोग-विज्ञानम् (चाँ० का०) ३)
स्त्री-उपदेश (न० कि० प्रे०) |=)
स्त्री और पुरुष (स० सा० प्र० मं०) |-)
स्त्री-कर्तव्य (ख० वि० प्रे०) ॥)
स्त्री-चर्या (ब० कं०) ॥)

आर्य-समाज में संशोधन की आवश्यकता

ऋषि दयानन्द के उत्तराधिकारी

["एक आर्य"]

ऋषि दयानन्द के उत्तराधिकारियों में मैं सर्वप्रथम जिस पुरुष का नाम लेना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ वह पं० भीमसेन जी हैं। ये सज्जन ऋषि दयानन्द के शिष्य और विश्वासी व्यक्ति थे, कारणवश पीछे सनातनधर्मी हो गए थे। आज तक भी आर्य-समाज ने उनके मुक़ाबिले का विद्वान नहीं पैदा किया। ऋषि दयानन्द ने वेदों पर सब से बढ़ कर ज़ोर दिया था—वेदों के पं० भीमसेन जी अपने ढङ्ग के अद्वितीय विद्वान् थे। आपने 'आर्य-सिद्धान्त' नाम से जो लेखमाला लिखी थी वह अपनी श्रेणी की अकेली वस्तु है। आर्य-समाज की भीतरी खटपट ने उन्हें असन्तुष्ट कर दिया और वे आर्य-समाज से पृथक हो गए। परन्तु इतना होने पर भी वेद उनके जीवन का मुख्य विषय हो गया था। और अन्त में वे कलकत्ता यूनिवर्सिटी के वेद-व्याख्याता पद पर रह कर मरे। वेदों पर आर्य-समाज को त्यागने पर भी जो कुछ उन्होंने लिखा वह साधारण न था।

पं० भीमसेन जी के बाद दूसरे नाम की जगह पं० गुरुदत्त जी का नाम हठात् दिमाग़ में घुस आता है। ये अङ्गरेज़ी दर्शन-शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे, और स्वामी जी की मृत्यु-वेदना देख कर ईश्वरवादी हुए थे। आपने पाश्चात्य दृष्टि से आर्य-समाज के गम्भीर सिद्धान्तों पर जो लिखा वह असाधारण है। आज भी अनेक प्रकाण्ड विद्वानों के आर्य-समाज में पैदा होने पर भी वैसा गम्भीर साहित्य नहीं तैयार किया गया। लाजपतराय जैसे वीर-केसरी व्यक्तियों को आर्य-युवकों में से निकालने वाले पुरुष उक्त पण्डित जी ही थे। खेद है कि उनकी मृत्यु अत्यन्त अल्प अवस्था में हो गई।

इनके बाद पं० लेखराम जी का नम्बर आता है, जिन्होंने शुद्धि-आन्दोलन को हाथ में ले लिया था। और जो बड़ी वीरतापूर्वक एक मुसलमान आततायी के हाथ से क़त्ल किए गए। आप बड़े साहसी, दबङ्ग, मज़बूत और कट्टर व्यक्ति थे। बोलने में तेज था, और वचन में प्रभाव था। आपने जिस पुरुष को अपने मिशन का उत्तराधिकार सौंपा वह जगत् विख्यात स्वामी श्रद्धानन्द जी थे जो उस समय मुन्शीराम वकील थे।

इनके बाद तीन प्रमुख पुरुषों का नाम एक साथ ज़बान पर आता है—१-महात्मा मुन्शीराम; २-महात्मा हंसराज ; ३-लाला देवराज।

महात्मा मुन्शीराम ने आदर्श वैदिक परिपाटी पर गुरुकुल खोला और एक उत्तम नमूना ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त का, ब्रह्मचारियों की शिक्षा का, समाज के सामने पेश किया। इस काम में उन्होंने अपनी आयु के ३० वर्ष व्यतीत कर दिए।

दूसरे व्यक्ति महात्मा हंसराज जी ने हिन्दू-संस्कृति को बनाए रख कर अङ्गरेज़ी तालीम देने को कॉलेज खोला। और आज पञ्जाब में जो जीवन दीख पड़ रहा है उसका श्रेय बहुत कुछ इस संस्था को है। अङ्गरेज़ी की उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी उक्त कॉलेज के ग्रेजुएट उस शिक्षा के ग़ुलाम नहीं, प्रत्युत देश-भक्त और हिन्दू संस्कृति के रक्षक हैं।

तीसरे महानुभाव ने स्त्री-शिक्षा को हाथ में लेकर जालन्धर में एक अद्भुत संस्था खोल दी और अपना जीवन उसमें लगा दिया। आज पञ्जाब की स्त्री-जाति में जो कुछ भी तेज दीख रहा है वह उक्त विद्यालय की विभूति है।

इन तीनों महानुभावों को कैसे-कैसे सहायक मिले; कैसे कठिन जीवनों का उल्लङ्घन करके उन्होंने अपने मिशन को सफल किया, इसका इतिहास कभी लिखा जाय तभी उसका वर्णन हो सकता है।

अब लाला लाजपतराय की बारी आती है, जिन्होंने ऋषि की राष्ट्रीयता और राजनीति को एक मूर्तिमान रूप दिया। और आज उसके नाम से समुद्र की लहरें हिल उठती हैं। वैसे नर-केसरी कब-कब पैदा होते हैं? और किनको परमेश्वर वैसी छाती प्रदान करता है?

इन 'पुण्य पुरुषों' के नाम के बाद अब दो और विद्वानों का नाम सम्मुख आता है। एक श्री० स्वामी दर्शनानन्द और दूसरे पं० गणपति शर्मा। प्रथम पुरुष को औलिया कहा जा सकता है। आप अद्भुत तार्किक व्यक्ति थे, और सच पूछा जाय तो महात्मा मुन्शीराम जी से भी प्रथम इन्हीं ने गुरुकुल की प्रणाली को जारी किया था। अस्वाभाविक मस्त, बेग़र्ज़, निर्भय, आनन्दी व्यक्ति थे। साधु पुरुष के स्वाभाविक गुण आपमें जन्म ही से थे। आपकी क़लम क्या थी—छुरी थी—चीरती चली जाती थी। आप ठिगने, मोटे, गोल-मटोल पुरुष थे। जल्दी-जल्दी बोलते थे, हकलाते भी थे, पर प्रत्येक बात के अन्त में एक हास्य की रेखा आपके मुख पर आ जाती थी और वह अद्भुत प्रभाव लाती थी। लेखक को उनकी वह मूर्ति भी याद है जब वे पञ्जाबी साफ़ा बाँधे, पञ्जाबी छोटा कोट, ढीला पाजामा पहिने, कानों में सोने की मुर्की पहने फिरते थे। और वह भी याद है जब उन्होंने एक कम्बल की कफ़नी पहन कर संन्यासी वेश में प्रथम बार लेखक को दर्शन दिया था।

पं० गणपति शर्मा एक अद्भुत प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। दुबले-पतले, सूखे, काले, छोटा सा कोट, घुटनों तक की धोती, हाथ में नारियल और चुपचाप मूढ़ की तरह घण्टों बैठे रहना, और बच्चों से खेलने लगना। पर जब वेदान्त और ईश्वर विषय की चर्चा हो तो १०-१० हज़ार की संख्या को मूर्च्छित कर देना उनका काम था। प्रकाण्ड वेदान्ती और संस्कृत के ज्ञाता थे। उनकी धारावाही संस्कृत के सामने बड़े-बड़े विद्वान न टिक सकते थे। युक्ति और प्रतिभा तो उनके हिस्से में थी। बोलते थे—मानो हास्य, विनोद, विवेक का फ़व्वारा चल रहा हो।

इन दो महापुरुषों ने ऋषि दयानन्द का कौन सा काम सँभाला? शास्त्रार्थ और खण्डन-मण्डन का। और अपने जीवन में वह हलचल मचाई कि जिसका उदाहरण भी आज नहीं मिल सकता। इसके बाद पं० तुलसीराम का नाम आता है जिन्होंने स्मृति, दर्शन, वेद आदि के भाष्य करने शुरू कर दिए। आप शास्त्रार्थ भी करते थे और रचनाएँ भी करते थे। यदि हम यह कहें कि स्वामी तुलसीराम के बाद फिर आर्य-समाज के प्रौढ़ साहित्य के रचयिता ही नहीं पैदा हुए तो अत्युक्ति न होगी।

पं० आर्यमुनि, पं० शिवशङ्कर और अनेक अन्य विद्वानों और आर्य पुरुषों का नाम भी उल्लेख के योग्य है जिन्होंने भिन्न-भिन्न रीति से आर्य-समाज की नींव को मज़बूत किया और आज वह दृढ़ता से जम गई है।

अब सिर्फ़ एक ऐसे महान व्यक्ति का नाम रह गया है कि जिसकी बराबरी का कोई पुरुष आर्य-समाज में ऋषि दयानन्द के बाद नहीं पैदा हुआ, जिसने आर्य-समाज में युग परिवर्तन कर दिया, और जिसके व्यक्तित्व का प्रभाव जगत्-व्यापक रह गया। यह महान पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द हैं। मैं पीछे गुरुकुल के प्रतिष्ठाताओं में महात्मा मुन्शीराम का नाम उल्लेख कर आया हूँ। और स्वामी श्रद्धानन्द वही व्यक्ति हैं। परन्तु मैं वास्तव में स्वामी श्रद्धानन्द को एक दूसरा ही व्यक्ति मानता हूँ। इस विचित्र व्यक्ति ने युगधर्म के अनुसार आर्य-समाज की स्प्रिट को बदल दिया। ऋषि दयानन्द ने योद्धा की भाँति काम किया और स्वामी श्रद्धानन्द ने शान्ति, सुलह, सङ्गठन की सुव्यवस्था की। ऋषि दयानन्द ने जब हिन्दुओं को ललकारा तो आर्य-समाज और हिन्दू-समाज ख़म ठोक कर अखाड़े में उतर आए। स्वामी श्रद्धानन्द उन्हें परस्पर गले मिला कर भाई-भाई बनाया, हिन्दू-सङ्गठन की आवश्यकता बताई, आर्य-समाज को पन्थ होने से बचाने की चेष्टा की, आर्यों को हिन्दुओं का विश्वासी सिद्ध किया, शुद्धि, अछूतोद्धार और सङ्गठन का क्रियात्मक कार्य अत्यन्त दृढ़ और गहरे पैमाने पर किया। इन सब के साथ उन्होंने साहसपूर्वक राजनीति और धर्मनीति का सहयोग कर दिखाया। और आज हिन्दू और आर्य जो इतने निकट हैं, इसका उत्तम फल शीघ्र ही देश को मिलेगा। (शेष फिर कभी)

* * *

वहाँ जाने से क्या हासिल?

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

न पूछे कोई महफ़िल में,
तो फिर जाने से क्या हासिल?
नतीजा क्या है पछताने का,
पछताने से क्या हासिल?
कोई समझाए क्या उनको,
न समझे हैं, न समझेंगे।
समझ ही जब नहीं इतनी,
तो समझाने से क्या हासिल?
समझते थे, कि ख़ातिर—
ख़ूब होगी उनकी महफ़िल में!
किसी ने भी न पूछा कुछ,
वहाँ जाने से क्या हासिल?
तुझे ऐ साक़ी दिल—
सोज़े जिगर, दिल में, कलेजे में
मुहब्बत की बुझी आग—
और भड़काने से क्या हासिल?
गवाँते हैं ख़ुद अपने हाथ से,
जो आबरू अपनी।
बड़े नादान हैं वह, उनको—
समझाने से क्या हासिल?
ज़माना जानता है,
क्या हुई परदेश में ज़िल्लत!
कोई कह दे वतन में,
अब उन्हें से क्या हासिल?
यह क्या करते हो तुम, "बिस्मिल"—
को भी बिस्मिल बनाते हो
तड़पता हो जो यूँ ही—
उसको, तड़पाने से क्या हासिल?

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

इस बार मुझे एक ऐसी बारात में जाना पड़ा, जिसमें लड़के के पिता से लेकर ख़िदमतगार तक सब आर्यसमाजी। मुझे यह आशा थी कि आर्यसमाजियों की बारात में सनातनधर्मियों के जैसे ढोंग तथा रीति-रिवाज न होंगे। बात भी ऐसी ही निकली। उनमें वे बातें नहीं थीं, परन्तु जो कुछ था वह उन बातों से भी बाज़ी मार ले गया। मैं तो देख कर चकित रह गया। उसे देख कर तो किसी भी व्यक्ति की यह धारणा हो सकती थी कि अधिकांश आर्यसमाजी दम्भी, अहङ्कारी, बक्की तथा झगड़ालू होते हैं।

अच्छा, अब बारात का वर्णन सुनिए। नियुक्त समय पर मैं स्टेशन पहुँचा। मेरी आँखें बारात की खोज कर ही रही थीं कि कानों में "महाशय जी" "महाशय जी" का शब्द सुनाई पड़ा। बस फिर क्या था—समझ में आ गया कि बारात उसी स्थान पर है, जहाँ से यह आवाज़ आ रही है। आवाज़ की सीध पर चला तो बारात के ठीक बीचोबीच पहुँच गया। कुछ देर तक तो वहाँ "महाशय जी" के अतिरिक्त कुछ सुनाई न पड़ा, तदुपरान्त यह पता लगा कि किसी विषय पर गरमागरम बहस हो रही है। एक अधेड़ महाशय जी कह रहे थे—परकीरती का क्या नेम है ? आपको मालूम है ?

मैंने पूछा—क्यों महाशय जी, यह परकीरती कौन है ?

इस पर वह मुस्करा कर बोले—आप इतना भी नहीं जानते। परकीरती वह है, जिसे आप नेचर कहते हैं—परकीरती के मानी क़ुदरत।

मैंने कहा—मैं परकीरती को नेचर कदापि नहीं कहता। नेचर तो परकीरती का नेम (नाम) है—जो आप अभी पूछ रहे थे।

इस पर वह पुनः इस प्रकार हँसे मानो मैं एक अपढ़ गँवार था। उन्होंने कहा—अरे भाई, नेम से मेरा मतलब नाम से नहीं है, नेम क़ायदे को कहते हैं—या रूल कहो, बात एक ही है।

मैंने कहा—आपका मतलब समझना बड़ी टेढ़ी खीर मालूम होता है। देखिए कुछ दिन साथ रहा तो अभ्यास हो जायगा।

जब तक गाड़ी नहीं आई तब तक बहस बराबर जारी रही। गाड़ी के आने पर थोड़ी देर के लिए बहस जान-बूझ कर बन्द कर दी गई। गाड़ी में बैठ जाने पर फिर बहस आरम्भ हुई। एक बड़े पुराने महाशय जी, जिनका सारा सिर श्वेत हो गया था, बोले—भाई, उस बहस का क्या नतीजा निकला।

एक नवयुवक महाशय जी बोल उठे—अभी तक तो कुछ नहीं निकला।

मैंने कहा—तो छोड़िए नहीं, उसे निकाल ही लीजिए, रह गया तो सम्भव है कुछ हानि पहुँचावे।

वृद्ध महाशय जी ने मेरी ओर घूर कर देखा। उसी समय मैंने एक ज़ोर की जँभाई ली। वृद्ध महाशय जी अपना पोपला मुँह जल्दी-जल्दी चलाते हुए दूसरी ओर देखने लगे। मैंने मन में सोचा—दाँत नहीं हैं इससे कलेजा मसोस कर रह गया, अन्यथा कच्चा चबा जाता। चलो, जान बची लाखों पाए। इनके दाँत हमारे ही भाग्य से टूट गए।

एक अन्य महाशय जी मुझसे बोले—क्यों महाशय जी—

उनकी बात पूरी होने के पूर्व ही मैं बोल उठा—आप कृपया मुझे महाशय जी न कह कर दुबे जी, अथवा केवल विजयानन्द कहें।

वह बोले—क्यों, ऐसा क्यों ? क्या महाशय जी कोई ख़राब शब्द है ?

मैंने कहा—ख़राब बिलकुल नहीं है। किन्तु बात यह है कि यहाँ काफ़ी से ज़्यादा महाशय जी जमा हो गए हैं, इसलिए अधिक संख्या बढ़ाना व्यर्थ है।

मेरा यह उत्तर सुन कर उन्होंने मौन धारण करना ही उचित समझा। इसके पश्चात फिर कोई बहस न हुई—हाँ, दो-दो, तीन-तीन व्यक्ति धीरे-धीरे परस्पर बातें करते रहे। मैंने देखा कि इन लोगों को बहस करने की बीमारी है। जिस दिन कहीं बहस करने को न मिले, उस दिन भोजन न पचे। जहाँ किसी ने कोई बात आर्य-समाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध कही, बस तुरन्त उसको टेंटुवा लिया। दुर्भाग्य से दो-तीन सनातनधर्मी इनके बीच में आ फँसे थे, बस उन्हीं से इन लोगों की बहस हुआ करती थी। इनमें से एक पण्डित थे, जोकि कर्म-काण्ड कराने के लिए साथ आए थे। इन बेचारों की पूरी छीछालेदर थी। पुरानी चाल के सीधे-सादे पण्डित—बहस-मुबाहिसे से कोसों दूर रहने वाले, परन्तु महाशय जी गण इन्हें ठोंक-पीट कर वैद्यराज बनाने की धुन में थे।

ख़ैर साहब, बारात निश्चित स्थान पर पहुँची। स्टेशन पर जो लोग स्वागत करने आए थे, उन्हीं से कुछ महाशय लोग बहस करने पर कटिबद्ध हो गए। लड़की वाले की ओर के एक आदमी ने कहीं कह दिया—"आप लोग ज़रा जल्दी करें—गाड़ियाँ खड़ी हैं, सवार हो जाइए—देर करने से विवाह की लग्न निकल जायगी।" बस उसका इतना कहना था कि दो-तीन महाशय जी भूत की तरह उसके पीछे लग गए। एक बोला—"क्यों साहब, लग्न किस चिड़िया का नाम है ?" दूसरा बोला—"लग्न निकल जायगी तो क्या होगा ?" तीसरे ने कहा—"किसी विशेष लग्न में विवाह होने की बात किस ग्रन्थ में लिखी है ?" वह बेचारा हक्का बक्का हो गया। परन्तु वह भी था बड़ा चलता हुआ। उसने तुरन्त ही हवास ठीक करके कहा—"जान पड़ता है आपके यहाँ विवाह नहीं होता, निकाह होता है।" इतना कह कर वह वहाँ से टल गया। महाशय जी लोग "ज़रा सुनिए तो" कहते रह गए।

एक बोला—इन्हें पहचान लिया है न ? जनवासे में चल कर इन्हें समझेंगे।

बारात जनवासे पहुँची। वहाँ पहुँच कर सब लोग, अपनी-अपनी जगह और असबाब सँभालने में लग गए, इससे बहस बन्द रही।

लड़की वाला सनातनधर्मी था और विवाह ठेठ सनातनधर्मी रीति के अनुसार करना चाहता था। इधर महाशय जी गण वैदिक रीति के अनुसार विवाह करना चाहते थे। इस पर बड़ा वाद-विवाद रहा। इस समय कुछ महाशय जी लोगों की तत्परता देखने योग्य थी। बाँहें समेट-समेट कर बहस करने के लिए आगे बढ़े चले आते थे। बातें इतने अधिकारपूर्ण ढङ्ग से कहते थे कि मानो अल्लाह मियाँ के छोटे भाई हैं। बात-बात में वेदों का हवाला देना तो इन लोगों का तकिया-कलाम सा था। परन्तु ईश्वर झूठ न बुलवाए, उनमें से अधिकांश ऐसे थे, जिन्होंने वेदों की कभी सूरत भी न देखी थी।

परन्तु लड़की वाला टस से मस न हुआ। उसने स्पष्ट कह दिया कि विवाह सनातनधर्म के अनुसार होगा। इसी समय एक महाशय जी बोल उठे—अच्छा, इस विषय पर शास्त्रार्थ हो जाय।

मुझसे न रहा गया। मैंने कहा—आप बहुत ठीक कहते हैं। शास्त्रार्थ अवश्य होना चाहिए—विवाह हो चाहे न हो। यदि आप लोगों ने यह मसला तय कर दिया कि विवाह वैदिक रीति से होना चाहिए अथवा सनातनधर्मी रीति से तो बड़ा उपकार होगा। ऐसे महत्वपूर्ण मसले को सुलझाने के लिए यदि विवाह भी रोक दिया जाय तो कोई बुरी बात नहीं।

इस पर एक महाशय जी बड़े प्रसन्न हुए। बोले—आप ठीक कहते हैं दुबे जी। ऐसा अवश्य होना चाहिए। इस विषय पर आर्यसमाजी और सनातनधर्मी वर्षों से झगड़ रहे हैं—आज यह तय हो जाना चाहिए।

मैंने कहा—तो बस श्रीगणेश—अरे तोबा, क्षमा कीजिएगा, भूल गया, वेद भगवान का नाम लेकर आरम्भ कीजिए। विवाह इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितनी कि यह बात है।

लड़की का पिता बोला—यह कुछ नहीं होगा। मैंने पहले ही यह कह दिया था कि विवाह सनातनधर्म की रीति से होगा। यदि आपको नहीं करना था तो सम्बन्ध क्यों किया ? आप ख़ूब शास्त्रार्थ कीजिए, मैं मना नहीं करता, परन्तु यदि विवाह का मुहूर्त टल गया तो फिर मैं विवाह नहीं करूँगा।

इतना कह कर लड़की का पिता वहाँ से चला गया।

लड़के का बाप बोला—तो ख़ैर, जैसा वह चाहें वैसा ही होने दो। उन्हें अज्ञान में पड़े रहना ही पसन्द है तो पड़ा रहने दो—हमारा क्या बिगड़ता है। हमें तो अपने काम से काम है।

दो-चार महाशय, जो शास्त्रार्थ का आनन्द लूटने के लिए उतावले हो रहे थे, बोले—शास्त्रार्थ होने में हर्ज क्या है, हो जाने दीजिए।

"विवाह का मुहूर्त जो टल जायगा !"—लड़के का पिता बोला।

"टल जाने दीजिए। मुहूर्त को यहाँ मानता ही कौन है ?"

"लड़की का पिता क्या कह गया है—सुना था ?"

"यह सब कोरी धमकी है।"

इतने में दूल्हा मियाँ ने भी कान फटफटा डाले और कहा—नहीं, यह बेजा बात है। जैसा वह कहें वैसा ही करना चाहिए।

मैंने कहा—दूल्हा ठीक कहते हैं। इस झगड़े में मारे इन्हीं के जायँगे—आप लोग तो शास्त्रार्थ करके घर की राह लेंगे। आप लोग चाहे शास्त्रार्थ करें या पुरुषार्थ, परन्तु इन बेचारों की पकी-पकाई कढ़ी न बिगाड़ें !

मेरी बात सुन कर दूल्हा जी खाँसते हुए वहाँ से खिसक गए।

अन्त में सनातनधर्म की रीति के अनुसार विवाह करना निश्चित हो गया। यद्यपि इस पर कुछ महाशय जी बहुत भुनभुनाए। एक महाशय बोले—जनाब, यही कमज़ोरी तो हम लोगों का नाश किए हुए है। लड़के का विवाह क्या होता नहीं—यहाँ न होता, दूसरी जगह होता।

दूसरे दिन जनवासे में यह सूचना दी गई कि आज गाना होगा। मैंने सोचा चलो अच्छा है—कुछ देर तबीयत बहलेगी। यहाँ तो जब से आए हैं तब से शास्त्रार्थों के मारे नाक में दम है। शाम को एक महाशय जी आए। उन्होंने एक ऊँचे स्टूल पर हारमोनियम रक्खा और बोले—सज्जनो, सनातनधर्मी कृश्न को औतार मानते हैं—तो अगर उन्हीं की तरह हम लोग भी मेहरिशी को औतार मानें तो क्या हर्ज है? कृश्न ने गीता लिखी, मेहरिशी ने सत्यारथ-परकाश लिखा। इसीलिए तो कहा है—(गाते हुए) आ-आ-आ—"देखो तो स्वामी कैसा उपकार कर गया है। एजी उपकार कर गया है—हाँ-हाँ उपकार कर गया है।" सज्जनो! सत्यारथ-परकाश के मानिन्द पुस्तक दुनिया के पर्दे पर नहीं है। अहाहाहा—पुस्तक क्या है, वेदों का सार है, ज्ञान का भण्डार है, अज्ञानियों के लिए ख़ुदा की मार है और जो उस पर अमल करे उसका बेड़ा पार है। सुनिएगा—कहते हैं—"(गाते हुए) स्वामी जी ने कर दिया अन्धकार को दूर।" वाहवा, क्या कविताई है—क्या शायरी है! स्वामी जी ने अन्धकार को दूर कर दिया?

मैं बोल उठा—हाँ, ज़रा फिर कहिए—क्या कर दिया।

> स्वामी जी ने कर दिया अन्धकार को दूर।
> अब भी जो देखे नहीं वह है पूरा सूर॥

मैं चिल्ला उठा—"वाहवा, क्या कविताई है—कविताई क्या है, शायरी की भौजाई है। ऐसी कविताई अब तक सुनने में नहीं आई है। ऐसा स्वाद आया मानो मलाई है।" गायक महोदय रेशाख़त्मी होकर बोले—आजी, इसके सामने मलाई की क्या हैसियत है—यह तो अमृत है, आबेहयात है।

सम्पादक जी, कहाँ तक कहूँ—इसी प्रकार वह कमबख़्त घण्टे भर तक झख मारता रहा। कभी गाता और कभी व्याख्यान देने लगता। हारमोनियम भी वही अमृतसरी भोंपू था, जिसका एक सुर दबाए तो अन्य चार स्वर अपने आप ही चिल्लाने लगें। मेरा तो दिमाग़ परेशान हो गया। सङ्गीत की दुर्दशा जैसी इन आर्यसमाजी उपदेशकों ने की है, वैसी कदाचित ही किसी ने की हो। मैंने एक महाशय जी के कान में कहा—मेरी सलाह तो यह है कि ऐसे में आर्य-समाज का सालाना जल्सा कर डालिए। आदमी भी काफ़ी हैं और फ़ुरसत भी ज़रूरत से ज़्यादा है।

वह बोले—आप भी क्या मज़ाक़ करते हैं, यह जल्से का मौक़ा है। यह तो गाने-बजाने, आनन्द करने का मौक़ा है।

मैंने कहा—तो क्या आप इसी को गाना-बजाना और आनन्द करना समझते हैं?

"क्यों, और आप चाहते क्या हैं? क्या रण्डी का नाच हो?"

"आपका कथन भी ठीक है। दुनिया में गाने-बजाने और आनन्द करने के ये दो ही ढङ्ग हैं—या तो रण्डी या फिर उपदेश और व्याख्यान। किसी कम्बख़्त ने कोई तीसरा ढङ्ग ईजाद ही नहीं किया।"

विदा वाले दिन लड़की वाले के द्वार पर विदाई की रस्में पूरी की जा रही थीं। उसी समय एक महाशय जी खड़े हो गए और बोले—"सज्जनो, मैं दो शब्द कहना चाहता हूँ। उससे आप लोगों का लाभ कम है, परन्तु वर और कन्या का लाभ अधिक है। ईश्वर ने स्त्री और पुरुष का जोड़ा क्यों बनाया है? इसलिए कि अच्छी सन्तान पैदा हो। सन्तान कैसे पैदा होती है—स्त्री का रज और पुरुष का वीर्य मिलने से।" इसके पश्चात् उपदेशक जी ने लड़के-लड़की को समझाने के लिए यह बताना आरम्भ किया कि प्रसङ्ग कैसे करना चाहिए, कब करना चाहिए—इत्यादि-इत्यादि। वहाँ पर लड़की का पिता, भाई तथा अन्य बड़े लोग बैठे थे—पर्दे के पीछे स्त्रियाँ बैठी थीं, परन्तु उस दुष्ट ने कुछ परवा न की। बकता ही गया। वे बेचारे चुपचाप सिर झुकाए सुनते रहे—आख़िर करते क्या?

मुझे बड़ा क्रोध आया। मैंने सोचा, यह उपदेशक है या घसियारा, जिसे साधारण अवसर-ज्ञान भी नहीं। लानत है ऐसे उपदेश पर। परन्तु महाशय जी गण बड़े प्रसन्न थे कि क्या सुन्दर उपदेश हो रहा है।

उपदेशक जी जब झख मार कर बैठे, तो मैंने उनसे कहा—आप धन्य हैं। यदि आप जैसे उपदेशक हों तो फिर लोग ब्रह्मचारी, तेजस्वी और पराक्रमी सन्तान के अतिरिक्त और किसी प्रकार की सन्तान उत्पन्न ही न कर सकें।

वह ऐसे उल्लू के पट्ठे थे कि मुस्करा कर बोले—आपने अभी मेरा व्याख्यान सुना कहाँ है! यहाँ व्याख्यान देने का समय कहाँ था? समय होता तो मैं सुनाता।

मैंने कहा—जितना सुना वही जन्म-भर आपका स्मरण दिलाता रहेगा।

विदा की रसूमात में भी बड़ा झगड़ा हुआ। महाशय जी गण अपने मतलब की बात तो बिना कान-पूँछ हिलाए मान लें और जो लड़की वाले के मतलब की हो उसे कह दें—"यह सब ढोंग है, हम लोग इसे नहीं मानते। यदि वैसे न मानो तो बहस कर लो।" लड़की वाले बेचारे की नाक में दम हो गया। कहाँ तक बहस करे और किस-किस से बहस करे। वह बेचारा तो विवाह के प्रबन्ध के मारे परेशान था।

सम्पादक जी, इस प्रकार जितने दिनों बारात रही, महाशय जी गण शास्त्रार्थ, उपदेश और व्याख्यान की ही धुन में रहे। बहस करने के लिए लोगों को पकड़ते फिरते थे। इस सम्बन्ध में नवयुवकों का जोश देखने ही योग्य था। वे प्रत्येक समय आस्तीनें समेटे रहते थे। मतभेद होने पर बड़े से बड़े विद्वान को उल्लू और गधा की उपाधियों से अलङ्कृत कर देना उनके लिए साधारण बात थी।

जिस दिन बारात विदा हुई उस दिन मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। घर आया तो दो दिन तक रात को स्वप्न में शास्त्रार्थ, उपदेश और व्याख्यान ही सुनता रहा। ऐसी बारात से भगवान बचावे। बारात थी या व्याख्यानदाताओं और उपदेशकों का अखाड़ा! ग़नीमत यही हुई कि लात-जूता नहीं चला।

अब जब कभी किसी बारात में जाऊँगा, तो पहले यह पूछ लूँगा कि आर्य-समाजियों की बारात तो नहीं है? यदि आर्य-समाजियों की बारात हुई तो कॉस्टर-ऑयल पीकर पड़ा रहूँगा, यह मन्ज़ूर है, परन्तु बारात भूल कर भी न जाऊँगा!

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

तब तक,

स्वावलम्बन पथ पर चलने का बल देश की टाँगों में न था। आत्मतेज का दीप्तमान अङ्गार राख में छिपा पड़ा था। श्वेताङ्ग की वाह्य-साधुता देख उसकी कर्मनिष्ठा पर देश मोहित था। उसकी न्याय-निष्ठा की जगत में धाक थी।

पक्षपात और अन्याय वैयक्तिक समझ कर सहे जाते थे। निम्न दीनता मन में बसी थी और साहस का बीज वपन नहीं हुआ था।

मान, शान, अधिकार, आराम और असन बड़ों-बड़ों का ध्येय था।

आबरू का पानी उतर चुका था, उसका कुछ मोल न था। दया, प्रार्थना और भिक्षा ही भद्रोचित है—यह भाव वातावरण में ओत-प्रोत था।

श्वेताङ्ग की श्रेष्ठता पर किसी को आपत्ति न थी, श्वेतदर्प बखानने और स्पर्द्धा की वस्तु थी।

सूरत में।

* * *

सूरत में,

भरतखण्ड के सर्दारों का सङ्घ जमा। सभी के हाथ में भिक्षा-पात्र थे।

किन्तु, वह केसरी पर समारूढ़ होकर शिवाजी के असि-चिन्हों को उस नगर की सड़क से ढूँढ़ लाया था।

वह रक्त-शिखा जब उन्नत हुई, महासभा के महानर-मुण्ड एक साथ ही मञ्च की ओर उठे। प्रथम मन्द, फिर मध्य; फिर तीव्र वेग से कराल वाग्धारा का ज्वालामय प्रवाह चला:—

"आत्मबोधहीन पशु मनुष्यों से डरते हैं।"

"जो मनुष्य से डरे वह नरवीर्य नहीं।"

"जगदीश्वर से पापिष्ट भय खाते हैं।"

"निष्ठावान और कर्मयोग पर सत्यव्रती जनों के भगवान पितृ-तुल्य रक्षक हैं।"

"निर्भय हो।"

"देश, धर्म और आत्मविश्वास प्राण देकर भी रक्षणीय हैं।"

"शक्ति, सङ्गठन और आत्म-विश्वास बाज़ार में नहीं बिकते।"

"अधिकार माँगने से नहीं मिलते।"

"स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, वह बल से भी और प्राणदान से भी लिया जायगा।"

श्रोताओं के कर्ण-गह्वरों को विदीर्ण करती हुई केसरी की दहाड़ ने वीरों के रक्त की एक-एक बूँद को उछाल दिया। किन्तु, नर्म नामर्दों का रक्त जम गया। जनरव उठा और वह कोलाहल हो गया। नर्म-गर्म महा सम्वाद प्रलय हो गया।

धनुर्भङ्ग हुआ।

* * *

धनुर्भङ्ग हुआ।

क़र्ज़न कर्ज़न, महामहिम आसन पर आसीन हुए—गर्व की ज्वलन्त मूर्ति, आत्म-पुजारी और कूट-नीति के धुरीण धुरी।

प्रथम चोट बङ्ग पर हुई। बङ्ग-भङ्ग हुआ, और क्षण भर को वह मूर्च्छित हो गया।

पर क्षण भर बाद।

नेत्रों में तेज आ जूझा, आँसू सूख कर अग्नि-शिखा की भाँति जल उठे। रग-रग की शिरायें बङ्गाल में भर

(शेष मैटर ३९वें पृष्ठ पर देखिए)

मज़दूर दल का संकटमय भविष्य

[श्रीयुत 'विमल']

मज़दूर-दल को इस समय टूटते हुए पूँजीवाद का सामना करना पड़ रहा है। पूँजीवाद ने पाँच मनुष्य संख्या के पञ्चमांश को बेकार कर दिया है; मज़दूरों की मज़दूरी घटा दी है और उसके रहते हुए कुछ भलाई की आशा नहीं की जा सकती। मज़दूर-पार्टी को इस समय क्या करना चाहिए? इस प्रश्न के उत्तर पर ही मज़दूर-दल का तथा इङ्गलैण्ड के साम्यवाद का भविष्य निर्भर है।

मज़दूर-दल अब १६ महीने से शासन कर रहा है। इस समय में मज़दूरों की हालत ख़राब ही होती चली जा रही है। मज़दूर-सरकार बेकारी कम करने के लिए बहुत शोर मचा रही है, पर नतीजा फिर भी कुछ अच्छा नहीं देख पड़ता। एक साल पहिले मज़दूर-पार्टी की कॉन्फ्रेन्स में मिस्टर टॉमस ने कहा था कि हमें पूर्ण विश्वास है कि फ़रवरी तक बेकारों की संख्या घट जायगी। परन्तु अब देखने से मालूम होता है कि हालत बिलकुल उलटी है। बेकारों की संख्या प्रति दिन बढ़ रही है। जून में उन्होंने कहा कि व्यापार की मन्दी अब आख़िरी दर्जे तक पहुँच चुकी है, इससे ज़्यादा मन्दी न होगी, पर इससे भी हालत प्रति दिन ख़राब ही होती गई। कुछ लोग अब भी आशा कर रहे हैं कि अब दिन बदलेंगे, पर उसके चिन्ह अभी तो नहीं नज़र आ रहे हैं।

हर हफ़्ते बेकारों की संख्या बढ़ रही है। वह गए साल से इस साल १० लाख ज़्यादा है, और ख़्याल किया जाता है कि साल ख़तम होते-होते यह संख्या २५ लाख तक पहुँच जायगी।

इस भयानक दशा को देख मज़दूर-सरकार ने पार्लामेण्ट के अन्य दोनों दलों से भी सहायता लेना निश्चय किया है। इनमें से कञ्जरवेटिव दल ने तो भाग लेने से इनकार किया है। उन्होंने कहा, हम इसकी ज़िम्मेवारी नहीं लेना चाहते, हम नए चुनाव के वक़्त अपनी स्थिति साफ़ बतलाना चाहते हैं। दूसरे दल ने मिल कर काम करना स्वीकार किया, जिससे वह नए चुनाव में यह दिखा सके कि हम सहायता के लिए हर तरह से तैयार थे, या मौक़ा पाकर लेबर-पार्टी से अलग हो जावे और अपने वोटरों से कह सके कि चूँकि मिस्टर स्नोडेन क़र्ज़ लेकर औद्योगिक दशा का सुधार नहीं कर रहे हैं, इससे व्यापार ख़राब हो रहा है तथा बेकारी बढ़ रही है!

पर जो कुछ हो, यदि मज़दूर-दल ने अपना कार्यक्रम शीघ्र ही न बदला तो नया चुनाव करना पड़ेगा। कुछ लोग कहते हैं कि मज़दूर-दल को किसी तरह अपने पद पर उस समय तक जमे रहना चाहिए, जब तक कि व्यापार की दशा सुधरे और बेकारों की संख्या घटने लगे। पर जो लोग मज़दूर-दल के विचार जानते हैं, वे विश्वास नहीं कर सकते कि ऐसा हो सकता है। अभी से बहुत से लोगों का भ्रम दूर हो गया है। वे समझते हैं कि लेबर-गवर्नमेण्ट से कुछ आशा करना व्यर्थ है। इसलिए यदि बेकारों की संख्या कुछ घट भी गई तब भी मज़दूर-दल के विषय में वह पुराना विश्वास व उत्सुकता फिर नहीं पैदा हो सकती।

क्या कोई आशा कर सकता है कि मज़दूर-सरकार दो साल तक टिक सकेगी? यदि अभी नया चुनाव किया जावे तो मज़दूर-दल के क़रीब ६० सदस्यों की जगह और दल ले लेंगे। और यदि साल भर के अन्दर मज़दूर-सरकार अपनी नीति में ज़बर्दस्त परिवर्तन नहीं करती तो साल के आख़िर में १०० सदस्यों की जगह चली जाने की सम्भावना है। कञ्जरवेटिव-दल की जीत होगी व पाँच साल तक फिर सुधारों के बदले पुराने विचार राज्य करेंगे।

ये बातें सुनने में ज़रूर ख़राब मालूम होती हैं, पर वे सत्य हैं और मज़दूर-सरकार को चाहिए कि उनका सामना करे। यदि अब भी मज़दूर-सरकार साहस दिखावे तो बहुत कुछ हो सकता है। इससे चाहे मज़दूर-दल की हार हो जावे तथा उसे शासन छोड़ना पड़े, पर अगले चुनाव में फिर मज़दूर-दल के ज़्यादा सदस्य होंगे।

शासक के पद पर आने पर मज़दूर-सरकार के सामने दो कार्यक्रम पेश थे। उनमें से एक यह था कि मज़दूरों के सुख और उन्नति के लिए वह जो प्रस्ताव पास करा सके उन्हें पास करा ले। पर ये इतने छोटे सुधार थे कि इससे दशा में कुछ विशेष अन्तर नहीं होता। दूसरा यह कि साहस दिखा कर मज़दूरों की दशा का सुधार करना आरम्भ कर दिया जाता जिससे यदि बेकारों की संख्या भी न घटती तो कम से कम बेकार मज़दूर अच्छी दशा में तो रह सकते। उसे चाहिए था कि पेन्शन देकर ६५ बरस से ज़्यादा आयु वाले मज़दूरों को कारख़ानों से हटाने के लिए प्रोत्साहित करती। उसे चाहिए था कि सब विधवाओं को, जिनकी आर्थिक दशा ख़राब थी पेन्शन देती तथा मज़दूरों के घरों के किराए के विषय में अपना हाथ रखती। ऐसे प्रस्तावों को दूसरे दल हराने का साहस नहीं कर सकते थे। यदि वे करते भी तो यह बात आगे चल कर हमारे लिए अच्छी व उनके लिए बुरी होती।

यह करने के बाद गवर्नमेण्ट को चाहिए था कि वह मज़दूरों के वेतन बढ़ाने का क़ानून पास करती और इस तरह उनकी चीज़ें ख़रीदने की शक्ति बढ़ा कर उद्योग की दशा सुधारती तथा बेकारी को कम करती। दूसरे देशों के माल का आना, जो कम वेतन देकर तथा मज़दूरों को चूस कर बनाया जाता है, बन्द कर देती। खानों को तथा बैङ्क ऑफ़ इङ्गलैण्ड को राष्ट्रीय सम्पत्ति बनाती। विदेशी व्यापार के सुधार के लिए सभाएँ बनाती और मज़दूरों के रहने के मकान बनवाती।

यह बहुत सम्भव है कि यदि मज़दूर सरकार यह कार्यक्रम स्वीकार करती तो वह हरा दी जाती व अपने पद से हटा दी जाती। पर इस कार्यक्रम पर स्थिर रहने पर अगले चुनाव में उसे और भी सहायता मिलती व फिर वह देश के शासक पद पर पहुँच जाती।

बहुधा लोग यह सोच कर कुछ नहीं कहना चाहते कि सच कहने से शायद मज़दूर-सरकार निराश हो जावे। पर ऐसे बड़े कार्यों में चुप रहना मूर्खता है। मज़दूर-सरकार को पुराने रास्ते से हटाने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। उसमें साहस भरने की ज़रूरत है। इसी तरह मज़दूर-दल का तथा साम्यवाद का भविष्य सुधर सकता है। और जिनको साम्यवाद प्रिय है उन्हें साफ़ बोलने से नहीं हिचकना चाहिए।

इस विषय में जर्मनी का उदाहरण बहुत शिक्षाप्रद है। इङ्गलैण्ड की तरह जर्मनी की लेबर-पार्टी ने भी साहस छोड़ कर केवल मौक़े पर काम किया है। वे अपने सिद्धान्तों पर ज़रा भी स्थिर नहीं रहे हैं। उसका यह फल हुआ है कि जर्मनी ने लेबर-पार्टी द्वारा साम्यवाद के सिद्धान्तों पर राज्य-कार्य चलने की आशा छोड़ दी है। वहाँ पर क्रान्तिवादी साम्यवादियों का ज़ोर बढ़ रहा है।

इसी तरह इङ्गलैण्ड में भी लोग अब लेबर-दल द्वारा सुधार होने की आशा छोड़ने लगे हैं। मज़दूर-सरकार को चाहिए कि अब साहस दिखावे। यदि वह दब गई तो कहीं की न रहेगी। पर यदि उसने एक बार साहस करके अपने कार्यक्रम पर चलना आरम्भ कर दिया तो फिर उसका भविष्य काफ़ी उज्ज्वल है।*

* इङ्गलैण्ड की मज़दूर-पार्टी के प्रमुख सदस्य मि० ए० ब्रेनर ब्रौकवे के लेख का सारांश।

* * *

अनुनय

[श्रीयुत 'द्विज']

नस-नस में नूतन रस भर दे !
माँ, तेरे पावन चरणों पर
हुलसित हो अपना सरबस धर ;
विपुल वेदना के वैभव से
अन्तर की भूखी झोली भर ;
एक बार अपने को तुझमें

* * *

लीन आज तेरा सुत कर दे !
अमलिन हों धुल कर ये तन-मन,
तेरी ही करुणा के जल से ;
पौरुष जाग उठे यौवन में
तेरे दिए हुए नव बल से ;
पुलकित कर उर को आशा से
माँ, सुत को साहस-सहचर दे !

* * *

(३७वें पृष्ठ का शेषांश)

उठीं। हठीले बङ्गाली ; पौनिया नाग की तरह फुफकारते हुए दुर्बल तन में अडिग आत्मबल धारण करके उठे।

असल सजीले शूर की भाँति।

सभाओं के प्रचण्ड घोष से आकाश फटने लगा। स्वदेशी की आँधी ने भीमकाय लङ्काशायर और मैन्चेस्टर को हिला दिया। कुल-बालाओं को भी रोष हुआ। निन्द्य विदेशी चूड़ियों को चूर-चूर कर करपल्लव की मलिनता दूर की।

फुलर शाह

* * *

फुलर शाह

वीर की खाल ओढ़ कर—क्रूर-हृदय से शासन का भार ले ; न्याय-दण्ड में गुप्ती छिपा, चण्ड-मूर्ति हो रणाङ्गण में आ उतरे।

प्रेस-एक्ट की लाल आँख दिखा, सिडीशन के दाँत कटकटा, पुलिस के तीव्र भाले लेकर मत्तवेग को उन्होंने घेरा। जेल के द्वार खुले, सम्भ्रान्त सुजन, उदग्रीव युवक, और आत्माभिमानी नर-वर उसमें ठूँसे गए। धैर्यहीन किन्तु तेजस्वी वीर रोष-रिपु को न रोक सके।

'शठे शाठ्यं' की नीति पर षड्यन्त्र-विधान रचे गए। पूर्व बङ्गाल में उत्पात हुए, पशुबल को अवसर मिला, महापुरुष पिसे।

किन्तु, महायुग प्रारम्भ हुआ।

* * *

Printed and Published by Mr. R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

The only Point where Newspapers, Leaders and Individuals agree in Toto

Hindi edition : Annual Rs. 6/8 Six monthly Rs. 3/8	**The 'CHAND'**	Urdu edition : Annual Rs. 8 Six monthly Rs. 5/-

A magazine which has raised consciousness in India

The Leader :

The February (1929) number of the CHAND fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine like CHAND.

The Amrit Bazar Patrika :

Had there been such magazine, in Bengali, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered.

The Bombay Chronicle :

It has justly won a reputation all over India. Lovers of social regeneration in India, especially those who are well-off, can benefit themselves and also do a good turn to this magazine by being subscribers and donors.

The Mysore Chronicle :

Few vernacular papers and magazines can boast of such a well-conducted magazine as the CHAND.

The Sunday Times :

It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies a foremost place among the journals published in this country.

The Indian Daily Telegraph :

It is ably edited and deserves much encouragement.

The Tribune :

The magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire.

The Rajasthan :

The CHAND [illegible] stands high among the existing Hindi monthlies and we [illegible] congratulate the conductors for their unabated zeal.

The Searchlight :

It [illegible] unhesitatingly be said that it can take its rank with any high class magazine.

The Indian Social Reformer

We have often noticed in these columns the excellent work done by the Hindi journal—the CHAND. The CHAND has [illegible] magazines.

The Forward :

The [illegible] get-up leaves nothing to be desired. It has raised a general consciousness [illegible] Hindi-knowing world.

The Patriot :

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful *journal, which, as we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.*

Individual Opinions

Justice Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu edition of your excellent magazine. The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out and Urdu edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

F. W. Wilson, Esq., Ex-Chief Editor of the "Pioneer"

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I [illegible] that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and [illegible] followed. Again and again the criticism is made against Indian [illegible] today and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference, unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of Public opinion is an enlightened, vigorous, independent and free press. That you [illegible] the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social customs that are [illegible] the young and vigorous life of [illegible] Indian nationality, is obvious by the mere fact [illegible] venture. I cordially wish you [illegible]

Pt. Moti Lal Nehru, Ex-President, All India Congress :

I welcome the appearance of the Urdu CHAND. It supplies a real want. [illegible]

Major D. R. Ranjit Singh, O. B. E., (Kaisar-i-Hind) I. M. S., (Late):

I am conscious of the great good [illegible] the CHAND [illegible] and I am confident its Urdu edition will be able to do the same.

Munshi Iswar Saran Saheb, Member Legislative Assembly :

(By Air Mail from London)

I wish this magazine every [illegible] The work of social reform is [illegible] thrice blessed are those [illegible] do it. I hope this magazine will [illegible] the right policy in social matters and if it does, it will have to fight the obscurantists on the one hand and the blind imitators of the west on the other. I trust it will strive for the [illegible] the fact that a girl has as much right to education and freedom [illegible] other. I sincerely wish it [illegible] the preservation of the true type of Indian woman-hood. I wish it a long career of usefulness.

Prof. M. H. Syed, M. A., Lecturer in Urdu, Allahabad University :

I am glad to learn that [illegible] edition of the CHAND [illegible] I wish this new venture every success. I understand that this [illegible] is devoted to the cause of social reform in India. In our present state of society there [illegible] I do hope that the CHAND [illegible] garb will bring light to a large number of people who are still steeped in [illegible] and are [illegible] to new [illegible]

Dr. Sir Tej Bahadur Sapru, M. A. LL. D., Ex-Law Member of the Government of India :

I wish it every success.

Mr. M. M. Verma, M. A., Director of Education, Bikaner State writes :

I need hardly say that I [illegible] been following the career of [illegible] with keen interest [illegible] tremely refreshing outlook of the work which it is sure to accomplish in the most important of phases of Soc[illegible]

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था की और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—१३ नवम्बर, १९३० | संख्या ७, पूर्ण संख्या ७

अङ्गरेज़ पादरियों द्वारा भारतीय माँगों का समर्थन

श्री० सुन्दरलाल जी पर राजद्रोह का मुक़दमा

"मेरी पुत्री का जुर्माना देने वाला मेरा और देश का कट्टर दुश्मन है।"

—पं० मोतीलाल नेहरू

श्री० अब्बास तैयब जेल से रिहा : तीन ही सप्ताह में फिर जेल जाने को तैयार

(१२वीं नवम्बर की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

वयोवृद्ध श्री० अब्बास तैयब जी जेल से रिहा करदिए गए।

आज सवेरे श्री० अब्बास तैयब जी, जो महात्मा गाँधी के वालण्टियरों के धरसाना पर धावा करते समय अगुआ बने थे, अवधि समाप्त होने पर साबरमती जेल से मुक्त कर दिए गए। 'फ़्री प्रेस' के सम्वाददाता से उन्होंने मुलाक़ात में कहा है कि तीन सप्ताह के अन्दर वे फिर जेल चले जायँगे।

—कल बम्बई में मुरारजी गोकुलदास मार्केट में पिकेटिङ्ग के अभियोग में ८ व्यक्तियों की गिरफ़्तारियाँ हुई थीं। आज उनको ६-६ माह की सख़्त क़ैद और ५०-५० रुपए जुर्माने की सज़ा दे दी गई है। जुर्माना न देने पर उन्हें डेढ़-डेढ़ माह की सज़ा और भी भोगना पड़ेगी।

—श्री० वल्लभ भाई पटेल और महादेव देसाई आज सवेरे इलाहाबाद से बम्बई वापिस पहुँच गए।

—बम्बई का समाचार है कि आज महिला-स्वयंसेविकाओं ने, जो पहले हिन्दुस्तानी सेवादल की सदस्याएँ थीं, फ़ोर्ट में विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग की। दो महिलाएँ मैंसालिया और करञ्जिया की दुकानों के पास गिरफ़्तार की गई। दूसरी महिला-वालन्टियर भी, जो स्पिन कम्पनी के गोदाम पर पिकेटिङ्ग कर रही थी, गिरफ़्तार कर ली गई।

—बम्बई के नगर निवासियों ने वहाँ के शेरिफ़ मि० हाजीभाई लाल जी से अनुरोध किया था कि २६ अक्टूबर को एस्प्लेनेड के मैदान में पुलिस ने महिला-वालण्टियरों के प्रति जो व्यवहार किया था, उसकी निन्दा करने के लिए वह एक सभा की आयोजना करे। शेरिफ़ ने उत्तर में कहा है कि नगर निवासियों की यह प्रार्थना गवर्नमेण्ट के सिद्धान्तों के विपरीत है, और शेरिफ़ सरकारी नौकर की हैसियत से ऐसी किसी सभा की आयोजना नहीं कर सकता जिसमें क़ानून और अमन की रक्षा के लिए किए गए कार्यों की निन्दा की जाय।

—पूना का आज का समाचार है कि कामटी (नागपुर) के स्वर्गीय रायबहादुर डी० लक्ष्मी नारायण ने वहाँ की 'सर्वेण्ट ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी' को एक लाख रुपए का दान दिया है।

गोलमेज़ के विरोध में बम्बई में हड़ताल

आज लन्दन में गोलमेज़-परिषद का सम्राट ने उद्घाटन किया है उसके विरोध में बम्बई ने आज पूर्ण हड़ताल मनाई। वालण्टियरों के जत्थे क़िले और शहर भर की अन्य सड़कों पर घूम-घूम कर बहिष्कार के नारे लगा रहे थे।

—जवाहर सप्ताह के जुलूस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार हुए नेताओं का मुक़दमा तारीख़ ११ को नैनी जेल में शुरू हुआ। मुक़दमा देखने के लिए शहर के कई प्रतिष्ठित व्यक्ति गए थे। मुक़दमा शुरू होने के पहिले ही श्रीमती श्याम कुमारी नेहरू एडवोकेट, इलाहाबाद हाईकोर्ट तथा श्रीमती कृष्णा नेहरू से कहा गया कि आपको इस मुक़दमे में शामिल होना पड़ेगा, क्योंकि अभियुक्तों के साथ आप भी जुलूस में थीं। आख़िर को कुमारी कृष्णा नेहरू तथा श्याम कुमारी नेहरू ने भी और अभियुक्तों के साथ मुक़दमे की कार्रवाई में भाग लेने से इनकार किया।

सरकारी गवाहों के बयान होने के बाद मैजिस्ट्रेट ने पण्डित सुन्दरलाल, श्रीयुत मन्ज़र अली सोख़्ता, पण्डित केशव देव मालवीय, श्रीयुत गुरु नारायण खन्ना, श्रीयुत सङ्गमलाल, पण्डित शिवराम अग्निहोत्री, श्रीयुत महावीर प्रसाद कलवार तथा कुमारी कृष्णा नेहरू व श्याम कुमारी नेहरू को १८८ धारा के अनुसार सरकारी आज्ञा की अवहेलना करने के अपराध में ५० रुपए जुर्माना किया। जुर्माना न देने पर १ माह की सादी सज़ा का हुक्म सुनाया। पण्डित सुन्दरलाल को सूचना दी गई है कि शीघ्र ही उन पर राज-विद्रोह का मुक़दमा चलाया जावेगा। इसी तरह सङ्गमलाल पर झूठी ख़बर फैलाने का जुर्म लगाया गया है। इस मुक़दमे के बाद किसी व्यक्ति ने, जिसका अभी पता नहीं चला है, श्रीमती कृष्णा नेहरू का जुर्माना अदालत में जमा कर दिया और वे उसी समय छोड़ दी गई।

—पण्डित मोतीलाल जी के थूक के साथ अभी भी ख़ून निकलता जा रहा है। मालूम हुआ है कि वे शीघ्र ही कलकत्ते जायँगे, जहाँ आठ विशेषज्ञ डॉक्टरों की जूरी उनकी जाँच करेगी और यदि वे सलाह देंगे तो वे आबहवा बदलने के लिए सिङ्गापुर तक जायँगे।

दो सौ पादरियों की ब्रिटेन से अपील

बम्बई का ९वीं नवम्बर का समाचार है कि २०० से ऊपर ब्रिटिश प्रोटेस्टेण्ट पादरियों ने भारत की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति के सम्बन्ध में निम्न विज्ञप्ति प्रकाशित की है :—

हम ब्रिटिश नर-नारी जो बहुत-सी मिशिनरी सोसाइटियों की ओर से भारत में कार्य कर रहे हैं, ईसाई होने की हैसियत से यहाँ की राजनीतिक परिस्थिति पर प्रकाश डालना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, जिससे, हमें आशा है, हमारे पश्चिमी भाइयों को बहुत सहायता मिलेगी। यद्यपि हम राजनीतिज्ञ नहीं हैं, और हम इस बात का अनुभव करते हैं कि राजनीति हमारे क्षेत्र से बहुत दूर है, तोभी हमारा यह ख़्याल है कि वर्तमान राजनीतिक आन्दोलन राजनीतिक आन्दोलन ही नहीं है, उसका वैयक्तिक जीवन के स्रोतों और राष्ट्रीय जीवन से बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है और ईसाई स्त्री-पुरुषों की हैसियत से हम ऐसी बातों के सम्बन्ध में मौन नहीं रह सकते, जिन्होंने मनुष्य के जीवन में उथल-पुथल मचा दी है।

हमें एक ऐसी परिस्थिति का मुक़ाबला करना है जो अविश्वास, ग़लतफ़हमी और कड़ुएपन के कारण उत्पन्न

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के तीसरे कालम में देखिए)

कुमारी कृष्णा का जुर्माना

—श्रीमती कृष्णा नेहरू के जुर्माना देने के सम्बन्ध में पण्डित मोतीलाल जी ने निम्नलिखित विज्ञप्ति निकाली है :—

"मैंने अभी यह सुना है कि किसी अनजान व्यक्ति ने मेरी पुत्री कृष्णा के ऊपर किया हुआ जुर्माना उसके गिरफ़्तारी तथा मुक़दमे के ख़तम होते ही ख़ज़ाने में दाख़िल कर दिया है। यदि यह ख़बर सच है तो उस व्यक्ति ने मुझे, देश को, तथा मेरी लड़की को—सब से बड़ा नुक़सान पहुँचाया है। उस व्यक्ति का नाम ज़्यादा दिनों तक छिपा नहीं रह सकता और यदि मेरे देशवासियों को मेरा तथा मेरी तुच्छ सेवा का ज़रा भी ख़्याल हो तो मैं आशा करता हूँ कि वे उसे मेरा तथा देश का सब से कट्टर दुश्मन समझेंगे और उसके साथ उसी तरह का व्यवहार करेंगे, जैसा कि एक देशद्रोही के साथ किया जाता है।"

—बम्बई 'युद्ध-समिति' सम्राट के भाषण में विघ्न डालने के लिए सेक्रेट्रियट तक जलूस ले जाना चाहती थी। पर पुलिस ने उनको आज़ाद मैदान में रोक दिया। कुछ सिक्खों ने सेक्रेट्रियट तक पहुँच कर वहाँ राष्ट्रीय झण्डा लगा दिया। पुलिस ने उनको लाठियों से मार कर हटा दिया।

—गोलमेज़ परिषद् के जुलूस निकालने के अभियोग में बम्बई कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० बखेकर और 'युद्ध-समिति' के दो सदस्य तथा दो वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए। जुलूस पर लाठी-प्रहार हुआ, जिससे व्यक्ति २० घायल हुए।

—बम्बई में ४थी नवम्बर को जिन दो महिला वालंटियरों की गिरफ़्तारी हुई थी, उन्हें तीसरे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने २५० रुपए जुर्माने की सज़ा दी है। जुर्माना न देने पर डेढ़ सप्ताह की सख़्त क़ैद की सज़ा और भोगनी पड़ेगी।

—पटना के अंग्रेज़ी दैनिक 'सर्चेलाइट' के मैनेजर को ४थी नवम्बर को १९२२ के एक्ट २२ के अनुसार छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई। आप छः मास का कारावास समाप्त कर हाल ही में छूटे थे।

—देहरादून के सिटी मैजिस्ट्रेट मि० मुज़फ़्फ़र मुहम्मद ख़ाँ ने पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार हुलास वर्मा को छः माह की सख़्त क़ैद और २५ रुपए जुर्माने या डेढ़ माह की अतिरिक्त क़ैद की, और अमरनाथ वैद्य को छः माह की सख़्त क़ैद और ५० रुपए जुर्माने या डेढ़ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है।

—कलकत्ते का ४थी नवम्बर का समाचार है कि पुलिस ने क्लाइव बाज़ार के कॉङ्ग्रेस कैम्प पर धावा करके १८ वालंटियरों को गिरफ़्तार कर लिया।

श्री० चट्टोपाध्याय को एक वर्ष की सख़्त क़ैद

बम्बई की प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस के १४वें डिक्टेटर और श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय के पति श्री० हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय को ६ ठी नवम्बर को एक वर्ष की सख़्त क़ैद की सज़ा हो गई। यह सज़ा उन्हें २ ता० के चौपाटी के एक भाषण पर हुई है, जिसमें वे केवल इतना ही कहने पाए थे कि "भाइयो और बहिनो, मेरे पीछे-पीछे आओ। संग्राम प्रारम्भ हो गया है।" इतना कहने के बाद ही ख़ुफ़िया पुलिस के इन्स्पेक्टर मि० कामट ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। जब अदालत ने उनसे गवाह पेश करने को कहा, तब उन्होंने उत्तर दिया कि "मैं इस अदालत को पहचानता ही नहीं हूँ !"

—लाहौर में ४थी नवम्बर को मोची गेट और बज़ाज़ हट्टा की विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में १० वालंटियर गिरफ़्तार किए गए थे। उनमें से फ़ैज़ुल्ला ख़ाँ, तुलसीराम और 'कष्ट सहन' को ३-३ माह की सख़्त क़ैद और ५०-५० रुपए जुर्माने या एक माह की अतिरिक्त क़ैद और आशासिंह और हीरालाल को ४-४ माह की सख़्त क़ैद और ५०-५० रुपए जुर्माने या एक माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा हुई।

—बम्बई में सीमा-प्रान्त के एक वारण्ट के अनुसार सेन्ट्रल ख़िलाफ़त कमिटी के सेक्रेटरी मि० अल्लाहबक्स यूसुफ़ी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—अहमदाबाद का समाचार है कि 'यङ्ग-इण्डिया' के भूतपूर्व सम्पादक और गाँधी जी के चेले श्री० बाल जी देसाई को अहमदाबाद के पास के एक गाँव में भाषण देने के अभियोग में दो माह की सख़्त क़ैद और २५ रुपया जुर्माने या एक माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। वे 'सी' क्लास में रक्खे गए हैं।

—बम्बई में ६ठी नवम्बर को हिन्दुस्तानी सेवा-दल की दो महिला वालंटियर विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर ली गईं।

—कानपुर का ६ठी नवम्बर का समाचार है कि चार्टर्ड बैङ्क से विदेशी कपड़ा भेजने के लिए पुलिस आई। उक्त बैङ्क का कपड़ा बाहर भेजने के लिए उसे स्टेशन तक पहुँचाने के लिए बुलाई गई थी। परन्तु बैङ्क पर पिकेटिङ्ग हुई और २५ वालंटियरों की गिरफ़्तारी के अनन्तर वह कपड़े को स्टेशन पर पहुँचा सकी। कहा जाता है कि बाद में कुछ वालंटियर छोड़ दिए गए।

—मद्रास का समाचार है कि कालीकट में जो ११ गिरफ़्तारियाँ हुई थीं, उनमें से १० को छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई और एक सत्याग्रह आन्दोलन में भाग न लेने की चेतावनी देकर छोड़ दिया गया।

—लाहौर का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि दैनिक 'मिलाप' के सम्पादक महाशय ख़ुशालचन्द का १७ वर्ष का लड़का, जिस पर राजविद्रोह और पुलिस पर आक्रमण करने के दो मुक़दमे चल रहे हैं और जो ज़मानत पर छोड़ा गया था, ६ठी नवम्बर को दफ़ा १०८ में फिर गिरफ़्तार कर लिया गया। मि० हरवंशलाल मैजिस्ट्रेट ने उसे दस हज़ार की ज़मानत पर छोड़ दिया है। १० नवम्बर को उसके मुक़दमे की पेशी होने वाली थी।

—बम्बई का समाचार है कि ४ ता० को जो दो वालंटियर पोस्टऑफ़िस सेविङ्ग-बैङ्कों से अपना रुपया निकालने के प्रार्थना-सूचक इश्तहार बाँटने के अभियोग में गिरफ़्तार हुए, उन्हें चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने ६-६ माह की सख़्त क़ैद और ५०-५० रुपया जुर्माने या १॥ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है।

—कराची में ३ ता० को सिटी मैजिस्ट्रेट की अदालत के अहाते में ग़ैर-क़ानूनी नमक बेचने के अभियोग में श्री० गोविन्द मुखर्जी कच्छी गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कलकत्ते के उत्तरी भाग में ४थी नवम्बर को चार घरों की पुलिस ने तलाशी ली और राजशाही के श्री० नरेशचन्द्र, तालुक़दार, सिलहट के फणिभूषण दे और बैरीसाल के श्री० विश्वेश्वर सेन को गिरफ़्तार कर ले गई। ये सब कलकत्ता मेडिकल कॉलेज के छठवें साल के विद्यार्थी थे।

—प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के हिसाब के अनुसार २२ अक्टूबर को समाप्त होने वाले सप्ताह में समस्त यू० पी० में ६४१ गिरफ़्तारियाँ हुईं। उस समय तक यू० पी० में कुल गिरफ़्तारियों की संख्या ७,२७३ थी।

—कानपुर में ४थी नवम्बर को चार्टर्ड बैङ्क से दो विलायती कपड़े की गाँठें ६ पुलिस अफ़सरों की सहायता से कहीं पहुँचाई जा रही थीं। परन्तु वालंटियर रेलवे के फाटक पर लेट गए। ठेले वाले ठेला छोड़ कर वहाँ से भाग गए। सब वालंटियर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—श्री० बिशनदास धर्मचन्द की दूकान पर भी विदेशी माल के नए ऑर्डर भेजने के कारण पिकेटिङ्ग प्रारम्भ की गई थी, परन्तु मालूम हुआ है कि वे भी समझौता करने का प्रयत्न कर रहे हैं। कुछ गिरफ़्तारियाँ भी की गई हैं।

—पूना का ६ठी नवम्बर का समाचार है कि ४८ घण्टे के अन्दर कैन्टोन्मेण्ट से चले जाने के फ़ौजी ऑर्डर का विरोध करने के कारण वहाँ का एक पन्नूलाल शाह नामक बनिया गिरफ़्तार कर लिया गया। ७वीं नवम्बर को उसे कैन्टोन्मेण्ट मैजिस्ट्रेट ने १०० रुपया जुर्माने की सज़ा दी है। फ़ौजी ऑर्डर के विरोध करने का यह पहला ही अवसर है।

—बम्बई में ७वीं नवम्बर को दोपहर के बाद पिकेटिङ्ग के अभियोग में गिरगाँव में तीन स्त्रियों की गिरफ़्तारी हुई थी, जिनमें 'इण्डियन सोशल रिफ़ॉर्मर' के सम्पादक श्री० नटराजन की सुपुत्री कुमारी कामाक्षी नटराजन भी हैं।

—बम्बई में ख़ुफ़िया पुलिस के राजनीतिक विभाग ने शहर में कई स्थानों की तलाशी ली है। उसने गिरगाँव स्थित 'पीपिल्स बैटेलियन' के ऑफ़िस की भी तलाशी ली और बहुत काग़ज़-पत्र ले गई। १५ वर्ष की आयु के दो लड़के भी उसने गिरफ़्तार किए हैं। सरदार-गृह के उस कमरे की तलाशी ली गई, जिसमें पूना के 'केसरी' और 'मरहठा' पत्रों के प्रतिनिधि रहते थे। पुलिस उस कमरे में से दो काग़ज़ ले गई है, परन्तु कोई गिरफ़्तारी नहीं की। पुलिस ने ख़ुफ़िया पुलिस की सहायता से माटुङ्गा के युवक-सङ्घ के ऑफ़िस की भी तलाशी ली और थोड़ी देर बाद इन्स्पेक्टर कोठारी ने बम्बई के प्रान्तीय युवक-सङ्घ के डिक्टेटर श्री० वामन कवाडी को गिरफ़्तार कर लिया। तीसरे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने उन्हें ६ माह की सख़्त क़ैद और १०० जुर्माने या १॥ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है।

—ननकाना साहब का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि ५वीं नवम्बर को ज़मींदार-सभा के दीवान के बाद श्री० शिरोमणि अकाली दल के जनरल सेक्रेटरी और श्री० अकाली तख़्त के जथादार श्री० ज्ञानी गुरुमुखसिंह मुसाफ़िर, दफ़ा १०८ में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—अमरावती का ८वीं नवम्बर का समाचार है कि बरार की 'युद्ध-समिति' की डिक्टेटर श्रीमती दुर्गाबाई जोशी गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

बम्बई हाईकोर्ट पर राष्ट्रीय झण्डा

बम्बई का ७ वीं नवम्बर का समाचार है कि 'पीपिल्स बैटेलियन' के सदस्य सवेरे बम्बई हाईकोर्ट गए और उन्होंने यूनियन जैक उतार कर उसके स्थान पर राष्ट्रीय झण्डा फहरा दिया। उन्होंने वहाँ एक तख़्ती भी लगा दी, जिस पर 'बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस हाईकोर्ट' लिखा हुआ था। पुलिस ने दोनों वालंटियरों को गिरफ़्तार कर लिया। प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० खण्डेलवाला ने उनको ६-६ माह की सख़्त क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा दी है।

—श्रीयुत दुर्गादास चटर्जी, जो हुगली ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रधान सदस्य थे, १४४ धारा की अवहेलना करने के अपराध में पकड़े गए हैं। उन्हें १½ साल की कड़ी सज़ा का हुक्म दिया गया है। उन पर १२४ दफ़ा का भी जुर्म लगाया गया है। कहते हैं वे दमा व बुख़ार से पीड़ित हैं।

—कॉङ्ग्रेस का एक स्वयंसेवक तारिनी सेन, जो कॉङ्ग्रेस के लिए चन्दा इकट्ठा कर रहा था, ६ठी नवम्बर को, बारीटोला (कलकत्ता) में गिरफ़्तार किया गया है। अभी फ़ैसला नहीं सुनाया गया है।

—श्रीयुत शीतलाचरण मुकर्जी कालीघाट कॉङ्ग्रेस कमिटी के वालंटियर, जिनकी उम्र १४ साल की है, ५वीं नवम्बर को गिरफ़्तार किए गए हैं। उन्हें ३ मास की कड़ी सज़ा का हुक्म हुआ।

—रसूलपुर कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी व प्रेज़िडेण्ट तथा अन्य दो कार्यकर्ता गिरफ़्तार किए गए हैं। वे सदर में रक्खे गए हैं। ३४ अन्य स्वयंसेवक, जो इनके साथ सदर तक गए थे, बिना टिकट चलने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कालीकट का ६ठी नवम्बर का समाचार है कि ५वीं नवम्बर को वहाँ के सब-डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट ने केरल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० इसन कोया मुल्ला, श्री० रमन मैनन एडवोकेट और श्री० पानिकर को दफ़ा १४४ भङ्ग करने के अभियोग में ४-४ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। श्री० रमन मैनन 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं।

—१२ वर्ष की आयु के काशीराम नामक बालक को लाहौर में धरना देने के अपराध में सज़ा दी गई है। उसे ४ साल तक दिल्ली रिफ़ॉर्मेटरी स्कूल में रहना पड़ेगा।

—पं० हरिश्चन्द्र बाजपेयी लखनऊ के एक प्रमुख कार्यकर्ता लगानबन्दी के आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। आप नमक-क़ानून तोड़ने के कारण हाल में ही ६ मास की सज़ा भुगत कर आए थे।

—लखनऊ की पाँच महिलाएँ भी विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना देने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार की गई हैं।

—बङ्गाल कॉङ्ग्रेस के स्वयंसेवक बड़ा बाज़ार हैरिसन रोड, क्रॉस स्ट्रीट तथा पगैयापट्टी की विदेशी दूकानों पर धरना दे रहे हैं। इनमें से तीन गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कानपूर निवासी पण्डित राजाराम भूनपूर्व सम्पादक 'कृष्ण' और हिन्दू-सभा के मन्त्री को, जो १२४वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार हुए थे, एक साल की कड़ी सज़ा दी गई है।

—कालीकट का ८वीं नवम्बर का समाचार है कि केरल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी की व्यवस्थापिका सभा के सदस्य श्री० कुन्हीशङ्कर मैनन को दफ़ा १४४ भङ्ग करने के कारण ४ माह की सख़्त क़ैद और २५ रुपए जुर्माने या एक माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—मद्रास का ८वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ द्वितीय प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने कॉङ्ग्रेस के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री० लक्ष्मण स्वामी मुदालियर को एक साल तक नेकचलनी की ज़मानत देने से इनकार करने पर एक साल की सज़ा दी है।

—अलीगढ़ का ११वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ के ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट मि० शिवदसानी ने ठाकुर गोपालसिंह को ऑर्डिनेन्स नं० ६ के अनुसार लगानबन्दी का प्रचार करने के अभियोग में ६ माह की सख़्त क़ैद और ५० रुपए जुर्माने या डेढ़ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है।

—मद्रास के तीन सत्याग्रही स्वयंसेवक, जिन्होंने तारीख़ ८ को पुलिस कमिश्नर की आज्ञा की अवहेलना करके ग़ैर-क़ानूनी सभा भङ्ग करने से इनकार किया था, गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। उन्हें छः मास की सख़्त क़ैद का हुक्म हुआ है।

—पेशावर का समाचार है कि क़ाबुल से आने वाले यात्रियों का कहना है कि बहुत सी फ़ौजी मोटर लॉरियाँ ग़ज़नी की ओर भेजी गई हैं, जहाँ सुलेमानख़ेल लोगों ने कुछ उपद्रव मचा रक्खा है। मौलवी उल्लाहनवाज़ ख़ाँ और शाह जी उसके कमाण्डर हैं।

—कलकत्ते का समाचार है कि सरिसबाड़ी बम केस के सम्बन्ध में स्पेशल ट्रिब्यूनल ने सुविमल सेन अवनी घोष और क्षितीश चौधरी को ५ साल की और शिशिरनाथ और तारककार को २-२ साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। छठवाँ अभियुक्त छोड़ दिया गया था, परन्तु बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अभियोग में वह फिर गिरफ़्तार कर लिया गया। ये सब पूर्वीय बङ्गाल रेलवे से मैमनसिंह यात्रा करते समय सरिसबाड़ी स्टेशन पर गिरफ़्तार किए गए थे।

—लन्दन का समाचार है कि लन्दन की कॉङ्ग्रेस शाखा ने गोलमेज़ परिषद का एक विराट सभा में तिरस्कार किया है। श्री० तुलसीचरण गोस्वामी ने यह कह कर उसका विरोध किया कि परिषद के प्रतिनिधि भारत के प्रतिनिधि नहीं हैं।

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

—पेशावर में क़िस्साख़ानी बाज़ार में जो देशी बम फटा था उसके सम्बन्ध में एक्सप्लोसिव एक्ट के अनुसार शहर के ५ आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं। वे १४ नवम्बर तक के लिए हवालात में बन्द कर दिए गए हैं।

—गत ३री नवम्बर की रात्रि को बेलगाँव के पास शातकवाड़ी में, कुर्नवाड़ा के कारबारी श्री० देश पाण्डे के बँगले में एक बम फटा। बम किसी अव्यक्त व्यक्ति द्वारा फेंका गया था। लोगों का विश्वास है कि स्टेट और गाँव वालों में हाल ही में जो झगड़ा हो गया था, यह बम उसी के कारण फेंका गया है।

—लाहौर का ४ नवम्बर का समाचार है कि लाहौर-षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों में से, जो सेन्ट्रल जेल में हैं, दुर्व्यवहार के कारण १२ ने अनशन प्रारम्भ कर दिया है।

—लुधियाना का समाचार है कि जगराँव की पुलिस ने जगराँव तहसील में लाम्बत के ज़मींदार के घर धावा किया और एक देशी बन्दूक़ और २५ कारतूस उसके घर में पकड़े। बन्दूक़ बिलकुल देशी बनी हुई थी। ज़मींदार हवालात में बन्द कर दिया गया है।

—लाहौर का ३री नवम्बर का समाचार है कि श्री० धनवन्तरी, जो दिल्ली में गिरफ़्तार किए गए थे, लाहौर लाए गए हैं और वे क़िले में रक्खे गए हैं।

लाहौर में बम-फ़ैक्टरी

लाहौर का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि ग्वालमण्डी बाज़ार के जिस मकान में अपने गुरुदासपुर के तबादले के पहले पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट ख़ानबहादुर अब्दुल अज़ीज़ रहते थे उसमें एक बम-फ़ैक्टरी मिलने से शहर में बड़ी सनसनी फैली है। पुलिस ने ग्वालमण्डी के तीन घरों की तलाशी ली। दो घरों में पुलिस को कुछ नहीं मिला, परन्तु तीसरे मकान में, जिसमें मेरठ का हरिचरन नामक एक २० वर्ष का कम्पाउण्डर रहता था, एक बम और बम बनाने के कुछ रासायनिक द्रव्य निकले हैं। रासायनिकों में सल्फ़्यूरिक एसिड, नाइट्रिक एसिड, कार्बोलिक एसिड और सल्फ़्यूरिक और कॉर्बोलिक एसिड का मिश्रण मिला है। हरिचरन 'एक्सप्लोसिव एक्ट' के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया गया है।

—कराची का ८वीं नवम्बर का समाचार है कि कराची की सिटी पुलिस चौकी में ६ बजे रात्रि को फिर बम फेंका गया था। बम उसी प्रकार का था जैसा अभी कुछ दिन पहले फेंका गया था। कुछ महीनों के अन्दर कराची में बम की यह तीसरी घटना है।

—मैमनसिंह की ख़बर है कि भैरव स्टेशन पर ट्रेन के पहुँचने पर कई डब्बों की तलाशी ली गई और एक कॉलेज का विद्यार्थी गिरफ़्तार किया गया है। कहा जाता है कि कोर्ट ऑफ़ वार्ड्स के एक नौकर के लड़कों के कमरे में कुछ रिवॉल्वर और गोलियाँ मिली हैं, यह गिरफ़्तारी उसी सम्बन्ध में हुई है।

—कलकत्ता षड्यन्त्र के सम्बन्ध में मेडिकल कॉलेज के एक विद्यार्थी श्रीयुत प्रभातकुमार मलिक गिरफ़्तार किए गए हैं। शितांशु सरकार ने, जो इस मुक़द्दमे में एप्रूवर हो गया है, इनका नाम लिया है।

—लाहौर का ८वीं नवम्बर का समाचार है कि ७ ता० को वहाँ जो हरिचरन नामक कम्पाउण्डर गिरफ़्तार किया गया था, उसके पास एक बम और कुछ बम बनाने के रासायनिक द्रव्य निकले हैं।

—लाहौर का ८वीं नवम्बर का समाचार है कि गत ३ ता० को गोली की दुर्घटना से मेयो अस्पताल में विशेशरनाथ की मृत्यु हुई था, पुलिस ने उसकी लाश का जुलूस नहीं निकालने दिया। जुलूस शहर की मुख्य-मुख्य सड़कों पर घुमाया जाने वाला था, परन्तु जुलूस रवाना होने के पहिले ही पुलिस ने लाश छीन ली। दिल्ली गेट पर पुलिस के इस कार्य के विरोध में एक विराट सभा हुई।

दिल्ली में बमों के मसाले की खोज

पुलिस ने ५वीं नवम्बर को सबेरे ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट रायबहादुर पारसदास के एक सम्बन्धी श्री० रघुवीरप्रसाद जैन को गिरफ़्तार किया है। कहा जाता है कि उनकी गिरफ़्तारी ४ तारीख़ की खोज और गिरफ़्तारियों के सम्बन्ध में हुई है। जाँच करने से मालूम हुआ है कि कपूरचन्द जैन के घर में, जो ४ तारीख़ को गिरफ़्तार हुए हैं, ५०० बम बनाने का मसाला पकड़ा गया है। अपराधी के पास प्रतिज्ञाओं की एक किताब भी थी, जिसमें सदस्यों से केवल पुलिस वालों को ही मारने के वचन लिए थे। उसके पास हिन्दुस्तान भर के पुलिस के ऐसे व्यक्तियों की लिस्ट भी थी। इस षड्यन्त्र का पता शीतलप्रसाद के वक्तव्य से लगा है, जो २६वीं अक्टूबर को गिरफ़्तार किया गया था और जिसके घर में चार ज़िन्दा बम पकड़े गए थे। मालूम होता है इन अभियुक्तों का सम्बन्ध लाहौर के नए षड्यन्त्र केस से स्थापित किया जायगा।

षड्यन्त्रकारी गोली से मार दिया गया

४ ता० को लाहौर में जो दुर्घटना हो गई है उसका समाचार 'भविष्य' के पिछले अङ्क में दिया जा चुका है। शहर और कैण्टोमेण्ट के बीच में दो युवकों ने पुलिस पर गोली चलाई थी और पुलिस ने उसके जवाब में गोली से एक युवक विशेशरनाथ को पीठ में घायल किया था और दूसरे को गिरफ़्तार कर लिया था। कहा जाता है कि उनमें दोनों युवक षड्यन्त्रकारी हैं। पुलिस ने विशेशरनाथ की गिरफ़्तारी के लिए ही ५०० रुपए का इनाम घोषित किया था। परन्तु उनकी गिरफ़्तारी से पुलिस का कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि गोली लगने के बाद में वह शीघ्र ही मेयो अस्पताल में लाया गया था, और वहाँ दूसरे दिन सबेरे ११ बजे उसका प्राणान्त हो गया। विशेशरनाथ की आयु केवल २० वर्ष की थी। वह रावलपिण्डी ज़िले के कलोपर गाँव के पण्डित ज्ञानचन्द का पुत्र था। कहा जाता है कि वह बहुत दिनों से पञ्जाब के षड्यन्त्रकारी दल में था, उसके साथी का नाम, जो गिरफ़्तार कर लिया गया है, टहलसिंह है।

—श्रीयुत भगतसिंह आदि लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों की ओर से चूँकि प्रिवी कौंसिल में अपील हुई है, इसलिए पञ्जाब की सरकार ने उनकी फाँसी की तारीख़ बढ़ा दी है। १८ दिसम्बर तक भगतसिंह की प्रिवी कौंसिल में अपनी अपील की कार्रवाई में देनी होगी। तब तक फाँसी मुल्तवी रहेगी।

—सुना जाता है कि लाहौर षड्यन्त्र के फाँसी की सज़ा प्राप्त अभियुक्त जो जेल में हैं, बड़े प्रसन्न रहते हैं। उन सबका वज़न बढ़ गया है। भगतसिंह का वज़न १४४ से १५० हो गया है। राजगुरु का ११० से १२६ और सुखदेव का ११८ से १२३ हो गया है यद्यपि उन्हें मामूली खाना ही मिलता है।

* * *

—बङ्गाल गवर्नमेंट की ओर से चन्द्रनगर वाले धावे में षड्यन्त्रकारियों की गिरफ़्तारी करने के लिए एक इन्स्पेक्टर और १० यूरोपियन सार्जेन्टों को ४,४५० रुपए के इनाम बाँटे गए हैं।

—कलकत्ते का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि ढाका ज़िले के मुन्शीगञ्ज, लोहागञ्ज और कई अन्य पुलिस चौकियों पर आन्दोलन के कारण पुलिस बढ़ाई गई है। पुलिस ६ माह के लिए नियुक्त की गई है उसका ख़र्च गाँव वालों को देना पड़ेगा।

—बम्बई का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ के पुलिस कमिश्नर मि० जी० एस० विल्सन ने दो सुप्रसिद्ध अङ्गरेज़ी दैनिक 'बॉम्बे क्रॉनिकल' और 'इण्डियन डेली-मेल' को निम्नलिखित ऑर्डर भेजा है :—

"मैं देख रहा हूँ कि यद्यपि बम्बई की बहुत सी संस्थाएँ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई हैं, तो भी बम्बई के पत्र उनके वक्तव्य, कार्य और कार्यक्रम अपने पत्रों में प्रकाशित कर रहे हैं। चूँकि इस प्रकार की बातों का प्रकाशित करना, ग़ैर-क़ानूनी संस्थाओं की सहायता करने के बराबर है और १९०८ के दण्ड-विधान के १४वें एक्ट की १७वीं धारा के अनुसार अपराध है, इसलिए मैं आपको आयन्दा इस प्रकार की बातें छापने से आगाह करता हूँ।"

—बम्बई सिटी पुलिस के डॉक्टर नूनन तथा सार्जेण्ट रिमर के ऊपर डॉक्टर परे उर्फ़ अमरनाथ आर्य तथा बी० जी० हॉर्निमेन सम्पादक 'हेरल्ड' ने मारने तथा अनादर करने का अभियोग लगाया है। सार्जेण्ट रिमर के ख़िलाफ़ न्यायाधीश ने अपनी राय दे दी है। डॉक्टर नूनन के विषय में अभी तहक़ीक़ात हो रही है।

—इलाहाबाद हाईकोर्ट के बैरिस्टर श्रीयुत टी० ए० के० शेरवानी ने, जो हाल में बम्बई से ३ मास की सज़ा भोग कर आए हैं, ११ तारीख़ से हाईकोर्ट का काम फिर शुरू कर दिया है।

—बिहार कॉङ्ग्रेस कमिटी की रिपोर्ट के अनुसार इस हफ़्ते में २७३ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। इस आन्दोलन के सम्बन्ध में जेल जाने वालों की संख्या बिहार में अब १०,००० तक पहुँच गई है।

—कानपूर शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के पब्लिसिटी ऑफ़िसर ने तार द्वारा ख़बर भेजी है कि १० नवम्बर की रात को कुछ यूरोपियन लोगों ने राष्ट्रीय झण्डा तथा उसका डण्डा उखाड़ लिया है। झण्डा १० बजे सवेरे लगाया गया था। दो मोटरों में भर कर यूरोपियन लोग वहाँ आए। ११ स्वयंसेवक उसकी रक्षा कर रहे थे। एक यूरोपियन औरत ने स्वयंसेवकों की तरफ़ पिस्तौल दिखाई, पर वे इससे नहीं डरे। कुछ देर बाद शहर के लोगों को ख़बर लगी। वहाँ पर बहुत से आदमी इकट्ठा हो गए। यूरोपियन लोग भाग गए। स्वयंसेवक दिन-रात पहरा दे रहे हैं।

—बम्बई गवर्नमेंट ने विवाहित स्त्रियों को जेल में चूड़ियाँ पहिने रहने की आज्ञा दे दी है। इस ऑर्डर के अनुसार 'ए' और 'बी' क्लास की स्त्रियाँ काँच की चूड़ियाँ पहन सकेंगी और 'सी' क्लास की स्त्रियाँ हाथी दाँत या सिलोलायड की। उन्हें मस्तक पर सुहाग-चिन्ह स्वरूप लाल बिन्दी लगाने की भी आज्ञा दे दी गई है।

—नवें ऑर्डिनेन्स के अनुसार कर्नाटक प्रान्त की सब ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी ग़ैर-क़ानूनी ठहराई गई हैं। सब ज़िलों के कॉङ्ग्रेस ऑफ़िसों में तलाशी ली गई है।

—सरदार वल्लभ भाई पटेल तथा श्रीयुत महादेव देसाई, जो आजकल इलाहाबाद में पण्डित मोतीलाल नेहरू के अतिथि हैं, बुख़ार से पीड़ित हो रहे हैं। वे १० तारीख़ को वापस जानेवाले थे, परन्तु अब न जा सकेंगे। वे शीघ्र ही अपना कार्यक्रम निश्चित करेंगे।

—ब्रिटिश औपनिवेशिक-मन्त्री की आज्ञा से फिर १४८० यहूदियों को अगले छः महीनों में आकर बसने की इजाज़त मिल गई है। कहा जाता है कि पैलेस्टाइन में यूँही बहुत बेकारी है। फिर यह नया क़ानून बेकारी की समस्या को और भी ख़राब कर देगा। ब्रिटिश सरकार कहती है कि हमारी नई विज्ञप्ति का अर्थ यह नहीं था कि हम यहूदियों को पैलेस्टाइन में घुसने न देंगे। उसका मतलब यह है कि केवल उतने ही यहूदी आवें, जितने इस देश में ठीक तरह रह सकें तथा उसकी आर्थिक दशा को ठीक कर सकें। इस नई घटना से अरब-निवासियों में फिर असन्तुष्टता फैल गई है। उन्होंने औपनिवेशिक मन्त्री को तार दिया है। वे डर रहे हैं कि यहूदियों के विरोध के कारण कहीं ब्रिटिश गवर्नमेंट इस हाल की निकाली हुई विज्ञप्ति को, जिससे यहूदियों को पैलेस्टाइन में आने से रोका गया था, वापस न ले ले।

राउण्डटेबिल कॉन्फ़्रेन्स के प्रतिनिधियों में फूट

लन्दन का ६ठी नवम्बर का समाचार है कि ग़ैर-मुस्लिम प्रतिनिधियों ने उन १४ प्रतिनिधियों को, जो ८ मुसलमान प्रतिनिधियों से समझौते के लिए मिलने वाले हैं, समझौते का सम्पूर्ण अधिकार देने का विचार स्थगित कर दिया है। मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम प्रतिनिधियों की सभा अवश्य होगी, परन्तु उसमें कोई निश्चित समझौता न होगा, वे केवल इस बात का विचार करेंगे, कि समझौता होने की कहाँ तक सम्भावना है। इसके परिणाम-स्वरूप हिन्दू-मुस्लिम समस्या वैसी ही जटिल बनी रहेगी, जैसी वह वादविवाद के पहले थी।

ग़ैर-मुस्लिम प्रतिनिधियों के बँट कर तितर-बितर हो जाने की सम्भावना है। उनमें नेशनलिस्ट, लिबरल और हिन्दू-सभा वालों की दलबन्दी प्रारम्भ हो गई है। श्री० जयकर का कहना है कि "जब तक शासन-विधान के सम्बन्ध में कोई निश्चित घोषणा न हो जाय, तब तक हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर वादविवाद करने से कोई लाभ न होगा।" नेशनलिस्ट दल भी इस बात पर तुला हुआ है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट कॉन्फ़्रेन्स में पहले ही अपनी नीति की घोषणा कर दे। लिबरल-दल के लोग उनका साथ देने के लिए तैयार नहीं हैं। वे इस प्रश्न पर कॉन्फ़्रेन्स में झगड़ा उत्पन्न नहीं करना चाहते। ६ठी नवम्बर को सवेरे लिबरलों की पहली बैठक हुई थी जिसमें उन लोगों ने यह निश्चय किया है कि जो प्रश्न सामने उपस्थित होगा वे उसी पर विचार करेंगे। इस फूट और विचार-अनैक्य का यह परिणाम हुआ है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट के विरोध में सम्पूर्ण शक्ति एक साथ लगाने की जो आयोजना हो रही थी, वह अब क्षीण हो रही है।

—लन्दन का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि गवर्नमेंट का बच्चों के स्कूल की आयु सम्बन्धी बिल, जिसमें उनकी स्कूली उम्र १६ साल तक बढ़ा दी गई है और १४ और १५ साल के बीच के विद्यार्थियों के पालन-पोषण की योजना की गई है, हाउस ऑफ़ कॉमन्स में दूसरी बार पास हो गया। इसके पक्ष में ३१४ और विपक्ष में २२७ वोट थे। इस बिल में बेकारी की समस्या हल करने का प्रयत्न किया गया है। मज़दूर-गवर्नमेंट का विश्वास है कि इस योजना से ३ लाख बच्चे बेकारी से दूर रक्खे जा सकेंगे और १,५०,००० युवकों को व्यवसाय मिल जायगा। लॉर्ड यूसटेस ने इस बिल का विरोध करते हुए कहा है कि इस बिल से ८० लाख पौण्ड हर साल टैक्स और बढ़ाना पड़ेगा। सर जॉन साइमन सहित ३३ लिबरलों ने बिल के पक्ष में वोट दिया है।

—एथेन्स (अमेरिका) का ६ठी नवम्बर का समाचार है कि मिलफ़ील्ड की कोयले की खान में आग लग जाने से जो धड़ाका हुआ था, उससे १६० आदमियों की मृत्यु हो गई। उतने ही लोग खान में से बच कर आहत निकले हैं। मरे हुओं में खान का मालिक भी सम्मिलित है।

—स्टॉकहोम का ६ठी नवम्बर का समाचार है कि इस वर्ष ६,५०० पौण्ड का नोबिल पुरस्कार अमेरिका के प्रतिभाशाली उपन्यासकार मि० सिङ्कलेयर लेविस को दिया गया है।

—सम्राट ने सर दिनशा फ़र्दूनजी मुल्ला को १९२९ के अपीलेट जूरिस्डिक्शन एक्ट के अनुसार प्रिवी कौन्सिल की जुडीशियल कमिटी का जज नियुक्त किया है। सर दिनशा मुल्ला बम्बई के सुप्रसिद्ध क़ानूनवेत्ता हैं; वे बम्बई हाईकोर्ट के जज और भारत-सरकार के लॉ-मेम्बर रह चुके हैं। १९१९ से १९२१ तक वे बम्बई के अपील-ट्रिब्यूनल के प्रेज़िडेण्ट रह चुके हैं। वे एक प्रतिभाशाली लेखक भी हैं।

—लन्दन का समाचार है कि ४थी नवम्बर को बकिङ्घम राजमहल में सम्राट और सम्राज्ञी ने भारतीय राजा-महाराजाओं को भोज दिया। सम्राज्ञी इस भोज में वे जवाहरात पहिन कर आई थीं, जो १९११ में उन्हें भारत में भेंट किए गए थे। ८ नवम्बर को सम्राट बकिङ्घम राजमहल में गोलमेज़-परिषद के प्रतिनिधियों को भोज देंगे।

—६ठी नवम्बर को पार्लामेण्ट के सदस्य मेजर ग्रेहमपोल ने हाउस ऑफ़ कॉमन्स में मन्त्रि-मण्डल के कई मन्त्रियों के साथ नरम दल के नेता सर तेज बहादुर सप्रू, सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर और श्री० सी० वाई० चिन्तामणि को आमन्त्रित किया है।

—लन्दन का ६ ठी नवम्बर का समाचार है कि मि० जे० राइट ने मोटर साईकिल १५० मील प्रति घण्टा दौड़ा कर साईकिल दौड़ में संसार से बाज़ी मार ली। वे कर्क में एक किलोमीटर दौड़े थे और उनकी औसत दौड़ १४६·६८ मील प्रति घण्टा थी। उनके पहिले जर्मनी के हरहीन इस दौड़ में अद्वितीय माने जाते थे उनकी दौड़ १,३७२ प्रति घण्टा थी।

—लन्दन का समाचार है कि क्रायडन में जिस प्रकार हवाई जहाज़ के खेलों के प्रदर्शन का प्रबन्ध किया गया था, उसी प्रकार पोर्टलैंण्ड में सामुद्रिक खेलों के प्रदर्शन का प्रबन्ध हुआ था और नियमानुसार गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के प्रतिनिधियों को भी खेलों का प्रदर्शन देखने और एच० एम० एस० 'नेलसन' का निरीक्षण करने के लिए निमन्त्रित किया गया था। परन्तु क्रायडन की घटना की स्मृति उनके मस्तिष्क में अभी बिलकुल ताज़ी थी और इसलिए उनमें से बहुतों ने उसी समय निमन्त्रण स्वीकार करने से इनकार कर दिया। निमन्त्रण अस्वीकार करते हुए कुछ लोगों ने कहा कि क्रायडन के हवाई खेलों के प्रदर्शन के समय उनका जो सत्कार हुआ है, उसकी वे पुनरावृत्ति नहीं करना चाहते।

—लन्दन का समाचार है जब सर मुहम्मद शफ़ी, सहकुटुम्ब प्रधानमन्त्री के यहाँ भोज के लिए जा रहे थे तब उनकी मोटर एञ्जिन के लेम्प के खम्भे से एक मोटरसाइकिल बचाते समय टकरा गई। ड्राईवर की होशियारी के कारण सब की जान बच गई। परन्तु मोटर टक्कर से टूट-फूट गई और यात्रा पूरी करने के लिए दूसरी मोटर मँगाई गई।

—नागपुर का ६ ठी नवम्बर का समाचार है कि वहाँ का उपाधि-वितरण उत्सव ६ टी दिसम्बर को वहाँ के गवर्नर के सभापतित्व में होगा। उत्सव के अवसर पर कलकत्ता यूनीवर्सिटी के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक सर सी० वी० रमन भाषण देंगे।

—डेराइस्माइल ख़ाँ का ४थी नवम्बर का समाचार है कि नौरङ्ग ज़िले के पास एक मोटर लूटी गई, जिसमें लगभग ३,००० रुपए का माल था।

—कराची से दो युवक श्री० ई० एस० गोड़बोले और श्री० वी० एकचित्रे कराची से स्टीमर पर बसरा के लिए रवाना हुए हैं। जहाँ से वे साइकिल पर दुनिया की यात्रा करेंगे।

—लाहौर का ४थी नवम्बर का समाचार है कि दीवान चमनलाल ने हाल ही में होने वाली पञ्जाब विद्यार्थी-कॉन्फ्रेन्स का सभापति होना स्वीकार कर लिया है।

—कोइम्बटूर का समाचार है कि भवानी नदी में बाढ़ आ जाने के कारण उसके दोनों किनारों के नारियल के बग़ीचे बह गए हैं, जिससे ४ लाख की हानि हुई है। बाढ़ के कारण बहुत से घर भी गिर पड़े हैं।

—बङ्गाल के कुछ ज़िलों में आजकल भयङ्कर अकाल पड़ रहा है और उसके परिणाम-स्वरूप राजशाही ज़िले के बङ्गारी गाँव में दो स्त्रियों और दो पुरुषों की हृदय-द्रावक मृत्यु हुई है। दोनों मुसलमान पुरुष भाई-भाई थे और पास-पास रहते थे। अकाल के कारण उनमें से छोटा भाई, उसकी स्त्री और बच्चे बहुत दिनों से एक वक़् ही खाना खाकर रहते थे। एक दिन बड़े भाई को जब यह मालूम हुआ कि उसका भाई तथा उसकी स्त्री और बच्चे ४८ घण्टे से निराहार हैं, तब उसने अपनी स्त्री की आँख बचा कर छोटे भाई को एक सेर चावल दे दिया। परन्तु उसकी स्त्री यह न सह सकी, वह उसके घर गई और देवर की अनुपस्थिति में भोजन का बर्तन फोड़ आई। इस पर छोटे भाई ने अपनी असहायावस्था के कारण एक कमरे में आत्म-हत्या कर ली। उसकी स्त्री ने भी दुःख के कारण आत्म-हत्या कर ली। जब बड़े भाई को इस भयङ्कर हत्या-काण्ड का समाचार मिला तब उसने भी अपनी स्त्री की हत्या कर आत्म-हत्या कर ली !!

—राजशाही का समाचार है कि २री नवम्बर को वहाँ के ६ युवकों ने कॉलेज के दरबान पर धावा किया और कटार उसके सामने अड़ा कर उससे प्रोफ़ेसर की तनख़्वाह छीन ली। पुलिस ने बहुत से घरों की तलाशी ली है और द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी सुधीर लाहिरी, वालण्टियर कोर के केप्टेन दिनेश बनर्जी तथा व्योम केश राय को गिरफ़्तार किया है।

—डॉक्टर सर मोतीसागर भूतपूर्व एडवोकेट, भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट लाहौर हाईकोर्ट बार एसोसिएशन तथा भूतपूर्व वाइस चान्सलर दिल्ली यूनीवर्सिटी की तारीख़ १० नवम्बर को सन्ध्या समय दिल रुक जाने से मृत्यु हो गई।

—सालेम का १०वीं नवम्बर का समाचार है कि सलेम विरुदाचलम की नई रेलवे लाइन पर बाला-पदी स्टेशन के अहाते में बालास्ट गाड़ी की डिब्बों से टक्कर लग जाने के कारण ९ कुली मर गए और १६ सख़्त घायल हुए।

—हाल ही में मद्रास में जो भयानक बाढ़ आई है उससे एक लाभ यह हुआ है कि प्रान्त के उस भाग के साँप बहुत बड़ी तादाद में मारे गए। बाढ़ के कारण सर्पों को आश्रय के लिए सूखी ज़मीन रेलवे लाइन पर ही मिली और गाड़ियों के आवागमन से रोज़ सैकड़ों की संख्या में सर्प उनके नीचे दब कर मर गए।

—गत २री नवम्बर को मथुरा और आगरा छावनी स्टेशनों के बीच मद्रास एक्सप्रेस गाड़ी में डाका पड़ गया। कहा जाता है कि जब गाड़ी मथुरा जङ्क्शन से छूटी तो पठानों के भेष में दो नवयुवक दूसरे दर्जे के एक डिब्बे में घुस आए, जिसमें फ़र्नण्डीज़ नाम का ईसाई बैठा था। डिब्बे में घुसते ही उन दोनों ने रौशनी बुझा दी और वे उस पर टूट पड़े। डाकू २३८ रुपए का माल लेकर भाग गए। उक्त ईसाई अस्पताल भेज दिया गया है।

—बम्बई में एक १६ वर्ष के बाबू मरुठी नामक विद्यार्थी ने, जो दो सप्ताह से बुख़ार से पीड़ित था; दूसरी बोतल की दवा पी ली। जब उसका पिता उसके कमरे में पहुँचा तब उसे मालूम हुआ कि उसने दवा के स्थान में तारपीन का तेल पी लिया है। शीघ्र ही वह मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भेजा गया, जहाँ उसकी मृत्यु होगई।

—कलकत्ते में जोड़ाबगान के एडीशनल चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट, ख़ान बहादुर नसीरुद्दीन अहमद की अदालत में गोकुलचन्द्र नामक व्यक्ति की दरख़्वास्त पर, मुहम्मद मियाँ ने एक वर्ष की अवस्था की एक लड़की, जिसके चार हाथ और चार पाँव थे, पेश की। दरख़्वास्त में यह कहा गया था कि लड़की के पिता ने किसी आदमी के साथ ठेका किया था जिसके द्वारा वह हिन्दुस्तान भर में उसका प्रदर्शन कर धन कमा सकेगा; उसका यह कार्य निर्दयतापूर्ण है। मैजिस्ट्रेट ने मामला स्थगित कर दिया है।

—नदियाद की ख़बर है कि जब श्रीमती कस्तूर बहिन जोशी कुछ गिरफ़्तार की हुई महिलाओं को वस्त्र देने जेल पहुँची तब फ़ौजदार ने उनसे पूछा आप कहाँ रहती हैं। श्रीमती जोशी ने जवाब दिया कि हम लोग कहीं भी अपनी रात बिता कर देश की सेवा करती हैं। इस पर फ़ौजदार ने कहा कि क्या यह स्त्रियों के लिए उचित है। श्रीमती जोशी ने उत्तर दिया कि हम लोग स्त्री नहीं, बल्कि मर्द हैं। इस मुँहतोड़ जवाब को सुनकर फ़ौजदार ने उन्हें कपड़े पहुँचाने से रोक दिया।

—धुबरी का १०वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ १ली नवम्बर को चार भूकम्प हुए, जिनमें से सभी तेज़ और रोमाञ्चकारी थे। ३ ता० को भी एक हलका भूकम्प हुआ। ये सब भूकम्प पानी बरसने के बाद हुए थे। वहाँ अभी तक ४०९ भूकम्प और हो चुके हैं।

—कलकत्ते का १०वीं नवम्बर का समाचार है कि चितरञ्जन एवेन्यू और बहू बाज़ार के चौराहे पर एक मोटर बस की ट्राम गाड़ी से टक्कर लग जाने के कारण ६ आदमी सख़्त घायल हुए। मोटर दो खण्डों की थी। टक्कर लगते ही ऊपर का खण्ड ज़मीन पर गिर पड़ा।

—कोयम्बटूर का समाचार है कि एक चपरासी की स्त्री ने रामनाथपुरम में कौटुम्बिक कलह के कारण अपने तीन बच्चों को कुएँ में फेंक कर स्वयं आत्म-हत्या कर ली।

गुजरात के गाँवों में क़ुर्क़ियों का बाज़ार गर्म हो रहा है

बोरसद का ९ वीं नवम्बर का समाचार है कि बोरसद का मामलतदार एक पुलिस की पार्टी के साथ गाँवों में घूम रहा है। ३०वीं अक्टूबर को सवेरे वह बचोसन गाँव गया था। वहाँ उसने गाँव वालों को मामूली कच्ची झोपड़ी में रहते हुए पाया। कहा जाता है कि गोरल में उसने ७ मकानों के ताले तोड़े जिनमें एक बनिए का घर भी सम्मिलित है, जो खातेदार नहीं है। वापस आते समय उसने तुलसी भाई लाधजी भाई के कमरे का भी ताला तोड़ा। उसके बाद उसने आठ घर क़ुर्क़ किए और २९ रुपया की क़ीमत का सामान ले गया।

धन्तली कनजनिया में २८वीं अक्टूबर को सर्कल इन्स्पेक्टर ने चार आदमियों के मकान क़ुर्क़ किए और १९० रुपया का सामान ले गया। वह कानपुर के मोती भाई के किराएदार शाह लल्लू भाई हरजीवन की १६०० रुपया की क़ीमत का ३०० पौण्ड तम्बाकू भी ले गया।

मामलतदार बाद में बहुत से पुलिस के सिपाहियों के साथ बोरसद गया। वहाँ से निम्न सामान ले गया: अमीन मशीहि भाई की ग़ैर हाज़िरी में उसकी घोड़ी, अमीन कोशी भाई के पॉकेट में से ९० रुपया और अमीन नाथू भाई के ४ सोने के बटन! उसने बिना दस्तख़त एक १६ रुपया का चेक भी पॉकेट से निकाला परन्तु नाथू भाई के दस्तख़त करने से इनकार करने पर उसने वह चेक वापस दे दिया। २८वीं अक्टूबर को मतुल कारकुन, अनक्लव गाँव गया और मीरा भाई हरि भाई की स्त्री के कर्णफूल और दो सेर धान क़ुर्क़ कर लिए। कहा जाता है कि पुलिस ने उन अछूत स्त्रियों को बहुत बुरी तरह पीटा, जिन्होंने बिना मज़दूरी के सामान ले जाने से इनकार किया !!

'प्रजातन्त्र-फ़ौज' का 'हिन्दुस्तान टाइम्स' को पत्र

दिल्ली का १०वीं नवम्बर का समाचार है कि 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के दफ़्तर में प्रजातन्त्र फ़ौज के प्रचार-विभाग के सेक्रेटरी श्री० सूरजबलीसिंह का दस्तख़ती पत्र पहुँचा है जिसमें 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित 'हिंसा का निष्कर्ष' नामक सम्पादकीय लेख का विरोध किया गया है। पत्र रजिस्ट्री डाक से बनारस से भेजा गया है और उस पर ६ ता० की मुहर लगी है।

पत्र में लिखा है :—"सम्पादक महोदय, आप अहिंसा पर विश्वास करें और उसका प्रचार करें परन्तु देश के नवजवानों से यह कहना कि वे ग़लत मार्ग पर हैं, देशद्रोही बनना है। आप अहिंसा का प्रचार करते जाइए, हम आप पर तब तक दबाव नहीं डालते जब तक हम समय की प्रतिकूलता के कारण विवश हैं। हिन्दुस्तानी प्रजातन्त्र फ़ौज आपको सचेत करती है कि आप पत्र में हिंसा के विरुद्ध कुछ न लिखें। हम इस बार आपको क्षमा करते हैं। परन्तु यदि आपने भविष्य में ऐसा ही लिखा तो आपको उचित सज़ा दी जायगी।"

—गोलमेज़ परिषद् के लिए बड़ी-बड़ी तैयारियाँ की गई हैं जिस कमरे में उसकी बैठक होगी उसमें ७ लाउड स्पीकर लगाए गए हैं, जिसमें उस बड़े कमरे में सब के पास आवाज़ स्पष्ट रूप के पहुँच सके।

* * *

इंगलैण्ड को भी सत्याग्रह की हवा लग गई

टैक्सबन्दी का आन्दोलन :: जेल जाने की तैयारियाँ

लन्दन के 'ग्रैफ़िक' पत्र में मि० ए० पी० हर्बर्ट ने एक लेख लिखा है, जिसमें उन्होंने ब्रिटेन में टैक्स-बन्दी के सम्बन्ध में एक ज़ोरदार अपील की है, जिससे गवर्नमेण्ट जनता के धन का अपव्यय बन्द कर दे। अपील में उन्होंने लिखा है कि "टैक्स की कोई सीमा होती है और वह सीमा हम लोगों की टैक्स देने की शक्ति है। परन्तु जब टैक्स अर्थ-शास्त्र के नियमों को उल्लङ्घन करने लगता है, तब कोई उसे गवारा नहीं कर सकता। मुझे स्पष्ट मालूम होता है कि निकट-भविष्य में इन्कम-टैक्स के विरुद्ध देश भर में विद्रोह की आग फैलेगी और मेरी आकांक्षा है कि उस विद्रोह का मैं सङ्गठन कर सकूँ, क्योंकि उसे मैं देश के प्रति अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। 'टाइम्स' और 'डेलीमेल' के बढ़िया सम्पादकीय लेख गवर्नमेण्ट का बढ़ता हुआ ख़र्च नहीं रोक सकते और न बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों के लम्बे-चौड़े भाषण और 'हाउस ऑफ़ कॉमन्स' के मेम्बर ही यह ख़र्च कम कर सकते हैं, क्योंकि वे उसी समय तक के लिए वहाँ के सदस्य हैं, जब तक वे वर्तमान ख़र्च क़ायम रख सकें। परन्तु जब तक यह ख़र्च कम न किया जायगा, हमारे दिवालिया होने से कोई—मुक्त-व्यापार भी—रक्षा नहीं कर सकता।

"गवर्नमेण्ट का यह ख़र्च कम करने का एक ही रास्ता है; और वह यह है कि लोग इन्कम-टैक्स देने से इनकार कर दें। हमारा उद्देश्य कितना ही उच्च क्यों न हो, परन्तु हम यह नहीं चाहते कि ब्रिटिश लोग बेईमानी करें। हम तो यह चाहते हैं कि वे विद्रोह करें। ब्रिटेन के केवल २५ लाख निवासी टैक्स देते हैं और वे इस बोझ से दबे जा रहे हैं। यदि वे टैक्स देना बन्द कर दें तो गवर्नमेण्ट सबको जेल नहीं भेज सकती। स्थानाभाव के कारण मैं आन्दोलन का पूरा कार्यक्रम नहीं दे सकता, परन्तु मैं इतना अवश्य कह सकता हूँ कि उससे झगड़ा अवश्य बढ़ेगा। हमें उसके लिए अभी से प्रयत्न करना पड़ेगा, जिससे अगले साल के प्रारम्भ में ही हम आन्दोलन शुरू कर सकें।"

सन्थालों ने पुलिस पर पत्थर बरसाये

२५ सिपाही घायल :: सार्जण्ट-मेजर की पसलियाँ टूट गईं

पटना का १०वीं नवम्बर का समाचार है कि सन्थाल परगनों की गोड्डा पुलिस-चौकी में भयङ्कर बलवा हो गया है। मालूम होता है कि बिलाहा गाँव में सन्थालों की सभा हुई थी, जिसमें ग़ैर-क़ानूनी शराब बनाने के लिए लोगों को भड़काया गया था। सभा के बाद ही उसे सङ्गठित करने वाले गिरफ़्तार कर लिए गए। इसके बाद एक दूसरी सभा की घोषणा हुई, परन्तु १४४ वीं धारा लगा कर अधिकारियों ने उसे रोकने का प्रयत्न किया। जब लोग सभा के लिए एकत्र होने लगे, तब उन्हें चले जाने का आदेश दिया गया। अधिकांश लोगों ने यह आदेश मान लिया, परन्तु उनमें से कुछ लोग वहाँ से बिना सभा किए जाने के लिए तैयार नहीं हुए। वे उभड़ पड़े और पुलिस के जत्थे पर उन्होंने पत्थर फेंके। सुपरिण्टेण्डेण्ट की आज्ञा से पुलिस ने लाठी-प्रहार प्रारम्भ कर दिया। जनता लाठी-प्रहार से भागने लगी, परन्तु वह भागते समय गिरफ़्तार आदमियों को छुड़ाती ले गई। पत्थरों की वर्षा से पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० कोड, एक इन्स्पेक्टर, १४ कॉन्स्टेबिलों और ६ चौकीदारों को मामूली चोटें आई हैं। परन्तु सार्जेण्ट-मेजर रघुनाथ-सिंह को पत्थरों और लाठियों से सिर पर बहुत सख़्त चोटें लगी हैं। उनकी पसलियों की दो हड्डियाँ भी टूट गई हैं। उनकी हालत नाज़ुक है। घटनास्थल पर १५० फ़ौज और पुलिस के सशस्त्र सिपाही पहुँच गए हैं और पुलिस के डिपुटी इन्स्पेक्टर जनरल स्वयं वहाँ की देख-भाल कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में अब तक २८ आदमी गिरफ़्तार हो चुके हैं।

पुलिस-लॉरी पर धावा

केंटा का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि २री नवम्बर को कुछ लोगों ने लोरालई के पास एक पुलिस-लॉरी पर धावा किया। पुलिस के पास बन्दूकें और कारतूस काफ़ी तादाद में थे; जब पहली गोली चली तब पुलिस वालों ने गोली चलाना और लॉरी को बड़ी तेज़ी से चलाना प्रारम्भ किया, परन्तु हमला करने वालों ने टायर में गोली मार कर उसे आगे बढ़ने से मजबूर कर दिया। इसके बाद युद्ध की तरह दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगी और इस लड़ाई में पुलिस-पार्टी के ड्राइवर और हेड कॉन्स्टेबिल मारे गए तथा बहुत से घायल हुए। हमला करने वाले उनकी बन्दूकें और २०० कारतूस लेकर चम्पत हो गए। लोरा-लई से फ़ौज के सिपाही उसी समय भेजे गए, परन्तु उस भाग की ऐसी स्थिति है, कि वहाँ पता लगाना आसान काम नहीं है। अपराधियों का अभी तक कोई पता नहीं है। इसी प्रकार का एक धावा उसी समय कालट नामक स्थान में हुआ, जिसमें १० आदमी मारे गए।

"विद्यार्थियो कॉलेज और स्कूल छोड़ो"

जेल जाते समय बम्बई के 'डिक्टेटर' श्री० चट्टो-पाध्याय ने यह सन्देश भेजा है—"अब समय रचनात्मक कार्यक्रम का आ गया है और भारत भर में इसी का प्रचार करना होगा। कॉङ्ग्रेस के इस कार्यक्रम के साथ, जो जनता ने अच्छी तरह निभाया है। मेरी राय है कि हमें उन युवकों और युवतियों की एक कमिटी बनाना चाहिए जो अपनी बुद्धि और अपने व्यक्तित्व से दूसरों को आकर्षित कर सकते हैं और अपने तर्कों और वाक्शक्ति से दूसरों में विश्वास उत्पन्न कर सकते हैं। विद्यार्थियों का भविष्य और उनके देश की संपूर्ण परिस्थिति उनके सामने है; इस समय उनका कर्त्तव्य है कि वे गवर्नमेण्ट कॉलेजों और स्कूलों को ख़ाली कर देश के कोने-कोने में टिड्डी-दल की तरह फैल जावें। वे गाँवों, वर्कशापों और मिलों में बँट दिए जावें। वे उनके साथ इस प्रकार हिल-मिल कर रहें कि जिससे वे उनके अस्तित्व के भाग बन जावें। अपने इस कार्य से कुछ दिनों बाद जनता को वे इस प्रकार जागृत कर सकेंगे कि देश के कोने-कोने में राष्ट्रीय आन्दोलन घुस कर उसे ग़ुलामी से सदैव के लिए मुक्त कर देगा। यह संग्राम बड़ा भयङ्कर है और अभी कुछ दिनों तक यह जारी रहेगा। हमें अपनी शक्तियाँ संग्रहीत कर इसमें जुट जाना चाहिए। हमारा स्वतन्त्रता का अर्थ संसार की पददलित जातियों की स्वतन्त्रता है। हमारा संग्राम केवल राष्ट्रीय-संग्राम नहीं है, वह संसार की मुक्ति का संग्राम है।"

* * *

मौ० मुहम्मदअली की चेतावनी

लन्दन का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि मौलाना मुहम्मदअली अपनी पत्नी के साथ वहाँ पहुँच गए। उनका स्वास्थ्य पहिले से कुछ अच्छा है।

'रियूटर' के प्रतिनिधि से मुलाक़ात में उन्होंने कहा है कि वे वहाँ ग्रेटब्रिटेन के मित्र की हैसियत से आए हैं। उन्होंने कहा कि "यदि ब्रिटिश जनता भारत के साथ न्याय करने के लिए तैयार है तो भारत सदैव इङ्गलैण्ड का मित्र बना रहेगा, नहीं तो उसके लिए भारत अब एक खोया हुआ उपनिवेश हो चुका है। यदि ब्रिटेन ने भारत को खो दिया तो वह यूरोप में पाँचवें दर्जे का राष्ट्र रह जायगा। मेरी बी पहली बार पर्दा छोड़ कर मेरे साथ मेरी सेवा-सुश्रूषा या मुझे दफ़नाने आई है।" मौलाना शौकतअली ने कहा—"मेरे भाई अपनी जान पर खेल कर सुलह की आख़िरी कोशिश करने आए हैं।"

सर्दार पटेल विद्यार्थियों से नहीं मिले

जब सर्दार वल्लभ भाई पटेल इलाहाबाद में थे, तब इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के कुछ विद्यार्थी उनसे मुलाक़ात करने 'आनन्द-भवन' गए थे। बाहर बरामदे में आते ही उन्होंने पहिला प्रश्न यह किया कि "आप लोग कौन हैं?" जब उन्हें मालूम हुआ कि वे यूनीवर्सिटी के विद्यार्थी हैं, तब उन्होंने केवल इतना कहा कि "आप विद्यार्थी हैं और मैं किसान; मेरा आपका क्या सम्बन्ध।" इतना कह कर उन्होंने मुँह फेर लिया और पण्डित मोतीलाल जी के पास चले गए। बेचारे विद्यार्थी अपना सा मुँह लेकर वापस चले आए।

श्री० विट्ठल भाई पटेल जेल में बीमार

अम्बाला का ८वीं नवम्बर का समाचार है कि श्री० पटेल का वज़न जेल में १० पौण्ड और घट गया है। वे पहिले बवासीर और हर्निया रोगों से पीड़ित थे, परन्तु अब उन्हें पेट का रोग भी हो गया है। उनका उपचार बहुत ही असन्तोषजनक है। उनकी बवासीर की बीमारी १० साल से दबी हुई थी, परन्तु जब से वे जेल गए हैं तभी से यह रोग फिर से उभड़ पड़ा है। इसलिए यह अत्यन्तावश्यक है कि विशेषज्ञ डॉक्टरों का एक बोर्ड नियुक्त किया जावे जो उनकी चिकित्सा का शीघ्र ही निर्णय करे। श्री० पटेल जेल में अकेले हैं, क्योंकि अम्बाला जेल में 'ए' क्लास का कोई दूसरा क़ैदी नहीं आया। और यह उचित मालूम होता है कि वे किसी अच्छी जेल में भेज दिए जायँ जहाँ उनके भोजन, उपचार और साथियों का ठीक-ठीक प्रबन्ध हो जाय। जेल में उनकी, मित्रों और कुटुम्बियों से मुलाक़ात और पत्रों की रोक-टोक भी अभी तक जारी है।

नागपुर यूनीवर्सिटी को ३० लाख का दान

नागपुर का ८वीं नवम्बर का समाचार है कि कौन्सिल ऑफ़ स्टेट के सदस्य और कामटी (नागपुर) के सुप्रसिद्ध व्यापारी रायबहादुर श्री० लक्ष्मीनारायण ने नागपुर यूनीवर्सिटी को ३० लाख रुपए का दान दिया है।

—ख़बर है कि आगरे में श्री० कृष्णमोहन मेहरा के, जिनकी दूकान पर धरना दिया जा रहा है, छोटे भाई की, घर लौटते समय सात बजे शाम को किसी ने नाक काट ली है! अभियुक्त नाक काट कर लापता हो गया है। अस्पताल में उनकी नाक सी दी गई है। अभियुक्त की गिरफ़्तारी के लिए पुलिस ने १०० रुपए का इनाम देने की घोषणा की है।

—कलकत्ते के असाधारण गज़ट में एक सूचना निकली है, जिसके अनुसार २वीं नवम्बर से चिटगाँव ज़िले में १४४ दफ़ा दो माह के लिए और बढ़ा दी गई है।

—दिल्ली के छठवें डिक्टेटर श्री० हफ़ीज़ फ़ैज़अहमद के स्थान पर श्री० सुरेन्द्रनाथ जौहर वहाँ के डिक्टेटर नियुक्त हुए हैं।

—फ़ैज़ाबाद का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ की सत्याग्रह-विरोधिनी सभा के प्रेज़िडेण्ट मि० जाने दिया जाता था और न अन्दर से बाहर। भङ्गियों ने उनका अहाता साफ़ करने से इनकार कर दिया।

कौन्सिल-हॉल पर राष्ट्रीय झण्डा

बम्बई में ६ठी नवम्बर को पीपिल्स बैटेलियन के एक सदस्य ने फिर लेजिस्लेटिव कौन्सिल-हॉल पर राष्ट्रीय झण्डा फहरा दिया और वहाँ 'प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी ऑफ़िस' की एक तख़्ती भी लगा दी। कोई गिरफ़्तारी इस सम्बन्ध में नहीं हुई।

पिकेटिङ्ग ग़ैर-क़ानूनी नहीं है

६ठी नवम्बर को बम्बई के प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने दो महिला-अभियुक्तों को, जो पिकेटिङ्ग के अभियोग में गिरफ़्तार हुई थीं, इस कारण छोड़ दिया है कि वे केवल दुकान के सामने बैठी थीं और लोगों से विदेशी कपड़ा न ख़रीदने की प्रार्थना कर रही थीं; वे पिकेटिङ्ग नहीं कर रही थीं। उन्हें छोड़ते हुए मैजिस्ट्रेट ने लिखा है—"हाईकोर्ट की नज़ीर के अनुसार लोगों को समझाना और उनसे न ख़रीदने की प्रार्थना करना, अपराध नहीं है।"

अफ़ज़ल हुसैन वकील को एक पत्र मिला है, जिसमें उन्हें इस बात की धमकी दी गई है कि यदि वे सत्याग्रह आन्दोलन के विरुद्ध कार्यवाही करना बन्द न करेंगे तो जान से मार डाले जायँगे। चिट्ठी इलाहाबाद से भेजी गई है और उस पर २ वीं नवम्बर की मुहर लगी है। चिट्ठी वहाँ के डिप्टी कमिश्नर को दे दी गई है।

—लाहौर का समाचार है कि डॉक्टर आलम का वज़न, जो हृद्रोग से पीड़ित हैं, २८ पौण्ड घट गया है। वे लाहौर सेण्ट्रल जेल से गुजरात स्पेशल जेल भेज दिए गए हैं।

—अमृतसर का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि दो दिन पहिले श्री० धन्नूमल मोहनलाल की कपड़े की दूकान पर से पिकेटिङ्ग उठा ली गई, क्योंकि उन्होंने कपड़े पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवाने का वादा कर लिया है। कल पिकेटिङ्ग बहुत ज़ोर से हुई थी और कुछ स्त्री-कार्यकर्ताओं ने उनके मकान पर सियापा भी मचाया था। उनका सामाजिक बहिष्कार किया गया था और उनके घर की स्त्रियों और बच्चों को न तो बाहर से अन्दर आने दिया जाता था और न अन्दर से बाहर। भङ्गियों ने उनका अहाता साफ़ करने से इनकार कर दिया।

—कानपुर का ७वीं नवम्बर का समाचार है कि 'वर्तमान प्रेस' जो कि प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार गवर्नमेण्ट ने क़ुर्क़ कर लिया था, ३री नवम्बर को नायब तहसीलदार ने २०० रुपया में नीलाम कर दिया। बोली बोलने वालों में गवर्नमेण्ट द्वारा नियुक्त म्युनिसिपिल कमिश्नर हाजी क़मरुद्दीन और तीन अन्य मुसलमान थे। प्रेस की क़ीमत ४००० रुपया अन्दाज़ी जाती है। 'वर्तमान' पत्र के सम्पादक पण्डित रमाशङ्कर अवस्थी, जो प्रेस के मालिक भी थे, ६ माह की सज़ा भोग रहे हैं।

श्रीमती सेन गुप्त का अपने पुत्रों को पत्र

श्रीमती सेन गुप्त ने अपने दोनों पुत्रों को जेल से निम्न-लिखित पत्र भेजा है :—

"मेरे प्यारे बच्चो, तुमने यह अवश्य सुना होगा कि तुम्हारी माँ गिरफ़्तार हो गई; परन्तु इस समाचार से तुम विचलित न हुए होगे, क्योंकि मैं अपने पहले पत्र में यह लिख चुकी थी कि मैं किसी समय गिरफ़्तार की जा सकती हूँ। मेरी तुम कोई चिन्ता न करना। मैं बहुत अच्छी तरह हूँ। मैं जानती हूँ कि जेल के भीतर रहने वाले को जेल का ख़्याल उतना दुःखदायी नहीं होता, जितना जेल के बाहर रहने वाले को होता है।

"मेरे साथ दो अन्य स्त्रियाँ गिरफ़्तार की गई थीं, अब हम जेल में कुल २० स्त्रियाँ हैं। मेरे और श्रीमती आसफ़अली के सिवा, अन्य सब महिलाएँ पञ्जाबी हैं। परन्तु श्रीमती आसफ़अली बङ्गाली महिला हैं, उनके पति भी जेल में हैं। यदि वे यहाँ न होतीं तो निस्सन्देह मेरी कल की रात्रि बुरी तरह व्यतीत होती, क्योंकि उनके सिवा अन्य सभी स्त्रियाँ हिन्दी बोलती हैं। हम दोनों यूरोपियन वार्ड में एक ही कमरे में हैं। तुम्हारे बाबू जी (श्री० सेन गुप्त) अपने कमरे में अकेले हैं। मैं कल रात्रि को उनसे मिली थी, परन्तु उसके बाद अभी १० बजे तक मेरी उनसे मुलाक़ात नहीं हुई। मेरे बच्चो! मेरे लिए तुम बिलकुल चिन्तित न होना। मुझे चिन्ता केवल इसी बात की है कि दादी और तुम चिन्तित होगे, परन्तु मैं बहुत अच्छी तरह हूँ। जेल के अधिकारियों का व्यवहार मेरे साथ बहुत सभ्यतापूर्ण है।"

—मद्रास का समाचार है कि मद्रास गवर्नमेण्ट ने कोकोनाडा और राजमहेन्द्री में ३ माह के लिए दफ़ा १४४ और बढ़ा दी है।

—मालूम हुआ है कि श्री० हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय के स्थान पर श्री० डी० एस० बखेकर एडवोकेट बम्बई 'युद्ध-समिति' के नए डिक्टेटर नियुक्त हुए हैं।

—सहयोगी अङ्गरेज़ी दैनिक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के सम्पादक श्री० जे० एन० साहनी ६ठी नवम्बर को १२॥ बजे जेल से छोड़ दिए गए। उन्हें गत २८वीं मई को नमक-एक्ट की ४वीं धारा के अनुसार ६ मास की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई थी। जेल से रिहा होने के बाद वे खेल-हाउस में अपनी बहिन श्रीमती कोहली से मिलने गए थे।

—बहराइच से ३५३ वालण्टियर लानपारा केवल विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने गए हैं।

—आठ नवम्बर को श्रीयुत तीनकौड़ी बनर्जी के, जो दक्षिण कलकत्ता कॉङ्ग्रेस खादी-बोर्ड के सङ्गठनकर्ता थे, घर की तलाशी ली गई।

—पञ्जाब की जेलों में इस समय क़रीब १०० कॉङ्ग्रेस की स्वयंसेविकाएँ बन्द हैं। इनमें से बहुत सी तो "सी" दर्जे में रक्खी गई हैं। ऐसा कोई अन्य प्रान्त नहीं, जहाँ इतनी महिला सत्याग्रही ब्रिटिश सरकार की जेलों को सुशोभित कर रही हों।

—बम्बई का ८वीं नवम्बर का समाचार है कि मङ्गलदास मार्केट, जो फुटकर कपड़े का बम्बई में सब से बड़ा बाज़ार है, ४थी नवम्बर से बन्द है। मालूम होता है कि वहाँ के दूकानदारों ने महिलाओं की गिरफ़्तारी बचाने के लिए एक माह तक बाज़ार बन्द रखने का निश्चय किया है। ४थी नवम्बर को महिलाओं की गिरफ़्तारी का हाल सुनते ही यह मार्केट बन्द हो गया था। गिरगाँव की भी अधिकांश विदेशी कपड़े की दुकानें बन्द हैं।

—बम्बई का ७ वीं नवम्बर का समाचार है कि बम्बई गवर्नमेण्ट के असाधारण गज़ट में एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है, जिसके अनुसार बम्बई प्रान्त का 'पीपिल्स बैटेलियन' और शहर के युवक-सङ्घ की सब शाखाएँ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई हैं, क्योंकि ये क़ानून का विरोध करने वाले कार्यों का सङ्गठन करते हैं और शासन-कार्य में रुकावट डालते हैं। गज़ट में ऐसी १२ संस्थाओं के नाम दिए हैं।

८० वर्ष का बूढ़ा गिरफ़्तार

शेख़पुरा का समाचार है कि निज़ामुद्दीन के विदेशी वस्त्र बॉयकॉट सम्बन्धी कॉङ्ग्रेस के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने से इनकार करने के कारण उनकी दुकान पर एक ८० वर्ष के बूढ़े और १० वर्ष के बालक ने पिकेटिङ्ग की थी। वे गिरफ़्तार कर लिए गए। इस पर एक सिक्ख सज्जन ने दूकानदार से क़ीमत लेकर कुल विदेशी कपड़े का स्टॉक जला देने के लिए कहा, परन्तु वह राज़ी नहीं हुआ।

—बम्बई के सम्पादकों ने श्रीयुत नटराजन की अध्यक्षता में एक सभा की है, जिसमें पुलिस-कमिश्नर के समाचार-पत्रों को दिए हुए नए हुक्म के विषय में वाद-विवाद हुआ और निम्न-लिखित प्रस्ताव पास किया गया—

"यह सम्पादकों की सभा बम्बई के पुलिस कमिश्नर के नए हुक्म के विरुद्ध, जिससे पत्रों को ग़ैर-क़ानूनी संस्थाओं की ख़बरें तथा विज्ञप्तियों के प्रकाशित करने से मना किया गया है, अपना घोर विरोध प्रकट करती है। सम्पादन-कला उतना ही आदरणीय कार्य है, जितना कि वकालत या डॉक्टरी; और कमिश्नर का यह हुक्म बिलकुल वैसा ही है, जैसा कि उसने डॉक्टरों तथा वकीलों को दिया था, जिसमें उन्हें कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ताओं को सहायता देने से मना किया था। हिज़ इक्सेलेन्सी गवर्नर ने स्वयं यह कहा था कि प्रेस-ऑर्डिनेन्स समाचारों को रोकने के लिए नहीं, वरन् सम्पादकीय टिप्पणियों के रोकने के लिए लगाया गया था। इसलिए यह कमिश्नर का हुक्म तो दमन में वाइसराय के ऑर्डिनेन्स से भी ज़्यादा बढ़ गया है; इससे प्रेस की स्वतन्त्रता को बहुत धक्का पहुँचेगा। देश के लिए सच घटनाओं का ज्ञान अति आवश्यक है। यह नया हुक्म बिना समझे-बूझे दिया गया है। सम्पादकों की यह सभा आशा करती है कि यह फ़िज़ूल का हुक्म शीघ्र ही हटा लिया जायगा।"

शहर और ज़िला

—करछना (इलाहाबाद) के सब-डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट ठाकुर महेन्द्रपाल सिंह ने अलग-अलग ऑर्डिनेन्सों के अनुसार चार व्यक्तियों को ६-६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। पुरुषोत्तम और बेनीमाधो को लोगों से लगान न देने की प्रार्थना करने के अभियोग में और बाबूलाल और शम्भूनाथ को १८ सितम्बर को भारी बाज़ार में शराब और विलायती दवाइयों की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में सज़ा हुई है।

—इलाहाबाद की पुलिस ने ग़ैर-क़ानूनी जुलूस के सम्बन्ध में श्री० महावीरप्रसाद, लक्ष्मणलाल और शिवराम अग्निहोत्री की गिरफ़्तारी की है। इनका मुक़दमा भी पं० सुन्दरलाल जी आदि के साथ ही होगा।

—७वीं नवम्बर को दारागञ्ज में कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ता श्री० श्रीनाथसिंह जी बुधवार के ग़ैर-क़ानूनी जुलूस के सम्बन्ध में, जो अलबर्ट रोड पर पुलिस द्वारा रोका गया था, गिरफ़्तार कर लिए गए।

प्रयाग में पासियों की सभा

९वीं नवम्बर को ममफ़ोर्डगञ्ज के बाग़ में पासियों की एक सभा हुई जिसमें लगभग ५०० पासी उपस्थित थे। सभा ने निम्न प्रस्ताव पास किए हैं :—

१—पासियों की पञ्चायत यह निश्चय करती है कि इस जाति का हर एक व्यक्ति विदेशी कपड़े का बहिष्कार करेगा और खद्दर पहिनना अपना धर्म समझेगा। जो व्यक्ति इसका उल्लङ्घन करेगा वह देश और जाति-द्रोही समझा जायगा।

२—यह पञ्चायत निश्चय करती है कि जाति का जो व्यक्ति चरस, गाँजा, भाँग, अफ़ीम और शराब का उपयोग करेगा उसको जाति की ओर से पाँच रुपया जुर्माना होगा और जो व्यक्ति पीने वालों को पकड़कर पञ्चायत में हाज़िर करेगा उसे सवा रुपया इनाम दिया जायगा।

३—पासियों की यह पञ्चायत अखिल भारतवर्षीय आदि हिन्दू-कॉन्फ़्रेन्स का, जिसका अधिवेशन १९ और १६वीं नवम्बर को होने वाला है, बहिष्कार करती है, क्योंकि इस सभा से पासी जाति का कोई सुधार नहीं हो सकता।

४—पञ्चायत निश्चय करती है कि दो-तीन सप्ताह के बाद पासियों की एक विराट सभा पुरुषोत्तमदास पार्क में की जावे।

—इलाहाबाद में गत शुक्रवार को कई जगह तलाशी ली गई। पुलिस 'जवाहर के टुकड़े' की एक प्रति यूनियन जॉब प्रेस और ५० प्रतियाँ उसके प्रकाशक श्री० भगवतप्रसाद के यहाँ से ले गई। पुलिस 'मिश्र प्रेस' से भी एक किताब ले गई है, जिसमें किसानों से लगानबन्दी की प्रार्थना की गई है। राजा प्रेस, श्री० राममोहन लाल, बलभद्रप्रसाद रसिक और प्रसाद दीक्षित की दुकानों की भी तलाशी ली गई थी, परन्तु वहाँ कुछ नहीं मिला।

—इलाहाबाद में १ली और २री नवम्बर को पिकेटिङ्ग-ऑर्डिनेन्स के अनुसार जिन १८ आदमियों की गिरफ़्तारी हुई थी उनके मुक़दमे का फ़ैसला सिटी मैजिस्ट्रेट मि० जे० एस० ग्रोस ने ५वीं नवम्बर को सुना दिया। उनमें से १७ आदमियों को ६-६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—चौक में २ नवम्बर को अब्दुल रहीम की दूकान पर गिरफ़्तार होने वाले लोगों के नाम निम्न प्रकार हैं। शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० मुज़फ़्फ़र हुसेन, श्री० गजराजसिंह, शुबरात, गुलज़ारी लाल, सरजूप्रसाद, रामचन्द्र, रामप्यारे, झगड़ू, हृदयनारायण, और परमेश्वरीदीन। इन लोगों ने कार्यवाही में भाग लेने से इनकार कर दिया। अन्य सात व्यक्तियों के नाम, जिन्हें छः-छः माह की सज़ा हुई है, हैं: श्री० केदारनाथ, श्यामलाल, रामदयाल, रङ्गनाथ, पन्नालाल और छोटेलाल। ये सब त्रिवेणी रोड पर २री नवम्बर को शराब की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए थे और पण्डित सीताराम शुक्ले को दारागञ्ज की शराब की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में।

—हँडिया (इलाहाबाद) के सब-डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट ख़ाँ साहब रहमान बख़्श क़ादिरी ने श्री० रूपनारायण, श्यामसुन्दर शुक्ल और रघुनाथ शुक्ल को छः-छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है।

—इलाहाबाद के जवाहर-सप्ताह का आख़िरी दिन तारीख़ १० को समाप्त हुआ। उस दिन कई मुहल्लों में नमक बनाया गया। कॉङ्ग्रेस कमिटी की ओर से ज़ीरो रोड पर नमक बनाया गया। यहाँ पर श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू स्वयम् उपस्थित थीं। प्रातःकाल चौक के घण्टाघर पर नया झण्डा लगाया गया तथा वानर-सेना निकाली गई।

—नागपूर का समाचार है कि तारीख़ ८ को वहाँ कौन्सिल चुनाव के विरोध में काले झण्डों का एक जुलूस निकाला गया व एक सभा की गई जिसमें कॉङ्ग्रेस की कौन्सिल-बहिष्कार करने की आज्ञा के सम्बन्ध में भाषण दिए गए। चुनाव के स्थानों पर शस्त्रधारी पुलिस मौजूद थी। तारीख़ १० को चुनाव के दिन शहर में पूर्ण हड़ताल मनाई गई। एक-दो स्थानों में कुछ वोट मिले और बाक़ी सब स्थान ख़ाली पड़े रहे। इस सम्बन्ध में सी० पी० बार कौन्सिल की प्रेज़िडेण्ट श्रीमती अनुसूइया काले तथा सात अन्य स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं। एक बार लाठियों का प्रहार भी हुआ था।

—बनारस का ८वीं नवम्बर का समाचार है कि बनारस ज़िला जेल के ३४ राजनीतिक क़ैदियों ने ख़राब भोजन मिलने के कारण अनशन प्रारम्भ कर दिया है।

—श्रीयुत अम्बिकाचरन चक्रवर्ती, जो चिटगाँव शस्त्रागार की लूट के एक अभियुक्त हैं, ख़राब स्वास्थ्य के कारण पुरी जेल में ले जाकर रक्खे गए हैं। कुछ समय पहिले यह ख़बर उड़ी कि श्रीयुत चक्रवर्ती की मृत्यु हो गई है तथा उनके सम्बधियों ने उनका श्राद्ध इत्यादि भी कर डाला था।

—बिहार के मुँगेर ज़िले में प्यूनिटिव पुलिस रक्खी गई है। बिहार की सरकार अपनी विज्ञप्ति में कहती है कि तेघरा पुलिस थाने के आसपास के गाँवों में बहुत अशान्ति है। यहाँ के निवासियों ने सब से पहिले इस नए राजनैतिक आन्दोलन में भाग लिया है व क़ानून को तोड़ना तो वहाँ मामूली बात हो गई है। इससे १०० अधिक पुलिसमैन वहाँ रखना आवश्यक है। इस पुलिस का ख़र्च वहाँ के निवासियों के ऊपर रक्खा जावेगा। केवल राजभक्त छोड़ दिए जावेंगे।

राउण्डटेबिल कॉन्फ़्रेन्स में हिन्दू-मुस्लिम समस्या

—राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स के सदस्यों ने हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल करने के लिए १० नवम्बर को फिर एक सभा की। मुस्लिम दल ने मि० जिन्ना की १४ शर्तों का समर्थन किया। हिन्दू-दल जिसके श्रीयुत जयकर प्रधान हैं, कहता है कि भारत की भावी एकता तथा सहयोग के लिए यह आवश्यक है कि उसके शासन-विधान में जातीयता की बू न रहे। इसलिए उनका प्रस्ताव है कि यदि जातीय हित के लिए कुछ साधन रक्खे भी जावें तो वे ऐसे हों कि थोड़े दिनों बाद हटा दिए जा सकें। एक और समस्या हल करने का प्रयत्न किया जा रहा है। श्री० जयकर का दल चाहता है कि राउण्डटेबिल कॉन्फ़्रेन्स के प्रारम्भ में ही ब्रिटिश सरकार को एक विज्ञप्ति निकालना चाहिए जिसमें वे भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देने का वचन दें। कुछ लोग भारत की भावी शासन-प्रणाली के मूल-सिद्धान्तों को पहिले ही तय कर लेना चाहते हैं।

—अमृतसर में आठ नवम्बर को गुरु नानक का जन्म-दिवस मनाया गया। स्वर्ण मन्दिर के दर्शकों से श्रीमती रघुबीर कौर ने कम से कम एक साल तक विदेशी वस्त्र बहिष्कार करने के प्रतिज्ञा-पत्र लिखाए। कई हज़ार आदमियों ने प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर किए।

(दो सौ पादरियों की ब्रिटेन से अपील)

हो गई है। वर्तमान जागृति सच्ची जागृति है और हमारा विश्वास है कि कोई भी विधान जिसमें भारतीय मनोभाव का आदर न किया जायगा, और उसके स्वाभिमान की रक्षा न की जायगी, भारतीयों को सन्तुष्ट नहीं कर सकता। यह बात निष्कपट और प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार कर लेना चाहिए कि भारत का शासन-विधान उससे मनोभावों के अनुकूल बनाया जायगा। यदि ब्रिटिश सरकार इस बात का विश्वास लोगों के हृदयों में उत्पन्न कर दे तो गोलमेज़ परिषद् के सफल होने में कोई सन्देह नहीं है।

हमें उन समस्याओं का ख़ूब ध्यान है जो भारत के भविष्य शासन विधान का निर्णय करते समय आगे आयेंगी, हम यह भी महसूस करते हैं कि उपर्युक्त सिद्धान्त के स्वीकार करने से भारत में अल्प-संख्यक लोगों की रक्षा का प्रश्न उठेगा। परन्तु हमारे विचार से इस बात का निश्चय भारतीय नेताओं पर छोड़ देना चाहिए। गत मासों में शान्ति की जो चर्चा चली थी उसकी कार्यवाही को हम लोग बड़ी उत्सुकता से देखते थे और उसकी सफलता के लिए बड़े प्रयत्नशील व उत्सुक थे और समझौते के लिए सदैव उसी प्रकार प्रयत्नशील व उत्सुक रहेंगे। हमारे विचार से इन राजनीतिक समस्याओं को हल करने के लिए परस्पर के सौहार्द और विश्वास की आवश्यकता है। ईसाई की हैसियत से हमें प्रेम, सहानुभूति और दूरदर्शिता दिखाना चाहिए और हमें इस सौहार्द और मैत्र भाव की स्थापना के लिए उसके हानि-लाभ झेलने को तैयार रहना चाहिए।

हम गोलमेज़-परिषद की ओर अत्यन्त आशान्वित नेत्रों से टकटकी लगाए हैं और हम इसे एक शगुन समझते हैं कि परिषद् का उद्घाटन सम्राट स्वयं कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि भारतीय प्रतिनिधि इस देश की वर्तमान मनोवृत्ति का चित्र ब्रिटेन के हृदय पटल पर चित्रित कर देंगे और हमें इस बात का भी विश्वास है कि ब्रिटेन उनकी बातों को सहृदयता पूर्वक सुनेगा। हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि परिषद में न्यायपूर्ण और स्थायी समझौते हो जायँ और भारतीय प्रतिनिधि मिल कर एक आदरणीय समझौते पर पहुँच जायँ जिससे दोनों की ही भलाई है।

* * *

दिल्ली में ज़मीन के नीचे बम का कारख़ाना

गिरफ़्तार युवक ने भण्डा फोड़ दिया : वायसराय की हत्या की आयोजना

दिल्ली का ५ वीं नवम्बर का समाचार है कि ख़ुफ़िया पुलिस के इन्स्पेक्टर सरदार करनसिंह ने अपने मातहतों की सहायता से मेसर्स मन्नूलाल पारसदास टोपीवाले के घर की लगातार ६ घण्टे तक तलाशी ली। घर का कोना-कोना देखा गया और कमरों के फ़र्श तक खोद डाले गए, परन्तु उससे पुलिस को कुछ हाथ न लगा। जब पुलिस वहाँ से लौटने लगी तब उसने मन्नूलाल के लड़के कपूरचन्द को गिरफ़्तार कर लिया।

कपूरचन्द की गिरफ़्तारी से पुलिस का काम बन गया। उसने घबरा कर पुलिस को इस शर्त पर सब गुप्त रहस्य बतलाने का वचन दिया, कि उसे माफ़ी दी जाय और उसका छुटकारा कर दिया जाय। पुलिस ने उसकी पीठ ठोंकी और उसे विश्वास दिलाया कि सम्राट की पुलिस को सहायता पहुँचाने का उसे पुरस्कार अवश्य दिया जायगा। इसके उपरान्त कपूरचन्द उन्हें एक तहख़ाने में ले गया और वहाँ एक बम-फ़ैक्टरी दिखलाई। पुलिस को वहाँ एक बन्दूक़, दो पिस्तौलें, दो तलवारें, बहुत से कारतूस, बम बनाने के ख़ाली ख़ोल, तीन पौण्ड बारूद और बम बनाने के बहुत से रासायनिक द्रव्य मिले।

बङ्गलों के नक़शे

परन्तु सब से अधिक सनसनी फैलाने वाला वह नक़शा था, जिसमें अफ़सरों के बँगलों के पते, रास्तों के नाम और उनके नम्बर लिखे हुए थे। कहा जाता है कि पुलिस को एक ऐसी फ़ेहरिस्त मिली है, जिसमें उन पुलिस अफ़सरों और कॉन्स्टेबिलों के नाम लिखे हैं जिन्होंने सत्याग्रह-आन्दोलन में लाठी प्रहार किए हैं, विशेषतः जिन्होंने ६ मई को गोली चलाई है।

मालूम हुआ है कि 'यूनीवर्सल ड्रग-स्टोर' से पुलिस १५ पौण्ड नाइट्रिक एसिड, ४० पौण्ड सलफ़्यूरिक एसिड, रसीद की किताबें, बही-खाते, पुराने बिल और कई ज़हरीले पदार्थ अपने साथ ले गई है।

रामजस कॉलेज के प्रोफ़ेसर प्रभुदयाल के घर की तलाशी ली गई और पीछे उन्हें गिरफ़्तार भी कर लिया गया। दूसरे दिन ख़ुफ़िया पुलिस ने गवर्नमेण्ट स्कूल के एक विद्यार्थी रघुवीरसिंह के घर की तलाशी ली और उसे गिरफ़्तार कर ले गई। चाँदनी चौक के पास रायबहादुर वज़ीरदयाल के लड़के श्री० अमीरसिंह के घर की भी तलाशी ली गई, परन्तु पुलिस को वहाँ कुछ प्राप्त न हुआ।

वायसराय की हत्या की आयोजना

स्थानीय ख़ुफ़िया पुलिस बहुत दिन पहले से ही चौकन्नी रहती है, क्योंकि उसे इस बात का पता लगा था कि वहाँ वायसराय की हत्या की आयोजना हो रही है। इसी कारण जब से वायसराय और भारतीय गवर्नमेण्ट के ऑफ़िस दिल्ली आए हैं, पुलिस की निगरानी बढ़ा दी गई है। रात्रि में केवल मुख्य-मुख्य अफ़सरों के बँगलों पर ही सशस्त्र पुलिस का पहरा नहीं रहता, वरन् नई दिल्ली के रास्तों पर भी सशस्त्र पुलिस रात्रि में गश्त लगाती है। इसके साथ ही ख़ुफ़िया-विभाग के आदमी सादी पोशाक में शहर के कोने-कोने में नियुक्त किए गए हैं और उन्हें सदैव सचेत रहने की हिदायत दी गई है। मालूम हुआ है कि पुलिस शहर में आने वालों का पता रखने के लिए वहाँ के सब होटलों के रजिस्टरों की दिन में दो-दो बार जाँच करती है। इस सम्बन्ध में अङ्गरेज़ी होटल भी नहीं छोड़े जाते। विश्वस्त सूत्र से पता लगा है कि पहले दिल्ली के सीताराम बाज़ार में जो सात गिरफ़्तारियाँ हुई थीं, उनमें से एक एप्रूवर हो गया है। इसी अभियुक्त के बतलाने से पुलिस ने लाहौर में बहुत सी तलाशियाँ ली हैं। यह भी मालूम हुआ है कि उन सात अभियुक्तों में से, जिस पुरुष को शीतलप्रसाद और स्त्री को उसकी बहिन समझा जाता था, वे क्रमशः कालीचरण और श्रीमती भगवतीचरण थीं, जिनकी आवश्यकता पुलिस को लाहौर के नए षड्यन्त्र केस में थी। श्रीमती भगवतीचरण छः माह से लापता थीं।

ऐसी अफ़वाह है कि धन्वन्तरी का साथी, जो फ़तहपुरी की दुर्घटना के बाद भाग गया था, सुखदेव नहीं, वरन् कोई अन्य व्यक्ति था। ख़ुफ़िया-विभाग के छोटे-बड़े सब अफ़सरों से प्रार्थना करने पर भी धन्वन्तरी के भाई को उससे मिलने की आज्ञा नहीं दी गई।

पुलिस ने उसी दिन ४ बजे दुबारा यूनीवर्सल ड्रग-स्टोर की तलाशी ली और बहुत सी बोतलें, शीशियाँ और सब किताबें ले गई। सवेरे इस मामले में जिन तीन लोगों की गिरफ़्तारी हुई थी, उनमें से हर एक अलग-अलग जगह में रक्खा गया है। सेण्ट्रल कोतवाली के दरवाज़े पर बड़ा कड़ा पहरा लगा हुआ है।

गोलमेज़ परिषद कोरा ढोंग है

ब्रिटेन की कूटनीतिपूर्ण चालें :: फूट का बीज बोने की भयङ्कर आयोजना

लन्दन के समाचारों से पता लगता है कि गोलमेज़ परिषद् के प्रारम्भ होने के पहिले ही उसके उद्देश्य को असफल करने के लिए ब्रिटेन ने अपनी कूटनीतिपूर्ण चालें प्रारम्भ कर दी हैं। हिन्दू-मुसलमानों में फूट का बीज बोने के लिए मुसलमानों से हिन्दुओं के चुङ्गल में न फँसने की और उनसे सचेत रहने की ज़ोरदार अपीलें की जा रही हैं। इसी प्रकार देशी रियासतों और ब्रिटिश भारत में भी फूट डालने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। इसी प्रकार अछूतों के प्रतिनिधियों को ब्रिटेन अपनी ओर खींचने के लिए पूरी शक्ति लगा रहा है। भारत के सभी दलों के प्रतिनिधियों ने ब्रिटेन की इन कूटनीतियों का घोर विरोध किया है। यदि वहाँ के उच्च पदाधिकारियों ने इस प्रकार का प्रचार रोकने का प्रयत्न न किया तो गोलमेज़ परिषद उसके घातक प्रभाव से नहीं बच सकती।

४थी नवम्बर को सवेरे सर कावसजी जहाँगीर के स्थान पर श्री० जिन्ना की मुसलमानों की १४ माँगों पर हिन्दू-प्रतिनिधियों में वाद-विवाद हुआ था। इसी प्रकार मुसलमानों की भी एक अलग सभा हिज़ हाईनेस श्री आग़ा ख़ाँ के सभापतित्व में हुई थी। हिन्दुओं की ओर से निम्न-लिखित प्रतिनिधियों की एक कमिटी स्थापित की गई है, जिनके हाथ में हिन्दू-मुस्लिम और अल्प-संख्यक लोगों का प्रश्न हल करने के पूरे अधिकार दे दिए गए हैं। सर तेजबहादुर सप्रू, सर ए० पी० पेट्रो, सर चिमनलाल सेटलवाड, श्री० ए० रामस्वामी मुदालियर और श्री० एम० आर० जयकर। मुसलमानों ने भी उतने ही सदस्य नियुक्त किए हैं। हिन्दुओं ने यूरोपियनों को छोड़ कर जातीय समस्याएँ हल करने के लिए अन्य जातियों के निम्न प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया है। सरदार उज्ज्वलसिंह, श्री० ए० टी० पन्नीर सैलवम, डॉ० आम्बेडकर, राजा नरेन्द्रनाथ, सर पी० सी० मित्तर, डॉ० मुञ्जे, सर कावसजी जहाँगीर, मि० जे० एन० बसु और सरदार सम्पूर्णसिंह। आशा की जाती है कि ये इन समस्याओं को हल कर लेंगे।

श्री० अर्जुनलाल सेठी गिरफ़्तार

अजमेर के एक सम्वाददाता ने लिखा है कि १ली नवम्बर को सवेरे ६ बजे पुलिस ने कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस पर धावा किया और वहाँ के डिक्टेटर श्री० मोतीसिंह जी कोठारी तथा अन्य कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया। कुछ लोग रेलवे के दफ़्तरों और घरों पर भी गिरफ़्तार किए गए। केवल सवेरे ही ५० से ऊपर गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। छः आदमियों पर केवल इसलिए जुर्माना किया गया कि वे कॉङ्ग्रेस की एक सभा में भाषण सुनने गए।

श्री० मोतीसिंह के बाद श्री० अर्जुनलाल जी सेठी अजमेर के दूसरे डिक्टेटर बनाए गए। जीतमल जी लूणियाँ के सभापतित्व में सेठी जी ने १ली नवम्बर को ही हिन्दू-मुसलमानों से सब जातीय भेदभाव भूल कर नौकरशाही का मुक़ाबला करने की अपील की। २री नवम्बर को सवेरे वे भी गिरफ़्तार कर लिए गए। जनता में जोश है। दमन ज़ोरों पर है। श्री० सेठी जी के बाद श्री० जीतमल जी लूणियाँ अजमेर के नए डिक्टेटर नियुक्त हुए हैं।

---

४५ वर्ष का उपवास

कार्क के मेयर, श्री० यतीन्द्रनाथ दास, फुङ्गी विजय और अन्य व्यक्तियों के उपवासों के कारण लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा था। परन्तु हरकृष्णनगर (बाकुरा) के श्री० रामकृष्ण जना ने एक विचित्र ख़ी का वर्णन भेजा है। उनका कहना है कि बियूर (बाकुरा) की एक हिन्दू-विधवा ४५ वर्ष से बिना अन्न-जल के रह रही हैं। वे एक प्रतिष्ठित कायस्थ घराने की हैं और उनके भाई पुरुलिया की कचहरी के प्रसिद्ध वकील हैं। उनकी आयु ६० वर्ष की है और धर्म में सदैव रत रहती हैं, परन्तु गृहस्थी और सांसारिक कार्यों में उदासीन नहीं रहतीं। उनका स्वास्थ्य अत्युत्तम है और यद्यपि वे एक ऐसे गाँव में रहती हैं, जो मलेरिया के लिए प्रसिद्ध है, परन्तु उन्हें कभी कोई रोग नहीं हुआ। सम्वाददाता का कहना है कि उनके इस उपवास की परीक्षा बड़े-बड़े आदमियों ने की है। डॉक्टर और वैज्ञानिक ऐसी बात के सम्बन्ध में, जो कल्पना से परे मालूम होती है, क्या निर्णय करेंगे?

"अंगरेज़ों को भारत के राष्ट्रीय झण्डे का अभिवादन करना चाहिए"

"सरकार के साथ सुलह करने का अधिकार राउण्ड टेबिल में गए हुए नेताओं को नहीं है, वरन् उनको है, जो इस समय जेलों में बन्द हैं"

मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड ने, जो आजकल भारतवर्ष की राजनैतिक दशा का निरीक्षण करते फिर रहे हैं, 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्वाददाता को निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाशन के लिए दी है :—

"मुझे हिन्दुस्तान में आए हुए केवल तीन हफ़्ते हुए हैं। यह सब समय मैंने बम्बई प्रान्त में बिताया है। इस समय तक मैंने बम्बई, पूना, सूरत व अहमदाबाद का चक्कर लगाया है। इसके अतिरिक्त मैंने गुजरात के गाँवों में भी भ्रमण किया है। गुजरात के गाँवों में देखी हुई बातें मुझे हरदम याद रहेंगी। मैंने अपना सारा समय हिन्दुस्तानियों के बीच में बिताया है, और मुझे बम्बई-प्रान्त के निवासियों की दृढ़ता तथा एकता का पूर्ण परिचय मिला है। मैं जहाँ-जहाँ गया हूँ, लोगों ने मुझसे राउण्ड टेबिल कॉन्फ्रेन्स की सफलता तथा मज़दूर-दल की सचाई के विषय में प्रश्न किए। उत्तर में मैंने हर जगह यही कहा कि यदि दोनों दलों के नेताओं ने बुद्धिमानी से कार्य किया तो इस कॉन्फ्रेन्स से बहुत कुछ भलाई हो सकती है। कॉन्फ्रेन्स में जो कुछ होगा वह एक समझौता-सा होगा, जिससे भारतीयों को अपनी कुछ बातों को छोड़ना पड़ेगा और अङ्गरेज़ों को भी झुकना होगा। इससे कुछ माँगें पूर्ण हो जायँगी और कुछ अपूर्ण। यदि देश की दशा ऐसी शान्त हो जाय कि हिन्दुस्तानी उस सुलह के विषय में विचार कर सकें तो अच्छा है। पर इसकी आशा बहुत कम है। बिना कारण जनता को तङ्ग किया जा रहा है। जहाँ-तहाँ लाठियों के वार हो रहे हैं। भला ऐसी दशा में भारत मज़दूर-दल की सचाई में कैसे विश्वास कर सकता है?

"बम्बई के मैदान में अपने राष्ट्रीय झण्डे का अभिवादन करने के लिए जनता इकट्ठी हुई थी। वह बिलकुल शान्त थी, वहाँ ज़रा भी गड़बड़ न थी। पर इस शान्त जनता पर पुलिस ने लाठियाँ बरसाईं। २०० से ऊपर व्यक्ति घायल हुए और क़रीब ८० को इतनी चोट आई कि उन्हें तुरन्त उपचार की आवश्यकता पड़ी। यदि अङ्गरेज़ सचमुच भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देना चाहते हैं, तो उन्हें स्वतः ही भारत के राष्ट्रीय झण्डे का अभिवादन करना चाहिए। बड़े शहरों में जहाँ बड़े-बड़े यूरोपियन अधिकारी रहते हैं और अख़बारों के सम्वाददाता चक्कर लगाया करते हैं, दमन करने वाले ज़रा घबराते हैं। गाँवों में तो उन्हें कुछ भी डर नहीं रहता। मैंने अपने भ्रमण में देखा है कि गुजरात के हर एक गाँव में लगान वसूल करने के वक़्त पुलिस ने किसानों को बड़ी क्रूरता के साथ लाठियों से पीटा है। लाठी उठा कर पुलिस का सिपाही किसान से कहता है—"तुम्हे स्वराज्य चाहिए? ये ले स्वराज्य" और लाठियों की मार से उसे ज़मीन पर बिछा देता है। मैंने स्वतः अपनी आँखों से लाठी से घायल किसानों के घावों को देखा है।

"भला ये किसान, जिन्हें यह अच्छी तरह मालूम है कि यह पुलिस की काल-सेना सरकार की नौकर है, यह कैसे विश्वास कर सकते हैं कि यही सरकार उन्हें स्वराज्य देने का विचार कर रही है। भारत उसी समय सुलह कर सकता है जब उसके नेता, जिन पर जनता का पूर्ण विश्वास है, उसे सुलह की सलाह देंगे। उनमें से इस वक़्त एक भी नेता लन्दन नहीं गया है। उनमें से प्रत्येक मनुष्य जेल में है। भारत के ६०,००० राजनीतिक क़ैदियों में ही ऐसे लोग हैं जिनकी सलाह जनता को मान्य होगी। इन नेताओं में से ज़्यादातर लोग "सी" क्लास में रक्खे गए हैं, और जेल में उनके साथ वही बर्ताव किया जा रहा है, जो हत्यारों और नीच अपराधियों के साथ किया जाता है। जेलों में जगह नहीं है और खाने की भी कमी है। ऐसी दशा में क्या वे सन्धि की शर्तों पर निष्पक्ष भाव से विचार कर सकते हैं? कभी नहीं। और जब तक ये सुलह की बातचीत को घृणा की दृष्टि से देख रहे हैं, तब तक उसकी चर्चा ही फ़िज़ूल है। लन्दन में पहुँचे हुए सदस्य सुलह नहीं कर सकते। ये जेल में पड़े हुए नेता ही भारत के इतिहास को बना रहे हैं और सुलह करने में ये ही समर्थ हैं। राउण्ड टेबिल में गए हुए लोगों में से क़रीब दस या बारह ऐसे ज़रूर हैं, जिन्हें भारतवासी आदर की दृष्टि से देखते हैं। पर वे उनकी आज्ञा मानने को कदापि तैयार न होंगे। जनता तो केवल महात्मा गाँधी तथा उनके साथियों की आज्ञा का पालन कर सकती है। इससे मेरा यह मतलब नहीं कि मैं उनके साधनों से सर्वथा सहमत हूँ। एक बार तो मुझे उनकी बातों से बहुत खेद हुआ है। उन्होंने सप्रू-जयकर सन्धि के समय जो शर्तें रक्खी थीं, उसमें उन्होंने कुछ भी बुद्धिमानी न दिखाई थी।

"पर इस सन्धि के विषय में एक और भी बात थी। इसकी शर्तों से साफ़ ज़ाहिर होता था कि उन्हें ब्रिटिश गवर्नमेण्ट में बिलकुल विश्वास नहीं है। अब ब्रिटिश सरकार को अपनी सचाई का विश्वास दिलाने का केवल एक साधन बाक़ी बचा है। वे अपनी उदारता के परिचय से ही उनके अविश्वास को हटा सकते हैं। यदि वे कॉन्फ्रेन्स की सफलता चाहते हैं तो उन्हें चाहिए कि वे सब नेताओं को एक साथ जेल से छोड़ दें। ब्रिटिश सरकार को चाहिए कि वह बिना किसी शर्त के यह काम करे। मैं आशा करता हूँ कि भारत के नेता भी इसका उत्तर प्रेम-व्यवहार से देंगे। जब तक हम भारत के वायु-मण्डल को बिलकुल न बदल देंगे, राउण्ड टेबिल कॉन्फ्रेन्स करना बिलकुल व्यर्थ है।"

* * *

पिता की दुकान पर पुत्री का पिकेटिङ्ग

नागपुर का २०वीं अक्टूबर का समाचार है कि खामगाँव में किराने की दुकानों पर ज़ोरदार पिकेटिङ्ग होने के कारण वहाँ के व्यापारियों ने विलायती शक्कर, चाय और सिगरेट न बेचना मञ्ज़ूर कर लिया है। इस सफलता का सब श्रेय कुमारी काशी और कुमारी गया को है, जिन्होंने स्थानीय हाईस्कूल के विद्यार्थियों की सहायता से यह कार्य सम्पादन किया है। खामगाँव में कुमारी ज़ुबेदा ने, दूसरों के साथ अपने पिता की स्टेशनरी की दूकान पर पिकेटिङ्ग की।

* * *

बङ्गाल में १४,००० जेल गए

बङ्गाल में सत्याग्रह-आन्दोलन की प्रगति के सम्बन्ध में निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है :—

सत्याग्रह-आन्दोलन में बङ्गाल से लगभग १४,००० आदमी जेल जा चुके हैं। आन्दोलन से सम्बन्ध रखने वाले अन्य अपराधों में लगभग ५०० आदमी जेल गए। बङ्गाल-ऑर्डिनेन्स के द्वारा प्रायः ३२० आदमी नज़रबन्द किए गए। पुलिस ने क़रीब ५०० आदमी पकड़ कर छोड़ दिए।

कलकत्ता और आसपास के प्रायः सभी कॉङ्ग्रेस ऑफ़िसों पर पुलिस ने धावा किया और उनमें से प्रायः सभी ऑफ़िसों पर पुलिस ने अपना ताला डाल दिया है। ऑफ़िस के काग़ज़-पत्र जलाए गए और सामान ज़ब्त किया गया। जो अभी बचे हैं उन पर पुलिस की कड़ी निगाह है और उन पर अक्सर पुलिस धावा करती है।

पिकेटिङ्ग की सफलता के कारण विदेशी माल के ऑर्डर देना बिलकुल बन्द हो गया है। अक्टूबर से ३ करोड़ का विदेशी कपड़ा गोदामों में सड़ रहा है। बङ्गाल में दुर्गा-पूजा के समय लङ्काशायर के कपड़े की बिक्री पिछली साल की अपेक्षा ५ प्रतिशत भी नहीं रही। केवल अगस्त मास में सन् १९२९ के अगस्त मास की अपेक्षा ३ करोड़ ३२ लाख रुपए का कपड़ा कम आया। केवल बङ्गाल में १ करोड़ ८८ लाख का कम आया, जो प्रायः ५० प्रतिशत कम हो गया है। १९२९ के अप्रैल से अगस्त तक की अपेक्षा १९३० के उन्हीं महीनों में भारत भर में १० करोड़ ३५ लाख रुपए का सूती कपड़ा कम आया और केवल बङ्गाल में ३ करोड़ ४७ लाख का कपड़ा कम आया, जो प्रायः ३४ प्रतिशत होता है।

प्रधान मन्त्री अपनी प्रतिज्ञाएँ भूल गए

श्रीमती डॉक्टर एनी बिसेण्ट ने 'न्यू इण्डिया' पत्र में "मज़दूर-सरकार के दमन का उत्तर भारत स्वराज्य स्थापित करके ही दे सकता है" शीर्षक लेख में लिखा है :—"मैंने स्वयं भारत-मन्त्री श्री० वैजवुड बेन का ध्यान इङ्गलैण्ड के अपमान और उसके भविष्य के पतन की ओर आकर्षित किया है, परन्तु भारतीय अधिकारी अपना मार्ग नहीं छोड़ते। श्री० बेन और भूतपूर्व अण्डर सेक्रेटरी मेरे विचारों से सहानुभूति रखते हैं, परन्तु मन्त्रि-मण्डल में श्री० बेन अकेले हैं और प्रधान मन्त्री अपनी सब प्रतिज्ञाएँ भूल गए हैं।" श्री० बिसेण्ट का विचार है कि भारत की स्वतन्त्रता के लिए किसी अङ्गरेज़ी दल से आशा रखना बिलकुल फ़िज़ूल है। उनसे भारत को कोई सहायता मिलने की आशा न करनी चाहिए। उसे तो केवल अपनी शक्ति और ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।

धरना देना जुर्म नहीं

स्यालकोट के सेशन्स जज मि० भगत जगन्नाथ ने 'पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स' के अनुसार पकड़े गए १८ अभियुक्तों को छोड़ते हुए फ़ैसले में लिखा है कि इस ऑर्डिनेन्स के अनुसार धरना देना कोई जुर्म नहीं है। इस कारण घण्टा बजाना और विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देने के लिए स्वयंसेवक भरती करना भी कोई जुर्म नहीं है। एक स्वयंसेवक, जो दुकानों के पास खड़ा होकर ग्राहकों से विदेशी कपड़ा न ख़रीदने की प्रार्थना करता है, परन्तु न तो उसके मार्ग को रोकता है और न उसके साथ ज़बर्दस्ती करता है, पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार अपराधी नहीं है।

* * *

रूस को रवीन्द्रनाथ ठाकुर का सन्देश

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर यूरोप-भ्रमण करते हुए अभी हाल में रूस की यात्रा के लिए गए थे। वहाँ की दशा देख कर उनके मन पर जो प्रभाव पड़ा, उसका वर्णन उन्होंने रूस की राजधानी मॉस्को में दिए हुए भाषण में इस प्रकार किया है :—

रूस ने किसानों को शिक्षित बनाने में इतनी शक्ति लगाई है, कि उसका वर्णन करना कठिन है। यह कार्य बड़ी ही चतुरता के साथ किया जा रहा है और भिन्न-भिन्न साधनों द्वारा उनके मस्तिष्क, इन्द्रियों तथा देह को सुधारने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस कार्य के गौरव का अनुभव मुझे और भी ज़्यादा इसलिए होता है, कि मैं उस देश का निवासी हूँ, जहाँ के करोड़ों मनुष्य शिक्षा-जनित सुख से वञ्चित रक्खे जाते हैं और अशिक्षा के महान्धकार में उनकी बुद्धि, मन तथा शरीर सड़ाया जाता है! शिक्षा के अतिरिक्त अन्य ऊपरी उपचारों से मनुष्य का आन्तरिक स्वास्थ्य कभी नहीं सुधर सकता। रूसियों ने यह अनुभव किया है कि समाज की कुरीतियों का नाश करने के लिए उसे समूल नष्ट करने की आवश्यकता है। यह कार्य पुलिस की लाठी से या सेना की सङ्गीनों से नहीं हो सकता, इसकी एकमात्र दवा सुशिक्षा है !!

परन्तु, मैंने देखा है कि रूसी एक ऐसा काम कर रहे हैं, जो उनकी सुधार-भावना के ख़िलाफ़ है। यहाँ के निवासियों के हृदय में एक ऐसी भावना उत्पन्न की जा रही है, जो कुछ समय पश्चात समाज-सुधार में बाधा डाल सकती है। वे अपने देशवासियों को यह सिखलाते हैं, कि तुम अपने विरोधियों से घृणा करो—बदला लो। क्या यह उनके उच्च-आदर्श को नीचे नहीं गिरावेगा? इसमें सन्देह नहीं, कि उन्हें बहुत सी अड़चनों का सामना करना है, लोगों की अज्ञानता और सहानुभूति की कमी को जीतना है। पर रूस वालों का आदर्श केवल अपने देश के लिए नहीं, वरन् जैसा कि वे स्वयं कहते हैं, सारी मनुष्य जाति के उद्धार के लिए है। जब वह सारे संसार के लिए है तो उसमें उनके विपक्षी भी तो शामिल हैं। उन्हें चाहिए कि जैसे वे अपने किसानों को समझाने की कोशिश कर रहे हैं, वैसे ही और देशवासियों को भी समझावें। रूसी किसानों के धार्मिक तथा सामाजिक विचार भी वहाँ की साम्यवादी सरकार से बहुत भिन्न हैं, पर उनसे तो कोई शत्रुता नहीं दिखाई जाती; उनसे तो घृणा नहीं की जाती। फिर उन विदेशियों से, जिनके विचार उनसे भिन्न हैं, शत्रुता क्यों ठानी जाय? विपक्षियों के विचार चाहे ग़लत भी हों, पर वे उनकी ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाओं के फल हैं। उन मतों के अनुयायी चाहे मूर्ख माने जायँ, पर इस कारण उनके साथ और भी दया तथा प्रेम का भाव दिखाने की आवश्यकता है। इस लिहाज़ से रूसी किसानों में और उनमें कोई भी अन्तर नहीं है और दोनों से एक सा बर्ताव करने की आवश्यकता है।

यदि रूसी अपने शत्रुओं के अवगुणों पर ही ध्यान देते रहेंगे तो वे अपने ऊँचे आदर्श का ठीक तरह से अनुसरण न कर सकेंगे। वे एक बड़े आदर्श को कार्य-रूप दे रहे हैं। इसकी सफलता के लिए उन्हें चाहिए कि वे मानसिक तथा हार्दिक उदारता दिखलावें। उनके अपूर्व सुधार के कार्य को देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है। इस आन्दोलन के साथ मेरी पूरी सहानुभूति है और इसलिए मैं चाहता हूँ कि वह घृणा तथा शत्रुता पर नहीं, वरन प्रेम तथा दया के भावों पर निर्भर हो।

जहाँ स्वतन्त्रता है वहाँ विचारों में भेद अवश्य होगा। यदि संसार में सब के विचार एक से बना दिए जावें तो संसार की बहुत सी सुन्दरता का पता भी न चलेगा। विभिन्नता-रहित सूखा संसार तो बिलकुल अच्छा न लगेगा। यदि यह आदर्श सारे संसार के लिए है, तो रूसियों को चाहिए कि वे उनसे भिन्न विचार रखने वालों को भी अपने आन्दोलन में जगह दें। मनुष्य के विचार सदा बदला करते हैं, उनको सुशिक्षा तथा प्रेम द्वारा जीतने का प्रयत्न करना चाहिए। हिंसा का जवाब हिंसा में मिलता है और घृणा दिखाने से शत्रु का मन आपके विरुद्ध हो जाता है। वह आपके विचारों को फिर कभी ग्रहण नहीं कर सकता। सत्य की विजय के लिए मानसिक स्वतन्त्रता देने की आवश्यकता है। डर तो स्वयं ही सत्य का अन्त कर देता है। पाशविक वृत्तियों से हम मनुष्य को अपने वश में नहीं कर सकते; यह काम तो केवल उच्च-भावों से ही किया जा सकता है। संसार का इतिहास प्रतिदिन इस मत का समर्थन कर रहा है।

इसमें सन्देह नहीं, कि आपके कार्यों को देख कर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ है। आप दासों को स्वतन्त्र करने का प्रयत्न कर रहे हैं, नीचे गिरे हुए ग़रीब-दुखियों को उठाने की कोशिश कर रहे हैं, और असहायों को सहायता पहुँचा रहे हैं और उन्हें सिखला रहे हैं कि उनके सब दुख शिक्षा द्वारा दूर हो सकते हैं। रूसियों के इस सब कार्य को मैं बड़ी श्रद्धा से देखता हूँ, पर उन्हें एक ऊपर बताई हुई कमी अवश्य पूरी करना है।

मैं आशा करता हूँ कि मनुष्य-समाज की भलाई का ध्यान रखते हुए रूस-निवासी अब अपने कार्य-क्रम में हिंसा तथा घृणा को स्थान न देंगे। यह हिंसा ज़ार की हिंसापूर्ण शासन-प्रणाली का फल है। उन्होंने ज़ार के समय में काफ़ी हत्या-काण्ड देखा है। उन्होंने उस समय की कई कुरीतियों को हटाने का प्रयत्न किया है। तो फिर इस महापाप को हटाने का प्रयत्न क्यों न किया जाय। मैंने अपने रूस के भ्रमण में यह देखा है कि वे लोग हर दम बेकार चीज़ों को उपयोग में लाने का प्रयत्न करते हैं। उनका आदर्श

(शेष मैटर १२ वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)
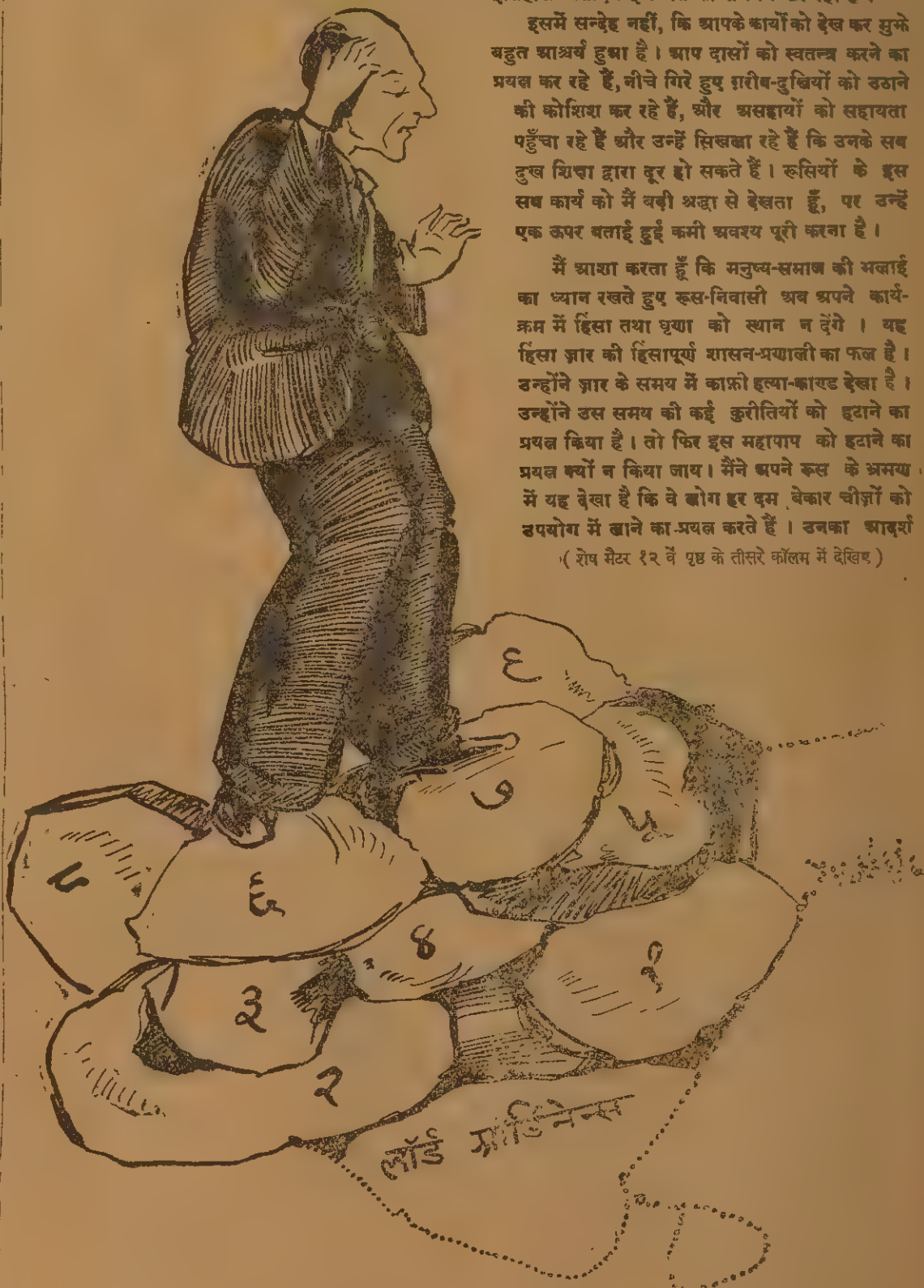
लॉर्ड-ऑर्डिनेन्स की चिन्ता

"क़िस्मत की बदनसीबी को सय्याद क्या करे"

बेचारे लॉर्ड इर्विन शिमला-शिखर से ऑर्डिनेन्स रूपी चट्टानों की वर्षा करके हार गए, पर वर्तमान आन्दोलन टस से मस नहीं होता दिखाई देता! "गिला तक़दीर का है बे-सबब तक़दीर वालों को"

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

१३ नवम्बर, सन् १९३०

एक आवश्यक निवेदन

पाठकों को शायद यह बतलाना न होगा कि 'भविष्य' का प्रकाशन एक ऐसी सङ्कटपूर्ण एवं विकट परिस्थिति में शुरू किया गया था, जब कि देश का राजनैतिक वातावरण एक बार ही उसके विरुद्ध था। जिन-जिन आपत्तियों और अत्याचारों का उसे अब तक शिकार होना पड़ा है, पाठकों से यह बात भी छिपी न होनी चाहिए, अस्तु।

यह सत्य है कि 'प्रेस-ऑर्डिनेन्स' २९ अक्टूबर को समाप्त हो गया, किन्तु अभी उसके भाई-बन्धु आठ दूसरे ऑर्डिनेन्स हमारे सामने हैं। आजकल का शासन इतना निरङ्कुश है कि उसे देखते हुए हम अपने को किसी भी समय सुरक्षित नहीं समझ सकते। अतएव जब तक परिस्थिति से मुक़ाबला करने के लिए हम तैयार न हो लें, अपने मनोभावों को निर्भीकतापूर्वक व्यक्त कर, हम आपत्ति मोल लेने के पक्ष में नहीं हैं। इसका परिणाम यह होगा कि जो थोड़ी-बहुत सेवा इस समय 'चाँद' और "भविष्य" द्वारा हो रही है, उसमें भयङ्कर बाधा उपस्थित हो जायगी ! हम सचाई और वास्तविकता की ओर से अपनी दृष्टि फेर कर केवल काग़ज़ काला करने की रस्म अदा करना नहीं चाहते ; अतएव कुछ दिनों तक हमने 'सम्पादकीय विचार' शीर्षक स्तम्भ को जान-बूझ कर सूना रखने का निश्चय किया है।

परिस्थिति के अनुकूल हम अधिक से अधिक सुदृढ़ प्रबन्ध करने की चेष्टा कर रहे हैं, जैसे ही हमारी इच्छानुकूल प्रबन्ध हुआ, उसी क्षण से हम अपने विचार निर्भीकता पूर्वक पाठकों के सामने उपस्थित करने लगेंगे—फिर उसका परिणाम चाहे जो भी हो। कुछ दिनों के लिए पाठक हमें क्षमा करें !

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

—रामरखसिंह सहगल

* * *

(११ वें पृष्ठ का शेषांश)

महान है और इस लिए मैं चाहता हूँ कि उसमें किसी तुच्छ भाव का लेश न हो।

मॉस्को की उन संस्थाओं में, जिन्होंने मेरे ऊपर सब से ज़्यादा असर किया है, युवकों का अनाथ-गृह तथा किसान-गृह उल्लेखनीय हैं। अनाथ-गृह के निवासियों में इस नई जागृति के भाव तथा आदर्श इतनी अधिक मात्रा में उपस्थित थे, कि उनको देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। किसान-गृह में मैं किसानों से मिला और उनसे बात-चीत की। उनकी तथा हमारी कृषि-विषयक समस्याओं में बहुत समता है। रूसी किसान इस नवीन-युग के सुधारों को सीखने का पूरा प्रयत्न कर रहे हैं।

जहाँ मैं स्वतः नहीं जा सका था, वहाँ मेरे सेक्रेटरी गए थे। मेरे डॉक्टर ने वहाँ के सफ़ाई तथा सफ़ाई सम्बन्धी वैज्ञानिक आविष्कारों की बड़ी प्रशंसा की है। रूस की आर्थिक दशा ख़राब होने पर भी वहाँ के निवासियों को इस सम्बन्ध में बहुत सफलता प्राप्त हुई है। उन्होंने कृषि-शिक्षा, अनाथ बालकों की रक्षा तथा लालन-पालन इत्यादि विषयों में भी प्रशंसनीय कार्य कर दिखाया है। श्रीयुत शेवस्की भी अपने उपनिवेश में अच्छा काम कर रहे हैं। वे कृपा करके स्वतः मुझसे मिलने आए थे। उनके आदर्शों से मैं पूर्णतया सहमत हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि रूस की शिक्षा-प्रणाली और देशों को भी बहुत कुछ लाभ पहुँचावेगी। उनकी शिक्षा की प्रथा ज़्यादातर व्यावहारिक है और जीवन के भिन्न-भिन्न उद्देश्यों से उसका बहुत निकटवर्ती सम्बन्ध है।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य-जाति की सारी समस्याएँ अच्छी शिक्षा द्वारा हल की जा सकती हैं। इसी कारण कविता के अतिरिक्त, जहाँ तक मुझे समय मिल सका है, मैंने अपने देशवासियों को सुशिक्षित बनाने का प्रयत्न किया है। मैं जानता हूँ कि मेरे देश की सारी बुराइयाँ अशिक्षा का फल हैं।

दरिद्रता, अकाल, क़ौमी झगड़े, उद्योग-धन्धों की कमी आदि बातें जो हमारे जीवन को शून्य तथा दुःखमय बना रही हैं, उन सब की जड़ शिक्षा का अभाव है। रूस की तथा भारत की दशा में बहुत समता है। भारत के निवासी भी अधिकतर कृषि द्वारा अपना जीवन-निर्वाह करते हैं और उनको भी उसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो रूसियों ने अपने किसानों को दी है।

इसलिए मैं रूस में विशेषकर यह देखने आया था कि रूस की सरकार अपने अशिक्षित, मूर्ख तथा वहमी किसानों तथा मज़दूरों को उठाने का प्रयत्न किस तरह से कर रही है। जो कुछ मैंने देखा है, उससे मालूम हुआ है कि इस कार्य में उन्होंने आश्चर्यजनक व अपूर्व उन्नति कर दिखाई है। उन्होंने मनुष्यों के आदर्श इतने बदल दिए हैं कि हम लोगों को उसका समझना मुश्किल है। यह देख कर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ कि उन्होंने समाज की संस्कृति की सचमुच में रक्षा करने वाली तथा समाज को वास्तव में जीवित रखने वाली प्रजा को अन्य मनुष्यों के बराबर अधिकार दिए हैं।

मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि मेरे उस आर्य-संस्कृति वाले पुरातन देश में भी समता तथा सुशिक्षा का सुराज्य फैले। मैं सदा एक ऐसे देश की कल्पना करता था जहाँ ये दोनों हों। मैंने अब उसे अपनी आँखों से देख लिया और इसके लिए मैं रूसियों को धन्यवाद देता हूँ।

[श्री० प्रेमचन्द जी, बी० ए०]

उन दिनों मिस जोशी बम्बई सभ्य-समाज की राधिका थी। थी तो वह एक छोटी सी कन्या-पाठशाला की अध्यापिका, पर उसका ठाठ-बाट, मान-सम्मान बड़ी-बड़ी धन-रानियों को भी लज्जित करता था। वह एक बड़े महल में रहती थी, जो किसी ज़माने में सितारा के महाराजा का निवास-स्थान था। वहाँ सारे दिन नगर के रईसों, राजों, राज-कर्मचारियों का ताँता लगा रहता था। वह सारे प्रान्त के धन और कीर्ति के उपासकों की देवी थी। अगर किसी को ख़िताब का ख़ब्त था तो वह मिस जोशी की ख़ुशामद करता था, किसी को अपने या अपने सम्बन्धी के लिए कोई अच्छा ओहदा दिलाने की धुन थी, तो वह मिस जोशी की आराधना करता था। सरकारी इमारतों के ठीके, नमक, शराब, अफ़ीम आदि सरकारी चीज़ों के ठीके, लोहे-लकड़ी, कल-पुरज़े आदि के ठीके सब मिस जोशी ही के हाथों में थे। जो कुछ करती थी वही करती थी, जो कुछ होता था उसीके हाथों होता था। जिस वक़्त वह अपनी अरबी घोड़ों की फ़िटन पर सैर करने निकलती तो रईसों की सवारियाँ आप ही आप रास्ते से हट जाती थीं, बड़े-बड़े दूकानदार खड़े हो-होकर सलाम करने लगते थे। वह रूपवती थी, लेकिन नगर में उससे बढ़ कर रूपवती रमणियाँ भी थीं; वह सुशिक्षिता थी, वाक्य-चतुर थी, गाने में निपुण, हँसती तो अनोखी छवि से, बोलती तो निराली छटा से, ताकती तो बाँकी चितवन से। लेकिन इन गुणों में उसका एकाधिपत्य न था। उसकी प्रतिष्ठा, शक्ति और कीर्ति का कुछ और ही रहस्य था। सारा नगर ही नहीं, सारे प्रान्त का बच्चा-बच्चा जानता था कि बम्बई के गवर्नर मिस्टर जौहरी मिस जोशी के बिना दामों के ग़ुलाम हैं। मिस जोशी की आँखों का इशारा उनके लिए नादिरशाही हुक्म है। वह थिएटरों में, दावतों में, जलसों में मिस जोशी के साथ साए की भाँति रहते हैं और कभी-कभी उनकी मोटर रात के सन्नाटे में मिस जोशी के मकान से निकलती हुई लोगों को दिखाई देती है। इस प्रेम में वासना की मात्रा अधिक है या भक्ति की, यह कोई नहीं जानता। लेकिन मिस्टर जौहरी विवाहित हैं और मिस जोशी विधवा, इसलिए जो लोग उनके प्रेम को कलुषित कहते हैं, वे उन पर कोई अत्याचार नहीं करते।

बम्बई की व्यवस्थापक-सभा ने अनाज पर कर लगा दिया था और जनता की ओर से उसका विरोध करने के लिए एक विराट् सभा हो रही थी। सभी नगरों से प्रजा के प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित होने के लिए हज़ारों की संख्या में आए थे। मिस जोशी के विशाल भवन के सामने चौड़े मैदान में हरी-हरी घास पर बम्बई की जनता अपनी फ़रियाद सुनाने के लिए जमा थी। अभी तक सभापति न आए थे, इसलिए लोग बैठे गपशप कर रहे थे। कोई कर्मचारियों पर आक्षेप करता था, कोई देश की स्थिति पर, कोई अपनी दीनता पर—अगर हम लोगों में अकड़ने का ज़रा भी सामर्थ्य होता तो मजाल थी कि यह कर लगा दिया जाता, अधिकारियों का घर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता। हमारा ज़रूरत से ज़्यादा सीधापन हमें अधिकारियों के हाथों का खिलौना बनाए हुए है। वे जानते हैं कि इन्हें जितना दबाते जाओ, उतना दबते जाएँगे, सिर नहीं उठा सकते। सरकार ने भी उपद्रव की आशङ्का से सशस्त्र पुलिस बुला ली थी। उस मैदान के चारों कोनों पर सिपाहियों के दल डेरे डाले पड़े थे। उनके अफ़सर, घोड़ों पर सवार, हाथ में हण्टर लिए, जनता के बीच में निःशङ्क भाव से घोड़े दौड़ाते फिरते थे मानो साफ़ मैदान है। मिस जोशी के ऊँचे बरामदे में नगर के सभी बड़े-बड़े रईस और राज्याधिकारी तमाशा देखने के लिए बैठे हुए थे। मिस जोशी मेहमानों का आदर-सत्कार कर रही थीं और मिस्टर जौहरी, आराम-कुर्सी पर लेटे, इस जन-समूह को घृणा और भय की दृष्टि से देख रहे थे।

सहसा सभापति महाशय आपटे एक किराए के ताँगे पर आते दिखाई दिए। चारों तरफ़ हलचल मच गई, लोग उठ-उठ कर उनका स्वागत करने दौड़े और उन्हें लाकर मञ्च पर बैठा दिया। आपटे की अवस्था ३०-३५ वर्ष से अधिक न थी, दुबले-पतले आदमी थे, मुख पर चिन्ता का गाढ़ा रङ्ग चढ़ा हुआ; बाल भी पक चले थे, पर मुख पर सरल हास्य की रेखा झलक रही थी। वह एक सफ़ेद मोटा कुरता पहने हुए थे, न पाँव में जूते थे, न सिर पर टोपी। इस अर्द्धनग्न, दुर्बल, निस्तेज प्राणी में न जाने कौन सा जादू था कि समस्त जनता उसकी पूजा करती थी, उसके पैरों पर सिर रगड़ती थी। इस एक प्राणी के हाथों में इतनी शक्ति थी कि वह क्षण मात्र में सारी मिलों को बन्द करा सकता था, शहर का सारा कारोबार मिटा सकता था। अधिकारियों को उसके भय से नींद न आती थी, रात को सोते-सोते चौंक पड़ते थे। उससे ज़्यादा भयङ्कर जन्तु अधिकारियों की दृष्टि में दूसरा न था। वह प्रचण्ड शासन-शक्ति उस एक हड्डी के आदमी से थर-थर काँपती थी, क्योंकि उस हड्डी में एक पवित्र, निष्कलङ्क, बलवान और दिव्य आत्मा का निवास था।

२

आपटे ने मञ्च पर खड़े होकर पहले जनता को शान्त चित्त रहने और अहिंसा-व्रत पालन करने का आदेश दिया। फिर देश की राजनीतिक स्थिति का वर्णन करने लगे। सहसा उनकी दृष्टि सामने मिस जोशी के बरामदे की ओर गई तो उनका प्रजा-दुख-पीड़ित हृदय तिलमिला उठा। यहाँ अगणित प्राणी अपनी विपत्ति की फ़रियाद सुनाने के लिए जमा थे और वहाँ मेज़ों पर चाय और बिस्कुट, मेवे और फल, बर्फ़ और शराब की रेल-पेल थी। वे लोग इन अभागों को देख-देख हँसते और तालियाँ बजाते थे। जीवन में पहली बार आपटे की ज़बान क़ाबू से बाहर हो गई। मेघ की भाँति गरज कर बोले—

"इधर तो हमारे भाई दाने-दाने को मुहताज हो रहे हैं, उधर अनाज पर कर लगाया जा रहा है, केवल इसलिए कि राज-कर्मचारियों के हलुवे-पूरी में कमी न हो। हम जो देश के राजा हैं, जो छाती फाड़ कर धरती से धन निकालते हैं, भूखों मरते हैं; और वे लोग, जिन्हें हमने अपने सुख और शान्ति की व्यवस्था करने के लिए रक्खा है, हमारे स्वामी बने हुए शराबों की बोतलें उड़ाते हैं। कितनी अनोखी बात है कि स्वामी भूखों मरें और सेवक शराबें उड़ाएँ, मेवे खाएँ और इटली और स्पेन की मिठाइयाँ चखें! यह किसका अपराध है? क्या सेवकों का? नहीं, कदापि नहीं, यह हमारा ही अपराध है कि हमने अपने सेवकों को इतना अधिकार दे रक्खा है। आज हम उच्च स्वर से कह देना चाहते हैं कि हम यह क्रूर और कुटिल व्यवहार नहीं सह सकते! यह हमारे लिए असह्य है कि हम और हमारे बाल-बच्चे दानों को तरसें और कर्मचारी लोग, विलास में डूबे हुए हमारे करुण-क्रन्दन की ज़रा भी परवा न करते हुए विहार करें। यह असह्य है कि हमारे घरों में चूल्हे न जलें और कर्मचारी लोग थिएटरों में ऐश करें, नाच-रङ्ग की महफ़िलें सजाएँ, दावतें उड़ाएँ, वेश्याओं पर कञ्चन की वर्षा करें। संसार में ऐसा और कौन देश होगा, जहाँ प्रजा तो भूखों मरती हो और प्रधान कर्मचारी अपनी प्रेम-क्रीड़ाओं में मग्न हों, जहाँ स्त्रियाँ गलियों में ठोकरें खाती-फिरती हों और अध्यापिकाओं का वेष धारण करने वाली वेश्याएँ आमोद-प्रमोद के नशे में चूर हों..........।"

३

एकाएक सशस्त्र सिपाहियों के दल में हलचल पड़ गई। उनका अफ़सर हुक्म दे रहा था—सभा भङ्ग कर दो, नेताओं को पकड़ लो, कोई न जाने पाए। यह विद्रोहात्मक व्याख्यान है।

मिस्टर जौहरी ने पुलिस के अफ़सर को इशारे से बुला कर कहा—और किसी को गिरफ़्तार करने की ज़रूरत नहीं। आपटे ही को पकड़ो। वही हमारा शत्रु है।

पुलिस ने डण्डे चलाने शुरू किए और कई सिपाहियों के साथ जाकर अफ़सर ने आपटे को गिरफ़्तार कर लिया।

जनता ने त्योरियाँ बदलीं। अपने प्यारे नेता को यों गिरफ़्तार होते देख कर उनका धैर्य हाथ से जाता रहा।

लेकिन उसी वक़्त आपटे की ललकार सुनाई दी—तुमने अहिंसा-व्रत लिया है और अगर किसी ने उस व्रत को तोड़ा तो उसका दोष मेरे सिर होगा। मैं तुमसे सविनय अनुरोध करता हूँ कि अपने-अपने घर जाओ। अधिकारियों ने वही किया जो हम समझे थे। इस सभा से हमारा जो उद्देश्य था वह पूरा हो गया। हम यहाँ बलवा करने नहीं, केवल संसार की नैतिक सहानुभूति प्राप्त करने के लिए जमा हुए थे और हमारा उद्देश्य पूरा हो गया।

एक क्षण में सभा भङ्ग हो गई और आपटे पुलिस की हवालात में भेज दिए गए?

४

मिस्टर जौहरी ने कहा—बचा, बहुत दिनों के बाद पञ्जे में आए हैं। राजद्रोह का मुक़द्दमा चला कर कम से कम १० साल के लिए अण्डमन भेजूँगा।

मिस जोशी—इससे क्या फ़ायदा!

"क्यों? उसको अपने किए की सज़ा मिल जायगी।"

"लेकिन सोचिए, हमें उसका कितना मूल्य देना पड़ेगा? अभी जिस बात को गिने-गिनाए लोग जानते हैं, वह सारे संसार में फैलेगी और हम कहीं मुँह दिखाने लायक़ न रहेंगे। आप अख़बारों के सम्वाददाताओं की ज़बान तो नहीं बन्द कर सकते!"

"कुछ भी हो, मैं इसे जेल में सड़ाना चाहता हूँ। कुछ दिनों के लिए तो चैन की नींद नसीब होगी। बदनामी से तो डरना ही व्यर्थ है। हम प्रान्त के सारे समाचार-पत्रों को अपने सदाचार का राग अलापने के लिए मोल ले सकते हैं। हम प्रत्येक लाञ्छन को झूठा साबित कर सकते हैं, आपटे पर मिथ्या दोषारोपण का अपराध लगा सकते हैं।"

में भी एक ही निकला। बात मुँह से निकली और उसने जवाब दिया, पर उसके जवाब में मालिन्य या कटुता का लेश भी न होता था। उसका एक-एक शब्द सरल, स्वच्छ, चित्त को प्रसन्न करने वाले भावों में डूबा होता था। मिस जोशी उसकी वाक्य-चतुरी पर फूल उठती थी।

सोराबजी—आपने किस युनिवर्सिटी में शिक्षा पाई थी?

आपटे—युनिवर्सिटी में शिक्षा पाई होती तो आज मैं भी शिक्षा-विभाग का अध्यक्ष न होता!

मिसेज़ भरूचा—मैं तो आपको भयङ्कर जन्तु समझती थी।

आपटे ने मुस्करा कर कहा—आपने मुझे महिलाओं के सामने न देखा होगा।

सहसा मिस जोशी अपने सोने के कमरे में गई और अपने सारे वस्त्राभूषण उतार फेंके। उसके मुख से शुभ-सङ्कल्प का तेज निकल रहा था। नेत्रों से दिव्य ज्योति प्रस्फुटित हो रही थी, मानो किसी देवता ने उसे वरदान दिया हो। उसने सजे हुए कमरे को घृणा के नेत्रों से देखा, अपने आभूषणों को पैरों से ठुकरा दिया, और एक मोटी साफ़ साड़ी पहन कर बाहर निकली। आज प्रातःकाल ही उसने यह साड़ी मँगा ली थी।

उसे इस नए वेष में देख कर सब लोग चकित हो गए। यह काया-पलट कैसी? सहसा किसी की आँखों को विश्वास न आया। किन्तु मिस्टर जौहरी बगलें बजाने लगे। मिस जोशी ने इसे फँसाने के लिए यह कोई नया स्वाँग रचा है।

मिस जोशी मेहमानों के सामने आकर बोलीं—

मित्रो! आपको याद है, परसों महाशय आपटे ने मुझे कितनी गालियाँ दी थीं। यह महाशय खड़े हैं। आज मैं इन्हें उस दुर्व्यवहार का दण्ड देना चाहती हूँ। मैं कल इनके मकान पर जाकर इनके जीवन के सारे गुप्त रहस्यों को जान आई। यह जो जनता की भीड़ में गरजते फिरते हैं, मेरे एक ही निशाने में गिर पड़े। मैं उन रहस्यों को खोलने में अब विलम्ब न करूँगी, आप लोग अधीर हो रहे होंगे। मैंने जो कुछ देखा, वह इतना भयङ्कर है कि उसका वृत्तान्त सुन कर शायद आप लोगों को मूर्च्छा आ जायगी। अब मुझे लेश मात्र भी सन्देह नहीं है कि यह महाशय पक्के विद्रोही हैं।

मिस्टर जौहरी ने ताली बजाई और तालियों से हॉल गूँज उठा।

मिस जोशी—लेकिन राज के द्रोही नहीं, अन्याय के द्रोही, दमन के द्रोही, अभिमान के द्रोही—

चारों ओर सन्नाटा छा गया। लोग विस्मित होकर एक-दूसरे की ओर ताकने लगे।

मिस जोशी—महाशय आपटे ने गुप्त रूप से शस्त्र जमा किए हैं, और गुप्त रूप से हत्याएँ की हैं.........

मिस्टर जौहरी ने तालियाँ बजाईं और तालियों का दौंगड़ा फिर बरस गया।

मिस जोशी—लेकिन किसकी हत्या? दुःख की, दरिद्रता की, प्रजा के कष्टों की, हठधर्मी की और अपने स्वार्थ की।

चारों ओर फिर सन्नाटा छा गया और लोग चकित होकर एक-दूसरे की ओर ताकने लगे, मानो उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं है।

मिस जोशी—महाशय आपटे ने गुप्त रूप से डकैतियाँ की हैं और कर रहे हैं—

अब की किसी ने ताली न बजाई, लोग सुनना चाहते थे कि देखें आगे क्या कहती है।

उन्होंने मुझ पर भी हाथ साफ़ किया है, मेरा सब कुछ अपहरण कर लिया है, यहाँ तक कि अब मैं निराधार हूँ और उनके चरणों के सिवा मेरे लिए और कोई आश्रय नहीं है। प्राणाधार! इस अबला को अपने चरणों में स्थान दो, उसे डूबने से बचाओ। मैं जानती हूँ, तुम मुझे निराश न करोगे।

यह कहते-कहते वह जाकर आपटे के चरणों पर गिर पड़ी। सारी मण्डली स्तम्भित रह गई!

७

एक सप्ताह गुज़र चुका था। आपटे पुलिस की हिरासत में थे। उन पर अभियोग चलाने की तैयारियाँ हो रही थीं। सारे प्रान्त में हलचल मची हुई थी। नगर में रोज़ सभाएँ होती थीं, पुलिस रोज़ दस-पाँच

तूफ़ाने-सुख़न

[नाख़ुदाए सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

शिवाला हो कि मसजिद यह मकाँ दोनों से बढ़ कर है
यहाँ के लम्प को तरजीह है, ख़ुरशीदे-ख़ावर पर।
नज़र आती नहीं मुझको, बलन्दी अरशे-आज़म की
निगाहें मेरी जम कर रह गईं, कॉलिज के टावर पर।

* * *

ऐ इनक़िलाबे-गरदूँ, ऐ गरदिशे-मुक़द्दर।
कोई अलम से नालाँ कोई सितम का शाकी!
बदली हुई बहुत है, तरज़े विसाते आलम,
जो फेंकते थे पाँसे, वह खेलते हैं हॉकी।

* * *

तालीम मग़रबी का बड़ा ज़ोर शोर है!
क्योंकर कहेगा आप कोई "यू" के सामने!!
उर्दू की क़द्र कुछ नहीं, इङ्गलिश के रूबरू!
बजता नहीं सितार, प्यानो के सामने!!

* * *

फ़िसाने पेशतर हमने सुने थे ग़ैर-मुलकों के—
तमाशे अब निराले देखते हैं, ग़ैर-मुलकों के!!
यही अच्छे-बुरे हर हुक्म को अञ्जाम देता है!
अगर कोई नहीं होता, तो कुत्ता काम देता है!!

* * *

आदमियों को पकड़ती थी। समाचार-पत्रों में ज़ोरों के साथ वाद-विवाद हो रहा था।

रात के ९ बज गए थे। मिस्टर जौहरी राज-भवन में मेज़ पर बैठे हुए सोच रहे थे कि मिस जोशी को क्योंकर वापस लाऊँ! उसी दिन से उनकी छाती पर साँप लोटता रहा था। उसकी सूरत एक क्षण के लिए आँखों से न उतरती थी।

वह सोच रहे थे, इसने मेरे साथ ऐसी दग़ा की! मैंने इसके लिए क्या कुछ न किया। इसकी कौनसी इच्छा थी, जो मैंने पूरी नहीं की, और इसीने मुझसे बेवफ़ाई की! नहीं, कभी नहीं, मैं इसके बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकता। दुनिया चाहे मुझे बदनाम करे, हत्यारा कहे, चाहे मुझे पद से हाथ धोना पड़े, लेकिन आपटे को न छोड़ूँगा। इस रोड़े को रास्ते से हटा दूँगा, इस काँटे को पहलू से निकाल बाहर करूँगा!

सहसा कमरे का द्वार खुला और मिस जोशी ने प्रवेश किया। मिस्टर जौहरी हकबका कर कुरसी पर से उठ खड़े हुए और यह सोच कर कि शायद मिस जोशी उधर से निराश होकर मेरे पास आई है, कुछ रूखे, लेकिन नम्र भाव से बोले—आओ बाला! तुम्हारी ही याद में बैठा था। तुम कितनी ही बेवफ़ाई करो, पर तुम्हारी याद मेरे दिल से नहीं निकल सकती।

मिस जोशी—आप केवल ज़बान से कहते हैं।

मिस्टर जौहरी—क्या दिल चीर कर दिखा दूँ?

मिस जोशी—प्रेम प्रतिकार नहीं करता, प्रेम में दुराग्रह नहीं होता। आप मेरे ख़ून के प्यासे हो रहे हैं, उस पर भी आप कहते हैं कि मैं तुम्हारी याद करता हूँ। आपने मेरे स्वामी को हिरासत में डाल रक्खा है, यह प्रेम है! आख़िर आप मुझसे क्या चाहते हैं! अगर आप समझ रहे हों कि इन सख़्तियों से डर कर मैं आपकी शरण आ जाऊँ तो आपका भ्रम है। आपको अख़्तियार है कि आपटे को कालेपानी भेज दें, फाँसी पर चढ़ा दें, लेकिन इसका मुझ पर कोई असर न होगा। वह मेरे स्वामी हैं, मैं उनको अपना स्वामी समझती हूँ। उन्होंने अपनी विशाल उदारता से मेरा उद्धार किया। आप मुझे विषय के फन्दों में फँसाते थे; मेरी आत्मा को कलुषित करते थे। कभी आपको यह ख़्याल आया कि इसकी आत्मा पर क्या बीत रही होगी! आप मुझे आत्म-शून्य समझते थे। इस देव-पुरुष ने अपनी निर्मल, स्वच्छ आत्मा के आकर्षण से मुझे पहली ही मुलाक़ात में खींच लिया। मैं उसकी हो गई और मरते दम उसी की रहूँगी। उस मार्ग से अब आप मुझे नहीं हटा सकते। मुझे एक सच्ची आत्मा की ज़रूरत थी। वह मुझे मिल गई। उसे पाकर अब तीनों लोक की सम्पदा मेरी आँखों में तुच्छ है। मैं उनके वियोग में चाहे प्राण दे दूँ, पर आपके काम नहीं आ सकती!

मिस्टर जौहरी—मिस जोशी! प्रेम उदार नहीं होता, क्षमाशील नहीं होता। मेरे लिए तुम सर्वस्व हो, जब तक मैं समझता हूँ कि तुम मेरी हो। अगर तुम मेरी नहीं हो सकतीं तो मुझे इसकी क्या चिन्ता हो सकती है कि तुम किस दशा में हो?

मिस जोशी—यह आपका अन्तिम निश्चय है?

मिस्टर जौहरी—अगर मैं कह दूँ कि हाँ तो?

मिस जोशी ने सीने से पिस्तौल निकाल कर कहा—तो पहले आपकी लाश ज़मीन पर फड़कती होगी और आपके बाद मेरी। बोलिए यह आपका अन्तिम निश्चय है?

यह कह कर मिस जोशी ने जौहरी की तरफ़ पिस्तौल सीधा किया। जौहरी कुरसी से उठ खड़े हुए और मुस्करा कर बोले—

क्या तुम मेरे लिए कभी इतना साहस कर सकती थीं? कदापि नहीं। अब मुझे विश्वास हो गया कि मैं तुम्हें नहीं पा सकता। जाओ तुम्हारा आपटे तुम्हें मुबारक़ हो। उस पर से अभियोग उठा लिया जायगा। पवित्र प्रेम ही में यह साहस है! अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हारा प्रेम पवित्र है। अगर कोई पुराना पापी भविष्य-वाणी कर सकता है तो मैं कहता हूँ यह दिन दूर नहीं है जब तुम इस भवन की स्वामिनी होगी। आपटे ने मुझे प्रेम के क्षेत्र में ही नहीं, राजनीति के क्षेत्र में भी परास्त कर दिया। सच्चा आदमी एक मुलाक़ात में ही जीवन को बदल सकता है, आत्मा को जगा सकता है और अज्ञान को मिटा कर प्रकाश की ज्योति फैला सकता है, यह आज सिद्ध हो गया!

* * *
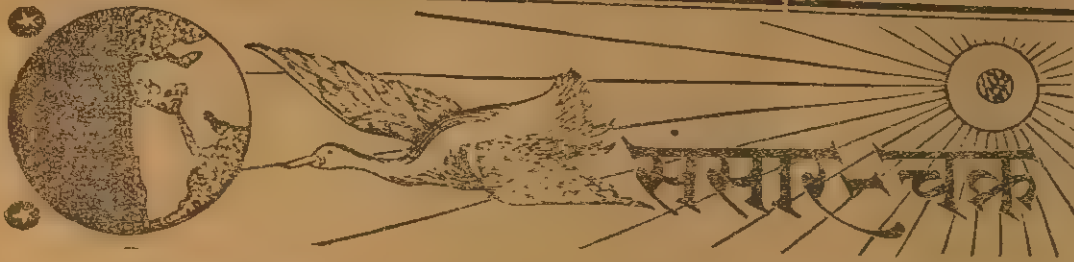
कोरिया का स्वाधीनता-संग्राम

(शेषांश)

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

कोरियन वीरों की स्वाधीनता की घोषणा संसार के इतिहास में एक चिरस्मरणीय और स्वाधीनता चाहने वाली जातियों के लिए एक आदर्श वस्तु है, इसलिए उसका मर्मानुवाद यहाँ दे देना अनावश्यक न होगा। वह चिरस्मरणीय घोषणा इस प्रकार थी :—

"इस घोषणा-पत्र द्वारा हम लोग कोरिया देश तथा कोरियावासियों की स्वाधीनता की घोषणा करते हैं। संसार की समस्त जातियों को समान अधिकार प्राप्त हो और हम भी अपने जन्म-सिद्ध अधिकारों को प्राप्त कर अपने उत्तराधिकारी वंशधरों को उसका अधिकार प्रदान करते हैं।

"भगवान की शुभ-इच्छा हमारी सहायक हो। इस नए युग में हमारी पाँच हज़ार वर्षों की स्वाधीनता को हमारे प्रायः दो करोड़ देशवासी स्वीकार कर रहे हैं। स्वाधीनता मानव जाति का न्यायपूर्ण अधिकार है। यह स्वाभाविक अधिकार मिटा देने की चीज़ नहीं है। न्याय व कोई भी हमारे इस अधिकार का ध्वंस या अपहरण नहीं कर सकता।

"जब संसार की समस्त मानव जातियाँ मनुष्यत्व के नए युग की ओर अग्रसर हो रही हैं, उस समय हम लोग, जो सैकड़ों वर्षों के स्वाधीन हैं, दुर्भाग्यवश उसी पुराने युग में पड़े हुए हैं। विगत दस वर्षों से विदेशी शासन की दुस्सह यन्त्रणा हम लोग भोग रहे हैं। जीवन के सुख से हम लोग वञ्चित हो रहे हैं। कोरिया के विदेशियों के हाथ में चले जाने से हमारी सारी स्वाधीन चिन्ताएँ सङ्कुचित हो गई हैं। जातीय जीवन की समस्त मर्यादा हीन हो गई है और आधुनिक युग के ज्ञान-विज्ञान के विकाश की सारी सुविधाएँ हमसे छीन ली गई हैं।

"वास्तव में यदि अतीत युग के दोषों का संशोधन करना हो, यदि वर्तमान समय के दुःसह कष्ट का अवसान करना हो, यदि भविष्य के लिए इस अत्याचार को असम्भव बना देना हो और स्वाधीन भाव से कार्य करने का अधिकार पुनः प्राप्त करना हो, यदि पृथ्वी की अन्यान्य जातियों के साथ उन्नति पथ की ओर अग्रसर होना हो, अपने भावी वंशधरों को दुखपूर्ण घृणित पराधीनता-शृङ्खला से विमुक्त करना हो और उन्हें अविच्छिन्न सुख-सौभाग्य का अधिकारी बनाना हो, तो सब से पहले कोरियावासियों को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना चाहिए। अगर हममें प्रत्येक मनुष्य के अन्दर दृढ़ सङ्कल्प हो, तो सत्य के लिए, न्याय के लिए एक सूत्र में ग्रथित होकर दो करोड़ कोरियावासी क्या नहीं कर सकते? पृथ्वी पर ऐसी कौन सी शक्तिशालिनी जाति है, जो हमारे उद्देश्य-साधन में बाधा प्रदान कर सकती है, ऐसा कौन सा कार्य है, जिसे हम नहीं कर सकते?

"हमारे प्रति जापानियों का अन्यायपूर्ण व्यवहार, हमारी सभ्यता के प्रति उनका घृणा प्रकाशित करना अथवा उनकी स्वेच्छाचारिता के सम्बध में आलोचना करने की हमारी इच्छा नहीं है। अपनी हीन दशा के लिए हम स्वयं ज़िम्मेदार हैं। इस समय क्या दूसरे का दोषान्वेषण करने में अपना मूल्यवान समय व्यतीत करना हमें उचित है? अब बीती बातों के लिए सोच-विचार करना वृथा है। हम अब अपने भविष्यत् के लिए सौभाग्य-सौध निर्माण करने में लगेंगे। अब हम अपने गृह संस्कार में अपनी सारी शक्ति और सामर्थ्य लगा देंगे। किसने हमारे गृह का ध्वंस किया है, और किस कारण से हमारी यह दुरवस्था हुई है, इन बातों पर विचार करने की फ़ुर्सत हमें नहीं है। अपने सरल विश्वास के अनुसार भविष्य पथ का कूड़ा-कर्कट साफ़ करना ही इस समय हमारा कर्तव्य है। ईश्वर करे, अतीत के कष्टों का स्मरण कर हमारे मन में विद्वेष तथा हिंसा का उदय न हो। साथ ही, ईश्वर करे, पशु-शक्ति पर विश्वास रखने वाले, न्याय और सत्य से रहित जापानियों को हम अपने आचरण के प्रभाव से न्याय और सत्य के पथ पर ला सकें।

"कोरिया को जापान साम्राज्य में मिला कर दोनों देशों का घोर अनिष्ट साधन किया गया है। इससे जापान बड़ी तेज़ी से अत्याचार और स्वेच्छाचारिता के पथ पर अग्रसर हो रहा है। अब सत्साहस, सरलता, प्रकृत सहानुभूति और मित्रता की पवित्र वारि-धारा बहा कर तथा अतीत दुर्नीतियों का मूलोच्छेद करने को जापान और कोरिया को सम भाव से सुख और शान्ति का अधिकारी बनाना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। कोरिया की स्वाधीनता कोरियावासियों को सुख और स्वच्छन्दता प्रदान करेगी, इसमें सन्देह नहीं। साथ ही जापान वासियों को भी कूटनीति और असाधु पथ से फेर कर सुपथ पर लाएगी। जापान गौरव-मण्डित होकर पृथ्वी के पूर्वीय भाग का प्रकृत रक्षक रूप में विराजता रहे, चीन साम्राज्य से भी जापानी नीति तिरोहित हो। हम लोग नीच क्रोधवश होकर कुछ नहीं कह रहे हैं, समस्त मानव जाति की सब प्रकार से मङ्गल साधन करना ही हमारी आन्तरिक अभिलाषा है।

"हम दिव्य-दृष्टि से एक नए युग के आगमन की बाट देख रहे हैं। पाशविक शक्ति तिरोहित हो रही है, न्याय और सत्य का युग आ रहा है। अतीत के अत्याचार और स्वेच्छाचारिता से ही इस नए युग का आविर्भाव हुआ है। आज का स्थान-भ्रष्ट समस्त पदार्थ, पुनः यथा स्थान स्थापित होगा। इस नए प्लावन में हम अपनी स्वाधीनता की नौका बहाएँगे, अब क्षण भर की भी देर न करेंगे, किसी का भय भी न करेंगे। एक मन तथा एक प्राण होकर हम समस्त कोरियावासी अन्धकारमय अतीत जीवन से निकल कर प्रकाशमय नवीन जीवन में प्रवेश करेंगे। जिस प्रकार शीत काल के बाद नव-वसन्त का समागम होता है, उसी तरह हम भी अपने नवीन जीवन में पदार्पण करेंगे। पितृ-पितामहों की पवित्र स्मृति हमारे अन्दर से और संसार की साधु-शक्तियाँ बाहर से हमारी सहायता करेंगी। इसी आशा से अनुप्राणित और आशान्वित होकर हम लोग अग्रसर हो रहे हैं।"

इस घोषणा-पत्र के नीचे तीन बातें और लिखी थीं, उनका सार मर्म इस प्रकार है :—

(१) "समस्त कोरियावासी स्वाधीनता लाभ करने के लिए व्याकुल हो रहे हैं। उनके अनुरोध से न्याय, सत्य और मनुष्योचित जीवन धारण करने की इच्छा से हम यह घोषणा-पत्र प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है, इससे शान्ति भङ्ग न होगी।"

(२) "जो लोग हमारे अनुयायी हैं, उन्हें चाहिए कि वे सदा सन्तुष्ट चित्त से यह बात स्मरण रक्खेंगे।"

(३) "सारा कार्य विशिष्ट शिष्टाचार सहित करना होगा। ताकि अन्त तक हमारा आचरण न्याय-सङ्गत समझा जाता रहे।"

कोरिया के तमाम गाँवों, क़स्बों और शहरों में एक ही समय सभा करके जनता को यह घोषणा-वाणी सुनाई गई। नए युग के आगमन की आशा से सारे कोरिया देश में एक नवीन उत्साह परिलक्षित होने लगा। लोगों ने घर-घर आनन्दोत्सव मनाया। कोरियन महिलाओं ने भी इस जातीय महोत्सव में भाग लिया। पुलिस वालों ने अपना चपरास उतार कर जापानी अधिकारियों को लौटा दिया। देश को लक्ष्य में रख कर समस्त श्रेणी और सम्प्रदाय के कोरियन घनिष्ट भाव से आपस में मिल गए। इस जातीय आन्दोलन में सब से बड़ी विशेषता यह थी कि सारा कार्य विचित्र शान्ति और गम्भीरता के साथ हुआ। उत्तेजना या उच्छृङ्खलता का कहीं नामो-निशान तक न था। सारे देश में कहीं भी, एक क्षण के लिए भी शान्ति भङ्ग न हुई। नेताओं ने हिदायत कर दी थी कि जो शान्ति भङ्ग करेगा, वह देश की स्वाधीनता का घातक समझा जाएगा।

उपर्युक्त घोषणा के बाद सारे देश में कोई सभा-समिति न हुई। यह देख कर जापानी अधिकारियों ने स्वाधीनता आन्दोलन को मार डालने के लिए गुप्त आयोजन किया। उन्होंने निश्चय किया कि भविष्य में कोई सभा-समिति न होने दी जावे और अगर कोई सभा-समिति हो तो लाठी द्वारा भङ्ग कर दी जावे। पुलिस को आज्ञा दी गई कि जो कोई आन्दोलन में भाग ले, वह फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया जावे। सभा भङ्ग करके जनता को मार भगाने के लिए पुलिस को लाठियाँ और तलवारें दी गईं। नवीन क्षमता और अधिकार पाकर पुलिस वालों ने 'खुल कर खेलना' आरम्भ कर दिया। राह चलते बेचारे कोरियन बुरी तरह घायल और तलवार द्वारा क्षत-विक्षत किए जाने लगे। एक कोरियन मारते-मारते मार डाला गया। सारे कोरिया देश में 'फ़ौजी क़ानून' (मार्शल लॉ) जारी कर दिया गया। पुलिस के अत्याचारों से लोग त्राहि-त्राहि करने लगे। देश भर के स्कूल और कॉलेज बन्द हो गए। अत्याचार, अविचार और अन्याय को अबाध गति दी गई। परन्तु कोरियन एक अपने ध्येय से क्षण भर के लिए भी विचलित नहीं हुए। अन्त में अत्याचार के भय से स्कूल और कॉलेज खोले गए, परन्तु कोई छात्र उनमें पढ़ने नहीं गया। दूकानदारों से दूकान खोलने को कहा गया, परन्तु किसी ने दूकान न खोली। पुलिस के भय से कुछ दूकानदार अपनी दूकान खोल देते और पुलिस हट जाती तो बन्द कर दिया करते! इसी तरह कई सप्ताह तक कई शहरों का सारा कारबार बन्द रहा। परन्तु कहीं भी कोई अशान्ति नहीं हुई।

इस जातीय आन्दोलन में कोरियन छात्रों ने भी काफ़ी उत्साह से भाग लिया था। देश के विद्यालयों के खुलने पर छात्रों ने उनमें प्रवेश नहीं किया। यह देख कर

जापान सरकार ने घोषणा की कि जो छात्र विद्यालय से ग़ैरहाज़िर रहेगा, उसे 'सार्टिफ़िकेट' नहीं दिया जाएगा। इसके बाद ही शिउल नगर में विश्वविद्यालय के अधिकारियों की सभा हुई और छात्रों को 'उपाधि' ग्रहण करने के लिए बुलाया गया। सभी छात्रों ने इस सभा में योग दिया था। यह देख कर अधिकारियों को परम प्रसन्नता हुई। उन्होंने सोचा, शायद दवा काम कर गई है। कितने ही बड़े-बड़े जापानी राजकर्मचारी भी इस सभा में सम्मिलित थे। यथारीति सभा की कार्यवाही आरम्भ हुई। उपाधि-वितरण कार्य समाप्त हो गया। अन्त में शिष्टाचार की रक्षा के लिए अधिकारियों को धन्यवाद देने के लिए एक छात्र अग्रसर हुआ। जापानी अधिकारियों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा, वे बड़ी प्रसन्नता से अपनी बड़ाई सुनने के लिए तैयार थे। वक्ता ने अपनी वक्तृता आरम्भ की। सहपाठियों को छात्र-धर्म का आदेश दिया। इसके बाद जेब से अपना जातीय पताका निकाल कर हिलाता हुआ बोला—"यही मेरा अन्तिम वक्तव्य है।"

जापानियों ने यह क़ानून बनाया था कि जातीय पताका रखने वाले को फाँसी की सज़ा दी जाएगी। कोरियन छात्र और छात्रियाँ इस क़ानून से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे। किन्तु उनके सामने मातृभूमि की स्वाधीनता की मूर्ति थी। मृत्यु का उन्हें कोई भय नहीं था। अपने साथी को पताका निकालते देख कर अवशिष्ट सभी छात्र और छात्रियाँ उठ कर खड़ी हो गईं। और अपनी जेबों से राष्ट्रीय पताका निकाल कर फहराने लगीं। 'स्वाधीन कोरिया' की जयध्वनि से सभा-भवन गूँज उठा। इसके बाद उन्होंने उच्च स्वर से जापानी अधिकारियों को सम्बोधन करके कहा—"हमारा देश हमें वापस कर दो।" "कोरियावासी दीर्घजीवी हों।" इसके बाद फिर 'स्वाधीन कोरिया' की जयध्वनि से दिशाएँ मुखरित हो गईं और अधिकारियों ने साश्चर्य देखा कि विद्यार्थीगण अपने-अपने उपाधि-पत्र फाड़ कर फेंक रहे हैं!

कोरिया की राजधानी सिउल नगर में छात्रों और छात्रियों ने ज़ोरदार आन्दोलन आरम्भ किया। अधिकारियों की रोक-थाम तथा उनके काले क़ानूनों की परवाह न करके, उन्होंने एक महती सभा की। सारे शहर के छात्र और छात्रियों ने इस सभा में योगदान किया। पुलिस भी नङ्गी तलवारें लेकर पहुँची और सभा वालों पर भयङ्कर आक्रमण किया। सैकड़ों छात्र और छात्रियाँ घायल की गईं। तीन सौ छात्रों तथा छात्रियों को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया। घायलों की सेवा-शुश्रूषा को जो 'दाइयाँ' (नर्स) आई थीं, वे भी पकड़ कर हवालात में बन्द कर दी गईं। ये नर्सें पादरी अस्पताल की थीं इसलिए इनसे यह स्वीकार कराने की चेष्टा की गई, कि दाइयों ने भी इस आन्दोलन में भाग लिया है। परन्तु अन्त में जब दाल नहीं गली तो वे सब की सब छोड़ दी गईं।

राजधानी की इन गिरफ़्तारियों की ख़बर शीघ्र ही सारे देश में फैल गई। फिर तो मानो भुस में चिनगारी पड़ गई। हज़ारों छात्र और छात्रियों ने सारे देश में तुमुल आन्दोलन आरम्भ कर दिया। पादरी बालिका विद्यालय की शिक्षयत्री को अधिकारियों ने बुला कर समझाया कि अपने विद्यालय के छात्रियों को आन्दोलन से अलग करो, नहीं तो ख़ैर नहीं। अधिकारियों के डर से उसने चेष्टा भी की, परन्तु कोई फल नहीं हुआ। स्वाधीनता की गगनभेदी ध्वनि से सारा कोरिया गूँज उठा।

इस आन्दोलन का फल यह हुआ कि बहुत सी सम्भ्रान्त महिलाएँ भी राष्ट्रीय पताका लेकर मैदान में उतर पड़ीं। देश के कोने-कोने में अपूर्व उत्साह फैल गया। इधर जापानियों ने भी नीचता की हद कर दी। वे कुल महिलाओं को नङ्गी करके, उन पर बेतों द्वारा प्रहार करने लगे और यथासम्भव वे कोरियावासियों के सामने नङ्गी की जाने लगीं। यह देख कर स्त्रियों ने ऐसी पोशाक बनवाई कि जो आसानी से खोली न जा सके। किन्तु पशु-शक्ति के सामने उनकी यह चेष्टा व्यर्थ हुई। कितनी रमणियों पर ऐसे घोर अमानुषिक अत्याचार हुए, जिसका वर्णन करते हुए लज्जा से सिर झुका लेना पड़ता है। अत्याचार की गति अबाध कर दी। स्वीकारोक्ति करने से बालिकाओं पर भीषण से भीषण अत्याचार होने लगे। जो बालिकाएँ क़ैदख़ाने में भेजी जाती थीं, उन्हें घण्टों तक घुटनों के बल चलाया जाता था। स्त्रियों के ऊपर होने वाले अत्याचारों की ख़बर पाकर कोरियन युवक खल-बला उठे, प्रतिहिंसा की भीषण आग उनके हृदयों में धधक उठी। टङ्गचू नगर में हज़ारों कोरियन युवक अपनी देश-बहिनों के अत्याचार का बदला लेने के लिए एकत्र हुए। नेताओं ने उन्हें शान्त करने की चेष्टा की और अधिकारियों के पास प्रतिनिधि भेज कर कहलाया कि स्त्रियाँ नङ्गी न की जाएँ। इसके उत्तर में उन्होंने कहा कि यह जापान-सरकार द्वारा अनुमोदित क़ानून है और इसे हम असभ्यता नहीं समझते।

जिस समय जापान का प्रतिनिधि पुलिस के प्रधान कर्मचारी से बातें कर रहा था, उस समय हज़ारों कोरियन कोतवाली के बाहर खड़े थे और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला कर कह रहे थे, कि या तो औरतों को छोड़ दो या हमें भी क़ैद करो। उत्तेजित जनता का रुख़ देख कर पुलिस के प्रधान कर्मचारी महोदय ने बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया और उसी वक़्त चार को छोड़, बाक़ी सभी औरतों को छोड़ दिया। इनमें एक कोमलाङ्गी युवती को एक पुलिस कर्मचारी ने इतने ज़ोर से लात मारी थी कि बेचारी चल नहीं सकती थी। इसी तरह और भी कई औरतें पीटी और अपमानित की गई थीं। इससे जनता की उत्तेजना इतनी बढ़ी कि अगर कोरियन नेता उन्हें रोकते नहीं, तो पुलिस के लिए जान बचाना मुश्किल हो जाता।

इस घटना के बाद जापानियों का अत्याचार सीमोल्लङ्घन कर गया। धनी, दरिद्र, शिक्षित, अशिक्षित सभी एक ही लाठी से हाँके जाने लगे। इन अत्याचारों से घबरा कर बीस सम्भ्रान्त कोरियनों ने पुलिस के प्रधान अफ़सर को लिखा कि वह पुलिस वालों को संयत रखने की चेष्टा करे। इसके उत्तर में वे बीस सज्जन धोखा देकर थाने में बुला लिए गए और गिरफ़्तार करके हवालात में भेज दिए गए। इनमें कई सज्जन ७० और ८० वर्ष के बूढ़े, कई जापानियों के ख़ैरख़्वाह और कई आन्दोलन के विरोधी थे। इनमें कई साल, तथा डेढ़ साल के लिए और बाक़ी छः-छः महीने के लिए जेल भेजे गए। सारे देश में गिरफ़्तारियाँ होने लगीं। टङ्गचू शहर में तीस कोरियन मार डाले गए और दो सौ पकड़ कर जेल में भेजे गए। सैकड़ों पादरी बेतों से पीटे गए और उनके गिरजे जला दिए गए। सिउल नगर में दो सप्ताह के भीतर सहस्राधिक कोरियन पकड़े और जेल भेजे गए। सरकारी हिसाब के अनुसार, १९१९ ईस्वी की १ली मार्च से १९ जून तक, १ लाख ६६ हज़ार और ८७ कोरियन पकड़े गए। और ८ हज़ार २१ को सज़ाएँ दी गईं। इन राजनीतिक क़ैदियों पर जेलों के अन्दर जो भीषण अत्याचार हुए, उसका वर्णन आसान काम नहीं है। जेल से बाहर आने पर कोई क़ैदी ऐसा न था, जिसके शरीर पर मार के दाग़ न हों। जिस अमेरिकन लेखक के लेख के आधार पर हम ये पंक्तियाँ लिख रहे हैं, उसने लिखा है कि—"हमारे वास-स्थान के निकट प्रति दिन सैकड़ों कोरियन पीटे जाते थे। पहले वे काठ के खम्भों से बाँधे जाते। इसके बाद नग्न करके बेतों तथा लाठियों से बुरी तरह पीटे जाते थे। जब वे मार खाते-खाते बेहोश हो जाते तो उनके मुँह पर शीतल जल के छींटे दिए जाते और होश में आने पर फिर मार पड़ने लगती। कभी-कभी यह अमानुषिक काण्ड बारम्बार किया जाता था। हमें विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि कितने ही नागरिकों के हाथ-पैर तक तोड़ दिए गए हैं, कितने ही स्त्री-पुरुष तथा बालक-बालिकाओं को गोली मार दी गई है। और कितने ही बच्चों तक की देहों में सङ्गीनें भोंक दी गई हैं। सात सप्ताहों में प्रायः दो हज़ार स्त्री, पुरुष, बालक और बालिकाएँ तलवार के घाट उतार दी गईं। परन्तु इस भीषण काल में कोरियनों का संयम, उद्यम, सहनशीलता देख कर हम आश्चर्य में पड़ गए।"

इतनी यातना और लाञ्छना सह कर भी कोरियनों ने आन्दोलन नहीं बन्द किया। इतने पर भी हज़ारों कोरियन जेल जाने, मार खाने तथा प्राण-विसर्जन के लिए तैयार थे। ज्यों-ज्यों जापानियों का अत्याचार बढ़ता जाता था, त्यों-त्यों कोरियनों का उत्साह भी बढ़ता जाता था। प्रचार-कार्य के लिए उन्होंने 'स्वाधीनता-सम्वाद' नाम का एक पत्र निकाला था। इसकी प्रतियाँ सारे कोरिया में घर-घर पहुँचाई जाती थीं; परन्तु अधिकारियों के हज़ार सर मारने पर भी इस बात का पता न लगा, कि वह कहाँ छपता है और उसे कौन घर-घर पहुँचाता है। कभी-कभी वे प्रचारित कर देते थे कि 'स्वाधीनता-सम्वाद' वाले पकड़ लिए गए। उस समय तुरन्त ही 'स्वाधीनता-सम्वाद' की हज़ारों प्रतियाँ छाप कर इधर-उधर वितरण कर दी जातीं!!

धीरे-धीरे कोरिया की अवस्था और भी भीषण हो चली। जापान के बादशाह ने अपने कोरियन प्रतिनिधि को बुला कर सलाह किया और निश्चय हुआ कि और भी दमन हो। गवर्नर ने वहाँ से लौट कर घोषणा की कि जो कोई कोरियनों में राजनीतिक परिवर्तन की चेष्टा करेगा, उसे दस वर्ष के लिए कठिन कारावास की सज़ा दी जाएगी।

यह ख़बर सुन कर कोरियन वीरों ने ख़ूब प्रसन्नता प्रगट की और तेरह प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने स्वतन्त्र शासन-पद्धति निर्माण किया। समस्त कोरिया में प्रजातन्त्र की प्रतिष्ठा हुई। सिङ्गमैनरी महाशय इस नवीन शासन-तन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। शिक्षा, शिल्प तथा राजनीति क्षेत्र में स्त्रियों तथा पुरुषों को समान अधिकार दिया गया। सबको धार्मिक स्वतन्त्रता दी गई। प्रत्येक मनुष्य को स्वतन्त्र रूप से लिखने, बोलने तथा सरकारी कामों की आलोचना करने की स्वतन्त्रता प्रदान की गई। साधारण सभा-समिति करने, सङ्घ बनाने का सारा अधिकार प्रजा को दिया गया। विश्व-राष्ट्र-सङ्घ द्वारा उपेक्षित होने पर भी उसकी सदस्यता के लिए इच्छा प्रगट की गई। प्रत्येक कोरियन को अपने इच्छानुसार फ़ौज में भर्ती होने का अधिकार दिया गया। इसके सिवा घोषणा की गई कि—

"हम कोरिया-निवासी आज प्रायः चार हज़ार वर्षों से स्वतन्त्र जाति के रूप में रह कर स्वाधीनता का सुख भोग रहे हैं। हमारी सभ्यता उन्नतिशील और हमारी

आगामी अंक में

आयर्लैण्ड की स्वाधीनता के संग्राम का सारगर्भित इतिहास प्रकाशित होगा; जो क्रमशः दो अङ्कों तक छपेगा। महत्वपूर्ण चीज़ होगी।

जाति शान्तिप्रिय है। हमारा भी दावा है कि हम मानव जाति का सर्व विधि कल्याण करें। हमारी सभ्यता समुज्ज्वल और पुरानी है। अपनी जाति की स्वाभाविक तेजस्विता का ख़याल करके अत्याचारित और उत्पीड़ित होने पर भी हम पराधीनता स्वीकार नहीं कर सकते। अपनी जाति की विशिष्टता खोकर, किसी अन्य जाति के साथ सम्मिलित होना हमें मञ्ज़ूर नहीं है! आसुरिक और जड़भावापन्न जापानियों की अधीनता हम किसी प्रकार भी सहन नहीं कर सकते। जापान की सभ्यता हमारी सभ्यता से दो-हज़ार वर्ष पीछे की है।

"संसार जानता है कि जापान ने सन्धि भङ्ग की है और हमारे जीवित रहने के अधिकारों को भी छीन लिया है। परन्तु हम यहाँ उसके अत्याचारों की आलोचना करना नहीं चाहते। इस संसार से हमारा अस्तित्व विलुप्त न हो, स्वाधीनता और साम्य का प्रचार करने का हमें अधिकार हो, हमारा सत्य और मनुष्यत्व का दावा बरक़रार रहे, इसीसे स्वतन्त्रता की घोषणा करते हैं।

"हम अपनी सभ्यता की रक्षा के लिए तैयार हैं। परन्तु जापान अपनी पशु-शक्ति द्वारा हमें कुचल रहा है। क्या अखिल-विश्व की महान मानव जाति इन अत्याचारों को चुपचाप सहन कर लेगी? दो करोड़ कोरिया-वासियों की अविचल देश-भक्ति अत्याचारों द्वारा मिटाई नहीं जा सकती। अगर जापान अपने कुकर्मों के लिए अनुतापित न होगा, तो कोरिया भी अब चुपचाप उसे बरदाश्त नहीं करेगा। जब तक एक कोरियन भी जीता रहेगा, तब तक वह अपने शरीर का अन्तिम रक्त-बिन्दु देकर अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा करेगा। हृदय की भक्ति, सङ्कल्प की एकाग्रता और कर्म की निष्ठा द्वारा देशसेवा का व्रत लेकर हम लोग संसार के सामने अपनी स्वाधीनता और जातीय विशिष्टता की मुक्त कण्ठ से घोषणा करते हैं।"

बहुत दिनों तक घोर आन्दोलन करने तथा नाना प्रकार के उपायों का अवलम्बन करने पर कोरियनों ने अभी पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त नहीं की है, परन्तु जापानियों द्वारा दिन-रात कुचले जाते रहने पर भी, उन्होंने न तो स्वाधीन होने की आशा ही परित्याग की है और न उद्योग करना ही छोड़ा है। उनकी देश को मुक्त करने की साधना अभी भी जारी है। शरीर और मन की शक्ति की वृद्धि के लिए कोरियन युवकों और युवतियों ने कठोर संयम से काम लेना आरम्भ किया है। अब वे विद्रोह द्वारा देश को स्वतन्त्र कर डालने की चेष्टा में लगे हैं। जो कोरियन युवक विदेशों में विद्याध्ययन कर रहे हैं, वे सभी अपने देश को स्वाधीन कराने के लिए तैयार हैं। ऐसे कोरियन युवकों की संख्या प्रायः दो लाख होगी।

कोरिया एक छोटा सा देश है, किन्तु स्वाधीनता-संग्राम में अद्भुत कार्य करके उसने संसार को चकित कर दिया है। आशा है उसकी यह कठोर साधना विफल न होगी।

* * *

देशी राजा

सरकारी-पक्ष

प्रजा-पक्ष

साथ मैं भजा का दूँ, या मैं रहूँ दरबार में। जान मुशकिल में पड़ी है, नाव है मँझधार में !!

गोलमेज़-परिषद

[श्री० यदुनन्दनप्रसाद जी श्रीवास्तव]

देश में इस समय गोलमेज़ परिषद की बात को लेकर काफ़ी चर्चा हो रही है। प्रत्येक दैनिक पत्र में रोज़ ही इस सम्बन्ध को लेकर कुछ न कुछ चर्चा रहती ही है। लोग इस बात को जानने के बड़े उत्सुक हैं कि गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में क्या होगा? फलतः यहाँ पर इस प्रश्न की चर्चा अप्रासङ्गिक न होगी।

गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स को लेकर इस समय देश में दो दल हो रहे हैं। कुछ दिन पहले तो यह जान पड़ता था कि अब गरम और नरम दल मिल कर एक हो जायँगे, पर इस बात को लेकर ये फिर अलग हो गए हैं!

जो लोग गोलमेज़-परिषद में गए हैं, उनका यह विश्वास है कि वे वाद्‌विवाद द्वारा यह सिद्ध कर देंगे कि हमारा पक्ष सच्चा है, हमारी माँग उचित है। उनका विश्वास है कि एक बार यह बात जहाँ सिद्ध हो गई, त्यों ही न्याय-प्रिय अङ्गरेज़ जाति न्याय करने के लिए तैयार हो जावेगी और भारतवर्ष को औपनिवेशिक स्वराज्य का यथेष्ट हिस्सा मिल जावेगा। जो कुछ दो-एक बातें बच रहेंगी, वे भी १०-२० बरस के अन्दर-अन्दर फिर एकाध बार इसी तरह की कॉन्फ्रेन्स में वादविवाद कर प्राप्त कर ली जावेंगी। इस तरह के विचार वाले गरम लोगों को सदैव इस बात का दोष दिया करते हैं, कि वे लोग ज़िद में आकर बनी-बनाई बात अपनी उग्रता के कारण बिगाड़ देते हैं।

ये लोग मानव-स्वभाव की एक बहुत आवश्यक बात को भूल जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति स्वभाव से ही अपने फ़ायदे-नुक़सान पर सदैव ही सब से पहले ध्यान देता है। न्याय-अन्याय आदि की बातों को वह बाद में सोचता है, या फिर यह बात उसे उस समय याद आती है जब किसी दूसरे व्यक्ति का मामला उसके सामने विचार के लिए पेश होता है। यदि बात ऐसी न होती तो फिर आज दुनिया में इतना हाहाकार न होता। पुलिस, फ़ौज और अदालतों का इतनी आवश्यकता न रहती। अङ्गरेज़ लोग भी मनुष्य ही हैं और उनके स्वभाव में भी स्वार्थ है। किसी सवाल के सामने आते ही वे भी यही सोचते हैं कि इससे उन्हें हानि होगी या लाभ। हिन्दुस्तान पर अङ्गरेज़ों का राज्य करना अन्याय है, अनुचित है, इसे प्रत्येक विचारशील अङ्गरेज़ अच्छी तरह समझता और जानता है। इसे वे लोग हमारी अपेक्षा भी शायद अधिक समझते हैं, कारण वे लोग स्वाधीनता के महत्व को हम से अधिक जानते हैं; किन्तु साथ ही वे इस बात को भी अच्छी तरह जानते हैं कि हिन्दुस्तान से उन्हें बड़ा लाभ है तथा इस देश के स्वतन्त्र होते ही ब्रिटिश साम्राज्य का दिवाला निकल जावेगा।

लेकिन नरम दल के तर्कों का उत्तर केवल एक इसी बात से ख़त्म नहीं होता। उनका कथन है कि यदि और लोग नहीं तो कम से कम लॉर्ड इरविन, मि० बेन और प्रधान मन्त्री रेम्ज़े मेकडॉनल्ड ऐसे भले आदमी हैं कि वे भारतीय परिस्थिति की गम्भीरता और हमारी माँगों के औचित्य को अधिक दिनों तक अस्वीकार नहीं कर सकते। हम भी इस त्रिमूर्ति की भलमनसाहत को अस्वीकार करना नहीं चाहते। किन्तु हमारा कहना यह है कि इस त्रिमूर्ति से कुछ हो नहीं सकता। यदि आज ग्रेट-ब्रिटेन का शासन किसी अनियन्त्रित राजा के हाथ में होता अथवा यदि मि० मेकडॉनल्ड वहाँ के सर्वाधिकार-सम्पन्न शासक होते तो निश्चय ही हमारा काम बड़ी सरलता से हो जाता। किन्तु ग्रेट ब्रिटेन का शासन पार्लामेण्ट के हाथों में है और पार्लामेण्ट के सदस्यों की ९९ फ़ीसदी संख्या ऐसी है, जिन्हें हम महात्मा की उपाधि से विभूषित नहीं कर सकते। वे इस बनिया जाति के चुने हुए चतुर बनिए तथा साधारण आदमियों की तरह ही अपने स्वार्थ पर सब से पहले ध्यान देने वाले संसारी जीव हैं। फलतः उनसे केवल न्याय के बल पर कोई बात करा लेना असम्भव बात है!

किन्तु, कई लोगों का विश्वास है कि अङ्गरेज़ जाति अपनी न्याय-प्रियता के लिए इतिहास में प्रसिद्ध है और अङ्गरेज़ी न्याय आज भी साहित्य में एक विशेष अर्थ का द्योतक है। इस बात की सत्यता की परीक्षा के लिए हमें ब्रिटिश इतिहास के पन्ने उलटने पड़ेंगे। जिस तरह का झगड़ा आज भारत और ब्रिटेन के बीच में हो रहा है, ठीक उसी तरह का झगड़ा सब से पहले अमेरिका और ब्रिटेन में हुआ था। यही पहला अवसर था, जब ब्रिटिश न्याय-प्रियता कसौटी पर रक्खी गई। अमेरिका-वासियों ने ब्रिटेन से अपेक्षा की, स्वतन्त्रता पाने के लिए; लेकिन उनकी सुनाई न हुई, उनकी सारी अपील, सारी बहस व्यर्थ हुई और अमेरिका को स्वाधीनता उसी समय मिली, जब उसने शस्त्र उठा कर ब्रिटेन को अपनी बात मानने के लिए मजबूर कर दिया। यहाँ पर एक बात और ध्यान देने योग्य है। अमेरिका के स्वाधीनता माँगने वाले लोग ब्रिटेन के मूल निवासी और उसके अपने एक ख़ून के गोरी जाति के लोग ही थे। आयरिश लोगों के साथ भी यही बात हुई। जो जाति अपनी सभ्यता को मानने वाले, अपने धर्म को मानने वाले तथा अपने वर्ण वालों के साथ ऐसा व्यवहार करती है, वह दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करेगी, यह बात अनुमान से जानी जा सकती है। किन्तु, अनुमान पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं। ब्रिटिश लोगों का संपर्क रङ्गीन जातियों से बराबर रहा है और उन्होंने मिस्र-वासियों, चीनियों तथा निरीह हब्शियों से जैसा बर्ताव किया है, वह कोई छिपी बात अथवा कल्पना की वस्तु नहीं, एक ऐतिहासिक सत्य है। अस्तु,

इन ऐतिहासिक प्रमाणों के सामने होते हुए भी, जो ब्रिटिश न्यायप्रियता अथवा लॉर्ड इरविन के आश्वासन पर हवाई क़िला बना लेते हैं, उनसे क्या कहा जाय? फिर इसी १० साल के अन्दर-अन्दर हमारे यहाँ ही नरम लोगों को न जाने कितनी बार धोखा खाना पड़ा है! फिर भी उनका विश्वास अनुनय-विनय अस्त्र से हटता ही नहीं। वे तो 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की' वाली कहावत को चरितार्थ करते हैं। जैसे-जैसे वे धोखा खाते हैं, वैसे ही वैसे उनका विश्वास भी बढ़ता जाता है!!

और इसका कारण भी है। नरम लोगों के कार्य-क्रम में सब दिक़्क़तों की एक ही दवा है—अनुनय-विनय! सन् १९२० की सुधार-योजना अनुपयुक्त, अयथेष्ट और असन्तोष-जनक निकली; लेकिन फिर भी नरम दल ने उसे स्वीकार कर ही लिया। साइमन-कमीशन असन्तोष-जनक रहा; राउण्ड-टेबिल-कॉन्फ्रेन्स की योजना पहले ठीक न थी, और आज भी इङ्गलैण्ड की यात्रा उन लोगों ने प्रफुल्ल-चित्त और विश्वास से नहीं की है, किन्तु वे सहयोग न करें, तो करें क्या? उनका विधान, उनका कार्य-क्रम तो सीधे मार्ग को पसन्द करता नहीं! इसमें उन्हें 'मालिक' के रुष्ट हो जाने का भय होता है। ऐसी मानसिक वृत्ति के लोगों का विश्वास सहयोग से उठ नहीं सकता। वे जीवन भर के संस्कार को इस उमर में कैसे छुड़ा दें।

जो बातों को समझ सकते हैं, जो कटु सत्य-कुरूप विभीषिका को आँखें खोल कर देख सकते हैं, उनके लिए एक ही मार्ग है। जब एक धेले की चीज़ आज कोई किसी को मुफ़्त, बिना किसी स्वार्थ के, नहीं देता, तब हिन्दुस्तान सरीखे 'सोने की चिड़िया' को कोई उदारता-वश कैसे स्वाधीन कर देगा? केवल अपीलों के बल पर हिन्दुस्तान स्वाधीन नहीं होगा। जब तक आप अङ्गरेज़ों को मजबूर न कर देंगे, जब तक आप ऐसी परिस्थिति न पैदा कर देंगे कि बात ग़ैरमुमकिन हो उठे, तब तक अङ्गरेज़ लोग हिन्दुस्तान से अपना क़ब्ज़ा कदापि न हटावेंगे।

इसके लिए देश ने अहिंसात्मक असहयोग का मार्ग अख़्तियार कर लिया है। जो लोग इसमें भाग लेने के लिए अपने को समर्थ पाते हों, उनके लिए केवल एक यही मार्ग है। जो लोग इसमें भाग न ले सकें, उन्हें अपनी टाँग अड़ाने की अपेक्षा, अलग होकर चुप बैठना चाहिए।

* * *

कोरी कल्पना

[श्री० शारदाप्रसाद जी भण्डारी]

सन्ध्या का समय था। मन्दाकिनी अठखेलियाँ करती हुई बहती जा रही थी। चन्द्रदेव नील-गगन से झाँक-झाँक कर मुस्करा रहे थे। पास ही एक युवती नदी-कूल पर बैठ अपने आलुलायित केश-पाशों को सुखा रही थी। उसकी सुन्दर सुषमामयी आँखों में एक साथ ही विस्मय और उग्रता के भाव विराजमान थे।

२

कवि एक वीणा लेकर सरिता-तट पर आया। इस प्रकार अप्रत्याशित भाव से सौन्दर्य की उस सजीव प्रतिमा को सामने देख वह ठिठक गया।

कवि ने भाव-विभोर हो कहा—तुम्हारा अनिन्द्य सौन्दर्य देख मेरा मन-मानस सुन्दर भावों से ओत-प्रोत हो गया है।

यह सुन कर युवती हँस पड़ी। ज्यों ही वह हँसी, त्योंही एक साथ सहस्रों अभिनव भावों की व्यञ्जक ज्योति उसके रसपूर्ण नेत्रों में झलक उठी।

३

कवि वीणा ले, मस्त हो, गाने लगा। युवती भी कवि की एक-एक तान पर झूमने लगी। युवती को झूमते देख कवि ने कहा—तुममें स्वाभाविक सौन्दर्य है और तुम वास्तव में सुन्दरी हो।

अस्वीकृति-व्यञ्जक भ्रू-कुञ्चन कर वह बोली—तुम भूलते हो। जब मैं भावों के प्रवाह में बहने लगती हूँ तो संसार मुझे सुन्दर मालूम पड़ता है। उसी संसार की सुन्दरता के प्रतिबिम्ब की छाया मात्र से ही मैं सुन्दर दीख पड़ती हूँ। मुझमें तो सौन्दर्य का सर्वथा अभाव है। मेरा अनिन्दनीय सौन्दर्य तो तुम्हारी 'कोरी कल्पना' है!

* * *

स्वाधीनता-संग्राम की बलिवेदी पर चढ़े हुए कुछ सुन्दर पुष्प

श्री० मोहनलाल भट्ट
जो महात्मा जी की नज़रबन्दी के पश्चात् 'नवजीवन' का सञ्चालन कर रहे थे। इनको गवर्नमेण्ट ने चार महीने की सख़्त क़ैद की सज़ा दी थी।

श्री० ख़ुशहालचन्द कैफ़ी
लाहौर के एक नवयुवक कार्यकर्ता, जिनको एक वर्ष की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है। मैजिस्ट्रेट ने आपको 'बी' क्लास में रक्खा था, पर पञ्जाब गवर्नमेण्ट ने 'सी' क्लास में बदल दिया है।

श्री० अमृतलाल दलपत भाई सेठ
आप राणपुर (काठियावाड़) से प्रकाशित होने वाले सुप्रसिद्ध 'सौराष्ट्र' पत्र के सम्पादक हैं। आप भी गवर्नमेण्ट के मेहमान बने हुए हैं।

श्रीमती उषा देवी
आप स्वामी श्रद्धानन्द जी की दौहित्री हैं। आपको भी वर्तमान आन्दोलन में जेल हुई है।
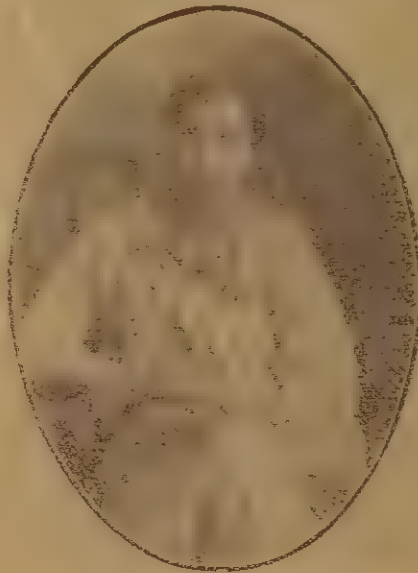
श्रीमती सुभद्रा देवी
कलकत्ता की बड़ा बाज़ार कॉङ्ग्रेस-कमिटी की पहिली महिला मन्त्रिणी, जिनको छः मास की सज़ा हुई है।

श्रीमती देवयानी इन्द्रविजय देसाई
आप विलेपारले (बम्बई) की निवासी हैं। आपको पिकेटिङ्ग में १५ दिन की सज़ा हुई थी।

श्री० जयन्त दलाल—बम्बई के प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस-बुलेटिन के प्रथम सम्पादक, जिनको दो वर्ष की सख़्त सज़ा दी गई है।

श्री० सवाईमल जी—जबलपुर की शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर, जो जेल में हैं। आपकी अवस्था केवल २० वर्ष की है।

राउण्ड-टेबिल-कॉन्फ्रेन्स में सम्मिलित होने वाले विभिन्न दलों के कुछ प्रतिनिधि

ऑन० सर पी० सेठना
पश्चिमीय भारत की लिबरल-फ़ेडरेशन के अध्यक्ष

श्रीमती सुब्बरायन
राउण्ड-टेबिल कॉन्फ्रेंस की महिला-प्रतिनिधि

सर पी० सी० मित्र
बङ्गाल-गवर्नमेण्ट की एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल के सदस्य

श्री० सी० वाई० चिन्तामणि
'लीडर' के सम्पादक और लिबरल दल के प्रधान नेता

रावबहादुर रामचन्द्रराव
देशी राज्य-प्रजा-कॉन्फ्रेन्स के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट

सर तेजबहादुर सप्रू
भारत-गवर्नमेण्ट के भूतपूर्व लॉ-मेम्बर और लिबरल दल के प्रधान नेता

रेवरण्ड जे० सी० चैटर्जी, एम० ए०, एम० एल० ए० (दिल्ली)

सर सुलतान अहमद ख़ाँ

डॉ० शफ़ात अहमद ख़ाँ

राष्ट्रीय आन्दोलन के कुछ व्यक्ति और दृश्य

श्रीमती पिस्तादेवी
आप झाँसी के यूथलीग की प्रेज़िडेण्ट थीं। आजकल नौकरशाही की मेहमान हैं।

श्रीमती आत्मादेवी सूरी
दिल्ली की एक उत्साही राष्ट्रीय कार्यकर्त्री, जो इस समय लाहौर-जेल में हैं।

श्रीमती लाडोरानी ज़ुतशी
लाहौर 'युद्ध-समिति' की सुप्रसिद्ध डिक्टेटर, जिनको एक वर्ष की सज़ा दी गई है।

कुछ दिन हुए पं० मदन-मोहन मालवीय ने बड़ोदा में टूटी हुई हड्डियों का इलाज करने के अस्पताल का उद्घाटन किया था, जिसकी संस्थापना सेठ झवेरचन्द लक्ष्मीचन्द ने की है। मालवीय जी के बाँई तरफ़ इस संस्था के संस्थापक और दहिनी ओर इसके प्रबन्ध-कर्ता प्रो० माणिकराव खड़े हैं।
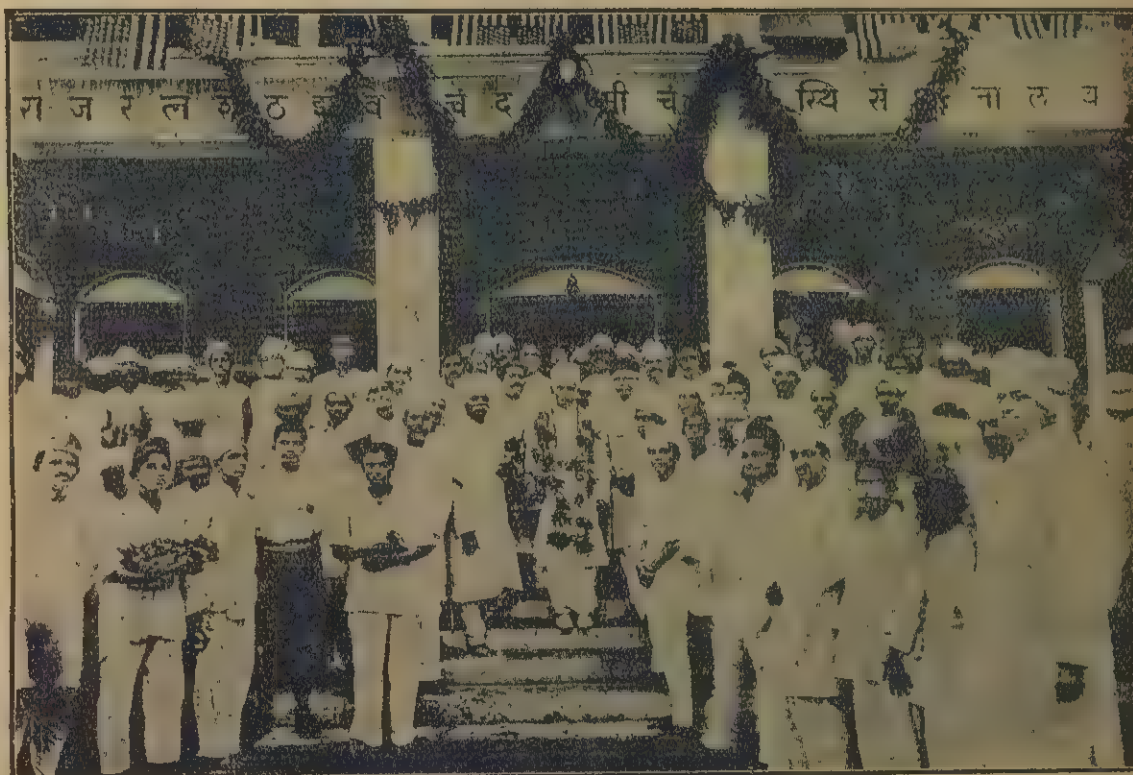
राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की गिरफ़्तारी के विरोध में देहली के महान जुलूस का एक दृश्य।

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी और बहिन—श्रीमती कमला नेहरू और कृष्णा नेहरू—मर्दानी पोशाक में सत्याग्रह-संग्राम में भाग लेने को प्रस्तुत हुई हैं।

बारदोली के आश्चर्यजनक सत्याग्रह-संग्राम को सञ्चालित करने वाली वीर महिलाएँ

१

२

३

(१) श्रीमती भक्तलक्ष्मी देसाई—दरबार गोपालदास जी की धर्मपत्नी।

(२) कुमारी मणिबेन पटेल—सरदार पटेल की वीर-पुत्री।

(३) श्रीमती शारदा मेहता, बी० ए०—बारदोली की सत्याग्रही महिलाओं की नेत्री।

(४) श्रीमती पेटिट और बारदोली की कुछ किसान-स्त्रियाँ, जिन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए घर-बार का मोह त्याग दिया है।

(५) बारदोली की कुछ प्रतिष्ठित महिलाएँ, जिन्होंने बारदोली के घर-घर में खादी को पहुँचा दिया है।

(६) रानीपरज जाति की एक किसान-महिला, जो अत्यन्त दीन और अशिक्षित होते हुए भी सत्याग्रह में पूरा भाग ले रही है।

४

५

६

केसर की क्यारी

[व्यङ्गपूर्ण कविताओं का साहित्य में बड़ा महत्व है, क्योंकि इन कविताओं द्वारा ऐसे-ऐसे सुधार होते देखे गए हैं, जिन्हें दर्जनों व्याख्यान और लेख नहीं कर सकते ! इस स्तम्भ के सम्पादक कविवर 'बिस्मिल' ने जिन प्रतिष्ठित कवियों के व्यङ्ग का संग्रह नीचे दिया है, उससे मनोरञ्जन के साथ ही साथ पाठक शिक्षा भी ग्रहण कर सकते हैं।

—सं० 'भविष्य']

दलीलो मेहरो वफ़ा, इससे बढ़ के क्या होगी ?
न हो हुज़ूर से उलफ़त, तो यह सितम न सहें !!
मुज़िर है हल्क़ा कमेटी में, कुछ कहें हम भी !
मगर रज़ाए कलेक्टर को भाँप लें, तो कहें !!
सनद तो लीजिए, लड़कों के काम आएगी !
वह मेहरबान हैं अब, फिर रहें-रहें, न रहें !!
ज़मीन पर तो नहीं हिन्दियों को जा मिलती !
मगर जहाँ में है ख़ाली समुन्दरों की तहें !!

* * *

मेम्बरी "इम्पीरियल कौन्सिल" की कुछ मुश्किल नहीं !
वोट तो मिल जायँगे, पैसे भी दिलवाएँगे क्या ?
मरीज़ा "ग़ालिब" ख़ुदा बख़्शे, बजा फ़रमा गए !
हमने यह माना कि "दिल्ली" में रहें, खाएँगे क्या ?

* * *

सुना है मैंने कल यह गुफ़्तगू थी कारख़ाने में !
पुराने झोपड़ों में है, ठिकाना दस्तकारों का !!
मगर सरकार ने क्या ख़ूब "कौन्सिल" हॉल बनवाया !
कोई इस शहर में तकिया न था, सरमायादारों का !!

—(सर) "इक़बाल" लाहौरी

* * *

तालीम मग़रबी का बड़ा ज़ोर-शोर है,
क्योंकर कहेगा आप कोई "यू" के सामने !!
उर्दू की क़द्र कुछ नहीं, इङ्गलिश के रूबरू !
बजता नहीं सितार, पियानो के सामने !!

* * *

फ़िसाने पेशतर हमने सुने थे ख़ैर मुल्कों के,
तमाशे अब निराले देखते हैं, ग़ैर मुल्कों के !
यही अच्छे-बुरे हर हुक्म को अन्जाम देता है !
अगर कोई नहीं होता, तो कुत्ता काम देता है !!

* * *

क्योंकर निभेगी "शेख़" से "लेडी" की रस्मोराह ?
मोटा सा है वह बाँस, यह पतली से "केन" है !!

* * *

झगड़े से न खेलेगा कोई "बैट" के आगे !
क्या क़द्र है "कनटोप" की अब "हैट" के आगे !!

* * *

ऐ ज़मीनो-आसमाँ क्या क़हर, क्या अन्धेर है !
कुछ मुक़द्दर है मुख़ालिफ़, कुछ समझ का फेर है !!
उसको आते देख कर, ख़ाली जगह करने लगे !
तोप से भी लड़ने वाले, पोप से डरने लगे !!
आबरू मौजे हवादिस में वह सारी बह गई !
शेख़ साहब चल बसे, शेख़ी ही शेख़ी रह गई !!

—"नूह" नारवी

* * *

मज़ा था बदली घर को छोड़ा, काग़ज़ों में छप गए !
चन्द रोज़ा खेल था, आख़िर को सब मर-खप गए !!
मिट गए नक़्शो निगारे दह्‌र फ़ानी के मुरीद !
नाम उन्हीं का रह गया रौशन, जो हर को जप गए !!
दिल का टुकड़ा तो रहा बाक़ी पे ऐ राहे ख़ुदा !
रेल में क्या ग़म, जो "अकबर" खेत तेरे नप गए !!

* * *

वह नींव क़ौम की है, न पुख़्ता न भीत है !
बिगड़े जो बन रहे हैं, यह दुनिया की रीत है !!
अब कुछ नहीं, तो क्या कहें, तुमसे कि कैसे हैं ;
रक़्सो-मेहन का साज़ है, चक्की का गीत है !!

* * *

जोशिशे सौदा को तबअ़ में जा उबाली चाहिए !
मन्ज़रे मजनूँ को तस्वीरे ख़्याली चाहिए !!
उनके मज़मूने कमर का बाँधना आसाँ नहीं !
मुद्दतों मश्शाक़ीए नाज़ुक ख़्याली चाहिए !!
हर दरे मैख़ाना "अकबर" के लिए दिलकश नहीं !
बादा साफ़ी चाहिए, और ज़र्फ़ आली चाहिए !!

—(स्वर्गीय) "अकबर" इलाहाबादी

* * *

कुछ सड़क में आ गए घर, कुछ सड़क में नप गए !
इश्तेहाराते-तबाही, अब गज़ट में छप गए !!
पेट के धन्धों से फ़ुरसत हमको मिलनी है मुहाल !
सब से अच्छे वह थे, जो दिन-रात हर को जप गए !!
आए थे जीने की ख़ातिर, चार, छः, दस, बीस दिन !
सब थे मरने के लिए, आख़िर को सब मर-खप गए !!

* * *

तेरी है और रीत, मेरी और रीत है !
एक-एक की ज़बाँ पे, यही बातचीत है !!
दिल से जो तुम मिलो, तो मिलें क्यों न दिल से हम !
दुनिया की रीत है, यह ज़माने की रीत है !!

* * *

कसरते-ग़म में भी चेहरे पर बहाली चाहिए !
सामने नज़रों के तस्वीरे-ख़याली चाहिए !!
पढ़िए "लीडर" में यह मुन्शी जी का एक निकला है नोट !
पाठशाले के लिए इमदादे माली चाहिए !
पेड़ सूखे जा रहे हैं, बाग़ में "बिस्मिल" मगर !
लाट साहब के लिए नायाब डाली चाहिए !!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

—है वह प्यारा जवाहर जेल में !

[श्री० "ज़ाहिद" इलाहाबादी]

और तो कुछ कर नहीं सकता 'जवाहर' जेल में।
राग आज़ादी का, गाएगा 'जवाहर' जेल में !!
प्यारी प्यारी, कौन आज़ादी की बातें अब सुनाए ?
आज तो है देश का प्यारा 'जवाहर' जेल में !
जान दे दो, मर मिटो, अपने वतन के वास्ते !
दे रहा है यह सबक़, बैठा 'जवाहर' जेल में !!
ऐ अज़ीज़ाने-वतन, यूँ होगी आज़ादी नसीब,
देश के जब जाएँगे, सद्‌हा 'जवाहर' जेल में !!
देश वाले आबरू 'मोती' की कहते हैं जिसे !
आज ऐ "ज़ाहिद" है वह, प्यारा 'जवाहर' जेल में !!

* * *

सरदार पटेल का स्वागत

[कविवर "बिस्मिल"]

दिल से, जी से, मानते हैं लोग तेरी बात को—
हुक्म दे दे तू अगर, तो दिन कहें ये रात को !
वाक़या यह है, कि ये सरदार तो 'सरदार' है !
बम्बई को नाज़ है, तो फ़ख़्र है गुजरात को !!

* * *

हमारा जवाहर ! हमारा जवाहर !!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

बहुत कुछ हमें है हमारा जवाहर !
कि आलम में आलम से प्यारा जवाहर !!
ज़बाँ पर कभी अपनी उफ़ तक न लाया !
सितम का चला तुझ पर आरा जवाहर !!
ज़ईफ़ी में "मोती" की तू आबरू है !
बहुत कुछ है तेरा सहारा जवाहर !!
यही है ज़बाँ पर, यही सब के दिल में !
हमारा जवाहर ! हमारा जवाहर !!
सितम से, जफ़ा से वह डरता नहीं है !
वतन पर है क़ुरबान, प्यारा जवाहर !!
कलेजे में नश्तर चुभे क्यों न उनके—
खटकता है जिनको हमारा जवाहर !!
यही दीदये-शौक़ की आरज़ू है !
करें तेरा हरदम नज़ारा जवाहर !!
वह नूरे-नज़र है, वह नूरे बसर है !
वह आलम की आँखों का तारा जवाहर !!
ग़ुलामी से आज़ाद हम होंगे "बिस्मिल" !
जो ज़िन्दा रहेगा हमारा जवाहर !!

* * *

दुनिया वहीं रहेगा, होगा जहाँ जवाहर !!

[जनाब "शातिर" इलाहाबादी]

नाज़ाँ हो क्यों न तुझ पर हिन्दोस्ताँ जवाहर !
तू इसका सन्तरी है, तू पासबाँ जवाहर !!
कट-कट गए हैं दुश्मन, अन्दाज़े गुफ़्तगू से !
चलती है तेग़ बन कर, तेरी ज़बाँ जवाहर !!
चरख़ा चला-चला कर, सारी ज़मीं हिला दी !
चक्कर में क्यों न आएँ, हफ़्त आस्माँ जवाहर !!
मैदाने जङ्ग में है, अर्जुन से भी ज़्यादा !
माना नहीं लिए है, तीरो-कमाँ जवाहर !!
ज़िन्दाँ में उसको रह कर, हो क्यों हिरास पैदा !
सौ बार दे चुका है, यह इमतिहाँ जवाहर !!
गाँधी का तू है प्यारा, मोती का तू दुलारा !
क्यों जान दें न तुझ पर, पीरो-जवाँ जवाहर !!
घर-घर में आज झण्डा स्वाराज का है क़ायम !
मेहनत तेरी गई है, कब रायगाँ जवाहर ?
ज़ुल्मो-सितम सहेंगे, लेकिन न उफ़ करेंगे !
देता है लुत्फ़ क्या-क्या, तेरा बयाँ जवाहर !!
हुब्बे-वतन में हमको "शातिर" यह तजरुबा है !
दुनिया वहीं रहेगी, होगा जहाँ जवाहर !!

* * *

मधुबन

[प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०]

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-साहित्य को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुबन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुबन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। पुस्तक को सचित्र प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

निर्मला

[श्री० प्रेमचन्द, बी० ए०]

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। पुस्तक का मूल्य २॥) ; स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

हिन्दू-त्योहारों का इतिहास

[श्री० शीतलासहाय, बी० ए०]

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है ! वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १॥) ; स्थायी ग्राहकों से १=)

अपराधी

[श्री० यदुनन्दन प्रसाद श्रीवास्तव]

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोस्ट और ब्रियो का "डैमेज़्ड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर अवलम्बित होती है।

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। मूल्य २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

लम्बी दाढ़ी

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव]

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है
बच्चों को भी—
बड़ी मासूम, बड़ी नेक
है लम्बी दाढ़ी !
अच्छी बातें भी बताती है,
हँसाती भी है—
लाख दो लाख में, बस एक—
है लम्बी दाढ़ी !!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ९,००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥) ; स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !!

बाल-रोग-विज्ञानम्

[प्रोफ़ेसर धर्मानन्द शास्त्री]

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल-मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहल घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम ख़र्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्त्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है और वे शिशु सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार कर सकती हैं। मूल्य लागत मात्र २॥) रु०

देवताओं के ग़ुलाम

[श्री० सत्यभक्त]

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामे एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। पढ़िए और आँसू बहाइए !! मूल्य ३): स्थायी ग्राहकों से २।)

चुहल

[श्री० त्रिवेणीलाल श्रीवास्तव, बी० ए०]

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ॥) केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

स्त्रियों का ओज

क्षत्रिय पुत्री

[लेखक—???]

"कल्याणी ?"

"पिता जी"

"तुम आज से विधवा हुईं बेटी"

"नहीं पिता जी—मैं सधवा हूँ।"

"वह अधम, राजपूत-कुल-कलङ्क, मुसलमान हो गया है।"

"फिर भी वह मेरे पति हैं"

"मेवाड़ के सेनापति की कन्या का पति मुसलमान नहीं हो सकता।"

"पिता जी, धर्म और आचार की शाखाओं में जाना मेरा काम नहीं, मैं केवल इतना जानती हूँ, इन्हीं के साथ पवित्र अग्नि की साक्षी देकर मेरा विवाह हुआ था। उसी दिन हम अग्नि, गुरुजन, ईश्वर और देवताओं की साक्षी में एक हुए थे। अब भला शरीर के रहते और नष्ट होने पर भी, उसका कौन विभाग कर सकता है ?"

"क्या तुम मुसलमान की पत्नी बनना स्वीकार करती हो ?"

"मैं पति की धर्मपत्नी हूँ।"

"क्या तुमने कुछ और नहीं सुना ?"

"क्या ?"

"वह कुलाङ्गार अकबर की ४० हज़ार सेना का सेनापति होकर मेवाड़ को विध्वंस करने आया है"

"सुन चुकी हूँ"

"और तब भी तुम उसकी पत्नी हो ?"

"हाँ, पिता जी, पतिव्रता की पति-भक्ति स्वार्थ-कामना से रहित, पर्वत के समान दृढ़, ध्रुव के समान निश्चल है, वह आँधियों से नहीं काँपती, भूचालों से विचलित नहीं होती।"

"कल्याणी, तुम मेरी कन्या हो।"

"हाँ पिता जी ?"

"मेरे गौरव को नष्ट करने वाली"

"आपके गौरव को उज्ज्वल करने वाली।"

"मुसलमान की पत्नी होकर ?"

"पति की पत्नी होकर।"

"ऐसे नीच, घृणित, अधम, देशद्रोही विधर्मी..."

"पिता जी, स्त्री के सम्मुख उसके पति की निन्दा अनुचित है।"

"कल्याणी !"

"पिता जी !"

"क्या तुम्हारा यही निश्चय है ?"

"निश्चय पिता जी"

"तब तुम मेरी पुत्री नहीं, मेरे घर में तुम्हारा स्थान भी नहीं, तुम अभी निकल जाओ, यवन-पत्नी की का मेवाड़ के सेनापति के घर में काम नहीं, जाओ तुम्हारा धर्म पति है तो मेरा धर्म देश है।"

"जो आज्ञा पिता जी, प्रणाम"

२

"भैया अजय, तुम क्यों दुखिया बहिन के साथ लगे, मैं अपना मार्ग देख लूँगी, तुम जाओ, तुम्हारी देश को आवश्यकता है, तुम वीर हो, इस समय शत्रुओं ने मातृ-भूमि को घेर रक्खा है, तुम सेना में लौट जाओ।"

"कल्याणी, मैं प्रथम तुम्हें शत्रु-शिविर में सुरक्षित छोड़ आऊँ।"

"शत्रु-शिविर में क्यों ?"

"तुम्हारे पति के पास"

"वहाँ मैं नहीं जाने की"

"तब कहाँ जाओगी"

"जहाँ मेरी आवश्यकता होगी"

"क्या तुम स्वामी के पास जाना नहीं चाहतीं ?"

"नहीं"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह विधर्मी और देशद्रोही है"

"फिर पिता जी से विवाद क्यों किया"

"पिता जी का विचार भ्रान्त था"

"क्या तुम पति को प्रेम नहीं करतीं ?"

"प्राणों से अधिक"

"और प्रतिष्ठा ?"

"भगवान् से अधिक"

"तब वहाँ जातीं क्यों नहीं"

"मैंने उन्हें त्याग दिया"

"क्यों ?"

"वे देश और धर्म के शत्रु हैं"

"फिर क्या करोगी ?"

"उनको दण्ड दूँगी"

"तुम ?"

"हाँ, मैं"

"तुम्हारा साहस !! ४० हज़ार यवन-सेना के अधिपति को तुम दण्ड दोगी ?"

"मैं ही इसकी योग्य अधिकारिणी हूँ"

"और तुम उसे प्रेम और आदर भी करती हो"

"हाँ"

"अद्भुत है"

"नारी-हृदय और नारी-कर्तव्य सदा ही अद्भुत है"

"कल्याणी, बहिन"

"भाई अजय"

"मैं जीते जी तुम्हारे साथ हूँ, हमारा-तुम्हारा ध्येय एक है"

"क्या तुम भी उन्हें प्यार करते हो ?"

"मैंने सदा उसे प्राणों से अधिक प्यार किया"

"और आदर"

"पिता के समान"

"तब भाई आओ, इस देश और धर्म के शत्रु को दण्ड दें"

३

"क्या तुम उदयपुर गए थे ?"

"जी हाँ जनाब"

"सेनापति से मुलाक़ात हुई ?"

"जी हाँ जनाब"

"ख़त दिया ?"

"जी हाँ जनाब"

"जवाब लाओ, कहाँ है ?"

"जवाब ज़बानी दिया है, ख़त नहीं दिया"

"ज़बानी जवाब ? वह क्या जवाब है ?"

"वह हुज़ूर के सामने कहने योग्य नहीं"

"हरफ़-हरफ़ सुना दो"

"हुज़ूर........"

"एक-एक लफ़्ज़ फ़ौरन बयान करो"

"ख़त को पढ़ कर गुस्से से लाल हो गए"

"फिर ?"

"ख़त फाड़ कर पैरों से कुचल दिया"

"और ?"

"कहा—मेवाड़ के सेनापति की लड़की विधर्मी और देशद्रोही को नहीं दी जा सकती, वह विधवा हो गई"

"और ?"

"यह भी कहा, यह तलवार बहुत जल्द उस मुग़लों के ग़ुलाम के टुकड़े करेगी"

"और ?"

"और यह कि, उस नीच कुमार्गी से कह दो कि उदयसागर में डूब मरे"

"तुमने कुछ ज़बानी कहा ?"

"बहुत मिन्नतें कीं"

"तब ?"

"गर्दनिया देकर निकलवा दिया"

"और क्या देखा"

"सुना, लड़की को घर से निकाल दिया है।"

"निकाल दिया है ?"

"जी हाँ जनाब, और वह बिना खाना-पीना खाए-पीए जनाब को ढूँढती, गाँव-गाँव पैदल भटक रही हैं।"

"क्या यह सच है ?"

"ग़ुलाम ने आँखों से देखा है, फटे कपड़े, थकावट से चूर-चूर जिस्म"

"तुमने कुछ कहा ?"

"मैंने बहुत मिन्नतें कीं कि हुज़ूर हमराह शाही फ़ौज में चलें"

"क्या जवाब दिया"

"कहा—अपने ख़ाँ साहब से कहो, हम अपने रास्ते आ रहे हैं, वक़्त पर मिल रहेंगे।"

"हूँ, अच्छा जाओ; शाहज़ादा साहब ! अब देर का काम नहीं, चित्तौड़ का क़िला आप एक लाख फ़ौज से घेर लें"

"बहुत ख़ूब"

"और आप महाराज गजसिंह जी ! ४० हज़ार फ़ौज की टुकड़ियाँ करके तमाम मेवाड़ के गाँवों को एक सिरे से जलाना शुरू कर दें। जो कोई रोके, फ़ौरन क़तल कर दें"

"बहुत अच्छा"

निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीण-काय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) रु० ; स्थायी ग्राहकों से २।)

वीरबाला

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए, युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए ; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। मू० ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

पाक-चन्द्रिका

इस पुस्तक में प्रत्येक प्रकार के अन्न तथा मसालों के गुण-अवगुण बतलाने के अलावा पाक-सम्बन्धी शायद ही कोई चीज़ ऐसी रह गई हो, जिसका सविस्तार वर्णन इस वृहत् पुस्तक में न दिया गया हो। प्रत्येक तरह के मसालों का अन्दाज़ साफ़ तौर से लिखा गया है। ८३६ प्रकार की खाद्य चीज़ों का बनाना सिखाने की यह अनोखी पुस्तक है। दाल, चावल, रोटी, पुलाव, मीठे और नमकीन चावल, पुलाव, भाँति-भाँति की स्वादिष्ट सब्ज़ियाँ, सब प्रकार की मिठाइयाँ, नमकीन, बङ्गला मिठाई, पकवान, सैकड़ों तरह की चटनी, अचार, रायते और मुरब्बे आदि बनाने की विधि इस पुस्तक में विस्तृत रूप से वर्णन की गई है। मूल्य ४) रु० स्थायी ग्राहकों से ३) रु० मात्र! चौथा संस्करण प्रेस में है।

मालिका

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण! पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर, तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४) स्थायी ग्राहकों से ३)

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

अनाथ पत्नी

इस उपन्यास में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें!

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्त-काल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनोमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं! छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १।।)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

"मगर एक बात का ख़्याल रक्खें !"

"वह क्या ?"

"औरतों पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म और ज़्यादती न होने पावे।"

"बहुत अच्छा !"

"अब आप जाइए, ये मग़रूर हिन्दू अब कुचले जाने ही चाहिएँ, देखता हूँ कौन इन्हें बचाता है, मैं इस क़ौम को जड़ से उखाड़ फेकूँगा, इस धर्म को मटियामेट कर दूँगा।"

४

"भैया अजय" !

"बहिन !"

"अब तो और नहीं चला जाता, यह कौन सा गाँव है, आज यहीं ठहरा जाय।"

"अच्छी बात है, पर सुनो यह शोर कैसा है ? यह इतना धुआँ कैसा ? ये इधर ही लोग भागे आ रहे हैं।"

"अवश्य यहाँ कुछ दुर्घटना हुई है।"

"क्यों भाई, ठहरो तो, कहाँ भागे जा रहे हो, गाँव में क्या हो रहा है ?"

"महावत ख़ाँ आ पहुँचा है, उसने गाँव में आग लगा दी है और क़त्ले-आम हो रहा है।"

"क़त्ले-आम ?"

"जी हाँ, आप उधर न जायँ।"

"कल्याणी !"

"भैया !"

"समय आ गया।"

"हम लोग तैयार हैं।"

"तुम्हारे पास क्या हथियार है ?"

"दो कटार हैं।"

"यह पिस्तौल और ले लो, और यहीं पेड़ के नीचे बैठ कर परिणाम देखो, मैं गाँव में जाता हूँ।"

"भाई, तुम अकेले ही ?"

"नहीं, मेरी तलवार मेरे साथ है, पथिक, तुम डरो मत, कुछ देर बहिन के पास रहो, यह सूँलावत सरदार सेनापति गोविन्दसिंह की पुत्री हैं।"

५

"यह कौन औरत है ?"

"हुज़ूर हम नहीं जानते, मगर इसने ४० सिपाहियों की जान ली है।"

"इसके हाथ-पैर खोल दो और अलग हट जाओ।"

"तुम कौन हो ?"

"महावत ख़ाँ सिपहसालार।"

"तुमने गाँव जलाने और क़त्ले-आम करने का हुक्म दिया है ?"

"हाँ !"

"तुम विधर्मी और देशद्रोही तो हो, परन्तु निष्ठुर भी हो ? ऐसी आशा न थी।"

"तुम कौन हो।"

"मैं कल्याणी हूँ, तलवार हाथ में लो और मुझसे युद्ध करो।"

"कल्याणी; तुम यहाँ ?"

"हाँ, क्या आश्चर्य होता है ?"

"ईश्वर का धन्यवाद है, क्या तुम अकेली हो ?

"भाई अभी वीर गति को प्राप्त हुए।"

"आह, क्या अजयसिंह ?"

"यह क्या, तुम रोते भी हो ?"

"कल्याणी, प्रिये।'

"धर्म और देश के शत्रु, हत्यारे तलवार ले !"।

"कल्याणी !"

"तलवार ले !"

"इतना क्रोध न करो, जब तुम्हारे पिता ने तुम्हें नहीं दिया—यवन कह कर मेरा तिरस्कार किया, तुम्हें घर से निकाल दिया तब मैंने क्रोध किया। कल्याणी ! क्या यवन मनुष्य नहीं होते ?"

"मुग़ल सेनापति, अब प्राणों का मोह न करो, तलवार लो, राजपूतनी का प्रेम चख चुके हो—तेज भी सहो।"

"कल्याणी ! क्षमा करो।"

"अरे देशद्रोही, अब उस दिन मैंने बड़े गर्व से कहा था कौन हम लोगों को अलग कर सकता है। मैं कैसी मूर्ख थी, अब देखती हूँ कि हम दोनों के बीच में भाई का मृत शरीर पड़ा है। तुमने कितना प्यार किया था और उसने तुमको...ख़ैर ! पर उससे भी बढ़ कर आज हम दोनों के बीच में स्वदेश के रक्त की नदी बह रही है, निष्ठुर, देशद्रोही, लोहू के प्यासे हत्यारे, भाइयों के शत्रु, रक्त के शत्रु, तुझे सर्व-प्रथम दण्ड देने का मुझे ही अधिकार है। ले प्रहार सह।"

(तलवार का प्रबल आघात और साथ ही स्वयं मूर्च्छित)

* * *

सामाजिक कोढ़

हमारा कर्त्तव्य

[कुमारी सत्यवती जी]

आजकल चारों ओर से क्रान्ति की पुकार सुनाई पड़ रही है। धर्म, राजनीति, समाज-नीति, साहित्य, आचार और व्यवहार सर्वत्र ही क्रान्ति का कोलाहल मचा हुआ है। चीन, अफ़ग़ानिस्तान, टर्की, जर्मनी, रूस, रशिया और अमेरिका आदि देशों में क्रान्ति द्वारा ही शान्ति का साम्राज्य स्थापित हुआ है। वस्तुतः क्रान्ति उस आन्दोलन का नाम है, जो पुराने दक़ियानूसी और अरुचिकर विधि-विधानों को तोड़-मरोड़ कर देश, समाज तथा साहित्य को ऐसे समुचित साँचे में ढाल देती है, जो समयानुकूल और आवश्यकताओं के अनुसार हो तथा जिसके लिए हमारी परिस्थिति पुकार-पुकार कर प्रोत्साहन दे रही हो। राजनीतिक क्रान्ति का अभिप्राय आजकल साम्राज्यवाद का

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य आठ आने!

जननी जीवन

पुस्तक की उपयोगिता नाम ही से प्रकट है। इसके सुयोग्य लेखक ने यह पुस्तक लिख कर महिला-जाति के साथ जो उपकार किया है, वह भारतीय महिलाएँ सदा स्मरण रक्खेंगी। घर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः प्रत्येक बातों का वर्णन पति-पत्नी के सम्वाद-रूप में किया गया है। लेखक की इस अदूरदर्शिता से पुस्तक इतनी रोचक हो गई है कि इसे एक बार उठा कर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से "गागर में सागर" वाली लोकोक्ति का परिचय मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में कुल २० अध्याय हैं; जिनके शीर्षक ये हैं :—

(१) अच्छी माता (२) आलस्य और विलासिता (३) परिश्रम (४) प्रसूतिका स्त्री का भोजन (५) आमोद-प्रमोद (६) माता और धाय (७) बच्चों को दूध पिलाना (८) दूध छुड़ाना (९) गर्भवती या भावी माता (१०) दूध के विषय में माता की सावधानी (११) मल-मूत्र के विषय में माता की जानकारी (१२) बच्चों की नींद (१३) शिशु-पालन (१४) पुत्र और कन्या के साथ माता का सम्बन्ध (१५) माता का स्नेह (१६) माता का सांसारिक ज्ञान (१७) आदर्श माता (१८) सन्तान को माता का शिक्षा-दान (१९) माता की सेवा-शुश्रूषा (२०) माता की पूजा।

इस छोटी सी सूची को देख कर ही आप पुस्तक की उपादेयता का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्-गृहस्थ के घर में होनी चाहिए। मूल्य १॥); स्थायी ग्राहकों से ।।।≡)

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोद-पूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य १)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हार-मोनियम पर गाने लायक़ एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक़ भी हैं। मूल्य ।)

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-परम्पराएँ, अन्ध-विश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभागा देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है। 'समाज की चिन-गारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु वह धुँधला चित्र भी ऐसा दुखदायी है कि देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहा-विरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; सजीव प्रोटेक्टिङ्ग कवर ने तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं। फिर भी मूल्य केवल प्रचार-दृष्टि से लागत-मात्र ३) रक्खा गया है। 'चाँद' तथा स्थायी ग्राहकों से २।) रु०!

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों से २।)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

अन्त और एकाधिपत्य शासन की समाप्ति है। उसी प्रकार सामाजिक क्रान्ति उस काया-पलट का नाम है, जिसके द्वारा समाज स्वार्थी पण्डितों, पुरोहितों, मुल्लाओं, मौलवियों और पोपों के फ़ौलादी पञ्जों से छुट्टी पा सके तथा रूढ़िवाद रूपी राक्षस के जटिल जाल से उसका उद्धार हो सके। हमारे गर्भगत होने से मरने तक और मरने के बाद भी रूढ़िवाद हमारा पीछा नहीं छोड़ता! किसी न किसी रूप में सदैव स्वार्थियों का सिक्का हमारे ऊपर जमा ही रहता है। इस रूढ़िवाद ने समाज-सदन के सुदृढ़ मूल को खोखला कर दिया है और उसे किसी उन्नत जाति के सम्मुख ऊँची गर्दन करके खड़ा होने योग्य नहीं छोड़ा है।

नवयुवक भाइयो! प्रत्येक देश में क्रान्ति, चाहे वह किसी प्रकार की भी क्यों न हो, नवयुवकों द्वारा ही हुई है। भारत में सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के कर्णधार विशेषकर नवयुवक ही हैं। हमारे नवयुवक और नवयुवतियों को चाहिए कि समाज में जितने हानिकारक तथा उन्नति में बाधक बनने वाले रीति-रिवाज हैं, उन्हें जड़-मूल से उखाड़ फेंकें। इन कार्यों में हमें किसी का भय करने की आवश्यकता नहीं है। शास्त्र का स्पष्ट आदेश है कि हमें अपने माता, पिता तथा वृद्धों की उचित आज्ञाओं का पालन अवश्य करना चाहिए, पर यदि वे हमें कर्त्तव्य-पथ से विचलित करने का उपदेश दें, तो उसे न मानना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। मैं देखती हूँ कि आज हमारा समाज इतना पतित और उच्छृङ्खल हो गया है, कि वह भिन्न-भिन्न प्रकार से आज हमारी राजनैतिक उन्नति में बाधक हो रहा है। हमारा हिन्दू-समाज अत्यन्त कमज़ोर और एकता-विहीन हो गया है। अगर बिरादरी की बेढङ्गी बिल्डिङ्ग को शीघ्र ही नष्ट-भ्रष्ट कर, उसके स्थान पर गुण-कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था का सुन्दर-सदन न बनाया जायगा, तो परिणाम बड़ा ही अहितकर होगा। बिरादरी के क़िले को तहस-नहस करना बुड्ढों का काम नहीं है। जिनके हाथ कुदाल पकड़ने में ही काँपते हों, उनसे ऐसी आशा करना दुराशा मात्र है। याद रहे, यह काम जब होगा, नवयुवकों द्वारा होगा और वे ही लोग उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे। बिरादरी और विवाह की प्रथाओं में क्रान्ति के साथ-साथ हमें पर्दे की प्रथा को भी फाड़ फेंकना होगा। यह पर्दा रूपी पिशाच तो हमारे घर के भीतर घुस कर बड़ा भयङ्कर अनर्थ कर रहा है। इसे शीघ्रातिशीघ्र नष्ट कर देना हमारा सब से पहला कर्त्तव्य है। आप स्वयं क्रान्तिकारी बनिए, आपका परिवार, समाज और देश धीरे-धीरे आपका साथ देगा।

आजकल संसार में राजनीतिक आन्दोलन की धूम है। भारत में राजनीतिक आन्दोलन का डङ्का बज रहा है। जब देश के हृदय-सम्राट् महात्मा गाँधी तथा नवयुवक राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य सभी गण्यमान्य नेता अपने हज़ारों देश-प्रेमी सहयोगियों के साथ जेल में पड़े हैं, ऐसे समय में हमारे नवयुवक-समाज का कर्त्तव्य स्पष्ट है। हमारी अस्थियों की आधार-शिला पर ही हमारे राष्ट्रीय भवन का निर्माण होगा और हमारे रक्त के परमाणुओं से ही उसकी दीवार उठाई जायगी। भारत सदा धर्म-प्रधान देश रहा है और हमारी राजनैतिक प्रगति का आधार महात्मा गाँधी तथा सत्याग्रही सैनिकों की भाँति अपने धार्मिक सिद्धान्तों पर अविचल रहना ही है। देश को पूर्ण स्वाधीन करने के लिए आवश्यक है राजनैतिक आन्दोलन को स्थायी रूप दिया जाय, पर राजनैतिक आन्दोलन को स्थायी बनाने के लिए हिन्दू-समाज को सुसङ्गठित करना आवश्यक है, क्योंकि भारत का भविष्य विशेषकर हिन्दू-जाति के हाथ में ही है। समाज और जाति के सङ्गठन के लिए सर्व-प्रथम उसमें फैली हुई कुरीतियों का शीघ्र निवारण होना चाहिए।

क्या आप नहीं जानते कि जिस अत्याचार से तङ्ग आकर हम विदेशियों की शिकायत कर रहे हैं, वही हम स्वयं अपने हाथों से अछूत भाइयों पर करने में सङ्कोच नहीं करते? क्या हमारे लिए यह शर्म की बात नहीं है? क्या एक सच्चा नवयुवक घोर अज्ञान में लीन बिरादरी के डर से इस कलङ्क के टीके को अपने मस्तक पर लगाए रहना पसन्द करेगा? क्या कोरी मौखिक सहानुभूति अछूतोद्धार और शुद्धि करेगी? कहाँ एक ओर तो हमारा विश्व को आर्य बनाने का ध्येय तथा दूसरी ओर अपने ही भाइयों पर इतना अत्याचार! क्या यह डूब मरने की बात नहीं है? क्या इससे हमारे हृदय की घोर सङ्कीर्णता प्रकट नहीं होती? शुद्धि के समय शुद्ध हुए व्यक्तियों के हाथों से मिठाई खा लेना या पानी पी लेना पर्याप्त नहीं है। अगर हमें शुद्धि-आन्दोलन को सफल बनाना है और विधर्मियों के लिए वैदिक धर्म का द्वार खोलना है, तो हमें शुद्ध होने वालों के साथ रक्त-सम्बन्ध करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। किसी चीज़ को खा लेना तो सहज है, पर उसे हज़म करना कठिन है। जो पुरुष अपनी भुक्त वस्तु को पचा नहीं सकता, वह रोगी हो जाता है तथा उसका शरीर और आत्मा पुष्ट नहीं हो सकता।

आज हम अपनी जातीयता के अभिमान में मस्त होकर अपने शूद्र भाइयों को किसी प्रान्त में दलित, कहीं अन्त्यज, कहीं अस्पृश्य, कहीं अछूत, कहीं नमः शूद्र और कहीं अब्राह्मण कह कर कुचल रहे हैं! हिन्दुओं के घर, मन्दिर, कूप और तालाब भी अब्राह्मण भाइयों की छाया से अपवित्र हो जाते हैं। यह है हमारे अमानुषी व्यवहार की चरम सीमा!!! हमारे ही निन्दित व्यवहार को समझा-बुझा कर आज ईसाई-मुसलमान लाखों अस्पृश्य भाइयों को बहका कर अपने दल में मिला चुके हैं और मिलाते जा रहे हैं। यदि हिन्दू-जाति ने करवट न ली और दलित भाइयों को अपना सुदृढ़ अङ्ग न बना लिया तो निकट-भविष्य में हमारा सर्वनाश होकर हिन्दू-जाति का संसार से अस्तित्व ही मिट जायगा। आज हिन्दू-जाति में करोड़ों मनुष्य अपने को ब्राह्मण कहने वाले 'जगत्गुरु' होने का दम भरते हैं। परन्तु यह अत्यन्त लज्जा की बात है कि उनके होते हुए भी सुदूर देशों के पादरी यहाँ आकर हमारे अस्पृश्य कहलाने वाले भाइयों की शिखाएँ काट रहे हैं, परन्तु हमारे हिन्दू-धर्म के ठेकेदारों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती!!

आज हमारे देश के बहु-संख्यक उच्च जातियों के हिन्दू विधवा-विवाह शब्द सुनने के साथ ही नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं। परन्तु उन्हें स्मरण रखना चाहिए, कि यह भी हमारे किए हुए कर्मों का ही फल है, जिसको हमें अवश्य भोगना पड़ेगा। हिन्दू-जाति के अङ्ग में बाल-विधवाओं का अस्तित्व आज वह मर्मस्थल बन गया है, जिससे हमारा हिन्दू-समाज कुष्ठ रोग की तरह गलता जा रहा है। आज हम संसार की अन्य जातियों के समक्ष मुख दिखलाने के योग्य भी नहीं रहे हैं। हिन्दुओं के गृहों में पाँच वर्ष से भी न्यून आयु की सहस्रों दुधमुँही बालिकाएँ रँडापा भोग रही हैं! इनकी गर्म आह से आज हमारा गार्हस्थ्य-आश्रम नरक तुल्य बन रहा है। विचारशील हिन्दू भाइयों को चाहिए कि वे जहाँ बाल-विवाह जैसी विनाशकारी प्रथा को समूल नष्ट करने में संलग्न हैं, वहाँ बाल-विधवाओं के विवाह को जारी कर पूर्वकृत कुकर्मों का प्रायश्चित कर डालें। जिससे व्यभिचार, गर्भपात और भ्रूणहत्या आदि के पाप-पङ्क से हिन्दू-जाति मुक्त हो जाय तथा सहस्रों विधवाएँ, जो विधर्मियों के घर चली जाती हैं अथवा पाप-कर्म में फँस जाती हैं—अपने जीवन को अन्य मनुष्यों की भाँति समाज के हितकारी कार्यों में व्यतीत कर सकें।

नवयुवको! क्रान्ति की चक्की बराबर चल रही है। वह ख़ूब बारीक पीसती है। क्रान्ति का मार्ग भयङ्कर नहीं है। वह बड़ा विशाल, बड़ा दिव्य और सुखद मार्ग है। चोरों के लिए वह भयङ्कर तथा मक्कारों के लिए वह त्रास देने वाला है। वह खुला मार्ग प्रकाशपूर्ण है तथा अविद्या और अन्धकार का वहाँ नामो-निशान भी नहीं है। उस उच्च मार्ग पर चलने से केवल आलसी, डरपोक, कमज़ोर, दक़ियानूसी और बूढ़े डरते हैं। इन डरने वालों को क्रान्ति पीस कर खाद बना देती है। अतएव, भारत में क्रान्ति के आगमन का अर्थ यह है, कि शताब्दियों का कूड़ा-कर्कट साफ़ होकर, सदियों की गन्दगी धुल कर, नवीन बसन्त-ऋतु का आगमन होगा। अब नई कलियाँ, नए फूल, नए पत्ते और नए फल चारों ओर लहलहाएँगे और उजड़ा भारत समृद्धवान होगा। तो फिर क्रान्ति के मार्ग पर चलने से डरिए मत और इसके वीर सिपाही बनिए। उस मार्ग पर चलने योग्य अपने आपको शीघ्र बनाइए। देश, काल और अवस्था पर विचार कीजिए। वर्तमान पर विश्वास कीजिए। पुरानी रूढ़ियों को मिटा दीजिए। क्रान्ति का समय आ गया है। अनुकूल समय व्यक्ति-विशेष की प्रतीक्षा कहीं भी नहीं करता। जब प्रसूति की घड़ी आ पहुँची है, तो दाई चाहे मिले चाहे न मिले, सन्तान तो होकर ही रहेगी। भारतवर्ष के पुनरुत्थान की घड़ी आ पहुँची है। अब क्रान्ति किसी व्यक्ति-विशेष की तलाश नहीं करेगी। प्रजातन्त्र में एक गुरु कैसा? फिर भारत में गुरुडम को नाश करना ही तो क्रान्ति का एक मात्र उद्देश्य है। क्रान्ति चतुर्मुखी जन-साधारण के नेताओं द्वारा होगी। एक के द्वारा नहीं, बहुतों के द्वारा—ताकि कोई अपना एकाधिपत्य न जमा सके। संसार में व्यक्ति विशेषों द्वारा क्रान्तियाँ बहुत देशों में हुई हैं, पर सार्वजनिक क्रान्ति, जिस क्रान्ति में जनता के साधारण नेता बराबर का भाग लें, ऐसी विमल, ऐसी दिव्य क्रान्ति केवल भारतवर्ष ही करके दिखला रहा है। भारतीय क्रान्ति का मार्ग अनोखा, अनुपम और अलौकिक है। इतिहास में कहीं भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलता है। साधारण कोटि के कार्यकर्ता तक अपने उद्देश्य के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए तैयार हैं। स्वाधीनता देवी बलि चाहती है। उसे बाल की खाल खींचने वाले तार्किक नेताओं की ज़रूरत नहीं है और न डरपोक पढ़े-लिखों की ही ज़रूरत है, जो हाथ-पाँव बचा कर काम करना चाहते हैं। स्वाधीनता देवी बलिदान की भूखी है और पवित्र बलिदान ही उसे तृप्त कर सकता है। इसलिए पाठक और पाठिकाओ! आइए, जिस प्रकार अग्नि-कुण्ड में शुष्क चन्दन तथा अन्य सुगन्धित द्रव्य छोड़े जाते हैं, उसी प्रकार राष्ट्र के उद्धार के यज्ञ में हम नवयुवक और नवयुवतियाँ आहुति के रूप में बलि-वेदी पर चढ़ कर, भभकती अग्नि में कूद कर, उसकी धू-धू करती हुई लपटों में अपने शरीर को विलीन कर दें। स्वतन्त्रता के यज्ञ-कुण्ड में अपनी अपूर्व आहुति छोड़ दें, जिसकी समुज्ज्वल ज्योति सब के लिए संसार में प्रकाश प्रदान करती रहेगी और भूले-भटकों के लिए सदैव प्रकाश-स्तम्भ का काम देगी। भारतवर्ष का इतिहास विविध प्रकार के बलिदानों द्वारा और आहुतियों से ओत-प्रोत है। यहाँ के छोटे-छोटे वीर बालक तथा कोमलकाय देवियों तक ने देश, धर्म और समाज के नाम पर अपने शरीर को बलि देने में सङ्कोच नहीं किया है, तो फिर हम क्यों डरें? इसके लिए जो भी विपत्ति टूटेगी हम उसका स्वागत करेंगे। इस क्रान्ति-यज्ञ के हवन-कुण्ड में हम अपने शरीर को न्यौछावर कर दें। इतने उच्च आदर्श के लिए यह बलि भी कुछ अधिक महान नहीं है।

*

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विभिन्न परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य आठ आने।

जननी जीवन

पुस्तक की उपयोगिता नाम ही से प्रकट है। इसके सुयोग्य लेखक ने यह पुस्तक लिख कर महिला-जाति के साथ जो उपकार किया है, वह भारतीय महिलाएँ सदा स्मरण रक्खेंगी। घर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः प्रत्येक बातों का वर्णन पति-पत्नी के सम्वाद-रूप में किया गया है। लेखक की इस अदूरदर्शिता से पुस्तक इतनी रोचक हो गई है कि इसे एक बार उठा कर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से "गागर में सागर" वाली लोकोक्ति का परिचय मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में कुल २० अध्याय हैं; जिनके शीर्षक ये हैं :—

(१) अच्छी माता (२) आलस्य और विलासिता (३) परिश्रम (४) प्रसूतिका स्त्री का भोजन (५) आमोद-प्रमोद (६) माता और धाय (७) बच्चों को दूध पिलाना (८) दूध छुड़ाना (९) गर्भवती या भावी माता (१०) दूध के विषय में माता की सावधानी (११) मल-मूत्र के विषय में माता की जानकारी (१२) बच्चों की नींद (१३) शिशु-पालन (१४) पुत्र और कन्या के साथ माता का सम्बन्ध (१५) माता का स्नेह (१६) माता का सांसारिक ज्ञान (१७) आदर्श माता (१८) सन्तान को माता का शिक्षा-दान (१९) माता की सेवा-शुश्रूषा (२०) माता की पूजा।

इस छोटी सी सूची को देख कर ही आप पुस्तक की उपादेयता का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में होनी चाहिए। मूल्य ३।); स्थायी ग्राहकों से ।।।=)

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य १)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक भी हैं। मूल्य ।)

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-परम्पराएँ, अन्ध-विश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभागा देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है। 'समाज की चिनगारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु यह धुँधला चित्र भी ऐसा दुखदायी है कि देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहाविरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; सजीव प्रोटेक्टिङ्ग कवर ने तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं। फिर भी मूल्य केवल प्रचार-दृष्टि से लागत-मात्र ३) रक्खा गया है। 'चाँद' तथा स्थायी ग्राहकों से २।) रु०!

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों से २।)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

अन्त और एकाधिपत्य शासन की समाप्ति है। उसी प्रकार सामाजिक क्रान्ति उस काया-पलट का नाम है, जिसके द्वारा समाज स्वार्थी पण्डितों, पुरोहितों, मुल्लाओं, मौलवियों और पोपों के फ़ौलादी पञ्जों से छुटी पा सके तथा रूढ़िवाद रूपी राक्षस के जटिल जाल से उसका उद्धार हो सके। हमारे गर्भगत होने से मरने तक और मरने के बाद भी रूढ़िवाद हमारा पीछा नहीं छोड़ता! किसी न किसी रूप में सदैव स्वार्थियों का सिक्का हमारे ऊपर जमा ही रहता है। इस रूढ़िवाद ने समाज-सदन के सुदृढ़ मूल को खोखला कर दिया है और उसे किसी उन्नत जाति के सम्मुख ऊँची गर्दन करके खड़ा होने योग्य नहीं छोड़ा है।

नवयुवक भाइयो! प्रत्येक देश में क्रान्ति, चाहे वह किसी प्रकार की भी क्यों न हो, नवयुवकों द्वारा ही हुई है। भारत में सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के कर्णधार विशेषकर नवयुवक ही हैं। हमारे नवयुवक और नवयुवतियों को चाहिए कि समाज में जितने हानिकारक तथा उन्नति में बाधक बनने वाले रीति-रिवाज हैं, उन्हें जड़-मूल से उखाड़ फेंकें। इन कार्यों में हमें किसी का भय करने की आवश्यकता नहीं है। शास्त्र का स्पष्ट आदेश है कि हमें अपने माता, पिता तथा वृद्धों की उचित आज्ञाओं का पालन अवश्य करना चाहिए, पर यदि वे हमें कर्त्तव्य-पथ से विचलित करने का उपदेश दें, तो उसे न मानना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। मैं देखती हूँ कि आज हमारा समाज इतना पतित और उच्छृङ्खल हो गया है, कि वह भिन्न-भिन्न प्रकार से आज हमारी राजनैतिक उन्नति में बाधक हो रहा है। हमारा हिन्दू-समाज अत्यन्त कमज़ोर और एकता-विहीन हो गया है। अगर बिरादरी की बेढङ्गी बिल्डिङ्ग को शीघ्र ही नष्ट-भ्रष्ट कर, उसके स्थान पर गुण-कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था का सुन्दर-सदन न बनाया जायगा, तो परिणाम बड़ा ही अहितकर होगा। बिरादरी के क़िले को तहस-नहस करना बुड्ढों का काम नहीं है। जिनके हाथ कुदाल पकड़ने में ही काँपते हों, उनसे ऐसी आशा करना दुराशा मात्र है। याद रहे, यह काम जब होगा, नवयुवकों द्वारा होगा और वे ही लोग उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे। बिरादरी और विवाह की प्रथाओं में क्रान्ति के साथ-साथ हमें पर्दे की प्रथा को भी फाड़ फेंकना होगा। यह पर्दा रूपी पिशाच तो हमारे घर के भीतर घुस कर बड़ा भयङ्कर अनर्थ कर रहा है। इसे शीघ्रातिशीघ्र नष्ट कर देना हमारा सब से पहला कर्त्तव्य है। आप स्वयं क्रान्तिकारी बनिए, आपका परिवार, समाज और देश धीरे-धीरे आपका साथ देगा।

आजकल संसार में राजनीतिक आन्दोलन की धूम है। भारत में राजनीतिक आन्दोलन का डङ्का बज रहा है। जब देश के हृदय-सम्राट् महात्मा गाँधी तथा नवयुवक राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य सभी गण्यमान्य नेता अपने हज़ारों देश-प्रेमी सहयोगियों के साथ जेल में पड़े हैं, ऐसे समय में हमारे नवयुवक-समाज का कर्त्तव्य स्पष्ट है। हमारी अस्थियों की आधार-शिला पर ही हमारे राष्ट्रीय भवन का निर्माण होगा और हमारे रक्त के परमाणुओं से ही उसकी दीवार उठाई जायगी। भारत सदा धर्म-प्रधान देश रहा है और हमारी राजनैतिक प्रगति का आधार महात्मा गाँधी तथा सत्याग्रही सैनिकों की भाँति अपने धार्मिक सिद्धान्तों पर अविचल रहना ही है। देश को पूर्ण स्वाधीन करने के लिए आवश्यक है राजनैतिक आन्दोलन को स्थायी रूप दिया जाय, पर राजनैतिक आन्दोलन को स्थायी बनाने के लिए हिन्दू-समाज को सुसङ्गठित करना आवश्यक है, क्योंकि भारत का भविष्य विशेषकर हिन्दू-जाति के हाथ में ही है। समाज और जाति के सङ्गठन के लिए सर्व-प्रथम उसमें फैली हुई कुरीतियों का शीघ्र निवारण होना चाहिए।

क्या आप नहीं जानते कि जिस अत्याचार से तङ्ग आकर हम विदेशियों की शिकायत कर रहे हैं, वही हम स्वयं अपने हाथों से अछूत भाइयों पर करने में सङ्कोच नहीं करते? क्या हमारे लिए यह शर्म की बात नहीं है? क्या एक सच्चा नवयुवक घोर अज्ञान में लीन बिरादरी के डर से इस कलङ्क के टीके को अपने मस्तक पर लगाए रहना पसन्द करेगा? क्या कोरी मौखिक सहानुभूति अछूतोद्धार और शुद्धि करेगी? कहाँ एक ओर तो हमारा विश्व को आर्य बनाने का ध्येय तथा दूसरी ओर अपने ही भाइयों पर इतना अत्याचार! क्या यह डूब मरने की बात नहीं है? क्या इससे हमारे हृदय की घोर सङ्कीर्णता प्रकट नहीं होती? शुद्धि के समय शुद्ध हुए व्यक्तियों के हाथों से मिठाई खा लेना या पानी पी लेना पर्याप्त नहीं है। अगर हमें शुद्धि-आन्दोलन को सफल बनाना है और विधर्मियों के लिए वैदिक धर्म का द्वार खोलना है, तो हमें शुद्ध होने वालों के साथ रक्त-सम्बन्ध करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। किसी चीज़ को खा लेना तो सहज है, पर उसे हज़म करना कठिन है। जो पुरुष अपनी भुक्त वस्तु को पचा नहीं सकता, वह रोगी हो जाता है तथा उसका शरीर और आत्मा पुष्ट नहीं हो सकता।

आज हम अपनी जातीयता के अभिमान में मस्त होकर अपने शूद्र भाइयों को किसी प्रान्त में दलित, कहीं अन्त्यज, कहीं अस्पृश्य, कहीं अछूत, कहीं नमः शूद्र और कहीं अब्राह्मण कह कर कुचल रहे हैं! हिन्दुओं के घर, मन्दिर, कूप और तालाब भी अब्राह्मण भाइयों की छाया से अपवित्र हो जाते हैं। यह है हमारे अमानुषी व्यवहार की चरम सीमा!!! हमारे ही निन्दित व्यवहार को समझा-बुझा कर आज ईसाई-मुसलमान लाखों अस्पृश्य भाइयों को बहका कर अपने दल में मिला चुके हैं और मिलाते जा रहे हैं। यदि हिन्दू-जाति ने करवट न ली और दलित भाइयों को अपना सुदृढ़ अङ्ग न बना लिया तो निकट-भविष्य में हमारा सर्वनाश होकर हिन्दू-जाति का संसार से अस्तित्व ही मिट जायगा। आज हिन्दू-जाति में करोड़ों मनुष्य अपने को ब्राह्मण कहने वाले 'जगत्गुरु' होने का दम भरते हैं। परन्तु यह अत्यन्त लज्जा की बात है कि उनके होते हुए भी सुदूर देशों के पादरी यहाँ आकर हमारे अस्पृश्य कहलाने वाले भाइयों की शिखाएँ काट रहे हैं, परन्तु हमारे हिन्दू-धर्म के ठेकेदारों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती!!

आज हमारे देश के बहु-संख्यक उच्च जातियों के हिन्दू विधवा-विवाह शब्द सुनने के साथ ही नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं। परन्तु उन्हें स्मरण रखना चाहिए, कि यह भी हमारे किए हुए कर्मों का ही फल है, जिसको हमें अवश्य भोगना पड़ेगा। हिन्दू-जाति के अङ्ग में बाल-विधवाओं का अस्तित्व आज वह मर्मस्थल बन गया है, जिससे हमारा हिन्दू-समाज कुष्ठ रोग की तरह गलता जा रहा है। आज हम संसार की अन्य जातियों के समक्ष मुख दिखलाने के योग्य भी नहीं रहे हैं। हिन्दुओं के गृहों में पाँच वर्ष से भी न्यून आयु की सहस्रों दुधमुँही बालिकाएँ रँडापा भोग रही हैं! इनकी गर्म आह से आज हमारा गार्हस्थ्य-आश्रम नरक तुल्य बन रहा है। विचारशील हिन्दू भाइयों को चाहिए कि वे जहाँ बाल-विवाह जैसी विनाशकारी प्रथा को समूल नष्ट करने में संलग्न हैं, वहाँ बाल-विधवाओं के विवाह को जारी कर पूर्वकृत कुकर्मों का प्रायश्चित कर डालें। जिससे व्यभिचार, गर्भपात और भ्रूणहत्या आदि के पाप-पङ्क से हिन्दू-जाति मुक्त हो जाय तथा सहस्रों विधवाएँ, जो विधर्मियों के घर चली जाती हैं अथवा पाप-कर्म में फँस जाती हैं—अपने जीवन को अन्य मनुष्यों की भाँति समाज के हितकारी कार्यों में व्यतीत कर सकें।

नवयुवको! क्रान्ति की चक्की बराबर चल रही है। वह ख़ूब बारीक पीसती है। क्रान्ति का मार्ग भयङ्कर नहीं है। वह बड़ा विशाल, बड़ा दिव्य और सुखद मार्ग है। चोरों के लिए वह भयङ्कर तथा मक्कारों के लिए वह त्रास देने वाला है। वह खुला मार्ग प्रकाशपूर्ण है तथा अविद्या और अन्धकार का वहाँ नामो-निशान भी नहीं है। उस उच्च मार्ग पर चलने से केवल आलसी, डरपोक, कमज़ोर, दक़ियानूसी और बूढ़े डरते हैं। इन डरने वालों को क्रान्ति पीस कर खाद बना देती है। अतएव, भारत में क्रान्ति के आगमन का अर्थ यह है, कि शताब्दियों का कूड़ा-कर्कट साफ़ होकर, सदियों की गन्दगी धुल कर, नवीन बसन्त-ऋतु का आगमन होगा। अब नई कलियाँ, नए फूल, नए पत्ते और नए फल चारों ओर लहलहाएँगे और उजड़ा भारत समृद्धवान होगा। तो फिर क्रान्ति के मार्ग पर चलने से डरिए मत और इसके वीर सिपाही बनिए! उस मार्ग पर चलने योग्य अपने आपको शीघ्र बनाइए। देश, काल और अवस्था पर विचार कीजिए। वर्तमान पर विश्वास कीजिए। पुरानी रूढ़ियों को मिटा दीजिए। क्रान्ति का समय आ गया है। अनुकूल समय व्यक्ति-विशेष की प्रतीक्षा कहीं भी नहीं करता। जब प्रसूति की घड़ी आ पहुँची है, तो दाई चाहे मिले चाहे न मिले, सन्तान तो होकर ही रहेगी। भारतवर्ष के पुनरुत्थान की घड़ी आ पहुँची है। अब क्रान्ति किसी व्यक्ति-विशेष की तलाश नहीं करेगी। प्रजातन्त्र में एक गुरु कैसा? फिर भारत में गुरुडम को नाश करना ही तो क्रान्ति का एक मात्र उद्देश्य है। क्रान्ति चतुर्मुखी जन-साधारण के नेताओं द्वारा होगी। एक के द्वारा नहीं, बहुतों के द्वारा—ताकि कोई अपना एकाधिपत्य न जमा सके। संसार में व्यक्ति विशेषों द्वारा क्रान्तियाँ बहुत देशों में हुई हैं, पर सार्वजनिक क्रान्ति, जिस क्रान्ति में जनता के साधारण नेता बराबर का भाग लें, ऐसी विमल, ऐसी दिव्य क्रान्ति केवल भारतवर्ष ही करके दिखला रहा है। भारतीय क्रान्ति का मार्ग अनोखा, अनुपम और अलौकिक है। इतिहास में कहीं भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलता है। साधारण कोटि के कार्यकर्ता तक अपने उद्देश्य के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए तैयार हैं। स्वाधीनता देवी बलि चाहती है। उसे बाल की खाल खींचने वाले तार्किक नेताओं की ज़रूरत नहीं है और न डरपोक पढ़े-लिखों की ही ज़रूरत है, जो हाथ-पाँव बचा कर काम करना चाहते हैं। स्वाधीनता देवी बलिदान की भूखी है और पवित्र बलिदान ही उसे तृप्त कर सकता है। इसलिए पाठक और पाठिकाओ! आइए, जिस प्रकार अग्नि-कुण्ड में शुष्क चन्दन तथा अन्य सुगन्धित द्रव्य छोड़े जाते हैं, उसी प्रकार राष्ट्र के उद्धार के यज्ञ में हम नवयुवक और नवयुवतियाँ आहुति के रूप में बलि-वेदी पर चढ़ कर, भभकती अग्नि में कूद कर, उसकी धू-धू करती हुई लपटों में अपने शरीर को विलीन कर दें। स्वतन्त्रता के यज्ञ-कुण्ड में अपनी अपूर्व आहुति छोड़ दें, जिसकी समुज्वल ज्योति सब के लिए संसार में प्रकाश प्रदान करती रहेगी और भूले-भटकों के लिए सदैव प्रकाश-स्तम्भ का काम देगी। भारतवर्ष का इतिहास विविध प्रकार के बलिदानों द्वारा और आहुतियों से ओत-प्रोत है। यहाँ के छोटे-छोटे वीर बालक तथा कोमलकाय देवियों तक ने देश, धर्म और समाज के नाम पर अपने शरीर को बलि देने में सङ्कोच नहीं किया है, तो फिर हम क्यों डरें? इसके लिए जो भी विपत्ति टूटेगी हम उसका स्वागत करेंगे। इस क्रान्ति-यज्ञ के हवन-कुण्ड में हम अपने शरीर को न्यौछावर कर दें। इतने उच्च आदर्श के लिए यह बलि भी कुछ अधिक महान नहीं है।

* * *

उत्तमोत्तम पुस्तकों का भारी स्टॉक

स्त्रियोपयोगी

अदृष्ट (ह० दृ० कं०) ३)
अपराधी (चाँ० का०) २॥)
अश्रुपात (गं०पु०मा०) १), १॥)
अरक्षणीया (इं० प्रे०) १)
अनन्तमती (ग्रं० भं०) ॥=)
अनाथ-पत्नी (चाँ० का०) २)
अनाथ बालक (इं० प्रे०) १)
" " (ह० दा० कं०) १॥)
अबलाओं का इन्साफ़ (चाँ० का०) ३)
अबलाओं पर अत्याचार (चाँ० का०) २॥)
अबलोन्नति पद्य-माला (गृ० ल०) =)॥
अभागिनी (ह० दा० कं०) १)
अभिमान (गृ० का०) १)
अमृत और विष (दो भाग) (चाँ० का०) ५)
अवतार (सर० प्रे०) ॥)
अहल्याबाई (इं० प्रे०) १)
" " (हिं० पु० भं०) ।)
अञ्जना देवी (न० दा० स० एं० सं०) ॥=)
अञ्जना सुन्दरी (प्रा०क०मा०) १)
अञ्जना-हनुमान (स० आ०) १॥), १॥)
आदर्श चाची (ब०प्रे०) १), १॥)
आदर्श दम्पति (ग्रं० भं०) १), १)
आदर्श पत्नी (स० आ०) ॥)
आदर्श बहू (ग्रं० भं०) ॥), १)
आदर्श बहू (उ० ब० आ०) ॥)
आदर्श भगिनी (ख०वि०प्रे०) ।)
आदर्श महिला (इं० प्रे०) २॥)
आदर्श महिलाएँ (दो भाग) (रा० द० अग्र०) १॥)
आदर्श रमणी (निहाल-चन्द) ॥=)
आदर्श ललना (उ० ब० आ०) ॥)
आरोग्य-साधन (महात्मा गाँधी) ।=)
आर्य-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २), २॥)
आशा पर पानी (चाँ० का०) ॥)
इन्दिरा (ख० वि० प्रे०) ॥)
" (ह० दा० कं०) १॥)
ईश्वरीय न्याय (गं० पु० मा०) ॥)
उत्तम सन्तति (जटा० वै०) १॥)
उपयोगी चिकित्सा (चाँ० का०) १॥)
उमासुन्दरी (चाँ० का०) ॥)
उमा (उ० ब० आ०) १)

कन्या-कौमुदी (तीन भाग) ॥=)
कन्या-दिनचर्या (गृ० ल०) ।)
कन्या-पाकशास्त्र (ओं० प्रे०) ।)
कन्या-पाठशाला २॥)
कन्या-बोधिनी (पाँच भाग) (रा० न० ल०) १॥)
कन्या-शिक्षा (स० सा० प्र० मं०) ।)
कन्याओं की पोथी १)
कन्या-शिक्षावली (चारों भाग) (हिं० मं०) ॥=)
कपाल-कुण्डला (ह० दा० कं०) १)
कमला (ओं० प्रे०) १॥)
कमला-कुसुम (सचित्र) (गं० पु० मा०) १)
कमला के पत्र (चाँ० का०) ३)
" " (अङ्गरेज़ी) ३)
कृष्णाकुमारी ॥)
करुणा देवी (बेल० प्रे०) ॥=)
कलङ्किनी (स० सा० प्र० मं०) ॥=)
कल्याणमयी चिन्ता (क० म० जी०) ॥)
कुल-लक्ष्मी (हिं० मं०) १)
कुल-कमला ॥)
कुन्ती देवी १॥)
कुल-ललना (गृ० ल०) ॥=)
कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥), २)
क्षमा (गृ० ल०) ॥)
गर्भ-गर्भिणी ॥)
गल्प-समुच्चय (प्रेमचन्द) २॥)
ग्रह का फेर (चाँ० का०) ॥)
गायत्री-सावित्री (बेल० प्रे०) ।)
गार्हस्थ्य शास्त्र(त० भा० ग्रं०) १)
गीता (भाषा) १॥)
गुदगुदी (चाँ० का०) ॥)
गुणलक्ष्मी (उ० ब० आ०) ।=)
गुप्त सन्देश (गं० पु० मा०) ॥=)
गृहदेवी (म० प्र० का०) ।-)
गृह-धर्म(व० द०स० एं० सं०)॥)
गृह-प्रबन्ध-शास्त्र (अभ्यु०) ॥)
गृह-वस्तु-चिकित्सा (चि० का०) ॥)
गृहलक्ष्मी (मा० प्रे०)) १)
" (उ० ब० आ०) १)
गृह-शिक्षा (रा० पू० प्रे०) =)
गृहस्थ-चरित्र (रा० प्रे०) ।)
गृहिणी (गृ० ल०) १)
गृहिणी-कर्त्तव्य (सु० ग्रं० प्र० मं०) २॥)
गृहिणी-गीताञ्जलि (रा० श्या०) ॥)
गृहिणी-गौरव (ग्रं० मा०) १॥), २)

गृहिणी-चिकित्सा (ल० ना० प्रे०) २॥)
गृहिणी-भूषण (हिं० हि० का०) ॥)
गृहिणी-शिक्षा (क०म०जी०)१)
गौने की रात (प्रा० का० मा०) ३)
गौरी-शङ्कर (चाँ० का०) ।=)
घरेलू चिकित्सा (चाँ० का०)१॥)
चिन्ता (सचित्र) (उ० ब० आ०) ॥)
चिन्ता (ब० प्रे०) १॥)
चित्तौड़ की चढ़ाइयाँ (ब० प्रे०) ॥=)
चित्तौड़ की चिता(चाँ०का०)१॥)
चौक पूरने की पुस्तक (चित्र० प्रे०) १)
छोटी बहू (गृ० ल०) १)
जनन-विज्ञान (पा० एं० कं०) ३), ३॥)
जननी-जीवन (चाँ० का०) १)
जननी और शिशु (हिं० ग्रं० रा०) ॥=)
जपाकुसुम (ल० ना० प्रे०) २)
जया (ल० रा० सा०) ।-)
ज्ञाना (गं० पु० मा०) ॥=)
जासूस की डाली (गं० पु० मा०) १)
जीवन-निर्वाह (हिं० ग्रं० र०) १)
जेवनार (हिं० पु० ए०) ।-)
तरुण तपस्विनी (गृ० ल०) ।)
तारा (इं० प्रे०) १)
दक्षिण अफ़्रिका के मेरे अनुभव (चाँ० का०) २॥)
दमयन्ती (हरि० कं०) =)॥
" (इं० प्रे०) ।)
दमयन्ती-चरित्र (गृ० ल०)=)॥
दम्पति-कर्त्तव्य-शास्त्र (सा० कुं०) १)
दम्पत्ति-मित्र (स० आ०) १॥)
दम्पति-रहस्य (गो० हा०) १)
दम्पति-सुहृद (हिं० मं०) १)
दाम्पत्य जीवन (चाँ० का०)२॥)
दाम्पत्य-विज्ञान (पा० एं० कं०) २)
दिव्य-देवियाँ (गृ० ल०) १॥=)
दुःखिनी (गृ० ल०) ॥-)
दुलहिन (हिं० पु० भं०) ।)
देवबाला (ख० वि० प्रे०) ॥)
देवलदेवी (गृ० ल०) ।-)
देवी चौधरानी (ह० दा०कं०)२)
देवी जोन (प्रका० पु०) ।=)
देवी पार्वती (गं० पु० मा०) १), १॥)
देवी द्रौपदी (पॉपूलर) ॥=)

देवी द्रौपदी (गं० पु० मा०) ॥)
देवी सती " ॥=)
द्रोपदी (ह० दा० कं०) २॥), ३)
धर्मात्मा चाची और अभागा भतीजा (चि०भ० गु०) ।-)
ध्रुव और चिलया (चि० शा० प्रे०) ।-)
नवनिधि (प्रेमचन्द) ॥)
नल-दमयन्ती (सचित्र) ब० प्रे०) १॥), १॥), २)
" " (पॉपूलर) ॥)
" " (गं० पु० मा०) ॥)
नवीन शिल्पमाला (हेमन्त-कुमारी) ३)
नन्दन-निकुञ्ज (गं० पु० मा०) १), १॥)
नवीना (हरि० कं०) १॥)
नारायणी शिक्षा (दो भाग) (चि० भ० गु०) ३)
नारी-उपदेश (गं० पु० मा०) ॥)
नारी-चरितमाला (न० कि० प्रे०) ॥=)
नारी-नवरत्न (म० भा० हिं० सा० स०) =)
नारी-महत्त्व ॥)
नारी-नीति (हिं० ग्रं० प्र०) ॥=)
नारी-विज्ञान (पा० एं० कं०) २), २॥)
नारी-धर्म-विचार १॥)
निर्मला (चाँ० का०) २॥)
पतिव्रता (इं० प्रे०) १)
" (गं० पु० मा०) १=), १॥=)
पतिव्रता-धर्मप्रकाश १)
पतिव्रता अरुन्धती (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता गान्धारी(इं० प्रे०)॥=)
पतिव्रता मनसा (एस० आर० बेरी०) ॥)
पतिव्रता-माहात्म्य (वें० प्रे०) १)
पतिव्रता रुक्मिणी (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता स्त्रियों का जीवन-चरित्र १=)
पत्नी-प्रभाव (उ० ब० आ०) १)
परिणीता (इं० प्रे०) १)
पत्राञ्जलि (गं० पु० मा०) ॥)
पण्डित जी (इं० प्रे०) १॥)
पाक-कौमुदी (गृ० ल०) १)
पाक-प्रकाश (इं० प्रे०) ।=)
पाक-विद्या (रा० ना० ला०) =)
पाक-चन्द्रिका (चाँ० का०) ४)
पार्वती और यशोदा (इं० प्रे०) ॥=)

प्राचीन हिन्दू-माताएँ (ना० दा० स० एं० सं०) १)
प्राणघातक-माला (अभ्यु०) ॥=)
प्राणनाथ (चाँ० का०) २॥)
प्रेमकान्त(सु० ग्रं० प्र० मं०)१॥)
प्रेम-गङ्गा (गं० पु० मा०) १), १॥)
प्रेमतीर्थ (प्रेमचन्द) १॥)
प्रेम द्वादशी १), १॥)
प्रेमधारा (गु० ला० चं०) ॥)
प्रेम-परीक्षा (गृ० ल०) १=)
प्रेम-पूर्णिमा (प्रेमचन्द) (हिं० पु० ए०) २)
प्रेम-प्रतिमा (भा० पु०) २)
प्रेम-प्रमोद (चाँ० का०) २॥)
प्रेमाश्रम (हिं० पु० ए०) ३॥)
प्रेम-प्रसून (गं० पु० मा०) १=), १॥=)
बच्चों की रक्षा (हिं०पु०ए०) ।-)
बड़ी बहू (रा० ना० ला०) ॥=)
बहता हुआ फूल (गं० पु० मा०) २॥), ३)
बड़ी दीदी (इं० प्रे०) १)
वरमाला (गं० पु० मा०) ॥)
बाला पत्र-बोधिनी (इं० प्रे०) ॥)
बाला-बोधिनी (५ भाग) (रा० ना० ला०) १॥)
बाला-विनोद (इं० प्रे०) ।=)
बालिकाओं के खेल (वें० प्रे०) =)
विराजबहू (शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय) (सर० भं०)॥=)
वीर-बाला (चाँ० का०) ४)
ब्याही बहू (हिं० ग्रं० र०) ।)
भक्त स्त्रियाँ (रा० श्या०) ॥)
भक्त विदुर (उ० ब० आ०) ॥)
भगिनीद्वय (चि० शा० प्रे०) ।-)
भगिनी-भूषण(गं० पु० मा०)=)
भारत-सम्राट् (उ० ब० आ०) १॥)
भारत की देवियाँ (ल० प्रे०)।-)
भारत के स्त्री-रत्न(स० सा० प्र० मं०) १=)
भारत-महिला-मण्डल (ल० प्रे०) १)
भारत-माता (रा० श्या०) ।)
भारत में बाइबिल (गं० पु० मा०) ३), ४)
भारत-रमणी-रत्न (का० रा० सा०) ॥=)
भारतवर्ष की माताएँ (श्या० ला०) ॥)
भारतवर्ष की वीर और विदुषी स्त्रियाँ (श्या० ला०ब०) ॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

"अण्डाकार मेज़ कॉन्फ्रेन्स" आरम्भ हो गई। चौंकिए नहीं। गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स, अब अण्डाकार मेज़ कॉन्फ्रेन्स हो गई है। क्योंकि उसमें गोलमेज़ न रक्खी जाकर, अण्डाकार मेज़ रक्खी गई है।

गोलमेज़ उठा कर अण्डाकार मेज़ क्यों रक्खी गई ? इसका रहस्य अपने राम के अतिरिक्त संसार में और कोई नहीं जानता। जाने भी कैसे ? अपने राम की जैसी दिव्य-दृष्टि और सीधी खोपड़ी भी तो हो। सुनिए, अण्डाकार मेज़ कॉन्फ्रेन्स का अर्थ यह है कि अन्त में भारतवासियों के हाथ में अण्डा ही रहेगा। अजी, गोलमेज़ में तो सब का पद बराबर था, परन्तु अण्डाकार में बराबर रह सकेगा या नहीं, इसमें अपने राम को ज़रा भी खोटा सन्देह नहीं है। अब यदि हिन्दुस्तान को कुछ न मिले और बाद को हिन्दुस्तानी यह कहें, कि गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स करके भी कुछ न दिया; तो ब्रिटिश सरकार साफ़ कह देगी कि हमने गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स कब की, हमने तो अण्डाकार मेज़ कॉन्फ्रेन्स की थी।

अण्डाकार मेज़ कॉन्फ्रेन्स करने का एक कारण और भी है। कॉङ्ग्रेस के प्रतिनिधि कॉन्फ्रेन्स में सम्मिलित नहीं हुए, यह बात ब्रिटिश सरकार की आँख में शहतीर की तरह खटक रही है। उसने सोचा कि जब कॉङ्ग्रेस ही सम्मिलित नहीं हुई, तो गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स का क्या महत्व रहा, अतएव इसे अण्डाकार कर दो। बात पड़ेगी तो यह कहने की जगह रहेगी कि कॉङ्ग्रेस सम्मिलित नहीं हुई, इसीलिए गोलमेज़ नहीं रक्खी गई। आख़िर गोलमेज़ की इज़्ज़त तो किसी तरह क़ायम ही रहनी चाहिए ! इतनी पुरानी चीज़ और किङ्ग आर्थर की यादगार ! उसकी इज़्ज़त-आबरू का जितना ब्रिटिश सरकार को ख़्याल है, उतना और किसी को कैसे हो सकता है ! कभी नहीं हो सकता। इधर हिन्दुस्तान से जो लोग कॉन्फ्रेन्स में गए हैं, उनका कथन है कि उनका समुचित स्वागत नहीं किया गया। समाचारों से भी ऐसा ही प्रतीत होता है, कि उनका अच्छा स्वागत नहीं हुआ। इसमें भी अपने राम को आश्चर्य करने की गुञ्जायश नहीं मिलती। "झूठों बुलाओ सचों दौड़े आओ" वालों का स्वागत ऐसा ही होता है। यार लोग एक दफ़े के कहने से ही कमर बाँध कर तैयार हो गए। अरे भाइयो ! ऐसी जल्दी क्या पड़ी थी ? कुछ तो नख़रा करते, कुछ तो ख़ुशामद कराते। यदि अपने राम कॉन्फ्रेन्स में बुलाए जाते तो नख़रे कर-करके ब्रिटिश सरकार की नाक में दम कर देते। कम से कम तीन दफ़ा बम्बई जाकर लौट आते। चौथी दफ़ा जहाज़ में सवार होकर जाते और अदन में पहुँच कर फिर मचल जाते कि—"ऊँहूँ अब तो अपने राम घर जायँगे—बाज़ आए ऐसी कॉन्फ्रेन्स से।" लोग फिर ख़ुशामद करते—सत्तोशप्तो करके शान्त करते। तब मारसलीज़ में जाकर कुछ रङ्ग लाते। इस प्रकार बार-बार मचलते और नख़रे करते हुए लन्दन पहुँचते। नाक पर मक्खी तक बैठ जाती, तो फट बिगड़ खड़े होते कि अब हम नहीं जायँगे। फिर देखते कि लन्दन में कैसा स्वागत होता। स्वागत का प्रबन्ध करते-करते ब्रिटिश सरकार की हुलिया बिगड़ जाती। लन्दन भर की मक्खियों पर दफ़ा १४४ लगाई जाती कि कहीं ऐसा न हो कोई मक्खी दुबे जी की नाक पर बैठ जाय तो दुबे जी रस्सियाँ तुड़ा कर भागें। जिस रास्ते से जाते, उस रास्ते में यह ऑर्डर जारी होता कि कोई दुबे जी की आँख से आँख न मिलावे। जिस होटल में ठहरते उस होटल में अपने राम के अतिरिक्त और कोई न रहने पाता। इस प्रकार जाते तो स्वागत होता। इन लोगों का स्वागत क्या हो, जो अपने पास से जहाज़ का किराया देकर जाने को तैयार बैठे थे। सम्पादक जी, सच मानिएगा—बहुतों को तो यह भय रहा होगा कि हमसे कोई बात ऐसी न हो जाय कि कॉन्फ्रेन्स की सदस्यता से निकाल बाहर किए जायँ। जो लोग म्युनिसिपैलिटी, काउन्सिल और एसेम्बली की मेम्बरी के लिए पेट के बल चलने को तैयार रहते हैं, उनके लिए तो इस कॉन्फ्रेन्स की मेम्बरी अल्लाह मियाँ की पैग़म्बरी के बराबर है ! स्वागत न हो, न सही—कॉन्फ्रेन्स में तो बैठेंगे ही—बस सब ठीक है ! परदेश में लोग जूते खाकर भी चुपचाप धूल झाड़ कर चले आते हैं। वहाँ कौन जानता है कि श्रीमान जी कौन हैं। परदेश में मानापमान का विचार नहीं करना चाहिए—यह बड़े पुराने आदमियों का कथन है। कॉन्फ्रेन्स के मेम्बर इस स्वर्णोपदेश को समझते हैं। वहाँ कुछ अपमान भी हुआ तो क्या हुआ—वहाँ उन्हें किसी से रिश्तेदारी तो करना ही नहीं है। हिन्दुस्तान में आवेंगे तब समाचार-पत्रों में दो-चार लेख लिख कर लीपा-पोती कर देंगे, कि इसमें यह ग़लत-फ़हमी हो गई थी, यह अन्तर पड़ गया था। यह तो अपने बाएँ हाथ का खेल है। जब हिन्दुस्तान में ही अपनी करतूतों के तीन सौ साठ मतलब निकाले जा सकते हैं और जनता की आँखों में धूल झोंकी जा सकती है, तब सात समुद्र पार की तो बात ही क्या है। और जब तक लौट कर आएँगे, तब तक बात भी पुरानी पड़ जायगी। उस समय तक सम्भव है लोग इस घटना को भूल भी जायँ। इसके अतिरिक्त यदि अण्डाकार मेज़ ने इन्हें कोई बच्चा थमा दिया तो फिर क्या है—"कमाऊ पूत" बन कर लौटेंगे। फिर किसी की क्या मजाल कि कुछ कह सके। इसी प्रकार की बातें सोच कर मेम्बरों ने इस अपमान को जेब में रख लिया !!

एक मज़ेदार घटना और हुई। मेम्बर लोग जब हवाई जहाज़ों के तबेले का निरीक्षण करने पहुँचे, तो वहाँ एक अङ्गरेज़ ने प्रश्न किया कि "क्या आप में से कोई अङ्गरेज़ी भी जानता है ?" वल्लाह क्या कही है—जी ख़ुश हो गया ! पूछिए अङ्गरेज़ी जानते होते तो कॉन्फ्रेन्स में जाते। यदि अङ्गरेज़ी जानते होते तो अङ्गरेज़ों को समझते और जब अङ्गरेज़ों को समझते तो कॉन्फ्रेन्स को दूर से नमस्कार करके अपने घर में बैठे रहते। प्रश्नकर्ता ने समझ लिया कि ये लोग अङ्गरेज़ी नहीं जानते, तभी कॉन्फ्रेन्स में बुलाए गए और दौड़े चले भी आए। अपने राम होते तो तुरन्त उत्तर देते कि "भाई अङ्गरेज़ी जानते होते तो तुम्हारे दर्शन हमें कहाँ मिलते। यदि कृपा करके थोड़ी सी पढ़ा दो तो अब भी हम कॉन्फ्रेन्स को नमस्कार करके घर लौट जायँ।" सम्पादक जी, भारतवासी जो अङ्गरेज़ी जानते हैं, वह वास्तव में असली अङ्गरेज़ी नहीं है। वह तो "क़ारिकल भाषा" है। असली अङ्गरेज़ी जानने वाले भारतवर्ष में इने-गिने निकलेंगे। उनसे अङ्गरेज़ लोग ज़रा चौकन्ने भी रहते हैं और बहुत समझ कर बात करते हैं। चलिए यह पता भी लग गया कि कॉन्फ्रेन्स में जितने पहुँचे हैं, उनमें से अङ्गरेज़ी कोई नहीं जानता। ये मेम्बर लोग भी भारतवर्ष की सेशन्स अदालत के असेसर्स के तुल्य समझ कर बुला लिए गए ! ख़ैर जो होगा, अपने राम से क्या ? अपने राम नहीं बुलाए गए, इसीलिए यह सब हो रहा है। अपने राम बुलाए जाते, तो मसा तक तो भनकता नहीं !!

सुनने में आ रहा है कि कॉन्फ्रेन्स में हिन्दू-मुसलमान मेम्बरों में मतभेद है। होना ही चाहिए। बिना इसके तो मज़ा भी नहीं आएगा। यह मतभेद भी तो अङ्गरेज़ी न जानने का परिणाम है ! अङ्गरेज़ी जानते होते तो मिल कर काम करते। अपने घर में तो सिर-फुटौव्वल होती ही रहती है, बाहर भी तो कुछ होना ही चाहिए। लन्दन वाले अभी तक तो समाचारों में ही पढ़ते रहे, अब ज़रा अपनी आँखों से भी "गुलाबो-शिताबो" की लड़ाई देख लें—कैसी नाक पर उँगली रख कर लड़ती हैं ? यह कहे मैं सुर्मेदानी लूँगी, वह कहे मैं पानदान लूँगी। हालाँ कि, भगवान ने चाहा तो दोनों के हाथ पीकदान के अतिरिक्त और कुछ न आएगा ! ख़ैर जी, जो कुछ होगा सामने आ जायगा। परन्तु होगा वही, जो अपने राम ने समझ रक्खा है; क्योंकि ब्रिटिश सरकार और कॉन्फ्रेन्स के सब सदस्य इस बात की पूरी चेष्टा कर रहे हैं, कि दुबे जी ने अपने मन में जो भविष्यवाणी की है, उसे अवश्य सफल बनाना चाहिए। और यह इसलिए, कि अपने राम ब्रिटिश सरकार और कॉन्फ्रेन्स के मेम्बरों के बड़े ज़ोरों से भक्त हैं। और तमाम ज़माने भर के भगवान अपने भक्तों की भविष्यवाणी पूरी करते हैं। आशा है यह बात आप भी मानेंगे।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

बधाई

प्रो० विश्वेश्वर, सिद्धान्त-शिरोमणि, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन से लिखते हैं :—

आपकी आयोजनाएँ हिन्दी-संसार में एकदम क्रान्तिकारिणी होती हैं। 'भविष्य' का सुन्दर और सफल प्रकाशन इसका एक नया नमूना है। अभी तो निकला ही है, परन्तु निकलते-निकलते ही 'भविष्य' हिन्दी के समस्त साप्ताहिकों से बाज़ी मार ले गया। 'भविष्य' के उज्ज्वल आदर्श को प्रस्तुत करने और इस क्रान्तिकारी प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई। परमात्मा हमारे 'भविष्य' को सफल बनाए—यही कामना है।

* * *

श्री० हरीशचन्द्र "ज़िया" देवन्दपुर, बी० ए०, एल्-एल्० बी०, वकील रायबरेली से लिखते हैं :—

"भविष्य" देख कर मैं दङ्ग रह गया। दिल लोट-पोट हो गया। लोग देखें कि पत्र इस तरह निकाला जाता है। आपको दिल से बधाई देता हूँ।

* * *

कुछ चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकें

भारत की विदुषी नारियाँ (गं० पु० मा०) ॥)
भारतवर्ष की सती-देवियाँ (शि० त्र० ला० ब०) ॥=)
भारतीय ललनाओं को गुप्त-सन्देश (गं० पु० मा०) ॥)
भारतीय स्त्रियाँ („ „) १॥)
भारतीय विदुषी (इं० प्रे०) ॥)
भारतीय स्त्रियों की योग्यता (दो भाग) (ख० वि० प्रे०) १)
भार्या-हित (न० कि० प्रे०) ॥=)
भार्या हितैषिणी (प्रा० का० मा०) १॥)
मँझली दीदी (इं० प्रे०) ॥)
मणिमाला („) २)
„ (चाँ० का०) ३)
मदालसा (ल० प्रे०) ।-)
मदर-इण्डिया (उमा नेहरू) ३॥)
मदर-इण्डिया का जवाब (गं० पु० मा०) १)
मनोरञ्जक कहानियाँ (चाँ० का०) १॥)
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ (चाँ० का०) २)
मनोरमा (चाँ० का०) २॥)
महारानी पद्मावती (ल० प्रे०) ।=)
महारानी वृन्दा (एस्० आर० बेरी) १)
महारानी शशिप्रभा देवी (बेल० प्रे०) २)
महारानी सीता (ब० प्रे०) २॥), २॥), ३)
महासती अनुसूया (एस्० आर० बेरी) ॥=)
महासती मदालसा (ब० प्रे०) १॥), २), २)
महिला-महत्व (हिं० पु० भं०) २)
महिला-मोद (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥)
महिला-व्यवहार-चन्द्रिका (रा० द० अ०) ॥)
महिला-स्वास्थ्य-सञ्जीवनी (गृ० ल०) १)
मङ्गल-प्रभात (चाँ० का०) ४)
मञ्जरी (गं० पु० मा०) १), १॥)
माता का पुत्री को उपदेश (रा० प्रे०) =)
माता के उपदेश (सर० भं०) ।-)
माता-पुत्र (ना० स० ऐ० सं०) १॥=)
मानव-सन्तति-शास्त्र (ख० वि० प्रे०) १)
मानिक-मन्दिर (चाँ० का०) २॥)

मिलन-मन्दिर (हिं० पु०) २॥)
मितव्ययिता (हिं० ग्रं० र०) ॥=)
मीराबाई (ख० वि० प्रे०) =)
मुस्लिम-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
मूर्खराज (चाँ० का०) २)
मेहरुन्निसा (चाँ० का०) ॥)
युगलाङ्गुलीय (इं० प्रे०) ।-)
युवती-योग्यता (इं० प्रे०) =)
युवती-रोग-चिकित्सा (चि० भ० गु०) ।=)
रजनी (उ० ब० आ०) ॥=)
रमणी-कर्त्तव्य („) ॥=)
रमणी-पञ्चरत्न (रा० प्रे०) १)
„ „ (उ० ब० आ०) २॥)
रमणी-रत्नमाला (रा० प्रे०) ।=)
उमासुन्दरी (ह० दा० कं०) २)
रङ्गभूमि (गं० पु० मा०) ५), ६)
राजस्थान की वीर रानियाँ (ल० रा० स०) १)
राधारानी (ख० वि० प्रे०) ।=)
रामायणी कथा (अभ्यु०) १)
लक्ष्मी (इं० प्रे०) ॥=)
„ (ओं० प्रे०) १)
„ (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥=)
लक्ष्मी-चरित्र (स० सा० प्र० मं०) १)
„ „ (उ० ब० आ०) ।=)
लक्ष्मी-बहू (गृ० ल०) ।=)
लक्ष्मी-सरस्वती सम्वाद (न० कि० प्रे०) =)
लच्छमा (ह० दा० कं०) १॥)
ललना-सुहृद-प्रकाशिनी (मा० प्र० बु०) ।=)
ललना-सहचरी (सु० ग्रं० प्र० मं०) १॥)
वनमाला (चाँ० का०) ३)
वनिता-विनोद (मा० प्र०) ॥=)
वनिता-विलास (गं० पु० मा०) ॥)
वनिता-हितैषिणी (रा० प्रे०) ।=)
विजया (गं० पु० मा०) १॥)
विदुषी-रत्नमाला (रा० प्रे०) ।=)
विदूषक (चाँ० का०) १)
विधवा-आश्रम (ना० द० स०) ३)
विधवा-कर्तव्य (हिं० ग्रं० र०) ॥)
विधवा-प्रार्थना (ग्रं० भं०) ।-)
विधवा-विवाह-मीमांसा (चाँ० का०) ३)
„ „ (ब० प्रे०) ।=)
विमला (गु० च०) ॥)
विरागिनी (ह० दा० कं०) १)

विलासकुमारी या कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥)
विवाहित प्रेम (स० आ०) १॥), १॥)
विष्णु-प्रिया चरित्र (इ० प्रे०) =)
वीर और विदुषी स्त्रियाँ (ल० बु० डि०) ॥)
वीर माताएँ („) ॥)
„ „ (श्या० ला० ब०) ॥)
वीर माता का उपदेश (अ० सा० मं०) १)
वीरबाला पञ्चरत्न (उ० ब० आ०) २)
वैधव्य कठोर दण्ड है या शान्ति (सा० भ० लि०) ॥=), १।-)
वैवाहिक अत्याचार और मातृत्व (अ० प्रे०) ॥)
वीर वीराङ्गना (उ० ब० आ०) ॥)
वीराङ्गना (स० आ०) ॥)
व्यञ्जन-प्रकाश (न० कि० प्रे०) १)
व्यञ्जन-विधान (दो भाग) १)
शकुन्तला की कथा (रा० द० अ०) ।-)
शकुन्तला (ब० ऐं० कं०) ॥=)
„ (न० द० स० ऐं० सं) ॥)
„ (ब० प्रे०) २), २), २॥)
„ (पॉपूलर) ॥=)
„ (ल० प्रे०) १)
शर्मिष्ठा (उ० ब० आ०) ॥)
शर्मिष्ठा-देवयानी (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
शान्ता (चाँ० का०) ॥)
शिव-सती (ब० प्रे०) ॥=)
शिशु-पालन (इं० प्रे०) १)
„ „ (स० आ०) १)
शैलकुमारी (चाँ० का०) २)
शैलबाला (ह० दा० कं०) १)
शैव्या (उ० ब० आ०) १), ।=)
शैव्या-हरिश्चन्द्र (ब० प्रे०) २॥), २॥), ३)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
सखाराम (चाँ० का०) १)
सचित्र द्रौपदी (बेल० प्रे०) ॥)
सच्ची देवियाँ (ला० रा० सा०) ॥)
सच्ची स्त्रियाँ (") ॥)
सती (इं० प्रे०) १)
सती-चरित्र-चन्द्रिका (नि० बु० डि०) २)
सती-चरित्र-संग्रह (ल० प्रे०) २)
सती-चिन्ता (ब० प्रे०) १॥), १॥), २)

सती चिन्ता (उ० ब० आ०) ॥)
सती दमयन्ती (ब० प्रे०) ॥=)
„ „ (उ० ब० आ०) ॥)
सती-दाह (चाँ० का०) २॥)
सती पद्मिनी (गृ० ल०) ।=)
सती पार्वती (गं० पु० मा०) १)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
„ „ (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
सती-बेहुला (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
सती मदालसा (उ० ब० आ०) ॥)
सती-महिमा (उ० ब० आ०) १), १॥)
सती-वृत्तान्त (ला० रा० सा०) १॥)
सती शकुन्तला (ब० प्रे०) ॥=)
सती शुक्ला (उ० ब० आ०) ॥)
सती-सतीत्व (उ० ब० आ०) १)
सती-सामर्थ्य („) ॥), १)
सती सावित्री (ना० द० स० ऐं० सं०) ।=), १)
„ „ (ब० प्रे०) ॥=)
„ „ (उ० ब० आ०) ॥)
सती सीता (ब० ऐं० कं०) ॥=)
„ (ब० प्रे०) ॥=)
„ (उ० ब० आ०) १)
सती सीमन्तिनी (एस्० आर० बेरी) ॥)
सती सुकन्या (ब० प्रे०) १), १॥), १॥)
„ (उ० ब० आ०) ॥)
सती सुचरित्रा (उ० ब० आ०) १)
सती सुनीति (उ० ब० आ०) ॥)
सती सुलक्षणा (एस्० आर० बेरी) ॥)
सप्त-सरोज (हिं० पु० ए०) ॥)
सफल-गृहस्थ (सा० भ० लि०) ॥)
सदाचारिणी (गृ० ल०) १।-)
सफल माता (चाँ० का०) २)
समन्वय (भा० ग्रं० भं०) ३॥)
समाज की चिनगारियाँ (चाँ० का०) ३)
सरल व्यायाम (बालिकाओं के लिए) (इं० प्रे०) ।=)
सन्तति-विज्ञान (वें० प्रे०) ॥।=)
सन्तान-कल्पद्रुम (हिं० ग्रं० र०) १)
सन्तान-शास्त्र (चाँ० का०) ४)
संयुक्ता (पॉपूलर) ॥=)
संयोगिता (मा० का०) ॥)
संयोगिता (ह० दा० कं०) ।-)
संसार की असभ्य जाति की स्त्रियाँ (प्रका० पु०) २॥)

सावित्री (ब० प्रे०) ।=)
„ (हिं० पु० भं०) १)
„ (हरि० कं०) १॥)
सावित्री और गायत्री (बेल० प्रे०) ॥)
सावित्री-सत्यवान (उ० ब० आ०) ॥)
„ „ (ब० प्रे०) १॥), १॥), २)
„ „ (स० आ०) ॥), १)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
सीता की अग्नि-परीक्षा (स० सा० प्र० मं०) ।-)
सीता-चरित्र (इं० प्रे०) १॥)
सीता जी का जीवन-चरित्र (रा० प्रे०) १)
सीताराम (उ० ब० आ०) १)
सीता-वनवास (इं० प्रे०) ॥=)
„ „ (ब० ऐं० को०) ॥=)
„ (स० आ०) ॥=), १=)
सीता (सचित्र) (ब० प्रे०) २॥)
सीतादेवी (पॉपूलर) ॥=)
सुकुमारी (ओं० प्रे०) ॥=)
सुखी गृहस्थ (प० ला० सिं०) ॥)
सुघड़ चमेली (गं० पु० मा०) =)
सुघड़ दर्ज़िन (इं० प्रे०) ॥)
सुघड़ बेटी (सर० प्रे०) ॥)
सुनीति (उ० ब० आ०) ॥)
सुभद्रा (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
सुहागरात (इं० प्रे०) ४)
सुर-सुन्दरी (ग्रं० मं०) ।-)
सुशीलाकुमारी (सर० प्रे०) ॥)
सुशीला-चरित्र (इं० प्रे०) १॥)
सुशीला विधवा (वें० प्रे०) १)
सुन्दरी (श्री० वि० ल० ज्ञा० मं०) ॥)
सुभद्रा (पॉपूलर) ॥=)
सौभाग्यवती (इं० प्रे०) १)
सौरी-सुधार (इं० प्रे०) ॥)
सौन्दर्यकुमारी (ओं० प्रे०) =)
स्त्रियों की पराधीनता (बदरीनाथ भट्ट) ॥)
स्त्रियों की स्वाधीनता (श्री० वि० ल० ज्ञा० मं०) ॥)
स्त्री के पत्र (चन्द्रशेखर) १)
स्त्रियों के रोग और उनकी चिकित्सा (इं० प्रे०) १)
स्त्री-रोग-विज्ञानम् (चाँ० का०) ३)
स्त्री-उपदेश (न० कि० प्रे०) ।=)
स्त्री और पुरुष (स० सा० प्र० मं०) ।=)
स्त्री-कर्तव्य (ख० वि० प्रे०) ॥)
स्त्री-चर्या (ब० कं०) =)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

स्वतन्त्रता

[श्री० एम० माहेश्वरी, बी० ए०]

अभागे भारतवासियों को सोते हुए बहुत दिन हो गए। स्वप्न की मोह-भरी निशा प्राची दिशा की गोद में करवट ले रही है; ज्ञान-भानु अपनी सहस्र रश्मियों से दुर्गति और अधःपतन के तम को हटाने का प्रयत्न कर रहा है। फिर भी हमारे नेत्र निस्तब्धता की ओर झपकी ले रहे हैं। स्वतन्त्रता का नवयुग आ गया—कर्त्तव्य का क्षेत्र आपके सम्मुख कोसों विस्तृत पड़ा है। कर्म-भूमि में कर्त्तव्य का बीज बो दो और साहसी, वीर तथा प्रतापी योद्धा बन कर त्यागमूर्त्ति पं० जवाहरलाल तथा महात्मा गाँधी का गुरु-मन्त्र देश के कोने-कोने में पहुँचा दो, जिससे मृतप्राय मनुष्य भी उसकी टङ्कार से सजग हो जावें, मरे हुए हृदय भी उसकी झङ्कार से अपने देश पर, जिसके लिए हमारा सर्वस्व निछावर है, एक-चित्त होकर मर-मिटने को कटिबद्ध हो जावें !

हमारी पवित्र भारतभूमि उन्हीं आर्यों की है, जिनसे प्रत्येक ज्ञात और अज्ञात जाति ने शिक्षा ग्रहण की थी, तथा जिसकी धर्म-ध्वजा और नीति-परायणता का लोहा सब विदेशी जातियों को स्वीकार करना पड़ा था। क्या यह लज्जा की बात नहीं, कि वही वसुन्धरा और स्वर्ग-गौरव, देश अधोगति की ओर नहीं, वरन विनाश को शनैः-शनैः प्राप्त हो रहा है? इसका कारण परस्पर द्वेष, प्रतिस्पर्धा, मतमतान्तर और हमारा आडम्बर है। आत्म-बल और विश्व-प्रेम की न्यूनता, एकता का अभाव, देश के प्रति सहानुभूति का न होना तथा स्वार्थ-भावावृत रहना ही देश के गौरव के क्षय होने का कारण है !!

जिस आर्यावर्त में, जिसे आज हम 'हिन्दुस्तान' कहते हैं, ऐसी-ऐसी ऐतिहासिक घटनाएँ हुई कि जिनके स्मरण करने से हृदय स्वाभिमान से फूल उठता है, उसी केन्द्र में हमारी बहिनों और माताओं का अपमान होता है! महाभारत के भीषण संग्राम का इतिहास हम भली-भाँति जानते हैं। एक देवी द्रौपदी के अपमान का बदला लेने के लिए, जिस देश में महाभारत जैसा भीषण संग्राम हो सकता है, वही अभागा भारतवर्ष आज एक सीता और द्रौपदी का अपमान नहीं, वरन कितनी ही ऐसी देवियों के अपमान से दग्ध हो रहा है! क्या आप भूल गए कि भारतवर्ष सभ्यता एवं मनुष्यता का केन्द्र था। आर्यों ने यूनान, मिश्र को तत्वज्ञान और विज्ञान की शिक्षा दी थी; रोमन लोगों को नीति और क़ानून, तथा सारे संसार को धर्म का मार्ग प्रदर्शित किया था। उन्होंने धर्म, सत्य और ज्ञान को एशिया, अफ़्रिका और अमेरिका तक फैलाया था। उनका आत्मिक तेज, उनका सदाचारयुक्त जीवन, उनकी शारीरिक शक्ति और पवित्रता लुप्त हो गई। सांसारिक अभ्युदय के अन्तिम शिखर तक पहुँचने के पश्चात उसी आर्य-जाति की अवनति होने लगी। उसने संसार में आत्म-महत्व को ही नहीं खोया, अपितु साथ ही साथ स्वतन्त्रता को भी विदा कर दिया। वही आर्य जाति आज विदेशियों का आहार बनी हुई है, जो सभ्यता, शिष्टता और चरित्र में उनसे कहीं नीचे थे !!

जो भारत स्वर्ग-भारत के नाम से पुकारा जाता था, आज दुःखी और कङ्गाल भारत कहा जाता है! उसकी प्रजा अयोग्य, दीन-हीन और पराश्रित प्रजा के नाम से पुकारी जाने लगी है !! भारतवासियों के पास आज क्या है? वे अपनी उत्कृष्ट भाषा और गौरवपूर्ण साहित्य से अनभिज्ञ हैं! उनके पास न अपना कला-कौशल है और न विद्या है एवं न अपनी सत्यता, श्रेष्ठता और सभ्यता ही है। लेकिन वाह्य फ़ैशन ने उनको पूर्णतया जकड़ लिया है। विदेशी माया की लगन उनके दिलों में घुस गई है और उसी को वे अपना लक्ष्य भी मान बैठे हैं! देश की स्वतन्त्रता को बेच कर विदेशियों की प्रशंसा करना और उनकी कृति का अनुसरण करना वर्जनीय है!

> अमिट है दुनिया में नाम उसका,
> जिया है जो देश-सेवा करके।

हमसे बढ़ कर कोई ग़ुलाम नहीं

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

बज़्मे[1] इशरत में धूम-धाम नहीं;
अब वह अगली सी सुबहो शाम नहीं!
हम हैं जैसे ग़ुलाम दुनिया में;
इस तरह कोई भी ग़ुलाम नहीं!
उम्र इसी इन्तेज़ार में गुज़री;
फिर भी अपना "गज़ट" में नाम नहीं!
हैं गिरफ़्तार हिन्दुओ मुसलिम;
कौन तेरा असीरे दाम नहीं!
गो हैं बदतर ग़ुलाम से लेकिन;
फिर भी कहते हैं हम ग़ुलाम नहीं!
ख़ुम[2] मिले अहले बज़्म को साक़ी;
मेरे हिस्से में एक जाम[3] नहीं!
कट गई ज़िन्दगी ग़ुलामी में;
हम से बढ़ कर कोई ग़ुलाम नहीं!
शायरी के सिवा हमें "बिस्मिल";
और दुनिया में कोई काम नहीं!

* * *

१—सभा, २—मटका, ३—प्याला

> रहेगा दुनिया में हर समय वह,
> मरेगा जो देश-सेवा करके॥

हम भारत-जननी का आर्तनाद बहुत दिनों से सुन रहे हैं। उसके शरीर का वसन भी विदेशी है। उसके भाल का तिलक इतना तेज-रहित हो गया है कि उसके गौरव-सौभाग्य का चिन्ह लुप्त-सा हो गया है। दुष्ट कौरव दुःशासन चीर-हरण करने को उद्यत हुआ है। ऐसी दशा को देख कर भी पाषाण-हृदय से आह एवं वेदना का श्वास नहीं निकलता! आप साम्य और समय की आराधना में क्यों निमग्न हैं? क्या इससे भी कोई और दर्दनाक और भीषण दशा हो सकती है? असमर्थता का प्रश्न अपने सामने क्यों रखते हैं? स्वतन्त्रता के युग में रहते हुए, परतन्त्रता का कीर्तन करना क्या हास्यास्पद नहीं है? सच्चा बलिदान अपने को देश की वेदी पर भेंट चढ़ाना ही है। स्वार्थ के नैवेद्य का अनुपम भोग हार्दिक और विशुद्ध हृदय के मन्दिर में ले जाना है; इच्छा और भावना के दीपक से देश की आरती उतारना है; जिससे देश में स्वतन्त्रता की ज्योति जग उठे! स्वार्थ-त्याग से देश की शक्ति को चमका कर कुन्दन की भाँति देदीप्यमान बना देना ही हमारा ध्येय होना चाहिए।

स्वार्थ-त्याग के असीम प्रेम से पतङ्ग दीपक पर स्वप्राण विसर्जन कर देता है; प्रेमो-भक्त-भ्रमर कण्टकों की मार सहन कर पुष्प को स्वतन्त्रता के सन्देश के गीत गाकर सुनाता है; कस्तूर मृग, मृगमद के लिए सुध भूल कर मारा-मारा उपवनों में भटकता फिरता है। एक ओर तो अज्ञान जीव-जन्तुओं के ऐसे आदर्श उदाहरण और दूसरी ओर सज्ञान मनुष्यों की स्वार्थ-चर्चा! क्या यह आश्चर्यजनक तथा हृदय दग्ध करने वाली बात नहीं है?

हे देश के वीरो! स्वतन्त्रता के पुजारी बन कर बलिदान के उपासक बनो। भक्ति के लिए भावना और प्रेम के मन्दिर के कपाट खोल दो और उसमें स्वनेत्रों के पाँवड़े बिछा कर स्वतन्त्रता देवी की आराधना करो, उसी में जीवन-साफल्य की नूतन झलक भासित होगी !!

> निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
> "हम भी कुछ हैं" यह ध्यान रहे।
> सब जाय अभी, पर मान रहे,
> मरणोत्तर गुञ्जित गान रहे॥
> कुछ हो, न तजो निज साधन को,
> नर हो, न निराश करो मन को।
>
> —मैथिलीशरण गुप्त

जब तक हम स्वतन्त्रता के महत्व को हृदयङ्गम नहीं कर लेंगे, तब तक हमारी और हमारे देश की अवस्था इसी प्रकार भयावनी बने रहने की सम्भावना है। स्वतन्त्र होना ही हमारा लक्ष्य है। अपनी बिलखती हुई माता को, जो कि परतन्त्रता की बेड़ी और हथकड़ियों से जकड़ी हुई, हमसे बहुत दूर सात दीवालों से घिरे हुए क़िले में बन्दी पड़ी है और अकथनीय कष्टों को भोग रही है, पुनः स्वतन्त्र करना ही हमारा दृढ़ सङ्कल्प है !! देव-भूमि भारत का मस्तक संसार में ऊँचा कर देना ही हमारा उद्देश्य है !!!

* * *

[हिज़ होलीनेस वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

आख़िरश सखी नौकरशाही ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू को अपने दामे-उलफ़त में दोबारा फँसा ही लिया। किसी ने सच कहा है कि—"जब कोई दिल की कशिश का असर दिखाता है, वह अपने यार को पहलू में खींच लाता है।"

*   *   *

सखी की वह मेहमाँनवाज़ी, वह एकानगी के मज़े, मातृभूमि की पवित्र धूल मिली हुई तन्दूर की रोटियों का गङ्गाजमुनी स्वाद, पण्डित जी की चटोर-जिह्वा भला कैसे भूल सकती है। निकलते ही हज़रत ने नैनी जेल के पुरलुत्फ़ नज़ारे की ओर सतीक्ष्ण नेत्रों से ताकना आरम्भ कर दिया। निकलते ही वह तड़प और बेचैनी दिखाई कि अल्लाह-अल्लाह !

*   *   *

ऐसे पूर्ण प्रेमिक को—अपने हुस्नोजमाल के परवाने को यों आहो-फ़रियाद के मौक़े देकर क्या कुलीना सखी अपने पवित्र कुल में दाग़ लगाती? उन्होंने भी एक साथ ही पण्डित जी पर तीन-तीन फन्दे फेंके। माशा अल्लाह! ऐसे अचूक निशाने लगाए कि न तड़पने की ताब रही, न फ़रियाद की !

*   *   *

सखी का यह अलौकिक प्रेम-प्रदर्शन देख कर, क़सम मौला की, हिज़ होलीनेस की तबीयत फड़क उठी है। अब अट्ठाइस महीने तक तो निश्चिन्ततापूर्वक ख़ानेदारी के मज़े मिलेंगे। क्या मजाल जो कोई सखी के सौभाग्य-सिन्दूर को हाथ लगा सके। मालूम नहीं, दईमारी ने इसी उम्र में इतनी अक़्ल कहाँ से पा लिया है !

*   *   *

इधर उदार-हृदय विचारक महोदय ने दो तरह की सज़ाओं के मज़े लूटने का इन्तज़ाम एक साथ ही करके, पण्डित जी को लज़्ज़तदार खिचड़ी का स्वाद चखाया है। ऊपर से पाँच सौ रुपए जुर्माने की सज़ा देकर मानो खिचड़ी के साथ चटपटी चटनी की भी व्यवस्था कर दी गई है। इससे मालूम होता है कि न्यायाधीश महोदय केवल न्याय-कार्य में ही निपुण नहीं, वरन पाकशास्त्र के भी पण्डित हैं।

*   *   *

मगर हिज़ होलीनेस की तो राय है, कि सखी इस मौक़े पर कुछ चूक गई हैं। उन्हें चाहिए था कि महात्मा गाँधी की तरह पण्डित जवाहरलाल जी को भी अनादि काल तक के लिए अपने महमाँसरा में टिका लेतीं। इससे सौभाग्य-सिन्दूर भी बहुत दिनों के लिए अचल हो जाता और निकलते ही पण्डित जी को पुनः गिरफ़्तार करने की ज़हमत से भी परित्राण मिलता।

*   *   *

श्रीयुत जे० एम० सेन गुप्त महोदय का कहना है कि सखी नौकरशाही के रामराज्य में, भले आदमियों के लिए एक मात्र जेलख़ाना ही उचित स्थान है। इससे मालूम होता है, कि या तो जेलख़ानों के पुण्य-प्रताप का उदय हुआ है, या आजकल के भले आदमी ही 'माले मुफ़्त और दिले बेरहम' के अनुयायी बन गए हैं।

*   *   *

वास्तव में सखी के जेलख़ानों के आराम ने बिहिश्त के आराम को भी मात कर दिया है। खाना तो वहाँ ऐसा लज़्ज़तदार पकता है, कि वैसा शायद अल्लाह मियाँ के बावर्चीख़ाने में भी न पकता होगा। फलतः उसके माधुर्य की कथा सुन कर 'भले आदमियों' के मुँह में पानी भर आया हो तो आश्चर्य ही क्या है? देहाती कहावत है कि 'चटनी जीभ और तकनी आँख ईश्वर के बस की भी नहीं।'

*   *   *

सुनते हैं, इङ्गलैण्ड के 'कौंपर कॉन्फ्रेन्स' के स्वयंभू प्रतिनिधियों के लिए लेह्य, पेय, चौव्य, चूस्य की समुचित व्यवस्था नहीं है। इसके सिवा 'हवाई प्रदर्शन' में भी उन्हें खड़ा ही रहना पड़ा है, इसलिए बेचारे कुछ खिन्न हैं। मगर 'डोमिनियन स्टेटस' लेने गए हैं तो थोड़ी तपस्या तो करनी ही पड़ेगी, लेहाज़ा हवाई प्रदर्शन में बैठने की जगह न मिली तो अच्छा ही हुआ।

*   *   *

इसके साथ ही परम सन्तोष की बात यह सुनने में आई है कि एक मोटर के कारख़ाने वाले ने आप लोगों की बड़ी ख़ातिर की है। सारा कारख़ाना दिखा दिया है। फलतः 'हवाई प्रदर्शन' वाले दिन के अपमान के आँसू धुल गए हैं और श्रीमान ताम्बे जी ने इस अवसर से लाभ उठाते हुए वहीं एक लेक्चर भी झाड़ दिया है। बेचारे भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य दिलाने के लिए इतनी घनघोर चेष्टा कर रहे हैं, तिस पर लोगों का कहना है कि वे हमारे प्रतिनिधि नहीं हैं। राम-राम, इस एहसान फ़रामोशी की भी कोई हद है?

*   *   *

बिलासपुर के एक गुस्ताख़ काले ने कुर्सी पर बैठे-बैठे ही एक गोरे सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब के प्रश्न का उत्तर दे डाला, इसलिए साहब बहादुर ने कृपा करके उसकी थोड़ी सी गोशमाली कर दी। अच्छा ही किया। उचित तो था कि सबूट चरणों के प्रहार से कमबख़्त काले की तिल्ली फोड़ दी जाती, ताकि फिर ऐसी गुस्ताख़ी न कर सकता। परन्तु साहब कोई सहृदय-वंशावतंस मालूम होते हैं। इसी से गोरा चमड़ा पाने पर भी इस मौक़े से चूक गए !

*   *   *

परन्तु असन्तोष की कोई बात नहीं है, क्योंकि सुनने में आया है कि काले से इस गुस्ताख़ी के लिए जवाब तलब किया गया है। ख़ैर, साहब अगर तिल्ली न फोड़ सके, तो उस पर कुछ जुर्माना ही हो जाना चाहिए। नहीं तो सारा 'गोरा श्रुति मार्ग' भ्रष्ट हो जाएगा।

*   *   *

लन्दन से ख़बर आई है कि 'कौंपर कॉन्फ्रेन्स' के स्वयंभू प्रतिनिधियों ने दाढ़ी-चोटी विवाद का निपटारा कर डाला! लेहाज़ा डोमिनियन स्टेटस की पहली मंज़िल तो तय हो गई। बात रही थोड़ी 'बस ज़ीन-लगाम घोड़ी।' अब क्या मजाल जो स्टेट सिक्रेटरी साहब डोमिनियन स्टेटस के इक़रारी पट्टे पर अँगूठे का निशान न बना दें।

*   *   *

किसी ने क्या ख़ूब कहा है, 'एकां लज्जा परित्यज्य त्रैलोक्य विजयी भवेत्।' बतलाइए, अगर ये 'कौंपर कॉन्फ्रेन्सी' प्रतिनिधि व्यर्थ की हयादारी के फेर में पड़े रह जाते तो न खड़े-खड़े हवाई प्रदर्शन के ही मज़े पाते, न लन्दन के मोटर का कारख़ाना ही देख सकते और न डोमिनियन स्टेटस मिलने की सम्भावना ही इस तरह खोपड़ी पर मँडराती नज़र आती। इसलिए हे माया-जाल-जड़ित मानव! अगर संसार में सफल जीवन और मरने पर परम गति लाभ करना चाहते हो, तो 'कौंपर कॉन्फ्रेन्स' के काले प्रतिनिधियों की भाँति सब से पहले निगोड़ी लज्जा को धता बताओ।

*   *   *

प्रेस ऑर्डिनेन्स की आयु पूर्ण हो जाने के कारण सरकार को ज़मानत की रक़में लौटा देनी पड़ रही हैं। घर में आया हुआ माल निकालते हुए कुछ कष्ट होना स्वाभाविक है। ब्याज भी घर से देना पड़ा होगा। वह भी अगर घर में रह जाता तो कहते कि चलो "भागे भूत की लँगोटी ही भली।" लेहाज़ा ऑर्डिनेन्स जारी करके लाट साहब ने 'गुनाह बेलज़्ज़त' ही हासिल किया। आशा है भविष्य में सावधानी से काम लेंगे। क्योंकि ठाले का ज़माना है, कोई नया काम ज़रा सोच-समझ कर करना चाहिए।

*   *   *

कहावत है कि "खिलाना न पिलाना, माँग टीकने आना।" यही दशा इन अख़बार वालों की है। ये ऐंठे ख़ाँ दिन-रात सखी नौकरशाही के रामराज्य में गुलछर्रे उड़ाते हैं। न मालगुज़ारी देते हैं और न कभी बेगार करते, उलटे सखी के नाज़ो-अन्दाज़ का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं। लेहाज़ा अपने राम अगर इस देश के राजा होते, तो प्रेस ऑर्डिनेन्स द्वारा प्राप्त रक़में बिना डकार लिए ही हज़म कर गए होते।

*   *   *

मज़ा तो है, आजकल बारडोली में। सखी नौकरशाही की असीम अनुकम्पा से वहाँ के किसान सशरीर स्वर्ग जाने के लिए 'पासपोर्ट' लिए बैठे हैं। गाँवों का सन्नाटा देख कर प्राचीन काल के तपोवनों की शान्ति याद आ रही है। भाँग-बूटी की व्यवस्था होती, तो हिज़ होलीनेस वहीं बैठ कर नौकरशाही का गुणानुवाद किया करते। बड़ा लुत्फ़ रहता, एक ओर सरकारी अहलकार, दूसरी ओर गीदड़ आदि वनवासी और बीच में प्रातः-स्मरणीय हिज़ होलीनेस !

*   *   *

बम्बई की पुलिस ने गत २१ जून से लेकर गत २६ अक्टूबर तक केवल पाँच बार मूँडमेध महायज्ञ किया है। बम्बई के चिकित्सकों की सभा ने हिसाब लगा कर बताया है कि अन्तिम यज्ञ में पुलिस ने प्रति सैकड़ा ६२ मूँडों का कचूमर निकाला है। यद्यपि यह हिसाब सन्तोषजनक है, तथापि यह मानना ही पड़ेगा कि दशाश्वमेध का महापुण्य प्राप्त होने में अभी काफ़ी विलम्ब है। इसलिए बम्बई पुलिस के होताओं को चाहिए कि ज़रा मुस्तैदी से काम लें। वरना किसी दूसरे स्थान की पुलिस ने बाज़ी मार ली तो बस, कौंपर चाटते ही रह जाना पड़ेगा !

*   *   *

व्यङ्ग-चित्रावली

यह चित्रावली भारतीय समाज में प्रचलित वर्तमान कुरीतियों का जनाजा है। इसके प्रत्येक चित्र दिल पर चोट करने वाले हैं। चित्रों को देखते ही पश्चात्ताप एवं वेदना से हृदय तड़पने लगेगा; मनुष्यता का याद आने लगेगी; परम्परा से चली आई रूढ़ियों, पाखण्डों और अन्ध-विश्वासों को देख कर हृदय में क्रान्ति के विचार प्रबल हो उठेंगे; घण्टों तक विचार-सागर में आप डूब जायँगे। पछता-पछता कर आप सामाजिक सुधार करने को बाध्य होंगे!

प्रत्येक चित्रों के नीचे बहुत ही सुन्दर एवं मनोहर पद्यमय पंक्तियों में उनका भाव तथा परिचय अङ्कित किया गया है। इसके प्रकाशित होते ही समाज में हलचल मच गई। प्रशंसा-पत्रों एवं सम्मतियों का ढेर लग गया। अधिक प्रशंसा न कर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि ऐसी चित्रावली आज तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुई। शीघ्रता कीजिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

इकरङ्गे, दुरङ्गे, और तिरङ्गे चित्रों की संख्या लगभग २०० है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, फिर भी मूल्य लागत मात्र केवल ४); स्थायी तथा 'चाँद' के ग्राहकों से ३); अब अधिक सोच-विचार न करके आज ही आँख मींच कर ऑर्डर दे डालिए!!

[लेखक—श्री० रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर]

यदि आप सचमुच ही स्वाधीनता के उपासक हैं,

यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को पराधीनता के बन्धनों से मुक्त कर स्वतन्त्र बनाना चाहते हैं तो "दैवी-सम्पद्" को अपनाइए।

यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को सुख-समृद्धि-सम्पन्न करना चाहते हैं तो "दैवी सम्पद्" का अध्ययन करिए।

यदि धार्मिक विचारों के विषय में आपका मन संशयात्मक हो तो "दैवी सम्पद्" को विचारपूर्वक पढ़िए। आपका अवश्य ही समाधान होगा।

यदि आपके जीवन के किसी भी व्यवहार के सम्बन्ध में कोई उलझी हुई ग्रन्थि हो तो उसको सुलझाने के लिए "दैवी सम्पद्" का सहारा लीजिए! आप उसे अवश्य ही सुलझा सकेंगे।

अपने विषय की यह अद्वितीय पुस्तक है। लगभग ३०० पृष्ठ की फ़ेदरवेट काग़ज़ पर छपी हुई सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २।।) रु०।

सार्वजनिक संस्थाओं को, केवल डाक-व्यय के ।-) (पाँच आने) ग्रन्थकर्ता के पास भेजने पर यह पुस्तक मुफ़्त मिलेगी।

ग्रन्थकर्ता का पता—श्री० सेठ रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर (राजपूताना)

प्रकाशक का पता—व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

सन्तोषी धुनिया

[श्री० परशुराम जी मेहरोत्रा, एम० ए०]

डाकिए और धुनिए को देख कर मेरे मन में एक अलौकिक आनन्द की लहर उठती है। चमार जिस प्रकार राहगीरों के पैरों की तरफ़ और नाई चेहरे को देखने का अभ्यस्त होता है, उसी प्रकार देहाती धुनिया अपने नेत्र फटी रज़ाइयों और पुराने गद्दों की ओर लगाए रहता है और ऐसी सड़कों से होकर गुज़रता है, जिनमें उसे काम मिलने की सम्भावना हो। शहरी धुनिया अपनी दूकान छोड़ कर नहीं जाता। वह अपनी ही दुकान पर बैठा-बैठा 'तुक-तुक-ताँय-ताँय' किया करता है और रुई के धुनवाने वाले उसके यहाँ रुई और लिहाफ़-तकिए आदि ले जाते हैं। जाड़ों के दिनों में धुनिए के मिज़ाज का भला क्या ठिकाना!

* * *

परन्तु मोची, नाई, लुहार, मेहतर और किसान की की तरह धुनिया भी अपनी बाँकी अदा रखता है। और परिश्रम करके धर्म की कौड़ी खाता है। सहानुभूति और हृदय वाले पुरुष को यदि इन श्रमजीवियों के आने-जाने, उठने-बैठने, रहन-सहन और लेन-देन के संसार की तथा उनकी दिनचर्या का कुछ भी पता हो तो उनके स्वावलम्बन को, उनके सन्तोष को, और उनकी मनोवृत्ति को वह जिज्ञासु आदर की दृष्टि से देखेगा और ज्यों-ज्यों वह उनके स्वाभिमान का परिचय पावेगा, त्यों-त्यों वह रिस्टवाच और बेंतधारी बाबुओं के आत्माभिमानहीन जीवन से इस लट्टू और धुनकीधारी बेहने को अधिक उच्च स्थान देता जायगा और अन्त में श्रम के पद की उच्चता का अनुभव करेगा।

निस्सन्देह, धुनिया अनेक सद्गुणों की खान है और चर्खे, तकली का सब से अधिक मूल्यवान साथी है, वह उसका आधा अङ्ग है!

बम्बई इत्यादि बहुत बड़े नगरों में धुनिया ख़ास-ख़ास अड्डों पर खड़ा हुआ अपनी ताँत अङ्गुली के सिरे से बजाता रहता है। परन्तु संयुक्त प्रान्त के धुनिए बिना आडम्बर के अपना काम किसी घर में शुरू कर देते हैं और उसका परिश्रम ही उसके लिए अगली रोज़ी का विज्ञापन है! वह अपने सीधे-सादे वेश से सुबह कलेवा करके घर से निकल पड़ता है। साथ में अपनी जीवन-सङ्गिनी काली-काली बड़ी सी धुनकी रखता है, जिसमें तरह-तरह के फुँदने, टुकड़े और चिथड़े लगे रहते हैं और जिसमें सितार की तरह दो-तीन महीन खूँटियों से उसकी प्राण से अधिक प्यारी ताँत कसी रहती है। उस धुनकी के साथ एक या दो बाँस की खपाच की धनुहियाँ, दो फ़ुट लम्बी एक मज़बूत लकड़ी, एक काला-काला डमरू-जैसा भारी लट्टू और नाक में दबाने या पसीना पोंछने को एक फटा सा कपड़ा! बस फ़क़त इतने ही शृङ्गार से सुसज्जित हो, बेचारा अर्द्ध-नग्न बेहना कभी अकेला, कभी एक हमपेशे को साथ में लेकर दिखाई पड़ता है। अधिक वस्त्रों की उसे न ज़रूरत है और न उसके पास उसका साधन ही है! उसका परिश्रम उसके शरीर में स्फूर्ति ला देता है और वह सब काम अपने इसी मुख़्तसर-से सामान की मदद से निकाल लेता है। अगर किसी भले गृहस्थ ने गुड़ दे दिया या रोटी दे दी तो उसी अपने वफ़ादार चिथड़े पर रख कर खा लेता है और अपना काम पुनः प्रारम्भ कर देता है। डॉक्टरों की तरह वह अगर बात-बात पर हाथ धोया करे, तो उसका दिवाला निकल जाय। हाँ, उसके पास अगर कुछ और रहता है, तो रुई के कुछ रेशमी रेशे, जो कल की धुनाई से उसकी घनी दाढ़ी में चिपटे रह गए हैं।

उसके घर तक आप चले जाइए; आप वहाँ भी उसकी टूटी-फूटी खपरैल में एक तराज़ू, ज़ङ्ग लगे कुछ बाँट, एक अलूमीनियम की थाली, मिट्टी की रकेबी, एक पुराना मिट्टी का घड़ा, एक चटाई, और कुछ ताँत के टूटे हुए टुकड़े एक टीन के डब्बे में हिफ़ाज़त से रक्खे हुए मिलेंगे! उसके यहाँ न आप फ़र्नीचर पावेंगे, न ट्रङ्क, न तख़्त और न कपड़े टाँगने को पाँलिशदार खूँटी! उसका ओढ़ना-बिछौना और तकिया उसके पास आती-जाती रहती चीज़ें हैं और उसका भोजन, चना या ज्वार की मोटी रोटियाँ तथा यदा-कदा गुड़! उसके कमरे में न झरोखे होते हैं, न रोशनदान और न पौधों से सुसज्जित गमले! न बिजली के पङ्खे या चाय पीने का सेट! उसकी कमाई की एक हद होती है और उसमें असीम सन्तोष होता है। उसे हजामत बनवाने का भी अवकाश नहीं मिलता। मित्रों को कार्ड डालने या घर के बाहर मदारी के तमाशे को देखने का उसे अवकाश कहाँ? और पान या फल खाने को उसके पास पैसा कहाँ?

वह जानता है कि थोड़ी सी भी ज़िम्मेदारी ऊपर ले लेने का क्या अर्थ होता है। क्योंकि जब वह मुट्ठी भर—छटाँक भर—रुई धुनने की बात सोचता है, तब वह उसके आद्योपान्त मार्ग को विचार में ले आता है। उसमें क्रमशः चलने की आदत पड़ जाती है, क्योंकि अगर वह अपनी ताँत सारी रुई में नचाता फिरे तो सब रुई बिगड़ जावे और अन्त में रुई में "कनी" पड़ जावे। उसमें जोश का बाहुल्य नहीं होता; वह गम्भीर होता है; ख़तरे से सदा आगाह रहता है, क्योंकि प्रति दिन उसे ताँत के टूटने की आशङ्का रहती है, जिसे कि वह तुरन्त जोड़ने बैठ जाता है!

उसका काम रसायन और धैर्य का है, उतावलेपन का नहीं। वह अपना औज़ार देखे बिना काम शुरू नहीं करता और उसमें उन्हें वायु-मण्डल के अनुकूल बना लेने की आदत पड़ जाती है। क्योंकि उससे काम लेने वालों के घरों की बनावट भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है और उसे अपनी धुनकी को प्रत्येक स्थान पर टाँग लेने की क्षमता होती है। रुई को न तो वह ऊपर-ऊपर फुला कर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेता है, और न अत्यधिक धुन कर ही चैन लेता है!

रुई उसकी ताँत के ऐसे वश में रहती है, जैसे मदारी के डमरू के वश में उसका बन्दर या भालू। धुनिए की ताँत सात काम करती है—रुई की गाँठें खोलती, रेशे फाड़ती, हलकी रुई चुनती, उठा कर ले जाती, एक धरातल में ढेर को विभाजित करती, मट्टी-गर्दा झाड़ती और रुई के पर्तों को खोलती है।

वह कभी बड़े काम को देख कर भयभीत नहीं होता और न १० सेर रुई को सामने पाकर वह 'नर्वस' ही होता है। वह अपने पौरुष पर भरोसा रखता है और वह भली-भाँति जानता है कि ज़रा सी भी ग़फ़लत करने से उसका प्रतिफल अन्त तक सताता रहेगा और कातने वाले के मार्ग में भारी अड़चनें डालेगा। गणित

माँ! रोना मत

[श्री० चतुरसेन जी शास्त्री]

केवल दो दिन तुम्हें—तप के तेज में धधकता हुआ मुख दिखा कर, वह तुम्हारा नाज़ों से पाला हुआ जवाहर—फिर उन भीमकाय मनहूस दीवारों की ओट में चला गया!!

वह उस जीवित क़ब्र में सो नहीं सकता। वह छटपटाता है—एक वेदना है, जो उसकी नस-नस में रमी है—एक आग है, जो उसके कलेजे में धाँय-धाँय जल रही है—एक हाय है, जो उसके रोम-रोम से निकल रही है।

उसके पूज्य पिता—जो आधी शताब्दी तक क़ानून के प्रकाण्ड विद्वान गिने गए थे, दीवार की उड़ती हुई छाया में खड़े होकर, उन भयानक दीवारों में उस रक्त-वर्ण सूर्य को अस्त होते देख आए हैं!

इसे देख कर, मेरी अच्छी माँ, तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ! तुम रोना मत।

* * *

इन्हें देख कर—मेरी अच्छी माँ! तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ—तुम रोना मत! तुम इस युद्ध-प्रसङ्ग पर, इस अनी की चोट पर, आँसू बहा कर हमें कायर न बना देना, कहीं हमारी आँखों में आँसू न आ जाय। हज़ारों वर्ष में आज हमारी आँखों में यह आग जली है—जो तुम्हारे आँसू देख कर वह बुझ गई, तो सर्वनाश हो जायगा! तुम भीतर जाकर बैठो, हमें जूझ लेने दो—यह हमारी आन की बाज़ी है—जिस आन पर हमने सदा मान और आन की बलि दी है—उसी आन की शान पर आज तुम्हारे लाल और देव जूझ रहे हैं—तुम इस दृश्य को मत देखो। इसे मैं देखूँगा—सारे भारत के वीर-नर देखेंगे। और फिर समस्त संसार देखेगा!

तुमने इसे माँ! विलायत भेजा था? सभ्यता और शिक्षा से छक आने के लिए। पर वह मात्रा से अधिक छक गया—स्वाद कभी संयम नहीं रहने देता—उठते ही दिनों में इसे उस सभ्यता और शिक्षा का अजीर्ण हो गया। तुमने रुपया उसके पैरों में बिछाया, पर वह कठोरता त्याग कर फूल न बन सका। माँ! यह तुम्हारी छोटी भूलें थीं—पर सब से बड़ी भूल एक और थी, किस लिए तुमने आर्य रमणी होकर उसे आर्य-शिक्षा और आर्य-नीति से दूर करना चाहा था? किस लिए भूखे भाइयों में उसे श्रीमन्ताई का ताज पहनाया था? किस लिए ग़ुलाम देश में मरने वाले को स्वाधीन देशों की हवा खाने दी थी? यह सब किया था—तो यह काँटा क्यों रहने दिया कि वह हिन्दू है। और हिन्दुस्तानी है। इसी ने ग़ज़ब किया? उसी हिन्दू और हिन्दुस्तानपने के नाम पर आज वह योद्धा बना है? उसी हिन्दुत्व और हिन्दुस्तानीपने के नाम पर वह जूझ रहा है। आर्य माँ का दूध पीकर यह कब सम्भव था कि जब करोड़ों आत्माएँ अपमान से अवनत पड़ी थीं—वह यौवन के रस-रहस्य में मस्त रहता? लाखों भाइयों को भूखा और नङ्गा तथा

में भी अगर धन के चिन्ह के स्थान पर ऋण या सात के स्थान पर पाँच लिख जाय, तो अन्त तक उत्तर ग़लत आवेगा। जिस प्रकार सुन्दर लिपि अच्छे निब पर मुख्यतया निर्भर है और जिस प्रकार ब्रुश की बारीकी पर बढ़िया चित्रकारी या महीन छेनी पर शिल्पकारी, उसी प्रकार अच्छी पोनियों पर, अच्छी धुनी रुई पर कातने वाले के परिश्रम की सफलता आधार रखती है।

*

अनाथ देख कर—पैरिस के धुले कपड़े पहनता और तुम्हारे षटरस व्यञ्जन करता ? यह उसकी ग़ैरत का, उसकी मर्यादा का, उसकी कुलीनता का प्रश्न था, कि वह श्रीमन्ताई के मुकुट पर लात मार कर, भोग-विलासों से घृणा करके—उसी आर्यत्व के नाम पर सच्चे योद्धा की तरह मोरचे का अग्र भाग लेकर लाखों विमूढ़ आत्माओं को मर्द बनने का मार्ग दिखावे !

जिस सभ्यता पर तुमने माँ होकर उसे ढकेला था, उसीने उसे असभ्य पशुओं की तरह बाँध रक्खा है। इस पर चकित मत होना, वह वास्तव में पराई सभ्यता थी, वह नहीं चाहती कि कोई उसका उपासक हिन्दुत्व या हिन्दुस्तानीपने को प्यार करे—क्योंकि ये दोनों वस्तु उसकी वेध लक्ष्य हैं—इन्हीं दोनों के शिकार को वे यहाँ आई हैं।

यह मत समझना तुम्हारा लाल विपत्ति में है—यह विपत्ति नहीं है, कष्ट है—विपत्तियाँ अभागों पर पड़ती हैं—परन्तु कष्ट प्रत्येक कर्मठ पुरुष के मार्ग में आते हैं—जो कर्त्तव्य के गम्भीर सागर में मान का मोती पाने की हौस में कष्ट की पर्वताकार तरङ्गों पर पदाघात करते हुए, ऊँची छाती करके समुद्र के घोर गर्जन की ताल पर समुद्र की गम्भीर छाती को चीर कर अग्रसर होते हैं—वीर-नर वही हैं—तुम्हारा लाल यदि ऐसा न होता तो तुम्हारे लिए लज्जा की बात थी !

"भविष्य"

[पं० रमाशङ्कर जी मिश्र, कविरत्न "श्रीपति"]

राजहंस के समान चतुर, विवेकी, धीर;
केसरी-सा जानता है शक्ति की उपासना !
रुद्र के समान, सच्ची क्रान्ति का पुजारी एक;
नित्य रत कर्म में, न लोभ की कुवासना !
ग्राह के समान ग्रस लेता जो कुरीतियों को,
साधक स्वतन्त्रता का, कोई जिसे त्रास ना !
दासता के नागपाश काटने को वैनतेय,
कैसा है "भविष्य" कोई जानता विकास ना !

माँ ! माँ ! तुम मुँह छिपा कर क्यों बैठ गई ? अरे ! तुम फिर रोने लगीं ? बस यही बुरा है। देखो—आत्मा में बल आ रहा है। जूझ मरने के हौसले मन में उठ रहे हैं, धरती पर से ऊपर उठा जा रहा हूँ। माँ ! तुम रोकर मेरे मन को मिट्टी मत करो। मैं बह जाऊँगा, मेरा अचल निश्चय बह जायगा—मैं सब सह सकता हूँ—माँ का रोना नहीं सह सकता।

क्या देवी की ज्वाला तुम्हारे नेत्रों में नहीं है ? इन आँसुओं को सुखा डालो, जला डालो, फूँक डालो, आग लगाओ—जल्दी, अभी। मुझे आँसू नहीं भाते। मुझे क्रोध आ गया है। इधर देखो—भरे हुए नेत्रों से नहीं, ज्वालामय नेत्रों से, जैसे जल भरे हुए काले बादलों के बीच ध्वंसिनी बिजली छिपी रहती है, उसी तरह तुम्हारी भृकुटी में सच्चे क्रोध की लौ होनी चाहिए ! उसी बिजली का एक प्रहार मेरे ऊपर करो - जैसे इन्द्र वज्र का प्रहार करता है उसी एक प्रहार में मेरे तन-मन की कायरता को जलाओ। हमारे मिथ्या सङ्कल्प-विकल्पों को जलाओ। हमारे द्वेष-पाप और हिंसा को जलाओ। माँ ! रोने में समय और आबरू को मत ख़राब करो।

बस फिर तुम घर में जाकर बैठो। जो होगा सो देख लेना—तुम्हारा लाल भी देख लेगा—तुम्हारे देश पुरुष भी देख लेंगे—समस्त आर्यावर्त और समस्त पृथ्वी की जातियाँ भी देख लेंगी। पर माँ ! तुम रोवो मत।

*

रेल में एक नौजवान अपने दौड़ने की शेख़ी हाँक रहा था। इतने में एक बुड्ढा मुसाफ़िर कुनमुना कर उठ बैठा और बोला—ऊँट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं आता, तब तक वह अपने बराबर किसी को नहीं समझता।

नौजवान—अरे बड़े मियाँ ! हाथ कङ्गन को आरसी क्या ? किसी को मेरे साथ दौड़ा कर न देख लो, तब तुम्हारी आँखें खुल जायँगी।

बूढ़ा—दूसरे को तुम्हारे साथ दौड़ने के लिए क्यों कहूँ ? अगर एक गज़ का फ़ासला दो, तो मैं ही दौड़ने को तैयार हूँ। तब देखूँ तुम कैसे मुझसे बढ़ जाते हो।

नौजवान—अच्छी रही ! कहाँ दौड़ोगे ?

बूढ़ा—सीढ़ी के डण्डों पर।

सब हँस पड़े और नौजवान चुप हो गया !!

* * *

पिता—मैं जब तुम्हारी उम्र का था, सिगरेट नहीं पीता था। मगर जब तुम हमारी उम्र को पहुँचोगे, तब भला यह बात अपने लड़कों से किस तरह कह सकते हो ?

लड़का—हाँ, इतनी सफ़ाई से तो नहीं कह सकता जितनी सफ़ाई से आप मुझसे कह रहे हैं। इस बात में आप बेशक मुझसे बढ़े-चढ़े हैं।

* * *

एक मुसाफ़िर वक़्त काटने के ख़्याल से दूसरे मुसाफ़िर से बात करने की कोशिश करने लगा।

पहला मुसाफ़िर—आपकी सूरत मुझे पहचानी हुई मालूम होती है। कहीं हमारा और आपका साथ ज़रूर हुआ है !

दूसरा मुसाफ़िर—हुआ होगा। मैं बरेली के जेलख़ाने में दस वर्ष तक रह कर आज ही छूटा हूँ।

बातचीत का सिलसिला एकदम बन्द हो गया !!

* * *

रेल में एक रङ्गीले महाशय स्त्री को छेड़ने की नियत से बोले—कहिए श्रीमती जी, आप कहाँ जायँगी ?

स्त्री कुछ न बोली !

महाशय—क्यों, आप बोलतीं क्यों नहीं ? क्या आपने मुझे नहीं पहचाना ?

स्त्री—(महाशय जी को नीचे से ऊपर तक देख कर) क्या आप ही तो नहीं, जो मुसाफ़िरख़ाने में मेरे बक्स के पास चक्कर लगा रहे थे, जो चोरी चला गया !

महाशय जी खिसक कर दूसरे डिब्बे में चले गए !

* * *

पहला—क्यों जी, आज तुम इतने सुस्त क्यों हो ?

दूसरा—क्या बताऊँ, मेरा सिर बहुत दुख रहा है।

पहला—एक बार मेरा भी सिर बहुत दुखने लगा था; मगर मैं तो चुटकी बजाते ही अच्छा हो गया ?

दूसरा—किस तरह ?

पहला—मेरी बीबी ने मेरे सिर को अपनी गोदी में लेकर मुझे चूम लिया। इससे मेरे कलेजे में ऐसी ठण्डक पहुँची कि दर्द बिलकुल जाता रहा।

दूसरा—हाँ, तब तो भाई ईश्वर के लिए जल्दी बताओ तुम्हारी बीबी इस वक़्त कहाँ पर है ? अब दर्द मुझसे नहीं सहा जाता !

* * *

एक छोटे लड़के ने एक दूकान से दियासलाई ख़रीदी और थोड़ी देर बाद आकर दूकानदार से कहने लगा—लीजिए अपनी दियासलाई ! अम्माँ कहती हैं यह नहीं जलती।

दूकानदार—"कैसे नहीं जलती ?" यह कह कर उसने एक दियासलाई अपनी जङ्घा पर खींच कर झट से जला दी।

लड़का दियासलाई की डिब्बी लेकर चला गया, मगर फिर तुरन्त आकर बोला—अम्माँ कहती हैं कि मुझे हर बार आकर आपकी जङ्घा पर दियासलाई जलाने की फ़ुरसत नहीं है !

* * *

एक पुजारी महाराज नाई से हजामत बनवा रहे थे। नाई भँगड़ालू था। हजामत बनाते-बनाते एक बार उसका हाथ बहक गया और पुजारी महाराज का गाल कट गया।

पुजारी—देखो जी, यह भङ्ग पीने का नतीजा है।

नाई—हाँ सरकार ! यह खाल को बहुत मुलायम कर देती है।

* * *

मेम साहब को अपने प्यारे कुत्ते टॉमी की बड़ी फ़िक्र रहती थी। एक दिन उसको सुस्त देख कर उन्होंने अपने ख़ानसामा से कहा—टॉमी को फ़ौरन दो मील तक टहला लाओ।

ख़ानसामा भला यह काम क्यों करने लगा ? यह तो भङ्गी का काम था; और हुक्म न मानने का अपराधी भी नहीं होना चाहता था, इसलिए बहुत सोच-विचार कर बोला—हुज़ूर, टॉमी मेरे पीछे-पीछे नहीं चलता !

मेम साहिबा—तब तुम उसके पीछे-पीछे जाओ !

* * *

साहब—मेरा कुत्ता सात दिन हुए खो गया।

मित्र—आप उसके लिए अख़बारों में विज्ञापन क्यों नहीं देते ?

साहब—क्या फ़ायदा ? कुत्ता पढ़ नहीं सकता।

* * *

पति महाशय बाहर फुलवारी में टहल रहे थे और उनकी पत्नी साहिबा कोठे की खिड़की से पति जी को भीतर बुलाने लगीं—अजी भीतर आइए ! जल-पान की सब सामग्री—मोहन-भोग, हलुआ-सोहन, इमरती, नानख़ताई, बादाम और पिस्ते की बर्फ़ी और मलाई की पूरियाँ बड़ी देर से तैयार कर रक्खी हैं।

पति—तुम मुझे फुसला रही हो ?

स्त्री—तुम्हें नहीं, मैं तो सिर्फ़ पड़ोसियों को फुसला रही हूँ !

* * *

डॉक्टर—ख़बरदार अपने पति को पीने के लिए गर्म पानी के सिवाय कुछ मत देना, वरना वह मर जाएँगे !

बीमार की स्त्री—मगर मुश्किल तो यह है कि उन्हें मैं गर्म पानी दूँगी तो वह मुझे मार डालेंगे !

* * *

घबड़ाया हुआ मुसाफ़िर—क़ुली ! क़ुली !! मेरा असबाब खो गया।

क़ुली—चलिए अच्छा हुआ ! आपको अब क़ुली की ज़रूरत नहीं रही।

* * *

"जागो-जागो, भाई मोहन !"

"मैं नहीं जाग सकता जी !"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैं सो नहीं रहा हूँ।"

* * *

पुनर्जीवन

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति का हिन्दी-अनुवाद है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपने आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है, और किस प्रकार अन्त में वह वेश्या-वृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूररों में सम्मिलित होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एक मात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित्त भी करना चाहिए—ये सब दृश्य एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। मूल्य ४) स्थायी ग्राहकों से ३॥)

कमला के पत्र

यह पुस्तक 'कमला' नामक एक शिक्षित मद्रासी महिला के द्वारा अपने पति के पास लिखे हुए पत्रों का हिन्दी-अनुवाद है। इन गम्भीर, विद्वत्तापूर्ण एवं अमूल्य पत्रों का मराठी, बँगला तथा कई अन्य भारतीय भाषाओं में बहुत पहले अनुवाद हो चुका है। पर आज तक हिन्दी-संसार को इन पत्रों के पढ़ने का सुअवसर नहीं मिला था।

इन पत्रों में कुछ को छोड़, प्रायः सभी पत्र सामाजिक प्रथाओं एवं साधारण घरेलू चर्चाओं से परिपूर्ण हैं। उन पर साधारण चर्चाओं में भी जिस मार्मिक ढङ्ग से रमणी-हृदय का अनन्त प्रणय, उसकी विश्व-व्यापी महानता, उसका उज्ज्वल पत्नि-भाव और प्रणय-पथ में उसकी अक्षय साधना की पुनीत प्रतिमा चित्रित की गई है, उसे पढ़ते ही आँखें भर जाती हैं और हृदय-वीणा के अत्यन्त कोमल तार एक अनियन्त्रित गति से बज उठते हैं। अनुवाद बहुत सुन्दर किया गया है। मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों के लिए २।) मात्र!

शैलकुमारी

यह उपन्यास अपनी मौलिकता, मनोरञ्जकता, शिक्षा, उत्तम लेखन-शैली तथा भाषा की सरलता और लालित्य के कारण हिन्दी-संसार में विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि आजकल एम० ए०, बी० ए० और एफ़० ए० की डिग्री-प्राप्त स्त्रियाँ किस प्रकार अपनी विद्या के अभिमान में अपने योग्य पति तक का अनादर कर उनसे निन्दनीय व्यवहार करती हैं, और किस प्रकार उन्हें घरेलू काम-काज से घृणा हो जाती है! मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

उपयोगी चिकित्सा

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की ख़ुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इसे एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। मू० केवल १॥)

उमासुन्दरी

इस पुस्तक में पुरुष-समाज की विषय-वासना, अन्याय तथा भारतीय रमणियों के स्वार्थ-त्याग और पतिव्रत का ऐसा सुन्दर और मनोहर वर्णन किया गया है कि पढ़ते ही बनता है। सुन्दरी सुशीला का अपने पति सतीश पर अगाध प्रेम एवं विश्वास, उसके विपरीत सतीश बाबू का उमासुन्दरी नामक युवती पर मुग्ध हो जाना, उमासुन्दरी का अनुचित सम्बन्ध होते हुए भी सतीश को कुमार्ग से बचाना और उपदेश देकर उसे सन्मार्ग पर लाना आदि सुन्दर और शिक्षाप्रद घटनाओं को पढ़ कर हृदय उमड़ पड़ता है। इतना ही नहीं, इसमें हिन्दू-समाज की स्वार्थपरता, बर्बरता काम-लोलुपता, विषय-वासना तथा रूढ़ियों से भरी अनेक कुरीतियों का हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पुस्तक समाज-सुधार के लिए पथ-प्रदर्शक है। छपाई-सफ़ाई सब सुन्दर है। मूल्य केवल ।॥) आने स्थायी ग्राहकों के लिए ॥-); पुस्तक दूसरी बार छप कर तैयार है।

घरेलू चिकित्सा

'चाँद' के प्रत्येक अङ्क में बड़े-बड़े नामी डॉक्टरों, वैद्यों और अनुभवी बड़े-बूढ़ों द्वारा लिखे गए हज़ारों अनमोल नुस्ख़े प्रकाशित हुए हैं, जिनसे सर्व-साधारण का बहुत-कुछ मङ्गल हुआ है, और जनता ने इन नुस्ख़ों की सचाई तथा उनके प्रयोग से होने वाले लाभ की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। सब से बड़ी बात इन नुस्ख़ों में यह है कि पैसे-पाई अथवा घर के मसालों द्वारा बड़ी आसानी से तैयार होकर अजीब गुण दिखलाते हैं। इनके द्वारा आए-दिन डॉक्टरों की भेंट किए जाने वाले सैकड़ों रुपए बचाए जा सकते हैं। इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ को अपने यहाँ रखनी चाहिए। स्त्रियों के लिए तो यह पुस्तक बहुत ही काम की वस्तु है। एक बार इसका अवलोकन अवश्य कीजिए। छपाई-सफ़ाई अत्युत्तम और सुन्दर। मोटे चिकने काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ।॥) रक्खा गया है। स्थायी ग्राहकों से ॥-) मात्र!

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

काशी-बंगालीटोला कांग्रेस कमिटी

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—२० नवम्बर, १९३० | संख्या ८, पूर्ण संख्या ८

"बिना स्वराज्य मिले मूँछ रखना बिल्कुल हिमाक़त है"

—पृष्ठ १२

तपस्वी सुन्दरलाल को डेढ़ साल की क़ैद

"हम यहाँ अपने देशवासियों का अपमान सहकर आए हैं।"

—सर सप्रू

"यदि हम यहाँ से ख़ाली हाथ जायँगे, तो देश में स्वतन्त्रता की आवाज़ गूँज उठेगी। यदि विधायक शासन न मिलेगा तो देश में अशान्ति और उत्पात के काले बादल छा जायँगे।"

—जयकर

गोलमेज़ परिषद की कार्यवाही

१२ वीं नवम्बर को सम्राट द्वारा गोलमेज़ परिषद की पहली बैठक १७ वीं नवम्बर को हुई थी, जिसमें प्रधान मन्त्री ने प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया और कहा कि उन्हें दो बातें ध्यान में रखना चाहिए, एक तो उन सबमें ऐक्य और समता होना चाहिए और दूसरे उन्हें सफलता प्राप्त करने पर तुल जाना चाहिए।

भारत की भविष्य शासन-पद्धति पर वादाविवाद प्रारम्भ करते हुए सर तेजबहादुर सप्रू ने कहा कि भारत साम्राज्य के अन्य तीन उपनिवेशों की तरह बराबरी के अधिकार चाहता है और उसने ऐसा शासन-विधान प्राप्त करने का निश्चय कर लिया है, जो उसकी गवर्नमेण्ट को जनता के लिए उत्तरदायी बनाएगा। उन्होंने इस बात पर बहुत ज़ोर दिया कि जब तक केन्द्रीय गवर्नमेण्ट धारा सभा के लिए उत्तरदायी न बनाई जायगी तब तक प्रान्तीय स्वतन्त्रता देने का कुछ परिणाम न होगा। उनका फ़ेडरेल गवर्नमेण्ट का अटूट विश्वास है और उसी में भारत का कल्याण भी है। फ़ौज के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि अभी भारतीयों को फ़ौजी शिक्षा की आवश्यकता है और उसके अधिकारों के लिए अभी कुछ विलम्ब होगा। इस समय प्रधान आवश्यकता इस बात की है कि भारतीयों को फ़ौजी शिक्षा और संस्थाएँ स्थापित करने का अवसर दिया जाय। उन्होंने कहा कि फ़ौज को वायसराय के हाथों में रक्खो; हम फ़ौजी शासन-विधान की रद्दोबदल मन्ज़ूर करने और उसे रुपया देने को तैयार हैं।

महाराजा बीकानेर

महाराजा बीकानेर ने कहा कि सन् १९१९ में जो घोषणा की गई थी उसका अन्तिम उद्देश्य भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य स्थापित करना था। परन्तु हाल ही में उस घोषणा की मनमानी विवेचना की गई है। भारतीय रियासतें भारत से मिल कर उसकी उन्नति के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं। और भारत उस समय उन्नत हो सकता है, जब ब्रिटिश भारत और भारतीय रियासतों को मिला कर एक फ़ेडरल गवर्नमेण्ट तैयार की जाय।

श्री० जयकर

श्री० जयकर ने भारत के नवयुवकों की जाग्रति की ओर इशारा कर शीघ्र ही औपनिवेशिक स्वराज्य की स्थापना पर बहुत ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि यदि इस समय भारत जो चाहता है वह मिल जायगा तो वह सन्तुष्ट हो जायगा; परन्तु यदि दो माह पश्चात् उसे इसके सिवाय और भी बहुत से सुधार दिए जायँगे तो वह असन्तुष्ट रहेगा। फिर उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि यदि आप आज भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य दे देंगे तो कुछ महीने के उपरान्त स्वतन्त्रता की आवाज़ स्वयं दब जायगी। परन्तु यदि हम यहाँ से ख़ाली हाथ लौटेंगे तो पूर्ण स्वतन्त्रता की आवाज़ गर्जन का रूप धारण कर लेगी। फ़ौज के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि जब तक फ़ौज का भारतीयकरण पूर्ण रूप से न हो जायगा, भारतीय उसके सम्बन्ध में हर एक शर्तें मन्ज़ूर करने के लिए तैयार हो जायँगे। अल्प-संख्यक जातियों के प्रश्न के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि वह समस्या भारतीय आपस में मिल कर स्वयं सुलझा लेंगे।

पण्डित सुन्दरलाल को डेढ़ साल की सख़्त सज़ा

पण्डित सुन्दरलाल जी को, जो ग़ैरक़ानूनी जुलूस में सम्मिलित होने के अभियोग में एक माह की सज़ा भोग रहे थे, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० क्रफ़र्ड ने राजविद्रोह के अभियोग में उन्हें ता० १७ को १ साल की सख़्त क़ैद और २००) जुर्माने की सज़ा दे दी। उन पर राजविद्रोह का यह अभियोग पुरुषोत्तमदास पार्क इलाहाबाद के १९ वीं अक्टूबर के भाषण पर लगाया है। इस भाषण में उन पर दो अभियोग लगाए गए थे। एक तो राजविद्रोह सम्बन्धी दफ़ा १२४-ए के अनुसार और दूसरा लगानबन्दी के सम्बन्ध में। जब तक गवर्नमेण्ट का कोई ऑर्डर न आ जायगा तब तक वे 'बी' क्लास में रक्खे जायँगे। जब पण्डित सुन्दरलाल जी ने मैजिस्ट्रेट से यह पूछा कि उनकी सज़ा उसी दिन से प्रारम्भ होगी या एक माह की क़ैद समाप्त होने के पश्चात तब मैजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया कि वे उस सम्बन्ध में कोई क़ायदा नहीं, जानते परन्तु शायद सज़ा पहली सज़ा समाप्त हो जाने पर ही प्रारम्भ होगी।

सर्दार पटेल की ज़बान पर ताला

सर्दार पटेल महादेव देसाई के साथ १८ वीं नवम्बर को सवेरे बम्बई से अहमदाबाद पहुँचे। स्टेशन पर उतरते ही गवर्नमेण्ट ने १४४ दफ़ा का नोटिस देकर उनका स्वागत किया। नोटिस के अनुसार अहमदाबाद ज़िले में दो माह के लिए उनकी ज़बान पर ताला डाल दिया गया है। मालूम हुआ है कि सर्दार पटेल और श्री० महादेव देसाई का शीघ्र ही आज्ञा भङ्ग करने का इरादा नहीं है।

—बम्बई के आबकारी और तम्बाकू विभाग के सुपरिण्टेण्डेण्ट ने अपने विभाग के कर्मचारियों से इस बात का सबूत माँगा है कि वे १२वीं नवम्बर को जिस दिन गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स का उद्घाटन हुआ था, क्यों ग़ैर-हाज़िर थे। वहाँ के कर्मचारियों ने उस दिन गोलमेज़ के विरोध में हड़ताल मनाई थी। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उन्हें चेतावनी दी है कि यदि भविष्य में वे फिर हड़ताल करेंगे तो वे वहाँ से निकाल दिए जाएँगे।

पत्नी और पुत्री

अहमदाबाद में १८वीं नवम्बर को गुजरात प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस की डिक्टेटर और वहाँ के एक धनिक मिल-मालिक की पत्नी और उनकी पुत्री कुमारी मृदुला गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

—पुलिस ने हुबली के नये कॉङ्ग्रेस हाउस पर धावा किया और वहाँ से झण्डा तथा बोर्ड निकाल लिया। वहाँ के डिक्टेटर रामराव को तीन माह की क़ैद और २५) जुर्माने की सज़ा हो गई। जिस मकान में कॉङ्ग्रेस हाउस था उसके मालिक लक्ष्मणसा कबाड़ी को तीन माह की सख़्त क़ैद और १००) जुर्माने या १५ दिन की अतिरिक्त सज़ा दी गई। रामला दिनकर को, जो मकान किराए पर लिए थे और जिन्होंने उसे कॉङ्ग्रेस के उपयोग के लिए दिया था, एक माह की सादी क़ैद और २०) जुर्माने की सज़ा हुई।

—बेलगाँव का समाचार है कि कर्नाटक के डिक्टेटर श्री० हनुमन्तराव कउलगी को दफ़ा ११७ के अभियोग में छै माह के अतिरिक्त एक वर्ष की सख़्त क़ैद और ३००) जुर्माने या छै माह की क़ैद की सज़ा हुई। इस प्रकार उन्हें कुल २१ माह की सज़ा भोगनी पड़ेगी।

—जवाहर-दिवस के अवसर पर भाषण देने के अभियोग में पूना के डिक्टेटर को छै माह की सख़्त क़ैद और १०००) जुर्माने की सज़ा दी गई। उनके स्थान पर नारायण बेलाकेर वहाँ के नये डिक्टेटर नियुक्त हुए हैं।

—पेशावर का १७वीं नवम्बर का समाचार है कि गवर्नमेण्ट से अन्तिम समझौता करने के लिए अफ़रीदी ज़िरगा आ गई है। वहाँ उनसे फ़्रेज़र के सहायक पोलिटिकल एजेण्ट मिलेंगे और दूसरे दिन से कार्यवाही आरम्भ हो जायगी।

देश के प्राङ्गण में

—देहरादून का समाचार है कि श्री० अमरनाथ जी, जिन्हें हाल ही में छः माह की सख़्त क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई, २ मेज़ें और ६ कुर्सियाँ जुर्माना वसूल करने के लिए क़ुर्क़ की गई हैं। उनके सन्दूक़ में ४० रुपया नक़द भी मिल गए हैं; बाक़ी दस रुपया यह सब सामान बेंच कर वसूल किया जायगा।

—पटना का समाचार है कि बिहार प्रान्त के सुप्रसिद्ध नेता और वहाँ के 'डिक्टेटर' श्री० बाबू राजेन्द्र-प्रसाद, जो हज़ारीबाग़ जेल में छः माह की क़ैद भोग रहे हैं, बीमार हैं। उनका पुराना दमे का रोग फिर उभड़ पड़ा है।

—बनारस का १२वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ के ३७ 'सी' क्लास के राजनीतिक क़ैदियों ने, जो दुर्व्यवहार के कारण ज़िला-जेल में अनशन कर रहे थे, अनशन बन्द कर दिया है। कारण का पता नहीं चलता।

—तारीख़ १७ को दिल्ली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' तथा जवाहर प्रेस की तलाशी ली गई है। हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस में कोई ग़ैर-क़ानूनी चीज़ नहीं मिली। पुलीस जवाहर प्रेस से काग़ज़ों से भरे हुए चार सन्दूक़ उठा ले गई है।

कलेक्टर को हॉल ख़ाली करने का नोटिस

अहमदाबाद का समाचार है कि 'संसार-सुधार हॉल' के ट्रस्टियों में से श्रीमती विद्यागौरी ने, वहाँ के कलेक्टर को उस हॉल का ऊपर का खण्ड ख़ाली करने का नोटिस दिया है। यह हॉल गुजरात प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी किराए पर लिए थी और उसे ग़ैर-क़ानूनी क़रार देकर गवर्नमेण्ट ने अपने अधिकार में कर लिया था।

—पेशावर का १३ वीं नवम्बर का समाचार है कि पेशावर और बन्नू ज़िलों में राजनीतिक सभाएँ रोकने के लिए 'सिडीशन मीटिङ्ग एक्ट' छः माह के लिए फिर बढ़ा दिया गया है।

—श्रीयुत जोज़ेफ़ बेनी बम्बई बार कौन्सिल के अध्यक्ष चुने गए हैं।

—हमारे मथुरा के सम्वाददाता ने लिखा है कि यहाँ के बज़ाज़ों ने ग़लत-फ़हमी से जो दिवाली के अवसर पर विदेशी कपड़े पर से सीलें तोड़ डाली थीं, वे उन्होंने फिर लगवा लीं। पुलिस गाँवों का प्रचार कार्य रोकने के लिए गाँव वालों को डराती है तथा उन पर तरह-तरह के झूठे ज़ुल्म लगाती है। दफ़ा १०९ तो आजकल चलते-फिरते लगा देती है। सभी सत्याग्रहियों पर कड़े-कड़े जुर्माने किए जाते हैं और बिना किसी क़ानूनी कार्रवाई के उनके घर का माल क़ुर्क़ कर लिया जाता है। माताओं और बहिनों तक के आभूषण उतरवा लिए जाते हैं। परन्तु यह सब गाँव वाले साहसपूर्वक सह रहे हैं और अपना क़दम आगे बढ़ाए ही जाते हैं।

—तारीख़ १३ को बनारस में जितेन्द्रनाथ लहरी की गिरफ़्तारी सुन कर बहुत सी जनता इकट्ठी हो गई। भीड़ को हटाने के लिए पुलिस ने लाठियाँ चलाईं जिससे ५ आदमी घायल हुए हैं।

—मैमनसिंह के राय श्यामाचरन रायबहादुर के घर की इतवार को तलाशी ली गई। कहा जाता है किसी राजनैतिक मुक़द्दमे के सम्बन्ध में उनके पोते की ज़रूरत है।

—मैसूर स्टेट की हद में कॉङ्ग्रेस के सिद्धान्तों का फैलाव रोकने के लिए बैङ्गलोर से प्रकाशित होनेवाले समाचार-पत्रों को वहाँ के अधिकारियों ने ताकीद की है।

—श्रीयुत मणिलाल जी कोठारी तारीख़ १५ को जेल से छूटने वाले थे। मीरा बेन (मिस स्लेड) तथा अन्य नेता उनका स्वागत करने के लिए साबरमती जेल गए। वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि कलेक्टर ने उनको एक नोटिस भेजा था, जिसके अनुसार उनसे ५००) रु० की ज़मानत माँगी गई थी। कोठारी जी ने ज़मानत देना अस्वीकार किया, इसलिए वे फिर २७ तारीख़ तक जेल में रोक लिए गए हैं।

नागपुर में पुलिस पर पत्थरों की वर्षा

नागपुर में जब पुलिस दाजी स्कूल के चुनाव से वापिस लौट रही थी, तब जनता के एक झुण्ड ने उस पर पत्थरों की वर्षा की और 'धिक्कार-धिक्कार' के नारे लगाए। इस पर पुलिस के सिटी सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री० हरबन्ससिंह ने भीड़ को बेंत मार कर भगाने का ऑर्डर दे दिया! पुलिस के बेंत-प्रहार से बहुत से लोगों को चोटें लगीं। कई चोटें सख़्त बतलाई जाती हैं।

—तारीख़ १४ को बम्बई के पुलिस कमिश्नर मिस्टर विल्सन कॉङ्ग्रेस-अस्पताल देखने आए थे। उन्होंने घूम कर सब आहतों का निरीक्षण किया। उनका कहना है कि वे पदाधिकारी की हैसियत से नहीं, किन्तु जन-साधारण की हैसियत से यहाँ का प्रबन्ध देखने आए हैं।

—श्रीयुत एस० सत्यमूर्ति को, जो कि तामिल नाडू प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट हैं, मिसेज़ कज़िन्स ने एक पत्र भेजा है जिससे वे कॉङ्ग्रेस की सेवा करने का वचन देती हैं। पत्र यह है—"मैं समझती हूँ कि अब वह समय आ गया है कि मुझे प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी का मेम्बर बनना ही पड़ेगा। जब मैं १९२७ की मद्रास कॉङ्ग्रेस में इकट्ठे हुए ३०,००० मनुष्यों का ध्यान करती हूँ, जब मैं स्त्री-दिवस मनाने के लिए इकट्ठी हुई उन ३००० महिलाओं का ख़्याल करती हूँ, तब मैं यह विश्वास नहीं कर सकती कि दुनिया में कोई ऐसी प्रजातन्त्र विरोधी तथा अन्यायी सरकार है, जो जनता के इतने सुदृढ़ भावों को भी दबाने का प्रयत्न करेगी।

"कॉङ्ग्रेस, जो कि भारत की सब से बड़ी राजनैतिक संस्था है, ग़ैर-क़ानूनी ठहराई जावे, यह सब मैं नहीं सहन कर सकती। अहिंसापूर्ण शान्त जनता का एकत्रित होने का तथा अपने विचारों के दर्शाने का अधिकार छीन लिया जावे, यह बड़े दुख की बात है। मैं कॉङ्ग्रेस की सब बातों का समर्थन करने को तैयार नहीं हूँ, पर मैं दिल से चाहती हूँ कि भारत को स्वराज्य मिल जावे। इस कार्य की सिद्धि के लिए मैं कार्य करने को तैयार हूँ।"

श्रीयुत सत्यमूर्ति ने उनकी सहायता स्वीकार कर ली है।

—बाराबङ्की का समाचार है कि वहाँ ज़िले भर में विदेशी कपड़ा सील हो चुका है। बाराबङ्की शहर के श्री० छेदाशाह ने सील तोड़ कर प्रतिज्ञा भङ्ग की थी, जिससे उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया और उनकी दुकान पर ज़ोरों से पिकेटिङ्ग हुई। अन्त में उन्होंने १०) रुपया जुर्माना देकर विदेशी कपड़ा फिर बन्द कर दिया और उस पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवा ली। देहातों में वालण्टियर करबन्दी का कार्य बड़ी तत्परता से कर रहे हैं।

कराची में लाठी-प्रहार

१४वीं नवम्बर को कराची में गवर्नर ने 'वेस्ट व्हार्फ़' का उद्घाटन किया था। इस अवसर पर इसके विरोध में २००० आदमियों का एक जुलूस निकाला गया था, जिसमें लोग काले कपड़े लिए थे। जुलूस के साथ में कुछ स्त्रियाँ भी थीं, जिनमें 'गवर्नर वापस जाओ' लिखा हुआ था। उत्सव समाप्त हो जाने के बाद पुलिस ने लाठी-प्रहार से भीड़ हटाई और सब मोटरें निकल गईं परन्तु एक टैक्सी की, जिसमें एक यूरोपियन बैठा हुआ था, टक्कर लग गई। इस टक्कर में बहुत से आदमियों को चोट लगी। घायल आदमियों को कॉङ्ग्रेस वालण्टियर गाँधी अस्पताल में ले गए। सवेरे जब गवर्नर बन्दर रोड पर से निकले थे तब सब दुकानें बन्द थीं।

—सुल्तानपुर ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के उपमन्त्री लिखते हैं कि वहाँ के सिटी कोतवाल, ४ कॉन्स्टेबिलों के साथ बाबू लछमनलाल वकील के घर पहुँचे, जिन्हें पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार छः माह की सादी क़ैद और २००) जुर्माने की सज़ा हुई थी। पुलिस उनके नाम का क़ुर्क़ी का वारण्ट लिए थी और वह जुर्माना वसूल करने के उद्देश्य से आई थी। मकान उन्होंने ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के वालण्टियरों को ठहराने के लिए दे दिया था। कहा जाता है, कोतवाल साहब ज़बरन मकान में घुस पड़े और सब कमरों के ताले तुड़वा कर ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी का सब सामान उठा ले गए। क़ुर्क़ किए हुए सामान में वालण्टियरों के बिछाने की दरी, ओढ़ने के कम्बल, चरख़े, कपड़े, बर्तन और खाने का सामान था।

—मध्य-प्रान्त की ख़बर है कि वहाँ का कौन्सिल का चुनाव हो गया। कॉङ्ग्रेस के कौन्सिल बॉयकाट आन्दोलन तथा पिकेटिङ्ग के कारण बहुत थोड़ी वोटें मिली हैं। जगह-जगह पर शराब तथा विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दिया जा रहा है। और गिरफ़्तारियाँ भी हो रही हैं।

नागपुर का १४वीं नवम्बर का समाचार है कि रामटेक (नागपुर) में युद्ध-समिति के ११वें डिक्टेटर श्री० हारकेर ने एक विराट सभा में शराब का उपयोग बन्द करने के लिए २०वीं नवम्बर को शराब के ठेकों पर बोली न बोलने की अपील की गई। वक्ताओं द्वारा और इश्तहार बटवा कर प्रान्त भर में शराब के विरुद्ध बड़े ज़ोरों से आन्दोलन प्रारम्भ किया गया है।

—पण्डित मोतीलाल नेहरू अपनी कनिष्ठ पुत्री कुमारी कृष्णा नेहरू के साथ १७वीं नवम्बर को दोपहर के बाद यहाँ से कलकत्ते के लिए पञ्जाब मेल से रवाना हो गए। यदि डॉक्टरों ने सलाह दी तो वहाँ से वे आब-हवा बदलने के लिए सिङ्गापुर तक समुद्र-यात्रा भी करेंगे। वे १८ ता० को सवेरे हावड़ा पहुँच गए। उनके स्वागत के लिए स्टेशन पर श्री० सुभाष बोस और अन्य कई प्रतिष्ठित सज्जन उपस्थित थे।

* * *

—देहरादून का १२वीं नवम्बर का समाचार है कि ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० महावीर त्यागी बिजनौर में गिरफ़्तार कर देहरादून वापस लाए गए हैं।

—बनारस में ११वीं नवम्बर की शाम को कबीर-चौरा मुहल्ले की गाँजे की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ५ वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए।

—पेशावर का समाचार है क़िस्साख़्वानी, बाज़ार में शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में १२ वीं नवम्बर को सन्ध्या-समय चारसद्दा के तीन आदमी गिरफ़्तार कर लिए गए। पेशावर का काबुली दरवाज़ा बन्द कर दिया गया है, और सशस्त्र पुलिस दुकानों पर पहरा दे रही है।

—पेशावर में १०वीं नवम्बर को सिटी मैजिस्ट्रेट कैप्टेन क्रॉब ने ११ आदमियों को, जो पिकेटिङ्ग के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए थे, ६-६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है।

—मथुरा से हमारे सम्वाददाता ने लिखा है कि वहाँ म्युनिसिपिल बोर्ड का जो झण्डे का मुक़दमा क़रीब २॥ माह से चल रहा था, उसका फ़ैसला सुना दिया गया। उसमें मथुरा के चौथे डिक्टेटर श्री० केदारनाथ जी भार्गव तथा पाँचवें डिक्टेटर डॉ० श्रीनाथ भार्गव को डेढ़-डेढ़ साल की सख़्त क़ैद और दो-दो सौ रुपया का जुर्माना हुआ। जुर्माना न देने पर उन्हें ६-६ माह की क़ैद और काटनी पड़ेगी। श्री० भजनलाल, श्री० निवास और गौरीलाल चतुर्वेदी को १-१ साल की सख़्त क़ैद तथा सौ-सौ रुपया जुर्माने या ३ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा हुई। इसी प्रकार श्री० मुरलीधर, जग्गो, लीलाधर, और मूलचन्द को ६-६ माह की सख़्त क़ैद और दस-दस रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है। डॉ० श्रीनाथ तथा केदारनाथ जी 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं और बाक़ी सब 'सी' क्लास में। मथुरा ज़िले में अभी तक २५० गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

—नागपुर में १३वीं नवम्बर को 'युद्ध-समिति' के सेक्रेटरी श्री० दुले और १६ दूसरे प्रसिद्ध कार्यकर्ता गिरफ़्तार कर लिए गए। 'महात्मा गाँधी की जय' के साथ उन्हें बिदाई दी गई।

—कटक में १२वीं नवम्बर को उड़ीसा प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० गोपबन्धु चौधरी की, जो अभी जेल में हैं, स्त्री श्रीमती रामादेवी को पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार चार माह की क़ैद की सज़ा दे दी गई है। जिस समय अदालत में मुक़दमा हो रहा था मि० ए० अहद मैजिस्ट्रेट ने, उनके पुत्रों और वहाँ के वकीलों तक को अन्दर आने की आज्ञा नहीं दी।

—पेशावर में १३वीं नवम्बर को हशनगर के दो गाँव वाले शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—तारीख़ १४ को दिल्ली के १७ स्वयंसेवकों को छः महीने की सख़्त सज़ा और ५०) रुपए जुर्माना अथवा जुर्माना न देने पर, दो महीने की सादी सज़ा देने का हुक्म सुनाया गया है। इनमें से ४ 'अभियुक्त' छोटी आयु के होने के कारण छोड़ दिए गए हैं।

—अमृतसर का १३वीं नवम्बर का समाचार है, वहाँ के फ़र्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट लाला दुर्गाप्रसाद ने उकसाने वाले ग़ैर-क़ानूनी ऑर्डिनेन्स की दफ़ा ३ के अनुसार एक १२ वर्ष के लड़के हंसराज को ५० रुपए जुर्माने या एक माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है!

—कानपूर की ख़बर है कि पण्डित बालकृष्ण शर्मा तथा उनके १६ साथी सत्याग्रहियों को छः छः महीने की सज़ा का हुक्म हुआ है।

श्रीयुत बद्रीनाथ कपूर को छः मास की क़ैद व २००) जुर्माना या जुर्माना न देने पर ४ मास की और सज़ा व श्रीयुत चुन्नीलाल मेहरोत्रा को ७ महीने की सज़ा व ३००) का जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है। सबको कड़ी सज़ा दी गई है।

—तामलुक का १४वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ गोलमेज़ परिषद के विरोध में काले झण्डों का जुलूस निकालने के अभियोग में चालीस आदमी गिरफ़्तार किए गए थे। उनमें से १५ आदमी रोक लिए गए और बाक़ी रिहा कर दिए गए।

—तारीख़ १५ को मद्रास के स्वयंसेवक-गृह पर पुलिस ने धावा किया। वे २२ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार करके ले गए। इनमें से एक महिला स्वयंसेविका हैं। पन्द्रह और स्वयंसेवक, जो जनता को जवाहर दिवस मनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे, गिरफ़्तार किए गए हैं।

बम्बई की सारी ईसाई 'युद्ध-समिति' को एक वर्ष की सख़्त क़ैद

बम्बई का १७ वीं नवम्बर का समाचार है कि जवाहर-दिवस के अवसर पर चौपाटी पर जो ईसाई 'युद्ध-समिति' के प्रेज़िडेण्ट जोज़ेफ़ बैनी वाइस प्रेज़िडेण्ट ई० टॉमस और संयुक्त मन्त्री आर-चैरी गिरफ़्तार किए गए थे, उन्हें चौथे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० मेहता ने ६ माह की सख़्त क़ैद और १५०) जुर्माने या तीन माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है। श्री० जोज़ेफ़ बैनी के स्थान पर अब एक गुजराती महिला श्रीमती उर्मिला मेहता बम्बई 'युद्ध-समिति' की प्रेज़िडेण्ट नियुक्त हुई हैं।

—नागपुर का १३वीं नवम्बर का समाचार है कि श्रीमती अनुसुइयाबाई काले को कौन्सिल चुनाव के समय पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में चार माह की सादी क़ैद और ३०० रुपए जुर्माने की सज़ा हुई है। जुर्माना न देने पर उन्हें एक माह की क़ैद और भोगनी पड़ेगी। वे 'बी' क्लास में रक्खी गई हैं।

—श्रीयुत के० डी० कोहिली, जोकि "हिन्दुस्तान टाइम्स" के मैनेजर थे, तारीख़ १२ को दिल्ली में गिरफ़्तार किए गए हैं। यह गिरफ़्तारी जवाहर-दिवस की विज्ञप्ति प्रकाशित करने के सम्बन्ध में हुई है।

—बम्बई का समाचार है कि नए कॉङ्ग्रेस हाउस के मालिक, जिसका उद्घाटन १६वीं अक्टूबर को श्री० उस्मान सोभानी ने किया था, श्री० जोशी १२वीं नवम्बर को सवेरे गिरफ़्तार कर लिए गए।

—मद्रास स्वयंसेवक-दल के ३१ आदमी १२ तारीख़ को गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बाराबङ्की से एक सम्वाददाता ने लिखा है कि बाराबङ्की ज़िले में अभी तक ५५ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, जिनमें प्रथम डिक्टेटर बाबू कृष्णानन्द नाथ, बाबू लक्ष्मीचन्द वकील और मि० मुर्तज़ा हुसेन बी० ए० 'बी' क्लास में और शेष सभी 'सी' क्लास में रक्खे गए हैं।

—नागपुर का १५वीं नवम्बर का समाचार है कि प्रान्तीय वालण्टियर-दल के प्रमुख श्री० चैतन्यदास, क़ानून के विद्यार्थी और बॉयकॉट कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० बाबासुन्दर और एक दूसरे क़ानून के विद्यार्थी और रामटेक के डिक्टेटर श्री० देवरस को ६-६ माह की सख़्त क़ैद और क्रमशः ५००), १००) और २००) जुर्माने की सज़ा हुई है।

—जपान के प्रधान मन्त्री हामा गुची जब स्टेशन पर चले जा रहे थे, एक उपद्रवी की गोली से आहत हो गए हैं। एक गोली उनके पेट में घुस गई है। गोली मारने वाला गिरफ़्तार कर लिया गया है। डॉक्टरों का कहना है कि सम्भवतः प्रधान मन्त्री अच्छे हो जाएँगे। गोली मारने वाला एक २३ वर्ष का नवयुवक है। उसका नाम होमेक सगोया है। वह ऐको कुशासह (राष्ट्र-प्रेमी सङ्घ) का सदस्य है। इस हत्या करने के कारण अभी तक पता नहीं चला है।

"ब्रिटेन का अस्तित्व भारत पर निर्भर है"

लन्दन का १३वीं नवम्बर का समाचार है कि मैनचेस्टर चैम्बर्स ऑफ़ कॉमर्स की भारतीय शाखा ने गोलमेज़ परिषद के ब्रिटिश प्रतिनिधियों के पास एक प्रस्ताव भेजा है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि ब्रिटेन का व्यापारिक अस्तित्व भारत पर ही निर्भर है और इसलिए इसकी अत्यन्तावश्यकता है कि भारत और ब्रिटेन का व्यापारिक बन्धन स्थिर रक्खा जावे और जुङ्गी आदि बढ़ा कर उसमें कोई हानि नहीं पहुँचाई जावे।

—पेरू के लिमा तथा कल्लाओ प्रान्तों के मज़दूरों की सभा ने हड़ताल करने का निश्चय किया था। इस पर सरकार ने वहाँ मार्शल-लॉ जारी कर दिया है और मज़दूरों की सभाएँ ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दी गई हैं।

जब पुलिस एकत्रित हुए १५०० खदान के मज़दूरों को हटा रही थी तो उसे गोली चलानी पड़ी! जिससे २ अमेरिकन, १ ऑस्ट्रियन तथा ११ पेरू-वासियों की मृत्यु हुई है। इन प्रान्तों से विदेशियों को निकल जाने का हुक्म मिला है।

पेरू में एक और भी झगड़ा चल रहा है। एक ब्रिटिश पूँजीपति के मिल में अधिकारियों तथा मज़दूरों में झगड़ा हो जाने के कारण वहाँ के सब औद्योगिक केन्द्रों के मज़दूरों ने हड़ताल कर दी है। कई स्थानों में मार्शल-लॉ जारी कर दिया गया है। बड़ी अशान्ति तथा हलचल मच रही है।

क्या भारत में दमन का ज़ोर होगा?

लन्दन की ख़बर है कि कॉमन्स सभा में सर एल्फ़्रेड नॉक्स ने 'धारीवाल ऊलन मिल्स' के उन ३००० परिवारों की ओर ध्यान आकर्षित किया था, जो कॉङ्ग्रेस के बहिष्कार आन्दोलन के कारण भूखों मर रहे हैं। मि० बेन ने उत्तर में कहा कि "प्रान्तीय सरकार इस विषय में अपना उत्तरदायित्व समझती है।"

मि० मैक़्रबैङ्क ने प्रश्न किया कि "कॉङ्ग्रेस ने जो अपनी अदालतें स्थापित करने की धमकी दी है, क्या गवर्नमेण्ट ने उस पर ध्यान दिया है?" मि० बेन ने उत्तर दिया कि "भारत के अधिकारी क़ानून-भङ्ग करने वालों को दबाने के लिए उचित शक्ति का प्रयोग करेंगे।"

—शङ्घाई (चीन) की ख़बर है कि २०,००० डाकुओं की एक सेना ने सिनपू शहर को क़ब्ज़े में कर लिया है। उन्होंने २००० आदमी, औरत व बच्चों को मार डाला है, २००० घर जला दिए हैं और ५००० लोगों को वे क़ैद करके ले गए हैं। इनका मुक़ाबला करने के लिए चीन-सरकार ने अपनी फ़ौजें भेजी हैं।

* * *

—पटना का १२वीं नवम्बर का समाचार है कि सर सुलतान अहमद की जगह में पटना हाईकोर्ट के जज जस्टिस टी० एस० मैक्फ़रसन पटना यूनीवर्सिटी के वायस चान्सलर नियुक्त हुए हैं।

—मद्रास में हाल ही में एक धनिक विद्यार्थी बुरी तरह ठगा गया है। सौभाग्य से एक मोटर ड्राइवर की कृपा से बेचारा मरते-मरते बचा है। तीन ठग एक टैक्सी में पचयप्पा कॉलेज में आए और श्री० श्रीनिवासल्लु विद्यार्थी को यह कह कर अपने साथ ले गए, कि उसका पिता जो चाइना बाज़ार का एक धनिक ठेकेदार है, गिरफ़्तार कर लिया गया है। जब उनकी टैक्सी सुन्दर मुदाली रास्ते पर पहुँची तब वे उस विद्यार्थी को एक सुनसान मकान के अन्दर ले गए, जहाँ उन्होंने तीन हज़ार के आभूषण उससे छीन लिए। विद्यार्थी जब चिल्लाया तब टैक्सी ड्राइवर वहाँ पहुँचा और बड़ी मुश्किल से उसकी जान बची। ठगों में से एक गिरफ़्तार कर लिया गया है।

पेरिस से कराची—केवल दो दिन में

कराची का समाचार है कि वहाँ दो फ़्रान्सीसी कैप्टेन गाउलेट और पाइलट लालाउट हवाई जहाज़ से पेरिस से कराची तक केवल दो दिन में आए हैं और ३½ दिन में वे रङ्गून पहुँच गए। इतनी लम्बी दौड़ इतने थोड़े समय में संसार में अभी तक किसी ने पूरी नहीं की थी।

—लाहौर का समाचार है कि वाज़ा के संस्कृत कॉलेज के हरिदत्त नामक एक १८ वर्ष के विद्यार्थी ने ज़हर खाकर अपनी आत्म-हत्या कर ली। मृत्यु के पहिले उसने एक डॉक्टर से कहा है कि वह अच्छा विद्यार्थी न था।

—कलकत्ते का समाचार है कि हुगली ज़िले के शिवतल्ला में किसी ने एक लड़की ३री नवम्बर को माल सहित फेंक दी थी। पुलिस उसे उठा ले गई और उसने उसका पालन-पोषण करने के लिए एक वेश्या को दे दिया। जब इसका पता आर्य-समाज के मन्त्री बाबू दीपनरायण जी को लगा तब उन्होंने श्री० रामपुर के मैजिस्ट्रेट को दरख़्वास्त देकर उसे ले लिया है।

—लाहौर की ख़बर है कि स्थानीय इम्पीरियल बैङ्क के एक क्लर्क ने बैङ्क से ८० हज़ार रुपया ठगने का जाल रचा, परन्तु वह सफल न हो सका और उसका भेद खुल गया। कहा जाता है कि गत सितम्बर मास में बैङ्क से ८० हज़ार का एक चेक भुनाया गया था। १ ली नवम्बर को एक लड़का बैङ्क में आया और पूछने पर उसने चेक ८ हज़ार का बतलाया। क्लर्क को इस पर सन्देह हुआ, पर इस बात की रिपोर्ट करने के पहिले ही लड़का लापता हो गया। कई दिनों के बाद पुलिस ने बैङ्क ही के गोवर्धनलाल नामक क्लर्क को गिरफ़्तार किया, जिसने डर के मारे सब रहस्य खोल दिया। उसने कहा कि जिस दिन ८० हज़ार का चेक भुनाया गया था, उसी दिन उसने उसे फ़ाइल में से निकाल लिया था। पास होने के दो माह बाद मैं उसे एक लड़के के हाथ भुनाना चाहता था।

—लाहौर के नए षड्यन्त्र केस के निरीक्षक सब-इन्स्पेक्टर अब्दुल हक़ लाहौर कण्टोमेण्ट में एक फ़ौजी अफ़सर की मोटर के नीचे दब गए। अस्पताल में उनकी हालत बहुत नाज़ुक बतलाई जाती है।

—भारत के नए सेनापति सर फ़िलिप चेटवोड भी विलायत से भारतवर्ष के लिए रवाना हो गए हैं।

ग़रीबों की रक्षा के लिए अमीरों पर डाके

कराची के 'रॉबिनहुड' की करतूतें ; व्यापारी ख़तरे में

कराची का १४वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ का एक व्यापारी थोड़े ही समय में बहुत से व्यापारियों का धोखे से २१ हज़ार रुपया मार कर भाग गया है और उसने अपने को 'कराची के रॉबिनहुड' के नाम से प्रसिद्ध किया है।

मालूम हुआ है कि कुछ सप्ताह पहले "न्यू क्लॉथ मार्केट" में 'कान्तिलाल और चिमनलाल' के नाम की एक दुकान खोली गई थी। दुकान ख़ूब शान से सजाई गई थी ; और यह दिखाने के लिए, कि यह एक भारी दुकान है, उसमें एक लोहे की तिजोरी और चाबियों के कई गुच्छे भी रक्खे गए थे। कुछ दिनों तक बहुत से व्यापारियों के माल की रेलवे रसीदों और हुण्डियों की, जो बाहर से वहाँ के व्यापारियों के नाम आती थीं। सङ्गठित-चोरी होती रही और इस प्रकार जब बहुत-सा रुपया इकट्ठा हो गया तब दुकान का मैनेजर अचानक लापता हो गया। बीस से ऊपर व्यापारियों को इस बात का दुःखद अनुभव उठाना पड़ा कि उनकी रेलवे-रसीदें और हुण्डियाँ किसी तीसरे व्यक्ति ने चुरा ली हैं, और उन्हें उनका रुपया नहीं मिला। ऐसा सन्देह किया जाता है, कि इन रसीदों और हुण्डियों की चोरी वहाँ के जनरल पोस्ट ऑफ़िस में की जाती थी। पिछले कई दिनों से दुकान के दरवाज़े बन्द पाए जाते थे ! अन्त में व्यापारियों ने पुलिस की शरण ली। जब उस दुकान के ताले तोड़े गए तो भीतर केवल मेज़ें-कुर्सियाँ और लोहे की तिजोरी मात्र मिलीं। दुकान में गुजराती भाषा में लिखा हुआ एक लम्बा पत्र मिला, जिसमें यह लिखा था कि 'मैं कराची का रॉबिनहुड हूँ' और अमीरों का धन ग़रीबों की रक्षा के लिए, लिए जा रहा हूँ। पुलिस ने साइन-बोर्ड और चल-सम्पत्ति पर अपना अधिकार कर लिया है !

—श्रीयुत जी० ए० नटेसन, जो कि राष्ट्रीय लिबरल-दल के मन्त्री हैं, लिखते हैं कि राउण्ड टेबिल होने के कारण राष्ट्रीय लिबरल-दल का आगामी वार्षिक परिषद दिसम्बर में न होकर मार्च या अप्रैल में होगा।

ठीक समय तथा स्थान की सूचना फिर दी जावेगी।

—किसानों की सहायता करने लिए गेहूँ का विदेशी व्यापार प्रोत्साहित करने के लिए रेलवे बोर्ड ने ईस्ट इण्डियन रेलवे व नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे द्वारा कराची जाने वाले माल का किराया कम कर देने का निश्चय किया है।

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

—मेरठ का १४वीं नवम्बर का समाचार है कि पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट हेमचन्द्र, ख़ुफ़िया पुलिस के इन्स्पेक्टर मर्दनसिंह ने कॉन्स्टेबिलों के साथ 'केपिटल सिनेमा' में अन्धकार में विमलप्रसाद को गिरफ़्तार किया है, जो क्रान्तिकारी बतलाए जाते हैं और कहा जाता है कि वे दिल्ली से भाग कर वहाँ आए हैं। उन्हें गिरफ़्तार करते समय पुलिस ने सिनेमा-घर चारों ओर से घेर लिया था। पुलिस उनके सम्बन्ध में कोई हाल बतलाने के लिए तैयार नहीं है। परन्तु ऐसा मालूम होता है कि ख़ुफ़िया पुलिस उनके पीछे लगी थी और ख़ून-ख़राबी बचाने के लिए ही उन्हें सिनेमा-हॉल में गिरफ़्तार किया है। पता लगा है कि दिल्ली पुलिस को धनवन्तरी के मुक़दमे में उनकी आवश्यकता थी। उनकी गिरफ़्तारी के बाद रात्रि में पुलिस ने बहुत सी तलाशियाँ भी ली हैं।

कोतवाली में बम

कानपूर का १७वीं नवम्बर का समाचार है कि जब कि सिटी कोतवाली के सब पुलिस अफ़सर जवाहर-दिवस के उत्सव में व्यस्त थे, तब उनके पास अचानक समाचार पहुँचा कि क़रीब ७ बजे शाम को कोतवाली के अन्दर बम फेंका गया है। कुछ पुलिस के साथ सुपरिण्टेण्डेण्ट उसी समय घटनास्थल पर पहुँचे और उन्होंने आसपास जाँच की, परन्तु कुछ पता न चल सका। बाद में जाँच से पता चला कि बम पटाख़े की नाईं था और फूटा न था। एक खोखले नरियल में बम का पाउडर और कुछ काँच और लोहे के टुकड़े बन्द कर दिए गए थे।

—मुलतान के दो बम के केसों का फ़ैसला, जिसमें पानी का टैक्स वसूल करते समय पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० हिल घायल हो गए थे, १४वीं नवम्बर को सुना दिया गया। अभियुक्त जगन्नाथ को एक केस में ५ साल और दूसरे केस में ७ साल की क़ैद की सज़ा दी गई। अन्य सब व्यक्तियों को 'एक्सप्लोसिव एक्ट' के अनुसार भिन्न-भिन्न क़ैद की सज़ाएँ दी गई हैं, परन्तु हर एक को अपनी भिन्न-भिन्न सज़ाएँ एक साथ भोगनी पड़ेंगी और इस प्रकार प्रत्येक को १-३ साल की सज़ा भोगनी पड़ेगी। अभियुक्त मङ्गाराम, जिस पर दण्ड-विधान की ३०७वीं धारा का अभियोग लगाया गया था, दूसरे केस में छोड़ दिया गया; परन्तु उसके भाई को उसी केस में चार साल की क़ैद की सज़ा दे दी गई। जब अभियुक्त दण्ड सुनने के उपरान्त जेल जाने लगे तब उन्होंने राष्ट्रीय नारे लगाए। हाईकोर्ट में केसों की अपीलें पेश कर दी गई हैं।

—बम्बई के पुराने कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस में तारीख़ १६ को एक बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ। इमारत पुलिस के क़ब्ज़े में है। और जगह से भी पुलिस बुलाई गई। ख़्याल यह था कि किसी ने बम फेंका है, पर जाँच करने पर मालूम हुआ कि प्रॉक्टर रोड के किसी राहगीर ने हाते में एक पटाख़ा फेंक दिया था। अभी तक कोई गिरफ़्तारी नहीं की गई है।

—लाहौर का १८वीं नवम्बर का समाचार है लायलपुर का एक साइन्स ग्रेजुएट हंसराज, जो क्रान्तिकारी-दल का मुखिया बतलाया जाता है, ख़ुफ़िया पुलिस द्वारा गिरफ़्तार कर लिया गया है। कहा जाता है कि १४वीं जून को पञ्जाब में एक ही साथ भिन्न-भिन्न स्थानों में जो बम फटे थे, वे इसी के बनाए हुए थे। पञ्जाब गवर्नमेण्ट ने हंसराज की गिरफ़्तारी के लिए काफ़ी इनाम की घोषणा की थी। कहा जाता है कि २३वीं दिसम्बर को दिल्ली आते समय वायसराय की स्पेशल के नीचे जो बिजली का बम फूटा था, वह भी हंसराज का ही बनाया हुआ था।

गोलमेज़-परिषद में तहलका

सम्मिलित होने वाले भारतीय प्रतिनिधियों को कड़ी चेतावनी

"तुम्हें वही परिणाम भोगने के लिए तैयार रहना चाहिए जो ६० वर्ष पहिले इटली के नर्म-दल वालों को भोगना पड़ा था"

लन्दन में १२ वीं नवम्बर को जिस दिन सम्राट ने गोलमेज़ परिषद का उद्घाटन किया था, उसी दिन उसके भारतीय प्रतिनिधियों के नाम बहुत से लोगों ने मिल कर निम्न पत्र एक प्रसिद्ध व्यक्ति के हाथ भेजा था:—

"She stood before her traitors bound and bare,
Clothed with her wound and with her naked shame.
As with a weed of fiery tears and flame,
There mother-land, their common weal and care.
And they turned from her and denied, sware,
They did not know this woman nor her name.
And they took truce with tyrants and grew tame,
And gathered up cast crowns and creeds to wear.
And rags and shards regilded then she took
In her bruised hands their broken pledged, and eyed.
These men so late so loud upon her side
With one inevitable and tearless look,
That they might see her face whom they forsook;
And they beheld what they had left, and died."

February, 1870. —*Swinburne.*

भावार्थ—"उनकी मातृ-भूमि, उन सबका लाड़-प्यार से पालन-पोषण करने वाली जननी, आहत-घावों से क्षत-विक्षत, नग्न और शर्म से गर्दन झुकाए हुए और जञ्जीरों से कसी हुई अपने देश-द्रोहियों के सामने खड़ी हुई है। परन्तु उसे देखते ही उन्होंने उपेक्षा से अपना मुँह फेर लिया और उन्होंने शपथपूर्वक कहा कि न तो वे इस स्त्री से परिचित हैं और न वे उसका नाम ही जानते हैं। और उन्होंने निष्ठुर, अत्याचारी अधिपतियों से सन्धि करली और उनके वशीभूत होकर (पालतू कुत्तों की नाईं) पूँछ हिलाने लगे, और पुराने मान-सम्मान और अन्धविश्वासों की ओट में अपने को छिपाने लगे, और पुराने चिथड़ों को पेवन्द लगा कर उन्हें नए बना कर पहनने लगे। तब वह अपने क्षत-विक्षत और घाव-पूर्ण हाथों में उनकी कुचली और ठुकराई प्रतिज्ञाएँ लेकर उनके सम्मुख गई और उन लोगों की ओर, जिन्होंने अभी-अभी उसकी तरफ़ से गर्जना की थी और उसे मुक्त करने की डींग मारते थे। अश्रु-रहित, परन्तु भावपूर्ण आँखों से देखा, जिससे वे उसका मुख देख सकें, जिसका वे त्याग और अवहेलना कर चुके हैं। उन्होंने जब उसकी ओर दृष्टिपात किया, तब उन्हें ज्ञात हुआ कि वे कितने पतित हो गए थे, और उसके उपरान्त वे मर गए।"

१ फ़रवरी १८७० में प्रेषित। —कविवर स्विनबर्न

* * *

"मैं तुम्हें और तुम्हारे उन साथियों के लिए, जिन्होंने 'निष्ठुर और अत्याचारी अधिपतियों' से सन्धि कर ली है, स्विनबर्न की वह कविता समर्पित करती हूँ, जो उसने ६० वर्ष पहले उस समय के इटली के नर्म-दल वालों के सम्बन्ध में लिखी थी। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि एक क्षण के लिए कपट और पाखण्ड दूर कर दो। यदि तुममें शक्ति है तो थोड़ी देर अपने अन्तःकरण का मथन करो और फिर इसका उत्तर दो, कि क्या उपर्युक्त कविता में तुम्हारा सच्चा चित्र चित्रित नहीं किया गया है। याद रक्खो इटली के नर्म-दल वालों का अब नाम-निशान भी नहीं है; और उनके स्थान में इटली अब एक सङ्गठित और शक्तिशाली राष्ट्र है जो संसार के शक्तिशाली राष्ट्रों में अपना अस्तित्व रखता है। उस समय को बीते अब ६० वर्ष गुज़र गए। संसार ने द्रुत गति से अपनी उन्नति की मञ्ज़िलें तय की हैं, परन्तु तुम अपनी मातृभूमि को कुचलने और ठुकराने वालों के रँगे हुए सियार—अभी भी ६० वर्ष पहले के इटली के नर्म-दल वालों का पार्ट खेल रहे हो। यदि तुम अपने रास्ता जाना चाहते हो तो भले ही जाओ, परन्तु तुमसे अधिक समझदार देश-भक्त और परिस्थिति जिन्हें तुम पीछे छोड़ गए हो, अपनी ग़ुलाम और पद-दलित माता को फिर से उसके पैरों पर खड़ा करेंगे। उसकी उस "अश्रु-रहित और भावपूर्ण" दृष्टि से सदैव सावधान रहो, जिससे वह अब तुम्हारी ओर देख रही है। अब भी सोचने का समय है; या तो अपने ठीक रास्ते पर आ जाओ और या वह परिणाम भोगने के लिए तैयार रहो जो ६० वर्ष पहले तुम्हारे साथियों को भोगना पड़ा था।"

—"भारतमाता"

भारतीय गवर्नमेन्ट में ख़रीते के सम्बन्ध में कुछ चुनी हुई सम्मतियाँ

'दी न्यूज़ क्रॉनिकल' का कहना है कि "भारतीय गवर्नमेण्ट की योजनाएँ अव्यावहारिक हैं और उनकी उसी प्रकार समालोचना होगी, जिस प्रकार साइमन कमिटी की रिपोर्ट की हुई थी।"

'न्यूज़ क्रॉनिकल' की तरह 'डेली टेलीग्राफ़' भी भारतीय गवर्नमेण्ट की योजनाओं का घोर विरोध करता है। उसका कहना है कि "व्यवस्थापिका सभा में धारा सभा के चुने हुए मेम्बरों में से बहुत से मेम्बर होने चाहिएँ। इस योजना का गवर्नमेण्ट के शासन पर भयङ्कर प्रभाव पड़ेगा।"

'मॉर्निङ्ग पोस्ट' लिखता है कि भारतीय "गवर्नमेण्ट की फ़ौज सम्बन्धी योजनाएँ द्वैध शासन का आभास दिलाती हैं। ऐसी गवर्नमेण्ट, जो धारा सभा के लिए अधिक उत्तरदायी नहीं है, धीरे-धीरे उसके अधिकार में आ जायगी और फ़ौज गवर्नमेण्ट की ओर खींची जायगी। भारतीय राजा, जिन्हें भारतीय फ़ौजों के द्वारा नहीं, बल्कि सम्राट की फ़ौजों के द्वारा रक्षा की गारण्टी दी गई है, भारतीय फ़ौजों से रक्षित होना कभी स्वीकार न करेंगे।"

लाहौर का 'ट्रिब्यून' लिखता है कि "ख़रीते में जो योजनाएँ दी गई हैं, उनके अनुसार भारतीय अधिकांश राजनीतिज्ञों ने गोलमेज़-परिषद का बहिष्कार उचित ही किया है। उससे भारत के भविष्य शासन-विधान के सम्बन्ध में नौकरशाही के प्रति और भी अधिक अविश्वास उत्पन्न होगा।"

'मुस्लिम आउटलुक' ख़रीते को अत्यन्त निराशा-जनक बतलाता है। उसका कहना है कि अब मुसलमानों को अपनी स्थिति पर अत्यन्त गूढ़ विचार करना चाहिए, क्योंकि पञ्जाब में उनके विशेष अधिकार छीने जा रहे हैं; संयुक्त चुनाव के द्वारा उन्हें अब अपना मतलब सिद्ध करने का विचार छोड़ देना चाहिए। अल्प संख्यक मुस्लिमों के अधिकारों की रक्षा के लिए गवर्नर को केवल 'वीटो' का अधिकार दिया गया है। इसलिए इस पत्र की सम्मति में यदि मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा का केवल यही उपाय बचा है तो वे गवर्नमेण्ट द्वारा अपनी रक्षा नहीं कराना चाहते।"

'बॉम्बे क्रॉनिकल' की सम्मति में यह ख़रीता 'घाव पर नमक छिड़कता है।' वह अपने अग्र-लेख में ख़रीते का घोर विरोध करता है और शास्त्री, सप्रू, जिन्ना और जयकर तथा उनकी पार्टियों के लोगों ने लॉर्ड इरविन की प्रशंसा के जो पुल बाँधे हैं, उसकी ख़ूब खिल्ली उड़ाई है!

'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' लिखता है कि "ख़रीते का सब से अधिक मूल्य इसमें है कि वह साइमन कमीशन से अधिक अधिकार देता है।"

कलकत्ते के 'एडवान्स' का कहना है कि "ख़रीता भारत के राष्ट्रीय जीवन की उन्नति का घोर विरोधी है। उसमें न तो औपनिवेशिक राज्य की झलक है और न भविष्य में देने का कोई वचन। भारत की समस्याओं को हल करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया।"

'लीडर' के सम्पादक श्री० चिन्तामणि का कहना है कि "यद्यपि कई प्रकार से ख़रीता साइमन रिपोर्ट से अच्छा है, परन्तु वह अत्यन्त निराशाजनक है और मैं उससे बिलकुल असन्तुष्ट हूँ।"

भूतपूर्व एम० एल० ए० सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास ने ख़रीते के सम्बन्ध में लिखा है कि—"मुझे यह जान कर सख़्त अफ़सोस होता है कि एक ऐसी व्यवस्थापिका सभा, जिसके अध्यक्ष लॉर्ड इर्विन हैं, भारत के लिए इस ख़रीते से अच्छा, राजनीतिपूर्ण विधान की आयोजना न कर सके। यदि ख़रीते में जो है, केवल वह भारत को दिया जाने वाला है तो मुझे डर है कि भारत और गवर्नमेण्ट दोनों को एक लम्बे युद्ध और क्रान्ति के लिए तैयार हो जाना चाहिए।"

देश में 'जवाहर-दिवस' की धूम

जनता पर गोलियों और लाठियों की वर्षा

केवल दिल्ली में २१८ गिरफ़्तारियाँ

श्री० जैरामदास दौलतराम फिर पकड़ लिए गए :: कराची में ५०,००० की भीड़

नागपुर में १,००० से अधिक स्त्रियों का विराट जुलूस

बम्बई

२२ स्त्रियाँ और एक ८ वर्ष की लड़की गिरफ़्तार; कई बार लाठी-प्रहार हुआ

रविवार को बम्बई में जवाहर-दिवस बड़ी शान से मनाया गया। शहर भर में जगह-जगह सभाएँ हुईं और उनमें पण्डित जवाहरलाल के भाषण के वे भाग पढ़े गए, जिनके कारण उन्हें सज़ा हुई है।

प्रातःकाल ही पुलिस ने गिरगाँव में आम्बेवाड़ी के कुछ मकानों पर धावा किया और हिन्दुस्तानी सेवा-दल के केप्टेन और गिरगाँव ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० एस० वी० सोवानी अन्य ३० वालण्टियरों के साथ गिरफ़्तार कर लिए गए। सेवा-दल के कैम्प पर स्वयं पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट गाइकर और वेमिङ्गटन रोड पुलिस थाने के इन्स्पेक्टर कियान ने २ बजे सवेरे धावा किया था और चार घण्टे तक लगातार खुफ़िया पुलिस तलाशी लेती रही। बाद में वह उपर्युक्त लोगों को गिरफ़्तार कर ले गई। श्री० सोवानी बम्बई यूनीवर्सिटी के प्रतिभाशाली ग्रेजुएट हैं और कोल्हापुर के राजाराम कॉलेज में साइन्स के प्रोफ़ेसर रह चुके हैं। हाल ही में उनकी एक १६ वर्ष की सुपुत्री भी पिकेटिङ्ग के अभियोग में जेल भेजी गई है। इनकी और अन्य वालण्टियरों की गिरफ़्तारी जवाहर-दिवस के ही सम्बन्ध में हुई है।

इसी प्रकार माण्डवी, शान्ताकुञ्ज और घाटकोपर में भी गिरफ़्तारियाँ हुईं। घाटकोपर में सवेरे ४ बजे से ही डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने दफ़ा १४४ लगा दी थी, परन्तु उस दफ़ा का विरोध करने के लिए प्रातःकाल बहुत सी प्रभात-फेरियाँ निकाली गईं और सब ने क्रिकेट के मैदान में राष्ट्रीय झण्डे का अभिवादन किया। पुलिस ने तीन गिरफ़्तारियाँ कीं जिससे जनता भड़क उठी और स्त्री-पुरुषों के अलग-अलग कई जुलूस निकाले गए। पुलिस ने जुलूसों को हटाने के लिए कई बार लाठी-प्रहार किए और ४० गिरफ़्तारियाँ कीं, जिनमें २२ स्त्रियाँ हैं। इनमें एक देवका बाई चायसी नामक ८ वर्ष की लड़की भी गिरफ़्तार हुई है, जो वहाँ की कॉङ्ग्रेस की एक उत्साही कार्यकर्त्री थी। दिन में 'जेल-भोज' हुआ था, जिसमें वहाँ के ५०० स्त्री-पुरुष सम्मिलित हुए थे। जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में विलेपार्ले और खार रोड पर भी २५ आदमियों की गिरफ़्तारी हुई। सन्ध्या समय चौपाटी पर एक विराट सभा हुई, जिसे पुलिस ने लाठी-प्रहार से हटाया और बम्बई की युद्ध-समिति के ईसाई डिक्टेटर और सभासदों को जवाहरलाल का भाषण पढ़ते समय गिरफ़्तार कर लिया। शहर भर में जहाँ-तहाँ लाठी-प्रहार से बहुत से आदमी घायल हुए हैं। जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में वहाँ कुल ७२ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, जिनमें ४५ स्त्रियाँ हैं। बाद में २१ छोड़ दी गई हैं।

कलकत्ता

१०० से ऊपर गिरफ़्तार :: लाठी-प्रहार

जवाहर-दिवस के उपलक्ष में कलकत्ते में कॉङ्ग्रेस की ओर से शहर में हर जगह जुलूस निकाले गए थे। परन्तु प्रायः सभी जुलूस प्रारम्भ होते ही लाठी-प्रहार से तितर-बितर कर दिए गए। सवेरे से सशस्त्र पुलिस की लॉरियाँ शहर में चक्कर लगाने लगी थीं और जिस मुहल्ले से जुलूस निकलता था, पुलिस वहीं उसे लाठी-प्रहार से तितर-बितर कर देती थी और वालण्टियरों को गिरफ़्तार करती जाती थी। लाठी-प्रहार से बहुत से घायल हुए, जिनमें से १७ आदमी कॉङ्ग्रेस अस्पताल में लाए गए। पुलिस ने जवाहर-दिवस के अवसर पर १०० से ऊपर वालण्टियरों की गिरफ़्तारियाँ की हैं। बङ्गाल की सत्याग्रह कमिटी के प्रेज़िडेण्ट और कलकत्ते के सुप्रसिद्ध इन्जीनियर श्री० जे० एन० विस्वास गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। पुलिस ने श्री० ज्ञानाञ्जन नियोगी के घर की तलाशी भी ली।

दिल्ली

२१८ गिरफ़्तार :: जुलूस पर लाठी-प्रहार

'जवाहर-दिवस' के उपलक्ष में कॉङ्ग्रेस की ओर से एक विराट जुलूस निकाला गया था। पुलिस ने घण्टा-घर के पास जुलूस पर लाठी-प्रहार कर उसे वहाँ से हटा दिया। जुलूस में से बहुत से आदमी गिरफ़्तार किए गए और उनके हाथों में से राष्ट्रीय झण्डे छीने गए। गिरफ़्तार आदमी पुलिस की लॉरियों में भर कर हवालात भेज दिए गए। जाँच से पता लगा है कि 'क्वीन्स गार्डेन' को, सन्ध्या समय सभा के अन्देशे से पुलिस के बहुत से सिपाहियों ने चारों ओर से घेर लिया था। परन्तु जुलूस के उपरान्त घण्टा-घर के पास ही सभा की गई, जिसे पुलिस ने लाठी-प्रहार से हटा दिया और २१८ आदमियों को गिरफ़्तार किया। गिरफ़्तार व्यक्तियों में दिल्ली 'युद्ध-समिति' के डिक्टेटर श्री० सुरेन्द्रनाथ जौहर और स्वर्गवासी पब्लिक प्रॉसीक्यूटर राय साहिब गिरधारीलाल की पुत्री कुमारी चन्द्राबाई भी हैं।

नागपुर

जुलूस में १,००० से अधिक स्त्रियाँ

नागपुर में 'जवाहर-दिवस' पुलिस की बिना रोक-टोक के शान्तिपूर्वक मनाया गया। वहाँ की जनता ने मोटर में पण्डित जवाहरलाल का चित्र रख कर एक विराट जुलूस निकाला, जिसमें १,००० से अधिक स्त्रियाँ सम्मिलित थीं। जुलूस के अनन्तर एक विराट सभा हुई, जिसमें पण्डित जवाहरलाल का इलाहाबाद का भाषण पढ़ा और जनता द्वारा दुहराया गया। एक प्रस्ताव द्वारा गोलमेज़ के प्रतिनिधियों को धिक्कारा गया।

लाहौर

लाहौर में जवाहर-दिवस एक विराट जुलूस निकाल कर और सभा करके मनाया गया था। जुलूस तो शान्तिपूर्वक निकल गया, परन्तु सभा के उपरान्त ८ वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए। जवाहर-दिवस की कार्यवाही समाप्त होने पर पुलिस ने दैनिक 'वन्देमातरम्' पत्र के मैनेजिङ्ग डायरेक्टर श्री० पुरुषोत्तमलाल जी सोंधी को गिरफ़्तार कर लिया। उनकी गिरफ़्तारी के समाचार सुन कर पुलिस से उनकी स्त्री, माता और भगिनी ने भी उन्हें गिरफ़्तार कर लेने की प्रार्थना की, क्योंकि सभा में वे भी उपस्थित थीं। परन्तु उनकी आशा पर पुलिस ने पानी फेर दिया। बहुत कुछ कहने पर भी पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार न किया।

कराची

श्री० जयरामदास फिर गिरफ़्तार

जवाहर-दिवस के उपलक्ष में प्रातःकाल श्री० जयरामदास ने एक बहुत बड़ी भीड़ के सम्मुख राष्ट्रीय झण्डा फहराया और स्त्री और पुरुष वालण्टियरों की सलामी भी ली। सन्ध्या समय शहर में एक विराट जुलूस निकाला गया और उसके बाद ५० हज़ार आदमियों की सभा हुई, जिसमें स्थानीय डिक्टेटर ने पण्डित जवाहरलाल का भाषण पढ़ा। श्री० जयरामदास ने भी, जिन पर उसी दिन सवेरे स्टेशन पर दो माह के लिए १४४ दफ़ा लगाई गई थी, एक भाषण देकर उसे तोड़ दिया। भाषण में उन्होंने जनता से अहिंसात्मक रहने की प्रार्थना की थी। ता० १७ को प्रातःकाल, जब वे कराची से सङ्गठन कार्य के लिए शिकारपुर जा रहे थे, तब वे स्टेशन पर गाड़ी छूटने के कुछ ही समय पहले गिरफ़्तार कर लिए गए। उनकी गिरफ़्तारी के अन्देशे से जो कुटुम्बी और कार्यकर्ता वहाँ एकत्रित हो गए थे, उनसे उन्होंने बिदाई ली, और जेल गए। वे केवल १२ दिन पहिले ही जेल से छूटे थे।

इलाहाबाद

"राष्ट्रपति के भाषण के भाव हमारे मनोभाव हैं"

इलाहाबाद में जवाहर-दिवस शान्तिपूर्वक बड़ी धूम से मनाया गया। जवाहर-दिवस का कार्यक्रम भारतीय कॉङ्ग्रेस के दफ़्तर में बनाया गया था और सभा में पढ़ने के लिए पण्डित जवाहरलाल के भाषण में से ८ पैराग्राफ़ चुन लिए गए थे। यह कार्यक्रम देश भर की कॉङ्ग्रेस कमिटियों को भेजा गया था। जवाहर-दिवस के अवसर पर इलाहाबाद में विद्यार्थियों ने अपने होस्टलों पर और जनता ने जगह-जगह राष्ट्रीय झण्डे फहराए। शाम को चार बजे खद्दर भण्डार से एक विराट जुलूस उठा और मुख्य-मुख्य रास्तों पर घूमता हुआ पुरुषोत्तमदास पार्क में समाप्त हुआ, जहाँ एक विराट सभा हुई। जुलूस का नेतृत्व शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी की डिक्टेटर श्री० कमला नेहरू, श्रीमती मोतीलाल नेहरू, श्री० उमा नेहरू और पण्डित मोतीलाल की बड़ी पुत्री श्री० विजय लक्ष्मी पण्डित कर रही थीं। जुलूस के पार्क में पहुँचने पर श्री० कमला नेहरू ने झण्डा आरोहण किया और बाद में उन्होंने पण्डित जवाहरलाल का भाषण पढ़ा और जनता ने उसे दुहराया। सभा में निम्न दो प्रस्ताव भी पास हुए।

(शेष मैटर ७वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

महात्मा गाँधी का प्रेस नीलाम

किसी ने बोली नहीं बोली !

अहमदाबाद का १२वीं नवम्बर का समाचार है कि गवर्नमेण्ट ने महात्मा गाँधी का जो नवजीवन प्रेस क़ुर्क़ कर लिया था, सन्ध्या समय नीलाम किया गया। परन्तु कोई बोली बोलने वाला न मिला, आख़िर प्रेस उठा कर गवर्नमेण्ट को कहीं ले जाना पड़ा। क्योंकि जिस मकान में प्रेस था उस मकान के मालिक ने गवर्नमेण्ट पर किराया देने का नोटिस दिया है, जिसमें इतने दिनों तक प्रेस था।

(६वें पृष्ठ का शेषांश)

"हम, इलाहाबाद के बाशिन्दगान पण्डित जवाहरलाल के १२वीं अक्टूबर १९३० के भाषण को दुहराते हैं, और यह ज़ाहिर करते हैं कि उस भाषण में जो भाव हैं वे हमारे ही भावों का प्रदर्शन करते हैं।"

इस प्रस्ताव के प्रस्तावक श्री० लालबहादुर और समर्थक श्री० आलूबिहारी थे।

"हम इस बात की भी घोषणा करते हैं कि गोलमेज़ परिषद के लिए वाइसराय ने जिन सदस्यों का निर्वाचन किया है, वे हमारे प्रतिनिधि नहीं हैं। उन्हें भारतीयों की ओर से बोलने का कोई अधिकार नहीं है और वे जो समझौता करेंगे, वह भारतीयों को मञ्ज़ूर नहीं है।"

शहर में दिन भर हड़ताल भी रही।

मुज़फ़्फ़रपुर

गोली चली :: २७ गिरफ़्तारियाँ

पटना से १७वीं नवम्बर को बिहार और उड़ीसा गवर्नमेण्ट ने निम्न विज्ञप्ति प्रकाशित की है :—

"जवाहर-दिवस के अवसर पर सभा और भाषण रोकने के लिए मुज़फ़्फ़रपुर के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने एक ऑर्डर निकाला था। परन्तु इस ऑर्डर का विरोध कर मैदान में भारी भीड़ एकत्रित हो गई और वहाँ से साईकिल वालों का एक जुलूस सड़क की ओर बढ़ा, उन्हें वहाँ से तुरन्त हट जाने की आज्ञा दी गई, परन्तु उसका उल्लङ्घन करने पर, पुलिस ने उनका पीछा किया। पुलिस पर ईंटे-पत्थर फेंके गए। उनमें कुछ गिरफ़्तार कर लिए गए, परन्तु २००० की भीड़ ने पुलिस पर फिर पत्थर, ईंटे और बोतलें फेंकना प्रारम्भ कर दिया। बहुत से कॉन्स्टेबिल घायल हुए और चारों ओर से घिर जाने पर ७ बार गोलियाँ चलाई गईं और भीड़ हटा दी गई। गोलियों से एक सख़्त और तीन साधारण तौर से घायल हुए। घायल सदर अस्पताल में दाख़िल कर दिए गए हैं। २७ आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं।

कानपुर

जवाहर-दिवस के अवसर पर कानपुर में ४०,००० मनुष्यों और ४०० स्त्रियों का जुलूस निकाला गया था। जुलूस के पीछे १४ भैंस-गाड़ियाँ थीं, और आगे-आगे गदहे पर एक आदमी अङ्गरेज़ी ड्रेस में गा रहा था। जुलूस के बाद श्रद्धानन्द पार्क में सभा हुई, जिसमें राष्ट्रपति का भाषण पढ़ा और दुहराया गया था। जुलूस के बाद भैंस-गाड़ियाँ शहर भर में घुमाई गईं और उन पर एक नक़ल खेली गई थी।

आगरा

जवाहर-दिवस के अवसर पर यहाँ भी हिन्दुओं ने हड़ताल मनाई। शाम को एक विराट जुलूस निकाला गया और अन्त में सभा में पण्डित जवाहरलाल का आपत्तिजनक भाषण पढ़ा और दुहराया गया।

आगरे के १२वें डिक्टेटर श्री० कैलाशचन्द्र बी० ए० और सत्याग्रह-कैम्प के सञ्चालक श्री० सिशोदिया गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

ज़ब्त का माल भी नीलाम किए जाते हैं !
काम से काम है, फिर नाम लिए जाते हैं !!
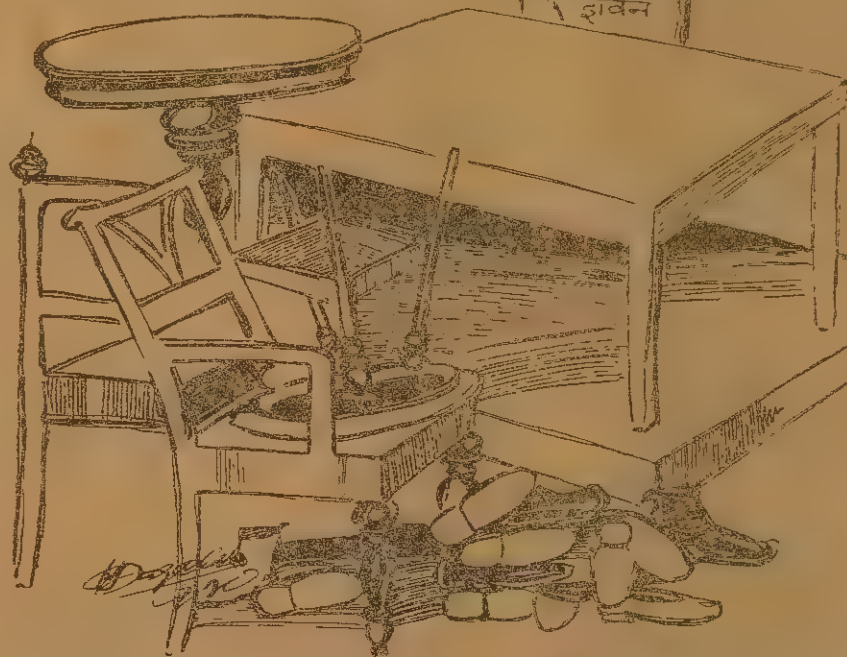
लॉर्ड इर्विन—एक ! दो !! एक ! दो !! कङ्ग्रेस कमेटी का दफ़्तर, एक से एक बढ़िया मोटर, छापेख़ाने, फ़र्नीचर, पुराने जूते, किसानों के खेत, झोंपड़े—सब कौड़ियों के मोल जा रहे हैं, क्योंकि कोई क़द्रदान ख़रीदार नहीं मिल रहा , जल्दी कीजिए; एक, एक—दो ; एक, दो ; एक ! दो !!.........!!!

लखनऊ

जवाहर-दिवस के दिन यहाँ सवेरे केवल ८ से १० बजे तक वालण्टियरों ने घूम-घूम कर 'जवाहरलाल के आठ दिन के कार्य' पुस्तक की ९००० प्रतियाँ बँट डालीं। सन्ध्या समय अमीनुद्दौला पार्क में राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया और जवाहरलाल जी का भाषण पढ़ा और दुहराया गया।

इसी प्रकार जवाहर-दिवस धूमधाम से मनाने के समाचार अलीगढ़, मुरादाबाद, मथुरा, खेरी, आज़मगढ़, हाथरस, फ़ीरोज़ाबाद, आरा और राजमहेन्द्री आदि-आदि अनेक स्थानों से भी हमारे पास आए हैं, जिनका स्थानाभाव के कारण प्रकाशित करना सम्भव नहीं है। कई स्थानों में गोलमेज़ परिषद के विरुद्ध प्रस्ताव भी पास हुए हैं।

बनारस

यहाँ जवाहर-दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया था। दिन में हड़ताल मनाई गई थी और शाम को एक एक विराट जुलूस शहर के मुख्य रास्तों पर से निकाला गया था। टाउन हॉल के मैदान में एक विराट सभा हुई, जिसमें राष्ट्रपति का भाषण पढ़ा गया था। पुलिस की ओर से कोई घटना नहीं घटी।

बाराबङ्की

बाराबङ्की की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी ने हमारे पास एक सम्वाद भेजा है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि वहाँ जवाहर-दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया था। दिन को एक बजे स्त्रियों की सभा हुई और ठीक ३ बजे २०० वालण्टियरों के साथ कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस से विराट जुलूस निकाला गया। जुलूस शहर की मुख्य-मुख्य सड़कों पर होता हुआ धनोखर तालाब पर पहुँचा, जहाँ ब्रह्मचारी धर्मदेव की अध्यक्षता में सभा हुई। सभा में पण्डित जवाहरलाल की वक्तृता पढ़ी गई, और उपस्थित जनता ने, जो लगभग ३५०० के थी, उसे दुहराया।

कन्नौज

यहाँ जवाहर-दिवस कई स्थानों से अधिक धूमधाम से मनाया गया। मकरन्द नगर और सराय मीरन में प्रभात-फेरियाँ घुमाई गईं। हर घर, इक्का-ताँगा, साईकिल और मोटर पर राष्ट्रीय झण्डे फहरा रहे थे। शहर में पूर्ण हड़ताल मनाई गई थी और एक विराट जुलूस निकाला गया था, जिसमें वानर-सेना भी सम्मिलित थी। जुलूस मुख्य बाज़ारों में निकाला गया और जुलूस भर में राष्ट्रीय नारे लगाए गए। बाद में रामलीला पार्क में एक विराट सभा हुई जिसमें श्री० काशीप्रसाद पाठक ने झण्डा फहराया और जवाहरलाल का आपत्तिजनक भाषण पढ़ा।

'काले हिन्दुस्तानी कभी भी गोरी जातियों के बराबर अधिकार नहीं पा सकते'

"महायुद्ध का इतिहास उल्लङ्घन किए हुए वचनों का इतिहास है"

"भारत को विदेशियों के बन्धन से छुड़ाओ"

११ नवम्बर को ११ बजे बम्बई के सरकारी अधिकारियों ने गत महायुद्ध का सन्धि-दिवस (Armistice Day) मनाया। पर शहर के निवासियों ने इसमें कुछ भी भाग नहीं लिया। उन्होंने सन्ध्या समय आज़ाद मैदान में एक अलग सभा की। सरदार प्रतापसिंह जी प्रेज़िडेण्ट थे।

श्रीयुत जमनादास द्वारकाप्रसाद ने अपने वक्तव्य में कहा कि यदि गत महायुद्ध में भारत इङ्गलैण्ड की सहायता न करता, तो बलिष्ठ ब्रिटिश साम्राज्य का आज पता भी न चलता। जर्मनी उन्हें अवश्य हरा देता। भारतीयों के धन तथा मनुष्यों के बलिदान से ही मित्र-दल ने विजय पाई। उन्हें उस समय सहायता की बड़ी आवश्यकता थी, इसलिए उन्होंने भारतवर्ष को बहुत से राजनैतिक अधिकार तथा अन्य सुविधाएँ देने के वचन दिए। परन्तु वह केवल एक राजनैतिक चाल मात्र थी। वे वचन पूरे किए जाने की इच्छा से नहीं दिए गए थे।

इसमें सन्देह नहीं कि भारत ही की सहायता से मित्र-दल ने विजय पाई थी। इस मत का समर्थन करने के लिए यह काफ़ी है कि गत युद्ध में केवल भारत ने अपने १४ लाख वीर सन्तान मित्र-दल की सहायता के लिए भेजे थे। यदि वीर-साहसी राजपूत, सिक्ख, पञ्जाब निवासी मुस्लिम मित्र-दल की सहायता न करते, तब जर्मन-सेना को पेरिस पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता था। भूतपूर्व क़ैसर का वह सुख-स्वप्न कि 'पन्द्रह दिन के अन्दर पेरिस पहुँच कर वहाँ मज़े में दावत खाऊँगा' बिलकुल पूरा हो जाता।

केवल यही नहीं, भारत की आर्थिक सहायता इससे भी बढ़ कर थी। इस सहायता की तो आप ठीक से कल्पना भी नहीं कर सकते। युद्ध के पहिले भी भारत हर साल क़रीब ६० करोड़ रुपया इङ्गलैण्ड को देता था। युद्ध के समय में तो इस सहायता का कोई ठिकाना ही नहीं था। यदि हम सरकारी ही रिपोर्ट पर विश्वास करें तो भारतवर्ष ने इङ्गलैण्ड को १५० करोड़ रुपया उपहार रूप में, तथा १७५ करोड़ रुपया सरकारी क़र्ज़ इत्यादि रूप में दिया था!! कई अन्य साधनों द्वारा भी इङ्गलैण्ड ने रुपया खींचा था। भारत की सारी आर्थिक शक्ति युद्ध में लगाई गई। इसका फल यह हुआ कि जब और देश, जो युद्ध में भाग नहीं ले रहे थे, सम्पत्ति बना रहे थे, भारत, जिससे युद्ध से कोई ख़ास सम्बन्ध न था, दूसरों के पीछे लुटा जा रहा था!

इस सहायता की बात को सर जेम्स विलाक्स ऐसे प्रसिद्ध लेखकों तक ने माना है। पर इस सब से हमें क्या फ़ायदा हुआ? सन्, १९२३ में मैं इङ्गलैण्ड गया था। लॉर्ड बर्नहेम से, जो साइमन कमीशन के एक सदस्य थे, मेरी बातचीत हुई। उन्होंने मुझसे साफ़ कह दिया—"भारतीयों को यह कभी भी नहीं सोचना चाहिए कि वे सफ़ेद जातियों के बराबर राजनैतिक अधिकार पा सकते हैं। वे काली जाति के हैं और मैं और मेरे देशवासी यह समझते हैं कि संसार की गोरी जातियों की उत्पत्ति काली जातियों के ऊपर शासन करने के लिए हुई है।" जब ब्रिटिशों के यह ख़यालात हैं तब यदि उन्होंने अपने वचनों का उल्लङ्घन किया, तो इस बात पर हमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। भारत के लिए गत महायुद्ध का इतिहास तो केवल उल्लङ्घन किए हुए, वचनों का इतिहास है।

सरकारी रिपोर्टें स्वतः लिखती हैं कि भारत के आधे किसानों को दोनों वक्त भोजन नहीं मिलता। इस दुर्दशा का अन्त करने का अब केवल एक साधन है, वह यह कि हम भारत को विदेशियों के बन्धन से छुड़ावें।

मैं अन्त में आप से प्रार्थना करूँगा कि आप गाँधी जी के अहिंसा के सिद्धान्त पर डटे रहें, इङ्गलैण्ड ने अपनी विजय ख़ून बहा कर प्राप्त की है; पर भारत में अहिंसात्मक युद्ध चला रहा है और इसमें विजय पाकर वह सारे संसार के सामने एक नया आदर्श स्थापित करेगा। यह युद्ध सत्य तथा अहिंसा पर निर्धारित है। यह संसार का सब से बलिष्ठ हथियार है और इसके धारण करने वालों को संसार का कोई दुश्मन नहीं हरा सकता।

कई और सज्जनों ने अपने वक्तव्य देकर जनता को आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

"भारतीय जनता में अशान्ति"

भारतीय किसानों की करुणापूर्ण दशा :: एक अङ्गरेज़ यात्री का कटु अनुभव!!

मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड, जो क़रीब ५ हफ़्ते से भारत में आए हुए हैं, व देश का भ्रमण करके उसकी आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक दशा का अध्ययन कर रहे हैं, तारीख़ १२ को आप इलाहाबाद पधारे थे।

जब से वे भारत में आए हैं, कई कॉङ्ग्रेस के नेताओं से मिले हैं, अनेक गाँवों में गए हैं और वहाँ के किसानों की दशा देखी है। वे ख़ास तौर से पण्डित मोतीलाल नेहरू तथा राष्ट्रपति जवाहरलाल से मिलने के उद्देश से आए थे।

वे पण्डित मोतीलाल जी से आनन्द-भवन में मिले और सरकार की आज्ञा प्राप्त करके राष्ट्रपति जवाहरलाल से नैनी जेल में उन्होंने भेंट की। मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड महात्मा गाँधी से नहीं मिल सके, क्योंकि सरकार ने उन्हें इजाज़त नहीं दी।

जब लीडर के सम्वाददाता ने उनसे भारत के विषय में अपने विचार प्रकट करने की प्रार्थना की तब उन्होंने कहा—"मैं भारत में निरीक्षण के लिए आया हूँ, अपने विचार प्रकट करने नहीं आया हूँ। मेरे हृदय में भारतीयों के लिए इतना आदर है कि मैं स्वतः उनसे कुछ भी नहीं कह सकता।

मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड ने हाल में भारत के विषय में कई लेख इङ्गलैण्ड, अमेरिका तथा जर्मनी के समाचार-पत्रों में प्रकाशन के लिए भेजे हैं। हम लोग इनके विचारों को उन पत्रों से सहज में मालूम कर सकते हैं।

बहुत आग्रह करने पर उन्होंने भारतीय किसानों की अवस्था के विषय में अपने विचार प्रकट करना स्वीकार किया। वे इलाहाबाद, आगरा होते हुए आए हैं। आगरे में वे कई गाँवों में गए। उन्होंने कहा कि वहाँ मुझे बड़े भयानक दृश्य नज़र आए। मेरी समझ में ही यह नहीं आता कि ये मनुष्य इतनी ख़राब दशा में कैसे रह सकते हैं। वहाँ के किसानों की दशा की तो मैं कल्पना तक नहीं कर सकता था।

"मैंने उनसे उनकी सम्पत्ति के विषय में कई प्रश्न पूछे थे। एक कुरता किस-किस के पास है? दो कितनों के पास हैं? कितनों के बच्चों को दूध मिलता है? कितनों के बच्चे स्कूल जाते हैं? इत्यादि कई प्रश्न मैंने उनसे पूछे। इससे मैंने यह हिसाब लगाया कि वे लगान दे सकते हैं, या नहीं।

"यदि स्वराज्य पर भी ध्यान न दिया जावे, यदि राजनैतिक विचारों का भी ख़याल न किया जावे, तब भी आजकल की मन्दी में वे अपना लगान किसी तरह से भी नहीं चुका सकते।

जब उनसे यह पूछा गया कि क्या आप समझते हैं कि जनता में वास्तव में क्या अशान्ति है तो उन्होंने उत्तर दिया—

"अवश्यमेव जनता में अवश्य बहुत अशान्ति फैली है। उनमें इतनी अशान्ति है, जितनी कि मनुष्य-जाति में होना सम्भव है। फिर यदि वे आन्दोलन करें तो उनका यह कार्य न्यायोचित क्योंकर न होगा।

"गुजरात यहाँ से ज़्यादा धनी है। भारत का कोई भी भाग इतना धनी नहीं है, जितना कि गुजरात है।"

मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड यहाँ से बनारस चले गए। वहाँ से वे कलकत्ता जाएँगे।

अदालत फूँक देने का प्रयत्न

लाहौर का १७वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ १६ ता० की रात्रि को सिटी मैजिस्ट्रेट की अदालत में किसी अव्यक्त व्यक्ति द्वारा आग लगाई गई थी। रात्रि को लगभग १० बजे एक पहरेदार ने रिकार्ड रूम के पीछे के दरवाज़े से धुँआ निकलते हुए देखा। उसने शीघ्र ही चपरासी को बुलवाया और उसकी सहायता से आग बुझाई। दरवाज़े के पास मिट्टी के तेल की एक बोतल पाई गई थी, परन्तु जाँच करने से मालूम हुआ कि आग लगाने के लिए पैट्रोल का उपयोग किया गया था। आग से केवल दरवाज़े का कुछ भाग जलने पाया था।

ख़ुफ़िया पुलिस के अफ़सर को इस्तीफ़ा देने की धमकी

बम्बई का १८वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ की 'प्रजातन्त्र फ़ौज' के एक सदस्य ने ख़ुफ़िया पुलिस की विशेष शाखा के डिपुटी कमिश्नर ख़ानबहादुर पेटीगरा को एक पत्र भेजा है, जिसमें उन्हें शीघ्र ही अपने पद से इस्तीफ़ा देने की धमकी दी गई है।

उसमें यह भी लिखा है कि यदि वे शीघ्र इस्तीफ़ा न देंगे, तो उन्हें उसका बहुत ही भयङ्कर परिणाम भोगना पड़ेगा।

प्रधान सचिव के नाम उनके पुराने मित्र की खुली चिट्ठी

"आपके सामने अब केवल दो मार्ग हैं। प्रथम तो यह है कि आप एक असली कॉन्फ्रेन्स का प्रबन्ध कीजिए और कॉङ्ग्रेस के नेताओं को जेल से मुक्त करके उनसे उनकी कही हुई पाँच शर्तों पर सन्धि कीजिए। या दूसरे मार्ग को ग्रहण करके अत्याचार तथा दमन को युद्ध की सीमा तक पहुँचा कर, अपने सिर पर भारत को खो देने का कलङ्क लीजिए। यदि आप दूसरा मार्ग ग्रहण करेंगे, तो मज़दूर दल तथा आपका यह मित्र भी आपके नेतृत्व में कार्य करने से इनकार कर देगा।"

—वाल्टर वाल्श

इस पत्र के लेखक डॉक्टर वाल्टर वाल्श हैं। आप इङ्गलैण्ड के सुप्रसिद्ध एवं विद्वान पुरुषों में से एक हैं। वर्तमान प्रधान सचिव रैम्ज़े मैकडॉनल्ड आपके पुराने मित्र—साथी हैं। यह पत्र मज़दूर-दल के प्रमुख पत्र "न्यू लीडर" (लन्दन) के तारीख़ २४ अक्टूबर के अङ्क में प्रकाशित हुआ है, उसका अनुवाद 'भविष्य' के पाठकों के मनोरञ्जनार्थ नीचे दिया जाता है।

—सम्पादक 'भविष्य'

"प्यारे मिस्टर मैकडॉनल्ड,

"चूँकि हम लोगों ने एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिए साथ-साथ कार्य किया है, मैं आशा करता हूँ, यदि मैं प्रेम-भाव से आपकी ग़लतियाँ बताऊँ तो आप उसे धृष्टता न समझेंगे। फिर चूँकि आपका समय बहुत बहुमूल्य है और मेरा भी बिलकुल मूल्यहीन नहीं है; मैं बिना प्रस्तावना के, सीधे अपने विषय पर लिखना आरम्भ करता हूँ—मैं आपसे भारत के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता हूँ।

"जब आपने ब्रिटिश मन्त्री का पद ग्रहण किया था तो एक उल्लू भी यह देख सकता था कि आपके विचारों की दृढ़ता की असली परीक्षा भारत के विषय में होगी। उसके महान नेता ने (जो आजकल आपका क़ैदी है) वह अपूर्व कार्य कर दिखाया था, जो संसार के इतिहास में किसी भी राजद्रोही ने नहीं किया था। आन्दोलन आरम्भ करने के पूर्व ही उसने खुले-आम आपको उसके शुरू होने की तारीख़ की तथा आन्दोलन के स्वरूप की सूचना दे दी थी। पर फिर भी आप उसके लिए तैयार न हो पाए। यह भी हो सकता है, कि आपने अपने पुराने प्रजातन्त्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्वाधीनता सम्बन्धी सिद्धान्तों की अवहेलना करके दूसरे दलों से यह तय कर लिया हो, कि आप पुरानी 'विदेशी नीति' का समर्थन करेंगे—इस आन्दोलन का सामना करने की यही तैयारी की हो। इसी सबको देख कर चित्रकार मिस्टर वेल्स ने इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्रियों की चित्रावली में आपके चित्र के नीचे "असावधानता की मूर्ति" लिखा है।

"पुरानी विदेशी नीति के समर्थन करने के लिए राज़ी हो जाने के कारण ही आपको भारतीय स्वराज्य की माँग को सुलह से तय करने के बजाय, दमन तथा अत्याचार द्वारा दबा देने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। प्रजा-सत्तात्मक भावना आपको स्वतन्त्रता की ओर खींचना चाहती है, पर युद्धप्रिय साम्राज्यवाद आपको अपने क्रूर तथा "पाशविक कृत्यों" की ओर घसीट ले गया है। (आप "पाशविक कृत्य") इन शब्दों को तथा इसके कहने वाले भूतपूर्व मन्त्री का ख़याल कीजिए। ये शब्द क्यों कहे गए थे? क्या वह यही शब्दावलि नहीं है, जो दक्षिण अफ़्रिका को साम्राज्य में शामिल रख सकती थी?

"प्रजातन्त्रवादी-युद्ध करते-करते मैं बुड्ढा हो गया हूँ, और मैं एक बार पीछे हटने को भी तैयार हो सकता हूँ; पर मैं अपने जीवन में इतना निराश कभी भी नहीं हुआ था, जितना अब यह देखकर हो रहा हूँ कि मज़दूर-दल का प्रथम प्रधान मन्त्री ही प्रजातन्त्र के टुकड़े-टुकड़े कर रहा है! हम लोग यह कभी नहीं सोच सकते थे। इतना परिश्रम, इतने कष्ट उठा कर हम लोगों ने आपको इस पद तक इसीलिए नहीं पहुँचाया था!

"आप हमें यह सिखाया करते थे, कि स्टार चेम्बर (एक स्वतन्त्र न्याय-गृह) प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। पर अब आप हमें बताइए कि बिना मुक़दमा किए नेताओं को जेल में ठूँसना, भाषण-स्वतन्त्रता का नाश करना, जनता की सभाओं की आज़ादी को रोकना, प्रेस की स्वतन्त्रता को छीनना तथा निर्विरोध मनुष्य तथा स्त्रियों के शरीरों को पुलिस व सेना के आघातों से चूर-चूर करना, कई लोगों के प्राण लेना व निरपराध हज़ारों को घायल करना—क्या ये सब अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा स्वतन्त्रता स्थापित करने के साधन हैं?

"सम्भव है आप मुझे इमरसन के उस कथन का ध्यान दिलावें कि "मूर्खता से एक ही बात पर स्थिर रहना कुन्दज़ेहनों का काम है, छोटे राजनीतिज्ञों का आदर्श है" पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है, कि बड़े राजनीतिज्ञों का बड़प्पन उनके वर्तमान विचार तथा पुराने विचारों की भिन्नता पर ही निर्भर है। या कहिए कि अपने "जीवन-आदर्श" से गिरने की गहराई ही उसकी महत्ता का चिन्ह है। हम दोनों ने बाइबिल की शिक्षा ग्रहण की है। शायद आपको ईसा के उस कथन का ख़्याल हो, जिसमें वह यह कहता है कि जो पुरुष एक बार हल की मूठ पर हाथ रख कर पीछे देखता है वह कार्य के योग्य नहीं है।

"आपके अतीत काल के जीवन को लोग भूल नहीं गए हैं, इसीसे आपसे न्याय की आशा की जाती है। मेमोरियल हॉल की उस सभा में मैं आपके साथ मञ्च पर था, जब आपके ख़ून के प्यासे ब्रिटिश सैनिकों ने उस पर धावा किया था। कार्डिफ़ में भी मैं आपके साथ था, जब मज़दूरों की ही एक भीड़ ने, पार्लियामेण्ट के एक सदस्य के नेतृत्व में हमला करके हमारी सभा भङ्ग की थी। ब्रिटिश मज़दूर-दल के पहले नेता केयर हार्डी के स्मरण में की जाने वाली पहली प्रार्थना के अवसर पर आपने ही हम लोगों से बताया था, कि युद्ध-मद से उन्मत्त देश-भाइयों को समझाने में असफल हुए निराश केयर हार्डी से जब आप स्टेशन पर मिले थे, आपने उनसे कहा था—"जाने दो हार्डी, हम लोग आपके कार्य फिर से शुरू करेंगे।" इस पर उन्होंने कहा था—"फिर से आरम्भ करना बहुत कठिन है।" क्या यह सुन कर आपको आश्चर्य होगा, कि आपके दल के बहुत से सदस्य भी आपके कार्यों के विषय में यही समझते हैं।

"मैं यहाँ आपको आपके उस प्रथम वाक्य का ध्यान दिलाता हूँ, जिससे आपने अपना सन्धि-सभा वाला वक्तव्य आरम्भ किया था। "शस्त्रों की आवश्यकता या अनावश्यकता देश की नीति पर निर्भर है"। पर इस बार जब आपको अपनी नीति चुनने का मौक़ा मिला तब आप उस नीति पर दृढ़ हुए। आपने उस नीति को चुना, जिससे आपको सब से अधिक युद्धास्त्रों की आवश्यकता पड़े व जिससे आपको साम्राज्य के भागों से युद्ध छेड़ना पड़े।

"मैं आपके उस कार्य का विशेष कृतज्ञता के साथ ध्यान करता हूँ, जब आपने श्रीयुत ई० डी० मोरेल की सहायता से यूनियन ऑफ़ डेमोक्रेटिक कण्ट्रोल की स्थापना की थी, जिसका उद्देश साफ़-साफ़ काग़ज़ पर लिखा हुआ रक्खा है। उसका उद्देश गुप्त राजनीति का अन्त करने का था, उसका उद्देश अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारों में मनुष्य मात्र में भ्रातृ-भाव फैलाने का था। उसमें आपने दूसरे कमज़ोर देशों को चूसने की तथा वश में रखने वाली नीति का घोर विरोध किया था। अब आप सोचते होंगे "आख़िर (मैंने यह मूर्खतापूर्ण उदारता क्यों दिखाई)।"

"आप अनेक मज़दूर-सभाओं में शामिल हुए हैं। साम्राज्यवाद का विरोध करते हुए, आपने कई बार कहा है—"मज़दूर-दल का ध्येय है, साम्राज्य न्यायपूर्ण तभी कहा जा सकता है, जब उसके प्रत्येक भाग को स्वतन्त्रता दे दी जावे और वे सरकारी अत्याचारों से न सताए जाकर स्वेच्छा से साम्राज्य में रहने को तैयार हों।" दूसरी जगह आपके ये शब्द थे:—

"मैं आशा करता हूँ, कुछ वर्षों में नहीं, बल्कि कुछ महीनों ही में हमारे साम्राज्य में एक नवीन उपनिवेश का निर्माण होगा, जो एक भिन्न जाति का होते हुए भी, समान आदर का पात्र होगा।"

"आपने कई किताबें भी लिखी हैं और अपनी 'एवेकनिङ्ग ऑफ़ इण्डिया' (भारत की जाग्रति) नामक पुस्तक में आपने ऐसे वाक्य लिखे हैं—"न्याय की दृष्टि से कोई भी जाति दूसरी जाति पर शासन नहीं कर सकती।"

"इस पराधीनता में भारत ने उपक्रम व उन्नति में जितनी ज़्यादा हानि उठाई है, उतनी किसी भी देश में नहीं देखी गई।" एक अन्य जगह आपने लिखा है—"भारत को स्वतन्त्रता दे देनी चाहिए।"

"फिर अब क्या हो गया है जो आपके विचार इतने बदल गए हैं। मुझे यहाँ यह लिखने की आवश्यकता नहीं है, कि इङ्गलैण्ड ही अमेरिका के संयुक्त राज्य की स्वतन्त्रता में रोड़ा बना था। अब वह भारतीय संयुक्त राज्य की स्वतन्त्रता में विघ्न डाल रहा है। परन्तु आख़िरी फल दोनों का एक ही होगा, क्या आप समझते हैं, आप अपनी पाशविक नीति से इसको बदल सकते हैं। मुझे इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री को लॉर्ड चैटम की प्रसिद्ध वाणी का ध्यान दिलाने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा था—"मेरे माननीय भाइयो, आप अमेरिका को कभी नहीं जीत सकते, कभी भी वश में नहीं रख सकते।" अब 'अमेरिका' के स्थान में 'भारत' रख दीजिए और उस वाणी की सचाई में कोई भी अविश्वास नहीं कर सकता।

"मुझे इस बात का अच्छी तरह से ध्यान है कि—गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स होने जा रही है। पर ऐसी कॉन्फ्रेन्स का नतीजा क्या होगा, जिसके आरम्भ होने के पूर्व ही भारत के नेता बिना मुक़दमा चलाए ही जेल में बन्द कर दिए जायँ, राजनैतिक क़ैदियों को बन्धन-मुक्त करने से इनकार किया जाय, कॉङ्ग्रेस को ग़ैर-क़ानूनी ठहरा दिया जावे (जिसके फल-स्वरूप देश की सब से बड़ी व सब से अधिक लोक-प्रिय संस्था की आवाज़ इसलिए बन्द कर दी जावे कि बाग़ी लोग सभा में नहीं बुलाए जा सकते)

(शेष मैटर १० वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के अन्त में देखिए)

उपनिवेशों का ब्रिटेन को मुँहतोड़ जवाब

ब्रिटेन के साथ वे स्वतन्त्र व्यापार के लिए तैयार नहीं हैं

मि० हेरल्ड कॉक्स ने 'मैनचेस्टर गार्जियन' में हाल ही में एक लेख प्रकाशित कराया है, उसमें उन्होंने यह लिखा है कि ब्रिटिश साम्राज्य का कोई भी उपनिवेश उसके माल की बिक्री के लिए अपने देशों में सहूलियत देने के लिए तैयार नहीं हैं। वे अपने देश के उद्योग-धन्धों और कला-कौशलों की वृद्धि में निरत हैं और चाहे उन्हें ब्रिटेन के विरुद्ध चुङ्गी की एक बड़ी दीवाल ही क्यों न खड़ी कर देना पड़े, वे व्यापारिक मामलों में उसके आगे झुकने वाले नहीं हैं। अब ब्रिटेन केवल इस बात के विचार से, कि वे उपनिवेश उसके साम्राज्य के अन्तर्गत हैं, उनसे आर्थिक लाभ की आशा नहीं कर सकता।

इम्पीरियल कॉन्फ्रेन्स में उपनिवेशों के मन्त्रियों की जो वक्तृताएँ हो रही हैं, उनसे यही निष्कर्ष निकलता है कि हम अभी तक उसी स्थिति में हैं जहाँ २८ वर्ष पहले थे। इन वक्तृताओं में सब से अधिक सारगर्भित वक्तृता केनेडा के प्रधान-मन्त्री मि० बैनेट की है। साम्राज्य से स्वतन्त्र व्यापार करने का आन्दोलन पहले-पहल सन् १८९७ में मि० जोज़फ़ चेम्बरलेन ने चलाया था और केनेडा के उस समय के प्रधान-मन्त्री सर विलफ़्रिड-लारियर ने उसका समर्थन किया था, परन्तु केनेडा के व्यापारियों ने इसके विरुद्ध आन्दोलन उठाया और अपने व्यापार की रक्षा के लिए ब्रिटेन के आयात पर चुङ्गी लगाने का गवर्नमेण्ट से अनुरोध किया। परिणाम यह हुआ कि सर विलफ़्रिडलारियर की योजना में सुधार किए गए और ब्रिटेन के जिन पदार्थों में प्रतिस्पर्धा का डर था, उन पर भारी चुङ्गी लगा दी गई और यह निश्चय किया गया कि यदि अब भी ब्रिटेन का वह माल केनेडा में आएगा जिसे रोकने का प्रयत्न किया गया है, तो उसके विरुद्ध चुङ्गी का पहाड़ खड़ा कर दिया जायगा। जिससे उसका आना बिलकुल असम्भव हो जायगा।

मि० बैनेट की योजना

केनेडा के वर्तमान प्रधान-मन्त्री मि० बैनेट की बिलकुल यही आयोजना है। उनका कहना है कि केनेडा के अनुदार-दल की नीति है 'केनेडा पहले'। उनका यह भी कहना है कि 'साम्राज्य की समस्याओं को सुलझाते समय मैं उसी नीति की रक्षा करूँगा।' 'केनेडा पहले' का अर्थ केवल यही नहीं है कि वह अपनी खेती की उपज के लिए, विशेषकर गेहूँ के लिए इङ्गलैण्ड में चुङ्गी-रहित स्वतन्त्र बाज़ार चाहता है, वरन उसके साथ ही केनेडा अपने यहाँ आने से ब्रिटेन का वह माल भी रोकना चाहता है जो वह स्वयं तैयार करता है या कर सकेगा। मि० बैनेट ने स्वतन्त्र व्यापार की अपनी योजना इस प्रकार रक्खी है :—

"मैं केनेडा में इङ्गलैण्ड और साम्राज्य के दूसरे भागों को उस समय व्यापार-स्वातन्त्र्य देने के लिए तैयार हूँ, जब प्रचलित चुङ्गी में या जिन पदार्थों पर नई चुङ्गी लगे वह १० प्रतिशत बढ़ा दी जाय और केनेडा जो स्वतन्त्रता दूसरे देशों को दे, वही उसे उन देशों में मिले।"

अपनी इस आयोजना को समझते हुए उन्होंने लिखा है कि इसका उद्देश्य उन उद्योग-धन्धों की रक्षा करना है, जो अभी देशों में चल रहे हैं या जो उत्पन्न होंगे। इस स्थान पर यह प्रश्न उठ सकता है कि इस आयोजना से ग्रेट-ब्रिटेन के व्यापार को क्या लाभ होगा? इस प्रश्न के उत्तर के लिए मि० बैनेट ने निम्न शब्द अपनी वक्तृता में जोड़ दिए हैं :—

"इसलिए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि स्वतन्त्र व्यापार के सम्बन्ध में विशेष सुविधाओं का विचार न किया जाय। मेरे विचार से साम्राज्य भर में स्वतन्त्र व्यापार न तो आवश्यक है, और न सम्भव है।" जो परिस्थिति आज सन् ३० में उपस्थित हुई है वही सन् १९०२ में उपस्थित हुई थी। सन् १९०२ की उपनिवेश कॉन्फ्रेन्स में भी इस आशय का एक प्रस्ताव पास हुआ था कि—"यह कॉन्फ्रेन्स यह महसूस करती है कि उपनिवेशों की वर्तमान परिस्थिति में इङ्गलैण्ड और उसके साम्राज्य के अन्तर्गत स्वतन्त्र व्यापार प्रचलित करना सम्भव नहीं है।"

मि० स्कलिन के विचार

दूसरे उपनिवेशों की परिस्थिति भी प्रायः यही है। ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्री मि० स्कलिन की वक्तृता की भाषा अधिक ज़ोरदार है। उनका कहना है "ऑस्ट्रेलिया की सब से पहली नीति ऑस्ट्रेलिया के उद्योग-धन्धों की रक्षा करना है और बाद में ब्रिटिश व्यापार के लाभ की बात सोचना।" इसका अर्थ यह है कि ऑस्ट्रेलिया ब्रिटिश और अन्य देशों के आयात से सदैव अपनी रक्षा करेगा। केनेडा की तरह ऑस्ट्रेलिया भी अपने खाद्य पदार्थों की खपत के लिए ब्रिटेन को चुङ्गी नहीं देना चाहता। साथ ही ब्रिटेन की वस्तुओं को अपने यहाँ बिना चुङ्गी के नहीं आने देना चाहता।

इसी प्रकार, यद्यपि कुछ नर्मी से, न्यूज़ीलैण्ड ने भी इङ्गलैण्ड को मुँहतोड़ जवाब दिया है। वहाँ के प्रधान मन्त्री का कहना है कि "ब्रिटेन की व्यापारिक प्रतिस्पर्धा से न्यूज़ीलैण्ड के उद्योग-धन्धों की रक्षा अवश्य होनी चाहिए।" दक्षिण अफ़्रिका के प्रधान मन्त्री मि० हैर्वेज के शब्द उतने ही कड़े हैं, जितने केनेडा और ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्रियों के। बहुत सी आर्थिक कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए, उन्होंने कहा है कि "साम्राज्य के अन्तर्गत स्वतन्त्र व्यापार ही इन आर्थिक कठिनाइयों की जड़ बतलाई जाती है। और दक्षिण अफ़्रिका की यूनियन यह शीघ्र ही जतला देना चाहती है कि वह स्वतन्त्र व्यापार को किसी प्रकार मन्ज़ूर करने के लिए तैयार नहीं है। 'यूनियन' (दक्षिण अफ़्रिका) में जो उद्योग-धन्धे स्थापित किए गए हैं, वे चुङ्गी के ही कारण सफलता प्राप्त कर सके हैं, नहीं तो साम्राज्य की व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में उनका नाम-निशान भी न रह गया होता।"

उपर्युक्त वक्तव्यों से यही पता चलता है कि इन उपनिवेशों की नीति ब्रिटेन के माल पर कड़ी चुङ्गी लगा कर अपने देशों के उद्योग-धन्धों की उन्नति करना है। इस नीति का ध्यान रखते हुए वे ब्रिटेन के माल से अन्य देशों के माल पर अधिक चुङ्गी लगा कर उसे व्यापारिक सुविधाएँ दे सकते हैं।

जमालपुर में गोली चली

चार मरे : २४ सिपाही घायल

पटना का १४वीं नवम्बर का समाचार है कि बिहार और उड़ीसा गवर्नमेण्ट ने इस आशय की एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है कि:—'पिछले चार-पाँच दिनों से रेलवे कुली शराब और ताड़ी की दुकानों पर धावा कर रहे हैं; क्योंकि वहाँ ऐसी अफ़वाह फैली हुई है कि शराब की बिक्री के ही कारण खाद्य पदार्थों की क़ीमत बढ़ गई है। इसलिए उन दुकानों की रक्षा के लिए पुलिस-गार्ड नियुक्त किए गए थे। गत ८वीं नवम्बर को एक बड़ी भीड़ ने पुलिस को धमकी दी और जब तक उनमें कुछ आदमी गिरफ़्तार कर लिए गए, तब तक भीड़ वहाँ से नहीं हटी। १०वीं ता० को एक कॉन्स्टेबिल, जो एक शराब की दुकान पर पहरा दे रहा था, पीटा गया; इसी प्रकार १२वीं नवम्बर को भी जो कॉन्स्टेबिल पहरा दे रहे थे, पुलिस की एक भीड़ के द्वारा पीटे गए। सन्ध्या समय पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट ने १० या १२ आदमी गिरफ़्तार किए। गिरफ़्तारी से लोगों में सनसनी फैल गई और उन्होंने पत्थरों की वर्षा कर पुलिस के चङ्गुल से गिरफ़्तार व्यक्तियों को मुक्त कर दिया और उसे पीछे हटा दिया। जब भीड़ चेतावनी देने पर भी न हटी, तब ४-५ बार गोलियाँ चलाई गईं। तिस पर भी भीड़ आगे की ओर बढ़ती आई और पुलिस को दो भागों में बाँट कर उसे चारों ओर से घेर कर पत्थर बरसाना प्रारम्भ कर दिया। पुलिस को लाचार होकर अपनी आत्म-रक्षा के लिए फिर गोली चलानी पड़ी। इससे चार आदमी मरे, चार सख़्त घायल हुए, और १५ को मामूली चोट आई। पुलिस के भी २४ आदमी घायल हुए। कमिश्नर और डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट भागलपुर पहुँच गए हैं और वर्कशाप के प्रतिनिधियों से मिलकर उन्होंने शान्ति स्थापित कर दी है।

* * *

(९ वें पृष्ठ का शेषांश)

इसका साफ़ मतलब तो यह है कि आप असली समस्या को टाल रहे हैं। अपनी राजनैतिक बुद्धिमत्ता से आप इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि कॉन्फ्रेन्स में विरोधी विचार प्रकट किए जावें और भिन्न-भिन्न तथा विरोधी माँगें पेश की जावें, जिससे खुश होकर आप कह सकें—"मैंने आपसे पहले ही कहा था कि भारत अभी स्वराज्य चलाने क़ाबिल नहीं है। इसलिए परोपकारी इङ्गलैण्ड को वहाँ अवश्य रहना पड़ेगा, शासन के काम में हाथ बटाना पड़ेगा।" यह तो "गोरी जातियों का ठेका है।" फिर इसके बाद बढ़ते हुए आन्दोलन को ख़ून की नदियों में डुबोना—क्या आप इस नीति की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार हैं? यह बेहतर होगा कि आप अपने पुराने सिद्धान्तों का स्मरण करें व यह सोचें कि भविष्य में लोग आपके विषय में क्या लिखेंगे। आपने अपने मन्त्रि-मण्डल के और भी सदस्यों को अपने मत का कर लिया है। वे भी अपने बार-बार किए गए वादों से हटने से नहीं शर्माते हैं। परन्तु जो प्रधान मन्त्री इस वक्त त्याग-पत्र नहीं देता है, सारी बुराई उसके सिर पर आवेगी।

"आपके सामने अब केवल दो मार्ग हैं। प्रथम तो यह है कि आप एक असली कॉन्फ्रेन्स का प्रबन्ध कीजिए और काँङ्ग्रेस के नेताओं को जेल से मुक्त करके उनसे उनकी कही हुई पाँच शर्तों पर सन्धि कीजिए। या दूसरे मार्ग को ग्रहण करके अत्याचार तथा दमन को युद्ध की सीमा तक पहुँचाइए और अपने सिर पर भारत को खोने का कलङ्क लीजिए। यदि आप दूसरा मार्ग ग्रहण करेंगे तो मज़दूर-दल तथा आपका यह मित्र भी आपके नेतृत्व में कार्य करने से इनकार कर देगा।"

—वाल्टर वाल्श

लॉर्ड इर्विन की 'दोस्ती' का नमूना

भविष्य में भी भारत को स्वराज्य की कोई आशा नहीं

भारतीय गवर्नमेण्ट का पार्लियामेण्ट को सुधारों का ख़रीता

अभी हाल ही में भारतीय गवर्नमेण्ट ने पार्लियामेण्ट को एक ख़रीता (Despatch) भेजा है, जिसमें उसने भारत के शासन-विधान में आवश्यक सुधारों की आयोजनाएँ पेश की हैं। नीचे उन आयोजनाओं और उन पर की गई कुछ समालोचनाओं का सार दिया जा रहा है :—

भारतीय स्वराज्य

"किसी भी देश के शासन-विधान की कुञ्जी उसकी सेण्ट्रल गवर्नमेण्ट के हाथ में रहती है। इस सम्बन्ध में भारतीय गवर्नमेण्ट ने जो योजनाएँ पेश की हैं, वे केवल साइमन रिपोर्ट की पुनरावृत्ति हैं ; अन्तर केवल इतना ही है कि उसमें भारतीयों के मनोभावों को सन्तुष्ट करने के लिए उसकी भाषा बदल दी गई है। भारतीयों को सन्तुष्ट करने के लिए एक जगह ऐसी ही बनावटी भाषा में ख़रीते में लिखा है कि 'ऐसा प्रतीत होता है कि पिछले कुछ ही महीनों के सत्याग्रह-आन्दोलन ने स्पष्ट रूप से राष्ट्र की शक्ति और सीमा बतला दी है। यह साफ़ ज़ाहिर है कि उनकी ओर हर एक जाति के सुशिक्षित हिन्दुओं की सहायता बहुत अधिक तादाद में है और जो कार्यक्रम में मतभेद होने से आन्दोलन में सम्मिलित नहीं हुए, उनकी भी उसके उद्देश्यों से पूर्ण सहानुभूति है। इसमें भी सन्देह नहीं कि इस राष्ट्रीय जागृति में अल्प संख्यक जातियों (मुसलमानों, सिक्खों आदि) का भी बहुत हाथ है।' यह तो हुई भारतीयों को सम्भ्रान्त करने की बात ; परन्तु सुधारों की योजना में इस प्रकार की सन्तुष्टि का नाम तक नहीं है। भारत साम्राज्य के अन्य उपनिवेशों की बराबरी के हक़ों और ग्रेट-ब्रिटेन का साथी बनने की आशा लगाए हुए था, परन्तु योजना में पार्लियामेण्ट और भारतीय धारा-सभा में जो अधिकारों का बटवारा हुआ है, उसके अनुसार पार्लियामेण्ट के हाथ में अधिकारों की कुञ्जी रहेगी और भारत उसकी अँगुली पर गूँगे कठपुतले की नाईं नाचा करेगा। भारत को जो हक़ दिए गए हैं, उनके अनुसार, न तो शासन-विधान में उसकी देख-रेख रहेगी और न गवर्नमेण्ट की व्यवस्थापिका सभा पर भी उसका कोई हक़ रहेगा। जब कि भारत के राजनीतिज्ञ स्वराज्य की ओर टकटकी लगाए हुए थे ; गवर्नमेण्ट ने ऐसी योजना तैयार की है जिसके अनुसार वह धारा-सभा की बातें तो सब सुनेगी, परन्तु उसे मानना या न मानना उसके अधिकार में रहेगा ; वह केवल वे ही बातें मानने के लिए तैयार होगी, जिनका आदेश पार्लियामेण्ट देगी। संसार के शासन-विधानों में ऐसे उदाहरण ढूँढे भी न मिलेंगे, जिनमें व्यवस्थापिका सभाएँ, धारा-सभा के लिए उत्तरदायी न हों। इस सम्बन्ध में भारतीय गवर्नमेण्ट ने जो योजना पेश की है उसमें कोई ऐसी बात नहीं है, जिसमें हम गर्व से गर्दन ऊँची कर सकें। व्यवस्थापिका सभा में धारा-सभा के चुने हुए सदस्यों में से एक या दो सदस्य सलाहगीर नियुक्त किए जायँगे, जिनका निर्वाचन गवर्नर-जनरल स्वयं करेगा और उसकी इच्छा पर ही उसका अस्तित्व निर्भर रहेगा। यदि व्यवस्थापिका सभा के कुछ सदस्य वायसराय को केवल यह विश्वास दिला दें, कि कोई प्रस्ताव पार्लियामेण्ट के उत्तरदायित्व के बाहर है, तो धारा-सभा की पूरी मदद रहते हुए भी, वे कोई प्रस्ताव पेश न कर सकेंगे। उन्हें इस्तीफ़ा देने के सिवाय कोई दूसरा चारा नहीं रह जाता !

धारा-सभा, वायसराय द्वारा चुने हुए मेम्बर पर अविश्वास का प्रस्ताव पास नहीं कर सकती। उनके वेतन का निश्चय वायसराय स्वयं करेगा ; धारा-सभा को उसका निर्णय करने का कोई अधिकार न होगा। सेण्ट्रल गवर्नमेण्ट में केवल इतने ही सुधार की आयोजना की गई है, कि वायसराय के निर्वाचित मेम्बर गवर्नमेण्ट की सहायता के लिए, जो ब्रिटिश पार्लियामेण्ट के लिए उत्तरदायी है और जिसकी नीति से ब्रिटेन की स्वार्थ-साधना होगी, भरसक उद्योग करें। ऐसी परिस्थिति में कोई इस बात का पता नहीं लगा सकता कि साइमन कमीशन की आयोजनाओं और 'भारत के दोस्त' और सुहृद वायसराय की आयोजनाओं में क्या अन्तर है।

योजना के अनुसार पार्लियामेण्ट निम्न ११ बातों के लिए उत्तरदायी होगी, जिनमें हस्तक्षेप करने का अधिकार धारा-सभा को न होगा :—

(१) उन महों का शासन, जिनके लिए सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट्स ज़िम्मेदार है, (२) बाहरी आक्रमण से भारत की रक्षा करना, (३) साम्राज्य और विदेशों से सम्बन्ध रखने वाली बातें, (४) भारत और ब्रिटिश साम्राज्य के बीच में उठने वाली समस्याएँ, (५) अन्तर्राष्ट्रीय क़र्ज़ या साम्राज्य का ऐसा कोई क़र्ज़ जिसमें भारत सम्मिलित हो, (६) देश के अन्दर शान्ति रखना, (७) आर्थिक समस्याएँ और वर्तमान क़र्ज़ का निबटारा, (८) अल्प-संख्यक जातियों की रक्षा, (९) अनुचित आर्थिक और व्यापारिक निर्णयों में दख़ल देना, (१०) उन नौकरियों का अधिकार, जिनका निर्वाचन भारत-मन्त्री करते हैं, (११) शासन-विधान की रक्षा।

ब्रिटेन का 'गिर्वी' भारत

गवर्नमेण्ट अपने ख़रीते में यह स्पष्ट रूप से क़बूल करती है कि गवर्नमेण्ट का मुख्य स्तम्भ उसका अर्थ-विभाग है ; परन्तु इस अत्यन्तावश्यक विषय में भी भारतीयों को कुछ अधिकार न दिए जायँगे। वे यह मानते हैं, कि देश में यह विश्वास फैलता जाता है कि भारतीय गवर्नमेण्ट की आर्थिक नीति भारत के लाभ के लिए नहीं है, वरन उसकी नीति 'ह्वाइट हॉल' निर्धारित करता है और वह अङ्गरेज़ों के लाभ के लिए होती है ; परन्तु भारतीय गवर्नमेण्ट का ढाँचा उसी प्रकार बना रहेगा जैसा अब तक रहा है और आर्थिक और व्यापारिक मामलों में पार्लियामेण्ट का ही उत्तरदायित्व बना रहेगा ! अर्थ-विभाग भारतीयों को न देने का मुख्य कारण यह है कि भारत इङ्गलैण्ड की तलवार के बदले में गिर्वी रक्खा हुआ है। गवर्नमेण्ट की फ़ौज के और गृह-विभाग के ख़र्चे इतने बढ़े हुए हैं, कि अर्थ-विभाग को हाथ से निकाल कर वह उन्हें सुरक्षित नहीं रख सकती। इस सम्बन्ध में व्यवस्थापक सभा के किसी भारतीय सदस्य ने गवर्नमेण्ट की नीति का विरोध भी किया था और कहा था कि फ़ौज और गृह-विभाग का ख़र्च निकाल कर, बाक़ी भारतीयों के हाथ सुपुर्द कर दिया जाय। परन्तु गवर्नमेण्ट ने उसका विचार १० साल बाद अगले सुधारों तक के लिए टाल दिया। जब भारतीय अर्थ के छोटे-मोटे भाग पर अगले सुधारों के बाद विचार करने के योग्य होंगे, तो न जाने वे कभी उसके सम्पूर्ण अधिकार के योग्य भी होंगे या नहीं। भारतीयों को यही तो 'स्वराज्य' दिया जा रहा है।

फ़ौज के सम्बन्ध में ब्रिटेन का अभिप्राय

गवर्नमेण्ट यद्यपि कालान्तर में अर्थ और न्याय और शान्ति-रक्षा विभागों के कुछ सीमित अधिकार देने का आभास देती है, परन्तु भारतीयों को या उत्तरदायी व्यवस्थापिका को फ़ौज का अधिकार देने का तो कभी नाम ही नहीं लेती। वह इस बात का आभास भी नहीं देती कि किसी ज़माने में फ़ौज भी भारतीयों के अधिकार में आ सकेगी। भारतीय गवर्नमेण्ट की फ़ौज सम्बन्धी आयोजनाओं और साइमन कमीशन की आयोजनाओं में केवल इतना अन्तर है, कि साइमन कमिटी ने भारतीय गवर्नमेण्ट के हाथों से सेना का उत्तरदायित्व शीघ्र ही छीन लेने की सिफ़ारिश की है, और भारतीय गवर्नमेण्ट ने यह अधिकार उस समय तक के लिए स्थगित कर दिया है, जब तक केन्द्रीय गवर्नमेण्ट को कुछ उत्तरदायित्वपूर्ण अधिकार प्राप्त न हो जायँ। इस प्रकार राष्ट्रीय फ़ौज की उत्पत्ति भारत में कभी न हो सकेगी, जो राष्ट्रीय उन्नति का मुख्य आधार है। भारतीय अपनी रक्षा आप करने में सदैव असमर्थ रहेंगे ; और जैसे ही गवर्नमेण्ट भारतीयों को स्वराज्य के अधिकार देगी, उसी समय फ़ौज उसके हाथों से निकाल कर पार्लियामेण्ट के सुपुर्द कर दी जायगी। और इस प्रकार राष्ट्र के हाथ-पैर काट कर गवर्नमेण्ट भारतीय राष्ट्र के सुधार की आयोजनाएँ देने की कृपा करेगी और उसका राष्ट्रीय जीवन जागृत करने का प्रयत्न करेगी ! यदि भारत की ब्रिटिश गवर्नमेण्ट धारा-सभा के उत्तरदायित्व में यूनीटरी शासन स्थापित करती और फ़ौज को अस्थायी रूप से गवर्नर-जनरल के हाथों में रखती ; और यदि सीमित, परन्तु अल्प-समय के अन्दर फ़ौज का भारतीयकरण (Indianization) हो जाता और सीमित समय के अन्दर यदि फ़ौज उत्तरदायी व्यवस्थापिका के हाथ में सौंप दी जाती, तो शायद भारतीय उस योजना पर कुछ विचार करते। परन्तु गवर्नमेण्ट की ऐसी नृशंस और बर्बर योजनाओं पर विचार करना तो दूर रहा, उन्हें ध्यान में लाना ही भारतीयों का अपमान है। इन योजनाओं में पद-पद पर अविश्वास की गन्ध आती है और उनसे स्पष्ट मालूम होता है कि ब्रिटिश अभी भी अपने को सर्व-श्रेष्ठ समझने और भारतीयों को सदैव पददलित रखना चाहते हैं !!!

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इत्मीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

२० नवम्बर, सन् १९३०

एक आवश्यक निवेदन

पाठकों को शायद यह बतलाना न होगा कि 'भविष्य' का प्रकाशन एक ऐसी सङ्कटपूर्ण एवं विकट परिस्थिति में शुरू किया गया था, जब कि देश का राजनैतिक वातावरण एक बार ही उसके विरुद्ध था। जिन-जिन आपत्तियों और अत्याचारों का उसे अब तक शिकार होना पड़ा है, पाठकों से यह बात भी छिपी न होनी चाहिए, अस्तु।

यह सत्य है कि 'प्रेस-ऑर्डिनेन्स' २६ अक्टूबर को समाप्त हो गया, किन्तु अभी उसके भाई-बन्धु आठ दूसरे ऑर्डिनेन्स हमारे सामने हैं। आजकल का शासन इतना निरङ्कुश है कि उसे देखते हुए हम अपने को किसी भी समय सुरक्षित नहीं समझ सकते। अतएव जब तक परिस्थिति से मुक़ाबला करने के लिए हम तैयार न हो लें, अपने मनोभावों को निर्भीकतापूर्वक व्यक्त कर, हम आपत्ति मोल लेने के पक्ष में नहीं हैं। इसका परिणाम यह होगा कि जो थोड़ी-बहुत सेवा इस समय 'चाँद' और "भविष्य" द्वारा हो रही है, उसमें भयङ्कर बाधा उपस्थित हो जायगी! हम सचाई और वास्तविकता की ओर से अपनी दृष्टि फेर कर केवल काग़ज़ काला करने की रस्म अदा करना नहीं चाहते; अतएव कुछ दिनों तक हमने 'सम्पादकीय विचार' शीर्षक स्तम्भ को जान-बूझ कर सूना रखने का निश्चय किया है।

परिस्थिति के अनुकूल हम अधिक से अधिक सुदृढ़ प्रबन्ध करने की चेष्टा कर रहे हैं, जैसे ही हमारी इच्छानुकूल प्रबन्ध हुआ, उसी क्षण से हम अपने विचार निर्भीकता पूर्वक पाठकों के सामने उपस्थित करने लगेंगे—फिर उसका परिणाम चाहे जो भी हो। कुछ दिनों के लिए पाठक हमें क्षमा करें!

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर!
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

—रामरखसिंह सहगल

* * *

"बिना स्वराज्य मिले मूँछ रखना हिमाक़त है"

नेताओं ने मूँछें मुड़ा दीं

लाहौर का समाचार है कि गुजरात जेल में निम्न नेताओं ने अपनी मूँछें मुड़वा डाली हैं:—डॉ० अन्सारी, श्री० गोपीचन्द भार्गव; श्री० खानचन्द देव, लाला दुनीचन्द (अम्बाला वाले), और मौलाना हबीबुल रहमान। कहा जाता है, इन नेताओं का कहना है कि बिना स्वराज्य प्राप्त किए मूँछों का रखना हिमाक़त है। अतएव जब तक भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं होती, वे मूँछ न रक्खेंगे।

'पीछे क़दम न हटाओ': व्यापारियों को सर्दार पटेल का आदेश

बम्बई में १४वीं नवम्बर को मांडवी में खादी भण्डार का उद्घाटन करते हुए सर्दार पटेल ने जनता से युद्ध जारी रखने की अपील की है और कहा है कि वे अब नेताओं का मुँह न ताकें। उन्होंने अपने भाषण में व्यापारियों के त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा की, उन्हें युद्ध की इस स्थिति में पीछे हटने की भयङ्कर हानि से सचेत किया। अन्त में उन्होंने कहा कि "यदि आप (युद्ध में) थक गए हों, तो जहाँ हैं वहीं बने रहें; यदि आप में शक्ति है तो आगे बढ़ें—परन्तु अपने क़दम पीछे कभी न हटाएँ।"

ढाका के हिन्दू-मुसलमान फिर मिल गए

ढाका का १४ वीं नवम्बर का समाचार है कि, पिछले हिन्दू-मुस्लिम उपद्रव के बाद वहाँ मौलवी ग़ुलाम मुहम्मद चौधरी के सभापतित्व में कारोनेशन पार्क में उस दिन एक सभा हुई, जिसमें हिन्दू-मुसलमान उपस्थित थे। सभा में कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्त्ताओं के भाषण हुए और गोलमेज़-परिषद के विरोध में एक प्रस्ताव पास किया गया। इसके उपलक्ष में वहाँ के बहुत हिन्दू-मुसलमानों ने अपनी दुकानें तिरङ्गे राष्ट्रीय झण्डों से सजाई थीं। सभा के समय पुलिस के बहुत आदमी उपस्थित थे।

पटना म्युनिसिपैलिटी पर गवर्नमेण्ट का पञ्जा

पटना का १४वीं नवम्बर का समाचार है कि बिहार और उड़ीसा की गवर्नमेण्ट ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसके अनुसार पटना सिटी म्युनिसिपैलिटी को दो साल के लिए गवर्नमेण्ट ने अपने अधिकार में कर लिया है, क्योंकि गवर्नमेण्ट की राय में पटना म्युनिसिपैलिटी के कमिश्नर अपने कर्त्तव्य पालन के अयोग्य हैं और उनके ऊपर जो ज़िम्मेदारियाँ छोड़ दी गई हैं, उन्हें निभाने में उन्होंने सदैव लापरवाही दिखाई है। उपर्युक्त समय तक गवर्नमेण्ट ऑफ़िसर ख़ानबहादुर मि० हमीद वे सब कार्य करेंगे, जिसके लिए म्युनिसिपिल-बोर्ड एक्ट के अनुसार ज़िम्मेदार है।

* * *

प्रेम-मन्दिर में—

[श्री० गणेश पाण्डेय]

आवे मारितर एक प्रसिद्ध पादरी था। वह लम्बे डील-डौल का चञ्चल, किन्तु साधुचेता था। उसका विचार बड़ा दृढ़ था, वह कभी अपने विचार से विचलित न होता था। उसकी धारणा थी कि ईश्वरीय ज्ञान उसे यथेष्ट है। ईश्वर की सभी इच्छाओं, सभी इरादों से वह परिचित है, इस बात का भी उसे अभिमान था।

जिस समय वह अपने छोटे गाँव के बगीचे में लम्बे डग भरता हुआ विचरण करता, समय-समय पर उसके मन में प्रश्न उठता—"ईश्वर ने ऐसा क्यों किया?" और कल्पना से ईश्वर के पद को अधिकृत कर अविचलित भाव से विचारमग्न हो जाता और प्रत्येक कार्य का कारण ढूँढ़ निकालता। "हे परमेश्वर, तुम्हारा कौशल, तुम्हारी सृष्टि ज्ञानातीत है"—ईश्वर के भक्तों की तरह यह नम्र बात भूल कर भी वह ज़ुबान से न निकालता। वह विचार करता—"मैं ईश्वर का दास हूँ, अतः उसके कार्यों का कारण मुझे ज्ञात रहना ही चाहिए, यदि मालूम न हो सके तो अनुमान कर लेना चाहिए।"

उसके मन में यह बात उठती कि प्रकृति के सारे द्रव्य शुद्ध और प्रशंसनीय न्याय के अनुसार बनाए गए हैं; यथा जागरण को आनन्दमय करने के लिए उषा की सृष्टि हुई, खेतों के पकने के लिए दिन की सृष्टि, उन्हें सींचने के लिए जल-धारा की और सोने के लिए अन्धकारमय रात्रि की सृष्टि हुई है। छहों ऋतु खेती के लिए उपयोगी हैं। उसके मन में कभी सन्देह नहीं होता कि प्रकृति का कोई उद्देश्य नहीं है। वह समझता था कि जीव-मात्र विभिन्न युगों, जलवायु एवं जड़ पदार्थों के कठोर नियमों में जकड़े हुए हैं।

केवल वह स्त्रियों से घृणा करता था। विवेक से अनियन्त्रित होकर वह उन्हें घृणित जीव समझता था और स्वाभाविक प्रकृति के वश हो वह उनकी अवज्ञा किया करता। वह प्रायः प्रभु ईसा मसीह की यह वाणी दुहराया करता—"मानवी! तुमसे मुझे क्या मतलब?" वह यहाँ तक कहता कि—"ईश्वर अपने हाथ द्वारा किए इस कार्य-विशेष से स्वयं असन्तुष्ट है।" वह स्त्रियों को कवि के शब्दों में—"अवगुण आठ सदा उर रहहीं" ऐसा समझता। वह सोचता कि स्त्री ही शैतान है—इसी ने तो आदि पुरुष को माया के पाश में आबद्ध किया था और अब भी पुरुषों का अनिष्ट करने में सदा सन्नद्ध रहती है। वह स्त्रियों के नाशकारी अङ्ग की अपेक्षा उनके प्रेममय हृदय से अधिक घृणा करता था।

वह प्रायः अनुभव करता कि स्त्री की कोमलता उसे बद्ध करना चाहती है। यद्यपि वह अपने को अजेय समझता, किन्तु स्त्रियों के हृदय में जो प्रेम की ज्योति जगमगाती रहती है, इसे सोच कर वह क्रुद्ध हुए बिना न रहता। उसे यह विश्वास था कि ईश्वर ने पुरुषों को ठगने एवं उनकी परीक्षा करने के लिए स्त्रियों की सृष्टि की है। आत्म-रक्षा के लिए पहले ही से तैयारी किए बिना स्त्रियों के पास जाना उचित नहीं। आलिङ्गन करने के लिए पसारे हुए हाथों और चञ्चल नेत्रों के कारण वह उन्हें एक प्रकार का फन्दा ही समझता।

वह केवल भिक्षुणियों के साथ कुछ रिआयत दिखलाता। वह यह समझता कि ब्रह्मचर्य व्रत की शपथ लेकर वह (भिक्षुणियाँ) विषयों से मुक्त हो चुकी हैं। किन्तु फिर भी उनके साथ कठोर बर्ताव करने से वह बाज़ न आता, क्योंकि याजक होकर भी वह जिस कोमलता को त्याग कर चुका था, उसे वह भिक्षुणियों के संयत हृदय—उनके पवित्र हृदय—में देखता था। उनकी चितवन से वह यह समझता कि भिक्षुओं की दृष्टि की अपेक्षा उनकी दृष्टि पूरित है। वह यह बात उनके उल्लास एवं प्रभु ईसा मसीह के प्रति उनकी प्रगाढ़ भक्ति से समझता। इस विशुद्ध प्रेम को स्त्रियों का प्रेम कहने पर वह चिढ़ जाता! यही क्यों, उनके विद्या के प्रति प्रेम, कण्ठ-स्वर की कोमलता, उनके आयत नेत्रों; एवं वह जब उन्हें कठोरता से तिरस्कार करता, उस समय के विनम्र अश्रुपात को भी वह पापमय समझता।

मठ के दरवाज़े को पार करके वह अपनी पोशाक झाड़ लेता, और फुर्ती से चला जाता, मानो किसी आसन्न-विपत्ति से वह भागा जा रहा हो। उसकी एक भानजी थी, वह अपनी माँ के साथ पास ही के एक छोटे से मकान में रहती थी। उसकी दृढ़ इच्छा थी कि उसे भी भिक्षुणी बनाऊँगा।

वह लड़की देखने में सुन्दर तथा चञ्चल प्रकृति की थी। लोगों को चिढ़ाने में वह एक ही थी। जिस समय उसका मामा व्याख्यान देने लगता, वह हँसने लगती। जब वह उस पर नाराज़ होता, वह उसे छाती से दबा कर प्रेम से चुम्बन करने लगती। वह धर्म-याजक अनिच्छा से अपने को उस आलिङ्गन से छुड़ाने की कोशिश करता, लेकिन उसे एक प्रकार का विशेष आनन्द मिलता, एवं पुरुष-मात्र के हृदय में जो पितृ-स्नेह भीतर ही भीतर विराजमान है, उसी की अनुभूति उसके हृदय में जाग उठती। उस बालिका को बग़ल में लेकर वह देहात में घूमता-फिरता, उससे ईश्वर—अपने ईश्वर—की बातें बतलाता। किन्तु वह किशोरी इस पर कुछ भी ध्यान न देती। उतनी देर तक वह जी भर कर अनन्त आकाश, तृण और हँसते हुए फूलों की ओर निहारा करती। आनन्द से उसके नेत्र-युगल चमचमा उठते, वह कभी एक पतिङ्गे को पकड़ने को दौड़ पड़ती और उसे पकड़ कर उच्च स्वर में बोल उठती—"देखो मामा, यह कितना सुन्दर है, मैं इसे चूमना चाहती हूँ।" और पतिङ्गे अथवा कीड़े को चूमने के लिए उसे तत्पर देख कर वह विरक्त हो उठता। स्त्रियों के हृदय की कोमलता स्वाभाविक है, यहाँ भी यह बात उसे प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ती।

इसी बीच गृह-रक्षिका ने उसे चुपके से ख़बर दी कि उसकी भानजी का एक प्रेमी है। उस समय वह हजामत बनवा रहा था, वह मुँह में साबुन लपेटे रुद्ध श्वास खड़ा रहा; उसे बड़ा ग़ुस्सा चढ़ आया था। जब सोचने और बात करने की शक्ति आई तो चिल्ला कर बोला—"यह कदापि सच नहीं हो सकता, मेलानी तुम झूठ बोलती हो।" लेकिन किसान की स्त्री छाती पर हाथ रख कर बोली—"महाशय, यदि मैं झूठ बोलती होऊँ तो ईश्वर इसका दण्ड देंगे। मैं आपसे सच-सच कह रही हूँ। वह रोज़ रात को, आपकी बहिन के सो जाने पर उसके पास जाती है। नदी के किनारे दोनों की मुलाक़ात होती है। अगर आप रात के दस बजे से लेकर बारह बजे के बीच में जायँ तो स्वयं अपनी आँखों से देख सकते हैं।"

बाल बनाना छोड़ कर, वह कमरे में फुर्ती से टहलने लगा। गम्भीर चिन्ता में मग्न होने पर वह सदा ऐसा ही किया करता था। जब फिर बाल बनाने लगा तो तीन बार उसने अपना गाल काट डाला। उत्तेजना और क्रोध में भर कर वह दिन भर मौन रहा। प्रेम की प्रबल शक्ति के विरुद्ध याजकोचित गर्व के साथ, पिता, शिक्षक और धर्म-संस्थापक का न्याय्य क्रोध एकत्र मिल गया। उसे एक नन्हें से बच्चे ने धोखा दिया, उसके द्वारा उसका इतना अपमान! माता-पिता के बिना जाने वा उनकी इच्छा के विरुद्ध यदि लड़की स्वामी-वरण करती है, तो उनकी प्रतिष्ठा, आत्मश्लाघा को जैसा बट्टा लगता है, वही दशा उसकी भी हुई।

भोजन करने के बाद उसने कुछ सोने की कोशिश की, लेकिन वह मन को अपने वश में न कर सका। उसका क्रोध क्रमशः बढ़ने लगा। दस बजते ही, उसने अपनी छड़ी—काठ का विशेष डण्डा—ली; रात में किसी रोगी दुखिया को देखने जाने के लिए वह उसे लेना कदापि न भूलता। मज़बूत मुट्ठी में उस बड़े डण्डे को लेकर, शून्य में घुमा कर, मानो उसे सम्मानित किया। इसके बाद, सहसा उसे उठा कर, दाँत पीस कर, उसे एक कुर्सी पर बड़े ज़ोरों से मारा, जिससे उसका पिछला भाग दो टुकड़े होकर ज़ोर से ज़मीन पर गिर पड़ा।

बाहर जाने के लिए दरवाज़ा खोल कर वह, असाधारण खिली हुई चाँदनी की शोभा से विस्मित होकर,

---

फ़रियादे "बिस्मिल"

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

सज रहा है आज घर किस के लिए;
  है यह सामाने-डिनर किस के लिए?
इसके रोने का सबब खुलता नहीं;
  रो रही हैं चशमे-तर किस के लिए?
जानते हैं जान अपनी जायगी;
  फिर है यह ख़ौफ़ो-ख़तर किस के लिए?
उनके बँगले पर चलो माथा घिसें;
  हज़रते "बिस्मिल" है सर किस के लिए?

* * *

करेंगे वह कभी कारे जहाँ बन्द;
  अभी तो हुकम है, कर लो ज़बाँ बन्द!
मिले मिट्टी में क्या-क्या रहने वाले;
  पड़े हैं कैसे-कैसे अब मकाँ बन्द।
कोई सुनता नहीं शिकवों को "बिस्मिल";
  करो तुम बेतुकी यह दास्ताँ बन्द!

* * *

रुक गया। उसकी मानसिक प्रकृति कल्पनामय कविकुञ्ज-मन्दिर के आचार्यों की प्रकृति की तरह उन्नत होते हुए भी मुस्कराती हुई रात्रि के इस महान् और सुनिर्मल सौन्दर्य से सहसा विचलित हो उठी। चाँदनी से नहाए हुए उस छोटे उद्यान में, श्रेणी-बद्ध वृक्ष अपनी क्षीण डालियों की छाया से वीथिका पर काली छाप डाले हुए थे। उधर दीवाल पर लटकती हुई 'हनी सकल' लता सुन्दर मधु श्वास छोड़ रही थी। ऐसा जान पड़ता था मानो उस चमचमाती हुई स्वच्छ यामिनी के हृदय में कोई सुरभि-सिञ्चित आत्मा विराज रही है।

जिस प्रकार शराबी शराब पीता है, वैसे ही उस समीरण का आनन्द उपभोग करने के लिए वह ज़ोर से निश्वास लेने लगा। विस्मय से भर कर वह आत्म-विस्मृत हो धीरे—अत्यन्त धीरे-धीरे चलने लगा। अपनी भानजी की बात वह बिलकुल भूल-सा गया था। खुले मैदान के मार्ग में आकर वह उस सौभाग्यवती प्रभा से परिप्लावित प्रशान्त यामिनी; उस सुकोशल पति शोभा से निम्मज्जित खेतों को नेत्र भर कर देखने के लिए खड़ा हुआ। रह-रह कर मेंढकों की टर्र-टर्र की आवाज़ शून्य में विलीन हो रही थी। दूरस्थित कोकिला चन्द्रिका की मनोहारिता के साथ अपना सन्दीपन-सङ्गीत मिला रही थी। वह सङ्गीत स्वप्न को छोड़ कर और कभी मन में नहीं आ सकता। वह लज्जित मूर्च्छनामय सङ्गीत ताल-लय से युक्त था।

वह फिर चलने लगा। लेकिन वह साहस हार रहा था—ऐसा क्यों हो रहा है, वह स्वयं नहीं समझ रहा प्रश्न करता था, उसी में का एक प्रश्न उसके मन में पैदा हुआ।

ईश्वर ने इसकी क्यों सृष्टि की? यदि रात्रि केवल सोने, चेतना के लुप्त होने, विश्राम के लिए, संसार को भूल जाने के लिए है, तो क्यों आज की रात दिन के प्रकाश से भी अधिक सुन्दर, अरुणोदय और सूर्यास्त की अपेक्षा भी मधुर है? ये मन्थरगामी मनोरम तारिकाएँ सूर्य से भी बढ़ कर कवित्वमय हैं, ये इतने सूक्ष्मदर्शी हैं कि सूर्य-देव भी जिन अत्यन्त सुकुमार निभृत पदार्थों को प्रकाशमय नहीं कर सकते, ये उन्हें आलोकित करने के लिए बनाए गए हैं। इस छाया विचित्र कानन को प्रकाशमय करने के लिए सूर्य क्यों नहीं आए? सङ्गीतपटु पक्षियों में सर्व श्रेष्ठ पक्षी दूसरे की तरह सो क्यों नहीं निर्जीव प्रकृति को सहसा उन्होंने प्राण-दान किया। उन्हें घेर कर रखने के लिए ही यह दिव्य दृश्य रचा गया है। ऐसा जान पड़ता था कि वे दोनों मिल कर एक प्राणी हैं—उन्हीं के लिए यह निभृत शान्त रजनी बनाई गई है।

वे याजक की ओर बढ़ने लगे—मानो वे सचेतन उत्तर हैं—मानो जगत्नियन्ता ने कृपा करके उसके प्रश्न का उत्तर भेजा है!

वह विस्मयाभिभूत निश्चल हो खड़ा रहा। उसके मन में ऐसा जान पड़ता था कि वह बाइबिल में वर्णन किए हुए रूथ और बाज की प्रेम-कहानी का अभिनय देख रहा है। धर्म-ग्रन्थ में कथित एक बड़ा भारी आख्यान ईश्वर की इच्छा से घटित हो रहा है। वह

मौ० मुहम्मद अली गोलमेज़ परिषद् में सदस्य की हैसियत से गए हैं और मौ० शौकत अली बिना बुलाए सलाहकार की हैसियत से!

था। उसके मन में ऐसा जान पड़ रहा था मानो कोई उसे बलहीन सा कर रहा है; वह सहसा क्लान्त हो पड़ा। उसकी प्रबल इच्छा हुई कि एक बार यहाँ बैठूँ, एक बार उसके सारे कार्यों का गुण कीर्तन करूँ।

यहाँ नीचे, नदी के ढलुए किनारे पर लम्बे-लम्बे 'पपला' वृक्षों की क़तारें खड़ी थीं, थोड़ी देर में एक सुन्दर कुहरे का जाल नदी-तट और भूमि भाग पर फैल कर वक्रगामिनी नदी को आच्छादित कर एक सूक्ष्म स्वच्छ चादर की भाँति दिखाई पड़ने लगा। चन्द्रमा की किरणें उस शुभ्र वाष्प को भेद कर उसे उज्ज्वल बना रही थीं। प्रबल और बढ़ती हुई उत्तेजना से भीतर ही भीतर विद्ध हो वह फिर ठहर गया। एक प्रकार के सन्देह, मानो उद्वेग की छाया ने उसके हृदय में अधिकार कर लिया। वह अपने मन में समय-समय पर जो गया? वह इस अँधेरे में बैठ कर क्यों मधुरालाप छोड़ रहा है? प्रकृति का यह आधा अवगुण्ठन क्यों है? छाती क्यों धड़क रही है? मन उत्तेजित क्यों हो रहा है? शरीर में ऐसा अवसाद क्यों? विचित्र माया का ऐसा विकास क्यों? मनुष्य तो इसे देख नहीं रहे हैं, इस समय तो सभी गाढ़ी नींद में बे ख़बर पड़े हैं। ये सभी दृश्य किस के लिए हैं? किस की तृप्ति के लिए यह स्वर्ग-मर्त्य विप्लाविनी कवित्व-धारा है?

याचक कुछ भी न समझ सका।

किन्तु यह देखो—वन के उस तरफ़ दो अस्पष्ट मूर्ति—कुहरे से ढके हुए वृक्षों के नीचे अगल-बगल हो-कर विचरण कर रही हैं।

पुरुष लम्बा है, अपनी प्रेमिका के कण्ठ को भुजपाश से वेष्टन कर रह-रह कर उसका ललाट चूम रहा है। अपने मन ही मन कहने लगा—"जान पड़ता है कि परमात्मा ने मानवी प्रेम को अत्यन्त उत्कर्ष से मण्डित करने के लिए ही इस रात्रि की सृष्टि की है।"

एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर टहलते हुए प्रणयी-युगल के सामने से वह चला गया। उसने स्पष्ट देखा कि यह उसकी भानजी ही है! तब उसने अपने मन ही मन पूछा—"क्या मैं ईश्वर का निरादर नहीं कर रहा हूँ! जिस प्रेम को उन्होंने इतना गौरव प्रदान किया है, वह क्या उसे अभीष्ट नहीं है?"

विस्मय-विमूढ़ हो वह वहाँ से फ़ुर्ती से पाँव रखता हुआ चला गया—मानो उस मन्दिर में उसका प्रवेश निषिद्ध है, वहाँ उसने अनधिकार प्रवेश किया है।*

* गीदे मोपाँसा की एक कहानी

आयर्लैण्ड का स्वाधीनता-संग्राम

[मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

प्राचीन-काल में, जिस समय आयर्लैंड में डेन जाति के समुद्री डाकुओं ने उत्पात मचा रक्खा था, तब से लेकर आज तक आइरिश जाति स्वतन्त्रता के लिए लगातार संग्राम करती आई है। इसलिए एक शब्द में, अगर आइरिश इतिहास को स्वाधीनता का इतिहास कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी।

ईसा की आठवीं शताब्दी में सब से पहले आयर्लैंड को विदेशियों का मुक़ाबिला करना पड़ा था। उसके बाद से इस वीर जाति ने जितने अत्याचारों का सामना किया है, वह इतिहास के पाठकों से छिपा न होगा। मातृ-भूमि की स्वाधीनता की रक्षा के लिए आइरिशों को जितना रक्त बहाना पड़ा है, उतना शायद बहुत कम जातियों ने बहाया होगा। पर-राज्य-लोलुप निर्दय शत्रुओं ने, प्रायः एक हज़ार वर्षों से इस जाति को विश्राम नहीं लेने दिया है। ऐसे-ऐसे अमानुषिक अत्याचार इन पर हुए हैं, जिनका ठिकाना नहीं। परन्तु इतने पर भी इस जाति ने शान्ति से कभी पराधीनता स्वीकार न की। पराधीनता-युग के आरम्भ से लेकर अन्त तक न तो स्वयं चैन लिया और न अपने विजेताओं को चैन लेने दिया है।

सबसे पहले डेन जाति के डाकुओं ने आयर्लैंड पर अधिकार जमाया। इनका मुक़ाबिला ब्रियन-ब्रू नाम के एक पन्द्रह वर्ष के आइरिश बालक ने किया था। इस युद्ध में आइरिश हार गए; आयर्लैंड डेनों के क़ब्ज़े में चला गया। परन्तु वीर-बालक ब्रियन ने उनकी वश्यता स्वीकार न की। वह केवल अपने अट्ठारह साथियों के साथ घोर वनों में रह कर मातृ-भूमि को बन्धन-मुक्त करने की चेष्टा करने लगा। वीर ब्रियन मौक़ा पाते ही अपने शत्रुओं पर बिजली की तरह टूट पड़ता और मार-पीट कर फिर घने जङ्गलों में छिप जाता। डेनों ने उसे ढूँढ़ने की बड़ी-बड़ी चेष्टाएँ कीं। आयर्लैंड में वनों की झाड़ी-झाड़ी टटोल डाला, पर ब्रियन को न पा सके। अन्त में ब्रियन ने शत्रुओं के दिलों पर ऐसा आतङ्क जमाया कि उनके लिए सुख से सोना तक हराम हो गया। ब्रियन केवल समय-समय पर आक्रमण करके उन्हें भयभीत ही नहीं रखता था, वरन धीरे-धीरे उसने एक सेना का भी सङ्गठन कर डाला और एक दिन सुयोग पाकर युद्ध-घोषणा कर दी। डेन भाग खड़े हुए और आयर्लैंड फिर आइरिशों के क़ब्ज़े में आ गया।

परन्तु विश्वनियन्ता की इच्छा आयर्लैंड को स्वतन्त्र रहने देने की न थी, इसलिए डेनों के अत्याचारी पञ्जुल से छुटकारा पाते ही उसे अङ्गरेज़ों के कठोर शिकञ्जे में फँस जाना पड़ा। जिस तरह आग लगने पर घर धीरे-धीरे जलता है, उसी तरह अङ्गरेज़ों के अत्याचार की आग से आयर्लैंड भी जलने लगा। दल के दल अङ्गरेज़ इङ्गलैंड से आकर आयर्लैंड में बसने लगे और ऐसे-ऐसे अत्याचार आरम्भ हुए, जिनका ठिकाना नहीं। यहाँ तक कि अगर कोई अङ्गरेज़ किसी आइरिश को मार भी डालता तो वह अपराधी नहीं समझा जाता था। आइरिशों को 'ज़र-ज़मीन' के झञ्झटों से मुक्त करना ही अङ्गरेज़ों का एकमात्र उद्देश्य था। इसलिए वे निःसङ्कोच भाव से जाल-फ़रेब, अन्याय और अविचार द्वारा उन्हें बल-हीन बनाने लगे। धीरे-धीरे अत्याचार की मात्रा पराकाष्ठा तक पहुँच गई। इसका परिणाम यह हुआ कि सारे आयर्लैंड में विद्रोह की भीषण आग धधक उठी। अङ्गरेज़ों को अपने देश से निकाल बाहर करने के लिए आइरिशों ने कई दलों की सृष्टि की। सन् १२६४ ईस्वी से लेकर, सन् १६०७ तक, देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए ह्यूग, ओनेल तथा रेड ह्यूग आदि आइरिश वीरों ने जिस दुर्जय साहस, विक्रम और दृढ़ता से काम लिया था, वह प्रत्येक आइरिश के हृदय पर अमिट अक्षरों में अङ्कित है और रहेगा। दुःख है कि इन वीरों को जीते जी सफलता नहीं मिली; मातृ-भूमि को बन्धन-मुक्त देखने की उनकी आन्तरिक अभिलाषा पूरी न हुई, परन्तु उनकी अलौकिक वीरता, उनके असीम साहस और अदम्य उत्साह की कहानी आज भी आइरिशों के दिलों में नव-जीवन का सञ्चार करती है। जिस तरह हम महाराणा प्रताप, दुर्गादास, शिवाजी और गुरु गोविन्दसिंह के लिए गर्व करते हैं, उसी तरह आइरिश भी अपने ह्यूग और ओनेल आदि के लिए गर्व करते हैं।

अङ्गरेज़ विजेता धर्म के पक्के अनुयायी हैं। विजितों के साथ अमानुषिक व्यवहार करने में उन्होंने कभी कृपणता नहीं की है। विजित आयर्लैंड के साथ भी उन्होंने वही अपना चिर-अभ्यस्त व्यवहार आरम्भ कर दिया। स्वनामधन्या रानी एलिज़ाबेथ के ज़माने में आयर्लैंड की छाती पर जो अशान्ति का बीज वपन हुआ था, उसका कटु फल बेचारे आइरिश आज भी चख रहे हैं। कैथलिक आयर्लैंड को सदैव नज़रों के सामने रखने के लिए आयर्लैंड का अलस्टर प्रान्त प्रोटेस्टेंटों का वास-स्थान बनाया गया। राजनीति-विशारद अङ्गरेज़ों ने पहले ही सोच लिया था, कि अगर किसी समय आयर्लैंड ब्रिटेन के प्रेम-पाश से विमुक्त होने की चेष्टा करेगा, तो सब से पहले उसके शरीर का एक अङ्ग—अलस्टर—ही उसका विरोध करेगा।

ख़ैर, आइरिशों के विद्रोह आरम्भ करते ही अङ्गरेज़ों ने भी द्विगुण अत्याचार आरम्भ कर दिया। आइरिशों को उजाड़ कर, उनके स्थान पर अङ्गरेज़ बसाए जाने लगे। आयर्लैंड का एक प्रान्त आइरिश-शून्य हो गया। न्यायान्याय का विचार छोड़ कर अङ्गरेज़ों ने आयर्लैंड की छाती पर कोदो दलना आरम्भ कर दिया। रानी एलिज़ाबेथ ने नियम बनाया कि आयर्लैंड के गिरजों और स्कूलों में आइरिश भाषा का व्यवहार न होने पाएगा। इसके बाद आयर्लैंड की सभ्यता पर आक्रमण आरम्भ हुआ। आइरिश पोशाक, धर्म और चाल-चलन के विरुद्ध भी ऐसी ही निषेधाज्ञाओं का प्रचार हुआ। आयर्लैंड का इतिहास नए ढङ्ग से लिखा जाने लगा। स्कूलों तथा कॉलेजों में ऐसे ढङ्ग से शिक्षा देने का प्रबन्ध हुआ, जिससे आइरिश बच्चे अपनी जाति को हीन और अङ्गरेज़ों को महान समझना सीखें। अगर कोई इस शिक्षा-प्रणाली का विरोध करता, तो सुयोग्या रानी महोदया के आज्ञानुसार उसकी सारी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली जाती और उसके प्राणों के लाले पड़ जाते! आयर्लैंड का इतिहास पढ़ने से मालूम होता है कि अङ्गरेज़ों की प्रचलित की हुई शिक्षा-प्रणाली का विरोध करने के लिए, कितने ही आइरिशों को जान से भी हाथ धोना पड़ा था।

विद्रोह और अत्याचार दोनों ही दिन दूनी और रात चौगुनी गति से बढ़ने लगे। अङ्गरेज़ों ने आइरिशों पर इतना कर लादा कि थोड़े ही दिनों में सारे आयर्लैंड में दरिद्रता और दुर्भिक्ष फैल गया। अङ्गरेज़ों की कृपा से आइरिश जाति का अधःपतन नाना प्रकार से अनिवार्य हो उठा। हज़ारों आइरिश देश छोड़ कर अमेरिका चले गए।

इसके कुछ दिन बाद ही अमेरिकनों ने अपने देश को अङ्गरेज़ों के पञ्जुल से निकाला था। उस समय आइरिश युवक भी चञ्चल हो उठे। उनके मन में बार-म्बार यह प्रश्न उठने लगा कि अगर अमेरिका अङ्गरेज़ों को हटा कर स्वाधीन हो सकता है, तो आयर्लैंड क्यों नहीं हो सकता। इसलिए उत्साहित होकर उन्होंने 'युनाइटेड आइरिशमैन' (United Irishmen) नाम की एक संस्था क़ायम की। सैकड़ों मुक्तिकामी युवक इस दल में सम्मिलित हुए। दिन-रात इस बात पर तर्क-वितर्क होने लगा कि किस तरह देश को स्वाधीन किया जाए। इसके कुछ दिन बाद ही फ़्रान्सीसी विप्लव आरम्भ हुआ। इसलिए सैकड़ों युवक आइरिश विप्लव-कला का अध्ययन करने के लिए फ़्रान्स चले गए। इसके साथ ही उन्होंने इस बात की भी चेष्टा की कि समय पड़ने पर फ़्रान्स वाले उनकी सहायता करें।

'युनाइटेड आइरिशमैन' का उद्देश्य अङ्गरेज़ों से छिपा न रह सका। फलतः उन्होंने भी भयङ्कर रूप से दमन आरम्भ कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि 'युनाइटेड आइरिश' दल एक गुप्त समिति के रूप में परिणत हो गया। आइरिश नवयुवकों तथा नवयुवतियों ने बड़े उत्साह से समिति के कार्यों में भाग लिया। समिति बड़े ज़ोर-शोर से चलने लगी। सन् १७६४ में एडवर्ड फ़िटज़रॉल्ड नाम के एक उत्साही सज्जन ने इस समिति में भाग लिया। फ़िटज़रॉल्ड के अनवरत परिश्रम और चेष्टा से समिति ने बड़ी उन्नति की। इस दल के दूसरे लीडर उलफ़टन महोदय थे। इनकी वाणी, मस्तिष्क और बाहु में विचित्र बल था।

अङ्गरेज़ भी निश्चिन्त न थे। मौक़ा पाकर उन्होंने इस दल के कई प्रमुख नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया। यह देख कर समिति के अन्यान्य युवकों ने फ़ौरन विद्रोह आरम्भ कर दिया। अशान्ति की भीषण आग समस्त आयर्लैंड में धधक उठी। यद्यपि विप्लवी विजयी न हुए, परन्तु उन्होंने अङ्गरेज़ों से नाकों चने चबवा कर छोड़े। अङ्गरेज़ों की चेष्टा और अन्धाधुन्ध अत्याचार से विप्लव तो दब गया, परन्तु आइरिशों की गुप्त समिति को वे नहीं तोड़ सके। कुछ दिनों के बाद ही वीरवर रॉबर्ट एमेट ने फिर आयर्लैंड को जाग्रत किया। उन्होंने अपना यथासर्वस्व बेच कर बहुत सा अस्त्र-शस्त्र संग्रह किया। परन्तु दैव-दुर्विपाक वश इस वीर के मन की आशा मन में ही विलीन हो गई। जिस दिन एमेट ने युद्ध छेड़ने का विचार किया था, ठीक उसी दिन किसी ने उसके अस्त्रागार में आग लगा दी। इसके साथ ही आपस में भी भयङ्कर मतभेद हो गया। कितने ही

युवक उच्छृङ्खल हो उठे। समिति वालों की पारस्परिक फूट से अङ्गरेज़ों ने ख़ूब लाभ उठाया। मि० रॉबर्ट तथा उनके अन्य कई साथी पकड़ कर फाँसी पर लटका दिए गए। परन्तु विद्रोह की आग, जो सदियों पहले लग चुकी थी, उसे हज़ार प्रयत्न करने पर भी अङ्गरेज़ बुझा न सके। थोड़े दिनों के बाद ही आयर्लैंण्ड में कोड़ियों गुप्त समितियाँ स्थापित हो गईं। चारों ओर एक विचित्र जागृति फैल गई। गुप्त हत्याओं का बाज़ार गर्म हो उठा। सैकड़ों राज-कर्मचारी तलवार के घाट उतारे गए। यहाँ तक कि गुप्त समिति के वीर विद्रोहियों ने इङ्गलैण्ड जाकर भी अङ्गरेज़ों का ध्वंस करना आरम्भ कर दिया। इसके साथ ही अङ्गरेज़ी भाषा और अङ्गरेज़ी सभ्यता का भी घोर विरोध आरम्भ हुआ। अङ्गरेज़ी को हटा कर उसके स्थान पर आइरिश भाषा का प्रचार करने के लिए पूर्ण उद्योग आरम्भ हुआ। मि० हाइड नाम के एक सज्जन ने जातीय भाषा के प्रचार और विस्तार के लिए 'गेलिक लीग' की स्थापना की। सारे देश में गेलिक भाषा (आयर्लैंण्ड की जातीय भाषा) की चर्चा होने लगी। इस उद्योग का परिणाम भी अच्छा हुआ। देशात्म-बोध ख़ूब तरक़्क़ी कर गया। इसी तरह विद्रोह और जाति गठन में पूरी एक शताब्दी बीत गई। इन सौ वर्षों में देश की स्वतन्त्रता के लिए कितने आइरिश युवक अङ्गरेज़ों के हाथ से मारे गए, उसका ठीक-ठीक हिसाब शायद यमराज के दफ़्तर में ही मिल सकता है। इन्हीं वीरों के रक्त से बनी हुई नींव पर नवीन आयर्लैंण्ड की प्रतिष्ठा हुई है!

नवीन आयर्लैंण्ड के प्रतिष्ठाताओं का परिचय और उनके आदर्श कार्यों का दिग्दर्शन हम आगे चल कर कराएँगे। यहाँ तो हम थोड़े शब्दों में यह बता देना चाहते हैं कि विदेशियों ने अपने स्वार्थ के लिए आयर्लैंण्ड पर कैसे भीषण अत्याचार किए हैं, और आइरिश वीरों ने किस धीरता के साथ उन राक्षसी उत्पीड़नों का सामना किया है। लगातार कई शताब्दियों तक विद्रोह का झण्डा उड़ा कर आइरिशों ने संसार को दिखा दिया है कि आयर्लैंण्ड का शरीर पराधीन होने पर भी उसकी आत्मा कभी पराधीन नहीं हुई थी! इसके ज्वलन्त प्रमाण सन्, १६४१ का कैथलिक विद्रोह, सन्, १६८६ का सारसफ़िल्ड ग़दर, सन्, १७८२ का फ़्लड (Flood) और ग्राटन (Grattan) का नियम-तान्त्रिक आन्दोलन, १७६८ का थिओबोल्ड उल्फस का मचाया हुआ विद्रोह, १८०३ का रॉबर्ट इमेट का विद्रोह, १८४८ का विलियम स्मिथ ओब्रियन का विद्रोह, १८६७ में फिनियन-सङ्घ की लाल क्रान्ति आदि इतिहास-प्रसिद्ध घटनाएँ हैं। यद्यपि आइरिशों ने, गत शताब्दियों में अपनी मातृ-भूमि को बन्धन-मुक्त करने के लिए जितने उद्योग किए, वे सभी विफल हुए, परन्तु इससे उनके अदम्य उत्साह को धक्का नहीं लगा।

इङ्गलैण्ड आयर्लैंण्ड की स्वाधीनता अपहरण करके ही निश्चिन्त न था। उपर्युक्त कथन से पाठकों को मालूम हो गया होगा कि वह आइरिशों की आध्यात्मिक, आर्थिक और नैतिक पतन के लिए भी सतत उद्योगशील था। उनके धार्मिक विचारों को कुचलने की भी कम चेष्टाएँ नहीं हुईं। इसके बाद क्रॉमवेल का अत्याचार आरम्भ हुआ। निर्दय क्रॉमवेल के वीभत्स अत्याचारों से आयर्लैंण्ड जन-शून्य हो गया। रोमन कैथलिकों के हाहाकार से आकाश गूँज उठा। लाखों मनुष्य अपना घर-बार और धन-अन्न छोड़ कर अन्यत्र चले गए। क्रॉमवेल ने वह समस्त सम्पत्ति को अपने सैनिकों तथा दूसरे अङ्गरेज़ों में बाँट दिया। इस घोर अत्याचार ने आयर्लैंण्ड को अधःपतन की पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया। वह अपनी सभ्यता, भाषा, गाथा, गान तथा इतिहास, सभी खो बैठा। एक ओर विदेशियों का दुःसह अत्याचार और दूसरी ओर अपनी प्राचीन सभ्यता (Culture) के प्रति अश्रद्धा-भाव ने आयर्लैंण्ड को सब प्रकार से हीन और दरिद्र बना डाला।

वैदेशिक शासन और शोषण के कारण अट्ठारहवीं शताब्दी में ही आयर्लैंण्ड की दुरवस्था पराकाष्ठा को पहुँच गई थी। राष्ट्रीय चिन्ता-धारा तो इससे पहले ही विकृत हो उठी थी। परन्तु अट्ठारहवीं शताब्दी की आइरिश जाति मानो अपने अतीत को भूल कर एक सम्पूर्ण नई जाति के रूप में उठने लगी। इङ्गलैण्ड ने आरम्भ में ही उसका सर्वस्व अपहरण कर लिया था। वह सब प्रकार से अङ्गरेज़ों का ग़ुलाम बन गया। उस समय आयर्लैंण्ड के शासन की बागडोर इङ्गलैण्ड के राज-प्रतिनिधि लॉर्ड लेफ़्टिनेण्ट के हाथों में थी। आप साल में केवल दो बार डब्लिन के कैसल में पधारने की कृपा किया करते थे और पार्लामेण्ट का कार्य समाप्त होते ही अपने घर चले जाते थे! राजकार्य का निर्वाह एक पादरी और दो उच्च कर्मचारियों द्वारा सम्पन्न हुआ करता था। इसका फल जो होना चाहिए था, वही हुआ। अराजकता और अत्याचार की ख़ूब वृद्धि होने लगी। परन्तु इस व्यवस्था के समर्थकों की राज-दरबार में काफ़ी प्रतिष्ठा थी, इसके कारण आयर्लैंण्ड की सामाजिक अवस्था क्रमशः अति भीषण हो गई। अङ्गरेज़ों की नक़ल करने वालों तथा उनकी हाँ में हाँ मिलाने वालों की संख्या दिन प्रति दिन बड़े वेग से बढ़ने लगी और यह ख़ुशामदी दल चैन की वंशी बजाने लगा फलतः प्राचीन गेलीय सभ्यता और रीति-रिवाज देशवासियों के लिए उपेक्षा और अपमान की सामग्री बन गए।

महात्मा क्रॉमवेल आदि की कृपा से कैथलिक आयर्लैंण्ड के सभी आइरिश अपनी ज़मींदारियों से हाथ धो चुके थे। कोई भी किसान या ज़मींदार तीस वर्ष से ज़्यादा, अधिक काल तक किसी ज़मीन को अपने क़ब्ज़े में नहीं रख सकता था। इसलिए कितने ही तो अपना देश और पैतृक वास-स्थान छोड़ कर अन्यत्र चले गए और कितने धनी परिवार वालों ने दाने-दाने के लिए तरस कर अन्त में शयन-सदन की राह ली। ज़मींन्दाराना हक़ केवल अङ्गरेज़ों को, या उन दो-चार भाग्यवान विभीषणों को प्राप्त था, जिन्होंने अपना धर्म छोड़ कर अङ्गरेज़ों का पालतू प्रोटेस्टेण्ट धर्म स्वीकार कर लिया था। ज़मींदार लोग प्रायः "स्वदेश" अर्थात् इङ्गलैण्ड में रहा करते थे। ज़मींदारी का प्रबन्ध उनके कारिन्दे या गुमाश्ते किया करते थे। इन कारिन्दों को अपनी ऊपरी आमदनी की अधिक फ़िक्र रहती थी, इसलिए ये किसानों को अच्छी तरह पीसा करते थे। इनमें अधिकांश तो परले दर्जे के विलासी, नीच और धूर्त होते थे। इनकी विलासिता का सारा सामान बेचारे आइरिशों को मुहय्या करना पड़ता था!!

इङ्गलैण्ड की सदाशया सरकार ने कैथलिक आइरिशों का सारा नागरिक अधिकार छीन लिया था। पार्लामेण्ट, कॉरपोरेशन, म्युनिसिपैलिटी तथा अन्य किसी भी सार्वजनिक संस्था में उनका कोई स्थान न था। यही नहीं, कभी-कभी दर्शक के रूप में भी वे ऐसे सार्वजनिक जलसों में घुसने नहीं पाते थे। केवल टैक्स और मालगुज़ारी देना तथा अङ्गरेज़-प्रभुओं की राक्षसी क्षुधा की तृप्ति का सामान इकट्ठा करना ही, मानो उनके जीवन का प्रधान उद्देश्य था!

आइरिशों की शिक्षा के मूल पर जो कुठाराघात किया गया था, उसका दिग्दर्शन हम ऊपर करा आए हैं। आयर्लैंण्ड के चीफ़ सेक्रेटरी राइट ऑनरेबल अगस्टिन बिरेल ने लिखा है—

"In the opinion of most member of Parliament every peny of public money spent on teaching the Irish language was money thrown away educationally and mis-spent politically."

इस पर राय-ज़नी करने की आवश्यकता नहीं। इतने से ही पाठक समझ जायँगे कि किस तरह बेचारे आइरिश शिक्षा आदि से वञ्चित किए गए थे।

कैथलिक आयर्लैंण्ड के सभी गिरजाघरों के दरवाज़े बन्द कर दिए गए थे। क़ानून के अनुसार सारे धर्म याजकों को अपना देश छोड़ कर अन्यान्य देशों में चले जाने के लिए बाध्य होना पड़ा था। ग़र्ज़ कि अङ्गरेज़ों ने आयर्लैंण्ड को धर्म, शिक्षा, सभ्यता आदि से वञ्चित कर उसे ग़ुलामी के नागपाश में अच्छी तरह जकड़ डाला था!

परन्तु आयर्लैंण्ड की मुक्ति के इतिहास ने यह बात अच्छी तरह प्रमाणित कर दी है कि अत्याचार या बर्बरता द्वारा कोई जाति चिरकाल तक पराधीन नहीं रह सकती। जब अत्याचारों की प्रतिक्रिया आरम्भ होती है, तो सारा पशु-बल एक क्षण में ही हवा हो जाता है। वही बात आयर्लैंण्ड में भी हुई। अत्याचारियों के पाप का घड़ा भर चुका था। हम ऊपर बता चुके हैं कि अत्याचार और उत्पीड़न के साथ ही साथ आयर्लैंण्ड में जागृति भी फैल रही थी। बीसवीं शताब्दी में एक ओर विप्लव की तैयारियाँ होने लगीं और दूसरी ओर कुछ लोग वैध आन्दोलन द्वारा होमरूल (स्वराज) प्राप्त करने की चेष्टा में लगे। गत सन् १९१४ में लिबरल गवर्नमेण्ट विशेषतः इङ्गलैण्ड के विख्यात राजनीतिक मि० आस्क्विथ की चेष्टा से 'होमरूल बिल' पास हो गया। इसके बाद ही सारे आयर्लैंण्ड में जो तीव्र आन्दोलन आरम्भ हुआ, उसीने इस नव-जागृत जाति को मुक्ति का पथ दिखाया। होमरूल बिल के पास होने के साथ ही अल्स्टरवासी भूतपूर्व अङ्गरेज़ों की सन्तान ने सर एडवर्ड कॉरसन की अधीनता में एक विराट वाहिनी का सङ्गठन कर डाला। इङ्गलैण्ड के बहुत से बड़े आदमियों ने इस कार्य के लिए उदारतापूर्वक थैलियों का मुँह खोल दिया। सर एडवर्ड ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि आयर्लैंण्ड की मुक्ति हमें किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं है, और अगर आवश्यकता होगी, तो स्वतन्त्रता चाहने वालों के विरुद्ध तलवार धारण करने में भी कोताही न की जायगी। परन्तु राष्ट्रीय दल को इन थोथी धमकियों का कोई डर न था। उसने थोड़े ही परिश्रम से एक विराट स्वयं-सेवक दल का सङ्गठन कर डाला!

(अगले अङ्क में समाप्त)

* * *

साम्यवाद का आचार्य—कार्ल मार्क्स

[श्री० सत्यभक्त]

साम्यवाद आजकल दुनिया का एक बहुत महत्वपूर्ण और शक्तिशाली आन्दोलन है। दुनिया तमाम देशों में इसका दौर-दौरा है और इसके अनुयायियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जाती है। यूरोप और अमेरिका के आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता वाले देशों में ही नहीं, वरन् चीन, भारत, ईरान जैसे प्राचीन सभ्यता वाले देशों में भी साम्यवाद का प्रचार होता जा रहा है और साधारण जनता का ध्यान उसकी तरफ़ अधिकाधिक आकर्षित होता जा रहा है। ग़रीब और कष्ट-ग्रसित लोगों को एक प्रकार से विश्वास हो गया है, कि हमारी दुर्दशा का अगर किसी उपाय से अन्त हो सकता है, तो केवल इसी आन्दोलन द्वारा।

साम्यवाद को इतना महत्व और शक्ति जिन व्यक्तियों के परिश्रम और बलिदान से प्राप्त हुई है, उनमें कार्ल मार्क्स का स्थान सब से ऊँचा माना जाता है। यद्यपि उससे पहले भी अनेक लोग साम्यवाद का प्रचार करते रहते थे और श्रमजीवियों तथा अन्य लोगों को इसकी उपयोगिता और युक्तियुक्तता बतलाते रहते थे, पर उनके सिद्धान्त अधिकांश में कल्पनामय थे और वे ख़ासकर शासकों और बड़े लोगों की उदारता पर भरोसा रखते थे। पर मार्क्स ने इस धारा को बिलकुल ही पलट दिया। उसने साम्यवाद को वैज्ञानिक रूप दिया और सिद्ध किया कि यह कोई धर्म-कर्म या नेकी से सम्बन्ध रखने वाली चीज़ नहीं है, वरन् संसार के विकास का एक स्वाभाविक दर्जा है, जो कि वर्तमान घटनाओं के फल से अवश्य उत्पन्न होगा। साथ ही उसने यह भी बतलाया कि इस आन्दोलन की सफलता और ग़रीब मज़दूरों के कष्टों का अन्त स्वयं उन लोगों के परिश्रम और दृढ़ता द्वारा ही होगा, न कि राजा-महाराजाओं और सेठ-साहूकारों की दया-अनुकम्पा द्वारा!

कार्ल मार्क्स का जन्म ५ मई सन् १८१८ को जर्मनी के ट्रेव्स नामक नगर में हुआ था। उसका बाप जाति का यहूदी था और वकील का धन्धा करता था। सन् १८२४ में उसने सकुटुम्ब ईसाई-धर्म ग्रहण कर लिया। इस धर्म-परिवर्तन का कारण कुछ तो सरकारी दबाव और कुछ राष्ट्रीयता का भाव था। मार्क्स की आरम्भिक शिक्षा स्थानीय स्कूल में हुई। स्कूल में वह होनहार विद्यार्थी समझा जाता था। स्कूल में पढ़ते समय उसका परिचय वेस्टफ़ेलन नाम के एक जर्मन अफ़सर से हो गया। जिसने उसे कविता का शौक़ लगा दिया और उसकी उन्नति के लिए बहुत कुछ चेष्टा की। बाद में इसी वेस्टफ़ेलन की कन्या जेनी से उसने विवाह किया। स्कूल की शिक्षा ख़तम होने के बाद उसने बोन और बर्लिन के विश्वविद्यालयों में क़ानून और दर्शन का अध्ययन किया। उसका बाप चाहता था कि वह क़ानून की परीक्षा पास करके सरकारी नौकरी करे, पर उसे सांसारिक उन्नति की कुछ भी आकांक्षा न थी और वह अपना जीवन दार्शनिक ढङ्ग से व्यतीत करना चाहता था। दर्शन-शास्त्र में वह जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान हेगल का अनुयायी था। बीस वर्ष की उम्र में एक महत्वपूर्ण निबन्ध लिखने के कारण उसको पी० एच० डी० की उपाधि मिल गई। उसका इरादा था कि किसी विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसरी करके जीवन-निर्वाह करे, पर अपने स्वाधीन विचारों के कारण वह इस कार्य में सफल न हो सका। तब वह सम्पादन-कला की तरफ़ झुका।

सन्. १८४२ में वह 'राइनिशज़ीटुङ्ग' नाम के पत्र का सम्पादन करने लगा। यह पत्र राजनीतिक था और सरकार के कामों की कड़ी आलोचना करता था। इसलिए उसे कुछ ही दिनों में सरकारी अधिकारियों का कोप-भाजन होना पड़ा और वह जर्मनी से निकाल दिया गया। 'राइनिशज़ीटुङ्ग' भी उसी समय बन्द हो गया। सन्. १८४३ में वह अपनी नव-विवाहिता स्त्री सहित पेरिस आया और 'फ़्रेंको-जर्मन इयरबुक' नाम के सामाजिक पत्र में काम करने लगा। वहाँ पर उसकी मित्रता एञ्जिल्स से हुई। एञ्जिल्स एक जर्मन-व्यवसायी का पुत्र था और भिन्न-भिन्न देशों में रह कर, अपने पिता के कारख़ानों का प्रबन्ध करता रहता था। वह बड़ा विद्वान और योग्य व्यक्ति था। उसके साथ मार्क्स की मित्रता अन्त समय तक क़ायम रही और उसकी सहायता से मार्क्स वह काम कर सका, जिसके लिए आज समस्त संसार में उसका नाम फैला हुआ है। मार्क्स के प्रधान ग्रन्थ 'कैपिटल' के दूसरे और तीसरे भाग को एञ्जिल्स ने ही लिखा है, क्योंकि साधनों की कमी से वह स्वयं पहिला भाग ही तैयार कर सका था और शेष दो भागों का केवल मसाला इकट्ठा कर सका था। एञ्जिल्स बहुत वर्षों तक मार्क्स को उसका ख़र्च भी देता रहा और यदि उसकी सहायता न मिलती, तो सम्भवतः उसका जीवन असमय में ही विदेशों में नष्ट हो जाता।

सन् १८४५ में फ़्रान्स के अधिकारियों ने जर्मन-सरकार के आग्रह करने पर मार्क्स को अपने यहाँ से देश-निकाला दे दिया। वह बेलजियम की राजधानी ब्रसेल्स को चला गया और सन् १८४८ तक वहीं पर साम्यवाद और अर्थशास्त्र का अध्ययन करता रहा। सन्. १८४८ में यूरोप के समस्त देशों में क्रान्ति की ज्वाला भड़क उठी और बेलज़ियम की सरकार ने डर कर उसको अपने यहाँ से निकाल दिया। वह कुछ दिनों तक पेरिस में रहा, जहाँ की सरकार क्रान्ति के कारण बदल गई थी। तत्पश्चात जर्मनी के क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने के लिए वह जर्मनी चला गया, और राइनलैण्ड प्रदेश से, जहाँ जर्मनी की सरकार का प्रभाव कुछ कम था—'न्यू राइनिशज़ीटुङ्ग' नाम का पत्र निकालने लगा। पर इस बार भी उसको सफलता न मिल सकी और सरकारी दमन के कारण एक ही वर्ष में इस पत्र का अन्त हो गया। इतना ही नहीं, इस कार्य में मार्क्स को अपनी कुल जमा-पूँजी लगा देनी पड़ी और वह पैसे-पैसे को मुहताज हो गया। वहाँ से वह फिर फ़्रान्स में लौट आया, पर वहाँ भी नई सरकार क़ायम हो गई थी और उससे उसकी न बन सकी। अन्त में सन् १८४९ में वह इङ्गलैण्ड पहुँचा और अपने जीवन के अन्तिम समय तक वहीं रहा।

सन् १८४७ में जब कि मार्क्स बेलजियम में था, उसने एञ्जिल्स के साथ मिल कर कम्यूनिस्ट मैनिफ़ेस्टो तैयार किया, जो कम्यूनिज़्म सिद्धान्त की पहली पुस्तक थी और जिसको श्रमजीवी अब तक आदर की दृष्टि से देखते हैं। उसका उद्देश्य संसार भर के श्रमजीवियों को सङ्गठित करके, उनका एक अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ बनाना था, जिसके द्वारा वे पूँजीपतियों पर विजय प्राप्त कर सकें। इसके लिए वह बराबर लेखों और पुस्तकों द्वारा अपने सिद्धान्तों का प्रचार करता रहा। निरन्तर १६ वर्ष तक परिश्रम करने के पश्चात उसको अपने उद्देश्य में सफलता मिली और सन् १८६४ में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सङ्घ की स्थापना हो गई। इस सङ्घ में यूरोप के प्रायः सभी देशों के प्रतिनिधि शामिल थे। तीन-चार वर्ष तक इसके वार्षिकोत्सव नियमित रूप से होते रहे और उसने विभिन्न देशों के श्रमजीवी आन्दोलन की वृद्धि में कुछ काम भी किया। पर बाद में उसके कार्यकर्ताओं में मतभेद उत्पन्न हो गया, जिसके फल से सन् १८७२ में उसकी इतिश्री हो गई।

यद्यपि कुछ लोग अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ के इस तरह बन्द हो जाने को बड़ी शोचनीय बात समझते हैं और इसके लिए मार्क्स को दोष देते हैं, कि उसने अपनी सत्ता को क़ायम रखने की ज़िद में आकर उसकी हत्या कर डाली। पर वास्तव में उस ज़माने में श्रमजीवी-आन्दोलन जैसी निर्बल दशा में था उसमें इस प्रकार का सङ्घ सिवाय साधारण प्रचार के कोई महत्वपूर्ण अथवा अमली काम नहीं कर सकता था। पर इसका अन्त हो जाने से कार्ल मार्क्स को इतना अवकाश मिल गया कि वह अपने प्रधान ग्रन्थ 'कैपिटल' के दूसरे और तीसरे भागों के लिए बहुत-सा मसाला इकट्ठा कर सका। यह 'कैपिटल' ग्रन्थ वर्तमान श्रमजीवी-आन्दोलन की नींव-स्वरूप है और उसे लोग 'साम्यवादियों की बाइबिल' कहते हैं। यह ग्रन्थ बड़े साइज़ के क़रीब ढाई हज़ार पृष्ठों में समाप्त हुआ है और इतना गहन तथा तत्वपूर्ण है, कि साधारण योग्यता का व्यक्ति उसका अध्ययन भी नहीं कर सकता।

'कैपिटल' के सिवाय मार्क्स ने और भी अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखी हैं, जिनकी संख्या क़रीब १५-१६ है। पर उनमें सब से प्रसिद्ध और प्रचलित उसका लिखा एक छोटा सा ट्रैक्ट है, जिसका नाम 'कम्यूनिस्ट मैनिफ़ेस्टो है। यह सन्, १८४७ में कम्यूनिस्ट-सङ्घ के प्रस्ताव करने पर लिखा गया था और इसमें उसके मित्र एञ्जिल्स ने भी सहयोग दिया था। इस ४०-५० पृष्ठों के ट्रैक्ट में मार्क्स ने कम्युनिज़्म का सारांश ऐसे स्पष्ट और सीधे-सादे शब्दों में भर दिया है कि आज ८० वर्ष से अधिक हो जाने पर भी लोग उसे बड़े चाव से पढ़ते हैं और उससे असीम लाभ उठाते हैं। इस मैनिफ़ेस्टो के विषय में जर्मनी के सुप्रसिद्ध साम्यवादी नेता विलियम लिबनेट ने कहा था कि—"अगर मार्क्स और एञ्जिल्स इस मैनिफ़ेस्टो को लिखने के सिवाय और कोई काम नहीं करते और उसी दिन क्रान्ति के भीषण उदर में समा जाते तो भी उनका नाम संसार में अजर-अमर रहता।"

मार्क्स के जीवन का अन्तिम भाग शारीरिक व्याधियों के कारण कुछ दुःखमय रहा। वैसे जन्म से उसका शारीरिक सङ्गठन बहुत दृढ़ था, पर साम्यवाद के अध्ययन और प्रचार में उसको इतना अधिक परिश्रम करना पड़ा कि ४० वर्ष की अवस्था से ही उसकी तन्दुरुस्ती ख़राब हो गई। साम्यवाद और अर्थशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों के अध्ययन और लिखने में वह प्रति दिन १६ घण्टे तक ख़र्च करता था और प्रायः रात-रात भर जाग कर काम करता रहता था। साथ ही सारा समय और शक्ति श्रमजीवी-आन्दोलन में ख़र्च करने के कारण वह आमदनी का कोई काम भी नहीं कर सकता था और इस कारण उसको दरिद्रता में जीवन व्यतीत करना पड़ता था। वह सन् १८४९ से अपने जीवन के अन्तिम समय तक लन्दन में रहा और उसको अपना तमाम जीवन छोटे-छोटे घरों और तङ्ग कोठरियों में बिताना पड़ा! खाने-पीने का भी विशेष आराम न था और धन की कमी तथा उचित सेवा-सुश्रूषा के अभाव से उसके कई बच्चों की मृत्यु भी हो गई।

सन् १८७० से उसका स्वास्थ्य इतना ख़राब रहने लगा कि उसे अध्ययन और प्रचार का काम छोड़ देना

(शेष मैटर १६ वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

स्त्रियों का ओज

वीर दम्पति

[लेखक—???]

"प्रिये, यह सब भाग्य का खेल है, लक्ष्मी अति चपल है। वह सदा एक ठौर नहीं रहती, जो कल महाराज था—आज भिखारी है।"

"स्वामिन्, मैं क्षत्रिय पुत्री हूँ, मैं भाग्य को नहीं मानती। वीर पुरुष अपने पौरुष से भाग्य का निर्माण करते हैं।"

"किन्तु विश्वधारा के प्रतिकूल, क्षीण मनुष्य का बल......"

"किन्तु—कर्मक्षेत्र में दृढ़ता से खड़े रहना उसका कर्त्तव्य है।"

"और यदि युद्ध में पराजय हुई।"

"तो वहीं प्राण त्यागे, क्या वीर पुरुष तिनके हैं, जो प्रवाह में पड़ कर जिधर लहर ले जाय—उधर ही बह निकलें।"

"क्या नल पर विपत्ति नहीं पड़ी? राज्य गया, स्त्री छुटी, अन्त में नीच नौकरी करनी पड़ी, यह सब विधाता के खेल हैं।"

"यह अवैध जुआ खेलने के खेल हैं।"

"प्रिये, ऐसी बातें क्यों करती हो? तुम्हें यहाँ क्या कष्ट है, कैसी सुन्दर वनस्थली है, झरने का मीठा जल, फल और हरियाली ......"

"पराधीनता में एक क्षण रहना भी धिक्कार की बात है, कायर ही ऐसी युक्तियों से सन्तोष किया करते हैं।"

"प्रिये, पति से ऐसे कठोर वाक्य कहने उचित नहीं, द्रौपदी ने भी कठोर वचन कहे थे, पर फल क्या हुआ?"

"सच है, क्षत्रिय को रण में पीठ दिखाना शोभा देता है, तुम, पुरुष जब से स्त्रियों के विधाता बन गए हो—तब से उन्हें सदा अपने प्रति कर्त्तव्य का उपदेश देते रहते हो, पर अपने कर्त्तव्य का कभी पालन नहीं करते। यदि तुम कायरों की भाँति युद्ध से भाग न आते और सम्मुख युद्ध में प्राण देते तो देखते कि तुम्हारी पत्नी किस आनन्द से चिता पर चढ़ती है।"

"पर प्रिये, समय के लिए बच रहना भी युक्ति है।"

"कायर ही ऐसी युक्तियाँ दिया करते हैं, पर जो सच्चे शूर हैं वे जय या मृत्यु—इन दो वस्तुओं को ही प्राप्त करते हैं, शोक तो यह है कि मुझे कन्या जन्मी, पुत्र भगवान ने न दिया।"

"और जो पुत्र भी युद्ध से भागता?"

"सिंहनी कभी स्यार नहीं पैदा करती।"

*　　*　　*

"आह, मैंने नारी जन्म पाया, मुझे धिक्कार है, मैं पुत्र क्यों न हुई। परन्तु स्त्री अबला क्यों? क्या उसके हाथ-पैर नहीं, मस्तिष्क नहीं, हृदय नहीं, शक्ति, तेज, बल—सभी तो शिक्षा और अभ्यास से प्राप्त होता है! देखूँ? सुकोमल बाहुओं को वज्र भुज-दण्ड बना लूँ? इन कलाइयों में दुधारा खड्ग धारण करूँ। माता, तुम क्षोभ मत करो; मैं पिता का राज्य शत्रु से छीनूँगी तो मेरा नाम तारा रहा, मैं राजपूतनी की बच्ची हूँ। मैं तुम्हारे पुत्र का काम करूँगी।"

२

"प्रिये, तारा पुत्री कहाँ गई?"

"शिकार को गई है।"

"अरे, उस दिन इतना मना किया था, क्या वह बालक है, उसे रोका नहीं।"

"तुम्हीं रोक देखो।"

"वह विवाह के योग्य हो गई?"

"इसका विचार भी तुम्हीं करो।"

(तारा का प्रवेश)

"पिता जी, आपने यह बाघ का बच्चा देखा?"

"अरे-अरे, उसे यहाँ लाया कौन?"

"झाड़ी में घुस कर लाई हूँ, इसकी बेचारी माता आज मेरे बर्छे से विद्ध होकर मर गई।"

"मर गई? तूने बाघिन को मार कर बच्चा छीन लिया?"

"पिता जी, कैसा प्यारा बच्चा है!"

"तारा बेटी, तुम्हारा यह कार्य प्रशंसा के योग्य नहीं, तुम राज-कुल की कन्या हो—यों पुरुष-वेश में घूमते फिरना और शिकार करना तुम्हें उचित नहीं। जाओ भीतर बैठो।"

"पिता जी, जब मर्दों ने मर्द के सब काम और बर्ताव तक छोड़ दिए, स्त्री-जैसे बन गए—पर स्त्री का प्रधान गुण लज्जा एक बार ही तज बैठे—और चुपचाप शत्रु का लात सहते बैठे हैं, तब स्त्रियों को विवश यह वेष लेना पड़ता है।"

"तारा, ऐसा तर्क, ऐसी प्रगल्भता तूने किस से सीखी?"

"पिता जी, तब बाघ का बच्चा नहीं देखोगे? तो माता जी आओ, तुम देखो।"

"चलो बेटी, देखूँ तेरा बाघ।"

३

"मैं सुन चुकी, मेरे कान पक गए, यह सड़ा हुआ वाक्य "तुम्हें चाहता" मैं नहीं सुना चाहती, मैं इससे घृणा करती हूँ।"

"तारा, तुम्हें सुनना ही होगा।"

"कुँवर, तुम चाहो—चाहे न चाहो, इससे किसी का कुछ बनता बिगड़ता नहीं।"

"आह! कैसी पाषाण-हृदय नारी हो, किसने तुम्हें यह रूप दिया?"

"मूर्ख विधाता ने, जिसने तुम्हें मर्द और मुझे औरत बनाया।"

"तारा, तुम प्रेम का तत्व नहीं समझतीं?"

"नहीं समझती, वह तत्व मुझे सिखाया नहीं गया, वह धनियों के सम्भोग की विद्या है, घर-द्वार, राज से विहीन सामन्त की दरिद्र कन्या के लिए उपयुक्त नहीं।"

"तुम्हारी इच्छा क्या है?"

"जब तक पिता का राज्य वापस न ले लूँगी, किसी विषय को मन में स्थान न दूँगी।"

"यह किस भाँति होगा?"

"मैं नहीं जानती, पर मेरे सोचने का यही विषय है, मैं अकेली स्त्री हूँ, माना कि शस्त्र-विद्या जानती हूँ, पर जब सभी मर्द निश्चिन्त बैठे हैं, मैं अकेली क्या करूँगी?"

"क्या ब्याह की रुकावट यही है?"

"यही है। प्रेम विलासियों का स्वप्न है, साधकों का नहीं!"

"यदि मैं तुम्हारी मातृ-भूमि का उद्धार करूँ?"

"तो मैं तुम्हें ब्याहूँगी—चाहे तुम्हें चाहूँ या न चाहूँ।"

"सच?"

"सच, यह रूप, यौवन, यह सतीत्व-रत्न सब तुम्हारे चरणों में बलि होगा।"

"अच्छा, ब्याह के बाद प्रेम करोगी?"

"नहीं कह सकती, तो भी अपना रूप, यौवन सभी बेउज्र बेच दूँगी। वह तुम्हारी सम्पत्ति होगी।"

"तब यही होगा।"

"तब जाइए कुँवर, जब तक प्रतिज्ञा पूरी न करो, मेरे सामने न आना।"

४

"अर्ध रात्रि है, चोर की भाँति आया हूँ, पर प्रेम अन्धा है, अहा कैसा छलकता यौवन है! वैशाखी वायु में इसकी बहार तो देखो, आकाश में कितने नक्षत्र हैं। पर पृथ्वी पर एक यही है, कैसी सुन्दर है, बेसुध सो रही है, कैसी विशाल आँखें, भवें, अहा! चिकने केश, निखरा हुआ रङ्ग, बलिष्ठ और कोमल शरीर और वक्षस्थल का उभार, फड़कते होठ मानो चुम्बन माँग रहे हैं; यह कम्पित वक्षस्थल मानो आलिङ्गन माँग रहा है—हैं, पैर में क्या अड़ गया......"

"कौन?"

"प्रिये, चरणों का दास।"

"कुँवर, तुम इस समय यहाँ?"

"प्रिये क्षमा!"

"एक क्षण भी बिना ठहरे चले जाओ।"

"नहीं तारा, मैं बिना इच्छा पूर्ण किए न जाऊँगा।"

"नीच, कापुरुष, कुमार्गी—मेवाड़-कुल-कलङ्की, तुझे धिक्कार है! तू चोर की भाँति छिप कर कन्या के शयन-गृह में घुस आया है।"

"तारा, प्रेम अन्धा है।"

"फिर कहती हूँ, चले जाओ।"

"वरना...?"

"वरना प्राण जावेंगे।"

"मैंने द्वार बन्द कर लिए हैं, तुम्हें कौन बचावेगा?"

"अरे मूढ़, क्षत्रिय बाला स्वयं रक्षा करती है, क्या तुम जाते हो?"

"नहीं, प्रिये, एक बार इच्छा-पूर्ति कर दो।"

"तब लो।" (तलवार का प्रहार)

"तारा ठहरो, दूसरा वार न करना, मैं जाता हूँ।"

"अरे पतित, अब नहीं।" (दूसरा वार)

"क्षमा करो, निहत्थे पर वार न करो।"

"अरे घृणित चोर, खड़ा हो—यह ले।" (सिर काट लेना)

५

"यह आखेट मेरा है।"

"क्या कहा, तुम्हारा इतना साहस ?"

"तुम कौन हो इतने गर्वीले ?"

"और तुम कौन हो इतने सुन्दर कोमल और निर्भय ?"

"पहला प्रश्न मेरा है।"

"तब सुनो, मैं पृथ्वीराज हूँ।"

"मेवाड़ के राजपुत्र ?"

"हाँ वही, तुम कौन हो ?"

"इससे प्रयोजन नहीं, आखेट मत ले जाओ।"

"वाह, परिचय तो देना पड़ेगा।"

"मुझे क्षमा करो कुमार !"

"अरे, यह कैसी भाषा, मुझे ही तुम क्षमा करो, आखेट तुम ले लो।"

"नहीं, वह तुम्हारा है।"

"मन में शङ्का होती है, पर तुम स्वयं ही परिचय दो।"

"मैं तारा हूँ।"

"ओह, राजकुमारी, अच्छा मेल हुआ, यह आखेट तो मेरा है और मैं स्वयं तुम्हारा आखेट हूँ।"

"कुमार ! मेरी प्रतिज्ञा राजपूताने भर में प्रख्यात है, आप इस प्रकार की चर्चा न करें; अपने रास्ते जायँ।"

"कुमारी, आज ही वह प्रतिज्ञा पूरी होगी।"

"क्या यह सत्य है ?"

"आज मुहर्रम है, अभी तीन पहर दिन शेष है, मुसलमान सब मुहर्रम में लग रहे हैं, मेरे ५ सहस्र शूर छिपे तैयार खड़े हैं, केवल १ घण्टे का मार्ग है। क्या तुम स्वयं तमाशा देखना चाहती हो ?"

"सहर्ष"

"तब चलो, क्या पिता से आज्ञा लोगी ?"

"आवश्यकता नहीं।"

"तब चलो।"

६

"कुमारी, समस्त सेना कोट के बाहर खाई में छिपी रहने दो, हम लोग दुर्ग में चलेंगे।"

"अकेले ?"

"क्या भय लगता है ?"

"नहीं कुमार, तुम्हारे साथ, भय !"

"कुमारी, तुम्हारा असली आखेट तो वहीं है।"

"तब चलो।"

"विजयसिंह ?"

"महाराज !"

"सङ्केत का शब्द सुनते ही दुर्ग में बलपूर्वक घुस पड़ना।"

"जो आज्ञा।"

"कुमारी द्वार पर मिलेंगी, उनकी आज्ञा का पालन करना।"

"जो आज्ञा।"

"कुमारी !"

"कुँवर !"

"चलो !"

"चलो।"

७

"कुमारी, तुम्हारा अश्व बड़ा चपल है, इसे तनिक वश में रक्खो—नहीं तो नागरिक लोग इधर ही देखने लगेंगे, यह शत्रुपुरी है।"

"कुँवर, आज इसे स्वच्छन्द विचरण करने दो।"

"क्षण भर ठहर कर, देखो कितनी भीड़ है, आज सभी मस्त हो रहे हैं।"

"ठहरो, देखो ये दोनों सवार हमें घूर-घूर कर देख रहे हैं, सन्देह न करने लगें, आओ उनके निकट चलो।"

"भाई, आज क्या त्योहार है ?"

"तुम लोग परदेशी मालूम होते हो, आज मुहर्रम है।"

"ओह, हमें यह नहीं मालूम था, हम लोग अभी-अभी आ रहे हैं, परन्तु हम लोग क्या यह सब देख सकते हैं ?"

"अभी सुलतान की सवारी आ रही है, तुम्हें कौन रोकता है, ख़ुशी से देखो।"

"सच, सुलतान के दर्शन तो हमें अनायास ही हो जावेंगे। अरे, वह सुलतान की सवारी आ रही है।"

"(कान में) कुँवर, यही समय है।"

"कुमारी, क्षण भर ठहरो, और निकट ठहरो, आओ उस घर की आड़ में खड़ी हो जाओ।"

(एक तीर छाँट कर) "यही यथेष्ट होगा, कुँवर, अपने आखेट को मैं ही विद्ध करूँगी।"

"और कौन यह साहस करेगा, कुमारी। पर सुलतान को ठीक पहचान लेना।"

"वही न, जो श्वेत अश्व पर सवार हैं।"

"वही, जिसकी हरी पगड़ी में हीरा चमक रहा है।"

(तीर धनुष पर सन्धान करके) "कुँवर, देखना सूअर विद्ध होता है या नहीं।"

"तुम निर्भय बाण छोड़ो कुमारी।"

"वह मारा, सुलतान की छाती के आर-पार तीर हो गया। वह घोड़े से गिर गया। हलचल मच गई। देखो वे इधर ही आ रहे हैं। कुमारी अपना बर्छा सम्हाले रहो। मेरे बाएँ कक्ष से दूर न रहना, सीधी बढ़ी चलो—अभी फाटक खोलना है।"

"कुँवर, सावधान" (एक यवन को बर्छे से मारती हुई)

"कुमारी, सावधान" (तलवार से एक सिपाही को काट कर)

"कुँवर, बढ़े चलो !"

"आह, द्वार पर मस्त हाथी खड़ा है, सारी सेना दौड़ी आ रही है।"

"चिन्ता नहीं" (बढ़ कर एक ही तलवार के हाथ से हाथी की सूँड़ काट डालती है, हाथी चिंघाड़ता भागता है) झटपट द्वार खोल कर—

"विजयसिंह !"

"कुमारी की जय हो !"

(सेना का दुर्ग में प्रवेश, भयानक मार-काट, दुर्ग विजय)

८

"तारा, पुत्री, ये मेवाड़ के राजकुमार पृथ्वीराज हैं, इन्हें प्रणाम करो, इन्होंने सुलतान को मार कर तुम्हारे पिता का राज्य उद्धार किया है।"

"पिता जी, मैं इनका यश सुन चुकी हूँ।"

"राजकुमार, यही मेरी कन्या तारा है, मुझ दरिद्र के मस्तक का मुकुट, मेरे जीवन की डोर, तारा !"

"पिता जी !"

"तुम्हें अपनी प्रतिज्ञा याद है ?"

"जी हाँ, पिता जी !"

"कुँवर, तुम्हें मैं जामाता बनाता हूँ, यदि तुम दरिद्र का यह दान स्वीकार करो। मैं तो नहीं—पर तारा तुम्हारे योग्य है।"

"महाराज, यदि आपकी पुत्री स्वीकार करे......"

"वह तो कर चुकी, हाथ आगे लाओ पुत्री, तुम भी आगे बढ़ो, पृथ्वी, मेवाड़ के वीर, मैंने तुम्हें अपनी पुत्री दी।"

"पिता, हम आपको प्रणाम करते हैं।"

"दोनों चिरञ्जीव रहो, सुपुत्र और सुयश के भागी बनो।"

* * *

"प्रिये ! तुमने मुझे ख़रीद लिया, मैं कहीं का न रहा।"

"स्वामिन्, मैंने जन्म से प्रेम का पाठ नहीं सीखा था, आपने मुझे यह कठिन पाठ पलक झँपते सिखा दिया।"

"प्रिये, मैं तुम्हारा गुरु और शिष्य दोनों ही हूँ।"

"स्वामिन्, मैंने कभी न सोचा था कि मैं इस तरह आपको प्यार कर सकूँगी, राह-घाट में, चारणों से आपकी वीर-गाथा सुनती थी, तब मन में सोचती थी, आप ही की चरण-दासी बनूँ, पर कभी यह सम्भव भी है—यह न सोचा था। फिर जब दर्शन हुए तो हृदय में चोट-सी लगी। कठोर भावों से परिपूर्ण मुख और लाल-लाल आँखें देख कर डर गई, समझा, मैं प्रण में बद्ध नारी हूँ—मुझे यह शरीर प्रण पर बेचना है। पर ज्यों-ज्यों मिली, जितना परिचय पाया, उतना ही तुम्हें उदार पाया। मुग्ध हो आज मैं इन चरणों की मन-वचन-कर्म से दासी हुई।"

"प्रिये, प्राणेश्वरी, मैंने कभी यह सोचा भी नहीं था कि इस पृथ्वी की कठिन गोद में यह नई स्निग्ध और स्थिर बिजली, यह प्रिय चाँदनी, यह चलती-फिरती माया, यह सजीव सौरभ सुखद, यह सदेह-सङ्गीत, मुझे प्राप्त होगा !!"

"प्यारे, तुम जी-जान से मुझे प्यार करते हो, तभी तुम्हारा यह मूढ़ विश्वास है, मैं बिजली नहीं, चाँदनी नहीं, सङ्गीत भी नहीं, सिर्फ़ आपकी दासी तारा हूँ, मुझमें गुण है, दोष है, मैं अधम नारी हूँ। स्वामी, मुझे सदा क्षमा करना।"

"प्यारी, मुझे तो दोष दीखते ही नहीं।"

"प्यारे, प्यार दोषों को नहीं देखता।"

"प्रिये, आओ चलो, हम एक-दूसरे में लीन हो जगत् को भूल जायँ।"

* * *

(१७ वें पृष्ठ का शेषांश)

पड़ा। उस समय उसका नाम चारों तरफ़ फैलने लग गया था और आर्थिक दशा भी कुछ सन्तोषजनक हो चली थी। पर अब इन बातों से विशेष लाभ न था, क्योंकि उसकी जीवन-शक्ति बहुत कुछ क्षीण हो चुकी थी। बारह वर्ष उसने इसी तरह की अवस्था में काटे। जब कुछ अच्छा हो जाता तो 'कैपिटल' के लिए मसाला इकट्ठा करने लगता और जब फिर परिश्रम के फल से बीमारी बढ़ जाती, तो किसी स्वास्थ्यकर स्थान में जाकर इलाज कराता। इसी बीच में सन् १८८१ में उसकी स्त्री और सन् १८८३ के जनवरी मास में बड़ी पुत्री का देहान्त हो गया। इन घटनाओं ने उसके कलेजे को और भी चूर-चूर कर दिया और १४ मार्च, १८८३ को उसकी जीवन-लीला समाप्त हो गई।

यद्यपि मार्क्स के जीवन-काल में उसे बहुत कम सफलता प्राप्त हुई और सिवाय लिखने-पढ़ने के वह अपने उद्देश्यों में कुछ भी सफलता न पा सका, पर आज उसके दिखलाए हुए मार्ग से संसार की काया-पलट होती जा रही है। रूस का बोलशेविक शासन मार्क्स के सिद्धान्तों का जीता जागता उदाहरण है। अन्य देशों में भी उसके अनुयायियों का सङ्गठन काफ़ी मज़बूत है और कितने ही स्थानों में उनके हाथों में शासन की बहुत कुछ शक्ति भी है। इन बातों से अनुमान होता है कि वह दिन अधिक दूर नहीं है, जब कि इस दरिद्रता और असहायावस्था में जीवन बिताने वाले इस दार्शनिक तथा प्रचारक के सिद्धान्त संसार पर शासन करेंगे और दुनिया की समस्त शक्तियाँ उनके आगे मस्तक झुकाएँगी।

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

किन्तु महायुग प्रारम्भ हुआ।

यूरोप का श्वेत दर्प, सर्प की भाँति फुफकार करता हुआ रण-भेरी की लहर में लहराने लगा।

जर्मन के मर्द कैसर ने रक्त-रञ्जित अक्षत भेज कर पृथ्वी की महाजातियों को रण-निमन्त्रण दिया।

एशिया महाभूखण्ड को बाँट खाने में व्यस्त महाजातियाँ चमक पड़ीं।

विकराल अग्निमुखी तोपें गर्ज उठीं।
धरती धमकने लगी।
आकाश निष्प्रभ हुआ।
वायुमण्डल कम्पायमान हुआ।
महा नर-वरों का महा नरमेध प्रारम्भ हुआ।

छैला फ़्रान्सीसी पैरिस की रङ्गरेलियाँ छोड़ कर भाग गए।

अग्नि-प्रलय ने नर-नारियों को निःशङ्क भक्षण किया।

बहादुर अङ्गरेज़ लन्दन की गलियों में दम रोक कर बैठ गए। लन्दन, विधवा की भाँति रस-रङ्ग और जीवन से रहित मूर्च्छित नगरी सी हो गई।

तब भारत ने।

* * *

तब भारत ने,
प्राचीन ओज प्रकट किया,

वह बूढ़ा, भूखा, नङ्गा, ग़ुलाम और निरस्त्र अपाहिज था।

उसने फिर भी अपने रक्त की अन्तिम बूँद दी।

जहाँ, संसार की महाजातियों के बच्चे अपने अधिकार और जीवन के लिए लड़ रहे थे, वहाँ भारत के बच्चे अङ्गरेज़ी सत्ता की रक्षा के लिए जूझ रहे थे।

फ़्रान्स के शीतल रण-क्षेत्र में—
वर्षा, तुषार और हिम-वर्षण के बीच—
सिक्ख पठान, जाट, राजपूत और गोरखा—

अपने यौवन, और स्त्री-पुत्रों से परिपूर्ण हृदय को सङ्गीनों की नोक पर बद-बद कर विदीर्ण करा रहे थे।

कराली तोपें अग्नि वमन कर रही थीं।
ज़हरीली ग़ैस दम घोट रही थीं।

भारत के लाल, ज्वलन्त जातियों से कन्धा भिड़ाए, अपने लाल और गर्म लोहू को, उस श्वेत दर्प की वेदी पर, धैर्य-शौर्य और सहिष्णुता की चरम सीमा लाँघ कर, चढ़ा रहे थे।

वे लक्षावधि जवान बच्चे सदा के लिए वहीं सो रहे हैं।

वे सदा सोते रहेंगे।

अपने देश और जाति से दूर, अपने पति, पुत्र, पिता और परिवार से दूर, अपने प्यारे गाँव और बाल्य काल की क्रीड़ा-भूमि से दूर,

विदेश में।
विदेशियों के लिए।
वे मरे—
अथवा अमर हुए।

* * *

अथवा अमर हुए।
अर्थवाद, कौटिल्य और वीरता के नाम पर।
वीरता मर चुकी थी—वह पराजित हुई।
अर्थवाद और कौटिल्य का विजय हुआ।
वीर-शिरोमणि कैसर ने शस्त्रपात किया।

और महाजातियाँ आप शान्ति-रक्षा का बिवदारा करने बैठीं।

महाजातियों की शान्ति-रक्षा और भाग्य-विधान का महा वीभत्स और रुण्ड पाखण्ड प्रारम्भ हुआ।

नीति और रीति में जो भेद है, उसने प्रकट होकर जीवन की गुत्थियाँ खोलीं।

"जिसकी लाठी उसकी भैंस" की कहावत चरितार्थ हुई।

सभी राज-मुकुट ध्वंस हुए। परन्तु पृथ्वी पर फिर भी महाअनर्थों का मूल भूत एक महासाम्राज्य शेष रह गया।

जिस तक्षक के लिए महा सर्पमेध हुआ था, उसमें सर्प-वंश का नाश होने पर भी तक्षक तो रह ही गया।

भारत ने क्या पाया?

* * *

मज़दूर दल की परीक्षा का समय

[एक विद्वान लेखक की निष्पक्ष राय]

विलायत के एक साम्यवादी पत्र में एक लेखक ने भारत के वर्तमान राजनीतिक आन्दोलन तथा उसके सम्बन्ध में मज़दूर-दल के कर्तव्य पर बड़ी अच्छी तरह प्रकाश डाला है और बतलाया है कि अगर मज़दूर-दल वाले अपने सिद्धान्तों तथा प्रतिज्ञाओं में कुछ भी विश्वास तथा दृढ़ता रखते हैं, तो इस मौक़े पर उनको अवश्य ही भारतीय माँगों का समर्थन करना चाहिए। वह कहता है :—

"भारत में अहिंसापूर्ण युद्ध चल रहा है। वह कितना आध्यात्मिक है, कितना उच्च भावों से पूर्ण है, यह पश्चिमी लोगों की समझ में सहज में नहीं आ सकता। बम्बई का ही एक दृष्टान्त लीजिए। १२ तारीख़ के लाठी-चार्ज का एक चित्र है, जिसमें सिक्खों का एक झुण्ड बिलकुल शान्त क़तार बाँधे बैठा है। पीछे से पुलिस-मैन लाठियों का वार कर रहे हैं। दङ्गा हो रहा है, पर एकदम शान्ति है, केवल पुलिस वाले ही चल-फिर रहे हैं। सिक्ख एक वीर जाति है, हरदम कटार बाँधे रहना उनका धर्म है, पर वे चुपचाप आघात सहन कर रहे हैं। पुलिसमैन की लाठी चलती हुई देख कर विश्वास नहीं होता कि वह किसी मनुष्य को मार रहा हो। ऐसा भ्रम होता है कि वह किसी निर्जीव पदार्थ पर आघात कर रहा है। नहीं तो इतनी शान्ति किस तरह हो सकती है? इस तरह के कई और दृश्य पेश किए जा सकते हैं। जिनमें निहत्थे, शान्त जनसमुदाय पर क्रूरता व निर्दयता से लाठियों की वर्षा की गई है।

"एक ओर तो यह क्रूरता व निर्दयता है, दूसरी ओर शान्ति व विश्व-प्रेम। इस आन्दोलन के सञ्चालक महात्मा गाँधी अपने 'यरवदा-मन्दिर' (यरवदा जेल) से अपने करोड़ों अनुयायियों को विश्व-प्रेम का उपदेश दे रहे हैं। एक बार उस वातावरण की कल्पना कीजिए। एक व्यक्ति के निकट के सम्बन्धी तथा मित्रगण हज़ारों की संख्या में जेल में पड़े हैं! शान्त भाव रखने वाले साथी पुलिस की लाठियों से पीटे जा रहे हैं, हर जगह जोश भरा हुआ है। इस सबके बीच में एक निर्बल संन्यासी, जिसने विश्वव्यापक ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी है, अपने चरख़े को ध्वनित कर रहा है और अपने ध्यान में मग्न है! वह क्या सोच रहा है? क्या यह कि युद्ध में और कौन सा दाव खेला जावे? अथवा यह कि भावी शासन-प्रणाली क्या होगी? नहीं, इन सब बातों में उसका ध्यान नहीं है।

"वह यह सोच रहा है कि विश्व-प्रेम के लिए सब पाशविक भावों को छोड़ देने की आवश्यकता है। जब एक मनुष्य अपना सब प्रेम एक स्त्री को समर्पण कर देता है अथवा ऐसा ही जब एक स्त्री करती है, तब वे विश्व के और जीवों को क्या दे सकेंगे? ये सारे विश्व को अपना कुटुम्ब नहीं मान सकते। उनका कुटुम्ब तो अलग ही बन गया है। विश्व-प्रेम के मार्ग में यह बड़ी भारी बाधा है। इसलिए विश्व-प्रेमी को ब्रह्मचारी ही रहना चाहिए। जो विवाह करले, उसे भी अपनी पत्नी के साथ बहिन का सा बर्ताव रखना चाहिए। और स्त्रियाँ उसे माता, बहिन या पुत्री के समान होनी चाहिएँ। इस तरह वह बन्धन से मुक्त हो सकता है। पश्चिमी लोग इसको समझने का प्रयत्न करते हैं। क्या यह टॉलस्टॉय बोल रहा है या सेण्ट फ़्रान्सिस? नहीं, यह पूर्व के एक दुर्बल संन्यासी की आवाज़ है, जिसको सुनने के लिए हज़ारों भारतीय पागल की तरह दौड़ते हैं। इसी को सुन कर भारत ने अपना रङ्ग बदल दिया है। यही इस नए साहस, नए बल तथा आध्यात्मिक शक्ति का कारण है। इसीसे प्रभावित होकर भारतीय गोलियों के आगे भी अपनी छातियाँ खोल कर खड़े हो जाते हैं। (जैसा कि अक्षरशः पेशावर में हुआ था) और सवारों के घोड़े व पुलिस की लाठियाँ चलने पर भी वे हाथ जोड़े खड़े रहते हैं। भारत में एक आध्यात्मिक क्रान्ति हो रही है। यह सब होते हुए भी हमारे शासक मज़दूर-दल के सञ्चालक, जो संसार में शान्ति फैलाने का दावा करते हैं, क्या सोच रहे हैं? वे यह सोच रहे हैं कि अमीरों के जहाज़ गवर्नमेण्ट के क़ब्ज़े में किस तरह आवें। इस महात्मा के हज़ारों अनुयायी जेल भुगत रहे हैं और शासक जहाज़ों के बारे में सोच रहे हैं!!

"मज़दूर-दल को यह सोचना चाहिए कि यह समय ही उनकी परीक्षा का समय है। अभी तक वे बहुत सी बातें कहते आए हैं। उनमें उनको सचमुच में विश्वास था, उन पर वे अमल में चलने को तैयार हैं, यह दिखाने का यही समय है। उन्हें अपने विचारों को कार्य-रूप देने का अब समय मिला है। यदि उसका उन्होंने लाभ न उठाया, तो भारतीय तथा सारा संसार यह समझ जायगा कि मज़दूर-दल जो बातें कहता था, वह केवल एक ढोंग था, वोट पाने का एक ढङ्ग मात्र था। अब भी मौक़ा है, मज़दूर-दल को चाहिए कि वह अपनी प्रामाणिकता का परिचय दे तथा अपने विचारों पर स्थिर रहे। इसमें यह डर अवश्य है कि शायद मज़दूर-दल छोड़ना पड़े, पर दूसरी तरफ़ चलने से तो मज़दूर-दल को गवर्नमेण्ट की प्रामाणिकता तथा विश्वसनीयता पर ही धक्का लगता है, जो कि मज़दूर-दल के नाश का ही कारण होगा।"

* * *

हमारी राष्ट्रीय सेना के कुछ वीर सिपाही

आगरे के कुछ स्वयं-सेवक ताड़ी के वृक्ष काट रहे हैं।

बाईं—कुमारी मनमोहिनी ज़ुतशी, एम० ए०, जो लाहौर जेल में अपनी देशभक्ति का मूल्य अदा कर रही हैं।

दाईं—पं० मोतीलाल नेहरू की छोटी लड़की कुमारी कृष्णा नेहरू, जिन्हें 'जवाहर-सप्ताह' के जुलूस में शामिल होने के लिए ५०) रु० जुर्माना या एक मास की जेल की सज़ा हुई थी और जो किसी गुमनाम व्यक्ति के जुर्माना जमा करने पर छोड़ दी गई हैं।

अब्बास तय्यब जी—भूतपूर्व जज

जिन्होंने महात्मा गाँधी की गिरफ़्तारी के बाद धरसाना के नमक-गोदाम पर धावा करने वाले वालंटियरों का नेतृत्व ग्रहण किया था और जिन्हें इस अपराध के लिए जेल जाना पड़ा था। आप गत १२ नवम्बर को साबरमती जेल से रिहा हुए हैं, पर आपका कहना है कि, "तीन सप्ताह के भीतर वे फिर जेल-यात्रा करेंगे।"

ऑस्ट्रेलेशिया के आदिमनिवासियों के विचित्र रीति-रिवाज

टोंगन जाति की एक प्रतिष्ठित स्त्री, जिसका समाज में बड़ा सम्मान है।

जङ्गली जाति की यह कन्या अब इङ्गलैण्ड में शिक्षा पा रही है।

टोंगन जाति की स्त्रियों का सुदृढ़ और सुन्दर शारीरिक सङ्गठन

'मछली-नाच' के समय जङ्गली लोग इस पोशाक को पहिनते हैं।

एक छोटा लड़का अपने देश का एक खेल खेल रहा है।

जङ्गली जाति का कारीगर अपने यहाँ के देवता की मूर्त्ति निर्माण कर रहा है।

सालोमन द्वीप के ये निवासी अपने बालों और शरीर में एक प्रकार का श्वेत पदार्थ पोत लेते हैं।

न्यू गायना के ढोक प्रान्त का एक सरदार और उसकी पत्नी।

मानवोद्यान के कुछ विकसित पुष्प

आजकल के कुछ प्रमुख व्यक्ति

दाँता के महाराना
आप माहीकाठा (गुजरात) के राजाओं की एसोसियेशन के प्रेज़िडेण्ट हैं।

मेजर जनरल जनकसिंह जी, सी० आई० ई०
आप काश्मीर-मन्त्रि-मण्डल के सदस्य हैं।

श्री० पी० के० घोष
कलकत्ते के एक प्रसिद्ध तैराक हैं।

मि० मुहम्मद अब्दुल क़ादिर
आप बैरिस्टरी और आई० सी० एस० की परीक्षाएँ देने लन्दन गए हैं।

छत्तारी के नवाब साहब
संयुक्त प्रान्तीय गवर्नमेण्ट की एक्ज़ीक्यूटिव कौन्सिल के मेम्बर, जिनकी अवधि हाल में बढ़ाई गई है।

श्री० जी० परमेश्वरम् पिल्ले
ट्रावनकोर रियासत के अस्थायी क़ानून-सदस्य, जो सलाहकार की हैसियत से राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स में भेजे गए हैं।

कानपुर के श्रीयुत गजानन्द खेमका और उनकी धर्मपत्नी, जो समाज-सुधार में बड़ा अनुराग रखते हैं और जिन्होंने घर वालों के घोर विरोध से विचलित न होकर हानिकारक पुरानी रूढ़ियों को त्याग दिया है।

केसर की क्यारी

हमने रक्खे थे जो तिनके, आशियां के वास्ते ! हो गया तैयार इन्हीं से, झोंपड़ा सैयाद का !!

हो असर इतना तो, सोज़े[1] नालऽओ फ़रियाद का।
हम तमाशा देख लें, घर फूँक कर सैयाद का ॥
कौन सा सदमा[2] बताऊँ, इस दिले नाशाद का।
दर्द का, अरमान का, आज़ार का, बेदाद का ॥
कौंदती है आशियाँ[3] पर, आज बिजली बेतरह।
हम वहीं होते, जो होता पास घर सैयाद का ॥
मुझसे ज़ालिम ने कहा, उँगली उठा कर सूए चर्ख़[4]।
उससे कहिए, सुन्ने वाला है वही फ़रियाद का ॥
नौहागर[5] है आँख पर दिल, आँख दिल पर अश्क बार[6]।
पड़ गया है पीटना, नाशाद को नाशाद का ॥
जब कहीं नासेह[7] ने, बात अगले वक़्तों की कही।
आदमी देखा नहीं, इस उम्र में इस याद का ॥
बात पैदा कर नई, अन्दाज़ पैदा कर नया।
ऐ सितम ईजाद, इसमें लुत्फ़ है ईजाद का ॥
अब असर आए दुआ में, ग़ैर की मुमकिन नहीं।
कुछ मेरे नाले का हिस्सा, कुछ मेरी फ़रियाद का ॥
वादा झूठा कर लिया, चलिए तसल्ली हो गई।
है ज़रा सी बात, ख़ुश करना दिले-नाशाद का ॥
दोनों लब, दो काम दें, जब आशिक़ी का लुत्फ़ है।
एक ख़ामोशी का हिस्सा, एक हो फ़रियाद का ॥
कह गए वह फिर मिलेंगे, कब मिलेंगे, क्या ख़बर।
इसकी क्या मीयाद है, वादा है किस मीयाद का ॥
यह बहारे "दाग़" है गुलज़ार इबराहीम की।
"ज़ौक़"[8] कहते हैं जिसे, है फ़ैज़[9] उस उस्ताद का ॥

—महाकवि "दाग़" देहलवी

* * *

कर गया तासीर नाला, बुलबुले-नाशाद का।
हाथ खाना, पाँव अब जमता नहीं सैयाद का ॥
सब ने देखा कुछ असर, उस आख़िरी फ़रियाद का।
वह ज़रा सा मुँह निकल आया, मेरे जल्लाद का ॥
सुनते हैं, गुलचीं[10] से झगड़ा हो गया सैयाद का।
हमसफ़ीरो,[11] आज मौक़ा है मुबारकबाद का ॥
यह कहा, नक़्शा, जो देखा आशिक़े-नाशाद का।
दर्द का यह दिल नहीं, यह मुँह नहीं फ़रियाद का ॥
क्यों इजाज़त के लिए, देखा उधर हंगामे[12] क़त्ल।
बस चले तो ख़ून पी जाऊँ, अभी जल्लाद का ॥
भूल कर पूछा अगर मुझको, तो वह फिर भूल थी।
याद से पूछो, तो फिर क्या पूछना उस याद का ॥
चूकता है दिल, कोई जब बे तअल्लुक़ हो गया।
लाख में मुँह बन्द होता है, कहीं आज़ाद का ॥
बाद[13] सरसर ने बचाया आशियाने अन्द[14]लीब।
एक झोंके में, उधर मुँह फिर गया सैयाद का ॥
चर्ख़ है, या वह सितमगर, और किसका नाम लूँ।
इस सितम ईजाद का, या उस सितम ईजाद का ॥
दावरे[15] महशर के आगे उसने घबरा कर कहा।
"दाग़" कोताही न कर यह वक़्त है इमदाद[16] का ॥

—महाकवि "दाग़" देहलवी

* * *

१—जलन, २—रञ्ज, ३—घोंसला, ४—आकाश, ५—रोने वाला, ६—आँसू बहाना, ७—नसीहत करने वाला, ८—दाग़ साहब के गुरू थे, ९—कृपा, १०—फूल चुनने वाला, ११—साथी, १२—समय, १३—आँधी, १४—बुलबुल, १५—ईश्वर, १६—सहायता।

पर न बाँधे, पाँव बाँधा; बुलबुले-नाशाद का।
खेल के दिन हैं, लड़कपन है अभी सैयाद का ॥
बस ठहर, ए बेक़रारी दम नहीं फ़रियाद का।
दर्द भी आराम करता है, दिले-नाशाद का ॥
ख़ूने नाहक़ रङ्ग लाया है, दमे मशक़े सितम।
हाथ झूठा पड़ गया, आख़िर मेरे जल्लाद का ॥
तुम को मेरी जान की, ईमान की अपने क़सम।
हौसला बाक़ी न रह जाय, किसी बेदाद[17] का ॥
वे बुलाए जा के उस महफ़िल में, यह पूछेंगे हम।
वह कहाँ है, भूलने वाला हमारी याद का ॥
अहले ज़िन्दाँ[18] को भी, रहम आता है मेरे हाल पर।
रोज़ एक एक रोज़ गिनते हैं, मेरी मीयाद का ॥
क्या तग़ाफ़ुल,[19] क्या जफ़ा, यह भी सही, वह भी सही।
पड़ गया दिल को मज़ा, ज़ालिम तेरी बेदाद का ॥
परवरिश इतने असीरों[20] की, कोई आसाँ नहीं।
एक दिन जी छूट जाएगा, मेरे सैयाद का ॥
हाथ दिल पर, आह लब पर, आँख से आँसू रवाँ।
अब तो यह नक़्शा है, तेरे आशिक़े नाशाद का।
ज़बह कर डाला है, एक-एक सख़्त जाँ को ढूँढ़ कर।
आजकल है तेज़, लोहा ख़ञ्जरे-फ़ौलाद का ॥
शाह "आसिफ़जाह" ने की "दाग़" एक आलम की क़द्र।
"हैदराबाद" अब नमूना है जहानाबाद का ॥

—महाकवि "दाग़" देलहवी

* * *

राज़[21] खुल जाता, हमारे नालओ फ़रियाद का।
आप सुनते ही नहीं, क़िस्सा दिले नशाद का ॥
आस्माँ ने, दिल की बरबादी की, कुछ परवा न की।
खेल या वीरान[22] करना, ख़ानए आबाद का ॥
इस निगाहे हसरत आग़ीं[23] से, निहायत तङ्ग हूँ।
हाथ उठता ही नहीं, मुझ पर किसी जल्लाद का ॥
मेरी नज़रों से गिरी रहती है, दुनियाए दनी[24]।
अर्श[25] मञ्ज़िल है, यह पहलू तबआक़ी उफ़्ताद का ॥
उनके परचे के लिए "अकबर" ने यह कह दी ग़ज़ल।
शुक्र है उतरा तक़ाज़ा हज़रते "आज़ाद" का ॥

—महाकवि "अकबर" इलाहाबादी

* * *

फिर क़फ़स[26] में, क़द्रदाँ कोई न था बेदाद का।
हम इधर छूटे, उधर जी छुट गया सैयाद का ॥
वक़्त होगा सर्फ़ इन्हीं में, बुलबुले नाशाद का।
एक घर है बाग़बाँ का, एक घर सैयाद का ॥
शायद इसमें कुछ असर हो, वह तो निकली बेअसर।
आह पहले कर चुका, अब क़स्द[27] है फ़रियाद का ॥
ख़ाक में मिल कर, मुझे मेराज़े[28] उलफ़त मिल गई।
ज़र्रे-ज़र्रे ने मचाया गुल मुबारकबाद का ॥
हमने रक्खे थे जो तिनके, आशियाँ के वास्ते।
हो गया तैयार इन्हीं से, झोंपड़ा सैयाद का ॥

१७—निर्दयी, १८—क़ैदख़ाना, १९—ग़फ़लत, २०—क़ैदियों २१—भेद, २२—बरबाद करना, २३—हैरत भरी हुई, २४—सांसारिक बातें, २५—आकाश २६—पिंजड़ा, २७—इरादा, २८—बलन्दी,

वह क़दम रख दें ज़मीं पर, कुछ लकीरें खींच कर।
है यही ख़ाका, मेरी बिगड़ी हुई रूदाद[29] का ॥
जा रहे हैं, दर्द मन्दाने मुहब्बत हश्र[30] में।
देखिए क्या हो नतीजा आख़िरी फ़रियाद का ॥
वह असीराने-क़फ़स पर, ताज़ा आफ़त आ गई।
क्या मुझे हासिल हुआ, घर फूँक कर सैयाद का ॥
फ़ातहा गोरेग़रीबाँ[31] पर, ज़रा पढ़ दीजिए।
एक तरीक़ा है यही भूले हुओं की याद का ॥
फ़स्ले-गुल में बढ़ गया, ज़ौके असीरी इस क़दर।
बाग़बाँ से पूछता हूँ, मैं पता सैयाद का ॥
ज़िन्दगी जब तक रहेगी, रोज़ आफ़त आएगी।
ख़त्म हम होंगे, तो होगा ख़ातमा बेदाद का ॥
आशियाँ में हमने देखे, रात भर गुलशन के ख़्वाब।
सुबह दम चौंके तो घर था, सामने सैयाद का ॥
रूबरू कुछ और हैं, बरताव ग़ीबत[32] में कुछ और।
"नूह" देखा हाल याराने[33] "इलाहाबाद" का !!

—"नूह" नारवी

* * *

पूछते क्या हाल हो, मुझ ख़ानुमाँ बरबाद का।
मशग़ला है आह का, अब शग़ल है फ़रियाद का ॥
गुल हो या बुलबुल, कोई महफ़ूज़ गुलशन[34] में नहीं !
ख़ौफ़ गुलचीं का इसे, खटका उसे सैयाद का ॥
वह यहाँ आएँगे, आएँगे, मुक़र्रर आएँगे !
उठ गया ऐसा असर, क्या नालओ फ़रियाद का ॥
और दुनिया में, यह कोई काम करता ही नहीं।
पड़ गया चसका मेरे दिल को, तुम्हारी याद का ॥
बुलबुले शैदा ने खींची दिल से आहे शोला बार[35]।
राख हो जाए कहीं, जल कर न घर सैयाद का ॥
कोई कह दे यह दिले बेताब[36] से हुशियार हो।
सामना है आज उनके नावके बेदाद का ॥
वह क़यामत का समाँ, मेरी नज़र में क्यों न हो।
आह करना, और मिट जाना दिले नाशाद का ॥
ऐ "ज़या" मैं अब शबे-फ़ुरक़त[37] करूँ तो क्या करूँ।
ज़ब्त की ताक़त नहीं, बूता नहीं फ़रियाद का ॥

—"ज़या" देवान्दपुरी

* * *

लब पे शिकवा ही नहीं. लाता किसी बेदाद का।
क्या कलेजा है, तुम्हारे आशिक़े-नाशाद का ॥
नज़आ[37] में तुम पूछते हो, हाल मुझ नाशाद का।
भूलने वाला नहीं, मैं इस तुम्हारी याद का ॥
बर्क़[38] हो, सैयाद हो, गुलचीं हो, या बादे ख़िज़ाँ।
ढूँढ़ते हैं सब ठिकाना, बुलबुले नाशाद का ॥
ख़त्म होनी थी, हुई कुनजे क़फ़स में ज़िन्दगी।
मौत को अच्छा बहाना मिल गया सैयाद का ॥

(शेष मैटर २७ वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

२९—हालत, ३०—प्रलय, ३१—क़ब्र, ३२—पीठ पीछे, ३३—मित्रों का, ३४—बाग़, ३५—आग बरसाने वाला, ३६—बेचैन, ३७—जुदाई की रात ३७—आख़िरी समय, ३८—बिजली,

'चाँद' कार्यालय की अनमोल पुस्तकें

निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से दीर्घकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) रु० ; स्थायी ग्राहकों से २।)

वीरबाला

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वतन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए, युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। मू० ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

पाक-चन्द्रिका

इस पुस्तक में प्रत्येक प्रकार के अन्न तथा मसालों के गुण-अवगुण बतलाने के अलावा पाक-सम्बन्धी शायद ही कोई चीज़ ऐसी रह गई हो, जिसका सविस्तार वर्णन इस वृहत् पुस्तक में न दिया गया हो। प्रत्येक तरह के मसालों का अन्दाज़ साफ़ तौर से लिखा गया है। ८३६ प्रकार की खाद्य चीज़ों का बनाना सिखाने की यह अनोखी पुस्तक है। दाल, चावल, रोटी, पुलाव, मीठे और नमकीन चावल, पुलाव, भाँति-भाँति की स्वादिष्ट सब्ज़ियाँ, सब प्रकार की मिठाइयाँ, नमकीन, बङ्गला मिठाई, पकवान, सैकड़ों तरह की चटनी, अचार, रायते और मुरब्बे आदि बनाने की विधि इस पुस्तक में विस्तृत रूप से वर्णन की गई है। मूल्य ४) रु० स्थायी ग्राहकों से ३) रु० मात्र! चौथा संस्करण प्रेस में है।

मालिका

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण! पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर, तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४) स्थायी ग्राहकों से ३)

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

अनाथ पत्नी

इस उपन्यास में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें!

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्त-काल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनोमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं! छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

(२५ वें पृष्ठ का शेषांश)

इसका ग़म, उसका तरद्दुद, उसकी फ़िक्र, उसका ख़याल।
उम्र भर रोना रहा, मुझको दिले नाशाद का॥
ऐ मेरे सैयाद, गर्दन पर छुरी अब फेर दे।
मैं क़फ़स में, मुन्तज़िर[39] कब तक रहूँ मीयाद का?
कुञ्जे तनहाई में, मैं हूँ दूसरा कोई नहीं।
होश मेरे उड़ गए, घर देख कर सैयाद का॥
तुम चलो चालें, मगर "शातिर" नतीजा कुछ नहीं।
रङ्ग महफ़िल में जमाना काम है उस्ताद का॥

—"शातिर" इलाहाबादी

* * *

दिल हिला नालों से, मेरे उस सितम[40] ईजाद का।
भर गया तासीर से, दामन मेरी फ़रियाद का॥
कुछ उदासी छाई है, कुछ हैं तबाही के निशाँ।
वाह क्या आलम है, तेरे ख़ानमाँ बरबाद का॥
दिल को फिर वीरान करना, पहिले इतना सोच लो।
इसमें रहता कौन है, यह घर है किस की याद का॥
क्या अजब पूरी तमन्नाए शहादत[41] आज हो।
बँध रही ढारस है, तेवर देख कर जल्लाद का॥
"जोश" की ग़ज़लें न क्यों हर ऐब से हों पाक साफ़।
यह भी तो शागिर्द है आख़िर जगत-उस्ताद का॥

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

* * *

है ख़याल आज़ाद रह कर भी, वही बेदाद का।
बाग़ से मुझको, नज़र आता है घर सैयाद का॥
हौसला इससे बढ़ा, और उस सितम ईजाद का।
टुकड़े-टुकड़े जब हुआ, दामन मेरी फ़रियाद का॥
हो गया अन्दाज़ा, इससे उस सितम-ईजाद का।
किस तरह देखा गया, मिटना दिले नाशाद का॥
ख़ाक होकर, हम तने-ख़ाक़ी पर, इतराते हैं क्यों।
ख़ाक है, तो क्या भरोसा ख़ाक बे-बुनियाद का॥
हमसफ़ीरो, मेरी आहों की हवा बँधने तो दो।
एक ही झोंके में घर उड़ जायगा सैयाद का॥
अपने-अपने इश्क़ में, दोनों तो कामिल हैं, मगर।
काम मजनूँ कर नहीं सकता, कभी फ़रहाद का॥
आए हैं मक़तल में यह करते हुए जाँबाज़े[42] इश्क़।
देखना है आज दमख़म ख़न्जरे-जल्लाद का॥
वह धुआँ उठ्ठा चमन से या इलाही ख़ैर हो।
जल रहा है आशियाँ क्या बुलबुले-नाशाद का॥
जान देने पर रिहाई, जब है अपनी मुनहसिर।
किसलिए सदमा हमें हो, क़ैद की मीयाद का॥
पूछती है क्या पता सबसे फ़ुग़ाने[43] अन्दलीब।
चाँद, सूरज की तरह, रोशन है घर सैयाद का॥
वह उधर बालीं[44] से उठ कर, उनका जाना अपने घर।
वह इधर दम तोड़ देना, आशिक़े नाशाद का॥
हज़रते "बिस्मिल" यह सच है हज़रते "अकबर" के बाद।
बन गया उस्ताद, हर शायर इलाहाबाद का॥

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

३९—इन्तेज़ार में, ४०—ज़ालिम, ४१—शहीद होने की आरज़ू ४२—जान पर खेलने वाले, ४३—शोर, ४४—सिरहाने

पैलेसटाइन का प्रश्न

["इतिहास का एक विनम्र विद्यार्थी"]

संसार के इतिहास में प्राचीन काल से ही पैलेसटाइन देश का एक प्रधान स्थान रहा है। उसके कनान, पवित्र भूमि, पैलेसटाइन, जूडिया इत्यादि कई नाम रहे हैं। मोज़ेस इसराइल के निवासियों को मिश्र से इसी धन-धान्यपूर्ण देश को ले गया था। वे इस देश में बस गए तथा यहाँ उन्होंने क़रीब १५०० वर्ष तक राज्य किया। रोमन सम्राट वेस्पासिअन के राज्य-काल में यहूदियों ने एक बार बलवा किया। इसका दमन करने के लिए सम्राट ने अपने सेनापति टाइटस को भेजा। उसे इस देश के निवासियों को वश करने में बहुत कठिनाइयाँ पड़ीं, क्योंकि यहूदी लोग बड़ी वीरता से लड़े। पर आख़िर में देश को रोमन लोगों से हार माननी पड़ी। जेरूसलम का विशाल मन्दिर गिरा दिया गया। यहूदियों की सारी शक्ति, सारा वैभव मिट्टी में मिल गया। इस घटना को सैकड़ों वर्ष हो गए। पर यहूदी अपने उस वैभव को फिर से प्राप्त नहीं कर सके हैं। कहते हैं कि जेरूसलम के घेरे में ११ लाख आदमी मारे गए थे और क़रीब एक लाख बन्दी कर लिए गए थे, जो दूर-दूर देशों में दास बना कर बेचे गए थे। उस समय से उन यहूदियों की सन्तानें देश-देश में फिरती हैं। उनका देश छिन गया है। दूसरे देशों के निवासी, जो हक़ उन्हें देते हैं, उसी में उन्हें सन्तुष्ट रहना पड़ता है। यूरोप के अन्य देशवासियों ने उन्हें बहुत ज़्यादा कष्ट दिए हैं। इस दुःख में, इस पराधीनता के घोर कष्ट में भी, वे उस दिन की राह देखा करते हैं, जब वे अपने पूर्वजों की तरह अपने देश में स्वतन्त्रता से रह सकेंगे तथा उनकी पूज्य संस्थाओं को पुनर्जीवित कर सकेंगे। ईसा की १९वीं शताब्दी के क़रीब कुछ यहूदियों ने अपने देश में आकर बसने का प्रयत्न किया, परन्तु लगभग इसी काल में पैलेसटाइन तुर्कों के हाथ में आ गया और इस कारण वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके।

भारत की तरह पैलेसटाइन भी कई धर्मों की माता है। संसार के दो मुख्य धर्मों का जन्म इसी की पवित्र भूमि में हुआ है। ईसाइयों के लिए यह देश बड़ा पवित्र तथा पूज्य है। इसी की पवित्र भूमि में महात्मा ईसा अपने उपदेश देते हुए फिरा करते थे। इसी देश को ईसा ने अपनी तपस्या से तथा अपने सत्यमय आत्म-बलिदान से पवित्र किया था। इससे ईसा के अनुयायी तथा भक्त इस देश में तीर्थ-यात्रा के लिए जाया करते थे। सारासेन के राज्य में ईसाई यात्रियों को कोई तकलीफ़ नहीं दी जाती थी। पर जब पैलेसटाइन पर सेलजूकियन तुर्कों का अधिकार हो गया तब से इन धार्मिक यात्रियों को कई तरह के कष्ट दिए जाने लगे।

अपनी पवित्र भूमि को काफ़िरों के हाथ से छुड़ाने के लिए यूरोप के ईसाई लाखों की संख्या में भरती किए गए और लड़ने के लिए पैलेसटाइन की ओर भेजे गए। यह युद्ध दो सौ साल तक चला। ईसाइयों के झुण्ड के झुण्ड 'विजय या मृत्यु' यह प्रण करके जाते रहे तथा वीरतापूर्वक शत्रु का सामना करते रहे। इस युद्ध में बीस लाख वीरों ने प्राण दे दिए, पर तब भी वे अपने कार्य में सफल न हो सके। वे मुसलमानों को पैलेसटाइन से न हटा सके।

यह देश मुसलमानों के लिए भी एक पवित्र भूमि है। इसी देश को प्राचीन पैग़म्बरों ने, जो मुहम्मद से पहिले हुए थे, अपना कार्य-क्षेत्र बनाया था। फिर इस देश पर १३०० वर्षों तक मुसलमानों का क़ब्ज़ा रहा। इसलिए वे अरब (जहाँ मक्का तथा मदीना है) के बाद इसी को अपनी पवित्र भूमि मानते हैं।

यहाँ तक तो हमने पैलेसटाइन के पुराने इतिहास की चर्चा की है। अब आधुनिक काल पर दृष्टि डालना चाहिए। पुराने धार्मिक युद्धों का अन्त हुआ, मुसलमानों के वैभव तथा अपूर्व शक्ति का धीरे-धीरे ह्रास हुआ। राजनैतिक गगन में नए-नए नक्षत्र चमकने लगे। कला तथा विज्ञान की वृद्धि द्वारा नवीन असभ्य तथा छोटे-छोटे राज्यों ने अपनी सत्ता तथा शक्ति बढ़ाई। इन नवीन देशों में एक इङ्गलैण्ड है। इस आधुनिक काल में उसने एक अखण्ड साम्राज्य की स्थापना की तथा उसकी रक्षा के लिए और देशों को दबाने लगा। वायुयानों तथा मोटरों की उन्नति होने के बाद अङ्गरेज़ों की आँखों में अरब तथा पैलेसटाइन का महत्व बढ़ गया। अपने पूर्वी साम्राज्यों से बराबर सम्बन्ध रखने के लिए उन्हें इन देशों को क़ब्ज़े में रखने की आवश्यकता मालूम हुई। फिर एक और राजनैतिक घटना ने इसको ज़्यादा महत्व दिया। इङ्गलैण्ड की सत्ता मिश्र से उठ चली थी। इससे उन्हें भारत तथा ऑस्ट्रेलिया से वायुयान द्वारा सम्बन्ध रखने का केवल एक ही सुरक्षित मार्ग रह गया था। इसलिए उन्होंने अपनी सत्ता अरब तथा पैलेसटाइन में मज़बूत की। फिर अरब-स्थित हैफ़ा बन्दर युद्ध के समय में सुएज़ की नहर की रक्षा के काम आ सकता था। इसलिए भी अरब का महत्व काफ़ी था।

ब्रिटिश लोग पैलेसटाइन तथा अरब में अपनी सत्ता, अपने साम्राज्य को सुगठित रखने के उद्देश्य से रखना चाहते हैं। सन् १९१४ में, जब कि गत महायुद्ध छिड़ा हुआ था मक्का के शरीफ़ हुसेन ने इङ्गलैण्ड से लिखा-पढ़ी की। उसके फल-स्वरूप इङ्गलैण्ड तथा उसके पक्ष वालों ने अरब की स्वतन्त्रता इस शर्त पर स्वीकार की, कि अरब उनके शत्रुओं का साथ न देगा। उनकी यह चाल गत युद्ध में तुर्कों की पराजय का एक मुख्य कारण थी।

युद्ध में इङ्गलैण्ड तथा उसके पक्ष वाले राष्ट्रों ने यहूदियों से भी सहायता लेने का विचार किया। यहूदियों से बातचीत की गई, जिसके फलस्वरूप १९१६ में 'बालफ़ोर विज्ञप्ति' निकली जिसके द्वारा ब्रिटिश सरकार ने यहूदियों के पैलेसटाइन में अपना राष्ट्रीय गृह बनाने के प्रस्ताव को स्वीकार किया तथा इस कार्य में सहायता देने का वचन दिया। 'लीग ऑफ़ नेशन्स' ने भी इस सन्धि को स्वीकार किया। सन् १९२२ में फिर इङ्गलैण्ड ने इसी नीति का समर्थन किया। उन्होंने अपने कार्यक्रम में लिखा कि हम पैलेसटाइन का राजनैतिक, आर्थिक तथा अन्य प्रबन्ध इस तरह करेंगे, जो उसे यहूदियों के राष्ट्रीय गृह बनाने में सहायक हो।

यूरोप के कई राजनीतिज्ञों ने इसकी बड़ी बुराई की। 'हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स' में भी उसका तिरस्कार किया गया। पोप ने भी अपनी राय उसके विरुद्ध दी। उन्होंने कहा इस सन्धि से यहूदियों के अतिरिक्त पैलेसटाइन की अन्य जातियों को बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ेगी। पैलेसटाइन निवासी अरबों ने भी अपना विरोध

दर्शाया, तथा टर्की, अफ़ग़ानिस्तान, परशिया, मिश्र, मैसोपोटेमिया इत्यादि मुसलमान देशों से इस सन्धि का विरोध करने की प्रार्थना की। पैलेसटाइन की अन्य जातियों ने हड़ताल भी मनाई। जिस रोज़ ब्रिटिश हाई-कमिश्नर जेरूसलम में राज्य-कार्य का भार लेने वाले थे, अरब के गाड़ी चलाने वालों ने हड़ताल करना निश्चय किया। यह अपने कार्य में सफल अवश्य होते तथा संसार के अन्य देशों पर भी इसका ख़ासा असर पड़ता, पर अधिकारियों ने लाइसेन्स छीन लेने की धमकी देकर इस हड़ताल को दबा दिया।

ऐसे वायु-मण्डल में इस नई ब्रिटिश नीति का आरम्भ हुआ। इसके पश्चात छः साल तक बिलकुल शान्ति रही। ऐसा मालूम होता था कि अन्त में पैलेसटाइन निवासियों ने यह नई नीति स्वीकार कर ली। जब सीरिया की सीमा पर गड़बड़ मच रही थी, पैलेसटाइन बिलकुल शान्त था। सन्, १९२५ में सीरिया ने फ़्रेञ्च शासन का अन्त करके, अपना देश स्वतन्त्र कर लिया तथा स्वराज्य की स्थापना कर ली, तब भी पैलेसटाइन के निवासी चुप बैठे रहे, इस शान्ति से अन्य राष्ट्रों ने यह समझा कि पैलेसटाइन के निवासियों को इस नई सन्धि से अब कुछ भी असन्तोष नहीं है।

पर यह ख़्याल ग़लत था। देश में धीरे-धीरे आग सुलग रही थी। जेरूसलम में 'वेलिङ्ग वॉल' नामक एक जगह है, जिसका सम्बन्ध यहूदी तथा मुसलमान दोनों से है। सन्, १९२८ में 'एटोनमेण्ट' के त्योहार के दिन यहूदियों ने 'वेलिङ्ग वॉल' के क़रीब एक परदा लगाया। यह मुसलमानों को बुरा लगा। वे समझे कि इस कार्य से यहूदी यह बताना चाहते हैं कि इस जगह पर उनका मुसलमानों से ज़्यादा अधिकार है। इसके जवाब में मुसलमानों ने 'वेलिङ्ग-वॉल' के चारों तरफ़ और कई नई चीज़ें बनवाईं। सन्, १९२९ की १५ वीं अगस्त को यहूदी नवयुवकों ने एक जुलूस निकाला। इसमें बहुत सी ऐसी बातें थीं, जो कि मुसलमानों को अपमानित करने के लिए रक्खी गई थीं। इससे मुसलमानों में बहुत संनसनी फैली और उसी के दूसरे दिन उन्होंने भी एक जुलूस निकाला। १७ तारीख़ को एक मामूली बात के ऊपर दोनों जातियों में झगड़ा हो गया। यहूदियों ने अपने मुहल्ले में रहने वाले अरबों को मारा। इससे क्रोधित होकर अरबों ने यहूदियों के घर तथा सामान में आग लगा दी। इस तरह यह झगड़ा शुरू हुआ तथा इसमें ४७८ यहूदी तथा २६८ अरबों ने अपने प्राण खोए! कुछ दिनों तक तो इन लोगों को क़ाबू में करना मुश्किल हो गया। आरम्भ से ही देशी ख़ुफ़िया तथा अन्य पुलिस पर विश्वास करना मुश्किल हो गया था। वे अपनी-अपनी जाति के पक्षपाती थे। गवर्नमेण्ट को अन्य देशों से ब्रिटिश फ़ौज बुलानी पड़ी और तब कुछ दिनों बाद लोग क़ाबू में आए।

सन्, १९२९ की १३ सितम्बर को ब्रिटिश औपनिवेशिक मन्त्री ने इन झगड़ों के विषय में तहक़ीक़ात करने के लिए तथा भविष्य में उसके रोकने के उद्देश से एक कमीशन बैठाया। ३१ मार्च सन्, १९३० में कमीशन ने अपनी रिपोर्ट पेश की। उसमें बतलाया गया कि इस झगड़े का तात्कालिक कारण यहूदियों का जुलूस था। पर २३ अगस्त के बाद झगड़े में अरब वालों ने यहूदियों को बहुत मारा है, तथा उनकी सम्पत्ति को बड़ी हानि पहुँचाई है। भविष्य में ऐसे झगड़े रोकने के लिए कमीशन कहता है कि यहूदियों तथा अरबों के 'वेलिङ्ग वॉल' सम्बन्धी अधिकार साफ़-साफ़ निश्चय कर दिए जावें। उपद्रवियों को दण्ड देने के लिए अधिकारियों के हाथ में ज़्यादा सत्ता दी जावे व पुलिस तथा ख़ुफ़िया विभागों के प्रबन्ध में परिवर्त्तन किया जावे। छापेख़ाने के क़ानून भी इस तरह बदल दिए जावें कि राजविद्रोहात्मक ख़बर छापने वालों के साथ ठीक तौर से कार्यवाही की जा सके। पैलेसटाइन की सेना का प्रश्न इङ्गलैण्ड की युद्ध-सभा के आगे रक्खा जावे।

पर ये सब बातें असली समस्या को हल नहीं कर सकतीं, झगड़ों का मूल कारण कुछ और ही है। असल कारण तो यह है कि गत कुछ वर्षों से पैलेसटाइन में यहूदियों की संख्या बड़े ज़ोरों से बढ़ रही है। वे दूर देशों से आकर यहाँ ज़मीन ख़रीद रहे हैं, तथा बस रहे हैं। इससे अरबों के दिल में अपनी जीविका जाने का तथा यहूदियों के राजनैतिक प्रधानत्व स्थापित होने का डर पैदा हो गया है।

इस नई ब्रिटिश नीति को स्थापित हुए केवल आठ वर्ष हुए हैं। यदि हम लोग इस काल की मनुष्य-संख्या का निरीक्षण करें, तो हमें मालूम हो जावेगा कि अरबों के विचारों में कुछ तत्व अवश्य है। नीचे हम १९२२ और १९२९ की जन-संख्या देते हैं :—

जाति	मनुष्य-संख्या	
	१९२२	१९२९
मुसलमान	५,९०,८९०	६,६०,०००
ईसाई	७३,०७४	७९,०००
यहूदी	८३,७९४	१,५०,०००
अन्य जातियाँ	९,४७४	९,०००

इन संख्याओं से यहूदियों की बढ़ती हुई संख्या का अनुमान बहुत शीघ्र हो सकता है। पैलेसटाइन का क्षेत्रफल कुल ९००० वर्ग मील है। आकार में वह इन्दौर स्टेट से कुछ छोटा है अथवा हिन्दुस्तान के एक मामूली ज़िले से दूना होगा। इस नौ लाख से कम मनुष्य-संख्या वाले देश में आठ साल में यहूदियों की मनुष्य-संख्या ७०,००० बढ़ गई है। अरबों का कहना बिलकुल ठीक है, कि यदि यहूदी लोग इसी वेग से पैलेसटाइन में आवेंगे व बसेंगे तो एक पीढ़ी में पैलेसटाइन की सारी राजनैतिक तथा आर्थिक सत्ता यहूदियों के हाथ में चली जायगी। यहूदी साहूकार अरबी किसानों की ज़मीन ख़रीद रहे हैं व अरबी बेचारे केवल मज़दूर बन रहे हैं। यदि ब्रिटिश सरकार इन निकाले हुए अरबी किसानों को कहीं बसाने का प्रबन्ध कर देती, तो यह प्रश्न इतना प्रबल रूप न धारण कर सकता।

कमीशन के सदस्यों ने इस विषय पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया है। एक सदस्य ने तो यह लिखा है कि पैलेसटाइन की जितनी ज़मीन अभी जोती नहीं गई, वह दूर देश से आकर बसने वाले यहूदियों के लिए अलग रख दी जावे। यदि ऐसा प्रबन्ध किया गया तब तो अरब वालों की हालत और भी ख़राब हो जावेगी। उनकी जोती हुई ज़मीन तो यहूदी ख़रीद ही लेंगे और बेजोती हुई ज़मीन पर बसने का उनको अधिकार ही न रहेगा। इन सब प्रश्नों को हल करने का एक ही साधन है। वह यह कि ऐसे क़ानून बनाए जावें, कि यहूदी लोग अरबों की ज़मीन न ख़रीद सकें। पञ्जाब में ऐसे क़ानून बनाए गए हैं जिनके अनुसार साहूकार किसान की ज़मीन अपने क़ब्ज़े में नहीं कर सकता। पैलेसटाइन के अरब वालों की भी समस्या भारतीय किसानों की सी है। यहूदी साहूकार रुपया क़र्ज़ देते हैं, व धीरे-धीरे ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं।

एक और बात है जिसके कारण अरबी यहूदियों से घबराते हैं। यहूदी लोग अपनी पूँजी, बुद्धि तथा उत्तम सङ्गठन-शक्ति द्वारा पैलेसटाइन में अपना आर्थिक प्रधानत्व स्थापित कर रहे हैं। फिर ब्रिटिश सरकार की नई नीति से यहूदियों को अपनी आर्थिक उन्नति करने में अरबों की अपेक्षा कहीं ज़्यादा सहायता मिलती है। ब्रिटिश सरकार ने देश की उन्नति का भार उन्हीं को सौंपा है।

कमीशन के सदस्य कहते हैं कि अरबी लोग इस बात पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते कि यहूदियों के आने से उनके देश की कितनी उन्नति हो रही है। वे वृथा ही शङ्का करते हैं, कि पैलेसटाइन में यहूदी लोगों का प्रधानत्व स्थापित हो जावेगा।

पर ये सब बातें पैलेसटाइन के इस प्रश्न को हल नहीं कर सकतीं। ब्रिटिश सरकार ने स्वयम् ही यह उलझन पैदा की है। भला ब्रिटिश सरकार अन्य जातियों के राजनैतिक अधिकारों की रक्षा करती हुई, पैलेसटाइन में यहूदियों का राष्ट्रीय गृह कैसे स्थापित कर सकती है? यदि यहूदियों को पूर्ण राजनैतिक तथा आर्थिक प्रधानत्व न मिला, तो यह उनका राष्ट्रीय गृह कैसे होगा? और उन्हें और देश छोड़ कर यहाँ आने से क्या फ़ायदा हुआ? असल बात यह है कि युद्ध-काल में ब्रिटिश सरकार दोनों पक्षों की सहायता लेना चाहती थी इससे उसने दोनों को सहायता देने का वचन दे दिया। अब शान्ति स्थापित होने पर वह देख रही है, कि वह इस नीति से दो विरुद्ध दलों की भलाई कदापि नहीं कर सकती। पर राजनैतिक प्रश्नों के जवाब साफ़-साफ़ नहीं दिए जाते हैं। राजनीतिज्ञ दो तरफ़ी बातें करके अपना काम निकालना चाहते हैं। यही ब्रिटिश सरकार कर रही है, पर ऐसा कितने दिन तक चलेगा। संसार की शान्ति के लिए यह आवश्यक है कि इङ्गलैण्ड अपनी ग़लती को स्वीकार करे। उसने बिना सोचे-बूझे यहूदियों को उस देश में राष्ट्रीय गृह बनाने में सहायता दी है। जहाँ के निवासी दूसरे धर्म के मानने वाले हैं और जो अपने राजनैतिक अधिकारों को पूर्णतया समझते हैं।

इसमें सन्देह नहीं, कि दिए हुए वचन को तोड़ना राजनीति के विरुद्ध है। पर युद्ध-काल में जितने वचन दिए गए थे उनमें से कितनों का पालन किया गया है? इसी 'लीग ऑफ़ नेशन्स' ने स्मरना ग्रीकों को, दक्षिण अनातोलिया इटली को तथा सिसीलिया फ़्रान्स को देने का वचन दिया था। पर पालन तो एक भी बात का नहीं किया गया। मित्र-दल वालों ने आरमीनिया के ईसाइयों को भी टर्की के राज्य में राष्ट्रीय गृह बनाने में सहायता देने का वचन दिया था। इन ईसाइयों को टर्की के अन्य निवासियों ने बहुत कष्ट दिए हैं। वे भी पीड़ित हैं, पर क्या वे इस वचन पर स्थित रहें? ये सब राजनैतिक चालें हैं जो टर्की के राजनैतिक पतन के लिए की गई थीं। 'वान' झील के किनारे रहने वाले एसीरों-चालडीनो को भी मित्र-दल ने टर्की से स्वतन्त्र हो जाने के लिए भड़काया था। पर ये सब बातें संसार को शान्ति तथा भावी मनुष्य-जाति के सुख के उद्देश्य से नहीं की गई थीं। इनका उद्देश्य टर्की को हराने का था। जब शान्ति स्थापित हुई, तब मित्र-दल वालों ने इन वचनों के अनुसार चलने से इनकार कर दिया। यदि युद्ध-काल के दिए हुए अन्य वचनों की यह हालत है, तो केवल पैलेसटाइन के सम्बन्ध में क्यों ऐसी दृढ़ता दिखाई जाय? आख़िर यहूदी पैलेसटाइन में कौन से अधिकार चाहते हैं? क्या वे पैलेसटाइन के अल्पसंख्यक निवासी हैं, जो अपने अधिकार चाहते हैं? पैलेसटाइन की समस्या कुछ विचित्र ही है। यहूदी एक तरह से विदेशी हैं जो अरबों की इच्छा के विरुद्ध इस देश में लाकर बसाए जा रहे हैं। आजकल जब भिन्न-भिन्न देश-स्थित अल्पसंख्यक जातियों को देशों से हटा कर, वहाँ की समस्या हल की जा रही है; पैलेसटाइन में एक ऐसी नई जाति बसाई जा रही है, जिनकी संस्कृति, भाषा, धर्म तथा अन्य सामाजिक बातें वहाँ के निवासियों से बिलकुल भिन्न हैं।

(शेष मैटर ३१वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

कुछ नवीन और उत्तमोत्तम पुस्तकें

दुबे जी की चिट्ठियाँ

शिक्षा और विनोद का यह अपूर्व भण्डार है। इसमें सामाजिक कुरीतियों तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों का विवेचन बहुत ही सुन्दरतापूर्वक किया गया है। हिन्दी-संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी पुस्तक है। भाषा अत्यन्त सरल है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। मूल्य केवल ३); ले० 'दुबे जी'।

मणिमाला

अत्यन्त मनोरञ्जक, शिक्षा और विनोद से भरी हुई कहानियों का अनोखा संग्रह। प्रत्येक कहानी में सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया गया है। उन कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भयङ्कर अनर्थों की भी भरपूर चर्चा की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य केवल ३); ले० 'कौशिक' जी।

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, महान सांसारिक आपत्तियों तथा यातनाओं से आजीवन खेलने वाले, इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र सांसारिक मनुष्य के लिए अमृत के तुल्य है। इसके केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में महान परिवर्तन हो जायगा—एक दिव्य ज्योति उत्पन्न हो जायगी। सचित्र और सजिल्द मूल्य २।)

विवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अश्लील अवस्थाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन दुखी और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा उनका सुख-स्वाच्छन्द्यपूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रता-पूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १।)

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झञ्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्म-बल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना आपने एकदम बिसार दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का ख़ून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १।।); स्थायी ग्राहकों से १=) ले० 'वर्मा' एम० ए०।

मनोरञ्जक कहानियाँ

इस पुस्तक में १७ छोटी-छोटी, शिक्षाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ संग्रह की गई हैं। कहानियों को पढ़ते ही आप आनन्द से मस्त हो जायँगे और सारी चिन्ताएँ दूर हो जायँगी। बालक-बालिकाओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। केवल एक कहानी उनको सुनाइए—ख़ुशी के मारे उछलने लगेंगे, और पुस्तक को पढ़े बिना कदापि न मानेंगे। मनोरञ्जन के साथ ही प्रत्येक कहानियों में शिक्षा की भी सामग्री है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी कॉपियाँ और शेष हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १।।) ; स्थायी ग्राहकों से १=)

मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ

इस पुस्तक में पूर्वीय और पाश्चात्य, हिन्दू और मुसलमान, स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं। केवल एक बार के पढ़ने से बालक-बालिकाओं के हृदय में दयालुता, परोपकारिता, मित्रता, सचाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के अङ्कुर उत्पन्न हो जायँगे और भविष्य में उनका जीवन उसी प्रकार महान और उज्ज्वल बनेगा। मनोरञ्जन और शिक्षा की यह अपूर्व सामग्री है। भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १।।); ले० ज़हूरबख़्श।

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ।।।); स्थायी ग्राहकों के लिए ।।-)

लालबुझक्कड़

जगत्प्रसिद्ध नाटककार 'मोलियर' की सर्वोत्कृष्ट रचना का यह हिन्दी अनुवाद है। नाटक आदि से अन्त तक हास्यरस से भरा हुआ है। शिक्षा और विनोद की अपूर्व सामग्री है। मनोरञ्जन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों का भी दिग्दर्शन कराया गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य २); ले० जी० पी० श्रीवास्तव

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य केवल ।।।); स्थायी ग्राहकों से ।।-)

आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियाँ

छोटे-बड़े सभी के मुँह से आज यह सुनने में आ रहा है कि भारतवर्ष आयरलैण्ड बनता जा रहा है। उस आयरलैण्ड ने अङ्गरेज़ों की ग़ुलामी से किस तरह छुटकारा पाया और वहाँ के शिनफ़ीन दल ने किस कौशल से लाखों अङ्गरेज़ी सेना के दाँत खट्टे किए, इसका रोमाञ्चकारी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। इसमें आपको इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। मूल्य केवल दस आने। ले० सत्यभक्त।

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ।।); स्थायी ग्राहकों से ।=)

गुदगुदी

हास्य तथा मनोरञ्जन भी स्वास्थ्य के लिए एक अनोखी औषधि है। किन्तु इसका उपाय क्या है? उपाय केवल यही कि इस पुस्तक की एक प्रति मँगा लीजिए और काम की थकावट तथा भोजन के बाद पढ़िए। इसका केवल एक ही चुटकुला एक घण्टे तक आपको हँसाएगा। ले० जी० पी० श्रीवास्तव; मूल्य ।।)

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

उस दिन मैं बहुत दिनों पश्चात शाम को घूमने के लिए निकला। रास्ते में एक डॉक्टर साहब की दूकान पड़ी। ये डॉक्टर साहब अपने मित्र हैं। उन्होंने देखते ही पुकारा—"अजी दुबे जी; सुनिए तो, कहाँ चले।"

मैंने कहा—"ज़रा घूमने जा रहा हूँ !"

"बहुत दिनों बाद दिखाई पड़े, कहीं बाहर गए थे क्या ?"

"जी नहीं, इधर तबीयत-वबीयत ठीक नहीं रही, इससे घर से नहीं निकला।"

"दस-पाँच मिनिट बैठिए, फिर जाइएगा।"

मैं एक कुर्सी पर बैठ गया। डॉक्टर साहब के अगल-बग़ल चार-पाँच आदमी बैठे हुए थे।

एक महाशय बोले—"दुबे जी महराज, गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स तो हो रही है।"

मैंने कहा—"जी हाँ, क्या किया जाय ? मजबूरी है, ईश्वर की ऐसी ही इच्छा है।"

"परन्तु कॉङ्ग्रेस वालों में से तो कोई नहीं गया, फिर यह कॉन्फ्रेन्स कैसी ?"

"यह हम क्या बता सकते हैं। अपने राम हिन्दोस्तान में, कॉन्फ्रेन्स लन्दन में। जो वहाँ मौजूद हैं, वही बता सकते हैं कि यह कॉन्फ्रेन्स कैसी है।"

"नहीं हमारा मतलब यह है कि यह कॉन्फ्रेन्स कोई महत्व तो रखती नहीं।"

"हमारे आपके लिए कोई महत्व नहीं रखती, परन्तु जो कॉन्फ्रेन्स में गए हैं, उनके लिए तो बहुत बड़ा महत्व रखती है।"

"भला यह तो बताइए कि वहाँ कुछ मिलेगा ?"

"मिलेगा क्यों नहीं ? आने-जाने का किराया मिलेगा, भत्ता मिलेगा, भोज मिलेंगे, बादशाह सलामत से हाथ मिलाने को मिलेगा। सैर करने को मिलेगी। सब मिलना ही मिलना है—अपनी गाँठ से तो कुछ देना नहीं है।"

"इस मिलने को झोंकिए चूल्हे-भाड़ में, हमारा मतलब यह है कि स्वराज्य-वुराज्य कुछ मिलेगा ?"

"स्वराज्य लेने कौन गया है, जो मिलेगा।"

"आख़िर यहाँ से जो लोग गए हैं, वे क्या करने गए हैं ? स्वराज्य लेने ही तो गए हैं ?"

"हाँ गए हैं, मिल जायगा तो घसीट ही लावेंगे, अन्यथा थोड़ी सी बात के लिए झगड़ा थोड़ा ही करेंगे। शान्ति-प्रिय मनुष्य ठहरे—उन्हें रगड़ा-झगड़ा पसन्द नहीं, चाहे कुछ मिले या न मिले।"

"यदि स्वराज्य न मिला तो प्रतिनिधियों की बड़ी किरकिरी होगी।"

"किरकिरी क्या होगी। ख़ाली हाथ तो लौटने वाले नहीं, कुछ न कुछ लेकर ही आवेंगे। बादशाह सलामत ने अपनी स्पीच में ईश्वर से प्रार्थना की है कि वह प्रतिनिधियों को बुद्धि, धैर्य तथा नेकनीयती प्रचुर परिमाण में अता फ़र्मावें। सो जनाब फ़िलहाल ये तीन पदार्थ ही मिल जायँ, तो सब कुछ मिल गया। रहा स्वराज्य, सो वह इन तीनों पदार्थों के मिलने के पश्चात अपने आप चङ्गुल में आ जावेगा।"

"कैसे आ जावेगा ?"

"जिस दिन हिन्दुस्तानी यह कह देंगे कि हम में अक्किल आ गई है, अब हम बिना स्वराज्य लिए न मानेंगे और इतना धैर्य भी आ गया है कि यदि सौ वर्ष स्वराज्य न मिले, तब भी बेसब्री नहीं दिखावेंगे और न आशा छोड़ेंगे और नेकनीयती इतनी पैदा हो गई है, कि हम अङ्गरेज़ों के एहसान के बोझ के नीचे पिची हुए जा रहे हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, कि यह एहसान हमें किसी काम का न रक्खे—बस उसी दिन स्वराज्य मिला समझिए।"

"आपकी यह बात हमारी कुछ समझ में नहीं आई।"

"समझ में नहीं आई तो मैं मजबूर हूँ। समझ में आवे कैसे ? अक्किल तो है ही नहीं। अक्किल मिल जाने दो, फिर समझ में आने लगेगी।"

"कहीं स्वराज्य मिल गया तो आनन्द आ जायगा।"

"बहुत बड़ा आनन्द आ जायगा।"

"स्वराज्य मिलने पर स्वतन्त्रता तो ख़ूब मिल जायगी।"

"कैसी कुछ ! चाहे जिसकी हत्या कर डालिए, चाहे जिसका घर लूट लीजिए। जिसकी चाहे रक़म मार बैठिए, इन सब बातों की स्वतन्त्रता प्राप्त हो जायगी।"

"अच्छा, स्वराज्य में इतनी स्वतन्त्रता हो जायगी ?"

"इतनी स्वतन्त्रता न हो तो फिर स्वराज्य ही काहे का।"

एक वृद्ध महाशय बोल उठे—"स्वराज्य हो जाने पर अफ़ीम तो अवश्य सस्ती होगी। आजकल तो बड़ी मँहगी है। बुढ़ापे में अफ़ीम लाभ पहुँचाती है। सो जनाब चार आने रोज़ की अफ़ीम खानी पड़ती है। कुछ ठिकाना है। ख़ाली सुबह-शाम खाते हैं।"

"ओह ! स्वराज्य हो जाने पर तो अफ़ीम मुफ़्त बँटा करेगी। सुबह-शाम जैसे धर्मशालाओं में भोजन बँटता है, उसी तरह अफ़ीम बँटा करेगी।"

"ख़ैर, यह तो आप मज़ाक़ करते हैं, परन्तु सस्ती अवश्य हो जायगी। जितनी अब चार आने की मिलती है उतनी चार पैसे की मिलने लगे तो आनन्द आ जाय।"

"फिर तो आप अफ़ीम का हलुवा बना-बना कर खाने लगें—क्यों न ?"

"हलुवा तो क्या, परन्तु हाँ पेट भर के खाने को मिलने लगे—अभी तृप्ति नहीं होती।"

"तो एक रोज़ रुपए दो रुपए की इकट्ठी खा लीजिए—छुट्टी हो जाय।"

एक अन्य महोदय बोले—"क्यों दुबे जी, स्वराज्य मिल जाने पर यह इन्कम टैक्स तो न रहेगा।"

मैंने उत्तर दिया—"बिलकुल नहीं, बल्कि यह इन्तज़ाम किया जायगा कि जिसकी जितनी अधिक आमदनी हो, उसे सरकार की ओर से कुछ पुरस्कार मिला करे।"

"अच्छा !"

"और क्या ? जैसे खेल-कूद में इनाम बाँटे जाते हैं। जो सब से ज़्यादा दौड़े उसे इनाम, जो सब से ऊँचा कूदे उसे इनाम, जो सब से अच्छा खेले उसे इनाम, इसी प्रकार जो सब से अधिक रुपया पैदा करेगा, उसे भी इनाम दिया जाया करेगा।"

"नाहीं ऐसा तो क्या होगा।"

"आप मानते नहीं तो मैं क्या कहूँ।"

"यदि ऐसा होगा तब तो प्रत्येक आदमी अपनी आमदनी अधिक दिखाने का प्रयत्न करेगा। अभी तो इन्कम टैक्स के भय से कम दिखाते हैं, फिर अधिक दिखाएँगे।"

"बेशक, मेरी सलाह तो यह है कि आप अभी से अपने बही-खातों में आमदनी बढ़ाए चलिए ; जिसमें स्वराज्य मिलने पर पहला इनाम आप ही को मिले।"

"यदि स्वराज्य मिलने का इतमीनान हो, तो ऐसा भी करें।"

"इतमीनान तो होना ही चाहिए। जब इतने आदमी गए हैं तो धकेल-धकाल कर ले ही आवेंगे।"

एक अन्य महोदय बोले—"एक सवाल मेरा भी है।"

मैंने कहा—"अवश्य सवाल कीजिए। इस समय उदारता पर उतारू हो गया हूँ, सब के सवाल पूरे करूँगा।"

वह बोले—"स्वराज्य हो जाने पर विलायती कपड़ा बेचने की आज्ञा मिल जायगी या नहीं। देश में करोड़ों रुपए का विलायती कपड़ा बन्द पड़ा है, बड़े नुक़सान हो रहे हैं। इसका भी कुछ इलाज होगा ?"

"होगा क्यों नहीं। आपको विलायती कपड़ा बेचने की इजाज़त तो मिल ही जायगी, साथ ही यह हुक्म भी हो जायगा कि आप अपने घर में विलायती कपड़ा बनावें और बेधड़क बेचें।"

"अपने घर में विलायती कपड़ा कैसे बनावेंगे ?"

(२६वें पृष्ठ का शेषांश)

यहूदी कहते हैं कि पैलेसटाइन उनका पुराना देश है। उनके पूर्वज वहाँ रहते थे तथा उन्होंने १५०० वर्ष तक राज्य किया है। रोमन लोगों ने उन्हें ईसा की मृत्यु के ६७ साल बाद पैलेसटाइन से निकाल दिया था। यह सब अवश्य सच है। उनकी दशा पर हमें सहानुभूति अवश्य प्रकट करनी चाहिए। पर इन सब बातों से यह सिद्ध नहीं होता, कि पैलेसटाइन पर उनका वहाँ के वर्तमान निवासियों से ज़्यादा अधिकार है। अरबी भी पैलेसटाइन में उतने ही साल से हैं, जितने साल से इङ्गलैण्ड की वर्तमान जातियाँ इङ्गलैण्ड में हैं। फिर इस वक्त पैलेसटाइन अरबों के हाथ में है। यदि पुरानी जातियों के अधिकारों को सच्चा माना जावे, तो संसार की जितनी जातियाँ हैं, सब दूसरे देशों से आकर बसी हैं, फिर ये अपने वर्तमान निवास-स्थान को अपना देश क्यों कहती हैं।

सच तो यह है कि यहूदी लोगों की बातों में कुछ भी गहराई नहीं है। मित्र-दल ने जो उन्हें सहायता का वचन दिया था, वह केवल एक राजनैतिक चाल मात्र थी। इसमें उनका उद्देश केवल टर्की का नाश करना तथा अमेरिका की सहानुभूति अपनी ओर करने का था। ब्रिटिश सरकार को चाहिए कि अपनी उस नीति का साफ़-जवाब दे। पैलेसटाइन अरब वालों का देश है। उसके अधिकतर निवासी भविष्य में भी अरबी ही होंगे। अरबों में अब काफ़ी राष्ट्रीय जाग्रति हो गई है, वे अपने राजनैतिक अधिकारों को समझने लगे हैं और अब वे राजनीतिज्ञों की गोल-गोल बातों से सन्तुष्ट नहीं हो सकते। इसलिए संसार की शान्ति के लिए यह अति आवश्यक है कि पैलेसटाइन की समस्या बुद्धिमानी तथा उदारता से हल की जावे !

* * *

"यह तरकीब स्वराज्य हो जाने पर सिखाई जायगी।"

एक अन्य महाशय बोले—"एक बात मैं भी पूछना चाहता हूँ।"

मैंने कहा—"लगे हाथों आप भी पूछ डालिए।"

"स्वराज्य हो जाने पर यह म्यूनिसिपेलिटी रहेगी या नहीं और रहेगी तो मेम्बरों का चुनाव इसी तरह हुआ करेगा या कोई और ढङ्ग निकाला जायगा?"

"प्रथम तो स्वराज्य हो जाने पर म्यूनिसिपेलिटियाँ तोड़ दी जायँगी। जब स्वराज्य हो जायगा तो इनकी आवश्यकता ही क्या रहेगी।"

वह महाशय बोल उठे—"आप ठीक कहते हैं। जब स्वराज्य हो गया तो फिर म्यूनिसिपेलिटी का क्या काम। अच्छा यदि रही तो?"

"तो चुनाव का ढङ्ग बदल दिया जायगा।"

"अवश्य बदला जायगा। आजकल जो ढङ्ग है, वह तो बड़ा ख़राब है। आजकल जो मालदार है उसी की जीत होती है।"

"तब यह बात न रहेगी। उस समय जितने उम्मीदवार होंगे उन सबकी परीक्षा ली जाया करेगी, जो परीक्षा में पास होंगे, वही मेम्बर बनाए जायँगे।"

"परीक्षा किस बात की ली जायगी?"

"जो सब से अच्छी नालियाँ साफ़ कर सकेगा, जो सब से अच्छा पाख़ाना उठा सकेगा, जो सड़कें साफ़ रखने में कमाल दिखाएगा, वही मेम्बर बनाया जायगा।"

"अच्छा! परन्तु परीक्षा तो उसी काम की ली जाती है, जो पहले सिखाया जाता है—तो क्या यह सब सिखाया जायगा?"

"बेशक, इसके लिए स्कूल और कॉलेज खोले जायँगे। जैसे इस समय कृषि-कॉलेज हैं, वैसे ही उस समय नाली-कॉलेज, पाख़ाना-कॉलेज, सड़क-कॉलेज, झाड़ू-कॉलेज इत्यादि-इत्यादि खोले जायँगे।"

"यह भी अच्छा है। आजकल की जैसी किच-किच तो न रहेगी।"

"किच-किच, पिच-पिच बिलकुल न रहेगी, सब काम खटाखट होगा।"

"तभी तो स्वराज्य का आनन्द मिलेगा।"

"बेशक! अच्छा तो अब आज्ञा दीजिएगा, ज़रा घूम आऊँ।"

यह कह कर मैं चल दिया। सम्पादक जी, लोग अपने-अपने स्वार्थ के अनुसार स्वराज्य के अर्थ लगाते हैं। चोर समझते हैं स्वराज्य हो जाने पर चोरी करने की ख़ूब सुविधा हो जायगी। शराबी समझते हैं कि स्वराज्य हो जाने पर अपने घर में शराब बना सकेंगे। किसान समझते हैं कि स्वराज्य मिल जाने पर लगान बिलकुल माफ़ हो जायगा। नौकरी पेशा लोग समझते हैं कि तनख़्वाहें ख़ूब बढ़ जायँगी और काम कुछ करना नहीं पड़ेगा। इस प्रकार सब अपने-अपने स्वार्थ की वृद्धि की कल्पना करके स्वराज्य की कामना करते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो स्वराज्य में अपना विनाश देखते हैं। सरकारी नौकर समझते हैं कि स्वराज्य होने पर हम सब लोग निकाल बाहर किए जायँगे। पुलिस वाले समझते हैं कि स्वराज्य हो जाने पर हम सब लोग तोपदम करा दिए जायँगे। पूँजीपति समझते हैं कि स्वराज्य हो जाने पर हमारी सब सम्पत्ति छीन ली जायगी। इसी प्रकार लोग स्वराज्य के अर्थ लगाते हैं। यद्यपि सब इतने बुद्धू नहीं हैं, परन्तु फिर भी अधिकांश संख्या ऐसी ही मिलेगी। मेरा अनुभव तो ऐसा ही है। आपकी इस सम्बन्ध में क्या राय है?

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

[दुबे जी महाराज!

इस सम्बन्ध में हमारी तो केवल एक ही धारणा है। वह यह, कि स्वराज्य मिल जाने पर न तो "प्रेस-ऑर्डिनेन्स" पास किया जा सकेगा, न पत्र वालों से ज़मानतें माँगी जा सकेंगी और न सरकारी रिपोर्टर "भविष्य" प्रकाशित होते ही 'तुरन्त' अपनी दो कॉपियों के लिए तक़ाज़ा किया करेंगे—यदि इतनी बातें हो जायँ, तो इसी को स्वराज्य मान कर हम सन्तोष कर लेने का प्रयत्न करेंगे।

—स० 'भविष्य']

* * *

बधाई

श्री० रजनीकान्त जी शास्त्री, बी० ए०, बी० एल० बक्सर से लिखते हैं:—

'भविष्य' की सजावट देख कर चित्त प्रसन्न हो जाता है। यह देश का हित अवश्य साधन करेगा। ऐसे होनहार पत्र के निकालने के लिए आपको बधाई है। भगवान् इसे चिरजीवी करें। इसके लिए भी लेख भेजने का प्रयत्न करूँगा।

उत्तमोत्तम पुस्तकों का भारी स्टॉक

स्त्रियोपयोगी

अदृष्ट (ह० द० कं०) ३)
अपराधी (चाँ० का०) २॥)
अश्रुपात (गं०पु०मा०) १), १॥)
अरक्षणीया (इं० प्रे०) १)
अनन्तमती (ग्रं० भं०) ॥=)
अनाथ-पत्नी (चाँ० का०) २)
अनाथ बालक (इं० प्रे०) १)
„ „ (ह० दा० कं०) १॥)
अबलाओं का इन्साफ़ (चाँ० का०) ३)
अबलाओं पर अत्याचार (चाँ० का०) २॥)
अबलोन्नति पद्य-माला (गृ० ल०) ≡)॥
अभागिनी (ह० दा० कं०) १)
अभिमान (गृ० का०) १)
अमृत और विष (दो भाग) (चाँ० का०) ६)
अवतार (सर० प्रे०) ॥)
अहल्याबाई (इं० प्रे०) १॥)
„ „ (हिं० पु० भं०) ।)
अञ्जना देवी (न० दा० स० एँ० सं०) ॥=)
अञ्जना सुन्दरी (प्रा०क०मा०) १)
अञ्जना-हनुमान (स० आ०) १॥), १॥)
आदर्श चाची (व०प्रे०) १), १॥)
आदर्श दम्पति (ग्रं० भं०) १), १)
आदर्श पत्नी (स० आ०) ॥)
आदर्श बहू (ग्रं० भं०) ॥), १)
आदर्श बहू (उ० ब० आ०) ॥)
आदर्श भगिनी (ख०वि०प्रे०) ।)
आदर्श महिला (इं० प्रे०) २॥)
आदर्श महिलाएँ (दो भाग) (रा० द० अग्र०) १)
आदर्श रमणी (निहालचन्द) ॥=)
आदर्श ललना (उ० ब० आ०) ॥)
आरोग्य-साधन (महात्मा गाँधी) ।=)
आर्य-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २), २॥)
आशा पर पानी (चाँ० का०) ॥)
इन्दिरा (ख० वि० प्रे०) ॥)
„ (ह० दा० कं०) १)
ईश्वरीय न्याय (गं० पु० मा०) ॥)
उत्तम सन्तति (जटा० वै०) १॥)
उपयोगी चिकित्सा (चाँ० का०) १॥)
उमासुन्दरी (चाँ० का०) ॥)
उमा (उ० ब० आ०) १)

कन्या-कौमुदी (तीन भाग) ॥=)
कन्या-दिनचर्या (गृ० ल०) ।)
कन्या-पाकशास्त्र (ओं० प्रे०) ।)
कन्या-पाठशाला २॥)
कन्या-बोधिनी (पाँच भाग) (रा० न० ल०) १॥)
कन्या-शिक्षा (स० सा० प्र० मं०) ।)
कन्याओं की पोथी १)
कन्या-शिक्षावली (चारों भाग) (हिं० मं०) ॥=)
कपाल-कुण्डला (ह० दा० कं०) १)
कमला (ओं० प्रे०) १॥)
कमला-कुसुम (सचित्र) (गं० पु० मा०) १)
कमला के पत्र (चाँ० का०) ३)
„ „ (अङ्गरेज़ी) ३)
कृष्णाकुमारी ॥)
करुणा देवी (बेल० प्रे०) ॥=)
कलङ्किनी (स० सा० प्र० मं०) ॥=)
कल्याणमयी चिन्ता (क० म० जी०) ॥)
कुल-लक्ष्मी (हिं० मं०) १)
कुल-कमला ॥)
कुन्ती देवी १॥)
कुल-ललना (गृ० ल०) ॥=)
कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥), २)
क्षमा (गृ० ल०) ॥)
गर्भ-गर्भिणी ॥)
गल्प-समुच्चय (प्रेमचन्द) २॥)
ग्रह का फेर (चाँ० का०) ॥)
गायत्री-सावित्री (बेल० प्रे०) ।)
गार्हस्थ्य शास्त्र(त० भा० ग्रं०) १)
गीता (भाषा) १॥)
गुदगुदी (चाँ० का०) ॥)
गुणलक्ष्मी (उ० ब० आ०) ।=)
गुप्त सन्देश (गं० पु० मा०) ॥=)
गृहदेवी (म० प्र० का०) ।-)
गृह-धर्म(व० द०स० एँ० सं०)॥)
गृह-प्रबन्ध-शास्त्र (अभ्यु०) ॥)
गृह-वस्तु-चिकित्सा (चि० का०) ॥)
गृहलक्ष्मी (मा० प्रे०)) १)
„ (उ० ब० आ०) १)
गृह-शिक्षा (रा० पू० प्रे०) ≡)
गृहस्थ-चरित्र (रा० प्रे०) ।)
गृहिणी (गृ० ल०) १)
गृहिणी-कर्त्तव्य (सु० ग्रं० प्र० सं०) २॥)
गृहिणी-गीताञ्जलि (रा० श्या०) ॥)
गृहिणी-गौरव (ग्रं० मा०) १॥), २)

गृहिणी-चिकित्सा (ल० ना० प्रे०) २॥)
गृहिणी-भूषण (हिं० हि० का०) ॥)
गृहिणी-शिक्षा (क०म०जी०) १।)
गौने की रात (प्रा० का० मा०) ३)
गौरी-शङ्कर (चाँ० का०) ।=)
घरेलू चिकित्सा (चाँ० का०) १॥)
चिन्ता (सचित्र) (उ० ब० आ०) ॥)
चिन्ता (ब० प्रे०) १॥)
चित्तौड़ की चढ़ाइयाँ (ब० प्रे०) ॥=)
चित्तौड़ की चिता(चाँ०का०)१॥)
चौक पूरने की पुस्तक (चित्र० प्रे०) १)
छोटी बहू (गृ० ल०) १)
जनन-विज्ञान (पा० एँ० कं०) ३), ३॥)
जननी-जीवन (चाँ० का०) १)
जननी और शिशु (हिं० ग्रं० रा०) ॥=)
जपाकुसुम (ल० ना० प्रे०) २)
जया (ल० रा० सा०) ।-)
झाला (गं० पु० मा०) ॥=)
जासूस की डाली (गं० पु० मा०) १)
जीवन-निर्वाह (हिं० ग्रं० र०) १)
जेवनार (हिं० पु० ए०) ।-)
तरुण तपस्विनी (गृ० ल०) ।)
तारा (इं० प्रे०) १)
दक्षिण अफ़्रिका के मेरे अनुभव (चाँ० का०) २॥)
दमयन्ती (हरि० कं०) ≡)॥
„ (इं० प्रे०) ।)
दमयन्ती-चरित्र (गृ० ल०)=)॥
दम्पति-कर्तव्य-शास्त्र (सा० कुं०) १)
दम्पत्ति-मित्र (स० आ०) २॥)
दम्पति-रहस्य (गो० हा०) १)
दम्पति-सुहृद (हिं० मं०) १)
दाम्पत्य जीवन (चाँ० का०)२॥)
दाम्पत्य-विज्ञान (पा० एँ० कं०) २)
दिव्य-देवियाँ (गृ० ल०) १॥=)
दुःखिनी (गृ० ल०) ॥-)
दुलहिन (हिं० पु० भं०) ।)
देवबाला (ख० वि० प्रे०) ॥)
देवलदेवी (गृ० ल०) ।-)
देवी चौधरानी (ह० दा०कं०)२)
देवी जोन (प्रका० पु०) ।=)
देवी पार्वती (गं० पु० मा०) १), १॥)
देवी द्रौपदी (पॉपूलर) ॥=)

देवी द्रौपदी (गं० पु० मा०) ॥)
देवी सती „ ॥=)
द्रोपदी (ह० दा० कं०) २॥), ३)
धर्मात्मा चाची और अभागा भतीजा (चि०म० गु०) ।-)
ध्रुव और चिलया (चि० शा० प्रे०) ।-)
नवनिधि (प्रेमचन्द) ॥)
नल-दमयन्ती (सचित्र) ब० प्रे०) १॥), १॥), २)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
„ „ (गं० पु० मा०) ॥)
नवीन शिल्पमाला (हेमन्तकुमारी) ३)
नन्दन-निकुञ्ज (गं० पु० मा०) १), १॥)
नवीना (हरि० कं०) १॥)
नारायणी शिक्षा (दो भाग) (चि० म० गु०) ३)
नारी-उपदेश (गं० पु० मा०) ॥)
नारी-चरितमाला (न० कि० प्रे०) ॥=)
नारी-नवरत्न (म० भा० हिं० सा० स०) =)
नारी-महत्त्व ॥)
नारी-नीति (हिं० ग्रं० प्र०) ॥=)
नारी-विज्ञान (पा० एँ० कं०) २), २॥)
नारी-धर्म-विचार १॥)
निर्मला (चाँ० का०) २॥)
पतिव्रता (इं० प्रे०) १)
„ (गं० पु० मा०) १।=), १॥=)
पतिव्रता-धर्मप्रकाश १)
पतिव्रता अरुन्धती (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता गान्धारी(इं० प्रे०)॥=)
पतिव्रता मनसा (एस० आर० बेरी०) ॥)
पतिव्रता-माहात्म्य (वें० प्रे०) १)
पतिव्रता रुक्मिणी (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता स्त्रियों का जीवन-चरित्र १=)
पत्नी-प्रभाव (उ० ब० आ०) १)
परिणीता (इं० प्रे०) १)
पत्राञ्जलि (गं० पु० मा०) ॥)
पण्डित जी (इं० प्रे०) १॥)
पाक-कौमुदी (गृ० ल०) १)
पाक-प्रकाश (इं० प्रे०) ।=)
पाक-विद्या (रा० ना० ला०) =)
पाक-चन्द्रिका (चाँ० का०) ४)
पार्वती और यशोदा (इं० प्रे०) ॥=)

प्राचीन हिन्दू-माताएँ (ना० दा० स० एँ० सं०) १)
प्राणघातक-माला (अभ्यु०) ॥=)
प्राणनाथ (चाँ० का०) २॥)
प्रेमकान्त(सु० ग्रं० प्र० मं०)१॥)
प्रेम-गङ्गा (गं० पु० मा०) १), १॥)
प्रेमतीर्थ (प्रेमचन्द) १॥)
प्रेम द्वादशी १), १॥)
प्रेमधारा (गु० ला० खं०) ॥)
प्रेम-परीक्षा (गृ० ल०) १=)
प्रेम-पूर्णिमा (प्रेमचन्द) (हिं० पु० ए०) १)
प्रेम-प्रतिमा (भा० पु०) २)
प्रेम-प्रमोद (चाँ० का०) २॥)
प्रेमाश्रम (हिं० पु० ए०) ३॥)
प्रेम-प्रसून (गं० पु० मा०) १=), १॥=)
बच्चों की रक्षा (हिं०पु०ए०) ।-)
बड़ी बहू (रा० ना० ला०) ॥=)
बहता हुआ फूल (गं० पु० मा०) २॥), ३)
बड़ी दीदी (इं० प्रे०) १)
बरमाला (गं० पु० मा०) ॥)
बाला पत्र-बोधिनी (इं० प्रे०) ॥)
बाला-बोधिनी (५ भाग) (रा० ना० ला०) १॥)
बाला-विनोद (इं० प्रे०) ।=)
बालिकाओं के खेल (वें० प्रे०) =)
विराजबहू (शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय) (सर० भं०)॥≡)
वीर-बाला (चाँ० का०) ४)
ब्याही बहू (हिं० ग्रं० र०) ।)
भक्त स्त्रियाँ (रा० श्या०) ॥)
भक्त विदुर (उ० ब० आ०) ॥)
भगिनीद्वय (चि० शा० प्रे०) ।-)
भगिनी-भूषण(गं० पु० मा०)=)
भारत-सम्राट् (उ० ब० आ०) १॥)
भारत की देवियाँ (ब० प्रे०)।-)
भारत के स्त्री-रत्न(स० सा० प्र० मं०) १=)
भारत-महिला-मण्डल (ल० प्रे०) १)
भारत-माता (रा० श्या०) ।)
भारत में बाइबिल (गं० पु० मा०) ३), ४)
भारत-रमणी-रत्न (ला० रा० सा०) ॥=)
भारतवर्ष की माताएँ (श्या० ला०) ॥)
भारतवर्ष की वीर और विदुषी स्त्रियाँ (श्या० ला०ब०) ॥)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

दक्षिण अमेरिका की राज्य-क्रान्तियाँ

इङ्गलैण्ड व संयुक्त राज्य की प्रतिस्पर्धा

["पोल खोलानन्द भट्टाचार्या," एम० ए०, पी-एच० डी०]

दक्षिण अमेरिका में गत ५ महीनों के अन्दर ही तीन राज्य-क्रान्तियाँ हो चुकी हैं। हर जगह सेना ने सरकार को उलट कर राज्य पर अपनी सत्ता जमा ली है। पहिली राज्य-क्रान्ति जून के अन्त में बोलिविया में हुई, जहाँ प्रेज़िडेण्ट साइल्स से अधिकार छीन लिए गए। इसके बाद पेरू में क्रान्ति हुई और उसके फल-स्वरूप २८ अगस्त को प्रेज़िडेण्ट लिगुआ को त्याग-पत्र देना पड़ा। अभी हाल की यह ख़बर है कि अर्जेण्टाइन का प्रेज़िडेण्ट इरीगोयन भी ज़बरदस्ती अपने पद से हटा दिया गया है, और जनरल उरीबुरू की अध्यक्षता में सेना की एक कमिटी राज्य का शासन कर रही है!

दक्षिण अमेरिका की रङ्ग-भूमि पर जब ये क्रान्तियों के नाटक खेले जा रहे थे, संयुक्त राज्य की गवर्नमेण्ट घटनाओं को दत्तचित्त होकर देख रही थी। उसका इरादा था, कि जब तक उनके आर्थिक स्वार्थ पर धक्का न लगे, वे चुप बैठे रहें और इन घटनाओं में दख़ल न दें। पेरू में प्रेज़िडेण्ट लिगुआ, जो कि संयुक्त राज्य का बहुत बड़ा मित्र था, निकाला जा रहा था। अर्जेण्टाइन में उलटा हाल था। प्रेज़िडेण्ट इरीगोयन को, जो कि संयुक्त राज्य का बड़ा बैरी समझा जाता था, जनरल उरीबुरू ने पदच्युत करके शासन-भार अपने हाथ में ले लिया था।

इसके अतिरिक्त इस क्रान्ति के और भी कारण थे। लिगुआ एक ग़रीब ख़ानदान में पैदा हुआ था और जीवन का अधिकतर भाग उसने बीमा वालों की दलाली करके बिताया था। सन्, १९०८ में वह प्रेज़िडेण्ट चुना गया और सन्, १९१२ तक उस पद पर रहा। सन्, १९१२ में उसके विरोधी दलों ने इतना ज़ोर लगाया, कि उसे पेरू छोड़ कर अमेरिका भागना पड़ा। वहाँ वह सन्, १९१९ तक रहा। सन्, १९१९ में उसने एक ऐसा कार्यक्रम तैयार किया, जो कि जनता को बहुत पसन्द आया और उसने फिर देश में अपनी सत्ता क़ायम कर ली और अपने शत्रुओं का नाश करके एक बड़े कड़े राज्य की स्थापना की। कुछ दिन बीतने पर उसके अनुयायियों की संख्या और भी बढ़ गई। इससे व लेटिन यूरोप की डिक्टेटर शासन-प्रणाली से प्रोत्साहित होकर वह पेरू की सारी सत्ता को अपने क़ब्ज़े में करने लगा। आख़िर वह अपने कार्य में सफल हुआ। सारे राज्य में उसी का बोल-बाला हो गया।

पर लेटिन जातियाँ कभी भी परतन्त्र होना पसन्द नहीं करतीं, परतन्त्रता से उन्हें बड़ी चिढ़ है। यदि कोई

धार्मिक बनने वालों की पाप-लीला

इन क्रान्तियों को अमेरिका का संयुक्त राज्य तथा इङ्गलैण्ड दोनों बड़े ग़ौर से देख रहे हैं। दोनों ने इन राज्यों में करोड़ों रुपए की पूँजी लगा रक्खी है, और आर्थिक दृष्टि से दक्षिण अमेरिका इन देशों का ग़ुलाम है। दोनों देश यह चाहते हैं, कि वहाँ के राज्य-सञ्चालक ऐसे हों जो आर्थिक व्यवहार में और देशों के बजाय, इन्हीं को पसन्द करें। इस विषय में इङ्गलैण्ड और संयुक्त राज्य में बड़ी प्रतिस्पर्धा है। जब कोई प्रेज़िडेण्ट इङ्गलैण्ड के बजाय संयुक्त राज्य को ज़्यादा पसन्द करता है, तो इङ्गलैण्ड उसे घृणा की दृष्टि से देखता है और चाहता है, कि उसके बजाय उस देश की सत्ता उनसे मित्र भाव रखने वाले लोगों के हाथ में आ जाय। यही हाल संयुक्त राज्य का है।

पेरू में ४० करोड़ डॉलर की स्वदेशी पूँजी लगी हुई है। इसमें से २५ करोड़ डॉलर की पूँजी संयुक्त राज्य की और क़रीब १२ करोड़ डॉलर की पूँजी इङ्गलैण्ड की है। इङ्गलैण्ड की ज़्यादातर पूँजी रेल में लगी हुई है। संयुक्त राज्य की कुछ पूँजी सरकारी ऋण में लगी हुई है। इस ऋण के बदले में लिगुआ को शासन के कुछ विभाग अमेरिकन पदाधिकारियों की अध्यक्षता में रखने पड़े थे। यह भी जनता की असन्तुष्टता का एक मुख्य कारण था। पढ़े-लिखे युवक समझते थे कि अब हमें ऊँचे पद पाने का मौक़ा ही नहीं लग सकता। इसके अतिरिक्त आजकल की औद्योगिक तथा व्यापारिक शिथिलता ने पेरू को भी अपने पञ्जे में जकड़ लिया है। इससे अशान्ति और भी बढ़ गई थी।

उनकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर हाथ लगाना चाहेगा तो वे उसके अन्त करने में देर न लगावेंगी। इसलिए लिगुआ के शासन से जनता घृणा करने लगी और बोलिविया की क्रान्ति से प्रोत्साहित होकर वहाँ के मध्यम श्रेणी के लोगों ने सेना की सहायता से राज्य-क्रान्ति कर डाली। लिगुआ को त्याग-पत्र देना पड़ा। राज्य की सत्ता आजकल जनरल सेरो के हाथ में है। इस नई सरकार के मुख्य उद्देश्य प्रजातन्त्र स्थापन करना, छापेख़ाने को स्वतन्त्रता प्रदान करना तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की रक्षा करना है।

पेरू की तरह अरजेण्टाइन में भी प्रेज़िडेण्ट इरीगोयन की इच्छा ही राज्य का क़ानून थी। वह संयुक्त राज्य से घृणा करता था। वह संयुक्त राज्य के संरक्षण से

कुछ चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकें

भारत की विदुषी नारियाँ (गं० पु० मा०) ॥)
भारतवर्ष की सच्ची देवियाँ (शि० ब० ला० ब०) ॥=)
भारतीय ललनाओं को गुप्त-सन्देश (गं० पु० मा०) ॥)
भारतीय स्त्रियाँ („ „) १॥)
भारतीय विदुषी (इं० प्रे०) ॥)
भारतीय स्त्रियों की योग्यता (दो भाग) (ख० वि० प्रे०) १)
भार्या-हित (न० कि० प्रे०) ॥=)
भार्या हितैषिणी (प्रा० का० मा०) १॥)
मँझली दीदी (इं० प्रे०) ॥)
मणिमाला („) २)
„ (चाँ० का०) ३)
मदालसा (ल० प्रे०) ।-)
मदर-इण्डिया (उमा नेहरू) ३॥)
मदर-इण्डिया का जवाब (गं० पु० मा०) १)
मनोरञ्जक कहानियाँ (चाँ० का०) १॥)
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ (चाँ० का०) २)
मनोरमा (चाँ० का०) २॥)
महारानी पद्मावती (ल० प्रे०) ।=)
महारानी वृन्दा (एस्० आर० बेरी) १)
महारानी शशिप्रभा देवी (बेल० प्रे०) २)
महारानी सीता (ब० प्रे०) २॥) २॥), ३)
महासती अनुसूया (एस्० आर० बेरी) ॥=)
महासती मदालसा (ब० प्रे०) १॥), २), २)
महिला-महत्व (हिं० पु० भं०) २)
महिला-मोद (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥)
महिला-व्यवहार-चन्द्रिका (रा० द० अ०) ॥)
महिला-स्वास्थ्य-सञ्जीवनी (गृ० ल०) १॥)
मङ्गल-प्रभात (चाँ० का०) ४)
मञ्जरी (गं० पु० मा०) १), १॥)
माता का पुत्री को उपदेश (रा० प्रे०) ≡)
माता के उपदेश (सर० भं०) ।-)
माता-पुत्र (ना० स० ऐ० सं०) १॥=)
मानव-सन्तति-शास्त्र (ख० वि० प्रे०) १)
मानिक-मन्दिर (चाँ० का०) २॥)

मिलन-मन्दिर (हिं० पु०) २॥)
मितव्ययिता (हिं० ग्रं० र०) ॥=)
मीराबाई (ख० वि० प्रे०) ≡)
मुस्लिम-महिला-रत्न (ब० प्रे०) ॥), २॥), २॥)
मूर्खराज (चाँ० का०) २)
मेहरुन्निसा (चाँ० का०) ॥)
युगलाङ्गुलीय (इं० प्रे०) ।-)
युवती-योग्यता (इं० प्रे०) =)
युवती-रोग-चिकित्सा (चि० म० गु०) ।=)
रजनी (उ० ब० आ०) ॥=)
रमणी-कर्त्तव्य („) ॥=)
रमणी-पञ्चरत्न (रा० प्रे०) ।)
„ „ (उ० ब० आ०) २॥)
रमणी-रत्नमाला (रा० प्रे०) ।=)
उमासुन्दरी (ह० दा० कं०) २)
रङ्गभूमि (गं० पु० मा०) ४), ६)
राजस्थान की वीर रानियाँ (ल० रा० स०) १)
राधारानी (ख० वि० प्रे०) ।=)
रामायणी कथा (अभ्यु०) १)
लक्ष्मी (इं० प्रे०) ॥=)
„ (ओं० प्रे०) ।)
„ (सचित्र) (गं० पु० मा०) ॥=)
लक्ष्मी-चरित्र (स० सा० प्र० मं०) १)
„ „ (उ० ब० आ०) ।=)
लक्ष्मी-बहू (गृ० ल०) ।≡)
लक्ष्मी-सरस्वती सम्वाद (न० कि० प्रे०) ≡)
लच्छमा (ह० दा० कं०) १॥)
ललना-बुद्धि-प्रकाशिनी (मा० प्र० बु०) ।=)
ललना-सहचरी (सु० ग्रं० प्र० मं०) १॥)
वनमाला (चाँ० का०) ३)
वनिता-विनोद (मा० प्र०) ॥=)
वनिता-विलास (गं० पु० मा०) ॥)
वनिता-हितैषिणी (रा० प्रे०) ।=)
विजया (गं० पु० मा०) १॥)
विदुषी-रत्नमाला (रा० प्रे०) ।=)
विदूषक (चाँ० का०) १)
विधवा-आश्रम (ना० द० स०) ४)
विधवा-कर्तव्य (हिं० ग्रं० र०) ॥)
विधवा-प्रार्थना (ग्रं० मं०) ।-)
विधवा-विवाह-मीमांसा (चाँ० का०) ३)
„ „ (ब० प्रे०) ।=)
विमला (गु० च०) ॥)
विरागिनी (ह० दा० कं०) १)

विलासकुमारी या कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥)
विवाहित-प्रेम (स० आ०) १॥), १॥)
विष्णु-प्रिया चरित्र (इ० प्रे०) =)
वीर और विदुषी स्त्रियाँ (ज० बु० डि०) ॥)
वीर माताएँ („) ॥)
„ „ (श्या० ला० ब०) ॥)
वीर माता का उपदेश (भ० सा० मं०) १)
वीरबाला पञ्चरत्न (उ० ब० आ०) २)
वैधव्य कठोर दण्ड है या शान्ति (सा० भ० लि०) ॥≡), १-)
वैवाहिक अत्याचार और मातृत्व (भ० प्रे०) ॥)
वीर वीराङ्गना (उ० ब० आ०) ॥)
वीराङ्गना (स० आ०) ॥)
व्यञ्जन-प्रकाश (न० कि० प्रे०) १)
व्यञ्जन-विधान (दो भाग) १)
शकुन्तला की कथा (रा० द० अ०) ।-)
शकुन्तला (ब० ऐं० कं०) ॥=)
„ (न० द० स० ऐं० सं) ॥)
„ (ब० प्रे०) २), २), २॥)
„ (पॉपूलर) ॥=)
„ (ल० प्रे०) ।)
शर्मिष्ठा (उ० ब० आ०) ॥)
शर्मिष्ठा-देवयानी (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
शान्ता (चाँ० का०) ॥)
शिव-सती (ब० प्रे०) ॥=)
शिशु-पालन (इं० प्रे०) १)
„ „ (स० आ०) १)
शैलकुमारी (चाँ० का०) २)
शैलबाला (ह० दा० कं०) १)
शैव्या (उ० ब० आ०) १), ।=)
शैव्या-हरिश्चन्द्र (ब० प्रे०) २॥), २॥), ३)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
सखाराम (चाँ० का०) १)
सचित्र द्रौपदी (बेल० प्रे०) ॥)
सच्ची देवियाँ (ला० रा० सा०) ॥)
सच्ची स्त्रियाँ (") ॥)
सती (इं० प्रे०) ।)
सती-चरित्र-चन्द्रिका (नि० बु० डि०) २)
सती-चरित्र-संग्रह (ल० प्रे०) २)
सती-चिन्ता (ब० प्रे०) १॥), १॥), २)

सती चिन्ता (उ० ब० आ०) ॥)
सती दमयन्ती (ब० प्रे०) ॥=)
„ „ (उ० ब० आ०) ॥)
सती-दाह (चाँ० का०) २॥)
सती पद्मिनी (गृ० ल०) ।=)
सती पार्वती (गं० पु० मा०) १)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
„ „ (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
सती-बेहुला (ब० प्रे०) २), २॥), २॥)
सती मदालसा (उ० ब० आ०) ॥)
सती-महिमा (उ० ब० आ०) १), १॥)
सती-वृत्तान्त (ला० रा० सा०) १॥)
सती शकुन्तला (ब० प्रे०) ॥=)
सती शुक्ला (उ० ब० आ०) ॥)
सती-सतीत्व (उ० ब० आ०) १)
सती-सामर्थ्य („) ॥), १)
सती सावित्री (ना० द० स० ऐं० सं०) ।=), १)
„ „ (ब० प्रे०) ॥=)
„ „ (उ० ब० आ०) ॥)
सती सीता (ब० ऐं० कं०) ॥=)
„ (ब० प्रे०) ॥=)
„ (उ० ब० आ०) १)
सती सीमन्तिनी (एस्० आर० बेरी) ॥)
सती सुकन्या (ब० प्रे०) १), १॥), १॥)
„ (उ० ब० आ०) ॥)
सती सुचरित्रा (उ० ब० आ०) १)
सती सुनीति (उ० ब० आ०) ॥)
सती सुलक्षणा (एस्० आर० बेरी) ॥)
सप्त-सरोज (हिं० पु० ए०) ॥)
सफल-गृहस्थ (सा० भ० लि०) ॥)
सदाचारिणी (गृ० ल०) १-)
सफल माता (चाँ० का०) २)
समन्वय (भा० ग्रं० मं०) ३॥)
समाज की चिनगारियाँ (चाँ० का०) ३)
सरल व्यायाम (बालिकाओं के लिए) (इं० प्रे०) ।=)
सन्तति-विज्ञान (वे० प्रे०) ॥=)
सन्तान-कल्पद्रुम (हिं० ग्रं० र०) १)
सन्तान-शास्त्र (चाँ० का०) ४)
संयुक्ता (पॉपूलर) ॥=)
संयोगिता (मा० का०) ॥)
संयोगिता (ह० दा० कं०) ।-)
संसार की असभ्य जाति की स्त्रियाँ (प्रका० पु०) २॥)

सावित्री (ब० प्रे०) ।=)
„ (हिं० पु० भं०) ।)
„ (हरि० कं०) १॥)
सावित्री और गायत्री (बेल० प्रे०) ॥)
सावित्री-सत्यवान (उ० ब० आ०) ॥)
„ „ (ब० प्रे०) १), १॥), २)
„ „ (स० आ०) ॥), १)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
सीता की अग्नि-परीक्षा (स० सा० प्र० मं०) ।-)
सीता-चरित्र (इं० प्रे०) १॥)
सीता जी का जीवन-चरित्र (रा० प्रे०) १)
सीताराम (उ० ब० आ०) १)
सीता-वनवास (इं० प्रे०) ॥=)
„ „ (ब० ऐं० को०) ॥=)
„ (स० आ०) ॥=), १=)
सीता (सचित्र) (ब० प्रे०) २॥)
सीतादेवी (पॉपूलर) ॥=)
सुकुमारी (ओं० प्रे०) ॥=)
सुखी गृहस्थ (प० ला० लि०) ॥)
सुघड़ चमेली (गं० पु० मा०) =)
सुघड़ दर्ज़िन (इं० प्रे०) ॥)
सुघड़ बेटी (सर० प्रे०) ॥)
सुनीति (उ० ब० आ०) ॥)
सुभद्रा (ब० प्रे०) २), २), २॥)
सुहागरात (इं० प्रे०) ४)
सुर-सुन्दरी (ग्रं० भं०) ।-)
सुशीलाकुमारी (सर० प्रे०) ॥)
सुशीला-चरित (इं० प्रे०) १॥)
सुशीला विधवा (वें० प्रे०) १)
सुन्दरी (श्री० वि० ज० ज्ञा० मं०) ॥)
सुभद्रा (पॉपूलर) ॥=)
सौभाग्यवती (इं० प्रे०) ।)
सौरी-सुधार (इं० प्रे०) ॥)
सौन्दर्यकुमारी (ओं० प्रे०) ≡)
स्त्रियों की पराधीनता (बदरीनाथ भट्ट) ॥)
स्त्रियों की स्वाधीनता (श्री० वि० ज० ज्ञा० मं०) ॥)
स्त्री के पत्र (चन्द्रशेखर) १)
स्त्रियों के रोग और उनकी चिकित्सा (इं० प्रे०) १)
स्त्री-रोग-विज्ञानम् (चाँ० का०) ३)
स्त्री-उपदेश (न० कि० प्रे०) ।=)
स्त्री और पुरुष (स० सा० प्र० मं०) ।=)
स्त्री-कर्तव्य (ख० वि० प्रे०) ॥)
स्त्री-चर्या (ब० कं०) ≡)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

दूर भागता था, इसलिए वह यह नहीं चाहता था कि संयुक्तराज्य की पूँजी अरजेण्टाइन में आवे। गए साल ही संयुक्त राज्य की दरख़ास्त का तिरस्कार करके उसने क़रीब चार करोड़ डॉलर का ऋण इङ्गलैण्ड से लिया था। जब उसके विरुद्ध क्रान्ति हुई, तब इससे इङ्गलैण्ड को बहुत चिन्ता हुई। जनरल उरीबुरू का भी उद्देश राज्य में प्रजातन्त्र स्थापन करने का है।

दोनों देशों की नई सरकारों से इङ्गलैण्ड व संयुक्त राज्य दोनों ने राजनैतिक सम्बन्ध कर लिया है। इसमें इतनी जल्दी क्यों की गई? इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर हो सकता है, और वह यह है, कि दोनों देशों के पूँजीपतियों में बड़ी प्रतिस्पर्धा है। दोनों देशों के विजयी सेनापतियों ने विदेश के ऋणों को स्वीकार किया है और साथ ही मित्र-भाव रखने का वचन दिया है। राजनीतिज्ञों को संयुक्त राज्य की इस जल्दी से कुछ आश्चर्य अवश्य हुआ होगा। प्रेज़िडेण्ट विलसन के समय से इस विषय में उनकी नीति बिलकुल भिन्न प्रकार की थी।

सन्, १९१६ में प्रेज़िडेण्ट विलसन ने मेक्सिको की नई सरकार से सम्बन्ध करने से इनकार किया था। पर मालूम होता है, कि कई विशेष कारणों से संयुक्त राज्य को अपनी नीति बदलनी पड़ी है। राजनैतिक सम्बन्ध करने के लिए अब केवल एक वचन देने की आवश्यकता रह गई है। बस नई सरकार के यह वचन देते ही, कि हम तुम्हारा माल ख़रीदेंगे, फिर राजनैतिक सम्बन्ध होने में देर नहीं लगती।

अब यह देखना है, कि इन देशों में कैसी शासन-प्रणाली की स्थापना होती है? ये क्रान्तिकारी सेनापति स्वयं राजसत्ता को दाब कर बैठ जायँगे, या वे प्रजातन्त्र की स्थापना करने का प्रयत्न करेंगे? शासन चाहे जिस तरह का हो, एक बात तय है कि इन राज्य-क्रान्तियों से जनता की अवस्था में कुछ विशेष अन्तर न होगा। यह भी तय है कि यदि ये सेनापति सब सत्ता अपने हाथ में कर लेंगे, तो ज़्यादा समय तक न टिक सकेंगे। प्रजा-तन्त्र के सिद्धान्तों को मध्यम-श्रेणी की जनता ने ख़ूब समझ लिया है। वहाँ की प्रजा अब सत्ताधारियों से तथा अन्य देशों के संरक्षण से घृणा करने लगी है। स्वतन्त्रता की लहर सारे महाद्वीप में फैल रही है और उसके बहाव के आगे कोई भी सत्ताधारी या विदेशी हस्तक्षेप करने वाला टिक नहीं सकता—यह तो स्पष्ट ही है।

* * *

संसार की औद्योगिक शिथिलता

[श्री० जे० देव, एम० ए०, एल्-एल्० बी०]

संसार की व्यापारिक तथा औद्योगिक दशा शोचनीय क्यों हो रही है—इस प्रश्न को हल करने में आजकल संसार के सारे अर्थशास्त्री व राजनीतिज्ञ अपना दिमाग़ लगा रहे हैं। लीग ऑफ़ नेशन्स भी इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न कर रही है।

इस बात को कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता कि कई महीनों से संसार के लगभग सब भागों में बाज़ार मन्दा हो रहा है। कुछ लोगों का मत है कि अब अमेरिका, इङ्गलैण्ड, इटली, बेलजियम, नॉर्वे, जापान तथा केनाडा में कुछ उन्नति के चिन्ह अवश्य नज़र आ रहे हैं। यह एक बड़ी ख़ुश-ख़बरी है।

ज़्यादातर लोग इस मन्दी का कारण 'अधिक उत्पत्ति' बतलाते हैं अर्थात् संसार की उत्पत्ति उसकी आवश्यकताओं से अधिक है। पर बहुत से बड़े अर्थ-शास्त्रज्ञ कहते हैं कि यह मत ठीक नहीं है। कुछ कहते हैं इसका कारण अधिक उत्पत्ति नहीं, वरन् कमख़र्ची तथा हमारे समाज के धन का अनुचित बँटवारा है। कुछ लोग युद्ध-ऋण को व कुछ युद्ध के बाद विदेशी विनिमय पर लगाए गए टैक्सों को मन्दी का कारण बतलाते हैं।

अर्थशास्त्र के कुछ और विचारशील आचार्य कहते हैं, कि संसार के स्वर्ण-भण्डार का दुरुपयोग ही इसका मुख्य कारण है। बेलजियम के नेशनल बैङ्क के एक प्रधान अधिकारी कहते हैं कि ये सब बातें मिल कर इस मन्दी को उत्पन्न कर रही हैं। वे कहते हैं कि इस मन्दी के कारण कमख़र्ची, केनाडा, ब्रेज़िल तथा अमेरिका का विदेशी विनिमय पर टैक्स, ऑस्ट्रेलिया का बड़ा ऋण, भारत तथा ईजिप्ट का राजनैतिक आन्दोलन तथा चीन और रूस की ख़राब आन्तरिक स्थिति है।

इसमें सन्देह नहीं कि इस मन्दी का कारण कोई एक विशेष घटना नहीं, वरन् बहुत सी बातें हैं। कई राष्ट्रों की गवर्नमेण्ट विदेशी व्यापार पर टैक्स लगा कर संसार के औद्योगिक तथा व्यापारिक विकास में विघ्न डाल रही हैं। विदेशी माल पर टैक्स लगाना तथा विदेशियों को अपने देश में आने से रोकना प्राकृतिक चुनाव को रोकते हैं। और लोगों को लापरवाह व फ़िज़ूलख़र्च बनाते हैं।

फिर इस मत के विरोध में दिए जाने वाले "अधिक उत्पत्ति" वाले मत में भी कुछ तत्व ज़रूर है। कुछ उद्योग-धन्धों में और विशेषकर कृषि में—ज़रूरत से ज़्यादा लोग काम कर रहे हैं। पर यह कहना कि संसार का कोई भाग आवश्यकता से ज़्यादा चीज़ें बनाता है, सर्वथा ग़लत है। मामूली घरों के निवासियों की सुविधाएँ अभी कहीं ज़्यादा बढ़ाई जा सकती हैं। मामूली मनुष्यों को आवश्यकता भर के लिए कपड़ा नहीं मिलता है। सवारी की चीज़ों का तो कुछ कहना ही नहीं। वे तो यदि तिगुनी संख्या में भी बना कर दी जावें तब भी संसार की आवश्यकता को पूरी न कर सकेंगी। मनुष्य को अभी बहुत सी वस्तुओं की आवश्यकता है। संसार में अधिक उत्पत्ति नहीं हो रही है, वरन् हमारे समाज का आर्थिक बँटवारा इतना ख़राब है कि ज़्यादातर लोगों के पास आवश्यकता की चीज़ें ख़रीदने के लिए धन ही नहीं है। इसलिए उनकी ख़रीदने की शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता है। अमेरिका ने इस शक्ति को बढ़ाने का सब से ज़्यादा प्रयत्न किया है। यदि संसार की वर्तमान बिक्री की वृद्धि न हुई, तो उद्योग तथा धन्धे इस रफ़्तार से अपनी उत्पत्ति जारी नहीं रख सकते। इसके लिए लोगों के रहन-सहन की उन्नति करने की आवश्यकता है। यदि ऐसा हुआ तो हमें मालूम होगा कि हमारी उत्पत्ति ज़्यादा नहीं, वरन् आवश्यकता से कहीं कम है। और तब उलटा उद्योग-धन्धों को बढ़ाने का हमें प्रयत्न करना पड़ेगा। यूरोपीय देश इस मन्दी के कारण अमेरिका से कहीं ज़्यादा कष्ट इसलिए पा रहे हैं कि उनके निवासियों की आवश्यकता वहाँ बहुत कम है। उनका माल अपने ही देश में बिलकुल नहीं खप सकता। उनका ज़्यादातर माल विदेश में बिकता है, क्योंकि मज़दूरों को बहुत कम वेतन मिलता है इससे वे अपने रहन-सहन के ख़र्च को नहीं बढ़ा सकते। अमेरिका में माल विशेष कर देश के ही लिए बनाया जाता है और विदेश में केवल बचा हुआ माल भेजा जाता है। अमेरिका का विदेशी व्यापार भी बहुत बड़ा है, पर वह देशीय व्यापार का एक अंश मात्र है। अन्य राष्ट्रों के माल पर टैक्स लगाने पर भी अमेरिका के लोगों के माल ख़रीदने की शक्ति ज़्यादा होने के कारण वह संसार का सब से बड़ा बाज़ार है। अधिक उत्पत्ति की समस्या हल करने के लिए संसार की उत्पत्ति को रोकना उलटे मार्ग पर जाना है। इसमें सन्देह नहीं कि नवीन सुधार करने पर उद्योग तथा व्यापार में कुछ रद्दो-बदल करना पड़ेगा। पर इस मन्दी की समस्या को हल करने का यही एक मात्र कारगर उपाय है।

यूरोप में बेकारी इसलिए फैल रही है, क्योंकि वहाँ के निवासियों ने उद्योग-धन्धे सम्बन्धी कला तथा विज्ञान में बहुत उन्नति की है। यह उन्नति इतने वेग से हुई है कि वहाँ की खानों, फ़ेक्टरियों तथा आविष्कारकों ने इतना अच्छा काम किया है कि उसकी उत्पादक शक्ति उसके निवासियों की माल ख़रीदने की शक्ति से कहीं ज़्यादा बढ़ गई है। इसका यह फल हुआ है कि बाज़ारों में ज़रूरत से ज़्यादा माल है, चीज़ों की क़ीमत गिर गई है और मज़दूर बेकार हो गए हैं। मध्य तथा पूर्वीय यूरोप में किसानों ने इतनी ज़्यादा उत्पत्ति कर ली है कि अनाज का भाव गिर गया है। उन्हें कम दाम मिलने के सबब से उनकी माल ख़रीदने की शक्ति भी कम हो गई है।

इङ्गलैण्ड की औद्योगिक शिथिलता का कारण बिलकुल भिन्न है। इसका ज़्यादातर माल विदेश में बिकता है तथा बहुत से देश और स्वयं उसके उपनिवेश जो कि युद्ध से पूर्व उसके माल को ख़रीदते थे, अब ख़ुद काफ़ी माल बनाने लगे हैं। फिर कई राष्ट्रों में उसके माल का बहिष्कार हो रहा है, भारत इनमें मुख्य है।

इस मन्दी का एक और कारण बतलाया जाता है, जो ठीक मालूम होता है। गत महायुद्ध ने संसार की औद्योगिक स्थिति में बहुत परिवर्तन कर दिया है। उसने विदेशी व्यापारिक सम्बन्धों में बहुत कुछ फ़र्क़ कर दिया है। युद्ध से यूरोप के बाहर के देशों को माल बनाने का बहुत प्रोत्साहन मिला है। विदेशी माल पर टैक्स लगाने के आन्दोलन ने युद्ध के पश्चात् बहुत ज़ोर पकड़ा है। इससे कई देशों में अधिक उत्पत्ति हो गई है, तथा माल के दाम गिर गए हैं। इस बाहरी मन्दी का असर धीरे-धीरे संरक्षित देशों पर भी हुआ है तथा वहाँ भी क़ीमत गिर गई है। स्वदेश के उद्योगों की उन्नति करने

(शेष मैटर ३९ वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य आठ आने!

पुस्तक की उपयोगिता नाम ही से प्रकट है। इसके सुयोग्य लेखक ने यह पुस्तक लिख कर महिला-जाति के साथ जो उपकार किया है, वह भारतीय महिलाएँ सदा स्मरण रक्खेंगी। वर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः प्रत्येक बातों का वर्णन पति-पत्नी के सम्वाद-रूप में किया गया है। लेखक की इस अदूरदर्शिता से पुस्तक इतनी रोचक हो गई है कि इसे एक बार उठा कर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से "गागर में सागर" वाली लोकोक्ति का परिचय मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में कुल २० अध्याय हैं; जिनके शीर्षक ये हैं :—

(१) अच्छी माता (२) आलस्य और विलासिता (३) परिश्रम (४) प्रसूतिका स्त्री का भोजन (५) आमोद-प्रमोद (६) माता और धाय (७) बच्चों को दूध पिलाना (८) दूध छुड़ाना (९) गर्भवती या भावी माता (१०) दूध के विषय में माता की सावधानी (११) मल-मूत्र के विषय में माता की ज्ञानकारी (१२) बच्चों की नींद (१३) शिशु-पालन (१४) पुत्र और कन्या के साथ माता का सम्बन्ध (१५) माता का स्नेह (१६) माता का सांसारिक ज्ञान (१७) आदर्श माता (१८) सन्तान को माता का शिक्षा-दान (१९) माता की सेवा-शुश्रूषा (२०) माता की पूजा।

इस छोटी सी सूची को देख कर ही आप पुस्तक की उपादेयता का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में होनी चाहिए। मूल्य १।); स्थायी ग्राहकों से ।।।=)

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य १)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी! यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक़ एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक़ भी हैं। मूल्य ।)

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-परम्पराएँ, अन्ध-विश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभागा देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है। 'समाज की चिनगारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु वह धुँधला चित्र भी ऐसा दुखदायी है कि देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहाविरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; सजीव प्रोटेक्टिङ्ग कवर ने तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं। फिर भी मूल्य केवल प्रचार-दृष्टि से लागत-मात्र ३) रक्खा गया है। 'चाँद' तथा स्थायी ग्राहकों से २।) रु०!

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों से २।)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

साम्यवाद

[श्री० "सुधीर"]

पाठकों को विदित होगा कि गत २३, अक्टूबर के 'भविष्य' में साम्यवाद शीर्षक एक लेख निकला था। उसमें श्रीवास्तव जी ने अपने जो विचार प्रकट किए हैं, उससे मालूम होता है कि आप धर्म और लोक-परलोक के बड़े पक्षपाती हैं। अतएव यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, कि आपने साम्यवाद की शुभ्र-प्रभा पर धूल फेंकने का प्रयत्न किया है; क्योंकि साम्यवाद केवल साम्राज्यवाद, पूँजीवाद इत्यादि के लिए ही हौआ नहीं है, प्रत्युत संसार के प्रचलित प्रायः सारे धर्मों का भी कट्टर शत्रु है।

मैं मार्क्स और लेनिन की तरह साम्यवाद का आचार्य तो हूँ नहीं, लेकिन लेखक महाशय ने अपने विचार की पुष्टि के लिए जिन तर्कों की शरण ली है, उन पर मैं कुछ विनम्र मत प्रकट करना चाहता हूँ। लेखक महाशय के राजनैतिक विचार तो उनके लेख से ही झलकते हैं। आपने राजनैतिक दृष्टि से इसकी आलोचना भी नहीं की है। आपने धर्म के—और विशेषतः हिन्दू-धर्म के—चश्मे से साम्यवाद की ओर नज़र डाली है। अस्तु, साम्यवाद के राजनैतिक प्रभाव का उल्लेख करना यहाँ फ़िज़ूल होगा।

साम्यवाद एक बहुत गहन और विस्तृत विषय है और वर्तमान समय में उसने एक जटिल प्रश्न का रूप धारण कर लिया है। दिनोंदिन इसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इसके सिद्धान्तानुसार सारे संसार में दो जातियाँ हैं—एक अमीर और दूसरी ग़रीब; एक दूसरी को लूटने वाली और सताने वाली और दूसरी वह, जिसके पसीने की कमाई से प्रथम श्रेणी के मनुष्य मज़ा उड़ाते हैं। एक ओर बेचारे किसान, मज़दूर अपने स्त्री-बच्चों समेत दिन-दिन भर अपना ख़ून बहाते हैं और तब भी उन्हें खाने को लाले पड़े रहते हैं और दूसरी ओर लोक-परलोक की गन्दी हवा फैलाने वाले धर्म-गुरु और पूँजीपतियों को परलोक की सारी सामग्रियाँ—सुन्दर स्त्रियाँ, बड़े-बड़े महल इत्यादि—बैठे-बैठे ही मिल जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि संसार के हर एक समाज में यह दोनों श्रेणियाँ वर्तमान हैं—इसे कोई भी अस्वीकार नहीं करेगा। क्या एक मुसलमान नवाब अपने मुसलमान नौकर को जूते से नहीं ठुकरा देता? क्या एक हिन्दू राजा एक हिन्दू किसान पर मामूली बातों पर कोड़े नहीं बरसाता? क्या ईश्वर और लोक-परलोक की भी बातें करने वाले धर्मात्मा 'ग़रीब अछूतों' की अधोगति नहीं करते? इन सारी बातों से मालूम होता है कि संसार का कोई धर्म इन दो श्रेणियों से परे नहीं है।

साम्यवाद एक प्रकार का आर्थिक विज्ञान (Economic Science) है। संसार में इसका आविर्भाव इसलिए हुआ है, कि जगत में एक ऐसी क्रान्ति मचा दे, जिससे मानव-समाज में ये दो श्रेणियाँ न रहें। लुटेरेपन का अन्त हो जावे। संसार के दस फ़ीसदी मनुष्य ही विद्या, बुद्धि, धर्म, सभ्यता, आचार-विचार और धन-दौलत का ठीका न ले लें और नब्बे प्रतिशत मनुष्य परतन्त्रता, भूख-प्यास ग़रीबी, अविद्या, रोग और असभ्यता की बेड़ी में जकड़े न रहें; वर्तमान समाज के ढर्रे को विध्वंस कर के, एक ऐसे समाज का निर्माण किया जावे, जिसमें हर एक व्यक्ति को उन्नति करने का पूरा अवसर प्राप्त हो। यही कारण है कि संसार की नब्बे प्रतिशत जनता इसे तृषित नेत्रों से देख रही है। सोवियट रूस (Soviet Russia) ने इसका स्वागत किया है और वहाँ की जनता सुखी है।

अपने लेख के चौथे पैराग्राफ़ में श्रीवास्तव जी ने लिखा है, कि "अधिकार की उत्पत्ति तो सामर्थ्य से होती है......।" मैं नहीं कह सकता कि सामर्थ्य का अर्थ यहाँ क्या है। मेरी समझ में इसके दो अर्थ हो सकते हैं (१) Right is the outcome of Power (जिसकी लाठी उसकी भैंस) (२) Responsibility comes to able man (अधिकार योग्य पुरुष को मिलना चाहिए)।

दोनों अर्थ एक दूसरे के विपरीत हैं। आज संसार का समाज-सङ्गठन ठीक इसी बुनियाद पर है, और रहा है। पहले ज़माने में क्या होता था, इतिहास इसका साक्षी है। मैं इसके सैकड़ों प्रमाण दे सकता हूँ। आज क्या हो रहा है, यह तो आँखों के सामने है। भारतवर्ष में इतने योग्य पुरुषों के होते हुए इङ्गलैण्ड के पूँजीपति भारतवर्ष पर राज्य कर रहे हैं और भारत के पूँजीपति उन्हें सहायता दे रहे हैं। यह क्यों? क्या वे महात्मा गाँधी आदि से अधिक योग्य हैं? संक्षेप में उत्तर यही होगा कि वे अपने सैनिक बल (Military Power) से राज्य कर रहे हैं। साम्यवाद, समाज की इस बुनियाद को बदल देना चाहता है। अब जिसकी लाठी उसकी भैंस का ज़माना जाना चाहता है। अब ऐसा ज़माना आवेगा, जिसका मूल मन्त्र होगा 'Right is the outcome of justice, not Physical force' (अधिकार का उद्भव न्याय से है, न कि शारीरिक शक्ति पर) अतएव लेखक महोदय का यह कहना कि साम्यवाद शूद्रत्व को प्रथम स्थान देता है, निरी भूल है।

अगर 'सामर्थ्य' का अर्थ Responsiblity है तो लेखक महोदय को विदित होना चाहिए, कि साम्यवाद इसके विरुद्ध नहीं है। साम्यवाद केवल इतना और चाहता है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति योग्य बने। योग्य पुरुषों को विशेष अधिकार मिले। यह तो एक अकाट्य-सत्य है और न्याय भी है, किन्तु धन उनकी योग्यता का परिचायक कदापि नहीं हो सकता। उनकी योग्यता का निर्णय केवल जनता ही कर सकती है। हाँ, एक बात और है। योग्य मनुष्य को अधिकार मिले, यह तो न्याय-सङ्गत है, किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि योग्यता के साथ-साथ उनके पेट भी लम्बे-चौड़े हो जायँ और दूसरों के पेट छोटे हो जायँ। दूसरों को फटी कमली देकर, आप दुशाले ओढ़ें; दूसरे नङ्गे पैर हों और आप बीस-बीस जोड़े जूते रक्खें। दूसरे की मेहनत पर मौज उड़ाने वाले को कदापि योग्य नहीं कहा जा सकता। योग्यता का धन से उतना सम्बन्ध नहीं है, जितना अधिकार से। यहाँ पर रूस के राष्ट्रपति महाशय स्टेलिन की चर्चा करना विषयान्तर न होगा। पाठकों को मालूम होना चाहिए कि उन्हें (मोशिए स्टेलिन को) १४०) रु० माहवार मिलते हैं और उनके क्लर्क को उनसे कुछ ही कम मिलता है; परन्तु उनके अधिकार बहुत अधिक हैं। पूँजीपतियों के देशों को देखिए तो बिलकुल उलटी बात दिखाई देगी। भारतवर्ष के वायसराय लॉर्ड इर्विन महाराज २५,०००) रु० माहवार पाते हैं। कहाँ से? ग़रीबों की हड्डियों में से। योग्य मनुष्य ऐसे धन की चाह नहीं करता।

धन का वितरण मनुष्य की आवश्यकतानुसार होना चाहिए। कितने ही लोग कहेंगे कि योग्य मनुष्य को अगर विशेष धन नहीं दिया गया, तो वह काम ही क्यों करेगा? अतएव राष्ट्र में योग्य व्यक्तियों की कमी हो जायगी और समाज ख़तरे में पड़ जावेगा। इसका नम्र उत्तर है—(१) ऐसे व्यक्ति को योग्य मनुष्य नहीं कहा जा सकता, उसे अभी समाज-सेवा की शिक्षा की आवश्यकता है। योग्य मनुष्य आवश्यकता से अधिक क्योंकर लेगा? (२) अगर विचारपूर्वक देखा जावे तो समाज ख़तरे के स्थान में उन्नति करेगा। आज तक के सामाजिक सङ्गठन में अधिकांश जनता को अज्ञानता के अँधेरे में रक्खा गया है। अब उन्हें भी प्रकाश में आने का मौक़ा मिलेगा। मैं पूछता हूँ कि राष्ट्र की उन्नति नब्बे प्रतिशत जनता की उन्नति से है, अथवा दश प्रतिशत की उन्नति से? अब यह प्रत्यक्ष हो गया होगा कि साम्यवादी समाज से राष्ट्र की उन्नति होगी अथवा अधःपतन।

आज अगर दो मज़दूर काम करते हैं और उनमें एक अस्वस्थ हो गया, तो सामर्थ्य के लिहाज़ से उसे कुछ थोड़ा सा मिल जावेगा। बेचारा ग़रीब है, अपना स्वास्थ्य कैसे सुधार सकता है? मैं पूछता हूँ न्याय की दृष्टि से किसे अधिक मिलना चाहिए, स्वस्थ को अथवा अस्वस्थ को? लेखक महाशय की दलील कुछ समझ में नहीं आती। क्या वह समझते हैं कि जिसके पास धन है वही योग्य है? अगर ऐसा समझते हैं तो वे भूल करते हैं।

अब रही लोक और परलोक की बातें। आपका कहना है—"अवस्था और अधिकार का सम्बन्ध पूर्वजन्म

(३७ वें पृष्ठ का शेषांश)

की इच्छा कोई नई नहीं है, पर युद्ध के बाद राष्ट्रों ने इसको विशेषकर कार्य-रूप दिया है। युद्ध से लोगों ने यह पाठ सीखा है कि युद्ध के समय पर विदेशी व्यापार बन्द हो जाने के कारण स्वदेशी माल ही काम में आता है। इससे विदेशी व्यापार मामूली दशा में लाभप्रद होने पर भी कभी-कभी बहुत ख़तरनाक चीज़ है। यह मत ठीक ज़रूर है, पर यदि उसका पूर्ण रूप से अनुसरण किया जावे तो फल यह होगा कि हर मनुष्य तथा हर कुटुम्ब को स्वतन्त्र होना चाहिए।

जापान, हिन्दुस्तान और कई देश, जो कि पहले बहुत सा विदेशी कपड़ा मँगाते थे, अब स्वयम् ही सस्ती क़ीमत पर माल बनाने लगे हैं और वे केवल स्वदेश की आवश्यकता स्वतन्त्रता से ही पूरी नहीं कर लेते, वरन विदेशों में भी अपना माल भेजने का प्रयत्न कर रहे हैं। फिर एशिया के चीन तथा हिन्दुस्तान आदि देशों में अपूर्व राजनैतिक जागृति हो जाने के कारण विदेशी व्यापार में और भी धक्का लग रहा है। रूस की भी दशा बहुत कुछ इन्हीं राष्ट्रों की सी है।

कुछ लोगों का मत यह है कि व्यापारिक उन्नति संसार में स्वर्ण की कमी हो जाने से रुक रही है। अमेरिका तथा फ़्रान्स ने मिल कर सन् १९२९ से इतना स्वर्ण ख़रीद डाला है, जितने की आवश्यकता सारे संसार में होती थी। इसका फल यह हुआ है कि गिरी हुई औद्योगिक दशा का सुधार करने के लिए और राष्ट्रों के पास विशेषकर दक्षिण अमेरिका तथा संसार के पूर्वीय देशों के पास धन ही नहीं है। और यदि यही दशा रही तो सन् १९३२ के पहले औद्योगिक दशा में परिवर्तन होना मुश्किल है।

वर्तमान औद्योगिक शिथिलता इन सब कारणों का फल है तथा उसके पुनरुत्थान के लिए एक कारण नहीं, वरन इन सब कारणों को हटाने की आवश्यकता है।

* * *

से है।" ये सारी बातें साम्राज्यवाद (जो पूँजीवाद की चरम सीमा है) का माया-जाल है जिसने सदियों से संसार के किसान और मज़दूरों को फँसा रक्खा है। और धर्म ऐसे कार्यों में सहायता देता है। पूर्वजन्म के अनुसार धर्मात्मा (?) ज़ार और पूर्वजन्म के पापी (?) वहाँ के किसान मज़दूरों की अवस्था में एकाएक परिवर्तन क्यों हो गया? ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे, जिनसे यह प्रतीत होगा कि मनुष्य का उत्थान-पतन, अमीरी-ग़रीबी इत्यादि सामाजिक सङ्गठन की नींव पर होता है। सोवियट रूस इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। साम्राज्यवाद ने धर्म की सहायता से स्वर्ग की मृग-तृष्णा देकर लोगों को ग़ुलाम बना रक्खा है। साम्यवाद इस माया-जाल को फाड़ कर इहलोक में ही स्वर्ग स्थापित करना चाहता है? जब सच्ची स्वतन्त्रता का प्रकाश हमें यहीं मिलेगा, तब स्वर्ग की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

साम्यवाद शूद्रत्व और ब्राह्मणत्व को छोटा-बड़ा नहीं समझता, यह लिखना भारी भूल है। साम्यवाद की दृष्टि में कोई अपने दिमाग़ से, कोई अपने शारीरिक बल से समाज व राष्ट्र की सेवा करता है। साम्यवाद की आँखों में दोनों प्यारे हैं, यहाँ तो शारीरिक और मानसिक बल का झगड़ा ही नहीं है। यहाँ तो लुटेरापन और अन्याय से झगड़ा है—वह लूट शारीरिक बल से हो अथवा मानसिक बल से। अगर सच पूछा जाय तो पशुबल के उपासक ये पूँजीपति ही हैं। अन्तर केवल इतना ही है, कि वह (जानवर) अपने शारीरिक शक्ति से लोगों को लूटते हैं और ये अपने दिमाग़ और धन से। अगर ब्राह्मणत्व को अग्र स्थान देने का मतलब एकलव्य का अँगूठा काट लेना है, और चीन में इक्कीस युवा और युवतियों को केवल इसलिए क़त्ल कर देना है कि वे साम्यवादी थे, तो ऐसे ब्राह्मणत्व की हमें सचमुच आवश्यकता नहीं है।

मनुष्य बुद्धिमान प्राणी है, अतएव इसे अपनी बुद्धि का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। बुद्धि और बल का उपयोग समाज की उन्नति के लिए होना चाहिए। पशुता का अन्त मानसिक शक्ति से नहीं होता, बल्कि लुटेरापन इत्यादि दुर्गुणों के अन्त होने से होता है।

साम्यवाद के सिद्धान्तों को बिना सोचे-समझे इस प्रकार उल्टी-सीधी लिख मारना कभी उचित नहीं है। सदियों से यह श्रमजीवी संसार अमीरों की ग़ुलामी और इनके अत्याचार से छुटकारा पाने का प्रयत्न कर रहा है, परन्तु इन आततायियों ने इन्हें जकड़ रक्खा है। साम्यवाद ने पूँजीवाद के काले कर्मों की पोल खोल दी है। ज़ार के पतन से इसका (साम्यवाद का) प्रथम परिच्छेद आरम्भ हुआ है; पूँजीवादियों को यह बुरा अवश्य लगेगा। क्योंकि आने वाले समाज में उन्हें काम करके ही रोटी पैदा करना होगा। उन्हें अब स्त्रियों के साथ विलास-भवन में बैठने का तो मौक़ा मिलेगा नहीं; अब न्याय की एक नई दुनिया बसेगी।

मैं उन लोगों की शुभ कामनाएँ नहीं समझ सकता, जो समाज-सेवक होने का बहाना करते हैं और साथ ही ऐसे सामाजिक ढर्रे का समर्थन भी करते हैं, जिसमें मुट्ठी भर मनुष्य आनन्द और भोग-विलास में जीवन व्यतीत करते हैं दूसरों के पसीने की मेहनत पर। और अधिकांश मनुष्य मेहनत करने पर भी पीसे जाते हैं और दीनता, पराधीनता, अज्ञानता और भीषण रोग इत्यादि के शिकार बने रहते हैं।

क्या इसी को सभ्यता कहते हैं? ऐसा सामाजिक सङ्गठन नृशंसता नहीं तो क्या है? यही समाज धीरे-धीरे श्रमजीवियों की सङ्गठित-हत्या (Organised murder) कर रहा है। ऐसे समाज का समर्थन करना और साथ-साथ मानव-समाज की उन्नति की बातें करना, ढोंग नहीं तो और क्या है? क्या थोड़े से मनुष्यों के सुखी और विद्वान रहने से सारा समाज सुखी और विद्वान कहला सकता है? क्या इन्हीं थोड़े से मनुष्यों ने सारी शर्तों का ठेका ले रक्खा है? फिर ग़रीबों के कष्टों का उत्तरदायी कौन है?

संसार में साम्यवाद आकर ही रहेगा। वह मेरे स्वागत करने से, या किसी के तिरस्कार करने से नहीं रुक सकता क्योंकि न्याय के लिए ही इसका जन्म हुआ है। आज नहीं तो कल, एक बार जहाँ इन श्रमजीवियों को पोल का पता लगा, उन्हें कोई भी ताक़त नहीं रोक सकती। दुनिया धीरे-धीरे साम्यवाद की ही ओर बढ़ रही है। Miss Agnes Smedley ने बहुत ठीक कहा है :—

"Just as man kind struggled through savagery into Barbarism and then through barbarism into civilisation, so are we to-day struggling through civilisation into Socialism."

तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार मानव-समाज जङ्गली अवस्था से अर्द्ध-सभ्यावस्था की ओर और अर्द्ध-सभ्यावस्था से सभ्यावस्था की ओर अग्रसर हुआ है, ठीक उसी प्रकार आज हम लोग सभ्यावस्था से साम्यवाद की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

*　　*　　*

तत्वज्ञानी—(रेल पर जल्दी से सवार होकर) भाग्य अच्छे थे, जो गाड़ी मिल गई। (गाड़ी छूटने पर अपनी चीज़ों को देख-भाल कर) धन्य ईश्वर! सब ठीक है। यही मेरी पहली यात्रा है, जिसमें मैं कुछ नहीं भूला हूँ।

एक मुसाफ़िर—(जो उसी स्टेशन पर सवार हुआ था) कहिए तत्वज्ञानी जी, वह स्त्री कौन थी, जो आपके साथ बाज़ार में घूम रही थी?

तत्वज्ञानी—(चौंक कर) वह मेरी स्त्री थी। अरे! उसे तो मैं हलवाई की दूकान पर छोड़ आया। हाय! हाय!! अब क्या करूँ?

*　　*　　*

जज—यह तो तुम इक़बाल ही करते हो कि तुमने इन "सिगारों" को चुराया है। अच्छा, अब तुम अपनी सफ़ाई में कोई वजह भी बयान कर सकते हो?

मुल्ज़िम—जी हाँ।

जज—क्या?

मुल्ज़िम—यही कि एक 'सिगार' पीकर आप ख़ुद ही देख लीजिए, कितना मज़ा आता है।

*　　*　　*

जज—क्यों, इन ज़ेवरों को तुमने चुराया है?

मुल्ज़िम—क्या बताऊँ, धोखे में ग़लती हो गई।

जज—क्योंकर?

मुल्ज़िम—मैंने समझा था सोने के हैं, मगर निकले कम्बख़्त पीतल के!

*　　*　　*

पति—(झुँझला कर) क्या तुम समझी हो कि मैं रुपयों का बना हुआ हूँ?

पत्नी—होते तो अब तक मैं तुम्हें भुना भी डालती।

*　　*　　*

बूढ़ा प्रेमी—प्रिये, मैं जवान तो नहीं हूँ, मगर यह जान लो कि मुझसे बढ़कर भलामानुस पति दूसरा कोई नहीं हो सकता।

प्रेमिका—ऐसा तो मैं आपको ख़ुद ही बना दूँगी। मगर यह तो बताइए कि आप मुझे किस क़िस्म की विधवा बनाएँगे?

*　　*　　*

पत्नी—क्यों जी, इतनी देर तक कहाँ रहे?

पति—देखो, तुमने फिर ग़लती की। अक़्लमन्द औरतें अपने मर्दों से ऐसी बातें नहीं पूछतीं।

पत्नी—मगर अक़्लमन्द मर्द तो अपनी जोरू से × × ×!

पति—रहने भी दो। अक़्लमन्द मर्द के जोरू होती ही नहीं।

*　　*　　*

मैजिस्ट्रेट—तुम्हें इस चोरी के लिए छः महीने की क़ैद की सज़ा दी जाती है।

चोर—अच्छा, मगर हाथ जोड़ता हूँ, दो महीने तक मेरी सज़ा मुल्तवी रखिए, वरना मेरा बड़ा घाटा हो जायगा।

मैजिस्ट्रेट—घाटा?

चोर—हाँ! क्योंकि हम लोगों के कमाने का यही मौसम है। आजकल ही लोग ख़ूब ख़र्राटे भर के सोते हैं।

*　　*　　*

बक्की—क्या बताऊँ साहब! मैं अजीब परेशानी में हूँ। सैकड़ों रुपए की दवाइयाँ पी डालीं। डॉक्टर, हकीम वैद्य—सब का इलाज किया, मगर न जाने क्यों मुझे कोई भी दवा फ़ायदा नहीं करती। रात-रात भर करवटें बदलता रहता हूँ। नींद बुलाने की हज़ारों तरकीबें करता हूँ, मगर किसी तरह से भी आँख नहीं लगती। बस, यही शिकायत है। पेटेण्ट दवाइयाँ, जड़ी-बूटी की दवाइयाँ, घरेलू दवाइयाँ—सभी करके थक गया × × ×

श्रोता—(उकता कर) अच्छा, आप एक काम कीजिए तो आपको नींद अवश्य आने लगेगी।

बक्की—क्या?

श्रोता—आप ख़ुद अपने आपसे बातें किया कीजिए।

*　　*　　*

मोहन—आज आपकी बीवी इतनी तैयारी क्यों कर रही हैं? क्या आप लोग कहीं जा रहे हैं?

सोहन—हाँ!

मोहन—कहाँ?

सोहन—बम्बई!

मोहन—रेल पर?

सोहन—नहीं, हवाई जहाज़ पर।

मोहन—मगर मुसाफ़िरों के लिए अभी हवाई जहाज़ कहाँ चलता है?

सोहन—जब तक मेरी बीवी का शृङ्गार करना ख़तम होगा, तब तक चलने लगेगा।

*　　*　　*

मित्र—भला डॉक्टर साहब! आपने कभी ग़लती भी की है?

डॉक्टर—हाँ, ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक दफ़ा।

मित्र—कब?

डॉक्टर—जब मैंने एक अमीर को सिर्फ़ दो ही दिन इलाज करके अच्छा कर दिया था?

*　　*　　*

माँ—देखो मोहन, अगर आज तुम बदमाशी न करोगे, तो मैं तुम्हें मिठाई दूँगी।

मोहन—यह नहीं हो सकता, माँ!

माँ—क्यों?

मोहन—क्योंकि बाबू जी कहते हैं कि रिश्वत लेकर कोई काम करना बुरा है।

*　　*　　*

आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says :

Dear Mr Saigal,

Your album is a production of great taste & beauty & has come to me as a pleasant surprise as to what a press in Allahabad can turn out. Moon worshipped & Visit to the Temple are particularly charming pictures; eye like & full of details. I congratulate you on your remarkable enterprise & thank you for a present which has given & will continue to give me a great deal of pleasure.

Yours sincerely B J Dalal.

The Hon'ble Mr. Justice Lal Gopal Mukerjea of the Allahabad High Court :

. . . The Pictures are indeed very good and indicate, not only the high art of the painters, but also the consumate skill employed in printing them in several colours. I am sure the Album ADARSH CHITRA WALI will be very much appreciated by the public.

The Hon'ble Sir Grimwood Mears, Chief Justice Allahabad High Court :

. . . I am very glad to see that it is so well spoken of in the Foreign Press.

The Indian Daily Mail :

. . . The Album ADARSH CHITRAWALI is probably the one of its kind in Hindi—the chief features of which are excellent production, very beautiful letter press in many colours, and the appropriate piece of poem which accompanies each picture.

W. E. J. Dobbs, Esq., I. C. S., District Magistrate and Collector, Allahabad :

I am glad that Allahabad can turn out such a pleasing specimen of the printers art.

Sam Higginbottom, Esq., Principal Allahabad Agricultural Institute :

. . . I think it is beautifully done. Most of the guests who come into the Drawing room pick it up and look at it with interest.

A. H. Mackenzie, Esq., Director of Public Instruction, U. P. :

. . I congratulate your press on the get-up of the Album, which reveals a high standard of fine Art Printing.

मूल्य केवल ४) रु०
डाक-व्यय अतिरिक्त

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Price Rs. 4/- Nett.
Postage extra.

पुनर्जीवन

यह रूस के महान् पुरुष काउयट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति का हिन्दी-अनुवाद है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपने आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है, और किस प्रकार अन्त में वह वेश्या-वृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूररों में सम्मिलित होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एक मात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित्त भी करना चाहिए—ये सब दृश्य एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। मूल्य ४) स्थायी ग्राहकों से ३।।।)

कमला के पत्र

यह पुस्तक 'कमला' नामक एक शिक्षित मद्रासी महिला के द्वारा अपने पति के पास लिखे हुए पत्रों का हिन्दी-अनुवाद है। इन गम्भीर, विद्वत्तापूर्ण एवं अमूल्य पत्रों का मराठी, बँगला तथा कई अन्य भारतीय भाषाओं में बहुत पहले अनुवाद हो चुका है। पर आज तक हिन्दी-संसार को इन पत्रों के पढ़ने का सुअवसर नहीं मिला था।

इन पत्रों में कुछ को छोड़, प्रायः सभी पत्र सामाजिक प्रथाओं एवं साधारण घरेलू चर्चाओं से परिपूर्ण हैं। उन पर साधारण चर्चाओं में भी जिस मार्मिक ढङ्ग से रमणी-हृदय का अनन्त प्रणय, उसकी विश्व-व्यापी महानता, उसका उज्ज्वल पति-भाव और प्रणय-पथ में उसकी अक्षय साधना की पुनीत प्रतिमा चित्रित की गई है, उसे पढ़ते ही आँखें भर जाती हैं और हृदय-वीणा के अत्यन्त कोमल तार एक अनियन्त्रित गति से बज उठते हैं। अनुवाद बहुत सुन्दर किया गया है। मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों के लिए २।) मात्र !

यह उपन्यास अपनी मौलिकता, मनोरञ्जकता, शिक्षा, उत्तम लेखन-शैली तथा भाषा की सरलता और लालित्य के कारण हिन्दी-संसार में विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि आजकल एम० ए०, बी० ए० और एफ़० ए० की डिग्री-प्राप्त स्त्रियाँ किस प्रकार अपनी विद्या के अभिमान में अपने योग्य पति तक का अनादर कर उनसे निन्दनीय व्यवहार करती हैं, और किस प्रकार उन्हें घरेलू काम-काज से घृणा हो जाती है ! मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १।)

उपयोगी चिकित्सा

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की ख़ुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इसे एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। मू० केवल १।)

उमासुन्दरी

इस पुस्तक में पुरुष-समाज की विषय-वासना, अन्याय तथा भारतीय रमणियों के स्वार्थ-त्याग और पतिव्रत का ऐसा सुन्दर और मनोहर वर्णन किया गया है कि पढ़ते ही बनता है। सुन्दरी सुशीला का अपने पति सतीश पर अगाध प्रेम एवं विश्वास, उसके विपरीत सतीश बाबू का उमासुन्दरी नामक युवती पर मुग्ध हो जाना, उमासुन्दरी का अनुचित सम्बन्ध होते हुए भी सतीश को कुमार्ग से बचाना और उपदेश देकर उसे सन्मार्ग पर लाना आदि सुन्दर और शिक्षाप्रद घटनाओं को पढ़ कर हृदय उमड़ पड़ता है। इतना ही नहीं, इसमें हिन्दू-समाज की स्वार्थपरता, बर्बरता काम-लोलुपता, विषय-वासना तथा रूढ़ियों से भरी अनेक कुरीतियों का हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पुस्तक समाज-सुधार के लिए पथ-प्रदर्शक है। छपाई-सफ़ाई सब सुन्दर है। मूल्य केवल ।।।) आने स्थायी ग्राहकों के लिए ।।-) ; पुस्तक दूसरी बार छप कर तैयार है।

घरेलू चिकित्सा

'चाँद' के प्रत्येक अङ्क में बड़े-बड़े नामी डॉक्टरों, वैद्यों और अनुभवी बड़े-बूढ़ों द्वारा लिखे गए हज़ारों अनमोल नुस्ख़े प्रकाशित हुए हैं, जिनसे सर्व-साधारण का बहुत-कुछ मङ्गल हुआ है, और जनता ने इन नुस्ख़ों की सच्चाई तथा उनके प्रयोग से होने वाले लाभ की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। सब से बड़ी बात इन नुस्ख़ों में यह है कि पैसे-पाई अथवा घर के मसालों द्वारा बड़ी आसानी से तैयार होकर अजीब गुण दिखलाते हैं। इनके द्वारा आए-दिन डॉक्टरों की भेंट किए जाने वाले सैकड़ों रुपए बचाए जा सकते हैं। इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ को अपने यहाँ रखनी चाहिए। स्त्रियों के लिए तो यह पुस्तक बहुत ही काम की वस्तु है। एक बार इसका अवलोकन अवश्य कीजिए। छपाई-सफ़ाई अत्युत्तम और सुन्दर। मोटे चिकने काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ।।।) रक्खा गया है। स्थायी ग्राहकों से ।।-) मात्र !

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—२७ नवम्बर, १९३० | संख्या ९; पूर्ण संख्या ९

कराची और सिन्ध में जेलों का दिवाला पिट रहा है?

३२० क़ैदी जगह न होने से छोड़ दिए गए

बम्बई और गुजरात का अभूतपूर्व त्याग

माताएँ गोदियों में बच्चे लेकर जेल जा रही हैं

(२६वीं नवम्बर की रात तक आए हुए "भविष्य" के ख़ास तार)

—भवनगर रियासत के कपड़े के व्यापारियों की सभा ने विदेशी कपड़े के बहिष्कार का, उस समय तक के लिए निश्चय कर लिया है, जब तक सभा उसे बेचने की आज्ञा न दे।

—धार में जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में छै स्त्रियों की गिरफ़्तारी हुई है, जिनमें से तीन स्त्रियों को चार-चार माह की सादी क़ैद और अन्य तीन स्त्रियों को २५०) जुर्माने या सात-सात सप्ताह की सज़ा हुई है। एक स्त्री अपनी गोद में डेढ़ वर्ष का बच्चा लेकर जेल गई है।

—राजनैतिक क़ैदियों के लिए जेलों में स्थान करने के लिए कराची से ७० और सिन्ध की अन्य जेलों से २५० क़ैदी मियाद पूरी होने के पहले ही छोड़ दिए गए हैं।

—श्री० जयरामदास दौलतराम की सज़ा के विरोध में कराची म्युनिसिपिलटी ने उसकी बैठक स्थगित कर दी।

—अकोला ज़िले में शराब के ठेकों के नीलाम के समय वहाँ की सुप्रसिद्ध महिला वालण्टियरों और ४०० पुरुष वालण्टियरों ने धूप और ठण्ड की परवाह न कर लगातार तीन दिन तक पिकेटिङ्ग की। अधिकारियों को लाचार होकर सुनसान पिछली रात्रि में ठेके नीलाम करने पड़े, तिस पर भी ५० प्रतिशत की हानि रही। पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में आठ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—स्टेण्डर्ड मिल के मज़दूरों ने, अपनी माँगें पूरी हो जाने के कारण, हड़ताल बन्द कर दी है, परन्तु एटलास मिल की हड़ताल अभी तक जारी है।

—बम्बई में युद्ध-समिति के ओर से आज बारदोली जुलूस बड़ी शान से निकाला गया था। जुलूस के निश्चित समय के पहिले ही पुलिस के बहुत से सिपाहियों ने आकर उसे रोकने की भरसक चेष्टा की, परन्तु जुलूस कई टुकड़ों में बँट गया और हज़ारों मनुष्य आज़ाद मैदान में एकत्रित हो गए, जहाँ राष्ट्रीय झण्डे का अभिवादन किया गया। एक सार्जेण्ट ने उसे हटाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह असफल रहा। युद्ध-समिति के पाँच सदस्य गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—लाहौर का २१वीं नवम्बर का समाचार है कि १५ महिला वालण्टियर, जिनमें कुमारी मनमोहनी ज़ुत्शी और चार बच्चे भी सम्मिलित हैं, रात्रि में अचानक जेल से इसलिए रिहा कर दी गईं, ताकि उनके स्वागत की शहर में धूमधाम न हो सके। उन्हें घर भेजने के लिए अधिकारियों ने सवारी का कोई प्रबन्ध न किया। इसलिए उन्होंने सारी रात ठण्ड में सड़क पर ही काटी। उनके रिहा होने का समाचार सुन, जब उनके सम्बन्धी उन्हें लेने गए तो पुलिस ने उन्हें उनसे मिलने तक नहीं दिया। इस घटना से लाहौर में बड़ा असन्तोष फैला है।

'लीडर' के सम्पादक श्री० सी० वाई० चिन्तामणि की घोर निराशा

श्री० सी० वाई० चिन्तामणि

फ़्री प्रेस के प्रतिनिधि के साक्षात करने पर स्थानीय 'लीडर' के प्रधान सम्पादक श्री० सी० वाई० चिन्तामणि ने कहा कि जब मैं भारत से चला था तब से आज की दशा विशेष शोचनीय हो गई है। बम्बई की घटनाओं तथा पं० गोविन्द मालवीय की गिरफ़्तारी का हवाला देते हुए आपने कहा कि गोलमेज़ परिषद् के साथ ही साथ दमन-चक्र और भी तेज़ी से चलाया जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में यदि भारतवासी इस गोलमेज़ परिषद् की खिल्ली उड़ावें और इसका मज़ाक़ करें तो मुझे इसमें ज़रा भी आश्चर्य न होगा। इन सारी घटनाओं को देखकर मुझे तो विश्वास नहीं होता, कि वायसराय और प्रधान मन्त्री वास्तव में भारतीय मनोभावों को समझने और गोलमेज़ परिषद द्वारा स्थिति को शान्त करने की इच्छा रखते हैं! गोलमेज़ परिषद प्रान्तीय सरकारों को अपना हाथ रोकने और परिस्थिति के अनुकूल विवेक से काम लेने का आदेश नहीं दे सकती। मुझे यह कहने में ज़रा भी सङ्कोच नहीं होता, कि आजकल भारत और विशेष कर बम्बई से आने वाले समाचार बड़े चिन्ताजनक हैं।"

—पूना के डिक्टेटर श्री० शिवराम केलकर को एक साल की सख़्त क़ैद सज़ा दे दी गई है। उनके स्थान पर शङ्कर राव फूलमण्डी के नए डिक्टेटर हुए हैं।

गोली की चोट से कॉङ्ग्रेस वालण्टियर की मृत्यु

मुज़फ़्फ़रपुर का समाचार है कि भगवानदास की जो १६वीं नवम्बर को पुलिस की गोली से घायल हुआ था, २१ ता० की रात्रि को सदर अस्पताल में मृत्यु हो गई। जो कॉङ्ग्रेस वालण्टियर ड्यूटी पर थे, वे रोक लिए गए और पुलिस उसकी लाश एक लॉरी में लेकर ले गई। सवेरे पाँच लठबन्द सिपाही और कुछ फ़ौजी पुलिस लाश को जलाने घाट पर ले गई। कलेक्टर स्वयं अन्त्येष्टि क्रिया के समय उपस्थित था। नगर में पूर्ण हड़ताल रही और शाम को तिलक मैदान में एक विराट सभा भी हुई। शहर भर में बड़ी सनसनी है।

—बम्बई में २४वीं नवम्बर को 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्पादक श्री० बरेलवी, प्रकाशक श्री० कपाडिया और 'फ़्री प्रेस जरनल' के सम्पादक तथा मुद्रक श्री० सदानन्द जवाहर-दिवस का कार्यक्रम प्रकाशित करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। श्री० कपाडिया और सदानन्द पाँच-पाँच सौ की ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं, परन्तु श्री० बरेलवी ने ज़मानत देने से साफ़ इनकार कर दिया।

गुजरात में दमन का प्रकोप

बोरसद (गुजरात) का समाचार है कि सुनाय में अभी तक क़ुर्क़ियाँ हो रही हैं। बोरसद का सब-इन्स्पेक्टर अपने मामा मोतीभाई गिरधरभाई के घर, जो जेल में अपनी सज़ा काट रहे हैं, जुर्माने का रुपया वसूल करने सुनाय गाँव में गया। जब उसे घर में कुछ न मिला तब उसने मोतीभाई की चाची से, जो चारपाई पर बीमार पड़ी थी, उठ कर दूर हट जाने को कहा। उसके बाद वह लगभग १२) की क़ीमत की चारपाई, तकिया और दूसरी चीज़ें ले गया। सब-इन्स्पेक्टर श्री० जोशभाई रणछोड़ भाई के, जो जेल में सज़ा काट रहे हैं, घर के तीसरे मञ्ज़िल से भी लगभग ४०) रुपए की चीज़ें उठा ले गया है। किसी अज्ञात व्यक्ति ने मकान में आग लगा दी, जिसमें दो हिस्सेदारों—भाईलाल भाई दामाभाई और मूल जी भाई हीराभाई का पाँच हज़ार की क़ीमत का एक पम्प रक्खा था, जो जल कर ख़ाक हो गया।

कैरा ज़िले के कलेक्टर ने गाँवों के क़ुर्क़ किए हुए माल को, जो उसने बोरसद में एकत्रित कर रक्खा था, नीलाम करने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वहाँ भी बोली बोलने वाला कोई नहीं मिला। इसलिए उसने वह माल नीलाम करने के लिए कम्बे रियासत में भेज दिया है।

—बम्बई का २४वीं नवम्बर का समाचार है कि पिकेटिङ्ग के अभियोग में दो महिला स्वयंसेविकाएँ गिरफ़्तार कर ली गईं। चौथे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने एक को तीन मास की सादी क़ैद और १००) जुर्माना या एक माह की सज़ा, तथा दूसरी को दो मास की सादी क़ैद की सज़ा और १००) जुर्माना, या एक माह की अतिरिक्त सज़ा दी है।

म० गाँधी भारत का सच्चा शासक है

"भारत के इतिहास को रचने वाले जेलों में पड़े हैं"

मिस्टर वेलसफ़ोर्ड "बॉम्बे क्रॉनिकल" में लिखते हैं:—

"इस लेख के निकलने के समय में लन्दन में राउण्डटेबुल कॉन्फ़्रेन्स के लिए पूरी तैयारी हो गई होगी। मैं नहीं समझ सकता, ऐसे कितने हिन्दुस्तानी हैं जो इसकी ओर ध्यान दे रहे हैं। मैं भारत में क़रीब तीन हफ़्तों से हूँ। वे सप्ताह मैं कभी न भूलूँगा; पर मुझे तो यह मालूम हुआ है कि सब भारतवासी एक होकर इस कॉन्फ़्रेन्स के विषय में अपनी निराशा प्रकट करते हैं। ऑर्डिनेन्स पर ऑर्डिनेन्स पास किए जा रहे हैं। एक के बाद एक कॉङ्ग्रेस के दफ़्तर ज़ब्त किए जा रहे हैं। जो कल आपका आतिथ्य-सत्कार कर रहा था, वह आज जेल में बन्द है। कोई याद नहीं रख सकता कि शान्त जनता के कितने जुलूस लाठी मार-मार कर तितर-बितर किए जाते हैं। जिनमें कभी-कभी घायलों की संख्या कई सौ तक पहुँच जाती है! व्यापार बिलकुल बन्द पड़ा है। हर हफ़्ते में एक या दो बार हड़ताल अवश्य हो जाती है। मिलें बन्द हो जाती हैं और १० में आठ या नौ दूकानों के किवाड़ बन्द हो जाते हैं! भारत भर में साठ हज़ार मनुष्य राजनैतिक बन्दी बना कर रक्खे गए हैं, इसमें बम्बई का सबसे बड़ा हिस्सा है। इनमें से अधिकतर 'सी' दर्जे में रक्खे गए हैं। उनको वैसा ही खाना व अन्य सुविधाएँ दी जाती हैं, जो सब से ख़राब दर्जे के हत्यारों और अपराधियों को दी जाती हैं। बड़े शहरों में तो ज़रा कुछ ग़नीमत है, पर गाँवों में, जहाँ मैंने पाँच रोज़ चक्कर लगाया है, जनता का कुछ भी ख़्याल नहीं रक्खा जाता है! जहाँ-जहाँ लगानबन्दी का आन्दोलन चल रहा है, बिना पूछताछ के किसान बेतरह पीटे जाते हैं!

"इन सब महान कठिनाइयों को नुक़सान तथा कष्टों को सहन करने पर भी बम्बई प्रान्त की सारी हिन्दू जनता कॉङ्ग्रेस के नेतृत्व को ग्रहण किए हुए है। इसके लिए किसी भी शहादत की ज़रूरत नहीं है। बस अपनी आँखें ही काफ़ी हैं। मोटे हिसाब से क़रीब ३ मनुष्यों में २ गाँधी टोपी अवश्य लगाए मिलेंगे, और मैं तो कई ऐसे भागों में गया हूँ जहाँ कुछ तुर्की टोपियों के अतिरिक्त सब गाँधी टोपी ही नज़र आती हैं। बम्बई के प्रान्त में किसी समय एक नरम दल था। आज उसके अनुयायियों की संख्या केवल कुछ सौ रह गई है! और वे भी केवल कॉङ्ग्रेस के साधनों से, न कि उद्देशों से सहमत नहीं हैं। मैं पूना में, जो कि इस दल का केन्द्र है, कई नेताओं से मिला। सब ने दमन-नीति की ओर अपनी घृणा तथा कॉन्फ़्रेन्स के विषय में अपनी निराशा प्रकट की। मुस्लिम जाति इस आन्दोलन में कितना भाग ले रही है, इसका पता मैं इतने थोड़े समय में ठीक से नहीं लगा सका हूँ, पर इतना तो सच है कि जो मुस्लिम भाग ले रहे हैं, उनका पूरा मान होता है और वे विश्वसनीय पदों पर रक्खे जाते हैं। वे स्वतः भी बहुत साहस दिखा रहे हैं। मैंने इस विषय पर बम्बई के एक वकीलों के क्लब में छः मुस्लिम बैरिस्टरों की राय ली, उनका अनुमान था कि बम्बई प्रान्त की कम से कम आधी मुस्लिम जनता तो कॉङ्ग्रेस के साथ अवश्य ही है और ज़्यादा हो तो कोई आश्चर्य नहीं। सबका यह मत था कि नवजवान पढ़ी-लिखी मुस्लिम जनता अली भाइयों के साथ नहीं है। वे धर्म-युद्धों से तङ्ग आ गए हैं। अलीगढ़ की मुस्लिम युनीवर्सिटी की डिबेटों में कॉङ्ग्रेस पक्षपातियों के प्रस्ताव बहुत ज़बर्दस्त बहुमत से पास होते हैं। बड़े आश्चर्य की बात तो यह कि मुल्लाओं की एक सभा—जमायतुल-उलेमा—ने कॉन्फ़्रेन्स में भाग लेने का विरोध किया है। यह पुराने ख़्यालात के लोग हैं, तिस पर भी इन्होंने इस विषय पर कॉङ्ग्रेस का साथ दिया है।

"दमन-चक्र के नीचे यह महान राष्ट्र और भी सुदृढ़ हो रहा है। कोई भी कॉङ्ग्रेस की बुद्धिमत्ता पर सन्देह नहीं करता। हर एक व्यक्ति नमक-कर से घृणा करता है। हर एक मनुष्य शराब-विक्रय का विरोध करता है। भारत के दोनों धर्म शराबख़ोरी के विरुद्ध हैं। लगानबन्दी से तो सभी सहानुभूति रखते हैं। विदेशी माल का बहिष्कार—और विशेषकर विलायती कपड़े का बहिष्कार—तो बहुत ही सफल हुआ है। इसके दो उद्देश हैं, एक तो यह कि बहिष्कार द्वारा इङ्गलैण्ड को भारत की माँगों को स्वीकार करने के लिए बाध्य करना तथा अपने स्वदेशी उद्योग को बढ़ाना। इस राष्ट्रीय आर्थिक नीति के साथ ही साथ महात्मा के आध्यात्मिक आदर्श भी लगे हुए हैं। बेहद नुक़सान उठाने पर भी बम्बई तथा अहमदाबाद के व्यापारी कॉङ्ग्रेस का साथ दे रहे हैं। हज़ारों करोड़पति तथा मिल-मालिकों की स्त्रियाँ तथा लड़कियाँ केसरिया साड़ी पहिन कर दूकानों के सामने धरना देती हैं। इनमें सैकड़ों हिन्दू, पारसी महिलाएँ ख़ुशी से कारागार में निवास कर रही हैं। इस सब में हमारा आर्थिक नुक़सान तो है ही, पर इससे बढ़ कर नुक़सान हम स्वतः अपने पाशविक विचारों को बढ़ा कर उठा रहे हैं। हम इस शान्त तथा सौजन्यपूर्ण जाति से इस तरह का क्रूरतापूर्ण व्यवहार कर रहे हैं। इन कार्यों के ऊपर कोई विचार ज़ाहिर नहीं करना चाहता, ये तो राष्ट्रीय कार्य-क्रम में शामिल हैं और लोग इसे ख़ुशी से कर रहे हैं! सबका चित्त तो हमारे क्रूरतापूर्ण व्यवहारों पर लगा हुआ है। हर ऑर्डिनेन्स, हर लाठी-चार्ज, हर गिरफ़्तारी से जनता हड़ताल करके अपना विरोध ज़ाहिर करती है। उद्योग-धन्धों में फँसा हुआ शहर जवाहरलाल की गिरफ़्तारी से अपना विरोध प्रकट करने के लिए आप ही आप अपने मिलों, कारख़ानों तथा दूकानों को बन्द कर देता है। आठ रोज़ बाद फिर वह उनको राज-विद्रोह के लिए दी गई कड़ी सज़ा का विरोध करने के लिए वही कर दिखाता है। उनके व्याख्यान में राज-विद्रोह अवश्य था, पर भारत के लाखों-करोड़ों निवासी उसके हर एक शब्द से सहमत हैं।

"इस महत आन्दोलन को दमन किस तरह से कम कर सकता है? इससे यह अवश्य होगा कि कॉङ्ग्रेस के कार्य में बाधा पड़ेगी। वह एक खुला षड्यन्त्र है, जो अपना सब कार्य खुले-आम करता है। गाँधी के सिद्धान्तों में सब से ऊँचा स्थान सत्य को दिया गया है। दमन से हम उसे गुप्त नीति का सहारा लेने के लिए बाध्य कर रहे हैं! उसका कार्य ज़रा भी धीमा नहीं हुआ है। बस ज़्यादा से ज़्यादा कहीं-कहीं यह हो जाता है कि बड़े नेताओं के जेल में बन्द हो जाने से कई भाग एक मत से काम नहीं करते। अपने-अपने भिन्न-भिन्न कार्य-क्रम बना कर उनका पालन कर रहे हैं। पर काम ज़रा भी कम नहीं हुआ है। स्वयंसेवक बराबर दूकानों पर धरना देते हैं, उनके पकड़ जाने पर बराबर फिर दूसरे उनका स्थान ग्रहण करने को तैयार मिलते हैं। यदि यह केवल एक दल का कार्य होता, तब यह आशा की जा सकती थी, कि दमन से कुछ सफलता अवश्य होगी, पर आप पूरे देश की इस प्रचण्ड इच्छा को कभी भी नहीं दबा सकते, यह सर्वथा असम्भव है! यह हर एक विचारशील व्यक्ति जानता है कि सन्धि की बात-चीत टूट जाने पर देश की सरकार विप्लवी आन्दोलन को चुपचाप बैठे अवश्य नहीं देख सकती। परन्तु इस क्रूरतापूर्ण व्यवहार के लिए तो कोई भी ठीक कारण नहीं मिल सकता। जनता बिलकुल अहिंसात्मक आन्दोलन चला रही है। पर सरकार की ओर से लाठी चलाना एक बहुत ही मामूली बात हो गई है! मैंने अपने इतने बड़े जीवन में कभी भी इतना शान्त जन-समुदाय नहीं देखा। वे खड़े भी नहीं होते, चुप बैठे रहते हैं! औरतें एक तरफ़ व आदमी दूसरी तरफ़। एकदम स्थिर व शान्त होकर वे राष्ट्रीय गान तथा भाषणों को सुनते हैं। व्याख्यान राज-विद्रोहात्मक अवश्य होते हैं, पर वे ऐसे नहीं होते कि जनता को कोई उपद्रव करने का उपदेश दिया जावे। इनमें हरदम सब से पहिले अहिंसा का उपदेश दिया जाता है। इस शान्त जनता पर "अधिकार व सत्ता" के नाम पर लाठियों की वर्षा करना, क्रूरता व पाशविकता नहीं तो और क्या है? शारीरिक पाशविकता से अङ्गरेज़ों की बनिस्बत भारतीय ज़्यादा क्रोधित हो जाते हैं। उनका शरीर कोमल तथा नाज़ुक होता है और पुराने विलायती स्कूली लड़के की तरह उन्हें स्कूल में डण्डे खाने की भी आदत नहीं होती है। उनमें वीरता की भी कुछ कमी नहीं है, साहस और संयम तो उनमें बेहद है। ऐसी दशा में हमारा पाशविक व क्रूर बर्ताव लज्जाजनक नहीं तो और क्या है?

"भारतवासी ऐसी दशा में मज़दूर-दल वालों को ढोंगी तथा विश्वासघातक दल समझते हैं। जो झूठ बोल कर उन्हें फुसलाना चाहते हैं!! राउण्डटेबुल के विषय में तो लोगों का इतना ख़राब विचार है कि बम्बई का एक कुली दूसरे कुली को जब गाली देता है, तो कहता है "तुम तो बस राउण्डटेबुल के क़ाबिल हो।" भारत के इतिहास की रचना करने वाले जेलों में पड़े हैं। सन्धि केवल उन्हीं से की जा सकती है! गाँधी की राय के बिना भारत अपनी शासन-प्रणाली के विषय में बात-चीत करने से भी इनकार कर देगा। जो कुछ राउण्ड-टेबुल वाले बनाएँगे उनको चलाने से इनकार कर देगा। गाँधी भारत का महात्मा है व सच्चा शासक है। भारत की किसानों की टूटी झोपड़ी, जिसमें कुछ मिट्टी के बर्तन के अतिरिक्त कुछ भी न मिलेगा, वहाँ भी गाँधी की तस्वीर मिलेगी। वह हर एक दूकान में मिलेगी। मेलों में हज़ारों की तादाद में बिकेगी। ऐसे मनुष्य को जेल में ठूँस कर हमने उसे सर्व-व्यापी बना दिया है।

"एक बात बिलकुल तय है। जब तक यह दशा है, राउण्डटेबुल कॉन्फ़्रेन्स बिलकुल व्यर्थ है।"

* * *

—बम्बई का १६ वीं नवम्बर का समाचार है कि क़िले में विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में एक महिला-वालण्टियर और पाँच पुरुष-वालण्टियरों की गिरफ़्तारी हुई है।

—कानपुर में १८ वीं नवम्बर को विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ६ वालण्टियरों को सज़ा दे दी गई है। १६ वीं नवम्बर को कानपुर काँङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० दशरथबहादुर वाजपेयी गिरफ़्तार कर लिए गए। जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में १० काँङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता और गिरफ़्तार किए गए हैं। शहर में बहुत सनसनी फैली है। वानर-सेना के वालण्टियर विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

—उन्नाव का १८ वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ १७ ता० को जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन श्री०लक्ष्मीशङ्कर, श्री०शिवप्रसाद द्विवेदी और श्री० विशम्भरनाथ तिवारी गिरफ़्तार किए गए हैं। पण्डित विशम्भरदयाल त्रिपाठी और बाबूलाल हलवाई भी १८ ता० को गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

टकसाल पर पिकेटिङ्ग

बम्बई को २० वीं नवम्बर को पीपिल्स बैटेलियन के वालण्टियरों ने वहाँ के टकसाल के दफ़्तर पर भी पिकेटिङ्ग की थी। वे लोगों से नोटों का बहिष्कार करने की प्रार्थना कर रहे थे। पुलिस ने बाद में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। हिन्दुस्तानी सेवा-दल का एक वालण्टियर एक इश्तहार बाँटते समय, जिसमें जनता से सेविङ्ग बैङ्क से अपना रुपया निकाल लेने की प्रार्थना की गई थी, गिरफ़्तार कर लिया गया।

—मद्रास का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ के वालण्टियर-दल के जो ३३ वालण्टियर ग़ैर-क़ानूनी सभा के सदस्य होने के कारण गिरफ़्तार किए गए थे, उनमें से १४ अभियुक्तों को छः-छः मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई और ६ को दो साल के लिए बोर्स्टल इन्स्टीट्यूट में रखने की आज्ञा दी गई। एक स्त्री वालण्टियर को छः माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बनारस के सिटी मैजिस्ट्रेट मि० घनश्यामदास ने श्री० निर्मलराम, शिवरतन और परमानन्द नामक तीन स्वामियों को तीन-तीन माह की सख़्त क़ैद और २०) जुर्माने या एक माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है। उसी मैजिस्ट्रेट ने ६ वालण्टियरों को भी तीन-तीन माह की सख़्त क़ैद और २०)-२०) जुर्माने या एक माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है।

—लाहौर का १८वीं नवम्बर का समाचार है कि नवजवान भारत सभा के एक सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री० लोधी पिण्डीदास फिर से गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। वे हाल ही में मुल्तान जेल से मुक्त किए गए थे।

—सीतापुर का समाचार है कि पण्डित राधाकृष्ण को एक साल की सादी क़ैद की सज़ा दे दी गई और श्री० गजराज और भगवानदास महमूदाबाद में गिरफ़्तार कर लिए गए। श्री० सीताराम को ऑर्डिनेन्स ३६ के अनुसार छः माह की सज़ा दी गई है।

—पेशावर का १८वीं नवम्बर का समाचार है कि हज़ार के ८ वालण्टियर पेशावर में क़िस्साख़्वानी पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। वहाँ के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने केप्टेन कॉब ने पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार १२ को छः-छः माह की और तीन को तीन माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। एक सिक्ख को भी, दो हज़ार की ज़मानत न देने के कारण १ साल सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बनारस में १७वीं नवम्बर की सन्ध्या तक दालमण्डी की विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण वालण्टियरों के पाँच जत्थे गिरफ़्तार किए गए। इस सम्बन्ध में कुल २० गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। मालूम हुआ है कि बाद में ९ आदमी रिहा कर दिए गए। 'जवाहर-दिवस' के अवसर पर एक सार्वजनिक सभा के उपरान्त चोलापुर (बनारस) के भी तीन काँङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कालीकट में मैजिस्ट्रेट के ऑर्डर के विरुद्ध जुलूस निकालने के अभियोग में जो पाँच स्त्रियाँ गिरफ़्तार हुई थीं, उनमें से चार को अदालत बरख़ास्त होने तक की सज़ा दी गई और कुमारी कल्यानी अम्मल, बी० ए० से सौ रुपए की ज़मानत माँगी गई। ज़मानत देने से इनकार करने पर, उन्हें दो माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई।

—पटना का १८वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ जवाहर-दिवस के अवसर पर १४४ दफ़ा का विरोध करने के कारण ६ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, जिनमें श्रीमती अम्बिकाचरण भी सम्मिलित हैं।

—कानपुर का समाचार है कि चार्टर्ड बैङ्क से तीन विदेशी कपड़ों को बाहर भेजते समय पिकेटिङ्ग करने के कारण श्री० हीरालाल, रिखलाल और रामेश्वर मास्टर गिरफ़्तार कर लिए गए। मुसलमानों की विदेशी कपड़ों की दुकानों पर अब वानर-सेना पिकेटिङ्ग करती है। पिकेटिङ्ग करते समय दो वानरों को तमाचे मारे गए थे।

—धारवाड़ का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि बैलारी के डिक्टेटर को एक साल की सादी सज़ा दे दी गई। पण्डित जवाहरलाल का भाषण पढ़ने के अभियोग में धारवाड़ के सुप्रसिद्ध काँङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता श्री० ए० रङ्गाचार को भी तीन माह की सख़्त क़ैद और ५०) जुर्माने, या एक माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—बारीसाल का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि स्थानीय तरुण सङ्घ के सदस्य श्री० महेन्द्रनाथ दास गुप्त वकील, जिनका सम्बन्ध ज़िला काँङ्ग्रेस कमिटी से था, गिरफ़्तार कर लिए गए।

—जसौरा (बङ्गाल) का १८वीं नवम्बर का समाचार है, गुदरा बाज़ार में पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में छः वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए। बाद में उनमें से चार छोड़ दिए गए।

—फ़रीदपुर (बङ्गाल) का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि फ़रीदपुर सत्याग्रह समिति के प्रेज़िडेण्ट श्री० विजयकुमार बनर्जी, जो सत्याग्रह कैम्प में बीमार पड़े थे, जवाहर-दिवस के अवसर पर पण्डित जवाहरलाल का भाषण पढ़ने के अभियोग में दफ़ा १०८ में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—लखनऊ का २४वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट मि० बशीर सिद्दीक़ी ने श्रीमती प्रेमचन्द (सुप्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचन्द जी की धर्मपत्नी), श्रीमती रामदेव, राजोदेवी और श्रीमती रामदेवी को पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार डेढ़ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है। वे ६वीं नवम्बर को चौक में एक विदेशी टोपियों की दुकान पर पिकेटिङ्ग करते समय गिरफ़्तार की गई थीं।

—सूरत का २२वीं नवम्बर का समाचार है कि जवाहर-दिवस के अवसर पर दफ़ा १४४ का विरोध करने के कारण जो ३४ अभियुक्त और ८८ अन्य व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए थे; मैजिस्ट्रेट ने उनमें से ३२ को दो-दो माह की सख़्त क़ैद और एक को ५०) जुर्माने की सज़ा दी है। अन्य अभियुक्तों को २००) की ज़मानत देने पर छोड़ देने के लिए कहा गया, पर उन सबने ज़मानत देने से साफ़ इनकार कर दिया।

—गोरखपुर का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ लगभग एक माह पहिले जो १५ वालण्टियर शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण गिरफ़्तार किए गए थे, उनमें से १२ को चार-चार माह की सख़्त क़ैद व २०)-२०) जुर्माने की और तीन लड़कों को ३०)-३०) जुर्माना या १५ दिन की क़ैद की सज़ा दी गई है। उन लड़कों ने जुर्माना देने की अपेक्षा जेल जाना अच्छा समझा। और उन्होंने सज़ा सुनते समय ख़ुशी में 'महात्मा गाँधी की जय' के नारे लगाए।

—पटना का २२वीं नवम्बर का समाचार है कि अखिल भारतवर्षीय हिन्दू-महासभा के सेक्रेटरी और काँङ्ग्रेस के सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री० बाबू जगतनारायण लाल को, जो जेल में ६ माह की क़ैद की सज़ा काट रहे हैं—पिकेटिङ्ग के अभियोग में ६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा और दे दी गई है; और उन्हें 'सी' क्लास में रक्खा गया है।

—पटना का २२वीं नवम्बर का समाचार है कि श्रीमती अम्बिकाचरण को, जो जवाहर-दिवस के अवसर पर जुलूस का नेतृत्व ग्रहण करने के अभियोग में गिरफ़्तार हुई थीं, २००) जुर्माना, या चार माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। वे 'बी' क्लास में रक्खी जायँगी।

—आगरे का २०वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ की ज़िला काँङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० शान्तिस्वरूप श्रीवास्तव दण्ड-विधान की १०८वीं धारा के अनुसार जवाहर-सप्ताह में भाषण देने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कानपुर में ता० २० और २१ को जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में कुल मिला कर ३४ गिरफ़्तारियाँ हुईं। २० ता० को विदेशी कपड़े की गाँठें रोकने के अभियोग में भी ६ वालण्टियर गिरफ़्तार किए गए हैं। रेल बाज़ार की श्रीमती शान्तादेवी कन्नौज में राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अभियोग में गिरफ़्तार की गई हैं।

—बम्बई में २१वीं नवम्बर को चार्नी रोड पर विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में दो स्त्रियाँ गिरफ़्तार कर ली गईं। हिन्दुस्तानी सेवा-दल के १२ वालण्टियरों को, जो जवाहर-दिवस के अवसर पर ग़ैर-क़ानूनी जुलूस के सदस्य होने के अभियोग में पकड़े गए थे, छः-छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हो गई।

—लाहौर का २०वीं नवम्बर का समाचार है कि बन्नू के काँङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता श्री० फ़ैज़ुल्ला ख़ाँ को दस हज़ार की ज़मानत देने से इनकार करने के कारण, एक साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—लखीमपुर (खेरी) का समाचार है कि १७ वीं नवम्बर को जवाहर-सप्ताह मनाने के सम्बन्ध में बाबू केदारनाथ सक्सेना गिरफ़्तार कर डिस्ट्रिक्ट जेल में बन्द कर दिए गए हैं।

—पेशावर का २१वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ उस दिन हड़ताल मनाई गई और हड़ताल की सलाह देने वालों में से दो आदमी गिरफ़्तार कर लिए गए। क़िस्साख़्वानी और दलधारन को शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में दो गाँव वाले और तीन शहर वालों की गिरफ़्तारी हुई है। ११ बजे दिन से काबुली दरवाज़ा बन्द कर दिया गया है।

—कराची में २१वीं नवम्बर को ग़ैर-क़ानूनी नमक बेचने के अभियोग में छः वालण्टियरों को चार-चार माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—बेलारी के एक समाचार से मालूम होता कि बेलारी डिस्ट्रिक्ट कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी राघवेन्द्र राव को ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट ने एक साल की सादी क़ैद की सज़ा दी है।

—शाहजहाँपुर के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर पं० देव-नारायण भाटिया, २०वीं नवम्बर को नौ बजे रात्रि को गिरफ़्तार कर लिए गए। उन्हें एक वर्ष की सादी क़ैद की सज़ा हुई है।

—भारतीय सरकार को हाशिमगुल की मृत्यु के विषय में अफ़वाहें उड़ाए जाने का पता लगा है। हाशिम-गुल १२ नवम्बर को पिकेटिङ्ग करते समय लाहौर में गिरफ़्तार किया गया था। कहा जाता है कि अधिक मार खाने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। पुलिस और मैजिस्ट्रेट ने इस बात की जाँच की है। पोस्ट-मार्टम परीक्षा भी की गई है। और यह सिद्ध करने की चेष्टा की गई है कि यह अफ़वाह बे बुनियाद है और हाशिम-गुल डबल न्युमोनियाँ से मरा है।

—सागर का २१वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ की स्थानीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के ५ वें डिक्टेटर २० वीं नवम्बर को सन्ध्या समय ५ बजे पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए। श्री० हार्डीकर और रामकृष्ण राठौर भी 'पिकेटिङ्ग ऑफ़िस' में गिरफ़्तार किए गए हैं। ऑफिस से पुलिस झण्डे, और दूसरे समान भी उठा ले गई है।

श्री० महादेव देसाई फिर गिरफ़्तार

कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी मि० महादेव हरिभाई देसाई २५ नवम्बर को डॉक्टर कनुगा के बँगले पर, जहाँ कि वह सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ ठहरे हुए थे, गिरफ़्तार कर साबरमती जेल भेज दिए गए। क्रिमिनल-लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) वीं धारा के अनुसार आप २४वीं नवम्बर को एक बुलेटिन निकालने के अभि-योग में गिरफ़्तार किए गए हैं। बुलेटिन में उन्होंने जनता से कॉङ्ग्रेस को धन और मकान से सहायता देने की अपील की थी।

—छपरा का २२वीं नवम्बर का समाचार है कि जवाहर-दिवस, के सम्बन्ध में छपरा ज़िले में ३७ गिर-फ़्तारियाँ हुई हैं।

—मिस्टर चन्द्रधर जमाल ने गुरुकुल काङ्गड़ी विश्व-विद्यालय के रजिस्ट्रार प्रोफ़ेसर सत्यव्रत के विषय में फ़ैसला दे दिया है। उन्हें एक साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। वे इण्डियन पिनल-कोड की १०८ वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे। मैजिस्ट्रेट ने इन्हें 'ए' क्लास में रक्खे जाने की सिफ़ारिश की है।

—कोकोनाडा का सामाचार है कि वहाँ के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के प्रेज़िडेण्ट मिस्टर पल्लम राजू क्रिमिनल पिनल-कोड की १०७ वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए। अभी वे ५०००) की ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं।

—अलीपुर के पुलिस मैजिस्ट्रेट ने एक १४ वर्ष के बालक को जवाहर-दिवस के जुलूस में भाग लेने के अपराध में तीन महीने की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

—२४ परगना कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० बिपिनविहारी गाङ्गुली और सेक्रेटरी श्री० सत्यरञ्जन चटर्जी तथा १२ अन्य सज्जनों को अलीपुर के डिपुटी मैजिस्ट्रेट ने १८ महीने की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। इनमें से प्रत्येक को नमक का क़ानून भङ्ग करने और स्वयंसेवकों को अपने यहाँ रखने के अपराध में और भी ६-६ महीने की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।
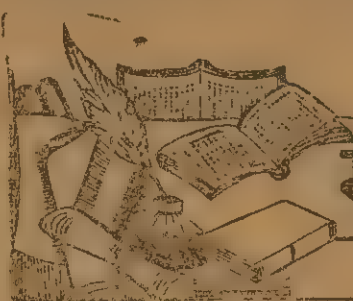
—इलाहाबाद के सेशन्स जज, श्री० रूपकिशन आग़ा ने १६वीं नवम्बर को मुसम्मात चितिया को, जिस पर दण्ड-विधान की ३०२वीं धारा के अनुसार जान-बूझ कर हत्या करने का अभियोग लगाया गया था, छोड़ दिया।

उसने अपने एक सम्बन्धी को, जिसने उसका सतीत्व अपहरण करने का प्रयत्न किया था, जान से मार डाला था। उसने अदालत में यह बात सिद्ध कर दी, कि कहीं सुनसान रात्रि में वह उसका सतीत्व भङ्ग न कर दे, उसके हृदय में अपने सतीत्व की रक्षा के सिवा कोई दूसरा ख़याल न था। असेसरों ने उसे निर्दोष पाया। सेशन्स जज की सम्मति असेसरों से मिलती हुई होने के कारण उसे छोड़ दिया गया।

—बनारस का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ के सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल में, एशिया भर की शिक्षा-कॉन्फ़्रेन्स के समय बड़े दिनों में 'अखिल भारतवर्षीय शिक्षा-प्रदर्शिनी' खोली जायगी। प्रदर्शिनी का प्रबन्ध बनारस डिवीज़न के स्कूल इन्स्पेक्टर श्री० एच० एन० वान्चू कर रहे हैं।

—दिल्ली का समाचार है कि १८वीं नवम्बर को दिल्ली प्रान्तीय बाल्मीकी-सङ्घ के उपलक्ष में वहाँ के मेहतरों की एक सभा चौधरी कामचन्द के सभापतित्व में हुई थी, जिसमें उन्होंने निम्नलिखित चार प्रस्ताव पास किए :—

(१) दिल्ली के मेहतरों की यह सभा अपने अन्य मेहतर भाइयों से प्रार्थना करती है कि वे मर्दुमशुमारी के समय अपने को हिन्दू या बाल्मीकी लिखवायें।

(२) यह सभा चमारों के उस प्रचार का घोर विरोध करती, है जिसमें वे हमारे भाइयों को आदि हिन्दू लिखने के लिए भड़काता है।

(३) यह सभा अपने उन मेहतर और चमार भाइयों को बधाई देता है, जो एसेम्बली और कौन्सिलों के सदस्य चुने गए हैं और उनसे प्रार्थना करती है कि वे वहाँ ऐसे बिल पेश करें, जिनसे उनकी सामाजिक और आर्थिक दशा सुधरे।

(४) यह सभा गवर्नमेण्ट से प्रार्थना करती है कि वह उन हिदायतों को रद्द करके, जो उससे दिल्ली और पञ्जाब के मर्दुमशुमारी सुपरिण्टेण्डेण्ट को दी है, क्योंकि उससे हिन्दुओं की जन-संख्या कम होने का अन्देशा है।

—दिल्ली में १८वीं नवम्बर को एक भयानक मोटर-दुर्घटना के समाचार पहुँचे हैं। कहा जाता है कि १६ ता० को लगभग दस बजे सवेरे एक "मोटर बस" जिसमें एक बच्चे सहित १६ बोहरे बैठे थे, इन्दौर जा रही थी। मऊ के पास रेलवे के एक फाटक को खुला देख कर रेलवे लाइन के पास चौकीदार के हाथ फैलाए खड़े रहने पर भी मोटर ड्राइवर ने जल्दी के कारण मोटर दौड़ा दी और उसकी इन्दौर से आने वाली गाड़ी से टक्कर लग गई जिससे ५ आदमी उसी समय मर गए और ११ घायल हो गए। उनमें से ३ आदमी जो अधिक घायल हो गए थे, केण्टोनमेण्ट अस्पताल में पहुँचते ही मर गए अन्य घायलों की भी दशा अत्यन्त शोचनीय है। एक आदमी लगभग दस गज़ तक एञ्जिन के साथ घसिटता गया बाद में वह गिर पड़ा। घटना की जाँच हो रही है।

—मद्रास का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि बेलारी में दियासलाई की दो पेटियों को लादते समय उनमें अचानक आग लग जाने से, तीन रेलवे-कुली घायल हो गए।

—कलकत्ते का २०वीं नवम्बर का समाचार है कि बङ्गाल के जेल-कोड में एक नया नियम सम्मिलित किया गया है, जिसके अनुसार अधिकारियों को जेल के चारों ओर या उसके कुछ भाग में बिजली का घेरा लगाने का अधिकार दे दिया गया है! इसका उद्देश्य क़ैदियों को भागने से रोकना है। क़ैदियों को इस बात की चेतावनी दे दी जायगी कि जो आदमी बिजली के घेरे को छुएगा उसकी या तो मृत्यु हो जायगी, या वह सख़्त घायल हो जायगा। अङ्गरेज़ी और हिन्दुस्तानी भाषाओं में घेरे से कुछ दूरी पर 'ख़तरे' की तख़्तियाँ (Danger) लगा दी जायँगी और उससे मृत्यु हो जाने या घायल होने के लिए जेल के अधिकारी ज़िम्मेदार नहीं रहेंगे !!

—उन्नाव का २१वीं नवम्बर का समाचार है कि १६ ता० को लखनऊ में ६॥ बजे शाम को ६ आदमियों ने हसनगञ्ज (उन्नाव) के लिए एक मोटर किराए पर की और जब मोटर अजोजैन पुलिस थाने से ५ मील की दूरी पर झलोतर के पास पहुँची तब उन्होंने ड्राइवर से मोटर खड़ी करने के लिए कहा। जैसे ही मोटर खड़ी हुई उन सब ने उसके पास जो कुछ था छीन लिया और उसे एक पेड़ से बाँध दिया। बाद में वे सब मोटर लेकर लापता हो गए और अभी तक उनका कोई पता नहीं है।

—मद्रास का २५ वीं नवम्बर का समाचार है कि गत २४ ता० को वेलिङ्गटन (नीलगिरि) में किसी गोरे सिपाही ने मिस टेलर नामक एक गोरी मेम को वेलिङ्ग-टन झील में मार कर फेंक दिया है। अपराधी स्वयं इ[illegible] बात को स्वीकार करता है, किन्तु यह अभी सन्देहजन[illegible] है, क्योंकि मृत शरीर अभी तक नहीं पाया जा सका [illegible] कहा जाता है कि उस सिपाही ने पुलिस से कहा है कि वह मिस टेलर से शादी करना चाहता था, परन्तु [illegible] उसने शादी करने से इन्कार कर दिया तो सिप[illegible] ने गुस्से में उसे पत्थरों की चोट से मार डाला और [illegible] झील में फेंक दिया। मिस टेलर जिनकी आयु २६ व[illegible] की है न्यूज़ीलैण्ड की रहने वाली हैं, और मल्लापुरम में [illegible] थीं। और वहीं उनकी गोरे से पहचान हुई थी। [illegible] नील-गिरी सैर करने गई थीं।

* * *

—फ़तेहपुर ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व डिक्टे-टर और एडवोकेट बाबू वंशगोपाल, जो कुछ ही सप्ताह पहिले छः माह की सज़ा भोग कर आए हैं, २४वीं नवम्बर को अदालत के अहाते में ऑर्डिनेन्स ५ की ४थी धारा के अनुसार फिर गिरफ़्तार कर लिए गए।

—मद्रास का एक समाचार है कि २५वीं नवम्बर को राष्ट्रीय वालण्टियर कोर के ६ स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। वे गोविन्दप्पा-निकेन स्ट्रीट में लोगों से विदेशी वस्त्र के बहिष्कार के लिए अपील कर रहे थे।

—नोआखाली के डिस्ट्रिक्ट कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर मि० प्रियलाल मजूमदार वकील को जवाहर-दिवस के अभियोग में इन्टर्नमेन्ट-ऑर्डिनेन्स और ई० पी० कोड की १२७वीं धारा के अनुसार २१ नवम्बर को एक साल की कड़ी क़ैद की सज़ा हुई है।

* * *

—बम्बई का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि ख़ुफ़िया पुलिस ने १८ तारीख़ की रात्रि को ठाकुरद्वारे पर डॉ० हर्डीकर की तलाशी ली। पुलिस हिन्दुस्तानी सेवादल की एक वर्दी और एक तमग़ा ले गई। उनकी गिरफ़्तारी की भी आशङ्का है।

—योतमाल (सी० पी०) का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि सन्ध्या को शराब की दुकानों के ठेके समाप्त हो गए। १७ दुकानों के लिए ठेकेदार नहीं मिले। कई दुकानों पर तीन-तीन बार बोली बोलने पर भी कोई ख़रीदार नहीं मिला! यहाँ आबकारी से ९० प्रतिशत, या डेढ़ लाख का नुक़सान अन्दाज़ा जाता है।

—बम्बई गवर्नमेण्ट ने अपने गज़ट के १६वीं नवम्बर के असाधारण अङ्क में कोलाबा ज़िले की चक की कॉङ्ग्रेस कमिटी को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया है।

—बम्बई हाईकोर्ट के जस्टिस मर्फ़ी ने खेरा के सब-डिविज़नल मैजिस्ट्रेट के द्वारा दी गई सरदार पटेल की पुत्री मनोबेन की चार मास की सज़ा को घटा कर तीन मास की कर दी।

—संयुक्त प्रान्त के लेजिस्लेटिव कौन्सिल के स्वराजिस्ट नेता पं० गोविन्दवल्लभ पन्त बरेली जेल से २२वीं नवम्बर को छोड़ दिए गए। उनका स्वास्थ्य इस समय अच्छा नहीं है और उनका वज़न २२ पौण्ड घट गया है।

कॉलेजों को बन्द करने की धमकी

कलकत्ते का २१वीं नवम्बर का समाचार है, कि शिक्षा-विभाग ने कलकत्ता यूनीवर्सिटी के वायस चान्सलर के द्वारा प्राइवेट कॉलेजों को यह चेतावनी भिजवाई है कि यदि उन्होंने छः माह के अन्दर उन्नति न दिखाई तो उनको १,२१,००० रुपए की सहायता बन्द कर दी जायगी। यद्यपि गवर्नमेण्ट के ऊपर कॉलेजों को सहायता पहुँचाने का कोई बन्धन नहीं है, परन्तु वह उन्हें ६०००) से लेकर ९००) तक आवश्यकतानुसार अलग-अलग सहायता देती थी। यदि यह सहायता बन्द हो जायगी तो कई कॉलेजों को बहुत हानि उठानी पड़ेगी।

—कलकत्ते का २४वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ की महिला सत्याग्रह कमिटी की ओर से एक सभा में पण्डित मोतीलाल नेहरू की पुत्री कुमारी कृष्णा नेहरू को एक अभिनन्दन-पत्र दिया गया था। उसके उत्तर में उन्होंने महिलाओं से पर्दा छोड़ने की अपील की और यह भी कहा—"बङ्गाल की स्त्रियाँ इस आन्दोलन में ख़ूब उत्साहपूर्वक कार्य नहीं कर रही हैं।"

—कानपुर के 'प्रताप' ने सन्ध्या समय अपना एक दैनिक संस्करण निकालना प्रारम्भ कर दिया है।

—बम्बई का २०वीं नवम्बर का समाचार है कि श्री० नरीमैन का नाम, जो वर्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में तीसरी बार नासिक जेल में सज़ा पूरी कर रहे हैं, वकीलों की सूची से काटने का प्रयत्न किया जा रहा है। कहा जाता है गवर्नमेण्ट एडवोकेट शीघ्र ही हाईकोर्ट से एक नया क़ानून बनवाने का प्रयत्न करेगा, जिसमें नरीमैन से यह पूछा जायगा कि उनका नाम रजिस्टर पर से क्यों न काट दिया जाय? इस ख़बर से स्थानीय वकीलों में बड़ी सनसनी फैली है।

—कटक का १६वीं नवम्बर का समाचार है कि जवाहर-दिवस के अवसर पर वहाँ पुलिस के लाठी-प्रहार से ९ आदमी सख़्त घायल हुए हैं।

—यू० पी० कॉङ्ग्रेस के सेक्रेटरी ने हमारे पास जो रिपोर्ट भेजी है उससे पता चलता है कि इस प्रान्त में १२ नवम्बर को समाप्त होने वाले सप्ताह में २३७ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। युक्त प्रान्त में अभी तक कुल गिरफ़्तारियाँ ८,६८१ हो चुकी हैं।

श्री० पटेल का स्वास्थ्य

—बम्बई का २२वीं नवम्बर का समाचार है कि डॉक्टर पी० टी० पटेल को, जिन्होंने पञ्जाब गवर्नमेण्ट के होम सेक्रेटरी से श्री० विट्ठल भाई पटेल के स्वास्थ्य की जेल में जाँच करने की आज्ञा माँगी थी, निम्न तार मिला है:—

"किङ्ग एडवर्ड मेडिकल कॉलेज के प्रोफ़ेसर कर्नल हार्पर आज श्री० विट्ठल भाई पटेल की जाँच करने अम्बाला रवाना हो जावेंगे और वहाँ वे सिविल सर्जन की सहायता से आपके तथा विशेषज्ञ के श्री० पटेल से मिलने की तारीख़ का निश्चय कर आपको तार देंगे।"

पेशावर में मार्शल लॉ

पेशावर का २१वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ के मार्शल लॉ के शासक मि० कैरो ने निम्न आज्ञा निकाली है:—

"सन १९३० के मार्शल लॉ-ऑर्डिनेन्स की दफ़ा ६ के अनुसार पश्चिमोत्तर सीमा-प्रान्त के कमिश्नर की मञ्ज़ूरी से निम्न आज्ञा निकाली जाती है—(१) तरकारियों को छोड़ कर पेशावर केण्टोमेण्ट की सीमा के चारों से १०० गज़ के अन्दर की सब फ़सल शीघ्र ही कट जानी चाहिए। (२) जब तक दूसरी आज्ञा न निकाली जाय तब तक तरकारियों और मिर्चों आदि के अतिरिक्त, उस १०० गज़ के अन्दर कोई अन्य चीज़ उत्पन्न न की जाय। (३) जब तक दूसरा ऑर्डर न निकले, तब तक सीमा से १०० गज़ के अन्दर कोई नई इमारत न बनाई जाय।

"इस आज्ञा का उल्लङ्घन करने पर अभियुक्त सज़ा का मुस्तहक़ होगा।

—लाहौर के गवर्नर ने इस बात की सूचना निकाली है कि हिसार ज़िले के अन्तर्गत सुहाला ग्राम के निवासियों के असंद् व्यवहार के कारण एक साल के लिए पुलिस की संख्या बढ़ाई जावे।

—यह अनुमान किया जाता है कि "कृष्ण" के सम्पादक पं० राजाराम शास्त्रि जो राजद्रोह के अपराध में जेल काट रहे हैं—कुछ दिनों से अस्वस्थ हैं। एक सप्ताह के भीतर उनका वज़न चार पौण्ड घट गया है। उन्हें अचानक छाती और कन्धों में दर्द हो गया है। इस समय वे फ़ैज़ाबाद भेज दिए गए हैं।

—डॉक्टर सर नीलरतन और दूसरे डॉक्टर लोग आज सन्ध्या समय चित्तरञ्जन सेवा सदन में मिले। पण्डित मोतीलाल नेहरू के एक्सरे और स्क्रीन एक्ज़ामिनेशन के विषय में उन लोगों में बड़ी देर तक तर्क-वितर्क होता रहा। अन्त में उन लोगों ने स्थिर किया कि रोग क्रानिक है, और इसके आराम होने में कुछ समय की आवश्यकता है। किन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं है। उन्होंने समुद्र-यात्रा करने को कहा। सभी बातें कल डॉक्टरों के मिलने पर निश्चित की जायँगी।

—मदुरा के एक समाचार से पता चलता है कि मदुरा कॉलेज के प्रिन्सिपल ने यह सूचना निकाली है कि जो छात्र ११ नवम्बर के हड़ताल में भाग लेंगे, तीन दिनों तक उनकी उपस्थिति नहीं बनाई जायगी।

—इण्डियन नेशनल कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी बाबू श्रीप्रकाश अकस्मात २१ नवम्बर की सन्ध्या को बनारस डिस्ट्रिक्ट जेल में ७ महीने की सज़ा भोगने के बाद छोड़ दिए गए। वे एक बन्द मोटर लॉरी में घर भेज दिए गए। २९ अप्रैल को आपको छः महीने की सज़ा और १००) जुर्माने हुए थे। जुर्माना न देने से एक मास की सज़ा बढ़ा दी जाती। यद्यपि जुर्माना वसूल करने के लिए पुलिस ने उनकी गाड़ी बेचने की कोशिशें कीं, किन्तु सभी निष्फल हुए। अन्तिम प्रयत्न गाड़ी बेचने का उनके जेल से छूटने के कुछ ही दिन पहले किया गया था।

फ़ीरोज़पुर में गोली चली

—कलकत्ते का २९वीं नवम्बर का समाचार है कि, फ़ीरोज़पुर सब-डिविज़न के एक दङ्गे में एक पुलिस कॉन्स्टेबल और एक गाँव का मनुष्य घायल हुआ। जिसके फल-स्वरूप पुलिस को गोली चलानी पड़ी। कहा जाता है कि पुलिस वहाँ सन्देह में एक मनुष्य को गिरफ़्तार करने गई थी। गोली से तीन मनुष्य मारे गए।

'सरकार सलाम' न कहने का दण्ड

२४ वीं नवम्बर को आसाम के सिविल अस्पतालों के इन्स्पेक्टर जनरल धुबरी जेल के निरीक्षण के लिए गए थे। यहाँ कुछ राजनैतिक क़ैदी रक्खे गए थे। कहा जाता है कि इन्स्पेक्टर जनरल के स्वयं बार-बार कहने पर भी वहाँ के राजनैतिक क़ैदियों ने 'सरकार सलाम' कहने से इन्कार किया। फल-स्वरूप, इन्हें इस अपराध के लिए कड़ा दण्ड दिया गया है। इनमें से दो तेजपुर भेज दिए गए हैं।

—मैसूर स्टेट के दीवान सर मिरज़ा मुहम्मद इस्माइल ने 'स्पेक्टेटर' में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है जिसमें उन्होंने निम्न शब्दों में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन की शक्ति का वर्णन किया है:—

"देश भर में राष्ट्रीय जागृति प्रबल वेग से फैली है और अब और भी अधिक वेग से फैलेगी। भारतीय रियासतों में भी यह जागृति उतनी ही प्रबल है जितनी ब्रिटिश भारत में। अङ्गरेज़ों को इस जागृति की शक्ति का अनुभव करना चाहिए। इस जागृति में अशान्ति है और वह दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। वही भारत की भावी आशा है। इस राष्ट्रीय जागृति में दो ख़तरे हैं। एक ख़तरा तो उसकी अतिवृद्धि का है जो तर्कों के सहारे नहीं रोकी जा सकती और दूसरा ख़तरा इस बात में है कि अधुरता के कारण कहीं उसकी रुख़ कुमार्ग की ओर न हो जाय। मेरा मतलब केवल भारत की राष्ट्रीयता की गहराई दिखाने से है।........इस समय उसकी ज़ोरदार आवाज़ 'साम्राज्य के बाहर स्वतन्त्रता' प्राप्त करना है। उसमें चाहे तर्क की मात्रा कम हो, परन्तु उससे इस बात का पता अवश्य चलता है कि वह ऐसे मनुष्यों की आवाज़ है जो अपने अन्दर शक्ति के आविर्भाव का अनुभव करते हैं, परन्तु जिन्हें उसके उपयोग का अधिकार नहीं है।"

* * *

'सत्याग्रह के अस्त्रों की तीक्ष्णता'

"गवर्नमेन्ट को परास्त करने के लिए सब से ख़तरनाक अस्त्र ब्रिटेन का व्यापारिक बहिष्कार है"

"लङ्काशायर और भारत का व्यापार मृतप्राय हो गया है"

"परन्तु यदि वर्तमान अहिंसात्मक आन्दोलन के द्वारा स्वराज्य प्राप्त न कर सकेंगे, तो भारतीय युवकों का आत्माभिमान जाग्रत होकर उग्र रूप धारण कर लेगा, अहिंसात्मक राष्ट्रीयता हिंसात्मक राष्ट्रीयता में परिवर्तित हो जायगी, और दोनों दल महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों को भूल जायँगे। उस समय इँगलैण्ड को केवल दो ही मार्ग शेष रह जायँगे, या तो देश को छोड़ कर भारत के शासन से अपना हाथ खींच ले और या महासंग्राम की रचना कर भारत में फिर से तलवार के बल पर शासन स्थापित करे, जिसमें अगणित मनुष्यों का रक्त बहेगा और करोड़ों पौण्ड के ख़र्च से ख़ज़ाना ख़ाली हो जायगा।"

श्री० जॉर्ज स्लोकोम्ब ने, जो यरवदा जेल में महात्मा गाँधी से मिले थे, अमेरिका के सुप्रसिद्ध पत्र 'नेशन' में एक लेख लिखा है, जिसका सार पाठकों के मनोरञ्जनार्थ यहाँ दिया जाता है :—

राष्ट्रीयता का ज्वर

"इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन ने देश के कोने-कोने में राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न कर दी है। राष्ट्रीयता का ज्वर संक्रामक रोग की नाईं सब जातियों और फ़िरक़ों में फैल गया है। बैङ्कर और मिल-मालिक, वकील और दूसरे पेशेदार व्यापारी और मिल-मज़दूर—सभी अपने हृदय में यह विश्वास लेकर कूद पड़े हैं, कि अब स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने का समय आ गया है। गाँवों के किसानों के पास भी शहरों से राष्ट्रीय भावनाओं की लहर पहुँच गई है। गुजरात के किसान कई वर्षों से सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में, जो 'गुजरात के शेर' कहलाते हैं, इस आन्दोलन में प्रमुख भाग ले रहे हैं। हाल ही में लगान के सम्बन्ध में कलेक्टरों से जो युद्ध हुआ था, उसके घाव अभी भरे नहीं हैं और आगामी शरद ऋतु में उनकी यह स्मृति लगान वसूल करना असम्भव बना देगी।

किसानों में जागृति

"परन्तु अब इस बात के चिन्ह स्पष्ट प्रकट हो गए हैं कि अभी तक जो युद्ध केवल शहरों में मचा हुआ था, उसकी लहर ने गाँवों में पहुँच कर किसानों को जागृत कर दिया है। वे कुछ-कुछ यह समझ गए हैं कि संसार के वर्तमान आर्थिक सम्बन्ध और साम्राज्य के अन्तर्गत देशों की प्रतिस्पर्धा के कारण ही उनके गेहूँ की फ़सल का मूल्य इतना कम हो गया है। वे भारतीय गवर्नमेण्ट की मुद्रा और विनिमय सम्बन्धी गूढ़ नीति को अच्छी तरह समझ गए हैं। जिसके परिणाम स्वरूप चाँदी का और उसके साथ ही उसकी एकत्रित की हुई सम्पत्ति, जिसमें आभूषणों का विशेष भाग रहता है—का मूल्य कम हो गया है। परन्तु इन सब से अधिक राष्ट्रीयता की एक क्षीण झलक उनके हृदयों में प्रकाश फैलाने लगी है। एक आश्चर्यजनक राजनीतिक भावना ने एक नए धर्म की नाईं, जिसका पैग़म्बर, नेता और उपास्य-देवता महात्मा गाँधी है, उनके हृदय पर क़ब्ज़ा कर लिया है।

"जिन लोगों ने टॉलस्टॉय के सिद्धान्तों का अध्ययन किया है, वे गाँधी के सत्याग्रह आन्दोलन को अच्छी तरह समझ सकते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि किसी आकस्मिक घटना के समय टॉलस्टॉय के सत्याग्रही वार करने के लिए तैयार हो जाते थे, परन्तु महात्मा गाँधी ने उसकी सभी सीढ़ियाँ तय कर ली हैं। उनके सत्याग्रही बिलकुल सन्तोषी और सहनशील व्यक्ति हैं; वे केवल उस चीज़ पर ही धावा करते हैं, जिसे वे बुरा समझते हैं। ताड़ी उत्पन्न करने वाले खजूर के पेड़ नष्ट करना, गवर्नमेण्ट के नमक के कारख़ानों पर धावा करना, ग़ैर-क़ानूनी नमक बनाना। टैक्स वसूल करने वाले भारतीय कलेक्टरों का और पुलिस और गवर्नमेण्ट के अन्य अफ़सरों का सामाजिक बहिष्कार, उन्हें भोजन और पानी तक न देना, गाँवों के कुँओं तक का मुँह बन्द कर देना और उनके लिए अपने घर के दरवाज़े बन्द कर देना और ब्रिटिश माल का ज़ोरों से बहिष्कार करना—कुछ ऐसे शस्त्र हैं जिनके द्वारा शत्रु के मोरचों पर धावा किया जाता है और जिनका टॉलस्टॉय के सत्याग्रह में अभाव था।

"महात्मा गाँधी और इतिहास के अन्य प्रसिद्ध क्रान्तिकारियों में मुख्य अन्तर यह है कि महात्मा गाँधी को यह दृढ़ विश्वास है कि "कड़े से कड़े हृदय को भी अपने त्याग और बलिदान से पिघलाया जा सकता है।" उनके सिद्धान्त के अनुसार यदि अत्याचारी का हृदय नरम होने के बदले और भी कड़ा हो जाय, तो उसका मतलब यह नहीं कि तुम्हारे बलिदान और त्याग का प्रभाव नहीं पड़ा, बल्कि अभी त्याग और बलिदान की मात्रा इतनी अधिक नहीं हुई, कि उससे उस नृशंस अत्याचारी को उसकी लगन का पता लग जाय। जैसे ही उसे सच्ची लगन का विश्वास हो जायगा, वह नम्र हुए बिना रह नहीं सकता। मि० गाँधी का यह विश्वास है कि अङ्गरेज़ों का भारत के शासन से हाथ खींच लेना ब्रिटेन के लिए उतना ही लाभदायक है, जितना भारत के लिए।

तीन आश्चर्य

"मि० गाँधी के इस आन्दोलन ने तीन आश्चर्यजनक कार्य किए हैं। उन्होंने उन हिन्दुओं में, जिनके हिंसा के नाम से हृदय काँपते हैं, पुलिस की लाठियाँ और घूँसे, उसके अपमान और अत्याचार आनन्द-पूर्वक सहने की शक्ति भर दी है। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है, कि उन्होंने पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त के वीर और ख़ूँख़्वार पठानों और पञ्जाब के उन आत्माभिमानी सिक्खों को, जो एक घूँसे का जवाब शत्रु के ख़ून से ही देते थे, बिना किसी विरोध के, लाठियों की बौछार के सामने अपनी बन्दूक़ों और तलवारों को ताक़ में रख देना सिखलाया है! तीसरी आश्चर्यजनक बात यह है कि उनके इस आन्दोलन ने वहाँ की सदियों की धार्मिक और अन्ध-विश्वासों की ग़ुलामी की बेड़ियाँ काट दी हैं। जाति-पाँति के ढकोसलों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं। मैंने अस्पताल के एक ही वार्ड में लाठियों के प्रहार से ज़ख़्मी हिन्दू, मुसलमान, यहूदी, पारसी और ईसाइयों को एक साथ पड़े हुए, एक ही थाली में खाते हुए और एक ही गिलास से पानी पीते हुए अपनी आँखों से देखा है! मैंने ऐसी हज़ारों उच्च श्रेणी की हिन्दू-महिलाओं को देखा है, जो पर्दे को लात मार कर शराब और विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने घर से बाहर निकल आई थीं और जो (सुकुमार ललनाएँ) पुलिस द्वारा जुलूस रोके जाने पर रात भर रास्ता पर खड़ी रहती थीं। मैंने उन्हें आन्दोलन के युवक सत्याग्रही पर पुलिस द्वारा किया हुआ वार अपने सिर पर झेलने के लिए पुलिस की ओर झपटते हुए देखा है। उन लोगों के लिए गाँधी एक पैग़म्बर और नेता है; वह उनकी राष्ट्रीय भावनाओं का अवतार है और भारतीय जागृति का मुख्य आधार!

प्रत्युत्तर

"इन सब घटनाओं के देखते-सुनते हुए भी अभी तक यह कहा जाता है कि 'भारतीय अभी स्वराज्य के योग्य नहीं हुए।' इसका मुझे केवल एक ही उत्तर सूझता है। चाहे वे योग्य हों या अयोग्य, इस प्रकार के तर्कों का समय अब गुज़र चुका है। उन लोगों ने यह निश्चय कर लिया है कि वे अपना राज्य अपने आप चलाने के योग्य हो गए हैं और उन्होंने इसीलिए विदेशी गवर्नमेण्ट का शासन भारत में असम्भव करना प्रारम्भ कर दिया है। जिस समय श्री० गाँधी ने अप्रैल में समुद्र की ओर प्रस्थान किया था और डण्डी के पास समुद्र के किनारे ग़ैर क़ानूनी नमक बनाया था, उस समय वे भारतवासी भी, जो ऐसी बातों पर हँसा नहीं करते थे, हँसते थे। परन्तु एक ही माह के अन्दर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक नमक-कर के विरुद्ध आन्दोलन फैल गया था और गवर्नमेण्ट को नमक-क़ानून की रक्षा करना असम्भव हो गया था; गवर्नमेण्ट नमक-क़ानून भङ्ग करने वाले अपराधियों को सज़ा नहीं दे सकती थी, क्योंकि उन सब के लिए उसकी जेलों में स्थान न था। और उसका परिणाम यह हुआ कि गवर्नमेण्ट को आन्दोलन दबाने के लिए ज़ोर और ज़ुल्म से काम लेना पड़ा।

"श्री० गाँधी ने यह पहले ही से सोच रक्खा था। उनका विश्वास था कि कोई भी गवर्नमेण्ट इस प्रकार के आन्दोलन का विरोध केवल हिंसात्मक रूप से कर सकती है। सत्याग्रही अभियुक्तों को गिरफ़्तार करने और उन्हें मैजिस्ट्रेट के सामने पेश करने के बदले पुलिस ने उन पर लाठियों की वर्षा प्रारम्भ कर दी, यहाँ तक कि कहीं-कहीं उसने गोली चला कर भी आदमियों का संहार करना प्रारम्भ कर दिया। इसी के बाद उस त्याग और बलिदान का प्रारम्भ हो गया, जिसके बल पर गाँधी का यह विश्वास है, कि वह अत्याचारियों पर या तो विजय प्राप्त करेगा पर उन्हें शुद्ध कर देगा और उनके हाथों में, जो अत्याचार से पीड़ित हैं, विजय-पताका देगा।

व्यापारिक बहिष्कार

"स्वतन्त्रता के इस युद्ध में भारत की ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को परास्त करने के लिए सब से अधिक ख़तरनाक अस्त्र ब्रिटेन का व्यापारिक बहिष्कार है। भारत ने अमेरिकन माल का बहिष्कार नहीं किया; और यद्यपि ब्रिटिश माल के बहिष्कार से पहले अमेरिका को लाभ हुआ, परन्तु देश भर में अशान्ति होने के कारण व्यापार पर जो घातक प्रभाव पड़ा है, उससे भारत के अमेरिकन व्यापार पर हानिकर प्रभाव पड़ा है। इस बहिष्कार में संसार के सभी देशों के केवल कपड़े का बॉयकॉट किया गया, परन्तु ब्रिटेन के कपड़े मोटरों, मैशीनों दवाइयों, रेडियो और फ़िल्म आदि सभी का बहिष्कार किया गया है और उसके परिणाम-स्वरूप लङ्काशायर और भारत का पारस्परिक व्यापार मृतप्राय हो गया है। यदि यह बहिष्कार एक साल और रह गया तो ब्रिटेन के भारत से बहुत से लाभ लुप्त हो जायँगे और ब्रिटेन के हाथों में भारतीय शासन के केवल चारित्रिक लाभ रह जायँगे।

आशा की झलक

"भारत की वर्तमान राजनीतिक क्रान्ति का यह एक सीधा चित्र है। यद्यपि भारतीय ब्रिटेन का पल्ला भारत पर से हटाना चाहते हैं, परन्तु वे ब्रिटिश साम्राज्य से राजनीतिक और व्यापारिक सम्बन्ध-विच्छेद नहीं करना चाहते। ग्रेट ब्रिटेन से यह सम्बन्ध वे उसी प्रकार स्थापित करना चाहते हैं, जिस प्रकार उससे कैनेडा और ऑस्ट्रेलिया का है। भारत के बहुत से नेता, जिनकी मुझसे मुलाक़ात हुई है, इङ्गलैण्ड के राजनीतिक पलने में पले हैं। उन्होंने ब्रिटिश यूनीवर्सिटियों में प्रजातन्त्र और 'पार्लामेण्टरी गवर्नमेण्ट' के पाठ पढ़े हैं, और उनका उपयोग वे भारत में करना चाहते हैं। यदि वे साम्राज्य के अन्तर्गत स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तो युवकों को छोड़ कर वहाँ के सभी फ़िरक़ों के लोग सन्तुष्ट हो जायँगे। परन्तु यदि वर्तमान अहिंसात्मक आन्दोलन के द्वारा स्वराज्य प्राप्त न कर सकेंगे, तो भारतीय युवकों का आत्माभिमान जाग्रत होकर उग्र रूप धारण कर लेगा। अहिंसात्मक राष्ट्रीयता हिंसात्मक राष्ट्रीयता में परिवर्तित हो जायगी, और दोनों दल महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों को भूल जायँगे। उस समय इङ्गलैण्ड को केवल दो ही मार्ग शेष रह जायँगे, या तो देश को छोड़ कर भारत के शासन से अपना हाथ खींच ले और या महासंग्राम की रचना कर भारत में फिर से तलवार के बल पर शासन स्थापित करे, जिसमें अगणित मनुष्यों का रक्त बहेगा और करोड़ों पौण्ड के ख़र्च से ख़ज़ाना ख़ाली हो जायगा।

"इङ्गलैण्ड में एक दल ऐसा है, जो हिंसात्मक संग्राम में विश्वास करता है और खुल्लम-खुल्ला उसकी घोषणा करता है। उसके मत से 'गुलाम जातियों' को सदैव लोहे के शिकञ्जे से जकड़े रहने में ही भलाई है। परन्तु संसार के वर्तमान वातावरण में उसकी इच्छा के विरुद्ध यह नीति कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकती। इङ्गलैण्ड के नए

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

बम्बई के मैजिस्ट्रेट को क्रान्तिकारी-दल की चेतावनी

बम्बई के चौथे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० आई० एन० मेहता को 'क्रान्तिकारी-दल का पहला प्रयत्न' शीर्षक एक पत्र मिला है, जो 'जवाहरलाल ज़िन्दाबाद' स्थान से भेजा गया है और जिस पर 'एक बङ्गाली सेन गुप्त' के दस्तख़त हैं। चिट्ठी के साथ काले रोगन का भी एक लिफ़ाफ़ा भेजा गया है। चिट्ठी निम्न प्रकार है:—

"महाशय जी,

हमें आपके निराशाजनक फ़ैसले पर सख़्त अफ़सोस है। इसमें सन्देह नहीं कि जन्म से आप हिन्दुस्तानी हैं, परन्तु अपनी माता और जन्म-भूमि को भूल कर आप एक पालतू कुत्ते की तरह सरकार को सहायता दे रहे हैं। हम इस पत्र के द्वारा आपको चेतावनी देते हैं, कि आप बदमाशों की चापलूसी छोड़ कर विदेशी सियारों के पञ्जे से मातृ-भूमि को मुक्त करने के लिए शीघ्र ही प्रजातन्त्र-फ़ौज में सम्मिलित हो जाइए। इस पर विचार करने में ही आपका हित है, नहीं तो कह नहीं सकते कि इसका क्या परिणाम होगा?

प्रजातन्त्र-फ़ौज की ओर से तुम्हें चेतावनी देने वाला

बङ्गाली, सेन गुप्त, (लेफ़्टिनेण्ट)"

पुलिस की बैरेक पर बम

बारीसाल का १७वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ १६ ता० की रात्रि को गौरनादी पुलिस थाने के पुलिस बैरेक पर दो बम फेंके गए थे। जिससे एक कॉन्स्टेबिल घायल हुआ और बैरेक के बरण्डे को भी कुछ क्षति पहुँची। अभी तक अपराधी का कोई पता नहीं लगा है। पुलिस के बहुत से अफ़सरों ने सशस्त्र कॉन्स्टेबिलों की सहायता से १६वीं नवम्बर को माधवपाशा की सशस्त्र डकैती के सम्बन्ध में वज़ीरपुर और बारापैका के बहुत से घरों की तलाशी ली। परन्तु अभी तक उस सम्बन्ध में कुछ पता नहीं लगा।

बम्बई में मोटर में से गोलियाँ दाग़ी गईं

बम्बई का २४वीं नवम्बर का समाचार है कि चर्च गेट, रेलवे-स्टेशन के सामने एक खड़ी हुई मोटर में से बन्दूक के दो कारतूस चलाए गए। पहला धड़ाका सुन कर एक कॉन्स्टेबिल, जो उस समय वहाँ ड्यूटी पर था, उस ओर झपटा। परन्तु जैसे ही वह वहाँ पहुँचा, बन्दूक से दूसरी गोली छोड़ी गई। साथ ही मोटर चार्नी-रोड स्टेशन की ओर पूरे वेग से निकल गई। बाद में कॉन्स्टेबिल वहाँ से दो ख़ाली कारतूस उठा ले गया। अभी तक न तो अभियुक्त का पता लगा है और न गोली चलाने के उद्देश्य का।

राजनीतिक दल का विश्वास है कि भारत में स्वराज्य स्थापित करना युक्ति-सङ्गत है और उसकी स्थापना बहुत दिनों तक स्थगित नहीं की जा सकती, जैसा कि कुछ ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का विचार है। नए दल का तो यह विश्वास है कि भारत में दस साल के अन्दर और हो सके तो पाँच ही वर्ष के अन्दर स्वराज्य की स्थापना हो जानी चाहिए और मैंने अपने निरीक्षण से तो यही तत्व निकाला है, और मेरा विश्वास है कि यदि इसमें देर हुई तो भारत को ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत रखना कोई आसान कार्य न होगा।"

* * *

बम्बई में बन्दूक़ों और कारतूसों की चोरी

बम्बई का वीं नवम्बर का समाचार है कि क्रॉफ़ोर्ड-मार्केट के सुप्रसिद्ध अस्त्रों के व्यापारी मेसर्स गुलामअली अब्दुलअली की दुकान पर से, जो पुलिस हेड-क्वार्टर के पास ही है, ८ बन्दूक़ों और बहुत से कारतूसों की चोरी हो गई है। अभी तक इस सम्बन्ध में कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई है।

कॉङ्ग्रेस-ऑफ़िस के पास बम

जैसोर का २४ वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ कॉङ्ग्रेस हाउस के सामने वाले मकान में एक मिट्टी के बर्तन में २३ वीं नवम्बर को ५ बम पाए गए हैं। चौपाटी रोड पर भी दो बम पाए गए हैं। बम उसी प्रकार के हैं, जैसे हाल ही में पुलिस-थाने में और डिस्ट्रिक्ट इण्टेलीजेन्स ऑफ़िसर के मकान पर प्राप्त हुए थे और जिनके सम्बन्ध में वहाँ के वकीलों, व्यापारियों और अन्य लोगों की गिरफ़्तारियाँ हुई थीं। जो बम हाल ही में ढूँढे गए हैं, उनमें से एक, एक बोतल में बन्द था। इस सम्बन्ध में वहाँ के कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस की भी तलाशी ली गई है। इस सम्बन्ध में पुलिस ने बहुत से घरों की तलाशी ली, और चन्द्रकुमार बनर्जी, सुरेन्द्रनाथ हाल्दार, टिकेन्द्रजीत माजूमदार और प्रमोदकुमार सेन वकीलों को मिला कर १४ आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं। ज़मानत किसी की भी मञ्ज़ूर नहीं की गई।

कॉन्स्टेबिल की जेब में बम फटा

हैदराबाद (सिन्ध) का २१वीं नवम्बर का समाचार है, कि जब एक पुलिस कॉन्स्टेबिल शिकारपुर के सिटी पुलिस इन्स्पेक्टर के दफ़्तर में उनकी मेज़ के पास खड़ा था, तब अचानक उसके पॉकेट में बम फट पड़ा! बम फटने से इन्स्पेक्टर के कपड़ों में थोड़ी आग लग गई, परन्तु उनकी जान बच गई। कॉन्स्टेबिल पोस्ट-ऑफ़िस से इन्स्पेक्टर की सवेरे की डाक लाया था और जब उसे उनकी टेबिल पर रख रहा था, तब उसके पॉकेट का टेबिल से धक्का लगने के कारण बम अचानक फट गया और बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ। धड़ाके के साथ ही बड़े ज़ोर का प्रकाश हुआ और उसके अन्दर के काँच के टुकड़े और कङ्कड़ सब कमरे में बिखर गए। कॉन्स्टेबिल बलूची मुसलमान है। इस सम्बन्ध में उसका कहना है कि किसी ने पोस्ट-ऑफ़िस की खिड़की के पास चिट्ठियाँ लेते समय बम पॉकेट में डाल दिया होगा।

विदेशी कपड़ा बेचने वालों की दूकान पर बम फटा

हैदराबाद (सिन्ध) का २४वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ २१ ता० को दो बम फटने से नगर-निवासियों में सनसनी फैल गई है। एक बम पुलिस थाने के अन्दर फटा था। यह बम, जैसा कि ऊपर कहा गया है, एक पुलिस कॉन्स्टेबिल के पॉकेट में फटा था। दूसरा बम सन्ध्या समय फटा था। यह बम वहाँ के विदेशी कपड़े के व्यापारी मेसर्स सङ्गमल, तुलसियामल की दुकान पर फटा था और उसके धड़ाके से उनके अहाते के सामने का दरवाज़ा चकनाचूर हो गया था। बम से किसी की मृत्यु नहीं हुई। बम फटने के कुछ दिन पहले क्रान्ति-दल ने वहाँ के विदेशी कपड़े के व्यापारियों को कॉङ्ग्रेस की आज्ञा भङ्ग करने पर धमकी दी थी और उस सम्बन्ध में पर्चे बटवाए थे।

शहर और ज़िला

—१९ नवम्बर को करछना तहसील के मैजिस्ट्रेट मि० मुअज़्ज़म बेग ने पिकेटिङ्ग और लगानबन्दी के सम्बन्ध में बहुत से गाँव वालों को सज़ाएँ दी हैं। श्री० बुद्धा, सुखदेव, भगवती प्रसाद और माता अम्बर को लगान-बन्दी के सम्बन्ध में छः-छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० सुखदेव को २०) और भगवतीप्रसाद और माता अम्बर को २५) २५) जुर्माना या डेढ़ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा भी दी गई। इनमें से सब ने अदालत की कार्यवाही में भाग लेने से इनकार कर दिया। श्री० जयराम को एक गाँव की शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में छः माह की सख़्त क़ैद और २५) जुर्माने की और जुर्माना न देने पर डेढ़ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—सिविल लाइन में २०वीं नवम्बर को विदेशी कपड़े के व्यापारियों ने फिर अपनी दुकानें खोली थीं, परन्तु उन पर पिकेटिङ्ग नहीं हुई। वहाँ के कुछ व्यापारी श्रीमती कमला नेहरू से अपने विदेशी कपड़ों के वर्तमान स्टॉक ख़तम कर देने के लिए प्रार्थना करने गए थे, परन्तु उन्होंने उत्तर दिया कि कॉङ्ग्रेस की ओर से ३ विदेशी कपड़े के व्यापारियों को एक नियत्त समय के अन्दर कपड़े पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवाने का नोटिस दिया जायगा। यदि वे उस समय तक मुहर न लगवाएँगे तो उनकी दुकानों पर पिकेटिङ्ग जारी होगी। दुकानदारों ने, यद्यपि दुकानें खोली हैं, परन्तु उन्होंने यह निश्चय कर लिया है कि यदि दुकानों पर पिकेटिङ्ग होगी, तो वे तुरन्त अपनी दुकानें बन्द कर देंगे। क्योंकि वे अपनी दुकानों पर गिरफ़्तारियाँ करवाने के लिए तैयार नहीं हैं। कुछ व्यापारियों से पुलिस ने उससे सहायता लेने की प्रार्थना की थी, परन्तु उन्होंने पुलिस से किसी प्रकार की सहायता लेने से साफ़ इनकार कर दिया है।

—तपस्वी सुन्दरलाल, श्री० मन्ज़र अली सोख़्ता और पण्डित केशवदेव मालवीय, जो इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट जेल में अपनी सज़ा काट रहे थे २०वीं नवम्बर को सवेरे फ़ैज़ाबाद जेल भेज दिए गए।

—इलाहाबाद कॉङ्ग्रेस कमिटी की अध्यक्षा श्रीमती कमला नेहरू ने स्थानीय कपड़े के व्यापारियों को इस बात की सूचना दी है कि वे ३ री दिसम्बर तक अपने विदेशी कपड़े की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवा लें। उन्हें इस बात की भी सूचना दी गई है कि यदि वे उपरोक्त समय तक आज्ञापालन नहीं करेंगे, तो उनकी दुकानों पर फिर पिकेटिङ्ग शुरू की जायगी।

—कॉङ्ग्रेस के अधिकारियों को इस बात का पता चला है कि स्थानीय व्यापारीगण विदेशी कपड़े बेच रहे हैं। गत रविवार को चौक के कपड़े के प्रसिद्ध व्यापारी साँवलदास खन्ना की दुकान पर पिकेटिङ्ग फिर जारी की गई। कहा जाता है कि कॉङ्ग्रेस के अधिकारियों ने इस बात को जानने के लिए कि विदेशी कपड़े बिकते हैं या नहीं, जासूस तैनात किए हैं। ये जासूस दुकानों पर जाकर विदेशी कपड़े माँगते हैं, जिससे यह पता लगे कि ये दुकानदार अपनी बात पर स्थिर हैं या नहीं।

लाला साँवलदास खन्ना इसी जासूसी के द्वारा पकड़े गए थे और उनकी दुकान पर पिकेटिङ्ग जारी की गई। किन्तु खन्ना जी ने अपनी दुकान तुरन्त बन्द कर दी, और कॉङ्ग्रेस के अधिकारियों के पास जाकर अपने विदेशी वस्त्र की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगा देने के लिए प्रार्थना की। श्रीमती उमा नेहरू के सामने उन गाँठों पर मुहर लगा दी गई।

इलाहाबाद में स्वदेशी प्रदर्शिनी

इस वर्ष हिन्दू बोर्डिङ्ग हाउस इलाहाबाद के छात्रों ने कनवोकेशन सप्ताह में एक स्वदेशी प्रदर्शिनी की योजना की है। मुख्य प्रदर्शिनी बलरामपुर हॉल और उसके चारों ओर के बरामदों में की गई है। हॉल सुरुचिपूर्वक महात्मा गाँधी और अन्य नेताओं के चित्रों से सजाया गया है। प्रदर्शिनी में लगभग ७५ दुकानें हैं। मद्रास, बङ्गाल, बम्बई, राजपूताना और पञ्जाब के कारीगरों ने अपना माल इस प्रदर्शिनी में भेजा है। प्रायः सभी दुकानों की बिक्री अच्छी है। वाइजोई की काँच की चीज़ें, चाँदी की जड़ाऊ चीज़ें, काठ की तस्वीरें, दयालबाग़ मॉडल इण्डस्ट्रीज़ और सहारनपुर की लकड़ी की चीज़ें सब से ज़्यादा बिकती हैं। चर्ख़ा और बुनाई के प्रदर्शन का प्रबन्ध एक वृहत शामियाने में मुख्य प्रदर्शिनी के बाहर होस्टल के हॉकी वाले मैदान में किया गया है। यह प्रदर्शन विशेषतः म्युनिसिपल स्कूल के छात्रों द्वारा किया जा रहा है। नित्य सन्ध्या को ६ बजे सङ्गीत का प्रदर्शन भी होता है।

महिलाओं की गिरफ़्तारी

('भविष्य' के विशेष सम्वाददाता द्वारा)

इलाहाबाद, २६ नवम्बर

यहाँ के देश-सेविका सङ्घ की ओर से चौक के म्युनिसिपिल मार्केट में विदेशी कपड़े के एक मुसलमान व्यापारी अब्दुलरहीम की दुकान पर महिलाओं ने सवेरे से ही पिकेटिङ्ग प्रारम्भ कर दी थी। सङ्घ की अध्यक्षा श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित ने पिकेटिङ्ग के लिए दो-दो के जत्थे बनाए थे। पहला जत्था श्रीमती बिन्दो देवी और सरोज सुन्दरी मालवीय का था। १० बजे सवेरे पुलिस की लॉरी आई और उसमें ये दोनों महिलाएँ गिरफ़्तार कर बैठा ली गईं। उनकी गिरफ़्तारी का हाल सुनते ही छः अन्य महिलाएँ शहर के सुप्रसिद्ध रईस बच्चा जी की बहिन श्री० मनियादेवी, हरदेवी, सुभद्रा देवी, लक्ष्मी देवी, रामप्यारी देवी (१), रामप्यारी (२) गिरफ़्तार होने के लिए वहाँ आ गईं और पुलिस उन्हें लॉरी में बैठा कर जेल ले गई। जेल के फाटक पर से श्रीमती सुभद्रा कुमारी अधिक आयु की होने के कारण छोड़ दी गईं। अन्य महिलाओं के सब आभूषण—यहाँ तक कि चूड़ियाँ, छल्ले और अँगूठियाँ तक उतार ली गई थीं, जो श्रीमती पण्डित के बहुत समझाने-बुझाने से इन देवियों के सम्बन्धियों के जेल पहुँचने पर उन्हें दे दी गईं। जेल में श्रीमती उमा नेहरू और श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित भोजन लेकर गई थीं; वहाँ उन सबने एक साथ भोजन किया। जेल में सब महिलाएँ एक ही वार्ड में रक्खी गई हैं। शहर में पूर्ण हड़ताल रही।

इलाहाबाद युवक-समिति ने मिसेज़ मदन के आदेशानुसार दर्शकों को बहुत थोड़े दाम में जलपान का भी प्रबन्ध किया है। प्रदर्शिनी की प्रवेश-फ़ीस नाम मात्र है। और उसकी सब आय कॉङ्ग्रेस को दे दी जायगी।

प्रदर्शिनी को सफल बनाने में श्रीमती मोतीलाल नेहरू, श्रीमती कमला नेहरू, मिसेज़ पण्डित, मिसेज़ मदन, मिस कृष्णा नेहरू, श्रीयुत पुरुषोत्तम दास टण्डन पण्डित सुन्दरलाल, लाला मनमोहन दास, पण्डित निरञ्जनलाल भार्गव और अनेक गण्य-मान्य सज्जनों ने बहुत सहायता दी है।

—विदेशी वस्त्र के व्यापारी अब्दुल रहीम की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में २४वीं नवम्बर को चौक में चार गिरफ़्तारियाँ हुईं।

—स्थानीय माडर्न हाई स्कूल में पिकेटिङ्ग करने के सम्बन्ध में तीन और गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—ऑक्लेहम (अमेरिका) का १९वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ से ७ मील की दूरी पर एक गाँव में तूफ़ान आने के कारण २५ आदमी मर गए, १०० घायल हुए और २०० मकान गिर पड़े! तूफ़ान के साथ मूसलाधार वर्षा भी हुई।

—बम्बई का २०वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ के अफ़ग़ान राजदूत ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है जिससे मालूम हुआ है कि अफ़ग़ानिस्तान के ताश-क़न्द स्थित कौन्सल-जनरल हाशिम ख़ाँ, जो कुछ दिनों की छुट्टी के उपरान्त अपने हेड-क्वार्टर वापस लौट रहे थे, आशकबाद (रशियन तुर्किस्तान) के पास मार डाले गए।

इङ्गलैण्ड में बेकारी की वृद्धि

लन्दन 'टाइम्स' की रिपोर्ट के अनुसार २० अक्टूबर को इङ्गलैण्ड में जितने आदमी बेकारी के रजिस्टर में दर्ज थे, उनकी संख्या निम्न-प्रकार है :—

बिलकुल बेकार ...	... १५,१३,९१६
अस्थायी रूप से बेकार ...	... ५,८१,१३७
अस्थायी रूप से फुटकर काम करने वाले...	१,०४,२३५
कुल	... २१,९९,२८८

रिपोर्ट के अनुसार एक सप्ताह पहले १०,६१६ बेकार कम थे। पिछली साल की अपेक्षा बेकारों की संख्या इस वर्ष ९,८४,७९४ बढ़ गई है!

रेलगाड़ी नदी में गिर पड़ी

—नान्टीज (फ़्रान्स) का २२वीं नवम्बर का समाचार है कि 'लायर' नदी में बाढ़ आ जाने से औडन के पास की ज़मीन धँस जाने के कारण, पेरिस से आने वाली एक्सप्रेस गाड़ी अपनी पातों से अलग हो गई। जिससे एञ्जिन और दो डब्बे नदी में जा गिरे और ड्राईवर और एक स्टोकर की मृत्यु हो गई। आगे के डिब्बों में बैठे हुए अधिकांश यात्री घायल हो गए, टूटे डिब्बों में पिस गए और पानी में डूब गए। सिगनल का चौकीदार, जो ज़मीन धँसने के कारण रेलगाड़ी को चेतावनी देने के लिए उस ओर झपटा था। उसके नीचे दब कर टुकड़े-टुकड़े हो गया।

—सिटी मैजिस्ट्रेट मि० ग्रोस ने २१ वीं नवम्बर को इलाहाबाद की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० बैजनाथ कपूर, मिश्रा प्रिण्टिङ्ग वर्क्स के मालिक और मुद्रक पण्डित बलदेव प्रसाद मिश्र के मामले का फ़ैसला सुना दिया। श्री० कपूर को ६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा और श्री० मिश्र को ५००) जुर्माना, या डेढ़ माह की क़ैद की सज़ा दी है।

पण्डित मदनमोहन मालवीय नैनी सेन्ट्रल जेल में ज्वर से पीड़ित हैं। बुख़ार बहुत तेज़ रहता है। गर्मी १०४ डिग्री तक चढ़ जाती है। उनके पुत्र पण्डित गोविन्द मोहन मालवीय जो 'ए' क्लास के क़ैदी हैं, उन्ही के साथ हैं।

—१९ वीं नवम्बर की शाम को दारागञ्ज (इलाहाबाद) की शराब और नशीले पदार्थों की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण वहाँ चार गिरफ़्तारियाँ हुईं।

* * *

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदानन्द विरूपाक्ष]

कौंपर कॉन्फ्रेन्स का प्रथम पर्व, माशा अल्लाह, निर्विघ्न समाप्त हो गया। मङ्गलाचरण स्वयं बादशाह महोदय ने पाठ किया। इसके बाद महा-मन्त्री मि० मुग्धानल महोदय ने सरस सुन्दर शब्दों में बूढ़े भारत की तारीफ़ों के पुल बाँध डाले! भई, कुछ भी कहो, अपने राम को तो मुग्धानल दादा की सख़ावत पर बावन तोले पाव रत्ती विश्वास है। बेचारे ख़ान्दानी रईस हैं। तबीयत भी अच्छी पाई है। इससे मालूम होता है कि हमारे स्वयम्भू प्रतिनिधियों ने अच्छी साइत में यात्रा की है। झोली और सनहक दोनों के भरने की आशा है।

* * *

दादा मुग्धानल जी के बाद देशी नरेशों के बोलने की बारी आई। उस वक़्त जो दिलफ़रेब समा बँधी, उसका तो ज़िक्र ही फ़िज़ूल है। सबने बारी-बारी से 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' का मधुर राग अलापी। अफ़सोस की बात सिर्फ़ इतनी ही रह गई थी कि हमारे नरेशों को एक साथ ही नहीं बोलने दिया गया, इसलिए श्रोताओं को कलकत्ता के 'ज़ूलोजिकल गार्डन' का मज़ा तो नहीं मिला; परन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि राजाओं और उनके प्रतिनिधियों ने बोलने में बुलबुले-हज़ार-दास्ताँ को मात कर दिया! घण्टों तक बेचारे प्रजा-प्रेम और देश-भक्ति के मारे परेशान रहे।

* * *

कुत्तों के परम प्रेमी पटियाला के प्रभुवर जब बोलने लगे, तो मालूम हुआ, मानों कोई तूती चहक रही है। भाषण के प्रत्येक शब्द में—दुम से लेकर नाक तक—प्रजा-हित मानों ठूँस-ठूँस कर भरा था। महाराज काश्मीर ने तो देशभक्ति का वह स्रोत बहाया कि बस कुछ न पूछिए। अपने राम तो स्पीच पढ़ने के समय कुण्डी सोटा लेकर पीपल की ऊँची-ऊँची फुनगी पर आ बैठे थे और सोच रहे थे कि इस प्रबल बाढ़ में बेचारी काश्मीर की प्रजा की क्या दशा हुई होगी।

* * *

इसके बाद का शुभ समाचार यह है कि प्रेस-प्रतिनिधियों को कॉन्फ्रेन्स में न घुसने दिया जाय। ठीक ही है, इन नारद के वंशजों के पेट में कोई बात भी तो नहीं पचती। इसके साथ ही अगर कॉन्फ्रेन्स के प्रतिनिधियों के भाल पर काला 'दिठौना' और गले में कालभैरव का काला गण्डा बाँध दिया जाता तो और भी अच्छा होता; नज़र लग जाने के भय से निश्चिन्तता हो जाती।

* * *

सुनते हैं, शास्त्रों में गुप्तदान का बड़ा महत्व है। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र ने भी अपने मित्र सुदामा को वहाँ तो कुछ नहीं दिया; मगर विश्वकर्मा को पहले ही भेज कर, सुदामा के लिए एक धन-धान्यपूर्ण बड़ा सा महल बनवा दिया था। रङ्ग-ढङ्ग से मालूम होता है कि दादा मुग्धानल भी ऐसा ही कुछ करेंगे। या तो कान में धीरे से कुछ कह कर प्रतिनिधियों को डोमिनियन स्टेट थमा देंगे या भगवान श्रीकृष्ण की तरह उनके वापस लौटने से पहले ही भारत में दूध-दही की नदी बहा देंगे।

* * *

मगर पाँचों घी में रहेंगी हमारे लीडरुल-इस्लाम जनाब जिन्नाह बहादुर की। भारत की सुशीला सरकार ने भी सिफ़ारिश की है कि चाहे सागर मथा जाय या नहीं, मगर जिन्ना साहब को चौदह रत्न अवश्य मिल जायँ—सिन्ध अलग कर दिया और पञ्जाब तथा बङ्गाल की कौन्सिलों में दाढ़ी-राज स्थापित कर दिया जाय। इसके साथ ही अगर सीमा-प्रान्त की बादशाहत दादा तुरङ्गज़ई को दे दी जाए तो क्या कहना!

* * *

बात असल यह है कि जिन्ना साहब को 'डोमिनियन स्टेटस' का 'टेस्ट' तभी मिलेगा, जब दाढ़ी-चोटी के दरमियान एक गहरी खाई खुद जाएगी। इसके सिवा अगर 'दीन इस्लाम' के लिए अभी से रास्ता साफ़ नहीं रहेगा, तो अगली पीढ़ी वाले क्या कहेंगे? आख़िर दुनिया अपने बाल-बच्चों के लिए ही तो सब कुछ करती है, या अपने लिए? फलतः इस्लाम के इतिहास में जिन्ना बहादुर भी अमर बन कर ही दम लेंगे।

* * *

सुनते हैं, लॉर्ड इरविन महोदय की सरकार ने बूढ़े भारत को निहाल करने के लिए जो 'ख़रीता' कौंपर कॉन्फ्रेन्स वालों को भेजा है, उसमें सदाशयता, उदारता और दरिया-दिली कूट-कूट कर भर दी गई है। पौन दर्जन ऑर्डिनेन्स पास करने के बाद भी लाट साहब में इतनी उदारता और सहृदयता मौजूद थी, यही आश्चर्य है।

* * *

लाट साहब ने अपने ख़रीते में भारत से बर्मा को अलग कर देने की ज़ोरदार सिफ़ारिश की है। यही शुभ सम्मति हिज़ होलीनेस की भी है। क्योंकि अगर ख़ुदा-नाख़्वास्ता इस मुल्क के कालों ने भी बर्तानिया के दामे-उल्फ़त से किनाराकशी कर ली तो बेचारे गोरों के लिए 'तिल्ली फोड़ने का' कोई स्थान ही नहीं रह जायगा। इसलिए बर्मा को भारत से अलग रखना ही उचित है।

* * *

कुछ समझदारों की राय है कि लन्दन के कौंपर-कॉन्फ्रेन्स में केवल कौंपर ही मिलेगी। सुशीला सरकार का ख़रीता भी केवल लॉर्ड इरविन के भारत-हितैषणा का परिचय मात्र देकर ही रह जायगा। क्योंकि गोरे महाप्रभुओं के माया-जाल में फँस कर स्वयंभू प्रतिनिधियों ने सब से पहले दाढ़ी-चोटी में गँठ-बन्धन कर लेना ही उचित समझा है, जो बालू से तेल निकालने की चेष्टा की तरह असम्भव है।

* * *

मगर भई, समझदारों की बातें समझदारों के लिए हैं। अपने राम तो केवल इसीसे प्रसन्न हैं, कि हमारे देश के कुछ 'देहि पदपल्लव मुदारम्' के पक्षपातियों को बिना पैसा-कौड़ी ख़र्च किए ही श्री० मुग्धानल देव के दर्शन मिल गए। बला से भारत में 'खोपड़ी-मेध' आरम्भ है, पचास हज़ार से अधिक काले जेलों में सड़ रहे हैं, स्त्रियाँ भी लाञ्छित और अपमानित हो रही हैं। शीत काल में लन्दन की सैर, गरमागरम मटन-चाप और 'करी' के मज़े; कहीं हवाई प्रदर्शन के लुत्फ़ और कहीं खेल-तमाशों के मज़े। इसके बाद सेण्ट-जेम्स भवन में धुआँधार स्पीचें झाड़ने का शुभ अवसर! "तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अङ्ग; तुले न ताहि सकल मिलि जो सुख लौ सत्सङ्ग!"

* * *

इसके सिवा इतिहास में भी जयकर, सप्रू, ताम्बे, शास्त्री, और मुञ्जे के नाम अमर रहेंगे। आने वाली पीढ़ी के लोग इतिहास के पन्नों में जब स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ, यह पढ़ेंगे कि जिस समय संसार का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष बन्दी-गृह में बन्द था, भारत-माता के ताज का जवाहर नौकरशाही के दामन में चमक रहा था और पचास हज़ार 'सर फ़रोशी की तमन्ना' वाले पागल 'बाज़ुए क़ातिल' की ताक़त की जाँच-पड़ताल में लगे थे, तो भारत के कुछ 'भुईंफोड़' भाग्य-विधातागण लन्दन में गुलछर्रे उड़ा रहे थे, उस समय आनन्द से उनका हृदय बल्लियों उछल पड़ेगा।

* * *

अल्लाह के फ़ज़ल से मुज़फ़्फ़रपुर में रामराज्य स्थापित हो गया! 'जवाहिर-दिवस' के उपलक्ष में जिन लोगों ने प्रदर्शन किया था, उन पर सात गोलियाँ छोड़ी गईं, जिससे तीन घायल हो गए। बस, सारा बखेड़ा पाक हो गया। अब बिहार के श्रीमान लाट महोदय को चाहिए कि निश्चिन्ततापूर्वक लम्बी तान दें। क्योंकि इससे सारी बिहार की जनता परम राजभक्त हो गई होगी और ब्रिटिश साम्राज्य की जय-जयकार से सारा गगन-मण्डल गूँज उठेगा।

* * *

सच-झूठ की तो राम जानें, मगर सुनते हैं, श्रीमती यू० पी० सरकार भी निश्चिन्त नहीं हैं। देहातियों के दिलों पर राजभक्ति का सिक्का जमाने के लिए पलटनों का प्रदर्शन हो रहा है और ग़रीबों के झोपड़ों पर हवाई जहाज़ उड़ाए जा रहे हैं। सम्भवतः ये सदनुष्ठान राउण्ड-टेबिल कॉन्फ्रेन्स को सफल बनाने के लिए किए जा रहे हैं। आख़िर, लोगों को यह मालूम कैसे होगा कि हमारी सरकार के पास फ़ौज और हवाई जहाज़ भी हैं?

* * *

गत 'जवाहर-दिवस' को हिज़ होलीनेस को पितर-पख का मज़ा मिल गया। सारे देश की पुलिस ने दिल खोल कर काली खोपड़ियों का श्राद्ध किया। कहीं-कहीं तो न्याय, सभ्यता और मनुष्यत्व का ऐसा सम्मिलित श्राद्ध हुआ कि देख कर तबीयत ख़ुश हो गई! कहीं गोलियों की बौछार और कहीं लाठियों की वर्षा! गिरफ़्तारियों की भी ख़ासी धूम रही! चारों ओर पुलिस का अदम्य उत्साह परिलक्षित हो रहा था। मानो श्रद्धालु सन्तान ज़बरदस्ती पकड़ कर पितरों को पिण्डदान कर रही थी।

* * *

गत सप्ताह के 'साप्ताहिक शासन रिपोर्ट' में श्रीमती भारत-सरकार ने विलायत वालों को बताया है कि भारत की राजनीतिक स्थिति क्रमशः उन्नति-पथ की ओर दौड़ रही है और स्वाधीनता आन्दोलन बिना ज़हर दिए ही मर रहा है! बात सवा सोलह आने सत्य है और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है 'जवाहर-दिवस' का उपर्युक्त श्राद्ध, बारदोली वालों की हिजरत, स्वाधीनता के लिए भारत-वासियों की जेल-यात्रा! यही तो राजनीतिक उन्नति और स्वाधीनता-आन्दोलन के दबने के लक्षण हैं! अगर यही दशा रही तो कुछ दिन में सारा देश एक साथ ही उन्नति के 'मौण्ट एवरेस्ट' पर चढ़ जाएगा।

* * *

यही नहीं, भारत की राजनीतिक उन्नति तथा स्वाधीनता-आन्दोलन के दब कर मर-मिटने का एक और भी प्रबल प्रमाण अपने राम ने ढूँढ निकाला है। ज़रा मनोयोग के साथ उसे भी सुन लीजिएगा तो मालूम हो जायगा,

(शेष मैटर १२वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

कॉन्फ़्रेन्सों की भयङ्कर महामारी

समय, धन और शक्ति का घोर अपव्यय

लन्दन में महत्वपूर्ण भारतीय समस्याओं की छीछालेदर

[मिस विनेथ फ़ोडेन, "अमृत बाज़ार पत्रिका" की लन्दन-स्थित विशेष सम्वाददाता]

—लन्दन, अक्टूबर २४

गत कुछ महीनों से यहाँ कॉन्फ़्रेन्सों की ख़ासी महामारी-सी होती आई है और हो रही है। कहने को मैं इन कुछ कॉन्फ़्रेन्सों में जाती हूँ, पर इनसे क्या वास्तविक लाभ होता है। सच कहती हूँ, आज तक नहीं समझ सकी।

मेरा विश्वास है, इन कॉन्फ़्रेन्सों के विधाता अपनी-अपनी समस्याएँ सुलझाने की चेष्टा ज़रूर करते हैं। पर गड़बड़ तो यह है कि आगत-सज्जनों में सच्ची लगन से काम करने वालों की संख्या एकदम नहीं के बराबर होती है। वे इन कॉन्फ़्रेन्सों में इसलिए आते हैं कि इससे बेहतर उन्हें कोई काम नहीं नज़र आता और यहाँ उन्हें समय काटने के लिए अच्छी सामग्री मिल जाती है!

कॉन्फ़्रेन्स एकदम बेकार नहीं होते। पर वास्तविक काम करने के बजाय, केवल कॉन्फ़्रेन्स किए जायँ—यह सिद्धान्त सर्वथा निस्सार है। विचारपूर्वक सच्ची लगन से वास्तविक काम करना छोड़ कर केवल गप्पें हाँकना कहीं सहज है। सभाओं में व्याख्याता अपने विचार बड़े भावावेश के साथ ज़ोरदार शब्दों में पेश करते हैं, तो भी दुर्भाग्यवश सुनने वालों के कानों में उनकी बातें बहुत दिनों तक नहीं टिकतीं।

सिर्फ़ जाँचने के लिए, किसी सभा से लौट आने पर, कुछ दिनों के बाद, मैंने कितनों से, जो कि मेरे साथ सभा में मौजूद थे, कुछ बातें पूछी हैं। हर बार यही उत्तर मिला कि अमुक सभा में अमुक व्याख्याता ने बड़ा सुन्दर व्याख्यान दिया था। यही उन्हें याद है और कुछ नहीं। हाय रे दुर्भाग्य!

इन कॉन्फ़्रेन्सों का एक मात्र फल यही होता है। बोलने वाले भौंरों की गुनगुनाहट 'पेशेवर प्रतिनिधियों' के कानों से बाहर होकर जनता में कितनी दूर तक पहुँचती है—कौन जानता है! समाचार-पत्रों के कॉलम के कॉलम रङ्गे जाते हैं, तथापि वास्तविक ध्येय को कुछ सहायता नहीं मिलती, बात की तह तक तो कोई पहुँचता ही नहीं!

जान पड़ता है, पहले कॉन्फ़्रेन्स बैठा कर विचार किए बिना इन दिनों शायद संसार का कोई काम ही नहीं हो सकता! पर सिर्फ़ थोड़ी सी गप्पों के लिए समय और धन का कितना अपव्यय होता है?

उदाहरण के लिए भारतीय समस्याओं पर होने वाले कॉन्फ़्रेन्सों ही को लीजिए। सुनने वालों में से ७५ प्रतिशत, कम से कम संख्या भारतीयों की रहती है। सच पूछिए तो भारत से कुछ कहने के लिए तो इन कॉन्फ़्रेन्सों की कोई आवश्यकता ही नहीं। समय, शक्ति और धन का कितना घोर अपव्यय है! इन सभाओं में, जिनका उद्देश्य वास्तविक काम करना छोड़ कर केवल गप-शप करना होता है और जहाँ सभी एक-दूसरे की प्रशंसा करने में व्यस्त रहते हैं, कुछ दिन पहले मैंने न जाने की क़सम ली थी। पर कुछ दिन बाद नारि-स्वभावानुकूल, मैंने अपना विचार बदल दिया और भारतीय समस्याओं पर होने वाले एक कॉन्फ़्रेन्स में गई, जो १८ अक्टूबर को, इण्डिपेण्डेण्ट लेबर पार्टी की ओर से 'मेमोरियल हॉल' में हुई थी।

अपनी क़सम तोड़ने का या डॉक्टर ने जो बाहर जाने को मना किया था, उसकी इस आज्ञा का उल्लङ्घन करने का मुझे पछतावा नहीं है। पर जो दुखप्रद दृश्य देखने में वहाँ आए, वे मेरे स्मृति-पटल पर सदा के लिए अपना अमर-चिन्ह छोड़ गए हैं। इस सम्बन्ध में विशेष प्रकाश आगे डालूँगी।

मि० रेगिनॉल्ड रेनॉल्ड्स

मि० रेगिनॉल्ड रेनॉल्ड्स के व्याख्यान कई बार सुन चुकी थी। पर अबकी आश्चर्यान्वित हो गई विश्वास नहीं हुआ कि यह वही शान्त और नम्र नवयुवक रेनॉल्ड्स हैं। जेलों में बन्द भारतीय राजनैतिक क़ैदियों की दुर्दशा से प्रभावान्वित होकर क्रोध तथा निराशा की एक नई जागृति इस सुन्दर आत्मा में घुल-मिल गई है। उन्होंने मेरठ में राज-बन्दियों के विद्रोह की बातें बतलाईं। उन नवयुवकों की भी चर्चा की जो राज-विद्रोह के अपराध में मार्च १९२९ ई० से क़ैद में सड़ रहे हैं और इस क़ैद की सब से पहली ख़बर लन्दन में तार द्वारा ८ सितम्बर १९३० को मिली!! राजनैतिक बन्दियों के विद्रोह के सम्बन्ध में पूछ-ताछ के लिए कितनी चिट्ठियाँ भेजी गईं, कितने मेमोरियल भेजे गए, पर कुछ उत्तर न मिला। इण्डिया ऑफ़िस ने इस विषय में चुप्पी साध लेना ही उचित समझा! रेनॉल्ड्स के मेमोरियल में राज-बन्दियों की दुर्दशा पर पूरा प्रकाश डाला गया है। मि० रेनॉल्ड्स ने कहा कि भारत की राजनैतिक आकांक्षाओं की पूर्ति की सहायता के लिए उन्होंने अपना सारा समय दिया है और देंगे। उनका व्याख्यान बड़ा ही सुन्दर था। क्रोधावेश में ज्यों-ज्यों उन्होंने अपनी आवाज़ बुलन्द की, सच कहती हूँ, त्यों-त्यों अनुभूतियों का एक तूफ़ान सा हृदय में उठता गया।

मि० फ़ेनर ब्रॉकवे

मि० फ़ेनर ने उसके बाद दिल दहलाने वाली बातें सुनाईं। पहले बम्बई के कॉङ्ग्रेस ऑफ़िसों की तलाशी की चर्चा उन्होंने की और बतलाया कि प्रेसों की निरन्तर तलाशियाँ जारी रहने पर भी कॉङ्ग्रेस-बुलेटिन निकलते ही गए। ऐसी अवस्था में केवल एक बम्बई में शायद हज़ारों प्रेस होंगे, तभी तो ऐसा सम्भव है। कॉङ्ग्रेस नेताओं को 'उपद्रवी' की जो उपाधि इन दिनों सरकार की ओर से दी जाती है, इसका भी ज़िक्र उन्होंने किया। "उपद्रवी तो वे हैं ही"—उन्होंने कुछ गर्म होकर कहा—"इसके सिवा वे हो ही क्या सकते हैं।"

आगे उन्होंने बतलाया कि छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ भी, केवल राष्ट्रीय गीत गाने के अपराध में क़ैदख़ानों में बन्द कर दी जाती हैं। "राजनैतिक अपराध" कहलाने वाली चीज़ के कारण बेतों की मार की पाशविक सज़ा की भी बात चली थी। सरकार की इस निर्दय प्रवृत्ति की उन्होंने घोर निन्दा की।

इन बातों को सुन कर औरों पर क्या प्रभाव पड़ा, मैं कह नहीं सकती; पर मुझे तो क्षोभ के आँसू रोकने तथा हृदय के उठते हुए भावों को होठ दाब चुपचाप पी जाने में बड़ी कठिनाई हुई। बच्चों पर भी जो निर्दय जाति इस प्रकार की क्रूर सज़ाएँ काम में लाती है, मैं भी उसी जाति की एक सदस्या हूँ—यह सोच कर तो मैं पानी-पानी हो गई! मुझे इतना क्षोभ हुआ—इतनी ग्लानि हुई!! मेरा विश्वास है कि एक मैं ही नहीं थी, जिसके हृदय में ऐसे भाव पैदा हुए, प्रत्युत और बहुत से ऐसे सज्जन वहाँ होंगे।

श्रीमती फ़रुक़ी

दूसरा व्याख्यान एक महिला का हुआ। मालूम होता था कि गत वक्ता की बातों ने उन पर कुछ प्रभाव नहीं डाला। मुस्कुराती हुई वे उठ खड़ी हुईं और थोड़ी सी दिल्लगी उन्होंने पहले की। व्याख्यान में उन्होंने कहा कि बहुत से विद्वान अङ्गरेज़ों ने भारत के लिए बहुत कुछ किया है। भारतीय माँगों की न्याय के लिए ब्रिटिश जाति से उन्होंने अपील की। उनका विचार था कि भारत के लिए ब्रिटेन के साथ-साथ, हाथ में हाथ मिलाए काम करना ज़्यादा उचित है। "भारत साम्राज्य के अन्य उपनिवेशों की समता क्यों नहीं चाहे"—उन्होंने कहा।

'उपनिवेश' शब्द सुन कर श्री० सकलतवाला (पार्लामेण्ट के भूतपूर्व सदस्य) जो मेरे पीछे ही बैठे थे, उठ खड़े हुए।

"औपनिवेशिक स्वराज्य की ऐसी-तैसी!! औपनिवेशिक स्वराज्य को भारत की माँग बतलाना, भारतीय भावनाओं पर अत्याचार करना है, और अन्याय करना है उन ग़रीबों पर, जो आज जेलों में सड़ रहे हैं!"—वे गरज उठे। पूर्वोक्त महिला आँखें चढ़ा कर उतनी ही सरगरमी से बोलीं—"औपनिवेशिक स्वराज्य को आप जितना चाहें, कोसें। पर देशवासियों की इस चिल्लाहट से मैं चुप नहीं होने की। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी राय प्रकट करने की पूर्ण स्वच्छन्दता है।"

"राष्ट्रीय विश्वासघात!" सकलतवाला ने ज़ोर से कहा।

"यदि आप ऐसा करेंगे", रूखा प्रत्युत्तर मिला—"यदि आप ऐसा करेंगे तो स्वयं अपने ही ध्येय की खिल्ली उड़वाएँगे। संसार हँसेगा और महिलाएँ संग्राम में भाग नहीं ले सकेंगी।"

अब मैं नहीं समझ सकी—बीच ही में कूद पड़ी।

"चाहे जैसे भी कोई चिढ़ाए, सच्चे देश-सेवक मैदान नहीं छोड़ते।"—मैंने कहा। क्योंकि उपरोक्त महिला की बातें मेरे विचार में भारत की उन वीराङ्गनाओं के यश को कलङ्कित करती थीं, जो आज अपने देश में सिर्फ़ रङ्ग-मञ्च पर भाषण देने से बढ़ कर अन्य गुरुतर कार्य कर रही हैं। थोड़ी देर तक चिढ़ाए जाने पर वे मैदान छोड़ देंगी—इसका मैं विचार तक न कर सकी।

श्रीमती फ़रुक़ी तथा श्री० सकलतवाला की उपरोक्त बहस मेरे विचार में युक्ति-सङ्गत न थी। जहाँ तक मैं समझती हूँ, श्रीमती जी को चुप लगा जाना चाहिए था, सभापति स्वयं व्याख्यान में बाधा डालने वालों से निपट लेते।

(शेष मैटर १२वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

किसानों की भीषण प्रतिज्ञा

"हम अपनी जायदाद ही नहीं, प्राण तक निछावर कर देंगे, पर बिना स्वराज्य लिए घर वापस नहीं लौटेंगे"

सारे गाँव स्मशान बन रहे हैं :: कुत्ते तक गाँव छोड़ कर भाग गए

जाँच-कमिटी की हृदय द्रावक रिपोर्ट

"जब तक हमारे साथ न्याय न होगा हम इस अत्याचारी गवर्न्मेंन्ट को लगान न देंगे"

बम्बई के जवाहरात के व्यापारियों की कमिटी ने गुजरात के किसानों की सच्ची दशा की जाँच करने के लिए जो प्रतिनिधि नियुक्त किए थे, उन्होंने अपने कैरा, भड़ोंच और सूरत ज़िलों के भ्रमण की रिपोर्ट प्रकाशित की है :—

"हम ४ थी तारीख़ को आनन्द आए और वहाँ से भद्रान जाते समय बसन गाँव का निरीक्षण करने गए। प्रायः पूरा गाँव सुनसान मिला। किसानों ने गाँव को ख़ाली कर दिया था और वे गायकवाड़ स्टेट की सीमा में चले गए थे। जब स्टेट की सीमा में हम उनकी झोपड़ियों में पहुँचे और उनसे पूछा कि तुम यहाँ अपना घर-बार, आराम और जायदाद छोड़ कर झोपड़ियों में रह कर मुसीबतें उठाने क्यों आए हो? तब उन्होंने हमें उत्तर दिया कि "जब तक ब्रिटिश गवर्नमेण्ट हमारी शिकायतें न्यायपूर्वक दूर न कर देगी, तब तक हम इस अत्याचारी गवर्नमेण्ट को किसी प्रकार का लगान न देंगे और इसीलिए हम अपने प्यारे घरों को तिलाञ्जलि दे, अपनी रक्षा के लिए इस रियासत में चले आए हैं।" जब हमने उनसे यह पूछा कि क्या तुम लोग जङ्गली जीवन की हर एक मुसीबत झेलने के लिए तैयार हो, तब उन्होंने कहा कि "जिस ईश्वर ने हमें अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा की इतनी शक्ति दी है, जिसने आप जैसे दूत भेज दिए हैं, वह हमें विश्वास है, दुःखी न रक्खेगा। वह हमें इन मुसीबतों को आनन्द में परिव र्तित करने की शक्ति देगा और आपको हमारी सहायता के लिए बाध्य करेगा।"

"वहाँ से हम लोग वेहद्रन गए और वहाँ के किसानों को उसी परिस्थिति में पाया। जब उनसे हम लोगों ने उसी प्रकार के प्रश्न किए तब उन्होंने उत्तर में कहा कि "हम यह नहीं जानते कि कब घर लौटेंगे। क्या आप यह नहीं जानते कि हमारे गाँव में, हमारे बीच में प्यारे सरदार पटेल को गिरफ़्तार कर गवर्नमेण्ट ने हमारा भारी अपमान किया है। आप इस बात का अनुमान नहीं कर सकते कि हमारे साथ गवर्नमेण्ट ने कितना अपमान किया है। हम दुनिया को यह दिखा देना चाहते हैं कि हम अपने सर्दार के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर सकते हैं।" इसके बाद हम लोगों ने बोदल, दावला, अँकलव, बोचासन, सुनाव, पिपलान, सपियापारू और इशरव के गाँवों के लोगों की झोपड़ियों का भी निरीक्षण किया, जो अपने गाँवों को उजाड़ कर जङ्गल में रह रहे थे। इन झोपड़ियों में त्याग और बलिदान के सुख और प्रसन्नता की लहर बह रही थी। बोदल और दावला के लोगों ने हमसे कहा कि "वहाँ कुछ दिन पहिले हीरा बैन नामक स्त्री को, जो अपनी गोदी में एक छोटा सा बच्चा लिए थी, पुलिस ने लाठियों से, केवल इसलिए पीटा, कि वह अपने पति का पता न जानने के कारण पुलिस को न बतला सकी।" इसके बाद हमने एक सज्जन किसान से कहा—"आप अपना लगान देकर इन मुसीबतों से पिण्ड छुड़ाने के लिए अपने घर वापस क्यों नहीं लौट जाते।" उसने साहसपूर्वक उत्तर दिया कि "जब तक महात्मा गाँधी या सर्दार पटेल हमें आज्ञा नहीं देंगे, तब तक हम अपने गाँवों को नहीं लौटेंगे।" जब उनसे यह पूछा गया कि यदि महात्मा गाँधी बहुत दिनों तक जेल से न छोड़े गए तो आप क्या करेंगे। उन्होंने उत्तर दिया कि "हम अपने प्राणों की आहुति दे देंगे और अपने बच्चों को भी यही सलाह देंगे।"

अटल निश्चय

"बोचासन गाँव के श्री० मङ्गल जी शिवभाई और शिवभाई पुञ्जाभाई के २०००) के दो एञ्जिन क़ुर्क़ कर क्रमशः १६) और ६४) में बेच दिए गए थे। हमने उनसे कहा कि "क्या अपनी जायदाद इस तरह बहा देना मूर्खता नहीं है, जब आप कुछ रुपया लगान का देकर उसकी रक्षा कर सकते थे?" उन्होंने उत्तर दिया—"जब हम अपना सर्वस्व स्वराज्य के लिए निछावर करने के लिए तैयार हैं, तब आप हमें मूर्ख किस प्रकार पुकारते हैं। इस समय आप चाहे जो कहें, परन्तु जब हम भारत के लिए स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तब तुम्हें उसका बदला देना पड़ेगा।"

बुढ़ियों की भीषण प्रतिज्ञा

"यहाँ से हमने जम्बूसर ज़िले में दौरा किया। इस ज़िले के १६ गाँवों ने अपने घर छोड़ कर बड़ौदा रियासत की शरण ली है। आँखों से हमने एक ऐसी बुढ़िया को देखा जो गाँव छोड़ने के लिए आवश्यक चीज़ें निकाल रही थी। जब हमने उससे कहा कि हम यह नहीं जानते थे कि जम्बूसर ज़िले ने भी लगान न देने की प्रतिज्ञा कर ली है, तब उसने उत्तर दिया कि "भारत ने जिस भीषण कार्य का निश्चय किया है उसके आगे हमारा यह कार्य कुछ भी नहीं है। जम्बूसर का एक लड़का जो जेल भेजा गया था, वहीं मर गया है; उसकी अपेक्षा हमारा बलिदान बिलकुल नगण्य है।" जोशीपुरा में भी हम एक बुढ़िया से मिले थे; उसने हमसे कहा कि "इस गवर्नमेण्ट की राजनीति का दिवाला निकल गया है, नहीं तो वह भड़ोंच के सुप्रसिद्ध वकील शिवशङ्कर भाई की जायदाद ज़ब्त न कर लेती।" हमने उससे कहा कि "यदि तुम लगान दे दोगी, तो तुम्हारी जायदाद ज़ब्त न होगी।" उसने उत्तर दिया—"जायदाद ज़ब्त होने की कौन परवाह करता है। मैंने अपना पुत्र खो दिया है, अब मैं समझ लूँगी कि मेरी ज़मीन उसी के साथ चली गई। मुझे मेरी ज़मीन पुत्र से प्यारी नहीं है।" इसके बाद हमने एक ६ वर्ष के लड़के से पूछा—"क्या तुम स्कूल जाते हो?" उस बच्चे ने उत्तर दिया—"आजकल स्कूल की परवाह कौन करता है। हम चर्खे पर सूत निकालना जानते हैं और यही हमारा सच्चा आनन्द है।" जम्बूसर ज़िले के लोग इतने होशियार नहीं हैं, जितने कैरा और बारदोली ज़िले के हैं। महात्मा गाँधी और सर्दार पटेल में उनका पूर्ण विश्वास है, परन्तु उनकी आर्थिक परिस्थिति सन्तोषजनक नहीं है।

जलालपुर में

"इसके बाद हम नवसारी और जलालपुर देखने नवसारी गए। यहाँ के सब गाँव बिलकुल उजड़ गए हैं! गाँवों में कुत्ते तक नहीं मिलते। जनहीन बस्ती में अपना आधार न देख कुत्ते भी गाँव छोड़ कर चले गए हैं!! जब हम सातिम गाँव की झोपड़ियों के पास गए, तब एक स्त्री ने कहा "हमें उसी समय सन्तोष होगा, जब स्वराज्य मिल जायगा, नहीं तो इस गुलामी में रहने से तो मर जाना अच्छा है।" यहाँ के गाँवों में पुलिस ने बड़े-बड़े अत्याचार किए हैं। पुलिस गाँवों में जहाँ-तहाँ नियुक्त कर दी गई है और जो अभी तक गाँवों में हैं, वे बिलकुल सुरक्षित नहीं हैं। जानवर और जायदादें बहुत बड़ी तादाद में ज़ब्त की गई हैं। ये सब अत्याचार होने पर भी गाँव वालों ने लगान न देने का निश्चय कर लिया है। कहा जाता है कि वैदेही में ८ वीं नवम्बर को अर्ध रात्रि को वैदेही आश्रम के पास की झोंपड़ी में एक कॉन्स्टेबिल घुस गया और उसने एक स्त्री को, जो अपने दो बच्चों के साथ सो रही थी—और जिसका पति भी थोड़ी दूरी पर सो रहा था—जगा कर धमकी दी। चिल्लाहट सुन कर पड़ोसी सहायता के लिए आए, परन्तु दो कॉन्स्टेबिलों ने आश्रम से निकल कर उन पर आक्रमण किया। बाद में मालूम हुआ कि वहाँ के फ़ौजदार ने उनका तबादला कर दिया है।

"वसुधैव कुटुम्बकम्"

"२०० झोपड़ियों का गाँव ऐसा मालूम होता है, जैसे एक ही कुटुम्ब हो। ऐक्य ही शक्ति है, और यही कारण है कि ये लोग ऐसी ही परिस्थिति में अहिंसात्मक और शान्ति रहमय सकते हैं। वे यह अच्छी तरह जानते हैं, कि लगानबन्दी के आन्दोलन को दबाने के लिए गवर्नमेण्ट ने अभी तक क्या किया है और आगे वह क्या करेगी; परन्तु जो कुछ हमने देखा है, उसके आधार पर यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ये वीर उस समय तक रण-क्षेत्र में डटे रहेंगे, जब तक उनकी प्रतिज्ञा पूरी नहीं होगी।"

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

२७ नवम्बर, सन् १९३०

एक आवश्यक निवेदन

पाठकों को शायद यह बतलाना न होगा कि 'भविष्य' का प्रकाशन एक ऐसी सङ्कटपूर्ण एवं विकट परिस्थिति में शुरू किया गया था, जब कि देश का राजनैतिक वातावरण एक बार ही उसके विरुद्ध था। जिन-जिन आपत्तियों और अत्याचारों का उसे अब तक शिकार होना पड़ा है, पाठकों से यह बात भी छिपी न होनी चाहिए, अस्तु।

यह सत्य है कि 'प्रेस-ऑर्डिनेन्स' २६ अक्टूबर को समाप्त हो गया, किन्तु अभी उसके भाई-बन्धु आठ दूसरे ऑर्डिनेन्स हमारे सामने हैं। आजकल का शासन इतना निरङ्कुश है कि उसे देखते हुए हम अपने को किसी भी समय सुरक्षित नहीं समझ सकते। अतएव जब तक परिस्थिति से मुक़ाबला करने के लिए हम तैयार न हो लें, अपने मनोभावों को निर्भीकतापूर्वक व्यक्त कर, हम आपत्ति मोल लेने के पक्ष में नहीं हैं। इसका परिणाम यह होगा कि जो थोड़ी-बहुत सेवा इस समय 'चाँद' और "भविष्य" द्वारा हो रही है, उसमें भयङ्कर बाधा उपस्थित हो जायगी ! हम सचाई और वास्तविकता की ओर से अपनी दृष्टि फेर कर केवल काग़ज़ काला करने की रस्म अदा करना नहीं चाहते ; अतएव कुछ दिनों तक हमने 'सम्पादकीय विचार' शीर्षक स्तम्भ को जान-बूझ कर सूना रखने का निश्चय किया है।

परिस्थिति के अनुकूल हम अधिक से अधिक सुदृढ़ प्रबन्ध करने की चेष्टा कर रहे हैं, जैसे ही हमारी इच्छानुकूल प्रबन्ध हुआ, उसी क्षण से हम अपने निर्भीक विचार पाठकों के सामने उपस्थित करने लगेंगे—फिर उसका परिणाम चाहे जो भी हो। कुछ दिनों के लिए पाठक हमें क्षमा करें !

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

—रामरखसिंह सहगल

* * *

(९वें पृष्ठ का शेषांश)

श्रीमती नौकरशाही केवल कालों को ही चकमा नहीं देतीं; वरन गोरों को भी चूना लगाने में कमाल करती हैं।

* * *

सुना आपने ? गत १९२९ के सितम्बर में ४३६ लाख के विलायती कपड़े इस देश में आए थे, और सन् १९३० के सितम्बर में आए हैं; ११७ लाख के ! और सुनिए—१९२९ के सितम्बर में सिगरेट आया था १३ लाख का और इस साल के सितम्बर में आया है, केवल दो लाख का ! गत वर्ष के सितम्बर की अपेक्षा इस साल के सितम्बर में वाणिज्य-शुल्क भी ७४ लाख कम आया है ! फलतः अगर आप ईमानदार हैं तो आपको स्वीकार कर लेना होगा कि सत्यवादिता में हमारी सरकार ने हरिश्चन्द्र के साथ ही राजा युधिष्ठिर को भी पछाड़ डाला है !

* * *

जिस देश में छः महीने के अन्दर नौ ऑर्डिनेन्स पास होते हैं, उस देश की राजनीतिक परिस्थिति अगर उन्नति-पथ की ओर न दौड़ पड़े तो हरामज़ादी को डूब मरना चाहिए। आख़िर कमबख़्त क्या उन्नति-पथ की ओर घोड़े-हाथी पर चढ़ जाएगी ? हमारी तो राय है कि लाट साहब बहादुर लगे हाथ पाव दर्जन और ऑर्डिनेन्स पास करके इसे उन्नति के हफ़्त अक़लीम पर ही चढ़ा दें, ताकि सारा बखेड़ा ही तय हो जाए। स्वयं भी भारत के इतिहास में अमर हो जायँ और विलायत वालों को भी निश्चिन्ततापूर्वक 'बॉल डान्स' के मज़े लूटने का अवसर मिले; न राउण्डटेबिल की ज़रूरत हो न 'लॉग' की !

(१०वें पृष्ठ का शेषांश)

जो कुछ हो, भारतीय हित के विपक्षी समाचार-पत्रों ने इस घटना का सप्रेम स्वागत किया। उनके पुराने विपक्षी श्री० सकलातवाला को जो उनकी एक अपनी ही देशवासिनी से फटकार मिली, इससे उन समाचार-पत्रों को बड़ी प्रसन्नता हुई। इस घटना का पूरा-पूरा विवरण उन्होंने छापा, पर मि० रेनॉल्ड्स के प्रभावोत्पादक सुन्दर व्याख्यान को कोई स्थान नहीं दिया। उनकी राय में शायद उसका कोई मूल्य ही न रहा हो !

जैसा कि लिख चुकी हूँ, भारतीय समस्याओं पर यहाँ के प्रभावशाली दैनिकों में बहुत थोड़ा या एकदम नहीं प्रकाश डाला जाता है। डाला भी जाता है तो केवल गुल-गपाड़े वाली घटनाओं ही पर। यदि उपरोक्त गुल-गपाड़ा न होता तो शायद उन पत्रों के कॉलम में इस घटना का भी कहीं पता न होता। मैं अब भी सोचती हूँ कि कॉन्फ़्रेन्स व्यर्थ ही होते हैं। मैं सही सोचती हूँ या ग़लत—यह इस गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स-महायज्ञ के बाद मालूम होगा। तथापि यह जान कर भी कि प्रतिनिधि कहलाने वालों में से जनता के सच्चे प्रतिनिधियों की संख्या 'नहीं' के बराबर है, मैं इसकी सफलता के लिए शुद्ध हृदय से कामना करती हूँ।

बेहतर है, हम लोग आशा करें कि वे लोग (जिन पर हमारा बहुत कम विश्वास है कि वे भारत का भावी भाग्य-निर्णय कर सकेंगे) कम से कम यह दिखलाने की चेष्टा तो करेंगे, कि वे आवश्यक शान्ति स्थापना तथा भारत के वास्तविक कल्याण की कामना से प्रेरित होकर ही यहाँ पधारे थे !

* * *

परिवर्तन

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

मिस्टर विजयकृष्ण गोरखपुर के डिप्टी कलेक्टर थे। उनका सरकार में बड़ा मान था। वे बिलकुल साहबों के ढङ्ग से रहते थे। विदेशी वस्त्रों और वस्तुओं का व्यवहार करते थे। उनकी बी०ए० पास धर्म-पत्नी शीला देवी इन बातों में उनसे दो क़दम आगे थीं। उनके सुगठित स्वर्ण-कान्ति मनोहर शरीर को बहुमूल्य विदेशी वस्त्र अलङ्कृत किए रहते थे। स्वयंसेवक उनके यहाँ जाते, उनसे विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार करने की प्रार्थना करते, वे नाहीं करतीं, तो उनसे बहस करते, परन्तु बहस में हार कर लौटते। उनके हास्य-प्रवाह में ही स्वयंसेवकों के सारे तर्क बह जाते थे। वे जब भ्रू-युगल क्रोध से कुञ्चित करके कहतीं कि तुम लोग बहक रहे हो, अण्ड-बण्ड बकते हो तब वे बेचारे निरुत्तर हो जाते थे। नवयुवक स्वयंसेवकों पर उनकी कम से कम इतनी कृपा थी कि जब वे आते तो वे उनसे मिलतीं और बातचीत करती थीं। ग़रीब स्वयंसेवक इसी को अपना अहोभाग्य समझते थे—कहते थे, कि देखो कितनी सज्जनता है! वे समझते थे, कि उनमें इतना तर्क-बल और आत्म-बल नहीं है कि वे ऐसी सहृदय महिला को ठीक राह पर ला सकें। वे उन्हें दोष न देते थे। उन्होंने शीला देवी को बार-बार राह पर लाना चाहा, पर वे सफल न हुए। एक दिन स्वयंसेवकों के नायक श्रीयुत राधारमण जी ने कहा—ऐसे काम नहीं चलेगा, उनको एक बार फिर समझाना होगा और तब भी न मानें, तो उनके यहाँ धरना देना होगा। वे सहृदय तो अवश्य हैं, पर कदाचित उन्हें सुन्दर वस्त्रों और वस्तुओं से इतना प्रेम है कि वे उन्हें छोड़ नहीं सकतीं! शायद वे यह भी सोचती हैं कि स्वदेशी वस्त्र और वस्तुओं का व्यवहार करने से सरकार की उनके पति के ऊपर वक्र-दृष्टि हो जावेगी।

* * *

राधारमण—हम आपसे फिर प्रार्थना करने आए हैं कि आप विदेशी वस्त्र पहनना छोड़ दें। हम लोगों पर कृपा होगी—देश का लाभ होगा।

शीला देवी—यह तो बताओ कि जो विदेशी माल देश में आ गया है, उसके उपयोग में आने से क्या हानि होगी? उसे नष्ट करना तो मूर्खता मात्र है। आप लोग प्रयत्न करें कि विदेशी माल भारत में न आने पावे, तब मैं कहाँ से ख़रीदूँगी।

राधा०—आपसे हम बहस नहीं करते, इतना ही कहते हैं, कि आपके समान विदुषी, प्रतिष्ठित एवं सहृदय देवी के शरीर पर विदेशी वस्त्र देख कर हमें अपार दुःख और क्लेश होता है।

शीला०—मुझे भी विदेशी वस्त्रों को त्याग करने में दुःख होता है। भाई, इन उपायों से स्वराज्य नहीं मिलेगा। या तो इतने शक्तिशाली बनो कि सरकार तुम्हें स्वयं स्वराज्य दे दे, नहीं तो विनती करो और प्रतीक्षा करो।

राधा०—देवी जी, विनती और प्रतीक्षा व्यर्थ है, हम जानते हैं केवल जान देना, इसी से हमें स्वराज्य मिलेगा।

शीला०—मेरा ऐसा विश्वास नहीं है।

राधा०—तब भी आपको हमारा अनुरोध मानना ही पड़ेगा।

शीला०—तुम अहिंसा-व्रती हो, किसी से उसके विश्वास के विरुद्ध कर्म करा के उसे दुख देना क्या अहिंसा है? सरकार से लड़ने का उद्देश्य बतलाने में अधिक भय है, इसीसे अपना उद्देश्य जान देना बतलाते हो।

राधा०—हम तो पहले ही से कह चुके हैं, कि हम आपसे बहस नहीं कर सकते। इन बातों का जवाब तो हमारे पूज्य नेता देंगे। हमारा काम तो है उनकी आज्ञा का पालन करना। हम तो आपसे यही प्रार्थना करने आए हैं कि विदेशी वस्त्र या तो रख दीजिए या जला दीजिए।

शीला०—मैं ऐसा नहीं कर सकती, यदि आप लोगों को हठ है, तो मुझे भी हठ है।

राधा०—तब कल यदि आप विदेशी वस्त्र पहन कर निकलेंगी, तो चाहे जिस द्वार से आप निकलें, आपको हम लोगों की देह कुचल कर चलना होगा।

शीला०—यह तुम्हारा अन्याय है—तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

राधा०—चाहे जो समझिए, ऐसा ही होगा।

शीला०—फिर आपकी देह पर चलने में मेरा कोई दोष न समझा जाना चाहिए, यद्यपि ऐसा करने में मुझे अत्यन्त क्लेश होगा।

राधा०—हम यही चाहते हैं कि आपको इस प्रकार का अत्यन्त क्लेश हो और हमारे शरीर देश के काम आवें।

* * *

दूसरा दिन

जाड़े की ऋतु, सवेरे का समय था। अपना स्वर्ण-प्रकाश लेकर अभी उषा का आगमन नहीं हुआ था। आँखों से होकर हृदय में भी रात्रि का अन्धकार व्याप्त था। वह शीला देवी के हृदय में सबल अधिकार जमाए हुए था। उनके समझ में न आता था, कि क्या करना चाहिए। उनके पतिदेव दौरे पर थे और यहाँ यह काण्ड उपस्थित था। कुछ भी हो, रमणी के लिए शरीर कुचलते हुए चलना कठिन बात थी, परन्तु घूमने जाना भी अनिवार्य था। सम्पन्न लोगों के नित्य-नियम में अन्तर नहीं पड़ता, चाहे दुनिया उलट जावे। उन्होंने सोचा—कितने दिन घूमने न जाऊँगी। साहस से ही काम लेना ठीक है। अपनी बात से हटना व्यर्थ है। उजाला होने लगा। उन्होंने कपड़े पहने—वही बहुमूल्य, सुहावने, परन्तु परतन्त्रता के पाश विदेशी वस्त्र! परन्तु चलने के समय उनके हृदय में पीड़ा होने लगी। स्वयं-सेवकों के शरीर पर होकर जाना होगा। उन्होंने अपने हृदय को दृढ़ किया। सोचा, कोई बात नहीं है, मैं जाऊँगी—उन्हें कोई क्षति न पहुँचेगी। उन्होंने द्वार खोल दिया। उषा का प्रकाश फैल चुका था। सवेरे के जाड़े में ठिठुरते हुए स्वयंसेवक बँगले के दरवाज़ों के सामने लेटे हुए थे। उनमें से बहुत तो बड़े ऊँचे घरानों के थे, उनका मुख भव्य था; मानो कुछ कमल के फूल तोड़ कर धूल में डाल दिए गए हैं! एक द्वार से कुछ दूर उनकी लैण्डो तैयार खड़ी थी। उसके और दरवाज़े के बीच में चार स्वयंसेवक लेटे हुए थे। उनका शरीर कङ्कड़ों पर था; ऊपर से ओस गिर रही थी। शीला देवी के मन ने कहा—"भारत के लालों की आन यह दशा"—परन्तु उन्होंने उसको बोलने न दिया, उसका दमन किया। इतने में दो चपरासी आ गए और स्वयं-सेवकों को डाटने लगे। उन्होंने उच्च स्वर से 'महात्मा गाँधी की जय' बोली। उस स्वर को सुन कर शीला देवी के नेत्र सजल हो गए—हृदय काँप गया। उन्होंने चप-रासियों को मना कर दिया। अपना ऊँची एड़ी वाला जूता उतार दिया। वे धीरे-धीरे स्वयंसेवकों पर चलने लगीं। महात्मा गाँधी की जय-ध्वनि गूँजने लगी। वे कई बार कम्पित हुईं, पर स्वयंसेवकों के उस पार निकल ही गईं। दूसरे स्वयंसेवक सामने लेटना ही चाहते थे, परन्तु राधा-रमण ने मना कर दिया। कहा—इतना ही बहुत है, देखते नहीं, आँखों में आँसू हैं, पैर काँप रहे हैं।

स्वयंसेवक उठे और 'महात्मा गाँधी की जय' बोलते हुए चले गए। शीला देवी बहुत उदास होकर लैण्डो पर सवार हुईं। वह तेज़ी से चल पड़ी। थोड़ी दूर जाने के बाद उन्होंने दूर से देखा कि एक स्त्री नग्नप्राय सर्दी से ठिठुर रही है। उन्होंने कोचवान से गाड़ी उसी ओर ले चलने को कहा। वे शीघ्र ही उस स्त्री के पास जा पहुँचीं। उसने उन्हें देख कर हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। उन्होंने उत्तर दिया और कहा—तुम्हारे पास कपड़ा नहीं है क्या?

भिखा०—नहीं सरकार!

शीला०—मैं कपड़ा मँगा दूँ?

भिखा०—"आप देवी हैं"—उसके आँखों में आनन्द के अश्रु आ गए।

शीला देवी ने लैण्डो के पीछे खड़े हुए चपरासियों में से एक से कहा—"दौड़ते जाओ और एक ऊनी साड़ी ले आओ। सिपाही दौड़ता हुआ चला गया। भिखारिणी ने शीला देवी के पैर छूना चाहा, परन्तु उन्होंने मना कर दिया।

कुछ देर में चपरासी लौट आया। उस साड़ी को दूर से देख कर भिखारिणी प्रसन्न हो रही थी, परन्तु जब साड़ी निकट लाई गई तब उसने हताश होकर कहा—यह साड़ी विदेशी है, मेरे काम की नहीं है।

शीला को क्रोध आ गया। वे उत्तेजित होकर बोलीं—नङ्गी रहोगी, मगर विदेशी साड़ी नहीं पहनोगी?

भिखारिणी ने भूमि पर सिर धरते हुए कहा—आप क्रोध न कीजिए, विदेशी कपड़ा चलने के कारण ही हमारा नाश हुआ है।

शीला देवी ने समझा कि इसमें कुछ भेद है, उन्होंने कुछ शान्त होकर कहा—तुम्हारी यह हालत कैसे हुई?

भिखा०—सरकार, मैं जुलाहिन हूँ, मेरे घर में कभी ढाके का मलमल बनता था। हज़ारों रु० माहवार की आमदनी थी। इसी विदेशी कपड़े के चल जाने से हमारा घर बिगड़ गया। धीरे-धीरे यह दशा हो गई कि आज मैं भिखारिणी हूँ—नङ्गी फिरती हूँ।

शीला देवी की आँखों में आँसू आ गए। उनके अन्तरङ्ग आँखों पर से एक परदा हट गया। उन्होंने एक चपरासी से कहा—इसे एक दस रुपए का नोट दे दो।

चपरासी ने दे दिया। भिखारिणी पैर छूने लगी। शीला देवी की आँखों से उसके सिर पर दो गर्म बूँदें टपक पड़ीं!

* * *

लैण्डो लौट चली। बँगले पर पहुँच कर शीला देवी ने राधारमण को बुलाया।

राधारमण ने आकर कहा—क्या आज्ञा है?

शीला देवी ने मुस्करा कर कहा—एक खद्दर की साड़ी मुझे देकर, उसके बदले में मेरे यहाँ के सारे विदेशी कपड़े ले जाओ।

(शेष मैटर १५वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

आयलैंण्ड का स्वाधीनता-संग्राम

[मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

(शेषांश)

लोहा बजना ही चाहता था, कि इतने में यूरोप का महा-समर छिड़ा। उस समय उदार आयलैंण्ड समस्त अपमान और निर्यातन भूल कर, अङ्गरेज़ों की मदद करने के लिए तैयार हो गया। परन्तु उसे शीघ्र ही अपनी ग़लती मालूम हो गई। वह समझ गया कि धूर्त अङ्गरेज़ केवल अपना मतलब गाँठने के लिए उससे ख़ून कराना चाहते हैं। यह सोच उसने फ़ौरन इस कार्य से हाथ खींच लिया और भयङ्कर रूप से अङ्गरेज़ों के विरुद्ध प्रचार-कार्य आरम्भ हो गया। इसके बाद ही मशहूर इस्टर का विद्रोह आरम्भ हुआ। अनेक विज्ञ व्यक्ति इस विद्रोह के विरुद्ध थे, परन्तु गरम मिज़ाज वाले आइरिश युवकों ने किसी के विरोध की कोई परवाह न की। कुछ लोगों का अनुमान है कि इस विद्रोह में जर्मनों का भी कुछ हाथ था। विद्रोहियों ने डबलिन नगर पर अपना अधिकार जमा लिया। परन्तु शत्रुओं की भीषण तोपों के सामने वे अधिक देर तक न रुके। अन्त में आत्म-समर्पण के लिए उन्हें बाध्य होना पड़ा। अङ्गरेज़ों ने पन्द्रह प्रमुख विद्रोहियों को फाँसी की सज़ा दी और पन्द्रह सौ स्वयंसेवक जेलों में भरे गए। इस विद्रोह में आयलैंण्ड की साधारण जनता शामिल न थी। वह भय, विस्मय और क्षोभ से अभिभूत हो उठी थी। लोगों का कहना है, कि डबलिन में सब मिला कर केवल एक हज़ार मनुष्य इस विद्रोह में शामिल थे, परन्तु अङ्गरेज़ों के साधारण सिपाहियों ने भी विचार का ढोंग रच कर, साधारण लोगों को क़त्ल करना आरम्भ कर दिया। दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार ने भी शान्ति के लिए चेष्टा न करके, लगातार पन्द्रह दिनों तक गोलाबारी करके अपनी असाधारण वीरता का परिचय दिया था। एक आश्चर्यमय मर्मस्पर्शी वीरता दिखा कर, हँसते-हँसते लोग मृत्यु को आलिङ्गन करने लगे !

यद्यपि आयलैंण्ड की जनता इस अकाल विद्रोह के पक्ष में न थी; परन्तु अङ्गरेज़ों के अत्याचार ने उसे जाग्रत कर दिया और वह जिन विद्रोहियों की निन्दा किया करती थी, आज उन्हें मुक्ति का अग्रदूत मान कर, उनके प्रति श्रद्धा दिखाने लगी। इस विद्रोह के सञ्चालकों में महात्मा पियर्स नाम के एक देशभक्त थे। इनके अलौकिक त्याग, वीरता, देशभक्ति और शहादत ने देश के नवयुवकों में एक नवीन उत्साह का सञ्चार कर दिया। पियर्स महोदय की धर्मपत्नी ने अपने पति, पुत्र तथा उनके साथियों को लक्ष्य कर कहा था—"They knew that they should fail but they desired to save the soul of Ireland." इस विद्रोह के सम्बन्ध में इससे अच्छी उक्ति और नहीं हो सकती। वास्तव में इन वीरों की क़ुर्बानियों ने वह काम किया जो सैकड़ों वर्षों के प्रचार और आन्दोलन से नहीं हो सकता।

ठीक इसी समय नवीन आयलैंण्ड की नींव पड़ी। महात्मा आर्थर ग्रिफ़िथ नाम के एक वीर पुरुष ने 'सिन-फ़िन' (अर्थात् अपना देश) का सङ्गठन किया। बड़े ज़ोर-शोर तथा नवीन ढङ्ग से स्वाधीनता का आन्दोलन आरम्भ हुआ। ग्रिफ़िथ के साथ जिन लोगों ने मुक्ति का व्रत लिया था, उनमें एक से एक बढ़ कर शक्तिशाली और स्वनामधन्य वीर थे। ईश्वर की प्रेरणा से मानो असंख्य वज्र स्वाधीनता-यज्ञ सम्पन्न करने के लिए सम्मिलित हुए। इनमें माइकेल एलिन्स, महात्मा मेक्स्विनी और डि वेलेरा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सन् १८९३ ई० में डॉ० डिपुगिलहेयी ने जिस "गेलिक लीग" की स्थापना की थी उसका उद्देश्य तो था देशी भाषा और शिल्प की उन्नति करना, परन्तु न जाने किस अलौकिक शक्ति के प्रभाव से उसने सारे आयलैंण्ड में देशात्मबोध का सञ्चार कर दिया। लीग ने अङ्गरेज़ियत के विरुद्ध घोषणा की थी, इसीसे शायद उसने अपने अन्तिम ध्येय की ओर भी लक्ष्य किया। थोड़े दिन के बाद ही उसने अनुभव किया कि केवल देशी भाषा और शिल्प की उन्नति करके चुपचाप बैठने से काम नहीं चलेगा। देश जब तक राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त नहीं कर लेगा, तब तक किसी तरह उसका कल्याण नहीं होगा। ग्रिफ़िथ ने अपनी ज्वालामयी लेखनी और वक्तृताओं द्वारा देश के नवयुवकों को नए तरीक़े से उद्बुद्ध करना आरम्भ किया। थोड़े दिनों के बाद सारे आयलैंण्ड में मुक्तिकामियों की संख्या बढ़ गई। मानो मुक्ति के नशे में सारी जाति पागल हो उठी हो।

सन् १९१८ के मई में लॉर्ड फ्रेञ्च आयलैंण्ड के वायसराय होकर गए और चीफ़ सेक्रेटरी नियुक्त हुए मि० शरट और उनके बाद मि० आर० मेकफ़र्सन। इसी समय से आयलैंण्ड में फिर भयङ्कर दमन आरम्भ हुआ। दिसम्बर तक प्रायः आधे सिनफ़िन नेता पकड़ कर जेलों में भर दिए गए। परन्तु इससे आन्दोलन को ज़रा भी धक्का न लगा। अवशिष्ट सिनफ़िनरों ने प्रजातन्त्र की प्रतिष्ठा का आयोजन आरम्भ कर दिया। सन् १९१९ की २१ वीं जनवरी को समस्त सिनफ़िन लीडरों ने आइरिश पार्लामेण्ट में योग दिया और सर्व-सम्मति से प्रजातन्त्र की अधीनता स्वीकृत की गई। मि० डि वेलेरा प्रजातन्त्र के सब से पहले राष्ट्रपति नियुक्त हुए। प्रत्येक शासन-विभाग के लिए अलग-अलग मन्त्रियों की नियुक्ति हुई। इसके साथ ही एक विराट सेना का भी सङ्गठन हुआ। बहुत से आइरिशों ने अपनी नवगठित स्वाधीनता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर दिया।

आयलैंण्ड की इस जातीय सरकार ने सब से पहले अर्थ-संग्रह की ओर मनोनिवेश किया। नया टैक्स लगा कर रुपए एकत्र करने की सम्भावना न देख, नेताओं ने सर्व-साधारण से २,५०,००० पौण्ड और १०,००,००० पौण्ड अमेरिका प्रवासी आइरिशों से ऋण-स्वरूप ग्रहण करने का विचार किया। यद्यपि अङ्गरेज़ी सरकार के क़ानून के अनुसार जातीय सरकार को इस तरह की आर्थिक सहायता करना अमार्जनीय अपराध बताया गया था। तथापि इसमें नई सरकार को आशातीत सफलता मिली। आयलैंण्ड की जनता ने ढाई लाख पौण्ड की जगह चार लाख पौण्ड और अमेरिकन आइरिशों ने दस लाख की जगह एक करोड़ डॉलर प्रदान किया ! इस अर्थ द्वारा जातीय सरकार ने नाना प्रकार के कल्याणकारी कार्यों का अनुष्ठान किया। प्रत्येक नगर और गाँव में पञ्चायती अदालतें खोल दी गईं। उसके साथ ही स्वतन्त्र पुलिस-विभाग भी खोला गया। इन दोनों विभागों ने अङ्गरेज़ी सरकार का सारा दबदबा नष्ट कर दिया। साथ ही इससे प्रजातन्त्र के प्रति जनता का विश्वास भी बढ़ गया। अधिकांश वकीलों और बैरिस्टरों ने अङ्गरेज़ी अदालत छोड़ कर, प्रजातन्त्र की अदालतों में प्रेक्टिस करना आरम्भ कर दिया। प्रजा को भी अपनी देशी अदालतों द्वारा अपने झगड़ों का फ़ैसला करा लेने में बड़ी सुविधा हुई। व्यर्थ के अदालती ख़र्च से भी वे बच गए। आइरिशों ने बड़ी प्रसन्नता और श्रद्धा से अपनी देशी अदालतों को अपना लिया। थोड़े ही दिनों में यह हालत हो गई, कि अङ्गरेज़ी अदालतों में चूहे कबड्डी खेलने लगे !!!

अदालतों की भाँति ही प्रजातन्त्र के पुलिस-विभाग ने भी शीघ्र ही काफ़ी तरक़्क़ी कर ली। स्वयंसेवकों ने बड़ी प्रसन्नता और योग्यता के साथ इस विभाग का कार्य सँभाल लिया। अङ्गरेज़ी पुलिस की बर्बरता और कठोरता से ऊबी हुई जनता ने भी इस नई पुलिस का प्रेमपूर्ण शासन स्वीकार कर लिया। इस विभाग द्वारा चोर-डाकुओं को उचित दण्ड दिया जाता। यहाँ तक कि गुरुतर अपराध करने वालों को देश निकाले की भी सज़ा दी जाती थी। जो सब से गुरुतर अपराध करता वह इङ्गलैण्ड भेज दिया जाता था।

अदालत और पुलिस की व्यवस्था कर लेने पर, प्रजातन्त्र की सरकार ने देश में प्रचलित ज़मींदारी प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। हम पहले ही बता चुके हैं कि आयलैंण्ड में प्रायः सभी बड़े-बड़े ज़मींदार अङ्गरेज़ थे। इस स्वार्थ पर कुप्रथा के कारण देश की दुरवस्था पराकाष्ठा को पहुँच गई थी। विदेशी अङ्गरेज़ सैकड़ों एकड़ ज़मीन के मालिक बन कर, विलास-सागर में मौजें ले रहे थे, और उनके आस-पास की आइरिश प्रजा दाने-दाने को तरस रही थी। धनवान ज़मींदारों की नज़रों में वे पशु से भी घृणित और अस्पृश्य समझे जाते थे ! फलतः प्रत्येक आइरिश की यह आन्तरिक कामना हो गई थी कि शत्रु जाति के इन ज़मींदारों का शीघ्रातिशीघ्र ध्वंस कर डाला जाय। इसलिए शीघ्र ही यह आन्दोलन अच्छी तरह ज़ोर पकड़ गया। सारी पुरानी व्यवस्था बलपूर्वक उलट दी गई और ज़मीन ज़मींदारों से छीन कर जन-संख्या के अनुसार ग़रीबों को बाँट दी गई। प्रजातन्त्र की सरकार का प्रधान बल था उसका देश-प्रेम। उसी के भरोसे वह आशातीत सफलता प्राप्त करने लगी।

इन सङ्गठनमूलक कार्यों के साथ ही प्रजातन्त्र की सरकारी फ़ौज ने शत्रुओं के साथ 'गोरिला वार' (आकस्मिक आक्रमण-मूलक संग्राम) आरम्भ कर दिया। अङ्गरेज़ी पुलिस के अड्डे और सिपाहियों के 'बैरेक' जला दिए गए। एक ही दिन सारे देश भर के 'इनकमटैक्स-ऑफ़िसों' में आग लगा दी गई। सारे काग़ज़ात के साथ एक दिन अङ्गरेज़ों का 'कस्टम हाउस' भी जल कर ख़ाक हो गया। अचानक हमलों द्वारा अङ्गरेज़ी फ़ौज की कई छावनियाँ लूट ली गईं। अङ्गरेज़ों के जासूस जहाँ कहीं मिलते थे, क़ैद कर लिए जाते थे। इस गोरिला-वार में महावीर डैन ब्रियन ने जिस अदम्य साहस, अपूर्व उत्साह और विलक्षण बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था, वह वास्तव में अपूर्व था—अलौकिक था। इस मनुष्य

के अद्भुत कार्यों का विवरण पढ़ कर आश्चर्य-चकित रह जाना पड़ता है। इस विकट देश-प्रेमी के लिए सब कुछ सम्भव था। उसका अलौकिक कीर्ति-कलाप पढ़ने वालों के हृदयों में स्वतः ही श्रद्धा का सञ्चार कर देता है। बहादुर ब्रियन के चरणों पर मस्तक झुका कर जीवन सफल कर लेने की इच्छा उत्पन्न होती है।

सचमुच आयर्लैंण्ड के इतिहास के वे पन्ने बड़े रोचक हैं, बड़े मनोरम। एक ओर वीर-वर ब्रियन का गोरिला वार चल रहा था, और दूसरी ओर सारे देश के श्रमिकों ने हड़तालें कर दी थीं। अङ्गरेज़ मुँह बा कर रह गए। शस्त्रास्त्रों से लदे हुए जहाज़ खड़े-खड़े समुद्र की तरल-तरङ्गों के मज़े ले रहे थे और आइरिश ख़लासी किनारे पर खड़े तालियाँ बजा रहे थे। जहाज़ से रसद और माल उतारने वाला कोई न था। रेल द्वारा पुलिस और पल्टन लाने का कोई उपाय न था। समस्त देशी रेल के कर्मचारियों ने काम छोड़ दिया था। पराधीन गुलामों की यह स्पर्धा देख कर साम्राज्य-मद-गर्विता अङ्गरेज़ी सरकार ग़ुर्रा उठी। उस समय यूरोप का मशहूर महासमर समाप्त हो चुका था। अङ्गरेज़ों के त्रिगुट ने अमेरिका के राष्ट्रपति विलसन को अपने माया-जाल में फँसा कर अपना उल्लू सीधा कर लिया था। इस विजय की ख़ुशी में समस्त अङ्गरेज़ी साम्राज्य में घी के दिए जल रहे थे। ऐसे समय आयर्लैंण्ड की यह मुक्ति की चेष्टा भला अङ्गरेज़ कैसे बर्दाश्त कर सकते थे। वे अपनी समस्त शक्ति के साथ आयर्लैंण्ड पर टूट पड़े। क्रॉमवेल, पिट, रानी एलिज़ाबेथ से जो कार्य नहीं हो सका था, उसे पूरा कर डालने के लिए ब्रिटिश सरकार तन, मन और धन से लग गई। आयर्लैंण्ड को संसार के पर्दे से मिटा डालने में कोई क़सर बाक़ी नहीं रक्खी गई। सारी अङ्गरेज़ जाति ने प्रलयङ्करी मूर्त्ति धारण कर ली। आयर्लैंण्ड में पुलिस की संख्या बरसाती मेंढक की तरह बढ़ने लगी। शीघ्र ही चौदह हज़ार नव-जवान पुलिस-विभाग में भर्ती हो गए। ५५,००० अस्त्र-शस्त्र से सज्जित सैनिक साम्राज्य की रक्षा के लिए नियुक्त हुए। सभी बड़े-बड़े स्टीमर आयर्लैंण्ड के बन्दरगाहों पर खड़े कर दिए गए। इसके सिवा आइरिशों को अच्छी तरह दुरुस्त कर देने के लिए अगणित Blacks and Tans भी बुला लिए गए। इसके बाद आयर्लैंण्ड की छाती पर रक्त की पताका उड़ा दी गई। 'सब धान बाइस पसेरी' के अनुसार दोषी-निर्दोषी का विचार ताक़ पर रख कर "सार्वभौम" दलन आरम्भ कर दिया गया। दनादन गोलियाँ चलने लगीं, गाँव के गाँव जला कर भस्म कर दिए जाने लगे। समस्त आयर्लैंण्ड में भीषण ध्वंस-लीला आरम्भ कर दी गई। आयर्लैंण्ड की अङ्गरेज़ी सरकार के चीफ़ सेक्रेटरी मि० बिरेल ने इस सम्बन्ध में लिखा है :—

" The Auxilliary Forces (Black and Tan) were let loose upon the population of Ireland and these forces it may be truely said, their doings astonished natives."

इस समय के चीफ़ सेक्रेटरी के बारे में "लण्डन मेगज़ीन" ने जो राय दी थी, वह भी कम मज़ेदार नहीं है। उसने लिखा था—

" In the old Irish days it was always said that the latest Chief Secretary was the worst that had ever been sent to Castle. There is no need to say that of Sir Humar Greenwood, for through the latest he is also the last of his tribe."

केवल इतने से ही अङ्गरेज़ों को सन्तोष नहीं हुआ। एक ओर मैशीनगनें भिड़ाई गईं और दूसरी ओर क़ानूनी नाग-पाश तैयार किया गया। Defence of Realm Act, Restoration of order Act और 'मार्शल लॉ' आदि नए-नए क़ानूनों की कृपा से आयर्लैंण्ड के सभी अख़बार बन्द हो गए। हाट, बाज़ार तथा मेले तोड़ दिए गए। देश की सारी सार्वजनिक संस्थाएँ ग़ैर-क़ानूनी घोषित कर दी गईं। यहाँ तक कि बहुत से बैङ्क भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार देकर बन्द कर दिए गए। दल के दल देश-सेवक पकड़-पकड़ कर जेलों में बन्द कर दिए गए। शान्ति-रक्षा के नाम पर कितने ही भले आदमियों को निर्वासन दण्ड भी भोगना पड़ा। प्रजातन्त्र की 'पब्लिक सिनेट' के ७३ निर्वाचित सदस्यों में नौ को छोड़, बाक़ी सभी जेल भेजे गए। ये नौ सज्जन उस समय आयर्लैंण्ड से बाहर थे, इसलिए बच गए। इस महा नरमेध यज्ञ में महात्मा मेकस्विनी, मेयर क्रान्सी आदि कितने ही नर-पुङ्गवों को अपने प्राणों की आहुति प्रदान करनी पड़ी। मेकस्विनी ने अङ्गरेज़ों के जेलख़ाने में ७० दिन तक उपवास करके प्राण दे दिया। इनके उपवास की आलोचना करते हुए, इङ्गलैण्ड के सहृदय अख़बारों ने लिखा था कि किसी तरह खा लेता होगा। फ़ादर ग्रिफ़िन मेकफ़ारनेट को भी इस महायज्ञ की आहुति बनना पड़ा। व्यवसाय और वाणिज्य के सारे पथ बन्द कर दिए गए। मक्खन और पनीर के सैकड़ों कारख़ाने जला कर ख़ाक कर दिए गए!

एक छोटी जाति देश की स्वाधीनता के लिए अपने कलेजे का कितना ख़ून बहा सकती है—यह आयर्लैंण्ड ने अच्छी तरह दिखला दिया। आइरिशों ने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया कि जीवन का सदुपयोग देश-सेवा ही है। सिनफ़िन सङ्घ के देश-प्रेमियों को मालूम हो गया था कि प्राणों की बाज़ी लगाए बिना देश-माता की बेड़ी नहीं कटेगी। इसी से प्रत्येक आइरिश युवक देश की स्वाधीनता के लिए जीवन उत्सर्ग कर देने को तैयार हो गया था।

यह अलौकिक त्याग, यह निर्भीकतापूर्वक मृत्यु को आलिङ्गन करने की प्रवृत्ति और सर्वस्व त्याग ख़ाली नहीं गया। अन्त में विजय देवी ने आयर्लैंण्ड पर थोड़ी सी कृपा की। प्रचुर रक्त-पान कर स्वतन्त्रता देवी ने तृप्ति लाभ की। अन्त में इङ्गलैण्ड के राजनीति के धुरन्धर और ब्रिटिश साम्राज्य की अधीनस्थ जातियों के भाग्य-विधाता मि० लॉयड जॉर्ज कुछ पसीजे। मानो आइरिशों के प्रचुर रक्त से उनके राजनीतिक दिमाग़ की गर्मी कुछ शान्त हुई। आयर्लैंण्ड की राजनीतिक समस्या की आलोचना के लिए उन्होंने डी वेलेरा और अलस्टर के लीडर सर जेम्स क्रेग को निमन्त्रण देकर इङ्गलैण्ड बुलाया। पहले तो डी वेलेरा महोदय ने यह निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया। परन्तु अन्त में मित्रों के दबाव में पड़ कर इङ्गलैण्ड गए और एक सप्ताह तक लॉयड जार्ज महोदय के पास रह कर आयर्लैंण्ड की समस्याओं की आलोचना में लगे रहे। इसके बाद अङ्गरेज़ों ने अपनी शर्तें प्रकाशित कीं। उनमें एक शर्त यह भी रक्खी गई कि अलस्टर निवासी चाहें तो आयर्लैंण्ड के जातीय दल के साथ रह सकते हैं अथवा स्वयं अपने लिए अलग प्रजातन्त्र क़ायम कर सकते हैं। डी वेलेरा को यह शर्त पसन्द न आई। आदर्शवादी डी वेलेरा को मातृ-भूमि का यह विच्छेद स्वीकार न था। इसलिए सन्धि नहीं हुई।

अन्त में इङ्गलैण्ड वालों ने जब देखा कि आयर्लैंण्ड हर तरह से चङ्गुल से निकल जाना चाहता है तो उन्होंने फ़ौरन एक नया फन्दा फेंका। डी वेलेरा तो इस फन्दे में नहीं फँसे, परन्तु अन्यान्य कई लीडर आ गए। फिर कॉन्फ्रेन्स बैठी। कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड की तरह आयर्लैंण्ड को साम्राज्यान्तर्गत स्वायत्त शासन प्रदान किया गया। उसे 'फ़्री स्टेट' की संज्ञा प्रदान की गई। उत्तर आयर्लैंण्ड अर्थात् अलस्टर प्रान्त स्वतन्त्र प्रदेश स्वीकार किया गया। परन्तु डी वेलेरा, कैथल ब्रुथा, लॉयनलिन्च, अमर मेकस्विनी की पत्नी और बहिन ब्रेस-ब्रियन ने यह लँगड़ा स्वायत्त शासन स्वीकार नहीं किया। इन्होंने अपनी मातृ-भूमि की पूर्णस्वाधीनता के लिए अपनी एक 'रिपब्लिक पार्टी' बनाई। इनकी यह अटल प्रतिज्ञा है कि—या तो आयर्लैंण्ड को स्वतन्त्र करेंगे या इसी चेष्टा में मर मिटेंगे।

* * *

हज़रते 'बिस्मिल' भी लीडरी करते

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

अगर पसन्द न तुम वज़्आ-मराखी करते—
तो बात-बात पे क़ुर्बान हम भी जी करते !

कभी क्लब, कभी होटल में दावतें होतीं—
किसी की मेम से हम भी जो दोस्ती करते !

जो होती फ़िक्र हमें क़ौम की तरक़्क़ी की—
तो याद अपनी ही हम क्यों न हिस्ट्री करते !

चिराग़े-क़ौम न बुझता, तो क्या ज़रूरत थी—
सियाहख़ाने में बिजली की रोशनी करते !

ख़राब हाल न होते, कभी ज़माने में—
जनाबे-शेख़ जो पण्डित से दोस्ती करते !

जो अपने दिल में तिजारत का वलवला होता—
तो हम ब-शक्ले-ग़ुलामी न नौकरी करते !

जो बोलना इन्हें आता सभा में, मजलिस में—
तो आज हज़रते "बिस्मिल" भी लीडरी करते !

* * *

(१३ वें पृष्ठ का शेषांश)

राधारमण ने समझा कि युक्ति काम कर गई। उन्होंने गाँधी जी की जय बोली और घर की ओर दौड़े।

* * *

जब शीला देवी के पतिदेव घर लौटे, तो उनके आश्चर्य की सीमा न थी। उनका घर मानो स्वदेशी-भण्डार हो चुका था। उन्होंने घबरा कर शीला देवी से पूछा—आख़िर मामला क्या है ?

शीलादेवी का मुख तेज से दमक रहा था। उन्होंने उत्साहपूर्वक कहा—कुछ नहीं सब ठीक है, तुम आज ही से 'स्वदेशी' का व्रत लो और यदि तुम्हारे उच्च पदाधिकारी ज़रा भी मीन-मेख़ निकालें तो फ़ौरन इस सरकारी नौकरी को इस्तीफ़ा दो। खाने को ईश्वर देगा। तुम्हें कोई कमी न रहेगी—यह मेरी आन्तरिक धारणा है ! जब कि देश के इतने बड़े-बड़े पूज्य नेताओं ने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व निछावर कर दिया है तो क्या भारतीय होने के नाते हम इतना भी नहीं कर सकते ? शीला देवी के पति ने शीला को गले लगा कर कहा—प्रिये ऐसा ही होगा ! मुझे तो केवल तुम्हारा ख़्याल था—जब तुम ही स्वदेशी का व्रत ले चुकी हो तो मैं तुमसे भिन्न कैसे रह सकता हूँ।

राधारमण ने दूर से देखा, दोनों ही के नेत्र भरे थे—मानो वे कातर होकर क्षमा की प्रार्थना कर रहे हों।

* * *

संसार का भयंकर शत्रु—धर्म

[श्री० प्रकाशदत्त जी, एम० ए०]

मनुष्य आरम्भ से ही शान्तिप्रिय रहा है। वह इस संसार में तो शान्ति से रहना ही चाहता है, साथ ही उसे परलोक में भी शान्ति प्राप्त करने की चिन्ता रात-दिन व्यस्त किए रहती है। और इसके लिए उसने अपने उर्वर दिमाग़ से जिस उपाय का आविष्कार किया है उसका नाम है—धर्म। धर्म पर मनुष्य का गम्भीर विश्वास है। वह इसे निर्भ्रान्त-सत्य समझता है कि धर्म की साधना से अवश्य ही अक्षय शान्ति और मुक्ति की प्राप्ति होगी। धर्म के विरुद्ध उसके मन में इसके सिवा दूसरी भावना का उदय हो ही नहीं सकता। धर्म से मेरा मतलब उन बातों से है, जो समय-समय पर संसार की विशेष चिन्ता रखने वाले महात्माओं ने मनुष्यों के सामने समाज-व्यवस्था, जीव-आत्मा और लोक-परलोक के विषय में उपस्थित की हैं। उन महात्माओं की यह संसार-सम्बन्धी हित-कामनाएँ आज भिन्न-भिन्न नामों से अखिल मनुष्य-समाज पर अखण्ड आधिपत्य जमाए हुए हैं। यह आधिपत्य कहीं ईसाई-मत, कहीं मुस्लिम-मत, कहीं हिन्दू-मत और कहीं बौद्ध-मत के नाम से प्रसिद्ध है। यद्यपि इस आधिपत्य के आविष्कर्ता भिन्न-भिन्न थे और उनके आविष्कारों की रचना में अद्भुत साम्य के साथ ही अद्भुत वैषम्य भी है, परन्तु उन सब का और उनके आविष्कारों का उद्देश्य एक ही था—मनुष्य की सामाजिक शृङ्खला सुदृढ़ हो, तथा वह शान्तिपूर्वक अक्षय जीवन का फल लाभ करे।

इसमें सन्देह नहीं कि उन महात्माओं का उद्देश्य अत्युच्च था। उनकी नीयत की पवित्रता पर सन्देह करना, उनके साथ घोर अन्याय करना होगा। परन्तु प्रश्न यह है कि—उनका उद्देश्य कहाँ तक सफलता को प्राप्त हुआ, उनकी नीयत से संसार को क्या प्राप्त हुआ? मैं निस्सङ्कोच और खुले शब्दों में यह कहूँगा कि उनके उद्देश्य से संसार का संहार हो गया। उसे शान्ति के बदले घोर अशान्ति, सुख के बदले दुःख, मुक्ति के बदले बन्धन और स्वाधीनता के बदले पराधीनता की प्राप्ति हुई!

उस दिन एक साहब रूस के क्रान्तिकारियों को कोसते हुए बोले—हाय-हाय! धर्म का नाश हो रहा है। अधर्म की बढ़ती हो रही है, तब लोग क्यों न मुसीबतें बर्दाश्त करें। जब धर्म ही नहीं, तब उन्नति कहाँ! धर्म को त्याग कर मनुष्य क्योंकर ऊँचा उठ सकता है।

मैंने कहा—यार! धर्म के इस सड़े हुए मुर्दे को क्यों इस प्रकार ज़बरदस्ती छाती से चिपटा रहे हो! इसी कमबख़्त मुर्दे की सड़ायन दुनिया भर में दुःख, शोक, अशान्ति और पराधीनता की बीमारियाँ फैला रही है। रूस वालों ने बहुत अच्छा किया, जो इस मुद्दत के सड़ते हुए मुर्दे को ख़ूब गहरे गाड़ दिया है। उन्हें धन्यवाद दो, उनकी प्रशंसा करो, उन्होंने इस मुर्दे के द्वारा फैलने वाली बीमारियों से अपने मुल्क की रक्षा की है।

इस पर वह और भी बिगड़े, बोले—तुम ख़ब्ती हो, नास्तिक हो। बुरा हो इस नास्तिकता का। यही नास्तिकता आज संसार को गड्ढे में फेंक रही है।

मैंने जवाब दिया—ख़ब्ती हो तुम, और बुरा हो तुम्हारी आस्तिकता का। धर्म की चक्की में दुनिया पिसी जा रही है, धर्म के नाम पर नित्य नए अत्याचार होते हैं, लोग रक्त के आँसू बहाते हैं। पर तुम सावन के अन्धे हो, धर्म के नाम पर तुम्हें सभी जगह हरियाली दिखाई देती है। दोस्त! दुनिया की तवारीख़ की सैर करो, सैकड़ों अध्याय तुम्हें रक्ताक्षरों से लिखे मिलेंगे, जिनमें अगणित मनुष्यों की सर्द आहें, ज्वालामुखी में भरी हुई अग्नि के समान उमड़ रही होंगी। उफ़! धर्म के नाम पर आज तक कितने आदमियों के सर क़लम हुए हैं, कितने निरीह जीवों के सीने चाक हुए हैं—क्या तुम उनकी गिनती कर सकते हो? याद रक्खो, धर्म के नाम पर इतने मनुष्यों का बलिदान हुआ है, कि तुम उनकी गिनती न कर सकोगे और तुम्हारी उमर बीत जायगी। पृथ्वी की चप्पा-चप्पा भूमि उस बलिदान के रक्त में रँगी जा चुकी है। फिर भी तुम धर्म-धर्म चिल्लाते हो—तुम्हें ग़ैरत मालूम नहीं होती?

अब तो उनका पारा बहुत ऊँचा चढ़ गया, चमक कर बोले—इसमें धर्म का क्या क़ुसूर? वह कब लोगों को ख़ून बहाने की आज्ञा देता है? वह लोगों को कहाँ बुरी बातें सिखलाता है?

मैंने कहा—मैं मानता हूँ, कि वह न ख़ून-ख़राबी करने का हुक्म देता है, और न लोगों को बुरी बातें सिखलाता है, पर दुनिया को चक्कर में ज़रूर डाले रहता है। ईसाई कहते हैं कि हमारा धर्म सर्वश्रेष्ठ है, बिना ईसा की शरण लिए लोगों को मुक्ति नहीं मिलेगी। मुसलमानों का कहना है कि अगर दुनिया में कोई धर्म है, तो वह मुस्लिम धर्म है, मुसलमानों पर ही ख़ुदाई रहमत होती है, दूसरों पर नहीं। बौद्ध कहते हैं कि भगवान बुद्ध की शरण लिए बिना मनुष्य का कल्याण हो ही नहीं सकता और आर्य-समाजी फ़रमाते हैं कि बस वैदिक धर्म ही धर्म है, और बाक़ी सब कूड़ा-कचरा। मेरे नादान दोस्त, अब तुम्हीं बतलाओ कि दुनिया किसे झूठा समझे और किसे सच्चा, और वह शरण में जाए, तो किसकी?

धर्म-प्रेमी सज्जन ने सरल-भाव से उत्तर दिया—इसमें शरण-वरण की क्या बात? सब लोग आनन्द से अपना-अपना धर्म मानें, तो टण्टा-बखेड़ा होगा ही क्यों?

यह उत्तर मैंने बहुत से लोगों के मुँह से सुना है, और जब-जब सुना है, तब-तब मेरे शरीर में आग लग गई है। जी में आया है कि यदि ये सब पागलख़ाने में भेज दिए जाते तो कितना अच्छा होता। ये लोग थोड़ी देर के लिए भी तो इतना नहीं सोचते, कि यदि यही बात होती तो फिर कहना ही क्या था—फिर शिकायत ही किस बात की रहती। जब तक संसार में भिन्न-भिन्न धर्म रहेंगे, तब तक उनके अनुयायी एक-दूसरे धर्म पर अपने धर्म की शान गाँठने के लिए—दूसरे धर्म के अनुयायियों को अपने धर्म में लाने के लिए—आपस में ज़रूर-ज़रूर धींगा-मुश्ती करते रहेंगे। यह उनका पुराना स्वभाव हो गया है और उस स्वभाव को बदल डालना संसार की किसी शक्ति के वश की बात नहीं है।

यहूदियों के गन्दे आचार-विचार देख कर परम कारुणिक ईसा का हृदय उद्वेलित हो उठा। उन्होंने यहूदियों को रास्ते पर लाने के लिए अपनी आहुति दे डाली। परन्तु यहूदी न सुधरे, हाँ ईसा के अनुयायी अवश्य उत्पन्न हो गए, और तब यहूदियों तथा ईसाइयों का सङ्घर्ष आरम्भ हो गया। अरबों की बर्बरता देख कर हज़रत मुहम्मद के हृदय में करुणा का प्रवाह होने लगा। उनकी सदभिलाषा से अरबों का उत्थान हुआ, पर अब उनके सर पर यह ख़ब्त सवार हुआ कि हमारा धर्म सर्वश्रेष्ठ है, और सारी दुनिया को उसका अनुयायी होना चाहिए। बस वह इन्सानियत के सम्पूर्ण क़ानून ताक़ पर रख हथियार बाँध-बाँध कर चारों तरफ़ दौड़ पड़े। ब्राह्मणों और क्षत्रियों की पतितावस्था देख कर भगवान बुद्ध बेचैन हो उठे। उन्होंने अपने सुख और ऐश्वर्य को ठुकरा कर कल्याण-मार्ग का आविष्कार किया और भारत को दया तथा अहिंसा का सन्देश सुनाया। परन्तु उनके थोड़े दिन बाद ही बौद्ध-भिक्षु हज़ारों-लाखों ग़रीबों को तप्त तेल के कड़ाहों में तल-तल कर, धर्म-पिपासु संसार को अहिंसा और दया का सबक़ देने लगे! हिन्दू और मुसलमानों की रात-दिन की दाँता-किलकिल देख कर नानक और कबीर उन दोनों को एक कर डालने के लिए दिन-रात घोर परिश्रम करने लगे। परन्तु वह दोनों तो एक न हुए, हाँ विग्रह को और भी उग्र करने के लिए सिक्खों और कबीरपन्थियों के नए सम्प्रदाय ज़रूर बन गए। हिन्दुओं को घोर अन्धकार में देख कर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सोचा कि किसी तरह इन गुमराहों को राह पर लाना चाहिए। बस कोढ़ में खाज की तरह आर्य-समाज की पैदाइश हो गई। और उसने हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, जैन, सिक्ख आदि सभी धर्मों के अनुयायियों से लड़ना शुरू कर दिया। ग़नीमत यही रही, कि अङ्गरेज़ी राज्य की वजह से थोड़ी सी ख़ून-ख़राबी और गाली-गुफ़्तें होने से ज़्यादा की नौबत नहीं आई। नहीं तो ख़ुदा जाने, इस समाज की बदौलत भारत में कैसे-कैसे क़हर बरपा होते।

बात यहीं तक नहीं रह जाती, इन धर्मों के अनुयायियों ने आपस में फ़िर्क़ेबन्दियाँ भी ख़ूब कर डाली हैं। परिणाम यह हुआ है कि निरन्तर धर्म-युद्ध तो हुआ ही करता है, इसके साथ ही यह फ़िर्क़े आपस में भी लड़ कर अपने धर्म की छीछालेदर और अपनी जाति की तबाही किया करते हैं। रोमन कैथोलिक प्रोटेस्टेण्ट्स को फूटी आँखों नहीं देखते, और प्रोटेस्टेण्ट्स रोमनकैथोलिकों को धर्म-द्रोही समझा करते हैं। यूरोप का इतिहास इस बात की साक्षी देता है कि एक अरसा हुआ जब वहाँ ईसाइयों की इस फ़िर्क़ेबन्दी ने मनुष्य के जीवन को पशु के जीवन में तब्दील कर दिया था। अपने फ़िर्क़े की श्रेष्ठता के घमण्ड में वहाँ के ईसाई दूसरे फ़िर्क़े वाले ईसाइयों को जीवित ही जला डालने में धर्म की सर्वोपरि सेवा समझते थे। मुसलमानों में सुन्नी और शिया सम्प्रदाय के झगड़े तो मशहूर ही हैं। मुस्लिम-शक्ति के जर्जरित हो जाने का एक बड़ा कारण सुन्नी और शिया का आपसी वैमनस्य भी समझना चाहिए। और हिन्दू-धर्म के अनुयायियों ने जो फ़िर्क़ेबन्दी की है, वह तो ख़ासा गोरख-धन्धा है—चिड़िया घर में रक्खे जाने के क़ाबिल !!

इन बातों पर विचार करने से समझ में एक ही बात आती है, और वह यह है कि जब-जब कोई महात्मा धर्म की ध्वजा हाथ में लेकर समाज का कल्याण करने की चेष्टा करता है तब-तब एक नए धर्म और उसके अन्तर्गत कई फ़िर्क़ों की रचना हो जाती है। इससे सुधार की अपेक्षा, बिगाड़ ही अधिक होता है और लोगों को धार्मिक कुश्ती लड़ने के लिए नए-नए अखाड़े मिल जाते हैं—फिर तो वह धमाचौकड़ी मचती है, कि ख़ुदा की पनाह। इस धार्मिक कलह से संसार को आज तक जितना त्रास सहना पड़ा है, वह असीम है, और मानव-समाज की जो हानि हुई है, उसे कूत सकना तो सर्वथा असम्भव है। यह असीम त्रास और क्षति मनुष्य की उस प्रवृत्ति का परिणाम है, जो उसके हृदय में अपने धर्म, सम्प्रदाय या जाति की श्रेष्ठता के सम्बन्ध में निरन्तर विकास किया करती है। अतः कहना ही पड़ता है कि धर्म संसार का

भयङ्कर शत्रु है, वह समाज के लिए रचनात्मक नहीं, ध्वंसात्मक है।

आज संसार में जो यह अगणित जातियाँ दिखलाई पड़ती हैं, वह केवल इसी कम्बख़्त धर्म की बदौलत। कहने की आवश्यकता नहीं, कि इन जातियों या फ़िर्क़ों की बदौलत समाज नित्य जर्जरीभूत हो रहा है—उसकी शक्तियाँ कूड़े-कचरे की नाईं बिखरती जाती हैं, बलवान होने के बजाय, वह नित्य निर्बल होता जाता है। मनुष्य की कोमल वृत्तियाँ तक इस जाति और धर्म के दैत्य ने चूस ली हैं! हमारा भारत आज निर्बलता की निम्न-कोटि में इसी जाति और धर्म के दैत्य की बदौलत ही आ पड़ा है। यहाँ सौहार्द्र का भाव कच्चे सूत की अपेक्षा भी कहीं अधिक निर्बल हो गया है। हम जाति-पाँति और धर्म के इस झगड़े के कारण अपने भाइयों के साथ रिश्तेदारियाँ करना तो दूर रहा, खान-पान का व्यवहार भी नहीं कर सकते—यदि करें, तो हमारी जाति चली जाती है। जैसे हम पर उसकी छाप लगी हो। जो धर्म हमारी कोमल वृत्तियों को इस प्रकार कुचलता हो, हमें हमारे भाइयों से रिश्तेदारी करने की मनाई करता हो, उनके साथ खाने-पीने से रोकता हो, हमारे पारस्परिक स्नेह-सूत्र पर भोथरी छुरी रगड़ता हो, उसकी ऐसी-तैसी—हमारा काम होना चाहिए, कि हम उसे पैरों से कुचल डालें, या उसे खदेड़ कर ही दम लें।

धर्म—हाँ धर्म व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का कट्टर दुश्मन है। वह किसी को धार्मिक-ग़ुलामी से नहीं छोड़ना चाहता, उसकी एक-एक शृङ्खला कठोरतापूर्वक मनुष्य को जकड़े रहना चाहती है। उदाहरणार्थ एक़राम रोज़ाना पञ्ज-वक़्ता नमाज़ अदा करता है, अच्छा करता है पर उसे क्या हक़ है, जो वह दूसरों के सर पर सवार हो, और उन पर दबाव डाले कि तुम्हें भी पञ्ज-वक़्ता नमाज़ अदा करनी चाहिए। धर्मगुप्त नित्य दो घण्टे सन्ध्या करता और शिव जी के दर्शन किए बिना जल-ग्रहण नहीं करता, परन्तु उसे यह अधिकार किसने दे दिया, कि वह लाठी लेकर दूसरों पर पिल पड़े और उन्हें अपने विचारों के पीछे चलना चाहे? आज दो हिन्दू-मुसलमान मित्र एक मेज़ पर भोजन नहीं कर सकते, धर्म उनकी इस व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का बाधक है। 'चाँद' के सम्पादक भाई सहगल जी ने मुझे एक बार अपनी बीती हुई घटना सुनाई थी। उसका सारांश यह था कि एक बार वह अपने किसी मुसलमान दोस्त के साथ खाना खा रहे थे। उनके दो-एक जाति-भाइयों को यह बात मालूम हुई। वह उनसे बोले—"आपने मुसलमान के साथ खाना खाया है, आप मुसलमान हो गए!" सहगल जी ने जवाब दिया—"वाह! मुसलमान हो जाने की एक ही कही! जब उन्होंने मेरे साथ खाना खाया, तब वह क्या हिन्दू नहीं हो गए?" कितना मार्मिक उत्तर है, पर धार्मिक संसार में ऐसे उत्तर का कोई मूल्य नहीं समझा जाता। ज़ियत और महेश में सच्ची मोहब्बत है, पर वह आपस में शादी नहीं कर सकते—धर्म शैतान के समान उन दोनों के बीच में आकर खड़ा हो जाता है। दूसरी ओर मुल्ला जी हुजरे में बैठ कर हरामख़ोरी करते हैं, पर वह पवित्र हैं, इसलिए कि वह पञ्ज-वक़्ता नमाज़ अदा करते और सुबह होते ही क़ुरान-पाक लेकर तिलावत को बैठ जाते हैं। उनके सामने अपने परिश्रम से ईमानदारी की रोटियाँ खाने वाला क़ादिर दो कौड़ी की भी क़ीमत नहीं रखता, क्योंकि वह न पाँच बार मस्जिद में जाता है, और न क़ुरान-पाक की तिलावत करता है। शराब पीकर मूर्ति के सामने व्यभिचार करने वाले पण्डित जी पवित्र और अधर्म का नाम सुनते ही थर-थर काँप उठने वाला कासी चमार अछूत है!!

स्मरण रहे कि धर्म से उत्पन्न हुई व्यक्तिगत पराधीनता क्रमशः सम्पूर्ण जाति और समाज पर प्रत्यक्ष आघात करती है। भारत के जर्जर वक्षस्थल पर इस धार्मिक पराधीनता के आघात नित्य होते हुए दिखाई देते हैं। हिन्दू-मुसलमान, ब्राह्मण, अब्राह्मण, सिक्ख आदि जातियों के झगड़े रोज़-रोज़ हमारी राष्ट्रशक्ति में घुन का काम करते हैं। क्या आप जानते हैं कि यदि भारत में यह धार्मिक झगड़े न होते, तो वह आज कहाँ होता? सो जो धर्म नित्य हमारी व्यक्तिगत स्वाधीनता पर कुल्हाड़ी चलाता हो, हमारे बीच में पाखण्ड की दुनिया बनाता हो, हमारे बीच में नीच-ऊँच के भाव पैदा करता हो और हमारे राष्ट्र के पैरों में बेड़ियाँ डालता हो, वह धर्म हमें न चाहिए। अब तो हमें उसे समारोह-पूर्वक फाँसी पर ही लटका देना चाहिए। जब इस धर्म-रूपी शैतान की तलवार हमारे सर पर न झूमेगी, तब हम आप से आप एक ऐसे राष्ट्र के बच्चे हो जायँगे, जिसमें धार्मिक और जाति-पाँति सम्बन्धी कोई झगड़ा न रह जाएगा, जिसमें बसने वाले सभी मनुष्य एक जाति के होंगे और उस जाति में नीच-ऊँच का कोई भाव न रहेगा। जहाँ सब लोग समान-भाव से रहेंगे, आपस में बेखटके रोटी-बेटी का व्यवहार करेंगे।

हो फ़ना के बाद भी अपना कफ़न गाढ़ा

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

अगर पहले से हम करते कहीं ज़ेबे-बदन गाढ़ा,
ज़माने भर से होता, रङ्ग ऐ अहले-वतन गाढ़ा!
कभी भूले से भी करते न थे जो ज़ेब-वतन गाढ़ा;
पहिनते हैं मँगा कर अब वही, नाज़ुक-बदन गाढ़ा!
क़यामत तक न देखेंगे, कभी अफ़लास की सूरत;
न आने देगा पास अपने, ग़मो रञ्जो-मेहन गाढ़ा!
अभी तो ज़िन्दा हैं हम, ओढ़ना है यह बिछौना है;
ज़हे-क़िस्मत जो मरने पर, भी हो अपना कफ़न गाढ़ा!!
यही ठाने हुए हैं, हुक्मे-गाँधी मानने वाले;
ख़ुशी में, रञ्ज में, हर दम रहेगा ज़ेब-वतन गाढ़ा!
सबा कुछ दे गई तरग़ीब, शायद आ के गुलशन में;
पहिनते हैं जो तन-तन कर, जवानाने चमन गाढ़ा!
यही अरमान है दिल का, यही है आरज़ू दिल की;
कि 'बिस्मिल' हो फ़ना के बाद भी, अपना कफ़न गाढ़ा!!

* * *

परन्तु इन क्रान्तिकारी विचारों से यह अर्थ न निकाल लेना चाहिए कि मेरी मन्शा लोगों में अधर्म फैलाने की है। नहीं, मैं चाहता हूँ कि लोगों में धर्म रहे और ज़रूर रहे, पर वह धर्म हो—मानव-धर्म। वास्तव में मनुष्य-मात्र का धर्म एक है और उसका पालन करने में ही सच्चे सुख, सन्तोष तथा शान्ति की प्राप्ति हो सकती है। मानव-धर्म के सिद्धान्त जटिल नहीं, अत्यन्त सहल हैं। उनमें बुद्धि को चक्कर में डालने वाली गम्भीर फ़िलॉसफ़ी का लेश भी नहीं है। सदा सत्य का पालन करना, परस्पर दया और उदारता के भाव रखना, व्यभिचार नशाख़ोरी आदि दुराचरणों से दूर रहना, अहिंसा में विश्वास रखना, अपने देश पर मर मिटने के लिए तैयार रहना, यही थोड़े से सिद्धान्त हैं, जो मानव-धर्म की स्थापना करते हैं। आप मिहरबानी कर मुझे बतलावें कि इनका पालन करने में आपको क्या तकलीफ़ हो सकती है और इनका पालन करते हुए किसी को यह कहने की क्या ज़रूरत है, मैं मुसलमान हूँ, मैं हिन्दू हूँ, मैं ईसाई हूँ और मैं बौद्ध हूँ? मैं समझता हूँ, कि इस धर्म का पालन करते हुए उसे यह कहना चाहिए कि मानव-धर्म का पालन करता हूँ मैं मनुष्य हूँ और मनुष्य ही मेरी जाति है। यदि इसके विरुद्ध वह यह कहता है कि मैं अमुक धर्म का मानने वाला हूँ, मेरी जाति अमुक है, तो वह निश्चय मनुष्य नहीं है, और चाहे जो कुछ हो। मनुष्य होने का दावा रखने वाले को तो केवल मानव-धर्म का ही पालन करना पड़ेगा।

रही उपासना की बात, सो मैं न तो किसी के हृदय पर ताला डालने का पक्षपाती हूँ, और न यही चाहता हूँ, कि दुनिया से ईश्वर को खदेड़ दिया जाय। मेरा तो विश्वास यह है कि मनुष्य-मात्र उसी परम-पिता के बच्चे हैं और उन्हें यह अधिकार है, कि वह ख़ुशी-ख़ुशी उसकी आराधना करें। मैं तो यह समझता हूँ कि वह अपने बच्चों के प्यार का भूखा है, और उसे वह प्यार अर्पण करते हुए बच्चों को यह कहने की ज़रूरत नहीं कि मैं शैव हूँ, मैं शाक्त हूँ, मैं वैष्णव हूँ, मैं ईसाई हूँ और मैं मुसलमान हूँ। यह तो केवल मनुष्य का बनाया हुआ भेद-भाव है, और वह स्वयं अपने बनाए हुए इस भेद-भाव में एक अनन्त काल से चक्कर काट रहा है। भेद-भाव से ईश्वर की प्राप्ति होगी—कैसी हिमाक़त भरी मूर्खता है। अरे! वह तो हृदय के सच्चे प्यार से प्राप्त होगा। इसके लिए किसी निश्चित उपासना-पद्धति की क्या ज़रूरत है? ज़हूरबख़्श जी चाहें तो मस्जिद में जाकर उसे अपनी भक्ति-पुष्पाञ्जलि अर्पित करें और सहगल जी चाहें तो मन्दिर में जाकर और घड़ियाल-शङ्ख बजा कर उसे रिझावें। यदि दोनों यह भी न चाहें, तो जो पद्धति उन्हें पसन्द आवे—फिर चाहे वह उनकी निकाली हुई हो, चाहे ईसा, मुहम्मद, बुद्ध या और किसी की निकाली हुई हो—उसी के द्वारा उस पर अपना प्रेम निछावर करें। मेरे कहने की ग़रज़ है, कि जो जिस पद्धति से चाहे उपासना करे, और न चाहे तो न करे, पर इस मामले में किसी को ज़बर्दस्ती अपनी टाँग न अड़ानी चाहिए, और न किसी की आक़बत के लिए ही फ़िक्र करनी चाहिए। बस!!

इधर थोड़े दिनों से कुछ लोगों पर एक नई सनक सवार हुई है। कुछ लोग तन्ज़ीम और तब्लीग़ द्वारा अपनी क़ौम का उत्थान करना चाहते हैं; और कुछ लोग शुद्धि को ही अपनी क़ौम की तरक़्क़ी का ज़रिया मान बैठे हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो हिन्दू-सङ्गठन को ही हिन्दू-जाति के कल्याण की कुञ्जी मानते हैं, और कुछ ऐसे हैं, जो वेद-शास्त्रों की दुहाई देकर जाति-पाँति तोड़क मण्डल स्थापित कर हिन्दू-जाति को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए पागल हो रहे हैं। मेरा इन सब से यही कहना है, कि यारो! तुम सब गुमराह हो, कुछ-कुछ पागल भी हो। इन वेद-शास्त्रों को आलमारी में बन्द कर दो और कमर कस कर इन सब बुराइयों की जड़ इस बदनसीब धर्म को खदेड़ने के लिए तैयार हो जाओ और भारत में एक जाति की ही स्थापना करो—न कोई हिन्दू रहे, न कोई मुसलमान और न कोई ईसाई ही। सम्पूर्ण भारतवासी एक जाति और एक धर्म के मानने वाले हो जावें—वह जाति हो मनुष्य-जाति और वह धर्म हो मानव-धर्म। जिस दिन यह क्रान्ति होगी, उस दिन भारत स्वर्ग हो जावेगा। उस दिन आकाश से देवता सुमन-वृष्टि करेंगे, और गन्धर्व बधाई से गीत गावेंगे!

मैं अच्छी तरह जानता हूँ, कि यह लेख देखते ही लाखों नेत्रों से अग्नि-कण विकीर्ण होंगे; और लाखों आदमी बदहवास हो उठेंगे, परन्तु क्या किया जाए, इस क्रान्ति के सिवा अब हमारे पास कोई उपाय शेष नहीं है, और भारत के मङ्गल के लिए हमें इस क्रान्ति का आह्वान करना ही पड़ेगा। यदि हम चाहते हैं, कि हमारे मुखड़ों पर एक बार फिर बाल-रवि की लाली दिखाई दे, और हम सुख से खाएँ-खेलें, तो अब हमें इस क्रान्ति की पूजा-अर्चना करनी ही पड़ेगी।

* * *

ब्रिटेन की कुछ पेचीदी समस्याएँ

[श्री० केशवदेव जी शर्मा]

नेपोलियन के ह्रास के बाद महासमर को छोड़ कर ब्रिटेन के लिए ऐसा कठिन समय कब आया होगा, जब कि उसे एक साथ इतनी विपत्तियों का सामना करना पड़ा हो। उसके पराक्रमी सेनापति, अद्वितीय जहाज़ी चतुर उड़ाके, प्रवीण वैज्ञानिक, विपुल पूँजीपति और सब से अधिक उसके अत्यन्त पटु दक्ष राजनीतिज्ञ जो कि विपत्ति के पहाड़ को शीघ्र ही अपने पराक्रम और कौशल से गौधूलि में परिवर्तित कर देते हैं, आज भी उसके पास मौजूद हैं; महा शक्तिशाली प्रबल मित्रों का अभयदान भी आज उसे सर्वोत्तम प्राप्त है, किन्तु फिर भी वह विपत्तियों में ग्रस्त है और उनसे निकलने का उसे कोई मार्ग नहीं सूझता। महासमर से घायल, गृह समस्याओं में जकड़ा हुआ इङ्गलैण्ड, यद्यपि घर से बाहर भी बड़ी दूर तक अपने स्वार्थों की रक्षा में बड़े यत्नपूर्वक लगा हुआ है, लेकिन वास्तव में उसे अपना उचित कर्त्तव्य सूझ नहीं पड़ता। प्रत्येक नीति की वह एक नवीन आविष्कार की भाँति परीक्षा करता है, सफलता का निश्चय नहीं। उसके इतिहास में बहुत दिनों बाद ऐसा समय आया है, जब कि उसे अपने भविष्य की इतनी चिन्ता रही हो।

भारत में क्रान्ति, इजिप्ट में पूर्ण विरोध, बेकारी की बाढ़ का दिन पर दिन बढ़ना, उसके कितने ही प्रधान व्यवसायों में गहरा घाटा, व्यापार में उसके नेतृत्व का मान-भङ्ग, आर्थिक दशा की भयानक स्थिति, स्वयं पार्लियामेण्ट की पार्टियों की फूट के कारण असाध्य निर्बलता, राष्ट्र पर ऋण का असह्य भार, देशवासियों का टैक्सों के भारी बोझ से दबकर चिल्लाना, उपनिवेशों में उसकी धाक का घोर प्रतिवाद, यूरोपियन राष्ट्रों पर से भी दबाव का उठ जाना, भयङ्कर आकस्मिक विपत्तियाँ, घर और बाहर—सर्वत्र अनिश्चित, परिस्थिति, यही ब्रिटेन का वर्तमान चित्र है। इन्हीं सब दशाओं ने मिल कर उसके दृढ़ आशावाद को ज़ोर से हिला दिया है।

अब से कुछ समय पूर्व जो अदम्य उत्साह और विजयोल्लास प्रत्येक अङ्गरेज़ के हृदय को फूल की तरह उछालता था वह एक अजीब उलझन, एक गहरी चिन्ता में परवर्तित हो गया है। कुछ ही वर्षों पहिले इङ्गलैण्ड की गर्वपूर्ण महानता यूरोप के अन्य राष्ट्रों की ईर्ष्या का कारण थी, लेकिन अब वे उससे अपनी स्थिति मिला कर देखने पर अपने ही को कहीं अच्छा पाते हैं।

सन्, १९१९ में, जब कि जर्मन जल-सेना, ऑस्ट्रियन जल-सेना और रूसी जल-सेना संसार के थियेटर से प्रायः लोप हो चुकी थी और फ्रान्स और इटली की जल-सेनाएँ भी युद्ध से थक कर एक लम्बे विश्राम की टोह में थीं और जब कि पिछली सन्धियों द्वारा बने हुए सामुद्रिक युद्ध के नियमों का भी महासमर में विध्वंस हो चुका था, उस समय जल-संसार का अखण्ड स्वामी इङ्गलैण्ड के सिवा और कौन था? एशिया में भी उसके एक मात्र प्रतिद्वन्द्वी रूस के पतन हो जाने पर वहाँ उसकी सत्ता में बाधा डालने वाला और कौन रह गया था?

लड़ाई के समय में इङ्गलैण्ड ने अपनी और अपने उर्वर उपनिवेशों की वस्तुओं और पदार्थों के सामुद्रिक व्यापार में अपरिमित द्रव्य लाभ किया था। महासमर के बाद शान्ति के प्रथम वर्ष में भी अत्यन्त मँहगाई के कारण उसको ख़ूब लाभ हुआ और उस समय वह अपने इतिहास में पहिले से कहीं अधिक शक्तिशाली और साथ ही अमीर भी था। उसे अपना विश्वनायक बनने का पुराना स्वप्न कुछ-कुछ सत्य होता प्रतीत होने लगा था। इसी समय पर्शिया और टर्की में भी उसने काफ़ी राज्यविस्तार बढ़ा लिया।

इस प्रकार ब्रिटेन ने, जैसे कि सन्, १८१५ में नेपोलियन को बाँध कर विश्व पर अपनी सबलता का सिक्का बैठाया था, उसी प्रकार इस बार भी वह महासमर के उपरान्त एक बार फिर संसार का स्वामी हुआ। लेकिन धीरे-धीरे गति बदल गई और इन दस वर्षों के भीतर ही उसकी दशाओं में बड़ा गम्भीर अन्तर हो गया है।

अमेरिका ने शीघ्र ही एक अत्यन्त विराट जल-सेना निर्माण करना आरम्भ कर दिया। ब्रिटेन ने भी अपनी शक्ति को यथावत बलवान रखने के लिए, साथ ही साथ जल-सेना बढ़ाने का उद्योग किया, परन्तु आर्थिक स्थिति के कारण अमेरिका से मुक़ाबला करना असम्भव था। अब अमेरिका और जापान दोनों की जल-सेनाएँ अपने को ब्रिटेन की जल-सेना से किसी तरह कम नहीं समझतीं। लड़ाई द्वारा उत्पन्न हुई ब्रिटेन की कृत्रिम और क्षणिक व्यापारिक सम्पदा भी अधिक नहीं ठहर सकी, उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि महासमर ने उसके अनेक व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्वियों को संसार में जन्म दे दिया है और इङ्गलैण्ड की बेकारी कोई क्षणिक विपत्ति नहीं है, बल्कि एक प्रकार का असाध्य रोग है।

टर्की के उत्थान के कारण ब्रिटेन को वहाँ से भी हटना पड़ा और साथ ही जो बहुमूल्य सुभीते उसने अपने लिए सिवरीज़ की सन्धि में प्राप्त किए थे वह भी निकल गए। सन्, १९१९ में पर्शिया के ऊपर प्राप्त किया हुआ प्रभुत्व मुश्किल से कुछ महीनों ठहरा। उधर चीन में अङ्गरेज़ी प्रभाव के विरुद्ध इतनी तीव्र उत्तेजना फैली कि उसने एक भयानक क्रान्ति का रूप धारण कर लिया। रूस के विषय में भी ब्रिटेन की जो धारणा थी वह निर्मूल सिद्ध हुई। जिस राष्ट्र के भविष्य के बारे में अनेक प्रकार की भयावह और निराशाजनक कल्पनाएँ की जाती थीं, वही अब मानव-जाति को एक नवीन उज्ज्वल पथ की ओर अग्रसर करने में यथेष्ट सफल हो रहा है। उसकी शासन-पद्धति और समाज-सङ्गठन के तीव्र प्रचार के कारण रूस ब्रिटेन का अब एशिया ही में प्रबल भयहेतु नहीं रहा है, अपने घर, इङ्गलैण्ड की भी उसे सोवियट की विचार-धारा से बड़ी सतर्कता से रक्षा करनी होती है।

इधर भारत को स्वतन्त्र करके अपने साम्राज्य की लगभग तीन चौथाई प्रजा को खोकर संसार में उसका क्या स्थान रहेगा? उसके सर्व-प्रधान ख़रीदार भारत के बिगड़ जाने पर उसका माल कहाँ बिकेगा? भारत में व्यापार में फँसी हुई उसकी पन्द्रह अरब रुपए की पूँजी का भविष्य क्या होगा? इन सब के अतिरिक्त इङ्गलैण्ड के भीतर ही एक ऐसा गम्भीर परिवर्तन हो गया है, जिसका उसके भावी इतिहास पर बहुत बड़ा असर पड़ेगा। वह है मज़दूरों और मध्य श्रेणी के लोगों में धनियों के प्रति अश्रद्धा का उत्पन्न होना। फ़्रान्स की क्रान्ति से लेकर सन्, १९१४ तक इङ्गलैण्ड लिबरल और कन्ज़रवेटिव दो दलों में बटा हुआ था; उच्च और अमीर श्रेणी के हाथों में ही वास्तव में राष्ट्र की नीति का सञ्चालन था। मज़दूर और मध्य श्रेणी वाले उनमें विश्वास रखते थे और उन्हें अपना श्रेष्ठ मानने में उनको कोई आपत्ति न थी। अपने निजी अधिकारों और लाभों के बारे में, यद्यपि वह अबोध न थे और उनके लिए लड़ना भली प्रकार जानते थे, परन्तु राजनीति में वे कोई विशेष हस्तक्षेप न करते थे। लेकिन अब स्थिति बिलकुल बदल गई है। इङ्गलैण्ड में भी मज़दूरों और मध्य श्रेणी के लोगों में उन्हीं विचारों की लहर चल पड़ी, जिन्होंने यूरोप को एक समय तक क्रान्ति के नारों से कँपाया था; लेकिन यहाँ पर परिवर्तन की गति शान्तिमय और क्रमशः है। मज़दूर जन-साधारण और मध्य श्रेणी के लोगों ने अब स्वयं अपनी एक पार्टी (लेबर-पार्टी) बना ली है, और उसका वहाँ कितना प्रभाव है यह सभी जानते हैं। भविष्य में इङ्गलैण्ड की राज्य-सत्ता शायद इसी दल के हाथों में रहेगी और अमीर जातियों को अब मौन रहना होगा।

यह समझा जा सकता है कि ब्रिटेन की यह अवस्था अधिक दिनों तक नहीं रहेगी, शीघ्र ही उसे सारी पहेलियों को किसी न किसी तरह सुलझाना ही होगा, लेकिन भारत के विषय में वह क्या करेगा? क्या वह अपनी भूल से उसे खो ही देगा? या इजिप्ट की नम्रता से चतुर राजनीतिज्ञों की भाँति किसी जाली समझौते पर आकर उससे अपना सम्बन्ध स्थिर रक्खेगा और फिर एक अपरिमित समय तक भारत के सहयोग और सहायता का असीम लाभ उठाएगा? यह ऐसा प्रश्न है जिसके विषय में भारत और ब्रिटेन के ही नहीं, बल्कि यूरोप के भी बड़े-बड़े मस्तिष्क चक्कर में पड़े हैं। यूरोप का सर्वप्रसिद्ध ऐतिहासिक फ़ेरो भारत की स्थिति पर अपने विचार प्रगट करते हुए कहता है :—

" . . . . in India the malady is past cure. If India were to rise, as it did in the middle of the nineteenth century, there would still be a remedy, with force of arms England could quell the revolt and re-establish a certain order. . . . . .

" But the spirit of revolt, which Gandhi has succeeded in rousing in India is a subtle and invincible contagion that cannot be cured either with kindness or with harshness; neither with caresses nor with fire."

वास्तव में यहाँ की स्थिति बड़ी पेचीदी और गम्भीर हो गई है और उसका सारा दोष ब्रिटेन पर ही है। उसने भविष्य के परिणाम का कुछ भी विचार न करके भारतीय हृदय पर अनेक मर्मान्तक चोटें पहुँचाई हैं। उसने भारत के धन और सेवा को एक कृपालु स्वामी के भाव से ग्रहण न करके, फ़ौजी जनरल की सख़्ती से उससे वसूल की है। उसने, जिस देश से अपरमित लाभ उठाया है, उसके निवासियों को उत्कट घृणा की दृष्टि से देखा है। उसने उसके उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन देने के बदले, उन्हें एकान्त नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और दरिद्रता की चिनगारी भारत में डाल दी। उसने उसकी सन्तान को अपने बच्चों की भाँति महापुरुष बनाने की कामना कभी नहीं की, बल्कि इस ध्येय से शिक्षा दी, कि एक ऐसी नवीन जाति बन जाय, जो कि ग़दर के आततायियों की तरह बर्बर स्वभाव की न होकर, सीखे हुए पालतू पशु की भाँति नम्र हो और राज्य की छोटी मज़दूरी के कार्य करती रहे, जिससे उन्हें उनके शाही कर्त्तव्य में विशेष परिश्रम का अनुभव न हो।

लेकिन यह जाति, जितना अङ्गरेज़ उसे सिखाना चाहते थे, उससे कहीं अधिक सीख गई। पाश्चात्य शिक्षा से उसके विचारों में पाश्चात्य सभ्यता का भी समावेश हो गया, वहाँ की मनुष्यता के आदर्श उसके दिल में समा गए। उसे मालूम हो गया कि उनके देश पर अनर्थ हो रहा है, उनसे अनुचित लाभ उठाया जा रहा है। दफ़्तर, स्टेशन, होटल, अस्पताल—सभी जगह उन्हें अपने अपमान का अनुभव

(शेष मैटर १९वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

पुरुष और स्त्री

[श्री० नत्थीमल जी उपाध्याय "बेचैन"]

हम पुरुष हैं। स्त्रियाँ हमारी गुलाम हैं। हमारी ख़रीदी हुई वस्तु हैं, हमारे पैर की जूती हैं, उनका हम चाहे जैसा उपयोग करें, इसका हमें अधिकार है। हम वीर्यशून्य, बलहीन, सौन्दर्य विहीन, जर्जरीकृत, कृश काय और—अवगुणों से सम्पन्न वृद्ध होते हुए भी, एक-दो नहीं, दस-पाँच नवयौवना, गुणशीला, सौन्दर्य की प्रतिमाओं से—अनजान, अबोध सुकुमारी कन्याओं से उनकी इच्छा न होते हुए भी, विवाह कर सकते हैं। उन्हें ख़रीद सकते हैं और बेच सकते हैं!

क्योंकि हम पति हैं, स्वामी हैं, नाथ हैं, ईश हैं, ईश्वर हैं। वे हमारी गुलाम हैं, दासी हैं, सेविका हैं, अनुचरी हैं। हमने नाथ बन कर उन्हें परतन्त्रता की डोर से नाथ रक्खा है। स्वामी बन कर उनकी नाक में नकेल डाल दिया है। वे हमारे साधारण इशारों की बन्दी हैं। हमको प्रसन्न करने की सामग्री हैं। हमारे घरों का काम करने की मैशीन हैं। हमारी आज्ञाकारिणी भृत्या हैं। हम ही उनके भाग्य-विधाता हैं। उनके सुख-दुख की डोर हमारे बलवान हाथों में है। हम उन्हें करोड़ नाच नचा सकते हैं। वे हमारे हाथों की कठपुतली हैं। हम उन पर मनमाने अत्याचार कर चुके हैं और कर रहे हैं। परन्तु उन्हें हमारे विरुद्ध बोलने का अधिकार नहीं। हमारी विपक्षता में खड़े होने का साहस नहीं। हम एक-दो नहीं, दस-बीस पत्नियाँ और उपपत्नियाँ रख सकते हैं; अनेक वाराङ्गनाओं से प्रेम करके अपने दिल को ख़ुश कर सकते हैं। सैकड़ों कोमलाङ्गियों के सतीत्व को बलात्कार हँसते-हँसते लूट कर, अपनी कामाग्नि बुझा सकते हैं, परन्तु कोई हम पर दोषारोपण नहीं कर सकता। कोई हमें पापी नहीं बतला सकता और न किसी में हमें दण्ड देने की शक्ति है। क्योंकि हम पुरुष हैं।

दूषणों से ओत-प्रोत और पाप से परिपूर्ण होने पर भी परम पवित्र हैं। इसके ठीक प्रतिकूल स्त्रियाँ सर्व-गुण सम्पन्न और परम पुनीत प्रेम की प्रत्यक्ष प्रतिमा होते हुए भी, हमारी दृष्टि में अविश्वसनीय, घोर पापिष्ठा और पापीयसी हैं। पाप और दुराचार की खानि हैं। अतएव गोस्वामी तुलसीदास जी ने उनके लिए यमलोक की अनेक भयानक यन्त्रणाओं के दण्ड की व्यवस्था उपयुक्त ही रक्खी है। देखिए, आप स्त्रियों को क्या न्यायपूर्ण शिक्षा देते हैं?

वृद्ध रोगवश जड़ धन हीना।
अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना॥
ऐसेहु पति कर किय अपमाना।
नारि पाव यमपुर दुख नाना॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा।
काय वचन मन पति-पद प्रेमा॥

यद्यपि पति बुड्ढा, रोगी—वीर्य और बल-शून्य मूर्ख, दरिद्र—जो अपनी स्त्री को मधुर वाणी और रूखे-सूखे भोजन द्वारा भी सन्तुष्ट नहीं कर सकता। अन्धा बहिरा, अकारण क्रोध करने वाला और महारङ्क है। परन्तु फिर भी स्त्री को उसका सम्मान ही करना पड़ेगा। यदि कभी भूल से भी वह उसका अनादर अथवा उपेक्षा कर बैठी, तो वह अक्षम्य अपराध की भागिनी हो जावेगी फिर उसे दण्ड भी कैसा कठोर मिलेगा! यमलोक के अनेक दुख। जिनके सुनने ही से आत्मा काँपने लगती है। पति भले ही उपर्युक्त गुणों* से विभूषित है; परन्तु स्त्री का केवल यही एक धर्म, व्रत और नियम है कि वह उसके चरणों ही में प्रेम करे। चाहे पति उन्हीं चरणों से उसे ठुकरा दे, इसकी परवा नहीं।

वाह गोस्वामी जी, आपने प्रेम भी क्या खिलवाड़ समझ रक्खा था, जो स्वेच्छा से नहीं, हृदय के आकर्षण द्वारा नहीं, प्रत्युत दबाव और कल्पित यमलोक के अनेक दुखों के भय से किया जा सकता है। आप महाकवि, राम के महाभक्त और दार्शनिक होते हुए भी, थे तो पुरुष ही। जब प्रायः समग्र पुरुष-समाज अपनी जाति का पूर्ण पक्षपात करता है तो फिर आप ही किस प्रकार उससे वञ्चित रह सकते थे।

धृष्टता क्षमा हो, थोड़े समय के लिए मान लीजिए, गोस्वामी जी, आप पुरुष-जाति में जन्म न लेकर, स्त्री जाति में अवतार लेते तो सम्भवतः पूर्वोक्त चौपाइयों को हम सब निम्न-लिखित रूप में देखते :—

वृद्धा रोगिनि जड़ धन हीना।
अन्धि-बहिरि क्रोधिन अति दीना॥
ऐसिहु तिय कर किय अपमाना।
पुरुष पाव यमपुर दुख नाना॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा।
काय वचन मन तिय पद प्रेमा॥

हम अहर्निशि स्वेच्छानुसार व्यभिचार करें, बलात्कार करें, अत्याचार करें, परन्तु कोई रोक नहीं, कोई बन्धन नहीं, कोई पाप नहीं और न किसी दण्ड की व्यवस्था है। हममें असंख्य अवगुणों के होते हुए भी एक बहुत बड़ा गुण यह है कि हम पुरुष हैं। इसीसे परम पवित्र हैं। अपराधी होने पर भी क्षम्य हैं। परन्तु स्त्रियों में सम्पूर्ण गुण वर्तमान होते हुए भी, एक महाव-गुण यह है कि वे स्त्रियाँ हैं, हमारी गुलाम हैं और हैं हमारी आश्रिता! एतदर्थ वे निरपराधिनी होने पर भी दण्डनीय हैं।

हम अपना अपराध उनके माथे मढ़ कर साफ़ बच सकते हैं। समाज की अन्ध-दृष्टि में आदर और विश्वास के पात्र बन सकते हैं। जन-समुदाय में बैठ कर और दर्प से छाती फुला कर अपनी आत्म-श्लाघा कर सकते हैं। हम कई सुन्दरी, युवती और गुणशीला पत्नियों के जीवित रहने पर भी, उन्हें सन्तुष्ट रखने की क्षमता न होने पर भी, नित्य नवयौवनाओं तथा अल्प-वयस्का किशोरियों के साथ विवाह कर सकते हैं और उनसे कुछ दिनों प्रेम करके, पुरानी जूती की नाईं उन्हें पृथक कर सकते हैं। हमारे समाज के लकीर के फ़क़ीर दक़ियानूसी सङ्कुचित विचारों के धर्म-धुरन्धर वेद-शास्त्रों की झूठी दुहाई देकर, इस काम को न्याय-सङ्गत और शास्त्रानुकूल बतलाते हैं। परन्तु अक्षत योनि की बाल-विधवाओं को, जो अपने भूतपूर्व पति के सहवास से नितान्त वञ्चित रहती हैं, दूसरे विवाह की अनुमति देना, उनकी वक्र-दृष्टि में पाप ही नहीं; वरन घोर पाप है।

वे हमारा प्रबल पक्षपात इसीलिए करते हैं, कि वे भी पुरुष हैं। और हम भी पुरुष हैं। हमारे प्राचीन धर्म-ग्रन्थ भी हमारा कुछ कम पक्षपात नहीं करते हैं। इसका कारण भी यही है कि उनके रचयिता मनु, पराशर इत्यादि ऋषिगण भी पुरुष ही थे। यदि उनको बनाने वाली महिलाएँ होतीं, तो सम्भवतः हमारे सामाजिक तथा धार्मिक रीति-रिवाज ठीक उनके विपरीत होते। फिर स्त्रियाँ हमारी गुलामी की ज़ञ्जीर में नहीं जकड़ी जातीं; प्रत्युत हम उनके गुलाम दिखलाई देते। वे स्वेच्छानुसार चाहे जितने विवाह कर सकती थीं और हमारे लिए दूसरे विवाह का विचार करना भी पाप समझा जाता। यदि हम किसी दूसरी ललना पर मोहपूर्ण दृष्टिपात करते तो हमारे लिए घोर नरक का विधान अवश्य रक्खा जाता। फिर हम दुखित होकर बिलबिलाते और स्त्रियाँ वर्तमान यूरोप तथा अमेरिका की भाँति, हमारे ऊपर शासन करतीं। यदि कभी हमारी दशा पर तर्स खाकर अपने प्रेम की कुछ भीख हमें दे देतीं तो हमको इसीमें अपना सौभाग्य समझना पड़ता; तब हमारा विवाह और सुख उनकी इच्छा पर निर्भर रहता; हम पर नहीं। परन्तु यहाँ तो स्त्रियों की क़िस्मत का पाँसा ही पलट गया। ऐसा होता कैसे?

हमको पिता, चाचा, भाई इत्यादि कुटुम्बियों की मृत्यु के पश्चात उनकी समस्त सम्पत्ति ग्रहण करने का पूर्णाधिकार प्राप्त है। क्योंकि हम पुरुष हैं। परन्तु स्त्रियाँ विशेषतया हिन्दू स्त्रियाँ अपने पिता, भाई, चाचा, पति इत्यादि अपने किसी कुटुम्बी की सम्पत्ति की

*पुरुष-जाति में होने के कारण, कदाचित गोस्वामी जी को ये महागुण गुण ही दृष्टिगोचर हुए हों, अतएव हम भी उन्हें गुण ही लिखेंगे।

—लेखक

[१८वें पृष्ठ का शेषांश]

होने लगा। अतः अपने शासकों के विरुद्ध उन्होंने एक विनम्र आन्दोलन को जन्म दिया। लेकिन शासक जाति इस भयङ्कर भ्रम में पड़ कर, कि हमारा अपना आतङ्क और प्रतिष्ठा क़ायम रखने में ही कल्याण है, उसकी अवहेलना ही नहीं करती रही, बल्कि कुछ ऐसे प्रतिघात भी किए, जिन्होंने भारत के लिए इङ्गलैण्ड-प्रेम को एक प्रकार से असम्भव ही बना दिया।

अमेरिका का ऋण भी यूरोप को बुरी तरह दबा रहा है, और अपने देश के उद्योग-धन्धों को अधिक परिश्रम और चतुरता से चला कर, इस कठिन व्यापारिक प्रतियोगिता के ज़माने में, धन कमा कर ऋण चुकाना सब को असम्भव सा प्रतीत होता है। अभी इसी वर्ष में संशोधित की हुई अमेरिकन टैरिफ़ ने दशाओं को और भी सङ्कुचित कर दिया है। इससे यूरोप के माल की बिक्री अमेरिका में बहुत ही कम रह जाएगी। ब्रिटेन भी उन्हीं ऋणी राष्ट्रों में से एक है, परन्तु अमेरिका का शायद वह सब से गहरा दोस्त है।

जो कुछ भी हो, ब्रिटेन किस तरह इन सब आपदाओं से छुटकारा पाकर फिर अपने को राष्ट्र-शिरोमणि बनाता है, राजनीतिज्ञों के लिए वास्तव में यह अध्ययन का विषय होगा।

* * *

उत्तराधिकारिणी नहीं मानी जातीं। क्योंकि वे स्त्रियाँ हैं। हमारी दासी हैं, हमारी गुलाम हैं। उनके तन, मन, धन सब पर हमारा अधिकार है। परन्तु हमारी किसी वस्तु पर भी उनका अधिकार नहीं है! हम उनको ठोक सकते हैं, पीट सकते हैं। उनके ऊपर नित्य भीषण पदाघात कर सकते हैं, उनको जला सकते हैं, कुदा सकते हैं। उनके ऊपर चाहे जितने भयानक अत्याचार और भीषण अन्याय कर सकते हैं। उनके अमूल्य सतीत्व को दिन-दहाड़े नष्ट-भ्रष्ट करके उनकी इज़्ज़त को बेधड़क होकर लूट सकते हैं और लुटा सकते हैं। बीच बाज़ार में खड़े होकर, उनकी लाज-शर्म को भङ्ग करके, उनकी इज़्ज़त को टके सेर के भाव से बेच सकते हैं!

अपनी काम-पिपासा की शान्ति के निमित्त, उन्हें अनेक प्रलोभन देकर और अपने कृत्रिम प्रेम-पाश में फँसा कर, पीछे से कुत्तों की तरह दुतकार सकते हैं। ठोकर देकर ठुकरा सकते हैं और लात मार कर निकाल सकते हैं। इसका हमें स्वत्व है। इसका हमें अधिकार है। क्यों कि हम पुरुष हैं।

भारत वतन हमारा!

[श्री० राधावल्लभ वाजपेयी, 'प्रेम']

हम हैं वतन के ख़ादिम, भारत वतन हमारा।
हम नूरे-चश्म इसके, यह दीदे-दिल दुलारा !!
गर ख़ाक में मिलें हम, ख्याले वतन न भूलें।
उठती रहें सदाएँ, भारत वतन हमारा !!
हम मुन्तज़िर हैं तेरे, रग-रग में तू रमा है!
क़ुर्बान तेरे दर पे लख़्ते-जिगर हमारा !!
आज़ाद हम करेंगे, सय्याद के क़फ़स से।
रौशन उरूज फिर हो, यह आशियाँ हमारा !!
रँग देंगे ख़ूँ से अपने क़ातिल के तेग़ को हम!
हर्गिज़ मगर न होगा ज़ुल्मो-सितम गवारा ॥
नाक़स के सङ्ग दिल के अरमान चूर होंगे।
गुर्दो-ज़मीं के ऊपर चमके तेरा सितारा !!
हुब्बे-वतन न होना हरगिज़ तु दूर दिल से!
होंगे फ़ना वतन पे, भारत वतन हमारा !!

* * *

हमारा कर्त्तव्य है कि हम पदाघातों द्वारा उनका आदर करें, डण्डों से उनका स्वागत करें, कटु वचनों तथा गालियों की उनके ऊपर वर्षा करें, उन्हें अपने पैर की जूती, अपने भोग-विलास तथा सुख की सामग्री, अपने घर की दासी और अपने प्रेम की भिखारिणी समझें! और उनका धर्म है कि वे नित्य हमारे द्वारा अपमानित, पीड़ित एवं उपेक्षित होने पर भी हमें प्रत्यक्ष परमेश्वर माने !!

अन्ध श्रद्धा और अन्ध बुद्धि के वशीभूत होकर परमात्मा के तुल्य हमारी सेवा-शुश्रूषा तथा पूजा करें। क्योंकि हम पुरुष हैं, पति हैं, परमेश्वर हैं। और वे स्त्री हैं, गुलाम हैं। हमारी आश्रिता दासी हैं। इसी भाव से प्रेरित होकर कवि ने कहा है :—

पुरुष पुण्य का रूप है, नारी पाप निधान।
अधःपतन का गेह है, बचते रहो सुजान ॥

कैसे भव्य भाव हैं, कितने उच्च विचार हैं, क्या विचित्र न्याय है ??

* * *

ईरान के भाग्य-विधाता रज़ाशाह की विचार-प्रौढ़ता

[श्री० गुलमुहम्मद]

यह प्रकृति का अटल नियम है कि जब पृथ्वी का कोई भी भाग अन्यायपूरित, पराधीन, कपटी, अधर्मयुक्त एवं छल-छद्मपूर्ण हो जाता है और वहाँ के मनुष्य इस रोग-पाश में अच्छी तरह फँस जाते हैं, तो उस स्थान पर वहाँ के मनुष्यों में न्याय, सत्य, निष्कपट सुधार और स्वाधीनता आदि सद्गुणों का सञ्चार करने। और उनकी अवनति में उन्नति की शुष्क मात्रा की जागृति करने के लिए प्रकृति कोई न कोई प्रभावशाली महान आत्मा उत्पन्न करती है, ताकि वह उन मानवी हृदयों पर अपना प्रभाव डाल कर न्याय, सत्य, स्वतन्त्रता आदि सन्मार्ग पर चलने की योग्य शिक्षा दे सके! और वास्तव में यह बात सच भी है। क्योंकि अकसर ऐसा इतिहास पढ़ते व धर्म-ग्रन्थों का अनुशीलन करने से विदित होता है कि जो कुछ परिवर्तन संसार में समय-समय पर हुआ है, वह सिर्फ़ एक पक्की नींव के आधार के ऊपर ही होता गया है और अभी वर्तमान काल में भी होता जाता है।

कुछ वर्ष पूर्व की बात है कि ईरान के भाग्य-विधाता रज़ाशाह का जन्म एक कुलीन एवं ग़रीब घर में हुआ था। इनके पिता का नाम अब्बास अली था। अब्बास अली एक बहुत नीचे पद का सैनिक अफ़सर था, जिसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही ख़राब थी और वह अपने कुटुम्ब का जीवन-निर्वाह बड़ी ही कठिनाई से करता था। अब्बास अली सकुटुम्ब स्वादकोह में रहता था, जो तेहरान से १२५ मील व मावन्द नामक स्थान से कुछ दूर आल्बुर्ज नामक पर्वत के सब से ऊँचे रमणीक शिखर पर स्थित है।

अब्बास अली की दो स्त्रियाँ थीं। जिनमें से पहिली स्त्री के चार और दूसरी स्त्री के एक पुत्र था। एक बार किसी कारणवश अब्बास अली तेहरान गया और वहाँ उसने उपरोक्त लिखित एक दूसरी साधारण स्त्री से शादी कर ली। उसी से उसे एक पुत्र रज़ा नामक उत्पन्न हुआ। जो इस समय रज़ाशाह पहेलवी के नाम से ईरान का विधाता बना हुआ है।

रज़ा की अवस्था जब तीन वर्ष की हुई तब उसके पिता अब्बास अली का देहान्त हो गया। उसके मरने पर रज़ा की सौतेली माँ और सगी माँ में अनबन हो गई। कारण कि उसकी सौतेली माँ उससे और उसकी माता से ईर्षा-भाव रखती थी और उसके राजसी लक्षण देख कर रज़ा की हत्या करना चाहती थी। रज़ा की सौतेली माँ ने अपने पुत्रों से मिल कर रज़ा की हत्या करने का षड्यन्त्र रचा। किन्तु उसकी एक न चलने पाई। सच कहा है कि—

जाको राखे साइयाँ, मार सके नहिं कोय।
बाल न बाँका करि सके, जो जग बैरी होय ॥

"मारने वाले से बचाने वाला बड़ा बली होता है।" अचानक इस बात की ख़बर रज़ा की माँ को विदित हो गई। उसने निश्चय किया कि चाहे जैसे भी हो मैं उसकी रक्षा अवश्य करूँगी। एक दिन वह घोर अन्धकारमय रात्रि में अपनी एक मात्र आधार सन्तान तीन वर्षीय पुत्र को, जिससे कि जीवन की सुखद प्रकाश की ज्योति प्रकट होती हुई देख पड़ती थी, लेकर तेहरान की ओर रवाना हो गई। ईरान पहुँच कर उसने एक सैनिक से पुनर्विवाह कर लिया। और अपने पुत्र का यथेष्ट रूप से लाड़न-पालन कर वहीं रहने लगी!

स्त्री के आत्म-विश्वास, साहस और कार्यदक्षता ने रज़ा को काल के गाल से निकाल दिया।

अन्त में रज़ा में भी माँ के इन गुणों का समावेश हुआ और धीरे-धीरे वह भी इन गुणों को प्राप्त करने में संलग्न हुआ। रज़ा का सौतेला पिता रज़ा से बड़ा स्नेह रखता था और उसे किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं होने देता था। बड़े होने पर रज़ा भी अपने पूर्वजों की तरह सेना-विभाग में भरती कराया गया। वहाँ से कुछ काल बाद वह एक बड़े सैनिक अफ़सर तैमूर ख़ाँ का अर्दली बनाया गया। और बहुत काल व्यतीत तक वह उसी काम पर मुक़र्रर रहा। रज़ा बड़ा वीर, साहसी, न्यायी, शक्तिमान, देश-प्रेमाभिमानी, स्वतन्त्रता-प्रिय और पुरुषत्वपूर्ण व्यक्ति था। उसके इन गुणों ने तैमूर ख़ाँ के हृदय को प्रभावान्वित कर दिया और वह उसकी उन्नति की चेष्टा करने लगा। मुस्लिम जगत में तीव्र गति से परिवर्तन की आशा होते देख कर पहिले तैमूर ख़ाँ बड़ा आश्चर्य-चकित हुआ और बाद में रज़ा को एक ऊँचा फ़ौजी अफ़सर बना कर अपनी कन्या का विवाह उसके साथ कर दिया।

विवाह हो जाने के बाद जब रज़ा ने यह देखा कि "मैं अब एक ऊँचे दर्जे का अफ़सर हूँ और प्रयत्न करने से और भी बढ़ सकता हूँ" आगे बढ़ने की कोशिश करने लगा। उसने पहिले—

१—अपने प्रौढ़ विचारों से धर्म और राजनीति की धारा को समान रूप से प्रवाहित किया। क्योंकि वह जानता था कि इसीसे देश उन्नतिवान, समृद्धिवान, एवं शान्तिवान बन सकता है। देश की धन-विभूति का श्रेय राजनीति को है और आत्मा का प्रश्रेय धर्म को है। इन दो धाराओं में से, जहाँ धारा शुष्क हुई, वहाँ देश की कुशल नहीं। वहाँ न धन, माल ही सुरक्षित रह सकता है और न शान्ति ही टिक सकती है। देश में आर्थिक और आत्मिक शक्तियों का विकास करने के लिए इन दो धाराओं से देश को परिप्लावित करते रहना जीवन-मूरि के सदृश है।

२—दूसरे उसने प्राचीन स्थिति की ओर दृष्टि डाली जिसको हज़रत मुहम्मद साहब ने अरबों की सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति को सुधारने के लिए इसलाम धर्म के रूप में प्रकट किया था और जिसे उनके अनुयायियों ने ऐसे सङ्कुचित विचारों से परिवेष्ठित कर दिया कि उनकी स्थिति थोड़े ही दिनों में सङ्कटमय हो गई।

३—तीसरे उसने वर्तमान समय के मिश्र, टर्की, ईराक, अफ़ग़ानिस्तान आदि मुस्लिम राष्ट्रों और इटली जैसे ग़ैर मुस्लिम राष्ट्र के उठते हुए वैभव की ओर दृष्टि डाली; जो, अपनी धार्मिक सङ्कीर्णता को छोड़ते हुए इस स्थिति पर पहुँच गए हैं और उनका पुनरुद्धार कर अपना अस्तित्व स्थिर किए हुए हैं।

उसके इन विचारों ने उसे यहाँ तक अग्रसर किया कि वह एक ऊँचे सैनिक अफ़सर से बढ़ कर ईरान का शाह मुक़र्रर हो गया और एशिया के पश्चिमी भाग पर ऐसी सत्ता क़ायम की कि आज दिन वह यूरोपीय साम्राज्यवादियों की स्वार्थ-लिप्सा को ठुकराने के लिए, नाश करने के लिए, अग्नि-रूप बन गई। उसकी स्त्री अर्थात् तैमूर ख़ाँ की पुत्री वहाँ की रानी और वह ईरान का शाह घोषित किया गया। रज़ाशाह ईरान की एक पवित्र एवं महान आत्मा है, जो राष्ट्र की उन्नति में बहुत सहायक हुई है।

* * *

स्वतन्त्रता-संग्राम में महिलाओं का भाग और त्याग

बम्बई के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री० के० नटरञ्जन की लड़की—कुमारी नटरञ्जन, जिन्हें कांङ्ग्रेस की सहायता करने के अपराध में दो मास का कारावास और ६०) रु० जुर्माने का दण्ड दिया गया है।

१७ वर्षीय कुमारी सूरज सुनी, जिन्हें इसी अभियोग में १००) जुर्माना अथवा १ मास का कारावास दण्ड दिया गया था। जुर्माना न देकर, आपने जेल-यात्रा ही उचित समझा।

कुमारी कृष्णा नेहरू

आप पं० मोतीलाल जी नेहरू की छोटी लड़की हैं, जिन्हें 'जवाहर-सप्ताह' के जुलूस में, जो ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया गया था—शामिल होने के अपराध में ५०) रु० जुर्माना या एक मास के जेल की सज़ा दी गई थी। जुर्माना किसी गुमनाम व्यक्ति के जमा करने पर देवी जी छोड़ दी गईं। आजकल आप अपने पिता की सेवा-शुश्रूषा करने के लिए उनके साथ कलकत्ते गई हुई हैं। जुर्माना देने वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति द्वारा पं० मोतीलाल जी ने कहा था :—

"मैंने अभी यह सुना है कि किसी अनजान व्यक्ति ने मेरी पुत्री कृष्णा के ऊपर किया हुआ जुर्माना उसकी गिरफ़्तारी तथा मुक़द्दमे के ख़तम होते ही ख़ज़ाने में दाख़िल कर दिया है। यदि यह ख़बर सच है, तो उस व्यक्ति ने मुझे, देश को तथा मेरी लड़की को—सब से बड़ा नुक़सान पहुँचाया है। उस व्यक्ति का नाम ज़्यादा दिनों तक छिपा नहीं रह सकता और यदि मेरे देशवासियों को मेरा तथा मेरी तुच्छ सेवा का ज़रा भी ख़्याल हो, तो मैं आशा करता हूँ कि वे उसे मेरा तथा देश का सब से कट्टर दुश्मन समझेंगे और उसके साथ उसी तरह का व्यवहार करेंगे, जैसा कि एक देशद्रोही के साथ किया जाता है।"

श्रीमती इन्दुनन्दिनी भट्ट। आपको भी कुमारी नटरञ्जन के साथ, उसी अभियोग में कारावास दण्ड मिला है।

उपनगर (बम्बई) की 'डिक्टेटर' श्रीमती कमला बेन, जिन्हें ६ मास का कारावास दण्ड दिया गया है। देवी जी इस समय जेल में हैं।

जोधपुर के कुछ ऐतिहासिक दृश्य

जोधपुर की सुप्रसिद्ध बालसमर झील

जोधपुर शहर का घण्टाघर (९८ फ़ीट ऊँचा)

जोधपुर का क़िला (नज़दीक का दृश्य)
[आस-पास की भूमि से ४०० फ़ीट ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है]

"महामन्दिर" के नाम से प्रसिद्ध जोधपुर के नाथों का जलन्धरनाथ मन्दिर

मद्रास हिन्दी-प्रचार-कार्यालय की परीक्षाओं में धारवाड़-केन्द्र से सम्मिलित होने वाली कुछ महिलाएँ

वीर-प्रसविनी मारवाड़ भूमि के कुछ प्रोज्ज्वल रत्न

प्रताप-जैसे
देशभक्त पुत्र-रत्न की आदर्श-जननी
श्रीमती माणिकदेवी जी

देशभक्ति के अपराध में घुट-घुट कर मरने वाले
ठाकुर केसरीसिंह जी के पुत्र-रत्न
स्वर्गीय कँवर प्रतापसिंह जी बारहठ

[विशेष विवरण पृष्ठ-संख्या ३३ पर देखिए]

राजस्थान-केसरी
श्री० ठाकुर केसरीसिंह जी बारहठ
कोटा (राजपूताना)

सुप्रसिद्ध सुधारक और दानवीर
रावबहादुर सेठ
शिवरत्न जी मोहता
ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट, कराची

सौभाग्यवती
सरस्वती देवी मोहता
(धर्मपत्नी सेठ शिवरत्न जी मोहता)
आप कराची के मारवाड़ी
समाज में परदा-प्रथा
के मस्तक पर
पाद-प्रहार
करने वाली सर्व-
प्रथम महिला-रत्न हैं

स्वतन्त्रता के पुजारी, जो जेल में अपनी स्वतन्त्र-प्रियता का मूल्य चुका रहे हैं

राष्ट्रीय महिला-समिति की प्रेज़िडेण्ट सौभाग्यवती चमेली देवी गुप्ता, जो विगत २३ जुलाई को 'पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स' के अनुसार ४ मास और एक अङ्गरेज़ कर्मचारी के अशिष्ट व्यवहार के लिए उसे एक घूँसा लगाने के अपराध में २ मास—कुल छः मास के लिए जेल भेजी गई थीं। विजयदशमी के दिन जेल ही में आपके पुत्र उत्पन्न हुआ, जो ६ दिन जीवित रह कर चल बसा। बीमारी के कारण आपकी हालत चिन्ताजनक होने से बालक की मृत्यु के दूसरे दिन आप जेल से मुक्त कर दी गई थीं। अब आपका स्वास्थ्य सुधर रहा है।

श्रीमती चमेली देवी गुप्ता की १३ वर्ष की बालिका कुमारी सरस्वती, जिन्हें पिकेटिङ्ग के अपराध में ४ मास का कारावास दण्ड मिला है।

बटाला (पञ्जाब) के वकील—पं० श्रीनाथ भनोट, जिन्हें राजविद्रोह के अभियोग में एक वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। परमात्मा जेल में आपका यही स्वास्थ्य क़ायम रक्खें।

बिहार के 'गाँधी' बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी हज़ारीबाग़ की जेल में अपनी देशभक्ति का मूल्य अदा कर रहे हैं।

श्री० वी० जे० पटेल, भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट लेजिस्लेटिव एसेम्बली, जो अम्बाला जेल में सख़्त बीमार हैं।

आगरे के वालण्टियर ताड़ी की पिकेटिङ्ग कर रहे हैं।

केसर की क्यारी

नाला जुज़[1] हुसने तलब, ऐ सितम ईजाद नहीं,
है तक़ाज़ाय-जफ़ा[2] शिकवए बेदाद नहीं !
कम नहीं वह भी ख़राबी में, पै वसअत[3] मालूम,
दश्त[4] में है, मुझे वह ऐश कि घर याद नहीं।
कम नहीं जलवागरी[5] में तेरे कूचे से बहिश्त,
यही नक़्शा है, वले इस क़दर आबाद नहीं।
करते किस मुँह से हो ग़ुरबत[6] की शिकायत "ग़ालिब"
तुमको बेमेहरिए[7] याराने-वतन याद नहीं।

—(स्वर्गीय) "ग़ालिब" देहलवी

* * *

अब रिहाई की तमन्ना,[8] दिले नाशाद नहीं,
रास्ता अपने नशेमन[9] का मुझे याद नहीं।
ज़िन्दगी थी वही, या और कोई आलम था—
क्या कहें इससे ज़्यादा, हमें कुछ याद नहीं।
बेड़ियाँ ज़ीस्त[10] की, किस तरह से जल्दी कट जायँ,
क्या कहूँ मेरी तरह, रूह भी आज़ाद नहीं।
बाग़ में जा के मुझे, और क़लक़ होता है,
फूल पत्ते भी, मेरे दिल की तरह शाद नहीं !
दिल जो वीरान[11] हुआ, हो गई दुनिया वीरान,
कोई घर ख़ुश नहीं, बस्ती कोई आबाद नहीं !
नग़मए[12] दर्दे मुहब्बत है, सदा से ख़ाली,
क्या सुने कोई, यह नाला नहीं, फ़रियाद नहीं।
सुनते हैं, रूह घिरी रहती है अरमानों से,
मर के भी चैन की सूरत, दिले नाशाद नहीं !
उसको बेदर्द, गिरफ़्तारे-जुनूँ कहते हैं,
जिसको दुनिया की ग़ुलामी का सबक़ याद नहीं !
सबज़ए बाग़ से कहती हैं यह शाख़ें[13] झुक कर,
सर उठाने की जगह, गुलशने ईजाद नहीं !
जब कोई ज़ुल्म नया करते हैं, फ़रमाते हैं
अगले वक़्तों के, हमें तरज़े-सितम याद नहीं।
क़द्रदाँ क्यों मुझे तकलीफ़े सख़ुन देते हैं
मैं सख़ुनवर[14] नहीं, शायर नहीं, उस्ताद नहीं।

—"चकबस्त" लखनवी

* * *

दिल लगाने की जगह, आलमे-ईजाद नहीं,
ख़्वाब आँखों से बहुत देखे, मगर याद नहीं।
आज असीरों[15] में वह, हङ्गामए फ़रियाद नहीं,
शायद अब कोई गुलिस्ताँ, का सबक़ याद नहीं।
तिलमिलाने का मज़ा, कुछ न तड़पने का मज़ा !
हेच है दिल में अगर, दर्दे ख़ुदा दाद नहीं !
दुश्मनो दोस्त से, आबाद हैं दोनों पहलू;
दिल सलामत है, तो घर इश्क़ का बरबाद नहीं।
तोबा भी भूल गए, इश्क़ में वह मार पड़ी,
ऐसे औसान गए हैं, कि ख़ुदा याद नहीं।
न कहते[16] गुल की है रफ़्तार, हवा की पाबन्द,
रूह क़ालिब[17] से निकलने, पै भी आज़ाद नहीं।
फ़िकरे इमरोज़,[18] न अन्देशए फ़रदा[19] बाक़ी
ज़िन्दगी उसकी, जिसे मौत का दिन याद नहीं।

—"यास" लखनवी

* * *

१—सिवा, २—ज़ुल्म, ३—फैलाव, ४—जङ्गल, ५—रौनक़, ६—परदेश, ७—बेमुरौवती, ८—आरज़ू, ९—घोंसला, १०—ज़िन्दगी, ११—बर्बाद, १३—डालें, १४—कवि, १५—कैदियों, १६—ख़ुशबू, १७—बदन, १८—आज, १९—कल।

ग़ैर के घर तो कहीं, वह सितम-ईजाद नहीं,
आज क़ाबू में हमारा, दिले-नाशाद नहीं।
कोई नाला नहीं, शेवन[20] नहीं, फ़रियाद नहीं,
अपनी रूदाद है, यह शिकवए बेदाद नहीं !
बुलबुलेज़ार का उड़ना है क़फ़स[21] से मुशकिल,
पर कतरने की ज़रूरत, कोई सैय्याद[22] नहीं !
शेवए इश्क़ो वफ़ा, भूल गए—भूल गए !
और सब कुछ है तुम्हें याद, यही याद नहीं !
क़ैद ऐसी है कि गुलशन में, न फ़रियाद करें,
हैं तो आज़ाद, मगर फिर भी हम आज़ाद नहीं !
घर में आए हुए सैय्याद के, मुद्दत गुज़री
गुल[23] तो गुल ही हैं, नशेमन भी हमें याद नहीं !
निगहे नाज़ उड़ा ले गई, इसको शायद,
आज पहलू में, हमारा दिले-नाशाद नहीं !
अरसए[24] हश्र में, पहचान ही लेंगे उनको,
वह हमें याद हैं, हम उनको अगर याद नहीं !
कोई कुछ भी कहे "शातिर" मगर अपना है यह क़ौल,
तर्क करने को कभी, ख़िदमते उस्ताद नहीं !

—"शातिर" इलाहाबादी

* * *

इस तरह बाग़ो जहाँ में, कोई बरबाद नहीं,
एक तिनका भी, नशेमन का हमें याद नहीं।
क्या निराला यह सितम, ए सितम-ईजाद नहीं,
अब कलेजे में तेरा, नावके बेदाद नहीं।
इस क़दर होश है, चमकी थी कहीं बर्क़े[25] जमाल,
किसका जलवा नज़र आया, यह हमें याद नहीं।
फूल दस बीस अगर हैं, तो हैं काँटे लाखों,
सैर करने की जगह, गुलशने[26] ईजाद नहीं।
वह अगर मेरी वफ़ा, भूल गए, भूल गए—
क्या सितम है, उन्हें अपने भी सितम याद नहीं !
यास[27] ही यास, मेरे दिल में नज़र आती है,
इस तरह घर यह है आबाद, कि आबाद नहीं।
हाँ ज़रा फिर तो कहो, फिर तो कहो, फिर तो कहो,
हम सितमगर, सितमआरा, सितम ईजाद नहीं।
मैं असीरी में भी ख़मोश, इसी ख़ौफ़ से हूँ,
मेरे नाले सुने, ऐसा दिले-सैय्याद नहीं !
सर वह सर ही नहीं, जिसमें नहीं सौदा तेरा,
दिल वह दिल ही नहीं, जिस दिल में तेरी याद नहीं !
अरसए हश्र में क्या अपनी तबीयत बहले
सब हैं मौजूद वही, वानिए बेदाद[28] नहीं !
रात दिन अब मेरी ग़ुरबत में, बसर होती है,
वह मुसाफ़िर हूँ, जिसे लुत्फ़े-वतन याद नहीं।
क्यों मेरे सीने में रहता है, मेरे पहलू में,
दूसरा दिल है तेरा नावके बेदाद नहीं !
महव ऐसा था तेरी याद में मरने वाला,
रूह कब जिस्म से निकली, उसे कुछ याद नहीं !
दाद[29] इतनी तुम्हें क्यों अहले-सख़ुन[30] देते हैं,
तुम तो ऐ हज़रते "बिस्मिल" कोई उस्ताद नहीं !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

२०—आह, २१—पिंजड़ा, २२—बहेलिया, २३—फूल, २४—प्रलय, २५—बिजली, २६—संसार-रूपी बाग़, २७—निराशा, २८—ज़ालिम, २९—वाहवाही, ३०—कविगण।

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

भारत ने क्या पाया ?
नमकहलाली पर रक्त-दान करके।
निरुद्देश्य वीरत्व का प्रदर्शन करके।
सुदूर विदेश में लोथों पर लोथों की भरमार करके।
केवल दो धक्के।
भारत क्रीत-दास की भाँति जीवित रहे।
उसे जीवित रहने को आहार और श्वास भर लेने को वायु मिलती रहेगी।

बत्तीस करोड़ नर-नारियों से परिपूर्ण भारत क्या इसलिए जिए ?
जो योद्धा है।
जो व्यापार-पुङ्गव है,
जो काव्य-शिरोमणि है,
जो विज्ञान का आचार्य है,
जो महाजातियों का पितामह है ?
जो सर्वस्व खोकर भी प्रतापी जातियों के बराबर कन्धा भिड़ा कर अन्त तक खड़ा रहा।
वह—
जीवित भर रहने को आहार और श्वास भर लेने को वायु पाकर जीवित रहे।
वह अङ्गरेज़ों का बलपूर्वक विजित देश है। वह बलपूर्वक सदैव अङ्गरेज़ों के अधीन रक्खा जायगा।
महाशक्तिशाली अङ्गरेज़ !

* * *

महाशक्तिशाली अङ्गरेज़—
न्याय और सभ्यता का वितरण करने के अभिमानी, अपने समस्त विश्व-व्यास श्वेत दर्प का नख-शिख शृङ्गार किए, जगत के महान प्राङ्गण में कटिबद्ध खड़े थे। और कह रहे थे—जो कोई हमारे दर्प के सम्मुख तन कर खड़ा होगा; जो कोई मर्द का बाना पहनेगा, जो कोई स्वच्छन्द वायु में श्वास लेगा—उसे हम अपने लोहमय पञ्जे से पीस डालेंगे !!!
प्राचीन महाराजाओं की राजधानी में।

* * *

महाराजाओं की प्राचीन राजधानी में—
नरवरों का रक्त-अभिषेक हुआ।
मानव-शक्ति का उत्कर्ष भीषण विध्वंस के रूप में अवतरित हुआ।
राज-पथ पर, जहाँ वस्तु-विक्रेताओं के निश्चिन्त प्रश्वास, अबोध बालिकाओं का साग्रह आह्लाद, महिलाओं का उत्सुक हृदय निरन्तर आनन्द-वर्षा कर रहा था। हठात् कराली मशीनगन ने रक्त-वमन किया !!
पृथ्वी और आकाश काँपने लगे।
चाँदनी चौक पर मृत्यु विभीषिका फैली। सत्तावन का अन्तिम क्षण फिर वहाँ आया। अतर्क्य रुद्र महा-ताण्डव नृत्य थिरक-थिरक कर नाचने लगे। डमरू का भैरव रव वातावरण में व्याप्त हुआ। दानवी ज्वाला गड़गड़ाती, महासंहार करने लगी। अबोध शिशुओं के शरीर छिन्न-भिन्न होकर रुई के पहलों की तरह बिखर गए।
युवकों के विदीर्ण हृदय से रक्त के फ़व्वारे बह चले। मस्ती की सिसकारी के स्थान पर उस आनन्दालोक में हाय भर गई !!!
संन्यासी—

(क्रमशः)

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आज तो लॉर्ड इरविन की प्रशंसा करने के लिए हृदय अड़ियल घोड़े की तरह मचल रहा है। मैंने उसे बहुत समझाया कि "भई लॉर्ड इरविन की प्रशंसा करने से कहीं देश-द्रोहियों की सूची में न दाख़िल कर दिए जाओ।" पर हृदय कमबख़्त माना ही नहीं। अपने राम भी इस हृदय से लाचार हैं। अतएव आज पर खेल कर प्रशंसा के पुल बाँधने पर कमर बाँध ली है। हालाँकि लॉर्ड इरविन ने अपने राम के साथ कोई अच्छा सुलूक नहीं किया—राउण्ड टेबुल कॉन्फ्रेन्स के लिए पूछा तक नहीं। यद्यपि अपने राम आसानी से कदापि न जाते, गिरफ़्तार करके भेजे जाते तभी जाते। ख़ैर जी,

हम ही तसलीम की ख़ू डालेंगे।
बेनियाज़ी तेरी आदत ही सही॥

अपने राम हृदय के कहने से प्रशंसा करते हैं, वरना इच्छा तो होती नहीं।

पहली तारीफ़ तो यह है लॉर्ड इरविन महोदय बड़े बलवान आदमी हैं। एकहस्त होते हुए भी भारत जैसे बिगड़े हुए मस्त हस्ती पर बराबर अङ्कुश-प्रहार कर रहे हैं—वल्लाह कमाल है। एक हाथ से इतने बड़े और बिगड़ैल जानवर को सँभालना लॉर्ड इरविन का ही काम है।

एकलव्य तो एक अँगूठा कटने से ही बेकार हो गया था, परन्तु यहाँ तो पूरा हाथ ग़ायब है, परन्तु चितवन पर ज़रा मैल नहीं। वही दम-ख़म क़ायम है। कदाचित आप भारत के लिए 'जानवर' शब्द के व्यवहार पर नाक-भौं सिकोड़ें, परन्तु यदि आप ऐसा करें तो यह आपकी एक बहुत छोटी सी ग़लती होगी। यदि भारत पशु नहीं तो ढोल है, अथवा स्त्री है या फिर गँवार है। क्योंकि तुलसीदास जी ने इन्हीं चारों को पीटने की सलाह दी है। इसी कारण उसे लाठियों द्वारा पीट-पीट कर ठीक किया जा रहा है। परन्तु इन चारों में अपने राम भारत के लिए जानवर की उपाधि ही ठीक समझते हैं। जानवर के लिए दो ही इलाज हैं—या तो पीटा जाय या काँजीहौस में बन्द किया जाय, सो यही दोनों इलाज भारत के लिए काम में लाए जा रहे हैं। इसलिए यह प्रमाणित हो गया, कि भारत जानवर है। अब यदि कोई दोष दे तो तुलसीदास जी को दे—लॉर्ड इरविन को नहीं, क्योंकि इरविन महोदय तो उन्हीं की आज्ञा का पालन कर रहे हैं।

लॉर्ड इरविन सज्जन भी बड़े हैं। एक तो लॉर्ड ठहरे—लॉर्ड लोग बहुधा सज्जन ही होते हैं। यह ब्रिटिश-स्मृति का वाक्य है। स्मृतियों का वाक्य झूठा नहीं होता। उनकी सज्जनता उनके उन विचारों से, जो वे कभी-कभी अपने वक्तव्य में प्रकट किया करते हैं, उसी प्रकार प्रकट होती है, जिस प्रकार लड़के को पीटने के पश्चात उसे चुमकार-पुचकार कर समझाने में एक शिक्षक की सज्जनता प्रकट होती है। उनकी सज्जनता का एक बहुत मँझला प्रमाण यह है भारत में इतना उपद्रव हो रहा है, परन्तु उन्होंने आज तक मेशीनगन्स, तोपें और बम कहीं नहीं चलवाए—अधिकतर लाठी और कभी-कभी गोली से ही काम लिया। सो जनाब लाठी तो बहुधा यों भी चला ही करती है। हिन्दुस्तान में ज़रा-ज़रा सी बात पर लाठी चल जाती है, फिर इतने बड़े उपद्रव पर लाठी चलती है तो कौन सी बहुत बड़ी भारी बात है। रही गोली—सो गोलियों से तो यहाँ के बच्चे खेला करते हैं। अन्तर केवल इतना है कि बच्चे लाख, पत्थर और काँच की गोलियों से खेलते हैं—ये गोलियाँ लोहे और सीसे की होती हैं। इसके अतिरिक्त गोलियाँ किसी की हत्या करने के लिए थोड़े ही चलाई जाती हैं। वे तो केवल डराने और धमकाने के लिए चलाई जाती हैं, परन्तु जिनकी मौत आ जाती है वे मर जाते हैं, जिनको कष्ट भोगना बदा है वे घायल हो जाते हैं। इसके लिए कोई क्या करे? उनके भाग्य में यही बदा होता है। इरविन महोदय किसी का भाग्य थोड़ा ही पलट सकते हैं!

लॉर्ड इरविन सहृदय भी बड़े हैं। सच पूछिए तो सहृदयता के कारण उनके प्राण सङ्कट में हैं। इस दिल के हाथों सब मजबूर हैं। अपने राम को भी इस दिल के कारण अपना दम नाक ही में रखना पड़ता है; क्योंकि जहाँ ज़रा भी दम नाक के नीचे उतरा, वहीं दिल बग़ावत करने पर आमादा हो जाता है। कभी-कभी यह जी में आता है कि यह दिल किसी को दान कर दें। जब यह न रहेगा तो नाक में दम भी न रहेगा; परन्तु कोई सुपात्र ही नहीं मिलता। सो जनाब इस दिल से हमारे लॉर्ड साहब भी परेशान हैं। ऑर्डिनेन्स जारी तो करते हैं, परन्तु सुना है कि जारी करने के पहले एक घण्टा और बाद को एक घण्टा बैठ कर ख़ूब रोते हैं। यदि यह बात सच है, तो इससे अधिक सहृदयता का प्रमाण और क्या मिल सकता है? ऑर्डिनेन्स जारी न करें तब भी नहीं बनता। इधर इन काले आदमियों में यह ग़लतफ़हमी फैल जाय कि लाट साहब दब गए, उधर भारत-मन्त्री और ब्रिटिश सरकार आँखें नीली-पीली करें। इसलिए बेचारे सब से ज़्यादा मजबूर होकर ऐसा करते हैं।

लाट साहब की सहृदयता का दूसरा प्रमाण यह है कि वे अपने वक्तव्यों में हिन्दुस्तानियों को यही समझाते रहे कि देखो सत्याग्रह से अलग रहो वरना तकलीफ़ उठाओगे और स्वराज्य भी न मिलेगा। सो जनाब वही हो रहा है। हिन्दुस्तानी जेल के कष्ट भोग रहे हैं, लाठी और गोलियाँ खा रहे हैं! अजी जनाब! लाठियाँ कुछ फूल की छड़ियाँ नहीं और गोलियाँ कुछ क़ुव्वतेबाह की गोलियाँ अथवा चूरन की गोलियाँ नहीं हैं, जो फ़ायदा पहुँचावेंगी। गन्धक बटी और बारूद बटी में बड़ा अन्तर है। सो जनाब यदि लाट साहब में सहृदयता न होती तो वे बारम्बार चेतावनी क्यों देते। उन्हें क्या ग़रज़ थी? इस पर भी उन्होंने यह किया कि काँग्रेस को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया, यह बात सिवा अपने राम के और कोई नहीं जानता। यह रहस्य और किसी को तो बताता नहीं, पर सम्पादक जी, आपको बताए देता हूँ। सुनिए, कॉङ्ग्रेस के कारण ही लोग जेल जाते हैं और लाठियाँ तथा गोलियाँ खाते हैं। इसलिए लोगों को मुसीबत में डालने वाली कॉङ्ग्रेस ही है। और यह मानी हुई बात है कि जो लोगों को मुसीबत में डाले वह लोगों का शत्रु है। अतएव लॉट साहब ने इस शत्रु से सर्व-साधारण की रक्षा करने के निमित्त इसे ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया। ज़रा सोचिए कितने उपकार का काम किया है। फिर भी लोग उनका एहसान नहीं मानते। यह ज़माने की ख़ूबी है—और क्या कहा जाय। अपने शत्रु का शत्रु सदैव मित्रवत समझा जाता है। इसलिए लोगों का कर्तव्य है कि वे लॉर्ड साहब को भी अपना मित्र समझें। परन्तु समझें तो तब जब बुद्धि हो, आँखें हों। इन्हीं बातों को देख-देख अपने राम का तो भेजा फिर गया। मानते हो? कितनी राइट बात कहता हूँ।

लॉर्ड महोदय योद्धा भी बड़े ज़बरदस्त हैं। ऑर्डिनेन्स के कैसे-कैसे अस्त्र फेंके हैं—कैसे-कैसे तीर चलाए हैं। अर्जुन के बाणों में भी इतनी शक्ति नहीं थी, जितनी लॉर्ड साहब के इन ऑर्डिनेन्स रूपी बाणों में है। एक बाण छोड़ा और धड़ाधड़ आदमी जेल के भीतर जाने लगे। वल्लाह क्या कमाल है! इन्हें सम्मोहन बाण कहा जाय या क्या कहा जाय। दूसरा बाण छोड़ा तो समाचार-पत्र प्लेगी चूहों की तरह मरने लगे। ओफ़ ओह! कुछ ठिकाना है! देख कर बुद्धि चक्कर खाकर रह जाती है। और मज़ा यह कि एक बाण छः महीने तक सुदर्शन चक्र की तरह घूमता रहता है और अपना प्रहार करता रहता है। इन्हीं बातों को देख कर कहना पड़ता है कि अङ्गरेज़ बहादुर की अक़्लिफ़ल को कोई नहीं पा सकता। परन्तु सब से बड़ा अफ़सोस यह है कि हिन्दुस्तानी इन बाणों के प्रहार भी सहन कर गए। इसको बेचारे लॉर्ड इरविन क्या करें—कोई बेहयाई का जामा ही पहन ले तो मजबूरी है। हिन्दुस्तानियों में ज़रा भी हया और शर्म होती तो जनाब छुरी मार कर मर जाते, संखिया खाकर सो रहते, परन्तु इन ऑर्डिनेन्स के विरुद्ध कभी सिर न उठाते। भले आदमी जिस बात के पीछे एक बार ज़िल्लत उठाते हैं, उसे दोबारा कभी नहीं करते। लॉर्ड इरविन ने यही सोचा था कि हिन्दुस्तानी सब भले आदमी हैं—जहाँ एक-एक दफ़ा पिटे और जेल गए, बस ठीक हो जायँगे। उन्हें स्वप्न में भी यह आशा नहीं थी कि ये इतने बड़े बेहया निकलेंगे कि बार-बार पीटे जाने पर भी वही काम करेंगे। अफ़सोस इन! काले आदमियों ने भारत की इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी। भला बताइए तो सही लाट साहब जब अपने देशवासियों से भारतवासियों की इस बेहयाई का हाल कहेंगे, तो वे सब अपने जी में क्या सोचेंगे। मैं तो उसकी कल्पना करते ही लज्जा से स्वर्ग के फाटक तक पहुँच कर फिर वर लौट आता हूँ। सम्पादक जी! आबरू और नेकनामी बड़ी चीज़ है, जब यही न रही तो फिर स्वराज्य तो क्या साम्राज्य भी व्यर्थ है!!

लॉर्ड इरविन महाशय की नेकनीयती का नमूना भी देख लीजिए। हिन्दुस्तानी लाख शोर मचाते रहे, परन्तु उन्होंने गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स करा ही दी। कॉङ्ग्रेस वाले नहीं गए तो उन्होंने अन्य लोगों को फाँस-फूँस कर भेज ही दिया। क्यों? इसलिए कि यदि वे लोग वहाँ पहुँच जायँगे तो बेचारों को कुछ न कुछ मिल ही जायगा—ख़ाली हाथ नहीं लौटेंगे। अजी अब रोएँगे, चिल्लाएँगे, गिड़गिड़ाएँगे तो कुछ न कुछ ले ही आएँगे। लाट साहब का इतना उपकार क्या थोड़ा है? हिन्दुस्तानी इसे न समझें, परन्तु भगवान तो समझते हैं। और लाट साहब ने हिन्दुस्तानियों को समझाने के लिए यह किया भी नहीं, वह तो अपना परलोक सुधार रहे हैं।

और देखिए गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के लिए आपने कितना बढ़िया ख़रीता भेजा है। लोग उसमें भी

[शेष मैटर ३१वें पृष्ठ के दूसरे कॉलम पर देखिए]

साम्यवाद

[श्री० शैलेन्द्र कुमार जी अवस्थी]

गत २३ अक्टूबर के 'भविष्य' में श्री० यदुनन्दन प्रसाद जी श्रीवास्तव का 'साम्यवाद' शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ है। उसे देख कर कहना पड़ता है कि लोगों में साम्यवाद के विषय में कैसी भ्रान्तियाँ फैली हुई हैं। लेखक महोदय ने भी, ज्ञात होता है, इन्हीं भ्रान्तियों के आधार पर अपना यह लेख लिख मारा है। मैंने जो कुछ भी इसके सम्बन्ध में अध्ययन किया है उससे मैं कह सकता हूँ कि लोग उसके वास्तविक उद्देश्य अथवा तत्व को बहुत कम समझे हैं। आशा है यह मेरा छोटा सा लेख लोगों के भ्रान्ति-निवारण में थोड़ी-बहुत सहायता करेगा।

आजकल रशियन क्रान्ति की सफलता तथा सोवियट सरकार की आश्चर्यजनक उन्नति ने सारे संसार को आश्चर्यान्वित कर दिया है। इस सबका मूलभूत आधार साम्यवाद है। आज इसी साम्यवाद ने तमाम दुनिया में तहलका मचा दिया है। आज दलित राष्ट्र उसके शुभागमन की बाट बड़ी उत्सुकता से जोह रहे हैं। जिसने लाखों मनुष्यों का ग़ुलामी से उद्धार किया है। यहाँ हमें यह विचार करना है कि वास्तव में यह क्या है, जिसने सारे विश्व को हिला दिया, जिसके लिए लोग इतने उत्सुक हैं?

वास्तव में साम्यवाद की आधार-शिला सत्य पर स्थित है। संसार के बड़े-बड़े महापुरुष, जिन्होंने संसार के उद्धार के लिए अपने अमूल्य जीवन को उत्सर्ग कर दिया है, इसके प्रवर्तक हैं। यही कारण है कि संसार की अधिकांश प्रजा अपने उद्धार के लिए इसी की ओर दृष्टि लगाए बैठी है।

तब तक कोई धर्म या सिद्धान्त विश्व-व्यापी नहीं हो सकता, जब तक उसमें कुछ सत्य (तत्व) नहीं रहता है। मनुष्य सबुद्धि (Rational) प्राणी है, वह बिना बुद्धि से काम लिए कभी किसी वस्तु को ग्रहण नहीं कर सकता है। लेखक महाशय लिखते हैं कि साम्यवाद का मुख्य सिद्धान्त यह है, कि प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार होना चाहिए और यह हो ही नहीं सकता है। मैं समझता हूँ कि लेखक महाशय इसके वास्तविक अर्थ को नहीं समझ सके। इसका अर्थ यह कदापि नहीं हो सकता, कि यदि किसी राष्ट्र के राष्ट्रपति को फाँसी देने का अधिकार है तो प्रत्येक व्यक्ति को फाँसी देने का अधिकार होना चाहिए। बल्कि इसका अर्थ यह होना चाहिए कि राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार होना चाहिए, कि यदि उसमें योग्यता है और जनता उसे चाहती है, तो वह भी राष्ट्रपति हो सकता है। न कि यह होना चाहिए, कि यदि कोई अपराध राष्ट्र का व्यक्ति करता है और वही अपराध राष्ट्रपति (राजा) करता है तो [illegible]यक्ति को फाँसी का हुक्म होता है और राजा 'यह [illegible]ो मेरा ईश्वर प्रदत्त हक़ (Divine Right of King) है' [illegible]ता है और मनमाने अत्याचार करता है। या यों होना चाहिए कि यदि कलेक्टर की तनख़्वाह २२००) रु० मासिक है तो जो कोई इस पद पर हो, उसे वही तनख़्वाह मिलनी चाहिए। न कि हिन्दुस्तानी काले कलेक्टर को ८००) रु० और गोरे यूरोपियन को २२००) रु०, जब दोनों एक ही कार्य करते हैं।

धन के वितरण के सम्बन्ध में लेखक का मत यह मालूम पड़ता है कि साम्यवाद के अनुसार धन सब में बराबर-बराबर बाँट दिया जावे। किन्तु साम्यवाद कदापि नहीं कहता है, कि यदि पाँच व्यक्ति हैं और उनमें से एक परिश्रम कर पाँच रुपया पैदा करता है तो शेष जो निकम्मे बैठे रहे हैं, उनमें से प्रत्येक को बराबर-बराबर रुपया बाँट दिया जावे; बल्कि साम्यवाद प्रत्येक व्यक्ति को उसके परिश्रम के उचित फल को दिलाने के लिए लड़ता है। जैसे किसान वर्षा, गर्मी, धूप की कड़ी यातनाओं को सहता है और यदि दस मन अनाज पैदा करता है, तो उसे केवल एक मन ही मिलता है, जो उसके ही पेट-पालन के लिए भी अपर्याप्त है, तब कुटुम्ब को क्या खिलाए? और शेष हिंसा के बल पर सङ्गठित सरकार और उसके पिट्ठू हड़प जाते हैं। लेकिन साम्यवाद साफ़ जवाब देता है कि यदि सरकार और उसके पिट्ठू (ज़मींदार आदि) किसान की यातनाओं में शामिल नहीं होते तो उन्हें उसके (किसान के) परिश्रम के फल भोगने का कोई अधिकार नहीं है। इसी प्रकार प्रत्येक बात में प्रकृति-प्रदत्त अधिकार के लिए साम्यवाद लड़ता है। वह कहता है कि पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र आदि प्रकृति-प्रदत्त वस्तुओं के भोगने का अधिकार प्रत्येक को समान है। अब यदि एक राजा-नामधारी मनुष्य किसी से कहे कि सूर्य के प्रकाश का उपयोग न करो, तो यह उसके साथ में अत्याचार नहीं, घोर अत्याचार करना है।

लेखक महोदय ने लिखा है कि साम्यवाद विशेषतः धन के समान वितरण पर अधिक ज़ोर देता है। इसीसे संसार की दृष्टि लोभ के वशीभूत होकर साम्यवाद की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुई है, कोरा भ्रम है। क्योंकि इसके प्रवर्तकों ने कुछ लालच या स्वार्थवश ऐसा नहीं किया था। बल्कि उन्होंने जीवन की समस्या हल करने और संसार में सुख, शान्ति स्थापित करने के लिए अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर दिया। बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना धैर्यपूर्वक किया। अन्त में वह सफल भी हुए। दूसरी बात इसके विरोध में कही जा सकती है कि जब मनुष्य सबुद्धि प्राणी (Rational) है तब वह धन के लोभ में कैसे फँस सकता है। क्या सारी दुनिया अन्धी हो गई? किसी बात में जब तक लोग कुछ विशेषता नहीं देखते, तब तक ग्रहण नहीं करते।

आगे लेखक आश्चर्य करता है कि सारी दुनिया इसकी ओर आकृष्ट होवे तो होवे, किन्तु आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म में आस्था रखने वाले भारतीय क्यों इस ओर आकृष्ट हो रहे हैं।

मैं तो समझता हूँ कि भारतीयों का इस ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि पूर्व-काल (वैदिक काल, आर्य-सभ्यता) में भारतीय राष्ट्र एवं समाज का सङ्गठन साम्यवाद के ही आदर्श पर स्थिर था। यही कारण है कि उस समय का भारत सब वैभवों से सम्पूर्ण था तथा भारत में सुख-शान्ति का राज्य था। जब भारत ने इसे भुलाया तभी रसातल को पहुँचा।

वर्तमान समय में भी महर्षि दयानन्द की शिक्षा साम्यवाद से मिलती-जुलती ही है। कहाँ तक कहें, संसार का महापुरुष, अहिंसा का अवतार, सत्य-शान्ति की दिव्य मूर्ति महात्मा गाँधी भी प्रसिद्ध साम्यवादी जगद्वन्द्य महात्मा टॉलस्टाय का शिष्य है। यही महात्मा भारतीय सभ्यता के रूप में साम्यवाद का सन्देश संसार को सुना रहा है तथा सुनाएगा।

एक बात भारतीयों के साम्यवाद की ओर झुकने की यह भी है कि साम्यवाद संसार की शान्ति के लिए व्याकुल है और भारत की वर्तमान दशा ऐसी है, जिसके लिए क्या समाज, क्या राष्ट्र—सभी में एक ज़बर्दस्त क्रान्ति होने की आवश्यकता है। और वह क्रान्ति साम्यवाद के द्वारा ही सफल हो सकती। बिना साम्यवाद के भारत का उद्धार असम्भव सा प्रतीत होता है।

भारत सदैव से परोपकारी रहा है और भारतीय सभ्यता ही से संसार में सुख-शान्ति स्थापित होगी। भविष्य में भारतीय सभ्यता ही संसार की उद्धारक होगी और विश्व उसे अपनाएगा। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं जो भारतीय इधर झुकें।

अधिकार की बाबत लेखक का मत मालूम पड़ता है कि वह सामर्थ्य के अनुसार घटता-बढ़ता है। तो यह जाकी लाठी ताकी भैंस वाली कहावत हुई। इसमें औचित्य और मनुष्यत्व को स्थान कहाँ? यह नियम तो संसार में सदैव से रहा ही है कि जिसके हाथ में शक्ति हुई उसी ने निर्दोष ग़रीब प्रजा को लूट कर मनमाना अत्याचार किया। साम्यवाद ऐसे अधिकार का कट्टर शत्रु है। किन्तु हाँ, आर्य-सभ्यता की दो मूल बातें नहीं भुलाई जा सकती हैं—(१) अधिकार-भेद, (२) गुरुवाद।

अधिकार भेद—छोटे-बड़े का हिसाब रहेगा ही। समाज या राष्ट्र में सभी मनुष्य साधु-महात्मा, राष्ट्रपति, विद्वान अथवा नेता नहीं हो सकते हैं। यदि कोई प्रतिभावान या सर्वप्रिय नेता है, तो जनता (निम्न श्रेणी के पुरुष) स्वयं ही उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उसकी प्रतिष्ठा करेगी और वह आदमी स्वयं भी इज़्ज़त नहीं चाहेगा। किन्तु आजकल ऐसा नहीं है। प्रजा दुराचारी राजा के अत्याचारों से पीड़ित होकर उसके अस्तित्व को मिटाना चाहती है और राजा Divine Right of King (यह राजा का ईश्वर-प्रदत्त हक़ है) चिल्ला कर, हिंसा और पशु-बल के आधार पर प्रजा की इच्छा के प्रतिकूल ज़बर्दस्ती प्रजा का माननीय बन कर, प्रजा के प्रिय नेताओं को जेल में डाल कर, अपने स्वागत का भार प्रजा के कन्धों पर बलात् डालना चाहता है। साम्यवाद ऐसों को कोरा जवाब देता है और इस प्रकार आर्य-सभ्यता की रक्षा करता है और लोगों को परतन्त्रता से छुड़ाता है।

गुरुवाद के अनुसार भी छोटे-बड़े का भेद रहेगा। किन्तु आजकल-ऐसा नहीं कि गुरु जी ईश्वर से भी बढ़ कर बन बैठें। गुरुवाद ने भारत को तो चौपट ही कर दिया। गुरुवाद की पोप-लीलाओं ने धर्म और ईश्वर के नाम पर क्या-क्या कुकर्म नहीं किए? ऐसे गुरुवाद का साम्यवाद अवश्य कट्टर विरोधी है।

लेखक महोदय की इस बात से हम सहमत नहीं हैं कि "संसार में जो अवस्था या अधिकार का भेद है वह कृत्रिम नहीं है और न केवल वह वर्तमान काल की परिस्थिति का ही परिणाम है। यह भेद पूर्व जन्मों के कर्मों और वर्तमान परिश्रम के फल-स्वरूप है।" कारण यह कि बहुत से अधिकार-भेद, जैसे शूद्रों को सड़कों पर न चलने देना, उन पर अमानुषिक अत्याचार करना, किसी को ज़बर्दस्ती ग़ुलाम रखना आदि, बिलकुल कृत्रिम हैं। यह भेद पूर्व जन्मों के कर्मों के अनुसार और वर्तमान परिश्रम के फल-स्वरूप हैं तो दूसरे के परिश्रम का फल छीनना क्या कृत्रिम अधिकार नहीं है? जैसे किसान पैदा करे, कष्ट सहे और राजा पूर्व जन्म का अधिकार जता कर छीन ले। साम्यवाद इसकी बाबत साफ़ कहता है कि प्रत्येक को अपनी मिहनत का फल मिले। प्रत्येक मनुष्य को अपनी उन्नति करने का सुअवसर देना

कुछ नवीन और उत्तमोत्तम पुस्तकें

दुबे जी की चिट्ठियाँ

शिक्षा और विनोद का यह अपूर्व भण्डार है। इसमें सामाजिक कुरीतियों तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों का विवेचन बहुत ही सुन्दरतापूर्वक किया गया है। हिन्दी-संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी पुस्तक है। भाषा अत्यन्त सरल है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। मूल्य केवल ३); ले० 'दुबे जी'।

मणिमाला

अत्यन्त मनोरञ्जक, शिक्षा और विनोद से भरी हुई कहानियों का अनोखा संग्रह। प्रत्येक कहानी में सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया गया है। उन कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भयङ्कर अनर्थों की भी भरपूर चर्चा की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य केवल ३); ले० 'कौशिक' जी।

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, महान सांसारिक आपत्तियों तथा यातनाओं से आजीवन खेलने वाले, इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र सांसारिक मनुष्य के लिए अमृत के तुल्य है। इसके केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में महान परिवर्तन हो जायगा—एक दिव्य ज्योति उत्पन्न हो जायगी। सचित्र और सजिल्द मूल्य २॥)

विवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अश्लील व्यवस्थाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन दुखी और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा उनका सुख-स्वच्छन्दतापूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रता-पूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥)

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झञ्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी; हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्म-बल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना आपने एकदम बिसार दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का ख़ून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों से १=) ले० 'वर्मा' एम० ए०।

मनोरञ्जक कहानियाँ

इस पुस्तक में १७ छोटी-छोटी, शिक्षाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ संग्रह की गई हैं। कहानियों को पढ़ते ही आप आनन्द से मस्त हो जायँगे और सारी चिन्ताएँ दूर हो जायँगी। बालक-बालिकाओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। केवल एक कहानी उनको सुनाइए—ख़ुशी के मारे उछलने लगेंगे, और पुस्तक को पढ़े बिना कदापि न मानेंगे। मनोरञ्जन के साथ ही प्रत्येक कहानियों में शिक्षा की भी सामग्री है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी कॉपियाँ और शेष हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ

इस पुस्तक में पूर्वीय और पाश्चात्य, हिन्दू और मुसलमान, स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं। केवल एक बार के पढ़ने से बालक-बालिकाओं के हृदय में दयालुता, परोपकारिता, मित्रता, सचाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के अङ्कुर उत्पन्न हो जायँगे और भविष्य में उनका जीवन उसी प्रकार महान और उज्ज्वल बनेगा। मनोरञ्जन और शिक्षा की यह अपूर्व सामग्री है। भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥); ले० ज़हूरबख़्श।

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ॥॥); स्थायी ग्राहकों के लिए ॥-)

लालबुझक्कड़

जगत्प्रसिद्ध नाटककार 'मोलियर' की सर्वोत्कृष्ट रचना का यह हिन्दी अनुवाद है। नाटक आदि से अन्त तक हास्यरस से भरा हुआ है। शिक्षा और विनोद की अपूर्व सामग्री है। मनोरञ्जन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों का भी दिग्दर्शन कराया गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य २); ले० जी० पी० श्रीवास्तव

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य केवल ॥॥); स्थायी ग्राहकों से ॥-)

आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियाँ

छोटे-बड़े सभी के मुँह से आज यह सुनने में आ रहा है कि भारतवर्ष आयरलैण्ड बनता जा रहा है। उस आयरलैण्ड ने अङ्गरेज़ों की ग़ुलामी से किस तरह छुटकारा पाया और वहाँ के शिनफ़ीन दल ने किस कौशल से लाखों अङ्गरेज़ी सेना के दाँत खट्टे किए, इसका रोमाञ्चकारी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। इसमें आपको इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। मूल्य केवल दस आने। ले० सत्यभक्त।

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से ।=)

गुदगुदी

हास्य तथा मनोरञ्जन भी स्वास्थ्य के लिए एक अनोखी औषधि है। किन्तु इसका उपाय क्या है? उपाय केवल यही कि इस पुस्तक की एक प्रति मँगा लीजिए और काम की थकावट तथा भोजन के बाद पढ़िए। इसका केवल एक ही चुटकुला एक घण्टे तक आपको हँसाएगा। ले० जी० पी० श्रीवास्तव ; मूल्य ॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

चाहिए। किसी के लिए द्वार बन्द न होना चाहिए, जिससे प्रत्येक मनुष्य अपनी योग्यता दिखा सके। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि प्रत्येक की अवस्था समान हो जावे। सभी सुखी या दुखी नहीं हुए न होंगे और न हो ही सकते हैं।

किसी का हक़ मारना नहीं चाहिए, बल्कि उसकी रक्षा होनी चाहिए। साम्यवाद ऐसी समता का हामी नहीं है जो संसार का ही प्रलय कर दे। साम्यवाद इसका तो बराबर समर्थन करता है, कि जिसमें जैसी योग्यता है और जो जैसा परिश्रम करता है उसको उसी मुआफ़िक़ फल मिले। वह इसका तो कट्टर शत्रु है कि विशेष योग्यता वाले और कम योग्यता वाले को बराबर फल दिया जावे। साम्यवाद शारीर-बल या परिश्रम को अग्र-स्थान देता है। इसके मानी यह नहीं हैं कि वह ब्राह्मणत्व की बनिस्बत शूद्रत्व को अच्छा समझता है; बल्कि जो अपने दिमाग़ की कुटिलता के सहारे दूसरे के परिश्रम पर मज़े उड़ा रहे हैं और श्रमजीवियों पर अमानुषिक अत्याचार कर रहे हैं, उनको दूर करना चाहता है। वह ब्रह्मज्ञान (ईश्वरीय ज्ञान) या मस्तिष्क-बल* को नहीं भुलाना चाहता है।

मैं लगभग उन सभी आक्षेपों का जवाब दे चुका हूँ या मैंने यथाशक्ति भ्रम-निवारण का प्रयत्न किया है, किन्तु अब मैं कुछ और इसके विषय में पाठकों के सम्मुख रखता हूँ, जिससे शायद असलियत स्पष्ट हो जावे।

बैठे गोल मेज़ में गपोल गीत गावेंगे

[श्री० सीतारामसिंह जी]

(कवित्त)

भारत में जाको कोऊ करत प्रतीति नाहिं,
ऐसे नर लन्दन में नकल दिखावेंगे !
जिनहिं बुलाए जिन कौतुक सिधाए तिन,
नाक, नोक, नीर, नूर, धूर में मिलावेंगे !!
पावेंगे न टूकहूँ हिलावेंगे प्रबल पूँछ,
बैठे गोलमेज़ में गपोल-गीत गावेंगे !!

आजकल साम्यवाद के विषय में जनता में अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ फैलाई जाती हैं। कोई कहता है कि साम्यवादी नास्तिक हैं, धर्म को नेस्त-नाबूद करने वाले हैं, पूँजीपतियों के लूटने वाले हैं तथा कोई कहता है कि साम्यवादी सभी को बराबर बनाने वाले हैं आदि। साम्राज्यवादी राष्ट्र (विशेषतः ब्रिटेन) झूठी ख़बरें उड़ा कर जनता को भड़काया करते हैं। वास्तव में बात यह है कि साम्यवाद ने साम्राज्य-पिपासा वालों की चालाकियों, अत्याचारों का भण्डाफोड़ कर दिया है और वह उसे दुनिया से सदैव के लिए ख़तम करना चाहता है। यही कारण है कि साम्राज्यवादी साम्यवादी हौवे के नाम से थर-थर काँपते हैं। उसके विरुद्ध प्रयत्न करने में कुछ उठा नहीं रखते हैं।

इसके जन्म-दाता जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक महात्मा कार्ल मार्क्स हैं।† आपने पहले-पहल जीवन की समस्या को हल करने तथा संसार की सुख-शान्ति के विषय में सोचना प्रारम्भ किया। अन्त में आप इस तत्व पर पहुँचे कि लोग जिस तरह सुख-शान्ति का रास्ता ढूँढ रहे हैं, वह केवल भ्रम मात्र है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के हड़प जाने की फ़िक्र में है। एक-दूसरे का ख़ून चूस रहे हैं, निर्बलों पर सबल अमानुषिक अत्याचार कर रहे हैं, इससे संसार में सुख-शान्ति नहीं होगी। आपने शीघ्र ही इसके विरुद्ध आवाज़ उठाई, किन्तु महात्मा टॉलस्टॉय ने इस आवाज़ को और भी बुलन्द किया और अपनी कृतियों द्वारा इन विचारों को सारे संसार में फैला दिया। उस समय रूस का ज़ार प्रजा पर भीषण अत्याचार कर रहा था, जिन्हें देख कर राजतन्त्र की ओर से प्रजा को और भी घृणा हो गई। अन्त में वह शुभ दिवस आ ही पहुँचा कि ज़ार के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए और सारे देश में किसान, मज़दूरों का राज्य हो गया। इसे देख कर एकदम दुनिया थर्रा गई।

आज जो भीषण अत्याचार राजा प्रजा पर, उच्च जाति वाले नीची जाति वालों (शूद्रों) पर, बलवान निर्बलों पर, पुरुष (विशेषतः हिन्दू) स्त्रियों पर कर रहे हैं—क्यों कर रहे हैं? जब कि सभी उस परम पिता परमात्मा के बनाए हुए हैं। धर्म के नाम पर जो अत्याचार भारत तथा यूरोप में किए गए हैं, दिल दहलाने वाले हैं! ज़िन्दा जला देना, आरे पर धर कर चिराना, दीवालों में जीवित चुनवा देना, कुत्तों से मांस नुचवाना आदि भीषण अत्याचार क्या कभी भुलाए जा सकते हैं? जब यह अत्याचार असह्य हो गए तो साम्यवाद का जन्म हुआ और उसने सब कृत्रिम भेद-भावों को मिटा कर मनुष्यों के प्रकृति-प्रदत्त स्वत्वों की रक्षा की। आजकल के साम्यवाद में पहले से बहुत कुछ अन्तर पड़ गया है, क्योंकि जब यह अत्याचार असहनीय हो गए तो इनने पीड़ित दिलों में प्रतिहिंसा की अग्नि पैदा कर दी। जिससे कुछ असहिष्णु व्यक्तियों ने अत्याचारियों के ऊपर भी अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए और जो बातें अन्याय में सहायक थीं, उनके विरुद्ध भी आन्दोलन किया। यह साम्यवाद के असली उद्देश्य या सिद्धान्त का दोष नहीं है, न महात्मा कार्लमार्क्स और महात्मा टॉलस्टॉय का ही दोष है। उन्होंने तो संसार के उद्धार के लिए ही इसको जन्म दिया था। समय की गति-विधि के अनुसार पश्चिमी साम्यवादी अपने असली उद्देश्य से कुछ दूर अवश्य हट गए हैं, किन्तु इससे साम्यवाद दुनिया में फैलने से रुक नहीं सकता है।

* * *

---

* जो इसके विषय में अधिक जानना चाहें वह महात्मा टॉलस्टॉय-लिखित पुस्तकें पढ़ें तो उन्हें मालूम होगा कि साम्यवाद ब्रह्मज्ञान या ईश्वरीय ज्ञान का विरोधी नहीं है।

† आपकी संक्षिप्त जीवनी 'भविष्य' के पिछले अङ्क में प्रकाशित हो चुकी है।

—सं० 'भविष्य'

(२७ वें पृष्ठ का शेषांश)

शाप निकालते हैं—कहते हैं साइमन कमीशन ही के तुल्य है। है तो फिर क्या बेजा है। इरविन साहब इतने अनुदार नहीं कि साइमन साहब का इतना बड़ा भारी परिश्रम मिट्टी में मिला देते। उन्हें सब का ध्यान रहता है। साइमन साहब तो बहुत बड़े आदमी हैं, वे अपने मातहतों की भी बात रखते हैं। हिन्दुस्तान ही में उन्होंने बहुत सी बातें केवल अपने मातहतों को ख़ुश करने के लिए की हैं—हालाँकि हृदय से वे उनके विरुद्ध थे। ये सब बातें क्या उनकी सज्जनता, सहृदयता, नेकनीयती इत्यादि-इत्यादि को प्रकट नहीं करतीं? अवश्य करती हैं; परन्तु कहे किससे? अन्धे के आगे रोवे अपने दीदे खोवे। हिन्दुस्तानियों में कृतघ्नता का माद्दा ज़रा आवश्यकता से अधिक है, इसीलिए ये किसी का उपकार नहीं मानते। मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि लॉर्ड इरविन में सब गुण ही गुण हैं—अवगुण एक भी नहीं। जो उनमें अवगुण देखते हैं उन्हें दृष्टि-भ्रम का रोग है। वे लोग ज़रा अपने राम की आँखों से देखें तो उनके मुख से यही निकले कि—"कौन-कौन गुण गाऊँ इरविन के।" इस पद में एक मात्रा बढ़ गई है, परन्तु जहाँ लॉर्ड महोदय मौजूद हैं, वहाँ का हिसाब-किताब बढ़ा ही रहना चाहिए।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्त्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

कवि का मस्तिष्क अमल जल से भरा हुआ जलाशय है। उसमें एक छोटा सा कङ्कड़ पड़ते ही अनेक लहरें उठने लगती हैं।

चरित्रहीन मूर्ख, चरित्रहीन विद्वान से अच्छा है। एक अन्धा होने के कारण पथ-भ्रष्ट है, दूसरा नेत्र रखते हुए।

यदि बिल्ली के पर होते, तो संसार में पक्षी न दिखाई देते।

मैं प्रकृति के उस नाच और गाने पर मस्त हूँ, जिसको देख कर शीतल वायु नाचने और बुलबुल गाने लगती है।

तेरे अधर मेरी प्रार्थना के श्लोक हैं।
तेरे नेत्र मेरे प्रकाश के देवालय।

भवसागर में मेरा अस्तित्व केवल एक बुलबुले के समान है! ज्योंही कुछ उठने का प्रयत्न करता हूँ, बुलबुलों के सदृश फूट कर मिट जाता हूँ।

शत्रु की मृत्यु से प्रसन्न मत हो; तू स्वयं भी अमर नहीं है।

दाता का दोष इस भाँति छिप जाता है, जिस प्रकार चन्द्र के किरण-जाल में उसका कलङ्क।

मूर्ख के जीवन का अनुकरण मत करो, उससे शिक्षा लो।

कीचड़ के हृदय में सुगन्ध छिपी है और मधु भी।

जन्म और मृत्यु दोनों सुन्दर हैं, परन्तु इन दोनों में मृत्यु अधिक सुन्दर है।

बाल-सूर्य की छवि अत्यन्त कमनीय होती है, परन्तु क्या वह अस्त होते हुए रवि की छटा की बराबरी कर सकती है?

निर्बल को बलवान बनने का अधिकार है, जीने का नहीं।

भय से अपरिचित होने पर हम मृत्यु तक को चुनौती देते हैं।

मूर्ख का हृदय उसकी जिह्वा पर होता है; बुद्धिमान की जिह्वा उसके हृदय में।

बड़ा बनने की अभिलाषा है तो अपने आपको छोटा जान।

चमेली के पुष्प-तारकाओं के बीच में चम्पे के फूल-चन्द्र को गूँथ कर निशा-देवी अपनी सास प्रकृति देवी को पुष्पमाला पहनाती है।

संसार में मृत्यु कोई आश्चर्य की बात नहीं है।
मुझे तो यह जीवन ही आश्चर्यमय है।

छप गई ! प्रकाशित हो गई !!

व्यङ्ग-चित्रावली

यह चित्रावली भारतीय समाज में प्रचलित वर्तमान कुरीतियों का जनाज़ा है। इसके प्रत्येक चित्र दिल पर चोट करने वाले हैं। चित्रों को देखते ही पश्चात्ताप एवं वेदना से हृदय तड़पने लगेगा; मनुष्यता का याद आने लगेगी; परम्परा से चली आई रूढ़ियों, पाखण्डों और अन्ध-विश्वासों को देख कर हृदय में क्रान्ति के विचार प्रबल हो उठेंगे; घण्टों तक विचार-सागर में आप डूब जाएँगे। पछता-पछता कर आप सामाजिक सुधार करने को बाध्य होंगे!

प्रत्येक चित्रों के नीचे बहुत ही सुन्दर एवं मनोहर पद्यमय पंक्तियों में उनका भाव तथा परिचय अङ्कित किया गया है। इसके प्रकाशित होते ही समाज में हलचल मच गई। प्रशंसा-पत्रों एवं सम्मतियों का ढेर लग गया। अधिक प्रशंसा न कर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि ऐसी चित्रावली आज तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुई। शीघ्रता कीजिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

इकरङ्गे, दुरङ्गे, और तिरङ्गे चित्रों की संख्या लगभग २०० है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, फिर भी मूल्य लागत मात्र केवल ४); स्थायी तथा 'चाँद' के ग्राहकों से ३); अब अधिक सोच-विचार न करके आज ही आँख मींच कर ऑर्डर दे डालिए !!

[लेखक—श्री० रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर]

यदि आप सचमुच ही स्वाधीनता के उपासक हैं,

यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को पराधीनता के बन्धनों से मुक्त कर स्वतन्त्र बनाना चाहते हैं तो "दैवी-सम्पद्" को अपनाइए।

यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को सुख-समृद्धि-सम्पन्न करना चाहते हैं तो "दैवी सम्पद्" का अध्ययन करिए।

यदि धार्मिक विचारों के विषय में आपका मन संशयात्मक हो तो "दैवी सम्पद्" को विचारपूर्वक पढ़िए। आपका अवश्य ही समाधान होगा।

यदि आपके जीवन के किसी भी व्यवहार के सम्बन्ध में कोई उलझी हुई ग्रन्थि हो तो उसको सुलझाने के लिए "दैवी सम्पद्" का सहारा लीजिए! आप उसे अवश्य ही सुलझा सकेंगे।

अपने विषय की यह अद्वितीय पुस्तक है। लगभग ३०० पृष्ठों की फ़ेदरवेट काग़ज़ पर छपी हुई सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥) रु०।

सार्वजनिक संस्थाओं को, केवल डाक-व्यय के।-) (पाँच आने) ग्रन्थकर्ता के पास भेजने पर यह पुस्तक मुफ़्त मिलेगी।

ग्रन्थकर्ता का पता—श्री० सेठ रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर (राजपूताना)

प्रकाशक का पता—व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

मारवाड़ का एक आदर्श परिवार

(ठाकुर केसरीसिंह और प्रतापसिंह का संक्षिप्त परिचय)

चारण-जाति सदा से क्षत्रियों के लिए, राजनैतिक शिक्षा-गुरु, वीरता की प्रोत्साहक, विपत्ति में सहायक और पूज्य रही है। चारणों की ज्वलन्त वीरता के आदर्श से किसी राज्य का इतिहास ख़ाली नहीं। चारणों में भी ५०० वर्ष पूर्व निराश महाराणा हम्मीर का छूटा हुआ चित्तौड़ अपने बुद्धि-वैभव और बाहु-बल से फिर से दिलाने वाले, इतिहास-प्रसिद्ध वीरवर "सौदा बारहठ बारू" की सन्तान वीरता में आज तक सदा अग्रणीय रही है। उसी वीर-वंश की तेईसवीं पीढ़ी में ठाकुर केसरीसिंह जी हैं। मेवाड़ के अन्तर्गत शाहपुरा-राज्य में ठाकुर केसरीसिंह के पूर्व-पुरुषों की जागीर चली आती थी। और यह घर शाहपुरा-राज्य के प्रथम श्रेणी के उमराव सरदारों से भी अधिक सम्मानित रहा है। केसरीसिंह जी के पिता बारहठ कृष्णसिंह जी ने अपने बुद्धि-वैभव से राजपूताना के समस्त नरेशों से सम्मान प्राप्त किया और वे अपने समय में राजपूताना एवं मध्य-भारत में प्रधान राजनीतिज्ञ माने गए थे।

कृष्णसिंह जी के तीन पुत्र थे—केसरीसिंह, किशोरसिंह और ज़ोरावरसिंह। केसरीसिंह जी का जन्म वि० सम्वत् १९२९ के मार्गशीर्ष कृष्ण ६ को अपनी जागीर के गाँव देवपुरा में हुआ और जन्म से एक मास बाद ही जन्मदात्री का स्वर्गवास हो गया। ये भी अपनी तरुण अवस्था में ही बुद्धि-वैलक्षण्य से महाराणा उदयपुर के सलाहकारों की श्रेणी में पहुँच गए थे। वैशाख, सम्वत् १९५६ में वर्तमान कोटा-नरेश उम्मेदसिंह की गुण-ग्राहकता ने केसरीसिंह को खींचा और ये कोटा आ गए और वहीं पर रहने लगे।

केसरीसिंह जी अठारह-उन्नीस वर्ष की अवस्था से ही जातीय और सामाजिक सुधारों में उत्साहपूर्वक भाग लेते रहे थे और स्वदेश की पतित दशा का भी उनको ध्यान बना रहता था। सन् १९११ में उनकी ओर से "राजपूत जाति की सेवा में अपील" निकलते ही भारत की नौकरशाही चौकन्नी हो गई। परन्तु केसरीसिंह जी शिक्षा और सङ्गठन का ही कार्य करते थे और उनकी "स्वतन्त्र छात्र-शिक्षा" व "छात्र-शिक्षा-परिषद्" का ढाँचा इतना मज़बूत था कि उसे डिगाना सहज नहीं था, क्योंकि स्वजातिहित से प्रेरित होकर राजपूताना व मध्य-भारत के नरेश और बड़े-बड़े राजपूत उमराव और सरदार भी उसमें सम्मिलित थे। ऐसे कार्य को ख़तरनाक कैसे कहा जाय ?

परन्तु जब सरकार ने देखा कि भारतीय सेना में जो राजस्थानी राजपूत सिपाही और अफ़सर हैं, वे भी अपने असहाय बालकों के शुभ-भविष्य और जाति-गौरव के पुनर्दर्शन की आशा से केसरीसिंह जी की सेवा को अमूल्य समझ कर उत्साहपूर्वक सहयोग देने लगे हैं, तो वह व्यग्र हो उठी। सत्य की न जाँच की, न पड़ताल ! सन् १९१४ की ३१ मार्च के दिन शाहपुरा-नरेश को आगे रख कर सहसा केसरीसिंह जी को बिना कोई अभियोग लगाए गिरफ़्तार कर लिया, तीन मास तक इन्दौर की छावनी में भीलों की पल्टन के बीच बन्द रक्खा ! उसी समय 'दिल्ली-षड्यन्त्र' 'आरा-केस' आदि चले, उन्हीं में किसी तरह फाँस देने की पूरी चेष्टा हुई, परन्तु निष्फल गई ; क्योंकि वे क़ानूनी प्रान्त थे। तब यही उचित समझा कि सम्राट का शासन उलट देने की नीयत के अभियोग पर राजस्थान के किसी राजा के हाथ से ही सज़ा दिलाई जाय, ताकि प्रत्येक नरेश काँप उठे और छात्र-शिक्षा का उद्योग छिन्न-भिन्न हो जाय। साथ ही राज्यों में सरकारी पुलिस का भी द्वार खुल जाय। राजद्रोह के साथ एक मर्डर (क़त्ल) का पुछल्ला जोड़ना तो कुटिल-सत्ता का सनातनधर्म है ही। कोटा को ही पसन्द किया गया, वहीं केस चला। प्रायः भारत के समस्त प्रान्तों के बड़े-बड़े अङ्गरेज़ पुलिस-ऑफ़िसर कोटा पहुँच गए, कई राज्यों के पोलीटिकल रेज़िडेण्ट भी कोटा में आए थे। 'पायोनियर' ने भी अपना 'स्पेशल स्टॉफ़' यहाँ खोला। देखते ही देखते कोटा गौराङ्गों की छावनी बन गया। 'पायोनियर' और 'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' ठाकुर साहब के विरुद्ध आग उगल रहे थे। राजपूताना, मध्य-भारत के समस्त नरेशों की आँखें कोटा पर लगी हुई थीं, क्योंकि देशी राज्यों में यह अभूतपूर्व काण्ड था। राजद्रोह का कोई प्रमाण सरकार के हाथ में नहीं था, अधीन राज्य को घुड़की से मना देने की आशा थी ; परन्तु केवल घुड़की से हाँ कह देने पर केसरीसिंह से सम्बन्ध रखने वाली सभी बड़ी रियासतें व्यर्थ आफ़त में पड़ती थीं। अतः साहसी कोटा-दीवान स्वर्गीय चौबे रघुनाथदास जी ने, गला दबाए जाने पर भी, इस केस में राजनैतिक अपराध तो माना ही नहीं; अलबत्ता ठाकुर केसरीसिंह को बीस वर्ष की सज़ा ठोंक कर सरकार के आँसू पोंछ दिए !

सरकार तो ठाकुर साहब को भयङ्कर मानती ही रही। इसी से जगह-जगह खुले हुए राजपूत-बोर्डिङ्ग हाउस और सङ्गठन को बिखेर चुकने पर और केस के साथ ही विद्रोह भड़कने की आशङ्का मिटने पर, नौकरशाही ने ठाकुर केसरीसिंह जी को कोटे से माँग कर सुदूर हज़ारीबाग़ जेल में पहुँचा दिया !

ठाकुर साहब ने गिरफ़्तार होकर शाहपुरा छोड़ा। उसी दिन से अन्न न लेने की प्रतिज्ञा की ! केवल दूध लेते थे। हज़ारीबाग़ पहुँचने पर कठिन परीक्षा शुरू हुई। वीरों को सङ्कल्प से विचलित करने में ही सरकार को मज़ा आता है। लङ्घन शुरू हुआ, निरन्तर २८ दिन निराहार बीते ! जब अधिकारियों ने देखा कि कष्टभोगने से पहले ही कहीं पक्षी उड़ न जाय, तब उन्तीसवें दिन थोड़ा सा दूध दिया गया। प्रतिज्ञा तो अन्न न लेने की थी, दूध ले लिया गया। एक सप्ताह बाद फिर लङ्घन शुरू हुआ, महीनों तक रबर की नली से पानी में थोड़ा सा चावल का माँड मिला कर पेट में ठूँसा जाता रहा। यह युद्ध अठारह मास तक चला। इतनी अवधि तक काल-कोठरी से भी वे नहीं निकाले गए। आख़िर सरकार परास्त हुई। बिहार-उड़ीसा के जेलों के प्रधान अधिकारी (आई० जी०) ने आकर कहा कि केसरीसिंह ! राना प्रताप की हिस्ट्री से हम मेवाड़ के पानी की ताक़त को पहले ही जानते थे, शाबाश बहादुर ! तुम जीत गए, सरकार हार गई, आज से दूध ही मिलता रहेगा। रहस्य दूध में नहीं, सङ्कल्प की अचलता में है।

सन् १९१९ में सरकार ने स्वयम् अपनी तरफ़ से केसरीसिंह जी से अपने केस की वायसराय के नाम अपील माँगी। जेल-अधिकारियों के अति आग्रह पर ही यह की गई और सन् १९१९ में जून के अन्त में ठाकुर साहब छोड़ दिए गए !!

वीर कुँवर प्रताप

जिस वीर का नाम आज भारत में विख्यात है, उस कुँवर प्रतापसिंह का जन्म राजपूताना की इतिहास-प्रसिद्ध वीर चारण-जाति में विक्रम सम्वत् १९५० की ज्येष्ठ शुक्ला ९ को उदयपुर में ठाकुर श्री० केसरीसिंह जी के घर माता श्री० माणिकदेवी की कुक्षि से हुआ। केसरीसिंह जी के कोटे आने पर प्रताप कोटे में शिक्षा पाता रहा। फिर दयानन्द एङ्गलो वैदिक स्कूल व बोर्डिङ्ग अजमेर में भेज दिया गया। मैट्रिक तक पढ़ा, परन्तु परीक्षा में नहीं बैठा, उसे सार्टिफ़िकेट की इच्छा नहीं थी, अङ्गरेज़ी पढ़ा ही इसलिए था कि इसके द्वारा भारत के किसी भी प्रान्त में सेवा कर सके और अपने को खपा सके। ठाकुर केसरीसिंह जी युनिवर्सिटी की शिक्षा को दासत्व का साँचा मानते थे। अतः प्रताप को पन्द्रह वर्ष की आयु में स्वतन्त्र शिक्षण के लिए जयपुर के प्रसिद्ध देशभक्त अर्जुनलाल जी सेठी के जैन बोर्डिङ्ग में रख दिया। वह जैन बोर्डिङ्ग जब जयपुर से उठ कर इन्दौर गया, तब प्रतापसिंह दिल्ली के प्रसिद्ध देशभक्त वीर अमीरचन्द जी के यहाँ रख दिए गए। प्रताप के संसर्ग में जो कोई भी आया, मुग्ध हो गया। ऐसी मोहिनी मूर्ति और दिव्य आत्मा क्वचित् ही मिलती है। अमीरचन्द जी के गिरफ़्तार होने से कुछ ही दिन पहले वह अपने पितृःश्री के पास आ गया था और पिता गिरफ़्तार हुए, उससे एक सप्ताह पहले अज्ञात-वास में चल दिया।

प्रताप ने अपने प्यारे चचा बलिष्ठ वीर ठाकुर ज़ोरावरसिंह जी के साथ ही अपने शाहपुरा के विशाल प्रासाद को मार्च सन् १९१४ के तीसरे सप्ताह में अन्तिम प्रणाम किया। ३१ मार्च के दिन ठाकुर केसरीसिंह जी के समस्त पुरुष-परिवार पर वारण्ट निकले। चचा-भतीजे ढूँढ़े गए, ख़ूब ही ढूँढ़े गए, भारतीय सी० आई० डी० के दूतों ने राजपूताना और मध्य-भारत का घर-घर छान मारा, पर कहीं पता नहीं लगा।

ठाकुर साहब के मारवाड़ के भ्रमण-काल में, जिस पाँचेटिया ग्राम में पिता के चरणों में सिर रख कर प्रताप ने बिदा ली, उस ग्राम के चारण व जागीरदारों से सरकार ने यह वादा लिखाया कि यदि कुँवर प्रताप इस ग्राम में कभी आ जायगा तो वे उसे गिरफ़्तार करा देंगे, वरना सर्वस्व खोवेंगे। जब सी० आई० डी० के पेटार्थी प्राणियों के पैर निराशा से ढीले हो चुके, तब एक दिन प्रताप सहसा इक़रार की कथा न जानने से, उसी ग्राम में आ खड़ा हुआ। सबके हृदयों में सन्नाटा छा गया। घुस-पुस होने लगी। किसी ने कहा दुःख है, परन्तु विवश हैं ; दूसरे ने कहा, यह कभी हो सकता है कि हम प्रताप को आगे बढ़ कर सौंपें ? प्रताप को मालूम होने पर उसने कहा, मेरे कारण किसी पर व्यर्थ विपत्ति आए, यह मुझे सह्य नहीं, मैंने अभी किया ही क्या है ? मुझे कौन खाता है ? चलो मैं तैयार हूँ, सरकार के सुपुर्द करके आप लोग बरी हो जायँ, यही मेरी प्रबल इच्छा है। अन्त में यह तय पाया कि हम प्रताप पर किसी तरह की सख़्ती सहन नहीं कर सकते ! अधिकारी-वर्ग को कहा जाय कि यदि प्रताप के गिरफ़्तार होने पर जाँच तक हममें से कोई भी दो व्यक्ति निरन्तर उसके साथ रहने दिए जायँ, ताकि उस पर पुलिस का बेजा दबाव न पड़ सके, यह शर्त स्वीकार हो तो हम उद्योग करके वह जहाँ होगा, वहाँ से लाकर पेश कर देंगे। क्योंकि हमारा विश्वास है कि वह सर्वथा निर्दोष है, नाहक़ छिप कर सरकार का सन्देह सिर पर लेने का बचपन करता है। यदि यह प्रार्थना स्वीकार हो जाय तो उसे सौंप दिया जाय, वरना फिर देखा जायगा। भारतीय पुलिस के उच्च गोरे अधिकारियों ने यह शर्त स्वीकार की और पहली बार प्रताप उनके हाथ में आया। कुछ दिन इधर-उधर घुमा कर कोटे ले जाकर छोड़ दिया गया।

प्रताप कोटा रह कर, कोटा-केस में अपने परम प्यारे पिता को कैसे-कैसे प्रपञ्चों के जाल में फाँसा जा रहा

है, यह सब सजगता से देखता रहा। पिता की दृढ़ता और धैर्य उसके हृदय में आनन्द, गौरव और तेज भरते थे। देशभक्ति की आग से धधकते हुए हृदय-कुण्ड में पाशविक सत्ता के मदान्ध प्राणी अत्याचारों का पेट्रोल उँड़ेल रहे थे। माता का निश्वास धमनी का काम दे रहा था। बन्धन में पड़े हुए पिता को प्रताप ने सन्देश भेजा—"दाता! (पिता को वह इसी शब्द से पुकारता था) कुछ विचार न करें, अभी प्रताप ज़िन्दा है।"

ठाकुर केसरीसिंह जी को आजन्म कारावास की सज़ा सुना दी गई। जलूस भी सब बिखर गया। एक दिन प्रताप ने जननी से कहा—"भाभा, धोती फट गई; कहीं से तीन रुपए का प्रबन्ध कर दो तो धोती लाऊँ, आज ही चाहिए।" माता के हाथ तो सर्वथा ख़ाली थे, कोशिश करने पर दो रुपए मिले और पुत्र के हाथ में दिए। प्रताप के लिए माता का दिया हुआ यही अन्तिम पाथेय था। बिना कुछ कहे, मन ही मन माता को अन्तिम प्रणाम कर सायङ्काल होते वह निकल पड़ा। शहर में पिता के एक मित्र के पास पहुँचे, कहा—"जो कुछ भी तैयार हो, ले आओ, भोजन यहीं करूँगा।" भोजन करते समय मित्र ने कहा—"कुँवर साहब! अब क्या इच्छा है?" प्रताप ने कहा—"शादी करना है।" "क्या कहते हो, शादी? आज तक स्वीकार न की, अब इस घोर विपत्ति में शादी? यह क्या सूझी?" "हाँ निश्चय ही शादी, लग्न भी आ गई है, उसी के लिए जाता हूँ" "कहाँ?" "सब सुन लोगे"—यह कहते हुए ज़ोर से "वन्देमातरम्" का नारा लगाया और अदृश्य हो गया! उसके बाद प्रताप को किसी ने कोटे में नहीं देखा। बेचारा मित्र क्या समझे कि प्रताप की शादी क्या है। दूसरे दिन जब प्रताप घर नहीं लौटा, तो वही मित्र आए और शादी की बात कही। चतुर माता सब समझ गई और कहा—"ठीक है, परन्तु उसने मुझसे नाहक़ ही छिपाया। मैं उसे तिलक करके और चुम्बन लेकर बिदा करती।"

प्रताप कोटा छोड़ कर इधर-उधर भ्रमण करते हुए सिन्ध हैदराबाद पहुँचा और कुछ दिन वहाँ रहा। उसके साथ में उसका एक सच्चा बाराती चारण-जाति ही का वीर ठाकुर गणेशदान था। दुःख है, प्रताप के गिरफ़्तार हो जाने की ख़बर से इसके प्रेमी-हृदय पर ऐसी चोट पहुँची कि बलिष्ठकाय को भयङ्कर संग्रहणी एवं क्षय शीघ्र ही चाट गए। इधर-उधर छिपते-टकराते इस वीर का अवसान हो गया!!

इससे पहले प्रताप ने कहाँ क्या किया, उसका आभास "बन्दी-जीवन" "पञ्जाब में प्रचण्ड काण्ड" आदि पुस्तकों में एवं रासबिहारी बोस के संस्मरणों में मिलता है।

अन्त में फिर जब पञ्जाब को प्रताप की आवश्यकता हुई, तब आह्वान पाकर वह उधर लपका। हैदराबाद के कार्य को दूसरों के हाथ सौंप, गरमी, भूख और चार-पाँच दिन का जागरण सहता हुआ, रेल से जोधपुर होकर निकला। जोधपुर से अगले छोटे से रेलवे स्टेशन "आसा-नाडा" पर स्टेशन-मास्टर परिचित था। वहाँ ठहर कर कुछ आराम कर लेने, व कुछ नई बात हो तो जान लेने के विचार से, प्रताप वहाँ उतर पड़ा। उसे क्या मालूम था कि वह विश्वासघाती के चङ्गुल में जा रहा है। स्टेशन-मास्टर को इस बीच में पुलिस ने फोड़ लिया था। स्टेशन-मास्टर ने प्रताप को देखते ही कहा—"पुलिस तुम्हारे लिए चक्कर लगा रही है, कोई देख लेगा, मेरी कोठरी में जा बैठो, कुछ खाओ-पियो।" वह प्रताप को कोठरी में ले गया। प्रताप ने कहा—"निद्रा सता रही है, सोऊँगा।" विश्वासघाती ने कहा—"निःशङ्क सो जाओ। ताला मार देता हूँ, ताकि किसी को भ्रम न हो।" गाढ़ निद्रा होने पर स्टेशन-मास्टर ने कोठरी में से प्रताप का शस्त्र व दूसरी सब चीज़ें बाहर निकाल लीं, ताकि मुक़ाबले के लिए प्रताप के हाथ में कुछ न रहे। फिर उसने जोधपुर-पुलिस को टेलीफ़ोन कर दिया। बस फिर क्या था, पुलिस फ़ौजी रिसाला और दल-बल के साथ जा पहुँची। आसा-नाडा घेर लिया गया, कोठरी के द्वार और खिड़कियों पर बर्छे और सङ्गीनें अड़ा दी गईं। चुपके से ताला खोल कर, सोते हुए प्रतापसिंह पर पुलिस टूट पड़ी और बेचारा गिरफ़्तार कर लिया गया।

प्रताप-जैसे वीर और विलक्षण बुद्धि का बालक नहीं देखा। उसे तरह-तरह से सताए जाने में कसर नहीं रक्खी गई, परन्तु वाह रे धीर! टस से मस न हुआ। ग़ज़ब का सहने वाला था। सर चार्ल्स क्लीवलैण्ड जैसे (भारत के डायरेक्टर ऑफ़ सी० आई० डी०) घाघ का दिमाग़ भी चकरा गया, हम सब हार बैठे, उसी की दृढ़ता अचल रही।"

चन्दा और बन्दा

मैं हूँ, फ़ैशन है और चन्दा है!
बस इसी कशमकश में बन्दा है!!

उस समय प्रताप की उग्र मुख-मुद्रा, जोश-भरी लाल आँखें, फड़कते हुए होठ और उछलते हुए बाहुओं को जिनकी आँखों ने देखा है, वे आज भी कहते हैं कि वह सच्चा वीर था, सँभल जाता तो अवश्य वीर-खेल बतलाता!

आज भी आँखों में पानी भर कर पुलिस के काले ऑफ़िसर मुक्त-कण्ठ से कहते हैं—"हमने आज तक

बनारस में केस चला और प्रताप को पाँच वर्ष की सख़्त सज़ा हुई। बनारस-जेल से बरेली जेल में भेजा गया और वहीं विक्रम सम्वत् १९७५ (सन् १९१८) की वैशाखी पूर्णिमा को ठीक पच्चीसवें वर्ष की समाप्ति पर सदा के लिए ग़ुलामी के बन्धन तोड़ कर चला गया!!

* * *

उत्तमोत्तम पुस्तकों का भारी स्टॉक

स्त्रियोपयोगी

अदृष्ट (इ० द० कं०) ३)
अपराधी (चाँ० का०) २॥)
अश्रुपात (गं०पु०मा०) १), १॥)
अरक्षणीया (इं० प्रे०) १)
अनन्तमती (ग्रं० भं०) ॥=)
अनाथ-पत्नी (चाँ० का०) २)
अनाथ बालक (इं० प्रे०) १)
„ „ (इ० दा० कं०) १॥)
अबलाओं का इन्साफ़ (चाँ० का०) ३)
अबलाओं पर अत्याचार (चाँ० का०) २॥)
अबलोन्नति पद्य-माला (गृ० ल०) =)॥
अभागिनी (इ० दा० कं०) १)
अभिमान (गृ० का०) १)
अमृत और विष (दो भाग) (चाँ० का०) ४)
अवतार (सर० प्रे०) ॥)
अहल्याबाई (इं० प्रे०) १)
„ „ (हिं० पु० भं०) ।)
अञ्जना देवी (न० दा० स० एँ० सं०) ॥=)
अञ्जना सुन्दरी (प्रा०क०मा०)१)
अञ्जना-हनुमान (स० आ०) १॥), १॥)
आदर्श चाची (ब०प्रे०) १), १॥)
आदर्श दम्पति (ग्रं० भं०) १), १)
आदर्श पत्नी (स० आ०) ॥)
आदर्श बहू (ग्रं० भं०) ॥), १)
आदर्श बहू (उ० ब० आ०) ॥)
आदर्श भगिनी (ल०वि०प्रे०) ।)
आदर्श महिला (इं० प्रे०) २॥)
आदर्श महिलाएँ (दो भाग) (रा० द० अग्र०) १)
आदर्श रमणी (निहाल-चन्द) ॥=)
आदर्श ललना (उ० ब० आ०) ॥)
आरोग्य-साधन (महात्मा गाँधी) ।=)
आर्य-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २), २॥)
आशा पर पानी (चाँ० का०) ॥)
इन्दिरा (ल० वि० प्रे०) ॥)
„ (इ० दा० कं०) १)
ईश्वरीय न्याय (गं० पु० मा०) ॥)
उत्तम सन्तति (जटा० वै०) १॥)
उपयोगी चिकित्सा (चाँ० का०) १॥)
उमासुन्दरी (चाँ० का०) ॥)
उमा (उ० ब० आ०) १)
कन्या-कौमुदी (तीन भाग) ॥=)
कन्या-दिनचर्या (गृ० ल०) ।)
कन्या-पाकशास्त्र (ओं० प्रे०) ।)
कन्या-पाठशाला २॥)
कन्या-बोधिनी (पाँच भाग) (रा० व० ल०) १॥)
कन्या-शिक्षा (स० सा० प्र० मं०) ।)
कन्याओं की पोथी १)
कन्या-शिक्षावली (चारों भाग) (हिं० मं०) ॥=)
कपाल-कुण्डला (इ० दा० कं०) १)
कमला (ओं० प्रे०) १॥)
कमला-कुसुम (सचित्र) (गं० पु० मा०) १)
कमला के पत्र (चाँ० का०) ३)
„ „ (अङ्गरेज़ी) ३)
कृष्णाकुमारी ॥)
करुणा देवी (बेल० प्रे०) ॥=)
कलङ्किनी (स० सा० प्र० मं०) ॥=)
कल्याणमयी चिन्ता (क० म० जी०) ॥)
कुल-लक्ष्मी (हिं० मं०) १)
कुल-कमला ॥)
कुन्ती देवी १॥)
कुल-ललना (गृ० ल०) ॥=)
कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥), २)
क्षमा (गृ० ल०) ॥)
गर्भ-गर्भिणी ॥)
गल्प-समुच्चय (प्रेमचन्द) २॥)
ग्रह का फेर (चाँ० का०) ॥)
गायत्री-सावित्री (बेल० प्रे०) ।)
गार्हस्थ्य शास्त्र(त० मा० ग्रं०) १)
गीता (भाषा) १॥)
गुदगुदी (चाँ० का०) ॥)
गुणलक्ष्मी (उ० ब० आ०) ।=)
गुप्त सन्देश (गं० पु० मा०) ॥=)
गृहदेवी (म० प्र० का०) ।-)
गृह-धर्म(व० द०स० एँ० सं०)॥)
गृह-प्रबन्ध-शास्त्र (अस्यु०) ॥)
गृह-वस्तु-चिकित्सा (चि० का०) ॥)
गृहलक्ष्मी (मा० प्रे०)) १)
„ (उ० ब० आ०) १)
गृह-शिक्षा (रा० पू० प्रे०) =)
गृहस्थ-चरित्र (रा० प्रे०) ।)
गृहिणी (गृ० ल०) १)
गृहिणी-कर्त्तव्य (सु० ग्रं० प्र० मं०) २॥)
गृहिणी-गीताञ्जलि (रा० श्या०) ॥)
गृहिणी-गौरव (ग्रं० मा०) १॥), २)
गृहिणी-चिकित्सा (ल० ना० प्रे०) २॥)
गृहिणी-भूषण (हिं० हि० का०) ॥)
गृहिणी-शिक्षा (क०म०ली०)१)
गौने की रात (प्रा० का० मा०) ३)
गौरी-शङ्कर (चाँ० का०) ।=)
घरेलू चिकित्सा (चाँ० का०)१॥)
चिन्ता (सचित्र) (उ० ब० आ०) ॥)
चिन्ता (ब० प्रे०) १॥)
चित्तौड़ की चढ़ाइयाँ (ब० प्रे०) ॥=)
चित्तौड़ की चिता(चाँ०का०)१॥)
चौक पूरने की पुस्तक (चित्र० प्रे०) १)
छोटी बहू (गृ० ल०) १)
जनन-विज्ञान (पा० एँ० कं०) ३), ३॥)
जननी-जीवन (चाँ० का०) १)
जननी और शिशु (हिं० ग्रं० रा०) ॥=)
जपाकुसुम (ल० ना० प्रे०) २)
जया (ल० रा० सा०) ।-)
ज्ञाना (गं० पु० मा०) ॥=)
जासूस की डाली (गं० पु० मा०) १)
जीवन-निर्वाह (हिं० ग्रं० र०) १)
जेवनार (हिं० पु० ए०) ।-)
तरुण तपस्विनी (गृ० ल०) ।)
तारा (इं० प्रे०) १)
दक्षिण अफ़्रिका के मेरे अनुभव (चाँ० का०) २॥)
दमयन्ती (हरि० कं०) =)॥
„ (इं० प्रे०) ।)
दमयन्ती-चरित्र (गृ० ल०) =)॥
दम्पति-कर्तव्य-शास्त्र (सा० कुं०) १)
दम्पत्ति-मित्र (स० आ०) ३॥)
दम्पति-रहस्य (गो० हा०) १)
दम्पति-सुहृद (हिं० मं०) १)
दाम्पत्य जीवन (चाँ० का०)२॥)
दाम्पत्य-विज्ञान (पा० एँ० कं०) ३)
दिव्य-देवियाँ (गृ० ल०) १॥=)
दुःखिनी (गृ० ल०) ॥-)
दुलहिन (हिं० पु० मं०) ।)
देवबाला (ल० वि० प्रे०) ॥)
देवलदेवी (गृ० ल०) ।-)
देवी चौधरानी (इ० दा०कं०)२)
देवी जोन (प्रका० पु०) ।=)
देवी पार्वती (गं० पु० मा०) १), १॥)
देवी द्रौपदी (पॉपूलर) ॥=)
देवी द्रौपदी (गं० पु० मा०) ॥)
देवी सती „ ॥=)
द्रौपदी (इ० दा० कं०) २॥), ३)
धर्मात्मा चाची और अभागा भतीजा (चि०भ० गु०) ।-)
ध्रुव और चित्रा (चि० शा० प्रे०) ।-)
नवनिधि (प्रेमचन्द) ॥)
नल-दमयन्ती (सचित्र) ब० प्रे०) १॥), १॥), २)
„ „ (पॉपूलर) ॥)
„ „ (गं० पु० मा०) ॥)
नवीन शिल्पमाला (हेमन्त-कुमारी) ३)
नन्दन-निकुञ्ज (गं० पु० मा०) १), १॥)
नवीना (हरि० कं०) १॥)
नारायणी शिक्षा (दो भाग) (चि० भ० गु०) ३)
नारी-उपदेश (गं० पु० मा०) ॥)
नारी-चरितमाला (न० कि० प्रे०) ॥=)
नारी-नवरत्न (म० भा० हिं० सा० स०) =)
नारी-महत्व ॥)
नारी-नीति (हिं० ग्रं० प्र०) ॥=)
नारी-विज्ञान (पा० एँ० कं०) २), २॥)
नारी-धर्म-विचार १॥)
निर्मला (चाँ० का०) २॥)
पतिव्रता (इं० प्रे०) १)
„ (गं० पु० मा०) १=), १॥=)
पतिव्रता-धर्मप्रकाश १)
पतिव्रता अरुन्धती (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता गान्धारी(इं० प्रे०)॥=)
पतिव्रता मनसा (एस० आर० बेरी०) ॥)
पतिव्रता-माहात्म्य (वें० प्रे०) १)
पतिव्रता रुक्मिणी (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता स्त्रियों का जीवन-चरित्र १=)
पत्नी-प्रभाव (उ० ब० आ०) १)
परिणीता (इं० प्रे०) १)
पत्राञ्जलि (गं० पु० मा०) ॥)
पण्डित जी (इं० प्रे०) १॥)
पाक-कौमुदी (गृ० ल०) १)
पाक-प्रकाश (इं० प्रे०) ।=)
पाक-विद्या (रा० ना० ला०) =)
पाक-चन्द्रिका (चाँ० का०) ४)
पार्वती और यशोदा (इं० प्रे०) ॥=)
प्राचीन हिन्दू-माताएँ (ना० दा० स० एँ० सं०) १)
प्राणघातक-माला (अस्यु०) ॥=)
प्राणनाथ (चाँ० का०) २॥)
प्रेमकान्त(सु० ग्रं० प्र० मं०)१॥)
प्रेम-गङ्गा (गं० पु० मा०) १), १॥)
प्रेमतीर्थ (प्रेमचन्द) १॥)
प्रेम द्वादशी १), १॥)
प्रेमधारा (गु० ला० चं०) ॥)
प्रेम-परीक्षा (गृ० ल०) १=)
प्रेम-पूर्णिमा (प्रेमचन्द) (हिं० पु० ए०) २)
प्रेम-प्रतिमा (भा० पु०) २)
प्रेम-प्रमोद (चाँ० का०) २॥)
प्रेमाश्रम (हिं० पु० ए०) ३॥)
प्रेम-प्रसून (गं० पु० मा०) १=), १॥=)
बच्चों की रक्षा (हिं०पु०ए०)।-)
बड़ी बहू(रा० ना० ला०) ॥=)
बहता हुआ फूल (गं० पु० मा०) २॥),३)
बड़ी दीदी (इं० प्रे०) १)
वरमाला (गं० पु० मा०) ॥)
बाला पत्र-बोधिनी (इं० प्रे०) ॥)
बाला-बोधिनी (५ भाग) (रा० ना० ला०) १॥)
बाला-विनोद (इं० प्रे०) ।=)
बालिकाओं के खेल (वें० प्रे०) =)
विराजबहू (शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय) (सर० भं०)॥=)
वीर-बाला (चाँ० का०) ४)
ब्याही बहू (हिं० ग्रं० र०) ।)
भक्त स्त्रियाँ (रा० श्या०) ॥)
भक्त विदुर (उ० ब० आ०) ॥)
भगिनीद्वय (चि० शा० प्रे०) ।-)
भगिनी-भूषण(गं० पु० मा०)=)
भारत-सम्राट् (उ० ब० आ०) १॥)
भारत की देवियाँ (ल० प्रे०)।-)
भारत के स्त्री-रत्न(स० सा० प्र० मं०) १=)
भारत-महिला-मण्डल (ल० प्रे०) १)
भारत-माता (रा० श्या०) ।)
भारत में बाइबिल (गं० पु० मा०) ३), ४)
भारत-रमणी-रत्न (ला० रा० ला०) ॥=)
भारतवर्ष की माताएँ (श्या० ला०) ॥)
भारतवर्ष की वीर और विदुषी स्त्रियाँ (श्या० ला०द०) ॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

क्या इटली वास्तव में युद्ध चाहता है ?

[डॉक्टर "पोल खोलानन्द भट्टाचार्य" एम० ए०; पी० एच-डी०]

यूरोप में जितने बड़े राजनीति के आचार्य हुए हैं, उनमें से मसोलिनी का भी नाम है। इसने इटली में फ़ेसिस्ट-दल की स्थापना करके इटली की सारी सत्ता अपने हाथ में ले ली है। इसके पूर्व इटली गृह-युद्धों से पीड़ित हो रहा था। साम्यवादी देश के टुकड़े-टुकड़े बना रहे थे। राज्य की सत्ता इनको वश में करने में असमर्थ थी। अवसर पाकर मसोलिनी ने इटली को सङ्गठित किया और वहाँ एक बलिष्ठ राज्य की स्थापना की है। उसने साम्यवादी दल को एकदम क़ाबू में कर लिया है तथा इटली को यूरोप का एक पहिले दर्जे का राष्ट्र बना दिया है। आज मसोलिनी एक बलिष्ठ देश का स्वामी है, राजनैतिक चालों से उसने यूरोप के बहुत से देशों को अपनी तरफ़ मिला लिया है। विपक्षियों से वह बार-बार कहता है, यदि तुम युद्ध चाहते हो तो आओ इटली तैयार है। शत्रु-दल की माँगों को वह हरदम तोपों की आवाज़ों से दबा देने की धमकी देता है। सैनिक सामान तथा फ़ौजी तैयारी में वह बड़े-बड़े राष्ट्रों का मुक़ाबला करने का दावा करता है।

इन सब बातों से यह मालूम होता है कि इटली युद्ध के लिए तैयार है। यदि विपक्षियों ने ज़रा भी मौक़ा दिया, तो वह युद्ध छेड़े बिना न रहेगा। अब हमारे सामने यह प्रश्न है—क्या इटली सच में युद्ध चाहता है, या यह विपक्षियों को दबाने की एक चाल मात्र है? इस विषय में निरीक्षण करने के तीन साधन हैं। स्वतः इटली की दशा को ग़ौर से देखना, इटेलियन समाचार-पत्रों की सम्पादकीय टिप्पणियाँ तथा उनके द्वारा प्रकट किए गए अन्य विचारों को पढ़ना, व इटली के निष्पक्ष विदेशी निवासियों से मिलना। इटली के देशवासियों से तो ज़रा भी ठीक ख़बर नहीं मिल सकती। इनमें से क़रीब ३० फ़ी सदी तो फ़ेसिस्ट-दल के पक्षपाती हैं। वे वर्तमान फ़ेसिस्ट सरकार से सहानुभूति रखने वाले हैं। वे केवल उसकी नीति का समर्थन करेंगे व मसोलिनी की प्रशंसा करेंगे; इसके अतिरिक्त उनसे और कोई ठीक [illegible] नहीं मिल सकती। ६० फ़ी सदी लोगों को किसी [illegible] से विशेष प्रेम नहीं है। उन्हें किसी भी सरकार [illegible] नहीं, वे इस विषय पर बातचीत करने पर राज़ी न होंगे। बचे हुए १० फ़ी सदी लोग ऐसे हैं, जो फ़ेसिस्ट-दल के विरुद्ध हैं और मसोलिनी से घृणा करते हैं। उनसे आप कुछ पूछिए तो वे यही कहेंगे कि मसोलिनी एक शैतान का अवतार है।

इसलिए जो इटली की सच्ची दशा का अध्ययन करना चाहता है, उसे आवश्यक है कि वह ऊपर लिखे हुए तीन साधनों को काम में लावे। थोड़े दिनों में उसे असली हालत का पता लग जायगा। सब से पहिली बात जो उसे मालूम होगी, वह यह है कि इटली के पास युद्ध के लिए धन नहीं है। एक समय ऐसा था जब कि नवयुवक नेपोलियन बोनापार्ट सन् १७९४ में ट्रूलन से अपनी फ़ौज के साथ इटली जीतने चला था। उस वक़्त उसके पास सेना का वेतन देने के लिए तथा युद्ध के अन्य व्यय को सहन करने के लिए एक पैसा भी न था। तिस पर भी वह अपना कार्य सफलता से कर सका था। परन्तु अब वे दिन नहीं रहे। आजकल के युद्ध में धन की ही प्रधान आवश्यकता होती है। धनी देश ही आजकल के नए वैज्ञानिक युद्धों को सफलतापूर्वक चला सकते हैं। पर इटली के पास धन नहीं है, न अभी हाल में उसे क़र्ज़ ही मिलने की आशा है। इससे यदि वह इस समय फ़्रान्स से युद्ध भी करना चाहे, तो नहीं कर सकता।

इस समय यूरोप में फ़ेसिस्ट-इटली की राजनैतिक दशा तथा महत्व अद्वितीय है। उसने अन्य देशों से अपने राजनैतिक सम्बन्ध इतने दृढ़ कर लिए हैं, कि यूरोप के विदेशी दरबारों में इतना किसी देश का ज़ोर नहीं है, जितना कि इटली का है। उसने हाल ही में बलगेरिया से नाविक सन्धि की है। शुरू साल से ही बेलजियम की राजकन्या ने इटली के लिए असीम सहानुभूति दिखाई है। अलबेनिया ने तो इटली का प्रभुत्व ही स्वीकार कर लिया है। मुस्तफ़ा और मसोलिनी के बीच में अगाध सम्बन्ध स्थापित हो गया। विपक्षी ग्रीस अब तीन तरफ़ से इटली के पक्षपातियों से घिर गया है। हङ्गेरी ने भी इटली से सम्बन्ध कर लिया है। ऑस्ट्रिया तथा जर्मनी में फ़ेसिस्ट की बड़ी धूम है। वहाँ के फ़ेसिस्ट नेता एडोल्फ़ हिल्टर के अनुयायियों की संख्या हर रोज़ बढ़ती चली जा रही है। रूस के व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए मसोलिनी ने अभी हाल ही में रूसी माल पर लगने वाले टैक्सों को कम किया। इस कार्य से रूस के व इटली के परस्पर राजनैतिक व्यवहार में अवश्य कुछ फ़र्क़ पड़ेगा। रूस की सहानुभूति के लिए मसोलिनी ने अब काफ़ी दाम लगा दिए हैं। अब वह शीघ्र ही रूस की सहानुभूति पा सकेगा। इङ्गलैण्ड को तो वह एक निष्पक्ष राष्ट्र समझता है। इङ्गलैण्ड से मसोलिनी को कोई डर नहीं है। वही हाल अमेरिका के संयुक्त राज्य का भी है; कुछ व्यापारिक सुविधाएँ देकर वह उसे भी निष्पक्ष रख सकता है। ये सब बातें मसोलिनी की अपूर्व राजनैतिक शक्ति का परिचय देती हैं। यह उसी की बुद्धिमानी व चतुरता का फल है। राजनैतिक दृष्टिकोण से तो इटली की दशा अद्वितीय है।

पर दूसरे दृष्टिकोण से इटली बहुत कमज़ोर है। उसकी आर्थिक दशा इतनी अच्छी नहीं है। मसोलिनी ने इटली का राजनैतिक उत्थान तो अवश्य किया है, पर आर्थिक सुधार के लिए अभी काफ़ी जगह है। यहाँ पर उसकी शक्तियों ने वह चमत्कार नहीं दिखाया है। इटली की आर्थिक दशा का परिचय कराने के लिए हमें इस सम्बन्ध में लम्बी-लम्बी संख्याएँ देने की आवश्यकता नहीं है। इटली की आर्थिक दुर्दशा को जानने के लिए केवल एक बात काफ़ी है। वह यह, कि हाल में कई महीनों से इटली अन्य देशों से क़र्ज़ लेने का प्रयत्न कर रहा है। पर हर जगह उसे कोरा जवाब मिला है। हाल ही में अमेरिका ने क़र्ज़ देने से इनकार किया है। सुना जाता है कि अगले साल इटली को बड़े आर्थिक सङ्कट उठाने पड़ेंगे। आगामी वर्ष में उसे करीब १२ करोड़ पौण्ड का क़र्ज़ अदा करना है, इसके लिए उसे तैयार रहना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त और भी कई क़र्ज़ अदा करने को हैं। इसीलिए इटली अपने जहाज़ों के बनाने में देर कर रहा है। वह केवल नवीन आविष्कारयुक्त जहाज़ों को बनवा सकता है। वह कोशिश कर रहा है, कि नवीन आविष्कारों द्वारा वह और देशों के पुराने जहाज़ों का सामना थोड़े से नए तरीक़े के जहाज़ों से कर सके।

गत अप्रैल में जो बजट बनाया गया था, उसके अनुसार नाविक सेना के लिए ४२,००० टन का सामान बनाना निश्चय हुआ था। इसमें से एक भी जहाज़ अभी तक नहीं बना है। यदि इटली आगामी वर्ष में भी इस विभाग में फ़्रान्स से प्रतिस्पर्धा करना चाहता है तो इटली को कहीं से क़र्ज़ का प्रबन्ध करना ही पड़ेगा। फ़्रान्स इटली की आर्थिक दशा को ख़ूब जानता है। इसीलिए तो वह मसोलिनी की घुड़कियों से ज़रा भी नहीं दबता, इसीलिए वह उसके प्रस्तावों पर रत्ती भर भी झुकने को तैयार नहीं है। फ़्रान्स यह जानता है कि आजकल के युद्धों की सफलता धन पर निर्भर है और इटली में धन का अभाव है। इटली की बहुत सी प्रजा को तो ठीक खाने को भी नहीं मिलता है। शहरों में अवश्य लोग यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि हमारे पास धन है। पर राष्ट्र के धनपति तथा पूँजीपति भी वर्तमान सरकार से कुछ विशेष सहानुभूति नहीं रखते।

इसीलिए यह ख़बर कि मसोलिनी जर्मनी के फ़ेसिस्ट-दल के नेता एडोल्फ़ हिल्टर को आर्थिक सहायता देता है, सच नहीं हो सकती। वह अलबेनिया के राजा ज़ोग्रू को अवश्य आर्थिक सहायता दे रहा है। पर उसके बदले में ज़ोग्रू इटली के हज़ारों सैनिकों को अलबेनिया में रक्खे हुए है।

फिर फ़्रान्स इटली से सैनिक बल तथा आर्थिक दशा में कहीं बढ़ कर है; इन सब बातों को देखते हुए कोई नहीं कह सकता कि मसोलिनी ऐसा राजनीतिज्ञ इतनी बड़ी भूल करेगा, कि बिना तैयारी के फ़्रान्स से युद्ध के लिए तैयार हो जावेगा। इटली की प्रजा की इच्छा भी युद्ध करने की नहीं है। पर फिर भी मसोलिनी युद्ध की धमकी देकर विपक्षियों से सुलह कराना चाहता है। यह सम्भव है कि उसे सुलह शब्द ही से घृणा हो, पर वह अपने हृदय में अच्छी तरह जानता है कि उसके सामने इस वक़्त और कोई साधन नहीं है। उसका स्वास्थ्य बहुत ख़राब रहता है। वह केवल वैद्यों का बताया हुआ भोजन करता है और उसके साथ हरदम एक डॉक्टर रहता है। शायद वह अभी काफ़ी समय तक ज़िन्दा रह सके। इटली की वर्तमान आर्थिक दशा को देखते हुए भी हम यह कह सकते हैं, कि उसने अपने राज्यकाल में इटली को उन्नति के शिखर पर चढ़ा दिया है। क्या वह युद्ध करके इस अपने जन्म-कार्य को बिगाड़ना चाहेगा? कदापि नहीं; मसोलिनी समझदार है, वह बिना अपनी ताक़त देखे, अपने देश को युद्ध में डाल कर उसकी दुर्दशा कभी न करावेगा। पर उसे चाहिए कि अपने वक्तव्यों में तथा राजनैतिक पत्रों में ज़्यादा संयम से काम ले—आख़िर उसकी धमकियों की असलियत को विपक्षी ख़ूब समझ गए हैं, वे इटली की दशा को ख़ूब अच्छी तरह से जानते हैं। उन्हें इस बात में विश्वास है कि इटली अभी युद्ध के लिए तैयार नहीं है। पर इसका यह मतलब नहीं निकालना चाहिए, कि इटली की न्याय-सङ्गत माँगें भी पूरी न की जावें। कम से कम इङ्गलैण्ड को तो इटली से बहुत सहानुभूति दिखाना चाहिए। इटली इङ्गलैण्ड से हरदम बहुत प्रेम व नम्रता से बर्ताव करता रहा है। इङ्गलैण्ड को चाहिए कि उसने जिस देश की एकता तथा स्वतन्त्रता प्राप्त करने में इतनी सहायता दी थी, उससे अपेक्षाकृत ज़रा अच्छा व्यवहार रक्खे। पर हाल में इङ्गलैण्ड ने कुछ बेरुख़ी दिखाई है। फ़ेसिस्ट-सरकार यह कभी नहीं भूल सकती कि गत महायुद्ध में इङ्गलैण्ड का पक्ष लेने के बदले में इङ्गलैण्ड ने इटली को डेल मेरटन का समुद्र-किनारा दिलाने का वचन दिया था। इस स्थान का महत्व आर्थिक दृष्टि से कुछ भी नहीं है, पर युद्ध की दृष्टि से एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान अवश्य है। राजनैतिक दशा में परिवर्तन हो जाने पर भी इङ्गलैण्ड को अपने वचन को पूर्ण करना चाहिए। यदि वह यह न कर सके, तो इसके बदले में उसे कोई उतनी ही महत्वपूर्ण बात कर दिखानी चाहिए।

आजकल मसोलिनी जिस नीति का पालन कर रहा है, जिस नीति के अनुसार वह सब राष्ट्रों को युद्ध के लिए चुनौती दे रहा है, उससे उसका मतलब कुछ और ही है। रूस यूरोप के गरम दल को अपनी ओर मिलाना चाहता है, मसोलिनी नरम दल की सहानुभूति चाहता है। दोनों यह चाहते हैं, कि यूरोप का निष्पक्ष दल मिट जावे। रूस इस विषय में काफ़ी सफल हुआ है, पर इटली का भी फ़ेसिस्ट-साम्राज्य कुछ कम नहीं फैला है। फ़ेसिज़्म के अनुयायियों की संख्या बहुत वेग से बढ़ रही है। क्या यूरोप की जातियाँ इस विषय पर ध्यान न देंगी और इस नई लहर को बिना रोके फैलने देंगी? इससे यह मतलब नहीं कि इसका परिणाम युद्ध होगा। युद्ध की तो अभी कोई सम्भावना नहीं है। इटली युद्ध के लिए बहुत ग़रीब है। पर वह अपने आन्दोलन द्वारा दूसरे देशों में अशान्ति, क्रान्ति तथा हिंसा का राज्य अवश्य स्थापित कर सकता है। मसोलिनी इस समय युद्ध छेड़ने का निश्चय कदापि नहीं कर सकता; पर वह विदेश में अशान्ति का बीज अवश्य बो सकता है। वह यूरोप के टुकड़े-टुकड़े अवश्य कर सकता है।

फिर यह भी यहाँ कह देना आवश्यक है कि मसोलिनी के दिमाग़ को समझना ज़रा असम्भव सा है। वह अपनी राजनीति इतनी जल्दी परिवर्तन करता है कि लोगों को उसके कार्यों पर आश्चर्य होता है। यह कोई भी नहीं कह सकता कि वह अब क्या करने वाला है। इटली व फ़्रान्स में आजकल अनबन अवश्य है और फ़्रान्स इसीलिए अपनी सैनिक शक्ति को बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है, युद्ध की ज़बरदस्त तैयारी कर रहा है—इटली यह सब नहीं कर सकता। इससे यह भी सम्भव है कि मसोलिनी अपनी नीति एकदम बदल दे और मौक़ा पाकर फ़्रान्स के साथ एकदम प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर ले। विदेशियों को इस पर आश्चर्य अवश्य होगा, पर मसोलिनी के लिए वह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। फ़्रान्स को चाहिए कि अपनी युद्ध-शक्ति बलिष्ठ करते हुए भी इटली से सहानुभूति दिखाने का प्रयत्न करे, इससे बहुत सम्भव है कि यूरोप में कुछ समय तक शान्ति का राज्य रह सके।

* * *

सेनापति फूलासिंह

[मुन्शी गुलमुहम्मद]

इतिहास पढ़ने वालों को यह बात स्पष्ट रूप से विदित होगी कि जिस समय भारतवर्ष की सम्पूर्ण विभूतियाँ मरणासन्न हो रही थीं, पवित्र जन्म-भूमि अत्याचार से जर्जरित हो रही थी। न्याय का अन्याय के साथ जहाँ-तहाँ तुमुल युद्ध हो रहा था और स्वाधीनता पर पराधीनता का आधिपत्य धीरे-धीरे ज़ोर पकड़ रहा था, उस समय वीर प्रसूता-पञ्जाब-भूमि में पञ्जाब-केशरी महाराजा रणजीतसिंह जी स्वाधीनता के पुजारी लाहौर में सिंहासनारूढ़ थे। रणजीतसिंह बड़े प्रजावत्सल, देशभक्त, न्याय-प्रिय, वीर और साहसी शासक थे। इनका राज्य सम्पूर्ण पञ्जाब के अतिरिक्त, थोड़ा-बहुत अफ़ग़ानिस्तान में भी फैल गया था।

फूलासिंह इन्हीं महाराजा रणजीतसिंह के बड़े-बड़े अफ़सरों में से एक थे, जो अपनी एकनिष्ठ स्वामि-भक्ति, देश-भक्ति, वीरता और धीरता के कारण एक छोटे पद से इस पद को पहुँचे थे। रणजीतसिंह ने :—

कुल सपूत जान्यो पड़े, लखि सब लच्छन गात।
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात॥

के सम्पूर्ण लक्षण देख कर बाल्यावस्था ही में इन्हें अपने पास सेवा में रख लिया। फूलासिंह यद्यपि पहले एक सेवक की नाईं था तो भी राजा के साथ रह कर बाल्यावस्था से ही धनुर्विद्या और घोड़े की सवारी में बहुत पटु हो गया और धीरे-धीरे शिकार खेलते-खेलते उपरोक्त गुणों से विभूषित किया गया। महाराज ने उसकी ऐसी वीरता और अदम्य उत्साह देख कुछ कालोपरान्त सेवक पद से हटा कर अपनी सेना का प्रधान सेनापति मुक़र्रर कर लिया!

सेनापति का पद प्राप्त कर यह और भी उन्नति की ओर अग्रसर हुआ और सच्चा देशहितैषी बन अपने कर्त्तव्य का परिचय देने लगा! उसकी धाक यहाँ तक छाई कि उसके आतङ्क से समस्त पञ्जाब और देश के नवीनशासक (अङ्गरेज़ जाति) जो उस समय समस्त भारत को पराजित करते हुए पञ्जाब की ओर बढ़ रहे थे, काँपने लगे। फूलासिंह की यह बढ़ती हुई धाक देख अङ्गरेज़ों के हौसले तङ्ग हो गए। उसको दमन करने के लिए अङ्गरेज़ों ने अनेक षड्यन्त्र गुप्त-रूप से करने प्रारम्भ कर दिए और रणजीतसिंह तथा अफ़ग़ानों में वैमनस्य का बीज डाल, अपना स्वार्थ सिद्ध करने लगे। किन्तु इसमें उन्हें रणजीतसिंह के मुक़ाबले में कई बार मुँह की खानी पड़ी।

रणजीतसिंह के राज्य पर अधिकार कर लेना कोई साधारण कार्य न था—इसको अङ्गरेज़ों ने अपने दिलों में ख़ूब समझा। अपने शासन का दृढ़ सङ्कल्प करके उन्होंने प्रथम रणजीतसिंह से गुप्त-रूप में मैत्री की। मैत्री करने के पश्चात अफ़ग़ानों पर अपना अधिकार जमाने के लिए उकसाया। रणजीतसिंह ने उनके कहने में आकर मुल्तान, पेशावर तथा काश्मीर आदि स्थानों पर, जहाँ अफ़ग़ानों का ज़ोर ज़्यादा था, सरदार फूलासिंह को भेजा और सर करवाए। सरदार ने उपरोक्त स्थानों पर लड़ाई लड़ कर अपना अधिकार कर लिया!

जब अङ्गरेज़ों ने देखा कि हमारा स्वार्थ फूलासिंह के मारे जाने का पूर्ण नहीं हुआ और पञ्जाब पर अपना अधिकार न कर सके, तब वे दिलों में बहुत डरे। उन्होंने दूसरा षड्यन्त्र रच कर सन्, १८०८ ई० में अपना सरदार पञ्जाब केशरी रणजीतसिंह के पास सन्धि को भेजा। सन्, १८०८ ई० में ब्रिटिश सरकार की ओर से कर्नल अकटरलोनी पञ्जाब-केशरी से सन्धि करने को लाहौर गए और उनसे गुप्त सन्धि कर ली। फूलासिंह को इस गुप्त सन्धि का हाल विदित नहीं हुआ, किन्तु बाद में फूलासिंह ने जो ये सुना कि अङ्गरेज़ लोग अब पञ्जाब में आते हैं, तो वह बहुत बिगड़ा। तुरन्त भरे दरबार हाथ में नङ्गी तलवार ले महाराजा के समीप स्वदेशाभिमान के जोश में लाल-लाल नेत्र किए हुए पहुँचा और सिंहनाद करके इस प्रकार कहने लगा कि "महाराज! परदेशी अङ्गरेज़ हमारे राज्य में आकर जनता को अत्यन्त कष्ट दे रहे हैं। आप मेरी मदद कीजिए, मैं उनको निकाल दूँ, नहीं तो आपको मैं वज़ीरों, अमीरों सहित जो कि एक बाहरी शत्रु से मिल गए हैं, मार डालूँगा!"

दरबारी यह सुन कर एकदम स्तब्ध हो गए। दरबार में सन्नाटा छा गया। महाराज ने भी उस देश-भक्त वीर-बालक को क्रोधाग्नि में जलते और नङ्गी तलवार हाथ में तौले हुए देखा। रणजीतसिंह ने आश्चर्यान्वित हो, उसे धीरज बँधाया और उससे नर्मी के साथ क्रोध को शान्त करते हुए कहने लगे कि "अब तो मैं अङ्गरेज़ों से सन्धि-बन्धन कर चुका हूँ, उसके विरुद्ध तुम्हारी सहायता करके अपना वचन-भङ्ग नहीं कर सकता और तुम भी अङ्गरेज़ों से पूर्ण-रूप से विश्वास रक्खो कि वे भी मेरे वचन-बद्ध हैं, तुम्हारे राज्य में न आएँगे।" हाँ काबुल के पठानों से अभी मेरी और अङ्गरेज़ों की सन्धि नहीं हुई है और वे तुम्हारा राज्य अपहरण करना चाहते हैं व इसी हेतु उनसे युद्ध हो रहा है, तुम उनसे अपनी शक्ति से काम ले सकते हो।"

अङ्गरेज़ों की कूट-नीति चल गई। फूलासिंह यह सुन कर कि अङ्गरेज़ हमारे और देश के हितचिन्तक हैं, तथा अफ़ग़ान हमारे देश के कट्टर दुश्मन हैं, ख़ुशी के मारे फूल गए। और महाराज से बोले कि "बहुत अच्छा महाराज, अब उन्हीं से लड़ूँगा। वे तो मेरा ही राज्य लेना चाहते हैं। किन्तु जो आपका हाथ मेरे सिर पर रहेगा और मेरी सदैव इसी भाँति रक्षा करते रहेंगे तो मैं उनका राज्य छीन लूँगा, आज्ञा दीजिए। मैं जाता हूँ और अफ़ग़ानों पर विजय पा शीघ्र लौट आता हूँ।"

महाराजा रणजीतसिंह की आज्ञा से वीर-बालक सेनापति, अपनी सेना ले पठानों पर चढ़ गया। यद्यपि पठान उस समय अचेत बैठे थे। वह भी वीर फूलासिंह का एकाएक अपने राज्य पर चढ़ आना, सुन कर हैरान हुए। बिना रण-इच्छा के उन्होंने भी अपनी-अपनी सेना में रण-डङ्का बजवा दिया! दोनों ओर की सेनाओं में युद्ध प्रारम्भ हो गया! मुसलमानी सेना 'अल्लाहो अकबर' और सिक्ख सेना 'जय गुरुदेव' कह कर एक-दूसरे पर टूट पड़ीं, कई दिनों तक लड़ाई छिड़ी रही। फूलासिंह ने कई स्थानों पर विजय पाई और कई घमासान लड़ाइयों के पश्चात "उस दिन राज-सभा मध्य में जैसा कहा था वैसा ही कर दिखाया।"

नौशेरा के युद्ध में काबुल के मन्त्री अज़ीम ख़ाँ पर विजय पाकर काम आया।

अङ्गरेज़ उस वीर का मरना सुन हँसे और पञ्जाब पर चढ़ आए। कुछ कालोपरान्त सम्पूर्ण पञ्जाब पर अपना आधिपत्य जमा लिया! किन्तु वह वीर! नहीं! नहीं! भारत-व्योम-मण्डल का दीप्तमान-सितारा सदैव के लिए विलीन हो गया।

* * *

[श्री० सिन्हा बद्रीनाथ]

पण्डित जी के सब दाँत इस्तीफ़ा दे चुके थे, अतएव उनके एक मित्र ने सोने के दाँत बनवाने की उन्हें सलाह दी, पण्डित जी की पत्नी ने भी कहा कि ठीक है, शीघ्र ही सोने के दाँत बनवा डालो, तुम्हारे मरने पर श्राद्ध का ख़र्च तो निकल आवेगा। पण्डित जी ने कहा "सो तो ठीक है, लेकिन कहीं सोता रहूँ और चोर चुरा कर भाग गए तब ?"

*　　*　　*

एक फ्रेञ्च महाशय कार्यवशात कलकत्ता आए थे, और एक साधारण होटल में एक कमरा लेकर ठहरे। रात्रि में मच्छड़ों ने काटना आरम्भ किया, अतएव वे बाहर बरामदे में आकर सो रहे। इसी समय उनकी नज़र जुगनूँ पर पड़ी; आप झट लाठी लेकर खड़े हो गए और लगे चिल्लाने—देखो कमरे से हम बाहर सोने आया है तो हमको लालटेन लेकर साला खोजता है।

*　　*　　*

ललित—बहिन लीला! थियेटर देखना तुम पसन्द करती हो ?

लीला—बिलकुल नहीं!

ललित—क्यों ?

लीला—वहाँ पुरुष की शादी पुरुष ही से होती है, यह मुझे पसन्द नहीं।

*　　*　　*

मियाँ बसारत अली बीमार पड़े। उन्होंने अपने भाई सुबरात अली को, अपनी पत्नी, जो नैहर में थी, बुलाने के लिए भेजा। वे उसे यह समझाना नहीं भूले कि वहाँ वह शिष्टता का व्यवहार करे—उससे प्रश्नों का सावधानी से उत्तर देने को कहा गया। सुबरात अली मन में सोचता जाता था कि पहले प्रश्न का उत्तर "हाँ" और दूसरे का "न" दूँगा। इससे बढ़ कर क्या सावधानी हो सकती है। ख़ैर, भाई के ससुराल पहुँचने पर बसारत अली के ससुर ने पूछा—कहिए! आपके भाई बीमार हैं न ?

सुबरात—जी हाँ, आपकी दुआ से बीमार हैं।

ससुर—दवाई होती है ?

सुबरात—जी नहीं, आपकी दुआ से

ससुर—क्यों! क्या मर गए जो दवा नहीं होती ?

सुबरात—जी हाँ, आपकी दुआ से! ख़ैर उनकी घरवाली को तो बिदा कर दीजिए।

ससुर—अब तो वह राँड हो गई, पीछे चली जायगी।

सुबरात उलटे पैर घर पहुँचे, भाई ने पूछा, क्यों जी बिदाई हुई ? सुबरात मियाँ ने कहा—"आपके ससुर ने कहा है कि अब वह विधवा हो गई, पीछे भेज दूँगा" भाई ने कहा—"बड़े गदहे हो, हमारे रहते वह विधवा कैसे हो सकती है ?"

सुबरात—वाह क्या कहना है आपकी समझ का! आपके रहते अम्मी जान विधवा हो गईं, दादी विधवा हो गईं, बहिन विधवा हो गईं, तब उसके विधवा होने में क्या आश्चर्य है ?

*　　*　　*

"तुम्हारी बीबी तुम्हें कितना प्यार करती है ?"

"अम्मा से भी बढ़ कर!"

*　　*　　*

'चाँद' कार्यालय की अनमोल

लम्बी दाढ़ी

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है
बच्चों को भी !
बड़ी मासूम, बड़ी नेक—
है लम्बी दाढ़ी !!
अच्छी बातें भी बताती है,
हँसाती भी है !
लाख दो लाख में, बस एक—
है लम्बी दाढ़ी !!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ६,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !!

चुहल

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों के ॥) केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशल-किशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) रु० ; स्थायी ग्राहकों से २।)

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण ! पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

इस पुस्तक में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें !

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने की चेष्टा रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों !! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं ! छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Registered No. A—[illegible]

The only Point where Newspapers, Leaders and Individuals agree in Toto

Hindi edition :
Annual Rs. 6/8
Six monthly
Rs. 3/8

The 'CHAND'

Urdu edition :
Annual Rs. 8/-
Six monthly
Rs. 5/-

A magazine which has raised consciousness in India

The Leader :

The February (1929) number of the CHAND fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine The CHAND.

***

The Amrit Bazar Patrika :

Had there been such magazine, in Bengali, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered.

***

The Bombay Chronicle :

It has justly won a reputation all over India. Lovers of social regeneration in India, especially those who are well-off, can benefit themselves and also do a good turn to this magazine by being subscribers and donors.

***

The Mysore Chronicle :

Few vernacular papers and magazines can boast of such a well-conducted magazine as the CHAND.

***

The Sunday Times :

It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies a foremost place among the journals published in this country.

***

The Indian Daily Telegraph :

It is ably edited and deserves much encouragement.

***

The Tribune :

The magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire.

***

The Rajasthan :

The CHAND undoubtedly stands high among the existing Hindi monthlies and we heartily congratulate the conductors for their unabated zeal.

***

The Searchlight :

It can unhesitatingly be said that it can take its rank with any high class magazine.

***

The Indian Social Reformer :

We have often noticed [illegible] columns the excellent work done [illegible] [illegible] has [illegible] its [illegible] Hindi [illegible]

The Forward :

The neatness of the paper and its get-up leaves nothing to be desired. It has raised a general consciousness in the Hindi-knowing world.

***

The Patriot :

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful *journal, which, we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.*

***

Individual Opinions

Justice Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu edition of your excellent magazine. The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out and Urdu edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

***

F. W. Wilson, Esq., Ex-Chief Editor of the "Pioneer"

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I am told that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and unswervingly followed. Again and again the criticism is made against Indian life to-day and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference, unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of public opinion is an enlightened [illegible] and free press. That you realise the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social [illegible] and vigorous life of a healthy Indian nationality, is obvious by the mere fact that you have undertaken this new venture. I cordially wish you all success.

Pt. Moti Lal Nehru, Ex-President, All India Congress :

[illegible] Urdu CHAND. It supplies a real want. [illegible] *raised by the excellence of its Hindi parent.* I wish it every success.

***

Major D. R. Ranjit Singh, O. B. E., [illegible]

I am conscious of the great good [illegible] be able to do the same.

***

Munshi Iswar Saran Saheb, Member Legislative Assembly :

(By Air Mail from London)

I wish this magazine every success. The work of social reform is blessed and thrice blessed are those who honestly do it. I hope this magazine will advocate the right policy in social matters and if it does, it will have to fight the obscurantists on the one hand and the blind imitators of the west on the other. I trust it will strive for the realisation of the fact that a girl has as much right to education and freedom as has her brother. I sincerely wish it to work for the preservation of the true type of Indian woman-hood. I wish it a long career of usefulness.

***

Prof. M. H. Syed, M. A., Lecturer in Urdu, Allahabad University :

I am glad to learn that an Urdu edition of the CHAND is being issued. I wish this new venture every success. I understand that this monthly is devoted to the cause of social reform in India. In our present state of society there is no cause as laudable as this and I do hope that the CHAND in its Urdu garb will bring light to a [illegible] of people who are still [illegible] ignorance and are averse to new ways of life.

***

Dr. Sir Tej Bahadur Sapru, M. A., LL. D., Ex-Law Member of the Government of India :

I wish it every success.

***

[illegible] been following the career o[illegible] nal with keen interest, and [illegible] is sure to accomplish in the [illegible] tant of phases of Social [illegible] dia . . .

Printed [illegible] by Mr. R. SAIGAL—(Editor), at the [illegible]

सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा
वार्षिक ६) रु०
छः माही ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य ≶)
Annas Two Per Copy

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है ; जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

एक प्रार्थना

वर्ष १, खण्ड १ — इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; ४ दिसम्बर, १९३०

वर्तमान शासन-प्रणाली का नमूना

लॉर्ड इर्विन का अङ्कुश बिल्कुल काम नहीं देता

भारत-रूपी हाथी मचमचा कर बैठा जा रहा है
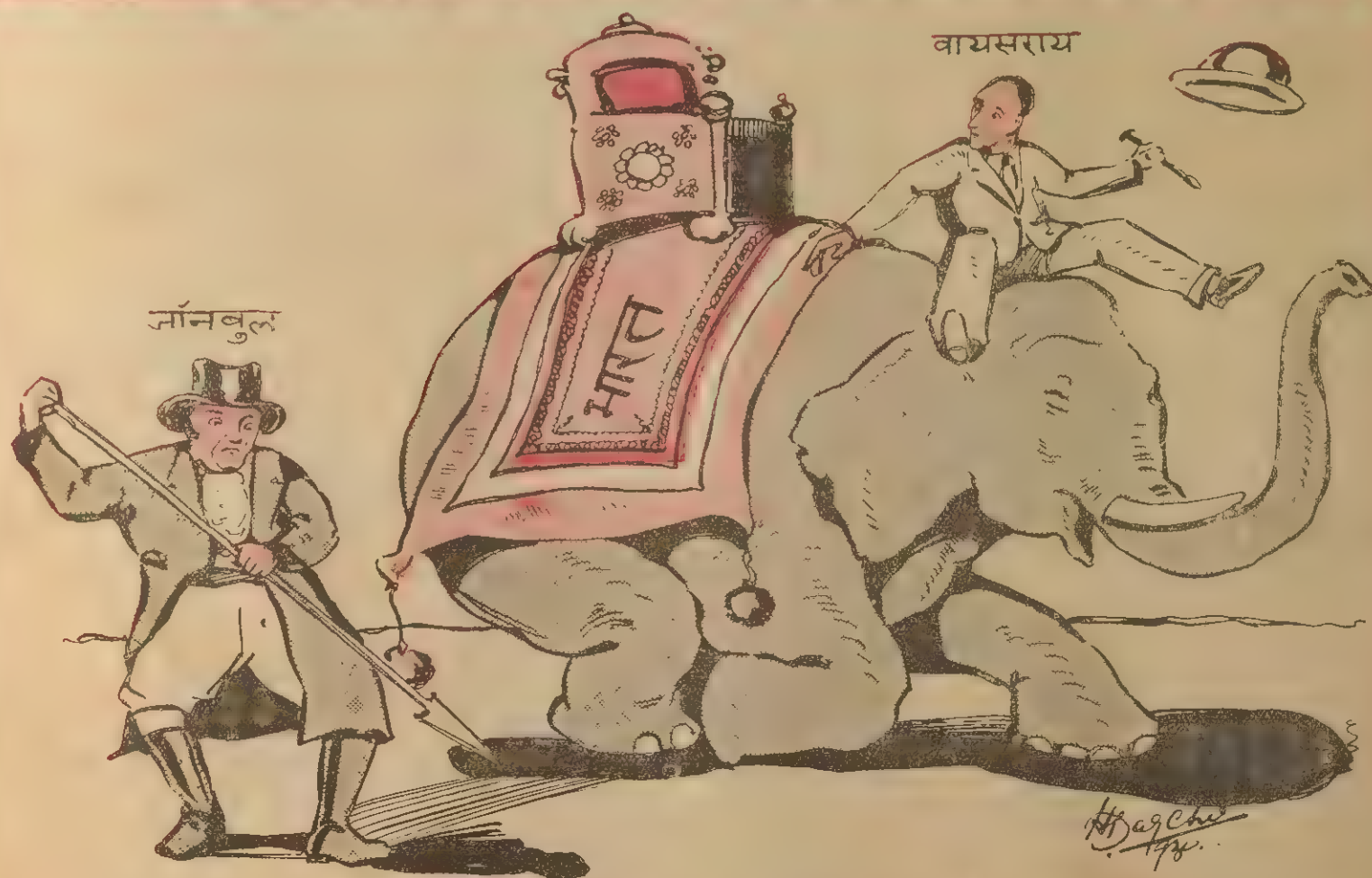
फिर भी वायसराय महोदय को इस बात का नाज़ है कि "परिस्थिति पूर्णतया हमारे हाथ में है"

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—४ दिसम्बर, १९३० | संख्या १०, पूर्ण संख्या १०

इलाहाबाद ज़िले की कॉङ्गरेस-संस्थाएँ भी ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दी गईं

कई स्थानीय संस्थाओं पर पुलिस ने धावा किया

विरोध-स्वरूप शहर में पूर्ण हड़ताल और जुलूस का विशाल आयोजन

फ़्री-प्रेस के सर्वस्व श्री० सदानन्द की धर्मपत्नी मैदान में

(४थी दिसम्बर के प्रातःकाल तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—वर्धा में आबकारी के ठेके के नीलाम पिछले ३ दिनों से हो रहे हैं, परन्तु उन पर बड़े ज़ोरों की पिकेटिङ्ग हो रही है। बहुत सी गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। श्री० जमनालाल बजाज के कुटुम्ब की स्त्रियों की भी गिरफ़्तारी की गई, परन्तु बाद में वे रिहा कर दी गईं। पिछले साल की अपेक्षा गवर्नमेण्ट को इन ठेकों में ६१ प्रति शत का नुक़सान रहा।

—लाहौर का समाचार है कि वहाँ के सिविल और मिलिटरी गज़ट के लन्दन-स्थित सम्वाददाता ने अपने पत्र के लिए यह सम्वाद भेजा है कि यदि लॉर्ड गोरेल से, भारत का वायसराय होने के लिए कहा जायगा तो वे उसे स्वीकार कर लेंगे।

—लन्दन से 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के पास एक ख़ास केबिल आया है उससे एक ऐसी अफ़वाह का पता लगा है कि भारत का नया वायसराय कोई देशी राजा बनाया जायगा।

—यरवदा जेल से एक सत्याग्रही वालण्टियर अभी छूट कर आया है। उसका कहना है कि श्री० राजा के साथ जो राजविद्रोह और अन्य अपराधों के अभियोग में तीन साल की कड़ी सज़ा भोग रहे हैं, बड़ी निर्दयता का व्यवहार किया जा रहा है। वे मामूली क़ैदियों की तरह काल-कोठरी में रक्खे जाते हैं। एक बार जेलर उन्हें शारीरिक दण्ड भी दे चुका है। विरोधस्वरूप उन्होंने अनशन प्रारम्भ कर दिया है।

—नदियाद का समाचार है कि 'सर्वेण्ट ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी' के श्री० ठक्कर को, जिन्हें कायरा के सेशन्स जज ने पिकेटिङ्ग सम्बन्धी केस में फिर से मुक़दमा चलाने का हुक्म दे दिया था, यह इत्तला दी गई है कि पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स की अवधि समाप्त होने के कारण उनके विरुद्ध जो केस चल रहे हैं वे सब उठा लिए गए हैं।

पूना का २री दिसम्बर का समाचार है कि घोदनादी (सिरूर) के एक सुप्रसिद्ध मारवाड़ी का लड़का गोली से मार डाला गया। कहा जाता है कि जिस समय रात्रि को ९ बजे सेठ धरमचन्द ख़ुशालचन्द अपने भाई के साथ अपने घर के बाहर खड़े हुए थे, उसी समय किसी अव्यक्त व्यक्ति ने गोली चलाई, जो उसके शरीर में घुस गई। अस्पताल ले जाते समय वह रास्ते में मर गया। पोस्ट मार्टम होने पर उसके शरीर में ११ छर्रें निकले।

आज शाम को यू० पी० गवर्नमेण्ट की आज्ञा के विरोध में जिसमें उसने इलाहाबाद ज़िले की कॉङ्ग्रेस-संस्थाओं को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया है, एक विराट जुलूस निकाला जायगा और पुरुषोत्तमदास पार्क में सभा होगी।

आज सवेरे जैसे ही इलाहाबाद ज़िले की कॉङ्ग्रेस संस्थाओं के ग़ैर-क़ानूनी क़रार देने के समाचार मिले वैसे ही कॉङ्ग्रेस ऑफ़िसों और मुहल्ला-आश्रमों का सामान वहाँ से स्थानान्तरित कर दिया गया। यूथ लीग के स्टोर का सामान भी दूसरी जगह भेज कर वह ख़ाली कर दिया गया। बारा बजे के बाद पुलिस ने मुहल्ला-आश्रमों, और कॉङ्ग्रेस ऑफ़िसों पर धावा किया और बहादुरगञ्ज मुट्ठीगञ्ज और ख़ुल्दाबाद के आश्रमों की तलाशी लेकर उन पर ताले डाल दिए। ख़ुल्दाबाद में जब दो वालण्टियरों ने आश्रम से बाहर निकलने से इनकार किया तो कहा जाता है, पुलिस ने उन्हें बुरी तरह पीटा। कटरा और दारागञ्ज (इलाहाबाद) के सत्याग्रह आश्रमों की भी तलाशियाँ ली गईं; परन्तु पुलिस को कहीं से कोई वाञ्छनीय सामग्री प्राप्त न हो सकी।

राष्ट्रीय झण्डे के भूत का डर

२९वीं नवम्बर को लखनऊ यूनीवर्सिटी का उपाधि-वितरण उत्सव था। उत्सव जिस पण्डाल में था उसके ऊपर तिरङ्गा राष्ट्रीय झण्डा फहरा रहा था। राष्ट्रीय झण्डे के कारण इलाहाबाद की तरह गवर्नर, जो उस यूनीवर्सिटी के भी चान्सलर हैं, उत्सव में सम्मिलित नहीं हुए। हिन्दुस्तानी और यूरोपियन सरकारी अफ़सर भी उत्सव में नहीं गए।

—आज हाईकोर्ट में चीफ़ जस्टिस और जस्टिस मर्फ़ी के समक्ष बालूभाई देसाई ने, 'बॉम्बे-क्रॉनिकल' के मुद्रक और प्रकाशक श्री० कापाडिया की ओर से, जिन्हें २ माह की क़ैद और १२०) जुर्माने की सज़ा दी गई है, ज़मानत और अपील की दरख़्वास्त पेश की। जजों ने कहा कि गवर्नमेण्ट वकील उस पर विचार करने के लिए कुछ समय माँगता है। इसलिए पेशी कल के लिए बढ़ा दी गई है।

—फ़्री प्रेस जर्नल मैनेजिङ्ग एडीटर और मैनेजिङ्ग डायरेक्टर और प्रकाशक श्री० सदानन्द ने अपने ऊपर मुक़दमा चलने के कारण 'जर्नल' के हर एक कार्य से इस्तीफ़ा दे दिया है। उनके स्थान अब 'फ़्री प्रेस जर्नल' की मैनेजिङ्ग डायरेक्टर, एडीटर और प्रकाशक उनकी पत्नी श्रीमती सागाराम सदानन्द हुई हैं। उन्होंने स्वयं चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट दस्तूर की अदालत में घोषणा की। श्रीमती सदानन्द मद्रास यूनीवर्सिटी की ग्रेजुएट हैं और वहाँ के शिक्षा-विभाग में नियुक्त हैं श्रीमती सदानन्द ने अभी एक लम्बी छुट्टी ले रक्खी थी जो १० ता० को समाप्त होती है। 'फ़्री प्रेस जर्नल' का भार अपने कन्धों पर लेने के पहले उन्होंने मद्रास के शिक्षा-विभाग से इस्तीफ़ा दे दिया था।

बम्बई में फिर लाठी-प्रहार—६५ घायल हुए

बम्बई का ३०वीं नवम्बर का समाचार है कि आज़ाद मैदान में मासिक झण्डा-अभिवादन 'युद्ध-समिति' की प्रेज़िडेण्ट श्रीमती गङ्गा बैन पटेल के द्वारा सफलतापूर्वक हो गया। झण्डा-अभिवादन के उपरान्त लोगों का झुण्ड भारतीय फौजी लाइन की ओर बढ़ा और पुलिस ने रोकने के लिए उस पर लाठी-प्रहार किया जिसके फल स्वरूप २९ आदमी घायल हुए। उनमें से १६ अस्पताल भेज दिए गए हैं। कहा जाता है कि कुछ लोगों ने पुलिस पर पत्थरों की बौछार की थी और पुलिस के लाठी-प्रहार से ३९ घायल हुए। इस प्रकार दिन भर में ६९ आदमी घायल हुए हैं जिनमें से ३९ अस्पताल में पड़े हैं।

—हवाई बेड़े के भूतपूर्व लेफ़्टिनेण्ट दत्तात्रेय लक्ष्मण पटवर्धन आज्ञा भङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। वारण्ट लाहौर के मैजिस्ट्रेट ने भेजा था और वे गिरफ़्तार कर लाहौर जेल भेज दिए गए। अभियुक्त ने उसे रेल के सैकिण्ड क्लास में ले जाने के लिए कहा, परन्तु मैजिस्ट्रेट ने इसका निर्णय पुलिस कमिश्नर पर छोड़ दिया।

—बम्बई में कॉङ्ग्रेस बुलेटीन बेचने के अपराध में दो वालण्टियरों को ६-६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

* * *

—बनारस में २६वीं नवम्बर को सिटी मैजिस्ट्रेट ने कॉङ्ग्रेस वालण्टियर पण्डित शम्भूशरण नागर को दफ़ा ४१७ में तीन माह की और दफ़ा ३४८ में छै माह की सख़्त क़ैद और ७५) जुर्माना या तीन माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। अन्य चार वालण्टियरों—आज़ाद (१), आज़ाद (२), दत्तसिंह और हृदयनारायण सिंह को भी छः-छः माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—२६वीं नवम्बर को मिर्ज़ापुर सत्याग्रह कमिटी के सेक्रेटरी बाबू गङ्गाप्रसाद जयसवाल और दो अन्य व्यक्तियों को छः-छः माह की सख़्त क़ैद और ४०)-४०) जुर्माने या एक माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—मेरठ का समाचार है कि वालण्टियरों के कैप्टेन श्री० वीरेन्द्रकुमार सहित, दिल्ली दरवाज़े में विदेशी कपड़े की गाँठों का प्रवेश रोकने के अभियोग में १६ सत्याग्रही गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कानपुर में २७ नवम्बर को विदेशी कपड़े की गाँठें रोकने के अभियोग में सात वालण्टियरों को सज़ाएँ दी गई हैं। उनमें से तीन को तीन-तीन माह, तीन को छः-छः माह की सख़्त क़ैद और एक को २०) जुर्माने की सज़ा दी गई ।

—कलकत्ते का २८वीं नवम्बर का समाचार है कि अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य प्रोफ़ेसर अब्दुर रहीम १४४वीं दफ़ा का विरोध करने के कारण ब्रह्मण बरिया (टिपरा) में गिरफ़्तार कर लिए गए।

पेन्शन-याफ़्ता सब-इन्सपेक्टर गिरफ़्तार

हरदोई का २७वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० छेदालाल, हरदोई तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी के सञ्चालक श्री० श्यामबिहारी, जो एक पेन्शन-याफ़्ता पुलिस के सब-इन्सपेक्टर हैं, और नौ वालण्टियर, लगानबन्दी का एलान करने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—नागपुर का २८वीं नवम्बर का समाचार है कि चाँदा के डिक्टेटर और प्रभावशाली धनिक एवं मालगुज़ार श्री० बाबा जी पटेल, जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। वे सी०पी० 'मराठी युद्ध-समिति' के सदस्य भी थे। चाँदा ज़िला 'युद्ध-समिति' के सेक्रेटरी श्री० कलामकर भी उसी सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। अब एक अब्राह्मण-ग्रेजुएट श्री० यादवराव देशमुख सी० पी० युद्ध-समिति के सदस्य नियुक्त हुए हैं। २७ ता० की शाम को वहाँ देशी शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण सात वालण्टियर गिरफ़्तार किए गए हैं।

—नई दिल्ली की ख़बर है कि श्रीमती सत्यवती देवी २६वीं नवम्बर को छोड़ दी गईं। शहर की मुख्य-मुख्य सड़कों से होकर एक जुलूस उनके साथ निकाला गया और महिला कॉङ्ग्रेस कमिटी की अध्यक्षा श्रीमती बृजरानी जी की अध्यक्षता में एक सभा की गई, जिसमें श्रीमती जी को उनके छुटकारे के लिए बधाइयाँ दी गईं।

—गिरफ़्तार पिकेटरों के साथ जाते समय, इन्क़लाब ज़िन्दाबाद' की ज़ोर से आवाज़ लगाने के अपराध में पेशावर के सिटी मैजिस्ट्रेट कप्टेन कॉब ने तीन मनुष्यों को ५)-५) जुर्माने की सज़ा दी। शहर के किसी अव्यक्त मनुष्य ने जुर्माना अदा कर दिया और वे छोड़ दिए गए। एक बालक को केवल चेतावनी देकर छोड़ दिया गया।

—काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय की 'प्राचीन भारतीय सभ्यता' नामक विभाग के रिसर्च स्कॉलर मि० विद्याभूषण, एम० ए० १६वीं नवम्बर को प्रोफ़ेसर मनोरञ्जन प्रसादसिंह के मकान पर गिरफ़्तार कर लिए गए। वे उसी रात को दिल्ली भेज दिए गए हैं। प्रोफ़ेसर

साहब के मकान की तलाशी ली गई, यहाँ तक कि स्त्रियों की भी तलाशी ली गई, पर कोई सन्देहजनक वस्तु नहीं मिली।

—नई दिल्ली के एडिशनल ज़िला मैजिस्ट्रेट मि० पूल ने २६वीं नवम्बर को जवाहर-दिवस में गिरफ़्तार २१७ मनुष्यों में से १३३ को चेतावनी देकर छोड़ दिया। बाक़ी में से ७ को ३-३ महीने की सादी क़ैद और ३८ को तीन महीने की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई। १६ मनुष्यों ने अदालत की कार्यवाही में भाग लेना अस्वीकार किया। २३ मनुष्यों ने क्षमा माँग ली और वे छोड़ दिए गए।

—लाहौर की 'युद्ध-समिति' के २४वें डिक्टेटर मि० सोहनलाल २६ वीं नवम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—नई दिल्ली के एडिशनल ज़िला मैजिस्ट्रेट मि० पूल ने दिल्ली युद्ध-समिति के डिक्टेटर श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ जौहर को ६ महीने की क़ैद और २००) जुर्माने की सज़ा दी। जुर्माना न देने पर उन्हें ६ सप्ताह की अतिरिक्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी। पाठकों को स्मरण होगा कि क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (२) धारा के अनुसार इन्हें ६ महीने की कड़ी क़ैद की सज़ा पहिले ही दी जा चुकी थी।

—मद्रास का २६वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ ६ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने तीन को कड़ी क़ैद की सज़ा और बाक़ी को चेतावनी देकर छोड़ दिया, क्योंकि वे २१ वर्ष से नीचे के थे।

—श्रीमती विद्यावती देवी, जो गया कॉङ्ग्रेस कमिटी की एक मुख्य कार्यकर्त्री थीं, सत्याग्रह आश्रम में गिरफ़्तार कर ली गईं।

—नवगाँव (आसाम) की १७ महिलाएँ गोलमेज़-कॉन्फ्रेन्स के विरुद्ध जुलूस निकालने के अभियोग में गिरफ़्तार की गई थीं। किन्तु कुछ देर हवालात में रहने के पश्चात उनमें से १५ महिलाएँ रिहा कर दी गईं।

अदालत में नमक बेचा गया

कराची का २६वीं नवम्बर का समाचार है, कि एक स्वयंसेवक वहाँ की अदालत में ग़ैर-क़ानूनी नमक बेचने गया। दूसरी बार वह गिरफ़्तार कर लिया गया। दूसरे दिन दूसरा स्वयंसेवक फिर वहाँ नमक बेचने गया, परन्तु वह गिरफ़्तार नहीं किया गया।

—श्रीयुत डामपद देव को, जो सिलहट कॉङ्ग्रेस-सङ्घ के एक मुख्य कार्यकर्ता थे, चार महीने की कड़ी क़ैद और ५०) जुर्माने की सज़ा हुई है। कहा जाता है कि जुर्माने के रुपए वसूल करने के लिए पुलिस ने उनकी बहुमूल्य वस्तुएँ दो बार नीलाम करनी चाहीं, पर ख़रीदार न मिलने से, वे नीलाम न हो सकीं।

—कलकत्ते का २८वीं नवम्बर का समाचार है कि जुलूस में भाग लेने के अभियोग में २ महिलाओं को चार-चार मास की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—हरदोई का २७वीं नवम्बर का समाचार है कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस-डिक्टेटर रानी लक्ष्मीदेवी बहुत स्थानों में लगान-बन्दी का एलान करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

—कराची का २६वीं नवम्बर का समाचार है कि उस रोज़ वहाँ के विदेशी कपड़े के बाज़ार पर हथियारबन्द पुलिस और मिलिटरी ने धावा किया। सेठ सुखदेव उद्धवदास, सन्तदास छट्टूमल, एक कपड़े का व्यापारी और माया नामक एक गाड़ीवान के गिरफ़्तार होने की ख़बर सुनी जाती है। इनमें अन्तिम दो छोड़ दिए गए। भगवानदास रणछोड़लाल भी गिरफ़्तार कर लिए गए। कहा जाता है कि विदेशी कपड़े के व्यापारी सेठ फ़तेहचन्द मदनगोपाल ने उन लोगों के विरुद्ध अपनी दूकान से विदेशी वस्त्र की एक गाँठ उठवा ले जाने की शिकायत की थी, और इसी अभियोग में भारतीय दण्ड-विधान की ४५४वीं धारा के अनुसार ये सब लोग गिरफ़्तार किए गए हैं।

सत्याग्रही की जेल में मृत्यु

पेशावर का एक स्वयंसेवक, जिसका नाम शस्तीगुल था और जो पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किया गया था, गत २६वीं नवम्बर को लेडी रीडिङ्ग अस्पताल में न्युमोनिया से मर गया।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्पादक को पाँच माह की सज़ा

बम्बई के तीसरे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्पादक मि० एस० ए० ब्रेल्वी और मिस्टर सोराब कपाडिया को ५-५ महीने की सादी क़ैद की सज़ा दी है। इसके अतिरिक्त मि० ब्रेल्वी को २५०) और मि० कपाडिया को १५०) का जुर्माना हुआ है। जिसके न देने पर इन्हें ६-६ सप्ताह की अतिरिक्त-सज़ा भुगतनी पड़ेगी। अब श्री० ब्रेल्वी के स्थान पर श्री० एल० बी० खरे 'बॉम्बे क्रानिकल' के नए सम्पादक हुए हैं।

—मि० सन्तोषकुमार मित्र बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—काशी के टाउन कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्रीयुत दुर्गाप्रसाद खत्री को तीन माह की कड़ी क़ैद और २००) रुपए जुर्माने की सज़ा हुई है। जुर्माना न देने पर उन्हें एक माह की अतिरिक्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

—काशी का समाचार है कि काशी-विद्यापीठ के रजिस्ट्रार तथा प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के जेनरल सेक्रेटरी श्रीयुत बीरबलसिंह जी और प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के ख़ज़ानची श्रीयुत विश्वनाथ को ३-३ माह की कड़ी क़ैद और १००) रुपए जुर्माने की सज़ा हुई। जुर्माना न देने पर उन्हें एक माह की अतिरिक्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

—कराची में ग़ैर-क़ानूनी नमक बेचने के अपराध में दो गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। ये स्वयंसेवक जुडिशियल कमिश्नर के कोर्ट के अहाते में नमक बेचने गए थे। उसके बाद से यद्यपि और-और स्वयंसेवक वहाँ नमक बेचते रहे—कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई।

—अमृतसर के कॉङ्ग्रेस के नेता डॉ० चुन्नीलाल भाटिया को वहाँ के एडिशनल ज़िला मैजिस्ट्रेट ने क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार दो माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। वे 'ए' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

—मथुरा में जवाहर-दिवस के बाद से ही गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं। वहाँ के सातवें डिक्टेटर पं० राधामोहन चतुर्वेदी, श्रीयुत नत्थीलाल तथा श्रीयुत रामसिंह छठे ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं, और उन्हें ६-६ महीने की कड़ी क़ैद की सज़ा हुई है। पण्डित गङ्गाप्रसाद भार्गव आठवें डिक्टेटर बनाए गए हैं।

(शेष मैटर ३२ पृष्ठ के तीसरे कॉलम के अन्त में देखिए)

हिन्सात्मक क्रान्ति की लहर

क्रान्तिकारियों को भयङ्कर सज़ाएँ

कलकत्ता कॉर्पोरेशन के कौन्सिलर डॉ० नारायण राय, एम० बी० और डॉ० भूपाल बोस एम० बी० तथा ८ दूसरे षड्यन्त्रकारियों के मामले में अलीपुर के स्पेशल ट्रिब्यूनल ने गत २७वीं नवम्बर को अपना फ़ैसला सुना दिया। इन पर यूरोपियनों तथा पुलिस के अफ़सरों को मारने के लिए धड़ाका करने वाले पदार्थ तथा हथियारों के संग्रह करने का अभियोग लगाया गया था। सज़ाएँ इस प्रकार दी गई हैं :—

नारायण राय	...	२० वर्ष कालापानी
भूपाल बोस	...	२० ,, ,,
सुरेन दत्त	...	१५ ,, ,,
रसिकलाल दास	...	१५ ,, ,,
ज्योतिष भौमिक	...	१२ ,, ,,
अम्बिका राय	...	१२ ,, ,,
अद्वैत दत्त	...	१२ ,, ,,
रोहिणी अधिकारी	...	१० ,, ,,

अतुल गाङ्गुली और शरत दत्त, ये दो छोड़ दिए गए। इतनी कठिन सज़ा मिलने पर भी इनके चेहरे पर घबड़ाहट का कोई चिह्न नहीं प्रकट होता था, वे प्रसन्न-चित्त थे।

शिकारपुर की गिरफ़्तारी

शिकारपुर के क्लॉथ मार्केट में ता० २५ को, टेकचन्द नामक एक व्यक्ति, जिसके घर में बम बनाने के रासायनिक-द्रव्य पाए गए हैं, गिरफ़्तार कर लिया गया है।

रङ्गून में तमञ्चे और बम का मसाला

रङ्गून का २५वीं नवम्बर का समाचार है कि पुलिस ने २४ ता० को एल० बरुआ के घर की तलाशी ली और उनके घर में एक पिस्तौल और बम बनाने के रासायनिक द्रव्य मिले। इसी प्रकार तलाशी लेने पर एक बी० ए० के विद्यार्थी श्री० मजूमदार के घर में भी, जो चिटगाँव के रहने वाले हैं, एक रिवॉल्वर और रासायनिक द्रव्य मिले हैं। वे दोनों गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

लाहौर का नया षड्यन्त्र केस

लाहौर के स्पेशल ट्रिब्यूनल के अपूर्ण चलान के देखने से पता चलता है, कि इस नए षड्यन्त्र केस में ४ एप्रूवर और २८ अपराधी हैं! जिनमें तीन महिलाएँ भी शामिल हैं। उन पर वायसराय की ट्रेन को बम से उड़ाने का प्रयत्न करने, भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त तथा औरों को छुड़ाने का उद्योग करने, क्रान्तिकारी पर्चे बाँटने और पञ्जाब में बम चलाने आदि का अभियोग लगाया गया है।

लुधियाना-षड्यन्त्र केस में नई गिरफ़्तारियाँ

अमृतसर का समाचार है कि लुधियाना ज़िले के स्वादी गाँव में कुछ दिन पहले एक घर में जो बम फटा था, उसके सम्बन्ध में ज़िले से अजायबसिंह, हरनामसिंह और तीन अन्य व्यक्ति गिरफ़्तार हुए हैं। मालूम होता है कि घर के मालिक नाहरसिंह ने, जो बम फटने से बुरी तरह घायल हो गया था और बाद में गिरफ़्तार कर लिया गया था, सब रहस्य खोल दिया है और उसी के कारण ये गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

टेनिस की गेंद के बराबर बम

पटना का २४वीं नवम्बर का समाचार है डिप्टी मैजिस्ट्रेट सैयद मेहदी अली, और पुलिस के असिस्टेंट डिप्टी सुपरिंटेण्डेण्ट ने एक पुलिस-पार्टी के साथ वहाँ के चिटकुहारा बाज़ार में जुदागी पासी के घर पर धावा किया। जुदागी पासी तथा कुछ दूसरे घरों को २६ ता० की रात भर पुलिस घेरे पड़ी रही और २७ ता० को सवेरे जब तलाशी ली गई, तो एक सन्दूक़, जिसमें टेनिस की गेंद के बराबर १०-१५ बम, बम बनाने के रासायनिक पदार्थ, जाली-सिक्के ढालने के साँचे थे, मिला। जुदागी और ६ या १० अन्य व्यक्ति इस सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। अभी पुलिस की जाँच ज़ोरों से जारी है।

थाने में बम

बारीसाल का २५वीं नवम्बर का समाचार है कि बारीसाल ज़िले के गौरनादी थाने में बम फटने के सम्बन्ध में एक डॉक्टर और जयशिरकथी गाँव का एक अन्य व्यक्ति गिरफ़्तार कर लिया गया है।

पुलिस इन्स्पेक्टर गोली से मार डाला गया

चाँदपुर का १ली दिसम्बर का समाचार है कि पुलिस इन्स्पेक्टर तारिणी मुखर्जी ४ बजे सवेरे चाँदपुर स्टेशन पर दो युवकों द्वारा गोली से मार डाला गया। ये दोनों युवक चाँदपुर स्टेशन पर चिटगाँव से कलकत्ता जाने वाली डाक गाड़ी से उतरे थे। पहले मुखर्जी गोली से सख़्त घायल हुआ था और अस्पताल जाते समय रास्ते में मर गया। वह पुलिस की पूरी वर्दी में स्टेशन पर पुलिस के इन्स्पेक्टर जनरल से मिलने आया था, जो उसी गाड़ी से चिटगाँव से कलकत्ते जा रहे थे। जिस समय दोनों घातक गोली मार कर भागे थे, इन्स्पेक्टर जनरल मि० टी० जे० ए० क्रेग और उनके अर्दली ने उन पर गोली चलाई थी, परन्तु वे दोनों निशाना चूक गए और घातक अन्धकार में लुप्त हो गए। घातकों की तलाश में शहर भर में धावे किए जा रहे हैं और आने-जाने वाले स्टीमर स्टेशन पर रोक लिए जाते हैं; परन्तु अभी तक घातकों का कोई पता नहीं लगा।

बाद का समाचार है कि दो बङ्गाली युवक रामकृष्ण विश्वास और कालिपद चक्रवर्ती चाँदपुर से लक्सम जाते हुए सन्देह में गिरफ़्तार कर लिए गए। उनके पास तीन रिवॉल्वर, एक बम और बहुत से कारतूस मिले हैं।

कानपुर का एक नवयुवक षड्यन्त्र के सन्देह पर गोली का शिकार हुआ

कानपुर का समाचार है कि १ली दिसम्बर को पुलिस का एक दल डी० ए० वी० कॉलेज की तलाशी के लिए गया। कॉलेज में घुसने के समय पुलिस की नज़र शालिग्राम शुक्ल नामक एक व्यक्ति पर पड़ी, जो पहले उस कॉलेज का विद्यार्थी था। पुलिस को पहले से ही इस व्यक्ति के क्रान्तिकारी होने का शक था। फल-स्वरूप पुलिस ने उसे गिरफ़्तार कर लिया। ऐसा कहा जाता है कि उस व्यक्ति ने भागने की कोशिश की, और अन्त में पिस्तौल निकाल कर तीन फ़ायरें कीं। फलतः एक कॉन्स्टेबिल, एक हेड कॉन्स्टेबिल और असिस्टेंट पुलिस-सुपरिंटेण्डेण्ट मि० इयट घायल हुए। किन्तु अन्त में वह पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट की गोली से मारा गया। जो तीन आदमी घायल हुए थे, उनमें से प्रेमवल्लभ कॉन्स्टेबिल १ली दिसम्बर की रात्रि को मर गया। असिस्टेंट सुपरिंटेण्डेण्ट मि० इयट और हेड कॉन्स्टेबिल की हालत सुधर रही है। कॉन्स्टेबिल के मृतक शरीर का एक जुलूस निकाला गया था, जिसमें पुलिस के अफ़सर, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट और घुड़सवार पुलिस सम्मिलित थी।

उस स्थान से कुछ दूरी पर एक साईकिल, एक फ़्लेल्ट हैट और एक खद्दर का थैला, जिसमें एक हवाई पिस्तौल और एक भरा हुआ रिवॉल्वर था, पाए गए। पुलिस ने उन्हें अपने अधिकार में कर लिया है।

(२२ पृष्ठ का शेषांश)

—वृन्दावन के प्रेम महाविद्यालय के छात्रों ने उसके संस्थापक राजा महेन्द्रप्रताप का जन्मोत्सव मनाने का विचार किया था। उसीके साथ 'किसान-सभा' करने का भी विचार किया गया था। इस सम्बन्ध में ५० गिरफ़्तारियाँ की गई हैं। फलतः दोनों सभाएँ कुछ समय के लिए स्थगित हो गई हैं।

—बनारस का समाचार है कि मिर्ज़ापुर सत्याग्रह कमिटी के सेक्रेटरी श्रीयुत गङ्गाप्रसाद जयसवाल और श्रीयुत भगतसिंह, तथा बद्रीप्रसाद को ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा और ४०) जुर्माने हुए। जुर्माना न देने पर एक माह की अतिरिक्त सज़ा भोगनी पड़ेगी।

बनारस में सौ से अधिक गिरफ़्तार

बनारस का २८वीं नवम्बर का समाचार है कि २७ ता० को वहाँ गाँजे, भाँग और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में सौ से अधिक गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। उस दिन सवेरे पुलिस ने कॉङ्ग्रेस भोजनालय पर धावा किया और सब भोज्य-पदार्थ वहाँ से उठा कर ले गई।

एक रायबहादुर गिरफ़्तार

पटना का समाचार है कि बिहार कौन्सिल के सदस्य रायबहादुर पण्डित द्वारकानाथ अपने पुत्र सहित मुज़फ़्फ़रपुर में हाल ही के झगड़े के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। बाद में वे दोनों ज़मानत पर छोड़ दिए गए। कहा जाता है कि रायबहादुर पर अपने पुत्र को पुलिस पर ईंट के टुकड़े फेंकने के लिए उकसाने का अभियोग लगाया गया है।

—लाहौर के एडिशनल ज़िला मैजिस्ट्रेट ने प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के जेनरल-सेक्रेटरी लाला जगतनारायण को १७-ए और बी धारा के अनुसार एक माह की कड़ी क़ैद की सज़ा और ५०) रुपए जुर्माने की सज़ा दी है। जुर्माना न देने पर एक माह की अतिरिक्त क़ैद भुगतनी पड़ेगी।

श्रीयुत सर्न्तसिंह नामधारी को चार महीने की कड़ी क़ैद तथा श्रीयुत हेमराज, श्रीयुत सर्न्तसिंह ज्ञानी तथा १६ और कार्यकर्ताओं को २ से लेकर ६ महीने तक की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बालकिशन नामक एक ११ वर्ष के लड़के को दिल्ली के सुधारक स्कूल (Reformatory) में भेजे जाने की आज्ञा दी गई है।

—२८ वीं नवम्बर का समाचार है कि कराची में उस दिन आधी रात के समय वहाँ के तीन नेता गिरफ़्तार कर लिए गए। ये मौलवी मुहम्मद सादिक़, उस्मान हमीद केटावाला, कैप्टेन जेठाराम भवान जी हैं। तीनों को फ़ैसला होने तक 'सी' श्रेणी में रक्खा गया है।

—अकोला के श्रीयुत गोपालकृष्ण चोलकर को अपनी कविता 'रणगर्जन' के गाने के कारण आठ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा हुई है।

* * *

इलाहाबाद ज़िला की कॉङ्ग्रेस संस्थाएँ भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गईं

यू० पी० गवर्नमेण्ट की विज्ञप्ति

संयुक्त-प्रान्त की गवर्नमेण्ट ने २ री दिसम्बर को निम्न-लिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की है:—

"चूँकि गवर्नर-इन-कौन्सिल की राय में इलाहाबाद ज़िले की निम्न कमिटियाँ और एसोसियेशनें, बॉयकॉट-कमिटी, सत्याग्रह कमिटियाँ, ज़िला युद्ध-समिति, कॉङ्ग्रेस मुहल्ला-आश्रम, यूथ लीग और यूथ गार्ड ; क़ानून की रक्षा और उसके शासन में हस्तक्षेप करती हैं, इसलिए इस विज्ञप्ति द्वारा गवर्नर-इन-कौन्सिल यह एलान करते हैं कि सन् १९०८ के इण्डियन क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट की १६वीं धारा के अनुसार उपर्युक्त सभी कमिटियाँ और एसोसियेशनें ग़ैर क़ानूनी हैं।"

पाठकों को स्मरण होगा कि नौ ऑर्डिनेन्सों में आठ की अवधि समाप्त हो चुकी है और अब केवल एक अन्तिम ऑर्डिनेन्स बाक़ी बचा है, यह इसी भूत की छाया है।

कलकत्ते की राजकुमारी मय्या को नरक की पीड़ा से मुक्त करने वाले वीर नैपाली युवक खड्गबहादुर सिंह—जो लाहौर स्टेशन पर बिना वारण्ट के ही किसी अज्ञात अपराध के लिए गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बनारस का १ दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने श्रीयुत श्याम लाल को तीन माह कड़ी क़ैद और १००) जुर्माने की सज़ा तथा श्रीयुत मुकुन्द प्रसाद, श्रीयुत कालिदास चक्रवर्ती और श्रीयुत विश्वनाथ भट्टाचार्य को ३-३ माह की कड़ी क़ैद और २५) जुर्माने की सज़ा दी है।

—बनारस का समाचार है कि वहाँ पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार ४ स्वयंसेवकों को तीन माह की कड़ी क़ैद की सज़ा मिली है।

—लाहौर का १ ली दिसम्बर का समाचार है कि जब लाहौर षड्यन्त्र के नए केस की ५ वीं दिसम्बर को नए ट्रिब्यूनल के सामने सुनाई होगी। तब पुलिस एक सप्ताह की मुहलत और माँगेगी।

—बम्बई के प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने रामजी सोनू नाम के एक व्यक्ति को सरकार द्वारा ज़ब्त 'पेशावर रिपोर्ट' के छपे हुए कुछ अङ्क बेचने के अपराध में ६ माह की कड़ी क़ैद और ५०) जुर्माने की सज़ा दी है। अपराधी ने मैजिस्ट्रेट के सामने कहा कि मैं स्वराज और कॉङ्ग्रेस को नहीं जानता, मैं अपनी जीविका के लिए ऐसा कर रहा था। किन्तु उसकी यह दलील नहीं सुनी गई।

—जमालपुर (मैमनसिंह) की सबडिविज़नल कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी बाबू अशितरञ्जन पाल, जब वह १८वीं नवम्बर को शेरपुर अपनी बीमार पत्नी को देखने के लिए जा रहे थे, रास्ते में गिरफ़्तार कर लिए गए।

गवर्नमेण्ट ने बनारस यूनीवर्सिटी की सहायता बन्द कर दी

बनारस का २९वीं नवम्बर का समाचार है कि गवर्नमेण्ट ने राजनैतिक कारणों से बनारस यूनीवर्सिटी की सहायता बन्द कर दी है। यूनीवर्सिटी को तीन लाख रुपए साल की सहायता मिलती थी। यह भी मालूम हुआ है कि स्थानीय स्कूलों के अधिकारियों को यू० पी० के शिक्षा-विभाग के डायरेक्टर ने एक सर्क्यूलर-पत्र भेजा है, जिसमें उनकी स्कूलों पर राष्ट्रीय झण्डे फहराने के सम्बन्ध में जाँच की गई है। परिणाम-स्वरूप दो सहायता पाने वाले स्कूलों के अधिकारियों ने सहायता बन्द होने के डर से राष्ट्रीय झण्डे उतरवा लिए हैं।

—लाहौर का १ ली दिसम्बर का समाचार है कि श्री० शेरजङ्ग के मुक़द्दमे में, जिन्हें आजन्म कालेपानी की सज़ा हुई है, सर्कारी वकील की जिरह समाप्त हो गई। जस्टिस भाइड और दलीपसिंह ने निर्णय किसी दूसरे दिन सुनाने की इच्छा प्रगट की है।

महात्मा जी जेल में अजीर्ण से पीड़ित रहते हैं

उनका वज़न घट गया है

अहमदाबाद का १ली दिसम्बर का समाचार है कि श्री० काका कालेलकर ने, जो यरवदा जेल में महात्मा गाँधी के साथी थे और वहाँ से हाल ही में छूट कर आए हैं, आश्रम-वासियों से प्रार्थना के साथ कहा है कि महात्मा गाँधी का वज़न १०४ पौण्ड से घट कर १०१ पौण्ड रह गया है। जेल का पानी उनके स्वास्थ्य के उपयुक्त नहीं है और वे अजीर्ण से पीड़ित रहते हैं। वे स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए वे प्रायः अपने भोजन में परिवर्तन करते रहते हैं। कर रहे हैं। हाल ही में उन्होंने दूध और दही का भी त्याग कर दिया है। गीता और चर्खा ही उनकी दिन-चर्या है। उन्हें आश्रमवासियों को—विशेष कर बच्चों को पत्र भेजने में बड़ा आनन्द आता है। उन्हें इस बात से पूर्ण सन्तोष है कि देश अहिंसा व्रत पर दृढ़ है। अब श्री० प्यारेलाल महात्मा गाँधी के साथ रहेंगे।

गोलमेज़ के प्रतिनिधियों के स्वागत का दूसरा नमूना

बेचारे हताश होकर थिएटर से बाहर निकल आए

'पीटर बरो', 'डेली टेलिग्राफ़' में लिखते हैं :—

"हमारा सोशियलिस्ट मन्त्रि मण्डल इम्पीरियल कॉन्फ्रेन्स के कार्यों में इतना अधिक व्यस्त है कि उसने लन्दन-स्थिति, गोलमेज़ परिषद के भारतीय प्रतिनिधियों की बिलकुल उपेक्षा कर दी है। विशाल भारतीय साम्राज्य के प्रतिनिधियों के प्रति, उनकी सहानुभूति अपनाने के लिए जिस स्वागत की आवश्यकता थी, वह बहुत ही असन्तोषजनक है।

"क्रायडन में उपनिवेशों के और गोलमेज़ के भारतीय प्रतिनिधियों के मनोरञ्जनार्थ जब हवाई जहाज़ों के खेलों के प्रदर्शन की योजना की गई थी उस समय यह प्रत्यक्ष रूप से देखा गया था कि भारतीय अतिथियों के स्वागत की बिलकुल उपेक्षा कर दी गई है।

"मुझे मालूम हुआ है कि कुछ ही दिन पहले एक थिएटर में भारतीय प्रतिनिधियों की एक पार्टी के लिए कुछ सीटें रिज़र्व करा ली गई थीं। परन्तु जब वे वहाँ पहुँचे तब उन्होंने देखा कि उनकी सीटें स्टेज पर बहुत दूर हैं इसलिए वे हताश होकर थिएटर से बाहर निकल आए। चूँकि ये प्रतिनिधि एक ऐसे देश के निवासी हैं, जहाँ आतिथ्य-सत्कार और सेवा-शुश्रूषा पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है, यह बिलकुल स्वाभाविक है कि वे इस प्रकार की उपेक्षा को अपना भारी अपमान समझें। सचमुच में इससे अधिक अदूरदर्शितापूर्ण नीति की सोचना ही मुश्किल है।

"इसके अतिरिक्त मुझे इस बात का भी पता चला है कि गवर्नमेण्ट इस कॉन्फ़्रेन्स में किसी निश्चित कार्य-क्रम पर विचार करने के लिए तैयार नहीं है। अपनी इस नीति का भण्डाफोड़ प्रधान मन्त्री ने अपने कॉन्फ़्रेन्स के उद्घाटन के समय के भाषण में स्पष्ट कर दिया है।"

* * *
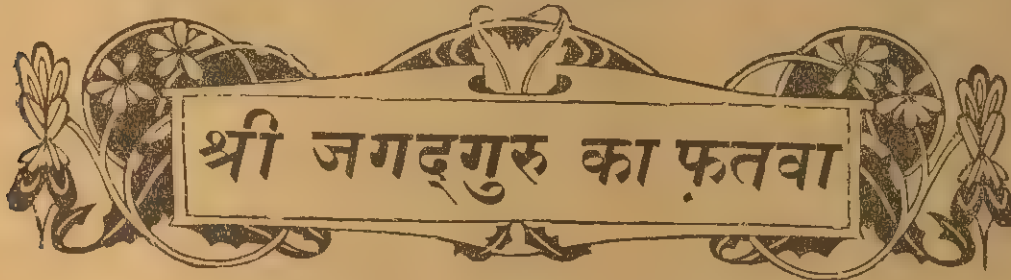
[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

असहयोगी नेताओं में तक़दीर के साँढ़ निकले श्रीयुत मणिलाल जी कोठारी। और लोग जेलख़ाने और जुर्माने तक ही रह गए, परन्तु मणिलाल जी एकदम ब्रिटिश राज्य से ही निकाल बाहर कर दिए गए। अच्छा ही हुआ, हमारी सुशीला सखी नौकरशाही का भयङ्कर ग्रह टल गया। अब तो माशाअल्लाह, 'बार न बाँका करि सकै जो जग बैरी होय।'

अत्यन्त अनुताप का विषय है कि लाहौर हाईकोर्ट के जस्टिस कुँवर दिलीपसिंह और जस्टिस गर्सिन ने ख़ालसा कॉलेज बम-काण्ड के अभियुक्त श्री० उजागर-सिंह को फाँसी की सज़ा से विमुक्त करते हुए लिखा है कि सरकारी मुख़बिरों का बयान ठीक नहीं है। लेहाज़ा हिज़ होलीनेस श्रीजगद्गुरु की राय है कि जस्टिस महोदयों का यह कथन सवा सोलह आने ग़लत है। क्योंकि मुख़बिर ही सखी नौकरशाही की "बोझी पाथर भार" नैया के कर्णधार हैं। क़सम सत्यवादिता की, इन्हीं कुल-दीपकों ने तो इस पाप-तापपूर्ण घोर कलिकाल में बाबा हरिश्चन्द्र और चचा युधिष्ठिर का नाम रक्खा है। इनका बयान भला झूठ कैसे हो सकता है?

भई, कोई कुछ कहे, मगर अपने राम की राय-शरीफ़ में तो इन पूर्ण प्रशंसित जस्टिसों की अपेक्षा वे न्यायाधीश महोदय ही अच्छे न्यायशील, विवेचक और बुद्धिमान प्रतीत होते हैं, जिन्होंने कृपा करके श्री० उजागरसिंह को भव-बन्धन से विमुक्त हो जाने का आदेश प्रदान किया था। अगर बीच में उपर्युक्त जस्टिसद्वय न्याय का पचड़ न घुसेड़ देते, तो एक ही ढेले में तीन शिकार होते, अर्थात् श्री० उजागर भी बिना पैसे-कौड़ी के वैतरणी पार हो जाते, सखी नौकरशाही का भी एक आपाद-मस्तक-काला-शत्रु दुनिया से दूर हो जाता और न्याय की भी नाक रह जाती!

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त के दई-मारे अफ़रीदियों ने तो मालूम होता है कौवे का मांस खा लिया है। 'न मरें न माचा छोड़ें' की कहावत है! आज पेशावर की ओर आक्रमण कर बैठते हैं, तो कल कोई हवाई जहाज़ गिरा देते हैं। इसलिए श्रीजगद्गुरु का फ़तवा है कि इस देश के काले-कलूटों पर एक और फ़ौजी टेक्स लगा दिया जाय और विलायत से कुछ बेकार गोरे मँगा लिए जायँ अथवा लॉर्ड इरविन महोदय दो-चार दर्जन ऑर्डिनेन्स पास करके सीमान्त की ब्रिटिश प्रजा को जीते जी स्वर्ग का मज़ा चखा दें। मियाँ नहीं मिलते तो बीबी का ही मुँह नोच लेने में क्या बुराई है?

लन्दन के "डेली एक्सप्रेस" ने लिखा है कि राउण्ड-टेबिल कॉन्फ्रेन्स का नाम बदल कर "फेडरल रिलेशन कमिटी" रक्खा गया है। बड़ा सुन्दर नाम है—ठीक कन-खजूरे-सा सुडौल और श्रुति-मधुर! राशि 'धन' और जन्म-नक्षत्र 'पूर्वाषाढ़' है। यद्यपि श्रीजगद्गुरु के दिए हुए नाम "कॉपर कॉन्फ्रेन्स" की समता तो नहीं कर सकता, परन्तु 'मॉडरेट' और 'फेडरल' में ज्योतिष शास्त्र के अनुसार 'ग्रह-मैत्री' अच्छी बनती है; एक का गण 'राक्षस' है और दूसरे का 'मनुष्य!' माशाअल्लाह, खाद्य-खादक वाला पवित्र रिश्ता है।

परन्तु यह न समझिएगा कि 'कॉपर' और 'मॉडरेट' में कुछ कम मेल है। दोनों में अगर मियाँ-बीबी की सी अभिन्नता नहीं, तो 'चोली-दामन' का-सा रिश्ता तो अवश्य ही है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार 'मॉडरेट' की योनि 'मूषक' और 'कॉपर' की 'मार्जार' है! उधर 'कॉपर' का गण 'देवता' और 'मॉडरेट' का गण 'राक्षस' है फल वही—"कलह देव-दैत्यानाम" है! इसलिए तलाक़ अर्थात् सम्बन्ध-विच्छेद का भी खटका नहीं है। क्योंकि दोनों में कोई रिश्ता ही न रहा, तो 'कलह' कैसा?

आजकल हिज़ होलीनेस को भङ्ग-बूटी की चिन्ता से अधिक चिन्ता रहती है मौलाना मुहम्मद अली साहब की। बेचारे बुज़ुर्ग इस बुढ़ौती में कड़ाके की सर्दी की ज़रा भी परवाह न कर, अपनी प्यारी 'मादरे-हिन्द' को आज़ाद कर डालने के लिए लन्दन चले गए हैं और पार्वती देवी की "बरउँ सम्भु नतु रहउँ कुआरी" की प्रतिज्ञा से भी कठिन प्रतिज्ञा कर बैठे हैं। शाहमदार ख़ैर करें, बड़ी विषम समस्या या 'क्रीटिकेल मोमेण्ट' है! दोहाई दादा मुग्धानल! हमारे बूढ़े मौलाना को बचाना नहीं तो अनर्थ हो जायगा!!

मौलाना ने प्रतिज्ञा कर ली है कि या तो लन्दन से 'स्वतन्त्रता' लेकर लौटेंगे या वहीं क़ब्र में चिर-विश्राम लेंगे! इससे मालूम होता है कि दादा-दल चाहे "कॉपरम् नैव दद्यामि" पर अङ्गद के पैर की तरह अड़ा रहे, परन्तु मौलाना कुछ लिए बिना टलने वाले नहीं हैं! "कुछ अंश" ही लेकर लौटेंगे। पूरी 'स्वतन्त्रता' हाथ न लगेगी, तो उसकी नाक ही नोंच कर चल देंगे! मगर ख़ाली हाथ कदापि नहीं लौटेंगे।

ख़बर है कि बारडोली का 'प्लेग' बिहार के 'बीहट' नामक ग्राम में आ धमका है। बीहट के सैकड़ों नवयुवक जेलों में जाकर सरकार का अन्न ध्वंस कर रहे हैं, इसलिए सरकार ने भी उनके घर-बार की रक्षा के लिए प्रायः सवा सौ कॉन्स्टेबिलों को बीहट भेज दिया है। फलतः जब 'रक्षक' आ ही गए तो गाँव वालों को चिन्ता किस बात की रही। इस सुअवसर से लाभ उठा कर उन्होंने गाँव ही छोड़ दिया है। आशा है, सरकार द्वारा नियुक्त रक्षक महोदयगण 'बीहट' की सूनी गलियों में निश्चिन्ततापूर्वक आनन्द की बंशी बजाते रहेंगे।

जेल के अत्याचार

मेरठ जेल में क्या हो रहा है?

श्री० एम० आर० वैश्य तथा श्री० सालिग्राम जी के हस्ताक्षर से जो 'सी' क्लास के राजनैतिक क़ैदी थे और जो हाल ही में अपनी मियाद पूरी करने पर मेरठ जेल से छोड़े गए हैं—एक पत्र सहयोगी "हिन्दोस्तान टाइम्स" में प्रकाशित हुआ है, जिसका सार मात्र नीचे दिया जा रहा है :—

पता चलता है कि मेरठ जेल की अवस्था दिन प्रति दिन गम्भीर होती जा रही है! २९ अगस्त की घटना से जेल के अधिकारियों का साहस बहुत बढ़ गया है, और वे 'सी' श्रेणी के राजनैतिक क़ैदियों पर अमानुषिक अत्याचार करने पर उतारू हो गए हैं। इन राजनैतिक क़ैदियों का धैर्य अब जाता रहा है। सब से पहले, यहाँ के अधिकारी वर्ग हिन्दू और मुसलमान क़ैदियों के बीच वैमनस्य उत्पन्न करने का यत्न कर रहे हैं।

छोटे से छोटे अपराध के लिए भी कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाती है। राजनैतिक क़ैदियों को गरम कपड़े भी काफ़ी नहीं मिले हैं। यद्यपि इसके लिए नए नियम बनाए गए हैं, तो भी क़ैदियों के पास इस समय फटे-पुराने दो कम्बलों के सिवा और कोई दूसरा ओढ़ना नहीं है। उनके लिए रात में पीने के पानी का कोई प्रबन्ध नहीं है। यदि वे रात में पीने के लिए पानी माँगते हैं, तो उन्हें इसके लिए कड़ा दण्ड दिया जाता है। साधारणतया ये राजनैतिक क़ैदी दूसरे-दूसरे अपराधों के लिए सज़ा पाए हुए नीच क़ैदियों के साथ एक ही बैरक में रक्खे जाते हैं। ये नीच क़ैदी जेल के अधिकारियों की आज्ञानुसार, इन्हें अनेक प्रकार से तङ्ग करते हैं। कभी इनके कम्बल चुरा लेते हैं, कभी कोई दूसरी ही चीज़ चुरा लेते हैं, ऐसे ही ऐसे उत्पात ये किया करते हैं। यहाँ तक कि ये नीच लोग इन्हें गालियाँ देते और मारते तक हैं। किन्तु इसकी शिकायत करने पर ये बिचारे ख़ुद ही सज़ा पाते हैं। इससे यह जान पड़ता है कि जेल के अधिकारीवर्ग इनसे क्षमा मँगवाने का यत्न कर रहे हैं। काँग्रेस के स्वयंसेवकों को इसके सिवा चक्की, कोल्हू आदि का काम करना पड़ता है, जिसके लिए वे अभ्यस्त नहीं हैं। अधिकांश क़ैदियों को नित्य ही नए प्रकार की सज़ाएँ मिला करती हैं। उदाहरण के लिए बैरक नं० ४ में १८ राजनैतिक क़ैदी हैं। उनमें से ११ अनिश्चित समय के लिए एकान्त कोठरियों में बन्द किए गए हैं; ३ को दिन में फ़ैक्टरी में काम करना पड़ता है, और रात में सेल (Cell) में बन्द रहना पड़ता है। इसी प्रकार के और भी कितने ही उदाहरण हैं। कहाँ तक गिनाए जायँ। नए सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० क्लाइड के आने पर आशा की गई थी कि कुछ सुधार होगा, किन्तु यह आशा भी दुराशा में बदल गई। ये महाशय पहले 'पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेण्ट में थे, और इस कारण जेल-शासन से पूर्णतया अनभिज्ञ हैं। और इसलिए नीचे के अधिकारियों के सामने मैदान साफ़ है।

—ऐसा कहा जाता है कि मिर्ज़ापुर में २४वीं नवम्बर को तीन राजनैतिक क़ैदी हिस्ट्री-टिकेट न दिखाने के अपराध में चाबुक द्वारा ज़िला मैजिस्ट्रेट के सामने पीटे गए। काँग्रेस सरकुलर के अनुसार अनेकों को हथकड़ियाँ दी गईं, और अनेक काल कोठरी में बन्द कर दिए गए।

बनारस जेल की ख़बर है कि वहाँ के चार क़ैदी जिनका फ़ैसला अभी नहीं हुआ है, अपना हिस्ट्री टिकट न दिखाने के कारण एकान्त कमरे में बन्द कर दिए गए हैं।

श्रीयुत दुर्गाप्रसाद खत्री को भी इसके लिए पीटे जाने की धमकी दी गई है।

(शेष मैटर ६ठे पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

—पण्डित मोतीलाल जी नेहरू के विषय में कलकत्ते का यह समाचार है कि २१वीं नवम्बर को उनके मुँह से दो बार ख़ून थूक के साथ निकला। किन्तु बुख़ार न था। डॉक्टरों की सम्मति से उनके लिए खुली हवा का सेवन आवश्यक बतलाया गया है। इसलिए पण्डित जी के रहने के लिए दक्षिणेश्वर के बग़ीचे में एक मकान का प्रबन्ध किया गया है।

—बम्बई का ३०वीं नवम्बर का समाचार है कि, वहाँ राष्ट्रीय भण्डा का उत्सव मनाया गया। पुलिस-कमिश्नर ने एक दिन पहले ही इस उत्सव के विरुद्ध एक आज्ञा-पत्र निकाल दिया था। किन्तु तो भी पुलिस ने इसमें कोई विघ्न नहीं डाला। उत्सव के समाप्त हो जाने पर पुलिस का एक दल आया, और उसने भीड़ को इण्डियन मिलिटरी लाईन की ओर जाने से रोका। फलतः पुलिस की ओर से लाठियाँ चलीं और २४-२५ मनुष्य घायल हुए।

महात्मा गाँधी के साथी जेल से रिहा कर दिए गए

काका कालेलकर, जो यरवदा जेल में क़ैद थे, अपनी मियाद पूरी करके जेल से छूटे हैं। आप महात्मा जी के साथ ही रक्खे गए थे। साबरमती आश्रम में दिए गए उनके वक्तव्यों से पता चलता है कि महात्मा जी का वज़न १०४ पौण्ड से घट कर १०१ पौण्ड हो गया है। यरवदा जेल का पानी उनके लिए अच्छा नहीं जान पड़ता, क्योंकि उन्हें क़ब्ज़ की शिकायत रहा करती है। पर साधारणतया उनका स्वास्थ्य अच्छा है। उन्होंने दूध और दही का खाना छोड़ दिया है। उनका समय प्रायः गीता का पाठ या चर्ख़ा कातने में बीतता है। आश्रम के लड़कों को चिट्ठी लिखने में वे बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। इस समय श्रीयुत प्यारेलाल उनके साथ हैं। काका कालेलकर १ली दिसम्बर को अहमदाबाद पहुँच गए।

—आकोला ज़िले में २४,२५, और २६वीं नवम्बर को शराब के ठेके की नीलामी निश्चित की गई थी, स्वयंसेवकों ने २१ वीं नवम्बर की रात से ज़िला अदालत में धरना देना निश्चित किया था। फल-स्वरूप ठेके लेने वाले आधी रात को बुलाए गए। कुछ लोग गिरफ़्तार किए गए हैं। पता चलता है कि आधे मूल्य की घटी सरकार को सहनी पड़ी है।

—कराची का सत्याग्रह-दफ़्तर निजी रूप से बेचने वाले मदिरा के अड्डों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही कर रहा है। पिकेटिङ्ग शुरू होने के बाद यहाँ अनेक ऐसे अड्डे खोले गए हैं। ऐसे कितने ही अड्डों पर स्वयंसेवकों ने धावा किया। शराब नष्ट कर दी और उनके मालिकों को जुर्माना किया।

—धरना देने वालों के अनशन व्रत के कारण अहमदाबाद के पञ्चकुवा मार्केट एसोसिएशन के सदस्यों ने ५ मई तक के लिए विदेशी वस्त्र की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवा लेने का निश्चय किया है।

—अहमदाबाद का समाचार है कि मानिक चौक में, जो महिला स्वयंसेविकाएँ अनशन कर रही थीं, वहाँ के व्यापारियों के ५ मई तक विदेशी कपड़े न बेचने की प्रतिज्ञा करने पर उन्होंने अनशन तोड़ दिया है। ऐसा सुना जाता है कि स्वयंसेवक विदेशी वस्त्रों की बिक्री रोकने के लिए अन्य स्थानों में भी इसी उपाय का अवलम्बन करेंगे।

—तीन महीने की सादी सज़ा भुगतने के बाद श्रीमती हंसा मेहता १ली दिसम्बर को आर्थर रोड जेल से छोड़ दी गईं। उनकी दो बहिनें और उनके पति डॉ० जीवराज मेहता उनके स्वागत के लिए जेल तक गए थे।

बीकानेर-स्टेट के दीवान सर मनुभाई मेहता (जो गोलमेज़ परिषद में गए हुए हैं) की पुत्री श्रीमती हंसा मेहता, बी० ए०, अपनी तीन मास की सज़ा काट कर १ली दिसम्बर को आर्थर रोड (बम्बई) जेल से मुक्त कर दी गई हैं। आप बम्बई के "वार कौन्सिल" की प्रधाना थीं।

—नई दिल्ली में सात स्वयंसेवक, जो पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे, इसकी अवधि समाप्त हो जाने के कारण छोड़ दिए गए।

—अहमदाबाद का एक समाचार है कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कैरा और बारडोली जाने का विचार किया है। उनका विचार वहाँ मि० महादेव देसाई के साथ जाने का था, किन्तु उनकी गिरफ़्तारी हो जाने के कारण देसाई जी का फ़ैसला हो जाने पर वहाँ जायँगे।

—११ स्वयंसेवकों का एक दल २४वीं नवम्बर को मुज़फ़्फ़रनगर ज़िले के अन्तर्गत शामली, मदिरा और विदेशी कपड़े के बहिष्कार के लिए पर्चे बाँटने भेजे गए थे। स्वयंसेवकों ने वहाँ से लौट कर कहा कि एक साधारण जन-सभा में पुलिस ने उन पर अत्याचार किया, गुण्डों ने उन्हें लाठी से मारा और काग़ज़ पर अँगूठे का निशान देकर माफ़ी माँगने के लिए वे विवश किए गए।

—मुन्शीगञ्ज का समाचार है कि ता० २१वीं नवम्बर को पुलिस ने वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी की ख़ानातलाशी ली। कहा जाता है कोई वस्तु सन्देहजनक नहीं पाई गई। तो भी पुलिस कुछ कॉङ्ग्रेस बुलेटिन और वहाँ का नोटिस-बोर्ड उठा ले गई है।

श्री० पटेल विज़गापट्टम जेल भेजे जायँगे

लाहौर का २९वीं नवम्बर का समाचार है, कि मेडिकल कॉलेज लाहौर के प्रिन्सिपल कर्नल हार्पर नेल्सन ने, जो श्री० पटेल के स्वास्थ्य की जाँच करने के लिए नियुक्त हुए थे, अपनी रिपोर्ट पेश कर दी है। ऐसा मालूम होता है कि उन्होंने रिपोर्ट में लिखा है, कि श्री० पटेल अम्बाला जेल में न रक्खे जायँ, क्योंकि उनके लिए पञ्जाब की आबहवा स्वास्थ्यप्रद नहीं है। उन्होंने यह भी लिखा है कि लम्बी रेल-यात्रा से उनके स्वास्थ्य को कोई हानि नहीं पहुँच सकती। मालूम हुआ है कि उन्हें विज़गापट्टम जेल तबदील करने का प्रबन्ध किया जा रहा है; परन्तु अभी तक इस बात का पता नहीं है कि कर्नल हार्पर ने उनके पेट के रोग का क्या निदान बतलाया है। आख़ीर की रिपोर्ट से पता लगा है कि उनका स्वास्थ्य बिलकुल नष्ट हो गया है और केवल एक जेल से दूसरी जेल भेज देना उपयुक्त नहीं है। उनकी वर्तमान अस्वस्थतावस्था में जेल से रिहा कर देना अत्यन्तावश्यक प्रतीत होता है। १ली दिसम्बर का दिल्ली का समाचार है कि ३० ता० को श्री० पटेल अम्बाला जेल से पुलिस के पहरे में मोटर से दिल्ली लाए गए थे और वहाँ से सन्ध्या समय रेलगाड़ी से मद्रास भेज दिए गए।

हैदराबाद में लाठी-प्रहार

हैदराबाद (सिन्ध) का २१वीं नवम्बर का समाचार है कि उस दिन दोपहर के बाद नित्यप्रति की नाईं डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट की अदालत में ग़ैर-क़ानूनी नमक बेचा गया। अदालत में सशस्त्र पुलिस का कड़ा पहरा था और लोग बहुत बड़ी तादाद में जमा हो गए थे। जैसे ही एक वालण्टियर नमक बेचने गया वह गिरफ़्तार कर लिया गया और जब पुलिस उसे लॉरी में चढ़ा कर रवाना होने लगी, तब आदमियों का दल उसके पीछे चलने लगा। इस पर पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट ने लाठी-प्रहार करने का ऑर्डर दे दिया। एक छोटा लड़का मरते-मरते बच गया। तीन वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। जनता में बहुत असन्तोष फैला है।

—पटना का २८वीं नवम्बर का समाचार है कि मुसम्मात बसुदेव कुवाँरी को, जिसने दैहार (हज़ारीबाग़) में पिछली जुलाई में सती होने का प्रयत्न किया था। दण्ड-विधान की ३०६ दफ़ा (आत्म-हत्या का प्रयत्न) के अनुसार ३ माह की सादी सज़ा दी गई है। अन्य सात आदमियों को भी सती होने की सलाह देने के अभियोग में ६-६ माह की सादी क़ैद की सज़ा हुई है।

* * *

(५वें पृष्ठ का शेषांश)

—ग़ाज़ीपुर का एक समाचार है कि वहाँ के जेल में राजनैतिक क़ैदी, जिनमें ५ छोटे लड़के हैं, पीटे गए। इनका अपराध यही था कि इन्होंने दूसरे अपराधों के लिए सज़ा पाए हुए नीच लोगों के साथ एक ही क़तार में भोजन करने से इनकार किया। २४ राजनैतिक क़ैदियों को, जो वहाँ पर मौजूद थे, और जिन्होंने वहाँ से हटना अस्वीकार किया, घसीटा गया और वे अपने बैरक में बन्द किए गए। इनमें दो 'ए' श्रेणी के थे। इन लोगों को थोड़ी चोटें भी आई हैं।

* * *

गोलमेज़ पर एक तीक्ष्ण दृष्टि

गोलमेज़-परिषद के 'प्रतिनिधियों' का भविष्य क्या होगा?

"इनके लौटने पर एक कुत्ता भी न भौंकेगा"

जब भारत के प्रतिनिधि गोलमेज़-परिषद के तहस-नहस हो जाने के उपरान्त, जिसकी पूरी-पूरी सम्भावना है, ख़ाली हाथ और अपमानित इस देश की भूमि को अपना काला मुँह दिखाएँगे, तब एक कुत्ता भी न भौंकेगा। उसके बाद शीघ्र ही या कुछ समय बाद ब्रिटेन और भारत के बीच में सच्ची और आदर्श गोलमेज़-परिषद करनी होगी, जिसमें भारत के उन वीर और साहसी ७०,००० देशभक्त नर-नारियों के प्रतिनिधि रहेंगे, जो आज जेलों के रौरव-नरक में अपने को सड़ा-सड़ा कर अपने देशवासियों के भूत और वर्तमान के पापों का प्रायश्चित्त कर रहे हैं।

सहयोगी "बॉम्बे क्रॉनिकल" के पिछले साप्ताहिक संस्करण में एक विचारणीय लेख प्रकाशित हुआ है, जिसके लेखक है "एन इन्क्वायरी पब्लिसिट" (An enquiry publicit) उसी लेख का अनुवाद पाठकों के मनोरञ्जनार्थ नीचे दिया जा रहा है :—

"एक कहावत है कि गुलाब के फूल भटकटैया में उत्पन्न नहीं हो सकते, और सचमुच में किसी देश को आजकल वहाँ के नरम-दल वालों और कायरों ने स्वतन्त्र नहीं किया; क़ानूनवेत्ताओं और शासन-विधायकों के लिए अपने देश की आर्थिक गुलामी को पूँजीपति राष्ट्र से मुक्त करना असम्भव है।"

"अण्डाकार-टेबिल का वाद-विवाद बढ़ता जा रहा है; विभिन्न दलों के वाक-पटु नेताओं में बातचीत का मैच जारी है और उसका कोई अन्त दिखाई नहीं देता। अभी तक, न तो सम्राट से और न प्रधानमन्त्री से किसी निश्चित 'सुधार' का वचन प्राप्त हो सका है; और केवल वाक-प्रलाप से हम देश को स्वतन्त्र नहीं कर सकते। हाल में जो समाचार आए हैं, उनसे मालूम हुआ है कि हिन्दू-मुसलमानों के बीच में समझौते का एक पैवन्द लगाने का प्रयत्न किया जा रहा है, परन्तु क्या वह इङ्गलैण्ड के उन विरोधी कूटनीतिज्ञों की कुटिल-चालों का प्रहार सह सकेगा, जो सदैव इन दो जातियों के बीच में फूट का पहाड़ खड़ा करने का प्रयत्न करते रहे हैं? कॉङ्ग्रेस ने गोलमेज़ को तिलाञ्जलि दी है और उसने उचित ही किया है। स्वतन्त्रता भिक्षा माँगने से प्राप्त नहीं हो सकती, उसे अपनी शक्ति से प्राप्त करना होगा और भारत उसी का सतत प्रयत्न कर रहा है।

"गवर्नमेण्ट ने अण्डाकार टेबिल-परिषद के लिए प्रतिनिधियों का जो चुनाव किया है, उनमें ऐसे विरोधियों का जमघट एकत्रित हुआ है, कि वे नितान्त आवश्यक बातों से एकमत हो ही नहीं सकते। हिन्दू सभा और मुस्लिम लीग वाले दोनों के प्रतिनिधि बड़ी तादाद में वहाँ उपस्थित हैं और क्या लन्दन में इन दोनों पार्टियों में घातक युद्ध नहीं हो रहा है? राजा लोग संसार के सामने यह साबित करने पर तुले हुए हैं कि राजनीतिक वाकपटुता में वे किसी से कम नहीं हैं और अभी तक वे सप्रू, जयकर, और जिन्ना को मात करते रहे हैं।

भारी समस्या

"यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि डॉ० सप्रू ने सब से पहले यह प्रश्न निश्चित करने की ठानी है, कि भारत का शासन-विधान फ़ेडरल होगा या यूनीटरी, यह बेवक़ूफ़ी की हद है। सब से पहले इस प्रश्न की आवश्यकता थी कि भारत को औपनिवेशिक राज्य मिलेगा या नहीं? परन्तु इस सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री और भारत मन्त्री दोनों ही चुप हैं।

"वर्तमान संसार के सब से अधिक दूरदर्शी और तीक्ष्ण राजनीतिज्ञ महात्मा गाँधी ने, जब श्री० एस० आर० बामन जी से यह कहा था कि "मैं अपने देशवासियों में ब्रिटेन से शक्ति छीनने की शक्ति उत्पन्न कर रहा हूँ", तब उन्होंने मानो ईश्वरीय उद्गार अपने मुँह से निकाले थे। यदि भारत स्वतन्त्रता चाहता है तो वह स्वयं भारतीयों को अपनी शक्ति से लेना होगा। इङ्गलैण्ड के सुप्रसिद्ध साहित्यज्ञ जॉर्ज बर्नार्डशा ने ठीक ही कहा था, कि भारत के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त करना भारतीयों का ही कार्य है। बाहर वालों के हस्तक्षेप से केवल उद्देश्य-प्राप्ति में क्षति ही होगी। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों से सुलह कर स्वतन्त्रता का पुरस्कार कभी प्राप्त ही नहीं हो सकता।

असम्भव के प्राप्ति की चेष्टा

"ब्रिटेन को ईजिप्ट से उतना लाभ कभी नहीं हुआ, जितना उसे भारत से हो रहा है, तिस पर भी हम उसके उदाहरण से बहुत लाभ उठा सकते हैं। यदि ईजिप्ट को स्वतन्त्रता के इतने वचन देने के उपरान्त भी स्वतन्त्रता नहीं दी गई तो क्या भारत उसकी कृपा से स्वतन्त्रता प्राप्त करने की कोई आशा कर सकता है? कोई भी समझदार आदमी इसका उत्तर सरलता से दे सकता है; परन्तु गोलमेज़ के प्रतिनिधियों की ज्योति तो इतनी धुँधली हो गई है, कि सूर्य का प्रकाश भी उनकी सहायता नहीं कर सकता। ब्रिटेन ने आज तक संसार के किसी देश को स्वतन्त्रता का उपहार नहीं दिया और न उसमें देने की क्षमता ही है। यदि यह अनुमान भी कर लिया जाय, कि ब्रिटेन असम्भव को सम्भव करना चाहता है, अर्थात मज़दूर-दल ब्रिटेन की प्रतिज्ञाओं को पूरा करना चाहता है, तो वहाँ के दूसरे अनुदार और नरम दो दल उसके बीच में बड़े भारी रोड़े हैं। वे दोनों दल इस बात पर तुले बैठे हैं, कि भारत को स्वतन्त्रता न दी जाय। जहाँ भारत को स्वतन्त्रता न देने का सवाल है, वहाँ तक वे मज़दूर-दल के साथ हैं, और वह भी केवल इसलिए, कि भारत की स्वतन्त्रता का प्रश्न किसी एक दल का प्रश्न न होने पावे और वे भारत को चूस-चूस कर अपने देश को समृद्ध बनाए रख सकें!

कुत्ता भी न भौंकेगा

"कुछ लोग यह प्रश्न कर सकते हैं, कि जब गोलमेज़ के प्रतिनिधि ख़ाली हाथ और अपमानित इस देश में वापस लौटेंगे, तब क्या होगा? इसका सीधा-सा उत्तर यह है कि "कुछ नहीं"। उनके चरण भारत की भूमि पर पड़ने से एक कुत्ता भी न भौंकेगा। प्रतिनिधियों में से कुछ बड़े-बड़े पदों पर आरूढ़ हो जाबेंगे और कुछ 'सर' की उपाधि से विभूषित हो जायँगे और वहीं उनकी छोटी सी कहानी का अन्त भी हो जायगा। देश उसी प्रकार कॉङ्ग्रेस का अनुगामी बना रहेगा, जैसा वह इस समय बना है। जो कॉङ्ग्रेस के पतन का स्वप्न देख रहे हैं, वे मानो चन्द्रमा प्राप्त करने के लिए बाल-क्रन्दन कर रहे हैं! हमारा भविष्य कण्टकों और आपत्तियों से लबालब है। जिन पुरुषों की आज्ञा का हम पालन कर सकते हैं, वे जेल में हैं और जिस महापुरुष के शब्द इस अभागे देश के करोड़ों गूँगों के लिए ठोस क़ानून हैं, वह यरवदा की तपोभूमि की चहारदीवारी के अन्दर चर्ख़ा चला रहा है और वहीं बैठा-बैठा अपने अगणित भक्तों को चर्ख़े के राग के साथ ईश्वर का आलाप सुनाता रहता है।

आशान्वित भविष्य

"यद्यपि श्री० जयकर को भारतीय युवकों की आकांक्षाएँ प्रतिध्वनित करने का कोई अधिकार नहीं है, परन्तु उन्होंने यह सत्य ही कहा है, कि इस देश का युवक-समुदाय थोथे सुधारों से कभी सन्तोषित नहीं हो सकता। देश का भविष्य युवकों के हाथ में है। जब भारत से पुरानी पीढ़ी का अन्त हो जायगा; और उसका अन्त प्रबल वेग से हो रहा है, तब नई शक्तियाँ जो अपनी ज़ञ्जीरों के टुकड़े टुकड़े कर रही हैं, भीषण रूप से जाग्रत होंगी।

गोलमेज़ के प्रतिनिधियों का क्या होगा?

"गोलमेज़ से लौटे हुए राजनीतिज्ञों का भविष्य क्या होगा? उनका भविष्य उसी प्रकार अन्धकारमय है, जिस प्रकार भारत की पुरानी पीढ़ी का। जनता सप्रू और सीतलवाड, जयकर और सफ़ी, मुहम्मदअली और मुञ्जे को भूल जायगी, वह उन्हें तिलाञ्जलि दे देगी। वे और उनकी गोलमेज़-परिषद भारतीय स्वतन्त्रता के विशद इतिहास की एक तुच्छ घटना मात्र रह जायँगे। भारत के सच्चे भाग्य-निर्माता वे ७०,००० नर-नारी होंगे, जो जेलों में भारत के भूत और वर्तमान पापों का प्रायश्चित्त कर रहे हैं। उन्हें, जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान किया है, ये वाकपटु राजनीतिज्ञ बिलकुल भूल गए हैं। क्या गुजरात के साहसी और वीर किसान अपनी आवाज़ शास्त्री और जयकर की वाकपटुता में निमग्न कर देंगे?

"कॉङ्ग्रेस भारत की सर्वस्व है, वही इस देश की सच्ची प्रतिनिधि है। देश की अन्य सभी संस्थाएँ और आन्दोलन भ्रमात्मक हैं—झूठे।"

* * *

शहर और ज़िला

—तारीख़ २६ नवम्बर को इलाहाबाद निवासियों को यह ख़बर मिली कि श्रीयुत ब्रजमोहनदास को, जो किसी राजनैतिक आन्दोलन के सम्बन्ध में जेल में क़ैद हैं, कोड़े लगाए गए। उन्होंने अपनी कोठरी की दीवार पर "महात्मा गाँधी की जय" लिख दिया था, इसीलिए उन्हें यह दण्ड दिया गया है। ख़बर पाते ही शहर के कुछ लोग जुलूस बना कर जेल पहुँचे, परन्तु अधिकारियों को इसकी ख़बर लग गई और उन्होंने जेल के सारे रास्तों पर पहरा लगा दिया था। तब भी कुछ लोग जेल के क़रीब तक पहुँच गए और बहुत देर तक राष्ट्रीय गाने गाते रहे तथा नारे लगाते रहे। शाम को सभा में श्रीयुत पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने ब्रजमोहनदास के साहस के लिए, उन्हें बधाई दी।

—गत २६वीं नवम्बर को पिकेटिङ्ग के अभियोग में ८ महिलाओं के साथ ७ पुरुष भी गिरफ़्तार किए गए थे। इलाहाबाद में अभी तक इतनी स्त्रियों की गिरफ़्तारी एक साथ कभी नहीं हुई। इस ख़बर से शहर में सनसनी मच गई और हड़ताल मनाई गई। शहर के मुसलमान दुकानदारों ने भी, जो बहुधा अलग रहते थे, हड़ताल मनाई। अब्दुल रहीम ने गिरफ़्तारियाँ होते ही अपनी दुकान बन्द कर दी।

सन्ध्या समय एक जुलूस निकाला गया और मोती पार्क में एक सभा की गई। सभा के सभापति श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन ने अपने भाषण में भारतीय महिलाओं के साहस और उनकी वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा की, और इलाहाबाद की महिलाओं को बलिदान का गौरव प्राप्त होने के उपलक्ष में उन्होंने शहर निवासियों से दीवाली मनाने की प्रार्थना की।

श्रीमती उमा नेहरू ने कहा कि 'आज हमारे सौभाग्य से हमें अवसर प्राप्त हुआ है, जिसकी हम बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे। कल से मैं स्वयं अकेली अब्दुल रहीम की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने जाऊँगी। जब स्त्रियों की गिरफ़्तारी के बाद मैं अब्दुल रहीम की दुकान पर पहुँची, तब वहाँ बहुत से मुसलमान एकत्र थे और रो रहे थे।' अन्त में उन्होंने मुसलमान व्यापारियों से विदेशी कपड़े पर काँग्रेस की सील लगवाने की प्रार्थना की। श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित ने स्त्रियों से वालण्टियर बनने की प्रार्थना की। मालूम हुआ है कि इन गिरफ़्तार महिलाओं में से एक महिला की लड़की की शादी उसी सप्ताह में होने वाली थी। दूसरे दिन जब श्रीमती उमा नेहरू अब्दुल रहीम की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने गईं तब वे अपना विदेशी कपड़ा बन्द कर चुके थे।

५ महिला स्वयंसेविकाओं को सख़्त क़ैद

विदेशी कपड़े के व्यापारी अब्दुल रहीम की दूकान से सामने धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार की गईं ७ महिलाओं में से श्रीमती हरदेवी, श्रीमती रामप्यारी, श्रीमती बिन्दो देवी, श्रीमती सरोजसुन्दरी तथा श्रीमती लक्ष्मी को ३-३ मास का कठिन कारावास का दण्ड मिला है और श्रीमती रामप्यारी को चालीस रुपए का तथा श्रीमती मुनिया को १०० रुपए जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है। जुर्माना न देने पर इन्हें ६ हफ़्ते की सादी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। स्वयंसेवकों को छः मास की कड़ी सज़ा का हुक्म हुआ है। इसके अतिरिक्त श्रीयुत ओङ्कारनाथ पर २५) रुपए का जुर्माना भी किया गया है। जुर्माना न देने पर उन्हें ६ हफ़्ते की सख़्त क़ैद और भुगतनी पड़ेगी। सब स्वयंसेविका तथा स्वयंसेवकों ने सज़ा के हुक्म को प्रसन्नचित्त से सुना। और दो महिलाओं ने, जिन के ऊपर फ़ाइन किया गया है, जुर्माना देने से इनकार किया है।

महिलाओं को सख़्त क़ैद का हुक्म सुन कर कोर्ट में इकट्ठे हुए लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। और पण्डित रमाकान्त मालवीय ने उन्हें बताया कि श्रीमती मुनिया के अतिरिक्त और सब महिलाएँ 'सी' दर्जे में रक्खी जावेंगी। इनमें से अधिकतर महिलाएँ बहुत ऊँचे ख़ानदान की हैं। श्रीमती मुनिया 'बी' दर्जे में रक्खी गई हैं। मुक़दमा ख़तम हो जाने के बाद पण्डित रमाकान्त मालवीय ने मैजिस्ट्रेट से कहा कि श्रीमती सरोजसुन्दरी ऊँचे ख़ानदान की महिला हैं। मैजिस्ट्रेट ने कहा कि इस विषय पर अपने बड़े अधिकारियों से आज्ञा लेने के बाद मैं आपकी बात का उत्तर दे सकूँगा।

श्रीमती श्यामकुमारी नेहरू एडवोकेट ने और महिलाओं से भी उनके ख़ानदान के विषय में पूछा। वे चाहती थीं कि वे ऊँचे दर्जे में रक्खी जावें। पर महिलाओं ने उत्तर दिया कि हम जेल के अन्दर जाकर सरकार से कोई विशेष सुविधाएँ नहीं चाहतीं।

श्रीमती रामप्यारी तथा श्रीमती मुनिया ने अपने सम्बन्धियों से कहा कि यदि आप लोग हमारा जुर्माना अदा करेंगे तो मैं अपना कट्टर दुश्मन समझूँगी।

जिन महिलाओं को सख़्त क़ैद का हुक्म सुनाया गया है, उनमें से अधिकतर एक हफ़्ते के पहले परदे में रहती थीं और खाने-पीने में वे अभी तक पुराने सिद्धान्तों को मानने वाली थीं। उन्हें जेल के कपड़े तथा भोजन से बहुत कष्ट होगा, इन महिलाओं में से एक की आयु ५५ वर्ष की है। ३० तारीख़ तक उन्हें बाहर ही से खाना भेजा गया है, उनके लिए कुछ नए बर्तन भी दिए गए हैं। पण्डित चन्द्रकान्त मालवीय कहते हैं कि उनके खाने के लिए जो पूरी तथा शाक जेल में भेजा गया था, उसकी भी जेल के अधिकारियों ने तलाशी ली थी।

—ख़बर है कि गत सप्ताह में एक बङ्गाली महिला के जुम्मा मस्जिद में जाकर इस्लाम धर्म की दीक्षा लेनी चाहती थी, इतने ही में उसका पति पहुँच गया, जो ई० आई० रेलवे का एक कर्मचारी बताया जाता है। पति ने पुलिस में रिपोर्ट करके अपनी स्त्री को वापस लेना चाहा। एक दारोग़ा साहब जाकर स्त्री को बयान लेने के अभिप्राय से कोतवाली में ले आए और अन्त में महिला एक स्थानीय प्रतिष्ठित बङ्गाली सज्जन को सौंप दी गई। क्योंकि वह अपने पति के यहाँ जाना नहीं चाहती थी। स्त्री का कहना था कि पति द्वारा उस पर अब तक अमानुषिक अत्याचार किए गए हैं, इसीलिए वह इस्लाम धर्म स्वीकार करने आई थी। उधर मुसलमानों का कहना है कि दारोग़ा साहब के आने के पहिले ही स्त्री इस्लाम धर्म में दीक्षित की जा चुकी थी। कहा जाता है कि मुसलमानों ने पुलिस के अधिकारियों के पास उस महिला को उन्हें सौंप देने के लिए एक प्रार्थना-पत्र भेजा था। किन्तु सुनने में आया है कि उक्त महिला कलकत्ते के लिए रवाने हो गई है। मुसलमानों ने इसके विरोध स्वरूप हड़तालें मनाई हैं।

यह भी ख़बर है कि मुसलमानों का एक डेपुटेशन स्थानीय डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट के पास भी गया था, जिसमें उन्होंने उस बङ्गाली महिला को वापस दिलाने की उनसे प्रार्थना की है। कहा जाता है इन अफ़सरों ने इस डेपुटेशन को इस बात का विश्वास दिलाया है कि वे शीघ्र ही कलकत्ते से उस महिला का बयान मँगाने का प्रबन्ध करेंगे और उसकी इच्छानुकूल कार्यवाही की जायगी। इस घटना से सारे शहर में ही नहीं, बल्कि ज़िले भर में बड़ी सनसनी फैली हुई है।

इसी सम्बन्ध में २९ तारीख़ को मुसलमानों ने हड़ताल मनाई! एक जुलूस निकला। सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस तथा सिटी मैजिस्ट्रेट के पास भी गए। इस सम्बन्ध में उन्होंने सिटी मैजिस्ट्रेट को दरख़्वास्त भी दी है।

—आगामी माघ मेले की तयारियाँ शुरू हो गई हैं। मेला तारीख़ ४ जनवरी, १९३१ से आरम्भ होगा। सुनते हैं कि सङ्गम का स्थान इतना अस्थिर है कि अधिकारी अभी तक मेले का नक़शा तक ठीक नहीं कर पाए हैं।

—तारीख़ ७ दिसम्बर को १ बजे दोपहर को विश्वम्भर पैलेस में इलाहाबाद के विद्यार्थियों की एक सभा होने वाली है। स्थानीय स्टूडेण्टस एसोसिएशन के मन्त्री ने सूचना दी है कि इस सभा का उद्देश यह है कि इलाहाबाद के सारे विद्यार्थी एकत्रित होकर अपनी मातृभूमि की सेवा करने का कोई ऐसा साधन ढूँढ़ निकालें जिसमें वे पूरी तौर से भाग ले सकें। विद्यार्थीगणों के अधिकारों को रक्षा के प्रश्न पर भी यहाँ विचार किया जावेगा। आगामी क्रिसमस की छुट्टियों में यू० पी० के विद्यार्थियों की एक सभा करने का प्रस्ताव भी सब के सामने रक्खा जावेगा। श्रीयुत पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने सभापति का आसन ग्रहण करना स्वीकार किया है।

बधाई

डॉक्टर धनीराम जी 'प्रेम' लन्दन से लिखते हैं :—

'भविष्य' के दो अङ्क इस सप्ताह मिले। धन्यवाद! पत्र को देख कर और पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस प्रकार के सर्वाङ्ग-सुन्दर-कलेवर, पाठ्य-विषय, चित्र आदि—पत्र की हिन्दी में बड़ी आवश्यकता थी। इस देश में ऐसे साप्ताहिक पत्रों की बहुलता देख कर मुझे यह कमी बहुत अखरती थी। मुझे गर्व है कि आप इस आशातीत सफलता को प्राप्त करने में, कठिनाइयों के रहते हुए भी, सफल हो सके। मेरी यही कामना है कि 'भविष्य' का भविष्य उज्ज्वल तथा कण्टक-रहित हो, ताकि वह हमारी प्यारी मातृभूमि के भविष्य-निर्माण में हाथ बटा सके।

—'अभ्युदय' प्रेस में 'अभ्युदय' के पुराने और नए सम्पादक श्री० सत्यव्रत और श्री० रामकिशोर मालवीय एक्सप्लोज़िव सब्सटेन्सेस एक्ट, आर्म्स एक्ट और दण्ड-विधान की १२०वीं दफ़ा के अनुसार गवर्नमेण्ट को उखाड़ फेंकने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। गिरफ़्तारी के उपरान्त प्रेस की तलाशी ली गई। कहा जाता है कि प्रेस में उसी तरह टाइप मिला है, जिसमें कोई निश्चित क्रान्तिकारी इश्तहार छापा गया था। अभियुक्त हवालात में काल-कोठरी में और हथकड़ियाँ डाल कर रक्खे गए थे। वे दोनों तीन-तीन हज़ार की व्यक्तिगत ज़मानत और उतने की दो अन्य ज़मानतों पर छूटे हैं।

—'भारत' के भूतपूर्व सम्पादक पण्डित वेङ्कटेश नारायण तिवारी लखनऊ जेल से छूट कर १ली दिसम्बर को इलाहाबाद पहुँच गए। तिवारी जी के समस्त अङ्ग में पीड़ा रहती है। इसका कारण यह जान पड़ता है कि जेल में उन्हें अधिक शारीरिक परिश्रम करना पड़ा होगा। यद्यपि आप 'ए' श्रेणी में रक्खे गए थे। तो भी आपने 'सी' श्रेणी में ही रहना स्वीकार किया था। आप का वज़न १७ पौण्ड घट गया है।

—तारीख़ २६ को पिकेटिङ्ग तथा अन्य अपराधों के लिए गिरफ़्तार किए हुए उन्नीस व्यक्तियों को श्रीयुत मुहम्मद इसहाक़ के कोर्ट में ६ महीने की कड़ी सज़ा का हुक्म सुनाया गया।

—तारीख़ २७ को उसी अदालत में १२ और व्यक्तियों को ६ मास की सख़्त क़ैद दी गई।

वर्तमान युग के तीन महान तपस्वी

तपस्वी विट्ठल भाई पटेल
जो अम्बाला की जेल में सख़्त बीमार होने के कारण विज़गापटम (मद्रास) भेजे गए हैं और जिनके लिए सारा देश बड़ा चिन्तित हो रहा है।

त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल जी नेहरू
जो बीमारी के कारण अवधि समाप्त होने के पहिले ही नैनी जेल से छोड़ दिए गए थे और जो कलकत्ते में दिन में दो-दो बार ख़ून उगल रहे हैं।

महामना पं० मदन मोहन जी मालवीय
जो नैनी जेल में सख़्त बीमार हैं, आपको गत सप्ताह १०४ डिग्री तक ज्वर हो गया था।

'भविष्य' की मूल्य-वृद्धि

एक आवश्यक सूचना

'भविष्य' का जन्म एक ऐसी डावाँडोल परिस्थिति में हुआ था, जब कि वर्तमान अनियन्त्रित शासन-प्रणाली के कारण उन पत्र-पत्रिकाओं तक के छक्के छूट रहे थे, जो बीसों वर्ष से देश-सेवा में रत थे। अब तक के प्रकाशित १० अङ्कों से 'भविष्य' द्वारा जो थोड़ी-बहुत देश की सेवा इस संस्था से बन पड़ी, उसे करने में उसने कभी मुँह नहीं मोड़ा। इसका अनुमान देश के विचारशील नेता एवं पाठकगण भली-भाँति कर सकते हैं। पर इस पुनीत सेवा के फल-स्वरूप हमें जो पुरस्कार मिला है, उसकी स्वप्न में भी हमें आशा नहीं थी। इस थोड़ी सी अवधि में हमें

४,६००) रुपयों का घाटा

उठाना पड़ा है और हमें इस बात के स्वीकार करने में लेश-मात्र भी लज्जा नहीं होती कि आज इस संस्था की परिस्थिति वास्तव में बड़ी शोचनीय हो रही है और हम स्वीकार करते हैं, अधिक घाटा सहने की शक्ति हममें नहीं है। हम नहीं चाहते कि संस्था अकाल ही मृत्यु की ग्रास बने—साथ ही अन्य अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं के समान हम केवल काग़ज़ ही काला करने के पक्ष में भी नहीं हैं। हमारी इच्छा 'भविष्य' को विश्व के किसी भी सर्वोत्तम पत्र से टक्कर दिलाने की है और इसी सदुद्देश्य को सामने रख कर हमने संसार के सभी देशों से लेख और समाचार मँगाने का प्रबन्ध किया है। 'भविष्य' के लिए तारों का भी ख़ास प्रबन्ध है जिसके लिए बहुत-कुछ व्यय हो रहा है। शायद पाठकों को बतलाना न होगा कि समस्त-भारत में 'भविष्य' ही एक ऐसा साप्ताहिक है, जिसमें तार द्वारा समाचार मँगाने का विशेष प्रबन्ध किया गया है। काग़ज़ का भी ख़ास प्रबन्ध किया गया है, 'भविष्य' का वर्तमान अङ्क इस बात का साक्षी है। बड़े-बड़े लेखकों के लेख, चित्र और कार्टून आदि का भी सर्वोत्तम प्रबन्ध किया गया है और यदि वर्तमान रूप में पत्र इसी मूल्य और चन्दे में प्रकाशित किया गया, तो आर्थिक हानि का दूना हो जाना बिल्कुल स्वाभाविक है; और जिसे सहन करने की शक्ति हम में नहीं; अतएव पत्र द्वारा जो सेवा हो रही है, उसे दृष्टि में रखते हुए और पत्र को बन्द करना उचित न समझ कर, इस संस्था के अनेक शुभचिन्तकों एवं मित्रों की राय से बजाय दो आने के फ़ी कॉपी का मूल्य भविष्य में

तीन आने

करने का निश्चय किया गया है और वार्षिक चन्दा बजाय ६) रु० के, ९) रु० कर दिया गया है। जिन ग्राहकों के पास पहिले ६) रु० में साल भर के लिए 'भविष्य' भेजा गया है, उनके नाम ९ मास तक 'भविष्य' भेजा जायगा। हमें आशा है, पाठकगण हमारी विवशता को समझने का प्रयत्न करेंगे। हमारे पास विज्ञापन का साधन भी नहीं है और दो आने में प्रति सप्ताह ४० पृष्ठों का इतना अच्छा मैटर देना हमारी शक्ति के बाहर है, अतएव हमें आशा है, पाठकगण इस मूल्य एवं चन्दे की वृद्धि के लिए हमें क्षमा करेंगे। एक बात पाठकों को और भी स्मरण रखनी चाहिए, वह यह, कि अन्य प्रायः सभी साप्ताहिक पत्रों को भेजने में एक पैसे का टिकट लगता है और 'भविष्य' के भेजने में दो पैसे का, क्योंकि इसका वज़न साधारण पत्रों से दूना होता है।

एजण्टों को सूचना

इस विज्ञप्ति की ओर हम एजण्टों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहते हैं। उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि यदि वे अपनी निर्धारित कॉपियों की संख्या, इस मूल्य-वृद्धि के कारण घटाना चाहें, तो उन्हें लौटती डाक से इसकी सूचना देनी चाहिए, अन्यथा भेजी हुई कॉपियों के लिए उन्हें ज़िम्मेदार होना पड़ेगा।

आगामी १२ वें अङ्क से (तारीख़ १८-१२-३० वाले अङ्क से) 'भविष्य' की एक कॉपी का मूल्य दो आने की जगह तीन आने हो जायगा। सूचनार्थ निवेदन है।

—मैनेजिङ्ग डाइरक्टर

* * *

जेल की दुनिया

"फाँसी की रस्सी, जल्लाद का कुल्हाड़ा और तोप का गोला व्यक्तिगत जीवन का अन्त कर सकता है'। पर इससे सामूहिक जीवन की शक्ति अधिक प्रबल होती है। स्वतन्त्रता की भावना कुचलने के उद्देश्य से शासकगण हमेशा देश-निकाला, कालापानी, कारावास, अत्याचार और ज़ब्तियों द्वारा आज़ादी के मतवालों का विनाश करना चाहते हैं। पर ये हथियार आज तक स्वतन्त्रता की भावना का अन्त करने में सफल नहीं हुए।"

—लाला लाजपतराय।

जेल की दुनिया बिलकुल अलग है। उस संसार से और बाक़ी दुनिया से बहुत कम सम्बन्ध है। जेलों में जो कुछ होता है, उसका पता भी हमें नहीं लगा करता। हाँ, कभी-कभी किसी प्रकार जेल की कष्ट-कथाओं की भनक हमारे कानों में पड़ जाती है। जो कुछ मालूम हो जाता है, वही इतना भयङ्कर होता है कि रोमाञ्च हो आता है। आजकल हज़ारों की संख्या में राजनैतिक क़ैदी जेल-यातनाएँ भुगत रहे हैं। उन्हें जो कष्ट दिए जा रहे हैं, उनके ऊपर जो बीत रही है, उसका यत्किञ्चित वर्णन भी सुन कर हृदय दहल उठता है। हिन्दू धर्म-ग्रन्थों में वर्णित नरक की भीषणता भी जेल-यातनाओं के सामने मात है। मनुष्य में पशुता का आभास जितना हमें जेल में मिलता है, उतना शायद ही कहीं मिले।

आजकल क़ैदियों को तीन श्रेणियों में रक्खा जाता है। कहा ऐसा जाता है कि यह श्रेणी-विभाजन सामयिक स्थिति, शिक्षा आदि के आधार पर किया जाता है। परन्तु इस श्रेणी-विभाजन में जिस मनमानी नीति से काम लिया गया है, उसके परिणाम-स्वरूप अधिकांश राजनैतिक क़ैदी सब से नीची श्रेणी में, अर्थात् 'सी' क्लास में पहुँच गए हैं। इसी श्रेणी में वे लोग भी रक्खे जाते हैं, जो चोरी, गिरहकटी और नैतिक पतन के अन्य अपराधों में सज़ा पाते हैं। राजनैतिक क़ैदी किसी जघन्य कर्म के अपराधी नहीं हैं। उनका यदि कोई अपराध है तो वह है, देश-प्रेम और देश पर मिट मरने की प्रबल भावना। वे सविनय अवज्ञा इसलिए नहीं करते, कि उन्हें जेल की रोटियाँ अच्छी लगती हैं। जेल की यातनाओं से उन्हें कोई प्रेम नहीं है। वे जेल जाते हैं, केवल मुल्क को आज़ाद बनाने के लिए। वे सैनिक हैं और उनके साथ वही व्यवहार होना चाहिए जो युद्ध में विपक्षी दल के बन्दी सैनिकों के साथ होता है। वे मनुष्य हैं, और सिद्धान्त पर मर-मिटने वाले वीर हैं। उनके साथ डाकू और चोरों का सा, गिरहकटों और उचक्कों-सा व्यवहार करना, अत्याचार है। फिर भी आजकल जेलों में राजनैतिक क़ैदियों के साथ विशेष रूप से 'सी' क्लास के राजनैतिक क़ैदियों के साथ अमानुषिकता-पूर्ण व्यवहार होता है। उन्हें ऐसा भोजन दिया जाता है, जिसे खाकर अपना स्वास्थ्य ठीक बनाए रखना असम्भव है। जेल की रोटियाँ और तेल पड़ी हुई दाल ख़राब ही नहीं होती, किन्तु अकसर स्वस्थ मनुष्य के खाने के लिए काफ़ी भी नहीं हुआ करती। वहाँ की कटिया (तरकारी) तो अभक्ष्य है। यही खाना चोर-बदमाशों को दिया जाता है, और यही राजनैतिक क़ैदियों को। यूरोपियन क़ैदियों को खाना अच्छा दिया जाता है, चाहे वे किसी भी अपराध में दण्डित क्यों न हों! यूरोपियन क़ैदियों को जो सुविधाएँ दी जाती हैं, वे उन्हें स्वस्थ बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। ग़ुलामों के स्वास्थ्य की किसे चिन्ता! जिस प्रकार का भोजन, जिस प्रकार के वस्त्र राजनैतिक बन्दियों को दिए जाते हैं, वे सदैव उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। जब राजनैतिक क़ैदी जेल से छूट कर आते हैं, उस समय वे प्रायः इतने अस्वस्थ होते हैं कि महीनों तक उनसे किसी प्रकार का कोई काम नहीं हो सकता। वज़न में तो अधिकांश घट जाते हैं। सरकार को, जेल के अधिकारियों को इस बात का ख़याल क्यों हो कि जो लोग मुल्क रह कर, उसके तख़्ते को उलट देने का प्रयत्न करते रहे थे, उनके साथ जेल में मानवोचित व्यवहार हो? जेलों में उनकी आत्मा को क्यों न कुचल दिया जाय, उनके शरीर को क्यों न बेकार कर दिया जाय?

चाहे जितने अत्याचार जेलों में हों, चाहे जितना दमन जेलों के बाहर हो, आग बुझाए बुझ नहीं सकती। स्वतन्त्रता की आग ऐसी-वैसी चीज़ नहीं है। ज़ोरो-ज़ुल्म से तो उसकी लपटें बढ़ती ही जायँगी। चाहे सैकड़ों नहीं, हज़ारों सिर लाठियों से फूटें, चाहे हज़ारों व्यक्ति गोलियों से भून दिए जायँ, हमें अपने उद्देश्य-प्राप्ति से कोई रोक न सकेगा। जेलों में घनघोर दमन और अनाचार से स्वतन्त्रता की भावना को कुचलने की, हृदय में लगी हुई आग को बुझाने की चाहे जितनी चेष्टा की जाय, आज़ादी की लड़ाई बढ़ती ही जायगी। लाखों स्वाहा हो जायँगे, हमें अपना सर्वस्व बलिवेदी पर चढ़ा देना पड़ेगा, लेकिन आगे बढ़ाया हुआ क़दम पीछे नहीं हटाया जायगा। हमने जिस स्वतन्त्रता के विशाल यज्ञ का इतना महान अनुष्ठान किया है वह पूरा होकर ही रहेगा।

—'प्रताप' (हिन्दी)

* * *

म्युनिसिपैलटी की धींगाधाँगी

लाहौर से एक असाधारण घटना के विषय में सुनने में आया है। यदि यह सत्य हो, तो वहाँ के म्युनिसिपल-शासन पर यह एक बड़ा भारी धब्बा है। ऐसा जान पड़ता है कि एक नया मकान एक्ज़िक्यूटिव इञ्जीनियर के निरीक्षण में, मकान-मालिक या मकान में रहने वाले किसी को भी बिना सूचना दिए और आपत्ति पेश किए जाने पर भी, तोड़ डाला गया। यह अनुचित कार्य अमानुषिकता की निशानी है, क्योंकि जिस समय वह मकान तोड़ा गया, उसमें दो असहाय महिलाएँ थीं, जिनके पति कहीं बाहर गए हुए थे। कहा जाता है कि जब इञ्जीनियर साहब से मकान तोड़ने का कारण पूछा गया, तो उन्होंने इस विषय पर बातें करना अस्वीकार किया! सब से अधिक आश्चर्यपूर्ण अभिनय अन्त के लिए छोड़ रक्खा गया था। जब मकान तोड़ने का काम समाप्त हो गया, और वहाँ के रहने वाले निराश्रय छोड़ दिए गए, तब मकान के मालिक को यह सूखा उत्तर दिया गया, कि मकान के बनाने में अनेक ग़लतियाँ होने के कारण, वह तोड़ डाला गया है। फिर मानो उसकी दिल्लगी करने के लिए अधिकारियों ने उसे उदारतापूर्वक यह आज्ञा प्रदान की कि वह फिर से वहाँ मकान बनवा सकता है। इस विषय की पूरी जाँच, और इसके लिए जो लोग उत्तरदायी हैं, उन्हें सज़ा दिया जाना एक बार ही अनिवार्य है।

—'पॉयनियर' (अङ्गरेज़ी)

* * *

"समय बीत गया"

सर अलबियन बनर्जी ने लन्दन में जो चेतावनी दी है, उससे करुणाजनक सत्यता और निरर्थक दुःख का आभास मिलता है। उनसे कुछ ही दूरी पर ख़ुशियाँ मनाने वाले कुछ राजनीतिज्ञ और कुछ अदूरदर्शी और चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले शासनाधिकारी सूखी बातों द्वारा भारतीय समस्या को हल करना चाहते हैं। वहाँ की हँसी की आवाज़ में, और टेबुल के थपथपाने के शब्दों में, सर अलबियन की छोटी सी आवाज़ लुप्त हो जायगी। 'समय बीत गया' की चेतावनी गूँज उठती है, और वायु-मण्डल में लुप्त हो जाती है। उच्च आसन पर बैठा हुआ शैतान, समय की ओर तीव्र-दृष्टि से देख रहा है, और अपनी बही में लिखे हुए राजनैतिक औचित्य का राग अलाप रहा है और कूटनीति-विषयक नम्रता की चालें दिखा रहा है! किन्तु बहुत दूर पूर्व के आकाश के नीचे, भारतीय क्षेत्र में, एक जाति की इच्छा और उसकी मुसीबतें, उसके भाग्य को साँचे में ढाल रही हैं! किस जाति ने बिना कष्ट और अपमान सहे अपने ध्येय को प्राप्त किया है?

सर अलबियन बनर्जी लन्दन में भारतीय अवस्था पर बोलते हुए कहते हैं—"ब्रिटिश-जाति सर्वदा समय के पीछे रहती है।" चार वर्ष पहले कॉङ्ग्रेस ने 'गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स' चाहा था, किन्तु उस समय उसकी माँगें पूरी नहीं की गईं। फिर गत वर्ष उसने डोमिनियन स्टेटस माँगा, किन्तु इस बार भी सरकार चुप्पी साध गई। अब इस समय, जब कि अवस्था गम्भीर है गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स एक फ़ेडरल-शासन-विधान बना रही है, किन्तु इससे भारतीय कभी सन्तुष्ट न होंगे। यह एक सुन्दर महल बनाने के समान है, जब कि उसके निवासियों में गोलमाल मचा हुआ है। औपनिवेशिक स्वराज्य ही उसका एक मात्र उपचार है।

—'लिबर्टी' (अङ्गरेज़ी)

* * *

गोलमेज़ परिषद् का ढोंग

इस गोलमेज़ परिषद् को देश के सच्चे शुभचिन्तकों ने बच्चों के खेल से अधिक कभी महत्व नहीं दिया और सच भी यही है, कि इस परिषद् से असफलता के अतिरिक्त, किसी बात की आशा नहीं की जा सकती। किन्तु हमारे दुर्भाग्य से आज इस अभागे देश में कुछ लोगों का ऐसा गिरोह भी वर्तमान है, जिसकी दृष्टि इस माया-मरीचिका रूपी परिषद् पर बुरी तरह लग रही है और वे इस परिषद् से अनेक प्रकार की आशाएँ रक्खे हुए हैं। ऐसे लोगों की मोह-निद्रा को भङ्ग करने के अभिप्राय से हम उनका ध्यान लन्दन के सुप्रसिद्ध पत्र "डेली टेलिग्राफ़" में प्रकाशित एक लेख की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। इस लेख के लेखक हैं मिस्टर ऐशमीड बार्टलट। आप अपने इस लेख में लिखते हैं:—

बम्बई में जवाहर-दिवस का एक दृश्य

अन्य स्थानों की अपेक्षा बम्बई में जवाहर-दिवस विशेष समारोह एवं उत्साह के साथ मनाया गया था। जगह-जगह जुलूस निकले और विराट सभाएँ हुईं। कई जगह पुलिस द्वारा लाठियों की वर्षा की गई और सैकड़ों गिरफ़्तारियाँ हुई थीं। इस चित्र में आप चौपाटी जाने वाला जनता का विराट जुलूस देखेंगे। पीछे जनता उमड़ रही है, आगे पुलिस के लठबन्द सिपाही घेरा डाल कर उनको रोक रहे हैं। चित्र के ऊपर वाले घेरे में आप सशस्त्र सिपाहियों के उन जत्थों को देखेंगे, जो इस सभा को भङ्ग करने के उद्देश्य से मोटर-लारियों में भर-भर कर लाए गए थे।

"देशी राज्यों के प्रतिनिधि वास्तविकता से बहुत परे हैं—बेपरवाह हैं। मुसलमानों एवं अन्य फ़िरक़ेबन्द प्रतिनिधियों का भी विचित्र रुख़ है। मॉडरेट-प्रतिनिधियों का कोई स्थान ही नहीं है। संसार बड़ी दिलचस्पी के साथ इन "भारतीय प्रतिनिधियों" के आपस के सिर-फुड़ौअल का तमाशा देखेगा कि किस तरह वे आपस की "तू-तू मैं-मैं" में अपना मज़ाक़ उड़वाते हैं। इस बीच में भारतीय सरकार को देश के राजनैतिक आन्दोलन को कुचलने के लिए काफ़ी समय मिल जायगा और नर्म-दल के लीडरों को, जो इस कॉन्फ़्रेन्स-रूपी जेल में बन्द होंगे, भारतीय सरकार पर अपना नैतिक प्रभाव डालने का मौक़ा ही न मिलेगा।"

इन शब्दों को पढ़ने के बाद हमारी समझ में नहीं आता कि क्या कोई ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति हो सकता है, जिसको इस परिषद के प्रति घृणा उत्पन्न न हो जाय, और जो महात्मा गाँधी की इस भविष्यवाणी का समर्थक न हो कि यह गोलमेज़-परिषद एक ढोंग मात्र है।

—'रियासत' (उर्दू)

* * *

"सरकार सलाम"

भारत में जेल के अधिकारियों ने जिन असभ्य नियमों का आविष्कार किया है, उनमें सब से अधिक हास्यप्रद वह नियम है जिसके अनुसार एक क़ैदी किसी अधिकारी के आने पर, सीधा खड़े होकर 'सरकार सलाम' कहने को बाध्य किया जाता है! अधिकारियों को इस नियम के पालन कराने में एक विशेष आनन्द प्राप्त होता है। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं, जिनसे पता चलता है कि इस नियम के पालन न करने पर कठोर दण्ड दिए जाते हैं।

पाठकों को स्मरण होगा कि बक्सा फ़ोर्ट में जहाँ कुछ राजनैतिक क़ैदी रक्खे गए हैं—उनके लाख विरोध करने पर भी यह नियम जारी किया गया है। हाल ही में जब आसाम के सिविल अस्पतालों के इन्सपेक्टर-जनरल धुबरी जेल के निरीक्षण के लिए गए हुए थे, वहाँ के राजनैतिक क़ैदियों ने 'सरकार सलाम' कहने से इनकार किया, और ऐसा समझा जाता है कि इसके लिए अनेकों को कड़ी सज़ाएँ दी गईं।

इससे अधिक अमानुषिक अत्याचार और क्या हो सकता है? इसमें सन्देह नहीं कि जेल में नियम की पाबन्दी आवश्यक है। किन्तु क्या यह आवश्यक है कि शासन के नाम पर क़ैदियों पर बिना मतलब का अमानुषिक अत्याचार किया जाय? स्वतन्त्र देशों में अपराधियों को क़ैद की सज़ा इसलिए दी जाती है, कि उनकी नैतिक उन्नति हो; किन्तु किसी के आत्म-सम्मान पर धक्का पहुँचा कर उसकी नैतिक उन्नति नहीं की जा सकती! भारत में इस विषय पर और ही प्रकार के विचार फैले हुए जान पड़ते हैं। यहाँ के जेल के नियमों का यह एक मात्र उद्देश्य जान पड़ता है कि अधिकारियों को देखते ही क़ैदी मारे डर के अधमरे हो जायँ, और जो कुछ भी आत्म-सम्मान उनमें है, वह भी जाता रहे।

जेल के अधिकारी अपने सामने इतने मनुष्यों को, जिनमें अनेक उनसे भी अधिक शिक्षित होते हैं, गूँगों के समान खड़ा देख कर विशेष आनन्द का अनुभव करते हैं। किन्तु इससे यह सिद्ध होता है कि वे मानस-शास्त्र से सर्वथा अनभिज्ञ हैं और इस उत्तरदायित्वपूर्ण अधिकार के अयोग्य हैं। यह एक गन्दा नियम है, जिसका अन्त होना आवश्यक है और जितनी ही जल्दी इस विषय में की जाय उतना ही अच्छा है।

—'लिबर्टी' (अङ्गरेज़ी)

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

४ दिसम्बर, सन् १९३०

क्या कीजिएगा हाले-दिले-ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए अख़बार देख कर !!

गाँधी जी को यूरोपियनों की बधाई

लन्दन की गाँधी-सोसाइटी ने महात्मा जी की वर्ष गाँठ के अवसर पर यरवदा जेल में निम्न तार भेजा है:—

गाँधी, यरवदा जेल
पूना, इण्डिया

वर्ष गाँठ की बधाई, यूरोपियनों, अमेरिकनों और भारतीय मित्रों की पूर्ण सहानुभूति और सहायता।

रोमाँ रोलाँ
पॉल बर्नकफ़
श्रीमती फ़ीरोज़पुर (?) ब्रिटन
डेवेरे एलन (सम्पादक 'वर्ल्ड टुमारो' न्यूयार्क)
लॉरेन्स हाउसमैन
एच० डब्ल्यू० नेविन्सन
जिला और फ़ेनर ब्रॉकवे, एम० पी०
रनहम ब्राउन
जी० एस० दारा (सम्पादक 'यूनाइटेड इण्डिया'—लन्दन)
अब्दुल मजीद (इमाम वर्किंग मस्जिद)
डेविड इरलकर
रेगीनॉल्ड, रेनॉल्ड्स
जॉन पैटन (सम्पादक 'न्यू लीडर' लन्दन)
रेवरेण्ड वाल्टर वाल्श
श्रीमती फ़रुक़ी
श्रीमती बैरम जी (नागपुर)
हिल्दा ब्राउनिङ्ग
जी० एल० पुरी (ट्रिनिटी कॉलेज, केम्ब्रिज)

पिता ने पुत्र सात रुपए में बेचा

रङ्गपुर ज़िले का एक समाचार है कि कमालपारा यूनियन के अन्तर्गत सिमुलबारी नामक गाँव के रहने वाले कमलुल्ला शेख़ नामक एक व्यक्ति ने भूख की पीड़ा न सह सकने के कारण, अपने एक लड़के को केवल ७) रुपए पर बेंच डाला है ! कहा जाता है कि वहाँ के लोग अन्न के अभाव से मर रहे हैं और यदि उनकी सहायता न की गई, तो भयङ्कर अनर्थ हो जायगा।

श्री० मनीलाल कोठारी को देशनिकाला

मि० मनीलाल कोठारी जो निश्चित समय के बीत जाने पर भी अहमदाबाद के ज़िला मैजिस्ट्रेट की आज्ञानुसार साबरमती जेल में रक्खे गए थे, २७वीं नवम्बर को बम्बई-सरकार की आज्ञानुसार वाधवाँ पहुँचाए गए। वाधवाँ पहुँचने पर उन्हें ट्रेन ही पर गवर्नर जनरल के एजेण्ट मि० एस्केले का यह ऑर्डर मिला कि वे फ़ौरन वाधवाँ के सिविल स्टेशन से हट जायँ, और साहब बहादुर के लिखे हुए आज्ञापत्र के बिना वहाँ न आवें। इस आज्ञापत्र के नीचे पोलिटिकल एजेण्ट मि० हॉपकिन्सन की यह आज्ञा थी, कि उक्त आज्ञापत्र के अनुसार मि० कोठारी ३ मिनट के अन्दर वाधवाँ का सिविल स्टेशन छोड़ दें। मि० कोठारी उस समय वाधवाँ सिविल स्टेशन की सीमा से बाहर थे।

* * *

बात

[श्री० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा कौशिक]

लाला गोपीमल अपनी दूकान में हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। दूकान के आगे दोनों ओर दो कॉङ्ग्रेस-स्वयंसेवक हाथ में झण्डा लिए खड़े थे। इसी समय एक हिन्दू दूकान पर आने लगा। दोनों स्वयं-सेवक रास्ता रोक कर खड़े हो गए और हाथ जोड़ कर बोले—"भाई जी, इस दूकान में विलायती कपड़ा बिकता है, यहाँ से कुछ मत ख़रीदिए।" वह व्यक्ति चुपचाप लौट गया।

लाला गोपीमल एक दीर्घ-निश्वास छोड़ कर अपने मुनीम से बोले—कोई ग्रानदार ग्राहक आता ही नहीं, सब मुर्दे आते हैं। नहीं तो इन कॉङ्ग्रेस वालों को मज़ा दिखा दूँ।

मुनीम जी बोले—क्या करें लाला, झगड़े से डरते हैं और बदनामी का भी ख़याल है।

"झगड़े से क्यों डरते हैं। कॉङ्ग्रेस वाले झगड़ा कर ही नहीं सकते, महात्मा गाँधी ने झगड़ा करने के लिए मना कर रक्खा है।"

"हाँ यह ठीक है, परन्तु फिर भी कहा-सुनी तो हो ही जाती है।"

लाला चुप हो गए। कुछ क्षणों पश्चात स्वयंसेवकों से बोले—भाई साहब आप लोग धूप में क्यों दिक़ होते हो। अपने घर जाओ। हम किसी के हाथ विलायती कपड़ा नहीं बेचेंगे।

एक स्वयंसेवक बोला—जब यह बात है तो सील क्यों नहीं करा लेते?

"जब हम ज़बान से कहते हैं, तो सील कराने की क्या ज़रूरत है?"

"ज़बान का कहा नहीं माना जाता।"—स्वयंसेवक ने कहा।

"नहीं माना जाता तो न माना जाय, सील तो हम नहीं करावेंगे।"

"तो धरना भी रहेगा।"—दूसरा स्वयंसेवक बोला।

"अच्छी बात है रहे धरना, हमें भी देखना है कब तक धरना रहता है।"

"आप सोचते होंगे कि हम लोग चार-छः दिन में ऊब कर धरना बन्द कर देंगे, सो यह होने वाला नहीं है। धरना बराबर रहेगा।"

"हाँ रहेगा क्यों नहीं। हमें क्या, हम तो आराम से दूकान पर बैठे हैं, तकलीफ़ तो तुम्हीं लोगों को है, धूप में खड़े हो।"

"हमारी तकलीफ़ का आपको ख़याल है?"

"है क्यों नहीं, हमें तो दुख होता है।"

"दुख होता है तो सील क्यों नहीं करा लेते?"

"सो तो भाई साहब होगा नहीं। आप लोग अपने आप तकलीफ़ उठाते हो—हम क्या करें।"

"आपकी बदौलत यह भी सही। हमारी तक-लीफ़ का पाप आप पर पड़ेगा।"—स्वयंसेवक ने मुस्कुरा कर कहा।

"हम पर क्यों पड़ेगा, हमने तो आपको यहाँ खड़ा किया नहीं। जिसने खड़ा किया है, उस पर पड़ेगा।"

"परन्तु कारण तो आप ही हैं।"

"ठीक बात है! अन्धेर करो तुम और पाप हम पर पड़े।"

"अन्धेर काहे का?"

"कहते हो कपड़ा न बेचो। लाखों रुपए का माल भरा पड़ा है, इस ससुरे को क्या आग लगा दें। हमारे बाल-बच्चे भूखों मरेंगे तो कौन खाने को देगा। तुम लोगों का क्या बिगड़ेगा, तुम लोग तो चन्दा माँग खाओगे। हमसे तो यह नहीं होगा।"

"तो फिर विलायती मँगाया काहे को, जानते नहीं थे कि विलायती का बॉयकॉट होने वाला है।"

"कुछ पहले हुआ था और कुछ अब होगा।"

"तभी के तो आप परचे हुए हैं, परन्तु अबकी पता चलेगा।"

"पता क्या चलेगा—पता चलेगा। नहीं बिकेगा तो न बिके। इसके न बिकने से हमारी रोटियाँ नहीं बन्द हो जायँगी।"

इतना सुनते ही दोनों स्वयंसेवक हँस पड़े। एक बोला—अभी तो कहते थे कि बाल-बच्चे भूखों मर जायँगे और अब ऐसा कहते हैं। भई वाह!

"तो फिर क्या करें, तुम लोग न हारी मानते हो न जीती।"

"हारी तो हम लोग कभी मानते ही नहीं। हारी तो आप ही को माननी पड़ेगी।"

"हाँ सो तो मानी है। गोपीमल हारी मानने वाला नहीं है। यह जाने रहना।"

"अच्छी बात है। देखें कब तक नहीं मानते हो।"

"ख़ूब देखो, मना कौन करता है।"

२

लाला गोपीमल ने अपने मुनीम से कहा—"मुनीम जी, इस तरह तो एक पैसे की बिक्री न होगी।" मुनीम जी बोले—"हाँ, यह तो दिखाई ही पड़ रहा है।"

"तो फिर क्या किया जाय?"

"जब बिकता ही नहीं है, तो सील करा लीजिए।"

"सील! आप भी क्या बातें करते हैं। सील कराना तो अपने पैर में अपने आप कुल्हाड़ी मारना है।"

"आख़िर जब बिक्री न होगी तो क्या कीजिएगा। इससे अच्छा तो यह है कि सील ही करा लीजिए।"

"माल के निकासी की और कोई तरकीब नहीं निकल सकती?"

"और कौन तरकीब निकल सकती है?"

"यही तो सोचने की बात है।"

"एक बात हो सकती है। यदि यहाँ से माल हटा कर कहीं और रख दिया जाय, तो कुछ माल निकल सकता है।"

लाला एक क्षण तक सोचने के पश्चात प्रसन्न-मुख होकर बोले—यह तो तुमने बहुत बढ़िया बात सोची। यहाँ से माल हटा कर किसी और मकान में भेज दिया जाय। और वहाँ से चुपके-चुपके निकाल दिया जाय।

"बस यही एक तरकीब है।"

"यह तरकीब तो बहुत बढ़िया है। परन्तु यहाँ से माल कैसे हटाया जाय?"

"रात में!"

"ठीक बात है। तो बस आज से श्रीगणेश कर दो। आज कौन दिन है?"

"आज तो शनिश्चर वार है।"

"दिन अच्छा नहीं है।"

"हाँ, दिन तो ख़राब है। परन्तु ऐसे में दिन न देखिए, जितनी जल्दी हो सके, यह काम कर डालना चाहिए।"

"यह भी ठीक कहते हो। आजकल कुछ ठीक नहीं है—दम में रङ्गत पलटती है।"

"इसीलिए तो कहता हूँ।"

"अच्छी बात है, तो आज ही से आरम्भ कर दो, राम जी सब भला करेंगे। परन्तु हाँ, यह तो पता लगना चाहिए कि रात में तो स्वयंसेवक नहीं घूमते।"

"मेरी समझ में तो नहीं घूमते।"

"समझ-वमझ की बात झूठी है—पक्का पता लगा लो।"

"यह तो बहुत सहज में मालूम हो जायगा।"

"तो मालूम कर लो।"

यह वार्त्तालाप करने के पश्चात दोनों मौन हो गए। थोड़ी देर में मुनीम जी ने एक स्वयंसेवक से पूछा—तुम लोगों को बड़ा कठिन काम सौंपा गया है। दिन भर धरना दो और रात भर पहरा।

"पहरा! पहरा किस बात का? पहरा देना पुलिस का काम है, हमारा काम नहीं।"

"अच्छा! रात में आप लोग नहीं घूमते! मेरा ख़याल तो यह था कि रात में भी आप लोग घूमते हैं।"

"अभी तो घूमते नहीं, आगे जैसी स्थिति होगी वैसा किया जावेगा।"

मुनीम जी ने मुस्कुरा कर लाला की ओर देखा। लाला भी मुस्कराए।

लाला जी निश्चिन्तता की दीर्घ-निश्वास छोड़ कर बोले—आप लोग देश के लिए बड़ा कष्ट उठा रहे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं।

"परन्तु फिर भी तो लोग नहीं समझते।"

"उन्हें समझना चाहिए।"

"कोई नहीं समझता। जब आप ही नहीं समझते तो और कौन समझेगा।"

"कौन मैं? मैं समझता नहीं हूँ तो कह कैसे रहा हूँ।"

"समझते हो तो सील क्यों नहीं करा लेते?"

"सील करा लेंगे—जल्दी कौन है, बेचना तो हमें है नहीं। जब बेचना नहीं है, तो सील कराना और न कराना सब बराबर है।"

"आप सील करा लें तो हमें छुट्टी मिल जाय।"

लाला जी हँसे। हँसते हुए बोले—जब देश-सेवा करने पर कमर बाँधी है, तब छुट्टी की चाह क्यों करते हो?

"छुट्टी से हमारा मतलब है कि यहाँ से छुट्टी मिल जाय, काम तो कुछ न कुछ करेंगे ही।"

"अरे साहब आपके यहाँ खड़े रहने से ज़रा रौनक़ रहती है—बातचीत करने को मिलती है। आपको कोई कष्ट हो तो आप हमसे कहिए। पानी-वानी तो नहीं चाहिए।"

"जी नहीं।"

"अच्छा तो पान मँगाऊँ। अरे भई महाराज, चार पैसे के पान तो लगवा लाओ।"

"रहने दीजिए, कोई आवश्यकता नहीं।"—एक स्वयंसेवक ने कहा।

"अजी वाह, रहने क्यों दें। कुछ और ख़याल मत

कीजिएगा, मैं पान खिला कर आपको फुसलाना नहीं चाहता।"

स्वयंसेवक हँस कर बोले—आप हमें फुसला सकते ही नहीं।

३

रात के बारह बजे के पश्चात लाला गोपीमल की दूकान के सामने एक ठेला खड़ा था और लाला अपने मुनीम सहित कपड़े की गाँठें दूकान से निकलवा कर ठेले पर लदवा रहे थे। इसी समय एक कॉन्स्टेबिल गश्त करता हुआ उस ओर आया। उसने देख कर लाला से पूछा—"क्यों लाला साहब, यह क्या हो रहा है?" लाला साहब दाँत निकाल कर बोले—"क्या करें, धरने के मारे यह सब करना पड़ रहा है; भई किसी से कहना नहीं।"

"मुझे क्या ग़रज़ पड़ी है लाला जी! मैं सरकारी मुलाज़िम हूँ, कॉङ्ग्रेस का नौकर थोड़े ही हूँ।"

"कॉङ्ग्रेस किसी का नफ़ा-नुक़सान तो देखती नहीं, जो मन में आता है, करती है।"

"यही बात है। क्या करें, सरकारी हुक्म नहीं मिलता, नहीं तो इन कॉङ्ग्रेस वालों को हम लोग चुटकी बजाते ठीक कर दें।"

"कॉङ्ग्रेस और जो कुछ करती है सो ठीक करती है, पर यह कपड़े का बॉयकॉट बुरा है।"

"और क्या ठीक करती है, जो कुछ करती है सब बेठीक करती है।"

"ऐसा तो नहीं कहना चाहिए। कॉङ्ग्रेस जो कुछ कर रही है, देश के लिए कर रही है।"

"देश के लिए क्या कर रही है?"

"यही स्वराज्य दिलाने की चेष्टा कर रही है।

"तो ऐसे क्या स्वराज्य मिल जायगा।"

"यह तो नहीं कहा जा सकता कि स्वराज्य मिलेगा या नहीं। देश के लोग साथ दे जायँ तो मिल भी सकता है।"

"देश के लोग जैसा साथ दे रहे हैं सो तो आप भी देख ही रहे हैं।"

"साथ दे क्यों नहीं रहे हैं। हज़ारों आदमी जेल जा रहे हैं—यह साथ देना नहीं तो और क्या है?"

"इससे क्या होता है?"

"होना न होना राम जानें। हम तो जो हो रहा है उसको देखते हुए कह रहे हैं।"

कॉन्स्टेबिल मुस्कुरा कर बोला—तो मैं भी जो हो रहा है उसे देख कर कहता हूँ।"

"तुम क्या बात देख कर कहते हो?"

कॉन्स्टेबिल ठेले की ओर इशारा करके बोला—यही जो हो रहा है।

लाला किञ्चित उत्तेजित होकर बोले—क्या हो रहा है?

"यह देश-सेवा हो रही है, कॉङ्ग्रेस को मदद दी जा रही है। इन्हीं बातों से तो स्वराज्य मिलेगा।"

लाला जी कुछ क्षणों के लिए अवाक् हो गए। परन्तु फिर सँभल कर बोले—यह बात दूसरी है भाई! इससे तो हज़ारों का नुक़सान होता है, इतना नुक़सान कैसे सहा जा सकता है।"

"तो बस ऐसा ही समझ लीजिए। किसी को जान प्यारी है, किसी को माल प्यारा है। सब अपनी-अपनी बचाने की घात में लगे हैं। दूसरों के ऊपर पड़ती है तो उसे देश-सेवा कह कर ख़ुश होते हैं। परन्तु जब अपने ऊपर आ पड़ती है तो दुम दबा कर भागते हैं। इस तरह कहीं स्वराज्य मिल सकता है। अच्छा तो जल्दी से माल निकाल ले जाइए, ऐसा न हो कि कॉङ्ग्रेस वालों को पता लग जाय।"

इतना कह कर कॉन्स्टेबिल हँसता हुआ चला गया।

लाला जी कुछ क्षण तक सन्नाटे में खड़े रहे। इसके पश्चात बोले—मुनीम जी, यह सिपाही ससुरा तो बड़ी गहरी चोट कर गया।

"अजी बकने दीजिए, इन बातों में क्या रक्खा है।"

"नहीं मुनीम जी, बड़ी भारी बात कह गया, इस पर ज़रा ग़ौर करना चाहिए।"

"घर जाकर ग़ौर कीजिएगा। आपने उससे बातें ही ऐसी कीं। लगे कॉङ्ग्रेस की तारीफ़ करने। आपको तारीफ़ करने की क्या आवश्यकता पड़ी थी—और वह भी सरकारी आदमी से—जो कॉङ्ग्रेस का विरोधी है?"

"तो क्या मैं उसके सामने कॉङ्ग्रेस की बुराई करता?"

फ़रियादे "बिस्मिल"

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

अब न क़ीमा है, अब न बोटी है,
 दाल पतली है, ख़ुश्क रोटी है!
हर तरह का, उन्हें है इतमीनान,
 अपनी क़िस्मत ही सिर्फ़ खोटी है!
नाम को बन गया, कोई पण्डित—
 न तिलक है, न लम्बी चोटी है!
क्या करें हम बड़ी-बड़ी बातें,
 जानते हैं कि उम्र छोटी है!
हाले-दिल, उनसे क्या कहूँ "बिस्मिल"
 कहते हैं अक़्ल तेरी खोटी है!!

* * *

हम कहाँ दिल से आह करते हैं,
 ज़ब्ते-ग़म का निबाह करते हैं!
बोलने का नहीं किसी को हुकुम,
 दिल में सब, आह-आह करते हैं!
नहीं जँचती निगाह में दुनिया,
 हम जो इस पर निगाह करते हैं!
शायरी मेरी कुछ नहीं "बिस्मिल"
 लोग क्यों, वाह-वाह करते हैं?

"बेशक!"

"भई मैंने तो जो सच्ची बात थी वह कह दी।"

"ऐसी सचाई से काम नहीं चलता। ऐसी सचाई करनी है तो........।"

"हाँ-हाँ, क्या कहते थे, कहो न, रुक क्यों गए?"

"कुछ नहीं, अब आप इन बातों का ध्यान छोड़ दीजिए।"

"आप जो कहना चाहते थे वह मैं समझ गया। अच्छा सब गाँठें ठेले से उतरवा कर दूकान में रखवा दीजिए।"

"क्यों-क्यों?"—मुनीम जी ने घबरा कर पूछा।

"बस ऐसी ही बात है।"

"यह आप क्या कर रहे हैं?"

"जो कुछ कर रहा हूँ, ठीक कर रहा हूँ।"

"आख़िर आप नाराज़ किस बात पर हो गए? मैंने तो कोई ऐसी बात कही नहीं?"

"आप क्या, मैं और किसी के भी कहने की परवा न करता। परन्तु एक सरकारी आदमी ऐसा कह गया। यह बहुत बड़ी बात है मुनीम जी।"

मुनीम जी ने मन में सोचा—"बनिया पागल हो गया है।" ऊपर से बोले—"आप उसकी बात को इतना महत्व न जाने क्यों दे रहे हैं।"

"देना चाहिए मुनीम जी, जब कॉङ्ग्रेस का विरोधी, कॉङ्ग्रेस का शत्रु, सरकारी नौकर तक इस बात को बुरा समझता है, इसको देख कर हँसता है, तो बस हद हो चुकी। वास्तव में जो बात बुरी है उसे अपने-पराए सब बुरा ही समझते हैं—ऊपर से चाहे जो कुछ कहें। अभी आप भी यही कहते-कहते रुक गए थे।"

"मेरा मतलब वह नहीं था, जो आप समझते हैं।"—मुनीम जी दाँत निकाल कर बोले।

"आपका मतलब हो भी तो आपके कहने का तो मैं बुरा मानता भी नहीं। अपने भाई चाहे हँसे, चाहे बुरा कहें, मुझे इस बात की ज़रा भी परवा नहीं है; परन्तु हमारे विरोधी हम पर हँसें, हमारा मज़ाक़ उड़ावें, यह कम से कम मुझसे तो सहन नहीं हो सकता।

मुनीम जी ने मन में सोचा—"सचमुच यह बनिया सिड़ी हो गया है।" यह सोच कर उन्होंने ठेले से गाँठें उतरवा कर दूकान में रखवाना आरम्भ किया।

लाला जी बोले—सनीचर का दिन था न, मैं तो जानता ही था।

* * *

दूसरे दिन लाला गोपीमल ने स्वयं कॉङ्ग्रेस से प्रार्थना करके अपने समस्त विलायती माल पर सील करवा ली।

लाला के मित्रों ने पूछा—लाला, यह क्या काया-पलट हो गई?

लाला जी बोले—समय की बात है भाई, बात ही तो है, लग गई।

"किसकी बात लग गई?"

"अब यह क्या बतावें।"

"कुछ तो बताओ।"

"अजी बस जाने भी दो, उस बात से कोई फ़ायदा नहीं।"

इस घटना के तीसरे दिन वही पहरेवाला कॉन्स्टेबिल उधर से निकला। लाला जी ने उसे पुकारा—अजी ख़ाँ साहब, ज़रा सुनिए!

कॉन्स्टेबिल आया। लाला ने उससे कहा—आज मैंने सब माल पर सील-मुहर करा ली।

कॉन्स्टेबिल मुस्कुरा कर बोला—अच्छा-अच्छा तो सब निकलवा ही दिया होगा।

"एक चिट भी नहीं निकलवाई।"

"लेकिन उस दिन तो रात में......।"

"वह माल फिर मैं नहीं ले गया, दुकान में ही रखवा दिया।"

"क्यों?"

"आपकी बात पर! एक बात का ध्यान रखिएगा। यदि आप सरकार के ख़ैरख़्वाह नौकर हैं और कॉङ्ग्रेस के सच्चे विरोधी हैं, तो आयन्दा ऐसी बातचीत किसी के सामने मत कीजिएगा। मेरी यह बात गाँठ में बाँध लीजिए। अरे भई मुनीम जी, ख़ाँ साहब के लिए पान तो मँगवाओ। हाँ ख़ाँ साहब, क्या राय है—स्वराज्य मिलेगा या नहीं?"

ख़ाँ साहब का चेहरा उतर गया।

* * *

हंगरी का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

मध्य यूरोप में जर्मनी के निकट 'ऑस्ट्रिया-हङ्गरी' नाम का एक छोटा सा, किन्तु सम्मिलित देश है। इसके उत्तर में सैक्सन—प्रशिया और पोलैण्ड, पूर्व में रूस, दक्षिण में रोमानिया, सरविया, एड्रियाटिक समुद्र और इटली, तथा पश्चिम में बवेरिया और स्विटज़रलैण्ड हैं। डेन्यूब, ऐल्ब और नीस्टर इस देश की बड़ी नदियाँ हैं। यह सम्मिलित देश शासन की सुविधा के लिए अट्ठारह बड़े भागों में बाँटा गया है। यहाँ खेती—विशेषतः गेहूँ की पैदावार अच्छी होती है। काँच की चीज़ें भी बहुतायत से बनती हैं। इसके सिवा अन्य प्रकार की कारीगरी भी होती है। इन देशों के निवासी बड़े परिश्रमी, स्वावलम्बी और बलवान होते हैं। वीएना इसकी राजधानी है। यहाँ रुई, रेशम और चीनी का व्यापार होता है। यह सम्मिलित देश एक स्वतन्त्र नरेश के शासनाधीन है।

सोलहवीं सदी के मध्य भाग तक ऑस्ट्रिया और हङ्गरी दो स्वतन्त्र देश थे, इसी समय दुर्भाग्यवश हङ्गरी को अपने पड़ोसी ऑस्ट्रिया की स्वाधीनता स्वीकार करनी पड़ी। पहले यह अधीनता-पाश अपेक्षाकृत शिथिल था, परन्तु क्रमशः दृढ़ होने लगा। कुछ दिनों के बाद अवसर पाकर ऑस्ट्रिया ने हङ्गरी को अपने शिकञ्जे में अच्छी तरह कस लिया। जिस समय ऑस्ट्रिया हङ्गरी को आत्मसात करने की तदबीर सोच रहा था, ठीक उसी समय उसे हङ्गरियनों के एक ऐसे गुप्त दल का पता लगा, जो अपनी मातृभूमि को अपने पड़ोसी के प्रेम-पाश से विमुक्त कर डालने की चेष्टा में लगा था। ऑस्ट्रिया ने इस स्वर्ण-सुयोग से लाभ उठाया। विद्रोहियों को गिरफ़्तार करके जेलों में बन्द कर दिया। इसके साथ ही हङ्गरी की राष्ट्रीय सभा भी बन्द कर दी गई और स्पष्ट घोषणा कर दी गई कि हङ्गरी ऑस्ट्रिया के अधीन है। परन्तु हङ्गरी ने इस आज्ञा को स्वीकार न किया। उसने अपनी राष्ट्रीय समिति का पुनः सङ्गठन आरम्भ किया और इस बात की भी घोषणा कर दी कि ऑस्ट्रिया के सम्राट महोदय से उसका कोई नया-पुराना रिश्ता नहीं है और न रहेगा।

यह सुन कर ऑस्ट्रिया-सम्राट सख़्त नाराज़ हुए और अपने सुयोग्य मन्त्रि-मण्डल की सलाह से हङ्गरी की राष्ट्रीय महासभा को कुचल डालने की चेष्टा आरम्भ कर दी। परन्तु सुदीर्घ पाँच वर्षों की अनवरत चेष्टा के बाद भी जब समिति का बाल नहीं बाँका हुआ, तो उन्होंने हङ्गरियन प्रतिनिधियों की एक राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स करने का आयोजन किया।

यह नुसख़ा कुछ मुजर्रब साबित हुआ, देश के अधिकांश 'मॉडरेट' और 'लिबरल' इस कॉन्फ्रेन्स में सम्मिलित हुए। कई शताब्दियों की पराधीनता के कारण उनकी मनोवृत्ति में वैसे ही ग़ुलामी घुस गई थी, जैसी हमारे देश के मॉडरेटों में घुसी हुई है। राष्ट्रीय दल वालों के विरोध करने पर भी ये स्वयम्भू प्रतिनिधि सम्राट की राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स में सम्मिलित हुए। हमारे देश के मॉडरेटों की तरह इनका भी देशात्मबोध नष्ट हो चुका था। राष्ट्रीयता इनसे कोसों दूर थी। ये ऑस्ट्रियन सभ्यता के अनुयायी, ऑस्ट्रियन भाषा के प्रेमी और ऑस्ट्रिया के ग़ुलाम थे। राष्ट्रीय महासभा में हङ्गरियन भाषा का प्रयोग भी इन्हें अच्छा नहीं लगता था।

कॉन्फ्रेन्स हुई। परन्तु राष्ट्रीय दल ने मॉडरेटों के किए हुए समझौते को ठुकरा दिया। इस दल के प्रधान नेता महात्मा लुई कसूथ और महाप्राण फ्रान्सिस डिक ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर दी, कि ऑस्ट्रिया ने हमारा सत्यानाश कर डाला है, हमारी स्वतन्त्र मनोवृत्तियों को कुचल डाला है। अब वह हमें अपनी दया पर निर्भर रखना चाहता है। परन्तु हम भिखमङ्गे नहीं हैं। ईश्वर ने हमें मानव शरीर दिया है, बुद्धि और बल प्रदान किया है। स्वतन्त्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। हम उसे प्राप्त करेंगे या उसे प्राप्त करने की चेष्टा में मर मिटेंगे।

मॉडरेटों ने इस घोषणा की ख़ूब कड़ी आलोचना की और जिस तरह बङ्गाल का 'भगेड़ नेता' विपिन पाल आजकल हमारे पूज्य नेताओं को कोसा करता है; उन्हें पागल तथा अदूरदर्शी तक कह डालने की बेहूदगी कर बैठता है, उसी तरह हङ्गरियन हाँ-हुज़ूरी भी महात्मा कसूथ और डिक की खिल्ली उड़ाने लगे। उन्होंने कहा—इन दोनों नेताओं का दिमाग़ ख़राब हो गया है। ये फूँक कर पहाड़ उड़ाना चाहते हैं, इन्हें अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। ये नहीं जानते कि ऑस्ट्रिया महाशक्तिशाली है। उसके पास महती सेना है; तरह-तरह के प्राण-नाशक हथियारों से उसका विशाल तोपख़ाना भरा पड़ा है। उसके सामने हमारी हस्ती ही क्या है? इसलिए पूज्यपाद सम्राट महोदय दया करके जो कुछ दे रहे हैं, हमें कृतज्ञता के साथ उसे ग्रहण कर लेना चाहिए।

परन्तु कसूथ और डिक आदि राष्ट्रीय विचार के लीडरों ने घृणा के साथ इन बातों को सुना। अपने देशवासियों की इस हीन मनोवृत्ति पर उन्होंने अफ़सोस ज़ाहिर किया। ईश्वर से प्रार्थना की कि वह इन्हें सुबुद्धि और आत्मबल प्रदान करे। साथ ही उन्होंने बड़े ज़ोरदार शब्दों में उन्हें फटकार भी बताई और कहा—ऑस्ट्रिया ने हमें पीस डाला है। हमें अपना ग़ुलाम बना रक्खा है, तब भी तुम्हारी आँखें नहीं खुलतीं। वास्तव में तुम बड़े कायर हो। उफ़! जिस देश के आदमी अत्याचार के विरुद्ध सिर तक नहीं उठा सकते, उस देश की दुर्गति नहीं होगी, तो किसकी होगी? जो जाति चुपचाप अत्याचार सह लेती है, उसका ध्वंस अनिवार्य है!

जड़मति मॉडरेटों पर तो नहीं, परन्तु हङ्गरियन युवकों पर इन बातों का अच्छा प्रभाव पड़ा। वे धीरे-धीरे ऑस्ट्रियन सभ्यता और ऑस्ट्रियन भाषा को छोड़ कर अपनी सभ्यता और भाषा अपनाने लगे। सन् १८३६ ईसवी में हङ्गरी की जातीय समिति ने देश में जातीय शिक्षा के विस्तार का आयोजन आरम्भ किया। देश की तत्कालीन परिस्थिति की आलोचना करके, उसने अच्छी तरह जान लिया था, कि जब तक देश के बच्चों को जातीयता की शिक्षा न दी जायगी, तब तक वे मुक्ति का महत्व नहीं समझेंगे। इस बात को ऑस्ट्रियन सरकार भी अच्छी तरह समझ रही थी, इसलिए उसने राष्ट्रीय समिति के मार्ग में रोड़े अटकाना आरम्भ कर दिया। तरह-तरह के अत्याचार आरम्भ हुए। परन्तु इन अत्याचारों का परिणाम हङ्गरी के लिए अच्छा ही हुआ। ज्यों-ज्यों ऑस्ट्रियनों का अत्याचार बढ़ता गया, त्यों-त्यों हङ्गरियनों में नवजीवन का सञ्चार भी होता गया। महात्मा कसूथ की लेखनी जादू का काम करने लगी। ऑस्ट्रियन सरकार के अत्याचारों का उन्होंने जो ख़ाका खींचा, उसे पढ़ कर जनता विक्षुब्ध हो उठी। इस विषम परिस्थिति को देख कर ऑस्ट्रिया के सम्राट महोदय विचलित हो उठे। उन्होंने कसूथ को बुला कर प्रलोभन में फँसाने की चेष्टा की। उनसे कहा गया कि अगर वे राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेना छोड़ दें तो उन्हें कोई अच्छा ओहदा मिल सकता है। परन्तु देश-भक्त कसूथ ऐसे प्रलोभन में फँसने वाले न थे। उन्होंने घृणा के साथ सम्राट के इस गर्हित प्रस्ताव का प्रत्याख्यान कर दिया। सम्राट की इस चाल का परिणाम भी हङ्गरी के लिए अच्छा ही हुआ। कसूथ के इस त्याग ने उनके महत्व को और भी बढ़ा दिया। सारे हङ्गरी में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ गई। जनता उनके आदेशों को वेद-वाक्य समझने लगी। यह देख कर ऑस्ट्रियन सरकार की घबराहट और भी बढ़ी। उसने कठोर दमन का आश्रय लिया। महात्मा कसूथ और उनके दर्जनों सहकर्मी पकड़ कर जेलों में बन्द कर दिए गए। इसके साथ ही हङ्गरी की राष्ट्रीय सभा भी तोड़ दी गई। देश को अत्याचारियों के पञ्जे से छुड़ाने के लिए कसूथ ने जेल में घोर तपस्या आरम्भ कर दी।

प्रायः दो वर्षों तक तरह-तरह के अत्याचार और उत्पीड़न के बाद ऑस्ट्रिया के सम्राट ने फिर हङ्गरी की जातीय समिति का आह्वान किया। समिति ने सब से पहले एक स्वर से अपने नेताओं की मुक्ति का दावा पेश किया। उत्तर में सम्राट की सरकार की ओर से कहा गया कि घबराने की बात नहीं है, अन्यान्य समस्याओं के हल हो जाने पर कसूथ आदि नेता भी छोड़ दिए जाएँगे।

कसूथ की अनुपस्थिति में डिक समिति के कर्णधार थे। उन्होंने साफ़ शब्दों में कह दिया कि जब तक हमारे नेता छोड़ न दिए जाएँगे, तब तक हम किसी प्रस्ताव पर विचार ही न करेंगे। देश के स्वार्थों की हानि करके हम अपने नेताओं की मुक्ति नहीं चाहते। ऑस्ट्रियन-सरकार की शर्तें स्वीकार करके हम अपने नेताओं को मनोवेदना पहुँचाना नहीं चाहते।

डिक महोदय की इस दृढ़ता का यह परिणाम हुआ कि, सन् १८४० में सभी हङ्गरियन नेता बिना शर्त छोड़ दिए गए। ऑस्ट्रियन-सरकार ने समझा था कि जेल-यातना के बाद अब फिर कोई देश-सेवा के मैदान में नहीं आएगा। परन्तु महात्मा कसूथ ने एक क्षण भी विश्राम नहीं किया! वे जेल से निकलते ही आन्दोलन करने लगे। उनकी लेखनी और वाणी हङ्गरियनों में विद्युत का सञ्चार करने लगी। उन्होंने "पेस्थ-गज़ट" नाम का एक जातीय पत्र निकाला और उसके द्वारा देश के कोने-कोने में अपने मत का प्रचार किया। समस्त देश की जनता महात्मा कसूथ के प्रति देवता की तरह श्रद्धा-भक्ति प्रकट करने लगी। कुछ दिनों के बाद ऑस्ट्रियन सम्राट के सामने यह दावा पेश किया गया कि ऑस्ट्रिया और हङ्गरी में समान टैक्स लगाया जाए और सारे देश में हङ्गरियन भाषा का पठन-पाठन अनिवार्य कर दिया जाय। सम्राट ने टैक्स-सम्बन्धी शर्त तो

मौखिक रूप से स्वीकार कर ली, परन्तु दूसरी शर्त के पालन में अपनी असमर्थता प्रगट की।

मगर कसूथ को इस बात की चिन्ता न थी, कि सम्राट क्या मन्ज़ूर करेंगे और क्या नहीं। वह तो दिलो-जान से मातृभूमि की सेवा में लगे थे। उन्हें केवल अपने अध्यवसाय और बाहुबल का ही भरोसा था। वह जानते थे, कि भीख माँगने से कोई राजनीतिक अधिकार नहीं मिलता। उन्होंने देश की अर्थ-नैतिक उन्नति की ओर ध्यान दिया और एक हङ्गरीय शिल्प और वाणिज्य-समिति की स्थापना की। इस समिति का उद्देश्य था ऑस्ट्रियन शिल्प का वर्जन और हङ्गरियन शिल्प का प्रचार। बहुत थोड़े दिनों में इस समिति ने आशातीत उन्नति कर ली। ऑस्ट्रियन व्यवसायी घबरा कर चिल्ल-पों मचाने लगे। उनकी चिल्लाहट सम्राट के कानों तक पहुँची। उन्होंने फ़ौरन दमन-नीति का अवलम्बन किया। हङ्गरीय शिल्प और वाणिज्य-समिति ग़ैर-क़ानूनी संस्था क़रार दे दी गई। इसके साथ ही एक क़दम आगे बढ़ कर उन्होंने हङ्गरियन ग्राम्य पञ्चायतों को "ग़ैर-क़ानूनी मजमा" क़रार देना आरम्भ कर दिया। उन्होंने इस बात का भी ख़याल न किया कि इस देश में यह पञ्चायत-प्रथा पुरानी है। अन्त में उन्होंने पञ्चायतों के हङ्गरियन सरपञ्चों की जगह ऑस्ट्रियन सरपञ्च नियुक्त करना आरम्भ किया। परन्तु कसूथ इससे ज़रा भी विचलित न हुए: उन्होंने न तो समिति का ही कार्य बन्द किया और न पञ्चायतों को ही बन्द होने दिया। जेल, जुर्माना और कालेपानी की सज़ा की चिन्ता छोड़ कर, हङ्गरियन युवक अपने देश के शिल्प और पञ्चायत की रक्षा में लग गए।

उस समय हङ्गरी के बड़े-बड़े आदमियों की दशा बड़ी ही शोचनीय थी। हमारे देश के अधिकांश राजाओं ज़मींदारों, रईसों, रायबहादुरों और ख़ाँ बहादुरों की तरह वे भी बिना कौड़ी के सरकारी ग़ुलाम बन गए थे। मानो देश-द्रोह, सरकार की ख़ुशामद और राज्याधिकारियों की हाँ में हाँ मिलाना ही इनके जीवन का उद्देश्य था। ख़ानदान, वेष-भूषा और चाल-चलन में ऑस्ट्रियनों की नक़ल करना, अपनी चीज़ों से घृणा करना ही इनकी समझ में बड़प्पन था। कसूथ इनकी अवस्था देख कर सदैव चिन्तित रहते थे। इस समय, जब सरकार की ओर से ऑस्ट्रियन सरपञ्चों की बहाली और हङ्गरियन सरपञ्चों की बरख़्वास्तगी का बाज़ार गरम हुआ तो उन्होंने देश के बड़े-आदमियों में जागृति फैलाना आरम्भ किया। महात्मा कसूथ की अनवरत चेष्टा और अध्यवसाय से शीघ्र ही बहुत से बड़े आदमी अपनी पञ्चायतों की रक्षा के लिए तैयार हो गए और ग्राम-पञ्चायतों के नायक बन कर शिल्प-समिति की रक्षा करने लगे। कसूथ का यह नवीन उत्पात सम्राट के लिए और भी असह्य हो उठा। उन्होंने इन सरपञ्चों को भी पदच्युत करना आरम्भ किया। कसूथ ने उन्हें समझाया कि अगर तुम मनुष्य हो और अपने देश में मनुष्य बन कर रहना चाहते हो, तो ऑस्ट्रियनों की ग़ुलामी छोड़ने की प्रतिज्ञा करो। सम्राट-सरकार के दुर्व्यवहार से वे चिढ़े तो थे ही, कसूथ की अग्निमयी वाणी ने उन्हें और भी उत्तेजित कर दिया। उनमें से बहुतों ने जातीय दल के साथ कार्य करना आरम्भ कर दिया। इस सङ्घर्ष के फल-स्वरूप हङ्गरियन युवक भी जग उठे। दल के दल नवयुवक सुख-स्वच्छन्दता को छोड़ कर देश-सेवा के कण्टकाकीर्ण मैदान में उतर पड़े। हङ्गरी की राजधानी पेस्थ राज-भक्तों का प्रधान केन्द्रस्थल था। किन्तु अब की यहाँ भी देश-भक्ति की मन्दाकिनी बह चली। प्रादेशिक समिति के निर्वाचन के समय पेस्थ से ही बहुत से देश-भक्त सदस्य निर्वाचित हुए।

सन् १८४८ में हङ्गरियन राष्ट्रीय समिति का महा-अधिवेशन आरम्भ हुआ। महात्मा कसूथ ने सभापति का आसन ग्रहण किया। इस अवसर पर उन्होंने जो वक्तृता दी थी, उसमें ऑस्ट्रियन शासन की तीव्र आलोचना की गई थी। उनकी ज्वालामयी वक्तृताएँ भुस के ढेर में आग का काम करने लगीं। सारी सभा उत्तेजित हो उठी। महामति कसूथ की इस ऐतिहासिक वक्तृता का कई यूरोपियन भाषाओं में अनुवाद हुआ था। उसका जर्मन अनुवाद पढ़ कर वियना के हज़ारों युवक राजद्रोही हो उठे। सारे देश में एक अजीब हलचल पैदा हो गई। विद्रोह दमन करने के लिए ऑस्ट्रियन सरकार को गोली चलाने की आवश्यकता पड़ी। विद्रोहियों ने ऑस्ट्रियन पार्लामेण्ट में घुस कर उत्पात मचाना आरम्भ किया। मेटरनिक उस समय ऑस्ट्रिया के प्रधान-सचिव और सम्राट की दाहिनी भुजा थे। उनकी प्रबल आकांक्षा थी की हङ्गरी का आन्दोलन बन्दूक़ के कुन्दों से कुचल दिया जाय। इसके लिए उन्होंने चेष्टा भी कम न की थी। इसलिए देश के युवक उन्हें अच्छी तरह पहचानते थे। उन्होंने पार्लामेण्ट में घुस कर 'मेटरनिक का ध्वंस हो' 'मेटरनिक नरकगामी हो' इत्यादि चिल्लाने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि दमन की लालसा को मन में ही लेकर मेटरनिक साहब को गुप्त-रूप से इङ्गलैण्ड की शरण लेनी पड़ी। विद्रोहियों ने समझा, नरक न सही, इङ्गलैण्ड ही सही, किसी तरह बला तो टली।

विख्यात फ़्रान्सीसी राज्यक्रान्ति के दिन थे। सारे यूरोप में हलचल मची हुई थी। ऑस्ट्रियन युवकों पर भी इस क्रान्ति का ख़ासा प्रभाव पड़ा। निर्जीव बहोमिया और इटाली ने भी पराधीनता की ज़ञ्जीर तोड़ कर फेंकने की घोषणा कर दी। ऑस्ट्रिया के सम्राट फर्डिनेण्ड की आँखों के सामने सरसों फूलने लगीं।

उन्होंने हङ्गरी से सहायता की प्रार्थना की। परन्तु हङ्गरी ने साफ़ अँगूठा दिखाया। कसूथ ने ऐसी फटकार बताई कि हज़रत के होश ठिकाने आ गए। कसूथ इस अवसर से चूकने वाले न थे। उन्होंने फ़ौरन अपनी राष्ट्रीय महासभा का एक अधिवेशन किया। सर्वसम्मति से "मार्च लॉ" का प्रस्ताव पास हुआ, जिसका उद्देश्य था हङ्गरी में प्रजातन्त्र प्रणाली का प्रचलन। बेचारे ऑस्ट्रियन-सम्राट बड़ी मुसीबत में पड़े। हङ्गरी जाकर उन्होंने "मार्च लॉ" के लिए स्वीकृति दे दी। डिक विचार-विभाग के और किड आय-व्यय-विभाग के मन्त्री नियुक्त हुए। लोगों ने समझा कि बाज़ी मार ली; जातीय दल ने विजय प्राप्त कर ली। परन्तु वास्तव में यह कूटनीतिज्ञ ऑस्ट्रियन-सम्राट की एक राजनीतिक चालबाज़ी मात्र थी। हङ्गरियनों को मिला कर उन्होंने बहोमिया और इटाली के विद्रोहियों का दमन किया। और जब राज्य में अच्छी तरह शान्ति स्थापित हो गई तो हङ्गरियनों को दिया हुआ "मार्च लॉ" मन-सूख़ कर दिया। इस समय ऑस्ट्रिया में साम्राज्य-वादियों की तूती बोल रही थी। बहोमिया और इटाली को नीचा दिखा देने के कारण उनका हौसला ख़ूब बढ़ गया था। हङ्गरी के साथ सम्राट ने जो थोड़ी सी उदारता दिखाई थी, वह उनकी समझ में सम्राट की कमज़ोरी थी। उन्होंने चटपट अपना एक गुट्ट बना कर सम्राट को सिंहासन-च्युत किया और उनकी जगह फ्रेन्सिस जोसेफ़ को ऑस्ट्रिया का सम्राट बनाया।

[अगले अङ्क में समाप्त]

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

यदि आशा का पड़ोस न हो तो निराशा का घर हमें सर्वदा के लिए स्वर्ग है।

संसार का सर्वोत्तम प्रश्न है—मैं इसमें क्या नेकी कर सकता हूँ।

हे सौन्दर्य! तू अपने को प्रेम के अन्दर ढूँढ़, दर्पण की मिथ्या प्रशंसा में नहीं।

आदमी भूल-चूक का पुतला है।

वीर मनुष्य कम्बल में छिपा हुआ भी संसार का राजा है। तलवार म्यान में बन्द हो तो भी राज्य की रक्षक है।

सच्चा प्रेम संयोग में भी मधुर वेदना का अनुभव करता है।

अपने स्वामी को आप सुन कर प्रकृति ने अपनी दासी आँधी से आँगन में झाड़ू लगवाई। उसके भिश्ती जलधर ने छिड़काव किया। स्वामी आए, प्रकृति ने इन्द्रधनुष रूपी सतलड़े पुष्प-हार को लेकर उनके गले में पहना दिया।

हमारे जीवन की भूलें दुःख की स्मृतियों को जगाती हैं।

सहनशील मनुष्य को भी दोषारोपण से क्रोध हो आता है; यदि चन्दन रगड़ा जाय तो उससे आग निकलती है।

ऐ लालची! दम भर ठहर जा, एक घड़ी तो सुख से काट ले।

मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हो जायँ, यदि वह चित्त से इच्छाओं को निकाल दे।

यदि अभिमान ही करना है, तो इस प्रकार कर, कि "सब से बड़ा अपराधी मैं हूँ।"

यदि सबका परम-पिता एक ही है तो कौन मनुष्य अपनी कुलीनता का गर्व कर सकता है।

सरिता की तरङ्गावलि में सुधांशु का प्रतिबिम्ब किलोल करता है।

दीपक अपना तेल जला कर दूसरों पर प्रकाश फैलाता है; पतिङ्गे उसकी कृति पर निछावर हो जाते हैं।

ऐ पुष्प! इस अनित्य जीवन पर इतना न इतरा।

जो उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है। जिसे प्रेम है, उसके लिए द्वार खुला है।

जो बार-बार प्रेम करता है, वह प्रेम करना नहीं जानता।

* * *

धर्म और भगवान—मृत्यु-शय्या पर

[श्री० पृथ्वीपालसिंह जी, बी० ए०]

संसार भर में परिवर्तन हो रहा है। धर्म, समाज और सभ्यता—सभी अपना-अपना चोला बदल रहे हैं। क्रान्ति की दावाग्नि ने अपना आधिपत्य कहाँ नहीं जमा लिया है। सफ़ेद बालों वाले बूढ़े नेता अपनी वही फटी हुई पुरानी डफ़ली बजा-बजा कर बाबा आदम के समय के बेसुरे राग अलाप रहे हैं। भले ही देश ग़ारत हो जाय, समाज रसातल को चला जाय; परन्तु वे अपने पुरखों की बताई हुई लकीर पीटते चले जायँगे! अगर कोई पते की बात बताएगा, सच्चा रास्ता सुझाएगा तो उस पर बेतरह आग-बबूला हो उठेंगे। पुरानी लकीर के फ़क़ीर बुज़ुर्गों को नवीनता में हलाहल नज़र आता है, प्रलय का दृश्य दिखाई पड़ता है। दिखाई दे, उन्हें भले ही क़यामत का नज़्ज़ारा दिखाई दे, समय का प्रबल प्रवाह किसी के रोके न रुकेगा। क्रान्ति की लपट से कोई न बचेगा। जो अपने बुद्धि-बल और पौरुष के मद में चूर होकर, रास्ते में खड़ा होकर रोड़े अटकाने की चेष्टा करेगा, वह पिस जायगा।

रूस में लेनिन ने जब सर्व-प्रथम 'धिक धर्म, धिक भगवान' की आवाज़ बुलन्द की थी, उस वक़्त धर्म के पुजारी और भगवान के उपासक लेनिन के ख़ून के प्यासे हो उठे थे। लेनिन ने बड़ी निर्भीकता से अपने हृदय के क्रान्तिकारी विचारों को रूस के उत्तेजित उमड़ते हुए जन-समूह को सुनाया था। लेनिन ने कहा था—"धर्म लोगों के लिए अफ़ीम के समान है। धर्म द्वारा मनुष्य-समाज पर घोर आध्यात्मिक अत्याचार तथा अतिशय अनिष्ट होता है। आज लाखों की संख्या में मज़दूर और किसान भूखों मर रहे हैं और पूँजीपति उनकी इस करुण अवस्था पर मूँछों पर ताव दे-देकर व्यङ्ग की हँसी हँस रहे हैं! धर्म सिखाता है कि यह अत्याचार, यह अन्धेर चुपचाप मूक पशुओं की तरह सहते रहो, क्योंकि यह तो सारी भगवान की देनी है और भाग्य का खेल है। धर्म ग़रीबों को भावी स्वर्ग के काल्पनिक सुनहले चित्रों को दिखा-दिखा कर उन्हें अपने माया-पाश में फँसा कर इस लोक में नारकीय जीवन व्यतीत करवाता है। और दूसरी ओर उन ग़रीबों का ख़ून पी-पीकर कुप्पा होने वाले धन्नासेठों को धर्म चाँदी के कुछ टुकड़ों के व्यय से ही, उन्हें सारे पापों से मुक्त कर देता है और उन्हें स्वर्ग का अधिकारी बना देता है! ऐसा धर्म सचमुच मनुष्य-समाज के लिए अफ़ीम के समान है।" इन शब्दों को सुन कर रूस के उन दीन-दरिद्र श्रमजीवियों का सारा क्रोध काफ़ूर हो गया। लेनिन की उस वक्तृता में उसके सच्चे हृदय की अन्तरध्वनि थी, उसमें वेदना थी, कसक थी तथा रूस के उन पददलित, दीन-हीन, दुखी किसानों और मज़दूरों के प्रति अलौकिक सहानुभूति की अनोखी झलक थी! उन निस्सहाय दुखियों को तो कर्णधार मिल गया। जो रूसी किसान और मज़दूर लेनिन के रक्त के प्यासे थे, वे ही धीरे-धीरे उसके पुजारी बन गए और बात की बात में धर्म और भगवान को रूस से निर्वासित कर दिया। आज रूस में कृषकों की झोपड़ियों में जाकर देखिए, तो जहाँ पर ईसा और मेरी की प्रतिमाओं पर दीपक जलाए जाते थे, वहाँ लेनिन के चित्रों की पूजा होती है और उसके क्रान्तिकारी भावों का सङ्ख फूँका जाता है! रूस में अनेक गिर्जाघर, मन्दिर और मसजिद मिसमार कर दिए गए, जो बच गए वे क्लब, घर, पाठशाला और कोठार के रूप में दिखाई देते हैं! उन देव-मन्दिरों में महात्मा, साधुओं के चित्रों के स्थान पर, लेनिन और स्टैलिन के चित्र सुशोभित हो रहे हैं तथा बाइबिल से उद्धृत सूत्रों की जगह पर कार्ल-मार्क्स और लेनिन के प्रभावोत्पादक वक्तव्य अङ्कित दिखाई देते हैं। जो गिर्जाघर कभी अपने तड़क-भड़क और शृङ्गार के लिए प्रसिद्ध थे, वे आज सादगी और सरलता के आगर बन रहे हैं! उनमें प्रवेश करते ही, विराट अक्षरों में अङ्कित वाक्य—'साम्यवाद ही संसार और समाज को बन्धन-मुक्त करेगा।' आँखों के सामने नाच जाते हैं!!

रूस ने कुछ ही समय में अपना काया-कल्प कर डाला। संसार रूस की अवस्था में जादू भरा परिवर्तन देख कर, दाँतों तलें उँगली दबाता है। क्रान्ति का वास्तविक रूप यही है। पलक मारते ही दुनिया का बदल जाना क्रान्ति का विराटतम स्वरूप है।

आज जब हम ऐसे ही परिवर्तन की कल्पना भारत के सम्बन्ध में करते हैं, तो लोग हँस पड़ते हैं। लोग कहते हैं कि भारतवर्ष रूस नहीं है। माना कि हमारा देश ही धर्म की जन्म-भूमि है, माना कि भगवान की जन्म-भूमि भारत ही तथा वेद, भगवद्गीता, क़ुरान, इञ्जील सब गङ्गा की तराई की उपज हैं; यदि यह सब सत्य ही हो, तो भी समय और काल की गति को कौन रोक सकता है? सचमुच धर्म का प्रभाव सारे देश में महामारी की तरह फैला हुआ है तथा इस भयङ्कर महामारी के पञ्जों में अधिकांश नर-नारी फँसे हुए हैं! परन्तु सन्तोष की बात है कि ज़माने ने करवट ली है और इस घड़ी परिवर्तन-चक्र तेज़ी से घूम रहा है। बस देश में शीघ्र ही इन पण्डित-पुजारियों पादरियों, तथा मुल्लाओं, उनके भगवान तथा विविध मत-मतान्तरों के विरुद्ध विद्रोह होने ही वाला है। भारतवर्ष के नब्बे फ़ी सदी नर-नारी भूखों मर रहे हैं—न तो उनके पास पेट की आग बुझाने को मुट्ठी भर अन्न ही है और न शरीर ढकने को एक टुकड़ा कपड़ा। धर्म ने निस्सहायों पर प्रहार किया है, उनके मुँहों पर ताले डाल दिए हैं, उन्हें अपने चरणों के नीचे दबा रक्खा है। बेचारे किसान जो एड़ी से चोटी तक का पसीना एक कर देते हैं, वे खड़े-खड़े टुकुर-टुकुर ताका करते हैं और उनके परिश्रम का मीठा फल उनके स्वामी चख जाते हैं! धर्म कहता है कि स्वामी की सेवा करना तो तुम्हारा फ़र्ज़ है; जो कुछ रूखा-सूखा तुम्हें तुम्हारी सेवा के उपलक्ष में मिलता है वह तुम्हारे भाग्य का प्रसाद है, उसे ही खाकर, सन्तोष की नींद सो रहो। ग़रीबों की आँतें पसलियों से लग रही हैं, उनके पेटों पर नौबतें बज रही हैं और धर्म खड़ा-खड़ा उन्हें सब्र रखने का उपदेश दे रहा है।

धर्म कहता है—"अछूतो! तुम्हें भगवान ने नीच कुल में पैदा किया है, दास-कार्य तो तुम्हारा कर्त्तव्य है, आजीवन दूसरों के जूतों के तस्में खोलना तो तुम्हारा धर्म है। तुम्हें ईश्वर ने इसीलिए बनाया है कि तुम द्विजों की सेवा-शुश्रूषा करो और उनके दिए टुकड़ों पर निर्वाह करो। तुम अन्त्यज हो, तुम्हें अधिकार नहीं कि तुम हमारे देव-मन्दिरों में प्रवेश करो तथा हमारे धर्म-ग्रन्थों को स्पर्श भी करो। यदि तुम ऊँचे उठने की चेष्टा करोगे, तो धर्म का वज्र-प्रहार—भगवान का कराल-कोप तुम्हारा नाश कर देगा! तुम पतित हो, अस्पृश्य हो, निकृष्ट हो, तुम्हारे स्पर्श से हमारे प्यारे भक्त पतित हो जायँगे, हमारे देवालय छूत हो जायँगे, भगवान रूठ जायँगे तथा हमारा अपमान हो जायगा। सावधान, कहीं मस्तक उठाने का साहस न करना! तुमने मनुष्य का चोला पाया है तो भी तुम एक विप्र के कुत्ते से पतित हो। तुम्हें ब्राह्मणों के मुहल्लों से निकलने का अधिकार नहीं, तुम्हें द्विजों के कुएँ से जल भरने का हक़ नहीं। शूद्रो! तुम्हारी दृष्टि-प्रहार-मात्र ही से विप्र का भोजन अखाद्य हो जाता है! तुम समाज के कोढ़ हो—तुम दूर ही रहो, नीच-कुल में जन्म लेने का दण्ड भोगो। तुम्हारे भाग्य में यही लिखा है और भगवान की भी यही आज्ञा है कि अछूत हो, अछूत बन कर रहो।"

धर्म का यह फ़तवा है। आज भारतवर्ष में धार्मिक अत्याचार और आध्यात्मिक दमन प्रचण्ड रूप धारण किए हुए हैं। कब तक यह अन्धेर और धींगा-धाँगी चल सकती थी? अपना उल्लू सिद्ध करने वाले स्वार्थियों, धर्म और भगवान की रङ्ग-बिरङ्गी झण्डियाँ हिलाने वाले देवताओं का भण्डाफोड़ होना ही था! वह युग लद गया, जब इस प्रकार के धार्मिक फ़तवे संसार के नर-नारियों से इच्छित आचरण करवा लेते थे। इस धर्म ने जाति-पाँति, नीच-ऊँच, हिन्दू-मुसलमान आदि के भाव पैदा कर भाई-भाई का मन-मुटाव करवा दिया है। इस धर्म ने करोड़ों जीवों की आँखों में धूल झोंक कर ईश्वर और देवताओं के काल्पनिक कोप का भय दिखा कर उन्हें नर्क में डाल रक्खा है तथा उन्हें निस्तेज और अकर्मण्य कर रक्खा है। धीरे-धीरे यह माया की चादर सबकी बुद्धि पर से खिसक रही है, भ्रम और धोखे का प्रगाढ़ अन्धकार छिन्न-भिन्न हो रहा है, सभी समझ रहे हैं कि कुछ स्वार्थियों ने ही मिल कर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए धर्म और भगवान का ढोंग रच कर समाज का जीवन कलुषित कर डाला है!

ऐसा धर्म, जो हमें दूसरों की जूतियों के तले बन कर रहने का आदेश करता है; ऐसा धर्म, जो हममें असमानता के भावों का उद्रेक करता है उसे कौन दूर ही से प्रणाम न करेगा? रूस का बच्चा-बच्चा किसी समय ईश्वरवादी था, परन्तु जब धर्म के अत्याचार दिनों-दिन बढ़ते ही गए—सारा रूस-समाज पीड़ित हो उठा, तब आग भभक उठी, क्षण भर में रूस-निवासियों ने धर्म का मुँह काला कर, भगवान सहित उसे रूस से बाहर खदेड़ दिया; जितने पोप-पुजारी थे, उन्हें राष्ट्रीय अधिकारों से वञ्चित कर दिया, मठाधीशों की जायदादें सोवियट सरकार ने छीन लीं तथा स्कूलों और कॉलेजों में धार्मिक शिक्षा का निषेध कर दिया गया! यह सब सुन कर भगवान के अन्ध-भक्त तिलमिला उठेंगे। मुँह बा देंगे—लेकिन यह बात सच है कि वह घड़ी दूर नहीं, जब भारतवर्ष भी रूस बन जायगा—तथा यहाँ से धर्म और भगवान का अस्तित्व ही मिट जायगा। जब रूस में सामाजिक तथा धार्मिक क्रान्ति के लक्षण प्रत्यक्ष झलक रहे थे—और कोने-कोने से नवयुवक चेतावनी दे रहे थे, उस समय गिर्जाघरों में दक़ियानूसी ख़्यालात वाले इकट्ठा होकर इन चेतावनियों की ओर लक्ष्य कर-करके ख़ूब क़हक़हे लगाया करते थे। सन् १९२१में एक दिन एकाएक सोवियट सरकार ने गिर्जाघरों के माला-माल ख़ज़ानों को अकाल-पीड़ित किसानों की सहायता के लिए ख़ाली करवाने की आज्ञा दे दी। फिर क्या था, बड़ा कुहराम मचा। जो लोग उन चेतावनियों की खिल्ली उड़ाते थे, उनके होश फ़ाख़्ता हो गए। जिन्होंने सरकार की इस आज्ञा का अपमान या विरोध किया, उनकी ख़ूब मरम्मत की गई। अनेकों गोली के शिकार हुए, बहुतेरे जेलों में सड़ा-सड़ा कर कुत्ते की मौत मारे गए, जो शेष रह गए, उन्होंने दुबारा चूँ तक करने का साहस न किया। भारतवर्ष में तो अभी जागृति की यह प्रथम प्रभा है—अभी तो इब्तिदा है, आगे-आगे देखिए होता है क्या?

अनर्थ और अनाचार कहाँ तक देखा जाय। कृष्ण-कन्हैया बन कर गोविन्द-भवन में धर्म के एक सुप्रसिद्ध स्तम्भ रासलीला करते थे—भोली-भाली सुकुमार कामिनियाँ धर्म और भगवान की चेरी बन कर उन कृष्ण-कन्हैया के साथ स्वाँग भर-भर कर नृत्य करती थीं! उन 'कृष्ण-कन्हैया' का मारवाड़ी-समाज में बड़ा आदर-सम्मान था। लोग अपने 'मुरली मनोहर' को प्रसन्न करने के लिए उनके चरणों पर सोने का अम्बार लगा देते थे, अपने 'ठाकुर' की सेवा के लिए अपनी बहू-बेटियों को भेज दिया करते थे। गोविन्द-भवन के 'भगवान कृष्ण' ने सहस्रों बहू-बेटियों की आँखों पर धर्म का पर्दा डाल कर, उनका सतीत्व हरण किया! इस बीसवीं शताब्दी में ऐसे भगवान जगह-जगह रास-लीला कर रहे हैं। क्या ऐसे निकृष्ट धर्म को और ऐसे नीच भगवान को कोई भी सभ्य-समाज क्षण भर के लिए अपने यहाँ अतिथि बनाने को तैयार हो सकता है?

यही नहीं, हमारा सारा सामाजिक जीवन ही भ्रष्ट और पतित हुआ जा रहा है। मेलों-ठेलों में, जिन्हें जाने का अवसर हुआ है, उन्होंने धर्म और भगवान का नग्न स्वरूप अवश्य ही देखा होगा। जिस धर्म और जिस भगवान के कारण हमें यह जघन्य से जघन्य दृश्य देखने पड़ते हैं, उसे बिना बहिष्कृत किए कल्याण न होगा। यह पण्डे और महन्त जो अपना अँगूठा धुला-धुला कर भले घर की देवियों को पिलाते हैं; यह सूफ़ी और औलिया जो भोली-भाली स्त्रियों को पुत्र-दान देते हैं तथा धर्म की नक़ाब डाले हुए वे गुण्डे, जो देवियों की नाड़ी पर हाथ धर कर रोग का विश्लेषण तथा झाड़-फूँक करते हैं, उनके काले कारनामों से कौन परिचित नहीं? कौन नहीं जानता कि तारकेश्वर के महन्त के चरण हमारी ही नन्हीं-नन्हीं बहिनें देवदासियाँ बन कर दबाती हैं; कौन नहीं जानता कि हमारी ही घर की बहू-बेटियाँ उस भगवान के प्रतिनिधि को थपकियाँ दे-देकर सुलाती हैं? हम सब कुछ जानते-बूझते हुए भी मूक हैं। 'धर्म और भगवान' ही के पर्दे के पीछे आज संसार भर में यह वीभत्स नाटक हो रहा है। इस नारकीय लीला का अन्त करने के लिए हमें धर्म और भगवान—दोनों ही का अस्तित्व मिटाना पड़ेगा। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। जिस खूँटे के बल आज धर्म का ढोंग रचने वाले आततायी कूदते हैं, हमें उसी का जड़मूल से नाश करना होगा। यदि हम इसमें सफल हुए तो फिर संसार के सारे झगड़े ही मिट जायँगे। यही भूलोक स्वर्ग बन जायगा!!

यदि हम इतिहास के पन्ने लौटें, तो हमें पता चले कि धर्म और भगवान के कारण संसार में सदैव लड़ाई-झगड़े, रक्तपात तथा भीषण हत्याकाण्ड होते चले आए हैं। सन् १५५५ ई० में, जब कि इङ्गलैण्ड पर हत्यारिन मेरी का शासन था, उस समय टेम्स नदी में निर्मल जल के स्थान पर रक्त की उदधि-धारा प्रवाहित हो रही थी। मेरी 'कैथलिक' थी—वह ईसाई धर्म के पुराने उसूलों और आदर्शों की मानने वाली थी। वह परिवर्तनवादी 'प्रोटेस्टेण्टों' को धर्मद्रोही समझती थी। बस फिर क्या था, लूथर, रॉजर्स, फ़ेरार, क्रेनमर, लैटिमर तथा रिडले आदि—जितने भी देश के प्रमुख प्रोटेस्टेण्ट महात्मा थे, उन्हें मेरी ने, धधकती हुई अग्नि में घास-फूस की तरह झोंक दिया! वे निर्दोष, निरपराध महात्मा, उस धर्म की प्रचण्ड अग्नि में जल कर ख़ाक हो गए! मेरी खड़ी मुस्कराती रही। धर्म की रक्षा करने वाली महारानी मेरी के इन अत्याचारों के कारण इङ्गलैण्ड पर प्रलय के बादल गरजे थे—आग बरसी थी!! इसी धर्म और इसी भगवान के कारण इङ्गलैण्ड में तीस-वर्षीय और शत-वर्षीय युद्ध हुए थे। निरन्तर सौ वर्ष तक इङ्गलैण्ड में तलवारें चमकती रही थीं तथा भूधराकार तोपों की गरज से इङ्गलैण्ड गूँजता रहा था!!!

उधर हज़रत मुहम्मद ने तो धर्म की नींव ही रक्तपात द्वारा डाली थी। कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद ने 'ख़ंजर दिखा-दिखा कर क़लमा पढ़ा लिया' मालूम नहीं यह कहाँ तक सच है। परन्तु इतिहास हमें बताता है कि महात्मा मुहम्मद ने कोरेश व्यापारियों को बड़ी निर्दयतापूर्वक लूटा तथा जहाँ भी गए, इसलाम मत के प्रचार और प्रसार के लिए पृथ्वी रक्त से सींच दी! पुराने मुर्दे कहाँ तक उखाड़े जायँ? जब हिन्दुओं का राज्य था, तो उन्होंने अनेक बौद्धों को, केवल इस अपराध पर कि वे बौद्ध थे, बोरों में बन्द करवा कर समुद्र में फिंकवा दिया था! जब मुसलमानों का राज्य हुआ, तो उन्होंने भी धर्म का वास्तविक नग्न-रूप संसार को दिखाया। धर्म ही की ज्वाला थी, जिसने औरङ्गज़ेब द्वारा अर्जुनदेव का बध कराया था तथा गुरु गोविन्दसिंह के सुकुमार बालकों को जीवित ही दीवार में चुनवाया था!! इसमें उस व्यक्ति-विशेष का क्या दोष था? उसने जो कुछ भी किया वह धर्म की रक्षा के लिए और "अल्लाह" को ख़ुश करने के लिए। यदि धर्म और भगवान न होते, तो आज संसार के इतिहास के इतने पन्ने ख़ून से तर-बतर न दिखाई देते!!!

अधिक समय नहीं बीता कि जब कोहाट, कलकत्ता, लखनऊ तथा ढाका आदि स्थानों में मसजिद के सामने बाजा बजाने, गौ-वध आदि प्रश्नों पर धर्म-युद्ध छिड़ गए थे! इन धर्म-युद्धों में जिनके नन्हें-नन्हें बालकों के कलेजों से लपलपाते हुए छुरे आर-पार कर दिए गए थे तथा जिनकी बहू-बेटियों का सतीत्व लुटा था, उनके दिलों से पूछिए—वे तो एक आँख भी ऐसे धर्म और ऐसे भगवान को नहीं देखना चाहते! जिसके कारण भाई-भाई एक-दूसरे के रक्त का प्यासा बन बैठता है तथा क्षण भर में समाज का सारा वातावरण विषाक्त बन जाता है!!

संसार में होने वाले लड़ाई-झगड़ों, विप्लवों, रक्तपात तथा हत्याकाण्डों का प्रमुख कारण धर्म और भगवान ही हैं। आज यदि वायु-मण्डल धर्म और भगवान के कुत्सित पचड़ों से मुक्त होता, तो समाज का दृश्य ही कुछ और हो गया होता।

आज भारतवर्ष गुलामी की ज़ञ्जीरों में क्यों जकड़ा हुआ है? इस मूज़ी धर्म ने विविध रूप धारण कर हमें हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई अनेक भागों में विभाजित कर दिया है। राजनैतिक समझौता हो कैसे, जितने भी नेता हैं, वे अपने-अपने धर्म और अपने ही धर्म के पुजारियों के हक़ों के वास्ते गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाया करते हैं। कोई चिल्ला रहा है कि जब तक सरकारी नौकरियों में तथा छोटे और बड़े लाट की कौन्सिलों में इतनी फ़ी-सदी जगहें हमारे लिए निर्दिष्ट न कर दी जायँगी—हम मचले रहेंगे; स्वराज्य-संग्राम में तुम्हारा साथ न देंगे। दूसरी ओर से आवाज़ आती है कि जब तक हमारी जाति की सङ्केत-सूचक पीले रङ्ग की एक चिट राष्ट्रीय झण्डे में न चिपका दी जायगी—हम स्वातन्त्र्य-युद्ध के पास भी न फटकेंगे। चारों ओर यही तमाशा नज़र आता है। इन धर्म-वालों की चख़-चख़ और खटपट में पड़ कर राष्ट्र पिसा जा रहा है!!!

अल्लाह मियाँ के अगणित रूप और अनेक नाम हैं तथा उन तक पहुँचने के लिए सहस्रों गली-कूचे हैं। जिसे जिधर मन आया, आँख मीच कर उधर ही चल दिया—तभी तो आज समाज में इतनी दलबन्दियाँ और इतनी धाराएँ हो गई हैं। यदि धर्म और भगवान ने आज एक ही कुटुम्ब के भाई-बहिनों को मतमतान्तरों के झगड़े फैला कर पृथक न कर दिया होता, तो आज यह तैंतीस करोड़ नर-नारी एक ही प्रेम-रज्जु में ग्रथित होते! आज भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए हमें अहिंसा, सत्याग्रह और अनशन ऐसे अस्त्र-शस्त्रों का मुँह न देखना पड़ता! हमें स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए इतना सर-दर्द न उठाना पड़ता। आज हमें न इस गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स ही की आवश्यकता होती, न हमें अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए जिन्ना और मुन्जे ऐसे नेता ही नज़र आते! भारतवर्ष में न मुसलिम लीग होती और न हिन्दू-सभा। भारत तो इन तैंतीस करोड़ नर-नारियों का एक सुखी परिवार होता और इस भारतीय परिवार का एक ही प्रतिनिधि होता! हम अपने उसी नायक के इशारों पर चलते। उसके सङ्केत-मात्र ही से भारतवर्ष में ख़ून की नदियाँ बह चलतीं—वैरियों का पता न चलता!! हम अपने जन्म-सिद्ध अधिकारों के लिए एक होकर भीषण युद्ध करते। ब्रिटिश साम्राज्य की क्या बिसात, यदि ऐसी-ऐसी सहस्र शक्तियाँ हमारे विरुद्ध होतीं, तब भी निस्सन्देह विजय हमारी ही होती, बिना एका के यह सब स्वप्न हैं! कोसिए अपनी करनी को, रोइए धर्म और भगवान के नाम को, जिसने आज हमको इतनी धाराओं में विभाजित कर हमारा भविष्य अन्धकारमय कर दिया है! अब भी समय है; यदि सुबह का भूला शाम तक भी ठीक स्थान पर आ जाय, तो भूला नहीं कहाता। हमें अपने उत्थान के लिए आग के साथ खेलना होगा। हमें इसके लिए अभी से शक्ति और साहस सञ्चय करना है। कौन जाने किस घड़ी रण-भेरी बज उठे!

यदि हम अपना कल्याण चाहते हैं, तो हमें भी वही करना होगा, जो ऐसी अवस्था में औरों ने किया है। रूस से धर्म और भगवान का नामोनिशान मिटा देने के लिए नाटक, सिनेमा, रेडियो, अजायब-घर तथा सचित्र व्याख्यानों द्वारा ख़ूब आन्दोलन हो रहा है। कॉलेजों और स्कूलों में धर्म और भगवान के विरुद्ध विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है। ऐसे शिक्षक जो ईश्वरवादी हैं, उन्हें पदच्युत कर, उनके स्थान पर नास्तिक नियुक्त कर दिए जाते हैं। समाचार-पत्रों को सख़्त हिदायत कर दी गई है कि धर्म-पक्ष-पोषक लेख कदापि न छापे जायँ। मकान-मालिकों को हुक्म है कि धार्मिक संस्थाओं को मकान तथा भूमि किराए पर न दें। देवालय आदि पाठशाला और स्कूल के रूप में परिणत हो रहे हैं! दो ही तीन वर्ष के अनवरत परिश्रम से आज रूस में धर्म-विरोधी नास्तिकों की अपार शक्ति हो गई है। लाखों की संख्या में धर्म-विरोधी नास्तिक बड़ी धूम से अपना मत प्रचार कर रहे हैं। आज उनके कई बड़े-बड़े समाचार-पत्र निकल रहे हैं, जो लाखों की तादाद में पौ फटते ही रूस के कोने-कोने में टिड्डी-दल की तरह फैल जाते हैं! उनका प्रचार-विभाग ख़ूब ही सङ्गठित है—बड़े ढङ्ग से प्रचार-कार्य होता है। उनके प्रचार और उपदेश में भी वैसा ही अन्तर रहता है, जैसा कि स्थिति और वातावरण में भेद होता है। किसानों में जाकर, वे धर्म-विरोधी नास्तिक कहते हैं कि देखो, यह मेघों की घनघोर गर्जना और मूसलाधार वृष्टि तथा विद्युत की तड़प प्रकृति के नियमों के अनुसार हो है, यह किसी देवी-देवता की करनी नहीं है। वे प्रचारक गाँव में जाते हैं, तथा वैज्ञानिक रीति से खेती करके किसानों पर प्रदर्शित करते हैं कि यह उपज कृषि-विज्ञान के नियमों के अनुसार होती है, पूजा-पाठ तथा किसी गुप्त दैवी-शक्ति के प्रभाव से नहीं। वे मज़दूरों में जाकर उन्हें सचेत करते हैं कि धर्म की आड़ लेकर पूँजीपति उनका रक्त-शोषण कर रहे हैं। इसी प्रकार की विभिन्न प्रचारक टोलियों द्वारा आज रूस अपने को धर्म और भगवान के विकट-पाश से मुक्त कर रहा है!!

जिस दिन भारतवर्ष भी इन मत-मतान्तरों के माया-जाल तथा भगवान के विकट पञ्जों से अपने छुटकारे

(शेष मैटर २७ वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

परतन्त्रता

[श्री० त्रिलोचन पन्त, एम० ए०, विशारद]

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
—मनु

मनुष्य जाति के शताब्दियों के अनुभव ने इस बात को अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है कि दूसरे के आश्रय में रह कर, पराधीन स्थिति में कोई भी व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र पूर्णरूप से उन्नति नहीं कर सकता। कवि के इस कथन में 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। मनु महाराज के उक्त श्लोकार्द्ध में भी इसी बात का सङ्केत किया गया है। वश्यता स्वीकार करने पर विकास का मार्ग अनेक अंशों में बन्द हो जाता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक और नैतिक उन्नति करने में समर्थ नहीं हो पाता। अधीनता में अपने स्वामी की इच्छानुसार कार्य करना पड़ता है। परतन्त्र दशा में रह कर अपने विषय में सोचने और उन्नति का मार्ग खोजने की क्षमता तो मनुष्य से दूर हो ही जाती है, वह पूर्णरूप से अकर्मण्य भी बन जाता है! कठपुतली की तरह वह दूसरों के ही सङ्केत पर चला करता है, मानो स्वयं कुछ करने की उसमें शक्ति नहीं है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है।

मध्यकालीन यूरोप में साधारण व्यक्ति का कुछ भी मूल्य न था। राजा और धर्म-गुरु इन दोनों का वह दास था! इन दोनों महाप्रभुओं की आज्ञा बिना वह कोई कार्य नहीं कर सकता था। शताब्दियों तक वह इनके अत्याचारों को सहता रहा!! निरन्तर उस एक ही स्थिति में रहने से उसके आत्म-गौरव और स्वाभिमान की भावना नष्ट हो गई। सैकड़ों वर्षों तक उसकी आँख न खुली! अपनी स्वाभाविक शक्ति और सामर्थ्य का उसको पता न लग सका। रूस में ज़ारशाही के अन्तर्गत भी यही दशा जन-समाज की थी। मूक-पशुओं की तरह निम्न श्रेणी के मनुष्य शासक-वर्ग का अत्याचार सहते थे। उनसे अधिक दुःखी जीवन संसार में किसी और स्थान पर मनुष्यों को बिताना पड़ता होगा, इस बात में अनेकों को सन्देह है। प्राचीन काल से लेकर, अब तक दासों को जो दुर्दशाग्रस्त और नारकीय जीवन बिताना पड़ा है, इतिहास का प्रत्येक पाठक अच्छी तरह जानता है! अभी कुछ वर्ष पूर्व तक व्यक्तिगत जायदाद की भाँति अमेरिका में उनका क्रय-विक्रय होता रहा है। जड़ होने के कारण जायदाद को मार का शिकार नहीं बनना पड़ता, परन्तु इस प्राणधारी, चलती-फिरती जायदाद को भीषण नृशंसता, बर्बरता और क्रूरता का शिकार बनना पड़ा है!! अपने स्वार्थ के लिए मनुष्यों ने इन अधीनस्थ व्यक्तियों को सर्वदा अन्धकार में रखने का प्रयत्न किया! अपने हित के लिए उन्हें नितान्त पङ्गु बनाए रहे। प्रतिकार की इच्छा होते हुए भी असमर्थता के कारण, वे अभागे कुछ न कर सके! परन्तु अवसर मिलने पर उन्होंने उसकी उपेक्षा न की, वरन अपनी स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए प्रयत्न किया। सहृदय, न्याय-प्रिय व्यक्तियों की सहायता से वे अपने प्रयत्न में सफल हुए। इस कार्य में उन्हें असाधारण बलिदान का उदाहरण उपस्थित करना पड़ा, जिसके फल-स्वरूप ज़ारशाही का अन्त हुआ, अमेरिका से दास-प्रथा का देश-निकाला किया गया और यूरोप में व्यक्तिगत स्वाधीनता (Individual Liberty) की स्थापना हुई। आधुनिक जगत में व्यक्ति को बहुत सी स्वतन्त्रता प्राप्त है। उसी स्वतन्त्र मस्तिष्क की उपज से आज संसार के ज्ञान-भण्डार की वृद्धि हो रही है।

इस सिद्धान्त की पुष्टि के लिए एक और उदाहरण दे देना अनुचित न होगा। साधारण सी बात है। एक नौकर जो नित्यप्रति अपने स्वामी की चाटुकारी में लगा रहता है, जीवन-निर्वाह के लिए पूर्णरूप से उसी पर आश्रित रहता है, उतनी उन्नति नहीं कर पाता, जितनी कि स्वतन्त्र-व्यवसाय वाला बन्धन-हीन व्यक्ति कर लेता है। ऐसा मनुष्य अपने परिश्रम द्वारा उच्च से उच्च स्थान तक पहुँचता देखा गया है, परन्तु बन्धन में रहने वाले का कदाचित कोई ही दृष्टान्त ऐसा देखने अथवा सुनने को मिले! उसकी उन्नति तो पूर्णतया उसके स्वामी पर निर्भर रहती है। घड़ी-घड़ी उसको स्वामी का ही मुख ताकना पड़ता है। ऐसी परतन्त्र स्थिति में किसी प्रकार का सुख नहीं है। पराधीन व्यक्ति को शान्ति का अनुभव तो जीवन भर कभी होता ही नहीं। वह हमेशा ही मानसिक वेदना और चिन्ता का शिकार बना रहता है। मनुष्य को ही पराधीनता खलती हो, यह बात भी नहीं है। वह तो प्राणि-मात्र के स्वभाव के विरुद्ध है। जिन मनुष्यों ने पशु-पक्षियों के जीवन का अध्ययन किया है, उनका कथन है कि वे भी स्वतन्त्रतापूर्वक अपने क्षेत्र में ही रहना पसन्द करते हैं। सिंह को बन्दी-जीवन बिताना कभी अभीष्ट नहीं है। मृग भी छलाँग मार कर जाल से निकल भागने की ताक में लगा रहता है। पिंजड़े में बन्द हो जाने पर चूहा भी बाहर निकलने के लिए कुछ समय तक छटपटाता है। पक्षियों के दृष्टान्त तो नित्य ही सामने रहते हैं। यह जानते हुए कि मेरा जीवन निरापद नहीं है, मुझसे बली पक्षी मौक़ा पाते ही मुझे खा जायगा, पक्षी स्वच्छन्दतापूर्वक आकाश में विहार करता है। परन्तु यदि वही पक्षी पिंजड़े में डाल दिया जाय, तो कुछ ही दिनों के बाद उसकी उड़ने की शक्ति लुप्त हो जाती है। पिंजड़े से बाहर करने पर वह फिर पिंजड़े में चला जाता है—उड़ कर अपने अन्य साथियों में नहीं! आरम्भ में कुछ समय तक वह उदासीन रहता है, किसी प्रकार का दाना-पानी तक नहीं छूता। विवश होकर ही वह अपने स्वामी से हेल-मेल करता है। उसकी इस प्रवृत्ति को देख कर ही कवि को यह कहने का साहस हुआ है—

> पराधीनता दुख महा, सुख जग में स्वाधीन।
> सुखी रहत शुक बन बसे, कनक पींजरे दीन॥

समाज पर भी यही सिद्धान्त समान-रूप से घटता है। अन्य क्षेत्रों की भाँति, समाज क्षेत्र में भी बन्धन रूपी कुछ ऐसे नियम होते हैं, जो दासत्व के अन्तर्गत नहीं गिने जा सकते। यदि इस प्रकार के नियमों का बन्धन न हो तो व्यवस्था और शान्ति का प्रबन्ध कदापि न हो सके। सर्वत्र उच्छृङ्खलता का साम्राज्य दिखाई पड़ने लगे, परन्तु जब यह बन्धन औचित्य की सीमा का उल्लङ्घन कर दे; तर्क, प्रमाण और अनुभव द्वारा उसको युक्ति-सङ्गत न सिद्ध किया जा सके, तो ऐसी स्थिति में रहना दासत्व बन्धन के समान है! समाज के कुछ स्वार्थी ठेकेदारों और धर्म की नाक रखने वाले पञ्चों की हठधर्मी के कारण, बहुधा ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है! समाज परम्परागत ढकोसलों, रूढ़ियों और अन्ध-विश्वासों को मानने में ही अपने को कृतकृत्य हुआ समझता है। इन बुराइयों की जड़ में अविद्या और अज्ञान का बहुत बड़ा हाथ रहता है। पराधीन देशों में, जहाँ का शासन विदेशियों के हाथ में है, वहाँ शासकों की नीति के कारण भी ऐसी समाज विघातक स्थिति बनी रहती है। अपने लाभ के कारण विदेशी शासक समाज की अनुदार और सङ्कुचित मनोवृत्ति बनी रहने देने में ही अपना कल्याण समझते हैं। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसी दशा में समाज अनेक दुर्गुणों का घर बन जाता है। भारतवर्ष की आर्य-जाति के भिन्न-भिन्न समाजों की आजकल की दशा इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

पराधीनता का यह सिद्धान्त देश अथवा राष्ट्र पर सब से उत्कट रूप में लागू है। जिन-जिन देशों को परतन्त्रतामय जीवन बिताना पड़ा है, अपने शासक-स्वामी की कृपा से उन्होंने अपना बहुत कुछ खो दिया! आधुनिक युग में इसी पराधीनता-देवी की कृपा से हॉलैण्ड, आयर्लैण्ड, इटली, मिश्र, चीन आदि देशों को अनेकों प्रकार के कष्ट उठाने पड़े हैं। इन देशों के विदेशी शासकों ने उक्त देशों को लूटा ही नहीं, वहाँ के निवासियों को हर तरह से नङ्गा करके ही सन्तुष्ट न हुए, वरन उन पर अपनी भाषा, वेष, धर्म और सभ्यता को लादने का प्रयत्न प्रत्येक अच्छे और बुरे उपायों से किया! प्रत्येक कार्य की एक सीमा होती है। यदि कोई कार्य अहितकर अथवा अकल्याणकारी प्रतीत होता है, तो उस कार्य के पराकाष्ठा तक पहुँचने से पूर्व ही, उससे त्राण पाने के लिए प्रतिक्रिया के बीज का आरोपण हो जाता है। यही बीज अङ्कुरित होने पर भली-भाँति पल्लवित और पुष्पित हो बड़े-बड़े आन्दोलनों का रूप धारण कर लेता है। पराधीनता से ऊब कर सभी देशों ने स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न किया है। मृत्यु का सामना दोनों ही स्थिति में करना पड़ता है। उन्होंने परतन्त्र स्थिति में रहने की अपेक्षा 'स्वर्गादपि गरीयसी जननी जन्मभूमि' को कष्टों से मुक्त करने के लिए, स्वाधीनता-यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दे देना कहीं अच्छा समझा। त्याग और बलिदान के बल पर उन्हें सफलता प्राप्त हुई। जिन पराधीन देशों ने अपनी विषम स्थिति का अनुभव कर लिया है, उनमें आज भी यह क्रम जारी है, और जब तक उनके उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो जाती, तब तक यही क्रम वहाँ जारी रहेगा। मनुष्य सुख और शान्ति चाहता है। दुःख, चिन्ता, असन्तोषादि को दूर से ही नमस्कार करके टाल देने की उसकी इच्छा रहती है। दुःख, सुख, सन्तोष, असन्तोष का सापेक्ष सम्बन्ध है, और ये किसी न किसी रूप में सर्वत्र ही विद्यमान रहते हैं, परन्तु पराधीन देशों में दुःख, असन्तोष, चिन्ता भयादि की मात्रा इतनी अधिक बढ़ जाती है कि देश की अधिकांश जन-संख्या को जीवन-भार असह्य हो जाता है। निराश परिस्थिति में 'मरता क्या न करता' के अनुसार, मनुष्य भला और बुरा सभी काम करने लगता है! शासकों की स्वार्थ-नीति के कारण सभी परतन्त्र देशों में लगभग यही दशा देखने में आई है। यदि पराधीनता में सुख होता, यदि उस स्थिति में आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती, तो इस प्रकार के स्वाधीनता संग्रामों का कहीं ज़िक्र भी न आता। परन्तु दासत्व-बन्धन तो किसी को भी रुचिकर नहीं। परिस्थिति-जन्य विवशता के कारण ही मनुष्य को पराधीन स्थिति में रहने के लिए बाध्य होना पड़ता है। पराधीनता से बचने के लिए मनुष्य सब कुछ सहने

को तैयार है; परमात्मा के दर्बार में उसकी यह विनम्र प्रार्थना है :—

संसार में हो कष्ट कम तो नर्क में पहुँचाइए !
पर हे दयामय दासता के दुःख ना दिखलाइए !!

स्वाधीन राष्ट्रों के बीच पराधीन देश का कोई मूल्य नहीं है। पराधीन देश को पग-पग पर निन्दा, उपहास और अपमान सहना पड़ता है। स्वाधीन राष्ट्र से जो आवाज़ उठती है, उसकी ओर अनेकों के कान खिंच जाते हैं, परन्तु पराधीन देश के प्रति सहानुभूति प्रकट करने वाले भी बिरले ही मिलते हैं। पराधीनता के जीवन से ,किसी भी देश अथवा राष्ट्र को कितनी हानि पहुँच सकती है, इसका साक्षात् उदाहरण आज का भारतवर्ष है ? पराधीनता का जीवन व्यतीत करते-करते भारतवर्ष ने अपने धर्म-कर्म, पूजा-पाठ, ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल की ही हानि नहीं सही, वह अपनी उदात्त-वृत्तियों से भी हाथ धो बैठा । इस देश में सत्य बोलना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य समझा जाता था, प्रतिज्ञा-पालन का यहाँ के मनुष्यों को सब से अधिक ध्यान रहता था। 'प्राण जाएँ पर वचन न जाई' यह लोकोक्ति आज भी प्रसिद्ध है। परन्तु आज सत्य-वक्ता और प्रतिज्ञा-पालक ढूँढ़ने पर भी देश भर में बिरले ही मिल सकेंगे ! आज इस देश में आत्म-गौरव और स्वाभिमान की भावना लगभग मृतप्राय ही है। वर्तमान स्थिति को देख कर कोई भी व्यक्ति सहसा इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता, कि यह देश वही भारतवर्ष है, जिसके प्राचीन महत्व की ख्याति सारे संसार में फैली हुई है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता के यदि कुछ चिन्ह अवशिष्ट न होते, तो यह बात सर्वांश में सत्य सिद्ध हुई होती। प्राचीन भारत वही असभ्य भारत रहता, जो पुरातत्त्व-विशारदों की निरन्तर होने वाली खोज से पूर्व था ! अब यह बात मानी जाने लगी है कि उस पूर्व समय का स्वाधीन भारतवर्ष सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सभी क्षेत्रों में बहुत उन्नत था ! इसका कारण यही है कि उस समय भारत भारतीयों का ·था। उसके शासक भारतीय रङ्ग-रूप में रङ्गे हुए थे। उन्हें भारतीयों के हिताहित और मानापमान का ध्यान रहता था। कभी-कभी लड़ाई-झगड़े भी हो जाते थे, परन्तु उनके परिणाम-स्वरूप देश की लक्ष्मी देश के बाहर नहीं जाती थी। देश में भीषण दरिद्रता नहीं प्रवेश कर पाती थी। विदेशी शासक की अधीनता में ऐसी सुविधाएँ कहाँ नसीब होती हैं। उसे तो अधिकांश अपने हित का ही ध्यान रहता है। और जो कहीं शासित देश के धर्म और सभ्यता, शासक के धर्म और सभ्यता से भिन्न हुए, तब तो शासित देश को और भी आपत्तियाँ उठानी पड़ती हैं ! संसार के जिन राष्ट्रों की उन्नति और विकास हुआ है, वह स्वाधीन स्थिति में रह कर ही हो सका है, परमुखापेक्षी बनने से नहीं; वस्तुतः सत्य तो यह है :—

जग में जितने बढ़े बढ़े सब अपने ही बल।
पर आश्रित बढ़ सके नहीं, करके भी छलबल ॥
सूर्य नित्य-प्रति सदा एक सी दीप्ति दिखाता।
वृद्धि-क्षय का रोग चन्द्र को नित्य सताता !!

यह बात निर्विवाद है कि परतन्त्र जीवन किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं, परन्तु किसी दूसरे से सहायता लेना परतन्त्रता नहीं है। एक दूसरे की सहायता पर तो यह सारा संसार स्थित है। कदाचित सहायता का भाव सृष्टि रचते समय परमात्मा के हृदय में भी रहता है, तभी तो पुरुष-प्रकृति की सहायता के लिए नारी-प्रकृति का जन्म होता है ! सहायता लेना किसी भी दशा में बुरा नहीं, परन्तु पराधीनता में जीवन बिताना अनुचित ही नहीं, हेय और त्याज्य भी है। परतन्त्र रहना अपने आपको बेच देना है। यही कारण है कि सब देशों ने पराधीनता को ठुकरा कर, स्वाधीनता का आदर्श सामने रक्खा है। सचमुच ही स्वाधीनता मानव जाति का जन्म-सिद्ध अधिकार है। सभी इस बात को जानते हैं कि—

अधीन होकर बुरा है जीना,
है अच्छा मरना स्वतन्त्र होकर !

* * *

सैनिकों के प्रति—

यह व्याख्यान मोशिए लेनिन ने इज़मेलहॉफ़ सेना की एक सभा में २३ अप्रैल, सन् १९१७ में दिया था। ज़ार का शासन दूर हो चुका था, परन्तु तब तक वर्तमान साम्यवादी राज्य की स्थापना नहीं हुई थी। रूस युद्ध में लगा हुआ था। इस वक्तव्य में मोशिए लेनिन ने भावी साम्यवादी सरकार का एक सुन्दर चित्र खींचा है।

"भाइयो ! सैनिको !!

आजकल संसार के सब राष्ट्र शासन-पद्धति-निर्माण के प्रश्न को हल करने में लगे हुए हैं। पूँजीपति, जिनके हाथों में आजकल राज्य की सत्ता है, यह चाहते हैं कि देश का शासन पार्लामेण्ट करे; जिससे वे अपनी आर्थिक शक्ति द्वारा उसके सदस्य बन कर राज्य की सारी सत्ता अपने हाथ में रख सकें। इस शासन-प्रणाली में ज़ार अवश्य न होगा, परन्तु देश का शासन पूँजीपतियों के हाथ में होगा और वे देश का प्रबन्ध पुलिस, सरकारी अधिकारी तथा सेना इत्यादि पुरानी संस्थाओंद्वारा करेंगे।

"हम ऐसे प्रजातन्त्र को नहीं चाहते। हम एक ऐसे प्रजातन्त्र का निर्माण करना चाहते हैं, जहाँ जनता की भलाई का इससे कहीं ज़्यादा ख़्याल किया जावे और जहाँ पर देश-प्रबन्ध में जनता का पूरा हाथ हो। रूस के क्रान्तिकारी मज़दूरों तथा सैनिकों ने ज़ार के राज्य को उलट दिया है और राजधानी से पुलिस को एकदम निकाल दिया है। सारे संसार का मज़दूरवर्ग रूस के क्रान्तिकारी मज़दूरों तथा सैनिकों की ओर गौरव तथा आशा-भरी निगाहों से देख रहा है। हम लोग आगामी मज़दूरों की स्वतन्त्रता के विश्वव्यापी संग्राम के सब से पहिले सिपाही हैं। इस क्रान्ति को हमने शुरू किया है, इसलिए हमारे लिए यह आवश्यक है, कि हम उसके कार्य को चलावें तथा उसे बलिष्ठ करें। हम लोगों को चाहिए कि हम अपने देश में फिर पुलिस की संस्था को स्थापित न होने देवें। राज्य की सारी सत्ता, सड़े से गाँव से लेकर राजधानी के हर एक मोहल्ले का शासन, शुरू से आख़िर तक अधिकार हमारे मज़दूरों के, सैनिकों के, तथा किसानों के प्रतिनिधियों के हाथ में होना चाहिए। देश की केन्द्रीय सरकार इन सब से बनी हुई एक राष्ट्रीय सभा के हाथ में रहनी चाहिए।

"उस शासन-प्रणाली में पुलिस को ज़रा भी स्थान न दिया जावे, सरकारी अधिकारी, जो अपने कार्यों के लिए जनता के ज़िम्मेदार नहीं हैं और जो स्वतः को जनता से बहुत बड़ा समझते हैं, एक भी न रक्खे जावें। जनता के विचारों तथा भावों से अलग रहने वाली सेना भी न रक्खी जावे। देश का प्रत्येक व्यक्ति स्वतः ही राष्ट्र का सैनिक हो, शासन-सभाओं का सदस्य हो तथा देश का प्रबन्ध करने वाला हो। देश में शान्ति स्थापित करने का कार्य उन्हीं को करना होगा और देश के मज़दूर तथा किसान उन्हीं की आज्ञा का पालन करेंगे और उन्हीं का हृदय से आदर करेंगे।

"केवल यही सत्ता—केवल सैनिकों तथा मज़दूरों के प्रतिनिधियों की सभा ही, जो बिना ज़मींदारों का पक्ष लिए, बिना लापरवाही दिखाए देश के ज़मीन के कठिन प्रश्न को हल करती है ! किसानों की सभाओं को चाहिए कि अब वे समय न खोवें और ज़मींदारों की ज़मीन पर एकदम क़ब्ज़ा कर लें। उन्हें चाहिए कि वे सब सामान की रक्षा करें, जिससे वह ख़राब न होने पावें औ अनाज की उत्पत्ति बढ़ावें, जिससे युद्ध में लगे हुए हमारे सैनिकों को बेहतर भोजन मिले। देश की सारी ज़मीन राष्ट्रवासियों मात्र की सम्पत्ति हो जावे। किसी भी व्यक्ति-विशेष का उस पर अधिकार न हो। इस कार्य को पूर्ण करने की ज़िम्मेदारी किसान-सभाओं को अपने हाथ में लेनी चाहिए। खेत के मज़दूर तथा ग़रीब किसानों को धनी किसानों के अत्याचारों से बचाने के लिए हमारे सामने दो साधन हैं। या तो उनकी ज़मीन किसान-सभा की और ज़मीन में मिला दी जावे या मज़दूर तथा किसानों को एकत्र करके उनकी एक अलग सभा बना दी जावे।

"पर एक बात कभी न भूलिएगा। पुलिस फिर से न स्थापित होने पावे, राज्य की सत्ता ऐसे धनी अधिकारियों के हाथ में न जाने पावे जो आप लोगों के प्रतिनिधि नहीं हैं, जिन्हें दुर्व्यवहार करने पर आप पद-स्खलित नहीं कर सकते हैं तथा जिन्हें लम्बी-लम्बी तनख़्वाहें मिलती हैं। आप लोग आपस में एक हो जाइए, एकता के सुदृढ़ सूत्र में बँध जाइए, आपस में सङ्गठन स्थापित कीजिए, दूसरों पर भरोसा न रखिए, केवल अपनी बुद्धि तथा अपने अनुभवों पर विश्वास रखिए। यदि आप यह कर सकेंगे, तो मुझे पूरा विश्वास है कि आप लोग केवल अपने देश को ही नहीं, वरन पूरे संसार को स्वतन्त्रता के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चला सकेंगे व मनुष्य-जाति को पूँजीपतियों के अत्याचारों से तथा युद्धों के भयानक फलों से बचा सकेंगे ! हमारी सरकार, जो आजकल पूँजीपतियों के हाथ में है, पूजीवाद की भलाई के लिए युद्ध में लगी हुई है। जर्मन पूँजीपतियों की तरह, जो कि विलहेम ऐसे हत्यारों के नेतृत्व में युद्ध कर रहे हैं, और देशों के भी पूँजीपति विदेशों को जीतने के लिए तथा उन्हें अपने माल बेचने का स्थान बनाने के लिए युद्ध में लगे हुए हैं ! इन लोभियों के कारण इस पृथ्वी के करोड़ों मनुष्यों को इस हिंसात्मक युद्ध में भाग लेना पड़ा है। युद्ध सम्बन्धी सामान तैयार करने वाले कारख़ानों में करोड़ों पौण्ड की पूँजी लगाई गई है। इन कारख़ानों से उनके स्वामियों को अवश्य धन मिलता है, परन्तु जन-सामान्य को इनसे क्या मिलता है—मृत्यु, भूख, निराशा तथा क्रूरता ! इस भयानक युद्ध से बचने के लिए, और समता तथा प्रेमपूर्ण सन्धि करने के लिए यह आवश्यक है कि राज्य की सत्ता सैनिक तथा मज़दूरों की प्रतिनिधि-सभा के हाथ में दे दी जावे। केवल मज़दूर तथा ग़रीब किसान ही इस युद्ध का अन्त कर सकते हैं, एक सुदृढ़ शान्ति स्थापित कर सकते हैं और संसार के प्रत्येक देश की स्वतन्त्रता के रक्षक बन सकते हैं। पूँजीपति इस दशा को लाने का दावा अवश्य करते हैं, परन्तु वे यह कदापि नहीं कर सकते। वे अपने बड़े-बड़े कारख़ानों द्वारा सम्पत्ति बटोरना चाहते हैं तथा कमज़ोर देशों को अपने क़ब्ज़े में रखना चाहते हैं। ऐसे लोभी संसार की शान्ति के रक्षक कदापि नहीं हो सकते।"

———

राष्ट्रीय आन्दोलन की कुछ महत्वपूर्ण हलचलें

श्री० मगीनदास मास्टर—आप बम्बई की 'युद्ध-समिति' के तेजस्वी 'डिक्टेटर' थे, जो नए ऑर्डिनेन्स के शिकार हुए हैं। आपने बम्बई के राष्ट्रीय वालन्टियरों के पुनर्सङ्गठन में बहुत उद्योग किया था।

काशी के बङ्गाली-टोला कॉङ्ग्रेस कमिटी की सर्व-प्रथम स्वयं-सेविका, जो अब प्रेज़िडेण्ट नियुक्त की गई हैं।

[illegible]
[illegible] —[illegible] आर० गोखले, एम० एल० सी०
खड़े हुए—श्री० एम० वी० गडबोले, श्री० एन० आर० गुञ्जल, एम० एल० ए० और श्री० एन० [illegible]

यह दृश्य कोकोनाडा के गाँधी स्कूल में होने वाले चरख़ा और तकली की प्रतियोगिता का है।

[illegible] था।

यदि अवसर दिया जाय तो

श्रीमती जे० पी० श्रीवास्तव (कानपुर), जो गवर्नमेण्ट द्वारा संयुक्त प्रान्तीय कौन्सिल के लिए सदस्या चुनी गई हैं।

बङ्गलोर के डॉक्टर नानजप्पा की धर्मपत्नी श्रीमती चिन्नाम्मल, जो म्युनिसिपल-कमिश्नर नियुक्त हुई हैं।

हर हाइनेस ट्रावनकोर की छोटी महारानी साहिबा, जो आगामी अखिल भारतवर्षीय महिला कॉन्फ्रेन्स की प्रेज़िडेण्ट चुनी गई हैं।

(१) कुनूर (मद्रास) के सेण्ट-जोसेफ़ कॉलेज के विद्यार्थियों का एक ग्रूप, जिसने हाल में 'अलीबाबा' का ड्रामा किया था।

(२) शिवपुरम् (मद्रास) के ज़मींदार श्री० पी० वी० मानिकम् की तीन विदुषी कन्याएँ, जिनमें से दो बी० ए० पास कर चुकी हैं और एक एफ़० ए० में पढ़ रही हैं।

१

(३) श्रीमती एफ़० राजमानिकम्, जो सालेम (मद्रास) के म्युनिसिपैलिटी की कौन्सिलर मनोनीत की गई हैं।

(४) श्रीमती वेद्वोयिनी रथम्मा—जो आङ्गोल (मद्रास) की म्युनिसिपैलिटी की सदस्या मनोनीत की गई हैं।

२

४

स्त्रियाँ क्या नहीं कर सकतीं?

बम्बई की सुप्रसिद्ध बैरिस्टर और 'चाँद' की लेखिका कुमारी मीठाँ टाटा बी॰ ए॰, एम॰ एस-सी॰, बार-ऐट-लॉ

पटना (बिहार) की सुप्रसिद्ध वकील और 'चाँद' की लेखिका कुमारी सुधांशु बाला हाज़रा, बी॰ ए॰, बी॰ एल॰

कुमारी लीलाबाई, बी॰ एस-सी॰; आप विलायत में वनस्पति-शास्त्र सम्बन्धी उच्च-शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

बङ्गाल की सुप्रसिद्ध सङ्गीत-प्रवीणा कुमारी सुनीशा सेन

संसार के कुछ महत्वपूर्ण आन्दोलन

अन्तर्राष्ट्रीय महिला-कॉङ्ग्रेस (बर्लिन) में भारतीय प्रतिनिधि

दाहिनी ओर से—श्रीमती धनवन्ती रामराव, एम० ए० (सभानेत्री), मिसेज़ डोरोथी जिनराजदास, मिसेज़ आचम्मा मत्थाई, श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय, मिस रामकृष्ण ।

कान्यकुब्ज

ब्राह्मणों में पहिला

विधवा-विवाह

पं० शालिग्राम शर्मा (दुबे)

श्रीमती देवकी देवी (दुबे)

अभी हाल ही में जापान के महिला-डॉक्टरों का यह दल अमेरिका के संयुक्त-राज्यों में भ्रमण कर के लौटा है। इस भ्रमण का एक मात्र उद्देश्य था—अमेरिका और जापान के बीच सौहार्द उत्पन्न करना। कहा जाता है, महिलाओं के इस दल को अपूर्व सफलता प्राप्त हुई है।

केसर की क्यारी

सितमगारी की तालीमें, उन्हें दी हैं, यह कह-कह कर—

कि रोता जिस किसी को देख लेना, मुस्कुरा देना !

हमको नाहक़ जलाना हो, किसी को तो जला देना,
कोई रोए तुम्हारे सामने, तुम मुस्कुरा देना !
दिलों पर बिजलियाँ गिरने की, सूरत गर कोई पूछे,
तो मैं कह दूँ, तुम्हारा देख लेना, मुस्कुरा देना !
सितमगारी की तालीमें, उन्हें दी हैं, यह-कह कह कर—
कि रोता जिस किसी को देख लेना, मुस्कुरा देना !
न क्यों हम इनक़िलाबे-दहर को मानें, अगर देखें,
गुलों का नाला करना, बुलबुलों का मुस्कुरा देना !
तरद्दुद बर्क़-रेज़ी में, तुम्हें करने की हाजत क्या ?
तुम्हें काफ़ी है हँसना, देख लेना, मुस्कुरा देना !

—(नवाब) "सायल" देहलवी

* * *

मेरा दिल ले के मुझको, ग़म तेरा बेइन्तेहा देना,
यह क्या बातें हैं, क्या घातें हैं, क्या लेना है, क्या देना ?
जो निकली है मेरे दिल से, तो कुछ करके दिखा देना,
फ़लक को फूँकना, ऐ आह ! दुनिया को जला देना !
मिलाया सैकड़ों को ख़ाक में, चर्ख़े सितमगर ने ;
न आया एक दिल का, दूसरे दिल से मिला देना !
जो रखते हैं वह हाथ अपना, तड़प कर दिल यह कहता है,
कोई आसान है, दर्दे-मुहब्बत का मिटा देना ?
वह ऐ क़ासिद, भला कब इन तेरी बातों में आते हैं,
बहुत दुशवार है मिलना, मिला लेना, मिला देना !
फ़ना के बाद, तुम मातम करो, यह क्या ज़रूरत है ;
मेरे ग़म को भी, मेरे साथ मिट्टी में मिला देना !
सुना है तुम बड़े उस्ताद हो, जादू जगाने में,
मेरी सोती हुई क़िस्मत को, भी आकर जगा देना !
फ़ुग़ाँ करने से पहले, यह दुआ मैं माँग लेता हूँ,
इलाही कुछ न कुछ इसका असर, मुझको दिखा देना !
वह यूँ सुनते नहीं ऐ "नूह" तो क्या तुमको मुशकिल है,
ग़ज़ल के नाम ही से, माजराए-ग़म सुना देना !

—"नूह" नारवी

* * *

बिगड़ कर दफ़अतन, कोई सितम मुझ पर न ढा देना,
ज़रा पहले से कह देना, बता देना, जता देना !
बनाई तुमने ज़ुल्फ़ अपनी, तो ख़ूबी कौन सी ठहरी ?
मेरे बिगड़े हुए कामों को, लाज़िम था बना देना !
मुहब्बत की मुहब्बत है, इबादत की इबादत है,
जहाँ जलवा किसी का देख लेना, सर झुका देना !
तुम्हारी ख़ुश ख़रामी को भी, चालें ख़ूब आती हैं,
कहीं आफ़त उठा देनी, कहीं फ़ितना उठा देना !
मेरा फिरना पहुँच कर, वह तुम्हारी बज़्मे इशरत से,
तुम्हारा याद करना, याद करके फिर भुला देना !
हमें बरबाद कर देना, तुम्हारी दिल्लगी ठहरी,
हमारा खेल ठहरा, ख़ाक में दिल को मिला देना !
पयामी दौड़ते हैं, रोज़ कब तक, रोज़ दौड़ेंगे,
बहुत मुशकिल है, दो बिछुड़े हुओं का भी मिला देना !
जनाबे "नूह" के रोने पे यह इरशाद होता है,
न आया कुछ इन्हें, आया तो हाँ तूफ़ाँ उठा देना !

—"नूह" नारवी

* * *

असर ऐ आहे सोज़ाँ, कुछ न कुछ अपना दिखा देना,
न आएँ वह तो एक दिन, आग ही घर में लगा देना !
ख़ुदा का काम है यूँ तो, मरीज़ों को शफ़ा देना,
मुनासिब हो, तो एक दिन हाथ से अपने दवा देना !
तुम्हारा फ़र्ज़ है, अपनी सी कोशिश चाहिए तुमको,
मगर आसाँ नहीं है, मेरी हस्ती का मिटा देना !
यहाँ वह वक़्त है, अब दिल की क़ूवत घटती जाती है,
तुम्हें तो खेल है, बातों ही बातों में रुला देना ।
कोई तदबीर बन पड़ती नहीं, क्या होने वाला है,
मुझे आसान होता, काश उन्हें दिल से भुला देना !
तअल्लुक़ हो न हो दिल में, भरा है दर्द कुछ ऐसा,
जहाँ सब रो रहे हों, ख़ुद भी दो आँसू बहा देना !
यह कह कर क़ब्र पर, फिर याद अपनी कर गए ताज़ा,
अरे ओ मरने वाले, अब मुझे दिल से भुला देना !
किसी को देख कर, ऐसा न हो मैं फिर बहक जाऊँ ?
मुझे रोज़े-जज़ा, एक दूसरा दिल ऐ ख़ुदा देना !
मेरी मैयत पे किस दावे से वह कहते हुए आए,
हटा देना, ज़रा इन रोने वालों को हटा देना !

—"अज़ीज़" लखनवी

* * *

मेरे दिल को मिटा देना, मेरे दिल को लुटा देना,
हँसी समझे हुए हैं, आप अपना मुस्कुरा देना !
न भूलेगा, मुझे अग़यार के घर आने-जाने में,
वह अपने हाथ से, नक़्शे-क़दम उनका मिटा देना !
तुम्हारा फ़र्ज़ ठहरा, कुशतए-हसरत की तुरबत पर,
चराग़ आकर जलाना, और दो आँसू बहा देना !
कोई भूले तो भूले, हम न भूले हैं, न भूलेंगे,
तुम्हारा नाज़ से, आँखें मिला कर मुस्कुरा देना !
जनाज़ा जब इधर से, कुशतए-बेदाद का निकले,
ज़रा तुम भी, ख़ुदा के वास्ते काँधा लगा देना !
यही है बारे ग़म, तो बैठ जाएगा हमारा दिल,
सरे महफ़िल किसी का, अपनी महफ़िल से उठा देना !
मुझे रातों को नींद आती नहीं, करवट बदलता हूँ,
तेरे बस में, मेरी तक़दीर का भी है जगा देना !
चराग़े-आरज़ू से, हिज्र की शब छेड़ रहती है,
कभी इसको जला देना, कभी इसको बुझा देना !
यही आया हमें, इसके सिवा क्या ख़ाक आया है,
किसी की याद में, सारे ज़माने को भुला देना !
किसी बेहोश का कहना, यह उनसे होश में आकर,
ख़ुदा के वास्ते फिर चेहरए-ज़ेबा दिखा देना !
तुम्हारी याद में दिन-रात यह क्या-क्या तड़पता है,
कहीं ऐसा न करना अपने "बिस्मिल" को भुला देना !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

(गताङ्क से आगे)

संन्यासी !

आधी शताब्दी तक प्रकाश और अन्धकार के रहस्यों पर मनन करता हुआ ।

जो विश्रान्ति की शय्या पर घुटने टेक चुका था ।

थकित पाद, और शिथिल बाहु जिसकी झुकी पड़ती थीं ।

इस घोर क्रन्दन को सुन कर चौंका ।

जीवन की अन्तिम घड़ियों में—हृदय के रस के अन्तिम विन्दु-कण नेत्र-कोष पर उमड़ आए ।

वृद्ध संन्यासी—

अपने भगवे वस्त्रों को सँभाल कर—अपने महान् पथ से तत्काल लौटा ।

वहाँ !

* * *

वहाँ ।

जहाँ—लौकिक कल्याण की जगह लौकिक प्रलय हो रहा था ।

जहाँ—शक्तिधर शिव रौद्र-नृत्य कर रहे थे ।

उसने क्षण भर खड़े होकर देखा ।

सब अलौकिक था ।

रक्त-सौन्दर्य पर बूढ़ा मोहित हो गया ।

यौवन की उठती तरङ्गों में जिन्होंने मदिरा की परछाई में रक्त-सौन्दर्य का अध्ययन किया है, वे बूढ़े संन्यासी के मोह को समझें ।

आगे बढ़ कर ।

उसने अपना हृदय खोल कर दिखा दिया ।

उसने, बूढ़े संन्यासी ने ! यौवन के रसिया की तरह कहा—हे विश्वध्वंसिनी ! इस हृदय में निवास करो ।

यौवन और आवेश की मतवाली ठठा कर हँसी ।

शुष्क और जीर्ण मांस-खण्ड उसे पसन्द न था । असंख्य यौवन और शैशव उसके सम्मुख थे ।

प्रत्येक में ताज़ा रक्त था । अदम्य यौवन था ।

प्रत्येक को उसने चखा और तृप्त होकर भोगा !!

असूर्यम्पश्या महिलाएँ—

* * *

असूर्यम्पश्या महिलाएँ—

और अबोध मुग्धा रोने लगीं ।

सरल-तरल स्नेह की सजीव मूर्तियाँ ; सौन्दर्य और सुकुमारता की वास्तविक प्रतिलिपियाँ, पुरुष-स्तम्भों की आशा-लतिकाएँ, आशा और विश्वास की देवियाँ ।

अपने चिर-अभ्यस्त सहज हास्य को खोकर—

दारुण चीत्कार करने लगीं ।

वातावरण भयङ्कर निनाद से गुञ्जायमान हुआ ।

इन आपदाग्रस्ताओं को रणचण्डी—देख-देख कर सौतिया डाह से अट्टहास कर रही थी ।

क्षण भर बाद—

(क्रमशः)

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

उस दिन भारत के प्रधान सेनापति की बिदाई के भोज में जो स्पीचें हुई थीं, उसमें एक महोदय ने फ़र्माया कि "हम लोग युद्ध के लिए इस समय जितने तैयार हैं, उतने कभी नहीं थे।" यह पढ़ कर अपने राम की बाईं आँख फड़कने लगी। सोचा, यह युद्ध की तैयारी क्यों? किस पर चढ़ाई होगी, किसका घर लूटा जायगा? आख़िर भारतीय सेनाओं को युद्ध की तैयारी से क्या सरोकार? भारत में जो आन्दोलन चल रहा है, उसके लिए पुलिस और उसके डण्डे ही काफ़ी हैं! सोचते-सोचते ध्यान आया कि 'बालकन' के सम्बन्ध में इटली और फ़्रान्स में जो रञ्जिश बढ़ रही है—कदाचित उसी के लिए हमारी ब्रिटिश सरकार तैयारी कर रही है; क्योंकि ब्रिटिश सरकार तो ईश्वर की दया से ख़ुदाई फ़ौजदार है। तमाम ज़माने का ठेका लिए हुए है। क़ाज़ी जी शहर के अन्देशे से ही दुबले रहते हैं—ब्रिटिश सरकार पर तो सारी पृथ्वी का अन्देशा सवार रहता है। ब्रिटिश सरकार की तो यह दशा है कि "ग़म नदारी बुज़ बख़र" (कोई चिन्ता न हो, तो भेड़ ख़रीद लो, चिन्ता हो जायगी) ख़ाली बैठे शरीर में ज़ङ्ग लग जाने का भय रहता है—इसलिए कोई न कोई शिगूफ़ा होना ही चाहिए। यह तो अपने राम का अनुमान है। परन्तु ब्रिटिश सरकार के विधाता क्या करेंगे और इनके मन में क्या है, इसका पता मनुष्य को क्या, ब्रह्मा को भी नहीं लग सकता। और की तो बिसात ही क्या है, ख़ास इङ्गलैण्ड की जनता को इनकी माया का पार नहीं मिलता। भारत की सच्ची ख़बरें प्राप्त करने के लिए इङ्गलैण्ड में एक कमेटी बनी है। मालिकों तक को अपने राज्य की घटनाओं के सम्बन्ध में सच्ची ख़बरें नहीं मिलतीं। वाह रे मालिक और वाह रे नौकर! इङ्गलैण्ड की जनता अपने को साम्राज्य का मालिक समझती है। और क़ायदे से उसे ऐसा समझना ही चाहिए। अजी जनाब, चाहे कोठी-कोठले को हाथ लगाना नसीब न हो, परन्तु घर-द्वार तो अपना है। यों दिखाने के लिए इङ्गलैण्ड में पार्लामेण्ट है; परन्तु शासन केवल मुट्ठी भर आदमी करते हैं। इन्हीं मुट्ठी भर आदमियों की मुट्ठी में इङ्गलैण्ड तथा उसके मातहत देशों का भाग्य बन्द रहता है। गत महायुद्ध में इन्हीं मुट्ठी भर आदमियों ने लाखों आदमी कटवा दिए थे। सन्, १९१४ की ३री अगस्त के प्रातःकाल तक इङ्गलैण्ड को तो क्या, पार्लामेण्ट के मेम्बरों तक को यह पता नहीं था, कि इङ्गलैण्ड को भी युद्ध में भाग लेकर अपने बच्चों को कटवाना पड़ेगा। हालाँकि यह बात एक वर्ष पहले तय हो चुकी थी। तय करने वाले ये ही मुट्ठी भर देवता थे। झूठ बोलने में ये देवता इतने बढ़े-चढ़े हैं कि भगवान की माया भी इनके आगे तोबा बोलती है। सन्, १९१३ की १० मार्च को लॉर्ड 'हफ़ सेसिल' ने प्रधान मन्त्री से पूछा था—"क्या इङ्गलैण्ड ने फ़्रान्स को, समय पड़ने पर, फ़ौज की सहायता देने का वचन दिया है?" प्रधान मन्त्री महोदय ने साफ़ इन्कार कर दिया—बोले, "यह बिलकुल ग़लत बात है, ऐसा कोई वचन नहीं दिया गया है।" हालाँकि ऐसा वचन सन्, १९१३ की १० मार्च के बहुत पहले दिया जा चुका था! लॉर्ड सेसिल के प्रश्न के कुछ ही दिनों बाद सर विलियम बाइल्स ने भी यही प्रश्न किया; परन्तु उन्हें भी वही उत्तर दिया गया। प्रधान मन्त्री के उत्तर के पश्चात उसी समय सर एडवर्ड ग्रे ने भी बड़े ज़ोरों से इस बात को अस्वीकार किया था। वही सर एडवर्ड ग्रे ३री अगस्त सन्, १९१४ की शाम को हाउस ऑफ़ कॉमन्स में बोले—"इस समय फ़्रान्स को सहायता देना इङ्गलैण्ड का कर्त्तव्य है, क्योंकि इसमें इङ्गलैण्ड की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। इस सम्बन्ध में फ़्रान्स तथा इङ्गलैण्ड के मध्य सन्, १९०६ से परामर्श हो रहा था और उस परामर्श के फलस्वरूप हम फ़्रान्स को सहायता देने के लिए बाध्य हैं।" यह सुन कर पार्लामेण्ट के मेम्बर अवाक् रह गए।

सम्पादक जी! देखा आपने, क्या कमाल है। सन्, १९०६ से जो बात तय हो रही थी और जो सम्भवतः सन्, १९१४ के कई वर्ष पहले तय हो चुकी थी, उस बात का पता पार्लामेण्ट के मेम्बरों को १९१४ की ३री अगस्त को लगता है [दुबे जी महाराज! मैं व्यक्तिगत रूप से एक मज़ेदार बात आपको और भी बतला देना चाहता हूँ, अपनी डायरी में नोट कर लीजिए, कभी काम देगी। आप शायद यह बात भूल गए कि 'राजविद्रोह' के अपराध में जो अभागे भारतीय नवयुवक "मेरठ-षड्यन्त्र" वाले केस में सन्, १९२९ के मार्च मास में पकड़े गए थे (क्षमा कीजिएगा, तारीख़ याद नहीं पड़ती) और जो आज तक जेल में पड़े सड़ रहे हैं—उनकी गिरफ़्तारी का समाचार बेचारे इङ्गलैण्ड वालों को पहिली बार मिला था ८वीं सितम्बर, १९३० को। और लुत्फ़ यह कि यह समाचार यहाँ से 'तार द्वारा' भेजा गया था। इस बात का पहिली बार भण्डाफोड़ हुआ इसी २४ अक्टूबर को, जब कि मि० रेगिनॉल्ड रेनॉल्ड्स ने अपने व्याख्यान में इस कूटनीति को बड़े कड़े शब्दों में धिक्कारा था। विश्वास कीजिए, विलायती जनता में इस समाचार से एक बार ही तहलक़ा मच गया था —स० 'भविष्य'] और वह भी सर एडवर्ड ग्रे के बतलाने से—और ४थी अगस्त को महायुद्ध आरम्भ हो जाता है! महायुद्ध आरम्भ होने के पहले जब कोई पार्लामेण्ट का मेम्बर किसी केबिनेट मिनिस्टर से प्रश्न करता था कि—"भई, यह बालकन का झगड़ा कैसा है, इसका क्या परिणाम होगा?" तो केबिनेट मिनिस्टर साहब बड़ी लापरवाही से उत्तर देते थे—"वह एक बहुत छोटी बात है, हमें उसकी ओर ध्यान भी न देना चाहिए।" परन्तु उस छोटी बात ने संसार के कितने आदमियों के प्राण लिए, यह केवल इस बात से जाना जा सकता है कि यदि किसी सड़क पर एक रेखा खींच दीजिए और मनुष्यों की एक सीधी क़तार से उस रेखा को पार करवाइए तो जितने आदमियों को उस रेखा के पार करने में चालीस महीने लगेंगे (ये आदमी रात-दिन चलते रहेंगे एक क्षण के लिए भी न रुकेंगे) उतने आदमी गत महायुद्ध में स्वर्गलोक सिधारे !! यह न समझिएगा कि यह हिसाब मेरा लगाया हुआ है इसलिए "चण्डूख़ाना गप्प" के योग्य है। अपने राम का हिसाब-किताब से सदा असहयोग रहा है। अपने राम ऐसे शुष्क और नीरस विषय के पास भी नहीं फटकते—यहाँ तक कि घर की आमदनी और ख़र्च का हिसाब-किताब भी लल्ला की महतारी के ज़िम्मे है। अपने राम उस ओर से बेफ़िक्र हैं। सम्पादक जी! यह हिसाब उन लोगों का लगाया हुआ है, जिन-जिन पर महायुद्ध की ज़िम्मेदारी थी। केवल इङ्गलैण्ड के पाँच अरब पॉण्ड (बहत्तर अरब रुपयों के लगभग) युद्ध में ख़र्च हुए थे। और युद्ध समाप्ति से आज तक इङ्गलैण्ड सत्रह लाख आदमियों को युद्ध-पेन्शन दे रहा है। इनमें डेढ़ लाख युद्ध-विधवाएँ हैं। और शेष ऐसे लोग हैं, जो युद्ध में अन्धे, लूले-लँगड़े हो जाने के कारण अपनी जीविकार्जन करने में असमर्थ हैं। यह सब केवल एक छोटी सी बात के पीछे हुआ—और इसलिए हुआ, कि अपने को संसार में सब से अधिक बुद्धिमान समझने वाले चन्द आदमियों ने अपने देश-वासियों ही को—उन देशवासियों को जिन्होंने उन्हें अपनी रक्षा और पथ-प्रदर्शन के लिए नियुक्त किया था—धोखा दिया और अन्धकार में रक्खा! यदि इङ्गलैण्ड की जनता को समय पर यह बतला दिया जाता, कि इङ्गलैण्ड को युद्ध में फ़्रान्स की सहायता करनी पड़ेगी तो सम्भव है, जनता इस बात पर राज़ी न होती—और इसके विरुद्ध आन्दोलन करती। आन्दोलन के परिणाम-स्वरूप इङ्गलैण्ड फ़्रान्स को सहायता देने से इन्कार करता। इङ्गलैण्ड के इन्कार करने पर सम्भव है फ़्रान्स, कोई बलवान सहायक न मिलने के कारण, युद्ध को बचा जाता और सन्, १९१४ से १९१८ तक का यूरोपियन इतिहास ख़ून से तर न होने पाता! केवल चन्द आदमियों की स्वेच्छाचारिता, धूर्त्तता, मिथ्याभाषण तथा बेईमानी ने इङ्गलैण्ड को और इङ्गलैण्ड के सहायक देशों को कितना बड़ा नुक़सान पहुँचाया? सन्धि होने पर इन्हीं धूर्त्तों ने विजय का ढोल पीट-पीट कर ज़बरदस्ती रोते हुओं को हँसाया। उस समय भी कुछ लोगों ने इस चाल को समझा था और आज तो इङ्गलैण्ड का प्रत्येक समझदार आदमी यह जान गया है, कि गत महायुद्ध में मिनिस्टर्स ने देश के साथ विश्वासघात करके देश के लाखों आदमी कटवा दिए, अरबों रुपए फूँक दिए और देश की छाती पर १७ लाख व्यक्तियों की पेनशन का व्यर्थ बोझ लाद दिया! इसीलिए फिर बालकन के सम्बन्ध में एक छोटी सी बात के लिए इटली तथा फ़्रान्स में मनमुटाव बढ़ता देख कर इङ्गलैण्ड के समझदार लोग निकट-भविष्य में एक संसार-व्यापी युद्ध का प्रादुर्भाव महसूस करते हुए अभी से यह कह रहे हैं कि "हम लोग युद्ध नहीं चाहते।" यहाँ तक कि वे "सन्धि-दिवस" तक को घृणा की दृष्टि से देखने लगे हैं और इस बात का आन्दोलन कर रहे हैं, कि सन्धि-दिवस मनाना बन्द कर दिया जाय। वे कोई कार्य और कोई बात ऐसी नहीं देखना चाहते कि जिससे कि उनका ध्यान युद्ध की ओर आकर्षित हो। इङ्गलैण्ड के फ़ील्ड-मार्शल सर विलियम रॉबर्टसन ने कहा है —"युद्ध एक बहुत ही घृणित वस्तु है। वह विजेता के लिए भी उतनी ही घातक है, जितना

१८वें पृष्ठ का शेषांश

के लिए रण-भेरी बजाएगा, उसी दिन भारत का भाग्य चमक उठेगा। यह तैंतीस करोड़, सब एक हो जायँगे—न कोई हिन्दू होगा न मुसलमान, न कोई सिक्ख होगा न ईसाई। आपस में भ्रातृ-भाव होगा—एक अलौकिक स्नेह का स्रोत प्रवाहित हो रहा होगा। हम सब एक माता के लाल कहलाएँगे। न कलह होगी न भेद-भाव। हम अपनी भारत-माता के अधिकारों की रक्षा एक होकर करेंगे। हम सब एक साथ मरेंगे, एक साथ जिएँगे। संसार यह अपूर्व परिवर्तन देख कर चकित हो जायगा !!!

* * *

बाल-रोग-विज्ञानम्

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल-मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम ख़र्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्त्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है और वे शिशु सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार कर सकती हैं। मूल्य लागत मात्र २॥) रु०

निर्मला

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वासनान्ध षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। पुस्तक का मूल्य २॥) ; स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

छप रही है ! छप रही है !!

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-संसार को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुवन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुवन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। पुस्तक को सचित्र प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

अपराधी

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोर्स्ट और त्रियों के "डैमेज़डगुड्स" या 'मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे।

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। मूल्य २॥) ; स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

देवताओं के ग़ुलाम

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामे एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं ; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। पढ़िए और आँसू बहाइए !! मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २)

शिशु-हत्या और नरमेध-प्रथा

इस पुस्तक में उस जघन्य एवं पैशाचिक कुप्रथा का वर्णन किया गया है, जिसके कारण किसी काल में असंख्य बालकों को मृत्यु के घाट उतार दिया गया। अविद्या, स्वार्थ एवं अन्धविश्वास के कारण उस समय जो भयङ्कर अत्याचार किए जाते थे, उनके स्मरण मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। एक बार पुस्तक को अवश्य पढ़िए और उस समय की स्थिति पर दो-चार आँसू बहाइए !! मूल्य केवल ।)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

कि विजित के लिए। मेरा यह प्रस्ताव है, कि प्रत्येक मनुष्य को युद्ध के विरुद्ध आन्दोलन करना चाहिए और राजनीतिज्ञों को इस बात के लिए विवश करना चाहिए कि वे अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को सुलझाने का कोई शान्तिमय उपाय ढूँढ़े और युद्ध जैसे विनाशकारी उपाय को सदैव के लिए तिलाञ्जलि दे दें। मुझे अपने पचास वर्ष के सैनिक जीवन से जो अनुभव हुआ है वह मुझे यह बात कहने के लिए विवश करता है।" सम्पादक जी! यह एक सेनापति के उद्गार हैं, युद्ध के नाम से भय खाने वाले किसी डरपोक-रईस के नहीं! आज इङ्गलैण्ड की जनता यह कह रही है कि "युद्ध तथा सन्धि करने के लिए हमारे यहाँ भी अमेरिका जैसी सुव्यवस्था होनी चाहिए।" अमेरिका में एक "पर-राष्ट्र-समिति" है। इस समिति के परामर्श बिना अमेरिकन सेनेट न किसी देश से सन्धि कर सकता है और न युद्ध। यह समिति युद्ध तथा सन्धि की उपयोगिता पर अपनी रिपोर्ट सेनेट में भेजती है। यह रिपोर्ट सेनेट में जाने के पहले सब समाचार-पत्रों में प्रकाशित की जाती है और इस प्रकार अमेरिकन जनता को पता चल जाता है, कि समिति क्या करने का परामर्श दे रही है। उस समय जनता उसके पक्ष अथवा विपक्ष में आन्दोलन करती है—और इसी आन्दोलन के अनुसार सेनेट रिपोर्ट को पास अथवा रद्द करता है। इस प्रकार वहाँ जनता को अन्धकार में नहीं रक्खा जा सकता और उसको इस बात का मौक़ा दिया जाता है, कि वह किसी बात का समर्थन अथवा खण्डन करे। कितनी अच्छी व्यवस्था है! परन्तु इङ्गलैण्ड के ठेकेदार अपने यहाँ ऐसी व्यवस्था नहीं रखना चाहते। ऐसा करने से उनके हौसले कैसे पूरे होंगे। और अभी जो हालत है उससे उनके पितामह का क्या नुक़सान है? उन्हें तो युद्ध में लड़ने जाना नहीं पड़ेगा। मरने-कटने के लिए जनता है। उनके लिए जनता शतरञ्ज के मोहरे हैं, जो उनकी इच्छानुसार कटते-मरते हैं! ख़ैर जी, अपने से क्या सरोकार! अपने राम को भी लड़ने नहीं जाना पड़ेगा इसलिए अपने राम भी उनसे किसी बात में कम नहीं हैं। लड़ाई हो तो अच्छा है—ज़रा लुत्फ़ ही देखने को मिलेगा। हिन्दुस्तानियों को भी लड़ाई की चाट पड़ी हुई है। क्योंकि गत लड़ाई के समय में यार लोगों ने ख़ूब वारे-न्यारे किए थे। परन्तु अफ़सोस यही है कि ब्रिटिश सरकार दूसरों के फेट में पैर डालने के लिए तो सदा कमर बाँधे रहती है; परन्तु अपने मामलों को नहीं सुलझाती। दूसरों के साथ अन्याय होने पर बिना कहे पञ्च बनने को तैयार! और स्वयं जो दूसरों के साथ अन्याय करते हैं, उसके सम्बन्ध में ईसा मसीह की भी मानने को तैयार नहीं। परन्तु इस बार पञ्च बनने का मज़ा मिलेगा—क्योंकि उधर इङ्गलैण्ड की जनता भी अभी से चौकन्नी हो रही है और इधर भारत की जो दशा है, उसे देखते हुए प्रतीत होता है, कि यहाँ से भी गत महायुद्ध जैसी सहायता का चतुर्थांश भी कदाचित ही मिले। अतएव अपने राम की सलाह तो यह है कि इस बार ब्रिटिश सरकार के विधाताओं को ज़रा सोच-समझ कर काम करना चाहिए। ऐसा न हो कि चौबे जी दुबे जी ही रह जायँ, तो अपने राम को उन्हें अपनी बिरादरी में शामिल करना पड़े—हालाँकि ऐसी इच्छा बिलकुल नहीं है। सम्पादक जी! इस बार जो युद्ध होगा वह बड़ा विकट होगा। स्वर्गीय मार्शल "फ़ॉश" कह गए हैं कि "अगला युद्ध एक संसार-व्यापी युद्ध होगा। उसमें प्रत्येक राष्ट्र के केवल पुरुषों को ही नहीं, स्त्रियों और बच्चों तक को भाग लेना पड़ेगा।" मार्शल फ़ॉश का कहना बिलकुल सत्य हुआ। भारत में जो अहिंसा-संग्राम चल रहा है, उसमें तो स्त्रियाँ और बच्चे भाग ले ही रहे हैं। भारत ने तो मार्शल फ़ॉश की भविष्यवाणी पूरी कर दी, अब अन्य देशों को भी चाहिए कि वे भी उनकी भविष्यवाणी पूरी करने के लिए पूरा ज़ोर लगावें। इङ्गलैण्ड बिलकुल तैयार बैठा है—(इङ्गलैण्ड से अपने राम का तात्पर्य उन्हीं इने-गिने मिनिस्टर्स से है, न कि इङ्गलैण्ड की जनता से) दूसरे देश भी तैयार हो जायँ तो आनन्द आ जाय। एक बार प्रलय का दृश्य तो देखने को मिल जायगा—क्यों सम्पादक जी? ठीक है न?

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

विधवा-विवाह

[श्री० बृन्दावनदास, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

गत भाद्रपद की 'माधुरी' के बाल-महिला-मनोरञ्जन शीर्षक स्तम्भ में पं० हरिस्वरूप जी त्रिपाठी लिखित "दो बातें" शीर्षक लेख हमने पढ़ा। त्रिपाठी जी की दो बातों में से एक बात 'विधवा की समस्या' है। आपकी सम्मति में विधवाओं को अपनी वर्तमान दशा में ही सन्तुष्ट रहना चाहिए। सनातन-धर्म ने जो कुछ नियम उनके लिए बना दिए हैं, वे सर्वोत्कृष्ट ही हैं। आपका कथन है—"जीवन का उद्देश्य पारमार्थिक है। इन्द्रिय सुख नहीं, मोक्ष है, सांसारिक विलास नहीं।" परन्तु त्रिपाठी जी! आपने क्या यह सिद्धान्त बेचारी स्त्रियों के लिए ही निश्चित किया है? क्या पुरुष-वर्ग इसके अनुशीलन से विमुक्त कर दिया गया है? क्या अधीनस्थ होने के कारण निर्बल पर ही बल की आज़माइश करना सनातन-धर्म है?

आप आगे लिखते हैं—"यह बुद्धि की प्रेरणा है कि विधवा स्त्री विरागिनी है। वह सुख के बीच में रहते हुए सुख से अलग है।" धन्य है आपकी बुद्धि की प्रेरणा! को यदि हम पुरुषों की उच्छृङ्खल वृत्तियों एवं उनके नैतिक पतन को आँख खोल कर देखें तो हमको मालूम होगा, कि वर्तमान दूषित वायु-मण्डल में तो एक साधारण विधवा की बुद्धि की प्रेरणा कुछ और ही होगी। हमको स्मरण रखना चाहिए, कि मानव-सृष्टि में स्त्री और पुरुष दोनों समान हैं। यदि पुरुष विकारों से युक्त है तो स्त्री भी है। कुछ विद्वानों की सम्मति में तो स्त्रियों में काम-विकार पुरुषों की अपेक्षा कुछ अधिक है।

यदि हम समझते हैं कि विधवा-विवाह से पातिव्रत-धर्म ख़तरे में है, तथा यदि हम चाहते हैं कि विधवा-विवाह न हो, तो हमको व्यावहारिक दृष्टि से काम लेना पड़ेगा। हमको चाहिए कि हम स्त्री के मनोभावों को उसी रूप में समझें, जिस रूप में कि हम अपने मनोभावों को समझते हैं। विधवा-संयम का आदर्श संसार में तभी टिक सकता है, जब पुरुष पत्नीव्रत सीखें। कहने की आवश्यकता नहीं, परिवारों में विकारों के वश होकर पुरुषों ने ही दूषित वायु-मण्डल उत्पन्न कर दिया है और फिर आशा की जाती है कि विधवाएँ संयम रक्खें।

साधारणतया देखने में आया है कि षोडश वर्षीया अपनी पुत्री को विधवा के रूप में अपने गृह में देखते हुए एक ४० वर्ष का कल्याण-भार्य दूसरा विवाह करता है! एक ही परिवार में एक ही स्थान पर रहने वाले दो व्यक्तियों में से एक १६ वर्ष का व्यक्ति तो चारपाई में मुँह देकर रुदन करे और ५० वर्ष का बूढ़ा सुहाग-रात का आनन्द लूटे! एक पुत्री जो कुछ भी अपने जीवन में सीखेगा वह अपने पिता ही से तो सीखेगी। भला; हम पर-पक्ष के मेधावी विद्वानों से पूछना चाहते हैं, ऐसे पिता से पुत्री अथवा श्वसुर से पुत्र-वधू क्या शिक्षा ग्रहण करेगी, संयम से वैधव्य व्यतीत करना या कुछ और?

जब पुरुष तो ३०, ३५, ४० यहाँ तक कि ५० वर्ष की अवस्था में भी एक स्त्री की मृत्यु के बाद दूसरी स्त्री से, दूसरी के बाद तीसरी से; यहाँ तक कि सात-सात स्त्रियों से विवाह कर लेते हैं, तो न मालूम हमारी कल्पना में ही यह बात कैसे आ जाती है कि उन्हीं के परिवार में साथ-साथ रहने वाली उनकी लड़कियाँ, बहुएँ और बहिनें वैधव्य का कठिन व्रत संयमपूर्वक पालन कर सकती हैं! मैं तो ऐसी कल्पना करने वाले महाशयों को स्वार्थी एवं हृदय-शून्य कहने में बिलकुल नहीं हिचकता हूँ।

सच्चा वैधव्य एक विधवा के लिए आदर्श जीवन है। परन्तु यह बातों से तो न होगा। पुरुष तो पाँच-पाँच, सात-सात विवाह करते जायँ, स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करके, उनकी काम-वासनाएँ जागृत करते जायँ। कामादिक विकारों के वश होकर परिवारों में व्यभिचार बढ़ाते जायँ और पुरुषों द्वारा फिर हुए इस दूषित वायु-मण्डल में रहने वाली स्त्रियाँ सच्चा वैधव्य निबाहें—यह आशा मूर्खतापूर्ण एवं दुराशा मात्र है।

यदि हम सच्चा वैधव्य जीवन स्थिर करना चाहते हैं तो हमको पुरुषों में एक पत्नीव्रत का प्रचार करना होगा। सब से पहिले एक ऐसे क़ानून की योजना करनी होगी, जिससे कोई कल्याण-भार्य दूसरा विवाह न करने पावे। किसी आदर्श के संस्थापनार्थ केवल स्त्रियाँ ही अवनति नहीं हुई हैं। इस विषय में पुरुषों को नेतृत्व ग्रहण करना पड़ेगा। यदि पुरुष ऐसा करने लगें, तो हम कहेंगे कि स्त्रियों के लिए भी ऐसा क़ानून बना दिया जाय, कि वे दूसरा विवाह न कर सकें।

आगे चल कर त्रिपाठी जी लिखते हैं—"हाँ, यदि कल्याण-भार्य के कोई पुत्र नहीं है, तो उसे दूसरी शादी कर लेनी चाहिए—सांसारिक सुखों के लिए नहीं, पुत्रार्थ पितरों का ऋण चुकाने के लिए। कहा जा सकता है कि स्त्री पर पितरों का ऋण नहीं। स्त्री की गणना पुरुषों से पृथक मानी ही नहीं गई है, इसी कारण तो स्त्री का गोत्र बदल जाता है, पुरुष का नहीं! यदि आप इसे धार्मिक

भूल कहें, तो आप तन्मयता की महिमा को घटाते हैं और प्रकृति-प्रदत्त पुरुष-प्राधान्य पर कुठाराघात कर रहे हैं।" पाठकगण, ज़रा इस 'लूली दलील' और स्वार्थ-बुद्धि पर तो विचार कीजिए। क्योंकि आपको तो विधवाओं को यातनाएँ भोगने देना अभीष्ट है, आपने कल्याण-भार्य को विवाह करने की आज्ञा देकर एकतरफ़ा डिकरी दे दी। पुत्र की इच्छा करने वाला कल्याण-भार्य काम-वासना की तृप्ति के लिए शादी नहीं करता, इस बात का क्या प्रमाण है? अपना मतलब गाँठने के लिए स्त्री को पुरुष से अपृथक मानना, स्त्री-जाति की चापलूसी करना नहीं तो क्या है? प्रकृति-प्रदत्त पुरुष-प्राधान्य कल्याण-भार्य को पुत्र-प्राप्ति की आड़ में अनेकों शादियाँ करने के लिए ही है अथवा स्वयं कुछ अपने सुखों की आहुति देकर दूसरों के लिए आदर्श स्थापित करने के लिए है! यह तो 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत को चरितार्थ करता है।

विधवाओं की वर्तमान स्थिति के कारण हिन्दू-जाति को जो हानि उठानी पड़ी है, वह अनिर्वचनीय है। सामाजिक ह्रास, ईसाई-मुसलमानों में हमारी बहू-बेटियों का जाना, वेश्याओं की वृद्धि, गुप्त व्यभिचार, शारीरिक कुव्यवस्था, भ्रूण-हत्या, कौटुम्बिक क्लेश व्यक्तिगत अत्याचार एवं यातनाएँ विधवाओं की वर्तमान स्थिति के भयङ्कर दुष्परिणाम हैं।

हमको चाहिए कि हम जान-बूझ कर वस्तु-स्थिति एवं नग्न-सत्य से आँखें बन्द न करें! निराधार सिद्धान्तों पर महत्वपूर्ण समस्याओं की उपेक्षा करना मूर्खता है। इन बातों को जानते हुए भी जो लोग विधवा-विवाह के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं, वे देश के शत्रु हैं। उन पर ही समाज में बढ़ते हुए का व्यभिचार का उत्तरदायित्व है, उनके शिर पर ही भ्रूण-हत्या सरीखे महापातक का बोझ है, वे ही सामाजिक दुराचार को वृद्धि के मूल-कारण हैं।

बहुत से कुटुम्बों में विधवाओं से उनके घर के लोगों ने ही गुप्त सम्बन्ध कर लिए हैं। हमारी समझ में नहीं आता वह कौन सा शुभ दिन होगा, जब कि ये लोग आत्मबल का परिचय देकर उन विधवाओं से प्रकट रूप में शादी कर लेंगे और भ्रूण-हत्यादि महादोषों से बचेंगे। पुरुषों को इस कालिमा को धो डालने के लिए नैतिक बल का परिचय देना चाहिए। जिस कार्य (विधवाओं से गुप्त सम्बन्ध) को हम गुप्त रूप से करते हैं, उसे प्रकट रूप में क्यों नहीं करते?

जो मेधावी महानुभाव विधवा-विवाह से सनातन-धर्म को सङ्कट में देखते हैं, उनके लाभार्थ कुछ प्रमाण वेद, स्मृति और पुराणों से विधवा-विवाह के पक्ष में नीचे दिए जाते हैं:—

> इयं नारी पतिलोकं वृणाना
> निपद्यत उपत्वा मर्त्य प्रेतं।
> धर्मं पुराणमनुपालयन्ती
> तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि

—अथर्ववेद, काण्ड १८, सूक्त ३, मन्त्र १

इस पर सायणाचार्य का भाष्य है, उसका भावार्थ यह है:—हे मनुष्य यह जो मरे पति की स्त्री तेरी भार्या है, वह पतिलोक या पतिगृह की कामना करती हुई, मरे पति के उपरान्त तुझ को प्राप्त होती है। कैसी है वह? अनादिकाल से पूरे स्त्री-धर्म को क्रम से पालती हुई। उस धर्मपत्नी के लिए तू इस लोक में निवास की आज्ञा देकर पुत्रादि सन्तान और धन की प्राप्ति करा।

अधकचरे

तैत्तिरीय आरण्यक अ० ६, १, १३ में इसका पाठान्तर है, जिसमें श्लोक के तीसरे चरण में 'धर्मम्' के स्थान पर "विश्वं" है।

> उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं
> गता सुमेतमुपशेष एहि।
> हस्तग्राभस्य दधिषोस्तवेदं
> पत्युर्जनित्वमभिसंबभूव॥

—अथर्ववेद, का० १८, सूत्र ३, मन्त्र २
तथा ऋग्वेद, मण्डल १०, सूक्त १८, मन्त्र ८

यही मन्त्र तैत्तिरीय आरण्यक अ० ६,१,१४ में भी आया है। इसका भाष्य सायण ने किया है, जिसका भावार्थ इस प्रकार है!—"हे नारी! तू इस मृत-पति के पास लेटी है। इस पति के समीप से उठ। जीवित पुरुषों का विचार कर। आ! और तू हाथ पकड़ने वाले, पुनर्विवाह की इच्छा करने वाले, इस पति को जायाभाव (स्त्री-भाव) से अच्छी तरह प्राप्त हो।" सायण ने मन्त्र के "हस्तग्राभस्य" का अर्थ पाणिग्राहवतः और "दधिषोः" की टीका पुनर्विवाहेच्छोः पत्युः शब्दों से करके शङ्का ही निवारण कर दी है।

> या पूर्वं पतिं वित्वाथान्यं विन्दते परम्।
> पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वियोषतः॥

—अथर्ववेद, काण्ड ६, अनुवाक्य ३, सूक्त ५, मन्त्र २७

भावार्थ—जो स्त्री पहिले पति को पाकर उसके पीछे दूसरे को प्राप्त होती है, वे दोनों पाँचभूतों को सींचने वाले ईश्वर को अर्पण होते हुए अलग न हों।

> या पत्या वा परित्यक्ता, विधवा वा स्वेच्छया।
> उत्पादयेत् पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते॥
> सा चेदक्षतयोनि स्याद् गत प्रत्यागतीपिवा।
> पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कार मर्हति॥

—मनुस्मृति, अ० ९, श्लोक १७५-७६

अर्थ—जो स्त्री भर्ता से त्यागी गई हो, या जिसका पति मर गया हो, वह अपनी इच्छा से फिर भार्या बन बन कर जिसको उत्पन्न करे, वह उत्पन्न करने वाले पुरुष का 'पौनर्भव' पुत्र कहलाता है। वह स्त्री अगर अक्षत योनि होकर दूसरे का आश्रय ले, तो उस पौनर्भव पति के साथ पुनर्विवाह नामक संस्कार की अधिकारिणी होती है।

> अष्टौ वर्षाण्युदीक्षेत ब्राह्मणी प्रोषितं पतिं।
> अप्रसूता तु चत्वारि परतोऽन्यं समाश्रयेत्॥

—नारद, अ० १२, श्लोक ९८

अर्थ—ब्राह्मणी परदेश गए हुए पति की आठ वर्ष प्रतीक्षा करे और यदि सन्तानरहित हो, तो चार वर्ष! इसके पश्चात दूसरे पति का आश्रय ले।

> देवराद्वा सपिण्डाद्वा स्त्रिया सम्यङ् नियुक्तया।

—अ० ९, श्लोक ५९

> नष्टे मृते परिव्रजते क्लीवे च पतिते पतौ।
> पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते॥

अर्थ—पति के खोने, मरने, संन्यासी, नपुंसक या पतित होने आदि पाँच आपत्तियों में स्त्रियों को दूसरा पति वरण करने की विधि है।

—पाराशरस्मृति, अ० ४, श्लोक ३०

पद्मपुराण में दिव्यादेवी का वृत्तान्त बड़ा अद्भुत है। उसके महात्मा एवं गुणवान पिता ने तो उसका २१ बार विवाह किया था। नागराज की कन्या के पति की मृत्यु के उपरान्त नागराज ने अपनी दुखी कन्या को अर्जुन के साथ विवाह दिया, इसका प्रमाण महाभारत में है।*

* * *

* इस छोटे से लेख में विधवा-विवाह पर शास्त्रोक्त प्रमाणों का पूर्ण उल्लेख असम्भव है। उत्साही पाठकों से मेरा अनुरोध है कि वे 'चाँद' कार्यालय से प्रकाशित 'विधवा-विवाह-मीमांसा' शीर्षक पुस्तक अवश्य मँगा कर देखें। इस महत्वपूर्ण पुस्तक में वेद, स्मृति और पुराण आदि अनेकों धर्मग्रन्थों से अनेकानेक प्रमाण विधवा-विवाह की पुष्टि में दिए हुए हैं।

—लेखक

कुछ नवीन और उत्तमोत्तम पुस्तकें

दुबे जी की चिट्ठियाँ

शिक्षा और विनोद का यह अपूर्व भण्डार है। इसमें सामाजिक कुरीतियों तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों का विवेचन बहुत ही सुन्दरतापूर्वक किया गया है। हिन्दी-संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी पुस्तक है। भाषा अत्यन्त सरल है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। मूल्य केवल ३); ले० 'दुबे जी'।

मणिमाला

अत्यन्त मनोरञ्जक, शिक्षा और विनोद से भरी हुई कहानियों का अनोखा संग्रह। प्रत्येक कहानी में सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया गया है। उन कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भयङ्कर अनर्थों की भी भरपूर चर्चा की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य केवल ३); ले० 'कौशिक' जी।

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, महान सांसारिक आपत्तियों तथा यातनाओं से आजीवन खेलने वाले, इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र सांसारिक मनुष्य के लिए अमृत के तुल्य है। इसके केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में महान परिवर्तन हो जायगा—एक दिव्य ज्योति उत्पन्न हो जायगी। सचित्र और सजिल्द मूल्य २॥)

विवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अश्लील अवस्थाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन दुखी और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा उनका सुख-स्वाच्छन्द्यपूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रता-पूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥)

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झन्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्म-बल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना आपने एकदम बिसर दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का ख़ून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों से १=) ले० 'वर्मा' एम० ए०।

मनोरञ्जक कहानियाँ

इस पुस्तक में १७ छोटी-छोटी, शिक्षाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ संग्रह की गई हैं। कहानियों को पढ़ते ही आप आनन्द से मस्त हो जायँगे और सारी चिन्ताएँ दूर हो जायँगी। बालक-बालिकाओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। केवल एक कहानी उनको सुनाइए—ख़ुशी के मारे उछलने लगेंगे, और पुस्तक को पढ़े बिना कदापि न मानेंगे। मनोरञ्जन के साथ ही प्रत्येक कहानियों में शिक्षा की भी सामग्री है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी कॉपियाँ और शेष हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ

इस पुस्तक में पूर्वीय और पाश्चात्य, हिन्दू और मुसलमान, स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं। केवल एक बार के पढ़ने से बालक-बालिकाओं के हृदय में दयालुता, परोपकारिता, मित्रता, सच्चाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के अङ्कुर उत्पन्न हो जायँगे और भविष्य में उनका जीवन उसी प्रकार महान और उज्ज्वल बनेगा। मनोरञ्जन और शिक्षा की यह अपूर्व सामग्री है। भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥); ले० ज़हूरबख़्श।

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गा-राम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ॥।); स्थायी ग्राहकों के लिए ॥-)

लालबुझक्कड़

जगत्प्रसिद्ध नाटककार 'मोलियर' की सर्वोत्कृष्ट रचना का यह हिन्दी अनुवाद है। नाटक आदि से अन्त तक हास्यरस से भरा हुआ है। शिक्षा और विनोद की अपूर्व सामग्री है। मनोरञ्जन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों का भी दिग्दर्शन कराया गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य २); ले० जी० पी० श्रीवास्तव

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिल-चस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य केवल ॥।); स्थायी ग्राहकों से ॥-)

आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियाँ

छोटे-बड़े सभी के मुँह से आज यह सुनने में आ रहा है कि भारतवर्ष आयरलैंड बनता जा रहा है। उस आयरलैण्ड ने अङ्गरेज़ों की ग़ुलामी से किस तरह छुटकारा पाया और वहाँ के शिनफ़ीन दल ने किस कौशल से लाखों अङ्गरेज़ी सेना के दाँत खट्टे किए, इसका रोमाञ्चकारी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। इसमें आपको इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। मूल्य केवल दस आने। ले० सत्यभक्त।

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से।=)

गुदगुदी

हास्य तथा मनोरञ्जन भी स्वास्थ्य के लिए एक अनोखी औषधि है। किन्तु इसका उपाय क्या है? उपाय केवल यही कि इस पुस्तक की एक प्रति मँगा लीजिए और काम की थकावट तथा भोजन के बाद पढ़िए। इसका केवल एक ही चुटकुला एक घण्टे तक आपको हँसाएगा। ले० जी० पी० श्रीवास्तव ; मूल्य ॥)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

लड़कियों की शिक्षा

[श्री० लक्ष्मणप्रसाद जी, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

इससे पूर्व एक लेख द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है, कि लड़कियों को अङ्गरेज़ी शिक्षा देना, उनको सदाचार के पथ से विचलित करना और दुर्व्यसनों के गर्त में डालना है। लड़कियों को अङ्गरेज़ी शिक्षा देने का उद्देश्य यही हो सकता है, कि वे अच्छी अङ्गरेज़ी शिक्षा-प्राप्त कर बड़े-बड़े सरकारी पदाधिकारियों को वरण कर सकें। इसके अतिरिक्त और कोई आशय इसके अन्तर्गत नहीं दीख पड़ता। किन्तु इसमें हानियाँ अनेकों प्रतीत होती हैं। यदि व्यय की ओर ध्यान दिया जाय तो पता चलेगा कि जितना धन एक अङ्गरेज़ी स्कूल के सञ्चालन में लगता है, उतने धन से लगभग बीस प्राइमरी पाठशालाएँ सुचारु रूप से चलाई जा सकती हैं।

लड़कियों को तो वैसे ही नाम मात्र को शिक्षा दी जाती है और उनकी शिक्षा में बहुत थोड़ा धन व्यय किया जाता है। यदि अङ्गरेज़ी स्कूल खोल दिए जायँ तो बहुत सा धन यही खा जायँ और ऐसी दशा में लड़कियों की प्राथमिक शिक्षा के स्कूल और भी कम हो जाएँगे। लड़कियों की प्रवृत्ति भी लड़कों की भाँति अङ्गरेज़ी शिक्षा की ओर अधिक आकर्षित होगी। अतः वे मातृ-भाषा के महत्व को भूल जाएँगी और साथ ही साथ स्वधर्म एवं पैतृक विचारों को भी तिलाञ्जलि दे बैठेंगी।

आर्य-समाज कन्या पाठशाला की विदुषी कक्षा में प्रति वर्ष लगभग १० लड़कियाँ पढ़ा करती थीं, किन्तु जब से मथुरा में लड़कियों को अङ्गरेज़ी पढ़ाने का साधन हो गया है, तब से कोई भी लड़की विदुषी कक्षा में नहीं रही और सबों ने विदुषी छोड़-छोड़ कर अङ्गरेज़ी पढ़ना आरम्भ कर दिया है। उनको वज़ीफ़ा का प्रलोभन भी दिया गया। किन्तु अङ्गरेज़ी शिक्षा के भूत को उतारने में जब यह प्रयत्न भी सफलीभूत न हुआ तो विदुषी में अङ्गरेज़ी को एक अबाध्य विषय के रूप में कर दिया गया। परन्तु लड़कियाँ तो इस थोड़े समय में ही अङ्गरेज़ी की सुखतर मृगतृष्णा की ओर अग्रसर हो चुकी थीं, उससे उन्हें विमुख करने में हमारा कोई भी आकर्षण सफल न हुआ।

यदि यही दशा कुछ दिन और रही और लड़कियों तथा उनके माता-पिताओं के विचारों में कुछ भी परिवर्तन न हुआ, तो यह निश्चित जानिए कि जो हानि १०० वर्षों में पुरुषों द्वारा नहीं हुई है, उससे कहीं अधिक हानि, उससे कहीं थोड़े समय में, स्त्रियों द्वारा हो जायगी। क्यों, यह लड़कियाँ अङ्गरेज़ महिलाओं के गुणों को तो ग्रहण न करेंगी, किन्तु उनमें जो दोष हैं उनको बड़ी जल्दी अपना लेंगी। प्रत्येक अङ्गरेज़ महिला अपना सारा कार्य अपने हाथों से करती है! यहाँ तक कि अपने कपड़े स्वयं अपने हाथों से धोने तक में भी सङ्कोच नहीं करती। किन्तु हमारे यहाँ की एक अङ्गरेज़ी पढ़ी-लिखी स्त्री कपड़ा धोना तो दूर रहा, स्वयं अपने हाथ से उठा कर पानी भी पीना नहीं चाहती।

मनुष्य-स्वभाव का नियम है कि वह अवगुणों को शीघ्र ही ग्रहण कर लेता है। इस नियम के अनुसार यह निश्चित है कि हमारी लड़कियाँ अङ्गरेज़ महिलाओं के दुर्गुणों, एवं कुत्सित प्रथाओं का शीघ्र ही अनुकरण करने लग जावेंगी। उनमें अपव्यय बढ़ जायगा और स्त्रियाँ जो लक्ष्मी का स्वरूप बताई जाती हैं, उनसे स्वयं लक्ष्मी कोसों दूर भागने लगेगी। परीक्ष्य-विवाह (Trial marriages) तो रो . ही होने लग जावेंगे। अर्थात् जब तक किसी स्त्री को परीक्षा द्वारा यह विश्वास न हो जावेगा कि अमुक पुरुष से विवाह-सम्बन्ध करने में उसे सुख मिलेगा और उससे वह सन्तुष्ट रह सकेगी तब तक वह उसको अपना वास्तविक पति न मानेगी, चाहे इस खोज में उसे अनेकों पति ही क्यों न करने पड़ें! एक बार विवाह-सम्बन्ध स्थिर कर लेने पर भी तलाक़ (Divorce) दे देना एक साधारण सी बात हो जावेगी! ये और इस प्रकार की अन्य कुरीतियाँ शीघ्र ही समाज में प्रचलित हो जावेंगी, जिनके भयङ्कर परिणाम से शिक्षित समाज अनभिज्ञ नहीं है और जिन बुराइयों के परिणाम आज पाश्चात्य देश भोग रहे हैं और जिनसे वे शीघ्र ही अपना पीछा छुड़ाना चाहते हैं!

जहाँ तक संस्कृति (Culture) से सम्बन्ध है, हिन्दी द्वारा ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त हो सकती है, ऐसी दशा में अङ्गरेज़ी जानने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। यदि अङ्गरेज़ी शिक्षा देने का यह आशय है कि हमारी लड़कियाँ इस योग्य हो जावें कि वह अङ्गरेज़ों तथा अङ्गरेज़ महिलाओं से बातचीत कर सकें, तो यह विचार बड़ा ही पोच और निन्द्य है। अङ्गरेज़ तथा उनकी स्त्रियाँ ही स्वयं हिन्दी सीख कर हमसे व हमारी स्त्रियों से क्यों न मिलें? पहले पहल जब अङ्गरेज़ों ने भारत-भूमि पर पदार्पण किया था, तो उन्होंने भारतीय भाषाओं को सीखा था अर्थात् जिस स्थान पर वह गए, वहीं की भाषा उन्हें सीखनी पड़ी थी। यह दासत्व-वृत्ति है कि हम उन्हें प्रसन्न रखने के लिए अङ्गरेज़ी को सीखें और अपनी स्त्रियों व लड़कियों को सिखाएँ!

यह विचित्र बात है कि जब प्रत्येक स्थान पर हिन्दी का प्रचार हो रहा है, स्कूलों तथा विद्यालयों में हिन्दी को अन्य भाषाओं का माध्यम बनाया जा रहा है, कॉङ्ग्रेस का दृढ़ निश्चय है कि हिन्दी को भारत की राष्ट्र-भाषा बनाया जाय, श्री० पूज्य मालवीय जी अपने हिन्दू-विश्व-विद्यालय में हिन्दी को अपना रहे हैं—ऐसे समय में हमारे यहाँ के कुछ नवयुवकों का यह विचार है कि लड़कियाँ अङ्गरेज़ी पढ़ें और अपनी मातृ-भाषा को सदा के लिए तिलाञ्जलि दे दें! हिन्दी की उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करने के बाद यदि लड़कियों को अङ्गरेज़ी शिक्षा भी दी जाय तो कोई विशेष हानि नहीं, किन्तु पहिले ही से हिन्दी की पूर्ण शिक्षा दिए बिना, उन्हें अङ्गरेज़ी की शिक्षा देना, उन्हें अराष्ट्रीय (Denationalise) करना है और देश को धक्का देकर अवनति के गर्त में डालना है।

'चाँद' कार्यालय की अनमोल पुस्तकें

लम्बी दाढ़ी

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है
बच्चों को भी !
बड़ी मासूम, बड़ी नेक—
है लम्बी दाढ़ी !!
अच्छी बातें भी बताती है,
हँसाती भी है !
लाख दो लाख में, बस एक—
है लम्बी दाढ़ी !!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और २,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !!

चुहल

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों के ॥।) केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशल-किशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) रु० ; स्थायी ग्राहकों से २।)

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण ! पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

इस पुस्तक में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें !

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों !! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं ! छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,
चन्द्रलोक, इलाहाबाद

नवीन रूसी राज्य की सफलता

(सङ्कलित)

साम्यवादी सरकार के शासन काल में रूस बहुत उन्नति कर रहा है। रूस के केवल बड़े शहरों को देखने से इस नवीन उन्नति का पता नहीं चल सकता। यदि आप रूस के गाँवों में भ्रमण करें, तो आपको मालूम होगा कि रूसी एक बिलकुल नई दुनिया का निर्माण कर रहे हैं। संसार में इस समय कोई भी ऐसा देश नहीं है, जो अपनी औद्योगिक तथा व्यापारिक संस्थाओं की उन्नति में इतनी पूँजी लगा रहा है। विदेशी जब इन नई योजनाओं को देखते हैं, उन्हें बड़ा आश्चर्य होता है।

यूराल पर्वत के उस पार मेग्निटोगोर्स्क में खनिज पदार्थों की एक बड़ी भारी फ़ेक्टरी बन रही है। तैयार होने पर वह दुनिया में सब से बड़ी फ़ेक्टरी होगी। निज़नीनोवोग्रेड में फ़ोर्ड मोटरें बनाने का एक विशाल कारख़ाना तैयार हो रहा है। यहाँ हर साल एक लाख मोटरें तैयार की जा सकेंगी। उसका एक हॉल ६०० मीटर लम्बा होगा। तैयार होने पर यह दुनिया की सब से बड़ी इमारत होगी। सेल माशट्राय की फ़ेक्टरी में कृषि-सम्बन्धी औज़ार तैयार किए जाते हैं। अभी औज़ारों की माँग काफ़ी न होने के कारण यह केवल आधे समय तक काम करती है। अगले साल तक यह भी अपने ढङ्ग का संसार में सब से बड़ा कारख़ाना होगा। नीपरस्ट्रॉय का बिजली का कारख़ाना, जिसका कि कार्य सन् १९२७ से शुरू हुआ है, १९३२ में बिजली पैदा कर सकेगा। उत्पत्ति में उसका नम्बर संसार में दूसरा होगा। साइबेरिया प्रान्त के अन्तर्गत अङ्गारा शहर में एक और नया कारख़ाना तैयार किया जा रहा है। बन जाने पर यह दुनिया में सब से बड़ा बिजली का कारख़ाना होगा।

यह सब अपूर्व योजना देख कर कई विदेशी कहते हैं कि साम्यवादी अपने नवीन उत्साह से पागल हो गए हैं। उन्नति की गति अवश्य बहुत ही तेज़ है। कुछ दिनों में रूस का स्वरूप इतना बदल जावेगा कि लोग उसके कई भागों को पहिचान भी न सकेंगे।

पर इस सब रचना का ख़र्च कौन सहन कर रहा है, इस पाँच साल की योजना के लिए कहाँ से रुपया आ रहा है—इस प्रश्न का उत्तर कठिन नहीं है। रूस में जाकर देखिए तो आपको मालूम हो जायगा कि इस नवीन योजना का ख़र्च हर एक के ऊपर पड़ रहा है। देश में चरबी तथा मांस की कमी है। लोगों को पूरा स्वास्थ्यदायक भोजन नहीं मिल रहा है। पर फिर भी साम्यवादी सरकार इन चीज़ों को मँगाने के बजाय, दूसरे देशों से मैशीन तथा अन्य औज़ार व यन्त्रों के मँगाने में रुपया ख़र्च कर रही है। इन नए कारख़ानों में इन चीज़ों की आवश्यकता है। लोगों को कपड़ों की भी कमी महसूस हो रही है। कपड़ा बनाने वाले कारख़ाने मौजूद हैं। बहुत से तो हाल ही में तैयार हुए हैं, पर उन्हें कपास की आवश्यकता है, जो अमेरिका या इजिप्ट से मँगाया जा सकता है। पर इस सम्बन्ध में भी वही हाल है। कपास मँगाने के बजाय, नए कारख़ानों में लगने वाले यन्त्रादि मँगाए जा रहे हैं। साम्यवादी सरकार रूस की जनता से कहती है—"आप लोग अभी धैर्य रक्खें। हम लोग थोड़े दिनों में अपने कारख़ानों में काफ़ी कपड़ा तैयार कर सकेंगे। थोड़े दिनों में हम लोग अपने खेतों में काफ़ी कपास भी उत्पन्न कर सकेंगे। फिर हम आपको काफ़ी कपड़ा दे सकेंगे।"

पर यह समझना कि रूस की भोजन तथा कपड़े की कमी का कारण केवल यह नई पाँच साल वाली योजना ही है, ठीक न होगा। गेहूँ की कमी तो १९२७ से ही शुरू हो गई थी। इस वक्त तक पाँच साल वाली योजना को कार्यरूप दिया ही नहीं गया था। इस नवीन योजना से रोटी का प्रश्न तो बिलकुल हल हो गया है। रूस आजकल केवल देशी माँग को ही नहीं पूरी कर रहा है, वरन विदेशों को भी बहुत सा गेहूँ भेज रहा है। इस नई मांस तथा चर्बी की कमी का कारण केवल यह नवीन योजना नहीं है। इसका कारण साम्यवादी सिद्धान्तों का कृषि-क्षेत्र में कार्यरूप देना है। जब किसानों के खेत तथा मवेशियों के एक साथ रक्खे जाने का प्रस्ताव स्वीकार हुआ, तब किसानों ने अपने मवेशी मार-मार कर मांस बेच लिया। यही ग़लती इस नई कमी का कारण है। पाँच साल वाली योजना से सरकार की तरफ़ से बड़े-बड़े मवेशीघर तैयार किए जा रहे हैं। जहाँ पर लाखों मवेशी पाले जावेंगे। आशा की जाती है कि इस नवीन प्रबन्ध से दो साल के अन्दर मांस इत्यादि की कमी पूरी हो जावेगी।

इसके अतिरिक्त मांस की कमी पड़ने का एक और भी कारण है। रूस की माल ढोने की योजना ठीक नहीं है। उद्योग-धन्धों की उन्नति बड़े वेग से हुई है। पर रेल-विभाग में उतना ख़र्च नहीं किया गया है। इससे रेलों के विभाग को बहुत काम करना पड़ता है। रूस की औद्योगिक उत्पत्ति हर साल ३० फ़ीसदी के हिसाब से बढ़ रही है। रेल की भी उन्नति उसी हिसाब से करने की आवश्यकता है। पर यह नहीं किया गया है। इससे रेलों से सब सामान नहीं पहुँचाया जा सकता। देश बहुत बड़ा है, इससे कहीं तो अनाज सड़ा करता है व कहीं उसकी कमी पड़ती है। पर माल ढोने की योजना ठीक न होने के कारण माल एक जगह से दूसरी जगह नहीं पहुँचाया जा सकता। फिर सहकारी विभाग भी ठीक से नहीं चल रहा है। यह भी लोगों की इस तकलीफ़ का एक कारण है। यदि कोई दर्शक बिना मूल कारणों को जाने हुए, केवल ऊपरी बात देख कर ही, अपने विचार स्थिर कर ले तो उसे ऐसा मालूम होगा कि रूस की दशा बहुत ख़राब है। यदि कोई सड़क पर फिरने वाले मनुष्यों से उनकी हालत पूछेगा या घर में जाकर स्त्रियों से उनके कष्ट पूछेगा तो वे सब यही कहेंगे कि "कपड़ा भी कम है और भोजन भी ठीक नहीं मिलता। मालूम होता है इस नई योजना से कुछ लाभ न निकलेगा।"

पर यदि वह इस नवीन युग के जन्मदाताओं की योजना, उनके उत्साह तथा आशापूर्ण भविष्य को देखेगा तो वह इसका महत्व पूरी तौर से समझ सकेगा।

* * *

युवक-प्रतिज्ञा

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

(कवित्त)

भारत के रजकण से बना हुआ है तन,
भारत की भूमि पर खेले और खाए हैं,
भारतीय पूर्वजनों के स्वभाव और भाव—
मन में हमारे सह-साहस समाए हैं,
और क्या कहें अधिक राम और कृष्ण की—
सुसन्तति की सन्तति हैं, वीर-जन-जाए हैं,
भारत न योंही रह जायगा, युवक हम—
भारत उबारने को भारत में आए हैं !

उनके हैं जन बहु कोटि रण-भूमि पै, तो—
भारत-मही ने त्रिंश-कोटि सुत पाए हैं,
उनकी सुवीरता विदित है जगत में, तो—
विश्व ने हमारी वीरता के गीत गाए हैं,
मेल उनका है बहु शक्तियों से जग में, तो—
हम जग-नाथ को सदर्प अपनाए हैं,
पशु-बल प्रबल विचित्र है उधर जो, तो—
हम भी अनन्त आत्म-बल लेके आए हैं !

वर्तमान छलना-अधर्म-मयी जगती में,
सत्य-धर्म-ध्यान धरने को हम आए हैं,
गुप्त लघु नाव पर भीषण विशाल सिन्धु ;
ज्वार के समय तरने को हम आए हैं,
आत्म-बल साधन था, आत्म-बल साधन है,
पशु-बल-गर्व हरने को हम आए हैं,
जग का मुकुट जो सदैव ही रहा था, उसे—
जग का मुकुट करने को हम आए हैं !

सारी जगती को बल-स्नेह-भयभीत कर,
एक ईश से ही डरने को हम आए हैं ;
दलित अनीति कर, जीत के जगत, उसे—
बाहु-पाश-बद्ध करने को हम आए हैं,
आत्म-बल-जयनाद और विश्व की विभूति—
से भरतखण्ड भरने को हम आए हैं,
पशु-बल और आत्म-बल के महा-रण में,
मर कर भी न मरने को हम आए हैं !

* * *

मनोरञ्जन और शिक्षा

'क्रिसमस'-सम्बन्धी कुछ मनोरञ्जक बातें

[श्री० गदाधरप्रसाद जी अम्बष्ठ, विद्यालङ्कार]

क्रिसमस! क्रिसमस! (Christmas) हम लोग बहुत सुनते हैं। पर हम लोगों में से बहुत थोड़े ही आदमी यह जानते हैं कि आख़िर यह है क्या चीज़? अङ्गरेज़ी राज्य के कारण आजकल तो हिन्दुस्तान में भी हर जगह इसकी छुट्टियाँ मनाई जाती हैं। हर एक कचहरी, दफ़्तर, कॉलेज, स्कूल और यहाँ तक कि प्राइमरी पाठशालों में भी इसके लिए छुट्टियाँ रहती हैं। देहातों में भी लोग 'बड़ा दिन' के नाम से इसे जानते हैं। अङ्गरेज़ों एवं अन्य ईसाइयों के यहाँ तो इन दिनों धूम मची रहती है। ख़ूब चहल-पहल होती है। सब लोग आनन्द में फूले नहीं समाते। सभी एक दूसरे के यहाँ जाकर बधाइयाँ देते या इसके लिए कॉर्ड (Christmas Card) भेजते हैं। पार्टियाँ होती हैं। तरह-तरह के खेल-तमाशे और नाच-रङ्ग किए जाते हैं। इन लोगों के यहाँ सब से बड़ा त्योहार यही समझा जाता है।

यह उत्सव ईसा मसीह के जन्म-दिन के उपलक्ष में दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में मनाया जाता है। इसके लिए ख़ास दिवस २५ दिसम्बर है। कहते हैं इसी तारीख़ को ईसा मसीह का जन्म हुआ था। इस त्योहार का जो नाम और जो तिथि आज प्रचलित है, वह पहले नहीं थी। शुरू से आज तक इसमें कई परिवर्तन हुए और आगे भी होंगे—इसकी भी बहुत सम्भावना है। इसका इतिहास अद्भुत और मनोरञ्जक है।

क्रिसमस का सब से पुराना नाम है—"दी फ़ीस्ट ऑफ़ लाइट्स" (The Feast of Lights) अर्थात् परियों का त्योहार। यह नाम इस बात का द्योतक है कि जब ईसा का जन्म हुआ तो स्वर्ग की परियाँ आनन्द-मग्न होकर नाचने-गाने और उत्सव मनाने लगीं। जब ईसा का जन्म हुआ था, उसके कुछ महीनों के बाद चीन के ज्योतिषियों ने आकाश में एक नए और चलते हुए तारे को उगा हुआ देखा था। इसका ज़िक्र उन्होंने अपनी पुस्तक में भी किया है। बाइबिल में बुद्धिमान मनुष्यों की एक कहानी है। जिनका रहनुमा एक तारा था, इसके विषय में ईसाई लोगों को अब विश्वास होता है कि शायद यह वही तारा था जिसे चीनी ज्योतिषियों ने देखा था।

क्रिसमस का दूसरा नाम यूल (Yule) पड़ा। इसकी उत्पत्ति शायद जूल (Juul) नामक त्योहार से हुई मालूम पड़ती है। यह त्योहार २१ से २७ दिसम्बर तक सबसे छोटे दिन के उपलक्ष में मनाया जाता था।

वर्तमान नाम Christmas दो शब्दों "Christ's Mass" के योग से बना है। जब यह नाम धार्मिक कलेण्डर के २५ दिसम्बर के सामने लिखा जाता है तो इसका मतलब होता है Christ's Service Day अर्थात् "ईसा की सेवा का दिन"। "Mass"—यह शब्द 'चर्च' की मुख्य सेवा के अर्थ में आता था। इसी तरह का एक और शब्द है—"Michael-Mass" जो "St. Michael" और "Mass" इन दो शब्दों के मिलने से बना है।

ईसा के जन्म-दिन का ठीक पता कभी नहीं चला। द्वितीय शताब्दी के क्रिश्चियनों के एक रिवाज के मुताबिक़ ईसा का जन्म-दिन ६ जनवरी को माना जाता था। चौथी सदी तक सारा ईसाई-जगत इसी तिथि को उत्सव मनाता रहा। पीछे अनुसन्धान के बाद पता चला कि ईसा का जन्म २५ दिसम्बर को हुआ था। बस अब लोग इसी तारीख़ को उत्सव मनाने लगे। पर इसका प्रचार तुरन्त ही सर्वत्र नहीं हो गया। बहुत दिनों तक तो यह उत्सव कहीं ६ जनवरी को मनाया जाता था तो कहीं २५ दिसम्बर को। वर्षों तक लोग इस पिछले अनुसन्धान पर विश्वास नहीं करते थे। अन्त में इसका पूरा-पूरा प्रचार होने में एक शताब्दी लग गई। आख़िर छठीं सदी में आकर सब लोगों ने २५ दिसम्बर वाली बात को मान लिया और उसी दिन वे लोग उत्सव मनाने लगे। पर अनुसन्धान का वहीं तक अन्त नहीं हुआ, यह अब भी जारी है। हाल ही में कुछ अन्वेषकों ने पता लगाया है, कि ईसा का जन्म-दिवस वास्तव में ११ जनवरी है। देखें अब आगे क्या होता है। यह उत्सव दिसम्बर में ही क़ायम रहता है या जनवरी में चला जाता है।

क्रिसमस के अवसर पर पहले बहुत सी रीति-रस्में प्रचलित थीं। बहुत स्थानों पर ये रस्म अब भी अदा की जाती हैं। बहुत लोग समझते हैं केवल हिन्दुस्तान में ही अजीब-अजीब रस्मों का प्रचलन है। इसका कारण लोग अविद्या का प्रचार समझते हैं; पर इङ्गलैण्ड आदि जैसे सुसभ्य-विख्यात देशों में भी रीति-रस्में मानी जाती हैं। डिवोन्शायर और ससेक्स में क्रिसमस के अवसर पर की एक रस्म अब भी जारी है। वहाँ लोग इस अवसर पर सेब के वृक्ष की अभ्यर्थना करते हैं। बाग़ के प्रतिनिधि-रूप से सेब का एक वृक्ष चुन लिया जाता है। लोग उस पर सेब की मदिरा छिड़कते हैं या और दूसरी तरह की मदिरा उस पर डालते हैं। उस समय वे ये आशीर्वचन मन्त्र की तरह पढ़ते हैं:—

"God bless this tree to the master. May it flourish and bring forth abundantly enough to fill a hat, to fill a basket, to fill a cart, to fill a wagon."

अर्थात्—"भगवान इस वृक्ष को इसके मालिक के लिए अच्छी तरह क़ायम रक्खें। यह ख़ूब फूले-फले। इसके फल से टोप भर जाय, टोकरी भर जाय, छकड़ा भर जाय, गाड़ी भर जाय।"

इङ्गलैण्ड के बहुत से देहातों में यह चाल है कि ३१ दिसम्बर की १२ बजे रात के कुछ मिनट पहले लोग घर के सभी दरवाज़े और खिड़कियों को खोल देते हैं और तब तक उन्हें वैसे ही रहने देते हैं, जब तक कि घड़ी में टन-टन कर बारह नहीं बज जाते।

कुछ स्थानों में यह रिवाज है कि क्रिसमस की ख़ुशी मनाने के लिए स्त्रियाँ और लड़के सेन्ट टॉमस दिवस (St. Thomas's Day) पर २१ दिसम्बर को घर-घर से थोड़ा चन्दा जमा करते हैं। जिस-जिस के यहाँ से वे चन्दा लेते हैं उसके पास 'होली' (Holly) नामक वृक्ष की एक टहनी छोड़ जाते हैं। इस रस्म को लोग भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न नाम से पुकारते हैं। कहीं यह mumping, कहीं doling, कहीं a-gooding और कहीं a-thomasing कहलाता है। कहते हैं कि यह चाल ट्युडियस के समय से चली है।

साधारणतः लोग क्रिसमस में अपने इष्ट-मित्रों को भेंट देते हैं, पर नॉर्वे और स्वीडन में लोग इस अवसर पर केवल अपने इष्ट-मित्रों और परिजनों को ही भोज नहीं देते, वरन् बेचारे मूक पशुओं और पक्षियों को भी इसमें सम्मिलित करते हैं। घर के मवेशियों को उस दिन विशेष भोजन दिया जाता है। क्या ग़रीब क्या अमीर, क्या बूढ़े क्या बच्चे—सभी यथासाध्य पक्षियों को भोजन देते हैं। क्रिसमस के दो या तीन दिन पहले गाड़ी की गाड़ी जई की टहनियाँ शहरों में बिकने को आती हैं और हरेक परिवार के लोग उसे ख़रीदते हैं। ख़रीद कर ये वृक्ष की डालियों और घर के छतों एवं टट्टियों में लटका दी जाती हैं और झुण्ड के झुण्ड पक्षी उसे खाने को उतरते हैं। इसी तरह के और भी बहुत से रिवाज यूरोप में प्रचलित हैं।

* * *

अदा चरखे की

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

सारे आफ़ाक़ में अब क़द्र है क्या चरखे की,
हर तरफ़ चलती है दुनिया में हवा चरखे की!
ख़्वाबे ग़फ़लत में जो सोते थे वह चौंक पड़े हैं,
कम नहीं शोरे-क्यामत से सदा चरखे की!
मुफ़लिसी में भी रफ़ाक़त नहीं छोड़ी इसने।
हम न भूलेंगे कभी दिल से वफ़ा चरखे की!
जिससे बीमार न होंगी कभी भारत-माता,
गाँधी जी ने वह बताई है दवा चरखे की!
जिसको देखो वह है तैयार चलाने के लिए,
चल गई, चल गई आलम में हवा चरखे की!
कोई घर अब नज़र आता नहीं ख़ाली इससे,
धूम है, धूम है क्या-क्या बख़ुदा चरखे की!
रात-दिन शग़ल है यह बैठते-उठते अपना,
धुन है गाढ़ा की हमें, फ़िक्र है या चरखे की!
बहरे आलम में न क्यों पार हो बेड़ा इसका,
नाख़ुदाई जो करे ख़ुद ही ख़ुदा चरखे की!
सूरते गर्द उड़े, उड़ के परेशान भी हो,
कहीं लग जाय जो दुश्मन को हवा चरखे की!
क्यों न सौ जी से हो क़ुरबान दिल इस पर 'बिस्मिल',
कितनी दिलचस्प है, एक-एक अदा चरखे की!

* * *

तार का पता : 'भविष्य'

चित्र राष्ट्रीय

स्मक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं,
तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

बम्बई में क़ानून का श्राद्ध किया गया

महिलाओं ने राजविद्रोह-क़ानून की धज्जियाँ उड़ा डालीं

तिलक मैदान में महिलाओं का विराट जुलूस

दादर (बम्बई) की महिलाओं ने "जवाहर-दिवस" बड़े समारोह से मनाया। हज़ारों महिलाओं का जुलूस तिलक मैदान गया, जहाँ एक विराट सभा की गई और जिस व्याख्यान पर राष्ट्रपति को इतना भयङ्कर दण्ड दिया गया है—वह सारा व्याख्यान क्रमशः दोहराया गया। चित्र के ऊपर वाले घेरे में आप उस विराट सभा का दृश्य पावेंगे।

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—११ दिसम्बर, १९३० | संख्या ११, पूर्ण संख्या ११

क्रान्तिकारियों का आन्दोलन क्या वास्तव में ज़ोर पकड़ रहा है?

बंगाल-जेल के इन्स्पेक्टर-जनरल की निर्मम हत्या !!

क्या विठूर के नाना साहब १९१३ में जीवित थे :: गोलमेज़ के 'प्रतिनिधियों' में घोर असन्तोष !

गोलमेज़ के प्रतिनिधियों में असन्तोष

लन्दन का ८वीं दिसम्बर का समाचार है कि लीसियम क्लब में भाषण देते हुए श्री० जयकर ने गोलमेज़ के नेशनलिस्ट प्रतिनिधियों के प्रति असन्तोष प्रकट किया है और इस बात का सङ्केत किया है कि यदि गोलमेज़ की परिस्थिति ऐसी ही बनी रही, जैसी गत सप्ताह में थी तो वे भारत वापस लौट जाने के लिए बाध्य हो जायँगे। उन्होंने कहा कि गोलमेज़ के ब्रिटिश प्रतिनिधियों में प्रसिद्ध और अत्यन्त प्रतिभाशाली अङ्गरेज़ सम्मिलित हैं; परन्तु "हम यह भूल जाते हैं कि ६,००० मील दूर के एक देश (भारत) में स्वतन्त्रता के आकांक्षी उसे प्राप्त करने के प्रयत्न में नित्य प्रति जेल जा रहे हैं।" महात्मा गाँधी के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि "वे संसार के महापुरुष हैं और उन्होंने राजनीति से धर्म और अध्यात्म का सम्बन्ध स्थापित किया है। उनकी और पण्डित मोतीलाल की सम्मति से गोलमेज़ एक जाल मात्र है।" बिदा होते समय महात्मा जी ने कहा था कि "इङ्गलैण्ड से वापस लौट कर मेरे पास आना, और यदि आप सचमुच स्वतन्त्रता का 'सार' प्राप्त कर लाओगे तो मैं उसको ख़ूब जाँच कर स्वयं परिस्थिति पर फिर विचार करूँगा।" अन्त में श्री० जयकर ने कहा कि यदि अगले कुछ सप्ताहों में हम भारत के लिए पूर्ण जनसत्तात्मक राज्य प्राप्त न कर सके तो हममें से कुछ तो अवश्य भारत को जाने वाले पहले जहाज़ से लौट जायँगे।"

गवर्नमेण्ट को सर सप्रू का चेलेञ्ज

सहयोगी 'लीडर' के लन्दन-स्थित सम्वाददाता का ३री दिसम्बर का विशेष तार मालूम हुआ है कि सर तेज बहादुर सप्रू ने 'लेबर कॉमनवेल्थ दल' की एक सभा में, जिसके सभापति मि० लेन्सबरी थे, भारत की वर्तमान परिस्थिति पर एक भाषण दिया था। सभा पर सर सप्रू के भाषण का गम्भीर प्रभाव पड़ा बतलाया जाता है।

उन्होंने अपने भाषण में जाति-पाँति के भेद-भाव से रहित नव-भारत और महिला-मण्डल की अत्यन्त प्रशंसा की। उन्होंने अधिकारियों के इस अभिमान को कि 'वे भारत की वर्तमान परिस्थिति में अमन-चैन रखने और क़ानून की रक्षा करने में समर्थ हैं' चेलेञ्ज दिया। उन्होंने कहा है कि ऐसे समय में, जब कि ५०-६० हज़ार राजनैतिक क़ैदी जेलों में बन्द हों, देश में अमन-चैन रखना अधिकारियों की शक्ति के बाहर है। अन्त में उन्होंने कहा कि भारत की वर्तमान समस्या के हल करने का एक मात्र उपाय भारतीयों को राज्य की ज़िम्मेदारी सुपुर्द करना और भारत को बराबरी का दर्जा देना है। सर सप्रू शीघ्र ही 'लिबरल एम्पायर दल' में भी भाषण देने वाले हैं।

देश-व्यापी हड़ताल के लिए तैयार हो जाओ

अखिल भारतवर्षीय रेलवे कर्मचारी सभा की कार्यकारिणी सभा की बैठक ने यह निश्चय किया है कि जी० आई० पी० रेलवे की हड़ताल के तय होने पर जो प्रश्न उपस्थित हो गए हैं, वे बड़े महत्व के हैं और इस लिए रेलवे बोर्ड से जो बात-चीत हो वह केवल इन्हीं प्रश्नों पर हो। प्रत्येक वक्ता ने इस बात पर ज़ोर दिया कि "न्याय पाने" के लिए यूनियन को देश व्यापी हड़ताल के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

—हाल में अमृतसर में क्रान्तिकारी पर्चे बाँटते हुए नारायणप्रसाद और कृपाराम पकड़े गए थे। उनसे एक-एक हज़ार रुपए की ज़मानत माँगी गई है। ज़मानत न देने पर उन्हें आठ मास की सख़्त क़ैद भुगतनी पड़ेगी।

एक आवश्यक निवेदन

आगामी अङ्क से 'भविष्य' के मूल्य में वृद्धि अवश्य हो रही है, किन्तु साथ ही उसका कलेवर देख कर पाठकों को बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा खुला चैलेञ्ज है कि 'भविष्य' के टक्कर का कोई पत्र आज तक न इस देश में प्रकाशित हुआ है और न निकट-भविष्य में इसकी सम्भावना ही है। इसका एक मात्र कारण सभी प्रतिष्ठित एवं सुविख्यात लेखकों और कवियों का अभिन्न सहयोग है।

हमें आशा है पाठकगण भी यथाशक्ति सहयोग और सहायता प्रदान कर हमें इच्छानुकूल सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे।

—लन्दन में प्रकाशित हुई मिस्टर ई० एस० मॉन्टेगू की "एन इण्डियन डायरी" में सन ५७ के ग़दर के सुप्रसिद्ध नेता नाना साहब के विषय में लिखा गया है :—

"लॉर्ड हार्डिञ्ज के ऊपर बम वाली दुर्घटना के बाद सी० आई० डी० ने एक मुख़बिर को एक हज़ार रुपया देकर एक ऐसे व्यक्ति का पता लगवाया, जो लापता था और जो पहिले बमबाज़ी में सज़ा काट चुका था। एक हज़ार रुपया पाकर मुख़बिर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने क्लीवलैण्ड से यह कहा कि यदि उसको एक लाख रुपया दिया जाय, तो वह नाना साहब का पता भी बतला सकता है। क्लीवलैण्ड से उसने ज़ोरदार शब्दों में कहा कि जब तक उनको यह विश्वास न हो जाय, कि यह नानासाहब ही है, तब तक वे उसे एक पैसा भी न दें, पर क्लीवलैण्ड ने इतने दिनों के बाद नाना साहब को पकड़ने में कोई विशेष लाभ न देखा और इसलिए उन्होंने यह अस्वीकार कर दिया। अब मुख़बिर की भी मृत्यु हो गई है।"

भारत सरकार की विज्ञप्ति

भारत सरकार ने अपनी विज्ञप्ति में देश के वर्तमान आन्दोलन पर जो प्रकाश डाला है, उसके अनुसार देश में हिंसात्मक आन्दोलन ज़ोर पकड़ रहा है। बिहार सरकार का कहना है कि यद्यपि उस प्रान्त में अहिंसात्मक सत्याग्रह संग्राम अब दब रहा है, पर नवम्बर मास की हिंसात्मक घटनाओं से पता चलता है, कि आन्दोलन हिंसात्मक रूप पकड़ रहा है। तिरहुत कमिश्नरी से जो समाचार मिले हैं, वे भी अच्छे नहीं हैं। इसी प्रकार अन्य प्रान्तों में भी यही हाल है। बम्बई प्रान्त में जनता और पुलिस के बीच में कई जगह मारपीट हुई है। कई क्रान्तिकारी घटनाएँ भी इस सप्ताह हुई हैं। चान्दपुर में एक दारोग़ा के गोली मार दी गई, और कानपुर में भी एक युवक ने पुलिस पर प्रहार किया जो गोली से मार दिया गया। यह भी निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है, कि बरमा में जो डाक गाड़ी को उलटने का प्रयत्न किया गया था वह भी बङ्गाल क्रान्तिकारी दल का काम था।

क्रान्तिकारियों की नई गिरफ़्तारियाँ

दिल्ली में पिछले कुछ दिनों में तीन आदमी गिरफ़्तार किए गए, जिनके पास रिवॉल्वर, गोलियाँ तथा अन्य विस्फोटक पदार्थ मिले। यह भी समाचार है कि चुङ्गी के अधिकारियों को जमना-ब्रिज पर एक गोरखे की तलाशी लेते हुए एक-दो रिवॉल्वर मिले। गुरखा गिरफ़्तार कर लिया गया। एक व्यक्ति रेलवे स्टेशन पर एक भरे हुए रिवॉल्वर के साथ भी गिरफ़्तार किया गया है।

तपेदिक़ से क़ैदी की मृत्यु

लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त सुखदेव तथा पाँच अन्य क़ैदी मुल्तान के नए सेण्ट्रल जेल में लाए गए। लाहौर से ३९ राजनैतिक क़ैदी इस जेल में ६ठी दिसम्बर को आए। इस जेल में शाहपुर से लाए गए, १०० तपेदिक़ के मरीज़ों में आज एक की मृत्यु हो गई।

—गुलाबाई पी० पारकार नाम की एक चौदह वर्ष की कन्या ने बम्बई के मैजिस्ट्रेट की अदालत में बम्बई सिटी पुलिस के एक सारजेण्ट के विरुद्ध अपना बयान दिया है। आज़ाद मैदान की २६ तारीख़ वाली घटना का उल्लेख करते हुए, जब कि कई महिलाएँ एक एकान्त स्थान में लेजा कर छोड़ दी गई थीं; उस कन्या ने कहा, है कि वह भी उन महिलाओं में एक थी। उसने कहा कि वह नाबालिग़ है और सारजेण्ट ने उसे अपने बालदैनों से छीनने का और उसे नगर के बाहर एकान्त स्थान में असहायावस्था में छोड़ देने का अपराध किया है। इसलिए उस पर मुक़दमा चलाया जाय। मैजिस्ट्रेट ने अभियुक्त के नाम सम्मन जारी कर दिया है और साथ ही पुलिस कमिश्नर के पास काग़ज़ात भेजे हैं, ताकि वे अपराधी सारजेण्ट का नाम बतलावें।

—ब्राह्मन बरिया ज़िला टिपरा की ख़बर है कि ता० २ को प्रोफ़ेसर अब्दुर रहीम पर २००) रुपए का जुर्माना किया गया। जुर्माना न देने पर दो सप्ताह की सादी सज़ा देने का हुक्म सुनाया गया। आपने सज़ा भुगतना ही स्वीकार किया है।

—कन्नौज में तारीख़ ३ को तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री पण्डित राजनारायण मिश्र प्रातःकाल में गिरफ़्तार किए गए और उसी वक्त फ़तहगढ़-जेल में भेज दिए गए हैं।

—मद्रास के पोलाची स्थान की ख़बर है कि तारीख़ ३ दिसम्बर को वहाँ के ८ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता, जिसमें २ महिलाएँ भी हैं, गिरफ़्तार किए गए। महिलाओं के ऊपर १००) रुपए का जुर्माना किया गया है, बाक़ी लोगों को ६-६ महीने की कड़ी सज़ा दी गई है। यह सज़ा १४४ वीं धारा का उल्लङ्घन करने के अपराध में दी गई है।

—खुलना की कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्रीयुत कुञ्जलाल घोष को ३ मास की सज़ा और १००) जुर्माना का हुक्म सुनाया गया है। आप १२७ वीं दफ़ा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कलकत्ते के डाइमण्ड हारबर के बनली-मन्दिर सभा के मन्त्री को १४४ वीं दफ़ा का तिरस्कार करने के अपराध में तारीख़ पहिली दिसम्बर को ६ मास की कड़ी सज़ा का हुक्म हुआ है।

—मद्रास के झण्डा-अभिवादन सभा के सम्बन्ध में तारीख़ ३ दिसम्बर को वहाँ की 'बार कौन्सिल' के सदस्य श्रीयुत गोपालरत्नम ऐय्यर, वकील को १ महीने की सादी क़ैद की सज़ा हुई है।

जेल के अत्याचारों का दूसरा शहीद

तारीख़ ६ को बाबू मानिकलाल सेन की अस्थि बनारस लाई गई। आपने मुर्शिदाबाद (बङ्गाल) के जेल में अनशन किया था, यह अनशन राजनैतिक क़ैदियों को ख़राब भोजन मिलने के विरोध में किया गया था। आपने ६० दिन अनशन किया और प्राण त्याग दिए। आप इसी आन्दोलन के सम्बन्ध में जेल गए थे। इस समय आपकी उम्र केवल १७ साल की थी। इनकी अस्थि जुलूस बना कर गङ्गा-घाट तक ले लाई गई। आपकी माता अभी जीवित हैं, वे बनारस ही में रहती हैं। स्वर्गीय यतीन्द्रनाथ दास के बाद आप जेल के अत्याचारों के दूसरे शहीद हैं।

—तारीख़ २ दिसम्बर को जगाधर के ११ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं को, जोकि क़रीब एक महीने पहिले १७-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे—३-३ मास की कड़ी सज़ा दी गई है। इसके साथ ही साथ २५ रुपए का जुर्माना भी हुआ है, जुर्माना न देने पर प्रत्येक को ३ सप्ताह की सज़ा और भुगतनी होगी।

—मेरठ के डिक्टेटर श्रीयुत रामकृपालसिंह, जो कि मेरठ के एक प्रसिद्ध रईसों में से हैं, तारीख़ ३ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बम्बई के कार्यकर्ता श्रीयुत गङ्गाधर राव पाण्डे तारीख़ ५ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए। आपका वारण्ट बेलगाँव से आया था, इसलिए वे बेलगाँव भेज दिए गए हैं।

—जवाहर-दिवस मनाने के सम्बन्ध में अहमदाबाद में तारीख़ २ दिसम्बर को श्रीयुत रनछोड़ पटेल को, जो कि बम्बई प्रान्त की यूथ-लीग के मन्त्री रह चुके हैं और इनके साथ श्रीयुत हरीप्रसाद देसाई तथा रविप्रसाद देसाई को दो महीने की कड़ी क़ैद का हुक्म हुआ है। इन पर ५०) रुपए जुर्माना भी हुआ है, जुर्माना न देने पर इन्हें १५ दिन की क़ैद और भुगतनी होगी।

—श्रीयुत अब्दुल ग़नी को, जो जरानवाला के ५वें डिक्टेटर थे और श्रीयुत प्यारेलाल को, जो कि उसी स्थान के ७वें डिक्टेटर थे, तारीख़ १ दिसम्बर को ६ मास की कड़ी क़ैद और ५०) रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है, जुर्माना न देने पर १ मास की सख़्त क़ैद और भुगतनी पड़ेगी।

—तारीख़ ४ को कराची के प्रधान व्यापारी और कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता सेठ सुन्दरदास तथा श्रीयुत मारीवाला गिरफ़्तार कर लिए गए। गवर्नर के आगमन के समय इन्होंने हड़ताल करवाई थी और काले झण्डे, तथा 'गवर्नर वापस जाओ' इत्यादि के झण्डे और जुलूस निकलवाए थे। इनसे ५०००) की ज़मानत माँगी गई थी और एक साल तक आन्दोलन में भाग न लेने का वचन माँगा गया था। इससे इन्होंने इनकार कर दिया है। नौ स्वयंसेवकों को ४ महीने की कड़ी सज़ा का हुक्म हुआ है। ये नमक बेचने के अपराध में गिरफ़्तार हुए थे।

श्रीयुत महादेव देसाई को छः मास की कड़ी सज़ा

श्रीयुत महादेव देसाई को तारीख़ छः दिसम्बर को अहमदाबाद में छः मास की कड़ी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है। इसके अतिरिक्त आप पर २,६५०) रू० (२५० ?) का जुर्माना भी हुआ है। जुर्माना न देने पर आपको ६ हफ़्ते की क़ैद और भुगतनी पड़ेगी। आपको यह सज़ा छोटे-छोटे बुलेटिन निकालने के सम्बन्ध में दी गई है।

श्रीयुत भास्कर बेरे को, जो बुलेटिन छापने के अपराध में गिरफ़्तार हुए थे, ३ महीने की सज़ा और २००) जुर्माना का हुक्म सुनाया गया है। जुर्माना न देने पर एक महीने की सज़ा और भुगतनी होगी। दोनों सज्जन "बी" दर्जे में रक्खे गए हैं।

अहमदाबाद के सत्याग्रहियों की विजय

अहमदाबाद के विदेशी कपड़ों की दूकान पर धरना देने वाली महिला तथा पुरुष-स्वयंसेवकों ने तारीख़ ८ दिसम्बर को अनशन प्रारम्भ कर दिया। इस पर पहिला जत्था गिरफ़्तार कर लिया गया, पर इनकी जगह एक दूसरे जत्थे ने ले ली। शहर भर में सनसनी फैल गई, और वहाँ पर बहुत सी भीड़ इकट्ठा हो गई। एक के बाद एक करके ६ जत्थे गिरफ़्तार किए गए। इस पर विदेशी कपड़ों के दूकानदारों ने आपस में सलाह करके निश्चय कर लिया, कि आगामी ५ मई तक वे विदेशी वस्त्र न बेचेंगे। इसलिए अनशन छोड़ दिया गया और लोग सहर्ष घर लौट गए।

गिरफ़्तार किए हुए लोग दिन भर पुलिस के हवालात में बन्द रहे, शाम को सब लोग छोड़ दिए गए। पहिले स्त्रियाँ छोड़ी गईं, परन्तु बिना पुरुषों को छोड़े उन्होंने जेल से बाहर निकलने से इनकार किया, पुलिस के अधिकारियों ने उनसे कहा कि अभी हम पुरुषों को भी छोड़ देते हैं। सब लोग रिहा कर दिए गए।

—तारीख़ ४ दिसम्बर की ख़बर है कि कानपुर में श्रीयुत एम० के० निगम, भूतपूर्व प्रोफ़ेसर हिन्दू कॉलेज दिल्ली, गयाप्रसाद लायब्रेरी में गिरफ़्तार कर लिए गए। उनके गिरफ़्तारी का कारण अभी तक मालूम नहीं हुआ है।

—सूरत की ख़बर है कि केसल मैदान में गिरफ़्तारी की गई, श्रीमती वसुमती तथा अन्य १३ महिलाओं पर तारीख़ ६ को ३००) रुपए का जुर्माना किया गया है। यह जुर्माना उनकी चीज़ें बेच कर वसूल किया जावेगा।

—तारीख़ ६ दिसम्बर को हरदोई की डिक्टेटर श्रीमती लक्ष्मीदेवी को ६ महीने की सज़ा तथा १००) जुर्माने का हुक्म हुआ है। श्रीयुत बाबू छेदालाल प्रेज़िडेण्ट, ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी तथा श्रीयुत बाबू श्यामबिहारी प्रेज़िडेण्ट तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी को ६ महीने की कड़ी सज़ा हुई है और १००) रुपए का जुर्माना देने का हुक्म दिया गया है।

—छपरा के डिक्टेटर श्रीयुत हरनारायन सिन्हा तारीख़ ६ को गिरफ़्तार कर लिए गए।

सरदार पटेल फिर गिरफ़्तार !!

कॉङ्ग्रेस के स्थानापन्न प्रेज़िडेण्ट और गुजरात के सर्वस्व सरदार वल्लभ भाई पटेल ६ठीं दिसम्बर को, जिस दिन रात्रि को वे सूरत के लिए रवाना होने वाले थे, अहमदाबाद में अपने मित्र डॉ० कानूगा के बँगले पर गिरफ़्तार कर लिए गए और काठियावाड़ मेल से बम्बई भेज दिए गए। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट स्वयं उन्हें मोटर पर कनकरिया स्टेशन पर ले गया था। उनकी यह गिरफ़्तारी क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट की धारा १७ (१) और (२) के अनुसार बम्बई के उस भाषण के अभियोग में हुई है, जो उन्होंने माण्डवी में सूरजी वल्लभदास खद्दर-भण्डार खोलते समय दिया था।

७वीं दिसम्बर को, जब सरदार पटेल बम्बई पहुँचे तब दादर स्टेशन पर वहाँ पुलिस अफ़सरों ने उनका चार्ज लिया और जब वे पुलिस की लॉरी पर सवार होने लगे तब उनके वहाँ उपस्थित कुछ मित्रों और सम्बन्धियों ने उनका स्वागत किया। सरदार पटेल बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने अपना वक्तव्य देने से इनकार कर दिया। उसी दिन उनका मुक़द्दमा आर्थर रोड जेल में चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० दस्तूर की अदालत में सुना गया। मैजिस्ट्रेट ने मुक़द्दमा दस दिन के लिए मुल्तवी कर, उन्हें हवालात भेज दिया है। सरदार पटेल को उस दिन घर से आया भोजन करने की आज्ञा दे दी गई थी। जेल के डॉक्टर ने उनके हाल के बुख़ार और दाँतों के दर्द के कारण उनके स्वास्थ्य की जाँच की और उनका इलाज निर्धारित कर दिया। बम्बई में उनकी गिरफ़्तारी के समाचार पहुँचते ही शीघ्र ही पूर्ण हड़ताल मनाई गई।

कॉङ्ग्रेस के नए प्रेज़िडेण्ट

बम्बई का ८वीं दिसम्बर का समाचार है कि सम्भवतः सरदार पटेल के सज़ा हो जाने के उपरान्त वे श्री० के० एम० मुन्शी को कॉङ्ग्रेस का नया प्रेज़िडेण्ट नियुक्त करेंगे।

—मद्रास में विदेशी कपड़ों की दूकानों के ऊपर बड़े ज़ोरों से पिकेटिङ्ग हो रही है। रोज़ गिरफ़्तारियाँ होती हैं। पर इससे उत्साह बढ़ता ही जाता है। तारीख़ ४ दिसम्बर को ३३ वालण्टियर गिरफ़्तार हुए। इनको तथा २४ नवम्बर को पकड़े गए स्वयंसेवकों को चार से लेकर छः महीने तक की सज़ाएँ दी गईं। श्रीयुत राघवम टेलीचरी के कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता को एक वक्तव्य देने के सम्बन्ध में १८ महीने की सज़ा दी गई है।

—पेशावर से ख़बर आई है कि चारसद्दा के ६ स्वयंसेवक तारीख़ ६ को पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए।

—तारीख़ ८ को दिल्ली के ५ स्वयंसेवक तथा श्रीयुत महेश्वरी, जो कि हिन्दुस्तानी सेवा-दल के कमाण्डर थे, पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

शेष मैटर चौथे पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए

हिन्सात्मक क्रान्ति की लहर

लाहौर का नया षड्यन्त्र केस

लाहौर का ५वीं दिसम्बर का समाचार है कि उस दिन की पेशी में स्पेशल ट्रिब्यूनल के सम्मुख लाहौर के नए षड्यन्त्र केस के २६ अभियुक्त पेश किए गए थे। मुक़द्दमा सेण्ट्रल जेल के एक कमरे में, जो शहर से तीन मील के फ़ासले पर है, हो रहा है। अदालत के बाहर पुलिस का सख़्त पहरा था और अन्दर प्रवेश करने के पहले दर्शकों और पत्र-प्रतिनिधियों की कड़ी तलाशी ली जाती थी। अभियुक्त पुलिस की लॉरियों में राष्ट्रीय नारे लगाते हुए अदालत में आए। अभियुक्तों के नाम यह हैं :—

(१) कुन्दनलाल, अण्डियाला, ज़िला शेख़ूपुरा
(२) जहाँगीरलाल, जण्डियाला, ज़िला ,,
(३) जयप्रकाश, जण्डियाला, ज़िला ,,
(४) धर्मवीर, लायलपुर
(५) रूपचन्द, नेहसर, ज़िला रावलपिण्डी
(६) अम्बिकासिंह, बरकोबादल, ज़िला रावलपिण्डी
(७) गुलाबसिंह, बरकोबादल, ,, ,,
(८) भगराम, शेख़ूपुरा
(९) दयन्तराय, लाहौर
(१०) हरीराम, रावलपिण्डी
(११) गोकुलचन्द, शेख़ूपुरा
(१२) कृष्णगोपाल, रावलपिण्डी
(१३) नाथूराम, रावलपिण्डी
(१४) नन्दलाल, लायलपुर
(१५) हरनामसिंह शेख़ूपुरा
(१६) बंसीलाल, चकवल, ज़िला झेलम
(१७) कृष्णलाल, चकवल, ज़िला झेलम
(१८) बिशनदास, रावलपिण्डी
(१९) गुरबख़्शसिंह, कोट-बरेख़ाँ, ज़िला गुजराँवाला
(२०) सेवाराम, भूमल, ज़िला कैम्पबेलपूर
(२१) सर्दारसिंह, कोट-बरेख़ाँ, ज़िला गुजराँवाला
(२२) हरनामसिंह, सैयदकासराय, ज़िला रावलपिण्डी
(२३) महाराज किशन, चकवल, ज़िला झेलम
(२४) भीमसेन, शेख़ूपुरा
(२५) धर्मपाल, भूमल, ज़िला काँगड़ा
(२६) बंसीलाल, चिनओट, ज़िला झङ्ग

भागे हुए अभियुक्त

इस नए षड्यन्त्र केस के ये अभियुक्त लापता हैं :—

(१) यशपाल, भूमल, ज़िला काँगड़ा
(२) हंसराज, लायलपुर
(३) सुखदेवराज, दीनानगर, ज़िला गुरुदासपुर
(४) विश्वनाथ राव वैशम्पायन (झाँसी के सिविल सर्जन के ऑफ़िस का हेड क्लर्क)
(५) लेखराम, ढींग सराय, ज़िला हिसार
(६) प्रेमनाथ, लाहौर
(७) मुसम्मात परकाशो, लाहौर
(८) मुसम्मात दुर्गादेवी, लाहौर
(९) चन्द्रशेखर आज़ाद, बैजनाथ टोला, बनारस
(१०) सीताराम, चकवल, ज़िला झेलम
(११) मुसम्मात सुशीला, गुजरात
(१२) प्रोफ़ेसर सम्पूर्णसिंह टण्डन, लाहौर

उपर्युक्त अभियुक्तों पर दण्ड-विधान की धारा १२० के साथ ३०२, ३९५ और ३९६; दण्ड-विधान की १२० बी० के साथ, सन् १९०८ के एक्ट ६ की ५ वीं धारा ३, ४, ५, ६ और दण्ड-विधान की धारा १२० बी० के साथ १८७८ के दूसरे एक्ट की धारा १९ और २० के अभियोग लगाए गए हैं।

पञ्जाब के क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार एक ट्रिब्यूनल केस की कार्यवाही करेगा। अभियुक्तों के गवाहों को बयानों के साथ उनकी एक लिस्ट दी जायगी। इस लिस्ट की तैयारी के लिए ट्रिब्यूनल ने मुक़द्दमा १० दिन के लिए स्थगित कर दिया है और मुक़द्दमा प्रारम्भ होने के पहले ७ दिन की छुट्टी दी जायगी। इस प्रकार मुक़द्दमा लगभग १८वीं दिसम्बर से प्रारम्भ होगा। मालूम हुआ है कि गवर्नमेण्ट की ओर से लगभग ५०० गवाह पेश किए जायँगे। गवर्नमेण्ट ने रायबहादुर ज्वालाप्रसाद और गोपाललाल को सरकारी वकील नियुक्त किया है। अभियुक्तों के वकीलों का अभी तक कोई निश्चय नहीं हुआ।

अभियुक्तों ने, अदालत बरख़ास्त होने के पहले, ट्रिब्यूनल के कमिश्नरों से समाचार-पत्रों तथा सप्ताह में एक बार सम्बन्धियों से उनकी सुविधा के अनुसार मिलने की आज्ञा माँगी। उन्होंने सोने के लिए पलङ्ग और मनोरञ्जन के लिए कुछ खेल के सामान की भी प्रार्थना की। कमिश्नरों ने अभियुक्तों को 'बी' क्लास में रक्खा है और जेल के नियम देख लेने के उपरान्त उनकी प्रार्थना पर विचार करने का वादा किया है।

अभियुक्तों की आयु १६ और ३० वर्ष के अन्दर है। उनमें से अधिकांश १८ और २५ वर्ष के बीच में हैं।

चाँदनी चौक में यूरोपियनों पर बम

दिल्ली का ३री दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ चाँदनी चौक में कुछ ऐसे राहगीरों पर बम फेंका गया था, जिनमें यूरोपियन भी सम्मिलित थे। बम फटा अवश्य, परन्तु उससे कोई घायल नहीं हुआ।

कॉलेज में दो विद्यार्थी घायल

दिल्ली का ३री दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के तिब्बिया कॉलेज के धन्वन्तरी फाटक पर एक बम पड़ा हुआ पाया गया, जिस पर 'ख़तरनाक' शब्द लिखा हुआ था। कॉलेज के दो विद्यार्थियों ने यह देखने के लिए कि उसमें क्या है, बम हाथ में उठा लिया और उठाते ही वह फट गया, जिससे उन दोनों के चेहरों पर चोटें आईं। वे उसी समय अस्पताल पहुँचा दिए गए।

—दिल्ली का ४थी दिसम्बर का समाचार है कि कॉलेज के फाटक पर बम फटने के सम्बन्ध में तिब्बिया कॉलेज के दो विद्यार्थी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

विदेशी कपड़े के व्यापारी और दलाल पर बम

कानपूर का ८वीं दिसम्बर का समाचार है कि जिस समय जनता और पुलिस दोनों सरदार पटेल की तीसरे बार की गिरफ़्तारी पर सभा में व्यस्त थीं, तब क़रीब ७॥ बजे घुमनी महाल में शाह जी की कोठी के पास सड़क पर एक बम फटा, जिससे मेसर्स बाबूराम सीताराम की दुकान के विदेशी कपड़े के दलाल लाला सालिगराम और बाबूराम घायल हुए। पुलिस ने उसी समय उस स्थान पर पहुँच कर घायल व्यक्तियों को अस्पताल भेज दिया। अस्पताल में उनके शरीर में से लोहे के टुकड़े निकाले गए। पुलिस को उस स्थान पर भी लोहे के कुछ टुकड़े मिले। मामले की जाँच सरगर्मी से हो रही है।

बङ्गाल में षड्यन्त्रकारियों का आतङ्क

जेल के इन्स्पेक्टर जनरल की हत्या

कलकत्ते में ८वीं दिसम्बर को दिन के साढ़े बारह बजे बङ्गाल की जेलों के इन्स्पेक्टर जनरल लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल एन० एस० सिम्पसन, आई० एम० एस० राइटर्स बिल्डिङ्ग में अपने ऑफ़िस में गोली से मार डाले गए। लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल सिम्पसन जब अपने ऑफ़िस में थे तब तीन बङ्गाली ऑफ़िस के सामने आए और उन्होंने चपरासी से कहा कि वे उनसे मिलना चाहते हैं; परन्तु उन्हें उत्तर मिला कि वे कार्य में व्यस्त हैं। बङ्गालियों से फ़ॉर्म भरने की प्रार्थना की गई, परन्तु वे चपरासी को एक ओर ढकेल कर अन्दर चले गए। लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल सिम्पसन उस समय फ़ाइलों की जाँच कर रहे थे। तीनों बङ्गालियों के आकस्मिक प्रवेश से वे पीछे को हट गए। तीनों ने एक ही साथ उन पर गोलियाँ छोड़ीं और कर्नल सिम्पसन के कमरे से बाहर निकल कर वे बरण्डे में आए और भागते हुए ऑफ़िसों की काँच की खिड़कियों और बरण्डे की छत पर गोलियाँ छोड़ते गए। अर्थ-सदस्य ऑनरेबिल मि० एफ़० मार और मि० जे० डबल्यू० नेलसन के ऑफ़िसों की खिड़कियों पर गोलियों के निशान बने हुए हैं। इसके उपरान्त वे पासपोर्ट ऑफ़िस में घुस गए और वहाँ उन्होंने अपने रिवॉल्वर भरे और एक अमेरिकन मिशनरी मि० ई० एस० जॉन्सन पर गोली चलाई, परन्तु गोली निशाना चूक गई। तदुपरान्त वे जुडिशियल सेक्रेटरी मि० जे० डबल्यू० नेल्सन, आई० सी० एस० के कमरे में घुसे और उनकी ओर गोली चलाई, गोली उनकी जाँघ में घुस गई। उनके जाँघ के घाव ख़तरनाक नहीं हैं। किसी भी विभाग के चपरासियों की ओर गोली नहीं छोड़ी गई।

आक्रमणकारियों के सम्बन्ध में कई बातें कही गई हैं, परन्तु अन्त की एक विश्वसनीय रिपोर्ट से पता चलता है, कि उनमें से एक ने आत्म-हत्या कर ली है, परन्तु अन्य दो अभी तक जीवित हैं और मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मरणासन्न-स्थिति में पड़े हैं। एक घातक के सम्बन्ध में यह निश्चयपूर्वक मालूम हो गया है कि वह बिनयकृष्ण बोस है। कहा जाता है कि उसने अपने मरणासन्न परिस्थिति के वक्तव्य में कहा है कि वही ढाका मेडिकल स्कूल का विद्यार्थी बोस है और उसी ने बङ्गाल-पुलिस के इन्स्पेक्टर जनरल मि० एफ़० जे० लोमेन की हत्या की थी। तीनों आक्रमणकारी यूरोपियन पोशाक में थे। इस सम्बन्ध में शहर में दो तलाशियाँ भी हुईं, परन्तु उसका कोई परिणाम अभी तक नहीं निकला। बरण्डे में आक्रमणकारियों ने 'वन्दे-मातरम्' के नारे लगाए और जैसे-जैसे बढ़ते गए गोलियाँ छोड़ते गए। पासपोर्ट ऑफ़िस के कर्मचारियों ने दरवाज़ा खोलने का प्रयत्न किया, परन्तु उन्हें गोली से मार डालने की धमकी दी गई। अमेरिकन मिशनरी एक खिड़की के रास्ते भाग निकला और लोहे के पम्प के सहारे नीचे उतर कर भाग गया। ९वीं दिसम्बर का समाचार है कि तीन आक्रमणकारियों में से एक ढाका यूनीवर्सिटी का विद्यार्थी दिनेश गुप्त है। कहा जाता है कि ८ ता० को जो घातक मरा है, उसने स्वयं विष खाकर अपनी आत्म-हत्या की है। बोस की हालत बहुत ख़तरनाक है, परन्तु गुप्त का स्वास्थ्य सुधर रहा है। तीनों के पास से चार रिवॉल्वर प्राप्त हुए हैं।

सुखदेव को फाँसी नहीं, कालापानी

लाहौर का १४वीं दिसम्बर के समाचार से मालूम होता है कि लाहौर-षड्यन्त्र केस के अभियुक्त श्री० सुखदेव को—जिन्हें स्पेशल ट्रिब्यूनल ने सरदार भगतसिंह के साथ फाँसी की सज़ा दी गई थी—फाँसी न देकर अब आजन्म काले पानी का दण्ड भोगना पड़ेगा ; क्योंकि
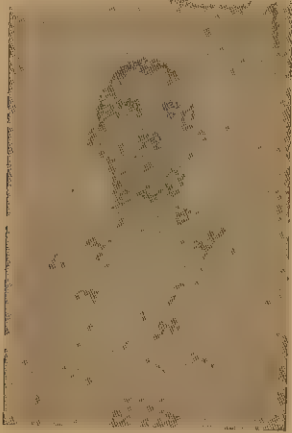
श्री० सुखदेव

पञ्जाब गवर्नमेण्ट द्वारा फाँसी की सज़ा बदल कर अब आजन्म कालेपानी की सज़ा दी गई है। पञ्जाब-सरकार के शीघ्र ही इस सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति निकालने की सम्भावना है। अब तक इस परिवर्तन का रहस्य अन्धकार के गर्भ में है।

बाबा निधानसिंह छोड़ दिए गए

अमृतसर का २री दिसम्बर का समाचार है कि लुधियाना ज़िले के चुधा गाँव के श्री० बाबा निधानसिंह मुल्तान सेण्ट्रल जेल से रिहा कर दिए गए। उन्हें सन् १९१४ के षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में आजन्म कालेपानी के क़ैद की सज़ा हुई थी। वे कई वर्ष चीन में रहे थे, और वहाँ उन्होंने एक चीनी महिला से विवाह कर लिया था, गिरफ़्तार होने के पहले वे लाखों के अधिपति थे, किन्तु अब कङ्गाल हो गए हैं।

दिल्ली में ३ पिस्तौलें और गिरफ़्तारियाँ

नई दिल्ली का ८वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ रूहेल में तीन व्यक्ति गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। उनके पास से तीन भरी हुई पिस्तौलें और कुछ ख़ाकी वर्दियाँ भी प्राप्त होने के समाचार आए हैं। गिरफ़्तार व्यक्तियों में एक गोरखा भी बतलाया जाता है।

शिवदत्त पकड़ा गया

अमृतसर का ६ वीं दिसम्बर का समाचार है कि दिल्ली से एक राजनीतिक डकैती-केस के सम्बन्ध में तार से समाचार आने पर स्थानीय पुलिस ने एक धर्मशाला पर धावा किया और वहाँ शिवदत्त नामक एक व्यक्ति को गिरफ़्तार कर लिया। वह पहचान के लिए दिल्ली भेज दिया गया है।

दिल्ली में बम के धड़ाके से सनसनी

दिल्ली में ६वीं दिसम्बर की रात्रि को ६ बजे कीन्स गार्डेन के क्लाक-टावर के सामने वाले फाटक पर बम फटने से ४ आदमियों को चोटें आईं। मालूम हुआ है कि जब दो युवक आपस में गाली-गलौज कर रहे थे, उसी समय धड़ाका हुआ और पास में खड़ी हुई भीड़ में सनसनी फैल गई। डर के मारे लोग चारों ओर भागने लगे। बम फटने की ख़बर आस-पास बिजली की तरह फैल गई। पुलिस ने जाँच कर बतलाया है कि वह बम नहीं केवल पटाखे की आवाज़ थी। ४ व्यक्तियों को हलकी चोटें लगने के सिवाय बम का वहाँ कोई निशान नहीं है। बम फटने पर उस स्थान पर उसका चिन्ह बन जाता है।

—स्पेन के प्रधान-मन्त्री पर वहाँ के एक लेखक ने गोली चलाई। पर वार ख़ाली गया और उन्होंने झपट कर लेखक का हाथ पकड़ लिया। इसका कारण पूछने पर उसने कहा कि अब मैं अराजक दल का सदस्य हो गया हूँ। सब की राय है कि यह काम उसने दिमाग़ी ख़राबी के कारण किया है। प्रधान-मन्त्री भी इस राय से सहमत हैं।

—लन्दन में एक चरख़ा-प्रदर्शनी खोली गई है। इसमें शान्ति-निकेतन के छात्र चरख़ा सम्बन्धी सारी विधियाँ दर्शकों के सामने कर दिखाते हैं।

—स्कॉटलैण्ड के कोयले की खदानों में काम करने वाले मज़दूरों ने हड़ताल कर दी है।

—वर्तमान औद्योगिक शिथिलता के कारण अमेरिका के संयुक्त राज्य के २५ लाख मज़दूर बेकार बैठे हैं। इसी औद्योगिक शिथिलता के कारण वहाँ के राष्ट्रीय बजट में १८ करोड़ डॉलर्स की कमी हो गई है।

—राष्ट्रीय नाविक-सुधार करने के उद्देश से चीन की सरकार ने ब्रिटिश सरकार से सहायता माँगी है। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सहायता देना स्वीकार किया है और कैप्टन बेली की अध्यक्षता में इङ्गलैण्ड के कुछ होशियार नाविक इस काम के लिए भेजे जावेंगे।

आठ-आठ आने में बम बेचे गए

कराची का ८वीं दिसम्बर का समाचार है कि सिन्ध की ख़ुफ़िया पुलिस ने आठ अभियुक्तों पर जो मुक़दमा चलाया है, उस सम्बन्ध में बैङ्क के क्लर्क ने अपने बयानों में षड्यन्त्रकारी दल की अत्यन्त रोमाञ्चकारी घटनाओं का उल्लेख किया है। क्लर्क का कहना है कि आठों अभियुक्त षड्यन्त्रकारी दल के सदस्य हैं, जिसका निर्माण उसके 'सुपरिण्टेण्डेण्ट' एक बङ्गाली सेन जी ने किया है। उसने अपने बयानों में बतलाया कि बम किस प्रकार बनाए जाते थे और किस प्रकार आठ आने के हिसाब से गाँन्धी गार्डेन में बेचे जाते थे। उसने यह भी बतलाया कि ख़ैरातीराम ने किस प्रकार पुलिस-थाने में बम फेंके थे।

ज़ीरा बम-केस

लाहौर में ४वीं दिसम्बर को ज़ीरा बम-केस की कार्यवाही प्रारम्भ हो गई। इस केस में गुरुदासराम, हंसराज, पूरनमल, गुरुमुखसिंह और लालचन्द—पाँच अभियुक्त हैं। इनमें से अन्तिम फ़ीरोज़पुर ज़िला म्युनिसैलिटी के वाइस प्रेज़िडेण्ट हैं। सरकारी वकील ने केस के प्रारम्भ में अशान्ति फैलने का संक्षिप्त विवरण और बाद में अभियुक्तों की कार्यवाही समझाई। जब से म्युनिसिपल कमिटी के एक सदस्य ने सत्याग्रह आन्दोलन के विरुद्ध एक प्रस्ताव रखने का विचार किया है, उसी समय से अभियुक्तों ने लाल पर्चे बाँटना और बम बनाना प्रारम्भ कर दिया। एक बम पुलिस थाने में फेंका गया था, परन्तु वह फटा नहीं। बाद में गुरुदासराम और पूरन ने अपनी दुकानों में तथा अन्य स्थानों से बम बनाने का मसाला ढूँढ़ने में पुलिस को सहायता पहुँचाई थी। पूरन का कहना था कि बम गवर्नमेण्ट अफ़सरों को मारने के लिए बनाए गए थे। इस केस में ५० से ऊपर गवाहियाँ ली जावेंगी। ८वीं दिसम्बर को मुक़दमे की पेशी थी, परन्तु अभियुक्तों के वकीलों को गवाहियों के पूरे बयान देने के उपरान्त मुक़दमा स्थगित कर दिया गया।

* * *

—राउण्डटेबुल कॉन्फ्रेन्स ने ब्रह्म देश को भारत से अलग करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। ब्रह्म देश के प्रतिनिधि ने कहा कि ब्रह्म देश भारत से अलग रहना चाहता है। भारतीय सदस्यों ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है!

विलायत में हिन्दू-मुसलमानों में कशाकशी

लन्दन से ख़बर आई है कि महासभा की ओर से डॉक्टर मुञ्जे ने एक विज्ञप्ति निकाली है। जिसमें उन्होंने श्रीयुत जिन्ना की चौदह शर्तों को नामञ्ज़ूर कर दिया है। वे सिन्ध के प्रथकत्व तथा सेपरेट इलक्टरेट के ख़िलाफ़ हैं।

प्रधान-मन्त्री भारत के वाइसराय

इङ्गलैण्ड में बड़े ज़ोर की ख़बर है कि भारत के भावी वाइसराय स्वतः प्रधान सचिव मैकडॉनल्ड होकर आवेंगे। पर मज़दूर-दल के कई सदस्य कहते हैं कि वह विश्वसनीय नहीं है।

—वर्तमान आर्थिक दुर्दशा तथा बेकारी के कारण इङ्गलैण्ड की सरकार बहुत घबड़ा रही है। वहाँ के एक मज़दूर नेता सर ऑसवॉल्ड मोज़ले ने विज्ञप्ति निकाली है कि वर्तमान दुर्दशा को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि गत महायुद्ध काल की तरह राज्य की सारी सत्ता ५ मन्त्रियों के हाथ में दे दी जावे। इन मन्त्रियों को चाहिए कि वर्तमान आपत्ति का जिस तरह हो सके मुक़ाबला करें। इस विज्ञप्ति पर ३० अन्य मज़दूर सदस्यों ने हस्ताक्षर किए हैं।

इङ्गलैण्ड में २३ लाख बेकार

इङ्गलैण्ड के मज़दूरों के मन्त्री ने विज्ञप्ति निकाली है कि ३ नवम्बर को इङ्गलैण्ड के बेकार मज़दूरों की संख्या क़रीब २३ लाख तक पहुँच गई है।

(२२ पृष्ठ का शेषांश)

बम्बई की डिक्टेटर को ६ मास की सज़ा

गाँधी-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार की गई बम्बई की डिक्टेटर श्रीमती गङ्गाबेन पटेल, तथा श्रीमती शान्तबेन पटेल तथा कॉङ्ग्रेस बुलेटीन की सम्पादक श्रीमती त्रिवेदी को ६ मास की सज़ा दी गई है।

इसी सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए वार कौन्सिल के अन्य दो सदस्यों को ६ मास की सज़ा तथा २००) जुर्माना, जुर्माना न देने पर ३½ मास की और क़ैद का हुक्म सुनाया गया है।

—बम्बई कॉरपोरेशन के तीन सदस्य श्रीयुत काञ्जी मास्टर, श्रीयुत जमनादास मेहता तथा श्रीयुत महेश्वरी को ६ मास की सज़ा दी गई है।

—फ़ैज़ाबाद से ख़बर आई है कि बाबू गिरजादयाल को, जो कि जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, तारीख़ ४ को छः महीने की कड़ी सज़ा और १००) जुर्माने का हुक्म सुनाया गया है। आप 'सी' दर्जे में रक्खे गए हैं। आप अयोध्या के सीताराम प्रेस के जन्मदाता तथा 'अवध-केसरी' के सम्पादक हैं और कॉङ्ग्रेस के बड़े कार्यकर्ताओं में से हैं।

—तारीख़ ४ को दिल्ली की पुलिस ने जमायत-उलेमा के दफ़्तर की तलाशी ली। पर उन्हें कोई ग़ैर-क़ानूनी चीज़ नहीं मिली। उन्होंने कपड़े के बाज़ार में लाला ख़ैराती राम की भी तलाशी ली। और बाद में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया।

—एक विदेशी कपड़े वाले मुसलमान की दूकान के सामने धरना देने के सम्बन्ध में तारीख़ ४ को दिल्ली के छः स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

* * *

"ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को झख मार कर नत-मस्तक होना पड़ेगा"

"महात्मा गाँधी वर्तमान-युग के ईसामसीह हैं"

एक अमेरिकन पत्रकार की सम्मति

अगर आप भारत का जातीय भेद-भाव दूर कर, उसे सङ्गठित करने में सफल हो गए, तो ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट को झख मार कर नत-मस्तक होना पड़ेगा। इस समय जातीय और धार्मिक भेद-भाव नष्ट कर, केवल स्वतन्त्रता की आवाज़ भारतीय वायु-मण्डल में गूँजना चाहिए।

सहयोगी 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के बोरसद (गुजरात) के विशेष-सम्वाददाता ने लिखा है, कि अमेरिका के "बोस्टन ईवनिङ्ग ट्रान्सक्रिप्ट" पत्र के मि० ई० एच० जेम्स, बारदोली ज़िले में भ्रमण कर रहे हैं। बातचीत में अमेरिकन पत्रकार ने निम्न विचार प्रकट किए हैं :—

"भारत में महात्मा गाँधी ही एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो भारत को पुनः सङ्गठित कर सकते हैं और संसार में नए धर्म की स्थापना कर सकते हैं। संसार में वे ही ऐसे व्यक्ति हैं, जो नए धर्म की स्थापना कर रहे हैं। वे अपने नए धर्म का प्रचार साबरमती में सत्याग्रह-आश्रम और समस्त भारत में इसी प्रकार की अन्य संस्थाएँ स्थापित कर केवल भारत ही में नहीं कर रहे हैं, बल्कि वे दूसरे देशों के विचारों का भी दृष्टिकोण बदल रहे हैं। इस आन्दोलन की प्रवृत्ति वही उद्देश्य प्राप्त करने की है।

"वे एक प्रचण्ड सामाजिक और राजनीतिक सुधारक हैं। उन्होंने नए धर्म का प्रचार कर एक नए युग को जन्म दिया है। उन्होंने भारत को अहिंसा और सत्याग्रह—दो बड़े ज़बरदस्त अस्त्र दिए हैं और वे ही ब्रिटिश साम्राज्य-वाद पर विजय प्राप्त कर सकते हैं! वे वर्तमान युग के ईसामसीह हैं। इस आन्दोलन से संसार की विचार-धारा में विशेषतः युद्ध और घातक-अस्त्रों के सम्बन्ध में अद्भुत परिवर्तन हो जायगा। वे नीति और चरित्र की नई व्याख्या कर रहे हैं, नए इञ्जील और धर्म का प्रचार कर रहे हैं। भारत की स्वतन्त्रता का प्रारम्भ सादगी से होता है।

"भारत के सामने राष्ट्रीय सङ्गठन की सब से बड़ी समस्या उपस्थित है, जिसके बिना भारतीयों की उन्नति का मार्ग बिलकुल रुका हुआ है। भारत में अधिक जातियाँ और धर्म होने से वे उसके उन्नति के मार्ग में पहाड़ बन कर खड़े हो जाते हैं। अमेरिका में हमें इस प्रकार की कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। अगर आप भारत की जातियों और धर्मों को सङ्गठित करने में सफल हो गए, तो ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट को झख मार कर नतमस्तक होना पड़ेगा। यही आपका मुख्य कार्य है। आपको इस बात का निश्चय करना है कि आप जाति और धर्म पसन्द करते हैं, या स्वतन्त्रता? जातीय और धार्मिक भेद-भाव नष्ट कर, केवल स्वतन्त्रता की ही पुकार भारतीय वायु-मण्डल में गूँजनी चाहिए।

किसानों की अचल दृढ़ता

"आपके लगानबन्दी के आन्दोलन में मैं सब से अधिक दिलचस्पी लेता हूँ, नृशंस व्यवहार और मार-पीट क़ानून के विरुद्ध है। किसान अपने निश्चय पर दृढ़ हैं और प्रसन्नतापूर्वक अपनी सैकड़ों और हज़ारों की जाय-दाद पर पानी फेर रहे हैं। अधिकारी-वर्ग बाड़ियों और पट्टीदारों में फूट डालने का भरसक प्रयत्न कर रहा है और रास और अन्य दो-तीन गाँवों में तो यह वैमनस्य इतना फैल गया है, कि बाड़ा पट्टीदारों का आत्म-सम्मान कुच-लने पर वे तुल से गए हैं! सब से अधिक दुःख की बात तो यह है कि यह वैमनस्य फैलाने में आपके देशवासियों का ही अधिक हाथ रहता है। आपका उद्देश्य तो सदैव आन्दोलन की प्रगति बढ़ाते रहने का होना चाहिए। एक ही बात की पुनरावृत्तियाँ सुनते-सुनते संसार थक जायगा और उसे भारत से उतनी दिलचस्पी न रहेगी। इसलिए अपने आन्दोलन में सदैव नए परिवर्तन करते रहो; यदि संसार के समस्त समाचार-पत्र आपके आन्दो-लन के समाचार सदैव मुख-पृष्ठ पर छापते रहें, तो आप समझ लें कि उनकी इस आन्दोलन में दिलचस्पी घटी नहीं है।

श्री० वल्लभ भाई पटेल

"यदि मैं वल्लभ भाई पटेल के स्थान में होता, तो मैं गिरफ़्तार होने के लिए कभी इतना उत्सुक न होता, मैं चुपचाप रह कर सङ्गठन कार्य अधिक पसन्द करता। श्री० पटेल का जेल के बाहर रहना अतीव आवश्यक प्रतीत होता है। उनमें गवर्नमेण्ट की नृशंसताओं का विरोध करने की अद्भुत शक्ति है।"

बनारस-यूनिवर्सिटी का गवर्नमेण्ट को मुँहतोड़ जवाब

प्रोफ़ेसरों और विद्यार्थियों का दृढ़ निश्चय

प्रोफ़ेसर आधे वेतन पर कार्य करेंगे; विद्यार्थी फ़ीस अधिक देंगे!

जेल में पण्डित मालवीय से मुलाक़ात

गवर्नमेण्ट द्वारा बनारस यूनिवर्सिटी की सहायता बन्द होने का समाचार हम 'भविष्य' के पिछले अङ्क में छाप चुके हैं। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है; यूनि-वर्सिटी इसके लिए बहुत पहले से तैयार बैठी थी। कुछ सप्ताह पहले भारत-सरकार ने बनारस यूनिवर्सिटी के पदा-धिकारियों को निम्न शर्तों का एक अल्टीमेटम भेजा था:—

(१) यूनिवर्सिटी के कर्मचारियों (अध्यापक आदि) में से वे लोग अवश्य निकाल दिए जायँ, जिन लोगों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में कुछ भी भाग लिया है या भविष्य में जिन लोगों के भाग लेने की सम्भावना है!

(२) जिन विद्यार्थियों की मनोवृत्ति का झुकाव राष्ट्रीयता की ओर है, उन्हें भरती करना अवश्य बन्द कर दिया जाय।

(३) वे विद्यार्थी, जो वर्तमान आन्दोलन में सज़ा पा चुके हैं, यूनिवर्सिटी से अवश्य निकाल दिए जायँ।

पत्र में भारत-सरकार ने यह बिलकुल स्पष्ट कर दिया था, कि सहायता का जारी रहना उपर्युक्त शर्तों के पालन करने पर निर्भर है।

पत्र प्राप्त होते ही प्रिन्सिपल आनन्दशङ्कर बापू भाई ध्रुव और प्रोफ़ेसर श्यामचरण दे (यूनिवर्सिटी के वर्तमान वायस चान्सलर) पण्डित मदनमोहन मालवीय से नैनी जेल में मुलाक़ात करने गए। मालूम होता है कि पण्डित जी ने सहायता जारी रखने के लिए गवर्न-मेण्ट के सामने झुकने से साफ़ इनकार कर दिया। इस मुलाक़ात के परिणाम-स्वरूप यूनिवर्सिटी के अधिकारियों ने गवर्नमेण्ट को स्पष्ट रूप से लिख दिया कि वे उसकी शर्तें स्वीकार करने में सर्वथा असमर्थ हैं, क्योंकि उन कर्मचारियों ने, जिन्होंने आन्दोलन में भाग लिया है, भाग लेने के पहले ही यूनिवर्सिटी से छुट्टी ले ली थी, और यूनिवर्सिटी उनकी स्वतन्त्रता में कोई बाधा नहीं पहुँचा सकती थी।

हाल ही में यूनिवर्सिटी के कर्मचारियों की एक सभा हुई थी, जिसमें उन्होंने इस बात का निश्चय किया है कि जब तक यूनिवर्सिटी की आर्थिक अवस्था पूर्ण रूप से न सुधर जायगी, तब तक वे कम वेतन पर उसकी सेवा करेंगे। मालूम होता है, उन्होंने आधे वेतन पर कार्य करना स्वीकार भी कर लिया है।

इसी प्रकार वहाँ के विद्यार्थी भी अपनी विद्या-दात्री माता की भरसक सेवा करने पर तुल गए हैं। ३री दिसम्बर को इञ्जीनियरिङ्ग कॉलेज के राजपूताना होस्टल के विद्यार्थियों ने एक सभा कर यूनिवर्सिटी की सहायता करने के उपायों पर विचार किया था। उन्होंने सभा में यह निश्चय किया है कि वे अभी तक जो फ़ीस २२) माहवार के हिसाब से ८ माह तक देते थे, उसकी वृद्धि कर वे २५) माहवार के हिसाब से १० माह तक देंगे। प्रो-वाइस चान्सलर ने विद्यार्थियों के इस त्याग से अपनी पूर्ण सहानुभूति दिखाई और उन्होंने कहा कि जब आव-श्यकता होगी, तब वे उनके निश्चय पर विचार करेंगे।

—२री दिसम्बर की ख़बर है, कि पण्डित मदन-मोहन मालवीय, जो कि हाल में नैनी जेल में अस्वस्था-वस्था में थे, अब अच्छे हैं ; पर अभी आप कमज़ोर हैं।

—वर्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार की गई महिलाओं में सब से वयोवृद्ध महिला बङ्गाल की श्रीमती मोहिनी देवी ३री दिसम्बर को कलकत्ता जेल से रिहा की गईं। आपको पुलिस के हुक्म के विरुद्ध स्वर्गीय देशबन्धु चित्तरञ्जन दास के दिवस मनाने के सम्बन्ध में ६ मास की कड़ी सज़ा का हुक्म हुआ था।

सत्याग्रह आन्दोलन में ६२,००० जेलों में बन्द

वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलन में अभी तक जो गिर-फ़्तारियाँ हुई हैं, कॉङ्ग्रेस कमिटियों की रिपोर्टों के अनु-सार उनकी मोटी संख्या इस प्रकार है :—

पञ्जाब ६,०००, दिल्ली १,२००, संयुक्त प्रान्त ६,०००, बिहार ११,०००, बङ्गाल १२,६००, मद्रास ४,०००, गुज-रात १,३००, बम्बई ८,००० तथा मध्य प्रान्त, सिन्ध, उड़ीसा और आन्ध्र ५,०००, इस प्रकार अभी तक कुल ६२,००० गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

राष्ट्रपति की सास डिक्टेटर चुनी गईं

४थी दिसम्बर को दिल्ली के आठवें डिक्टेटर सेठ केदारनाथ गिरफ़्तार कर लिए गए। अब इस पद पर श्रीमती कमला नेहरू की माता श्रीमती राजपति कौल नियुक्त हुई हैं।

सरदार पटेल पर दफ़ा १४४

४थी दिसम्बर को सरदार वल्लभ भाई पटेल के पास कैरा ज़िला के मैजिस्ट्रेट ने एक सरकारी हुक्म भेजा है। उसमें उन्होंने लिखा कि आज से दो महीने तक आपको कैरा ज़िले की हद के अन्दर जाने की मुमानियत करता हूं, क्योंकि आपकी उपस्थिति से वहाँ उपद्रव होने का डर है। इस पर सरदार महोदय ने कहा कि मेरे लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, भविष्य में ऐसे और भी हुक्म मिलने की आशा है, अतएव मेरे कार्यक्रम में कुछ भी परिवर्तन नहीं हो सकता और मैं स्वतः अपनी गिरफ़्तारी का स्थान यथासमय ठीक कर लूँगा।

एटा जेल में अनशन

१ली दिसम्बर की ख़बर है, कि एटा जेल में स्वामी शरनानन्द तथा श्रीयुत मानपाल पाराशरी और अन्य दो व्यक्ति अनशन कर रहे हैं। स्वामी जी को गत २२ जुलाई को नमक-क़ानून के सम्बन्ध में ६ मास की सज़ा दी गई थी। जेल में आपके जोगिया कपड़े छीन लिए गए हैं, इससे १२ दिन से आप अन्न और वस्त्र दोनों त्यागे हुए हैं। श्रीयुत मानपाल और उनके साथियों की हवन सम्बन्धी चीज़ें भी छीन ली गई हैं। ये भी २६ नवम्बर से अनशन कर रहे हैं।

—श्रीयुत जमनालाल बजाज़ की धर्मपत्नी श्रीमती जानकीबाई को कलकत्ते की महिलाओं ने ३री दिस-म्बर को मान-पत्र दिया। इसी सभा में श्रीमती सुवर्णा सेन ने—जो कि हाल में जेल से छूट कर आई हैं—जेल में ३ मास के अन्दर दो लाख गज़ अपना काता हुआ सूत सबको दिखलाया।

—मध्य प्रान्त से ख़बर आई है कि सम्पूर्ण मराठी मध्य प्रान्त में तारीख़ ६ को महात्मा गाँधी का दिवस मनाया गया। सब जगह प्रातःकाल को भण्डाभिवादन, दोपहर को तकली जुलूस तथा शाम को विराट सभाएँ हुईं।

बम्बई का कॉङ्ग्रेस-भवन जेल बनाया गया

सत्याग्रही क़ैदियों की भीड़ के कारण बम्बई के सब हवालात भरे हुए हैं ; अतएव वहाँ की पुलिस ने ज़ब्त किए हुए कॉङ्ग्रेस-भवन को ही जेल बना लिया है।

मद्रास-सरकार को एक करोड़ की हानि

सुना जाता है कि ४थी दिसम्बर को मद्रास के गवर्नर ने आगामी बजट के विषय में अधिकारियों से सलाह ली है। इस साल क़रीब १ करोड़ का घाटा होने का अन्देशा है। इसमें से क़रीब ८० लाख का घाटा आबकारी तथा स्टाम्प-ड्यूटी में पड़ा है।

बङ्गाल-सरकार को ९४ लाख का घाटा

सहयोगी 'लिबर्टी' का कहना है कि इस साल बङ्गाल-सरकार को ९४ लाख का घाटा हुआ है। इसलिए वहाँ के शिक्षा सम्बन्धी अधिकारियों को हुक्म हुआ है कि वे स्कूलों की ग्राण्ट बन्द कर दें। कई एक नई इमारतों का बनना भी मुल्तवी कर दिया गया है। और हर प्रकार से ख़र्च को कम करने का प्रयत्न किया जा रहा है। यह सब घाटा लगान, आबकारी, तथा जङ्गल-विभागों की आमदनी कम हो जाने के कारण हुआ है।

खद्दर की उपज और खपत

अखिल भारतीय चर्ख़ा-सङ्घ की रिपोर्ट से पता चलता है कि अक्टूबर, १९२९ से मार्च, १९३० तक खद्दर की उपज में ७३ प्रतिशत और खपत में ५१ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि केवल चर्ख़ा-सङ्घ और उसकी सहयोगी शाखाओं के कार्य में है। इन संस्थाओं के अतिरिक्त सैकड़ों दूसरी संस्थाएँ और व्यक्ति भी इस काम में काफ़ी उन्नति कर रहे हैं। सन्, १९२८-१९२९ में १२,३३,७७६ गज़ और सन्, १९२९-१९३० में २०,९३,०६७ गज़ खद्दर बना। गत वर्ष १,८६,९२७ गज़ और इस साल २८,०४,६८२ गज़ खद्दर बिका। यह बात याद रखना चाहिए कि चर्ख़ा-सङ्घ के अधिकांश कार्यकर्ता सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के कारण जेल पहुँच चुके हैं। तब भी इस संस्था का कार्य उसी उत्साह और वेग से चल रहा है।

कराची में लाठी-प्रहार

४थी दिसम्बर को कराची में क़रीब दो हज़ार मनुष्य जुलूस बना कर क्रान्तिकारी नारे लगाते हुए जुडि-शियल कमिश्नर के कोर्ट में पहुँचे। कई अदालतों के दर-वाज़ों पर क्रान्तिकारी नोटिस भी लगे हुए मिले। इनको हटाने के लिए पुलिस ने लाठियाँ चलाईं, जिससे कई मनुष्य घायल हुए हैं।

—हाजी करीमबख़्श सेठी का, जो कि पेशावर के एक बड़े राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं में से थे, ४थी दिसम्बर को हृदय की गति बन्द हो जाने से स्वर्गवास हो गया।

—श्रीमती सोवाना रॉय, श्रीमती सुवर्णा सेन, श्रीमती सरजू सेन तथा श्रीमती मल्लीनादास गुप्ता जो कि कलकत्ते की प्रसिद्ध कार्य-कर्त्री थीं, २ री दिसम्बर को प्रेज़िडेन्सी जेल से रिहा कर दी गई हैं। उन सबको पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में ४-४ मास की सज़ा दी गई थी।

श्रीयुत पटेल चलने में अशक्त

६ठीं दिसम्बर को श्रीयुत विट्ठल भाई पटेल कोइम्बटूर (मद्रास) लाए गए। आप पोडानोर स्टेशन पर उतरे और डॉक्टर के साथ भोजनालय में गए। आप बहुत कमज़ोर हो गए हैं और बिना किसी की सहायता के चल-फिर तक नहीं सकते। मद्रास में तो आपको गाड़ी बदलने के लिए कुर्सी पर बैठा कर ले जाना पड़ा था। आपके साथ एक डॉक्टर था; आप उन्हीं की सहायता से मोटर पर बैठे और जेल में पहुँचाए गए। सुना जाता है कि वहाँ आपके लिए तीन कमरे दिए गए हैं।

श्रीयुत पटेल के सम्बन्ध में वाइसराय को तार

श्रीयुत विट्ठल भाई पटेल के एक मित्र डॉक्टर पुरुषोत्तमदास पटेल ने श्रीयुत पटेल के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में वाइसराय को तार दिया है। उसमें उन्होंने लिखा है कि बीमारी के कारण श्रीयुत पटेल बहुत ज़्यादा कमज़ोर हो गए हैं, इसलिए उन्हें एक्स रे (X Ray) द्वारा परीक्षा कराने की इजाज़त दी जावे और उनके ख़ानगी डॉक्टरों को उनके निरीक्षण करने की अनुमति दी जावे।

डोमरहर (बिहार) में गोली चली

बिहार के डोमरहर गाँव में २री दिसम्बर को पुलिस के असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा कुछ और सवार और कॉन्स्टेबिल चौकीदारी टैक्स वसूल करने के लिए भेजे गए। गाँव के लोग उनके चारों तरफ़ लाठियाँ लेकर इकट्ठे हो गए। पुलिस के ताक़ीद करने पर भी वे वहाँ से नहीं हटे और लाठियों का वार करने लगे। इस पर पुलिस के असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट ने दो बार गोलियाँ चलाईं, तब वे लोग घरों के आड़ में छिप गए और ढेले और पत्थर फेंकने लगे। थोड़ी देर में और पुलिस के सिपाही पहुँच गए और कई गिरफ़्तारियाँ की गईं। टैक्स वसूल करने के बाद पुलिस चली गई।

सारन ज़िले में भी गोली चली

इसके बाद इसी सारन ज़िले में २री दिसम्बर को ही दुरौली पुलिस थाने में पुलिस चौकीदारी टैक्स वसूल करने गई। वहाँ भी पुलिस को गाँव के लोगों ने घेर लिया! उनके हाथ में लाठी, भाले व गड़ाँस थे। इनके आघात से बचने के लिए पुलिस ने वहाँ भी गोली चलाई। नौ बार फ़ायर किए गए। एक आदमी मरा और बहुतों को चोटें आईं। पुलिस के कई सिपाहियों को चोटें आई हैं।

श्रीयुत सेन गुप्त अब कुछ अच्छे हैं

श्रीयुत सेन गुप्त, जो कि दिल्ली जेल में अस्वस्थ हैं, अब कुछ बेहतर हैं। तारीख़ ६ दिसम्बर को उनके सब से ज्येष्ठ पुत्र उनसे जेल में मिलने गए थे। डॉक्टरों ने श्रीयुत सेन गुप्त को देखा और कहा है कि भय का कोई कारण नहीं है।

श्रीमती सेन गुप्त भी उसी जेल में हैं। वे कारावास के जीवन को सहर्ष सहन कर रही हैं। उनका स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है।

—प्रोफ़ेसर जितेन्द्रलाल बनर्जी २री दिसम्बर को कलकत्ते में रिहा कर दिए गए। आपको 'यतीन्द्र सेन दिवस' की सभा में वक्तव्य देने के अपराध में ६ मास की कड़ी सज़ा दी गई थी।

—सूरत में झण्डा-अभिवादन के विरुद्ध कलेक्टर का हुक्म मौजूद होने पर भी ९ वीं दिसम्बर को वहाँ की 'वार-कौन्सिल' ने झण्डा-अभिवादन के कई प्रयत्न किए। केसल मैदान में, जहाँ झण्डा-अभिवादन होने वाला था, बहुत सी पुलिस तथा सब मुख्य अधिकारी उपस्थित थे। श्रीयुत मङ्गलदास वकील 'डिक्टेटर' तथा श्रीमती बसुमती, महिला-स्वयंसेवक दल की नेत्री—दोनों गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। कुछ स्वयंसेवकों ने मैदान में जाने का प्रयत्न किया, पर पुलिस ने उन्हें मार-मार कर भगा दिया।

सेसून मिल्स ने कॉङ्ग्रेस की शर्तें मान लीं

सुना जाता है कि सेसून ग्रुप के मिलों ने कॉङ्ग्रेस की आज्ञानुसार कपड़ा बनाना स्वीकार किया है, इसलिए उसके ऊपर लगाए हुए बहिष्कार की आज्ञा हटा ली गई है।

ब्रम्हा में भूकम्प से भयानक हानि

३री दिसम्बर की रात को ब्रम्ह देश के कई भागों में भूकम्प हुआ, जिससे बहुत नुक़सान हुआ। कई इमारतें गिर पड़ीं और दो रेल के पुल बेकाम हो गए। इसी भूडोल के कारण २८ मनुष्यों की मृत्यु भी हो गई और बहुतों को चोटें आईं।

बम्बई में लाठियों की वर्षा
२२९ को चोटें आईं

बम्बई की वार-कौन्सिल ने ९ दिसम्बर को गाँधी-दिवस मनाना निश्चित किया। मारवाड़ी युवक-मण्डल ने प्रातःकाल एस्प्लनेड मैदान में झण्डाभिवादन करना निश्चय किया था। पर सिटी मैजिस्ट्रेट ने इसे रोकने का हुक्म निकाला था। इस पर भी प्रातःकाल को मैदान के पास एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। पुलिस ने बहुत रोकने की कोशिश की, परन्तु कुछ लोग जत्था बना कर मैदान में घुस पड़े। झण्डाभिवादन रोकने के लिए पुलिस ने लाठियाँ चलाईं, पुलिस के हट जाने पर लोगों ने झण्डाभिवादन किया और घर लौटे। क़रीब ३० आदमी लाठियों से आहत हुए। वार-कौन्सिल ने शाम को उसी जगह पर एक और भी सभा करने की घोषणा की।

जब शाम को लोग इकट्ठे हुए तब पुलिस ने श्रीमती गङ्गाबाई पटेल तथा वार-कौन्सिल के अन्य दो सदस्यों को गिरफ़्तार किया और लोगों को वहाँ से हटाने के लिए उन पर लाठियाँ चलाईं। क़रीब ४० आदमियों को चोटें आईं। कुछ पुलिस के लोगों को भी पत्थर की मार से चोटें लगीं। पर भीड़ वहाँ से न हटी और बार-बार लाठियाँ चलानी पड़ीं। पुलिस ने वार-कौन्सिल के शेष सदस्यों को भी गिरफ़्तार कर लिया।

कॉङ्ग्रेस अस्पताल की रिपोर्ट से मालूम हुआ है कि इस सम्बन्ध में २२९ का उपचार किया गया, जिसमें से १२३ तो अभी अस्पताल में पड़े हैं। १५ मनुष्यों को बहुत गहरी चोटें लगी हैं।

तारीख़ ६ को इस सम्बन्ध में बम्बई में हड़ताल मनाई गई।

अहमदाबाद में लाठियों की वर्षा

अहमदाबाद की ख़बर है कि ६ ठी दिसम्बर को गुजरात कॉङ्ग्रेस कमिटी ने ग़ैर-क़ानूनी नमक बेचना निश्चय किया। प्रातःकाल से ही मानिक-चौक में, जहाँ कि नमक बिकने वाला था, बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। पुलिस भी उपस्थित थी। क़रीब साढ़े नौ बजे नमक वाला ठेला, जो वहाँ आ रहा था, पुलिस द्वारा रास्ते में ही रोक लिया गया। वालण्टियरों के घेरे को तोड़ने के लिए पुलिस ने भी लाठियाँ चलाईं। शीघ्र ही वहाँ बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। पुलिस ने बारह वालण्टियरों को गिरफ़्तार किया है। कई वालण्टियरों को चोटें भी आई हैं।

—भारत के भूतपूर्व वायसराय लॉर्ड हार्डिञ्ज २८वीं नवम्बर को बम्बई आ पहुँचे। वे भारत में तीन माह तक भिन्न-भिन्न स्थानों की यात्रा करेंगे। एक प्रेस-प्रतिनिधि की मुलाक़ात में, जब उनसे पूछा गया कि क्या वे राजनीतिक विषयों पर भी बातचीत करेंगे, तो उन्होंने उत्तर दिया कि "मैं भारत के केवल पुराने दोस्तों और नई दिल्ली को ही देखने आया हूँ, राजनैतिक बातें करने नहीं।" वे बम्बई से हैदराबाद, मैसूर, मद्रास, कलकत्ता और फिर नई दिल्ली जायँगे।

—एक अमेरिकन नागरिक ने, जो वार्सेस्टर पोली है और कनिक इन्स्टीट्यूट के ग्रेजुएट हैं, उसी संस्था में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारतीय विद्यार्थियों को २,००० डॉलर की स्कॉलरशिपें दी हैं। उसके लिए विद्यार्थियों का चुनाव बङ्गाल की 'राष्ट्रीय शिक्षा कौन्सिल' करेगी जिसके प्रेज़िडेण्ट सर प्रफुल्लचन्द्र राय हैं।

ब्रिटिश फ़ौजी अफ़सर गोली से मार डाला गया

अफ़रीदी फिर से पेशावर की ओर बढ़ रहे हैं। उन्होंने कई जगह पर छोटी-छोटी टुकड़ियाँ बना कर ब्रिटिश सेना पर हमला किया है। वहाँ रक्खी गई सेनाएँ अफ़रीदियों को भगाने का प्रयत्न कर रही हैं। अब दशा काफ़ी शान्त है। तारीख़ ४ को कैप्टन सी० ओ० नील अफ़रीदियों की गोली से मर गए और कई लोगों को चोटें भी आईं।

—तारीख़ ९ को दिल्ली में गाँधी-दिवस मनाया गया। मैदान में इकट्ठे हुए लोगों से और पुलिस से मुठभेड़ हो गई इसमें क़रीब २० आदमियों को चोटें आईं।

श्रीयुत पण्डित मोतीलाल का स्वास्थ्य

इस हफ़्ते में पण्डित जी का स्वास्थ्य ज़रा भी नहीं सुधरा। आपके थूक में बराबर ख़ून आता रहा और कई दिनों आपको बड़ी बेचैनी रही। आपके स्वास्थ्य से चिन्तित होकर ९ दिसम्बर को श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्रीमती कमला नेहरू तथा श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित इलाहाबाद से कलकत्ते गईं। आपके साथ आपकी पुत्री कुमारी कृष्णा नेहरू तथा लखनऊ के प्रसिद्ध डॉक्टर अटल हैं, जोकि हरदम आपकी सेवा में उपस्थित रहते हैं। पर हमें हर्ष है कि ९ दिसम्बर से पण्डित जी का स्वास्थ्य कुछ ठीक रहा है। आपको रात में कोई तकलीफ़ नहीं रही है और दिन भर ज्वर नहीं आया है, गोकि शाम को कुछ हरारत हो आई थी। सब से बड़ी बात तो यह है कि तारीख़ ९ को आपके थूक के साथ ख़ून बिलकुल नहीं गिरा है।

—बेलगाँव से ख़बर आई है कि ताड़ी के पेड़ काटने पर सरकार ने वहाँ के निवासियों पर १२००) का फ़ाइन किया है जो २) प्रति घर के हिसाब से वसूल किया जावेगा। वहाँ के निवासियों ने इस दण्ड को देने से इनकार किया।

इस पर सरकार ने ज़ब्ती का हुक्म निकाला है। तारीख़ ६ दिसम्बर को क़रीब ३२ मकानों से १४४) रुपए का सामान ज़ब्त कर लिया गया और ज़ब्ती जारी है। यह काम एक ख़ास पुलिस के ज़रिये को सौंपा गया।

—हज़ारीबाग़ ज़िले के एक गाँव में कुछ डाकुओं ने हमला किया, और वहाँ के एक निवासी परमेश्वर-राम के मकान को लूट लिया। डकैतों ने गोलियाँ छोड़ीं, जिसके फलस्वरूप एक आदमी मरा और कुछ घायल हुए।

—पाठकों को यह विदित होगा कि हाल ही में सरकार ने नवजीवन प्रेस के मकान को ज़ब्त कर लिया है। इस मकान के मालिक श्रीयुत जीवनलाल बैरिस्टर ने सरकार के विरुद्ध, २,२०० रुपए किराया वसूल करने के लिए एक मामला दायर किया है।

क्लोरोफ़ॉर्म सुँघा कर डाका डाला गया

खुलना (बङ्गाल) का समाचार है कि गत २८ वीं नवम्बर को बी० यूनियन स्कूल के शिक्षक श्री० परमेन्द्र घोष के घर पर रात्रि में डाका डाला गया। वे रात्रि को लगभग दो बजे पेशाब करने के लिए घर से बाहर निकले। इसी बीच में डाकू उनके कमरे में घुस गए और पलङ्ग के नीचे छिप गए। बाद में उन्होंने श्री० घोष तथा उनकी पत्नी को क्लोरोफ़ॉर्म सुँघा कर बेहोश कर दिया और उनकी स्त्री के २१०) के आभूषण उतार कर चलते बने। पुलिस ने इस सम्बन्ध में दो आदमियों को गिरफ़्तार किया है। गहने भी बरामद हो गए हैं।

—बम्बई में १ ली दिसम्बर को एक भीषण मोटर-दुर्घटना के कारण इम्पीरियल बैङ्क के एक उच्च पदाधिकारी मि० एच० डबल्यू० प्रोक्टोर की मृत्यु हो गई। वे क्वीन्स रोड पर अपनी मोटर में जा रहे थे और आगे जाती मोटर से अपनी मोटर निकालते समय दोनों मोटरें लड़ गईं। उनकी मोटर एक पेड़ से टकरा कर टुकड़े-टुकड़े हो गई। और उनका सिर फट गया। बाद में अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई।

—लाहौर का समाचार है कि दयानन्द एङ्ग्लो वैदिक कॉलेज की प्रबन्धकारिणी कमिटी और वहाँ के प्रोफ़ेसर, सन्तराम सन्याल ने कुछ पुलिस अफ़सरों के नाम ८ अक्टूबर को कॉलेज पर धावा करने और प्रोफ़ेसर सन्याल को पीटने के कारण नोटिस निकाले हैं, जिनके अनुसार १०,००० का हर्जाना माँगा गया है।

दण्ड-विधान की १९७वीं धारा के अनुसार उन पुलिस अफ़सरों के विरुद्ध कार्यवाही की आज्ञा के लिए भी एक प्रार्थना-पत्र गवर्नर के पास भेजा गया है।

प्रार्थना-पत्र के अनुसार ८ अक्टूबर को जिस दिन पिकेटिङ्ग नहीं हो रही थी और लड़के शान्तिपूर्वक अपने-अपने क्लासों में बैठे थे, उसी समय कुछ पुलिस के अफ़सर, एक क्लास में, जहाँ प्रोफ़ेसर सन्याल पढ़ा रहे थे, ज़बर्दस्ती घुस गए और प्रोफ़ेसर साहब तथा लड़कों को पीटा।

—श्रीयुत सी० एफ़० एण्ड्रयूज़ जो कि कविवर रवीन्द्र ठाकुर के साथ अमेरिका गए थे, लन्दन वापस आ गए हैं।

वे कहते हैं कि रवीन्द्र ठाकुर का स्वास्थ्य अभी बिलकुल ठीक नहीं है और अभी निश्चित तौर से नहीं कहा जा सकता कि वे भारत कब तक लौटेंगे।

* * *

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

गत जवाहर-दिवस के उपलक्ष में ४६६ बिहारियों ने सखी-नौकरशाही की मेहमानदारी क़बूल की है। इससे मालूम होता है, कि श्रीमान लाट साहब के शान्ति का स्वप्न देखते रहने पर भी सखी की मेहनवाज़ी में कोई फ़र्क़ नहीं आया है। अन्धाधुन्ध ख़र्च और तबालत की परवाह न कर, सखी अपने कुल की आन निभाए जा रही हैं।

❀

सुनते हैं, अब तक साठ हज़ार आशिक़े-ज़ार सखी के 'ज़िन्दान' की शोभा बढ़ा रहे हैं। अगर चबनी रोज़ का भी हिसाब रक्खा जाए, तो इनके चारा-पानी में सखी के पन्द्रह हज़ार नक़द रोज़ बिलट रहे हैं। ख़ुदा न करे, अगर यह इश्क़ का बाज़ार मास भर और योंही गर्म रह गया, तो श्रीमती को बुलाक़ और लहँगा, दोनों एक साथ ही गिरवी रख देना पड़ेगा।

❀

"मद्रास मणि" श्री० सी० वाई० चिन्तामणि को चिन्ता लगी है कि लोग उनके राउण्डटेबिल कॉन्फ़्रेन्स की खिल्ली उड़ा रहे हैं। बात सचमुच बड़े अफ़सोस की है। क्योंकि युगों तक "देहिपद पल्लव मुदारम्" का पाठ घोखने के बाद तो दादा सुग्धानन्द की ज़रा सा पसीजे हैं। खिल्ली उड़ाने का समाचार पाकर कहीं बिगड़ बैठे, तो लन्दन जाने का मज़ा ही किरकिरा हो जाएगा!

❀

इसलिए हिज़ होलीनेस की राय है कि लोगों के हँसी-दिल्लगी की चिन्ता छोड़ कर, मौलाना मुहम्मदअली की तरह श्री० चिन्तामणि भी प्रतिज्ञा कर लें कि "बैठे हैं तेरे दर पे तो कुछ करके उठेंगे।" इस तरह अगर ये दोनों 'महावीर' एक-एक मुट्ठी स्वराज्य भी मुग्धानन्द देव की कोली से झटक सकेंगे तो माशा-अल्लाह काम बन जायगा। 'भागे भूत की लँगोटी ही सही!' मुफ़्त में लन्दन की सैर और घेलुए में 'राजनीतिक अधिकार!' घाटा किस बात का है?

❀

कलकत्ता के स्टूडेण्ट-एसोसियेशन के अभिनन्दन के उत्तर में कुमारी कृष्णा नेहरू ने कहा है कि नेताओं के बार-बार निवेदन करने पर भी छात्रों ने आन्दोलन में अच्छी तरह भाग नहीं लिया है। अच्छा ही किया है। जवानी के नायाब दिन क्या जेलख़ानों में बिताने के लिए हैं? देश में आग लगे या वज्रपात हो, छात्रों को इससे क्या मतलब? उन्हें तो परिश्रम करके 'गुलाम-ख़ाने' से कोई दो-तीन अक्षर की डिग्री हासिल कर लेना चाहिए, जिससे आजन्म उदरपूर्ति का मतलब हल हो सके!

❀

कृष्णा जी का कहना है कि मिश्र तथा जर्मनी के छात्रों ने अपनी मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता के लिए बड़े-बड़े कष्ट सहे थे। सहे होंगे, कमबख़्तों की तक़दीर में कष्ट ही बदा था तो कोई क्या करे? भारत के छात्र उनकी तरह बेवक़ूफ़ नहीं हैं, जो बैठे-बिठाए आफ़त मोल लें!

❀

भई, जवानी के दिन गिने-गिनाए होते हैं। इसलिए इन 'उमङ्गों की रातें मुरादों के दिनों' को, कम से कम देशसेवा की आफ़त से तो महफ़ूज़ ही रखना चाहिए। क्योंकि यह लत ऐसी बुरी है कि जो इसमें पड़ जाता है, 'वह न दीन का रहता है और न दुनिया का।' ख़ुदा न करे, यह ख़ब्त किसी के सर सवार हो!

❀

श्रीजगद्गुरु का तो यह पुराना फ़तवा है कि देशसेवा का काम बूढ़ों, बच्चों और स्त्रियों को सौंप दिया जाय। क्योंकि, 'बनहित कोल-किरात-किशोरी' की तरह अल्लाह-ताला ने इन्हें भी जेल-यातना, लाञ्छना, मार और अपमान सहने के लिए ही बनाया है। आख़िर ये हैं किस मर्ज़ की दवा?

❀

पहले बूढ़े बाबा को लीजिए। "दाँत टूटिगे मुँह पोपलान, मूड़ी लागुर डालै कान!" ऐसी हालत में इनसे जो कुछ कराते बने, करा लेने में ही बुद्धिमानी है। क्योंकि ये चन्द रोज़ के मेहमान एक दिन पलक बन्द कर देंगे, तो हाथ मल कर पछताते रह जाना पड़ेगा।

❀

अब रहीं स्त्रियाँ। समाज ने इनकी काफ़ी क़द्र की है। कञ्जूस की कौड़ी की तरह इन्हें छिपा कर रक्खा है। ज़्यादा गर्मी और बरसात से बचाई गई हैं। पढ़ने-लिखने तथा ज्ञानार्जन के झमेलों से दूर रक्खी गई हैं। बस कहाँ तक गिनाएँ, 'असूर्यम्पश्या' की परम पदवी प्राप्त कर, इन्होंने अब तक जो स्वर्गीय सुख भोगे हैं, उनका बदला अब न चुका देंगी, तो क्या आक़बत में चुकाएँगी?

❀

बच्चे जेल जाते और मार खाते हैं, तो कौन-सा कमाल कर देते हैं! स्वतन्त्रता मिलेगी तो यही मज़े उड़ाएँगे या मृत्यु के बाद उसे उठा कर हमारी अरथी पर रख देंगे? विद्या-पानी का ज़माना भी तो इन नए सुधारकों के कारण हवा हो रहा है, फिर बेचारे नवयुवक किस आशा पर ग़ैरों के लिए आन्दोलन में पड़ कर अपना समय बरबाद करें?

❀

इसलिए, इसी सिलसिले में श्रद्धेया कृष्णा बहिन से ईज़ानिब अर्थात् हिज़ होलीनेस का स-सम्भ्रम निवेदन है कि वे हमारे देश के कमनीय-कलेवर छात्रों को कुछ न कहें; क्योंकि ये भारत के भावी इतिहास की 'मूल्यवान सामग्री' हैं। जिस समय आने वाली पीढ़ी के विद्वान अपने इतिहास की पोथी में भारतवासियों की कायरता की तारीफ़ शुरू करेंगे, उस समय इन छात्र महोदयों की बड़ी ज़रूरत पड़ेगी।

❀

विलायती कपड़े के 'उज्ज्वल-भविष्य' पर मुग्ध होकर कलकत्ता के कई मारवाड़ियों ने मैन्चेस्टर को थोड़ा-सा ऑर्डर भेज कर अपनी दूरदर्शिता की जो बानगी दिखाई है, उससे कलकत्ते के कुछ अख़बार वाले बेतरह भड़क उठे हैं। अरे बाबा, तोंद सलामत है, तो है आस ख़ुदा से! इसलिए काम वही होना चाहिए, जिससे तोंद को ठेस न लगे।

❀

ठीक संख्या न जानते हुए भी पार्लामेण्ट में मि० बेन का वक्तव्य

कुल २३,००० जेल भेजे गए : २०,००० साधारण अपराधियों की तरह रक्खे गए हैं !!

पार्लामेण्ट के सदस्य मि० जेम्स मॉर्ले के प्रश्न के उत्तर में मि० वेजवुड बेन ने कहा कि भारत के अहिंसात्मक आन्दोलन में जितनी गिरफ़्तारियाँ हुईं, उनकी ठीक-ठीक संख्या इस समय प्राप्त नहीं है। तिस पर भी भारत-मन्त्री ने पार्लामेण्ट के सदस्यों की जानकारी के लिए निम्न विज्ञप्ति सरकारी रिपोर्ट के अनुसार बतलाई है! इस विज्ञप्ति में उन अपराधियों की संख्या दी गई है, जिन्होंने अहिंसात्मक रह कर वर्तमान सत्याग्रह-आन्दोलन में भाग लिया है! और जो जेलों में क्रमशः ए०, बी० और सी० क्लासों में रक्खे गए हैं।

राजनीतिक क़ैदियों की संख्या

प्रान्त	ए०	बी०	सी०	मीज़ान	किस ता० तक इतनी गिरफ़्तारियाँ हुईं
मद्रास	६२	३६२	३,२३६	३,६६३	१०-८-३०
बम्बई	५१	३४४	२,८१३	३,२०८	१५-८-३०
बङ्गाल	७६१	४२९	३,१३३	४,३२३	२-८-३०
संयुक्त-प्रान्त	१५२ (ए)	१७८*	१,९०५†	२,२३५	२५-८-३०
पञ्जाब‡	७५	१८०	२,९५४	३,२०९	२-९-३०
ब्रह्मा	—	—	—	—	—
बिहार-उड़ीसा	१९	२१५	४,८००	५,०३४	२५-८-३०
मध्य-प्रान्त	९	६१	५७४	६४४	१३-८-३०
आसाम	१	१५९	१६३	३२८	१९-८-३०
दिल्ली	—	—	१२५	१२५	२२-८-३०
सीमा-प्रान्त	१	३६	३००	३३७	१६-९-३०
कुर्ग	—	—	—	—	—
	१,१११	१,६६४	२०,०११	२३,१३६	

‡ इस (पञ्जाब) प्रान्त में कुछ ऐसे लोग सम्मिलित हैं, जो हिंसात्मक कार्यों में सम्मिलित हुए हैं, परन्तु स्वयं हिंसा के अपराधी नहीं हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त नक़्शे के अनुसार अगस्त माह तक कुल २३,००० जेल भेजे जा चुके हैं, उस समय से आज इन (राजनीतिक) क़ैदियों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है और साथ ही गवर्नमेण्ट का नृशंस दमन भी भयङ्कर रूप से बढ़ गया है। जैसा कि बम्बई की घटनाओं से मालूम होता है। अधिकारियों ने स्त्रियों के साथ भी अपनी शक्ति और दमन-नीति के उपयोग का निश्चय कर लिया है!

(ए) इसमें आठ स्त्रियाँ सम्मिलित हैं

† इसमें एक स्त्री सम्मिलित है

† सभी क़ैदी पुरुष हैं

लोगों का कहना है कि इन व्यापारियों ने क़सम खाई थी—प्रतिज्ञा की थी कि ३१ दिसम्बर तक विलायती माल का ऑर्डर न देंगे; बला से क़सम खाई थी और प्रतिज्ञा की थी! यह तो मोटी तोंद का एक मामूली करिश्मा है। उसमें पड़े तो हिमालय हज़्म हो जाय, नाचीज़ क़सम हज़म हो गई, तो कौन सी बड़ी बात हो गई। कलकत्ता के अख़बार वाले अगर ईमान्दार होते तो बौखलाने और भड़कने के बदले इन मारवाड़ियों की पाचन शक्ति की तारीफ़ करते!

❀

'लीडर' के सम्पादक का प्रकोप

यदि गोलमेज़ परिषद असफल हुआ तो परिणाम क्या होगा ?

श्री० सी० वाई चिन्तामणि जी की खरी बातें

इस गोलमेज परिषद द्वारा भारतीय समस्या को हल करने का स्वर्ण-संयोग है ! भारत को पूर्ण स्वाधीनता दिलाने का विचार रखने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और अङ्गरेजों का इसके विरुद्ध अपनी शक्ति बढ़ाने की चिन्ता करना करुणाजनक है। इंगलैण्ड के राजनीतिज्ञ ज़रा ठहर जायँ और इस बात का विचार करलें कि यदि गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स असफल हुआ तो इसका परिणाम क्या होगा ??

स्थानीय 'लीडर' के सुयोग्य सम्पादक मि० सी० वाई० चिन्तामणि ने, जो गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के प्रतिनिधि स्वरूप इस समय लन्दन में हैं, यह नीचे दिया हुआ पत्र 'टाइम्स' को प्रकाशनार्थ भेजा था, किन्तु 'टाइम्स' के सम्पादक ने बहुत रूखे तौर से इसे प्रकाशित करना अस्वीकार कर दिया। 'टाइम्स' में संयुक्त प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर सर हारकोर्ट बटलर का एक लेख 'भारतीय समस्या' पर निकला था। यह पत्र उसी के उत्तर में लिखा गया था, जिसका अनुवाद पाठकों के मनोरञ्जनार्थ यहाँ दिया जाता है :—

"जिस समय सर हारकोर्ट बटलर भारत के संयुक्त प्रान्त में थे, उसी समय की मित्रता होने के कारण, मैंने भारतीय समस्या पर उनके लेख को, जो आज सबेरे प्रकाशित हुआ है, बड़े ग़ौर से पढ़ा है।

"मुझे आश्चर्य तो नहीं, किन्तु शोक है कि सर हारकोर्ट उस दल में आ मिले हैं, जिसका काम नित्य की समस्याओं में उलझनें पैदा करना है। भारतीय देशी राज्यों पर जो रिपोर्ट हारकोर्ट बटलर की कमिटी ने गत वर्ष तैयार की थी, उससे साफ़-साफ़ पता चल गया था कि अगर आपके हाथ में भारत का भाग्य निर्णय करने का काम दे दिया जाता, तो भारत का भविष्य कैसा हो जाता ! उनका वर्तमान लेख उनके उन पूर्व विचारों का दृढ़तापूर्वक समर्थन करता है। जब आप भारत में अशिक्षितों की प्रधानता बतलाते हैं, तो क्या वह यह भी अनुभव करते हैं, कि वास्तव में वह भारतीय जनता को नहीं, किन्तु भारतीय सरकार को दोष दे रहे हैं !! स्वयं हारकोर्ट बटलर ही ने एजुकेशन मेम्बर की हैसियत से गोखले की प्राथमिक-शिक्षा-बिल का विरोध किया था ! लेकिन मुझे यह कहते हुए बहुत सन्तोष होता है, कि संयुक्त प्रान्त के शासन की बागडोर लेकर आपने वहाँ शिक्षा फैलाने का तथा वहाँ की शिक्षा-प्रणाली को सुधारने का बहुत कुछ उद्योग किया था।

एक कहानी

"जब सर हारकोर्ट बटलर भारतीय शिक्षित समाज के विषय में सङ्केत करते हैं, उस समय वे ख़ुद अपने साथ अन्याय करते हैं ; क्योंकि वे दूसरे मनुष्यों की अपेक्षा इस बात का अधिक अनुभव कर सकते हैं, कि किसी देश का शान्तिमय शासन जनता के इसी विभाग पर निर्भर है। इसे जान कर उन्हें बहुत दुःख हो सकता है, किन्तु यह बात सच्ची है ! सर हारकोर्ट प्रायः एक वास्तविक जीवन की कहानी कहा करते थे। जिस समय वे एक छोटे सिविलियन थे, उस समय एक प्रभावशाली ताल्लुक़ेदार ने, जो महमूदाबाद के नवाब के पिता थे, उनसे कहा था कि "हम लोग न्याय नहीं चाहते, बल्कि हमें मिहरबानी चाहिए !" और सर हारकोर्ट ऐसे विचारों की प्रशंसा किया करते थे। वे स्वयं एक अवैतनिक ताल्लुक़ेदार हैं, और इस कारण नवाबी तरीक़ों के लिए पक्षपात का उनमें होना आवश्यक है ; किन्तु यदि वह यह सोचते हैं कि सरकारी सहायता पाकर मैजिस्ट्रेट और पुलिस का सुपरिण्टेण्डेण्ट देश में शान्तिपूर्ण शासन स्थापित कर सकता है, तो आप भूल करते हैं; और आपका भ्रम शीघ्र ही दूर हो जायगा।

नव-भारत

"बङ्गाल को विभाजित करने के बाद की घटनाएँ, असहयोग-आन्दोलन तथा भद्रअवज्ञा-आन्दोलन इस विचार के ठीक-ठीक उत्तर हैं। जितनी जल्दी इस बात का अनुभव हो सके, कि आधुनिक उपायों से शान्तिपूर्ण शासन स्थापित नहीं किया जा सकता, भारतीयों और अङ्गरेज़ों की उतनी ही अधिक भलाई होगी। घोर विरोध के रहते हुए भी रौलेट-एक्ट पास किया गया, किन्तु पास होने के बाद से अवधि ख़तम होने तक वह बेकाम पड़ा रहा ! सन् १९१९ में पञ्जाब की सरकार कुछ महीनों तक उसे काम में ला सकी थी, जैसा कि सन् १९१४ में जर्मनी ने बेलजियम में किया था। आजकल क़ानून और शान्ति की रक्षा के लिए जो-जो उपाय काम में लाए गए हैं, उनका यदि पूरा-पूरा विवरण सामने रक्खा जाय, तो प्रत्येक अङ्गरेज़ स्वयं अपनी आँखों में आँसू खैंचने लगेगा ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या भारत के शासन का आदर्श तरीक़ा अत्याचार और ग़ैर-क़ानूनी उपाय हैं ? मेरा विश्वास है कि बूढ़े लॉर्ड एल्गिन ने शिमला की अपनी वक्तृता में यह कह कर सचाई और ईमानदारी दिखलाई थी कि "भारत तलवार से जीता गया है और तलवार ही से वह वश में रक्खा जायगा।"

जनता में कितने बेवक़ूफ़ हैं ?

"सर हारकोर्ट बटलर ने मॉण्टेगू की सुधार-योजना के विरोध में असफल होकर यह कहने की बुद्धिमत्ता दिखलाई थी कि "सुधार अपने से नहीं करना चाहिए।" उन्होंने उक्त स्कीम की चेतावनी में ही ऐसा कहा था ; किन्तु यह उनके लिए प्रशंसा की बात है, कि शासन-सुधार होने पर पहले वर्ष उन्होंने अच्छी तरह शासन-कार्य किया, परन्तु मि० मॉण्टेगू के चले जाने के बाद ही आपने अपने हृदय की अनुदारता खोल दी। वे एक अच्छे शासक थे, किन्तु वे अक्सर यह भी दिखाने का यत्न करते थे कि वे एक राजनीतिज्ञ भी हैं। भारतीय जनसाधारण की सम्मति पर उनका क्या विचार था, इसका पता हमें उनके 'जनता में कितने बेवक़ूफ़ हैं ?' इस प्रश्न से लग सकता है। किसी पत्र का उत्तर देते हुए वे कहते हैं—"केवल शिक्षित समाज की सम्मति से काम लेना ठीक वैसा ही है, जैसा कि यह समझना कि जर्मनी युद्ध में (सन् १९१४ वाले युद्ध में) जीत गया, उसने इस देश (इङ्गलैण्ड) को अपने अधिकार में कर लिया और उसने केवल उन्हीं अङ्गरेज़ों की सम्मति ली, जो आसानी से जर्मन-भाषा लिख-पढ़ सकते हैं !"

"लेकिन अनुमान कीजिए कि जर्मनों ने उपर्युक्त अङ्गरेज़ों से भी सम्मति नहीं ली होगी, तो क्या ऐसी हालत में यह उनके लिए अक़्लमन्दी की बात होती ? यदि भारतीय शिक्षित-समाज से सम्मति न ली जाय, तो क्या यहाँ की अशिक्षित जनता से सम्मति ली जायगी और उ की इच्छा के अनुसार कार्रवाई की जायगी ? अवश्य ही नहीं ! क्योंकि इस विषय में कहा जायगा कि वे इस विषय में अयोग्य हैं। वे इन मामलों को समझ नहीं सकते, और विशेषतः इसलिए कि सभी सिविलियन लोग उनके अगुआ हैं। समय-समय पर अनेक सुधार करने पर भी वर्तमान समय में भारत सिविलियनों द्वारा ही उनकी इच्छा के अनुसार शासित होता है !

"सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट तथा बड़े लाट आते हैं और चले जाते हैं, किन्तु सिविलियन लोग जहाँ के तहाँ बने ही रहते हैं। इन सिविलियनों में जो लोग कुछ अधिक उदार हैं, वे वैध-शासन के अनुकूल अपनी सम्मति प्रकट करते हैं, किन्तु वे भी वास्तविक वस्तु जनता के हाथों में नहीं देना चाहते, क्योंकि ऐसा करना सिविलियनों के पङ्ख काटना होगा ! जब-जब सुधार का प्रश्न पार्लामेण्ट के सामने आता है, हमें इसी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। भारत की माँगों की अपेक्षा, नौकर लोगों और ब्रिटिश जनता की भलाई का ध्यान अधिक रक्खा जाता है ! यदि ऐसी ही अवस्था हो, तो फिर दोनों देशों के लिए बड़ी हानि की बात है, क्योंकि देश में उस समय तक शान्ति स्थापित नहीं हो सकती, जब तक कि इङ्गलैण्ड अपना स्वार्थ त्यागने के लिए तैयार न हो जाय। अंङ्गरेज़ों के लिए यह सोचना व्यर्थ है, कि वे भारत को बल से अपने वश में रख सकेंगे। वर्तमान समय इङ्गलैण्ड के लिए भारत को कनाडा, दक्षिणी अफ़्रिका, ऑस्ट्रेलिया तथा आयरिश स्वतन्त्र राज्य की भाँति औपनिवेशिक राज्य देकर भारतीय समस्या को हल करने का स्वर्ण-सुयोग है। भारत को पूर्ण स्वाधीनता दिलाने का विचार रखने वालों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है और अङ्गरेज़ों का इसके विरुद्ध अपनी शक्ति बढ़ाने की चिन्ता करना, करुणाजनक है। इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञ ज़रा ठहर जायँ और इस बात का विचार कर लें कि यदि गोलमेज-कॉन्फ़्रेन्स असफल हुआ, तो इसका परिणाम क्या होगा ??"

* * *

मिस्टर ब्रेल्सफ़ोर्ड कौन हैं ?

(संक्षिप्त परिचय)

'भविष्य' के पाठक उसके प्रायः सभी अङ्कों में ब्रेल्सफ़ोर्ड के लेखों का भावानुवाद पढ़ते होंगे और एक अङ्गरेज़ की लेखनी के ऐसे तीक्ष्ण लेख पढ़ कर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहता होगा। हम यहाँ केवल इसलिए उनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण बातें लिखते हैं, जिससे पाठकों को उनकी प्रतिभा और उनके वज़न का कुछ अनुमान हो जाय। हमें विश्वास है कि उनके सम्बन्ध में थोड़ी-बहुत जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद उनकी श्रद्धा मि० ब्रेल्सफ़ोर्ड के लेखों पर अधिकाधिक बढ़ेगी, वे उन्हें अधिक रुचि से पढ़ेंगे और वर्तमान आन्दोलन के उनके विश्लेषण से देश की सच्ची परिस्थिति और इस सम्बन्ध में इङ्गलैण्ड की कूटनीति का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

मि० ब्रेल्सफ़ोर्ड की आयु इस समय ५७ वर्ष की है। वे पहले ग्लासगो यूनीवर्सिटी के तर्कशास्त्र के प्रोफ़ेसर थे। बाद में वे 'न्यू लीडर' के कई वर्ष तक सम्पादक रहे। सुप्रसिद्ध पत्र 'मेनचेस्टर गार्जियन' के भी वे वर्षों सम्पादकीय लेख लिखते रहे। पत्रकार की हैसियत से वे इतने प्रसिद्ध हो गए हैं कि उन्हें प्रोफ़ेसर की हैसियत से अब बहुत कम लोग जानते हैं। उनकी क़लम में ओज है और ईश्वर ने उन्हें प्रखर बुद्धि और इतना विशाल हृदय दिया है कि उसमें जाति और रङ्ग के भेद-भाव से रहित, दीन-दुखियों के करुण-क्रन्दन और पीड़ितों के चीत्कार को स्थान मिल जाता है। उनकी विश्लेषण-शक्ति इतनी प्रबल है कि किसी विषय की तह तक पहुँचने में देर नहीं लगती। वाकपटु वे ऐसे हैं कि प्रश्नों की झड़ी उन्हें उलझन में नहीं डाल सकती। वे पटेबाज की भाँति पैंतरा बदल कर सब प्रश्नों का उत्तर थोड़े ही शब्दों में दे देते हैं। उनके पत्रकार-जीवन में अनेक ऐसी घटनाएँ घटित हुई हैं जिससे उनकी प्रतिभा की ख्याति यूरोप और अमेरिका के सभी देशों में फैल गई है। वे उन अङ्गरेज़ सम्पादकों में नहीं हैं, जो भारतवर्ष की परिस्थिति पर लम्बे-चौड़े लेख सरकारी रिपोर्टों या उनसे की गई बातचीत के आधार पर लिखते हैं। परन्तु वे भुक्तभोगी लोगों से और गवर्नमेण्ट अफ़सरों से मिल कर परिस्थिति का सच्चा विश्लेषण करने का प्रयत्न अवश्य करते हैं।

उन्होंने संसार का ख़ूब भ्रमण किया है और वे कई पुस्तकों के रचयिता हैं। उनमें से (How the Soviets work) 'सोवियटों का शासन-सञ्चालन' और (Rinimum wages) 'अल्पतम वेतन' मुख्य हैं। वे फ़्रेञ्च, जर्मन और अङ्गरेज़ी भाषा के बड़े पण्डित हैं और तीनों ही भाषाओं में वे फ़्रान्स, जर्मनी और अमेरिका के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पत्रों में लेख लिखा करते हैं। वे इङ्गलैण्ड के 'स्वतन्त्र मज़दूर-दल' (The Independent Labour Party) के प्रभावशाली सदस्य हैं और प्रधान मन्त्री रेम्ज़े मैकडॉनल्ड के सच्चे मित्रों में से हैं।

अपने जीवन में उन्होंने बहुत से महत्वशाली कार्य किए हैं। जिस समय सन् १९२४ में कुछ समय के लिए मज़दूर सरकार ने इङ्गलैण्ड के शासन की बागडोर अपने हाथों में ली थी, उस समय उन्हीं के प्रयत्न से लाला हरदयाल को बिना रोक-टोक के इङ्गलैण्ड में आने की आज्ञा मिली थी। तुर्कों ने जब मेसीडोनियाँ में अनेक घर जला कर ख़ाक कर दिए थे, तब मि० ब्रेल्सफ़ोर्ड शीतकाल में ६ माह तक डटे रहे और पीड़ितों को सहायता पहुँचाते रहे। महायुद्ध के समय जब 'क्रीट' टापू पर जङ्गी जहाज़ों का घेरा पड़ा हुआ था और संसार के अनेक पत्रों के प्रतिनिधि जङ्गी जहाज़ों पर से ही पीड़ित लोगों का वर्णन भेजा करते थे, उस समय मि० ब्रेल्सफ़ोर्ड चुपचाप आँख बचा कर टापू में चले गए और वहाँ की वास्तविक परिस्थिति का वर्णन भेजा, जिसके फल-स्वरूप क्रीट का घेरा उठा दिया गया।

इस समय वे भारत के मुख्य-मुख्य स्थानों का भ्रमण कर यहाँ की सच्ची परिस्थिति के सम्बन्ध में भारत के एक, इङ्गलैण्ड के दो, फ़्रान्स के एक, जर्मनी के एक, और अमेरिका के एक समाचार-पत्रों में अपने भारत सम्बन्धी लेख प्रकाशित करा रहे हैं। ये सभी पत्र अपने-अपने देशों में अत्यन्त प्रभावशाली हैं। गुजरात के बारदोली और बोरसद तालुक़ों के अत्याचारों का जो वीभत्स चित्र उन्होंने अपने लेखों में चित्रित किया है, उसे पढ़ कर किसके रोंगटे खड़े न हो जायँगे। उन्होंने यह यात्रा वहाँ के कमिश्नर मि० गैरेट के साथ की थी और उन्होंने पुलिस के अत्याचारों की जो कथा वर्णन की थी उससे वे अवाक रह गए थे। हाल ही में जब वे दिल्ली गए थे तब वे वायसराय के भोज में सम्मिलित हुए थे, और उन्होंने वायसराय की कार्यकारिणी सभा के सदस्यों से भी बातचीत की थी।

*   *   *

मण्डी की आदर्श महारानी साहेबा श्रीमती ललितकुमारी देवी

जिनकी अध्यक्षता में अखिल भारतवर्षीय महिला-कॉन्फ़्रेन्स का विराट् अधिवेशन पटना में हुआ था। यह आपका हाल ही का लिया हुआ चित्र है।

मिस श्यामकुमारी नेहरू, बी० ए०, एल्-एल्० बी० एडवोकेट इलाहाबाद हाईकोर्ट

जो हाल ही में "जवाहर-दिवस" में निकाले हुए जुलूस के ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिए जाने पर गिरफ़्तार हुई थीं और जिन्हें ५०) रु० जुर्माना, अथवा जुर्माना न देने पर एक मास का कारावास दण्ड दिया गया था और जो किसी अज्ञात व्यक्ति के जुर्माना जमा कर देने पर छोड़ दी गई हैं।

'गोलमेज़ परिषद' में सम्मिलित होने वाले भारत के "प्रतिनिधि"

'गोलमेज' परिषद् में सम्मिलित होने वाले भारत के 'प्रतिनिधियों' की सूची एक साथ पढ़ने से पाठकों का मनोरञ्जन हो सकता है। अतएव अब तक लन्दन में पहुँचे हुए 'प्रतिनिधियों' की सूची इस प्रकार है:—

भारतीय 'प्रतिनिधि'

१—सर तेजबहादुर सप्रू
२—श्रीयुत एम० आर० जयकर
३—डॉक्टर मुन्जे
४—श्रीयुत वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री
५—राजा नरेन्द्रनाथ
६—सर पी० सी० मित्तर
७—श्रीयुत एम० ए० जिन्ना
८—श्रीयुत मुहम्मदअली
९—श्रीयुत जे० एन० बसु
१०—सर मुहम्मद शफ़ी
११—श्रीयुत एम० एम० जोशी
१२—सर फ़िरोज़ सेठना
१३—श्रीयुत नरेन्द्रनाथ लॉ
१४—श्रीयुत ओ० डी० ग्लेनविले
१५—श्रीयुत ए० के० फ़ज़लुलहक़
१६—श्रीयुत एम० रामचन्द्र राव
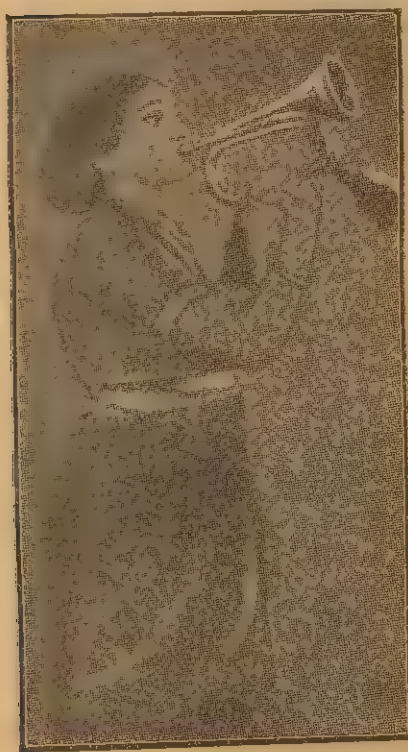
बम्बई की एक महिला-वालण्टियर, जो प्रातःकाल बिगुल बजा कर देशवासियों को भारत-माता के प्रति अपने कर्तव्य से सचेत कर रही है।

१७—हिज़ हाइनेस दि आग़ा ख़ाँ
१८—श्रीयुत ए० टी० पानीरसेलवम
१९—सर ए० पी० पेट्रो
२०—पार्लाकिमेडी के राजा साहब
२१—श्रीयुत एच० पी० मोदी
२२—श्रीयुत ए० रामास्वामी मुदालियर
२३—नवाब सुल्तान अहमद ख़ाँ
२४—श्रीयुत बी० बी० यादव
२५—सर शाहनवाज़ ग़ुलाम मुर्तज़ा ख़ाँ भुट्टो
२६—नवाब मुहम्मद यूसुफ़
२७—श्रीयुत ए० एच० ग़ज़नवी
२८—दरभङ्गा के महाराजा बहादुर
२९—श्रीयुत के० टी० पाल
३०—श्रीयुत एम० एम० ओन थाइन
३१—सर पी० सी० रामस्वामी ऐय्यर
३२—सरदार उज्जलसिंह
३३—सर कावस जी जहाँगीर
३४—श्रीयुत शिवाराव
३५—नवाब सर ए० क़य्यूम ख़ाँ
३६—डॉक्टर बी० आर० अम्बेडकर
३७—श्रीयुत यू० बा० पे
३८—श्रीयुत चन्द्रधर बरुआ
३९—श्रीयुत शाहनवाज़ ख़ाँ
४०—सर हरबर्ट कार
४१—श्रीयुत सी० वाई० चिन्तामणि
४२—कर्नल एच० ए० जे० गिडनी
४३—ख़ानबहादुर हफ़ीज़ हिदायत हुसैन
४४—श्रीयुत टा० जे० गेविन जोन्स.
४५—सर चिमनलाल सीतलवाड
४६—रावबहादुर सिद्दप्पा टाटप्पा
४७—छतारी के नवाब साहब
४८—राजा कृष्णचन्द्र
४९—सरदार सम्पूरन सिंह
५०—कैप्टन राजा शेर मुहम्मद ख़ाँ
५१—श्रीयुत एस० बी० ताम्बे
५२—श्रीयुत यू० ऑंग थिन
५३—श्रीयुत सी० ई० वूड
५४—श्रीयुत ज़फ़रुल्ला ख़ाँ
५५—सर बी० एन० मित्र
५६—श्रीमती शाहनवाज़
५७—श्रीमती सुब्रायन

रियासतों के 'प्रतिनिधि'

५८—महाराजा बीकानेर
५९—महाराजा अलवर
६०—महाराजा काश्मीर
६१—महाराजा नवानगर
६२—महाराजा पटियाला
६३—महाराजा धौलपुर
६४—साँगली के चीफ़
६५—श्रीयुत बी० टी० कृष्नम आचारियर
६६—सर मिर्ज़ा एम० इस्माइल
६७—नवाब भोपाल
६८—सर अकबर हैदरी
६९—महाराजा बड़ौदा
७०—महाराजा रीवाँ
७१—सर प्रभाशङ्कर पट्टनी
७२—सर मनू भाई मेहता
७३—कर्नल के० एन० हकसर

ब्रिटिश 'प्रतिनिधि'

७४—श्रीयुत रेमज़े मेकडॉनेल्ड (लेबर)
७५—लॉर्ड शेन्की (लेबर)
७६—श्रीयुत वेजवुड बेन (लेबर)
७७—श्रीयुत आर्थर हेण्डरसन (लेबर)

कुमारी शान्तिलाल देसाई, बी० ए०
आपने बम्बई में खेले गए 'काका नी शशि' नामक अभिनय में, जिसमें वहाँ की प्रतिष्ठित महिलाओं और वकील-बैरिस्टरों ने भाग लिया था, बड़ी निपुणता के साथ चरित्र-नायिका का पार्ट अभिनीत किया है।

७८—श्रीयुत जे० ए० टॉमस (लेबर)
७९—लॉर्ड पील (कन्ज़रवेटिव)
८०—सर सेमुअल होर (कन्ज़रवेटिव)
८१—लॉर्ड रीडिङ्ग (लिबरल)
८२—श्रीयुत ऑलिवर स्टेनले (कन्ज़रवेटिव)
८३—मारक्विस ऑफ़ लोथियन (लिबरल)
८४—सर रॉबर्ट हैमिल्टन (लिबरल)
८५—श्रीयुत आइज़क फ़ुट (लिबरल)
८६—मारक्विस ऑफ़ ज़ेटलैण्ड (कन्ज़रवेटिव)

सलाहकारों की हैसियत से

८७—सर चार्ल्स इन्स
८८—मिस्टर एच० जी० हेग
८९—सर ए० मेक वाटर्स
९०—मिस्टर एल० डब्ल्यू० रेनॉल्ड्ज़
९१—सर मालकम हेली
९२—मिस्टर आर० ए० एच० कार्टर (सेक्रेटरी जनरल)

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

सम्पादकीय विचार

११ दिसम्बर, सन् १९३०

क्या कीजिएगा हाले-दिले-ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए अख़बार देख कर !!

फ़ौजी सिपाही ने हेडकॉन्स्टिबिल पर गोली चलाई

६ मरे ५ घायल हुए

रङ्गून का २री दिसम्बर का समाचार है कि २८ वीं नवम्बर को मुदौन में एक घुड़सवार फ़ौजी सिपाही की गोलियों से घातक को मिला कर ६ आदमी मरे और ५ घायल हुए। २७ वीं नवम्बर को एक बर्मी हेड कॉन्स्टिबिल ओन इलेङ्ग के नीचे कुछ पुलिस के सिपाही गाँवों में चक्कर लगाने गए थे, जब वे वहाँ से दूसरे दिन मुदौन पुलिस थाने में वापिस आए तब रतीराम नामक एक सिपाही ने हेडकॉन्स्टिबिल ओन इलेङ्ग पर गोली चलाई और जब वह गिर पड़ा तब, उसके १० कारतूस छीन कर, जो उसके पास आया उसने उसी को अपनी गोलियों का शिकार बनाया। बाद में घातक स्वयं अपने सिर में गोली मार कर मर गया। इस हत्याकाण्ड में ५ गाँव वाले मरे और ५ घायल हुए। इसका कारण हेडकॉन्स्टिबिल और रतीराम का आपसी मनमुटाव बतलाया जाता है।

सिक्खों में सनसनी

रावलपिण्डी का १ली दिसम्बर का समाचार है कि कौन्सिल के सदस्य सर्दार मोहनसिंह ने गोलमेज़ परिषद के सदस्यों के नाम निम्न तार भेजा है :—

"भारतीय गवर्नमेण्ट के ख़रीते से सिक्खों में असन्तोष फैल गया है। जो माँगें सिक्खों ने साइमन कमीशन के सामने पेश की हैं, वे उनसे कम में किसी प्रकार नहीं हो सकते।"

एक सप्ताह में तीन डाके

टैनगाइल का २री दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ केवल एक सप्ताह में तीन भारी डाके पड़ जाने के कारण सब-डिवीज़न में बड़ी सनसनी फैल गई है। एक डाका दिन-दहाड़े डाला गया है, जिसमें धनिक और सम्मानीय व्यक्ति पीटे गए और उनके कई हज़ार के आभूषण और अत्यन्तावश्यक काग़ज़-पत्र लुट गए। अभी तक ऐसी घटनाएँ घटती जाती हैं।

ख़ुफ़िया पुलिस के ब्यूरो पर लोहे के दरवाज़े

नई दिल्ली का समाचार है कि २री दिसम्बर को जो दर्शक नई दिल्ली का सेक्रेट्रियट देखने गए थे, उन्हें देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उस दिन ख़ुफ़िया पुलिस के ब्यूरो पर लोहे के दरवाज़े लगा दिए गए थे। कहा जाता है कि लोहे के फाटक किसी आकस्मिक घटना के कारण नहीं लगाए गए हैं, बल्कि वहाँ के रिकार्ड की रक्षा के लिए लगाए गए हैं जिससे कोई उपद्रवी उनमें हाथ न लगाने पावे।

* * *

औचित्य

[श्री० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा, कौशिक]

पुलिस सब-इन्सपेक्टर ठाकुर प्रभुदत्तसिंह थाने में बैठे हुए थे। उनके आस-पास चार-पाँच ज़मींदार, हेड-कॉन्स्टेबिल तथा मुन्शी जी बैठे हुए थे। सब-इन्सपेक्टर साहब एक ज़मींदार से कह रहे थे—आपके होते हुए आपके गाँव में कॉङ्ग्रेस वालों की दाल गल जाय, यह बड़े आश्चर्य की बात है।

ज़मींदार साहब ने उत्तर दिया—मैं क्या करूँ, मेरे वश की बात नहीं है दारोग़ा जी! मैं तो सब तरह से कह कर हार गया। धमकाया, डराया, समझाया, ख़ुशामद की। उस समय तो सब हाँ-हाँ कह देते हैं, परन्तु अपनी हरकतें नहीं छोड़ते।

"यों थोड़ा ही छोड़ेंगे, जब डण्डे और लाठियाँ पड़ेंगी, बेइज़्ज़त किए जायँगे, तब मानेंगे।"—सब-इन्सपेक्टर ने कहा।

ज़मींदार साहब बोले—बेशक तभी मानेंगे। अब देखिए, मालगुज़ारी जमा करने का समय आ रहा है, परन्तु कोई किसान नहीं सनकता। अब बताइए हमें जो न मिलेगा तो हम सरकार को कहाँ से देंगे!

"ठीक बात है। अजी, यह सब कोल है; आप डण्डे के बल से वसूल कीजिए सालों से।"

"यह तो आपका कहना ठीक है दारोग़ा जी, परन्तु समय बड़ा ख़राब है। यदि किसान बिगड़ उठें तो उलटी आँतें गले पड़ें।"

"ओफ़ ओह! जब आप इतने डरपोक हैं तो ज़मींदारी कैसे करते होंगे? ज़मींदारी तो बड़े जीवट का काम है।"

"दारोग़ा जी, किसानों का तो भय नहीं है, भय कॉङ्ग्रेस वालों का है। ये लोग कहीं किसानों को भड़का न दें। यदि कॉङ्ग्रेस वाले न भड़कावें तो किसानों का इतना साहस नहीं हो सकता कि वे हमारे सामने सिर उठावें। इसके अतिरिक्त यह भी डरते हैं कि मार-पीट करने में कहीं कोई मर-मरा गया तो लेने के देने पड़ जायँगे। हम लोगों को तो हर तरह मुसीबत है।"

"मर जाय तो आपकी बला से—आप इतना घबराते क्यों हैं—आख़िर हम काहे के लिए हैं?"

"इसी बात को डरते हैं, वरना अभी इतने नाख़ून भी नहीं गिर गए हैं जो इन गँवारों से दब जायँ।"

"आप बेखटके रहिए। हम आपके ख़िलाफ़ कोई बात न करेंगे, बल्कि आपको सहायता ही देंगे।"

"तब ठीक है। आपने इतनी बात कह दी, हम निश्चिन्त हो गए। अब देखिएगा क्या रङ्ग दिखाते हैं।"

"और यदि ज़रा कुछ गड़बड़ का डर हो तो मुझे फ़ौरन सूचना दीजिएगा। मैं सबको ठीक कर दूँगा।"

"हाँ, सो तो करेंगे ही। जब तक आपकी मदद न रहेगी, काम भी तो नहीं चलेगा।"

एक दूसरे महोदय बोले—एक बात और भी है। इस साल फ़सल भी गड़बड़ा गई और भाव भी मंदा है, इससे किसानों को और भी तङ्गी हो गई।

दारोग़ा जी बोले—तङ्गी हो चाहे जो हो, सरकारी मालगुज़ारी नहीं रुक सकती। ज़मींदार चाहे अपना मुनाफ़ा छोड़ दें।

"जी हाँ, ज़मींदार ही तो फ़ालतू हैं। सरकार ले ले—ज़मींदार छोड़ दें। सरकार के घर में क्या कमी है? हम लोगों की तो रोटियाँ इसी पर हैं। सच पूछिए तो छोड़ना सरकार को चाहिए।"

तीसरे सज्जन ने कहा—सो सरकार छोड़ने वाली नहीं है। बहुत से ज़मींदारों ने अर्ज़ियाँ दीं, परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला।

"उत्तर कैसे मिले? एक तो सरकार को योंही घाटा है। शराब और ताड़ी वग़ैरह के ठेकों में सरकार को बहुत घाटा हुआ है। अब जो मालगुज़ारी भी छोड़ दे तो बस फ़ैसला है। सरकारी ख़ज़ाने में चूहे डण्ड पेलने लगें। हम लोगों की तनख़्वाहें कहाँ से दी जायँ।"

"अजी आपके लिए क्या कमी है। आपके लिए ऊपर की आमदनी ही काफ़ी है।"

"सो भी कॉङ्ग्रेस वालों के मारे बन्द है। आजकल तनख़्वाह पर ही दारोमदार है।"

२

ठाकुर शङ्करबख़्श अपनी चौपाल में बैठे हुए थे। उनके सामने तीन-चार किसान और एक ओर तीन पासी हाथ में मोटे लट्ठ लिए खड़े थे। शङ्करबख़्श कड़क कर बोले—ठीक बताओ, लगान कब दोगे?

एक किसान बोला—लगान कहाँ से दें सरकार। इस फ़सल में जो हुआ है सो आपसे छिपा नहीं है। कुल पाँच मन जुआर हुई है—तीस सेर का भाव है। कुल छः-साढ़े छः रुपए की हुई। दस रुपए लगान देना है। अब बताइए इसमें क्या आपको दें, क्या अपने खाने के लिए रक्खें, क्या महाजन को दें।

"यह हम कुछ नहीं जानते, जब ज़्यादा पैदा होता है तो हमें तो दे नहीं देते। हमें तो अपने गिने टकों से मतलब है—तुम्हारे यहाँ लाख हो चाहे ख़ाक हो।"

"तो आख़िर हम लावें कहाँ से?"

"बैल-बधिया बेचो, क़र्ज़ लाओ।"

"ऐसे समय में क़र्ज़ देता कौन है? लाइए आप ही दे दीजिए।"

"और सुनो, हमीं क़र्ज़ दें।"

"तो फिर और किससे माँगें, सबकी एक दशा है। हम लोगों के माँ-बाप आप ही हैं, आप रक्षा न करेंगे तो फिर और कौन करेगा।"

"इन बातों से काम नहीं चलेगा। सीधी तरह लगान अदा कर दो, वरना बड़ी दुर्दशा होगी।"

"अब आप मालिक हो, चाहे बनाओ, चाहे बिगाड़ो। हमारे पास तो इस समय है नहीं।"

एक दूसरा किसान बोल उठा—खाने तक का ठिकाना तो है नहीं, लगान कहाँ से दें। हमारे प्राण हैं सो इच्छा हो तो ले लीजिए।

"लगान नहीं दोगे तो प्राण ही लिए जायँगे, यह याद रखना।"

"ले लीजिएगा, हम भी कष्ट से छूट जायँगे। ऐसी ज़िन्दगी से तो मरना भला है। रात-दिन बैल की तरह जुटे रहो, तब भी पेट भर खाने को न मिले और ऊपर से लगान की मार! ऐसा जीना किस काम का।"

"यह सब तुम लोगों की बहानेबाज़ी है। असल में तुम लोग कॉङ्ग्रेस वालों के भड़काए हुए हो।"

"कॉङ्ग्रेस वालों को आप बेफ़ायदा दोष देते हैं। जब हमारे पास होता और हम न देते तब तो आपको ऐसा कहना वाजिब था, जब हमारे पास हई नहीं तो किसी को दोष देना अनुचित है।"

"अनुचित है! तू हमें उचित-अनुचित का पाठ पढ़ाता है—क्यों? मोहन, लगाओ तो हरामज़ादे के बीस जूते।" इतना सुनते ही मोहन पासी आगे बढ़ा और उसने अपने पैर से लक्कड़तोड़ जूता उतार कर तड़ातड़ उस बेचारे को मारना आरम्भ किया। किसान चीत्कार करता हुआ भूमि पर गिर पड़ा। बीस-पचीस जूते मार कर मोहन यह कहता हुआ कि "सरकार से जबान लड़ाता है, जान ले ली जायगी, यह याद रखना।" अपने स्थान पर जाकर खड़ा हो गया।

ठाकुर साहब बोले—अब पता लगा कि उचित क्या है?

उसने कोई उत्तर न दिया। अन्य दोनों कृषक भी भयभीत होकर अवाक् खड़े रहे।

ठाकुर साहब बोले—"तुम लोगों को तीन दिन की मोहलत दी जाती है, तीन दिनों में अपना प्रबन्ध करके जैसे बने वैसे लगान जमा कर दो। यदि तीन दिनों में लगान जमा न हुआ तो फिर हमारा जो जी चाहेगा वह करेंगे। फिर हमें दोष न देना। हमें भी सरकार को देना पड़ता है। तुम लोगों से मिलता है तभी सरकार को देते हैं। तुम लोग न दोगे तो हम कहाँ से देंगे। इसलिए सोच-समझ कर काम करो, किसी के बहकाने में मत आओ।" इतना कह कर ठाकुर साहब बोले—"जाओ, जाकर इन्तज़ाम करो।"

तीनों कृषक चुपचाप चल दिए।

३

रात के दस बज चुके थे। एक घर के विशाल प्राङ्गण में एक बड़ा अलाव लगा हुआ था। उसके चारों ओर पन्द्रह-बीस आदमी बैठे हुए थे। एक व्यक्ति कह रहा था—यह ठाकुर तो बड़ा ज़ुलुम कर रहा है, क्या करना चाहिए?

"हम क्या बतावें क्या करना चाहिए। बिन्दादीन काका से पूछो। यह बड़े-बूढ़े हैं, जो यह कहें वह करो।"

वह व्यक्ति एक वृद्ध की ओर मुँह करके बोला—बिन्दा काका, बोलते क्यों नहीं? क्या होना चाहिए?

"बबुआ, हम क्या बतावें, हम तो बुढ़ा गए। हमारे तो न हाथ चलें न पैर। हम काहे में हैं। तुम लोग अभी जवान हो, समरथ हो, तुम जैसा ठीक समझो, करो।"

"तो काका हम आपसे कहीं लाठी चलाने को तो कहते नहीं। हम तो ख़ाली सलाह पूछते हैं—करने को तो हमीं लोग करेंगे, ख़ाली तुम सलाह बता देओ।"

"सलाह तो बता दें बबुआ, पर कुछ उलटी-सीधी हो जाय तो सब हमीं को दोस देंगे कि इन्होंने ऐसा करा दिया। इससे जो तुम लोगों की समझ में आवे सो करो—हमसे सलाह न पूछो।"

"तुमसे सलाह न पूछें तो किससे पूछें? हम लोग अपने मन से कुछ करें तो फिर तुम्हीं बड़े-बूढ़े कहने लगोगे कि लौण्डों ने सब काम बिगाड़ दिया।"

"हम तो कुछ न कहेंगे, हमसे चाहे क़सम ले लेओ।"

"तुम न कहोगे, पर गाँव में और लोग तो हैं—वे कहेंगे।"

"तो जिनका खटका हो उनसे पूछ लेओ।"

"पहले तुम तो अपनी सलाह बताओ।"

"हमारी सलाह तुम लोगों को अच्छी नहीं लगेगी।"

"बताओगे नहीं, दुनिया भर की बातें बनाओगे। नहीं अच्छी लगेगी तो तुम्हारा कुछ छीन नहीं लेंगे।"

"तो बबुआ हमारी सलाह पूछते हो तो हमारी सलाह तो यह है कि एक कौड़ी लगान मत देओ—जो होगा सो देखा जायगा।"

"देखा-देखा जायगा की बात नहीं है काका। सब कर्म होयँगे।"

"होयँगे तो होने देओ। लगान कहाँ से देओगे? बैल-बधिया, लुटिया-थाली बेचोगे तो मरोगे, न देओगे तो मरोगे। इससे बहादुरी के साथ मरो, कायरता के साथ क्यों मरो।"

"यह तो ठीक है काका, परन्तु.........।"

"अरन्तु-परन्तु मैं नहीं जानता बबुआ। इसीसे मैंने पहले कह दिया था कि मेरी सलाह तुम लोगों को नहीं जँचेगी। इससे अब भी तुम लोग जैसा चाहो करो। मेरी सलाह पूछी सो मैंने बता दी।"

"तुम तो काका लाठी ऐसी मारते हो। यह हम कब कहते हैं कि हम तुम्हारी सलाह नहीं मानेंगे, परन्तु उसका हानि-लाभ भी तो समझ लें।"

"हाँ-हाँ, सो ख़ूब समझ लो।"

"इसीसे तो पूछते हैं। लगान नहीं दिया जायगा तो मार पड़ेगी, बेइज़्ज़ती होगी। गाँव वाले यह सब सह लेंगे?"

"सहोगे नहीं तो करोगे क्या? नहीं सहना चाहते तो लगान जमा कर दो।"

"लगान होता तो फिर झगड़ा ही क्या था?"

एक अन्य व्यक्ति बोल उठा—ठाकुर समझते हैं कि हम लोग गाँधी बाबा के हुकुम से लगान नहीं दे रहे हैं।

वृद्ध ने कहा—वह जो कुछ समझते हैं सो उन्हें समझने देओ। तुम्हें अपने काम से काम है, उनके समझने से तुम्हें क्या मतलब? अपना निश्चय कर लेओ, फिर कुछ करो। जब उन्हें हमारे ऊपर रहम नहीं, हमारे प्राण लेने पर उतारू हैं, तो फिर रियायत किस बात की। तुम लोग भी कह देओ कि हाँ गाँधी बाबा के हुकुम बिना न देंगे।

"अरे काका, जो कहीं ऐसा कह दें तो ग़ज़ब हो जाय। इधर ठाकुर ख़बर लें, उधर पुलिस सब कर्म कर डाले।"

"तो बबुआ जब इतना डरते हो तो फिर हमसे सलाह काहे पूछते हो। अपनी भलमन्सी बेचो और लगान जमा करो"

"सरकार को अर्ज़ी दें तो कुछ सुनवाई होगी?"—एक व्यक्ति ने पूछा।

"आस-पास के गाँव के लोगों ने तो अर्ज़ी दी थी—कुछ भया?"

"हाँ, भया तो कुछ नहीं।"

"फिर? सरकार तो खुद दुश्मनी मोल ले रही है। ऐसे में लगान की माफी कर देती तो हम लोग कभी कॉङ्ग्रेस के बाप की न मानते। परन्तु सरकार को तो अपने पैसे से मतलब है, चाहे कोई मरे या जिए—उसकी बला से। इधर जमींदार प्राण लें, सरकार सुने नहीं, तो आखिर हम किसका सहारा ढूँढें—खामखाह कॉङ्ग्रेस की शरण जाना पड़ेगा। आदमी उसी का सहारा ढूँढ़ता है जो हित की बात कहे, दुख-दरद का साथी बने।"

"परन्तु कॉङ्ग्रेस का सहारा ढूँढ़ने से फ़ायदा क्या? मार खाओ, जेल जाओ।"

"कुछ परवा नहीं। मार तो यों भी खाओगे, लगान नहीं देओगे तो मार पड़ेगी ही, खेत छीने जायँगे, जेल भी जाना पड़ेगा। कॉङ्ग्रेस के नाम से यह सब होगा तो नाम भी हो जायगा और कॉङ्ग्रेस की सहानुभूति भी मिलेगी।"

"हाँ, यह तो ठीक है।"

"मैं तो ठीक ही कहता हूँ बबुआ, गलत कहता हो नहीं।"

"अच्छी बात है, आपकी सलाह सुन ली। अब हम लोग आपस में भी सलाह कर लें, फिर जैसा ठीक समझेंगे वैसा करेंगे।"

"हाँ, ख़ूब सोच-समझ कर काम करना। जो कुछ करना एकमत होकर करना और फिर पीछे हटना नहीं, चाहे प्राण भले ही चले जायँ!"

"ऐसा ही होगा काका।"

४

ठाकुर साहब अपनी चौपाल में बैठे थे। उनके पास एक अर्द्धवयस्क मनुष्य बैठा हुआ था। इसी समय दो पासी लपकते हुए आए। वे हाँफ रहे थे—मानो दौड़ते हुए आए हों। उनके मुख पर घबराहट के स्पष्ट चिह्न थे। ठाकुर साहब ने उनकी यह दशा देख कर पूछा—क्या बात है?

"फ़रियादे-बिस्मिल"

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

बे.खुदी में कह रहा हूँ होश अगर आ जायगा,
देखने का जो तमाशा है वह देखा जायगा!
मैं भी अपनी घात में हूँ, वह भी अपनी घात में,
आएगा मौक़ा समझने का तो समझा जायगा!
हज़रते "बिस्मिल" तड़प कर जान देते हैं अबस,
यह समाँ बेदर्द क़ातिल से न देखा जायगा!!

* * *

दिल से, जी से, शौक़ से अब काम करता कौन है,
वादिए ख़ौफ़ो-ख़तर में पाँव धरता कौन है!
ज़िन्दगी के दिन जो थे वह नज़रे ज़िन्दाँ हो गए,
मुझको आज़ादी कहाँ, आज़ाद करता कौन है?
नाव भी मँझधार में बादे मुख़ालिफ़ भी क़रीब,
डूब कर दरियाए-ग़म से पार उतरता कौन है?
छिड़ गई चारों तरफ़ "बिस्मिल" अब आज़ादी की जङ्ग,
देखना यह है वतन पर अपने मरता कौन है?

* * *

"सरकार, गाँव भर ने एका कर लिया है। कोई लगान की एक कौड़ी देने नहीं कहता, सब लोग प्राण देने पर उतारू बैठे हैं।"

उस अर्द्धवयस्क व्यक्ति ने ठाकुर साहब की ओर देख कर कहा—देखा आपने? आप मेरी बात का विश्वास नहीं करते थे।

ठाकुर साहब का मुख तमतमा उठा। वह मूँछों पर ताव देते हुए बोले—अच्छी बात है। अभी थाने में ख़बर कराता हूँ, दारोग़ा जी आकर सबको ठीक कर देंगे।

अर्द्धवयस्क व्यक्ति ने डरते-डरते कहा—यदि आप क्रोध न करें तो एक बात कहूँ?

"कहिए! क्रोध करने की कौन बात है।"

"दारोग़ा जी को आप बुलवाएँगे तो सही, पर वह आकर क्या करेंगे? यही न कि मार-पीट करेंगे। दस-बीस आदमी घायल हो जायँगे। उससे आपको क्या मिल जायगा? लगान उस सूरत में भी आपको नहीं मिलेगा।"

"जब मार पड़ेगी तो सब दे देंगे।"

"यह विचार त्याग दीजिए। लगान नहीं मिलेगा, नहीं मिलेगा—चाहे सबको मरवा डालिए, यह निश्चित है।"

ठाकुर साहब चौंक कर बोले—ऐसी बात है?

"हाँ, ऐसी ही बात है।"

"परन्तु दारोग़ा जी ने कहा था कि न वसूल हो तो हमें ख़बर देना।"

"दारोग़ा जी के बाप भी आपको लगान नहीं दिला सकते, दारोग़ा जी आएँगे और मार-पीट करके चले जायँगे और दो-चार का चालान कर देंगे, इससे अधिक उनके किए कुछ न होगा—यह याद रखिए। दारोग़ा जी का क्या बिगड़ेगा, वह कल बदल कर दूसरे थाने में चले जायँगे। आपको यहीं रहना है। दारोग़ा जी सरकार से तनख़्वाह पाते हैं, आपका काम इन्हीं किसानों से चलेगा। इसलिए आपको इस समय किसानों का साथ देना चाहिए। यदि इस समय आप इनका उद्धार कर लेंगे तो भविष्य के लिए ये आपके ग़ुलाम हो जायँगे और जो आपने मार-पीट कराई तो सदा के लिए उनके दिल में आपकी ओर से खोट पैदा हो जायगा। जो आपके लिए हानिकारक होगा।"

"ये लोग कॉङ्ग्रेस के बहकाए हुए हैं।"

"यह आपका बिलकुल ग़लत ख़्याल है। कॉङ्ग्रेस क्या और कोई क्या बहकावेगा। क्या आप नहीं जानते कि फ़सल कैसी हुई है?"

"ख़ैर सो तो हुई है, मगर.........।"

"मगर क्या? इधर फ़सल ख़राब हुई, उधर भाव गिरा हुआ है। आप भी तो खेती करते हैं, आपके खेतों में कितनी उपज हुई?"

"उपज तो कम ही हुई।"

"तो बस फिर! कॉङ्ग्रेस को क्यों दोष दिया जाय? हाँ, यदि आपने इस समय उनका साथ न दिया तो फिर वे सदैव के लिए कॉङ्ग्रेस के हाथ में चले जायँगे। यदि आपने साथ दे दिया तो आपके साथ रहेंगे। ईश्वर की दया से आप ओसम्पन्न हैं—एक फ़सल की मालगुज़ारी आप अपने पास से दे सकते हैं और मुनाफ़े के लिए भी गम खा सकते हैं। किसानों से सब वसूल हो जायगा। वे थोड़ा-थोड़ा करके दो-तीन फ़सलों में अदा कर देंगे।"

ठाकुर साहब मौन होकर सोचने लगे। कुछ देर तक सोचने के पश्चात बोले—आप ठीक कहते हैं त्रिपाठी जी, आपकी बातें मेरी समझ में आ गईं। यह समय ऐसा नहीं है कि किसानों से बैर बाँधा जाय!

ठाकुर साहब ने अपने दोनों गुड़ैतों को बुलाया और बोले—देखो, गाँव भर में यह मुनादी कर दो कि ठाकुर साहब ने इस फ़सल का लगान माफ़ कर दिया।

दोनों गुड़ैतों के मुख पर प्रसन्नता दौड़ गई। दोनों शीघ्रतापूर्वक भागे।

* * *

ठाकुर साहब के द्वार पर गाँव भर जमा हो गया। लोग चिल्ला रहे थे—ठाकुर शङ्करबख़्श की जय! महात्मा गाँधी की जय! ठाकुर शङ्करबख़्श जुग-जुग जिएँ!

त्रिपाठी जी ठाकुर साहब से बोले—कहिए, इस दृश्य में सच्चा आनन्द है या उस दृश्य में होता, जब लोग पुलिस की मार से चीत्कार करते होते और आपको गालियाँ दे रहे होते।

ठाकुर साहब के नेत्र जलपूर्ण हो गए। उन्होंने कहा—आप ठीक कहते हैं। मैं आपके सत्परामर्श के लिए सदैव आपका कृतज्ञ रहूँगा।

* * *

हंगरी का स्वाधीनता-संग्राम

[मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

(शेषांश)

साम्राज्यवादियों के केबिनेट या मन्त्रि-सभा ने, पहले ही यह निश्चय कर लिया था कि हङ्गरी को किसी तरह स्वतन्त्रता न दी जाय। परन्तु प्रकाश्य रूप से इस कार्य में सफलता प्राप्त करने की यथेष्ट सम्भावना न देख कर उन्होंने पुराने सम्राट को सिंहासन-च्युत करके नए सम्राट द्वारा यह शुभ कार्य कराया। सम्राट जोसेफ़ और उनके केबिनेट ने साज़िश करके गुप्त रूप से हङ्गरी के कई पड़ोसियों द्वारा उस पर एक साथ आक्रमण करा दिया। इस साज़िश में श्लोवियन, सर्वियन और क्रोट शामिल थे। उन्होंने एकाएक और अकारण ही एक दिन हङ्गरी पर चढ़ाई कर दी। हङ्गरियन पहले तो घबराए, परन्तु फिर शीघ्र ही शत्रुओं का सामना करने के लिए डट गए और आततायियों को ऐसी शिक्षा दी कि बहुत दिनों तक याद करते रहे।

इस चाल के ख़ाली जाते ही ऑस्ट्रियनों ने दूसरी चाल चली। ऑस्ट्रियन केबिनेट ने लेमवर्ग नाम के एक कूटनीतिज्ञ को हङ्गरी भेजा और उसे आदेश दिया कि वह हङ्गरियनों में फूट डाल कर उनकी स्वतन्त्रता प्राप्त करने की इच्छाओं को कुचल डाले। परन्तु हङ्गरी की प्रतिनिधि-सभा को इस साज़िश का हाल मालूम हो गया। उसने घोषणा कर दी कि लेमवर्ग ठग है, इसके फन्दे में किसी को नहीं फँसना चाहिए। लेमवर्ग जब हङ्गरी की राजधानी बुडापेस्ट पहुँचा तो किसी गुप्तघातक ने उसकी हत्या कर दी। फिर क्या था, इस समाचार के ऑस्ट्रिया पहुँचते ही नए सम्राट महोदय आग-बबूला हो गए और क्रोशी के सेनापति जेनाविच को हङ्गरी का प्रधान शासनकर्ता नियुक्त करके भेजा। जेनाविच ऑस्ट्रियनों की एक सेना लेकर हङ्गरी के लिए रवाना हुए। परन्तु हङ्गरियन इससे विचलित न हुए। कसूथ महोदय के परामर्शानुसार हङ्गरी की प्रतिनिधि-सभा ने घोषणा कर दी कि हङ्गरी सम्पूर्ण स्वाधीन देश है, ऑस्ट्रिया से उससे कोई वास्ता-सरोकार नहीं। कसूथ राष्ट्रीय सभा के सभापति निर्वाचित हुए। जेनाविच की सेना के साथ हङ्गरियनों का बाक़ायदा संग्राम हुआ। ऑस्ट्रिया की सेना हार गई। इस समय ऑस्ट्रिया के सम्राट जोसेफ़ ने एक और चाल चली। उन्होंने रूस के ज़ार निकोलस से सहायता की प्रार्थना की। निकोलस इससे प्रसन्न हुआ। उसे भय था कि कहीं हङ्गरी के विद्रोहियों की हवा पोलैण्ड-वासियों को न लग जाय। इसलिए हङ्गरी को कुचल डालने के लिए उसने दो लाख सेना भेज दी। स्वदेश-प्रेमी हङ्गरियनों ने बड़े साहस के साथ इस महती सेना का मुक़ाबिला किया। परन्तु रूस और ऑस्ट्रिया की सम्मिलित प्रबल शक्ति के सामने हङ्गरी के मुट्ठी भर देशभक्त कब तक ठहर सकते थे। अन्त में बेचारों को हार जाना पड़ा। कसूथ भाग कर तुर्किस्तान चले गए। ज़ार निकोलस विजित हङ्गरी को ऑस्ट्रियन सम्राट के हाथ सौंप कर रूस चले गए।

ऑस्ट्रिया-सम्राट् ने सुअवसर पाकर पराधीन हङ्गरी को जी खोल कर कुचलना आरम्भ कर दिया। विद्रोही दल के बहुत से लीडर एक विचार-प्रहसन के बाद तलवार के घाट उतारे गए। सौभाग्यवश जो बच गए, वे आजन्म के लिए द्वीपान्तर भेजे गए। हङ्गरी का शासन-तन्त्र नष्ट कर दिया गया। समस्त जातीय प्रतिकूल तोड़ दिए गए। ग्राम-पञ्चायतों का अस्तित्व विनष्ट कर डाला गया। हङ्गरियन भाषा का प्रचार एकदम बन्द कर दिया गया। इसके बाद ऑस्ट्रियन सरकार ने हङ्गरी को कई भागों में बाँट कर सर्वत्र सामरिक शासन जारी कर दिया। स्वाधीन हङ्गरी का नाम सदैव के लिए विलुप्त कर डाला गया।

हङ्गरियनों ने पहले तो चुपचाप यह सारा अत्याचार बरदाश्त किया। मालूम होने लगा, मानो उसकी जीवनी शक्ति सदा के लिए तिरोहित हो गई है, अब वह कल्पान्तर तक भी सिर उठाने के लायक़ नहीं हो सकेगा। परन्तु जिस जाति के दिल में स्वाधीनता की प्रबल आकांक्षा जड़ जमा लेती है, वह जाति कभी मर नहीं सकती। कुछ दिनों के बाद ही निर्वासित कसूथ का स्थान फ़्रान्सिस डिक ने ग्रहण किया और धीरे-धीरे फिर हङ्गरियनों में जागृति का सञ्चार करने लगे। शीघ्र ही फिर स्वाधीनता का आन्दोलन आरम्भ हो गया।

सम्राट जोसेफ़ की समझ में यह बात अच्छी तरह धँस गई थी कि डिक चुपचाप बैठने वाले नहीं हैं, वह शीघ्र ही राजविद्रोह की आग धधका देंगे, इसलिए उन्होंने डिक को प्रलोभन के जाल में फँसाने की चेष्टा की। सम्राट समझते थे कि अगर डिक किसी तरह चङ्गुल में आ गए तो फिर कौन है जो सिर उठाने का साहस कर सकेगा। परन्तु स्वाधीनता का शत्रु साम्राज्य-लोलुप जोसेफ़ स्वाधीनता के पुजारी का महत्व क्या समझ सकता था। जोसेफ़ ने जब डिक को बुला कर दामाद की तरह उनकी ख़ातिरदारी आरम्भ की और एक उच्च पद पर उन्हें प्रतिष्ठित करने का प्रस्ताव किया तो डिक हँस पड़े। उन्होंने कहा—इस उदारता के लिए आपको धन्यवाद है। परन्तु पहले हङ्गरी को स्वतन्त्र हो जाने दीजिए, तब आपके प्रस्ताव पर विचार करूँगा।

जब डिक इस फन्दे में नहीं फँसे तो सम्राट जोसेफ़ ने दूसरा फन्दा फेंका। उन्होंने प्रस्ताव किया कि हङ्गरियन प्रतिनिधियों की एक कॉन्फ़्रेन्स ऑस्ट्रिया की राजधानी वियेना में बुलाई जाय और हङ्गरी की शासन-व्यवस्था के बारे में आलोचना की जाय। परन्तु तेजस्वी डिक इस कॉन्फ़्रेन्सी माया-जाल में भी न फँसे। उन्होंने बड़ी धीरता से उत्तर दिया कि—"ऑस्ट्रियन सरकार ने अन्यायपूर्वक हङ्गरी की स्वाधीनता छीन ली है। इसलिए उसके साथ हङ्गरी की शासन-व्यवस्था के बारे में कोई आलोचना ही नहीं हो सकती।

वास्तव में स्वतन्त्रता चाहने वाली जाति के लिए ऐसे ही तेजस्वी और स्पष्टवादी नेता की आवश्यकता होती है। जो अभागे विजेता की दी हुई रायबहादुरी या रायसाहबी के फेर में पड़ कर अथवा किसी उच्च पद के प्रलोभन में पड़ कर देश के स्वार्थ की हानि करते हैं, अथवा विजेता की दी हुई भीख पाकर सन्तुष्ट हो जाते हैं, वे वास्तव में देश का नेतृत्व नहीं कर सकते। ऐसे बुज़दिल और स्वार्थी नेताओं से ईश्वर देश की रक्षा करे।

महात्मा डिक ऐसे नेताओं में न थे। कोई प्रलोभन उन्हें विचलित नहीं कर सकता था। उन्होंने ऑस्ट्रिया-सम्राट की वदान्यता और सौजन्यता की परवाह न करके, देश को स्वतन्त्रता प्राप्त करने के योग्य बनाने में लगे। वे तन, मन और धन से हङ्गरी में शिक्षा-विस्तार और देशी शिल्प-कला की उन्नति में लग गए। स्वदेशी भावों की बाढ़ ने जन-साधारण में देशात्म-बोध का सञ्चार करना आरम्भ कर दिया। डिक के इस प्रचार कार्य से ऑस्ट्रियन-सम्राट विशेष विचलित हुए। उन्होंने स्वयं हङ्गरी की राजधानी पेस्थ आकर अड्डा जमाया और हङ्गरियनों पर अपना प्रभाव डालने की वृथा चेष्टा करने लगे।

सब से पहले उन्होंने हङ्गरी के अख़बार-नवीसों को बुला कर फ़रमाया कि वे इस बात का प्रचार करें कि ऑस्ट्रिया के सम्राट हङ्गरी में नवयुग का सञ्चार करने आए हैं। समस्त राजनीतिक अपराधियों को माफ़ी दी जाएगी और जिनकी जायदाद ज़ब्त की गई है, वह लौटा दी जाएगी। परन्तु डिक इससे भी विचलित न हुए। उन्होंने घोषणा की कि आस्ट्रिया के सम्राट हमारे कोई नहीं हैं, इसलिए हमें उनकी बातों पर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं है। अन्त में बेचारे सम्राट विफल-मनोरथ होकर अपने घर लौट गए।

परन्तु हङ्गरी की स्वाधीनता उनकी आँखों में शूल की तरह खटक रही थी। वे मानो आहार-निद्रा भूल कर उसे अपने शिकञ्जे में कसने की तदबीर सोचने लगे और अपनी रानी को लेकर दोबारा हङ्गरी पहुँचे। सम्राट के उद्योग से नित्य नए जलसे, जुलूस, गान-वाद्य और दावतें होने लगीं। हङ्गरी के प्रधान-प्रधान व्यक्ति निमन्त्रण देकर बुलाए जाने लगे। स्वयं रानी महोदया हङ्गरियन पोशाक पहन कर हङ्गरी के स्कूलों का प्रदर्शन करने लगीं। उनके स्वागत के लिए देशी ढङ्ग से स्वागत की तैयारियाँ होने लगीं। मियाँ-बीवी जहाँ जाते वहीं हङ्गरी की प्रशंसा के पुल बाँधा करते। राजदम्पति की यह उदारता और सदाशयता देख कर हङ्गरी का 'मॉडरेट-मण्डल' पिघल कर पानी हो गया। सारे देश में स्वागत-सभाओं और मान-पत्रों की धूम सी मच गई। 'मन तोरा हाजी बगोयम तू मरा हाजी बगो' का ऐसा समा बँधा कि कुछ न पूछिए। धीर-हृदय डिक चुपचाप यह तमाशा देख रहे थे। मॉडरेटों का यह अधःपतन देख कर उनका हृदय दुःखी हो रहा था। परन्तु इस समय जो हवा बह रही थी उसका रोकना ज़रा कठिन काम था। इसलिए उन्होंने कुछ दिन मौन रहना ही उचित समझा। अन्त में अवसर पाते ही उन्होंने एक वक्तृता दी और मॉडरेटों को सम्बोधन करके कहा—जिसने हङ्गरी की स्वाधीनता छीन ली है और जो तुम्हें सदा ग़ुलाम बनाए रखने की तदबीर कर रहा है, तुम उसके स्वागत में लगे हो, उसे मान-पत्र प्रदान कर अपने को धन्य समझ रहे हो, तुम्हें धिक्कार है!

परन्तु मॉडरेटों ने अपने देवता की आराधना न छोड़ी। उधर देवता ने भी 'वचनम् किम् दरिद्रता' से ख़ूब काम लिया। परन्तु शासन-व्यवस्था के सम्बन्ध में अङ्गुष्ठ-प्रदर्शन ही करते रहे। हङ्गरियन जहाँ थे, वहीं रह गए। परन्तु जिनकी अक़्ल पर पत्थर पड़ गया था, शत्रु की ख़ुशामद करके ही जो अपना इहकाल और परकाल सुधार लेना चाहते हैं, वे बिना चपत पड़े आदत से बाज़ नहीं आते। उन मॉडरेटों के लिए यही बहुत था

कि सम्राट उनका दिया हुआ मान-पत्र कृपा करके स्वीकार कर लेते थे। अस्तु।

सन् १८४६ ईस्वी का ज़माना था, ऑस्ट्रिया की उद्दण्डता से चिढ़ कर फ्रान्स ने उस पर चढ़ाई कर दी। सम्राट जोसेफ़ नई विपत्ति में फँसे थे। उन्होंने हङ्गरी से धन और जन की प्रार्थना की। परन्तु हङ्गरी में उस समय डिक की तूती बोल रही थी। उसने किसी प्रकार की मदद देने से साफ़ इनकार कर दिया। सम्राट ने अपने प्रधान मन्त्री को पदच्युत करके उसकी जगह योशिका नाम के एक हङ्गरियन को प्रतिष्ठित करना चाहा। परन्तु योशिका ने साफ़ जवाब दे दिया। सम्राट ने डिक को बुला भेजा और कहा कि छः हङ्गरियनों को वे अपनी शासन-सभा का सदस्य बनाना चाहते हैं। डिक नहीं गए। उन्होंने कहला भेजा कि अगर सम्राट की इच्छा हो तो स्वयं हमारे पास आकर बातचीत कर सकते हैं। कोई हङ्गरियन प्रतिनिधि उनसे मिलने नहीं जाएगा। जोसेफ़ कुछ निराश हुए, परन्तु हताश नहीं। उन्होंने हङ्गरी को प्रसन्न करने के लिए एक और उपाय सोच निकाला। उन्होंने हङ्गरी की ग्राम-पञ्चायतों को पुनः जीवन प्रदान करने के लिए ऑस्ट्रिया में एक कॉन्फ्रेन्स करने का आयोजन किया। परन्तु डिक इस फन्दे में भी न आए। उन्होंने कहा—ऐसी कॉन्फ्रेन्सों से कोई लाभ नहीं है।

सम्राट ने ग्राम-पञ्चायतों का पुनः संस्कार कर डाला और हङ्गरी की राष्ट्रीय सभा को भी निमन्त्रित किया। इसका नतीजा भी ख़ूब मज़ेदार हुआ। पञ्चायत वालों ने समस्त ऑस्ट्रियन कर्मचारियों को निकाल बाहर किया और प्रस्ताव स्वीकृत किया कि ऑस्ट्रियन सेना के ख़र्च के लिए हङ्गरी एक कौड़ी भी न देगा। सम्राट ने फिर डिक की शरण ली और उन्हें बुला कर कहा कि हङ्गरी केवल नाम के लिए ऑस्ट्रिया के अधीन रहेगा, मैं उसकी शासन-व्यवस्था में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करूँगा। डिक ने कहा—पूर्ण-स्वाधीनता के सिवा हङ्गरी कोई दूसरा प्रस्ताव नहीं स्वीकार कर सकता।

परन्तु सम्राट जोसेफ़ भी कमाल का राजनीतिज्ञ था। बारम्बार टका-सा उत्तर पाने पर भी वह हताश नहीं हुआ। उसने ऑस्ट्रिया के 'बुडा' नामक क़िले में हङ्गरी की राष्ट्रीय समिति का एक अधिवेशन करना चाहा और बतलाया कि इस समिति में हङ्गरी के पूर्ण-स्वाधीनता के सम्बन्ध में ही बातचीत होगी।

डिक ने कहा—"हङ्गरी की राजधानी पेस्थ में अगर कोई कॉन्फ्रेन्स हो तो मैं शामिल हो सकता हूँ।" सम्राट ने इसे स्वीकार कर लिया। पेस्थ में सभा बैठी। उसके तीन सौ प्रतिनिधियों में दो सौ सत्तर डिक के अनुयायी थे। बड़े उत्साह के साथ समिति का अधिवेशन आरम्भ हुआ। सभी प्रतिनिधि अपना जातीय परिच्छद धारण कर समिति में शामिल हुए। सम्राट ने हङ्गरी की राष्ट्रीय समिति की स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली, और सभी अभ्यन्तरीय विषयों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करने का वचन दिया। परन्तु साथ ही यह पख भी लगा दी कि चरम निर्णय ऑस्ट्रिया की साम्राज्य-परिषद के हाथ में रहेगा। यह सुन कर डिक ने समिति के सदस्यों से कहा—"ये विदेशी हमारी मातृ-भूमि की छाती पर बैठ कर हमारे लिए विधि-विधान बनाया करेंगे और हमारी क़िस्मत के साथ खेलेंगे और हम उनके ग़ुलाम बने रहेंगे। क्या इसीलिए आप लोग इस कॉन्फ्रेन्स में आए हैं?"

सदस्यों ने एक स्वर से उत्तर दिया—कदापि नहीं।

अन्त में समिति की ओर से कहा गया कि हङ्गरी को सम्पूर्ण रूप से स्वतन्त्र कराना ही राष्ट्रीय सभा का उद्देश्य है। अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए ही देश ने उस पर यह बोझ लादा है। इसलिए समिति के सदस्य सम्राट के हाथों आत्म-विक्रय करके देश के साथ विश्वास-घात नहीं कर सकते। वे सब प्रकार के अत्याचार, उत्पीड़न और निर्यातन सह लेंगे, परन्तु हङ्गरी की स्वाधीनता नष्ट नहीं होने देंगे।

यह सुनते ही सम्राट महोदय के दिमाग़ का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। उन्होंने फ़ौरन राष्ट्रीय समिति बन्द कर देने का आदेश प्रदान किया और सभा-भवन के चारों ओर सङ्गीन का पहरा बिठाया। ग्राम-पञ्चायतें बन्द करने के लिए हुक्म जारी हो गया। परन्तु किसी ने इस हुक्म पर ध्यान ही नहीं दिया। ऑस्ट्रिया की सेना के उत्पात मचाने पर भी किसी ने सम्राट की आज्ञा न मानी। इससे क्रुद्ध होकर सम्राट ने सारे देश में 'मॉर्शल लॉ' जारी कर दिया।

महामना डिक मानो इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने घोषणा की कि ऑस्ट्रिया के साथ हमारा युद्ध आरम्भ हो गया है, परन्तु हमें सब प्रकार से अहिंसात्मक रहना चाहिए। हङ्गरी-वासियों को चाहिए कि सब प्रकार के अत्याचार चुपचाप सह लें; भयङ्कर से भयङ्कर कष्ट आने पर भी शान्ति भङ्ग न करें।

अपने श्रद्धेय नेता के आदेशानुसार हङ्गरी ने सम्पूर्ण भाव से असहयोग-नीति का अवलम्बन किया। ऑस्ट्रिया की ओर से अत्याचार पर अत्याचार होने लगे, परन्तु हङ्गरी ने एक क्षण के लिए भी शान्ति भङ्ग न की। ऑस्ट्रिया-सरकार की पुलिस मालगुज़ारी वसूल करने आई, परन्तु किसी ने एक कौड़ी न दी। जायदाद नीलाम करके टेक्स वसूल करने की चेष्टा की गई, परन्तु कोई ख़रीदार ही न था। क़ुर्क़ की हुई सम्पत्ति ख़रीदने के लिए ऑस्ट्रिया से ख़रीदार बुलाने की चेष्टा की गई; सैकड़ों का सामान कौड़ियों के मोल बेचा जाने लगा, परन्तु इतने पर भी सफलता कोसों दूर रही। सम्राट ने सेना भेज कर ग्रामवासियों पर अत्याचार कराना आरम्भ किया, परन्तु हङ्गरियन शान्त रहे। यहाँ भी सम्राट को अपनी हार स्वीकार कर लेनी पड़ी। हङ्गरी ने ऑस्ट्रियन माल का बॉयकॉट पहले से ही कर रक्खा था। सम्राट ने इसे भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया। परन्तु इसका भी कोई फल नहीं हुआ। वियेना में साम्राज्य-परिषद का अधिवेशन हुआ, परन्तु कोई हङ्गरियन उसमें शरीक नहीं हुआ। सम्राट ने राष्ट्रीय महासमिति का ध्वंस कर डाला। हङ्गरियनों ने कृषि-सङ्घ स्थापित करके काम चलाना आरम्भ किया।

इसी समय प्रशिया ने ऑस्ट्रिया के साथ युद्ध आरम्भ कर दिया। सम्राट बहादुर पुनः सङ्कट में पड़े और हङ्गरी से मदद की प्रार्थना करने लगे। डिक ने उत्तर दिया कि जब तक हङ्गरी की पूर्णस्वाधीनता सम्राट की सरकार स्वीकार न कर लेगी, तब तक वह किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकेगा।

अन्त में सम्राट जोसेफ़ फिर पेस्थ आए और एक घोषणा-पत्र द्वारा हङ्गरी की राष्ट्रीय महासभा की स्वतन्त्रता स्वीकार की। साथ ही यह भी फ़रमाया कि साम्राज्य के अन्तर्गत रह कर हङ्गरी अपने अभ्यन्तरीय विषयों में सब तरह से स्वाधीन रहेगा। परन्तु डिक और उनके दल वाले तो विशेषणहीन स्वाधीनता के पक्षपाती थे। उन्होंने अपना पूर्णस्वाधीनता वाला दावा ही बहाल रक्खा। इधर सम्राट ने बहुत ज़ोर मारा कि राष्ट्रीय समिति से उनका प्रस्ताव स्वीकृत हो जाय। सदस्यों के सामने कुछ प्रलोभन रखने से भी बाज़ नहीं आए। परन्तु समिति की तो प्रतिज्ञा थी कि पूर्णस्वाधीनता ही ग्रहण करेंगे।

फलतः हङ्गरी की राष्ट्रीय महासभा ने स्वतन्त्र रूप से कार्य करना आरम्भ किया। ऑस्ट्रिया के प्रभुत्व की उसने ज़रा भी परवाह न की। सम्राट ने भी अवज्ञा-नीति से काम लिया। परन्तु कोई नतीजा नहीं निकल सका। इतने में प्रशिया वालों ने फिर विद्रोह आरम्भ कर दिया। सम्राट फिर विपद में पड़े और डिक को बुला कर सहायता की प्रार्थना की। डिक ने वही उत्तर दिया। सम्राट ने कहा—अगर हङ्गरी विरुद्ध में हमारी सहायता करने का वचन दे तो हम उसकी स्वाधीनता स्वीकार कर लेंगे। परन्तु तेजस्वी नेता डिक ने किसी प्रकार की शर्त स्वीकार करके स्वाधीनता लेने से साफ़ इनकार कर दिया।

प्रशिया वालों से संग्राम चल रहा था। सम्राट इस युद्ध में हार गए और 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' के अनुसार सारा ग़ुस्सा हङ्गरी पर उतारने लगे। उन्होंने आदेश दिया कि बलपूर्वक हङ्गरी से सेना संग्रह की जाए। यह सुन कर लोग क्रोधोन्मत्त हो गए। परन्तु डिक ने बड़े कष्ट से लोगों को शान्त किया।

जब किसी तरह सम्राट को सफलता नहीं मिली तो उन्होंने हङ्गरी के अन्यतम नेता जूलियस ऐण्ड्रेफ़ी को बुलाया और कहा कि महासभा का एक अधिवेशन बुलावें। सन् १८६७ में हङ्गरी के पेस्थ नगर में महासभा की बैठक आरम्भ हुई। सम्राट जोसेफ़ भी आए और घोषणा की कि अबकी हङ्गरी के साथ अन्तिम निर्णय कर डालेंगे। इस निर्णय के अनुसार निश्चय हुआ कि हङ्गरी का नाम होगा—"ऑस्ट्रिया हङ्गरी साम्राज्य", परन्तु ऑस्ट्रिया और हङ्गरी दोनों सम्पूर्ण देश के रूप में परिगणित होंगे। ऑस्ट्रिया की राजधानी होगी वियेना और हङ्गरी की बुडापेस्ट। प्रत्येक देश की स्वतन्त्र पार्लामेण्टें होंगी। कोई किसी के अभ्यन्तरीय व्यापार में मदाख़लत नहीं कर सकेगा। केवल वैदेशिक व्यापार में—युद्ध या आर्थिक समस्या के सम्बन्ध में विचार करने के लिए दोनों पार्लामेण्टों से साठ-साठ सदस्यों को लेकर एक साम्राज्य-परिषद बैठेगी और इसकी सलाह दोनों देशों के अधिवासी मान लेंगे। अस्तु,

हङ्गरी की दीर्घकाल-व्यापिनी साधना सफल हुई। स्वाधीनता-संग्राम में उसने पूर्णरूप से विजय प्राप्त की। सारे देश में आनन्द-सागर उमड़ आया। देशवासियों ने जी खोल कर आनन्द मनाया।

परन्तु स्वाधीनता के प्रधान पुजारी डिक किसी प्रकार के आनन्दोत्सव में शरीक नहीं हुए। वह पूर्ववत धीर, स्थिर और गम्भीर थे। हङ्गरी-निवासियों ने उन्हें किसी प्रतिष्ठित पद पर आरूढ़ करना चाहा, परन्तु डिक राज़ी नहीं हुए। ऑस्ट्रिया के सम्राट और सम्राज्ञी ने भी उन्हें नाना प्रकार से सम्मानित करना चाहा, परन्तु डिक ने ग्रहण नहीं किया। हङ्गरी की राष्ट्रीय महासभा ने उन्हें सभापति के आसन पर आसीन करना चाहा, परन्तु डिक ने इनकार कर दिया।

डिक का अवशिष्ट जीवन परमार्थ-चिन्तन में व्यतीत होने लगा। उन्होंने वही त्याग दिखाया जो इटली के उद्धारकर्ता महात्मा गेरीबाल्डी ने दिखाया था। इस महावीर ने भी देश को स्वाधीनता दिला कर अपना अन्तिम जीवन एक सामान्य कृषक के रूप में बिताया था।

मगर अफ़सोस, महात्मा कसूथ जीते जी अपनी मातृभूमि को स्वाधीन न देख सके। हमारे लोकमान्य की तरह वह भी पहले ही इस असार संसार से कूच कर चुके थे। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि हङ्गरी को स्वाधीन देख कर उनकी अमर आत्मा ने अपार आनन्द प्राप्त किया होगा।

अन्त में यह कहना अनुचित न होगा कि पराधीन हङ्गरी की अवस्था से पराधीन भारत का बहुत कुछ सादृश्य है। इसलिए हङ्गरी के स्वाधीनता-संग्राम का इतिहास एक बार प्रत्येक भारतवासी को पढ़ जाना चाहिए। क्योंकि उसके अध्ययन और आलोचना से हमारे देशवासियों को मालूम हो जायगा कि देश की स्वाधीनता के लिए कितने त्याग, तेजस्विता, दृढ़ता और निर्भीकता की आवश्यकता होती है।

* * *

क्या अन्य स्वतन्त्र राष्ट्रों को भारतीय स्वतन्त्रता के मामले में दस्तन्दाज़ी करना होगा ?

भारत का राजनीतिक रहस्य

[श्री० प्रसिद्धनारायण सिंह जी, एम० ए०, बी० एल०, विशारद]

विगत दिसम्बर महीने में लाहौर की कॉङ्ग्रेस ने भारत के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव स्वीकृत किया। उसी पूर्ण-स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए वर्तमान अङ्गरेज़ी सरकार के विरुद्ध, कॉङ्ग्रेस की आज्ञा से, महात्मा गाँधी के नेतृत्व में, सत्याग्रह-संग्राम चल रहा है। सरकार की अमानुषिक दमन-नीति सभों की आँखों के सामने है। राष्ट्रीय भाव से सारा देश सराबोर हो रहा है। फिर भी, भारतीय स्वतन्त्रता को अन्यान्य राष्ट्रों ने अभी तक अपनी स्वीकृति नहीं दी! हम लोग चाहते हैं कि पूर्ण-स्वतन्त्रता की घोषणा कर देने पर, हमारे देश को भी संसार के स्वतन्त्र राष्ट्रों की गणना में स्थान मिले। हम ऐसे स्थान के हक़दार हैं अथवा नहीं—भारतीय स्वतन्त्रता संसार के स्वतन्त्र राष्ट्रों से स्वीकृत होने योग्य है अथवा नहीं, हम इसी विषय पर, इस लेख में, अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून की दृष्टि से विचार करेंगे। जो अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून वर्तमान है—जिनके द्वारा संसार के स्वतन्त्र राष्ट्रों के सङ्घर्षों का निबटारा होता है—उनके औचित्य-अनौचित्य पर समालोचना करना हमारा उद्देश्य नहीं।

संसार में जितने स्वतन्त्र राष्ट्र हैं, उनकी एक ख़ास समिति है, जिसका नाम "राष्ट्र-सङ्घ" अथवा "लीग ऑफ़ नेशन्स" (League of Nations) है। इस राष्ट्र-सङ्घ का प्रधान उद्देश्य राष्ट्रों के पारस्परिक सम्भावित वैर विरोधों को शान्तिपूर्वक हल कर देना है। यह एक प्रकार की पञ्चायत है। और इसमें सन्देह नहीं कि इसने बहुत ख़ून-ख़राबी को, समय-समय पर रोका है। इसने कुछ क़ायदे-क़ानून बनाए हैं, जिनके द्वारा इसका सब कार्य सम्पन्न होता है। इन क़ायदे-क़ानूनों में 'क़ानून' कहलाने की कितनी योग्यता है, इसकी बहस करना हम नहीं चाहते। कारण यह है कि जब कभी किसी राष्ट्र का बड़ा स्वार्थ नष्ट होने लगता है, तब ये सभी क़ानून अशक्त हो जाते हैं, और राष्ट्रों को शस्त्रों की शरण लेनी पड़ती है। ख़ैर, इस विशेष परिस्थिति से हमारा कोई प्रयोजन नहीं।

किसी पराधीन राष्ट्र की स्वतन्त्रता स्वीकृत करने का यही मतलब है कि वह राष्ट्र इस राष्ट्र-सङ्घ की दृष्टि में स्वतन्त्र राष्ट्र समझा जावे, और इसके क़ायदे-क़ानूनों से लाभ उठाने की योग्यता हासिल कर सके। राष्ट्र-सङ्घ के जितने क़ायदे-क़ानून हैं, वे अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून कहलाते हैं, और उनका प्रयोग स्वतन्त्र राष्ट्रों के ही सम्बन्ध में होता है।

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून में इस तात्पर्य के क़ानून मौजूद हैं, जिनके आधार पर एक स्वतन्त्र राष्ट्र किसी पराधीन देश की स्वतन्त्रता को स्वीकृत कर, उसे स्वतन्त्र राष्ट्रों की सूची में स्थान दे सकता है। परन्तु इस प्रकार के स्थान पाने के लिए पराधीन देश को कुछ शर्तें माननी पड़ती हैं—ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी होती हैं, जिनसे वे क़ानून लागू हो सकें, और किसी एक स्वतन्त्र राष्ट्र को पराधीन देश की स्वतन्त्रता स्वीकृत करने के लिए मौक़ा मिल सके। बिना काफ़ी कारण के कोई भी स्वतन्त्र राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के अन्तर्गत मामलों में दस्तन्दाज़ी नहीं कर सकता। अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के आधार पर, हरेक स्वतन्त्र राष्ट्र अपने अन्दरूनी मामलों के लिए बिलकुल स्वतन्त्र है। राष्ट्रीयता की अलङ्घ्यता के सम्बन्ध में वेटल साहब का यह मत है—

"सभी राष्ट्रों को इच्छा के अनुसार, अपना शासन करने का पूरा अधिकार है; और एक राष्ट्र को दूसरे के शासन में हस्तक्षेप करने का अणु-मात्र भी अधिकार नहीं है। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का तो यही स्पष्ट मतलब है। ऐसे तो राष्ट्र के अनेक अधिकार होते हैं, परन्तु उसके आधिपत्य की क़ीमत सब से बड़ी है। दूसरे राष्ट्रों के लिए उचित है कि वे सावधानीपूर्वक किसी राष्ट्र के आधिपत्य की मर्यादा का सम्मान करें। ऐसी हालत में किसी भी विदेशी राष्ट्र को अधिकार प्राप्त नहीं है कि वह किसी दूसरे राष्ट्र की कार्रवाइयों के ऊपर फ़ैसला करने के लिए न्यायाधीश बन बैठे, और उन्हें रद्दो-बदल करने के लिए विवश करे। यदि कोई राजा अपनी प्रजा पर कर का बोझ लाद देता है—चाहे वह उसके साथ निर्दयता का व्यवहार करता है, तो इन मामलों का सम्बन्ध केवल उसी राष्ट्र से है; किसी दूसरे को ऐसा हक़ नहीं है कि वह आचरण को दुरुस्त करने के लिए अथवा अच्छी नीति से शासन करने के लिए उस राजा को मजबूर करे"।

—राष्ट्रीय क़ानून—(Law of Nation)

इसका सारांश यही है कि किसी पराधीन देश की स्वतन्त्रता स्वीकृत करते समय स्वतन्त्र राष्ट्र इस बात का पूरा ख़्याल रखते हैं कि अधिकारी राष्ट्र (Mother Country) के आधिपत्य पर किसी प्रकार का आघात न पहुँचे। इसलिए स्वतन्त्र राष्ट्र की स्वतन्त्रता स्वीकृत करने में बड़ी सावधानी से काम लेते हैं और स्वीकृति देने के पहले वे देख लेते हैं कि पराधीन देश में वास्तविक स्वतन्त्रता वर्त्तमान है, सिर्फ़ शब्दों के द्वारा उसे मान लेने की आवश्यकता बाक़ी है।

जब कभी किसी पराधीन देश की स्वतन्त्रता स्वीकृत करने का सवाल स्वतन्त्र राष्ट्रों के सामने आ जाता है, तब एक तरह की विकट परिस्थिति उपस्थित हो उठती है। एक ओर तो विद्रोही देश (Insurgent Community) अपने को पूर्ण-स्वतन्त्रता का अधिकारी बतलाता है, तो दूसरी ओर अधिकारी देश अपने हक़ से बाज़ नहीं आता। इस पारस्पर सङ्घर्षी अधिकार-द्वय का निपटारा कर लेना कोई सहल काम नहीं। स्वतन्त्र राष्ट्र पराधीन देश की स्वतन्त्रता स्वीकृत करने के पहले इन अधिकारों के तारतम्य को भली भाँति तौल लेता है। अधिकारी राष्ट्र के अधिकारों में किसी प्रकार का दख़ल देना स्वतन्त्रता स्वीकृत करने वाले राष्ट्र का कभी भी, अभीष्ट नहीं होना चाहिए।

पराधीन देश की स्वतन्त्रता स्वीकृत करते समय स्वतन्त्र राष्ट्र इन दो बातों को अच्छी तरह जाँच कर लेता है। पहली बात तो यह है, कि पराधीन देश ने वास्तव में स्वतन्त्रता हासिल कर ली है। वास्तविक स्वतन्त्रता हासिल करने से यह मतलब है, कि पराधीन देश के पक्ष में वे सभी सामान मौजूद हैं, जिनका एक स्वतन्त्र राष्ट्र में होना ज़रूरी है। स्वतन्त्रता की स्वीकृति चाहने वाले देश की सीमा निश्चित होनी चाहिए, उसकी निज की राजनीतिक संस्था होनी चाहिए, जिसकी आज्ञा प्रजा को, निस्सङ्कोच मान्य हो, ऐसी राजनीतिक संस्था के अधिकारी-वर्ग निश्चित और उत्तरदायी होने चाहिएँ। इसके अलावा ऐसे देश में उस बल और योग्यता का भी होना आवश्यक है, जिसके द्वारा स्वतन्त्र राष्ट्र के अधिकारों की वह रक्षा कर सके, और कर्त्तव्यों का यथोचित पालन भी करे।

दूसरी शर्त यह है कि अधिकारी राष्ट्र का आधिपत्य उस देश-विशेष से बिलकुल उठ जाना चाहिए। अधिकारी देश हार मान कर अथवा अन्यान्य कारणों से जब बल-प्रयोग करना और अपने शासन को ज़बर्दस्ती काम में लाना छोड़ देता है, तब उसके आधिपत्य का अन्त हुआ समझा जाता है। परन्तु जब तक अधिकारी देश अपने आधिपत्य को बनाए रखने के लिए दमन-नीति जारी रक्खे; अथवा बल का प्रयोग करता रहे, तब तक पराधीन देश की स्वतन्त्रता पूरी नहीं समझी जाती है, और दूसरा स्वतन्त्र राष्ट्र हस्तक्षेप करने में अन्तर्राष्ट्रीय-क़ानून के भङ्ग होने से भय खाता है। अब हमें स्पष्ट मालूम हो गया कि किसी स्वतन्त्र राष्ट्र से अपनी स्वतन्त्रता स्वीकृत कराने के लिए हमें कौन-कौन से काम करने चाहिएँ।

इस विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के ज्ञाताओं का मत भी स्पष्ट है। लॉरेन्स साहब "अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के सिद्धान्त" (Principles of International Law) नामक ग्रन्थ में लिखते हैं—"जब किसी राजनीतिक जाति की स्वतन्त्रता की स्वीकृति स्वतन्त्र राष्ट्रों के द्वारा मिल जाती है, तब उसका प्रवेश राष्ट्र-सङ्घ में हो जाता है॥ जिस जाति को ऐसी स्वीकृति मिले उसके पास एक सीमा-बन्द देश होना चाहिए और वहाँ सभ्यता से शासन करने के लिए एक सङ्गठित सरकार होनी चाहिए, जिसकी आज्ञा नागरिकों को मान्य हो। पराधीन देश और अधिकारी राष्ट्र में लड़ाई समाप्त हो जाने के बाद, पराधीन देश की स्वतन्त्रता स्वीकृत कर लेने पर, अधिकारी राष्ट्र के शान्तिपूर्ण आचरण में किसी प्रकार का बट्टा नहीं लगता।"

अब न्याय और अन्याय का सवाल उपस्थित होता है। अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के रू से, कारण के न्याय-सङ्गत होने ही पर, किसी स्वतन्त्र राष्ट्र को अधिकार नहीं मिल जाता कि वह अधिकारी राष्ट्र और विरोधी देश के मामलों में दख़ल दे। दक्षिण अमेरिका-निवासियों और स्पेन के मामलों का उल्लेख करते हुए, राष्ट्र-मन्त्री जॉन क्विन्सी ऐडाम्स ने सभापति मनरो के पास सन्, १८१६ ई० में लिखा था कि :—

"मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि स्पेन के विरुद्ध दक्षिण अमेरिका-निवासियों को स्वतन्त्रता हासिल करने का कारण बिलकुल उचित है। परन्तु कारण के न्याय-सङ्गत होने से, व्यक्तिगत सहानुभूति दिखलाने पर भी, तीसरे दल के लिए यह उचित नहीं कि इसी आधार पर वह इसका (विद्रोही देश का) साथ दे। निरपेक्ष राष्ट्र नवीन तथा झगड़ालू देश की स्वतन्त्रता तभी स्वीकृत कर सकता है, जब वास्तविक स्थिति और अधिकार दोनों ही मौजूद हों।"

—मूर का डाइजेस्ट (Moor's Digest)

मेक्सिको और दक्षिण अमेरिका के प्रजातन्त्रों की स्वतन्त्रता को स्वीकृत करने के पक्ष में सिफ़ारिश करते समय वैदेशिक सम्बन्धों की उप-समिति ने इस प्रकार लिखा था :—"दक्षिण अमेरिका के प्रजातन्त्रों की स्वत-

न्त्रता को, बिना किसी को नुक़सान पहुँचाए स्वीकृत कर लेने का जो राजनीतिक अधिकार अमेरिका के संयुक्त-राज्य को प्राप्त है, उसका सम्बन्ध न्याय से नहीं है; वरन उसका मतलब स्वतन्त्रता की यथार्थ स्थापना से है।" सारांश यह है कि अगर संयुक्त-राज्य ने दक्षिण अमेरिका के प्रजातन्त्रों की स्वतन्त्रता को स्वीकृत कर लिया है, तो इसका कारण यह नहीं है कि उन प्रजातन्त्रों की माँग न्याय-सङ्गत थी; वरन इस कारण कि न्याय से अथवा अन्याय से वहाँ स्वतन्त्रता की स्थापना हो चुकी थी, जिसे अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून को मानते हुए संयुक्त-राज्य को स्वीकृत कर लेना आवश्यक था।

किसी पराधीन देश के लिए स्वतन्त्र राष्ट्रों से स्वतन्त्रता की स्वीकृति पा लेना कैसी टेढ़ी खीर है, उपरोक्त शब्दों से स्पष्ट हो जाता है। इसमें असल बात यही है कि जो वर्तमान स्वतन्त्र-राष्ट्र हैं—जिनमें प्रधानता यूरोप के ही राष्ट्रों की है—वे आपस में एक तरह से सङ्गठित हैं। एक-दूसरे के साम्राज्यवाद का समर्थन करते हैं। किसी भी पराधीन देश या जाति के लिए पराधीनता की ज़ञ्जीर से निवृत्ति पाना आसान नहीं। परतन्त्र देश स्वतन्त्रता-संग्राम में किसी प्रकार स्वतन्त्र देश की मदद, अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के अनुसार, नहीं प्राप्त कर सकते। हाँ, जब वे अपने बल से स्वतन्त्रता-लाभ

पूना के श्री० एन० एस० पटेल
जिन्होंने एक बड़े ख़ूँख़्वार चीते का हाल ही में शिकार करके ग्राम-निवासियों का आशीर्वाद भाजन किया है।

कर लेंगे, तब ये स्वतन्त्र राष्ट्र उनकी स्वतन्त्रता मान सकते हैं, क्योंकि ऐसा करना उनके लिए अनिवार्य है। बोलशेविज़्म अथवा साम्यवाद ऐसे ही साम्राज्यवादी क़ानूनों का साक्षात परिणाम है। स्वतन्त्र राष्ट्रों के पारस्परिक स्वार्थ में जब लोभाधिक्य से हानि पहुँचने लगती है, तब सब अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून ताक़ पर रख दिए जाते हैं, और तोप-गोलों, हवाई जहाज़ों तथा जल-थल सेनाओं के सहारे फ़ैसला कर लिया जाता है!

अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के अनुसार स्वतन्त्रता की स्वीकृति पाने के लिए पराधीन देश को चाहिए कि एक प्रकार से अपने देश में पूर्ण-स्वराज्य स्थापित कर ले, और अधिकारी राष्ट्र के आधिपत्य को बिलकुल जड़-मूल से नाकामयाब कर दे। क़ानून के अलावा, ग़ैर-क़ानूनी आधार पर भी किसी स्वतन्त्र राष्ट्र को पराधीन देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई में हस्तक्षेप करने के लिए, कभी-कभी विवश होना पड़ता है। इस ग़ैर-क़ानूनी तरीक़े का भी संक्षेप से दिग्दर्शन कराना असङ्गत न होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून भी आख़िर न्याय और औचित्य की ही नींव पर अवलम्बित हैं। जब ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, कि न्याय तथा औचित्य की समकक्षता में अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून नहीं ठहर सकते हैं—जब वे उपस्थित समस्या को हल करने में पङ्गु हो जाते हैं, तब न्याय और औचित्य के महान नाम पर एक स्वतन्त्र राष्ट्र को दूसरे स्वतन्त्र राष्ट्र के अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए लाचार होना पड़ता है। और विद्रोही देश की स्वतन्त्रता को स्वीकृत कर, अधिकारी राष्ट्र के विरुद्ध, उसकी सहायता करने की ज़रूरत पड़ जाती है। ऐसा करते समय वह स्वतन्त्र राष्ट्र अच्छी तरह जानता है कि अधिकारी राष्ट्र के साथ उसका विद्रोह होगा और अस्त्र-शस्त्र से काम लेने तक की भी नौबत आ सकती है। इस तरह के ग़ैर-क़ानूनी हस्तक्षेप के उदाहरण इतिहास में मौजूद हैं। सन्, १७७८ ईस्वी में फ़्रान्स ने ग्रेट-ब्रिटेन के विरुद्ध अमेरिका के विद्रोही अङ्गरेज़ी उपनिवेशों की—जो अब अमेरिका के संयुक्त-राज्य के नाम से प्रसिद्ध हैं—सहायता की। फ़्रान्स ने इन उपनिवेशों के साथ सन्धि की और उनकी स्वतन्त्रता को भी स्वीकृत कर लिया। अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के लागू नहीं होने के कारण यह हस्तक्षेप बिलकुल ग़ैर-क़ानूनी था। परन्तु न्याय और मर्यादा के नाम पर फ़्रांस ने इस हस्तक्षेप को उचित और आवश्यक बतलाया है।

ठीक ऐसी ही घटना सन्, १८९८ ईस्वी में हुई, जब अमेरिका के संयुक्त-राज्यों ने स्पेन के विरुद्ध, उसके अमेरिका-स्थित क्युबा के उपनिवेशों की स्वतन्त्रता स्वीकृत की, कर और लड़ाई के नाम पर, स्पेन को अपनी सेना हटाने के लिए विवश किया। अमेरिका के संयुक्त-राज्य का यह हस्तक्षेप अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून की दृष्टि से ग़ैर-क़ानूनी हो जाता है, परन्तु अमेरिका ने भी, न्याय और मनुष्यता के नाम पर इसे जायज़ बतलाया है।

क्युबा की स्वतन्त्रता के लिए हस्तक्षेप करने के कारणों को बतलाते हुए, अमेरिका के संयुक्त-राज्य के सभापति मेक-किनली ने राष्ट्रीय सभा के पास जो सन्देश भेजा था, वह अत्यन्त सारगर्भित और महत्वपूर्ण है। हम मूर के डाइजेस्ट (Moor's Digest of International Law Vol. VI, 219-220) से उसे उद्धृत कर इस तरह के ग़ैर-क़ानूनी हस्तक्षेप का स्पष्टीकरण करना आवश्यक समझते हैं:—

"क्युबा की लड़ाई को बन्द करने के लिए अमेरिका के संयुक्त-राज्यों को जो बलात हस्तक्षेप करना पड़ा है, वह मनुष्यता के व्यापक आदेश के अनुकूल ही है। संयुक्त-राज्यों का यह काम सर्वथा न्याय-सङ्गत है। इस हस्तक्षेप के कारण संक्षेपतः इस प्रकार हैं:—

"पहला कारण यह है कि वहाँ (क्युबा में) इस समय जो राक्षसी अत्याचार हो रहे हैं; जैसी ख़ून-ख़राबी हो रही है, जिस प्रकार लोग भूखों मर रहे हैं और वहाँ की स्थिति जैसी भयानक हो चली है—उसको रोकना लड़ते हुए दलों के लिए या तो असम्भव-सा हो गया है, अथवा वे ऐसा करना नहीं चाहते हैं। इस हालत में मनुष्यता के नाम पर इसे रोकने के लिए संयुक्त-राज्यों का हस्तक्षेप करना आवश्यक है।

"दूसरी बात यह है कि क्युबा में रहने वाले जो हमारे नागरिक हैं, उनके जान-माल की रक्षा करना और हर्जाना देना हमारा कर्त्तव्य है। वहाँ की सरकार ऐसा करने में असमर्थ हो रही है।

"तीसरी बात यह है कि हमारे देश के वाणिज्य-व्यापार और व्यवसाय को जो बड़ा धक्का पहुँचा है, और जिस प्रकार माल-असबाब का संहार और देश को उजाड़ दिया गया है, उन सबों के ख़्याल से हमारा हस्तक्षेप करना न्यायानुसार है।

"चौथी बात जो सब से महत्वपूर्ण है, वह यह है कि क्युबा की वर्त्तमान कार्रवाइयों से हम लोगों की शान्ति में भारी धक्का पहुँचा है, और हमारी सरकार को भी बहुत ख़र्च उठाना पड़ता है। क्युबा जैसे समीपस्थ द्वीप में वर्षों की लगातार लड़ाइयों के कारण—जिसके साथ हमारे देशवासियों का व्यापारिक एवं औद्योगिक सम्बन्ध है—हमारे नागरिकों को जान व स्वाधीनता का सतत ख़ौफ़ बना रहता है। उनका धन नष्ट किया गया है और उनकी बरबादी हुई है। इन सब कारणों के अलावा और भी कारण हैं, जिनका उल्लेख करना हम ज़रूरी नहीं समझते। इन सब कारणों से हमारे सम्बन्ध में खींचा-तानी हो रही है और हमारी शान्ति भी निरन्तर ख़तरे में पड़ी हुई है, जिनसे विवश हो हमें उस राष्ट्र के साथ भी अर्ध-लड़ाई की हालत में रहना पड़ता है, जिसके साथ हमारी बिलकुल सुलह है।"

अमेरिका के संयुक्त-राज्यों के सभापति ने स्पेन के विरुद्ध क्युबा की सहायता करते समय जिन उपरोक्त कारणों का आश्रय लिया है, वे अवश्य ही न्याय और मर्यादा के अनुकूल हैं। स्वार्थ-संरक्षण की नीति पर अवलम्बित अन्तर्राष्ट्रीय क़ानूनों की दृष्टि में वे भले ही ग़ैर-क़ानूनी हो सकते हैं।

अब सवाल यह है कि वर्तमान परिस्थिति में भारतवर्ष स्वतन्त्र राष्ट्रों की सहानुभूति किस प्रकार आकर्षित करे। महात्मा गाँधी ने जिस सत्याग्रह-शस्त्र का प्रयोग किया है, उसके द्वारा क़ानूनी अथवा ग़ैर-क़ानूनी सब तरह से स्वतन्त्र राष्ट्रों को हस्तक्षेप करना ही पड़ेगा। सरकार के अत्याचार और अन्याय उत्तरोत्तर बढ़ते जाते हैं। सत्याग्रहियों के दमन के लिए सरकार सभी राक्षसी और असभ्य उपायों से काम लेने पर कटिबद्ध है। देश की दरिद्रता, अज्ञानता संसार के सामने है। बीमारियों ने भारत ही में जो अपना अड्डा जमाया है, वह किसी राष्ट्र से छिपा नहीं। मनुष्यता और न्याय के नाम पर किसी न किसी देश को शीघ्र ही हमारे साथ सहानुभूति दिखलानी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त, संसार के प्रायः सभी देशों का यहाँ ख़ासा व्यापार-व्यवहार है—उनके असंख्य नागरिक हैं। यदि अनियत काल तक संग्राम चलता रहा, और कोई सुलहनामा नहीं हुआ, तब अपने हित की रक्षा के लिए भी स्वतन्त्र राष्ट्रों को हमारे मामले में हस्तक्षेप करना होगा। अगर इतने पर भी स्वतन्त्र राष्ट्र हमारी स्वतन्त्रता को स्वीकृत नहीं करेंगे, तो निरन्तर के आन्दोलन से हमारे राष्ट्रीय भावों में वह शक्ति उत्पन्न होगी, जिसके बल हम अपना अलग समानान्तर-शासन (Parallel Government) क़ायम कर लेंगे, और वर्तमान नौकरशाही को निकम्मा बना डालेंगे, इस स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के आधार पर ही संसार के स्वतन्त्र राष्ट्र अपने सङ्घ में हमारे देश का स्वागत करेंगे। अतः हमें उत्तरोत्तर-तीव्र आन्दोलन करते रहने की ज़रूरत है, जिससे भारत का सारा विदेशी व्यापार-व्यवसाय बिलकुल स्थगित हो जाय, और अहिंसात्मक जनता पर गोलियाँ चला-चला कर यह विदेशी नौकरशाही असभ्यता और अमानुषता की हद कर दे, जिसमें दूसरे स्वतन्त्र राष्ट्रों को हमारे मामले में हस्तक्षेप करने का अच्छा मौक़ा मिल सके।

* * *

साम्यवाद

[श्री० यदुनन्दनप्रसाद जी श्रीवास्तव]

(प्रत्युत्तर)

विगत २३ अक्टूबर के 'भविष्य' में मैंने 'साम्यवाद' पर एक छोटा सा लेख लिखा था। २० नवम्बर के 'भविष्य' में "श्री० सुधीर" महोदय ने उसका प्रतिवाद किया है। वाद-प्रतिवाद तो एक बड़ी ही अच्छी चीज़ है, इससे किसी को भी एतराज़ न होना चाहिए, किन्तु ऐसे वाद-प्रतिवाद में कटुता ले आना ठीक नहीं; साथ ही किसी का उत्तर देते समय उसकी बात को समझ कर ही जवाब देना चाहिए। केवल शीर्षक देख कर ही भड़क उठना और उड़ चलना ठीक नहीं। श्री० सुधीर महोदय के प्रति मेरी यही शिकायत है, जिसे मैं नीचे निवेदन करता हूँ।

श्री० सुधीर महोदय के लेख में अहम्मन्यता का भाव छलकता हुआ नज़र आता है। अपने लेख के दूसरे पैराग्राफ़ में वे लिखते हैं—"मैं मार्क्स और लेनिन की तरह...आचार्य तो नहीं, लेकिन......।" इस 'तो' और 'लेकिन' से तो यही ध्वनि निकलती है कि सुधीर महोदय अपने को इतना बड़ा तो नहीं, लेकिन छोटा-मोटा आचार्य अवश्य समझते हैं। अगर उनकी समझ यहाँ आकर ही रुक जाती तो मुझे इसमें कोई आपत्ति न थी, किन्तु अपने को 'कुछ' समझ लेने के बाद उनकी समझ ने मुझ पर भी कृपा की है। वे लिखते हैं—"लेखक महाशय के राजनैतिक विचार तो उनके लेख से ही झलकते हैं। आपने राजनैतिक दृष्टि से इसकी आलोचना भी नहीं की है।" इससे यही ध्वनि निकलती है कि लेखक (मैं) के पास राजनैतिक विचार तो हैं ही नहीं; बेचारा लिखे तो क्या लिखे ?

ख़ैर साहब, मुझे यों विचार-शून्य और नासमझ क़रार देने के बाद सुधीर महोदय की समझ और आगे बढ़ी और उसने मेरी नियत पर भी आक्रमण किया। वे लिखते हैं—"ऐसे समाज का समर्थन करना और साथ-साथ मानव-समाज की उन्नति की बातें करना ढोंग नहीं तो और क्या है ?" श्रीमान ने मुझे बेवक़ूफ़ क़रार देने के बाद ढोंगी भी बना दिया। मैं श्रीमान से अत्यन्त नम्रतापूर्वक निवेदन कर देना चाहता हूँ कि सच्चाई का स्वत्वाधिकार श्रीमान तथा उनकी तरह के विचार वालों ने ही नहीं ले रक्खा है। बहुत मुमकिन है कि साम्यवाद का विरोध कर मैंने ग़लती की हो, लेकिन ग़लती करना एक और बात है तथा बदनियत होना बिलकुल दूसरी बात है। ग़लती करने वाला भी सच्चा हो सकता है। फिर केवल साम्यवाद के ही सिद्धान्त ठीक, बाक़ी सब प्रचलित सिद्धान्त ग़लत, ऐसा क्या सिर्फ़ इसीलिए मान लिया जाय कि श्रीमान सुधीर महोदय साम्यवाद का समर्थन कर रहे हैं ? वर्तमान साम्यवाद की पैदाइश अभी हाल में हुई है; अन्य सिद्धान्त सदियों की ठोकर खाकर अनेकानेक विद्वानों द्वारा समर्थित हैं, फिर हम यह किस तरह निर्णय कर लें कि केवल श्रीमान की ही बात अकाट्य है। अस्तु।

किसी लेख की बातों को काटने का तरीक़ा तो यही है कि उसका, उसके तर्कों का खण्डन किया जाय। केवल यह कह देने से कि वे ग़लत हैं, काम नहीं चलता। किन्तु श्रीमान मुझे तो बुद्धिहीन समझते ही हैं, 'भविष्य' के पाठक-पाठिकाओं के लिए भी शायद उनकी यही राय है। इसीलिए वे तर्क नहीं करते, केवल फ़तवा देकर यह विश्वास करते हैं कि लोग इस फ़तवे को अवश्य स्वीकार कर लेंगे। आचार्य की बात का महत्व ही ऐसा होता है !

मेरे लेख के केवल आठ शब्द उद्धृत कर श्रीमान ने अपनी चपल कल्पना को बेलगाम छोड़ दिया है। श्रीमान मुझ पर इतनी तो कृपा करते कि पूरा लेख नहीं तो पूरा वाक्य तो पढ़ लेते। मेरे लेख से उन्होंने उद्धृत किया है—"अधिकार की उत्पत्ति सामर्थ्य से होती है........।" बस ! श्रीमान तुरन्त प्रश्न करते हैं—"सामर्थ्य का अर्थ यहाँ क्या है ?" श्रीमान अगर इस वाक्य को पूरा पढ़ लेने का कष्ट उठाते तो उन्हें यह प्रश्न कर 'भविष्य' के क़रीब एक कॉलम को व्यर्थ रँगने का परिश्रम न करना पड़ता। मेरे लेख को ज़रा फिर से पढ़ कर देखिए। मेरा वाक्य है—"अधिकार की उत्पत्ति तो सामर्थ्य से होती है और सामर्थ्य आत्मा का गुण है।" यदि आप मेरे इस वाक्य के अन्तिम हिस्से पर भी सरसरी निगाह दौड़ा लेते तो फिर आपने सामर्थ्य की व्याख्या में जो परिश्रम किया है, उससे बच जाते। सामर्थ्य शब्द से "जिसकी लाठी उसकी भैंस" याने शारीरिक बल अथवा उत्तरदायित्व आदि ध्वनि निकालने का जो साहित्यिक प्रयास आपने किया है, वह न करना पड़ता, और मैं भी उत्तर लिखने के इस प्रयत्न से बच जाता। आपके ज़रा-सा कष्ट स्वीकार कर लेने से यह सब दिक़्क़तें दूर हो जातीं और आप ख़ुद ही समझ जाते कि वहाँ पर मेरामतलब आत्म-शक्ति से है, न कि पशुबल से।

श्रीमान ने मेरे लेख से केवल दो ही उद्धरण दिए हैं और बजाय मेरे तर्कों और दलीलों का खण्डन करने के कल्पना से ही अधिक काम लिया है। कल्पना से गल्प अथवा जासूसी उपन्यास लिखने में अच्छी मदद मिलती है, किन्तु (श्रीमान के ही शब्दों में) "इस गम्भीर तथा गहन विषय" पर कल्पना से काम नहीं लिया जा सकता। श्रीमान ने ऐसे अवसर पर कल्पना से काम लेकर मेरी समझ में ग़लती की है। साथ ही ऐसा करते समय उन्होंने यह भी विचार नहीं किया कि उनकी कल्पना मुझ पर कैसा अत्याचार कर रही है।

ऊपर जिस उद्धरण का ज़िक्र हो चुका है, उसमें तो ग़नीमत समझिए। श्रीमान ने केवल यही ग़लती की कि आगे वाक्य किस तरह ख़तम होता है, यह न देखा ; केवल आधा वाक्य पढ़ कर दिमाग़ गरम हो जाने के कारण मुझ पर उबल पड़े। लेकिन मेरे लेख का दूसरा उद्धरण जो श्रीमान ने दिया है, समझ में नहीं आता किसका है ? मेरा है अथवा काशी से निकलने वाले "ब्राह्मण-महासम्मेलन पण्डित पत्र" के किसी लेख का उद्धरण है। श्रीमान से ग़लती तो यहाँ पर ज़रूर हो गई, किन्तु कैसे हुई, यह भी एक विचारणीय बात है। मैंने इस बात पर ख़ासा परिश्रम किया, कई दिन तक

विचार करता रहा, किन्तु बात समझ में नहीं आती। श्रीमान का मेरा समझ कर दिया हुआ उद्धरण यों है—"अवस्था और अधिकार का सम्बन्ध पूर्वजन्म से है।" मैंने अपने लेख को कई बार पढ़ा, मगर यह अंश उसमें मुझे नहीं मिला। श्रीमान ऐसी भद्दी ग़लती करेंगे, इस पर एकाएक विश्वास नहीं होता !

लेकिन बहुत सोचने के बाद श्रीमान की इस ग़लती का रहस्य शायद समझ में आ रहा है। इस बार दोष श्रीमान की आँखों का नहीं, श्रीमान की कल्पना का है। श्रीमान की कल्पना चञ्चल-चपल तो है ही ; मेरे लेख को पढ़ते ही उसने यह स्थिर कर लिया कि मैं कोई त्रिपुण्ड्र एवं शिखाधारी सत्रहवीं सदी का जीव हूँ। बस ! ग़ज़ब हो गया ! श्रीमान प्रारम्भ में ही क्रोधित होकर मेरे विषय में कहते हैं—"आप धर्म और लोक-परलोक के बड़े पक्षपाती हैं !......आपने धर्म के और विशेषतः हिन्दू-धर्म के चश्मे से साम्यवाद की ओर नज़र डाली है।" श्रीमान की रुष्टता का असली रहस्य यही है। कोई व्यक्ति धर्म की दृष्टि से साम्यवाद पर विचार करे ! यह असभ्य अपराध नहीं तो और क्या है ? इसीलिए साम्यवाद के आचार्य की कल्पना को वायु-विकार हो गया और उन्होंने मेरी ख़बर ली। मगर श्रीमान ! धर्म शब्द के उच्चारण-मात्र से आप क्यों इस तरह पगहा तुड़ा रहे हैं। और जहाँ तक मुझे याद है, धर्म शब्द तो मेरे लेख में कहीं आया भी नहीं है। और अगर आपको धर्म से ऐसी चिढ़ है तो उसका उचित खण्डन करिए। आपके नाराज़ होने से तो लोगों पर असर पड़ेगा नहीं और न इस डर से लोग धर्म को तिलाञ्जलि ही देंगे। लेकिन मैं इस विषय पर लिखते हुए डर भी रहा हूँ। कहीं आप फिर न भड़क उठें। और अगर भड़क ही उठे तो फिर खण्डन के पहिले ज़रा विचार कीजिए, धर्म का अर्थ केवल सत्यनारायन की कथा नहीं है। इस पर अधिक यहाँ नहीं लिखा जा सकता। दिसम्बर सन् १९२९ के 'चाँद' में अपने "शारदा बिल" शीर्षक लेख में मैंने इस शब्द की व्याख्या की है। उसे पढ़ लेने से आपकी समझ में मेरा मतलब आ जावेगा।

हाँ, अपने लेख में मैंने पुनर्जन्म के सिद्धान्त का आश्रय ज़रूर लिया है, किन्तु श्रीमान, इसे आप धार्मिक क्यों मानते हैं, इसे वैज्ञानिक दृष्टि से क्यों नहीं देखते ? अब पश्चिम के भी अनेक वैज्ञानिक विद्वान पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानने लग गए हैं। विज्ञान का मत है कि शक्ति (Matter) नष्ट नहीं होती। इसी बात को हिन्दुस्तान अपनी भाषा में कहते हैं कि आत्मा अविनाशी है। यही तो पुनर्जन्म का सीधा-सादा सिद्धान्त है। अगर आपको यह सिद्धान्त अमान्य है, तो इसका युक्ति से खण्डन करिए। वह तो आप करते नहीं, आप तो डाट-फटकार शुरू कर देते हैं। किन्तु आपके भय से तो कोई भी—मैं या 'भविष्य' के पाठक-पाठिकाएँ—आपकी बात स्वीकार कर न लेगा।

साम्यवाद को श्रेणी-युद्ध कह कर आर्थिक दृष्टि से जो चर्चा आपने अपने लेख में की है, उसमें कोई महत्व-पूर्ण अथवा नई बात तो आपने लिखी नहीं है। हाँ, अङ्गरेज़ी के दो-चार शब्द ज़रूर आपने रख दिए हैं। मैंने तो अपने लेख के प्रारम्भ में इसका ज़िक्र कर ही दिया था और संसार में कुछ इने-गिने लोगों के हाथ में सारा धन एकत्रित हो जाने से जो कष्टमय परिस्थिति इस समय उपस्थित हो गई है, इसे मैं अस्वीकार नहीं करता। किन्तु आजकल मानव समाज को जो रोग हो गया है, उसे मैं साधारण (Normal) अवस्था नहीं समझता।

अब ज़रा विचारिए, साधारण व्यक्ति को रोटी, दाल, चावल, आलू आदि भोजन हितकर है, किन्तु यही भोजन एक रोगी के लिए प्राणघातक सिद्ध होगा। उस समय डॉक्टर उसके भोजन की दूसरी व्यवस्था करता है। उसे बारली, वाटर, ब्राण्डी आदि दिया जाता है। किन्तु यदि केवल इसी एक उदाहरण के बल पर आप यह व्यवस्था कर दें कि रोटी-चावल आदि भोजन अहितकर है और प्रत्येक व्यक्ति को केवल बारली, वाटर और शराब का सेवन करना होगा, तो बड़ा अनर्थ उठ खड़ा होगा। आजकल संसार के ऊपर जो यह आर्थिक रोग आ गया है, उसकी आप अवश्य दवा कीजिए, किन्तु यह भी याद रखिए कि यह कोई स्थायी बात नहीं है। अस्वस्थ मज़दूर को स्वस्थ मज़दूर की अपेक्षा परिस्थिति-विशेष में आप अधिक मज़दूरी दे सकते हैं, किन्तु यदि इसे ही आप साधारण नियम बना कर सदैव के लिए ऐसी व्यवस्था कर देंगे और प्रत्येक अस्वस्थ और निर्बल व्यक्ति को प्रत्येक स्वस्थ तथा समर्थ व्यक्ति की अपेक्षा, यदि अधिक मज़दूरी मिलने लगेगी तो समाज स्थिर न रह सकेगा। समाज-सङ्गठन में स्वस्थ साधारण अवस्था की व्यवस्था रहती है, परिस्थिति विशेष के उपस्थित होने पर मनुष्य बुद्धि से काम लेता है। ख़ास बातों के लिए कोई नियम तैयार नहीं किया जा सकता। इसलिए परिस्थिति-विशेष की व्यवस्था करते समय एकाएक अपने समाज-सङ्गठन के मूल सिद्धान्तों को बदल न देना चाहिए।

साम्यवाद पर मेरा लेख विस्तृत अथवा पूर्ण न था। मैंने तो साम्यवाद के दो मूल सिद्धान्त—समता और शारीरिक परिश्रम—के महत्व की चर्चा की थी। इसमें मैंने जो तर्क दिए थे वे अकाट्य हैं, ऐसा मेरा दावा नहीं है। किन्तु आपने तो उन्हें खण्डन करने का प्रयत्न भी नहीं किया। हाँ, यदि आप मेरे लेख को ठीक से पढ़ कर मेरे तर्कों का खण्डन करें तो अपनी शक्ति और विद्या के अनुसार उनका उत्तर देने की मैं अवश्य चेष्टा करूँगा। यहाँ पर उन्हें दोहराना व्यर्थ है। मेरे लेख के "ब्राह्मणत्व" और "शूद्रत्व" शब्दों का भी आपने क्या अर्थ लिया है, यह मेरी समझ में नहीं आया। अपने लेख के तीसरे कॉलम के प्रारम्भ में आप लिखते हैं—"यह कहना कि साम्यवाद शूद्रत्व को प्रथम स्थान देता है, निरी भूल है।" चौथे कॉलम के दूसरे पैरे में आप लिखते हैं—"साम्यवाद शूद्रत्व और ब्राह्मणत्व को छोटा-बड़ा नहीं समझता, यह लिखना भारी भूल है।" आपके यह दोनों कथन परस्पर विरोधी हैं। साम्यवाद इन दो में से एक ही को मान सकता है। आपके साम्यवाद के ये दो परस्पर विरोधी सिद्धान्त मेरी समझ में बिलकुल न आए।

इसी के आगे आप लिखते हैं—"साम्यवाद की आँख में दोनों प्यारे हैं।" दोनों प्यारे हैं, इससे मुझे झगड़ा नहीं। मेरा कहना तो केवल यही है कि समाज-रचना में बुद्धि को (ब्राह्मणत्व को)—ब्राह्मण मात्र को, द्रोणाचार्य को अथवा ब्राह्मणत्व से पतित किसी नामधारी ब्राह्मण को नहीं—ऊँचा स्थान देना होगा। कारण मैं अपने पहले लेख में दे चुका हूँ और आज भी मेरा यही कहना है कि पशुबल से बुद्धिबल श्रेष्ठ है, इसलिए उसे अधिकार भी अधिक देना होगा।

ब्राह्मण को अधिक धन देने की चर्चा तो मैंने अपने लेख में कहीं नहीं की है। और हमारी समाज व्यवस्था में ब्राह्मण को तो धन रखने का अधिकार ही नहीं है। हमारी व्यवस्था के अनुसार तो धन शासक, सिपाही और व्यापारी के पास ही होना चाहिए। लेकिन यह व्यवस्था बिना कारण अथवा स्वार्थवश न दी गई होगी। व्यवस्थापक ब्राह्मण थे ; यदि उनके मन में स्वार्थ होता तो वे अपने लिए धन की व्यवस्था अवश्य कर लेते।

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

मैं भी कैसा मूढ़ हूँ ? तेरी आराधना की सामग्री से घर को इतना भर लिया कि तू जब आया तो तुझे बैठने को स्थान ही न मिला।

घड़ी से दीक्षा लो—जीवन के घड़ियों की।

वह आए तो थे विजय करने, पर उल्टे विजित होकर यहीं इसी हृदय में बन्दी हो गए।

समय बीत जाता है ; बात रह जाती है।

बुरे कपड़े सुन्दरता नहीं छिपा सकते ; चाँद काली बदलियों में भी चमकता है।

किसी को निगल जाने वाला स्वयं भी किसी का स्वादिष्ट भोजन बन जाता है।

मनुष्य कुछ सोचता है ; ईश्वर कुछ कर डालता है।

आगामी अंक में

मिश्र के स्वाधीनता-संग्राम का इतिहास पढ़िए और देखिए कि स्वतन्त्रता के इस आन्दोलन का अन्य एशियाई देशों पर कैसा कल्याणकारी नैतिक प्रभाव पड़ा है। मनन करने की चीज़ होगी।

पतन में उत्थान का रहस्य निहित है।
गेंद का उछलना पृथ्वी पर पटके जाने के कारण है।

जिस समय सभी बोलने का प्रयत्न करते हैं, उस समय कोई भी सुन नहीं पाता।

भिखारी ने स्वप्न देखा कि 'मैं राजा हूँ, मेरे द्वार पर भिखारियों की भीड़ लगी हुई है।' वह भौं चढ़ा कर अपने सेवकों से बोला—'इन्हें दूर करो।'
इतने में उसकी आँख खुल गई।

रहस्य में रहस्य निहित है।
फूल की कोख में बीज है ; बीज की कोख में फूल।

बरगद की जड़ें मोह की भाँति पृथ्वी से चिपटी हुई हैं।

बुढ़िया का शृङ्गार उसे छोड़ कर किसी दूसरे को धोखे में नहीं डाल सकता।

सीढ़ी का कोई भी पग अनावश्यक नहीं है।

मेरा अन्तिम शब्द यह है—मैं प्रेम पर विश्वास करता हूँ।

* * *

अण्डाकार-मेज़-परिषद में सम्मिलित होने वाले 'प्रतिनिधि'

(पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि न जाने क्यों, गोलमेज़ के स्थान पर सभा-भवन में अण्डाकार मेज़ रक्खा गया है)

महाराजा काश्मीर
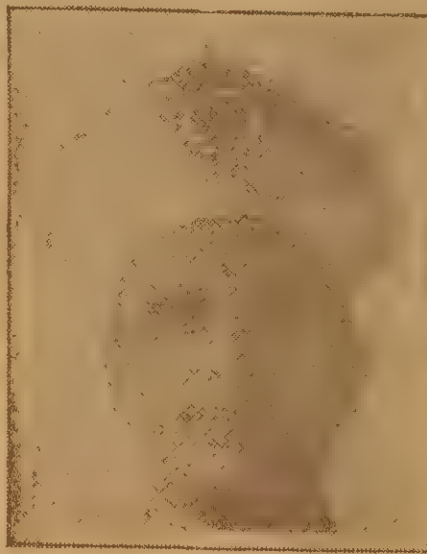
महाराजा अलवर

महाराजा पटियाला

सैयद सर सुलतान अहमद
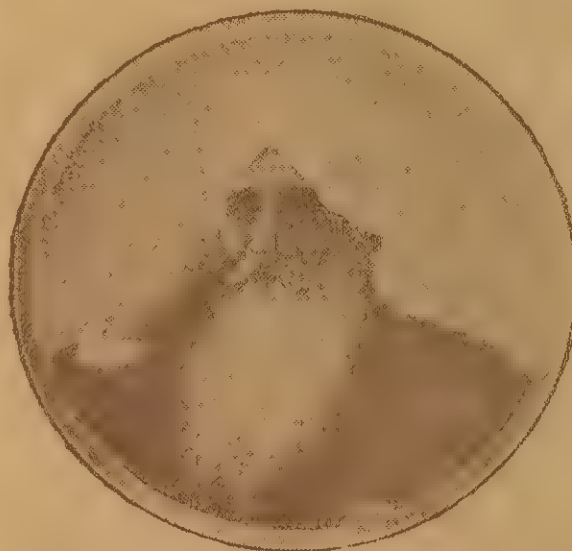
सर प्रभाशङ्कर पट्टणी

महाराजा दरभङ्गा

साँगली के चीफ़

महाराजा नवानगर

महाराज राणा धौलपुर

अण्डाकार-मेज़-परिषद में सम्मिलित होने वाले "प्रतिनिधि"

श्री० सी० वाई० चिन्तामणि

नवाब सर मुहम्मद अकबर हैदरी

सर तेजबहादुर सप्रू

ऑन० सर पी० सेठना

डॉ० शफ़ात अहमद ख़ाँ

महाराजा रीवाँ

अण्डाकार-मेज़-परिषद में सम्मिलित होने वाले 'प्रतिनिधि'

महाराजा बीकानेर

महाराजा बड़ौदा

नवाब भोपाल

रेवरण्ड जे० सी० चैटर्जी, एम० ए०, एम० एल० ए० (दिल्ली)

सर मिर्ज़ा मुहम्मद इस्माइल

श्रीमती सुब्बरायन

रावबहादुर रामचन्द्र राव

सर पी० सी० मित्र

अण्डाकार-मेज़-परिषद में सम्मिलित होने वाले 'प्रतिनिधि'

सर सी० पी० रामास्वामी अय्यर

डॉ० वी० एस० मुञ्जे

सर ए० पी० पैट्रो

श्री० ए० आर० मुदालियर

सर सुलतान अहमद ख़ाँ

पार्लाकिमेडी के राजा साहब

डॉ० ऑम्बेडकर

श्री० एम० आर० जयकर

रावबहादुर आर० श्रीनिवास

केसर की क्यारी

दिल मेरे पहलू में, मेरे दिल में सूरत आपकी,
चौखटे में आइना, आईने में तस्वीर है !!

जिससे काँप उट्ठे कलेजा, इसमें वह तासीर है,
आह तो है तीर, मेरी गुफ़्तगू भी तीर है !
हर घड़ी तेरी नज़र में, एक नई तासीर है,
तेग़[1] जानूँ तेग़ है, यह तीर समझूँ तीर है !
मैं यह सुनता हूँ, इसे रखते हो तुम पेशे-नज़र,
इस नज़र से, मुझसे तो अच्छी मेरी तस्वीर है !
यह निगाहे-लुत्फ़, इन टुकड़ों को शायद जोड़ दे,
दिल मेरा फूटा हुआ, फूटी हुई तक़दीर है !
हुस्ने रोज़[2] अफ़ज़ूँ ने, कितना फ़र्क़ पैदा कर दिया,
देखिए, यह आप हैं, यह आपकी तस्वीर है।
आप तो जाते हैं, कोई इससे दिल बहलाए क्या,
कुछ नहीं तस्वीर में, तस्वीर ही तस्वीर है।
हम जो तड़पाने से रोकें, भी तो किस बुनियाद पर,
आप ही का दिल यह है, और आप ही का तीर है।
क्यों न दिल को हम, कलेजे से लगाएँ बार-बार,
यह तेरी उलफ़त की, जीती-जागती तस्वीर है।
ज़ोफ़[3] हिलने भी न दे, तो क्या चलूँ मैं क्या फिरूँ।
पाँव की एक-एक रग, मेरे लिए ज़ञ्जीर है !
दिल मेरे पहलू में, मेरे दिल में सूरत आपकी,
चौखटे में आइना, आईने में तस्वीर है !!
ख़ैरख़्वाहों ने बहुत कुछ बार भी डाला तो क्या,
"नूह" के क़ब्ज़े में, अब तक "नूह" की जागीर है !

—"नूह" नारवी

तुमको इसकी क्या ख़बर, क्या आह में तासीर है,
बींध डाले आस्माँ को, यह तो ऐसा तीर है !
नज़आ[4] में ख़ामोश, इससे आशिक़े-दिलगीर है,
अपने सीने से लगाए, आपकी तस्वीर है !
आप अपनी ज़ुल्फ़ में, मुझको फँसाते हैं अबस[5]—
रिश्तए उलफ़त, तो ख़ुद मेरे लिए ज़ञ्जीर है !
दिल ही दिल में जो रहे, घुट कर वह है हसरत मेरी,
ले उड़े जो दिल को, पहलू से वह तेरा तीर है !
देखते हैं, किस निगाहे-यास[6] से अहले-चमन,
आशियाँ[7] में, अन्दली बे[8] ज़ार की तस्वीर है !
आशियाँ भी अब मेरी नज़रों से ओझल हो गया,
इससे ज़ाहिर है कि बरगश्ता[9] मेरी तक़दीर है !
आइनाख़ाना-तसौवर[10] से, यह दुनिया बन गई,
जिस तरफ़ मैं देखता हूँ, आपकी तस्वीर है !
रात भर सोने नहीं देता, किसी पहलू हमें,
यह दिले बेताब[11] है अपना, कि उनका तीर है !
हुस्न के जलवों से, ज़ीनत इन घरों की बढ़ गई,
मेरे दिल में तू है, आँखों में तेरी तस्वीर है !
पास रक्खे अहले ग़म, इसको तबर्रुक[12] की तरह,
काम आएगी, यह ख़ाके आशिक़े दिलगीर है !
ऐ "ज़या" कहते हैं, जिसको सब किसी कूचे की ख़ाक,
बस वही तो इस्तेलाहे-इश्क़ में अकसीर है !

—"ज़या" देवान्दपूरी

देख कर ख़ामोश उसको, आशिक़े-दिलगीर है,
सामने नज़रों के, जब से आपकी तस्वीर है !
यह जिधर उट्ठीं, उधर एक हश्र[13] बरपा हो गया,
वह ग़ज़ब है, आपकी आँखों में जो तासीर है !
बिस्तरे-ग़म पर न तड़पे, किसलिए बीमारे-ग़म,
उसके हक़ में, अब तो आहे-सर्द भी एक तीर है !
शौक़ से जिसको बुलाएँ, आप बज़्मे-नाज़[14] में,
उसकी क़िस्मत है बड़ी, उसकी बड़ी तक़दीर है !
काँप उठती है ज़मीं, चक्कर में आ जाता है चर्ख़,[15]
कौन कहता है, हमारी आह बेतासीर है ?
ग़ैर मुमकिन है, कोई शक्ल उसको आ जाए पसन्द,
जिसकी नज़रों में, तुम्हारी मोहनी तस्वीर है !
शमआ[16] रौशन, बात यह रौशन रहे अच्छी तरह,
इन पतिङ्गों से, तो महफ़िल में, तेरी तौक़ीर[17] है !
नामावर[18] से पूछते हैं, वह बिगड़ कर इस तरह,
किसने ख़त लिक्खा है, किसके हाथ की तहरीर है ?
दो घड़ी को दिल बहल जाता है, इससे क़ैद में,
कौन मूनिस[19] है हमारा, नालए ज़ञ्जीर है !
नाम लेते हैं अदब के साथ, क्यों सब अहले-दिल,
हो न हो "शातिर" भी उनका आशिक़े-दिलगीर है !

—"शातिर" इलाहाबादी

जो कहे हालाते ग़म, वह आशिक़े दिलगीर है,
जो बुलाए से न बोले, वह तेरी तस्वीर है !
वक़्ते-आख़िर मैं जो ख़ुश हूँ, उनकी सूरत देख कर,
वह समझते हैं, कि मरने में अभी ताख़ीर[20] है !
ढूँढ़ते हो किस लिए, तरकश में अपने बार-बार,
मेरे दिल, मेरे कलेजे, में तुम्हारा तीर है !
पाँव रखिएगा ज़रा, फ़र्शे-ज़मीं पर देख कर,
ज़र्रे-ज़र्रे में दिले-मरहूम की तस्वीर है !
यह नहीं कहता कि सेहत[21] मुझको हो ही जायगी,
चारागर[22] तदबीर कर ! आगे मेरी तक़दीर है !!
यह अगर निकला तो जानो, दम भी निकला इसके साथ,
दिल की सूरत मेरे पहलू में, किसी का तीर है !
सारा आलम देखने को, इसके खिंच कर आएगा,
जिस पे दुनिया मर रही है, वह तेरी तस्वीर है !
वह रहे दिल में तुम्हारे, मैं रहूँ आँखों से दूर,
एक मेरी तक़दीर है, एक ग़ैर की तक़दीर है !
कुछ कलेजे में चुभे, कुछ मेरे दिल में रह गए,
अब कहाँ बाक़ी, कोई तरकश में उनके तीर है !
शोख़ियों[23] से एक जगह, दम भर कभी रहते नहीं,
खिंचने वाली किस तरह, फिर आपकी तस्वीर है !
जो तुझे भूला हुआ है, वह बहुत है बदनसीब,
याद है जिसकी तेरे दिल में, वह ख़ुश-तक़दीर है !
अपनी गोयाई[24] का दावा था, तुझे "बिस्मिल" मगर,
तू भी उनको देख कर, चुप सूरते-तस्वीर है !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

१—तलवार, २—दिन-दिन बढ़ने वाला, ३—कमज़ोरी, ४—अन्तिम समय, ५—बेकार, ६—निराशा, ७—घोंसला, ८—बुलबुल, ९—फिरी हुई, १०—ध्यान, ११—बेचैन, १२—प्रसाद

१३—प्रलय, १४—सभा, १५—आकाश, १६—चिराग़, १७—इज़्ज़त, १८—क़ासिद, १९—साथी, २०—देरी, २१—स्वास्थ्य, २२—दवा करने वाले, २३—चञ्चलता, २४—वक्तव्य।

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

(गताङ्क से आगे)

क्षण भर बाद —

पञ्जाब के सिंह-द्वार पर,

अमृतसर के अमोघ प्रभाव को विदीर्ण करता हुआ।

गोविन्दसिंह के जाग्रत पहरे का उपहास करता हुआ,

प्रलय-गर्जन उठा।

डायर !

* * *

डायर !!

श्वेत दर्प की अनुपम पाषाण-प्रतिमा अचल आ खड़ी हुई।

अबोध नेत्रों ने देखा,

आतङ्क की देवी जलियाना बाग़ को रो रही है।

कुछ समझ में नहीं आया।

क्षण भर बाद ही ज्वाला का मेह बरसा !!

अतर्क्य भोगवाद की तरह विध्वंस आ उपस्थित हुआ।

मैदान में चरते पशु, बच्चों को बहलाते हुए पिता, बातचीत करते हुए मनुष्य !! सब ढेर हुए !!!

वे पञ्जाबी सिख ?

जिन्होंने सुदूर फ़्रान्स के मैदान में सङ्गीनों की नोक पर अङ्गरेज़ी साम्राज्य की नाक बचाई थी—इस प्रकार अपने ही घर के द्वार पर पागल कुत्ते की तरह मार डाले गए !

फिर —

* * *

फिर !

मानव सभ्यता के शैशव की जो मधुरिमामयी छवि उर्वरा पञ्चनद पर छा रही थी, उसे विदीर्ण करती हुई, सहस्र उल्कापात की तरह वज्र-निनाद करती हुई—शान्ति और आशीर्वचनों के उत्कण्ठित, उद्ग्रीव बाला-वधि निरीह नर-नारियों पर आकाश के व्योमयानों से संहारक अग्नि-वर्षा हुई।

हिंसक और निर्लज्ज सभ्यता ने और भी उत्साहित होकर असहाय अबलाओं की लाज लूट कर, साँस ली।

वे, सहस्र-सहस्र अबलाएँ, बेआबरूई की कीचड़ में सना हुआ अपना आँचल लिए, रक्त के आँसू भर, शून्याकाश में, असमर्थ देवताओं को देख रही थीं। और उनके प्राणों से प्यारे पति, और कलेजे के टूक पुत्र लोहू-लुहान धूल में निर्जीव पड़े थे !!!

मसीह —

* * *

मसीह !

जो समस्त जगत के प्रेम और क्षमा के देवता हैं, सहनशीलता, धैर्य और आत्म-बलिदान के जो उत्कट पथ-प्रदर्शक हैं, जिनके नाम पर लक्ष-लक्ष नर-बलि शान्ति और उत्साह से आहुत की गई हैं, उनकी आत्मा स्वर्ग से देख रही थीं और रो रही थीं। अपनी स्वाभाविक करुणा और हृदय की महत्ता से कह रही थीं—हे महान प्रभु ! इन अभागों को क्षमा कर। हाय ! ये मेरा लोहू पी रहे हैं और मांस खा रहे हैं।

श्वेत दर्प पर उसका कुछ प्रभाव न था !!!

ज्वालामुखी—

(क्रमशः)

* * *

'चाँद' कार्यालय की अनमोल पुस्तकें

लम्बी दाढ़ी

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है
बच्चों को भी !
बड़ी मासूम, बड़ी नेक—
है लम्बी दाढ़ी !!
अच्छी बातें भी बताती है,
हँसाती भी है !
लाख दो लाख में, बस एक—
है लम्बी दाढ़ी !!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ६,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २।); स्थायी ग्राहकों से १।।।=) मात्र !!

चुहल

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ।।।) केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशल-किशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) रु० ; स्थायी ग्राहकों से २।)

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण! पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

इस पुस्तक में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें !

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों !! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं ! छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १।।)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

स्त्रियों का ओज

विधवा-सिंहनी

[लेखक—???]

"तैयार हो जाओ ठाकरों।"

दुर्गादास घोड़े से कूद पड़े। वे पसीने से तर हो रहे थे। और उनका घोड़ा फेन उगल रहा था।

मुकुन्ददास खीची ने आगे बढ़ और तलवार खींच कर कहा—किस लिए दुर्गादास!

"कुमार और महारानी की रक्षा के लिए।"

"तब क्या बादशाह ने अस्वीकार किया? विस्तार से कहो, क्या हुआ?"

"विस्तार से कहने का समय नहीं है। मुग़ल-सेना अभी इस महल को घेरने आ रही है, महारानी और राजकुमार को बचाना होगा। (पुकार कर) ठाकरों, महारानी और शिशु कुमार के लिए कौन प्राण देगा?"

२०० तलवारें झनझना उठीं। बिजली की चमक की भाँति वे लपलपाने लगीं। वज्र-गर्जन की भाँति २०० राजपूत चिल्ला उठे—हम प्राण देंगे, महारानी की जय! महाराज कुमार की जय!

(महारानी का प्रवेश)

"दुर्गादास, क्या जो सोचा था वही हुआ?"

"हाँ, माता!"

"तब जसवन्तसिंह की रानी के लिए कोई भय न करो। उसकी बाहुओं में आत्म-रक्षा के योग्य यथेष्ट बल है। पर जोधपुर-राजवंश के एक मात्र अधिकारी को बचाओ।"

"महारानी हम २०० हैं; प्रत्येक ने प्राण देने की ठान ली है।"

"परन्तु प्राण देने को काफ़ी समय है, कुमार की रक्षा प्रथम होनी चाहिए।"

"माता, अभी सब ठीक हुआ जाता है। मुकुन्ददास, झटपट कालबेलिया (सपेरा) बन जाओ। तुम्हें स्मरण है, एक बार तुमने हास्य में यह स्वाँग महाराज को दिखाया था। आज तुम्हें फिर कन्धे पर साँपों की पिटारी लटकानी होगी। पिटारी में रहेंगे राजकुमार। समझे! एक क्षण भी विलम्ब का अवसर नहीं है।"

"मैं कुछ ही क्षणों में आता हूँ।"

"महारानी!"

"कुँअर को ले आइए।"

"मुकुन्ददास, यही एक मेरी आँखों का तारा है।"

"माता, वह मारवाड़ का एक मात्र धनी है।"

"देखो, कुछ भय तो नहीं?"

"महारानी, आप चिन्ता न करें। लीजिए, वे मुकुन्ददास आ रहे हैं। भाई बीन बजाने में बिलकुल सुध न भूल जाना, नहीं मुँह पर कालिख लग जायगी।"

"दुर्गादास, जल्दी कुमार को लाकर पिटारी में लिटा दो। सेना आ रही है—वह गर्द और शोर सुनते हो!"

"सुनता हूँ, महारानी! एक क्षण भी समय नष्ट न कीजिए, कुमार को लाइए।"

"यह लो दुर्गादास, कुमार तुम्हारे सुपुर्द है।"

"मुकुन्ददास, वह दूर मन्दिर की कलश दीख रही है, कुमार को वहीं पहुँचाना होगा।"

"तदनन्तर?"

"पुजारी महाराज को कुमार सौंप देना।"

"फिर?"

"शेष कार्य स्वयं वे कर लेंगे।"

"ठाकरों, जल्दी कुमार को छिपा दो।"

"यह लो, मुकुन्ददास, सावधान, क्या तुम्हारे पास शस्त्र हैं?"

"यथेष्ट हैं, परन्तु इस बीन के लहरे के सामने उसकी आवश्यकता न पड़ेगी। परन्तु दुर्गादास भाई!......"

"मुकुन्ददास, रोते हो? छीः।"

"अब न मिलेंगे।"

"भाई, हम राजपूत हैं, बढ़-बढ़ कर मरते हैं, और बढ़-बढ़ कर जीते हैं।"

"ठाकरों, सबको मुजरा। माता! ईश्वर आपकी रक्षा करे।"

"मुकुन्ददास, मुझे अभी मरने की फ़ुर्सत नहीं है, मैं तुम्हें मिलूँगी।"

"महारानी, आपकी जय हो।"

"मुकुन्ददास! कोलाहल बढ़ रहा है, तुम इसी तरह झूमते-झामते लहरा बजाते चले जाओ।"

"ठहरो मुकुन्ददास!"

"जो आज्ञा महारानी!"

"सुनो, यदि तुम पकड़े जाओ, तो कुँवर के कलेजे में छुरी भोंक देना—ख़बरदार औरङ्गज़ेब के पास कुँवर को कोई जीते जी न ले जा सके।"

"माता, ईश्वर कुँवर साहेब को चिरजीव रक्खे।"

२

"लो, वह सेना आ गई।"

"बेशुमार फ़ौज है।"

"ख़ुद दिलेर ख़ाँ सेनापति साथ में हैं।"

"दुर्गादास?"

"महारानी!"

"स्त्रियों का क्या होगा?"

"वे गोलियाँ दाग़ने लगे।"

"द्वार तोड़ रहे हैं।"

"दुर्गादास?"

"महारानी!"

"स्त्रियों का प्रबन्ध करो, शत्रु द्वार तोड़ रहे हैं।"

"माता, अब कुछ प्रबन्ध न हो सकेगा, समय नहीं है।"

"तब मैं सबका प्रबन्ध करूँगी, बहिनो और बेटियो!"

"महारानी!"

"तुम तैयार हो जाओ, तुम्हें जौहर-व्रत करना पड़ेगा।"

"हम तैयार हैं!"

"बहिनो, यह कड़ी व्यवस्था करनी ही पड़ी।"

"महारानी, यह हमारे लिए नई बात नहीं, हम क्षत्राणियाँ हैं।"

"सब उस कमरे में चली जाओ, उसमें बारूद भरी है—उसमें तुम लोगों के खड़ी रहने भर की जगह है, उसके बाद........!"

"महारानी हम स्वयं आग लगा लेंगी; महारानी की जय हो!"

"मृत्यु हमारी जय है, जाओ बहिनो, मैं तुम्हारे साथ न जा सकूँगी। मैं मुग़ल तख़्त को भस्म करके भस्म होऊँगी। जाओ, मरने को मुझे अभी फ़ुर्सत नहीं है।"

"जय माता! जय मारवाड़ की अधीश्वरी!!"

३

"दुर्गादास!"

"माता!"

"अब विलम्ब क्यों?"

"हम तैयार हैं!"

"हम कुल कितने हैं?"

"२ सौ ३ कुल!"

"बहुत ठीक। ठहरो, बच्ची को कस कर मेरी पीठ पर बाँध दो।"

"जो आज्ञा।"

"तुम अन्त तक दाहिने भाग में रहना।"

"जो आज्ञा"

"हम निकले चले जावेंगे, रुकेंगे नहीं।"

"बहुत अच्छा"

"यदि मैं पकड़ी जाऊँ तो तुम अपना भाला मेरी कोख में पार कर देना।"

"जो आज्ञा"

"मेरी बच्ची जीती न पकड़ी जाय, ध्यान रहे।"

"जो आज्ञा"

"ठाकरों!"

"जय महारानी, जय राजमाता!"

"आज हमारा साखा है"

"माता, हमारी तलवारें आज तृप्त होंगी।"

"लो, द्वार टूट गया।"

"आह, बारूद में भी आग लग गई, कैसा भयानक धड़ाका हुआ, सब समाप्त हुआ।"

"अरे कितना धुँआ, अन्धकार, शोर-गुल, शत्रु आ गए।"

"मारो-मारो"

"हाय-हाय!"

"दुर्गादास!"

"माता!"

"यही समय है"

"बढ़ो"

"चलो माता!"

"सावधान दुर्गादास!"

"मैं आपके दाहिने भाग पर हूँ"

"मारो"
"मारो"
"मारो-मारो"
"ठाकराँ"
"जय माता की, जय रणचण्डी की"
"बढ़े चलो"
"बढ़े चलो"
"मारो"
"काटो"
"पकड़ो"
"हाय-हाय !"
"तोबा"
"या ख़ुदा"

४

"क्या रानी निकल गई ?"
"जहाँपनाह !"
"सिर्फ़ दो सौ आदमियों के साथ ?"
"जी हाँ ख़ुदावन्द ।"
"और पाँच हज़ार शाही फ़ौज के घेरे से ?"
"जी हाँ, बन्दानेवाज़ !"
"और आप ख़ुद वहाँ मौजूद थे ?"
"जी हाँ, जहाँपनाह !"
"लड़ाई हुई ?"
"हुज़ूर, शाही फ़ौज में ५०० आदमी बचे हैं"
"और राजपूतों में"
"शायद पाँच-छः कोस तक पीछा किया गया ।"
"आख़िर वह बच निकली ?"

"हुज़ूर, वह देखने के क़ाबिल जौहर था। वह मर्दानी रानी—बाल खुले, बच्चा पीठ पर बँधा, घोड़े की रास मुँह में थामे, दोनों हाथों से तलवार चलाते, शाही फ़ौज को काई की भाँति फाड़ती चली गई। एक-एक हाथ तुला पड़ता था। एक-एक राजपूत काल बना था।"

"और शाही फ़ौज भेड़-बकरियों का गिरोह था ?"

"जहाँपनाह, भूकम्प से जैसे बालू का ढूह ढह पड़ता है, इस प्रकार शाही फ़ौज उसके जलाल से छिन्न-भिन्न हो गई।"

"जाओ, तुफ़ है तुम्हारी बहादुरी को।"

५

"महाराना, मैं आपके आश्रित होकर आई हूँ। जोधपुर के उत्तराधिकारी की आपको रक्षा करनी होगी।"

"बहिन, मैं प्राण देकर भी कुमार की रक्षा करूँगा।"

"महाराना की जय हो, आप हिन्दूपति हैं। आपकी सगी बहिन की यह दुर्दशा हुई है, और न जाने कितनी राजपूत बच्चियाँ दुर्दशा में पड़ी होंगी। महाराना, यह बादशाहत जड़ से उखाड़नी होगी।"

"बहिन, इसके लिए रक्त का समुद्र भरा जायगा।"

"महाराना, मैं अत्याचार का बदला लूँगी, इसीलिए मैं उस दिन जल कर नहीं मरी। मेरे पास यही सम्पत्ति उस लुटेरे बादशाह के हाथ से बची थी—यह पुत्र और वह पुत्री—पुत्री राह में मर गई। अब मेरी सम्पत्ति यह दूध-पीता बच्चा है।"

"इसके लिए निश्चिन्त रहो, और यहाँ निर्भय कुँवर के साथ रहो।"

"नहीं भाई, मैं रह नहीं सकती, मैं मारवाड़ जाऊँगी।"

"किन्तु वहाँ रहना ख़तरे से ख़ाली नहीं।"

"महाराना, मैं भूकम्प में जन्मी, तूफ़ान में मेरा घर है, प्रलय के बादलों में मेरी सेज है, विपत्ति मेरी सखी है, मैं क्षत्राणी हूँ या हँसी-ठट्ठा। मैं मारवाड़ जाऊँगी, आग सुलगाऊँगी, और मुग़लों के तख़्त को ख़ाक करूँगी। राजकुमार आपके आश्रित हैं। चलो दुर्गादास !"

"जो आज्ञा माता !"

* * *

रूसी राज-क्रान्ति में स्त्रियों का हाथ

[श्री० प्रेमनारायण जी अग्रवाल]

ज़ार के क्रूर, स्वेच्छाचारपूर्ण शासन, अमानुषिक अत्याचार और भोग-विलासमय जीवन ने रूस की जनता में हाहाकार मचा दिया था। सारे का सारा देश ज़ार का नाम सुनते ही काँप उठता, लोगों की पिंडुलियाँ तक काँप जाती थीं। छोटे से छोटे किसान-मज़दूर से लेकर बड़े से बड़े ज़मींदार और पूँजीपतियों तक का शरीर ज़ार का नाम मात्र सुनने ही से सिहर उठता, हृदयों की गति रुकने लगती, मस्तिष्क चक्कर काटने लग जाता। उसका क्रूर फ़ौलादी पञ्जा सारे देश पर बड़ी नृशंसता से शासन कर रहा था। शक्ति और ऐश्वर्य के मद से मदान्ध कुछ थोड़े पूँजीपति और ज़मींदार भी उसके साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चल रहे थे। साथ क्यों न होते, जब कि स्वयं उनको तक उसके विरुद्ध सर उठाने में कल्याण की स्वप्न में भी आशा न थी। कुछ दुष्ट देश-द्रोही ज़ार की कृपा के भिखारी बने हुए थे और अपने देश-भाइयों को उनके स्वदेशानुराग का मज़ा अत्यन्त क्रूर और पाशविक कार्यों द्वारा चखाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहे थे। उनको यह ज्ञात नहीं था कि उनके इस घोर दमन-नीति का परिणाम सर्वथा उल्टा ही होगा। इसके परिणाम-स्वरूप वह आग इस देश में भभकेगी, जिसका दबाना ज़ार और ज़ारशाही की लाडली पुलिस और सशस्त्र पुलिस तक के लिए असम्भव हो जायगा। यह भीषण अग्नि इन्हीं के अत्याचारों की प्रतिध्वनि होगी, जो रूस देश के कोने-कोने से भड़केगी और ज़ारशाही को समूल नष्ट किए बिना कदापि ठण्ढी नहीं पड़ेगी—पूँजीपतियों और ज़मींदारों का भी सारा वैभव नष्ट करके भस्मीभूत कर देगी। अन्त को क्या हुआ? वही, जिसकी आशा वहाँ का क्षुधा-पीड़ित, अत्यन्त जर्जर और शक्तिहीन किसान, मज़दूरों का समुदाय चिरकाल से कर रहा था। यह प्रचण्ड अग्नि-ज्वाला रूस के ज़ार के कट्टर समर्थकों—ज़मींदारों, पूँजीपतियों और बड़े-बड़े अधिकारियों—के राजप्रासादों ही से भभकी और इधर-उधर साइबेरिया आदि के बर्फ़ीले बन्दीगृहों में फैलती हुई, निर्जन ग्रामों की झोपड़ियों में ठिठकती और विश्राम करती हुई, अन्त में प्रबल स्वरूप धारण करके अपने उद्देश्य में सफल हुई। और ज़ार की क्रूर ज़ारशाही को उसके कल-पुरज़ों सहित भस्मीभूत करती हुई प्रजातन्त्र के रूप में परिणत हो गई, जो अनुकूल समय और वातावरण पैदा करके साम्यवाद के रूप में परिवर्तित तथा परिवर्द्धित होकर सारे संसार को शान्ति तथा उन्नति का दिव्य सन्देश सुना रही है।

संसार के अन्य स्वाधीन तथा पराधीन देश भी इसकी प्रबल ज्वालाओं से न बच सके। हालाँकि इनमें से कुछ साम्राज्यवादी तथा साम्राज्यवाद के पोषक देश इस नवीन शासन (साम्यवाद) की लहर को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देख रहे हैं। पूँजीपति और पूँजीवाद के समर्थक ऐसे मनुष्यों तथा देशों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलने का सरतोड़ परिश्रम कर रहे हैं*, फिर भी इस नवीन लहर को रोकने की शक्ति उनमें नहीं है। वे अपने को इसके प्रचण्ड प्रवाह के रोकने में सर्वथा असक्त पा रहे हैं। वास्तव में इसके न रुकने का कारण स्पष्ट है, और वह है किसान-मज़दूरों का अपनाना। साम्राज्यवादी और पूँजीपति इसका विरोध करने में तत्पर हैं और निम्न-श्रेणी का चिर-पीड़ित समुदाय इसको अपनाने में। इसके विरोधियों की संख्या उँगलियों पर ही गिनने योग्य है, जब कि इसके अपनाने वाले सैकड़ों नहीं, हज़ारों नहीं, वरन लाखों-करोड़ों की विशाल संख्या में हैं! इस संसार का अधिक भू-भाग इन्हीं करोड़ों की संख्या से ढका हुआ है।

अमानुषिक अत्याचारों की जब पराकाष्ठा हो जाती है, स्वेच्छाचारपूर्ण शासन से प्रजा व्यथित होने लगती है, क्रूरता के भीषण आघातों से आत्म-सम्मान की भावना जाग्रत होने लगती है, भूख से पीड़ित होकर जब राष्ट्र की होनहार सन्तान दो-दो दानों को तरसने लगती है और दूसरी ओर जब अमानुषिक अत्याचार शासकों के मन-बहलाव की सामग्री होते हैं, स्वेच्छाचारिता उनका चित्त प्रसन्न करती है, अपने क्रूर कुकृत्यों पर जब पश्चात्ताप तथा प्रायश्चित्त नहीं होता, छोटे-छोटे बालकों से लेकर बड़ों-बड़ों की भयङ्कर भूख को देख कर जब चित्त में व्याकुलता और सहृदयता का आविर्भाव नहीं होता और भोग-विलासमय जीवन बिताने में ही स्वर्ग का आनन्द आने लगता है—उस समय इन्हीं पीड़ितों की भीषण चीत्कारपूर्ण आहों से एक क्रान्ति—महाभीषण क्रान्ति का प्रादुर्भाव होता है, जो संसार के इतिहास में कोई नई बात नहीं!

नित्य नए हृदय-वेधक दृश्यों और वर्णनों को देख-सुन कर देश के भावी नागरिकों के सुकुमार और कोमल हृदयों में—जो उस समय तक किन्हीं अज्ञात कारणों से पाषाण न बन सके थे—सहानुभूति और समवेदना का स्रोत उमड़ पड़ा, जिसने रूस-राष्ट्र के इस नारकीय जीवन को सदैव के लिए नष्ट कर दिया। रूस को इस इतिहास-प्रसिद्ध क्रान्ति में और उज्ज्वल भविष्य-निर्माण में अबला स्त्री—जिसने अपने को इस क्रान्ति में सबला साबित कर दिया—का कितना हाथ था, यही अब विचार करना अवशेष है।

क्रान्ति में भाग

रूस को ज़ारशाही के फ़ौलादी पञ्जे से छुड़ाने वाली 'रूसी क्रान्ति की दादी' कैथराइन ने एक स्थान पर किसानों की दयनीय दशा का चित्र खींचते हुए लिखा है—"मेरे चारों ओर बसने वाले निर्धन किसान, सूर्योदय से पहिले ही उठ कर दिन भर खेतों, चरागाहों, बाग़ों, जङ्गलों, अस्तबलों अर्थात् चारों ओर काम करते और बड़ी रात तक आराम न पाते। जब कोई ज़मींदार या उसका कोई सम्बन्धी पास आता, तो हाथ जोड़ कर ज़मीन तक झुक कर प्रणाम करते, किन्तु इस पर भी यदि ज़रा सा काम बिगड़ जाता, तो गाली खाते तथा पीटे जाते और यदि कोई अधिक दोष होता तो

* हाल ही का समाचार है कि एक ऐसे षड्यन्त्र का पता चला है, जो सोवियट सरकार को समूल नष्ट कर देना चाहता है और जिसमें फ़्रान्स के कर्मचारियों का भी भाग है।

मेरठ कॉन्सपिरेसी केस भी इसी का उदाहरण कहा जाता है।

—लेखक

साइबेरिया को निर्वासित कर दिए जाते थे। किसानों के छोटे-छोटे बालक बड़े घरों के सेवकों की सेवा किया करते थे। यदि इनमें कोई मालिकों के पास जाकर बच्चों के भोजन की प्रार्थना करता था, कोई स्त्री अपने बच्चों को देने में आनाकानी करती, तो मार खाती और धक्का देकर बाहर निकाल दी जाती! यह दृश्य बहुधा मैंने अपनी आँखों से देखे हैं। मुझे भली-भाँति याद है, कि मैंने कई बार अपने पिता के चरणों पर गिर कर अपने नौकरों को पिटने से बचाया। बहुधा मैं छिप कर निकट के ग्रामों में जाया करती और किसानों की झोपड़ियों को देखा करती। वहीं वृद्ध घास पर पड़े हुए खाँस रहे हैं, पास ही कूड़े का ढेर लगा हुआ है। बेचारे दिन भर अकेले पड़े-पड़े भूख से कराहा करते, क्योंकि और सब लोग खेतों पर चले जाते थे। छोटे-छोटे बच्चे बीच में खेला करते और सूअरों तथा कुत्तों के जूठे बर्तनों में पानी पिया करते?"

न पूछो रङ्ग इनका, ढङ्ग इनका और है घर में !
पड़े हैं मिश्र जी क्या ख़ूब अब मज़हब के चक्कर में !!

नारी का हृदय कोमलता, दया और सहानुभूति की सजीव प्रतिमा है। रूस के इन हृदय-विदारक दृश्यों को देखने-सुनने का प्रायः अवसर इनको मिल जाता था। कोमल-हृदया रमणियों के हृदय ज़ार के पैशाचिक-कृत्यों से भर आते और सहानुभूति तथा दया का सञ्चार हो जाता, तब वे अपने स्वाभाविक गुणानुसार गम्भीरतापूर्वक विचार करतीं और अन्त में इन सब कृत्यों की जड़ ज़ारशाही को ही पातीं। अतएव उसको समूल नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए कटिबद्ध हो गईं। कैथराइन के कोमल हृदय को भीषण धक्का लगा और वह एक महान क्रान्तिकारिणी बन गईं। रूस का अबला स्त्री-समाज भड़क उठा और फिर उसने क्रान्ति की सफलता में जिस देश-भक्ति, कर्तव्यपरायणता, त्याग और मर्दानगी से भाग लिया, वह केवल रूस के स्त्री-समाज का ही नहीं, वरन संसार के स्त्री-समाज का मुखोज्ज्वल तथा गौरवान्वित कर रही है। स्वदेश-प्रेम में मस्त हो अपने प्राण-प्यारे पुत्रों को छोड़ा, पतियों को छोड़ा और छोड़ा अपने सुख तथा भोग-विलासमय जीवन को! रूस देश की उन जेलों की कठोर, भीषण यातनाएँ सहीं, जिनमें रह कर अधिकांश अभियुक्त न्यायालय में मुक़दमा प्रारम्भ होने के पहले ही यह जीवन-लीला समाप्त कर देते हैं। संसार में रूस ही ऐसा अभागा देश था, जहाँ की जेलों में बन्द क़ैदी युवतियाँ अफ़सरों और सैनिकों की कामेच्छा-पूर्ति का साधन होती थीं! इन्हीं जेलों में राजनैतिक क़ैदियों को दवा देने की ज़ार की ओर से सख़्त मनाही थी; चाहे जैसा हो भीषण रोग क्यों न हो। क्रान्तिकारियों की हीन दशा का वर्णन देश-भक्त रमणी कैथराइन ने इस प्रकार किया है—"क्रान्तिकारियों की हीन दशा का वर्णन करना मानव शक्ति के बाहर है। उन लोगों को ऐसे कष्ट दिए जाते हैं, जो संसार के पापी से पापी और हत्यारे से हत्यारे को दिए जाते हैं। संसार का कोई भी ऐसा कष्ट नहीं, जो इन देश-प्रेमियों को न दिया जाता हो! इन्हीं कष्टों के कारण हज़ारों कोमल हृदय तथा बड़े घरों में आराम से पले हुए युवक तथा युवती अपने प्राण देते थे। अत्याचारों का वर्णन कहाँ तक किया जाय, इन शिक्षित देशभक्तों (रूस के जेलख़ाने पढ़े-लिखे विद्वानों के निवास-स्थान थे। उन्हें विद्वानों का अजायबघर ही कहना चाहिए; क्योंकि वहाँ दार्शनिक, कवि, इतिहासज्ञ, अर्थशास्त्री, गणितज्ञ, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, चित्रकार, डॉक्टर, लेखक और कवि आदि देखने में आते थे। स्कूल और कॉलेज के लड़कों का तो छात्रावास ही बन रहा था) के मृत-शरीर सड़क के किनारे फेंक दिए जाते थे।"

इन्हीं नारकीय जेलों में उच्च कुल की रमणियों ने देश की ख़ातिर, अपने जीवन के उज्ज्वल प्रभात को व्यतीत किया। माताओं ने अपने पुत्र-पुत्रियों को रूसी क्रान्ति में भाग लेने को तैयार तथा उत्साहित किया। पत्नियों ने पतियों को अपना साथ देने को बुला भेजा, बहिनों ने भाइयों को उकसाया और अध्यापिकाओं ने अपनी विद्यार्थिनियों को सहायता देने का उपदेश दिया और सब फिर इस राष्ट्र-यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति लेकर कूद पड़ीं।

सामाजिक जीवन भी रूस का उस समय अत्यन्त विषम था, विशेषतः स्त्री-समाज पर ही इसका नाशकारी प्रभाव पड़ा था। राजनैतिक क्षेत्र में प्रविष्ट होने से पूर्व उनको सामाजिक जीवन से लड़ना पड़ा। इन वीराङ्गनाओं के असीम साहस की कल्पना कीजिए—पहले सामाजिक बन्धन ढीला करना और फिर राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करना। कैसी भीषण स्थिति थी? अनेक वीर रमणियों ने क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने के उद्देश्य से क्रान्तिकारियों से झूठे विवाह-सम्बन्ध केवल इसीलिए किए थे।

विचारपूर्वक देखने से पता लगता है कि वास्तव में स्त्री का जीवन कितना झञ्झटयुक्त है और मनुष्य का कितनी स्वतन्त्रता का। मनुष्य अपने गार्हस्थ्य जीवन में स्वतन्त्र ही होता है और लड़कियाँ अपने बाल्यकाल में भी स्वतन्त्र नहीं रक्खी जातीं। वे उतनी स्वतन्त्रतापूर्वक अपना जीवन कदापि व्यतीत नहीं कर सकतीं जितना कि पुरुष। पुरुषों के लिए सम्भव है कि वे किसी भी कार्य में सरलतापूर्वक भाग ले सकें, परन्तु स्त्रियों के लिए यह अत्यन्त कठिन है—वे किसी भी कार्य में स्वतन्त्रतापूर्वक भाग नहीं ले सकतीं। रूस के स्त्री-समाज का अपने सारे झञ्झटों से छुटकारा पाना और फिर राजक्रान्ति में भाग लेना, जहाँ पर नहीं मालूम कि कब साइबेरिया की बर्फ़ीली जेलों में और कब फाँसी के तख़्ते पर भेज दिए जायँ! स्त्रियों को क्रान्ति के पथ पर आरूढ़ होने में कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा; भगवान ही जानते हैं कि इनको कितनी दृढ़ता का परिचय देना पड़ा होगा! धन्य है स्त्री-समाज, जिसने इन सबके होते हुए भी सफलता—वह सफलता, जो संसार के इतिहास में एकदम नवीन है—प्राप्त की।

कार्य-प्रणाली

क्रान्तिकारी साहित्य के प्रचार से शिक्षित-समुदाय में यह राजक्रान्ति अपनाई ही जा रही थी। प्रचार की आवश्यकता थी ग्रामों में—क्योंकि वे लोग पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे और फिर फ़ुरसत भी नहीं थी। क्रान्तिकारियों ने अपनी इस कमज़ोरी को अनुभव कर लिया था। वास्तव में इनकी सफलता ग्राम-सङ्गठन और ग्रामों में क्रान्ति के बीज वपन करने पर ही अवलम्बित थी। मज़दूरों में भी प्रचार की उतनी ही आवश्यकता थी। अतः अधिक लोगों ने अपना कार्य-क्षेत्र ग्रामों और फ़ैक्टरियों को बनाया, स्त्रियों ने इसमें भरपूर सहायता दी। कुछ ग्रामों में गईं, कुछ फ़ैक्टरियों में और कुछ विदेश-प्रचार के गुरुतर कार्य में लग गईं। संसार के अन्यान्य देशों में प्रचार की बड़ी आवश्यकता होती है, विशेषतः उस समय, जब देश में स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़ रहा हो। गत महासमर में अङ्गरेज़ों की ओर से हज़ारों प्रचारक अमेरिका में प्रचारार्थ भेजे गए थे। वर्तमान समय के भारत के स्वातन्त्र्य-संग्राम में भी इङ्गलैण्ड के लोग अमेरिका में प्रचारार्थ भेजे गए हैं। सर जॉन साइमन तो अभी प्रचार करके वापस ही आए हैं। क्रान्तिकारियों ने प्रसिद्ध रमणी कैथराइन को लन्दन, अमेरिका आदि देशों में भेजा था। इस रमणी-रत्न ने वहाँ जाकर अत्यन्त सफलतापूर्वक प्रचार किया, जिसके परिणाम-स्वरूप उन देशों का ध्यान इस ओर

आकर्षित हुआ और अन्त में सहानुभूति भी मिलने लगी। यही नहीं, कैथराइन को विदेश-यात्रा में बहुत धन भी राजक्रान्ति के सहायतार्थ मिला था!

स्त्रियों का जो भाग ग्रामों और मज़दूरों में काम कर रहा था, उसे घोर कष्टों का सामना करना पड़ा। ज़ारशाही इस उथल-पुथल को शान्त करने में अपनी पूरी शक्ति लगा रही थी। एक कोने से दूसरे कोने तक सी० आई० डी० का एकछत्र राज्य था। उच्च कुल में पली हुई रमणियाँ अपने सुन्दर शरीर को किसान-मज़दूरों में छिपा न सकतीं, यद्यपि वे अपना रहन-सहन उन्हीं की भाँति रखती थीं। कहावत प्रसिद्ध है कि 'हीरा गुदड़ी में कभी नहीं छिपता'—इसीके अनुसार ये भी न छिप सकतीं और पकड़ कर जेलों में निर्दयता से भर दी जातीं। अतएव इनको अपना वेष छिपाने के लिए अपने मुख तथा हाथ-पैरों पर तेज़ाब डालना पड़ा। विचारणीय है कि जिस सुन्दरता को बनाने के लिए स्त्रियाँ तेल, पाउडर, वैज़लीन इत्यादि अनेक वस्तुओं में हज़ारों रुपया बरबाद किया करती हैं, उसी सुन्दरता को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए रूस की स्त्रियाँ तेज़ाब लगाती हैं—कितना हृदय-विदारक दृश्य है? तेज़ाब के लगाने से शरीर का रङ्ग काला पड़ जाता है, अतः किसान-मज़दूरों में छिपने योग्य रङ्ग हो जाता है। एक-दो नहीं, बल्कि हज़ारों स्त्रियों ने अपनी सुन्दरता को इस निर्दय तरीक़े से बरबाद कर दिया! इस तरफ़ से बेफ़िक्र हो वे आनन्द और स्वच्छन्दतापूर्वक ग्रामों में भ्रमण करके किसानों को उनके उद्धार का उपाय समझातीं। उनके साथ खेतों में काम करती जातीं और प्रचार करतीं, रूस के ज़ार के अत्याचारों का दिग्दर्शन करातीं, किताबें पढ़-पढ़ कर सुनाया करतीं।

मज़दूरों में सफलतापूर्वक कार्य करना अत्यन्त कठिन था। उनमें जाग्रति की भी बड़ी आवश्यकता थी। जो क्रान्तिकारिणी फ़ैक्टरियों में रहती थीं, सबको अपने नाम बदलने पड़ते थे। उस समय की फ़ैक्टरियों के मज़दूरों का जीवन जेलों से भी अधिक कष्टमय था। सोलह घण्टे तक कारख़ाने में काम करना और अवशेष समय में खाना-पीना और सोना! कभी उन्हें इस समय में भी काम करना होता, इतना होने पर यदि उनको कहीं दस-पाँच मिनट मिल जाते तो अन्य आनन्द की बातें छोड़ कर देश-प्रेम और राजनीति की बातें किसे सुनातीं। परन्तु इससे हतोत्साह न होकर वे अपना कार्य सफलतापूर्वक चलाती रहीं। स्वयं कार्य करने के बाद शेष समय में खाना-पानी तक छोड़ कर वे मज़दूरों में विप्लव की तैयारी करतीं। लाड़-प्यार से पला हुआ यह कोमल समुदाय इन सारे कष्टों को देश-प्रेम के आगे तुच्छ समझता!

प्रचार-कार्य में ही नहीं, गुप्त समितियों में भी इनका पूरा-पूरा भाग था। वहाँ के न्यायाधीश ने एक क्रान्तिकारिणी के फ़ैसले में लिखा था—"राजनैतिक षड्यन्त्रों की कल्पना हम सहज ही कर सकते हैं। हम क्रान्तिकारियों के भयानक और कठोर उपद्रवों की भी कल्पना अनायास ही कर सकते हैं। उपद्रवों और क्रान्ति में स्त्रियों का भाग लेना भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। किन्तु एक स्त्री क्रान्तिकारियों की अभिनेत्री हो सकती है और ऐसे भयानक हत्याकाण्ड की नायिका हो सकती है—सम्राट के ख़ून का कुल प्रबन्ध अपने कोमल हाथों में ले सकती है, तथा निर्ममता और साहस के साथ ऐसे काम को पूरा कर सकती है—ये बातें बहुत यत्न करने पर भी कल्पना में नहीं आतीं।" परन्तु वास्तव में यह कथन अक्षरशः सत्य है। स्त्रियों का क्रान्तिकारी दलों में विशेष भाग था*, वे अपना काम बड़ी निर्भयता और चतुरता से निभाती थीं। जब इनके क्रान्तिकारी पति जेलों में भर दिए जाते और वे उनसे मिलने जातीं तो गुप्त-समिति सम्बन्धी अनेक आवश्यक कार्यों को कर लातीं थीं। पुलिस राजनैतिक क़ैदियों के साथ जितनी कठोरता और चालाकी करती थी, राजनैतिक बन्दी उनसे सदा एक हाथ आगे रहते थे। भारत में भी यही बात दृष्टिगोचर हो रही है। जब उन्हें अपने पतियों तक से एकान्त में बात नहीं करने दी जाती, तो इन्होंने अपने अभीष्ट-सिद्ध करने के लिए एक दूसरे उपाय की शरण ली—काम तो किसी न किसी प्रकार करना ही होता था। जो गुप्त बातें कहनी-सुननी होतीं, काग़ज़ में लिख ली जातीं और फिर एक गोली बना कर उसके ऊपर सीसे का वर्क़ चढ़ा लिया जाता और मुख में छिपा लेते। जिस समय जेल की चहारदीवारी के अन्दर पति-पत्नी आपस में मिलते, उस समय दोनों एक-दूसरे का आलिङ्गन-चुम्बन इत्यादि करते। ओंठ से ओंठ मिलते ही वह गोली इधर से उधर चली जाती! इस रीति से केवल पत्र-व्यवहार होता हो, सो नहीं, छोटे-छोटे पेन्सिल के टुकड़े या अन्य छोटी-छोटी चीज़ें भी पहुँचा दी जाती थीं। स्त्रियाँ ऐसे सैकड़ों काम सरलता और सफलतापूर्वक सम्पादन करती थीं, जिनमें पुरुष सर्वथा अपने को असमर्थ पाते थे। काम निकालने में ही नहीं, लगभग प्रत्येक बात में पुरुषों से आगे रहतीं और यदि इस सेवा का पुरस्कार मिलता तो उसे भी बड़ी मर्दानगी से स्वीकार करतीं। फाँसी के तख़्ते पर झूलना होता तो भी बहादुरी से झूलतीं। एक वीराङ्गना फाँसी के तख़्ते पर खड़ी, फाँसी की बाट जोह रही थी। उपस्थित अधिकारी ने गले का कॉलर खोलने को कहा। वह उसी क्षण कॉलर खोलने लगी। शीघ्रता के कारण कॉलर बटन में फँस गया तो उसे एक ही झटके में उसने फाड़ कर फेंक दिया। अपने हाथों को बँधवाना स्वीकार नहीं किया। फाँसी लगाने वाले से फाँसी लगाने की विधि सीख कर स्वयं उसने अपने हाथों से रेशम की रस्सी गले में बाँध ली और कूद कर पैरों के नीचे वाले तख़्तों को पाँव से धक्का दिया कि वह दूर जा पड़ा। उस देवी का प्राण-पखेरू उड़ गए! लोग देख कर आश्चर्यान्वित हो गए।

ऐसे ही वीर-कृत्यों से रूस के स्त्री-समाज ने अपने आपको रूस के स्वतन्त्रता के इतिहास में सदा के लिए अमर कर दिया। स्वाधीनता की देवी कैथराइन, जिनका इस क्रान्ति में बहुत अधिक हाथ था, कहा करती थीं:—

"We may die in exile, and our children may die in exile, and our children's children may die in exile, but something will come of it at last."

अर्थात्—मातृभूमि से सैकड़ों और सहस्रों कोस दूर पर अज्ञात स्थानों में भले ही हमारी मृत्यु क्यों न हो, हमारे लड़के और लड़कों के भी लड़के मातृभूमि के बाहर क्यों न मर जायँ, पर यह निश्चित है कि हमारी मृत्यु व्यर्थ न जायगी और कभी न कभी वह दिन आ ही आवेगा, जब हमारे सिद्धान्तों की विजय होगी तथा अत्याचारियों का नाश होगा।

जहाँ की रमणियों के यह भाव हों, वहाँ सफलता क्यों न मिले? अन्त में सफलता मिली, इसी समाज के

(शेष मैटर ३३वें पृष्ठ के पहिले कॉलम के अन्त में देखिए)

* लाहौर का जो नया षड्यन्त्र रचा गया है और जिसमें अनेकों गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, कहा जाता है, उसमें तीन स्त्रियाँ भी शामिल हैं। कलकत्ते में भी जो केस चल रहा है, उसमें स्त्रियाँ पकड़ी गई हैं। —लेखक

मिश्र जी (बाहर)

निकल कर घर से बाहर, मिश्र जी क्या रङ्ग लाते हैं!
वह जब होटल में जाते हैं, तो अण्डा, केक, खाते हैं!!

अजी सम्पादक जो महाराज,

जय राम जी की !

अण्डाकार मेज़-कॉन्फ़्रेन्स में तो बड़ा आनन्द आ रहा है। वल्लाह ! कैसे-कैसे भाखण हुए हैं। प्रतिनिधि बेचारों ने आँतों तक का ज़ोर लगा दिया—कोई आश्चर्य नहीं जो दो-चार की नाक़ भी टल गई हो। इङ्गलैण्ड के अख़बारों तक ने सार्टीफ़िकेट दे दिया कि "माशा अल्लाह ! ख़ूब बोलते हैं।" अजी जनाब, ग़नीमत यही हुई कि हिन्दुस्तान के हिसाब से बरसात का मौसम नहीं था, वरना भाखण सुन कर अङ्गरेज़ों के कान शेष भगवान के कान बन जाते। इन भाषणों का प्रभाव भी ख़ूब पड़ा। अङ्गरेज़ लोग समझ गए कि ये लोग बड़े पण्डित हैं। सम्पादक जी, हालाँकि अङ्गरेज़ों ने तुलसीकृत रामायण नहीं पढ़ी—(दो-चार ने पढ़ी हो तो उससे क्या हुआ) परन्तु तब भी वे पण्डित का अर्थ भली भाँति समझते हैं। यह बात लॉर्ड मेस्टन के वक्तव्य से पूर्णतया प्रकट हो गई।

डॉ० सप्रू, शास्त्री जी, मि० चिन्तामणि, मि० जयकर, मि० जिन्ना, महाराज बीकानेर, मौ० मोहम्मद अली—किस-किस की प्रशंसा की जाय—सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। सबने यही कहा कि हमें 'डोमीनियन स्टेटस' चाहिए, हमें उत्तरदायित्वपूर्ण शासन चाहिए।

मि० जिन्ना का क्या कहना—वे तो इस समय अपने ज़माने के "वुडरो विल्सन" (संयुक्त राज्य अमेरिका के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट) बने हुए हैं। अपने राम का तो यह विचार है कि भारतीय रिपब्लिक के प्रथम प्रेज़िडेण्ट मि० जिन्ना ही बनाए जावें—क्योंकि उनमें वे ही बातें मौजूद हैं, जोकि एक प्रेज़िडेण्ट में होनी चाहिए। अजी यह बात दूसरी है कि उनकी चौदह शर्तें पूरी हों, या न हों। विल्सन साहब की शर्तें भी कहाँ पूरी हुई थीं ? परन्तु फिर भी वे प्रेज़िडेण्ट बने ही रहे। बात तो सूझ की है। उन्हें वे ही बातें सूझीं, जो एक प्रेज़िडेण्ट को सूझा करती हैं। इससे यह प्रमाणित हो गया कि उनका मस्तिष्क भी एक प्रेज़िडेण्ट का मस्तिष्क है।

यदि उनकी चौदह शर्तें पूरी हो जायँ, तो उन्हें हिन्दुस्तान का तो क्या, चौदह लोकों का स्वराज्य मिल जाय। परन्तु यह सब प्रभुओं की इच्छा पर निर्भर है ; क्योंकि, "बलि चाहा आकाश को, हरि पठवा पाताल।"

भई, कोई माने या न माने, परन्तु अपने राम तो यह कहने से कभी न चूकेंगे कि मौ० मुहम्मदअली ख़ूब बोले ! वह-वह बातें कही हैं कि किसी ने नहीं कहीं। उन्होंने साफ़-साफ़ कह दिया कि वह तो पूर्ण-स्वाधीनता के पक्षपाती हैं—जी हाँ, और कुछ ले ही नहीं सकते। मौलाना वह ताक़त चाहते हैं, जिससे कि वह लॉर्ड रीडिङ्ग को जेल भेज सकें। यह बात सुन कर बेचारे लॉर्ड रीडिङ्ग की तो नानी मर गई होगी। सम्पादक जी, यह निश्चय समझिए कि यदि हिन्दुस्तान को स्वराज्य मिल गया, तो लॉर्ड रीडिङ्ग बेचारे हिन्दुस्तान आना तो दूर रहा, भारत महासागर भी न झँकाएँगे।

मौलाना ने दो चीज़ों का सवाल किया है। कहा है—"या तो स्वराज्य दो या फिर मेरी क़ब्र के लिए स्थान !" क्योंकि बिना स्वराज्य लिए वह हिन्दुस्तान नहीं आ सकते। पता नहीं इन सवालों के बारे में उन्होंने बड़े भैया से भी सलाह ले ली है, या नहीं ; क्योंकि एक ही क़ब्र के लिए स्थान माँगा है—दो क़ब्रों के लिए नहीं। ब्रिटिश सरकार क़ब्र के लिए स्थान तो क्या, मौलाना के लिए पूरा क़ब्रस्तान ख़ाली करा सकती है। जिसमें कि मौलाना 'शहीद-मर्द' बन कर आराम के साथ उसमें विचरण कर सकें। परन्तु स्वराज्य की बाबत—हें-हें वह तो सोच-समझ कर ही दिया जायगा। हमारी समझ में मौलाना इङ्गलैण्ड में क़ब्र के लिए भूमि न माँग कर, काबा-शरीफ़ में माँगते, तो अधिक अच्छा होता। स्वराज्य न मिलता तो कम से कम जन्नत के किसी वृक्ष पर घोंसला बनाने के लिए जगह अवश्य मिल जाती !

डॉ० मुञ्जे का यह मञ्जु विचार, कि वह भारत आकर महात्मा जी, पं० मोतीलाल और पं० जवाहरलाल को कॉन्फ़्रेन्स में ले जायँगे, कितना बढ़िया है ? सूझ हो तो ऐसी हो। देखिए, इतने प्रतिनिधि जमा हैं, परन्तु किसी को यह बात न सूझी। चलिए यह सेहरा भी डॉ० मुञ्जे की खोपड़ी पर ही बँधना बदा था। अब देखें महात्मा जी कैसे कॉन्फ़्रेन्स में नहीं जाते।

डॉक्टर मुञ्जे सलामत हैं, तो इन्शा अल्लाह।
कच्चे धागे में चले जायँगे गाँधी जी बँधे॥

अपने राम को इस बात में पंसेरी भर भी सन्देह नहीं है, कि डॉ० मुञ्जे की बात महात्मा जी किसी प्रकार न टाल सकेंगे। डॉ० सप्रू तथा जयकर तो हिन्दुस्तान ही से उनके पास गए थे, परन्तु मुञ्जे जी तो इङ्गलैण्ड से आवेंगे। महात्मा जी को यह भी तो ख़याल होगा कि इतनी दूर से दौड़े आए हैं—इन्हें विमुख नहीं लौटाना चाहिए। यदि मुञ्जे जी लन्दन से चल कर अमेरिका होते हुए हिन्दुस्तान आवें, तो दूरी बढ़ जाने के कारण महात्मा जी पर और भी अधिक प्रभाव पड़ेगा। अपने राम की तो यही सलाह है—मानना न मानना मुञ्जे जी की इच्छा पर है। और यदि मुञ्जे महाशय महात्मा जी के लिए वायुयान लेकर आवें तो फिर क्या कहना है—यही मालूम हो कि कोई देव स्वर्ग से विमान लेकर आया है। उस समय महात्मा जी और भी ललचा उठें !

मि० जयकर का तो नाम ही जय-कर है। जहाँ वह होंगे वहाँ केवल जय ही जय है। जयकर ने तो निश्चय कर लिया है, कि जय करके ही लौटेंगे, चाहे इधर का स्वराज्य उधर हो जाय। उन्होंने अपनी पार्टी बना ही ली है और भर्ती भी आरम्भ हो गई, केवल अल्टीमेटम देकर चढ़ाई करने की देर है। जिस समय उनका खरनाद (खर = तीक्ष्ण) निकलेगा उस समय हलचल मच जायगी। विरोधी दल चींटी का बिल ढूँढ़ता फिरेगा। परन्तु जयकर जी कहीं ऐसा नाद न निकालें जो लन्दन भर के कुत्ते आकर कॉन्फ़्रेन्स-भवन के द्वार पर जमा हो जायँ।

डॉ० सप्रू तो क़ानूनी आदमी ठहरे। क़ानूनी आदमी बड़ा बेढब होता है। सप्रू साहब तो ख़ैर बहुत बड़े आदमी हैं। क़ानूनी चूरनवाला तक बेढब होता है। कहा भी है—"चूरन वाला बड़ा कनूनी, बातें करता ड्योढ़ी दूनी।" परन्तु सप्रू साहब बहुत भले आदमी हैं। वह केवल ब्रिटिश सरकार को सलाह दे सकते हैं—और दी भी है, ब्रिटिश सरकार माने या न माने, उसकी मर्ज़ी है ! भारत-सरकार तो किसी ज़माने में उनकी सलाह पूरे तौर पर मानती थी, ब्रिटिश सरकार न माने तो बेचारे सप्रू साहब क्या करें ? अधिक कुछ कह भी नहीं सकते—महामालिक ठहरी। भारत-सरकार जब सप्रू साहब की मालिक रह चुकी है, तो ब्रिटिश सरकार तो भारत-सरकार की भी मालिक है—अतएव महामालिक हुई। भले आदमी एक बार जिसका नमक खा लेते हैं तो सदैव उसका ध्यान रखते हैं। सप्रू साहब भी भले आदमी हैं, उन्हें भी नमक का ख़्याल अवश्य होगा। इसलिए सलाह देने के अतिरिक्त और वह कुछ नहीं कर सकते, मजबूरी है।

श्री० श्रीनिवास जी शास्त्री शास्त्रवेत्ता ही ठहरे। शास्त्रों में कहा है कि राजा ईश्वर का प्रतिनिधि होता है। इसके आगे कोई तर्क चल ही नहीं सकता। इस पर यदि कोई व्यक्ति कुछ कह दे, तो अपने राम शास्त्री जी से उसका शास्त्रार्थ कराने को तैयार हैं। शास्त्री जी बड़े अनुभवी आदमी हैं। दक्षिणी अफ़्रीका में ऐसी-ऐसी न जाने कितनी कॉन्फ़्रेन्सें करके भूल गए हैं। डोमीनियन स्टेटस चाहे मिले या न मिले, वह तो डोमीनियन्स में घूम-फिर कर उसका आनन्द लूट ही चुके हैं। और घूमे भी मामूली तौर से नहीं, बग़ल में पोथी-पत्रा दाब कर ! कथा कहने नहीं गए थे, भारत-सरकार के प्रतिनिधि बन कर गए थे—और क्या, यह ठाठ रह चुके हैं ! स्वराज्य मिले चाहे न मिले, उनके ठेंगे पर है। "फ़्रीडम ऑफ़ दी सिटी ऑफ़ लन्दन" (लन्दन नगर की स्वतन्त्रता) उन्हें प्राप्त ही है, हिन्दुस्तान में न रहेंगे—'होम' चले जायँगे।

मि० चिन्तामणि को सब से बड़ी चिन्ता इस बात की है कि हम लोग तो यहाँ कॉन्फ़्रेन्स कर रहे हैं, वहाँ भारत में नौकरशाही बराबर "डण्डा-बरसावन-लीला" और "जेल-दिखावन-लीला" कर रही है। ठीक है—कविवर "अकबर" की उक्ति के अनुसार—

क़ौम के ग़म में सभा करते हैं हुक्काम के साथ।
रञ्ज 'लीडर' को बहुत है, मगर आराम के साथ॥

परन्तु चिन्तामणि जी की यह चिन्ता बिलकुल व्यर्थ है। जो कुछ हो रहा है होने दें, वह अपना काम करें। डण्डे कुछ उन पर तो पड़ नहीं रहे हैं, फिर उन्हें इतनी फ़िक्र क्यों ? परन्तु उन्हें रञ्ज इस बात का है, कि जब तक वह हिन्दुस्तान में रहे तब तक तो कहीं मसा नहीं भनका, उनके जहाज़ पर लदते ही यहाँ डण्डेबाज़ी आरम्भ हो गई। यदि उन्हें कॉन्फ़्रेन्स में जाने के साल भर पहले भी यह पता चल जाता, कि उनके यहाँ से कूच करते ही यहाँ डण्डेबाज़ी आरम्भ हो जायगी, तो वह यह निश्चय कहते कि "हम इस शर्त पर कॉन्फ़्रेन्स में जायँगे कि यहाँ डण्डेबाज़ी और लाठी-काण्ड न होने पावे।" यदि सरकार को कॉन्फ़्रेन्स करनी होती, तो वह झख मार के यह शर्त क़ुबूल करती ! परन्तु बेचारे क्या करें—उन्हें यह पता ही नहीं था। सच पूछिए तो सरकार ने उनके साथ यह बहुत बड़ा विश्वासघात किया कि उन्हें यह नहीं बताया कि उनके पीछे वह हिन्दुस्तान में क्या करेगी। चिन्तामणि महोदय को कॉन्फ़्रेन्स में पहुँचने की जल्दी थी, इसलिए वह भी इस बात को तय करना भूल गए। अब जब उन्हें यहाँ की ख़बरें मिलीं, तो उनकी खोपड़ी में चिन्ता-मणि उत्पन्न हो गई।

(३१वें पृष्ठ का शेषांश)

अपूर्व त्याग से। इसका श्रेय है इसी अबला कहलाने वाली जाति को !

वर्तमान समय में रूस दिन पर दिन उन्नति कर रहा है। इस अल्पकाल में उसने जो आश्चर्यजनक उन्नति कर दिखलाई है, वह संसार के इतिहास में एकदम नवीन है। इस साम्राज्य में स्त्रियों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है और उनको जो सुविधाएँ तथा अधिकार प्राप्त हैं—सामाजिक जीवन में जो आनन्द हैं—वह संसार के अन्य किसी भी स्वाधीन या पराधीन देश में नहीं हैं।

* * *

ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि भी बड़े पहुँचे हुए हैं। 'फ़ेडरेल-विधान' के बहाने भारतीय प्रतिनिधियों को साँपों की गठरी बाँधने का काम सौंप दिया है! औपनिवेशिक स्वराज्य,बेचारा पड़ा सोच रहा है, कि ये लोग—"आए थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास" मेरी कोई बात ही नहीं पूछता। हमारी समझ में ब्रिटिश सरकार "फ़ेडरेल-विधान" के बदले मि० "क्रिनटेक्स" (इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध "क्रॉस-वर्ड पज़ल" के विशेषज्ञ) से कोई बढ़िया-सा "क्रॉस-वर्ड पज़ल" (शब्द-कोष्ठ' गोरखधन्धा) बनवा कर प्रतिनिधियों को दे देती, कि "बचा इसे बैठे-बैठे हल करो, जब यह कर लोगे तब पीछे और कुछ होगा।" जो हाँ, बड़ी लियाक़त छौंकते थे—बड़े भाखया झाड़ते थे, समझते थे कि अब स्वराज्य लिया। यह पता नहीं था कि "प्रेत-स्तम्भ" से पाला पड़ेगा, रात-दिन उस पर चढ़ा-उतरा करो! और लुत्फ़ यह है कि अब "फ़ेडरेल-विधान" के जञ्जाल से दर्द-सर पैदा होगा, तो आपस ही में जूता-लात करेंगे। जनाब, वीर लोग ऐसे ही होते हैं। अकबर के दरबार में दो क्षत्री नौकरी के लिए गए। अकबर ने पूछा—"तुम क्या काम कर सकते हो?" क्षत्रियों ने उत्तर दिया—"हम लोग वीरता का काम करते हैं।" अकबर ने कहा—"अच्छा कुछ नमूना दिखाओ।" यह सुन कर दोनों ने तलवारें खींच लीं और आपस में लड़ कर दोनों वहीं ख़तम हो गए!! सो दशा प्रतिनिधियों की है। ब्रिटिश सरकार को अपनी-अपनी लियाक़त दिखाने के लिए आपस ही में जूता-लात चल रहा है। भले कुछ मिले या न मिले, पर लियाक़त तो ज़ाहिर हो जायगी। यही क्या थोड़ा है? हमारी सलाह तो यह है कि प्रतिनिधि लोग इस नाटक के समाप्त होने पर अपनी एक कम्पनी बना लें और लन्दन से सीधे अमेरिका चले जायँ—वहाँ यही नाटक दिखा-दिखा कर लाखों रुपए पैदा कर सकते हैं। स्वराज्य न मिले तो रुपया ही कमा लावें। यही क्या कम है। साल दो साल अमेरिका में कट जायँगे, तब तक हिन्दुस्तान में भी अमन क़ायम हो जायगा। उस समय लौटेंगे तो लाले भगड़ों का सामना भी न करना पड़ेगा। क्यों सम्पादक जी, यह युक्ति ठीक है न?

भवदीय,
—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

गीता का रहस्य

गीता पर महात्मा जी का विचार, और उसके प्रथम अध्याय पर उनका विश्लेषण इस सप्ताह के 'यङ्ग इण्डिया' से यहाँ उद्धृत किया जाता है:—

"गीता महाभारत का एक छोटा सा भाग है। महाभारत एक ऐतिहासिक ग्रन्थ समझा जाता है सही, किन्तु हमारे लिए रामायण और महाभारत दोनों ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं, किन्तु धार्मिक ग्रन्थ हैं; अथवा यदि हम उन्हें इतिहास कहें तो वे अध्यात्मिक इतिहास हैं। यह हज़ारों वर्ष की घटनाओं का विवरण मात्र नहीं, वरन् यह प्रत्येक मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होने वाले विचारों का एक सामयिक चित्र है।

"रामायण और महाभारत दोनों ही में देव और दानव—राम और रावण—में नित्य के होने वाले युद्ध का वृत्तान्त है। गीता में श्रीकृष्ण और अर्जुन का प्रश्नोत्तर इसी प्रकार का एक वर्णन है। उस वार्त्तालाप को सञ्जय ने अन्धे धृतराष्ट्र से कहा है। गीता का अर्थ है 'सङ्गीत', यहाँ 'उपनिषद' शब्द छिपा हुआ है, इसलिए इसका पूर्ण अर्थ है 'गाया जाने वाला उपनिषद'। उपनिषद का अर्थ है 'ज्ञान'—शिक्षा। इस प्रकार गीता का अर्थ है 'श्रीकृष्ण का अर्जुन के प्रति उपदेश'।

अन्तर्यामी

"हम लोगों को गीता यह अनुभव करते हुए पढ़ना चाहिए कि अन्तर्यामी भगवान कृष्ण हमारे हृदय में सदा वर्तमान हैं और जब कभी हम अर्जुन की भाँति उनकी शरण लेते हैं, वे सदा हमें शरण देने को तैयार रहते हैं। हम लोग सुप्त हैं और वह अन्तर्यामी सदा जाग्रतावस्था में हैं। हम लोगों में ज्ञान-वासना की जाग्रति के लिए वह प्रतीक्षा करते हैं। हम नहीं जानते कि किस प्रकार (ज्ञान) माँगना चाहिए। हम लोग माँगने के लिए तैयार भी नहीं हैं।

"हम अपने भीतर धार्मिक ज्ञान की वासना उत्पन्न करना चाहते हैं—आध्यात्मिक प्रश्नों पर विचार करते हुए उससे ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। जब कभी दुःख में पड़ कर शान्ति के लिए हम गीता उठाते हैं और साम्त्वना प्राप्त करते हैं; तो वह तुरन्त हमारे लिए एक शिक्षक—एक माँ—हो जाती है। और हमें यह विश्वास निश्चय होना चाहिए कि उसकी गोद में अपना माथा रख कर हम सदा शान्ति लाभ कर सकते हैं।

"गीता हमारी सभी आध्यात्मिक उलझनों को सुलझा देगी। जो इस प्रकार गीता पर विचार करेंगे, उन्हें नया आनन्द प्राप्त होगा और वे नित्य उससे नया अर्थ पावेंगे। ऐसी एक भी आध्यात्मिक उलझन नहीं है, जो गीता न सुलझा सके। यह एक दूसरी बात है, यदि अधूरे विश्वास के कारण हम यह न जान सकें कि गीता कैसे पढ़ना चाहिए जिससे हमारा विश्वास नित्य-प्रति बढ़ता जाय। आश्रम में रहने वालों की सहायता के लिए, मैंने गीता के ऊपर विचार कर जो अर्थ पाए हैं—और पा रहा हूँ, उसका सारांश यहाँ देता हूँ:—

"जब पाण्डव और कौरव सेनाओं के साथ रणक्षेत्र कुरुक्षेत्र में खड़े होते हैं, तब कौरवों का राजा दुर्योधन आचार्य द्रोण से दोनों ओर के मुख्य-मुख्य योद्धाओं का वर्णन करता है। जब दोनों सेनाएँ युद्ध के लिए तैयार होती हैं, तो उनके शङ्ख बजते हैं और अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण अपने रथ को दोनों सेनाओं के बीच में खड़ा करते हैं। यह देख कर अर्जुन हैरान हो जाते हैं और श्रीकृष्ण से कहते हैं—"मैं इन लोगों से कैसे युद्ध कर सकता हूँ। अगर ये लोग कोई दूसरे होते तो मैं इनसे दृढ़तापूर्वक युद्ध कर सकता था। किन्तु ये तो मेरे अपने हैं। पाण्डवों और कौरवों में क्या अन्तर है? ये हमारे चचेरे भाई हैं। हम लोगों का पालन-पोषण साथ हुआ है। द्रोण केवल कौरवों के ही आचार्य नहीं हो सकते। उन्होंने ही हम सबों को युद्ध-विद्या सिखाई है। भीष्म हमारे समस्त परिवार में अग्रगण्य हैं। उनसे कैसे युद्ध कर सकता हूँ?

"यह सच है कि कौरव अत्याचारी हैं। उन्होंने अनेक बुरे कार्य और अधर्म किए हैं। उन्होंने पाण्डवों से राज्य छीन लिया है। उन्होंने द्रौपदी के समान एक साध्वी स्त्री का अपमान किया है। ये सभी उनके अपराध हैं सही, किन्तु उनको मारने से क्या लाभ हो सकता है? वे नासमझ हैं। मैं उनकी भाँति आचरण क्यों करूँ? कम से कम मुझे कुछ ज्ञान है; मैं अच्छे और बुरे का ज्ञान रखता हूँ। इसलिए मैं यह निश्चय जानता हूँ कि अपने सम्बन्धियों से युद्ध करना पाप है। पाण्डवों के राज्य का हिस्सा उन्होंने हड़प कर लिया है, इससे क्या? उन्हें हम लोगों को भी मारने दीजिए। हम लोग उनके विरुद्ध अपना हाथ कैसे उठा सकते हैं? हे कृष्ण, मैं अपने उन सम्बन्धियों से युद्ध नहीं करूँगा।"

इतना कह कर अर्जुन रथ पर गिर पड़ता है।

ईश्वर का वासस्थान

"इस प्रकार पहला अध्याय ख़तम होता है। उसका नाम है अर्जुन विषाद योग। विषाद का अर्थ है दुःख। हम लोगों को भी वैसा ही दुःख अनुभव करना है, जैसा कि अर्जुन ने किया है। आत्मिक यन्त्रणा और ज्ञान की पिपासा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। जो मनुष्य क्या बुरा और क्या भला है यह भी नहीं जानना चाहता, भला धार्मिक उपदेश उसे क्या लाभ पहुँचा सकते हैं?

"सच्चा कुरुक्षेत्र हमारा यह शरीर ही है। यह एक ही साथ कुरुक्षेत्र और धर्मक्षेत्र है। यदि हम इसे ईश्वर का निवास-स्थान समझें और बनावें, तो सदा ही एक न एक युद्ध हमारे सामने है। 'यह मेरा है, यह मेरा है।' यह धर्मक्षेत्र है। इस युद्धक्षेत्र में इन्हीं विचारों से अधिकांश युद्ध उत्पन्न होते हैं। 'ये मेरे' और ये तुम्हारे मनुष्य हैं, इन भेदों से इस प्रकार के युद्ध खड़े होते हैं। इसलिए भगवान आगे चल कर अर्जुन से कहेंगे कि सभी अधर्मों का मूल मोह और द्वेष है। किसी वस्तु को 'अपना' समझो और उससे मोह उत्पन्न हो जाता है। किसी वस्तु को 'अपना नहीं' समझो, बस घृणा और शत्रुता उत्पन्न हो जाती है।

मेरा और तेरा

"गीता और संसार की सभी धार्मिक पुस्तकें कह रही हैं कि अपने और दूसरे का—मेरे और तेरे का अन्तर भूल जाओ। अर्थात् वासना और द्वेष को छोड़ देना चाहिए। कहना एक बात है और उसके मुताबिक़ करना दूसरी बात है। गीता हमें उसके अनुसार काम करने के लिए भी उपदेश देती है। यह किस प्रकार से—सो पीछे—हम समझने की कोशिश करेंगे।"

* * *

गौड़ महासभा का ३३वाँ अधिवेशन

इस वर्ष, अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा का, ३३ वाँ महाधिवेशन श्रीमान् पं० गोविन्दप्रसाद जी कौशिक, बी० ए०, अटेची टू एच० एच० महाराजा ऑफ़ सिरोही के सभापतित्व में, २७ व २८ दिसम्बर सन् १९३० को बरेली शहर में होना निश्चित हुआ है। समस्त जातीय भाइयों की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

श्रीराधेश्याम-प्रेस, बरेली — —राधेश्याम कथावाचक, मन्त्री–स्वागत-समिति

अखिल भारतवर्षीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा, कोटा

आगामी २६-२७ और २८ दिसम्बर को अखिल भारतवर्षीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा का नवाँ वार्षिकोत्सव कोटा में होना निश्चित हुआ है। स्थान-स्थान की लोकल सभाओं, पञ्चायतों और जातीय सभाओं से प्रार्थना है कि वे अपनी मीटिङ्ग करके अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए प्रतिनिधि भेजें।

—भँवरलाल गुप्त,
मन्त्री, स्वागतकारिणी समिति

विराट कवि-सम्मेलन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय गुरुकुल वृन्दावन में विद्या-परिषद की ओर से ता० २६ दिसम्बर, १९३० से एक विराट कवि-सम्मेलन होगा। इस कवि-सम्मेलन में संस्कृत, हिन्दी और उर्दू इन तीनों भाषाओं की कविताएँ पढ़ी जावेंगी।

समस्याएँ

हिन्दी—(१) गुन ना हिरानो गुन गाहक हिरानो है
(२) अवला अबलौं अवलोकति है
(३) हाथ का खिलौना है
(४) जानकी

संस्कृत—(१) हा पञ्जरे केसरी
(२) शून्यालय दीपवत्
(३) सर्वे गुनाः काञ्चन माश्रयन्ति

उर्दू—(१) दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को
(२) खिला ठोकर किसी को तू न सङ्गे-रह-गुज़र होकर

स्वतन्त्र विषय—(१) कारागार
(२) पागल
(३) आँसू

नोट—(क) स्वतन्त्र विषय में गद्य तथा पद्य दोनों में ही रचनाएँ की जा सकती हैं।
(ख) सुन्दर एवं भावपूर्ण कविताओं पर पुरस्कार दिए जावेंगे।

—महेन्द्रकुमार
मन्त्री, विद्या-परिषद

अखिल भारतवर्षीय यादव-महासभा

अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा का अष्टम अधिवेशन तथा बिहार प्रान्तीय यादव क्षत्रिय महासभा का सप्तदश और महिला-सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन आगामी २६-२७ और २८ दिसम्बर को गौरचनी, गया में होना निश्चित हुआ है।

—कुँ० आनन्द वल्लभ प्रसाद सिंह
स्वागताध्यक्ष

अखिल भारतवर्षीय शिक्षा-प्रदर्शिनी, काशी

उन संस्थाओं से तथा उन सज्जनों से, जो शिक्षा-सम्बन्धी वस्तुएँ इस प्रदर्शिनी में भेज रहे हैं या भेजना चाहते हैं, यह प्रार्थना की जाती है कि वे पार्सलों के साथ वो प्रार्थना-पत्र, जो उन्हें उनके प्रान्त या (यदि वे संस्थाएँ या सज्जन देशी राज्यों में हैं) देशी राज्य के शिक्षा-विभाग से प्राप्त हो सकेंगे, भेजें।

—एच० एन० बाञ्चू
इन्सपेक्टर ऑफ़ स्कूल्स बनारस डिवीज़न
संयोजक, अखिल भारतवर्षीय शिक्षा-प्रदर्शिनी

अ० भा० हैहयवंशी क्षत्रिय महासभा

का तृतीय अधिवेशन ईस्टर की छुट्टियों में कानपुर में होगा। उसके सभापतित्व के लिए श्रीमान् बा० श्रीगोपालसिंह, एम०। ए०, एल्-एल्० बी० मुन्सिफ़ फर्रूंद, बा० पुत्तूलाल वर्मा साहित्य-रत्नाकर लेण्डस्केप आरचीटेक्ट दिल्ली, बा० नर्मदाप्रसाद चौधरी खण्डवा, और श्रीयुत शारीलाल वर्मा इङ्गावर के नाम प्रस्तावित हुए हैं। आगामी २१ दिसम्बर को कार्यकारिणी कमेटी की बैठक में सभापति का निर्वाचन होगा, इसलिए जो।भी हैहयवंशी बन्धु अपनी सम्मति भेजना चाहें, वह २० दिसम्बर के पूर्व सम्पादक 'हैहयवंश' इकदिल,ज़िला इटावा के पते पर भेज दें। प्रत्येक हैहयवंशी को सभापतित्व के लिए कोई भी नाम पेश करने का अधिकार है।

—प्रधान मन्त्री

Printed and Published by Mr. R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage, 28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—१८ दिसम्बर, १९३० | संख्या १२, पूर्ण संख्या १२

पञ्जाब में भी जेलों का दिवाला !

राजनैतिक क़ैदियों की भरमार के कारण ५०० क़ैदी छोड़ दिए गए !!

मि० विन्सेण्टन चर्चिल की खरी घोषणा :: भारत को स्वराज्य नहीं मिलेगा !

बङ्गालिन महिला मुसलमान नहीं हुई :: स्थानीय मुसलमानों के हथकण्डे !

नैनी जेल में मालवीय जी की दशा चिन्ताजनक होने के कारण वे सिविल-हस्पताल भेजे गए !

(१७ वीं दिसम्बर की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—आज सर्दार वल्लभभाई पटेल का मुक़दमा प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० दस्तूर की अदालत में प्रारम्भ हुआ। उन पर दण्ड-विधान की धारा १७-१ और १७-२ का अभियोग लगाया गया है। यह अभियोग उनके उस भाषण पर लगाया गया है, जो उन्होंने प्रेज़िडेण्ट की हैसियत से नए खद्दर हाउस का उद्घाटन करते समय दिया था। आज चार गवाहियों के ब्यान हुए। इलाहाबाद से आए हुए ख़ुफिया पुलिस के इन्स्पेक्टर ने ९वीं नवम्बर की ६ ज़ब्त चिट्ठियाँ पेश कीं जिन पर स्थानापन्न सेक्रेटरी के हस्ताक्षर थे और जिनमें यह लिखा हुआ था कि सर्दार पटेल कॉङ्ग्रेस तथा कार्य-कारिणी कमिटी के नए प्रेज़िडेण्ट नियुक्त किए गए हैं। पुलिस इलाहाबाद और अहमदाबाद से कुछ गवाह, यह सबूत करने के लिए बुलाना चाहती है, कि सर्दार ने ग़ैर-क़ानूनी सभा के सञ्चालन में सहायता पहुँचाई। उनका मुक़दमा २० ता० के लिए स्थगित कर दिया गया है।

—कलकत्ते के 'बङ्गवाणी' पत्र को मालूम हुआ है कि डम-डम स्पेशल जेल में चेचक की बीमारी फैल गई है जिसके कारण वहाँ के तीन रानैतिक क़ैदी प्रेज़िडेन्सी जेल की अस्पताल भेज दिए गए हैं।

—कलकत्ता के वकीलों की आज एक सभा होगी, जिसमें उन एडवोकेटों के सम्बन्ध में विचार किया जायगा, जो वायसराय के स्वागत में सम्मिलित न होने का प्रस्ताव पास हो जाने पर भी हाईकोर्ट में वायसराय के उत्सव में सम्मिलित हुए थे।

—वर्धा के गाँधी-चौक में गत रविवार को मोतीलाल दिवस मनाया गया था। उस दिन वहाँ की जनता ने पण्डित जी के जल्दी स्वस्थ होने के लिए ईश-प्रार्थना की थी।

—१०वीं दिसम्बर को इलाहाबाद के 'खद्दर-भण्डार' पर पुलिस ने सवेरे ही धावा बोल दिया। धावे का उद्देश्य इलाहाबाद के ज़िला कॉङ्ग्रेस-कमिटी और शहर कॉङ्ग्रेस-कमिटी के सम्बन्ध में, जो ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दी गई हैं, तलाशी लेना था। तलाशी लगातार दो घण्टे तक हुई और भण्डार का सब खद्दर तितर-बितर कर दिया गया। पुलिस अपने साथ कुछ राष्ट्रीय झण्डे, कॉङ्ग्रेस-कमिटियों के दो साइन बोर्ड और 'स्टूडेण्ट्स एसोसिएशन' के कुछ काग़ज़ ले गई। पुलिस ने 'खद्दर-भण्डार' का अर्थ सब मकान समझ लिया था और इसलिए उस मकान में जितने दुकानदार थे, सबकी तलाशी ली गई थी। 'प्रयाग-बुक डिपो' का ताला तोड़ कर उसकी भी तलाशी ली गई थी।

बङ्गालिन महिला मुसलमान हुई या नहीं ?

('भविष्य' के विशेष सम्वाददाता द्वारा)

पाठकों को स्मरण होगा, कुछ दिन हुए एक बङ्गालिन महिला और उसकी युवती कन्या के स्थानीय जुमा-मसजिद में 'इस्लाम-धर्म स्वीकार करने के अभिप्राय' से जाने के कारण सारे ज़िले में एक सनसनी फैल गई थी। इस सम्बन्ध में स्थानीय मुसलमानों ने जो 'हाय-तोबा' मचाई थी, इसका विस्तृत समाचार 'भविष्य' की १० वीं संख्या में प्रकाशित हो चुका है। पाठकों को यह भी स्मरण होगा कि, विगत २९ वीं नवम्बर को हड़ताल और जुलूस आदि निकालने के अतिरिक्त मुसलमानों का एक डेपुटेशन उस महिला को वापस माँगने के लिए डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट और पुलिस-सुपरिन्टेन्डेण्ट से भी मिला था और इन अफ़सरों ने मुसलमानों को इस बात का आश्वासन दिया था, कि शीघ्र ही वे उस महिला का कलकत्ते से (क्योंकि वह तुरन्त ही कलकत्ते भगा दी गई थी) ब्यान मँगाने का प्रबन्ध करेंगे। अस्तु,

अभी-अभी 'भविष्य' के विशेष सम्वाददाता को विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि इलाहाबाद से एक दारोग़ा साहब उस महिला का ब्यान लेने के लिए ख़ास तौर से कलकत्ते भेजे गए थे। उनके साथ ही मुसलमानों की ओर से एक मुसलमान बैरिस्टर साहब भी गए थे। बड़ी कठिनाइयों से उस बङ्गालिन महिला का ब्यान लिया जा सका। अपने ब्यान में उस महिला ने कहा है कि उसने स्थानीय जुमा-मसजिद की बड़ी प्रशंसा सुनी थी और वह अपनी लड़की सहित केवल उसे देखने के अभिप्राय से वहाँ गई थी! महिला ने मुसलमानों के इस हथकण्डे की तीव्र आलोचना करते हुए कहा है, कि यह सरासर झूठ है कि पुलिस आने के पहिले ही वह तथा उसकी कन्या इस्लाम-धर्म में दीक्षित हो चुकी थी।

हमारे विशेष सम्वाददाता ने अपनी रिपोर्ट में उन मुसलमान बैरिस्टर साहब से बड़ी समवेदना प्रगट की है, जिन्हें इस बुरी तरह कलकत्ते से निराश होकर वापस लौटना पड़ा!

—देहरादून कॉङ्ग्रेस-कमिटी ने १४वीं दिसम्बर को झण्डा फहरा कर और सन्ध्या समय सभा कर खादी-सप्ताह का उद्घाटन किया है।

पञ्जाब में जेलों का दिवाला पिट गया

अमृतसर का १५वीं दिसम्बर का समाचार है कि स्थानीय 'अकाली ते परदेशी' को मालूम हुआ है कि राजनीतिक क़ैदियों की संख्या बढ़ जाने के कारण लगभग ५०० साधारण क़ैदी म्याद पूरी होने के पहले ही कई जेलों से मुक्त कर दिए गए हैं। सूचना के अनुसार ३८ गुजरांवाला जेल से, १०० दिल्ली जेल से, २५० मुल्तान जेल से और ६० माण्टगोमरी जेल से रिहा किए गए हैं।

डॉक्टर अन्सारी भी बीमार

गुजरात (लाहौर) स्पेशल जेल की रिपोर्ट से मालूम पड़ता है कि डॉ० अन्सारी गत शनिवार को अचानक बीमार हो गए थे। उसी समय उनकी चिकित्सा का प्रबन्ध किया गया था। अब वे स्वस्थ हो रहे हैं।

—हुगली का समाचार है कि यूनियन बोर्ड अस्पताल उन लोगों को दवाई नहीं देती, जिन लोगों ने चौकीदारी टैक्स अदा नहीं किया है।

महामना मालवीय जी शूल से पीड़ित

१७ दिसम्बर को १२ बजे दिन को महामना मालवीय जी नैनी जेल से इलाहाबाद के यूरोपियन सिविल हॉस्पिटल में लाए गए। कई दिनों से आप शूल से पीड़ित हैं, इससे संयुक्त प्रान्त की सरकार ने इन्हें सिविल हस्पताल में लाने की अनुमति दे दी है। आप मोटर एम्बुलेन्स में अस्पताल लाए गए। इलाहाबाद के सिविल सर्जन आपके साथ थे।

असल में आपको कल यहाँ लाना निश्चय किया गया था, परन्तु उसी समय आपको शूल उठा और पीड़ा के कारण आप यहाँ नहीं लाए जा सके।

श्रीमती मालवीय ने यू० पी० सरकार से आपके साथ रहने की अनुमति माँगी है।

—इलाहाबाद में १६ वीं दिसम्बर को कानपुर रोड पर हाई कोर्ट के एडवोकेट मि० बिशुननाथ के बँगले के सामने काङ्ग्रेस के वालण्टियरों ने आश्रम ख़ाली कराने के कारण एक जुलूस निकाला था। और उनके बङ्गले के भीतर राष्ट्रीय झण्डा लगा कर वहाँ अपना अड्डा जमा लिया था। वे भूखे-प्यासे रात्रि भर वहीं स्थान के लिए सत्याग्रह करते रहे। दूसरे दिन स्थान मिलने पर वापस चले गए और अब भी सत्याग्रही अपने सामान सहित आश्रम के द्वार पर बाहर डटे हैं।

—सिरसा (ज़िला हिसार, पञ्जाब) की नव-जवान सभा के प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत अर्जुनलाल मोंगा को एक साल की सज़ा दी गई है। आपसे पहले ज़मानत माँगी गई थी; पर आपने ज़मानत देने से इनकार किया और सज़ा भुगतना मञ्जूर किया।

—पबना (बङ्गाल) के प्रमुख नेता श्रीयुत सिद्धेश्वर चक्रवर्ती को तारीख़ १० दिसम्बर को १० महीने की सज़ा दी गई। आपको यह सज़ा एक राज-विद्रोहात्मक व्याख्यान देने के सम्बन्ध में हुई है।

—लायलपुर से ख़बर आई है कि गोजरा (पञ्जाब) के डिक्टेटर सन्तराम दास को ४ महीने की सज़ा दी गई है। इसी स्थान के एक और डिक्टेटर श्रीयुत तुलसीदास जी को ५ महीने की सज़ा का हुक्म हुआ है।

—दिसम्बर तारीख़ ४ को सैनिक-सम्पादक कुँवर सरदारसिंह वर्मा राज-विद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार किए गए। यह गिरफ़्तारी "दो सरकारें" शीर्षक लेख के सम्बन्ध में हुई है।

पुलिस का अत्याचार

वीरभूमि (बङ्गाल) ज़िले के मल्लारपुर गाँव में ८ दिसम्बर को प्रातःकाल क़रीब ६० पुलिस के सिपाही पहुँचे और उन्होंने गाँव को घेर लिया, इसके बाद ये गाँव वालों को जगा-जगा कर उनके घरों की तलाशी लेने लगे। इस तलाशी में कहा जाता है, कई ग़रीब बेक़सूर किसान मारे-पीटे गए और इनकी कई हज़ार की सम्पत्ति ख़राब की गई। इसके बाद पुलिस ने श्रीमती सत्यबाला देवी तथा चार प्रमुख कॉङ्ग्रेस के कार्य-कर्ताओं को गिरफ़्तार किया और वहाँ से चले गए।

राष्ट्रपति की सास गिरफ़्तार

श्रीमती राजपति कौल, जोकि श्रीमती कमला नेहरू की माता हैं और हाल ही में दिल्ली की डिक्टेटर नियुक्त हुई थीं—तारीख़ ११ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर ली गईं।

अमरावती में गढ़वाली दिवस

अमरावती (मध्य प्रान्त) से ख़बर आई है कि वहाँ के निवासियों ने १२ दिसम्बर को "गढ़वाली दिवस" मनाया। उन्होंने इसी सम्बन्ध में शाम को एक जुलूस निकालना तथा सभा करना निश्चित किया था; पर कलेक्टर ने इसको बन्द कर दिया। वहाँ के निवासियों ने अपना कार्य-क्रम पूरी तौर से कर दिखाया। इस सम्बन्ध में रात को १२ बजे बरार के नवें डिक्टेटर तथा श्रीयुत कलोटी, दीक्षित और मालिनी गिरफ़्तार कर लिए गए। इनके अतिरिक्त श्रीमती डायडेकर, गोखले, लिमाए तथा मिस जावले और ज़िला बार-कौन्सिल के १३ सदस्य भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—सूरत के नए कॉङ्ग्रेस हाउस के मालिक श्रीयुत मोहनलाल वृजदास कॉङ्ग्रेस को सहायता देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—सारन (बिहार) के डिक्टेटर श्रीयुत पण्डित भारत मिश्र ६ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए।

—वाइसराय के आगमन के सम्बन्ध में "वाइसराय वापस जाओ" शीर्षक नोटिस बाँटने के अपराध में कलकत्ते के दो बङ्गाली युवकों को ६ हफ़्ते की सादी सज़ा दी गई है।

—१० दिसम्बर को अमृतसर के २५वें डिक्टेटर लाला सोहनलाल को छः मास की कड़ी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है।

—अमृतसर के सरदार सन्तसिंह से ६ दिसम्बर को १०००) की ज़मानत माँगी गई थी। ज़मानत न देने पर आपको एक साल की सज़ा का हुक्म हुआ है। आपने जेल जाना ही स्वीकार किया है।

—मुज़फ़्फ़रपुर के डिक्टेटर श्रीयुत दरोगा शाही तारीख़ ६ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—दिल्ली के विद्यार्थी-सङ्घ के मन्त्री श्रीयुत अमीरचन्द को १३ दिसम्बर को ५ महीने की कड़ी सज़ा दी गई है। आप 'सी' दर्जे में रक्खे गए हैं।

—दिल्ली की पुलिस ने तारीख़ १३ दिसम्बर को सीताराम बाज़ार के एक मकान की तलाशी ली और १४ गोरखा स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

—दिल्ली के दसवें डिक्टेटर श्रीयुत रामकुमार मारवाड़ी, १३ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री कुमारी कौशल्या देवी, १३ दिसम्बर को दिल्ली में गिरफ़्तार कर ली गईं। आपकी आयु केवल १६ वर्ष की है।

—लाहौर के "कॉमरेड" नामक साप्ताहिक पत्र के दफ़्तर की तारीख़ १२ को तलाशी ली गई। कुछ पुराने अङ्क ज़ब्त किए गए और पत्र के सम्पादक श्रीयुत रामलाल राजविद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—दिल्ली की एक प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती सावित्री देवी, वल्लभ भाई पटेल-दिवस के अवसर पर एक वक्तव्य देने के अपराध में तारीख़ १२ को गिरफ़्तार कर ली गईं।

—मदारीपुर (बङ्गाल) के एक उत्साही कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्रीयुत पूरनचन्द्र दास, जिन्होंने अपना सारा जीवन देश-सेवा में बिताया है—१२ दिसम्बर को फिर से गिरफ़्तार कर लिए गए। आप ७ दिसम्बर को अलीपुर जेल से छूट कर आए थे!

—१३ दिसम्बर को कलकत्ते के दो नवयुवक द्विजेन नाग और सुशील बनर्जी को १८ महीने की कड़ी सज़ा दी गई। यह सज़ा जवाहर-दिवस मनाने के सम्बन्ध में हुई है।

—दिल्ली के नए डिक्टेटर मौलाना शराफ़त अली १५ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बड़ा बाज़ार में पिकेटिङ्ग करने के अपराध में १३ दिसम्बर को कलकत्ते की ७ महिलाएँ तथा ३ युवक गिरफ़्तार किए गए।

—फ़रीदपुर के तीन प्रमुख कार्यकर्त्ता श्रीयुत सत्यरञ्जन दास गुप्त, श्रीयुत प्रमोद रञ्जन सेन गुप्त तथा श्रीयुत प्रमथनाथ सरकार तारीख़ १२ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए।

—कानपूर में ११ दिसम्बर को झण्डे के सम्बन्ध में फूलबाग़ के सामने सत्याग्रह करने के अपराध में श्रीयुत सेवाराम और श्रीयुत रामसहाय गिरफ़्तार किए गए। १२ तारीख़ को दो और स्वयंसेवक, श्रीयुत बद्रीप्रसाद दुबे और लोटन पासी गिरफ़्तार किए गए।

—विदेशी वस्त्र पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में कलकत्ते में १५ दिसम्बर को श्रीमती प्रबाला सेन तथा अन्य ५ महिलाओं पर ५०) रुपए का जुर्माना किया गया। जुर्माना देने से इनकार करने पर इन लोगों को दो महीने की सादी क़ैद भुगतने का हुक्म हुआ।

—१४ दिसम्बर को कलकत्ते के महिला राष्ट्रीय-सङ्घ की स्वयंसेविकाओं ने श्रीमती सरजू बोस, श्रीमती सावित्री चटर्जी तथा श्रीमती कुन्दबालासिंह के नेतृत्व में विदेशी वस्त्र पर धरना दिया। पुलिस ने दो स्वयंसेविकाओं को गिरफ़्तार किया।

—१४ दिसम्बर को कलकत्ते की जोर बागान कॉङ्ग्रेस कमिटी के स्वयंसेवकों ने नातुन बाज़ार की विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर धरना दिया। पुलिस ने उन्हें लाठी मार कर भगाना चाहा। लाठियों की मार से एक स्वयंसेवक मुनीर अहमद को बहुत चोट आई है। एक और स्वयंसेवक श्री० भोलानाथ बनर्जी गिरफ़्तार कर लिया गया। और कई भागों में पिकेटिङ्ग हुई, पर कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई।

—बारीसाल से ख़बर आई है कि श्रीयुत धीरेन्द्र रायचौधरी को, जोकि पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में कलकत्ते के जेल में सज़ा भुगत रहे हैं, छः मास की और सख़्त क़ैद देने का हुक्म हुआ है। आप बारीसाल कॉलेज के विद्यार्थी थे और आपने उस समय में विद्यार्थियों को कॉलेज छोड़ने के लिए प्रार्थना की थी। यह सज़ा आपको इसी सम्बन्ध में दी गई है।

—बागेरहाट (बङ्गाल) के ४ स्वयंसेवक विदेशी वस्त्र पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए। इनमें से एक श्रीयुत महेशचन्द्रदत्त की आयु ७० वर्ष की है।

बम्बई के "बॉम्बे क्रॉनिकल" के प्रतिभाशाली सम्पादक श्री० ब्रेलवी, जिन्हें ६½ मास का दण्ड दिया गया है और जो "बी" क्लास में रक्खे गए हैं।

—दिल्ली के विद्यार्थी-सङ्घ के मन्त्री श्रीयुत गिरधारी लाल खोसला को १४ दिसम्बर को ५ महीने की कड़ी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है। आप "सी" दर्जे में रक्खे गए हैं।

—बोरसद की दो महिला-स्वयंसेविका श्रीमत बेन तथा रुकमनीबेन शराब की दूकान के सामने धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार की गईं। १४ दिसम्बर को इन महिलाओं को २ महीने की सज़ा दी गई और वे "सी" दर्जे में रक्खी गईं। ये दोनों महिलाएँ साबरमती सत्याग्रह-आश्रम से आई थीं।

—दिल्ली के नेता चौधरी हरनामसिंह तारीख़ १२ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए। आपने सरदार पटेल को बधाई देने के उद्देश्य से की गई सभा में एक वक्तव्य दिया था। यह गिरफ़्तारी उसी सम्बन्ध में हुई है।

—१३ दिसम्बर को अमृतसर के १३ और स्वयंसेवकों को, जो विदेशी वस्त्रों पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, १ महीने से लेकर तीन महीने की कड़ी सज़ा का हुक्म हुआ है।

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

—अमृतसर बार-कौन्सिल के नवें डिक्टेटर श्रीयुत बशीर अहमद रज़वानी, जोकि लाहौर जेल में सज़ा भुगत रहे हैं, बहुत बीमार हैं। आपका वज़न बहुत घट गया है।

—सरदार जमीयतसिंह सेठी, जो कि बम्बई के स्वयंसेवकों के कप्तान हैं और बम्बई के अकाली-दल के अधिष्ठाता हैं, नासिक जेल के अस्पताल में कई दिनों से बीमार पड़े हैं। आपको कड़ी सज़ा दी गई थी। आपके गले तथा नाक में शिकायत है, इसीसे आप बीमार हैं। नासिक की जल-वायु इनके स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं है। पर तब भी आप वहाँ से हटाए नहीं गए हैं।

भारत के यहूदी, पारसी और ईसाई पूर्ण स्वराज्य चाहते हैं

श्रीयुत बी० जी० हॉर्निमैन की अध्यक्षता में तारीख़ ६ दिसम्बर को बम्बई के यहूदी, ईसाई तथा पारसियों ने एक विराट सभा की। सभा में यह प्रस्ताव पास किया गया कि भारत के ईसाई, पारसी तथा यहूदी चाहते हैं, कि बिना देर किए अब भारत को पूर्ण स्वराज्य मिल जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम लोग भारत के स्वराज्य-आन्दोलन से पूर्ण सहानुभूति रखते हैं।

दूसरे प्रस्ताव में उन्होंने भारतीय सरकार की दमन-नीति का घोर विरोध किया और कहा कि विशेषकर स्त्रियों के साथ जो बर्ताव किया जा रहा है, वह बहुत ही निन्दनीय है।

इस सभा में उन्होंने जातीय प्रतिनिधि प्रणाली का घोर विरोध किया और कहा कि जातीयता का भाव राष्ट्रीयता के भाव के विरुद्ध है।

आख़िर में उन्होंने भारत-सरकार से प्रार्थना की, कि श्रीयुत विट्ठल भाई पटेल, जो कि जेल में अस्वस्थ हैं, शीघ्र ही रिहा कर दिए जावें।

कलकत्ते में वाइसराय का स्वागत

सूनी सड़कें और बन्द दूकानें!

भारत के वाइसराय महोदय तारीख़ ६ दिसम्बर को कलकत्ता पहुँचे। वहाँ के भारतीयों ने पूर्ण हड़ताल मनाई। दिन भर शहर की सब दूकानें बिलकुल बन्द रहीं। सड़कों में कोई भी आदमी नज़र नहीं आता था, शहर का सारा काम एकदम बन्द था। पुलिस के सिपाही तथा अधिकारियों के अतिरिक्त सड़कों पर कोई दर्शक भी नहीं देख पड़ता था!

—लाहौर क्रिश्चियन कॉलेज की छात्रा मिस श्यामा ज़ुतशी, जो कि श्रीमती लाडोरानी ज़ुतशी की सुपुत्री हैं, कॉलेज से निकाल दी गई हैं। आपसे फिर से कॉलेज में पिकेटिङ्ग न करने का वचन माँगा गया था, आपने इससे इनकार किया। इसीलिए इन्हें यह सज़ा दी गई है।

—बङ्गाल कॉङ्ग्रेस कमिटी के वाइस प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत ललितमोहन दास तारीख़ १० दिसम्बर को जेल से छोड़ दिए गए। आपको छः मास की सज़ा दी गई थी।

—संयुक्त प्रान्त कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत पुरुषोत्तमदास जी टण्डन का स्वास्थ्य अब बिलकुल ठीक है। कमज़ोर होने पर भी उन्होंने काम करना आरम्भ कर दिया है।

—गोहाटी (आसाम) से ख़बर आई है कि कामरूप ज़िले के कलेक्टर ने सरित, चम्पापुर और बेजनी नामक गाँवों के निवासियों की १०६ बन्दूकें ज़ब्त कर ली हैं। यह ज़ब्ती जङ्गल के क़ानून तोड़ने के सम्बन्ध में हुई है।

—सुना जाता है कि अलीगढ़ के एक प्रमुख रईस श्रीयुत ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु जेल में बहुत बीमार हैं। आप अलीगढ़ म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन तथा शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर थे। आप 'ए' दर्जे में रक्खे गए हैं; परन्तु बहुमूत्र रोग से आप बहुत अस्वस्थ हैं और आपका वज़न बहुत घट गया है। अलीगढ़ के निवासी आपके विषय में बहुत चिन्तित हैं।

—अलीगढ़ के निवासी पण्डित रमाशङ्कर याज्ञिक, जिन्हें गवर्नमेण्ट हाई स्कूल में राष्ट्रीय झण्डा लगाने के अपराध में सज़ा हुई थी, तारीख़ १० को जेल से छूट कर आ गए।

झङ्ग जेल में कपड़ों की कमी

सुना जाता है कि झङ्ग (पञ्जाब) जेल के एक राजनैतिक बन्दी का स्वर्गवास हो गया है। आपको ओढ़ने तथा बिछाने के लिए इतने कम वस्त्र दिए गए कि आपको जेल में निमोनिया हो गया और कहा जाता है कि उसी में आपकी मृत्यु हो गई। और क़ैदियों को भी यही तकलीफ़ है। वहाँ आजकल बहुत ज़ोर की ठण्ड पड़ रही है, पर जेल के अधिकारी उन्हें न अपने कपड़े काम में लाने देते हैं, न जेल के ही कपड़े देते हैं।

'पुलिस के नृशंस और पाशविक अत्याचारों से भारत की स्थिति बेहाथ हो गई है'

लन्दन का १०वीं दिसम्बर का समाचार है कि ६ ता० को श्री० पाल के भाषण के सम्बन्ध में 'मेनचेस्टर गार्जियन' ने 'सोसाइटी ऑफ़ फ्रेण्ड्स' की एक बम्बई स्थित महिला सदस्या के पत्र से कुछ अंश प्रकाशित किए हैं, जिसमें पुलिस के उन अत्याचारों और उसकी उस नृशंसता का वर्णन किया गया है, जिसका नमूना उसने सितम्बर में होने वाले उपद्रवों के अवसर पर दिखाया था। अपने एक सम्पादकीय लेख में 'गार्जियन' लिखता है कि पत्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि पुलिस ने अपना कर्त्तव्य-पालन करने के लिए, कई अवसरों पर जिस नृशंसता और पाशविकता का उपयोग किया है, उससे भारत की स्थिति और भी ख़राब हो गई है। पुलिस के अत्याचारों की वृद्धि के साथ भारतीय आन्दोलन की प्रगति भी अत्यन्त प्रबल वेग से बढ़ी है।

—नागपूर से ख़बर आई है कि १२ दिसम्बर से विदेशी वस्त्र-बहिष्कार का आन्दोलन वहाँ बहुत ज़ोरों से शुरू किया गया है। पिकेटिङ्ग भी बहुत ज़ोरों से की जा रही है। बहुत से फुटकर बेचने वालों ने भी अपने विदेशी कपड़ों पर सील लगवा ली है।

—मध्य-प्रान्त के एक प्रमुख नेता श्रीयुत डॉक्टर खरे, जो कि नागपुर जेल में सज़ा भुगत रहे हैं, बीमार हैं।

—बरेली ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्रीयुत सेठ दामोदरस्वरूप, जो कि नमक-सत्याग्रह के अपराध में जेल भेजे गए थे, तारीख़ १२ दिसम्बर को फ़ैज़ाबाद जेल से छोड़ दिए गए। कारावास अवधि में आपका वज़न २० पौण्ड घट गया है और आप आजकल बहुत कमज़ोर हैं।

अमृतसर में लाठियों की वर्षा

सैकड़ों आदमी घायल

अमृतसर के विदेशी वस्त्र के व्यापारी श्रीयुत तुलसीराम करमचन्द ने ६ दिसम्बर को कुछ विदेशी माल बाहर भेजने का प्रयत्न किया। इसकी ख़बर पाते ही कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक वहाँ जा पहुँचे और उन्होंने पिकेटिङ्ग करना शुरू कर दिया। कुछ स्वयंसेवकों ने 'सियापा' भी मनाया। पुलिस ने वहाँ पहुँच कर कई स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया। इससे प्रोत्साहित होकर तारीख़ १० दिसम्बर को और ज़ोरों से धरना दिया गया और ४ बजे शाम तक गिरफ़्तारियों की संख्या १०० तक पहुँच गई। इस तमाशे को देखने के लिए प्रातःकाल दर्शकों की बहुत बड़ी भीड़ वहाँ इकट्ठी थी। पुलिस ने इस जनता पर बड़ी क्रूरता से लाठियों का वार किया। कई लोग दौड़ा-दौड़ा कर भी पीटे गए।

इस क्रूरता का यहीं अन्त नहीं हुआ, उसी दिन दोपहर को कुछ स्वयंसेवकों ने विदेशी वस्त्र के व्यापारियों का एक जनाज़ा निकाला, इस जुलूस में बहुत सी जनता शामिल थी। सिटी मैजिस्ट्रेट ने जनता को हट जाने का हुक्म दिया। इस हुक्म का अनादर करने पर पुलिस ने जनता पर लाठियाँ चलाईं। इस सम्बन्ध में शाम को शहर में एक बड़ा भारी जुलूस निकाला गया; पर पुलिस ने उसे सुनरियाँवाला बाज़ार में रोक दिया और जुलूस में इकट्ठी हुई जनता को वहाँ से हट जाने का हुक्म हुआ। उनके इनकार करने पर क़रीब ३२ कार्यकर्ता, जिनमें श्रीयुत स्वामी आनन्द तथा कई महिलाएँ थीं, गिरफ़्तार कर लिए गए। इसके बाद पुलिस ने फिर लाठियाँ चलाईं, जिसमें क़रीब दो सौ आदमी बुरी तरह घायल हुए। किसी की उम्र या इज़्ज़त का ख़याल ज़रा भी नहीं किया गया और नन्हें-नन्हें बच्चों से लेकर बूढ़ों तक पर क्रूरता से लाठियाँ चलाई गईं। पुलिस वालों ने वहाँ इकट्ठी हुई महिलाओं को बुरी-बुरी गालियाँ दीं और उन पर कूड़ा फेंका। छत पर से तमाशा देखने वाली महिलाओं पर भी आक्षेप किए गए। इस तीन बार की लाठियों की वर्षा से अमृतसर के क़रीब ३०० मनुष्य घायल हुए हैं। घायलों की संख्या का बिलकुल ठीक पता नहीं चला है। फ़्री प्रेस की रिपोर्ट से तो मालूम होता है कि क़रीब २०० आदमियों को चोटें आई हैं। सेवा-समिति के स्वयंसेवकों ने घायलों का उपचार किया। पुलिस वालों ने इन लोगों पर भी वार किया और कई स्वयंसेवकों को भी घायल किया गया।

—श्रीयुत विट्ठल भाई पटेल को, जो कि अस्वस्थावस्था में कोहम्बटूर लाए गए हैं, अभी भी पेट की पीड़ा से बहुत कष्ट है। हाल की यात्रा से आपका वज़न एक पौण्ड और घट गया है। आपको भोजन की सुविधा के लिए जेल में एक गुजराती रसोइए का प्रबन्ध किया गया है।

सरदार पटेल दन्त-रोग से पीड़ित

सरदार वल्लभ भाई पटेल को, जो हाल में फिर से गिरफ़्तार कर लिए गए हैं, दाँत की पीड़ा से बहुत कष्ट है। बम्बई जेल में पहुँचने पर जेल के डॉक्टर ने आपका निरीक्षण किया, पर उससे आपको कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। अब आपको अपने डॉक्टर श्रीयुत देसाई से इलाज करवाने की अनुमति मिल गई है। डॉक्टर देसाई ने एक्स-रे द्वारा आपका निरीक्षण किया है और कुछ दवा भी दी है। दाँत की पीड़ा से आपको बहुत कष्ट है और आप बहुत कमज़ोर मालूम होते हैं।

बम्बई में विदेशी वस्त्र भरी लॉरी के नीचे दब कर स्वयंसेवक की अकाल मृत्यु

१२ दिसम्बर को क़रीब ११ बजे मूलजी जेठा बाज़ार से दो विदेशी वस्त्रों से भरी हुई लॉरियाँ चलीं। ये लॉरियाँ मेनचेस्टर के कारख़ाने के एजेण्ट मिस्टर जॉर्ज फ़ेजर की थीं। वे पुलिस की सहायता से विदेशी वस्त्र एक मुसलमान दूकानदार के यहाँ तक ले जाने की कोशिश कर रहे थे। इसको रोकने के लिए ६ स्वयंसेवक इसमें से एक व्यक्ति ने, कहा जाता है, लॉरी के ड्राइवर को नाक में मार कर उसे बेहोश कर दिया। यह देख कर पुलिस सार्जेण्ट फ़िल्टर ने दौड़ कर लॉरी को चलाने का प्रयत्न किया। इस प्रयत्न में एक स्वयंसेवक श्रीयुत बाबू गनू को धक्का लगा, वह गिर पड़ा और लॉरी उसके ऊपर से चली गई। उसे इससे बहुत गहरी चोट आई और उसकी मृत्यु हुई! चोट लगने के समय से मृत्युकाल तक उसे ज़रा भी होश नहीं आया। आपकी आयु केवल २२ वर्ष की थी। मृत्यु के बाद आपका शव कॉङ्ग्रेस के नए अस्पताल में लाया गया।

स्वर्गीय बाबू गनू के मृत्यु-स्थल पर शाम तक बहुत सी भीड़ इकट्ठी रही। क़रीब साढ़े दस बजे रात को पुलिस वहाँ पहुँची और भीड़ को हटाने के लिए उसने लाठियाँ चलाईं, जिसमें ७ मनुष्य तथा एक महिला को चोटें आईं। इस क्रूरता से जोश में आकर क़रीब के रहने वालों ने उस स्थल पर विदेशी वस्त्रों का एक ढेर इकट्ठा किया और उसकी होली जलाई। रात भर यह रास्ता बन्द रहा और वहाँ पर पुलिस का पहरा भी रहा।

बम्बई के पुलिस-सारजण्टों का स्त्रियों से हाथापाई करने का एक साधारण दृश्य

५वीं दिसम्बर को 'गाँधी-दिवस' के अवसर पर आज़ाद मैदान में राष्ट्रीय झण्डे के अभिवादन की भी योजना की गई थी, जिसे इधर पुलिसवालों ने सफल न होने देने की शपथ खा ली थी और उधर स्त्रियों ने इस बात की शपथ खाई थी, कि बिना जख़्मी अथवा विवश हुए, वे भी राष्ट्रीय झण्डे को छीनने न देंगी। पाठक इस चित्र में देखेंगे कि पुलिस के गोरे-सारजण्ट कितनी निर्दयता से स्त्रियों पर बल-प्रयोग कर रहे हैं।

सड़क पर लेट गए। पर इन्हें पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया। धीरे-धीरे भीड़ इकट्ठी हो गई, और उन्होंने राष्ट्रीय नारे लगाना आरम्भ किया, पर इससे लॉरी वालों पर कुछ असर न पड़ा, वे लॉरियाँ बढ़ा ले गए।

इतने ही में एक और लॉरी निकली; इसमें भी विदेशी वस्त्र भरे थे। दो स्वयंसेवक राह में लेट गए, पर पुलिस ने इन्हें गिरफ़्तार कर लिया। आगे दो और स्वयंसेवकों ने इसी तरह लॉरी को रोकने का प्रयत्न किया, पर वे भी गिरफ़्तार कर लिए गए। इस तरह लॉरी बढ़ती ही गई। भीड़ भी बेतरह इकट्ठी हो गई। लॉरी के पीछे-पीछे एक पुलिस की मोटर थी, जिसमें दो सार्जेण्ट और १० सिपाही बैठे थे। लॉरी के दो पहियों में पङ्कचर हो गया था। फिर भी वह कालबा देवी रोड तक पहुँच गई। यहाँ इस भीड़ ने भयानक रूप धारण कर लिया।

अहमदाबाद में लाठियों की वर्षा

१४ दिसम्बर को अहमदाबाद के खादिया वार्ड कॉङ्ग्रेस कमिटी ने एक जुलूस निकालना निश्चय किया। जुलूस के बाद एक सभा होने वाली थी, जिसमें ज़ब्त पुस्तकें पढ़ने का विचार किया गया था।

जैसे ही जुलूस निकला, पुलिस ने उसे रोक दिया और पाँच कार्यकर्ताओं को गिरफ़्तार कर लिया। इससे वहाँ बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई और एक दूसरा जुलूस, जिसमें स्त्रियाँ सब से आगे चल रही थीं, दूसरी ओर से बढ़ा। पुलिस ने स्त्रियों को जुलूस से अलग करके उन्हें पुलिस-चौकी में बन्द कर दिया। इसके बाद जुलूस पर लाठियाँ चलाईं। पर भीड़ बढ़ती ही गई और कई छोटे जुलूस निकाले गए। पुलिस ने सब पर लाठियाँ चलाईं। आहत मनुष्य कॉङ्ग्रेस अस्पताल में रक्खे गए हैं।

बाद को स्त्रियाँ छोड़ दी गईं, पर इस सम्बन्ध में नौ आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं।

बम्बई में लाठियों की वर्षा से ७५ मनुष्य घायल :: बाबू गनू के शव का जुलूस रोका गया

१३ दिसम्बर को प्रातःकाल ८ बजे बाबू गनू के शव का एक जुलूस नए कॉङ्ग्रेस अस्पताल से निकला। यह एक लम्बा चक्कर लेकर चौपाटी पर आ रहा था, जहाँ पर अन्त्येष्टि क्रिया करना निश्चय किया गया था। परन्तु चौपाटी से कुछ दूर पर ही पुलिस और अङ्गरेज़ी फ़ौज ने इनका रास्ता रोक दिया। जुलूस के लोग वहीं बैठ गए। क़रीब १२॥ बजे पुलिस ने लाठियाँ चलाईं, जिससे कुछ लोग घायल हुए। इससे प्रोत्साहित होकर जुलूस की महिलाएँ आगे बढ़ कर बैठ गईं और लाठी खाने को तैयार हो गईं। सारा जुलूस सड़क पर बैठा रहा।

क़रीब १॥ बजे श्रीयुत मुन्शी तथा श्री० जमनादास मेहता घटना-स्थल पर पहुँचे और पुलिस कमिश्नर से बहुत देर बात करने के बाद उन्होंने चौपाटी पर अन्त्येष्टि क्रिया करने का विचार छोड़ दिया। इससे पुलिस और फ़ौज हटा ली गई। क़रीब ३ बजे सोनापुर में स्वर्गीय बाबू गनू की अन्त्येष्टि क्रिया की गई। इस स्थान पर तथा रॉयल ऑपेरा हाउस, जहाँ पर जुलूस रोका गया था, रात तक बराबर भीड़ इकट्ठी रही। इसको हटाने के लिए पुलिस ने कई बार लाठियाँ चलाईं। क़रीब ३॥ बजे शाम को रॉयल ऑपेरा हाउस के सामने इकट्ठे हुए लोगों ने कहा जाता है, कुछ पत्थर फेंके, इस पर पुलिस ने लाठियाँ चलाईं। क़रीब ५० आदमी आहत हुए। इस दिन के लाठियों के वार से क़रीब ७५ मनुष्यों को उपचार की आवश्यकता पड़ी। इनमें से २० अभी तक बिस्तर पर पड़े हैं।

शाम को इस सम्बन्ध में एक बड़ा जुलूस निकाला गया। जुलूस में भाग लेने वाले सब लोग नङ्गे सिर थे। जुलूस के बाद आज़ाद मैदान में एक विराट सभा हुई।

विदेशी वस्त्र का गोदाम जला दिया गया

जिस गोदाम से विदेशी वस्त्र हटाने के सम्बन्ध में बम्बई के कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक बाबू गनू की मृत्यु हुई थी, १२ तारीख़ की रात को किसी ने उसके सारे कपड़ों के गट्ठों में आग लगा दी। इस सम्बन्ध में पुलिस जाँच कर रही है। अभी एक भी गिरफ़्तारी नहीं हुई है।

पण्डित मोतीलाल का स्वास्थ्य

इस हफ़्ते की दैनिक रिपोर्ट के पढ़ने से मालूम होता है कि इस हफ़्ते में पण्डित जी का स्वास्थ्य काफ़ी ठीक रहा। आपके थूक के साथ ख़ून भी नहीं निकला और ज्वर भी नहीं आया। आप धीरे-धीरे निरोग हो रहे हैं।

—६ दिसम्बर को लाहौर की महिलाओं ने एक विराट सभा की, जिसमें उन्होंने पण्डित मोतीलाल जी को शीघ्र आरोग्य करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

—१४ दिसम्बर को मध्य प्रान्त की मराठी ज़िलों की युद्ध-समिति ने पण्डित मोतीलाल जी को आरोग्य करने के लिए प्रार्थना-दिवस मनाना निश्चय किया था। उस दिन प्रत्येक शहर में जुलूस निकाले गए और सभाएँ की गईं जिनमें पण्डित जी को शीघ्र निरोग करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की कार्यकारिणी सभा ने इलाहाबाद निवासियों का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है। इसलिए इस संस्था की अगामी बैठक इलाहाबाद में होगी।

बम्बई में फिर से लाठी वर्षा

कालबादेवी रोड के उस स्थान पर, जहाँ कि कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक बाबू गेनू की मृत्यु हुई है, प्रति दिन बहुत भीड़ इकट्ठी होती है। लोग उस स्थान पर फूल और कुङ्कुम चढ़ाते हैं और धूप जलाते हैं। १४ दिसम्बर की रात को वहाँ बहुत सी जनता इकट्ठी हुई। हटाने के लिए पुलीस ने लाठियाँ चलाईं, जिससे १२ आदमियों को चोटें आईं।

बहिष्कार का परिणाम

६ करोड़ २० लाख गज़ कपड़ा सन् १९३० में कम आया

'बम्बई मिल-मालिक एसोसिएशन' की नवम्बर की मासिक रिपोर्ट हाल ही में प्रकाशित हुई है, जिससे बहिष्कार के विदेशी कपड़े के व्यापार के सम्बन्ध में बहुत उपयोगी और ज्ञातव्य बातों का पता चलता है। रिपोर्ट से मालूम हुआ है, कि भारत के हर एक प्रान्त में—और विशेषतः बम्बई में विदेशी कपड़े के आयात में बहुत कमी हुई है।

रिपोर्ट में प्रकाशित संख्या के अनुसार इस साल विदेशी कपड़ा भारत में ९ करोड़ २० लाख गज़ कम आया है। सन्, १९२९ के केवल अक्टूबर मास में सूती कपड़े का कुल आयात १३,५०,००,००० गज़ था, परन्तु सितम्बर सन् १९३० में उसका आयात ४,९०,००,००० गज़ और अक्टूबर, सन् १९३० में ४,३०,००,००० गज़ ही रह गया !!

बेलगाँव में लाठी चली

बेलगाँव के सिटी मैजिस्ट्रेट ने वहाँ की प्रभात-फेरी को रोकने के लिए उन पर १४४ दफ़ा लगा दी है। फिर भी १५ दिसम्बर को प्रभात-फेरी वाले निकले, पर पुलिस ने उन्हें घेर लिया और ३५ आदमियों को गिरफ़्तार किया। इनमें से एक के अतिरिक्त सब शाम को छोड़ दिए गए। १६ तारीख़ को फिर प्रभात-फेरी वालों को पुलीस ने रोक लिया और ६० स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया। जब पुलिस गिरफ़्तार किए हुए लोगों को ले जा रही थी तब कहा जाता है, पुलिस और जनता में मुठ-भेड़ होगई और जनता को भगाने के लिए पुलिस ने लाठियाँ चलाईं, जिससे क़रीब १२ आदमी घायल हुए।

—'बॉम्बे क्रॉनिकल' के प्रकाशक तथा मुद्रक श्रीयुत सोराब जी कपाडिया ने, जिन्हें 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्पादक श्रीयुत ब्रेलवी के साथ कारावास का दण्ड दिया गया था, बम्बई हाईकोर्ट में जो अपील की थी, जो १६ दिसम्बर को ख़ारिज कर दी गई।

श्रीयुत पटेल का स्वास्थ्य

मद्रास से ख़बर आई है कि श्रीयुत विट्ठल भाई की बीमारी से चिन्तित होकर १६ दिसम्बर को श्रीयुत शमुखम चेट्टी राय, एम० एल० सी०, श्रीयुत रत्न सभापति, एम० एल० सी० और श्रीयुत सी० वी० वेङ्कट रामान्न आयङ्गर कोइम्बटूर से मद्रास आए। और उन्होंने मद्रास के लॉमेम्बर से मुलाक़ात की। उन्होंने कहा कि क़रीब एक हफ़्ते से श्रीयुत पटेल का स्वास्थ्य बहुत ख़राब है। इसलिए उन्हें ऐसे डॉक्टर के उपचार में रखना चाहिए, जिस पर उन्हें पूर्ण विश्वास हो। उन्होंने कहा कि श्रीयुत पटेल को कोइम्बटूर की आबहवा से ख़ास शिकायत नहीं है। पर आप क़ब्ज़, हरनिया और बवासीर से पीड़ित हैं। उन्होंने यह भी कहा कि श्रीयुत पटेल वहाँ अकेले घबराते हैं, इसलिए कुछ "ए" दर्जे के क़ैदी कोइम्बटूर भेज दिए जावें। लॉमेम्बर ने इन सब बातों पर ध्यान देने का वचन दिया है।

क़िस्मत का फेर !

एसेम्बली के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट को एक अदना पुलिस-ऑफ़िसर की आज्ञा के सामने नत-मस्तक होना पड़ा !!

दिल्ली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में एसेम्बली के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट पटेल और पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० अली के सम्बन्ध में निम्न घटना प्रकाशित हुई है:—

"भाग्य का चक्र विचित्र होता है। प्रेज़िडेण्ट पटेल की अम्बाला से दिल्ली तक की यात्रा के सम्बन्ध में हाल ही में एक मनोरञ्जक घटना का पता लगा है। मालूम हुआ है कि श्री० पटेल को अम्बाला जेल से दिल्ली लाने वालों में पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० अली भी थे। ये वे ही महाशय हैं, जिन्हें प्रेज़िडेण्ट पटेल ने अपने नए शासन में असेम्बली का 'वाच एण्ड वार्ड' ऑफ़िसर नियुक्त किया था। जिस समय श्री० पटेल दिल्ली में गिरफ़्तार हुए थे, उस समय इन्हीं महाशय ने उनका दिल्ली जेल के फाटक पर स्वागत भी किया था। जिस समय जेल के फाटक पर श्री० पटेल मोटर से उतरे मि० अली ने सदैव की नाईं उन्हें सलाम किया; इस पर श्री० पटेल व्यङ्गपूर्वक हँसे और उन्होंने कहा कि "अभी अब कोई ऑर्डर नहीं है, असेम्बली सदैव के लिए स्थगित कर दी गई है।" जब मि० अली उन्हें दिल्ली स्टेशन पर लाए तब भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट ने इस बात पर बहुत अधिक ज़ोर दिया कि उन्हें रात्रि में दिल्ली में ही रक्खा जाय, क्योंकि मोटर-यात्रा से उनका अस्वस्थ शरीर और भी अधिक निर्बल हो गया था। पुलिस ने प्रत्युत्तर में कहा कि उन्हें श्री० पटेल को सीधा मद्रास ले जाने की आज्ञा मिली है। श्री० पटेल ने एक निराशा-भरी हँसी हँस कर कहा—"अली! मुझे दुःख है, अब मैं किसी के विरोध की अवहेलना नहीं कर सकता!" इतना कह कर वे स्टेशन पर खड़ी हुई मद्रास-मेल पर जाने के लिए तैयार हो गए।"

वायसराय के प्रति शोलापूर की स्त्रियों की प्रार्थना

शोलापूर के १४ स्त्री-सङ्घों की ओर से लेडी लक्ष्मीबाई जगमोहनदास ने वायसराय को तार दिया है। उसमें उन्होंने प्रार्थना की है कि शोलापूर के उन अपराधियों को, जिनको फाँसी का दण्ड दिया गया है, क्षमा प्रदान की जावे। इसी उद्देश से एक और तार लेडी इरविन को भी दिया गया है।

दिल्ली के वकीलों के घरों पर पिकेटिङ्ग

खद्दर पहिनने से इनकार करने पर दिल्ली के दो एडवोकेट श्रीयुत रायबहादुर रामकिशोर तथा श्रीयुत खानबहादुर अब्दुल रहमान के घरों पर १६ दिसम्बर को धरना दिया। कुछ दिन पहिले दिल्ली के बार-एसोसिएशन ने खद्दर पहिनने का प्रस्ताव पास किया था। फिर दिल्ली की महिला-स्वयंसेविकाओं ने भी यह नोटिस दिया था कि जो वकील खद्दर पहिनने से इनकार करेगा उसके घर पर धरना दिया जावेगा। परन्तु इस पर भी इन दो वकीलों ने खद्दर पहिनने से इनकार किया। इससे इनके घरों पर पिकेटिङ्ग की गई।

इसके फलस्वरूप उसी दिन शाम को रायबहादुर रामकिशोर ने खद्दर पहिनने का वचन दे दिया, पर अभी खानबहादुर का दिल नहीं पसीजा है।

हाईकोर्ट द्वारा श्री० नगीनदास मास्टर की सज़ा रद्द कर दी गई

श्री० नगीनदास मास्टर

श्रीयुत नगीनदास मास्टर, जो कि बम्बई की युद्ध-समिति के डिक्टेटर थे और जो नवें ऑर्डिनेन्स के अनुसार १९वीं अक्टूबर को गिरफ़्तार किए गए थे, तारीख़ ११ दिसम्बर को नासिक जेल से रिहा कर दिए गए। बम्बई के हाईकोर्ट के न्यायाधीशों ने कहा कि चूँकि बम्बई युद्ध-समिति को ग़ैर-क़ानूनी ठहराने का नोटिस देने के पहिले ही आप गिरफ़्तार कर लिए गए थे, आपकी गिरफ़्तारी क़ानून के ख़िलाफ़ है। इसलिए हाईकोर्ट ने आपकी सज़ा रद्द कर दी।

श्री० मनीलाल कोठारी राजकोट से निकाल दिए गए

मोटरों और चारपाइयों से रास्ता रोका गया !

बधवान सिटी का १३ वीं दिसम्बर का समाचार है कि राजकोट स्टेट से श्री० मनीलाल कोठारी, जो एक अत्यन्तावश्यक निमन्त्रण मिलने के कारण सन्ध्या समय वहाँ से मोटर से रवाना हुए थे—६६ मील की यात्रा के बाद जिस समय उनकी मोटर ६ बजे राजकोट से २ मील दूर आनन्दपुर गाँव में पहुँची, उसी समय राजकोट स्टेट के पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट ने, जो बीच रास्ते में मोटर खड़ी किए था, उन्हें मोटर खड़ी करने का हुक्म दिया और मोटर खड़ी होने पर उसने उन्हें शासन सभा के श्री० आफ़ और श्री० देवशङ्कर देवी का वह ऑर्डर दिखाया, जिसमें उन्हें राजकोट में

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के दूसरे कॉलम के नीचे देखिए)

अखण्डाकार-मेज़ के 'प्रतिनिधियों' को मि० चर्चिल का थप्पड़

गाँधीवाद और उसके समस्त साधनों को कुचल डालने का प्रस्ताव

भारत को स्वराज्य कदापि नहीं मिल सकता !!

"अभी तक भारतीयों को मीठी बातों के सिवाय, न तो भारतीय गवर्नमेण्ट ने कुछ दिया और न सम्राट की गवर्नमेण्ट ने। इसलिए स्पष्ट रूप से यह घोषित कर देना अत्यन्तावश्यक प्रतीत होता है, कि भारत पर से शासन की बागडोर ढीली करने की ब्रिटेन की तनिक भी इच्छा नहीं है और गोलमेज़ परिषद को शासन-विधान बनाने का कोई अधिकार नहीं है। उसके निर्णयों को मानने के लिए पार्लामेण्ट न तो नैतिक दृष्टि से बाध्य है और न क़ानून की दृष्टि से।…सन्, १९२० का एक्ट अचल चट्टान की नाईं स्थित रहेगा।…… गाँधीवाद और उसके सब साधनों को जितनी जल्दी हो सके कुचल डालना चाहिए। शेर को बिल्ली का मांस खिला-खिला कर सन्तुष्ट करना निरर्थक है।……सम्राट के मुकुट में से वह अमूल्य हीरा, जो सब उपनिवेशों और संरक्षित राज्यों से अधिक मूल्यवान है और जिस पर ब्रिटिश साम्राज्य की समस्त शक्ति और वैभव निर्भर है, निकाल फेंकने की हमारी तनिक भी इच्छा नहीं है।"

लन्दन में ११वीं दिसम्बर को 'भारतीय साम्राज्य सोसाइटी' के उपलक्ष में शहर के व्यापारियों की एक सभा हुई थी, जिसके सम्बन्ध में यह घोषणा की गई थी, कि उसका राजनीति से कोई सम्बन्ध न रहेगा। इस सभा में मि० चर्चिल ने एक वक्तृता दी थी, जिसमें उन्होंने कहा है, कि अभी तक भारतीयों को मीठी बातों के सिवाय, न तो भारतीय गवर्नमेण्ट ने ही कुछ दिया है और न सम्राट की गवर्नमेण्ट ने। इसलिए स्पष्ट रूप से यह घोषित कर देना अत्यन्तावश्यक प्रतीत होता है, कि भारतीयों के जीवन और उनकी उन्नति के अधिकारों पर से शासन की बागडोर ढीली करने की ब्रिटेन की तनिक भी इच्छा नहीं है और गोलमेज़ परिषद को शासन-विधान बनाने का कोई अधिकार नहीं है! उसके निर्णयों को मानने के लिए पार्लामेण्ट, न तो नैतिक दृष्टि से बाध्य है और न क़ानून की दृष्टि से। उन्होंने कहा कि हाउस ऑफ़ कॉमन्स में इस समय भी अधिकांश संख्या ऐसे सदस्यों की है, जो भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य नामक कोई चीज़ देने के कट्टर विरोधी हैं; और यह निश्चित है कि 'गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया एक्ट' पार्लामेण्ट के सामने पेश होने के पहले ही इङ्गलैण्ड में नए 'हाउस ऑफ़ कॉमन्स' का प्रादुर्भाव हो जायगा। "इसलिए लगातार सत्य को छिपाने और समस्याओं का दृढ़तापूर्वक सामना न करने का परिणाम यह होगा, कि उससे झूठी आशाओं का सञ्चार होगा और उससे अन्त में झगड़ा और कष्ट बढ़ेगा।" मि० चर्चिल की सम्मति से यदि भारत स्वतन्त्र कर दिया जाय, तो उसका वैसा पतन हो जायगा, जैसा चीन का हुआ है! भारतीय मनोवृत्ति में जो परिवर्तन हुआ है, उसका कारण भारतीय प्रजा नहीं है, बल्कि उसका प्रधान कारण हमारी राजनीति का पतन और हमारी मानसिक निर्बलता है! उन्होंने भारतीय प्रजा को इस बात की चेतावनी दी है कि 'उसके मित्र' ऊपरी दिखावट के चकमे में आने वाले नहीं हैं। पश्चिमीय प्रजातन्त्र राजनीति पर वादविवाद होता रहेगा और गोलमेज़ में हवाई महल बनते रहेंगे, परन्तु भारत पर (ब्रिटिश लोगों का) शासन कार्य सञ्चालित होता रहेगा। भारत के २४ हज़ार राजनीतिज्ञ या वञ्चक समस्त देश में जेलों में बन्द हैं! अशान्ति का दमन कर दिया गया है और गाँवों के आन्दोलन पर विजय प्राप्त की जा चुकी है। मि० चर्चिल ने ब्रिटिश राष्ट्र से अपनी शक्ति का अनुभव करने की और उसके सहारे भारत में दृढ़ शासन स्थापित करने की प्रार्थना की है।

'कॉङ्ग्रेस को कुचल डालो'

उन्होंने इस बात की घोषणा की कि यदि जल्दी औपनिवेशिक स्वराज्य देने की आशा न दी जाती, हमने भारतीय प्रजा की आर्थिक दशा उन्नत बनाने के सम्बन्ध में अपनी शक्ति एकत्र की होती, यदि लाहौर की कॉङ्ग्रेस, जिसने 'यूनियन जैक' जलाया था, भङ्ग कर दी गई होती और उसके नेता निर्वासित कर दिए गए होते, और यदि गाँधी उसी समय गिरफ़्तार कर लिए गए होते, जब उन्होंने नमक-क़ानून भङ्ग किया था, तो अभी इतनी क़ानूनी कार्यवाही की आवश्यकता न पड़ती।

कुमारी मनीबेन पटेल तथा कुमारी नोरोजी जेल से छूट आईं

सरदार वल्लभभाई पटेल की विदुषी पुत्री कुमारी मनीबेन पटेल

सरदार वल्लभ भाई पटेल की सुपुत्री कुमारी मनीबेन पटेल और स्वर्गीय दादाभाई नोरोजी की पौत्री कुमारी के० नोरोजी ८ दिसम्बर को जेल से छूट आई हैं।

उन्होंने कहा कि १९२० का एक्ट अचल चट्टान की नाईं स्थित रहेगा।

नई पार्लामेण्ट को इस बात का निश्चय करना होगा कि भारत के सम्बन्ध में अब क्या करना चाहिए। 'भारत के शासन-विधान के निर्णय सम्बन्धी हमारे अधिकार और हमारी शक्ति में कोई दख़ल नहीं दे सकता।' हम सुधार बन्द करने और उन्हें वापस लेने में स्वतन्त्र हैं। यह स्पष्ट है कि समस्त भारत के लिए शासन-विधान का विचार मात्र ही बहुत बुरा है। उनके विचार से केन्द्रीय-शासन के स्थान में भारत के प्रान्तों को स्वराज्य के अधिकार दिए जायँ और उनके उन्नत होने पर समस्त भारत के लिए एक गवर्नमेण्ट स्थापित की जाय।

गोलमेज़ के प्रतिनिधि सच्चे भारत के प्रतिनिधि नहीं हैं

उन्होंने श्रोताओं का ध्यान इस बात पर आकर्षित किया कि वे भारतीय, जो गोलमेज़ परिषद में एकत्र हुए हैं, भारत की उन शक्तियों के सच्चे प्रतिनिधि नहीं हैं, जिसने भारत में ब्रिटिश राज्य को चैलेञ्ज दे दिया है। उन्हें अपने निर्णयों के अनुसार कॉङ्ग्रेस पार्टी को बाँधने का अधिकार नहीं है। सोशियालिस्ट गवर्नमेण्ट के सुधार देने से क्रान्तिकारियों की माँगें बढ़ती ही जायँगी। सच बात तो यह है कि गाँधीवाद और उसके सब साधनों को जितनी जल्दी हो सके, शिकञ्जे में जकड़ कर कुचल डालना चाहिए। शेर को बिल्ली का मांस खिला-खिला कर सन्तुष्ट करना निरर्थक है।

अन्त में मि० चर्चिल ने कहा कि "हमारी इच्छा सम्राट के मुकुट में से वह अमूल्य हीरा, जो अन्य सब उपनिवेशों और संरक्षित राज्यों से अधिक मूल्यवान है और जिस पर ब्रिटिश साम्राज्य की समस्त शक्ति और वैभव निर्भर है, निकाल फेंकने की तनिक भी नहीं है। हमें अभी भी यह सीखने की आवश्यकता है, कि उस राष्ट्र का, जिसने इतना वैभव सम्पन्न किया है, आत्म-विश्वास की कमी और नैतिक पतन के कारण, अधःपतन हो जायगा।"

इस सभा के सभापति विस्काउण्ट समनर थे और लॉर्ड इञ्चकेप, लॉर्ड इस्लिङ्गटन, लॉर्ड डेन्सफ़ोर्ट, सर माइकिल ओडायर और सर रेगीनाल्ड क्रेडक आदि महामना सभा में उपस्थित थे।

* * *

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

सेक्रेटरिएट के फाटक बन्द !

पुलिस का सख़्त पहरा; अफ़सरों तक को पास दिए गए

कलकत्ते का १०वीं दिसम्बर का समाचार है कि भविष्य में षड्यन्त्रकारियों के उपद्रव से रक्षा करने के लिए 'राइटर्स बिल्डिङ्ग' के डेलहाउज़ी स्क्वायर वाले दरवाज़े को छोड़ कर और सब दरवाज़े जनता के लिए बन्द कर दिए गए हैं। मालूम हुआ है कि बड़े-बड़े अफ़सरों को पास दिए जायँगे और साधारण कर्मचारी धातु के बने डिस्कों का उपयोग करेंगे। फाटक पर पुलिस का सख़्त पहरा लगा दिया गया है। यह भी कहा जाता है कि दर्शकों को अन्दर जाने की आज्ञा देने के लिए एक विशेष अफ़सर नियुक्त किया गया है।

तलाशी लेते समय बम फटा

चिटगाँव में १०वीं दिसम्बर को सवेरे पुलिस ने शहर भर में लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल सिमसन की हत्या के सम्बन्ध में २२ घरों की तलाशी ली। जिस समय पुलिस डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के हेड क्लर्क बाबू विनोद चौधरी के घर की तलाशी ले रही थी, उस समय ऊपर की मञ्ज़िल में एक बम फटा और उससे एक बुढ़िया घायल हुई। पुलिस उसी समय ऊपर के मञ्ज़िल में दौड़ी गई और उसने कीलें, काँच के टुकड़े और तार बटोर लिए। बम के रसायनों के प्रमुख इन्स्पेक्टर, जो इस समय वहाँ चिटगाँव शस्त्रागार षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में गवाही दे रहे हैं, उस घर की तलाशी ले रहे हैं। श्री० चौधरी तथा बङ्किम कोतवाली में रोक लिए गए हैं, और उनके भतीजे नारायण चौधरी, जो मैट्रिक क्लास के विद्यार्थी हैं, हिरासत में रख लिए गए हैं।

—चिटगाँव का १२वीं दिसम्बर का समाचार है कि नारायण चौधरी ने सब-डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट के सम्मुख एक लम्बा बयान दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप उसका पड़ोसी सुधीर चटर्जी भी गिरफ़्तार कर लिया गया है। विनोद चौधरी और कलेक्टर के ऑफ़िस के क्लर्क बङ्किम को ज़मानत देने की आज्ञा दी गई है। १२ ता० को और भी बहुत से घरों की तलाशी ली गई। पुलिस उनमें से बहुत सी किताबें उठा ले गई है।

इलाहाबाद की धर्मशाला में बम फटा :: तीन गिरफ़्तार हुए

इलाहाबाद में ११वीं दिसम्बर को सवेरे मुट्ठीगञ्ज में एक नाई की मृत्यु हो जाने के सन्देह में तीन आदमी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। पुलिस का कहना है कि नाई की मृत्यु बम के रासायनिक द्रव्यों के भभकने से हुई है। पुलिस ने इन रासायनिक द्रव्यों के भभकने के स्थान का भी पता लगा लिया है। उसने मुट्ठीगञ्ज में नाई के घर के पास की धर्मशाला की तलाशी ली और वहाँ एक कमरे में उसे निम्न पदार्थ प्राप्त हुए :—

सलफ़र साल्टपीटर, लोहे की कीलों के टुकड़े, काँच के टुकड़े। एक ख़ाली नारियल और आदमी के मांस के टुकड़े (मृतक नाई के एक हाथ की अँगुलियाँ द्रव्य भभकने के कारण उड़ गई थीं।)

धर्मशाला की दीवार पर उस प्रकार के निशान भी बने थे, जैसे बम फटने से या गोली चलाने से बन जाते हैं। पोस्ट मार्टम के समय नाई के शरीर में से भी कुछ ऐसे द्रव्य निकाले गए थे। वे पुलिस को दे दिए हैं।

मालूम होता है कि पुलिस ने इन बातों से यह निष्कर्ष निकाला है, कि नाई बम या बम की तरह कोई पदार्थ बना रहा था, जिसके उद्देश्य का पता नहीं लगता। परन्तु प्रयोग में सफलता प्राप्त करने के पहले ही रसायनों के दुरुपयोग से वे फट पड़े। कोतवाली से जो समाचार प्राप्त हुए हैं, उनके अनुसार धर्मशाला का मालिक फुनई पण्डा, धर्मशाला का एक चपरासी और लाला मल्लाह, जो पुलिस के कहने के अनुसार फुनई का दोस्त है, गिरफ़्तार किए गए हैं। पुलिस को मालूम हुआ है, कि बुधवार को ४ या ५ बजे शाम को एक धड़ाका हुआ था, परन्तु जिस समय पुलिस नाई के घर पहुँची थी उस समय लोगों ने उसे कोई पता नहीं दिया।

—लाहौर का १०वीं दिसम्बर का समाचार है कि ग्वालमण्डी बम-केस में एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के सम्मुख बयान देते हुए हरचरण दयाल ने कहा है कि समाचार-पत्र पढ़ने के उपरान्त उसने बिना किसी लक्ष्य के जङ्गल में प्रयोग करने के लिए बम बनाने का विचार किया। अनारकली के कारीगर के लड़के ने मुक़दमे के पक्ष में गवाही दी। यशपाल ने कहा कि अनारकली में उसके पिता का दवाख़ाना है। अभियुक्त हरचरण दयाल, जो डॉक्टर हंसराज का कम्पाउण्डर था, दवाइयाँ ख़रीदने उसकी दूकान पर आया करता था। लगभग डेढ़ माह पहले अभियुक्त ने दूकान से सल्फ़्यूरिक एसिड, पोटैशियम क्लोराइड और कॉर्बोलिक एसिड ख़रीदा था। साइकिल मरम्मत करने वाले चुन्नीलाल ने कहा कि वह अभियुक्त के लिए ढाई माह पहले एक ख़ाली नारियल लाया। दिखाने पर उसने बम का ख़ोल पहचान लिया।

—लाहौर का १०वीं दिसम्बर का समाचार है कि लाहौर के नए षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में स्पेशल ट्रिब्यूनल ने यह स्पष्ट कर दिया है कि केस इस माह में प्रारम्भ न हो सकेगा। सरकारी गवाहों और उनके बयानों की लिस्ट पूरी न हो सकने के कारण केस १५ ता० को स्थगित कर दिया गया। इसके उपरान्त पञ्जाब के क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार अभियुक्तों को मामले का अध्ययन करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया जायगा और २३ दिसम्बर से २री जनवरी तक अदालत क्रिसमस के कारण बन्द रहेगी। इस प्रकार मामला २री जनवरी के पहले प्रारम्भ न हो सकेगा। १०वीं दिसम्बर को अभियुक्त क्रान्तिकारी नारे लगाते हुए अदालत में प्रविष्ट हुए थे। अभियुक्तों ने अदालत से वकीलों के ख़र्च के लिए ३००) मञ्ज़ूर करने के लिए कहा। अदालत ने उनकी प्रार्थना लोकल गवर्नमेण्ट के पास भेजना मञ्ज़ूर कर लिया है। अभियुक्त कृष्णगोपाल ने कहा कि कल ता० ६ को एक मैजिस्ट्रेट गवाहों के साथ जेल में आया था और उसने उन्हें अभियुक्तों को बतलाया था। ट्रिब्यूनल ने यह विरोध उपयुक्त अवसर पर उठाने के लिए कहा।

—ढाका का ६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ कर्नल सिमसन की हत्या के सम्बन्ध में सवेरे बहुत से घरों की तलाशी ली गई है। बङ्गाल-ऑर्डिनेन्स के अनुसार निम्न पाँच आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं। स्थानीय पुस्तकालय के मालिक और स्पोर्टिङ्ग क्लब के सेक्रेटरी श्री० सुरेन्द्रलाल दत्त, श्री० अमूल्य नवजीवन दत्त, पेन्शन याफ़्ता डिपुटी मैजिस्ट्रेट रायबहादुर गिरीशचन्द्र नाग के पुत्र श्री० प्रभातचन्द्र नाग और ढाका मेडिकल स्कूल के विद्यार्थी श्री० कामाख्य मुकर्जी—ये मिटफ़ोर्ड अस्पताल में उस समय गिरफ़्तार किए गए थे जब वे अपनी ड्यूटी पर थे।

—लाहौर का ६वीं दिसम्बर का समाचार है कि दशहरा बम केस के अभियुक्त श्री० अब्दुलग़नी को स्पेशल मैजिस्ट्रेट ने सेशन्स सुपुर्द कर दिया है। पाठकों को स्मरण होगा, कि सन् १९२८ में लाहौर में दशहरे के जुलूस पर एक बम फेंका गया था, जिसके परिणाम स्वरूप ६ आदमी मर गए थे और बहुत से घायल हुए थे। अभियुक्त पर उसी सम्बन्ध में मामला चलाया जा रहा है।

—कलकत्ते का १२वीं दिसम्बर का समाचार है कि दक्षिण कलकत्ते के मकान में बड़े तड़के चुन्नीलाल मुकर्जी अपने घर में गिरफ़्तार कर लिया गया। तलाशी लेने पर उसके पास एक रिवॉल्वर और बहुत से कारतूस मिले। पुलिस ने यह धावा मि० सिमसन की हत्या के सम्बन्ध में किया था।

षड्यन्त्रकारी सुरेश को आजन्म कालापानी

कलकत्ते का १५वीं दिसम्बर का समाचार है कि अलीपुर के स्पेशल ट्रिब्यूनल ने, जिसके सभापति २४ परगनों के डिस्ट्रिक्ट और सेशन्स जज मि० आर० आर० गार्लिक थे—सुरेशचन्द्र दास को, जिस पर १७वीं अक्टूबर की रात्रि को आर्मीनियन स्ट्रीट में सशस्त्र डकैती के अभियोग में मुक़दमा चल रहा था, आजन्म कालेपानी का दण्ड दे दिया। पुलिस के बयानों में कहा गया था कि चार युवक, रिवॉल्वरों और बर्छियों के साथ एक व्यापारी के मकान की दूसरी मञ्ज़िल पर चढ़े थे और मार डालने की धमकी देकर तीन हज़ार रुपए लेकर वहाँ से भागे थे। दरबान के रोकने पर वह गोली से मार डाला गया था। अन्य तीन अभियुक्त भाग गए थे, केवल सुरेश ही गिरफ़्तार किया जा सका था।

दिनेश गुप्त की स्थिति ख़तरनाक

कलकत्ते से समाचार आया है कि गत शनिवार को सवेरे कर्नल सिमसन के घातक दिनेश गुप्त की दशा कुछ अच्छी थी, परन्तु सन्ध्या समय स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक हो गई। उसकी छाती और हाथों के जोड़ों में बहुत दर्द था।

विनय कृष्ण बोस का स्वर्गवास

श्मशान में २ बजे रात्रि को बन्देमातरम की गूँज

१३ दिसम्बर का ६॥ बजे सवेरे श्रीयुत विनय कृष्ण बोस का, जिन पर बङ्गाल पुलिस के इन्स्पेक्टर जनरल लोमैन तथा बङ्गाल के जेलों के इन्स्पेक्टर-जनरल कर्नल सिमसन की हत्या का अभियोग लगाया जाता है, कलकत्ते के मेडिकल कॉलेज के अस्पताल में स्वर्गवास हो गया।

आपकी मृत्यु के बाद आपका पोस्ट मार्टम किया गया। और क़रीब दो बजे कलकत्ते के कॉरोनर श्रीयुत ए० सी० दत्त ने आपके शव का निरीक्षण किया।

श्रीयुत विनय के ज्येष्ठ भ्राता श्रीयुत विजय कृष्ण बोस ने आपकी लाश की अन्त्येष्टि-संस्कार करने की दरख़्वास्त दी। इस पर उनसे कहा गया कि आप श्रीयुत विनय की लाश ले जा सकते हैं, पर वह आपको १ बजे रात के पहिले नहीं मिल सकती। फिर आपको इस शव को पुलिस द्वारा बताए रास्ते से ले जाना पड़ेगा। आपको श्रीयुत विनय की अन्त्येष्टि क्रिया नीमतल्ला में करनी पड़ेगी। इस पर उनके ज्येष्ठ भ्राता ने केवड़ा टोला में अन्त्येष्टि क्रिया करने की प्रार्थना की, पर वह नामञ्ज़ूर कर दी गई।

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के पहिले कॉलम के अन्त में देखिए)

गोलमेज़ की गाड़ी हिन्दू-मुस्लिम समस्या के दलदल में अटक गई

गोलमेज़ परिषद की गाड़ी हिन्दू-मुस्लिम समस्या के रोड़े में अटकी है ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री मैकडॉनल्ड स्वतः इस विषय में काफ़ी दिलचस्पी दिखा रहे हैं, पर इससे अभी तक यह समस्या कुछ ठीक तरह से हल नहीं हुई है।

तारीख़ १० से लेकर १४ तक प्रधान सचिव के घर पर मुख्य-मुख्य हिन्दू तथा मुसलमान सदस्य इकट्ठे हुए। हिन्दुओं ने इस विषय में प्रधान-मन्त्री की राय मानना मञ्ज़ूर किया, पर मुस्लिम सदस्यों ने कहा है कि हम इन की राय को सुनने के बाद अपना मत प्रकट करेंगे। इतने दिनों की बातचीत के बाद भी कुछ समझौता नहीं हो पाया। मुसलमान सदस्य अधिकतर श्रीयुत जिन्ना की १४ शर्तों पर ज़ोर दे रहे हैं। हिन्दू सदस्य इनमें से बहुत सी शर्तों के ख़िलाफ़ हैं। हिन्दू सदस्य सम्मिलित चुनाव चाहते हैं और सिन्ध को अलग प्रान्त बनाने के ख़िलाफ़ हैं। बङ्गाल तथा पञ्जाब में मुसलमानों को विशेष अधिकार देने का भी प्रश्न बहुत झगड़े का है, इस विषय में भी समझौता करने में बड़ी कठिनाइयाँ पड़ रही हैं।

राउण्डटेबिल परिषद के कई सदस्य तो अभी से हिम्मत हार बैठे हैं। उनका विश्वास है कि अब समझौता नहीं हो सकता, पर लिबरल-दल वाले अभी फिर से बातचीत शुरू करने का प्रयत्न कर रहे हैं। सर तेज बहादुर सप्रू ने इस विषय में श्रीयुत मैकडॉनल्ड तथा भारत-मन्त्री श्रीयुत वेजवुड बेन से १५ और १६ तारीख़ को बातचीत की है। और प्रधान सचिव ने इस सम्बन्ध में आगा ख़ान से भी बातचीत की है। भारत की हिन्दू तथा मुसलमान सभाओं ने सदस्यों को कई तार भेजे हैं जिसमें उन्होंने अपने-अपने जाति के सदस्यों से कहा है कि यदि वे बिना उनके लाभ का ख़याल किए हुए समझौता कर लेंगे तो हम उसे अस्वीकार करेंगे। इन तारों में मुसलमान जिन्ना की १४ शर्तों का समर्थन करते हैं और हिन्दू डॉक्टर मुञ्जे के विचारों से पूर्णतया सहमत हैं। ऐसी दशा में समझौता होना बहुत कठिन मालूम होता है।

ब्रह्मदेश-समिति

गोलमेज़ परिषद में ब्रह्मदेश को अलग करने का प्रस्ताव पास हो जाने के उपरान्त ब्रह्मदेश की शासन-प्रणाली निर्माण करने के लिए एक अलग समिति बनाई गई है। ब्रह्मदेश के निवासियों ने वहाँ के सदस्यों को तार दिया है कि भारत से अलग होने के बाद यदि हमें औपनिवेशिक स्वराज्य देने का वचन न दिया जावेगा तो हम भारत से अलग होना स्वीकार नहीं करते।

उनके प्रतिनिधि श्रीयुत बा० पे ने इसके उत्तर में कहा है कि यदि ब्रिटिश सरकार हमें औपनिवेशिक स्वराज्य देने का वचन नहीं देगी तो हम भारत से अलग होना पसन्द नहीं करेंगे।

प्रान्तीय शासन भारतीयों को सौंप दिया जावे

फ़ेडरल-कमिटी भारतीयों तथा भारतीय रियासतों के अधिकारों को तय करने की कोशिश कर रही है। अभी तक इसमें कोई भेद-भाव नहीं हुआ है। भारतीय रियासतों के महाराजा इस विषय में बड़ी उदारता दिखा रहे हैं।

फ़ेडरल-कमिटी ने भारत की भविष्य शासन-प्रणाली का नक़शा तैयार कर लिया है। केन्द्रीय शासन के लिए दो सभाएँ बनाना निश्चय हुआ है। दोनों सभाओं में रियासतों के प्रतिनिधि होंगे, यह भी तय किया गया है कि प्रान्तीय शासन का पूरा भार भारतीयों को दे दिया जावे।

(७वें पृष्ठ का शेषांश)

श्मशान-यात्रा

यद्यपि विनय का शरीर ६ बजे रात्रि को देने का वचन दिया गया था, पर वह १ बजे रात्रि तक नहीं दिया गया। ६ बजे रात्रि से ही चीर घर के पास बहुत सी जनता इकट्ठी हो गई थी। और विनय कृष्ण की अन्तिम झाँकी देखने की राह देख रही थी। क़रीब १० बजे पुलिस वहाँ पहुँची और उसने भीड़ को वहाँ से भगा दिया।

रात्रि को १ बजे श्रीयुत विनय की लाश दी गई और विनय के पिता श्रीयुत रेवती मोहन बोस, उनके भाई तथा अन्य बान्धव उन्हें फूलों से सजे विमान में नीमतल्ला घाट तक ले गए। साथ में पुलिस का एक ज़बरदस्त जत्था गया था। और इसके पीछे जन-समूह! बारम्बार 'बन्देमातरम्' की आवाज़ें रात्रि के सन्नाटे में गूँज उठती थीं।

श्मशान घाट पर

पुलिस की रुकावट से रास्ते भर जनता को विनय कृष्ण के अन्तिम दर्शन करने का मौक़ा नहीं मिला, पर समाचार-पत्रों द्वारा उन्हें मालूम हो गया था, कि दाह-क्रिया नीमतल्ला में होने वाला है। अँधेरी रात थी, सर्दी भी कड़ाके की पड़ रही थी, फिर भी ६ बजे से कलकत्ते की जनता नीमतल्ला पर इकट्ठी होने लगी। रात को दो बजे विनय कृष्ण का विमान वहाँ पहुँचा, तब तक सारी भीड़ वहाँ ठण्ढक में ठिठुरती हुई डटी रही। विमान के पहुँचते ही "बन्देमातरम" की ध्वनि से सारा आकाश गूँजने लगा। प्राचीन कर्म काण्ड के अनुसार अन्त्येष्टि-क्रिया और चिता में अग्नि प्रज्वलित की गई। कुछ देर बाद उनके सुगठित शरीर के स्थान पर थोड़ी सी राख शेष रह गई, जो जान्हवी के पवित्र जल में बहा दी गई।

* * *

(पाँचवें पृष्ठ का शेषांश)

प्रवेश करने की मनाही की गई थी। जैसा कि ऑर्डर से पता चलता है, उनका प्रवेश रोकने का मुख्या-उद्देश्य यह था, कि वे ब्रिटिश भारत से निर्वासित किए गए थे और उनकी उपस्थिति से राजकोट में सनसनी फैलने की आशङ्का थी।

कुछ ही क्षण बाद पश्चिमीय भारतीय रियासतों की एजेन्सी के चार अफ़सर; एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० वैज़लगेट आई० सी० एस०, पुलिस के डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० डावर, ख़ुफ़िया पुलिस के इन्स्पेक्टर जैचन्द और हेड कॉन्स्टेबिल मोहनलाल वहाँ आ गए और उन्होंने अपनी मोटरों और चारपाइयों से रास्ता बिलकुल रोक लिया। इसके बाद उन्हें कॉन्स्टेबिल ने पश्चिमी रियासतों के एजेण्ट का नोटिस दिया, जिसमें उन्हें राजकोट की हद में प्रवेश न करने की आज्ञा दी गई थी। परन्तु श्री० कोठारी ने उस पर दस्तख़त करने से इन्कार कर दिया। उनके स्वागत के लिए राजकोट के २०,००० निवासी शहर के बाहर आ गए थे, परन्तु आनन्दपुर गाँव तक, जहाँ वे रोके गए थे, थोड़े से ही आदमी मोटर से आने पाए। अभ्यागतों से थोड़ी देर बात कर श्री० कोठारी वहाँ से चले गए और उन्होंने ब्रह्मनबर्न गाँव के डाक-बङ्गले पर रात्रि बिताई। सवेरे वे बधवान चले गए। वहाँ से वे दूसरे दिन काठियावाड़ की विदेशी वस्त्र-बहिष्कार समिति की बैठक में सम्मिलित होने भावनगर गए।

* * *

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

"मरतिहु बार कटक संहारा" के अनुसार लॉर्ड इरविन के अन्तिम ऑर्डिनेन्स ने अपनी मृत्यु से पहले इलाहाबाद की तमाम राजनीतिक संस्थाओं को 'ग़ैर-क़ानूनी' विघोषित कर दिया है। लेहाज़ा इलाहाबाद से तो यू० पी० की सरकार के साथ ही अपने राम भी निश्चिन्त हो गए। अब यू० पी० के लाट साहब को चाहिए कि एक दिन त्रिवेणी-तट पर भङ्ग-बूटी की व्यवस्था करें और भविष्य के लिए इलाहाबादियों के गले में काल-भैरव का काला 'गण्डा' बाँध दें ताकि टोना-टोना लगने का भय सदा के लिए दूर हो जाय।

* * *

मगर इतने ही से बस न समझ लीजिएगा, क्योंकि यू० पी० की सरकार बुद्धिमानी पर अच्छी तरह कमर बाँध चुकी है। उपर्युक्त पुण्यपूत कार्य के साथ ही उसने बनारस 'योनिभ्रष्टी' की सहायता भी बन्द कर दी है। इसका कारण यह है कि सारे फ़साद की जड़ युनिवर्सिटियाँ ही हैं। इन कलमुँही सौतों का अस्तित्व अगर इस देश में न होता तो किस में ताब थी, जो सखी नौकरशाही की ओर आँखें उठाने का साहस कर सकता? फलतः अपने परिश्रम की कमाई से सौतों की सहायता न करना ही बुद्धिमानी है।

* * *

परन्तु हिज़ होलीनेस के लँगोटिया यार श्री० शास्त्री लम्बोदरानन्द जी का कहना है कि नौकरशाही ने अगर युनिवर्सिटी की सहायता बन्द कर दी तो अच्छा हुआ; 'वेश्या रूठी धर्म बचा!' युनिवर्सिटी बेचारी ग़ुलामी के बन्धन से मुक्त हुई। ईश्वर उन्हें सुबुद्धि दे और देश की सारी यूनिवर्सिटियों को इसी तरह अपने प्रेम-पाश से विमुक्त कर दें, तो देश का प्रभूत कल्याण हो!

* * *

श्री० काका कालेलकर का कहना है कि महात्मा गाँधी का वज़न १२४ पौण्ड से घट कर १०१ पौण्ड रह गया है, क्योंकि यरवदा जेल का पानी उपयुक्त न होने के कारण उन्हें अजीर्ण हो गया है। मगर अपने राम की तो राय है कि सखी-नौकरशाही ने उनके लिए लेह्य-पेयादि उपादेय खाद्य-पदार्थों की जो व्यवस्था कर रक्खी है, उसीसे अजीर्ण हो गया है। रह गया वज़न का घटना, सो यह तो नौकरशाही के मेहमांसरा की विशेषता ही ठहरी!

* * *

(दूसरे पृष्ठ का शेषांश)

—दिल्ली की जमीयतउलउलेमा के प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत मौलवी आसफ़ अली १२ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए।

—विदेशी वस्त्र पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए अमृतसर के ४५ स्वयंसेवकों को २ मास से लेकर ६ मास तक की कड़ी सज़ा दी गई।

—लायलपूर के ६ स्वयंसेवकों को जो विदेशी वस्त्र पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार हुए थे, १२ दिसम्बर को सज़ा का हुक्म सुनाया गया। इनमें से एस० भगतसिंह और कॉमरेड देवसिंह को एक माह की सज़ा दी गई है। श्रीयुत मङ्गलदास और तेज को १ हफ़्ते की सादी सज़ा दी गई है। और अन्य दो स्वयंसेवकों को ५०) जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है; जुर्माना न देने पर इनको भी एक हफ़्ते की सादी क़ैद भुगतनी पड़ेगी।

* * *

मि० ब्रेल्सफ़र्ड की भविष्यवाणी

"जब तक स्वराज्य न हो जायगा हम लगान न देंगे"

गोलमेज़ पर मृतक भारत की प्रेतात्मा बैठी है !

हर एक भारतीय के हृदय में विजेताओं की श्रेष्ठता और उनके प्रगल्भ और मदपूर्ण आचरण से एक गहरा घाव बन गया है। यदि भारत के सम्बन्ध में सोच-विचार करने में देर की जायगी, तो यह संग्राम केवल महीनों के लिए नहीं, वर्षों के लिए बढ़ जायगा। गुजरात से लगानबन्दी के आन्दोलन की हवा इलाहाबाद बह आई है और वहाँ से दूसरे भागों में फैलते देर न लगेगी। यह किसानों की ग़रीबी की समस्या हल कर देगा। मैंने स्वयं किसानों को यह घोषणा करते हुए सुना है, कि 'जब तक स्वराज्य नहीं हो जायगा, हम लगान न देंगे।' उनका विश्वास है कि इससे उनके बच्चों को घी-दूध मिलने लगेगा। जो कल राष्ट्रीय क्रान्ति थी, उसके भविष्य में भूमि सम्बन्धी विद्रोह में परिवर्तित होने की आशङ्का है। गवर्नमेण्ट की आमदनी का मुख्य द्वार ख़तरे में है और इस विद्रोह का अन्त वह भयङ्कर हानि सह कर लगान बिल्कुल बन्द किए बिना नहीं कर सकती।

निम्न लेख मि० ब्रेल्सफ़र्ड ने 'जवाहर-दिवस' के अवसर पर लिखा था :—

"इस सप्ताह में मैंने इलाहाबाद में उस व्यक्ति से मुलाक़ात की, जिसका महात्मा गाँधी के बाद सब से अधिक प्रभाव है। हम दोनों की मुलाक़ात जेल में हुई थी। जब से यह युद्ध प्रारम्भ हुआ है, तब से पण्डित जवाहर को केवल आठ दिन की स्वतन्त्रता मिली है। 'ए' क्लास के क़ैदियों को नज़रबन्द क़ैदियों से कुछ कम दण्ड नहीं दिया जाता और मैं उन अधिकारियों का कृतज्ञ हुए बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने मुझे एक ऐसे व्यक्ति से मुलाक़ात करने की आज्ञा दी, जो व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से गवर्नमेण्ट का कट्टर दुश्मन है।

आन्दोलन का प्रतिबिम्ब

"वह व्यक्ति इस आन्दोलन का प्रतिबिम्ब है। कुछ वर्ष पहिले वह एक इङ्गलिश यूनीवर्सिटी से शिक्षा-प्राप्त युवक की नाईं अङ्गरेज़ी पोशाक में रहता था। परन्तु आज वह हाथ की कती और बुनी हुई उस पोशाक में रहता है, जिसमें भारत के राष्ट्रीय संग्राम के सैनिक रहते हैं। भारत पश्चिम की नक़ल करने से अब थक गया है। मुलाक़ात होने पर सब से पहले हृदय में यह भाव उत्पन्न होता है, कि वह सच्चे वीरों की नाईं सभ्य और अत्यन्त नम्र है। परन्तु, शीघ्र ही इस बात का भी पता लग जाता है कि इस सौम्यता की ओट में उसके हृदय में विद्रोह की भयङ्कर आग प्रज्वलित हो रही है। वह असाधारण साहस से समस्याओं पर विचार करता है और उस मार्ग का, जिस पर उसका तर्क उसे ले जाता है, बड़ी वीरतापूर्वक अवलम्बन करता है।

असन्दिग्ध दूरदर्शिता

"वह अपनी दूरदर्शिता से भविष्य की थाह अपने अनुयायियों से अधिक दूर तक लेता है। उसे शीघ्रता से या आसानी से विजय मिलने का भ्रम नहीं है और न उसे इस बात का भय है कि इस युद्ध के बाद भारत में सामाजिक, आर्थिक उथल-पुथल मच जायगी। वह वाक्पटु है और उसकी वाणी में जादू है तथा उसे युवक-भारत ने अपना नेता चुना है। भारतीय अपने नेताओं की जितनी उपासना करते हैं, उतनी उपासना करने वाली पश्चिम में बहुत ही कम जातियाँ मिलेंगी। उनके जेल के चहारदीवारी के अन्दर बन्द हो जाने पर वे उन्हें भुला नहीं देते। युवक-नेहरू की गिरफ़्तारी और सज़ा के विरोध में भारत के शहर अपनी फ़ेक्टरियाँ और दुकानें दो बार बन्द कर चुके हैं। कल समस्त भारत में उसकी ४१वीं वर्ष-गाँठ मनाई जायगी।

"मैं पण्डित मोतीलाल जी से भी मिला था और जेल से रिहा होने के बाद मैंने उन्हें अत्यन्त अस्वस्थ पाया। मेरी मुलाक़ात के एक दिन पहिले ही उनकी एक पुत्री और भतीजी जेल से रिहा होकर आई थीं। मेरी उनसे भी मुलाक़ात हुई थी। जिन्होंने उनकी भावनाएँ और उत्साह देखा है, उन्हें सरलता से इस बात का अनुभव हो जाता है, कि इस आन्दोलन में पुरुषों को आगे बढ़ाने और उनका साहस स्थिर रखने में भारतीय स्त्रियों ने कितना अधिक त्याग किया है।

सन्धि का प्रस्ताव

"हम गत अगस्त के समझौतों की असफलता की, गाँवों में आन्दोलन फैलने और कभी-कभी गोलमेज़ परिषद की बातचीत किया करते हैं, जिसे अधिकांश भारतवासी घृणापूर्ण दृष्टि से देखते हैं। गोलमेज़ पर तो केवल मृतक भारत की प्रेतात्मा बैठी है।

"पिछले ग्रीष्म-ऋतु का सन्धि-प्रस्ताव क्यों असफल हुआ? मैंने दोनों पक्षों का विचारपूर्वक विश्लेषण किया है और अन्त में इस परिणाम पर पहुँचा हूँ, कि हमने अपनी इच्छाएँ स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं कीं, और उन्होंने ऐसी शर्तें रख कर, जिनसे अनुभवहीनता टपकती थी, समस्या को और भी उलझा दिया। सन्धि-प्रस्ताव इसलिए असफल हुआ, कि कॉङ्ग्रेस ने अभी अपनी पूरी शक्ति नहीं लगाई थी।

समस्या का निरूपण

"सब से पहली कठिनाई मनोवृत्ति सम्बन्धी है। इङ्गलिश मस्तिष्क किसी वस्तु में धीरे-धीरे क्रम-क्रम से परिवर्तन करने की बात सोचा करता है। जब वह परिस्थिति के कारण बाध्य हो जाता है, तब औपनिवेशिक स्वराज्य या स्वतन्त्र राज्य की ओर क्रम भूल कर छलाँग मार देता है। परन्तु, भारतीय मस्तिष्क की विचार-धारा इससे बिलकुल विरुद्ध बहती है। वह अब इस बात के लिए मचल रहा है कि "मेरा गौरव" मेरी स्वतन्त्रता और मेरा बराबरी का दर्जा अभी दो! हमें वह दे दो और उसके बाद हम प्रसन्नता से क्रमपूर्वक अधिकार-परिवर्तन की बात करेंगे।

"इन दो प्रबल मनोवृत्तियों का अन्तर समझने के लिए, यह बात ध्यान में रखने की अत्यन्तावश्यकता है, कि हर एक भारतीय के हृदय में विजेताओं की श्रेष्ठता और उनके प्रगल्भ और मदपूर्ण आचरण से एक गहरा घाव बन गया है। यदि हम अपने समय और पीढ़ी के विवेकपूर्ण आदमी हैं, तो हमें भारत के नए शासन-विधान के पहले वाक्य में भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य दे देना चाहिए और उसके साथ ही उसका वह गौरव, जो एक ऐसे उपनिवेश की थाती है। यदि उसे औपनिवेशिक स्वराज्य दे दिया जायगा, तो अधिकार-परिवर्तन के नियम बनाने में आशातीत सफलता प्राप्त होगी। परन्तु सेण्ट्रल गवर्नमेण्ट को उन अधिकारों से बहुत अधिक मिलना चाहिए, जिनकी सिफ़ारिश भारतीय गवर्नमेण्ट ने की है। भारतीय अर्थ-विभाग अपने हाथ में लिए बिना वे कभी सन्तुष्ट न होंगे।

"भारतीय सम्बन्ध-विच्छेद करने का अधिकार प्राप्त करने पर वे क्यों तुले हुए हैं? इस प्रश्न का उत्तर भी उपर्युक्त मनोवृत्ति है। यदि एक विजित राष्ट्र को हम बराबरी का दर्जा देना चाहते हैं, तो उसे इस बात की स्वतन्त्रता अवश्य होना चाहिए, कि वह अपनी इच्छानुसार सम्बन्ध विच्छेद या स्थापित कर सके। किसी अन्य प्रकार के सम्बन्ध की स्थापना केवल तलवार के बल पर ही हो सकती है।

"सचमुच में, ऐसे क्रान्तिकारी समय में भी, सभी भारतीय (ब्रिटेन से) सम्बन्ध-विच्छेद नहीं करना चाहते। कुछ लोग, यहाँ तक कि कॉङ्ग्रेस नेता भी—यह बात स्वीकार करने के लिए तैयार हो जायँगे, कि सम्बन्ध-विच्छेद के लिए फ़ेडरल सिनेट के, जिसमें राज्यभक्त देशी राजा-महाराजा भी सम्मिलित रहेंगे, दो तिहाई सदस्यों की स्वीकृति की आवश्यकता पड़ेगी। मैं इस बात पर बहस नहीं करना चाहता; परन्तु अपना यह विश्वास स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यदि भारत के सम्बन्ध में सोच-विचार करने में देर की जायगी तो यह संग्राम केवल महीनों के लिए ही नहीं, वर्षों के लिए बढ़ जायगा।

भारतीय ऋण की समस्या

"एक दूसरी माँग, जिसके कारण अगस्त की सन्धि असफल हुई, यह थी कि भारत का ऋण-निर्णय एक पक्षपात-रहित ट्रिब्युनल करे। कॉङ्ग्रेस ने इस माँग पर बहुत अधिक ज़ोर नहीं दिया था, परन्तु गवर्नमेण्ट को यह कहने का बहाना मिल गया, कि यह क़र्ज़ अदा न करने का प्रस्ताव था। परन्तु उसका वह मतलब नहीं था। उससे कॉङ्ग्रेस का मन्तव्य केवल इतना ही था, कि

(शेष मैटर ३३वें पृष्ठ के दूसरे और तीसरे कॉलम में देखिए)

बारदोली में शैतान का नग्न-नृत्य !

गाँवों में सरकारी कर्मचारियों की नृशंस नादिरशाही !!

कुर्क़ी और नीलामी की सूचना जानवरों की पूँछ में बाँध दी जाती है !!

स्त्रियों की अस्मत ख़तरे में :: डाकुओं के रोमाञ्चकारी उपद्रव !

सर लल्लूभाई सामलदास का घोर असन्तोष

बारदोली में लगान वसूल करने के सम्बन्ध में आजकल वहाँ के किसानों पर जो अत्याचार हो रहे हैं और उससे वहाँ के वायु-मण्डल पर जो दूषित प्रभाव पड़ा है, उसका हाल सहयोगी 'बॉम्बे-क्रानिकल' के कई अङ्कों से यहाँ सङ्कलित किया जाता है :—

"बारदोली की वीर-प्रसविनी भूमि से आज यही आवाज़ आ रही है कि वे महात्मा गाँधी और सरदार पटेल की आज्ञा के बिना लगान की एक पाई भी देने के लिए तैयार नहीं हैं। इस प्रतिज्ञा के पालन में चाहे उनके बच्चे भूखे मरें, उनके घर नीलाम हों, जायदाद लूटी जावे, वे स्वयं नेस्तनाबूद हो जावें। महात्मा गाँधी और सरदार पटेल की बातों का उन्हें वेद-वाक्यों से भी अधिक विश्वास है। अपनी इस वीर प्रतिज्ञा के पालन में बारदोली के किसानों ने घर-बार छोड़ कर जङ्गल का रास्ता लिया है। प्रकृति का सुन्दर बाग़ लगानबन्दी आन्दोलन की पतझड़ से बियाबान हो गया है। तमाम ताल्लुक़ा सुनसान पड़ा हुआ है। आज से दो माह पूर्व, जिसने बारदोली की प्राकृतिक लावण्य से परिपूर्ण भूमि के दर्शन किए होंगे, वे वहाँ के निवासियों के सौभाग्य से ईर्षा करते होंगे; परन्तु आज वहाँ का वायु-मण्डल हाहाकार की आवाज़ से गूँज रहा है।

लगान वसूल करने के अमानुषिक तरीक़े

"एक ओर लगान न देने की भीषण प्रतिज्ञा है, तो दूसरी ओर लगान वसूल करने की। इसके लिए किसानों पर अत्यन्त नृशंस और पैशाचिक अत्याचार किए जाते हैं। पुलिस के झुण्ड के झुण्ड इलाक़ों में चक्कर लगाते हैं। गाँवों में उन्हें दो-चार मूर्तियों से अधिक कुछ नज़र नहीं आता। सत्याग्रही किसानों की ज़मीन और जायदाद कुर्क़ करना एक साधारण-सी बात हो गई है। जिन सत्याग्रही किसानों की ज़मीन कुर्क़ होती है, उन्हें उसकी इत्तला दी जाती है। तलाटी खेतों में स्वयम् जाता है और अपने साथियों को डुग्गी पीटने की आज्ञा देता है। डुग्गी तो पिट जाती है, परन्तु उसे सुनने वाला तलाटी के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति उपस्थित नहीं रहता। तलाटी डुग्गी पीट कर इतने ही में सन्तोष कर लेता है कि उसने 'लैण्ड रेवेन्यू कोड' की आज्ञा का पालन कर लिया। परन्तु आजकल तलाटी को गाँव में न तो डुग्गी पीटने के लिए कोई आदमी मिलता है और न ढोल। किसानों के गाँव छोड़ देने के कारण ढोल की जगह पीतल की थाली भी नहीं मिलती। जब तलाटी हताश हो जाता है, तब वह गाँव भर में मिट्टी के तेल का ख़ाली कनस्तर ढूँढ़ने के लिए चक्कर लगाता है और यदि उसे वह मिल गया, तो उसे बजा कर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेता है।

"ढोल पीटने की रस्म अदा हो जाने के बाद तलाटी कुर्क़ी का नोटिस बबूल के पेड़ से गोंद निकाल कर किसी पेड़ की डाली से चिपका देता है। पेड़ न होने पर तलाटी उसे किसी काँटेदार, झाड़ी में या खेत में ही मिट्टी के ढेले से चिपका देता है। भैंसें कुर्क़ करने के लिए यह नोटिस उनके चमड़े पर या सींग पर चिपका दिया जाता है और या पूँछ से बाँध दिया जाता है। जिस काग़ज़ पर यह नोटिस लिखा जाता है, वह अत्यन्त हास्यास्पद होता है। पाठकों का शायद यह अनुमान होगा कि जब हज़ारों रुपए की ज़मीनें कुर्क़ होती हैं तब उनके नोटिस किसी अच्छे क़ीमती काग़ज़ पर छपते होंगे और उन पर गवर्नमेण्ट की मुहर और कलेक्टर के दस्तख़त रहते होंगे। परन्तु आज ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के नाम से गाँव का अदना पुलिस-पटेल नोटिस पर दस्तख़त कर देता है; और जिस काग़ज़ पर यह नोटिस लिखा जाता है उसकी लम्बाई-चौड़ाई दो इञ्च से अधिक नहीं होती। बड़ी-बड़ी कुर्क़ियों और नीलामों में भी केवल इतनी ही रस्म अदा की जाती है। जिन किसानों की ज़मीन और जायदाद कुर्क़ होती है, उनके कानों तक मुश्किल से उसकी ख़बर पहुँचती है। काग़ज़ का छोटा सा टुकड़ा (नोटिस) हवा में उड़ कर लापता हो जाता है।

घर जला कर ख़ाक में मिला दिए गए

"बोरसद का ३०वीं नवम्बर का समाचार है कि २७ ता० की रात्रि को वासना गाँव के तीन घर, जिनकी कीमत ५ और ६ हज़ार के बीच में होगी, जल कर ख़ाक में मिल गए। गाँव के सब निवासी गाँव छोड़ कर बड़ौदा रियासत में चले गए हैं। और गाँव सुनसान पड़ा है। रात्रि को ८ बजे तीन घरों में से एक घर में आग की लपटें दिखाई दीं और जब तक लोग वहाँ इकट्ठे हुए तब तक तीनों ख़ाक में मिल गए!

अस्मत पर हाथ

"लगान वसूल करने में जिन तरीक़ों से काम लिया जाता है वे अत्यन्त घृणास्पद हैं। बारदोली के शासक निर्दोष प्रजा का रक्त चूसने पर उतारू हो गए हैं। रायण गाँव में पुलिस के कुछ कर्मचारियों ने वहाँ की स्त्रियों को तङ्ग किया और उनसे कहा कि अगर तुम्हारे पति लगान न देंगे, तो तुम्हें पकड़ कर सिन्ध में बेच कर लगान वसूल किया जायगा! इस अफ़वा के कारण गाँव को पुलिस के एक दल ने चारों ओर से घेर लिया और दो भाइयों के सिर पकड़ कर एक-दूसरे से टकरा दिए। फिर लोगों से धमका कर कहा कि "हम तुम्हें स्त्रियों के योग्य न छोड़ेंगे।" सरभौन की घटना तो और भी अधिक भयङ्कर और रोमाञ्चकारी है। वहाँ महिलाओं के लिए अत्यन्त घृणित भाषा का प्रयोग और उनके साथ दुर्व्यवहार भी किया गया। बोरसद में लोगों को लाठियों से पीट कर जिस क्रूर-काण्ड का अभिनय किया गया है, उसे देख कर अङ्गरेज़ी पत्रकार मि० ब्रेल्सफ़र्ड का हृदय भी पानी-पानी हो गया था।

डाकुओं का प्रकोप

"अत्याचारों की क्रिया यहीं समाप्त नहीं हो जाती। प्रजा को नेस्तनाबूद करने के लिए डाकुओं के दल भी घूमा करते हैं, जो नौकरशाही के चाटुकारों की प्रेरणा से उनके साथ इस अत्याचार की आग में ईंधन डाल कर उसे महाबवण्डर बनाते हैं! एक गाँव में इन्होंने एक बूढ़े का सिर कुल्हाड़ी से फाड़ कर उसी समय उसका काम तमाम कर दिया। बोरसद का मामलतदार मोहनशाह, जो छोटे कमिश्नर के नाम से मशहूर है, बड़ौदा राज्य में पहुँचा। वहाँ बोरसद से भागे हुए कुछ किसान रहते थे। कई लोगों से उनका पता पूछने पर जब उसे ठीक पता न लगा तब उसने एक व्यक्ति को इतनी नृशंसता से मारा कि कहा जाता है कि वह वहीं समाप्त हो गया। इस प्रकार की वीभत्स और हृदयद्रावक घटनाएँ बारदोली में प्रायः रोज़ हुआ करती हैं।

ज़ब्ती और कुर्क़ियों की भीषणता

"रास में कुछ दिन पहले पुलिस ने तीन मकानों के ताले तोड़ कर अपने ताले लगा दिए थे। कहा जाता है कि वहाँ से पुलिस नाथजी भाई माथुर भाई के घर से ११३ रु० ८ आ० का, आशा भाई देसाई भाई के घर से २६० रु० का, मङ्गल भाई नारायण भाई के घर से ७२ रु० का, और काशी भाई कालिदास के घर से ४० रु० का माल उठा ले गई है। रास में अब पुलिस की कानूनों का निरीक्षण करने के लिए प्रतिदिन सवेरे झोपड़ियों से ५ आदमी जाते और सन्ध्या समय वापस आ जाते हैं। उन्हें इस पर गालियाँ और धमकी दी जाती हैं, वे पीटे भी जाते हैं, पर वे वहाँ प्रतिदिन जाते हैं और पुलिस के कैम्प के पास ही ठहरते हैं। कुछ दिन पहले पुलिस के कर्मचारी खदाना गए थे, वहाँ वे मोती भाई रणछोड़ भाई के मकान में घुस कर एकतल्ले पर चढ़ गए और डॉक्टर वहलीबैन के कान से तीन कुण्डल उतार कर भी उनसे टैक्स माँगने लगे, श्रीमती वहलीबैन ने निर्भीकतापूर्वक उन्हें उत्तर दिया कि "मेरा सारा घर छान डालो और मेरा सर्वस्व लूट लो, पर टैक्स के नाम से तुम्हें एक पाई न मिलेगी।

अमेरिकन पत्रकार के अनुभव

"बोस्टन (अमेरिका) के 'बोस्टन ईवनिङ्ग ट्राम्सक्रिप्ट' पत्र के मि० ई० एच० जेम्स ने, जो आजकल भारत की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करने के लिए यहाँ भ्रमण कर रहे हैं, एक दिन बोरसद ताल्लुक़े के गाँवों में भी भ्रमण किया था। वे बोचसन, रास, सुनाम, सैजपुर, खानपुर और बोरसद गए थे और उन्होंने अपनी आँखों से वहाँ

के किसानों को भयङ्कर कष्ट झेलते हुए देखा था। वे झोपड़ियों में किसानों से मिले थे और पुलिस के अत्याचारों से पीड़ित रास के व्यक्तियों और खानपुर और सैजपुर के जले हुए घरों की फ़ोटो भी ली थी। सत्याग्रह उनके लिए बिलकुल नई चीज़ थी और जिस सफलता से उसका पालन हो रहा है, उसे देख कर उनके आश्चर्य की सीमा नहीं थी। उन्होंने कहा कि अमेरिका के लोग भारत की सच्ची परिस्थिति जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक हैं। उनकी आन्दोलन के साथ पूर्ण सहानुभूति है। मि० जेम्स बोरसद के नृशंस मामलतदार 'छोटा कमिश्नर' से मिलने और उनका फ़ोटो लेने गए थे, परन्तु दुर्भाग्य से उनसे मुलाक़ात न हो सकी।"

* * *

गवर्नमेण्ट के दोस्त उसके दुश्मन बन रहे हैं

गुजरात के बोरसद, बारदोली तथा और ताल्लुक़ों में पुलिस पर जो लाञ्छन लगाए गए हैं, उनके विरुद्ध गवर्नमेण्ट ने हाल ही में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की थी। गवर्नमेण्ट की इस विज्ञप्ति के विरोध में १२वीं नवम्बर को सर लल्लूभाई सामलदास-जैसे सुप्रसिद्ध और नरम-दल के नेता ने अपनी गुजरात की यात्रा के आधार पर एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसका सार नीचे दिया जाता है :—

"सारबाब गाँव, जो बारदोली संग्राम के समय प्रसिद्ध हो गया था, बिलकुल उजाड़ हो गया था। पुरानी सत्याग्रही छावनी गवर्नमेण्ट ने ज़ब्त कर ली है और अब वहाँ एक पुलिस-थाना है। बारदोली संग्राम के समय वहाँ के एक बग़ीचे और उसके बीच के मकान में अस्पताल खोला गया था और उसका सञ्चालन बम्बई यूनीवर्सिटी के कुछ ग्रेजुएट करते थे। एक ऐसी परोपकारी संस्था की हत्या करना कोरे 'शान्ति और क़ानून' की रक्षा के पहिमातियों के लिए भले ही जायज़ हो, परन्तु मेरे जैसे सुधारक की दृष्टि में तो उसका सदुपयोग उसकी रक्षा करके ही हो सकता था। केवल इसलिए कि उस संस्था का सञ्चालन असहयोगियों के हाथ से होता था, वह संस्था गवर्नमेण्ट के लिए हानिकारक नहीं कही जा सकती।

"वहाँ के गाँवों के कुछ समाज-सुधारक स्त्री-पुरुषों ने शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग प्रारम्भ की है ; और मुझे उन स्त्री-पुरुषों पर अभिमान है, जो जेलों के कष्ट सह कर भी अपने कार्य में दृढ़ हैं। भारत के अगणित कुटुम्बों को इस दुर्व्यसन ने स्वाहा कर दिया है। अङ्गरेज़, वायसराय के पिकेटिङ्ग-ऑर्डिनेन्स के घातक प्रभाव का अनुभव नहीं कर सकते। उसने गवर्नमेण्ट के नए दुश्मन उत्पन्न कर दिए हैं। जो उसके मित्र थे, वे भी इस बात का अनुभव करने लगे हैं, कि गवर्नमेण्ट देश के इन साधारण सुधारों में भी ज़बरदस्त रोड़ा है। गवर्नमेण्ट ने लगान वसूल करने में अन्याय और ज़ुल्म से काम लेकर कुछ कम दुश्मन उत्पन्न नहीं किए। लगान वसूल करने के लिए उन लोगों को भी नोटिस दे दिए जाते हैं, जिन्होंने लगान न देने की प्रतिज्ञा नहीं की। और जिन लोगों को नोटिस दिए जाते हैं, उनसे लगान वसूल करने के लिए गवर्नमेण्ट गाँव के तलाटी और रेवेन्यू-अफ़सर के स्थान पर पुलिस की सहायता पर अधिक विश्वास करती है। इसका परिणाम यह हुआ है कि जो थोड़े बहुत राज्य-भक्त बच रहे हैं, उनके हृदय में भी गवर्नमेण्ट के प्रति क्रोध और घृणा उत्पन्न होती जाती है।

पुलिस का आतङ्कपूर्ण शासन

"ऐसा प्रतीत होता है कि गवर्नमेण्ट की शक्ति रेवेन्यू अफ़सरों के हाथ से पुलिस के हाथों में जा रही है ! इस परिवर्तन से गवर्नमेण्ट की मान-मर्यादा और उसके भेद-भाव रहित न्याय में अवश्य बट्टा लगेगा। पुलिस लगान वसूल करने के लिए मनमाने अत्याचार करती है और इस नीति के उपयोग से कलेक्टरों का विचार केवल यही प्रतीत होता है, कि वे जनता के हृदय पर गवर्नमेण्ट की शक्ति का आतङ्क छा देना चाहते हैं। इसका प्रभाव बिलकुल विपरीत हुआ है और जब तक प्रजा के हृदय में विश्वास उत्पन्न न किया जायगा, तब तक यह आन्दोलन बढ़ता जायगा और उसके साथ ही गवर्नमेण्ट की आमदनी की क्षति भी बढ़ती जायगी।"

* * *

ज़िम्मेदार कौन है ?

अच्छे हो जायें जल्द मोतीलाल !!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल जी नेहरू

आस्माँ चल रहा है, क्या-क्या चाल !
पहुँचे अहले-ज़मीं को, जिससे मलाल !
इसका मतलब है, रञ्ज दिल को हो !
नहीं करता, कभी किसी का ख़्याल !
देश वालों को, जिसकी हसरत है,
आज उसका, ख़राब देखा हाल !!
रात दिन, काम है तड़पने से,
एक-एक साँस, एक-एक है साल !
शेर था जो कभी गरजने में,
उससे गूँजा ऐसेम्बली का हाल !
उसकी क़ुर्बानियाँ, ग़ज़ब की हैं,
मिल नहीं सकती है कहीं भी मिसाल !
लीडरी की, तो लीडरी में भी—
हर तरह का दिखा दिया है कमाल !
आन रखने को, शान रखने को,
उसने पैदा किया जवाहरलाल !
रात-दिन ख़ून थूकता है वह,
उसके जीने का हर जगह है सवाल !
सब दुआ दिल से माँगें ऐ "बिस्मिल",
अच्छे हो जायें जल्द मोतीलाल !!

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

१८ दिसम्बर, सन् १९३०

क्या कीजिएगा हाले-दिले-ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए अख़बार देख कर !!

महायुद्ध का भयङ्कर प्रभाव

युद्ध का समय १९१४ से १९१८ तक

विशाल नरमेध-यज्ञ की भयावह आहुतियाँ

संसार की क्षति

९०,००,००० मनुष्य युद्ध में मारे गए ; २,००,००,००० मनुष्य घायल हुए ; ५६,०८,९९,००,००० पौण्ड का युद्ध के ख़र्च में स्वाहा हुआ।

ब्रिटिश साम्राज्य की क्षति

१०,९०,००० मनुष्य युद्ध में मारे गए; २०,००,००० मनुष्य घायल हुए ; १३,५७,७१,००,००० पौण्ड का युद्ध के ख़र्च में स्वाहा हुआ।

महायुद्ध का सन् १९३० में भयङ्कर प्रभाव

संसार पर

१,५०,००,००० बेकार हो गए ; ८९,००,००,००० पौण्ड प्रति वर्ष युद्ध की सामग्री तैयार करने में व्यय होने लगा।

ग्रेट ब्रिटेन पर

२२,३७,५०१ बेकार हो गए; ११,५०,००,००० पौण्ड प्रति वर्ष युद्ध की सामग्री तैयार करने में व्यय हुआ।

* * *

फ़ौजी अफ़सर गोली का शिकार

लाहौर का समाचार है कि ९वीं दिसम्बर को कैप्टेन पी० जे० डब्ल्यू० मेकलेगन एम०सी० लाहौर कण्टोमेण्ट के १०वें बेटेलियन के ८वें रेजिमेण्ट के एक लैन्स नायक द्वारा मार डाले गए। ख़बर है कि कैप्टेन मैकलेगन ने लैन्स नायक गिरराज को एक स्क्वाड के परेड करते समय पास नहीं किया और उसके दर्जे पर एक हवलदार को चढ़ा दिया। इस घटना से क्रोधित होकर उसने उस हवलदार को, जो उसके पद पर नियुक्त हुआ था और फिर कैप्टेन मैकलेगन को गोली से मार डाला। परेड के सिपाहियों ने गिरराज पर गोली चलाई, पर वे निशाना चूक गए। गिरराज ने अपने हाथ से बन्दूक़ का मुँह फेर कर गोली मार ली और मर गया। कैप्टेन मैकलेगन की आयु ३२ वर्ष की है।

* * *

भारतीय रमणी की वीरता

डाकुओं से युद्ध करने में मारी गई

लाहौर का ६ठी दिसम्बर का समाचार है कि होशियारपुर ज़िले के सराव गाँव में सशस्त्र डाकुओं ने गोकुलचन्द माखवाराम के घर पर धावा किया, और उनकी युवती पत्नी ने वीरतापूर्वक उनका सामना किया। बाद में गाँव वाले भी उसकी सहायता के लिए आ गए। डाकुओं का सामना करते समय युवती रमणी उनको गोली से मारी गई और दो ग्रामीण सख़्त घायल हुए।

* * *

धरना

[श्री० रामेश्वरप्रसाद जी श्रीवास्तव, एम० ए०]

सेठ जगनलाल ने अपनी दूकान खोली ही थी, कि दो स्वयंसेवक हाथ में झण्डा लिए आकर दूकान के दोनों तरफ़ खड़े हो गए। जगनलाल ने डाँट कर पूछा—यह क्या ?

एक स्वयंसेवक ने उत्तर दिया—कॉङ्ग्रेस कमेटी ने आज से विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देने का निश्चय किया है।

जगनलाल की भौहें चढ़ गईं। उन्होंने क्रोधपूर्वक कहा—धरना ? धरना कैसा ? मेरी दूकान पर धरना देने का कॉङ्ग्रेस को क्या अधिकार ? क्या कॉङ्ग्रेस वाले कोई ख़ुदाई दावेदार हैं ? बैठे-बैठे हुकुम निकाल दिया, जैसे कोई उनके बाप का नौकर है, जो उनका हुकुम माना करे। जाओ मेरी दूकान से भागो !

इतना कह कर सेठ जी गद्दी पर बैठ गए, किन्तु उनकी आज्ञा का पालन न किया गया। दोनों स्वयंसेवक पहले की तरह चुपचाप खड़े रहे। उनके मुँह से एक शब्द भी न निकला। परम शान्ति से उन्होंने सेठ जी की फटकार सह ली।

सेठ जी उनको फिर खड़ा देख कर आपे से बाहर हो गए। एक स्वयंसेवक से उन्होंने गरज कर कहा—अबे तूने सुना, या नहीं ? मैं तुझसे कह चुका कि तू यहाँ से चला जा, पर तू फिर खड़ा है। अब जाएगा या कुछ लेगा ?

स्वयंसेवक पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा रहा। उसकी गम्भीरता देख कर सेठ जी को और भी क्रोध आ गया। उन्होंने कड़क कर कहा—कमीना कहीं का, ढोंग रचने आया है। बेहया, जा यहाँ से नहीं तो जूतों से ख़बर ली जायगी !

दोनों स्वयंसेवकों का मुख लाल हो गया, किन्तु ज़बान से उन्होंने एक शब्द भी इस घोर अपमान के बदले में न कहा। दोनों ने सर झुका लिया।

जगनलाल अपनी जगह पर आ बैठे। उनका चेहरा उतरा हुआ था, किन्तु दो ग्राहकों को आता देख कर यह उदासी प्रसन्नता में परिणत हो गई। सेठ जी ने तरह-तरह के विदेशी थान लाकर उनके सामने रख दिए। उन दोनों ने कपड़ों में हाथ लगाया ही था, कि एक स्वयंसेवक ने आगे बढ़ कर कहा—महाशय जी, क्या आप भारतवासी नहीं हैं ; क्या आपकी नसों में भारतीय रक्त नहीं बहता, जो आप महात्मा जी की आज्ञा की अवहेलना करके विदेशी वस्त्र ख़रीदने जा रहे हैं ? श्रीमान, आप उन करोड़ों देशवासियों के ऊपर दया कीजिए जो भूखे और नङ्गे घूमते हैं। विदेशी वस्त्र का एक-एक तार उनके रक्त में रँगा है ! उनकी पीड़ा का इलाज है विदेशी वस्त्र-बहिष्कार !!

दोनों ग्राहक उठ खड़े हुए और स्वयंसेवकों को धन्यवाद देकर खद्दर-भण्डार की ओर चले गए। उनके जाते ही जगनलाल क्रोध से काँपते हुए बोले—क्यों बे, तू मेरे ग्राहकों को भड़काने वाला कौन है ?

एक स्वयंसेवक ने विनीत स्वर में उत्तर दिया—सेठ जी, भारत-माता का एक क्षुद्र सेवक।

"बड़ा भारत-माता का सेवक बनने वाला"—कहते हुए सेठ जी ने एक तमाचा उस स्वयंसेवक के मुँह पर मार दिया। उसका मुख लाल हो गया, किन्तु उसने हाथ न उठाया। सेठ जी ने दो-चार हाथ और लगाए, परन्तु फिर भी वह शान्त ही रहा। इसके पश्चात जगनलाल दूसरे स्वयंसेवक की ओर झपटे ही थे, कि लोगों ने बीच-बचाव करा दिया।

सेठ जी के इस दुर्व्यवहार और स्वयंसेवकों की सहनशीलता का जनता के ऊपर बड़ा अद्भुत प्रभाव पड़ा ! जगह-जगह इस पर आलोचना होने लगी। कोई सेठ जी को कड़े शब्दों में धिक्कारता, तो कोई स्वयंसेवकों की प्रशंसा करता।

इस निन्दनीय कार्य के पश्चात् सेठ जी की दूकान पर और कड़ा धरना दिया गया। शाम होते-होते दो स्वयंसेविकाएँ भी आकर उनकी दूकान पर आकर डट गईं। अब क्या था, सेठ जी का पारा चढ़ गया। वे दूकान में इधर से उधर टहलने लगे। आख़िर उनसे न रहा गया और उन्होंने एक स्वयंसेविका से पूछा—तुम क्यों आई हो ?

उसने उत्तर दिया—अपने भूले भाइयों को सीधे रास्ते पर लगाने के लिए।

जगनलाल—छिः-छिः ! तुझे ग़ैर आदमियों से बोलते लज्जा नहीं आती। क्या यही तेरा धर्म है ? राम ! राम !! यह घोर कलियुग नहीं, तो क्या है ? अच्छी और नेक स्त्रियाँ कभी भी ऐसा काम करने को तैयार नहीं हो सकतीं !!

उस स्वयंसेविका का सारा शरीर काँप उठा, परन्तु उसने अपने क्रोध को उभरने न दिया। उसने चुपचाप सर झुका लिया। सेठ जी ने फिर कहा—"ऐसी ही बड़ी शर्मीली थीं, तो सैकड़ों मनुष्यों के बीच में आईं ही क्यों ?" इतने में जनता में से किसी व्यक्ति ने सेठ जी को बहुत धिक्कारा। अब सेठ जी का क्रोध और दूना हो गया। उन्होंने स्वयंसेविकाओं को जा-बेजा सुनाते हुए कहा—"यदि ऐसी ही बड़ी शरीफ़ज़ादी हैं, तो यहाँ क्यों आईं ? यहाँ तो गालियाँ ही हैं और अगर कल फिर दिखाई दीं, तो इससे भी ज़्यादा बुरी तरह से पेश आऊँगा।"

इस पर बहुत से मनुष्य बिगड़ खड़े हुए। वे दूकान पर चढ़ आए और सेठ जी को मारने ही वाले थे, कि एक स्वयंसेविका ने आगे बढ़ कर कहा—हाँ-हाँ, यह आप लोग क्या करते हैं ? शान्ति से काम लीजिए।

किसी ने कहा—सेठ जी ! इन्हें तो आपको अपनी बेटियों के तुल्य समझ कर सभ्य व्यवहार करना चाहिए था ! ख़ैर, अब आगे ऐसे अश्लील शब्द मुँह से न निकालिएगा।

भीड़ हट गई। सेठ जी गद्दी पर बैठते-बैठते बोले—मेरी बेटियाँ ऐसी कुलटा नहीं, जो बाज़ार में घूमें।

* * *

उसी रोज़ शाम को मिसेज़ जौहरी के सभापतित्व में स्त्रियों की एक विराट सभा हुई। मिसेज़ कमला द्विवेदी का भाषण बड़ा ही जोशीला हुआ। उन्होंने विदेशी व्यापार का भीषण परिणाम दिखलाने के पश्चात्, कहा—बहिनो ! कपड़े के व्यापार ही ने अङ्गरेज़ों को अमीर बना दिया, कपड़े के व्यापार ही ने भारत का जीवन-रक्त चूस लिया, इसी की बदौलत आज हमारे करोड़ों भाई और बहिनें एक-एक दाने को तरसती हैं। हमारा धर्म है, कि हम इस सर्वनाशकारी व्यापार का अन्त करें। इसके लिए यदि हमारी जान भी जाय, तो चिन्ता नहीं ! हमें कपड़े के व्यापारियों को समझाना होगा, कि वे विदेशी माल न मँगाएँ, और यदि समझाने से काम न चले, तो ज़ोरदार धरना भी देना होगा। मैंने सुना है कि बहुत से व्यापारी हमारी विनती पर ध्यान देने से इनकार करते हैं ! ऐसों के यहाँ धरना देना अपना कर्तव्य है ; किन्तु इसके लिए स्वयंसेविकाओं की आवश्यकता है, क्योंकि यह काम जितना अच्छा स्त्रियाँ कर सकती हैं, उतना पुरुष नहीं कर सकते। अब मुझे देखना है कि कितनी बहिनें स्वतन्त्रता की इस लड़ाई में जान देने को राज़ी हैं ?

सैकड़ों हाथ उठ गए। एक-एक करके स्त्रियाँ आ-आ करके अपना नाम लिखाने लगीं। मिसेज़ जौहरी ने कहा—हर्ष है कि इतनी बहिनें भारत-माता पर अपने प्राण निछावर करने को उत्सुक हैं। इस समय केवल सौ बहिनों की आवश्यकता है। जब शराब की दूकानों पर धरना दिया जायगा, तो और स्वयंसेविकाएँ बना ली जायँगी।

स्वयंसेविकाओं के दस जत्थे बनाए गए। दूसरे दिन के धरने के लिए श्रीमती विमला देवी की अध्यक्षता में दो जत्थों का भेजना निश्चित हुआ। विमला देवी के हर्ष का ठिकाना न था और हर्ष होना ही चाहिए था। देश-प्रेम का सर्वोत्तम पुरस्कार इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है, कि प्राणी को मातृ-भूमि पर अपने प्राणों को बलि देने का सुअवसर मिले ?

* * *

दूसरे दिन सुबह विमला देवी अपने जत्थे के साथ रवाना हुईं। हर एक के हाथ में झण्डा था। राष्ट्रीय गान गाती हुई और शहर के मुख्य-मुख्य सड़कों से होती हुई, ये वीर बालाएँ बज़ाजे में जा पहुँचीं। सारे चौक में हलचल मच गई। विदेशी कपड़ों के दूकानदार थर्रा उठे। एक ने कहा—भाई बड़े असमञ्जस में फँसे। कुछ करते-धरते नहीं बनता। यदि कॉङ्ग्रेस का कहना मानते हैं, तो दिवाला निकलता है और यदि नहीं मानते, तो लोग देश-द्रोही कहते हैं !

दूसरा—हम लोग तो सब ही बेमौत मरे।

तीसरा—भाई हमको तो सब मूर्खता ही मालूम पड़ती है। भला इससे फ़ायदा ? जिस रोज़गार से देश की दौलत और इज़्ज़त बढ़ती है, उसी व्यापार को रोकना मूर्खता नहीं, तो क्या है ? चार रोज़ बाद सब टाँय-टाँय फ़िस हो जायगा। गाँधी जी ने पहले भी तो यह आन्दोलन चलाया था, आख़िर क्या नतीजा हुआ ?

दूसरे ने कहा—भाई सो तो होना ही है, लेकिन इस समय यह विपत्ति कैसे टले। समझाने-बुझाने से काम चलने का नहीं। मार-पीट से और दङ्गा होने का भय है और फिर मार-पीट भी करें तो किससे ? अब तो औरतों ने धरना देना शुरू किया है !!

तीसरा—देखो, आज जगनलाल के यहाँ कैसी निबटती है।

चौथा—कल तो बेचारा पिटते-पिटते बच गया।

पहला—उन्होंने कल बहुत बुरा किया। भला मार-पीट से कहीं काम चलता है।

लोगों की आलोचना समाप्त भी नहीं हुई थी, कि हर एक दूकान पर दो-दो स्वयंसेविकाएँ आकर खड़ी हो गईं। दूकानदार हाथ पर हाथ रख कर बैठ गए। यदि कोई ग्राहक आता भी, तो उन खद्दरधारी स्त्रियों की त्याग-मूर्ति, उनके कठिन परिश्रम तथा उनकी

निर्भीकता को देख कर और उनकी तिरस्कार-मिश्रित कोमल वाणी से मर्माहत होकर, शीघ्र ही बिना कुछ ख़रीदे ही वापस चला जाता!

सेठ जगनलाल की दूकान पर भी यही हाल था। कोई ग्राहक न टिकने पाता था। सेठ जी ख़ून का घूँट पी-पीकर रह जाते थे। एक बार उन्होंने कहा भी—यदि स्त्रियों की जगह पर पुरुष होते, तो आज उन्हें मैं इसका मज़ा चखा देता।

इस पर किसी रास्ता चलने वाले ने कह दिया—अबे जा, कल तो पिटते-पिटते बच गया, और आज उसी औरत से, जिसने कल तुझे बचाया था, अकड़ रहा है!

श्रीमती जमनाबाई देवीसिंह राठौर, बी० ए०

आप महाराजा साहब गोण्डल (काठियावाड़) की मन्त्रिणी नियुक्त हुई हैं। देशी रियासतों के इतिहास में इस उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर नियुक्त होने वाली आप सर्व-प्रथम महिला-रत्न हैं।

अब क्या था, सेठ जी और बिगड़ खड़े हुए। चिल्ला कर कहने लगे—"कौन साला मारने वाला था? और किस हरामज़ादी ने मुझे बचाया था? भला कोई हाथ तो लगा ले, देखूँ तो किसमें इतनी हिम्मत है, कि सेठ जगनलाल को आँख भी दिखा सके, मारना तो बहुत दूर है, आँखें निकाल लूँ, आँखें! और अब देखूँ मेरी दूकान पर कौन धरना धरने आता है। मैं कोई तिनकौड़ीमल थोड़े ही हूँ, कि ज़रा-से में डर कर कह दिया, कि साल भर तक विलायती माल न बेचूँगा! क्यों न बेचूँ? किसी ने इन धरना वालों के बाप का क़र्ज़ा खाया है।" इतना कह कर, उन्होंने स्वयंसेविकाओं से चले जाने को कहा, परन्तु वे कब टलने वाली थीं? उनको खड़ी देख कर सेठ जी उबल पड़े और कहने लगे—"अब सीधे-सीधे जाती हो या अपनी बेइज़्ज़ती कराओगी?"

स्वयंसेविकाओं के चेहरे सुर्ख़ हो गए। एक ने डाँट कर कहा—सेठ जी, बहुत हुआ! हम तो आपको भाई समझती थीं, लेकिन आपके असभ्य व्यवहार ने साफ़-साफ़ दिखा दिया, कि आप इस योग्य नहीं! भला इतने हिन्दू भाइयों के रहते हम लोगों की बेइज़्ज़ती कौन कर सकता है?

दूसरी स्वयंसेविका, जो अधेड़ थी, बोली—सेठ जी, हम लोग तो आपकी माँ, बहिनों और बेटियों की तरह हैं। आपको ऐसा असभ्य व्यवहार न करना चाहिए था; हम लोग कोई अपने फ़ायदे के लिए यहाँ धूप में मारी-मारी नहीं फिरतीं! आख़िर आप भी तो भारतवासी हैं; फिर आप उसको स्वतन्त्र करने में मदद क्यों नहीं देते? मदद न दें न सही, परन्तु कम से कम बीच में रुकावट तो न डालिए।

सेठ जी—जा-जा, मेरी बहू-बेटियाँ बाज़ार में धक्के खाने नहीं आतीं। मैं यह सब कुछ नहीं जानता, सीधे-सीधे चली जा, इसीमें भलाई है।

दूकान पर भीड़ लग गई। फिर दंगा होने की सम्भावना देख कर, एक स्वयंसेविका ने जाकर विमला देवी को सारी बातों से सूचित कर दिया। विमला देवी कुछ समय तक सोचती रहीं और फिर बोलीं—यदि कहो तो दो स्वयंसेवक तुम्हारे साथ भेज दूँ। वे तुम्हारी सहायता करेंगे।

स्वयंसेविका ने कहा—देवी जी, स्वयंसेवकों से काम न चलेगा। कल उन्होंने एक स्वयंसेवक को मारा था।

विमला—छिः-छिः! क्या भारत में ऐसे भी मनुष्य हैं! मैं उनको ऐसा न समझती थी।

स्वयंसेविका—क्या आप उनसे परिचित हैं?

विमला—हाँ, कुछ ऐसे ही।

स्वयंसेविका—तब तो आप ही उनको समझाइए, कदाचित आपके कहने का उन पर कुछ असर हो, ऐसे तो उनमें मनुष्यत्व रत्ती भर भी नहीं है।

विमला ने शरमा कर सर झुका लिया। उसका मुख मलीन था। कुछ क्षण पश्चात उसने कहा—अच्छा जाओ, जगनलाल जी की दूकान से धरना उठा लो!

स्वयंसेविका—क्यों?

विमला—मैं स्वयं उस दुकान पर धरना दूँगी।

ऐसा ही किया गया। जगनलाल की ख़ुशी का ठिकाना न था। उन्होंने कहा—देखा, कैसा धरना हटवाया! अगर मैं दब जाता, तो बस मेरा भी दिवाला था। अरे भाई, ऐसे मौक़ों पर दबना ठीक नहीं!

दूसरे दूकानदार विमला की इस आज्ञा से बड़े ही असन्तुष्ट थे। एक ने कहा—वाह! क्या हमी निर्बल हैं जो दबे रहें।

दूसरा—ऐसा नहीं हो सकता कि जगनलाल की दूकान पर धरना न दिया जाय, और हम लोग दबाए जायँ।

तीसरा—और क्या, क्या जगनलाल के कोई सुरख़ाब का पर लगा है?

दूकानदारों में यह बातचीत हो ही रही थी, ख़बर मिली कि विमला देवी स्वयं ही जगनलाल की दूकान पर धरना देने जा रही हैं। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ, किन्तु बात सत्य ही थी।

विमला जाकर जगनलाल की दूकान पर खड़ी हो गई। सेठ जी ने यह दूसरी बला देख, कुपित होकर कहा—यह क्या? अब तू आई है, क्या मैं तुझे छोड़ दूँगा? देख, मैं तुझे बतलाए देता हूँ कि मेरी दूकान पर सिवा बेइज़्ज़ती के और कुछ नहीं धरा है।

विमला ने घूम कर कहा—आपकी जो इच्छा हो कीजिए।

सेठ जी घबड़ा कर उठ खड़े हुए और विमला को ध्यान से देख कर बोले—कौन? विमला?

विमला—जी हाँ, मैं ही हूँ।

सेठ जी—क्या तू भी इन्हीं में मिल गई?

विमला—क्या मैं भारत की सन्तान नहीं हूँ? क्या मुझमें भारत का रक्त नहीं बहता? क्या मेरे हृदय में स्वदेश-प्रेम की लहर नहीं उमड़ती? जो मैं घर में बैठ कर चुपचाप चैन की रोटी खाऊँ और भारत-माता को ख़ून के आँसू रोते देखूँ?

सेठ जी—तो तू क्या चाहती है?

विमला—यही कि आप भी भारत-माता को स्वतन्त्र करने में सहायता दीजिए, भारत के अन्य सपूतों की तरह आप भी अपना सर्वस्व उस पर निछावर करके अपने को कृतार्थ कीजिए, यही मेरी प्रार्थना है।

इतना कह कर विमला हाथ जोड़ कर सेठ जी के चरणों में गिर पड़ी। सेठ जी के नेत्र डबडबा आए। विमला को उठाते हुए उन्होंने कहा—विमला उठ, मैं तेरी इच्छा पूरी करूँगा। तुझ ऐसी पुत्री का पिता यदि इतना भी न करे तो उसे धिक्कार है!

सारे बज़ाजे में यह बात फैल गई। सेठ जी की दूकान से धरना उठ गया।

* * *

मिश्र का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

अफ़्रिका का पूर्वोत्तर भाग 'मिश्र' देश के नाम से विख्यात है। इसकी दक्षिण ओर नोबिया, पश्चिम में सहारा मरुभूमि, उत्तर की ओर ट्रिपोली और रूम-सागर तथा पूर्व की ओर लाल-सागर है। इस देश के मध्य भाग में 'नील' नामक महानद है, जो इसका सर्वस्व है, क्योंकि इसके किनारे की भूमि अत्यन्त उपजाऊ है। मिश्र का जलवायु बिल्कुल शुष्क है। वर्षा केवल उत्तरीय मिश्र में कभी-कभी थोड़ी-सी हो जाती है। मिश्र मुस्लिम-धर्म-प्रधान देश है। यहाँ के निवासी काकेशस, अरब और तुर्क हैं। कुछ यूरोपियन भी रहते हैं। यहाँ की प्रधान भाषा अरबी है। मिश्र में रूई, दाल, और शकर की पैदावार अच्छी होती है। ये चीज़ें यहाँ से दूसरे देशों को भी भेजी जाती हैं। कपड़ा तथा धातु की बनी चीज़ें बाहर से आती हैं। मिश्र के बराय-नाम बादशाह या शासक को 'ख़दीव' कहते हैं। पहले यह तुर्किस्तान के सुलतान के अधीन था। परन्तु गत महासमर के बाद से अङ्गरेज़ों के अधीन है। कैरो या काहिरा मिश्र की राजधानी है। यह नील नद के किनारे बसा हुआ विशाल नगर अफ़्रिका का सब से बड़ा नगर माना जाता है। एलगज़ेण्डरिया यहाँ का प्रधान बन्दरगाह है। यहीं वह संसार का मशहूर स्वेज़ नाम की नहर है, जिस पर अधिकार जमाने के लिए यूरोपियन जातियाँ लालायित रहती हैं।

भारतवर्ष तथा मिश्र की प्राकृतिक अवस्था बहुत कुछ मिलती-जुलती है। जिस तरह यहाँ की भूमि उपजाऊ है, उसी तरह मिश्र में भी खाने की चीज़ें बहुतायत से पैदा होती हैं। फलतः खाद्य पदार्थ सुलभ होने के कारण भारतवासियों की तरह मिश्री भी आराम-तलब और आलसी हो गए थे और इसी से भारतवर्ष की तरह मिश्र को भी अपनी स्वाधीनता खोकर विदेशियों की ग़ुलामी करनी पड़ी थी! परन्तु, जिस तरह ईश्वर की विमल-विभूतियों के आविर्भाव ने इस सोए हुए भारत को जाग्रत किया है, उसी तरह मिश्र की महान आत्माओं ने भी उसे स्वाधीनता की ओर परिचालित किया है; इस समय जैसा उज्ज्वल भविष्य भारतवर्ष का है, उससे कहीं उज्ज्वल मिश्र का है।

आज से हज़ारों शताब्दी पूर्व, दुर्भाग्यवश एक बार हिकसस जाति के लोगों ने मिश्र पर अधिकार जमा लिया था। उस समय इनके अत्याचारों से सारा मिश्र थर-थर काँप रहा था। हिकससों के विरुद्ध सर उठाने की भी किसी में ताक़त न थी। उस समय दक्षिण-मिश्र में एक छोटा सा करद राज्य था। वहाँ का राजा था तो एक छोटी रियासत का मालिक, परन्तु उसमें तेजस्विता थी। वह हिकससों का अत्याचार नहीं सह सका। उसने देश के प्रमुख व्यक्तियों को बुला कर एक गुप्त सभा की और उन्हें समझाया कि ये विदेशी हमारे धन, मान और धर्म को खुले-ख़ज़ाने लूट रहे हैं। उनके अत्याचारों और उत्पातों से देश तबाह हो रहा है, दरिद्रता बढ़ रही है; देशवासी हीनवीर्य हो रहे हैं और हम कानों में तेल डाले पड़े हैं—अवस्था के दास बन गए हैं। क्या हम मनुष्य नहीं हैं, जो ऐसे अत्याचार चुपचाप सह रहे हैं?

देशवासियों ने कड़क कर उत्तर दिया—हम मनुष्य हैं। विदेशियों के अत्याचार अब हर्गिज़ बर्दाश्त न करेंगे और उन्हें अपने देश से निकाल कर ही दम लेंगे!

देशवासियों का उत्साह देख कर राजा ने विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। उत्तर में हिकससों ने भी अत्याचार की मात्रा बढ़ा दी। हिकससों के राजा अपेप ने विद्रोही नरेश को लिखा कि थिबेस नगर की झील से अपने हाथियों को फ़ौरन हटा लो, क्योंकि उनकी चिंघाड़ से मेरी नींद में बाधा पड़ती है।

आजकल हमारे देश में गाएँ जितनी पूज्य और पवित्र मानी जाती हैं, उन दिनों मिश्र में हाथी भी वैसे ही पूज्य और पवित्र माने जाते थे। दूसरे, वह झील, जहाँ मिश्रियों के पूज्य हाथी चिंघाड़ा करते थे, राजा अपेप के आरामगाह से सैकड़ों मील के फ़ासले पर था। इसलिए मिश्री समझ गए कि यह महज़ छेड़ख़ानी है। अपेप को उनकी स्वतन्त्रता छीन कर ही सन्तोष नहीं है। वह उन्हें अच्छी तरह कुचल डालना भी चाहता है। यह सोच कर मिश्री भी तैयार हो गए। उपर्युक्त करद-नरेश सेकनेनरा के सेनापतित्व में एक महती सेना तैयार हो गई। भीषण संग्राम छिड़ गया। एक ओर मुक्ति-कामी मिश्री युवक और दूसरी ओर अस्त्रशस्त्रों से सुसज्जित हिकसस-सेना थी। परन्तु वीर-वर सेकनेनरा ने शत्रुओं के दाँत खट्टे कर दिए। उसकी तीक्ष्ण धार तलवार के सामने विपक्षी योद्धाओं का एक क्षण ठहरना भी दूभर हो गया!

अन्त में युद्ध करते-करते सेकनेनरा शत्रुओं के व्यूह में घुस गया। चारों ओर शत्रु-सेना थी और बीच में रण-बाँकुरा सेकनेनरा था। मानों द्रोण के चक्र-व्यूह में सप्त-महारथियों से घिरा हुआ अभिमन्यु खेल रहा हो! हिकससों ने देखा कि सम्मुख समर में इस नर-केसरी से लोहा लेना टेढ़ी खीर है। इसलिए उन्होंने एक अत्यन्त घृणित उपाय का अवलम्बन किया। एक गुप्त घातक ने पीछे से जाकर सेकनेनरा पर आक्रमण किया। सेकनेनरा आहत होकर गिर पड़ा। उसी समय एक दूसरे हत्यारे ने उसके सिर में छुरा भोंक दिया! वीर के शरीर की रक्त-धारा से वसुन्धरा लाल हो गई! वीर-श्रेष्ठ सेकनेनरा की वे अन्तिम घड़ियाँ थीं। स्वर्ग की वीराङ्गनाएँ हाथों में जयमाला लिए उसके स्वागत के लिए स्वर्ग-द्वार पर खड़ी थीं। सेकनेनरा ने एक बार घृणापूर्ण दृष्टि से अपने कायर शत्रुओं की ओर देखा। इसके बाद उसने अपने साथियों को सम्बोधन करके कहा—"वीरो, मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए मर मिटना, परन्तु शत्रु को पीठ न दिखाना।" इसी समय किसी कायर ने अस्त्राघात से उसका मस्तक चूर्ण कर दिया। हिकससों ने ख़ुशी के नारे लगाए। किन्तु मिश्री युवक इससे ज़रा भी हतोत्साहित न हुए। आँख के सामने ही अपने सरदार की कायरता-पूर्ण हत्या देख कर वे और भी उत्तेजित हो उठे और ऐसा सधा हुआ हाथ मारना आरम्भ किया, कि हिकससों को छठी का दूध याद आ गया! थोड़ी देर के बाद ही शत्रु-दल मैदान छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। मिश्र के आकाश में फिर से स्वाधीनता की पताका फहराने लगी।

पराजित हिकससों ने इसके बाद भी थोड़ा-बहुत उत्पात मचाया, परन्तु अन्त में राजा अमेस के ज़माने में, सदा के लिए मिश्र से विदा हो गए।

इस घटना के प्रायः एक हज़ार वर्ष बाद फ़ारस के राजा कैम्बिसस ने मिश्र पर अधिकार जमाया। मिश्रियों ने प्राणों की बाज़ी लगा कर कैम्बिसस को रोका था। परन्तु एक देशद्रोही मिश्री के विश्वासघात के कारण उन्हें हार जाना पड़ा! फ़ारस-नरेश ने मिश्र को तो जीत लिया, परन्तु मिश्रियों के हृदय को वे नहीं जीत सके! समय-समय पर बराबर विद्रोह की भीषण ज्वाला धधकती और बुझती रही। अन्त में दरायुस के ज़माने में, यह ज्वाला इतने ज़ोरों से धधक उठी, कि फ़ारसियों को मिश्र से अपना बोरिया-बँधना समेट लेने के लिए वाध्य होना पड़ा!

परन्तु साल भर के बाद फ़ारसियों ने फिर मिश्र पर चढ़ाई की। इस समय फ़ारस के राज-सिंहासन पर ज़ारजेक्स नाम का नरेश आसीन था। उसकी अगणित सेना के सामने मिश्रियों को हार जाना पड़ा। मैदान शत्रुओं के हाथ रहा। ज़ारजेक्स ने अपने छोटे भाई एकीमेनस को मिश्र के राज-सिंहासन पर बिठाया। एकीमेनस महाक्रूर और निष्ठुर स्वभाव का आदमी था। उसने मिश्रियों पर भीषण अत्याचार आरम्भ कर दिया; मिश्री दब गए।

सुदीर्घ बीस वर्ष बीत गए। इसी समय फिर मिश्र में जाग्रति के लक्षण दिखाई देने लगे। वीर साधक इनरास और अमीर तियास की ज्वालामयी वाणी से पराधीन मिश्र-निवासियों के मुर्दा-दिलों में पुनः जोश पैदा हुआ। स्वाधीनता के लिए मर-मिटने की लालसा से एक बार फिर मिश्री युवक बेचैन हो उठे। देखते-देखते भयङ्कर विद्रोहानल से मिश्र का कोना-कोना धधक उठा।

फ़ारस-नरेश ने यह ख़बर सुनी, तो क्रोध से आग-बबूला हो उठा और विद्रोहियों को कुचल डालने के लिए चार लाख पैदल सेना और दो सौ रण-पोत प्रेषित किया। उसे आशा थी, कि इतनी बड़ी सेना देखते ही मिश्री भाग खड़े होंगे। परन्तु फल विपरीत हुआ। मिश्रियों ने पहले ही प्रतिज्ञा कर ली थी, कि या तो स्वतन्त्र होकर रहेंगे, या स्वतन्त्रता प्राप्त करने की पुण्य-पूत चेष्टा में मर मिटेंगे।

इसके बाद भीषण संग्राम आरम्भ हुआ। एक लाख फ़ारसी खेत रहे, और बाक़ी तीन लाख प्राण लेकर भाग खड़े हुए।

फ़ारस-नरेश बौखला उठा! उसने फिर पाँच लाख सैनिकों को मिश्र पर चढ़ाई करने के लिए भेजा। मिश्रियों ने असीम साहस के साथ इस महती सेना का सामना किया। परन्तु दैव-दुर्विपाकवश उनका सेनानायक वीरवर इनरास घायल होकर गिर गया। देखते-देखते युद्ध की गति पलट गई। बेचारे मिश्र को एक बार फिर फ़ारसियों की अधीनता स्वीकार कर लेनी पड़ी। आहत इनरास की हत्या कर डाली गई! यह जघन्य कार्य देख कर मिश्री पागल हो उठे!! पुनः लोहा बजने की सम्भावना, मानो पर फैला कर मँडराने लगी। इस समय अगर कोई उपयुक्त सञ्चालक होता, तो निश्चय ही मिश्र वाले फ़ारसियों का तुमतुमा मिटा कर ही दम लेते। परन्तु मिश्र की साढ़ेसाती की आयु अभी पूरी नहीं हुई थी!

इस विजय के बाद फ़ारस-नरेश ने एक और चाल

निरोबी (अफ्रिका) के आर्य कन्या पाठशाला की कार्यकारिणी समिति के सदस्य और इस संस्था में पढ़ने वाली कुछ कन्याएँ

चली। उसने अपने भाई को हटा कर इनरास और अमीर तियास के लड़कों को मिश्र के राज-सिंहासन पर बिठाया और स्वयं उनका अभिभावक बन कर सेना आदि का इन्तज़ाम उसने अपने हाथ में रक्खा। परन्तु मिश्र वाले इस फन्दे में न आए। फ़ारस-नरेश की इस उदारता को उन्होंने एक व्यङ्ग समझा। यह उनके लिए घाव पर नमक हो गया!

इस बार मिश्रियों ने स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए ज़बरदस्त तैयारी की। सञ्चालक हुए अमीर तियास। अबकी बार मिश्रियों को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। फ़ारस-नरेश को मिश्र पर राज्य करने की आशा-भरोसा को सदा के लिए तिलाञ्जलि देकर चल देना पड़ा!

इसके बाद सदियों तक मिश्र स्वाधीन था। साम्राज्यवादी जातियों की नज़र तो उस पर अवश्य ही थी; परन्तु किसी ने उसकी ओर क़दम बढ़ाने का साहस नहीं किया। अन्त में तुर्किस्तान वालों ने अपने धार्मिक प्रभाव के कारण मिश्र के खदीव को अपने अधीन कर लिया, परन्तु उनकी नीति मिश्र की उन्नति के लिए विशेष घातक न थी और न वे उसे ग़ुलाम बना कर ही रखना चाहते थे।

मिश्र के प्राचीन इतिहास के उपर्युक्त दिग्दर्शन से पाठकों ने समझ लिया होगा, कि नील-नद विधौत मिश्र-देश प्राचीन सभ्यता का लीला-निकेतन है। आज भी इतिहास के पृष्ठों में उसका निदर्शन मौजूद है। मिश्र का कितनी बार उत्थान और पतन हुआ है, इसका कोई ठिकाना नहीं। परन्तु आज दुर्भाग्यवश मिश्र पराधीन है! उसका ऐश्वर्य, प्राचीन सभ्यता और बाहुबल आज अन्तःविहीन अन्धकार के अतल-तल में तिरोहित हो गया है! स्वाधीनता की बलिवेदी पर हँसते-हँसते प्राण विसर्जन करने वाला मिश्र, आज अङ्गरेज़ों का ग़ुलाम बना हुआ है! उसकी दुर्गति का मूल कारण स्वेज़ की वह नहर है, वाणिज्य की सुविधा के लिए जिस स्वेज़ पर अधिकार जमाए रखना आवश्यक है। और यह नहर मिश्र के मध्य भाग से निकाली गई है। इसलिए नहर को अपने क़ब्ज़े में रखने के लिए मिश्र को मुट्ठी में रखना अत्यावश्यक है। इसी मूल नीति के कारण अङ्गरेज़ मिश्र की गर्दन पर सवार हैं। इसके सिवा एशिया, अफ्रिका और यूरोप के अधिकांश स्थानों पर अधिकार जमाए रखने के लिए भी मिश्र का अङ्गरेज़ों के अधिकार में रहना ज़रूरी है। इसीलिए इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञ स्वेज़ नहर के जन्मकाल से ही मिश्र पर अपना अधिकार जमाने की धुन में थे? इसी समय मिश्र में एक जातीय दल का आविर्भाव हुआ। और उसने खदीव के विरुद्ध घोर आन्दोलन करना आरम्भ किया। ऐसे नायाब मौक़े से भला अङ्गरेज़ कब चूकने वाले थे? उन्होंने फ़ौरन खदीव को ब्रिटिश साम्राज्य के सुशीतल छाया में आश्रय प्रदान किया! और वैदेशिक स्वार्थ की रक्षा के बहाने स्वयं भी मिश्र में घुस आए!! उस समय मिश्र के जातीय दल के सूत्रधार थे, अरबी पाशा। उन्होंने उसी समय अपने देशवासियों को सावधान कर दिया कि इन भले आदमियों से होशियार रहने में ही कल्याण है! अङ्गरेज़ों ने अरबी पाशा को निकाल बाहर किया। उस समय जातीय दल यथेष्ट बलशाली न था। इसलिए अङ्गरेज़ों ने बड़ी आसानी से मिश्र पर अपना सिक्का जमा लिया। देशद्रोही खदीव उनके हाथों का खिलौना बन गया; परन्तु जातीय दल भी चुप न था। वह बराबर आन्दोलन करता रहा।

इसी समय यूरोप में महासमर का भयङ्कर दावानल धधक उठा। इसलिए अङ्गरेज़ों की दृष्टि में मिश्र का महत्व और भी बढ़ गया और उन्होंने उसे एक समर-शिविर के रूप में परिणत कर दिया। भारतवर्ष, इङ्गलैण्ड तथा ऑस्ट्रेलिया से बहुत बड़ी-बड़ी पलटनें बुला कर वहाँ रक्खी गईं। साथ ही अङ्गरेज़ों की ओर से इस बात की आशा भी दिलाई गई, कि महासमर के बाद मिश्र की स्वाधीनता की भी रक्षा की जावेगी। भोले-भाले मिश्री अङ्गरेज़ों की इस चालबाज़ी को समझ न सके। उन्होंने नाना प्रकार की मुसीबतें उठा कर भी अङ्गरेज़ों की सहायता की, परन्तु महासमर के समाप्त होते ही अङ्गरेज़ों ने अपना असली रूप प्रकट कर दिया। मिश्र को भलाइयों का बदला घोर दमन और अमानुषिक अत्याचारों द्वारा चुकाया जाने लगा। हज़ारों स्वतन्त्रता-प्रेमी मिश्री जेल की चहारदीवारी के अन्दर बन्द कर दिए गए। जातीय आन्दोलन को समूल ध्वंस कर देने के लिए बड़ी ही निर्मम नीति से काम लिया गया! सारे मिश्र में त्राहि-त्राहि मच गई। परन्तु आन्दोलन नहीं रुका। यह देख कर अङ्गरेज़ों ने दूसरे अमोघास्त्र का प्रयोग किया। लॉर्ड बेलफ़ोर, मि० लॉयड जॉर्ज, लॉर्ड कर्ज़न और सर वेलेन्टाइन शिरोल आदि ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने मासीई की अन्तिम शर्त का आश्रय लेकर मिश्र को ब्रिटेन के शासनाधीन रखने का दावा उपस्थित किया। उन्होंने सन्धि-सभा के प्रेज़िडेण्ट मि० उडरो विलसन को समझाया कि ग्रेट-ब्रिटेन, फ़ान्स और मित्र शक्ति की अधीनस्थ जातियों के लिए 'आत्म-निर्णय' (Self-Determination) की नीति का अवलम्बन करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि ये सभी अपनी वर्तमान राजनीतिक अवस्था से अत्यन्त सन्तुष्ट हैं; ग्रेट-ब्रिटेन और फ़्रान्स के राम-राज्य में किसी को कोई कष्ट नहीं है।

परन्तु, मिश्र वाले ग्रेट-ब्रिटेन के राम-राज्य के सुख से अच्छी तरह अघा गए थे। उन्होंने एक क्षण के लिए भी विश्राम नहीं किया। अमेरिका के परम चतुर और उदार-हृदय राष्ट्र-पति मित्र राज्यों की चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गए। दुर्बल राष्ट्रों को आत्म-निर्णय का अधिकार दिलाने की उनकी लालसा वन्ध्या के पुत्रवती होने की लालसा की तरह मन में विलीन हो गई! परन्तु, मिश्र के स्वतन्त्र होने की अदम्य-लालसा का इससे बाल भी बाँका न हुआ। उपर्युक्त घटना के प्रायः दस वर्ष पूर्व की मासीई-सन्धि के अनुसार मिश्र पर अपना अप्रतिहत प्रभाव जमाए रखने का अधिकार ग्रेट-ब्रिटेन को प्राप्त हो गया। परन्तु, मिश्र ने इस चालबाज़ी को व्यर्थ करने के लिए कमर बाँध लिया था। मिश्र के चमकते हुए सूर्य स्वर्गवासी ज़ग़लुलपाशा ने स्वाधीनता-यज्ञ के प्रधान ऋत्विक का पद ग्रहण किया। उनके नायकत्व में मिश्र अपने लक्ष्य की ओर तेज़ी से बढ़ चला। महात्मा ज़ग़लुल तथा सहकर्मी कर्मवीरों ने समस्त जाति को अच्छी तरह समझा दिया, कि स्वाधीनता की आकांक्षा रखने वाली जाति को कोई प्रबल से प्रबल शक्ति भी पराधीनता की लौह-शृङ्खला में चिरकाल तक आबद्ध नहीं रख सकती। अगर तुम्हारी लगन सच्ची है, तो कोई भी बाधा-विघ्न तुम्हें रोक नहीं सकता। इसके उत्तर में ग्रेट-ब्रिटेन की उदारता आँखें तरेर कर खड़ी हो गई। बेचारे मिश्री, दमन की चक्की में अबाध गति से पीसे जाने लगे! परन्तु स्वाधीनता के सच्चे पुजारियों पर अत्याचारियों की लाल-आँखों का कोई प्रभाव न पड़ा। स्वाधीनता के मरण-यज्ञ में वीरों ने हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुतियाँ प्रदान करना आरम्भ कर दिया। सचमुच वह दृश्य बड़ा मनोहर था, बड़ा मनोरम! वीरवर ज़ग़लुल की दृढ़ता की कहानी और ग्रेट-ब्रिटेन के रोष-कषायित आँखों के अङ्गारे उगलने का हृदयग्राही वर्णन, पाठकों को एक बार मिश्र के इतिहास के पन्नों में अवश्य पढ़ना चाहिए।

[अगले अङ्क में समाप्त]

* * *

इटली-महाक्रान्ति की कुछ स्मृतियाँ

[श्री० देवकीनन्दन जी विभव, एम० ए०]

Italia ! by the passion of the pain,
That bent and rent thy chain
Italia ! by the breaking of the bonds
The shaking of the lands
Beloved, O men's mother. O men's Queen,
Arise, appear, be seen.

—*Swinberne.*

फ़ान्स की राज्यक्रान्ति के अग्नि-कुण्ड में प्राचीन रूढ़ियाँ धायँ-धायँ कर जल रही थीं और उन्हीं के साथ जल रहे थे 'एक-तन्त्रवाद' और उसकी सहचरी 'स्वेच्छाचारिता' ! इस महायज्ञ से निकली हुई चिनगारियाँ यूरोप के सब ही देशों में पहुँच गई थीं और वहाँ के शासक प्रजासत्ता के इस रौद्र रूप को देख कर काँप रहे थे। बाहुबल की शक्ति बाहुबल को रोक सकती है, परन्तु बाहुबल विचार-धारा को रोकने में सदैव असमर्थ रहा है। जब-जब संसार में विचारों की उत्ताल-तरङ्गें उठी हैं, शक्ति-बल ने उसके सामने माथा झुका दिया है। बुद्ध का अहिंसावाद उठा और उसने एशिया को भिन्न रूप में बदल कर यूरोप तक अपना डङ्का बजाया, ईसा की 'प्रेम और भक्ति' ने संसार को और ही रङ्ग में रँग दिया और धार्मिक 'जहाद' की मतवाली तलवारों ने संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियों पर पदाघात किया ! वह धार्मिक युग था, उस समय राजनीति धर्म का एक अङ्ग मात्र थी, परन्तु फ़्रान्स की राज्यक्रान्ति ने राजनीतिक विषयों को सब से आगे लाकर रख दिया था।

इस महायज्ञ की चिनगारियाँ रोम राज्यों में पहुँचीं, वहाँ के नवयुवक आँख मल कर उठ बैठे। हा ! रोम ! यूरोप की आदि सभ्यता का आधार रोम पराधीन और परतन्त्र ! आग लग गई, उन तरुण हृदयों में ! ऑस्ट्रियन शासक, पीडमोण्ट और पोप की रियासतों ने उनके वीर-हृदय को कुचलना चाहा, पर स्वाधीनता के मतवाले युवक नहीं रुके। हज़ारों निर्वासित हुए और सैकड़ों ने मृत्यु का आलिङ्गन किया। इटली की जेलें और क़िले राजनीतिक क़ैदियों से भर गए !

* * *

बालक ऐटिलियो बेण्डियरा और ऐमीलो बेण्डियरा अभागे राजनीतिक क़ैदियों की दयाजनक स्थिति को देखते थे और उनका हृदय करुण-क्रन्दन करने लगता था। इनका अपराध क्या है ? यही न, कि यह अपनी मातृ-भूमि को प्रेम करते हैं; उसको स्वतन्त्र करना चाहते हैं ! उन्होंने ग़रीबों को पीसा, सभ्य महान रोम को अनाथ और असहाय कर दिया, फिर यह क्यों चुप रहते ? क्या भयङ्कर स्वेच्छाचार और निरङ्कुशता को सहन करने से इनकार करना भी कोई पाप है ?

बेण्डियरा बन्धुओं ने धन और ऐश्वर्य में जन्म लिया था, उनके पिता एक ऑस्ट्रियन जङ्गी बेड़े के अध्यक्ष थे। विदेशियों ने धन देकर उन्हें ग़ुलाम बना लिया था, वे एक बड़े वेतन के परिवर्तन में अपने ही देश की आकांक्षा कुचलने में अपनी शान समझते थे। जनता उनकी धन-लोलुपता देखती और उन पर थूकती थी। बेण्डियरा-बन्धु सोचते, ऐसा धन किस काम का, जिससे आत्मा का हनन हो ? लोकमत के परिवर्तन में इस पद का मूल्य ही क्या है ?

अपने पिता के प्रभाव से दोनों बन्धुओं को जल-विभाग में अच्छी नौकरी मिल गई, परन्तु उनके हृदय में तो क्रान्ति की आग धधक चुकी थी। देश स्वतन्त्र कैसे हो ? यह उनकी मानसिक चिन्ता उनमें घुन का काम कर रही थी।

* * *

आज 'तरुण-इटली' का प्रत्येक सदस्य एक विचित्र धुन में व्यस्त है। कल ज्योंही सूर्य भगवान अपनी प्रलयङ्करी रश्मियों सहित प्रकट होंगे, त्योंही शताब्दियों की परतन्त्रता के अन्त करने का अनुष्ठान प्रारम्भ हो जायगा। विप्लव महायज्ञ की आहुतियों से संसार चौंक उठेगा, इटली के नवयुवकों की तलवार वायु में कँपकँपी पैदा कर देगी, अत्याचार और निरङ्कुशता बिल में भागने के लिए स्थान खोजते हुए दिखाई देंगे। ओह ! कैसा पवित्र रोमाञ्चकारी दिन होगा वह !

पर यह क्या ? शासकों का यह ताण्डव-नृत्य क्यों ? क्या सूर्य अस्त होते ही इटली के देशभक्तों की आशाएँ भी अस्त हो गईं ? एक क्षण में सरकारी दूतों ने हज़ारों देशभक्तों की मुश्कें कस लीं। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई।

मेज़िनी का मार्सलीज़ से भेजा हुआ एक बक्स जिनेवा के पोतालय में पकड़ा गया। इसमें कुछ काग़ज़ात और पत्र-व्यवहार करने के गुप्त चिन्हों की पुस्तक थी। पीडमोण्ट के शासकों को योजना करके सारा भेद खुल गया।

विप्लववादियों के एक नेता डॉक्टर जेकोपो सफ़्रियानी ने चारों ओर क्रान्तिकारियों को सन्देश भेजा कि शीघ्र सब विप्लववादी कार्यकर्ता इटली से बाहर हो जायँ और फ़्रान्स या स्विट्ज़रलैण्ड में शरण लें। सैकड़ों इटली के देशभक्तों ने अपनी मातृभूमि को प्रणाम किया और निर्वासन का दण्ड स्वयं अपने ऊपर ले, मातृ-भूमि से बिदाई ली, लेकिन जेकोपो सफ़्रियानी ? उसकी माता ने अश्रुपूरित नेत्रों से उससे अपनी रक्षा के लिए अन्य देश में शरण लेने की प्रार्थना की, पर यह क्या उसके लिए सम्भव था ? फिर क्रान्ति का झण्डा किसके हाथ में रहेगा ? मृत्यु के भय से सफ़्रियानी के हाथ से पताका न छूटेगी। क्या वह झण्डे की रक्षा के लिए मृत्यु से खेल खेलने में डरता है ! माँ ! मैं अपनी पताका लिए खड़ा होऊँगा, उधर से मृत्यु का झोंका आएगा, पताका और मैं एक साथ ही गिरेंगे, तनिक भी अन्तर न होगा। कैसा सुखद स्वप्न है यह ! इसके विचार-मात्र से ही आनन्दमय रोमाञ्च हो आता है। ऐसे आनन्द को छोड़ कर मैं कहाँ भागूँगा ?

सफ़्रियानी पकड़ा गया ! सफ़्रियानी का पिता मैजिस्ट्रेट था, उसके प्रभाव से जज ने कहा—"बच्चे ! हमसे सब साफ़-साफ़ कह दो ! हम तुम्हें छोड़ देंगे।" सफ़्रियानी हँसा और उसने जज से कहा—"कल आइएगा, इसका उत्तर मैं कल दूँगा।" जज बड़ी आशाएँ लेकर गया और शासक बचे हुए देशभक्तों की गिरफ़्तारी की तैयारी करने लगे।

दूसरे दिन सूर्य उदय हुआ। जेलर ने सफ़्रियानी को जज के पास ले जाने के लिए उसकी कोठरी में प्रवेश किया, पर फिर घबड़ा कर पीछे हटा। उसके शरीर को काठ मार गया, आँखें पथरा गईं और उसके मुँह से हल्की-सी एक चीख़ निकल गई। सफ़्रियानी की लाश ख़ून से तर-बतर ज़मीन पर पड़ी थी और दीवार पर ख़ून ही से लिखा था—"आततायियों को यही मेरा उत्तर है।"

सत्ता के पुजारियों ने उसकी प्राण-रहित देह गिद्धों को डाल दी, पर उसकी अमर आत्मा इटली के प्रत्येक शरीर में व्याप्त हो गई थी।

* * *

बेण्डियरा-बन्धुओं ने अन्त में धन के लोभ को लात मार दी और तरुण इटली के सदस्य बन गए। बेण्डियरा-बन्धु और निकोला फ़्रेबरिज़ी के नेतृत्व में रोमाङ्गना और केलेबरिया प्रान्तों में विप्लव-अनुष्ठान की योजना की गई। अस्त्र-शस्त्र इकट्ठे किए जाने लगे।

परतन्त्रता भयङ्कर विष है। ग़ुलाम मनुष्य की अन्तरात्मा निर्बल होती है, वह स्वार्थी और तुच्छ हो जाता है। यही कारण था कि इटली की आत्मा का हनन करने के लिए शासकों को इटली के ही मनुष्य कुछ चाँदी के टुकड़ों के लोभ में मिल जाते थे। सरकार का ख़ुफ़िया-विभाग इन्हीं लोगों से भरा पड़ा था। शायद ही कोई ऐसा कुटुम्ब हो, जिसमें एक ख़ुफ़िया-विभाग का आदमी न हो। भाई भाई से और पिता पुत्र से शङ्काशील रहता था, कैसी भयावह स्थिति थी वह ! बेण्डियरा-बन्धुओं के एक मित्र ने सारा भण्डा-फोड़ कर दिया। बेण्डियरा-बन्धु आत्म-रक्षा के लिए भागे।

अपने देश को छोड़ कर अज्ञात यात्रा की तैयारी करना कितना कठिन है। माता-पिता का मोह ! नव-यौवना सुन्दरी पत्नी का प्रेम ! मित्रों का सहयोग ! नवजात शिशु का स्नेह ! सबको ठुकराना ! और वह भी सम्भवतः अनन्तकाल के लिए ! अटीलियो ने अपनी माता और पत्नी को लिखा :—

"Near or far, happy or unhappy, I shall ever love and desire thee, my Mariana, but I wish for thine own sake that thou should'st love me less and so suffer less...If only instead of writing I could wake up in thy arms !"

अर्थात्—"मैं दूर रहूँ या समीप ! सुखी रहूँ या दुखी, पर मेरे हृदय में तेरे प्रति प्रेम और आकांक्षा सदैव बनी रहेगी ; परन्तु मेरी मेरियाना ! मैं तेरे हित के लिए चाहता हूँ, कि तू मुझे कम प्यार कर, जिससे तुझे कम पीड़ा हो...यदि मैं यह लिखने के स्थान में केवल तेरे बाहुओं में जग सकता......!" मेरियाना वीर पत्नी थी, देश के दुख में पति के भावों के साथ सहयोग करती थी, परन्तु उसने कब सोचा था, कि क्रान्ति के झोंके इतना शीघ्र उसके जीवन की नौका को बहा कर उसकी आँखों से विलीन कर देंगे !

* * *

बेण्डियरा-बन्धु सीरिया में निर्वासित जीवन व्यतीत करते थे। फ़्रान्स की सरकार की आज्ञा से मेज़िनी को भी मार्सलीज़ छोड़ कर लन्दन में शरण लेनी पड़ी थी। उसने सोचा, अङ्गरेज़ जाति स्वातन्त्र्य-प्रिय है, वहाँ दिन-दहाड़े अन्याय नहीं होता। इधर बेण्डियरा-बन्धु अत्यन्त आर्थिक कष्ट में थे, परन्तु उनकी आत्मा सब कष्टों को छोड़ कर एक ध्येय में लगी हुई थी। हाय ! अगर बेण्डियरा बन्धुओं को यही हृदय दिया था, तो उन्हें ऐश्वर्य-शाली माता-पिता के घर क्यों जन्म दिया था ? ग़रीब परिस्थितियों में जन्म लेने से निर्वासन की यह कठिनाइयाँ सहज तो हो जातीं !

बेण्डियरा-बन्धुओं की आत्मा आकुल थी। हम कब तक इस तरह देश को निरङ्कुशता में पिसते देखेंगे और शान्त रहेंगे ? यदि महान क्रान्ति का दिवस अभी नहीं आया, तो कब आवेगा ? फूँक-फूँक कर पैर आगे रखने की यह नीति क्या यह प्रकट नहीं करती, कि हमारी आत्माओं में भी अभी बल की कमी है ? जब हमें विदेशी पीस ही डालेंगे, तब क्या हो सकेगा ? बेण्डियरा ने अपने तप्त-अश्रुओं से भीगे हुए पत्र मेज़िनी को भेजे,

पर चोर की तरह लन्दन-सरकार इन पत्रों को पढ़ती थी और उनका तात्पर्य लन्दन-स्थित ऑस्ट्रियन दूत तक पहुँचा देती थी।

*   *   *

मेज़िनी ने बेंडियरा-बन्धुओं को अभी अवसर की प्रतीक्षा करने के लिए लिखा। उनकी आत्मा विद्रोह कर बैठी। जब देश में आग लग रही हो, तब कैसी प्रतीक्षा? कार्य करने का भी अवसर शीघ्र मिल गया। कर्फ़ू के सागर में ठहरा, अस्त्र और लड़ाई के सामान से भरा हुआ जहाज़ आया। उसके दो कप्तानों ने उन्हें सुनाया कि इटली में क्रान्ति की सब तैयारियाँ हो चुकी हैं, कोसेन्ज़ा, सिगलियानो और सेनग्यूवानी के पहाड़ों में

ऐमीलो बेंडियरा

अनन्त शसस्त्र क्रान्तिकारी इकट्ठे हो गए हैं, साधन की भी कमी नहीं है। आवश्यकता है केवल कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों की, जो उन्हें महाक्रान्ति के अनुष्ठान में दीक्षित कर सकें। सरल हृदय बेंडियरा-बन्धु ख़ुशी से उछल पड़े। देशभक्ति की ज्वाला ने उनके तर्क की आँखों को बन्द कर दिया। अट्ठारह साथियों सहित बेंडियरा-बन्धु जहाज़ पर सवार हो गए।

*   *   *

बेंडियरा-बन्धु केलेबरिया प्रान्त में कोट्रोन के तट पर उतरे। उन्होंने इटली की भूमि का चुम्बन किया और कहा—"तूने हमें अपना जीवन दिया है, हम तुझे अपना जीवन देते हैं।" और फिर उन्होंने अपने मस्तक उठाए। पर यह क्या? यहाँ तो कोई क्रान्तिकारी नहीं मालूम होते? विश्वासघात! वे फिर तट की ओर दौड़े, पर जहाज़ चल दिया था। वे यह सोच ही रहे थे, कि उनकी ओर एक सरकारी सैनिकों की टुकड़ी आती हुई दिखाई दी, सैनिकों के आगे-आगे उनके ही अट्ठारह साथियों में से एक साथी बोशेग्पाई भी था। फिर क्या बोशेग्पाई सरकारी दूत है?

बेंडियरा-बन्धु और उनके साथी आत्म-रक्षा के लिए तैयार हो गए। दुश्मन की जेलों में सड़ कर मरने से सैनिक-मौत मरना अच्छा है।

देशभक्तों की वीरता अद्भुत थी, एक सरकारी सैनिक मारा गया और कई घायल हुए, पर अधिक देर तक इतने अधिक सैनिकों का सामना करना सम्भव न था। बेंडियरा-बन्धु और उनके साथी पकड़े गए।

फ़ौजी न्यायालय बैठा, बेंडियरा बन्धुओं और उनके साथियों ने अपनी ओर से कोई वकील करना या सफ़ाई पेश करने से इनकार कर दिया। जहाँ मुद्दई और न्यायाधीश एक ही हों, वहाँ न्याय कैसा? तीन को फाँसी और बाक़ी को गोली से उड़ा देने की सज़ा मिली।

देश पर बलिदान होने वाली वीर आत्माओं ने फ़ैसला सुना और मृदु-हास्य से मुस्करा दिया।

*   *   *

आज २५ जुलाई सन् १८४४ का पवित्र दिन है। चारों ओर बेंडियरा-बन्धु और उनके साथियों का ही ज़िक्र है। पापी शासक क्या सचमुच ही इन विकसित सुन्दर पुष्पों को कुचल ही डालेंगे? क्या उनके देखते ही उनकी आशा-लता इस तरह नष्ट कर दी जायगी? हा! इटली का दुर्भाग्य! हज़ारों स्त्री, बच्चे, पुरुष उस ओर चल दिए, जहाँ देशभक्तों को गोली से उड़ाया जाने वाला था।

ऐमीलो बेंडियरा अपने सात साथियों सहित मृत्यु-भूमि में लाया गया। सबके शरीर काले बुर्क़ों से ढके हुए थे। शासकों ने सोचा था, इन वीरों की प्रतिभा बुर्क़ों की कालिमा में छिप जायगी, पर जिस तरह दिनकर का प्रकाश अन्धकार के कलेवर को फाड़ कर संसार की गोदी को आभा से भर देता है, उसी तरह अज्ञात मार्ग से इन शहीदों का तेज जनता के हृदय में आलोकित हो रहा था।

शहीदों की टोली में से एक ध्वनि निकली, उसमें सङ्गीत का माधुर्य था, पर इस्पात की दृढ़ता। *Chi per la patria muroro lissu to ha assai* (स्वदेश के लिए शहीद होने वाले अमर हैं) चारों ओर वायु-मण्डल स्तब्ध था, जनता एकटक शहीदों की ओर देख रही थी।

सैनिकों ने बन्दूक़ें चढ़ाईं, अभियुक्तों को तैयार होने के लिए आज्ञा हुई। उनमें से प्रत्येक ने इटली की पवित्र भूमि को घुटने टेक कर नमस्कार किया, उसकी पवित्र रज माथे से लगाई। फिर आपस में एक-दूसरे से गले लग कर मिले और प्रेम से एक-दूसरे का चुम्बन किया। हज़ारों का जन-समूह इस तरह खड़ा था, जिस तरह वे मानो किसी कुशल-चित्रकार की क़लम के चमत्कार हों। सरकारी कर्मचारी भी किंकर्त्तव्य-विमूढ़ खड़े थे और सैनिकों को तो काठ मार गया था!

इतने में ही एक लड़खड़ाती पर तीखी आवाज़ सुनाई दी—"हाँ! छोड़ो!" सैनिकों ने हड़बड़ा कर बन्दूक़ें सँभालीं, जैसे वे नींद से जगे हों और निशाना लगा कर गोलियों की बाड़ छोड़ी! दायँ! दायँ! पर यह क्या? गोलियाँ शहीदों के लगने की बजाय, हवा में ऊपर चली गई थीं। जनता ने हर्ष-ध्वनि की।

"साहस करो! अपना कर्त्तव्य-पालन करो! हम भी सैनिक हैं!"—एक देशभक्त ने सैनिकों को लक्ष्य करके कहा। सैनिकों ने रोते-रोते फिर बन्दूक़ें सँभालीं, जनता ने ऊँचे स्वर से शासकों को उनके मुँह पर ही गालियाँ देनी शुरू कीं। गोलियों की एक बाड़ और छूटी, देशभक्तों के शरीर भूमि पर गिर कर तड़पने लगे, परन्तु '*Viva'l Italia*' 'इटली अमर हो' 'इटली की जय हो' आदि नारे उनके मुँह से तब भी निकलते रहे। फिर सब शान्त हो गया।

ऐमीलो बेंडियरा ने अपने एक पत्र में फ़्रेबिज़ी को लिखा था—"और यदि हम अपना जीवन देश के लिए उत्सर्ग ही कर दें तो क्या चिन्ता है! इटली तब तक जीवित नहीं हो सकता, जब तक इटली-निवासी मरना न सीखें।" शीघ्र ही उसने इसे कार्य-रूप में भी करके दिखा दिया! धन्य है!

*   *   *

बेंडियरा-बन्धुओं के आत्म-बलिदान ने इटली के नवयुवकों में जीवन फूँक दिया और शीघ्र ही सारा देश क्रान्ति की लहरों में सराबोर हो गया। जो काम वे जीकर न कर सके थे, वही उन्होंने मर कर कर दिया।

डॉउनिङ्ग स्ट्रीट की सरकार ने बेंडियरा-बन्धुओं के पत्रों को ऑस्ट्रिया के राजदूत तक पहुँचा कर अपना दामन उनके रक्त से रँग लिया था। पार्लामेण्ट में गर्म चर्चा चली, सर ग्राहम पोल ने पत्रों में हस्तक्षेप करने की बात को स्वीकार किया। फिर तो चारों ओर से उसे इटली के देशभक्तों का हत्यारा कहा जाने लगा। डन्कोम्ब ने इस मामले की जाँच करने के लिए एक पार्लामेण्टरी कमीशन नियुक्त करने का प्रस्ताव पेश करते हुए बेंडियरा-बन्धुओं के सम्बन्ध में कहा—"They died for their country, betrayed by the British Government of the day."

न्याय-प्रिय अङ्गरेज़ों ने व्यक्तिगत पत्रों में हस्तक्षेप करने के क़ानून का घोर विरोध किया। कार्लायल (Carlyle) ने इस कार्य-प्रणाली का घोर विरोध करते हुए टाइम्स में लिखा था :—

"Whether the extraneous Austrian Emperor and miserable old Chimera of a pope shall maintain themselves in Italy, is not a questions in the least vital to Englishman. But it is a question vital to us that sealed letters in an English Post Office be, as we all fancied they were, respected as things sacred, that opening of men's letters, a practice near of kin to picking men's pockets and to other still viler and far fataler forms of scoundrelism, be not restored to in England, except in cases of the very last extremity.......To all Austrian Kaise.s, and such like, in their time of trouble, let us answer, as our fathers from of old have answered: 'Not by such means is help for you! such means allied to picking of pockets and viler forms of scoundrelism, are not permitted in this country for your behoof.'"

लॉर्ड ऐबरडीन ने इस आन्दोलन का उत्तर दूसरी ही तरह दिया। उन्होंने कहा कि बेंडियरा-बन्धु और उनके साथी की हत्या नेपिल्स की सरकार ने नहीं की। वहाँ की

ऐटिलियो बेंडियरा

जनता देश में उनके आने के विरुद्ध थी, इसलिए उसने उन पर आक्रमण किया और उन्हें मार डाला। सत्य की पराकाष्ठा! धन्य ब्रिटिश-न्याय!

*   *   *

बेंडियरा बन्धुओं के रक्त से जो खेती सींची गई थी, वह समय आने पर लहलहा उठी। इटली स्वतन्त्र हो गया और इस घटना के सोलह वर्ष बाद जब गेरीबाल्डी और उसके विजेता सैनिक इस स्थान से गुज़रे, तो सबने घुटने टेक कर ईश्वर से शहीदों की आत्मा को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। इनमें वीर सैनिक-वेश में मेरियाना भी थी!

*   *   *

दासों की पुकार

[श्री० दीनानाथ जी, एम० ए०]

हम लोगों में से अधिकतर लोगों का यह ख़याल है, कि दासता एक बड़ी पुरानी संस्था थी, जिसका वर्णन कई देशों के पुराने ज़माने के इतिहास में मिलता है। हम लोग समझते हैं, कि दासता का समय संसार के इतिहास का एक बहुत ही ख़राब समय था और आधुनिक संसार में तो दासता का नाम भी नहीं है। जब कभी दासता के विषय में बातचीत होती है, तो हम कहते हैं कि वे पुराने मनुष्य बड़े ही क्रूर थे, अब तो संसार बहुत सभ्य बन गया है, अब मनुष्य-जाति में आपस में ऐसा पाशविक तथा क्रूर बर्ताव कहीं भी नहीं किया जाता है। कई लोग दासता के विरुद्ध आन्दोलन करने वाले पुराने नेताओं की प्रशंसा करते हैं और कहते हैं, कि यदि हम लोग उस समय जीवित होते, तो उनके इस महान कार्य में अवश्य सहायता देते और संसार के इस महान रोग को दूर करते; परन्तु हम लोगों को यह मालूम नहीं है, अब भी संसार में जहाँ कि स्वतन्त्रता, समता तथा भ्रातृ-भाव का राज्य समझा जाता है, जहाँ की अधिकतर सभ्य जातियाँ भ्रातृ-भाव के महान आदर्श का अनुसरण करने का दावा भरती हैं, ५० लाख से ऊपर ऐसे मनुष्य हैं, जो कि दूसरे मनुष्यों की सम्पत्ति हैं! उन्हें अपने शरीर पर अधिकार नहीं है, अपनी स्त्री पर अधिकार नहीं है, अपने बच्चों पर अधिकार नहीं है। वे केवल मवेशी की तरह हैं, उन्हें खाना दिया जाता है और उनसे काम लिया जाता है। जब मालिक का मन चाहे, वह उनमें से किसी को भी, किसी भी दाम पर बेच सकता है! वे भी मनुष्य हैं, उनके भी हृदय है, शरीर है, मन है, बुद्धि है। उनके हृदय में भी दया, शील, आत्माभिमान, कुटुम्ब-प्रेम इत्यादि उच्च भाव उपस्थित हैं, पर इनमें से एक पर भी उनका अधिकार नहीं है! सबका अधिकारी उनका स्वामी है!!

दासता कई प्रकार की होती है। यों तो संसार की कई जातियाँ, जो विदेशी शासन के नीचे हैं, वे भी दासता के बन्धन में पड़ी हैं। पर उनके केवल कुछ राजनैतिक तथा व्यक्तिगत अधिकार मात्र छीन लिए गए हैं। असली दासता तो इससे कहीं बुरी है। दासता की असली पहचान यह है, कि मालिक का दास पर वह अधिकार है, जो उसे अपनी अन्य सम्पत्ति पर है! वह उसे इनाम में दे सकता है, उसे बेच सकता है, और वह उसे जो चाहे, जिस तरह रख सकता है। जितना अधिकार उसे अपने घर पर या और किसी सम्पत्ति पर है, उतना ही अपने दास पर है। इस सिद्धान्त को जब कार्य-रूप दिया जाता है, तब इससे जितनी बुराइयाँ पैदा होती हैं, दासों पर जितने अत्याचार होते हैं, उसकी कल्पना करना असम्भव है। उसका वर्णन करने का प्रयत्न आगे किया जावेगा। इस सम्बन्ध में एक बात का और ध्यान रखना चाहिए। दासता का रोग जङ्गली जातियों में कहीं नहीं पाया जाता। यह केवल सभ्य कहलाने वाली जातियों का रोग है। जङ्गली जातियों में मनुष्यों की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का इस बुरी तरह से नाश नहीं किया जाता। उसे अपने शरीर तथा कुटुम्ब की स्वतन्त्रता होने के अतिरिक्त, देश की अन्य सम्पत्ति में भी कुछ भाग मिलता है। वह अपने देश के जङ्गलों से अपना आहार इकट्ठा कर सकता है तथा वहाँ की नदियों व अन्य उपयोगी स्थानों का उपयोग कर सकता है। परन्तु दास तो एक व्यक्ति नहीं, वरन् एक सम्पत्ति है, जिसका पूरा उपयोग उसके स्वामी के हाथ में रक्खा गया है।

इस पाशविक संस्था के सम्बन्ध में कई रोमाञ्चकारी घटनाएँ सुनी गई हैं। जब-जब परोपकारी व्यक्तियों ने इसके विषय में जाँच की है, उन्हें अति भयानक तथा हृदय-वेधक कहानियाँ सुनाई गई हैं। माताओं के नन्हें-नन्हें बच्चे छुड़ा कर बेच दिए जाते हैं, स्त्री से पुरुष अलग कर दिया जाता है, एक सुखमय छोटे से कुटुम्ब को तितर-बितर करके उसके व्यक्ति दूसरे-दूसरे मालिकों के हाथ बेच दिए जाते हैं! चीन में छोटे-छोटे बाल-दास पाए जाते हैं। इनमें से कई एक-एक कमरे में भर दिए जाते हैं। रात-दिन उनसे बेहद काम लिया जाता है। काम न करने पर उन्हें कोड़े लगाए जाते हैं, उनके शरीर पर गरम पानी छोड़ दिया जाता है, तथा अन्य कई हृदय-बेधी पीड़ाएँ दी जाती हैं—उनके शरीर पर लोहे की शलाख़ें गरम करके लगाई जाती हैं! चीन में छोटी-छोटी बालिकाएँ भी मोल ली जाती हैं, वे घर की नौकरानियाँ बना कर रक्खी जाती हैं। वे घर-मालिकों की सम्पत्ति हैं, उन पर, उनके शरीर तथा सतीत्व के भावों पर मालिक का पूर्ण अधिकार है। वह उनसे जिस तरह जी चाहे, बर्ताव कर सकता है।

अरेबिया, अबिसीनिया तथा लिबिया में भी कई प्रकार की दासता पाई जाती है। वहाँ भी ऐसे ही क्रूरतापूर्ण उदाहरण मिलते हैं। हम लोग जो सभ्य देशों के शहरों में रहते हैं, जिन्हें काफ़ी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है, यह कभी कल्पना भी नहीं कर सकते कि इन लोगों को कितने दुःख उठाने पड़ते हैं। भारतवासियों में बहुतों को याद होगा, कि आसाम तथा भारतीय महासागर के फ़िजी इत्यादि द्वीपों में जाकर चाय के खेतों का काम करने वाले भारतवासियों को वहाँ के मालिक किस तरह से रखते थे और उनसे कैसा व्यवहार किया करते थे। अभी भी भारत की कई रियासतों में राज्य की प्रजा के साथ कभी-कभी ऐसा बर्ताव किया जाता है मानों वे राज्य के अधिकारियों की व्यक्तिगत सम्पत्ति हों! बेगार का रोग तो अभी भी कई भागों में फैला हुआ है और ख़ासकर जिन भागों में ज़मींदारी प्रथा प्रचलित है, किसानों के कई शारीरिक तथा साम्पत्तिक अधिकार ज़मींदारों ने छीन लिए हैं; पर ये सब असली दासता के उदाहरण नहीं हैं!

दास-प्रथा का समर्थन करने वाले लोग बहुधा यह कहते हैं कि "यह तो एक बड़ी पुरातन संस्था है। इसे कोई मिटा नहीं सकता, फिर इससे तो दास तथा स्वामी—दोनों का लाभ है। सभ्य देश के निवासी असभ्य काली जातियों को, जो कि सुस्त हैं और कला-रहित हैं, अच्छे-अच्छे हुनर सिखाते हैं और उनकी आदतें सुधारते हैं। स्वामियों को भी इससे फ़ायदा है। उनका काम सस्ते में हो जाता है।" पर दासता इतनी निर्दोष चीज़ नहीं है। दासता की संस्था हज़ारों निरपराध ग़रीब मूक मनुष्यों के ख़ून से रँगी हुई है, वह संस्था असहाय, निर्बल, दुखियों की आहों से गूँज रही है। दासता की भयङ्कर चक्की में कई नन्हें निर्दोष बालकों के सुकुमार शरीर पिस चुके हैं और करोड़ों निर्बलों की आत्माओं का नाश हो चुका है!!

फिर, वह केवल दासों की ही नहीं, वरन् स्वामियों की आत्माओं का भी नाश करने वाली है। बिना संयम के बर्ताव करने के कारण स्वामियों का आत्म-संयम जाता रहता है। सदा चिकनी-चुपड़ी बातें तथा अपनी प्रशंसा सुनने से उनके हृदय में व्यर्थ आत्माभिमान उत्पन्न हो जाता है। वे किसी तरह का विरोध तो सहन ही नहीं कर सकते। हिंसा, क्रोध, असंयम—ये उनके लिए सामान्य भाव हो जाते हैं!

स्वामी तथा दास दोनों की आध्यात्मिक उन्नति की दृष्टि से दासता बहुत ख़राब है। दासता का बन्धन दूर करने से संसार कितना अधिक सुखी, कितना अधिक उन्नतिशील हो सकेगा, इसकी कल्पना नहीं हो सकती। लीग ऑफ़ नेशन्स में मसोलिनी ने एक क़िस्सा सुनाया था, वह यहाँ पाठकों के सामने रखने योग्य है। अबिसीनिया के १५० दास विक्रय के लिए समुद्र-तट की ओर ले जाए जा रहे थे। नीचे बालुमय मरुस्थल अग्नि-सा धधक रहा था। ऊपर से ग्रीष्म का तेज सूर्य तप रहा था। पर दासों के न तो पैर में कुछ था न सिर पर। सबकी गरदनें एक ज़ञ्जीर में बँधी हुई थीं। पीछे से स्वामियों के प्रतिनिधि लाठी, कोड़े तथा बन्दूकों की मूठों से उनके सिर तथा पीठ पर क्रूरता से प्रहार कर रहे थे। इसी बीच में दूसरी ओर से डाकुओं ने धावा किया, दासों के सौदागर तथा डाकुओं में मुठभेड़ हुई। वे दासों को लूट कर ले जाने की कोशिश करने लगे और सौदागर बचाने की! दोनों ओर से रस्सियाँ व ज़ञ्जीरें खींची जाने लगीं, गरदनें टूटीं और ३० निरपराध दासों के प्राण चले गए! कितना क्रूरतापूर्ण दृश्य था। असहाय दासों की कैसी करुणाजनक फाँसी थी!

ऐसे दृश्यों को देख कर कोई ऐसा विचारशील मनुष्य न होगा, जो दास-प्रथा से घृणा न करेगा। अब आवश्यकता इस बात की है कि सभ्य मनुष्यों में दासता के विषय में ठीक-ठीक समाचार दिए जावें। उन्हें यह बताया जावे, कि दासता की प्रथा अब भी संसार में मौजूद है। अब भी लाखों मनुष्य उसकी बेड़ियों में फँसे हुए अपनी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्ति को खो रहे हैं। इसके विनाश के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्यों के विचार इन दीन-दुखियों की कथा सुना कर इतने बदल दिए जावें, कि वे दासता को एक पाप समझें, एक आध्यात्मिक शारीरिक तथा मानसिक हत्या समझें। आशा है कि इन कार्यों द्वारा मनुष्य-जाति के वे प्राणी, जो लाखों की संख्या में हमारे क्रूर तथा पाशविक विचारों के शिकार हो रहे हैं; सुख, समता तथा स्वतन्त्रता के उन्नतिशील साम्राज्य में क़दम रख सकेंगे।

यूरोप में ऐसे आन्दोलन की विशेषकर आवश्यकता है। अपनी नवीन संस्कृति तथा वैज्ञानिक उन्नति के मद में चूर होकर यूरोप यह समझने लगा है, कि संसार की अन्य जातियाँ उसकी समता के पात्र नहीं, उनसे भ्रातृ-भाव नहीं रक्खा जा सकता! इसीलिए यूरोप आज केवल संसार की राजनैतिक तथा आर्थिक उन्नति ही नहीं, वरन् आध्यात्मिक तथा मानसिक उन्नति के मार्ग में भी रोड़ा बन रहा है! यूरोप के पूँजीपति ही अपने उपनिवेशों में दासों का व्यापार करते हैं और अपने खेतों में दासों से काम लेते हैं। संसार की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि यह दासता-विरोधक आन्दोलन सब से पहले यूरोप में शुरू किया जावे।*

* लेडी (सर जॉन) साइमन लिखित 'स्लेवरी' नामक पुस्तक के आधार पर।

—लेखक

* * *

केसर की क्यारी

ऐ दर्द तू ही उठके ज़रा दे तसल्लियाँ, कुछ तो क़रार आए दिले-बेक़रार को !

ऐ दिल वह आ रहे हैं, यह है वक़्ते-इमतेहाँ,
घबरा के खो न बैठना सबरो-क़रार को !
—"शौक़" इटावी

वक़्ते-तपाँ का देख के अन्दाज़े इज़तराब,
क्या-क्या हँसी न आई दिले-बेक़रार को !
ऐ दर्द तूही उठके ज़रा दे तसल्लियाँ,
कुछ तो क़रार आए दिले-बेक़रार को !
—"राज़" लखनवी

समझा रहे हो हज़रते नासेह मुझे, मगर,
समझाऊँ किस तरह से, दिले-बेक़रार को !
आमाज गाह तीरे नज़र का बनाइए,
रखिए नज़र में क़ैद, दिले-बेक़रार को !
—"हमदम" अकबराबादी

दस्ते-शिफ़ा न सीने पे रक्खा, जो आप भी,
क्यों कर क़रार आए दिले-बेक़रार को !
—"रज़ी" नगरामी

समझा के आजिज़ आ गए, कह-सुन के थक गए,
आता नहीं क़रार, दिले-बेक़रार को !
—"आज़म" करेवी

इस एक दिल में आज है, सौ दिल का इज़तिराब,
कहते हैं हम न देखो दिले-बेक़रार को !
ऐ शमआ बेकसी ने तेरी आज और भी—
तड़पा दिया है मेरे दिले बेक़रार को !
खुद चाराजू हैं थामे जिगर इज़तिराब में,
अल्लाह दे क़रार दिले बेक़रार को !
—"अज़हर" साहब

आग़ाज़े शामे हिज्र है, गुल है चराग़े-होश,
पहलू में ढूँढ़ता हूँ, दिले-बेक़रार को !
यारब ज़मीं की ख़ैर, तहे आसमाँ नहीं,
वह फेंकते हैं, मेरे दिले-बेक़रार को !
—"एजाज़" इलाहाबादी

करती नहीं निगाह तेरे दिल का फ़ैसला,
तड़पा के छोड़ जाती है, इस बेक़रार को !
—"बाँके" देहरादूनी

वादे पे तेरे दिल को न आए जो ऐतबार,
मैं लेके क्या करूँ तेरे क़ौलो क़रार को !
—"शौक़" इलाहाबादी

जब इश्क़ ख़ुद बढ़ाए मेरे इन्तिशार को,
हो किस तरह क़रार दिले-बेक़रार को !
—"आग़ा" इलाहाबादी

आई नफ़स के साथ सदा आह-आह की,
आवाज़ दी जो मैंने दिले-बेक़रार को !
—"रयाज़" नारवी

गुज़रे हैं इतने रोज़ मेरे इज़तरार को,
होता सुकूँ मुज़िर है, दिले-बेक़रार को !
—"ज़ामिन" इलाहाबादी

जाँ काहे ग़म तो है पे करूँ क्या कि चारागर,
है कुछ मज़ा इसी में दिले-बेक़रार को !
—"सैयद" राजापुरी

क्या नज़्र दूँगा नावके मिज़गाने यार को,
मुद्दत से रो रहा हूँ दिले-बेक़रार को !
तुमको तो भी क़रार न आता किसी तरह,
तुम देखते जो मेरे दिले-बेक़रार को !
आज़ारे ग़म यही है, तो पहलू को चीर कर—
मैं फेंक दूँगा अपने दिले-बेक़रार को !
—"ग़नी" इलाहाबादी

किन-किन अदाओं से मेरे पहलू में बैठ कर,
पहरों वह देखते हैं दिले-बेक़रार को !
—"अतहर" साहब

बिछुड़ा हुआ मिला है, यह मुद्दत का एक दोस्त,
आओ गले लगाएँ दिले-बेक़रार को !
—"असग़र" बनारसी

आज उनकी बज़्मे-नाज़ में जाने का क़स्द है,
क़ाबू में ला रहा हूँ, दिले-बेक़रार को !
—"महशर" इलाहाबादी

आँखों से जब लगा लिया तस्वीरे-यार को,
कुछ आगया क़रार दिले-बेक़रार को !
महफ़िल में देखते हैं, जिसे वह अदा के साथ,
कहता है ख़ैरबाद; वह सबरो-क़रार को !
पहलू से वह गया, तो गए यह भी साथ-साथ,
अल्लाह क्या हुआ मेरे सबरो-क़रार को !
समझा किसी ने बर्क़ किसी ने चराग़े-नूर,
देखा जो बेक़रार दिले-बेक़रार को !
—"ऐश" साहब

ऐ रोने वालो रोते हो, क्यों हमसे दर्दे-दिल,
हम भी तो खो के बैठे हैं सबरो-क़रार को !
—(नवाब) "ईसा" साहब

कल के ख़िलाफ़ बात नई कुछ ज़रूर है,
है आज क्यों क़रार दिले-बेक़रार को !
जब काम आशिक़ों की बदौलत निकल गया,
सरकार भूल जाते हैं क़ौलो-क़रार को !
—(स्वर्गीय) "बेख़ुद" इलाहाबादी

क्या बेक़रार समझेगा अनजामेकार को,
जो सब्र करके बैठा हो सब्रो-क़रार को !
—"महमूद" साहब

क्यों टालते हैं वादए फ़रदा पे रोज़ आप,
तड़पाते क्यों हैं, मेरे दिले-बेक़रार को
उम्मीद मौत की, न तेरे आने का यक़ीं,
समझाऊँ किस तरह मैं दिले-बेक़रार को !
मिलता नहीं जिगर की तरह उसका भी पता,
पहलू में ढूँढ़ता हूँ, दिले-बेक़रार को !
—"मज़हर" साहब

शोला यही, शरर भी यही, बर्क़ भी यही,
समझे हैं क्या वह मेरे दिले-बेक़रार को !
गिरती हैं बिजलियाँ, जो फ़लक से ज़मीन पर,
वह ढूँढ़ती हैं मेरे दिले-बेक़रार को !
इज़हारे जौक़े-शौक़ पर आई जो आफ़तें,
मैंने किया सलाम दिले-बेक़रार को !
—"नूह" नारवी

ए नशतरे-निगाह उभरना न तू कभी,
जब तक न हो सकून दिले-बेक़रार को !
हसरत भरी निगाह से मैं देखता रहा,
चुटकी को उनकी, अपने दिले-बेक़रार को !
—"शादाँ" दरियाबादी

इसको तो एक नज़र में उड़ा ले गया कोई,
अपना समझ रहे थे दिले-बेक़रार को !
—"अहसन" नगरामी

मुलके ख़ुदा पे क़ब्ज़ा वह क्या कर सकेंगे, जो—
क़ाबू में ला सके न, दिले-बेक़रार को !
—"कैफ़ी" कशमीरी

बिजली का इज़तराब तो देखा है आपने,
अब देखिए हमारे दिले-बेक़रार को !
यारों ने किसके हुस्न का छेड़ा था तज़किरा,
एक चोट सी लगी, जो दिले-बेक़रार को !
—"तरीक़" जौनपुरी

जलवा दिखा के शोख़िए बर्क़े जमाल का,
तड़पा रहे हैं और दिले-बेक़रार को !
—(स्वर्गीय) "शहीर" मछलीशहरी

कह कर किसी ने इतना, कि मैं भी हूँ बेक़रार,
तड़पा दिया कुछ और दिले-बेक़रार को !
—"मनसब" जौनपुरी

है सोज़ साज़े-इश्क़ से बाज़ारे-शमआ गर्म,
तसकीन दे रहा हूँ, दिले-बेक़रार को !
—"साहिर" देहलवी

ऐसा न हो कि तुम भी हो बेचैन देख कर,
देखो ज़रा सँभल के दिले-बेक़रार को !
पहलू में जब से यह है, मुसीबत में जान है,
दे दूँ किसे उठा के दिले-बेक़रार को !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

सत्याग्रह-संग्राम की कुछ नई एवं महत्वपूर्ण आहुतियाँ

बेलारी कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्री० राघवेन्द्र राव, जिन्हें एक वर्ष की सज़ा हुई है।

बम्बई के १७वें "वार कौन्सिल" के मन्त्री, जो ४थी दिसम्बर को जेल भेजे गए हैं।

अहमदनगर ज़िले के 'डिक्टेटर' जिन्हें सत्याग्रह-आन्दोलन में ६½ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।

करनाटक वार-कौन्सिल के 'डिक्टेटर' श्री० हनुमन्तराव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०, जिन्हें दूसरी बार ६ मास की सज़ा दी गई है।

हिन्दुस्तानी सेवा-दल के मन्त्री श्री० बी० एन० मालगी, जिन्हें ४ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।

नैनिताल-जिले कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व उप-प्रधान जिन्हें एक वर्ष की सज़ा दी गई है।

अहमदनगर के सुप्रसिद्ध वकील श्री० जी० बी० पटवर्द्धन, जिन्हें करबन्दी आन्दोलन को प्रोत्साहित करने के अपराध में ३ मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।
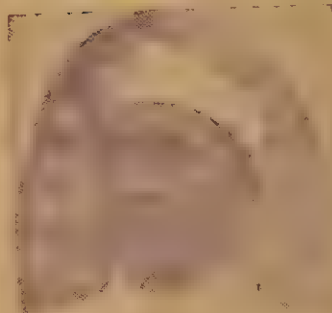
बम्बई के सर्व-प्रथम क्रिश्चियन श्री० जॉर्ज लुईस, जिन्हें सत्याग्रह के सम्बन्ध में हाल ही में कारावास-दण्ड दिया गया है।

नासिक के सुप्रसिद्ध कवि 'पद्मविहारी' (श्री० रघुनाथ गणेश जोशी) और कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ता, जिन्हें ६ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के कुछ वीर सैनिक

अथानी (बेलगाँव) की विदुषी श्रीमती अम्बाबा बाई, जिन्हें सत्याग्रह-आन्दोलन में भाग लेने के कारण २ मास की सज़ा दी गई है। करनाटक की जेल जाने वाली आप प्रथम महिला हैं।
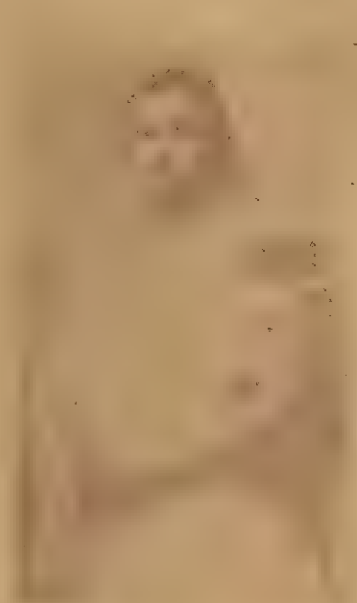
मेरठ के महिला-सत्याग्रह-दल की प्रधाना—श्रीमती प्रकाशवती देवी, जिन्हें ४½ महीने की सज़ा दी गई है।

घाटकोपर कॉङ्ग्रेस कमिटी के २० वर्षीय 'डिक्टेटर' श्री० नारायनदास मेघजी, आप सुप्रसिद्ध सेठ मेघजी वल्लभदास के पुत्र-रत्न हैं।

विलेपार्ले (बम्बई) के ८वें 'डिक्टेटर' श्री० के० के० सम्पत, एम० ए० (ऑक्सन)

बम्बई के 'सी' वार्ड के 'डिक्टेटर' श्री० शिवलाल दीपचन्द, आप पटना के निवासी हैं।

धारवाड़ के सुप्रसिद्ध पत्र "करनाटक वृत्ति" के वयोवृद्ध सम्पादक श्री० कृष्णाराव मुदावोरकर, जिनके राष्ट्रीय लेखों का ओज करनाटक प्रान्त में प्रसिद्ध है और जिन्हें दो बार चेतावनी दी जा चुकी है।

सत्याग्रह-संग्राम में भारतीय महिलाओं का भाग

भवनगर में पिकेटिङ्ग करने वाली गुजराती महिलाओं का ग्रुप

फ़र्श पर बैठी हुईं—(बाईं ओर से) अपने बच्चों सहित सौभाग्यवती बालूबेन और जयाबेन

कुर्सी पर बैठी हुईं—(बाईं ओर से) सौभाग्यवती गावरीबेन, मनीबेन, अखिलेश्वरीबेन, शारदाबेन और सोनीबेन।

पीछे खड़ी हुईं—(बाईं ओर से) सौभाग्यवती जयाकुँवरबेन, ललिताबेन और बच्चूबेन।

कानपुर के राष्ट्रीय आन्दोलन को सफल करने वाली महिलाएं

जिन्होंने चर्खा-संङ्घ, तकली-जुलूस और कताई के क्लास जगह-जगह खोल कर सराहनीय देश-प्रेम का परिचय दिया है। ये सारी महिलाएँ विगत जून मास से राष्ट्रीय कार्यों में बड़े उत्साह से भाग ले रही हैं और इन महिलाओं को अपने शुभ-प्रयत्नों में अब तक बड़ी सफलता मिली है।

कुछ प्रमुख व्यक्तियों एवं घटनाओं की चित्रावली

बम्बई स्टेशन पर 'ऑटोमेटन' नामक एक ऐसा यन्त्र रक्खा गया है जिससे सर्दी में गरम चाय आदि और गर्मी में ठण्डा पानी और शर्बत निकलता है। यह चित्र उसी 'ऑटोमेटन' का है, जिससे लेमोनेड निकाला जा रहा है।

शान्ति-निकेतन विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉक्टर रवीन्द्रनाथ टैगोर

मेञ्चेस्टर के सुप्रसिद्ध व्यवसाय-विशेषज्ञ मि० चार्ल्स एएटविसिल, जो बम्बई में मिश्रों की स्थिति का अध्ययन करने आए हैं।

इस बार बम्बई की पाश्चात्य एवं एङ्ग्लो-इण्डियन महिलाओं ने सन्धि-दिवस (Armistice Day). बड़ी धूम-धाम से मनाया था। वे सड़कों पर 'पॉपीज़' बेच रही हैं।

बङ्गलोर के वीर-युवक श्री० एम० पी० पॉल्सन, जिन्होंने २४ घण्टों में रात-दिन (बिना रुके हुए) साइकिल चला कर २७६ मील का सफ़र कर डाला। वे पहिली दिसम्बर को शाम के ४ बजे साइकिल पर बैठे थे और दूसरी दिसम्बर को ठीक चार बजे उतरे थे।

इटली की २३ वर्षीय राजकुमारी ग्लोवन्ना—जिनका हाल ही में किङ्ग बॉरिस से शुभ-विवाह हुआ है।

स्त्रियों का ओज

दुलहिन

[लेखक—???]

"इस पत्र के सम्बन्ध में आप लोगों की क्या सम्मति है ?"

"महाराणा, इसमें सम्मति की क्या बात है, शरणागत की रक्षा करना क्षत्रियों का धर्म है, फिर हिन्दुपति मेवाड़ का अधीश्वर तो इस विषय पर विचार करता हुआ, अच्छा भी नहीं प्रतीत होता।"

"चूड़ावत सरदार, आप अभी युवा हैं, आपका रक्त गर्म है, आप उतावले न बनिए। सब बातों पर भली-भाँति विचार कर लेना बुरा नहीं, यह साधारण प्रश्न नहीं। औरङ्गज़ेब राजपूतों के रक्त का प्यासा है, एक स्त्री के लिए मेवाड़ की हज़ारों स्त्रियों को विधवा बनाना, मुझे सहन न होगा।"

"महाराणा, एक स्त्री की नहीं, स्त्री की यहाँ चर्चा नहीं, एक शरणागत बाला के लिए—एक ऐसी राजकन्या के लिए, जिसके पिता ने विवश होकर बादशाह की आज्ञा के आगे सिर झुका लिया है, मेवाड़ की हज़ारों स्त्रियाँ नहीं—मेवाड़ की प्रत्येक स्त्री विधवा बनाई जा सकती है।"

"यह तुम्हारा मत हुआ, चूड़ावत सरदार! परन्तु सालूँबरा सरदार आपका क्या मत है, वह भी तो सुनूँ।"

"अन्नदाता, मैं बूढ़ा हुआ। मुझसे क्या पूछते हैं। मैं बूढ़ा हुआ, बाल पक गए—तो क्या मैं कायर हो गया। दर्बार को क्या मैं कायरपने की सम्मति दूँगा, अन्नदाता—प्राण रहते शरणागत राजकुमारी को सीसोदिया वंश का कोई वीर निराश नहीं करेगा।"

"परन्तु ठाकराँ, रक्त की नदियाँ बह जावेंगी।"

"रक्त तो घर में ही है, कहीं से माँगना तो नहीं।"

"पर वह व्यर्थ बहाने को नहीं?"

"व्यर्थ बहाने को? अन्नदाता, व्यर्थ बहाने को?? फिर रक्त बहाने को और कौन से अवसर होते हैं, मेवाड़-पति ने तो कभी पराया राज्य हड़पने को रक्त नहीं बहाया—उसने तो शरणागत की रक्षा और धर्म के लिए ही प्राण खोए हैं।"

"और आप क्या कहते हैं झालावाड़ सावन्त?"

"महाराणा, मैं कहना-सुनना क्या जानूँ। तलवार चलाना सीखा है—वही जानता हूँ। स्वामी का जहाँ पसीना गिरेगा—वहाँ सेवक का रक्त बहेगा! जब तक शरीर में प्राण है, कलाई में दम है, तलवार में पानी है, यह बूढ़ा यम की भाँति अडिग अड़ा रहेगा।"

"देखता हूँ, आप लोगों ने निश्चय कर लिया है।"

"स्वामी, विचारने के योग्य तो कोई विषय ही नहीं है।"

"बड़े आश्चर्य का विषय है, आप कहते हैं, विचारने के योग्य कोई विषय ही नहीं है, दिल्लीश्वर से घर बैठे बैर तो लेते हैं, जीवन की अन्तिम बूँद तक का प्रसङ्ग आने का प्रश्न है, आप कहते हैं कि विचारने योग्य कोई विषय ही नहीं है।"

"स्वामी, क्या यह पहला ही अवसर है, ऐसा कभी हुआ नहीं है?"

"बहुत बार। पर बारम्बार एक ही बात की पुनरावृत्ति करना क्या कुछ उत्तम बात है?"

"अन्नदाता, मृत्यु जगत की ऐसी प्यारी वस्तु तो नहीं, परन्तु कर्त्तव्य सर्व-प्रथम है; फिर उसके पालन करने में सौ बार भी मरना पड़े तो थोड़ा है।"

"तब क्या आप निर्णय कर चुके हैं?"

"महाराणा को स्वयं ही निर्णय करना चाहिए।"

"सुनो यदि, हमने युद्ध-प्रस्थान कर दिया और मार्ग ही में बादशाह की सेना से मुठभेड़ भी हो गई, युद्ध हुआ और हमारी हार हुई; तब फिर क्या होगा? राजकुमारी की फिर रक्षा कौन करेगा?"

"इसका उपाय मैंने सोच रक्खा है?"

"वह क्या है चूड़ावत सरदार?"

"आप चुने हुए ५ हज़ार योद्धा लेकर सीधे रूपनगर जाकर कुमारी को ब्याह लावें। मैं समस्त सेना को साथ लेकर तिराहे पर बादशाह की राह रोक कर बैठूँगा। और प्रतिज्ञा करता हूँ, कि जब तक आप विवाह कर सकुशल मेवाड़ की सीमा में न घुस जावेंगे, मैं बादशाह को आगे न बढ़ने दूँगा।"

"चूड़ावत, सरदार आपका साहस धन्य है?"

"महाराणा, अन्य कोई उपाय है ही नहीं।"

"परन्तु ठाकराँ, यह कार्य बहुत भयानक है, आपका लौटना अति दुर्लभ है।"

"स्वामिन, मुझे लौटने की ऐसी उतावली नहीं।"

"सरदार, इसी मास में आपका विवाह हुआ है।"

"राजपूत का विवाह तो सदा तलवार के साथ होता है, स्वामी!"

"चूड़ावत सरदार, आपका साहस बहुत बड़ा है, आपके पिता ने मृत्यु के समय आपका हाथ मेरे हाथ में दिया था, मैं आपकी इस अल्पावस्था ही में आपको ऐसे भयानक पथ पर नहीं जाने दूँगा।"

"महाराणा! मेरे पूज्य पिता की प्रतिष्ठा से मुझे वञ्चित न कीजिए।"

"सरदार, सोचिए"

"स्वामी, यह सोचने का विषय ही नहीं।"

"तब सबकी यही सम्मति है?"

"सबकी"

"तब मैं विवश अनुमति देता हूँ, तैयारी करो। मेरे साथ केवल हरावल के ५ हज़ार सैनिक रहेंगे। और आप ४० हज़ार सेना लेकर बादशाह की राह रोकें।"

"जो आज्ञा प्रभु की।"

२

"स्वामिन् क्या आज ही?"

"आज ही नहीं प्रिये, अभी"

"आपने मुझे आज फूलों की चोटी गूँथने की आज्ञा दी थी?"

"फूलों की चोटी गूँथो प्यारी!"

"किन्तु आप तो चले, प्रिय!"

"प्यारी, मैं अचल हूँ। जैसा कि क्षत्रिय-कुमार होते हैं।"

"स्वामी, यदि आज भर मैं सेवा कर सकती?"

"प्रिये, क्षत्रियों का धर्म अति कठोर है।"

"पर क्षत्राणियों से अधिक नहीं?"

"प्यारी, तलवार की कठिन मार में छाती अड़ाना असाधारण है।"

"पर विश्व-ध्वंसिनी ज्वाला के आलिङ्गन से अधिक कठोर नहीं।"

"प्रिये, अब ईश्वर ही जानता है, कि हम कब मिलेंगे।"

"जाओ स्वामी, हम अब मिलेंगे—यहाँ अथवा वहाँ, इसकी चिन्ता क्या है!"

"प्यारी, आशा है तुम अवश्य ही अपना कर्त्तव्य-पालन करोगी!"

"प्यारे, दासी से आप निश्चिन्त रहिए"

"मेरे प्राण तुम्हीं में रहेंगे"

"नहीं स्वामी, वे धर्म में रहने उचित हैं"

"तुम मेरी जीवन की ज्योति हो"

"स्वामी, ये क्षत्रियों के वाक्य नहीं"

"तुम मेरे प्राणों की प्राण हो"

"प्यारे, इतना कायर मोह नहीं"

"प्यारी, मैं मानसरोवर का धनी प्यासा ही चला"

"हे स्वामी, क्षत्रिय-पुत्री वीर पति के नाम पर धन्य होती है।"

"परन्तु वीरता प्रेम के सम्पुट से ही सजीव होती है"

"प्रेम तो वही है, जहाँ त्याग है, वही त्याग वीरता है।"

"मैं स्वीकार करता हूँ, कि मैं मोहान्ध हूँ"

"नहीं प्यारे, यह लाञ्छन की बात है, आप जाइए"

"अच्छा प्यारी विदा। परन्तु देखना, तुम अपना कर्तव्य सदा पालना"

"स्वामी दासी के प्रति कभी चिन्ता न करें"

"अच्छा प्यारी, एक घूँट जल"

"लीजिए प्यारे"

"ओह कितना शीतल है, कितना मधुर है"

"जाइए स्वामी, कर्तव्य में विलम्ब हो रहा है"

"जाता हूँ प्यारी, एक बार अच्छी तरह देख लेने दो, यह रूप, यह यौवन, यह प्रेम, यह माधुर्य—आह—यह आशा-सुख और जीवन की तरङ्गों से लबालब स्निग्ध समुद्र! प्यारी!!"

"प्यारे!"

"यदि मैं न आ सकूँ?"

"तो मैं आऊँगी स्वामिन?"

"इतनी दूर? इतना शीघ्र, इस आयु में!!"

"स्वामी, क्या दासी पर विश्वास नहीं"

"प्राणों से भी अधिक, परमेश्वर से भी अधिक"

"तब जाइए स्वामी, इन बातों से क्षत्रित्व का तेज नष्ट होता है"

"अच्छा-अच्छा मेरे जीवन की कनकलता मैं चला।"

"स्वामिन् मैं प्रणाम करती हूँ।"

"प्रिये चिन्तित न होना"

"स्वामिन, दासी के ध्यान में कर्तव्य से विमुख न होना"

"प्यारी, कर्त्तव्य मेरे रोम-रोम में है।"

"विदा"

"जाओ प्यारे!"

३

"रघुवीरसिंह!"

"हुक्म सरकार!"

"क्या खिड़की में बहू रानी खड़ी हैं, देखना मेरे नेत्रों में धुन्ध छा रहा है।"

"हाँ स्वामी, बहूरानी हैं"

"जाओ उनसे कहो, कि वे अपने कर्तव्य का ध्यान रक्खें"

"जो आज्ञा?"

४

"घणी खमा अन्नदाता, बहूरानी को जुहार।"

"क्या कहते हो, ठाकराँ?"

"माता, स्वामी ने फ़र्माया है कि आप कर्तव्य का ध्यान रक्खें"

"क्या उन्हें इस विषय की चिन्ता है?"

"माता, वे बारम्बार साँस लेते और खिड़की की तरफ़ देखते हैं।

"तब तुम ठहरो। मैं तुम्हें जो कुछ दूँ, ले जाकर उन्हें दो"

"जो आज्ञा माता"

"यह पत्र है"

"बहुत अच्छा"

"इसे सरदार को देना"

"जो आज्ञा"

"और सुनो"

"जी"

"तुम्हारे फेंटे में वह क्या है ?"

"कटार है माता !"

"उसकी धार कैसी है ?"

"ख़ूब चोखी, माता !"

"देखूँ ?"

"यह लीजिए"

"हाँ ख़ूब तेज़ है, ठाकराँ ?"

"जी माता"

"तुममें साहस है ?"

"माता, मैं भी सिसोदिया हूँ !"

"तुम्हारी कलाई में बल है ?"

"माता, अभी बल बहुत है।"

"एक काम करोगे !"

"आज्ञा कीजिए।"

"इस कटार से मेरा सिर उतार लीजिए।"

"यह क्या बात माता ?"

"उसे सरदार के पास ले जाना"

"किस लिए"

"कहना, अब आप निश्चिन्त होकर युद्ध करें। स्त्री की चिन्ता मन में रख कर मनुष्य के कायर हो जाने का भय है।"

"नहीं माता, यह मुझसे न होगा।"

"तब ठहरो"

"जो आज्ञा"

"मैं तुम्हें स्वयं अपना सिर काट कर देती हूँ। इ से जाकर उन्हें दे देना।"

"माता, इस कठिन सेवा से बूढ़े सेवक को मुक्त करो"

"छीः ठाकराँ, क्षत्रिय होकर डरते हो !"

"नहीं, माता......"

"खड़े रहो, लो........."

"आह............"

५

"लीजिए सेनापति"

"यह क्या है ?"

"बहूरानी का पत्र"

"और यह वस्त्र में लिपटा हुआ क्या है ?"

"बहूरानी की भेंट"

"आह !!!............"

"बहूरानी ने अपने हाथ से यह फल उतार कर भेजा है।"

"इस पत्र में क्या है ? देखूँ—

"प्यारे,

तुमने कहा था, क्षत्रिय का व्रत बड़ा कठोर है, और मैंने कहा था, क्षत्राणी का उससे कहीं अधिक कठोर है। इसका प्रमाण अब प्रत्यक्ष देखो ! प्यारे, युद्ध-प्रसङ्ग पर स्त्री का ध्यान रखने से कायरता उत्पन्न होती है। अब आप उससे उन्मुक्त हुए। तुम्हें याद होगा, कि पिता के यहाँ प्रथम पहुँच कर मैंने आपके आराम की सब व्यवस्था की थी, अब बड़े पिता के पास पहुँच कर मैं व्यवस्था कर रक्खूँगी। दुखी न होना, प्यारे ! हम शीघ्र मिलेंगे।"

६

"चूड़ावत सरदार !"

"महाराणा।"

"प्रयाण में क्या देर है ?"

"स्वामी, आपकी आज्ञा मात्र की"

"यह क्या ? कण्ठ में क्या है ?"

"बहूरानी का मुण्ड। मेरे हृदय का हार !"

"सेनापति, यह क्या किया ?"

"बहूरानी ने स्वयं किया"

"स्वयं किया ? क्यों ?"

"कि मैं उसे स्मरण करके कायर न बन जाऊँ।"

"आह ! प्यारे युवक सरदार, ठहरो—"

"सैनिको !"

"जय महाराणा की"

"हाड़ी रानी का मुजरा करो, कहो—"

"जय हाड़ी रानी की !"

"जय हाड़ी रानी की।"

"फिर कहो—

"जय हाड़ी रानी की !"

"चूड़ावत सरदार !"

दमन और अहिंसा

['मुक्त']

कहाँ चले ओ वीर सिपाही ?
माँ का है आह्वान।
क्या गाते हो ? देशभक्ति के—
पागलपन का गान !!
क्या है लक्ष्य ? एक मर-मिटने—
का ही है अरमान।
क्या पण ? आज़ादी के बदले—
जीवन का बलिदान !!
यह संग्राम ? अहिंसा के सम्मुख—
नङ्गा पशुबल होगा।
दमन अकेला होगा ! सारा—
एक ओर भूतल होगा !!

* * *

"महाराणा"

"आपको वंश-परम्परा के लिए दाहिनी ओर की प्रथम गद्दी और राजकीय छत्र-चँवर प्रदान किया गया।"

"अन्नदाता की जय हो"

"आपके वंश को सदैव ही हरावल का अधिकार दिया गया।"

"महाराणा की जय हो"

"आपको अस्सी गाँवों का पट्टा दिया गया"

"जय दिनुमणि की"

"और सुनो, आपके वंश की प्रत्येक स्त्री महारानी के समान प्रतिष्ठा पावेगी"

"जय हो स्वामी की"

"अच्छा अब प्रस्थान करो श्रीएकलिङ्ग आपके सहायक हों।"

७

"बादशाह सलामत फ़र्माते हैं, कि हम उदयपुर पर नहीं चढ़ रहे हैं, कहीं अन्यत्र जा रहे हैं। आप हमारा रास्ता छोड़ दीजिए।"

"बादशाह सलामत ज़बर्दस्ती रास्ता क्यों नहीं बना लेते ?"

"आप क्यों रार मोल लेते हैं, बादशाह का गुस्सा साधारण नहीं।"

"फिर बादशाह के मुसाहिब गाल क्यों बजाते हैं ?"

"क्या आप रास्ता नहीं छोड़ेंगे ?"

"जीते जी नहीं।"

"आप क्या हमें लड़ने पर मजबूर करेंगे ?"

"अगर आप डर कर भाग न जायँ।"

"आपका मक़सद क्या है ?"

"यही कि बादशाह को रोक दिया जाय।"

"और यह किसलिए ?"

"किसी भी लिए ?"

"आप लोगों की मौत आई है ?"

"जी हाँ, आप ठीक समझ गए।"

"तब मरो, सिपाहियो !"

"ठहरो, पहले ज़रा बानगी लेते जाइए।"

"वीरो ? मारो।"

"अल्लाह अकबर"

"जय एकलिङ्ग"

"काफ़िरों को मारो"

"वीरो, इतने यवन इकट्ठे मरने को कहीं न मिलेंगे।"

"मारो"

"मारो"

"मारो"

"लीजिए बादशाह सलामत, एक नई ख़बर है।"

"बदनसीब हाथी पर चढ़ा आता है।"

"सँभलो, यह शाही मुकुट धूल में गिरा"

"बस-बस बख़्श दे, शाही की सायत तो यहीं टल गई।"

"तब प्रतिज्ञा करो—वरना यह भाला छाती के पार जाता है"

"वादा करता हूँ—वादा करता हूँ"

"प्रतिज्ञा करो"

"वादा करता हूँ"

"प्रतिज्ञा करो कि १० वर्ष तक मेवाड़ पर चढ़ाई न करूँगा !"

"न करूँगा, वादा करता हूँ।"

"ख़ुदा की क़सम खाओ"

"क़सम ख़ुदा पाक की"

"क़ुरान की क़सम खाओ।"

"क़सम क़ुरान-मजीद की"

"आज ही दिल्ली लौट जाओ।"

"आज ही लौट जाऊँगा, तुम अपना घोड़ा हाथी पर से पीछे हटा लो।"

"जाओ छोड़ दिया।"

८

"महाराणा की जय हो"

"वीर चूणावत सरदार क्या पीछे आ रहे हैं, उसकी अगवानी को हम ख़ुद चलेंगे।"

"अन्नदाता—सेनापति काम आए"

"तब वह बाँका वीर चल बसा ?"

"महाराणा—बादशाह से प्रतिज्ञा करा कर, कि १० वर्ष तक मेवाड़ पर चढ़ाई न करेंगे।"

"आह, नरसिंह, रूपनगर की यह रानी बड़ी मँहगी पड़ी"

"ठाकराँ"

"अन्नदाता"

"वीरवर चूणावत की स्मृति में मेवाड़ में आज के दिन सदा मेला लगेगा"

"जो आज्ञा अन्नदाता"

* * *

कुछ नवीन और उत्तमोत्तम पुस्तकें

दुबे जी की चिट्ठियाँ

शिक्षा और विनोद का यह अपूर्व भण्डार है। इसमें सामाजिक कुरीतियों तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों का विवेचन बहुत ही सुन्दरतापूर्वक किया गया है। हिन्दी-संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी पुस्तक है। भाषा अत्यन्त सरल है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। मूल्य केवल ३); ले० 'दुबे जी'।

मणिमाला

अत्यन्त मनोरञ्जक, शिक्षा और विनोद से भरी हुई कहानियों का अनोखा संग्रह। प्रत्येक कहानी में सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया गया है। उन कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भयङ्कर अनर्थों की भी भरपूर चर्चा की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य केवल ३); ले० 'कौशिक' जी।

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, महान सांसारिक आपत्तियों तथा यातनाओं से आजीवन खेलने वाले, इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र सांसारिक मनुष्य के लिए अमृत के तुल्य है। इसके केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में महान परिवर्तन हो जायगा—एक दिव्य ज्योति उत्पन्न हो जायगी। सचित्र और सजिल्द मूल्य २॥)

विवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अश्लील धारणाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन दुखी और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा उनका सुख-स्वाच्छन्द्यपूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रता-पूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥)

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झञ्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्म-बल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना आपने एकदम बिसार दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का ख़ून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों से १=) ले० 'वर्मा' एम० ए०।

मनोरञ्जक कहानियाँ

इस पुस्तक में १७ छोटी-छोटी, शिक्षाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ संग्रह की गई हैं। कहानियों को पढ़ते ही आप आनन्द से मस्त हो जायँगे और सारी चिन्ताएँ दूर हो जायँगी। बालक-बालिकाओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। केवल एक कहानी उनको सुनाइए—ख़ुशी के मारे उछलने लगेंगे, और पुस्तक को पढ़े बिना कदापि न मानेंगे। मनोरञ्जन के साथ ही प्रत्येक कहानियों में शिक्षा की भी सामग्री है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी कॉपियाँ और शेष हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥) ; स्थायी ग्राहकों से १=)

मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ

इस पुस्तक में पूर्वीय और पाश्चात्य, हिन्दू और मुसल्मान, स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं। केवल एक बार के पढ़ने से बालक-बालिकाओं के हृदय में दयालुता, परोपकारिता, मित्रता, सचाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के अङ्कुर उत्पन्न हो जायँगे और भविष्य में उनका जीवन उसी प्रकार महान और उज्ज्वल बनेगा। मनोरञ्जन और शिक्षा की यह अपूर्व सामग्री है। भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥); ले० ज़हूरबख़्श।

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्त्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ॥); स्थायी ग्राहकों के लिए ॥-)

लालबुझक्कड़

जगत्प्रसिद्ध नाटककार 'मोलियर' की सर्वोत्कृष्ट रचना का यह हिन्दी अनुवाद है। नाटक आदि से अन्त तक हास्यरस से भरा हुआ है। शिक्षा और विनोद की अपूर्व सामग्री है। मनोरञ्जन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों का भी दिग्दर्शन कराया गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य २); ले० जी० पी० श्रीवास्तव

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिल-चस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से ॥-)

आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियाँ

छोटे-बड़े सभी के मुँह से आज यह सुनने में आ रहा है कि भारतवर्ष आयरलैण्ड बनता जा रहा है। उस आयरलैण्ड ने अङ्गरेज़ों की ग़ुलामी से किस तरह छुटकारा पाया और वहाँ के शिनफ़ीन दल ने किस कौशल से लाखों अङ्गरेज़ी सेना के दाँत खट्टे किए, इसका रोमाञ्चकारी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। इसमें आपको इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। मूल्य केवल दस आने। ले० सत्यभक्त।

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से ।=)

गुदगुदी

हास्य तथा मनोरञ्जन भी स्वास्थ्य के लिए एक अनोखी औषधि है। किन्तु इसका उपाय क्या है? उपाय केवल यही कि इस पुस्तक की एक प्रति मँगा लीजिए और काम की थकावट तथा भोजन के बाद पढ़िए। इसका केवल एक ही चुटकुला एक घण्टे तक आपको हँसाएगा। ले० जी० पी० श्रीवास्तव; मूल्य ॥)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

एशियाई महिलाओं की महासभा

[श्रीमती लक्ष्मीदेवी, बी० ए०]

पाठकों ने एक एशियाई महिला महासभा होने की चर्चा समाचार-पत्रों में सुनी होगी। हर्ष का विषय है कि यह सभा भारतवर्ष में ही हो रही है, और मुख्यतया भारतीय महिलाओं की आयोजना से ही हो रही है। अभी थोड़े ही दिन हुए, कि पूर्वीय महिला-सभा दमास्कस में हुई थी, किन्तु उसमें मुख्यतया मुस्लिम देशों की प्रतिनिधि-स्त्रियाँ ही उपस्थित थीं। एक एशियाई महिला-महासभा का विचार पहले-पहल भारतवर्ष से ही उठा है। और हम इस बात का गर्व कर सकती हैं कि हमारे देश की स्त्रियों के हृदय एशिया के अन्य देशों की स्त्रियों की अपेक्षा अधिक विशाल हैं। अभी थोड़े ही दिनों की बात है, हमारी स्त्रियाँ घर की चहारदिवारी के अन्दर की वस्तु थीं, पर थोड़ी ही जागृति से उनकी बाहुएँ इतनी विशाल हो गई हैं, कि वे तमाम एशिया को समेटना चाहती हैं। यदि हमारे देश की स्त्रियों की यही प्रगति जारी रही तो, एक दिन हमें आशा है कि भारत की महिलाएँ एक भूमण्डल स्त्री-सङ्घ की स्थापना करेंगी।

साथ ही साथ हम उन देशों की स्त्रियों को भी धन्यवाद देती हैं, जिन्होंने इस महासभा को सफल बनाने के लिए अपने-अपने यहाँ से प्रतिनिधियों को भेजने का वचन दिया है। ऐसी बड़ी सभा बिना तमाम एशियाई देशों की महिला संस्थाओं के सहयोग और सहानुभूति के कभी सफल नहीं हो सकती। और हमें ख़ुशी है कि भारतीय महिलाओं के इस निमन्त्रण का समाचार जिन-जिन देशों में गया है, वहाँ-वहाँ से सहायता की आशा दिखाई गई है। पहली अभारतीय महिला, जो इस महासभा का कार्य करने के लिए आई है, वह ऑकलैण्ड की कुमारी आइसवेल रॉबर्टसन हैं। वे महासभा का समय आने तक भारतीय महिला-सभा की ओर से कार्य करेंगी। हमें आशा है कि अन्य एशियाई देशों से भी महिलाएँ आ-आकर इस कार्य में हाथ बटावेंगी। आप हमारे विशेष धन्यवाद की पात्री हैं।

संसार भर की स्त्रियों का स्थान पुरुषों के मुक़ाबले नीचा ही रक्खा गया है। यूरोप की स्त्रियों ने अपने अधिकारों को बहुत कुछ पा लिया है। लेकिन एशिया की स्त्रियाँ अभी बहुत पीछे हैं। इसका प्रमाण यही है, कि अभी दमास्कस वाली कॉन्फ्रेन्स में इसी प्रस्ताव पर बहुत समय तक बहस छिड़ी रही, कि स्त्रियों को पर्दे के बाहर रहना चाहिए कि नहीं और यद्यपि अन्त में यह प्रस्ताव पास हुआ, कि उन्हें पर्दे के बाहर रहना चाहिए, परन्तु जिन शब्दों में यह पास हुआ है, उससे हमें भय है कि कदाचित वह सभा के काग़ज़ों पर ही न रह जाय !

किन्तु हमें इस कारण मुस्लिम प्रदेशों की स्त्रियों को कमज़ोर न समझ लेना चाहिए, कदाचित उनकी यह कमज़ोरी अकेले खड़े होने के कारण थी। किन्तु जब भारतवर्ष में मुस्लिम, बौद्ध, हिन्दू, ईसाई, पारसी स्त्रियों का महासम्मेलन होगा, उस समय वे अपनी पूर्ण शक्ति का अनुभव करेंगी और अपनी भावी दशा को इस सीमा तक सुधार लेंगी, कि उनके अधिकार बढ़ ही न जायँगे, वरन् उनका स्थान एशियाई देशों की सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थिति में भी उन्नतिशील परिवर्तन करेगा।

जिन महान उद्देशों से यह सभा निमन्त्रित की गई है, उन पर ध्यान देने से पता चलता है कि हमारी स्त्रियाँ इस सभा के पीछे एक बड़ा गम्भीर आशय रखती हैं। वे हैं :—

(१) एशिया की स्त्रियों में इस आधार पर एकता स्थापित करना, कि वे सब एक ही पूर्वीय सभ्यता की अनुवर्तिनी हैं।

(२) पूर्वीय सभ्यता के गुणों को खोज निकालना और उनकी रक्षा करना, जिसमें उनके द्वारा राष्ट्र और संसार को लाभ पहुँचाया जा सके।

(३) पूर्वीय सभ्यता में प्रविष्ट हुए अवगुणों की खोज करना और उन्हें दूर करने का उपाय सोचना। (इसमें अस्वस्थता, अशिक्षा, ग़रीबी, कम मज़दूरी, बाल-मृत्यु, और वैवाहिक नियम आदि सम्मिलित हैं।)

(४) इस बात का निर्णय करना, कि पश्चिमीय सभ्यता की कौन-कौन सी बातें एशिया के हित की हैं।

(५) प्रत्येक देश के स्त्री-दशा सम्बन्धी अनुभवों और प्राप्त-परिणामों से एक दूसरे को सूचित करके उसकी सहायता करना; और

(६) संसार में शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील होना।

इनमें से चार प्रस्ताव पूर्वीय सभ्यता से सम्बन्ध रखते हैं। पश्चिमी सभ्यता पूर्वीय सभ्यता से नई है। उसकी इस नवीनता ने संसार भर को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। पर उसकी नवीनता का आकर्षण हट जाने से वह अब तत्वों की ओर से कुछ खोखली जान पड़ती है। उसने अपने अनुयायियों को जिन परिणामों पर

पहुँचाया है वे भय-प्रद हैं। हमारी महिलाओं ने पूर्वीय सभ्यता के मन्दिर को, जो अप्रयुक्त होने से कुछ बेमरम्मत हो गया था, बनाने का कार्य अपने हाथों में लिया है, पर साथ ही साथ पश्चिमी सभ्यता की ओर से असहिष्णु होने की उनमें लेश-मात्र गन्ध नहीं। उसमें जो गुण हैं, वे उसे लेने को तैयार हैं।

अन्तिम प्रस्ताव संसार की शान्ति से सम्बन्ध रखता है। संसार में उस समय तक शान्ति नहीं हो सकती, जब तक कि स्त्रियाँ उसके लिए प्रयत्नशील न हों। आजकल वे यूरोप और एशिया दोनों स्थानों में भविष्य-युद्ध बन्द करने की चेष्टा में हैं। थोड़ा ही समय हुआ है, वियेना की अन्तर्राष्ट्रीय महिला-परिषद् की सभानेत्री ने यह कहा था, कि माताएँ, जो जीवन देने वाली हैं, वे कृत्रिम उपायों से उसे नष्ट करने की आज्ञा नहीं दे सकतीं। उन्होंने कहा कि हम माताएँ तमाम देशों को निःशस्त्र होने के लिए ज़ोर डालती हैं। पर हमें भय है, सम्भवतः यूरोप की स्त्रियों की यह आवाज़ यूरोप के पुरुषों के कानों तक न पहुँचे। कारण यह है, कि वहाँ स्त्रियाँ पुरुषों से स्वतन्त्र हैं, तो पुरुष भी स्त्रियों से स्वतन्त्र हैं। उनके लिए आवश्यक नहीं कि वे स्त्रियों की अनुमति के अनुसार चलें। किन्तु जब पूर्वीय स्त्रियाँ संसार में भविष्य-युद्ध बन्द कराने को प्रयत्नशील होती हैं, तब हम आशापूर्ण हो जाते हैं, क्योंकि पूर्वीय सभ्यता में स्त्री, पुरुष से नीचे स्थान पर रह कर भी, गृह-स्वामिनी ही रहती है। और अपने पुरुषों के हाथों के पीछे सदा उनका हाथ रहता है। फिर जब वे पुरुषों के बराबर अधिकार पा लेंगी, तो पुरुषों की नीति में जो भीषण परिवर्तन करेंगी, उसका अनुमान नहीं किया जा सकता।

हम हृदय से चाहती हैं कि यह महासभा सफल हो और इससे संसार में एक शान्त, पवित्र और उज्ज्वल भविष्य की नींव पड़े। क्या ऐसा होगा ?

* * *

छप गई ! प्रकाशित हो गई !!

व्यङ्ग-चित्रावली

यह चित्रावली भारतीय समाज में प्रचलित वर्तमान कुरीतियों का जनाज़ा है। इसके प्रत्येक चित्र दिल पर चोट करने वाले हैं। चित्रों को देखते ही पश्चात्ताप एवं वेदना से हृदय तड़पने लगेगा; मनुष्यता का याद आने लगेगी; परम्परा से चली आई रूढ़ियों, पाखण्डों और अन्ध-विश्वासों को देख कर हृदय में क्रान्ति के विचार प्रबल हो उठेंगे; घण्टों तक विचार-सागर में आप डूब जायँगे। पछता-पछता कर आप सामाजिक सुधार करने को बाध्य होंगे!

प्रत्येक चित्रों के नीचे बहुत ही सुन्दर एवं मनोहर पद्यमय पंक्तियों में उनका भाव तथा परिचय अङ्कित किया गया है। इसके प्रकाशित होते ही समाज में हलचल मच गई। प्रशंसा-पत्रों एवं सम्मतियों का ढेर लग गया। अधिक प्रशंसा न कर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि ऐसी चित्रावली आज तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुई। शीघ्रता कीजिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

इकरङ्गे, दुरङ्गे, और तिरङ्गे चित्रों की संख्या लगभग २०० है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, फिर भी मूल्य लागत मात्र केवल ४); स्थायी तथा 'चाँद' के ग्राहकों से ३); अब अधिक सोच-विचार न करके आज ही आँख मींच कर ऑर्डर दे डालिए !!

दैवी सम्पद्

[लेखक—श्री० रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर]

यदि आप सचमुच ही स्वाधीनता के उपासक हैं,

यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को पराधीनता के बन्धनों से मुक्त कर स्वतन्त्र बनाना चाहते हैं तो "दैवी-सम्पद्" को अपनाइए।

यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को सुख-समृद्धि-सम्पन्न करना चाहते हैं तो "दैवी सम्पद्" का अध्ययन करिए।

यदि धार्मिक विचारों के विषय में आपका मन संशयात्मक हो तो "दैवी सम्पद्" को विचारपूर्वक पढ़िए। आपका अवश्य ही समाधान होगा।

यदि आपके जीवन के किसी भी व्यवहार के सम्बन्ध में कोई उलझी हुई ग्रन्थि हो तो उसको सुलझाने के लिए "दैवी सम्पद्" का सहारा लीजिए! आप उसे अवश्य ही सुलझा सकेंगे।

अपने विषय की यह अद्वितीय पुस्तक है। लगभग ३०० पृष्ठ की फ़ेदरवेट काग़ज़ पर छपी हुई सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २।।) रु०।

सार्वजनिक संस्थाओं को, केवल डाक-व्यय के।-) (पाँच आने) ग्रन्थकर्ता के पास भेजने पर यह पुस्तक मुफ़्त मिलेगी।

ग्रन्थकर्ता का पता—श्री० सेठ रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर (राजपूताना)

प्रकाशक का पता—व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

साम्प्रदायिकता का ज़ोर

"प्रत्येक साम्राज्यवादी शासन का आधार फूट डाल कर हुकूमत करना होता है ! ब्रिटिश शासन भी भारत में सदैव इसी रीति से काम लेता रहा है।"

—लाला लाजपतराय

आजकल लन्दन में भारतीय शासन-विधान तैयार करने के लिए गोलमेज़ परिषद की बैठक हो रही है। जैसा हम दो सप्ताह पूर्व ही कह चुके थे, यह परिषद साम्प्रदायिकता के दलदल में फँस गई है। एक तो यों भी कुछ होने को नहीं था, अब तो बिलकुल स्पष्ट दिखाई देता है, कि परिषद की बैठकें समस्याओं को सुलझाने के स्थान में उन्हें और भी भीषण रूप दे देंगी। वहाँ पर जो लोग विचार करने के लिए एकत्रित हुए हैं, उनकी मनोवृत्ति ही इतनी दूषित है, कि वे किसी भी समस्या पर राष्ट्रीय हित की दृष्टि से विचार नहीं करते। वैयक्तिक और सामुदायिक स्वार्थ को देश भर के हित के ऊपर स्थान दिया जा रहा है! प्रतिनिधिगण हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल करने में आजकल लगे हुए हैं। परन्तु, जिस ढङ्ग से वे काम ले रहे हैं; जिस प्रकार से वे सोचते और समझते हैं, वह सब उनके लिए और भारतीय राष्ट्र के लिए अपमानजनक है। अभी समाचार मिला है, कि हिन्दू-मुस्लिम समझौते की आशा बहुत कम है। प्रतिनिधि ब्रिटिश सरकार को इस मामले में पञ्च मानने को तैयार मालूम होते हैं ! इस प्रकार के तू-तू, मैं-मैं को देख कर मिस्टर एफ़० डब्ल्यू० विलसन ने 'इण्डियन डेलीमेल' में लिखा है कि "मैं भारतीय नहीं हूँ, तो भी मैं भारतीय राष्ट्र के सम्मान के लिए इससे बढ़ कर अपमानजनक बात कोई नहीं समझता, कि भारतीय जाति-गत मामलों का निपटारा करने में असमर्थ हों।"

इस समय देश दूसरी दिशा में बढ़ रहा है। साम्प्रदायिकता के बन्धन को तोड़ कर, सम्पूर्ण देश के कल्याण को लक्ष्य मान कर इस समय हम लोग आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे हैं! देश को आज़ाद बनाना, हिन्दू और मुसलमान सभी के सिर पर से ग़ुलामी का बोझ हटाना हमारा उद्देश्य है। हम आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं। हम हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, पारसी, सबों के स्वत्वों के लिए लड़ रहे हैं। ऐसे समय में साम्प्रदायिक प्रश्न छेड़ना, उस पर तू-तू, मैं-मैं करना, और अन्त में समस्या को पहले से भी अधिक जटिल बना कर छोड़ना, देश के उन आदमियों के साथ घोर अन्याय करना है, जो देश के लिए आज सर्वस्व होम रहे हैं, जो भारत को आज़ाद देखने के लिए त्याग और तपस्या का अनुपम आदर्श उपस्थित कर रहे हैं! स्वातन्त्र्य-संग्राम के वीर सैनिक—हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी और ईसाई—अपने रक्त से आज़ादी की बेल सींच रहे हैं, वे हिन्दू और मुसलमान के स्वत्वों पर बहस नहीं करते, वे जानते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही चक्की के पाट में पीसे जाते हैं, वे समझते हैं कि दोनों के दुख और सुख वास्तव में एक ही बात में सन्निहित हैं, और आज़ादी दोनों के लिए समान रूप से हितकर होगी। वे यह अच्छी तरह समझते हैं, कि न हिन्दू मुसलमानों को पीस सकते हैं, न मुसलमान हिन्दुओं को। दोनों को एक ही देश में रहना है, एक ही जल-वायु में पलना है। आजकल जिस प्रकार का लड़ाई-झगड़ा, दङ्गा-फ़साद मालूम होता है, यह बहुत कुछ सरकार की भेद-नीति की कृपा का फल है। ये बातें आज़ादी के लिए प्राणों पर खेलने वाले वीर अच्छी तरह समझते हैं।

* * *

मुसलमानों का कहना है, कि उनके बहुत से ऐसे हक़ूक़ हैं, जिनका निर्णय स्वराज्य-प्राप्ति के किसी भी प्रयास के पूर्व हो जाना चाहिए। बातें ऐसे ढङ्ग से कही जाती हैं, कि मालूम होता है कि यदि स्वराज्य हो गया, तो सचमुच हिन्दू मुसलमानों को खा जायँगे। यदि इतिहास के पन्ने पलटे जायँ, और मुसलमानों और हिन्दुओं की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का ऐतिहासिक विवेचन किया जाय, तो यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जायगी कि हिन्दू और मुसलमानों में मन-मुटाव उत्पन्न करने में अङ्गरेज़-सरकार का बहुत कुछ हाथ रहा है! साम्प्रदायिकता का तूफ़ान सरकार की दूषित नीति का ही परिणाम है। हिन्दू और मुसलमान देशी राज्यों में भी रहते हैं। वहाँ पर हिन्दू राजा के होते हुए भी मुसलमान पीस नहीं डाले जाते। वहाँ पर विशेष-अधिकारों की चर्चा भी नहीं होती। परन्तु अङ्गरेज़-राजनीतिज्ञों ने स्वार्थवश ब्रिटिश-भारत के मुसलमानों में हिन्दू बहुमत का भय उत्पन्न कर दिया है। यह भय भ्रमात्मक बातों पर आधारित है, यह कल्पनात्मक ही अधिक है, इसमें सत्य का अंश कुछ भी नहीं है।

* * *

जो कुछ भी हो, आज हिन्दू और मुसलमानों के दिल फिरे हुए हैं। मुसलमानों ने पूर्णरूप से वर्तमान आन्दोलन में भाग भी नहीं लिया। वास्तव में यदि मुसलमान और हिन्दू सभी इस सत्य का अनुभव कर लें, कि दोनों का भाग्य वास्तव में एक ही है, दोनों का कल्याण एक ही बातों से होगा, तो इस प्रकार का मन-मुटाव दूर हो जायगा। मन्दिर और मसजिद के प्रश्न तो सहनशीलता से सरलतापूर्वक तय हो सकते हैं। यदि हम एक-दूसरे की भावनाओं का आदर करने लग जायँ, यदि हमें यह समझ में आ जाय, कि किसी की कोमल धार्मिक चित्तवृत्ति को ठेस नहीं पहुँचाना चाहिए, तो जो प्रश्न आज अत्यन्त अधिक उलझन के मालूम होते हैं, वे सब तय हो जायँ। रह गए शासन-व्यवस्था सम्बन्धी प्रश्न। यदि हम साम्प्रदायिकता के सङ्कीर्ण दायरे से निकल कर सारे देश के हित और अहित का ख़याल रख कर, ऐसे प्रश्नों पर विचार करें, तो वे भी सरलता से हल हो जायँ। हमें केवल अपने अन्दर थोड़ी सी सहनशीलता लाने की आवश्यकता है। हमें केवल अपनी दूषित साम्प्रदायिक मनोवृत्ति को बदल देने की ज़रूरत है।

* * *

ग़रीबी की मार से, अत्याचार और अनाचार के राज से मुसलमान और हिन्दू सभी दुखी हैं। सभी करों के बोझ से, लगान के भार से, दबे जाते हैं ! यह कहीं नहीं होता कि गङ्गादीन को पुलिस की निरङ्कुशता से, कर के भार से कम कष्ट होता है, और अब्दुलरहीम को अधिक ! दोनों जाति के ग़रीब आदमी, दोनों सम्प्रदाय के अधिकांश व्यक्ति एक ही प्रकार से पीसे जाते हैं ! इसलिए ठीक तो यही है, कि हिन्दू और मुसलमान दोनों कन्धे से कन्धा भिड़ा कर आगे बढ़ें, दोनों सम्प्रदाय के व्यक्ति इस महान देश की आज़ादी के लिए क़ुर्बान हो जायँ। देश ने स्वतन्त्र होने का निश्चय कर लिया है। हमें अपनी सङ्कीर्णता से इस पवित्र निश्चय में, भारत के पुनरुत्थान में बाधक नहीं होना चाहिए।

—'प्रताप' (हिन्दी)

* * *

मौलाना का पतन !

इस तमाशे का प्रथम पटाक्षेप होने तक प्रायः सभी भारतीय मेम्बर अपनी-अपनी डफली पर अपना-अपना राग अलाप चुके हैं और यह कहने में कुछ भी असत्य नहीं है, कि अन्य कितनी ही बातों में मतभेद होने पर भी औपनिवेशिक स्वराज्य के विषय में सबका सुर एक है। एक मौ० मुहम्मदअली ही ऐसे हैं, जिन्होंने अपने को प्रजातन्त्रवादी बताते हुए कहा है कि "औपनिवेशिक स्वराज्य की प्राप्ति में मेरा विश्वास नहीं है—मैं तो पूर्ण-स्वतन्त्रता का सिद्धान्त स्वीकार कर चुका हूँ।" साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि "मैं अपने हाथों में स्वतन्त्रता का सार लेकर ही जाऊँगा, नहीं तो एक ग़ुलाम देश में लौट कर न जाऊँगा।" किन्तु यह सब तो फिसड्डी-मौलाना की कोरी बकबक है; क्योंकि प्रजातन्त्रवादी होने का दम भरते हुए भी उन्होंने प्रजातन्त्र के मूल सिद्धान्त के विरुद्ध बादशाह जॉर्ज की चापलूसी, उनके प्रधान-मन्त्री मि० मेकडॉनल्ड की सराहना और वायसराय लॉर्ड इरविन की प्रशंसा के पुल बाँधने में चारणों (भाटों) को भी मात कर दिया है। इतना ही नहीं, इस मोटी बुद्धि वाले मोटे मौलाना ने तो यहाँ तक बक डाला है कि "आज यदि किसी आदमी ने ब्रिटिश साम्राज्य को बचाया है, तो वह वही लम्बा और दुबला ईसाई है।" इस तरह इन हज़रत ने एक तरह से लॉर्ड इरविन की सरकार की उस दानवी दमन-नीति का भी समर्थन कर डाला है, कि जो इस लम्बे और दुबले ईसाई ने साम्राज्य की रक्षा के लिए भारत में प्रचलित कर रक्खी है ! किसी आदमी का इससे अधिक पतन और क्या हो सकता है ?

—'विश्वमित्र' (हिन्दी)

* * *

एक निरर्थक प्रयत्न

'फ़्री प्रेस' के लन्दन के केबिल से यह मालूम हुआ है, कि गोलमेज़ परिषद् के कुछ प्रतिनिधि भारत-मन्त्री को इस आशय का पत्र देने वाले हैं, कि जब तक भारत की वर्तमान दमन-नीति में परिवर्तन न होगा, तब तक परिषद बिलकुल निरर्थक होगी। यह स्पष्ट है कि अधिकारियों के भारत का सच्चा हाल रोकने का, भरसक प्रयत्न करने पर भी लन्दन में उनकी करतूतों का भण्डा फूट गया है। इस बात की भी सम्भावना नहीं है, कि गोलमेज़ के भारतीय प्रतिनिधियों के पास यहाँ की परिस्थिति के

उत्तमोत्तम पुस्तकों का भारी स्टॉक

स्त्रियोपयोगी

अदृष्ट (ह० द० कं०) ३)
अपराधी (चाँ० का०) २॥)
अश्रुपात (गं०पु०मा०) १), १॥)
अरक्षणीया (इं० प्रे०) १)
अनन्तमती (ग्रं० मं०) ॥=)
अनाथ-पत्नी (चाँ० का०) २)
अनाथ बालक (इं० प्रे०) १)
" " (ह० दा० कं०) १॥)
अबलाओं का इन्साफ़ (चाँ० का०) ३)
अबलाओं पर अत्याचार (चाँ० का०) २॥)
अबलोन्नति पद्य-माला (गृ० ल०) =)॥
अभागिनी (ह० दा० कं०) १)
अभिमान (गृ० का०) १)
अमृत और विष (दो भाग) (चाँ० का०) ५)
अवतार (सर० प्रे०) ॥)
अहल्याबाई (इं० प्रे०) १)
" " (हिं० पु० भं०) ।)
अञ्जना देवी (न० दा० स० एं० सं०) ॥=)
अञ्जना सुन्दरी (प्रा०क०मा०) १)
अञ्जना-हनुमान (स० आ०) १॥), १॥)
आदर्श चाची (ब०प्रे०) १), १॥)
आदर्श दम्पति (ग्रं० भं०) १), १)
आदर्श पत्नी (स० आ०) ॥)
आदर्श बहू (ग्रं० भं०) ॥), १)
आदर्श बहू (उ० ब० आ०) ॥)
आदर्श भगिनी (ख०वि०प्रे०) ।)
आदर्श महिला (इं० प्रे०) २॥)
आदर्श महिलाएँ (दो भाग) (रा० द० अ०) १)
आदर्श रमणी (निहाल-चन्द) ॥=)
आदर्श ललना (उ० ब० आ०) ॥)
आरोग्य-साधन (महात्मा गाँधी) ।=)
आर्य-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २), २॥)
आशा पर पानी (चाँ० का०) ॥)
इन्दिरा (ख० वि० प्रे०) ॥)
" (ह० दा० कं०) १)
ईश्वरीय न्याय (गं० पु० मा०) ॥)
उत्तम सन्तति (जटा० वै०) १।)
उपयोगी चिकित्सा (चाँ० का०) १॥)
उमासुन्दरी (चाँ० का०) ॥)
उमा (उ० ब० आ०) १)
कन्या-कौमुदी (तीन भाग) ॥=)
कन्या-दिनचर्या (गृ० ल०) ।)
कन्या-पाकशास्त्र (ओं० प्रे०) ।)
कन्या-पाठशाला २॥)
कन्या-बोधिनी (पाँच भाग) (रा० न० ल०) १॥)
कन्या-शिक्षा (स० सा० प्र० मं०) ।)
कन्याओं की पोथी ।)
कन्या-शिक्षावली (चारों भाग) (हिं० मं०) ॥=)
कपाल-कुण्डला (ह० दा० कं०) १)
कमला (ओं० प्रे०) १॥)
कमला-कुसुम (सचित्र) (गं० पु० मा०) १)
कमला के पत्र (चाँ० का०) ३)
" " (अङ्गरेज़ी) ३)
कृष्णाकुमारी ॥)
करुणा देवी (बेल० प्रे०) ॥=)
कलङ्किनी (स० सा० प्र० मं०) ॥=)
कल्याणमयी चिन्ता (क० म० जी०) ॥)
कुल-लक्ष्मी (हिं० मं०) १)
कुल-कमला ॥)
कुन्ती देवी १॥)
कुल-ललना (गृ० ल०) ॥=)
कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥), २)
क्षमा (गृ० ल०) ॥)
गर्भ-गर्भिणी ॥)
गल्प-समुच्चय (प्रेमचन्द) २॥)
ग्रह का फेर (चाँ० का०) ॥)
गायत्री-सावित्री (बेल० प्रे०) ।)
गार्हस्थ्य शास्त्र(ल० भा० ग्रं०) १)
गीता (भाषा) १॥)
गुदगुदी (चाँ० का०) ॥)
गुणलक्ष्मी (उ० ब० आ०) ।=)
गुप्त सन्देश (गं० पु० मा०) ॥=)
गृहदेवी (म० प्र० का०) ।-)
गृह-धर्म(व० द०स० एं०सं०)॥)
गृह-प्रबन्ध-शास्त्र (अभ्यु०) ॥)
गृह-वस्तु-चिकित्सा (चि० का०) ॥)
गृहलक्ष्मी (मा० प्रे०)) १)
" (उ० ब० आ०) १)
गृह-शिक्षा (रा० पू० प्रे०) =)
गृहस्थ-चरित्र (रा० प्रे०) ।)
गृहिणी (गृ० ल०) १)
गृहिणी-कर्त्तव्य (सु० ग्रं० प्र० मं०) २॥)
गृहिणी-गीताञ्जलि (रा० श्या०) ॥)
गृहिणी-गौरव (ग्रं० मा०) १॥), २)
गृहिणी-चिकित्सा (ल० ना० प्रे०) २॥)
गृहिणी-भूषण (हिं० हि० का०) ॥)
गृहिणी-शिक्षा (क०म०जी०)१।)
गौने की रात (प्रा० का० मा०) ३)
गौरी-शङ्कर (चाँ० का०) ।=)
घरेलू चिकित्सा (चाँ० का०)१॥)
चिन्ता (सचित्र) (उ० ब० आ०) ॥)
चिन्ता (ब० प्रे०) १॥)
चित्तौड़ की चढ़ाइयाँ (ब० प्रे०) ॥=)
चित्तौड़ की चिता(चाँ०का०)१॥)
चौक पूरने का पुस्तक (चित्र० प्रे०) १)
छोटी बहू (गृ० ल०) १।)
जनन-विज्ञान (पा० एं० कं०) ३), ३॥)
जननी-जीवन (चाँ० का०) १।)
जननी और शिशु (हिं० ग्रं० रा०) ॥=)
जपाकुसुम (ल० ना० प्रे०) २)
जया (ल० रा० सा०) ।-)
ज्ञान (गं० पु० मा०) ॥=)
जासूस की डाली (गं० पु० मा०) १)
जीवन-निर्वाह (हिं० ग्रं० र०) १)
जेवनार (हिं० पु० ए०) ।-)
तरुण तपस्विनी (गृ० ल०) ।)
तारा (इं० प्रे०) १)
दक्षिण अफ्रिका के मेरे अनुभव (चाँ० का०) २॥)
दमयन्ती (हरि० कं०) =)॥
" (इं० प्रे०) ।)
दमयन्ती-चरित्र (गृ० ल०)=)॥
दम्पति-कर्त्तव्य-शास्त्र (सा० कु०) १)
दम्पत्ति-मित्र (स० आ०) ३॥)
दम्पति-रहस्य (गो० हा०) १)
दम्पति-सुहृद् (हिं० मं०) १)
दाम्पत्य जीवन (चाँ० का०)२॥)
दाम्पत्य-विज्ञान (पा० एं० कं०) ३)
दिव्य-देवियाँ (गृ० ल०) १॥=)
दुःखिनी (गृ० ल०) ॥-)
दुलहिन (हिं० पु० भं०) ।)
देवबाला (ख० वि० प्रे०) ॥)
देवलदेवी (गृ० ल०) ।-)
देवी चौधरानी (ह० दा०कं०)२)
देवी जोन (प्रका० पु०) ।=)
देवी पार्वती (गं० पु० मा०) १), १।)
देवी द्रौपदी (पॉपूलर) ॥=)
देवी द्रौपदी (गं० पु० मा०) ॥)
देवी सती " ॥=)
द्रौपदी (ह० दा० कं०) २॥), ३)
धर्मात्मा चाची और अभागा भतीजा (चि०भ० गु०) ।-)
ध्रुव और विलया (चि० शा० प्रे०) ।-)
नवनिधि (प्रेमचन्द) ॥)
नल-दमयन्ती (सचित्र) ब० प्रे०) १॥), १॥), २)
" " (पॉपूलर) ॥)
" " (गं० पु० मा०) ॥)
नवीन शिल्पमाला (हेमन्त-कुमारी) ३)
नन्दन-निकुञ्ज (गं० पु० मा०) १), १॥)
नवीना (हरि० कं०) १॥)
नारायणी शिक्षा (दो भाग) (चि० भ० गु०) ३)
नारी-उपदेश (गं० पु० मा०) ॥)
नारी-चरितमाला (न० कि० प्रे०) ॥=)
नारी-नवरत्न (म० भा० हिं० सा० स०) =)
नारी-महत्व ॥)
नारी-नीति (हिं० ग्रं० प्र०) ॥=)
नारी-विज्ञान (पा० एं० कं०) २), २॥)
नारी-धर्म-विचार १॥)
निर्मला (चाँ० का०) २॥)
पतिव्रता (इं० प्रे०) १)
" (गं० पु० मा०) १।=), १॥=)
पतिव्रता-धर्मप्रकाश १)
पतिव्रता अरुन्धती (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता गान्धारी(इं० प्रे०)॥=)
पतिव्रता मनसा (एस० आर० बेरी०) ॥)
पतिव्रता-माहात्म्य (वें० प्रे०) १)
पतिव्रता रुक्मिणी (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता स्त्रियों का जीवन-चरित्र १=)
पत्नी-प्रभाव (उ० ब० आ०) १)
परिणीता (इं० प्रे०) १)
पत्राञ्जलि (गं० पु० मा०) ॥)
पण्डित जी (इं० प्रे०) १॥)
पाक-कौमुदी (गृ० ल०) १)
पाक-प्रकाश (इं० प्रे०) ।=)
पाक-विद्या (रा० ना० ला०) =)
पाक-चन्द्रिका (चाँ० का०) ४)
पार्वती और यशोदा (इं० प्रे०) ॥=)
प्राचीन हिन्दू-माताएँ (ना० दा० स० एं० सं०) १)
प्राणघातक-माला (अभ्यु०) ॥=)
प्राणनाथ (चाँ० का०) २॥)
प्रेमकान्त(सु० ग्रं० प्र० मं०)१॥)
प्रेम-गङ्गा (गं० पु० मा०) १), १॥)
प्रेमतीर्थ (प्रेमचन्द) १॥)
प्रेम द्वादशी १), १॥)
प्रेमधारा (गु० ला० चं०) ॥)
प्रेम-परीक्षा (गृ० ल०) १=)
प्रेम-पूर्णिमा (प्रेमचन्द) (हिं० पु० ए०) २)
प्रेम-प्रतिमा (भा० पु०) २)
प्रेम-प्रमोद (चाँ० का०) २॥)
प्रेमाश्रम (हिं० पु० ए०) ३॥)
प्रेम-प्रसून (गं० पु० मा०) १=), १॥=)
बच्चों की रक्षा (हिं०पु०ए०) ।-)
बड़ी बहू (रा० ना० ला०) ॥=)
बहता हुआ फूल (गं० पु० मा०) २॥), ३)
बड़ी दीदी (इं० प्रे०) १)
बरमाला (गं० पु० मा०) ॥)
बाला पत्र-बोधिनी(इं० प्रे०) ॥)
बाला-बोधिनी (५ भाग) (रा० ना० ला०) १॥)
बाला-विनोद (इं० प्रे०) ।=)
बालिकाओं के खेल (वें० प्रे०) =)
विराजबहू (शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय) (सर० भं०)॥=)
वीर-बाला (चाँ० का०) ४)
ब्याही बहू (हिं० ग्रं० र०) ।)
भक्त स्त्रियाँ (रा० श्या०) ॥)
भक्त विदुर (उ० ब० आ०) ॥)
भगिनीद्वय (चि० शा० प्रे०) ।-)
भगिनी-भूषण(गं० पु० मा०)=)
भारत-सम्राट् (उ० ब० आ०) १॥)
भारत की देवियाँ (ल० प्रे०)।-)
भारत के स्त्री-रत्न(स० सा० प्र० मं०) १=)
भारत-महिला-मण्डल (ल० पे०) १)
भारत-माता (रा० श्या०) ।)
भारत में बाइबिल (गं० पु० मा०) ३), ४)
भारत-रमणी-रत्न (ला० रा० सा०) ॥=)
भारतवर्ष की माताएँ (श्या० ला०) ॥)
भारतवर्ष की वीर और विदुषी स्त्रियाँ (श्या० ला०व०) ॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

सच्चे समाचार पहुँचते होंगे; क्योंकि उनके भारत सम्बन्धी ज्ञान के आधार ग्रसफ़र्ड जैसे व्यक्तियों के पत्र और लेख हैं, परन्तु केवल उतने से ही भारत की परिस्थिति का सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। तिस पर भी भारत की मोटी-मोटी ख़बरों ने ही उन्हें उद्विग्न और व्याकुल बना दिया है और वे अपना भय भारत-मन्त्री को प्रकट करने के लिए बाध्य हो गए हैं! उनका पत्र भारत-मन्त्री के पास पहुँचने पर वे क्या करेंगे, इसका अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। भारत-मन्त्री प्रतिनिधियों को इस बात का विश्वास दिलाएँगे, कि उन्हें नई घटनाओं की कोई ख़बर नहीं है, और वे इस सम्बन्ध में शीघ्र ही जाँच करेंगे। इस बीच में वे प्रतिनिधियों से नम्रतापूर्वक भारत के उद्धार का विशाल कार्य जारी रखने की प्रार्थना करेंगे। ये सच्चे प्रतिनिधिगण गोलमेज़ परिषद के तमाशे में भाग लेने के पहिले यह भली भाँति जानते थे, कि देश उनके बिलकुल विरुद्ध है। शायद उन्हें इस बात की आशा होगी, कि गवर्नमेण्ट का साथ देने के लिए तैयार हो जाने से गवर्नमेण्ट का दमन-चक्र रुक जायगा। परन्तु, इसके विपरीत प्रतिनिधियों के अन्तिम अर्थ के जहाज़ पर पैर रखते ही, यह दमन-चक्र और प्रबल वेग से चलने लगा है। हमें उनके भारत-मन्त्री को पत्र लिखने से कोई लाभ होता नज़र नहीं आता। प्रतिनिधियों ने स्वयं पहिले से दमन-नीति बन्द किए बिना परिषद में भाग लेकर अपने को असहाय बना लिया है !!

—'हिन्दुस्तान टाइम्स' (अङ्गरेज़ी)

* * *

भारतीय राजा और उनकी प्रजा

गोलमेज़ परिषद में फ़ेडेरल-शासन-विधान की रचना पर विचार हो रहा है और राजा लोग और जातीय पक्षपात के हिमायतियों ने हृदय से उसका स्वागत किया है, इससे उन लोगों के हृदयों पर, जो निकट-भविष्य में भारत में स्वराज्य की स्थापना के लिए लालायित हैं, आतङ्क छा गया है। फ़ेडेरल-शासन-विधान की रचना का प्रश्न उठ खड़ा होने से, केवल यही डर नहीं है कि इसमें आगे भारतीय स्वतन्त्रता का प्रश्न दब जायगा, वरन इससे एक भयङ्कर ख़तरा यह भी है, कि केन्द्रीय-शासन को पुनः सङ्गठित करने का जो अवसर दिया गया है, उससे अनुचित लाभ उठा कर राजा लोग अपनी नींव दृढ़ कर लें और उनके एकतन्त्र शासन में सार्वभौम शक्ति (Paramount Power) का जो थोड़ा बहुत व्यवधान है, उसे भी दूर कर दें। इसलिए 'स्टेट्स सब्जेक्ट कॉन्फ्रेन्स' की कमिटी ने इस ख़तरे को दूर रखने के लिए दीवान बहादुर रामचन्द्र राव और दूसरे प्रतिनिधियों को तार भेज कर ठीक ही किया है। कमिटी ने प्रतिनिधियों को निम्न अधिकार प्राप्त करने पर तुले रहने के लिए लिखा है :—

(१) सार्वभौम शक्ति (Paramountcy) उस रूप में, जिसमें बटलर-रिपोर्ट में विशेषतः ४६ और ५० पैरों में उसकी व्याख्या की गई है, उसके अनियन्त्रित शासन के विरुद्ध कुछ व्यवधान लगा कर फ़ेडेरल गवर्नमेण्ट के हाथों में दे दी जाय;

(२) उस समय तक, जब तक रियासतों का शासन जनता के हाथों में न आ जाय, फ़ेडेरल-गवर्नमेण्ट का उनकी आन्तरिक क़ानून-व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था में पूरा हाथ रहे;

(३) वैयक्तिक स्वतन्त्रता, जायदाद, प्रेस, भाषण और सभा सम्बन्धी मामलों में रियासतों की बड़ी से बड़ी अदालत से 'सुप्रीम फ़ेडेरल कोर्ट' में अपील करने का जनता को अधिकार रहे।

(४) छोटी-छोटी रियासतों के हाथ से, जिनके साथ सन्धि नहीं हुई, क़ानून-रचना और न्याय-व्यवस्था के अधिकार छीन लिए जायँ; और

(५) नगण्य रियासतें और एजेन्सियाँ भारत में सम्मिलित कर ली जायँ।

यदि उन राजाओं की सदिच्छा, जिन्होंने फ़ेडेरल गवर्नमेण्ट की स्थापना से अपनी पूरी सहानुभूति दिखलाई है, भारत में स्वराज्य स्थापित करने की है और यदि वे अपना स्वेच्छाचारी और अनियन्त्रित शासन चिरस्थायी नहीं बनाना चाहते, तो उन्हें अपनी प्रजा के उपर्युक्त अधिकार मञ्जूर करने में हिचकिचाना न चाहिए !

—ट्रिब्यून (अङ्गरेज़ी)

* * *

नीम जानों को न छेड़ !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

तार "रयूटर" का यह है, क़ानून-दानों को न छेड़ !
मेहरबानी करके इतना, मेहरबानों को न छेड़ !!
है इन्हीं की वजह से यह रङ्ग, यह लुत्फ़े-चमन,
बाग़ में सय्याद कुछ हो, बाग़बानों को न छेड़ !!
हो गई हड़ताल, तो फिर ख़ाक उड़ेगी देखना !
चल रहे हैं कारख़ाने, कारख़ानों को न छेड़ !!
कौन कहता है, नई तहज़ीब पर क़ुर्बान हो !
जो तरीक़े हैं पुराने, उन पुरानों को न छेड़ !!
ख़ाना-बरबादी से क्या हासिल तुझे होगा ट्रस्ट !
टूटे-फूटे हम ग़रीबों के, मकानों को न छेड़ !!
आग बरसाएँगे जल कर, फिर यह पानी की तरह,
पुर-असर नाले कहा मान, आसमानों को न छेड़ !!
काँप उठे जिनसे कलेजा, और हो बेताब दिल !
दर्द वाले देख ! ऐसी दास्तानों को न छेड़ !!
गूँजते हैं, कान में "इङ्गलिश" के नग़मे बार-बार !
है मुनासिब अब यही, देसी तरानों को न छेड़ !!
बेवफ़ा क़ातिल से ऐ "बिस्मिल" यह कहना चाहिए !
नीम जानों में नहीं कुछ, नीम जानों को न छेड़ !!

* * *

(६ वें पृष्ठ का शेषांश)

भारत के शासकों ने जितने युद्ध लड़े हैं, उनमें से हर एक का ख़र्च भारतीयों से ही वसूल किया गया है। ब्रह्मा को सम्मिलित करने का ख़र्च उससे किस तर्क और न्याय के अनुसार वसूल किया जाता है? साइमन रिपोर्ट ने भी यह स्पष्ट रूप से लिख दिया है कि भारत साम्राज्य की उस फ़ौज का ख़र्च देने का देनदार नहीं है, जो आकस्मिक आवश्यकता के लिए भारत में रक्खी गई है। इस माँग के प्रस्ताव का शब्द-विन्यास चाहे बिलकुल उपयुक्त भले ही न हुआ हो, परन्तु साधारण न्याय की हैसियत से भी इस ऋण की जाँच और व्यवस्था की अत्यन्तावश्यकता है।

शक्ति की परीक्षा

"एक वर्ष पहले भारत की समस्या केवल राजनीतिक समस्या थी, परन्तु धीरे-धीरे यह उलझ कर आर्थिक और सामाजिक समस्या का रूप भी धारण कर रही है। नमक के एकाधिकार (Monopoly) और शराब की दूकानों (आबकारी) पर धावा अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने की केवल पहली क़वायद थी। दोनों ओर की शक्ति की परीक्षा तो उस समय प्रारम्भ हुई, जब गुजरात के किसानों ने ज़मीन का लगान देने से साफ़ इनकार कर दिया। इनके उदाहरण का कहाँ तक अनुकरण किया जायगा? प्रधान कठिनाई यह है, कि भारत के अधिकांश किसान ज़मीन के मालिक नहीं हैं! वे ज़मींदार को ज़मीन का लगान देते हैं और वह उसी के अनुपात में टैक्स देता है। परन्तु गुजरात से इसकी हवा इलाहाबाद तक आई है और वहाँ से फैलते अधिक देर न लगेगी।

लगानबन्दी का आन्दोलन

"इन ज़मींदारों को पूँजी डूबने का डर नहीं है और न वे कोई सामाजिक सेवा करते हैं! वे ऐसे गाँवों में टैक्स लगा देते हैं, जहाँ कि हर एक कुटुम्ब क़र्ज़ में डूबा हुआ है। उन बच्चों को, जो बचपन में किसी प्रकार कराल काल के भयङ्कर प्रहार से बच जाते हैं, दूध स्वाद लेने को कभी नहीं मिलता! भूमि-विहीन मज़दूर तीन या चार पेन्स (तीन-चार आना) में दिन भर काम करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक तैयार हो जाता है! भारत में सूर्य डूबने के उपरान्त सर्दी अपना विस्तार फैलाती है, परन्तु मैंने ऐसे आदमी देखे हैं, जिनके पास उससे रक्षा करने के लिए एक चिथड़े-चिथड़े धोती के सिवा कोई अन्य वस्त्र नहीं है !! साधारण परिस्थिति में भी यह लगान बड़ी निर्दयता से वसूल किया जाता है, परन्तु वर्तमान परिस्थिति में इसका वसूल होना एकान्त असम्भव है। भारत के उत्तरीय भाग के गेहूँ का भाव, जो वहाँ की मुख्य उपज है, युद्ध के पहले के भाव से भी बहुत अधिक गिर गया है और यदि वह लगान दे दे तो ख़र्च निकालने के बाद किसान अपने भरण-पोषण के उपयुक्त भी अन्न नहीं बचा सकता! जब किसान लगान देने में असमर्थ होता है, तब उसे लगान न देने के लिए उकसाने में अधिक प्रयत्न या आन्दोलन की आवश्यकता नहीं पड़ती।

शीतकाल व्यतीत होने के पूर्व

"लगानबन्दी का आन्दोलन शीत ऋतु प्रारम्भ होने के पहले ही प्रारम्भ हो गया है और शीघ्र ही भारत के अधिकांश भाग में फैल जायगा। यह भारत की ग़रीबी की समस्या हल कर देगा और मैंने स्वयं किसानों को यह घोषणा करते हुए सुना है कि 'जब तक स्वराज्य नहीं हो जायगा, हम लगान न देंगे।' इससे कम से कम यह निश्चित हो जाता है कि इस आन्दोलन में वे इतना अधिक भाग किसी मन्तव्य से ले रहे हैं। उनके हृदय में विश्वास जम गया है कि इससे उनके बच्चों को घी-दूध नसीब होने लगेगा। जो कल राष्ट्रीय क्रान्ति थी, उसके भविष्य में भूमि-सम्बन्धी विद्रोह में परिवर्तित होने की आशङ्का है। गवर्नमेण्ट की आमदनी का मुख्य द्वार ख़तरे में है और इस विद्रोह का अन्त वह भयङ्कर हानि सह कर लगान बन्द किए बिना नहीं कर सकती। मैं साहसपूर्वक यह भविष्यवाणी करता हूँ कि इस युद्ध के उपरान्त जिस नव्य-भारत का जन्म होगा, वह अपनी अगणित नदियों की निश्चेष्टता और अकर्मण्यता अवश्य बहा देगा।"

* * *

धर्म और भगवान अमर हैं !

उनके बिना समाज रसातल को पहुँच जायगा !

[श्री० नाथूराम जी पाठक]

गत ४थी दिसम्बर के "भविष्य" में श्री० पृथ्वीपाल, बी० ए० नाम के "अधर्मी" सज्जन ने, देश की वर्तमान पराधीनता तथा समाज की अधोगति को देख कर उसके निवारणार्थ "धर्म और भगवान को मृत्यु-शय्या पर" लिटा देने का आदेश दिया है। लेखक महोदय ने आवेश में आकर परिणाम पर ज़रा भी नज़र न रखते हुए, भारतीय समाज को रूस के सुप्रसिद्ध साम्यवादी नेता मोशिए लेनिन की धार्मिक-क्रान्ति का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया है ; और साथ ही साथ आपने अत्यन्त जोश में आकर संसार के मज़हबों द्वारा होने वाले अनाचारों की विशद व्याख्या भी सुसभ्य भाषा में पाठकों के समक्ष उपस्थित की है। आपके तमाम लेख का संक्षिप्त निष्कर्ष केवल यह है—"यदि भारतवर्ष अपनी वर्तमान निराशा की अवस्था से अपना पिण्ड छुड़ाना चाहता है, तो उसे चाहिए कि वह धर्म और भगवान दोनों का काला मुँह (!!) करके उन्हें देश से निर्वासित करदे, क्योंकि इसी धर्म की बदौलत पण्डित, पुजारी, मुल्ला और महन्त, देश तथा जाति को अवनति के गर्त में लिए जा रहे हैं।" अब हमें देखना यह है, कि क्या उपरोक्त सज्जन का यह मत संसार में उस दुर्लभ शान्ति को लाने में समर्थ हो सकेगा, जिसके लिए बाबू पृथ्वीपाल साहब ने तथा उनके पूर्व और एक सज्जन ने इसी प्रकार की नास्तिकतापूर्ण सम्मति देश को प्रदान की थी।

हम एक "बुद्धिवादी" की हैसियत से यह बात बिना सङ्कोच के स्वीकार किए लेते हैं, कि धर्म और भगवान की स्थापना अथवा उनका अस्तित्व, ये दोनों निस्सन्देह कल्पना-प्रसून हैं ; किन्तु इसके साथ ही इस बात को भी स्वीकार करना अनिवार्य है, कि यह कल्पना जिन असाधारण मस्तिष्क तथा परोपकारी मनीषियों की की हुई है, उन्होंने मनुष्य-जाति के कल्याण को ही लक्ष्य में रख कर इसका निर्माण किया है।

यह सच है कि वर्तमान भारतीय समाज में, जैसा कि उल्लिखित लेखक-द्वय का मत है, धर्म के नाम पर भीषण अनाचार फैला हुआ है ; पर इस अनाचार तथा पाखण्ड का मूल कारण केवल धर्म और भगवान ही है, ऐसा समझना तथा औरों को इसी प्रकार समझाने का प्रयत्न करना, नितान्त भ्रम है।

न जाने किस अज्ञात काल से संसार का प्रत्येक देश धर्म और भगवान को मानता चला आ रहा है; हम नहीं जानते कि कोई ऐसा भी समय रहा है, जबकि संसार का कोई देश या जाति बिना धर्म और भगवान के अपना जीवन व्यतीत करता रहा हो, और उनका वह जीवन नितान्त शान्ति तथा सुखपूर्ण रहा हो। जहाँ तक हमारा अनुभव है, हम यह भी कहने का साहस कर सकते हैं, कि यदि कोई ऐसा (धर्म-विहीन) युग या काल रहा भी है, तो उस समय में केवल पशुता और अनाचार का ही बोल-बाला रहा होगा, क्योंकि बिना धर्म और भगवान के संसार में स्थायी शान्ति या सुख को लाना—हम आस्तिकों के विचार में—बालू से तेल निकालने जैसा, सर्वथा असम्भव है !

वर्तमान काल के नास्तिक बन्धु, जब अपने विषय को प्रतिपादन करने का प्रयत्न करते हैं, तो वे प्रधानतः रूस की राजनैतिक और धार्मिक क्रान्ति का अवतरण दिए बिना नहीं रहते ! और रह भी कैसे सकते हैं? उनकी अन्तः स्थित अधर्मता तो रूस की धार्मिक क्रान्ति से ही आन्दोलित हो वर्तमान नास्तिक रूप में प्रकटित हुई है।

हमसे जब कहा जाता है, कि नब्बे फ़ी सदी श्रमिकों और कृषकों का रक्त-शोषण, जो दस फ़ी सदी पूँजीपति कर रहे हैं, इसका मूल कारण केवल धर्म ही है, तब हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। हम नहीं समझ पाते कि पूँजीपतियों को अत्याचार करने का, और श्रमिकों तथा कृषकों को अत्याचार सहने का, किस धर्म ने कहाँ पर और कैसी व्यवस्था दे रक्खी है? इसके विरुद्ध धर्म की ऐसी व्यवस्थाओं से, जिनमें कि सोलहो आने साम्यवाद का समर्थन किया गया है—प्रायः सभी धार्मिक-ग्रन्थ (कम से कम हिन्दू-शास्त्र तो) भरे पड़े हुए हैं। यह बात दूसरी है कि वर्तमान पथ-भ्रष्ट समाज उसका अनुकरण न कर, उल्टा प्रत्याख्यान कर रहा है !

रूस की धार्मिक क्रान्ति ने जो नास्तिकतापूर्ण वायुमण्डल निर्माण कर दिया है, और जिसमें उसे किसी हद तक सफलता भी मिल चुकी है, नहीं कहा जा सकता कि वह सफलता चिरस्थायी रह सकेगी ! अभी इस क्रान्ति का बाल्य काल ही समाप्त नहीं हुआ ! फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि यह 'क्रान्ति-शिशु' चिरञ्जीवि ही होगा और इसकी अकाल मृत्यु न होगी ?

हम आस्तिकों के विचार से संसार का कोई भी समाज बिना धर्म-शासन के सुख तथा शान्तिपूर्वक कालयापन नहीं कर सकता। और यदि कोई देश या समाज ऐसा करने का दुःसाहस करेगा भी, तो वह समाज या देश अल्प काल में ही मनुष्य-नामधारी पशुओं, और पिशाचों का देश अथवा समाज होगा ! जब धर्म और भगवान ही न रहे तो फिर डर ही किसका ? बस "ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत" क़रज़ा लो और घी पियो !

हमारे कुछ व्यवस्थित(?)नास्तिक बन्धु कहा करते हैं, कि नहीं साहब ! हमारा मतलब यह नहीं है कि क्षमा, दया तथा परोपकारादि सद्वृत्तियों को नष्ट कर डाला जाय ! नहीं ! नहीं ! इनको तो समाज के कल्याण के लिए दूने वेग से उद्बोधित करना होगा, इनके बिना समाज की रक्षा ही कैसे हो सकेगी; किन्तु हमारे क्रान्तिकारी भाई, इतना सोचने की तकलीफ़ गवारा क्यों नहीं करते, कि जब मनुष्यों के हृदय पर से उस अन्तर्यामी का शासन नास्तिकता के द्वारा तहस-नहस कर दिया जावेगा, और साथ ही इसके, जब उनको इस बात का भी पूर्ण विश्वास दिला दिया जावेगा, कि न तो कोई धर्म है, और न कोई ईश्वर, और तुम अपने व्यक्तित्व में पूर्ण स्वतन्त्र हो, तुम्हें अपने पापों की किसी को भी कैफ़ियत न देनी होगी, तब वे अभागे अधिकांश मनुष्य, जो निन्द्य और गार्ह्य कार्य आज धर्म और भगवान के भय से नहीं कर रहे हैं, उपरोक्त अमानुषी मानसिक स्वतन्त्रता मिलने पर क्या निर्लज्जतापूर्वक चरितार्थ करना प्रारम्भ न कर देंगे ?

निस्सन्देह धर्म के नाम पर संसार में संख्यातीत मनुष्यों का शिरच्छेद कर डाला गया है, और इसी प्रकार लाखों धूर्तों ने अज्ञानी श्रद्धालुओं की अन्ध-श्रद्धा से अनुचित लाभ उठाते हुए, उनकी बहू-बेटियों तथा सम्पत्ति का अपहरण किया है, और कर रहे हैं ! किन्तु इन सब का केवल एक यही उपाय नहीं है, कि धर्म और भगवान को निरादृत कर, समाज से निर्वासित कर दिया जाय ! ऐसा करने से जहाँ हमें दस लाभ होने की सम्भावना है, वहाँ उसी के साथ ही साथ सैकड़ों नुक़सानों की भी आशङ्का है।

जब राज्य-शासन और धर्म-शासन दोनों की मौजूदगी में ही धूर्त तथा आततायी भोले-भाले नागरिकों को इस हद तक लूट रहे हैं, तब जिस दिन समाज का प्रत्येक व्यक्ति नास्तिकता का समर्थक हो जावेगा, उस दिन तो इन पिशाचों के वंशज, समाज के अन्दर जो नग्न नृत्य करेंगे, उसकी कल्पना मात्र से रोमाञ्च हो आता है !

केवल धर्म के ही आध्यात्मिक शासन में वह शक्ति और सामर्थ्य वर्तमान है, जो कि मनुष्य मात्र को स्वार्थ-त्याग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। यह केवल धर्म की ही भावना है जिससे प्रेरित होकर मनुष्य अपने को कष्ट में डाल कर, दूसरों का भला करने के लिए, प्रसन्नतापूर्वक उद्यत हो जाता है।

यदि इन्द्रिय-परायणता को, संयम द्वारा, प्रशमित न किया जाय, तो वह नीच प्रवृत्ति उत्तरोत्तर वृद्धि करती जायगी, और उसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि मनुष्य पूर्णतः विषयान्ध हो जायगा। अस्तु, ऐसे इन्द्रिय-परायण—विषयान्ध के लिए, संसार में ऐसा कोई कुकृत्य नहीं है, जो उसके लिए दुष्कर कहा जा सके ! ऐसी अनेक कुप्रवृत्तियाँ हैं, जो धर्म और भगवान का शासन न रहने पर, अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच कर, संसार का भीषण से भीषण पतन करने में सहायक होंगी ! उनके निराकरण करने की सामर्थ्य, न तो किसी सामाजिक व्यवस्था में होगी, और न किसी शासन-व्यवस्था में !

राज्य या समाज का शासन, मनुष्य के बाह्य आचरण को, चाहे किसी सीमा तक भले ही संयत रख सकें, किन्तु उनमें यह शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, कि वे मनुष्यों के हृदय में सदाचार का स्रोत बहा सकें ! उसे परोपकार, दया, क्षमा, और उदारता आदि के लिए बाधित कर सकें !

* * *

और यदि संयोगवशात कहीं नास्तिकों के मनोर्थ सफल ही हुए ! तो फिर संसार में तुलसीदास जी का वह दृश्य —

भए काम बस जोगीस तापस
पामरन की को कहे।
देखहिं चराचर नारमय जे
ब्रह्ममय देखत रहे॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग
पुरुष सब अबला मयं।
*(रहिहै कदाचित प्रलय लौं—
पथभ्रष्ट) कृत कौतुक अयं॥

अवश्य दृष्टिगोचर होगा !

इन पंक्तियों का आस्तिक लेखक, समाज में होने वाले जातिगत वैषम्य, छुआछूत, पण्डा, पुरोहित और मौलवी, महन्तों को उतना ही गार्ह्य, परित्यज्य तथा बहिष्करणीय समझता है, जितना कि बाबू पृथ्वीपाल साहब ! किन्तु साथ ही इसके, पाश्चात्य नास्तिकाचार्य हैगल, और हक्सले, निट्शे और स्पेन्सर आदि के अनीश्वरवादी—भेड़ियाधसान—सिद्धान्तों को भी उतना ही त्याज्य समझता है।

आशा है, कि हमारे नास्तिक दोस्त—सुधारवादी बदलाहीन—हिन्दू आस्तिकों का ख़याल रखते हुए, "भगवान का काला मुँह" जैसे अनुचित वाक्य लिख कर आकाश पर थूकने का निन्द्य प्रयत्न न करेंगे।

* कोष्ठक का 'पौन' चरण लेखक का है।

* * *

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की खुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। भाषा अत्यन्त सरल। मूल्य केवल १॥)

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोद-पूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य केवल १)

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष नहीं रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; सजिल्द तथा सचित्र; तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य ३) स्था० ग्रा० से २)

जननी जीवन

पुस्तक की उपयोगिता नाम ही से प्रकट है! इसके सुयोग्य लेखक ने यह पुस्तक लिख कर महिला जाति के साथ जो उपकार किया है, वह भारतीय महिलाएँ सदा स्मरण रक्खेंगी। घर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः प्रत्येक बातों का वर्णन पति-पत्नी के सम्वाद-रूप में किया गया है। लेखक की इस दूरदर्शिता से पुस्तक इतनी रोचक हो गई है कि इसे एक बार उठा कर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से "गागर में सागर" वाली लोकोक्ति का परिचय मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में कुल २० अध्याय हैं; जिनके शीर्षक ये हैं:—

(१) अच्छी माता (२) आलस्य और विलासिता (३) परिश्रम (४) प्रसूतिका स्त्री का भोजन (५) आमोद-प्रमोद (६) माता और धाय (७) बच्चों को दूध पिलाना (८) दूध छुड़ाना (९) गर्भवती या भावी माता (१०) दूध के विषय में माता की सावधानी (११) मल-मूत्र के विषय में माता की जानकारी (१२) बच्चों की नींद (१३) शिशु-पालन (१४) पुत्र और कन्या के साथ माता का सम्बन्ध (१५) माता का स्नेह (१६) माता का सांसारिक ज्ञान (१७) आदर्श माता (१८) सन्तान को माता का शिक्षा-दान (१९) माता की सेवा-शुश्रूषा (२०) माता की पूजा।

इस छोटी सी सूची को देख कर ही आप पुस्तक की उपादेयता का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में होनी चाहिए। मूल्य १।); स्थायी ग्राहकों से ॥।≈)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के एक प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य केवल आठ आने!

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञानवृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ॥।) स्थायी ग्राहकों से ॥–)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक भी हैं। शीघ्र ही मँगाइए। मूल्य लागत-मात्र केवल।) है।

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स का छकड़ा जिस चाल से चल रहा है, उससे प्रतीत होता है कि अभी दिल्ली दूर है। नौ दिन चले अढ़ाई कोस की चाल से मञ्ज़िल तक पहुँचना सरल काम नहीं है। विशेषतः ऐसा छकड़ा, जिसके बैल भिन्न-भिन्न दिशाओं में भागने की चेष्टा कर रहे हों, उसका तो राम ही मालिक है। कॉन्फ्रेन्स क्या है, भिखमङ्गों की जमाअत है! सब चाहते हैं कि उनकी झोली पहले भर दी जाय। ब्रिटिश सरकार भी प्रसन्न है, कि चलो अच्छा है—ख़ूब लड़ने दो। यदि इस झगड़े में आपस में सारा जूता चल जाय और कॉन्फ्रेन्स भङ्ग हो जाय, तो भारतीयों को नालायक़ प्रमाणित करने का अच्छा अवसर मिलेगा। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, सिक्ख तथा अछूत ये सब अपनी-अपनी सीटें रिज़र्व कराना चाहते हैं। अपने राम इनको बिलकुल नाकाफ़ी समझते हैं। हिन्दू है किस चिड़िया का नाम? अजी जनाब हिन्दुओं में चार वर्ण हैं—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र! इन सबके लिए सीटें होनी चाहिएँ। ब्राह्मणों में अनेक शाखाएँ हैं। कॉन्फ्रेन्स में कोई कनौजिया भाई पहुँच जाते तो बस बेड़ा पार था—सब सीटें हथियाने के पश्चात भी शुक्ल, मिश्र, दुबे अथवा अन्य कोई टापते ही रह जाते। वैश्यों में कोई मारवाड़ी सज्जन होते तो खेतान, डालमियाँ, सिंघानिया, कापड़िया इत्यादि-इत्यादि के लिए सीटें लेते-लेते हिन्दुस्तान का सफ़ाया कर देते।

ब्याह-शादियों में जब पत्तलें बँटती हैं, तो जो बच्चा गर्भ में होता है उनकी पत्तल तक ले ली जाती है। इसी प्रकार कुछ सीटें भविष्य के गर्भ में छिपी हुई जातियों के लिए भी रिज़र्व रख ली जायँ तो अच्छा है। भई, पहले से इन्तज़ाम कर लेना अच्छा होता है—पीछे झगड़ा हो तो क्या फ़ायदा! मुसलमान लोग भी ग़लती कर रहे हैं, उन्हें शेख़, सय्यद, मुग़ल, पठान, हाजी, हाफ़िज़—सबके लिए अलग-अलग माँग पेश करनी चाहिए। इस प्रकार सब लोग ख़ूब विस्तारपूर्वक अपने-अपने हक़ माँगें तो कुछ आनन्द भी आवे। ब्रिटिश सरकार को भी पता चले कि हाँ कॉन्फ्रेन्स ऐसी होती है। दही, बड़े-कचालू का ख़ोनचा, जिसमें से पैसे में चार चीज़ें मिल जाती हैं, कॉन्फ्रेन्स के आगे मात खा जाता। अपने राम भी साल-छः महीने के भीतर कॉन्फ्रेन्स के सभापति को एक "केबिल" खटखटाने वाले हैं, कि भाई साहब ज़रा दुबे लोगों का भी ख़याल रखना, वरना हिन्दुस्तान में ग़दर हो जायगा और आपकी बदनामी होगी। क्योंकि अपने राम चाहे ग़म खाकर बैठ भी रहें, परन्तु सब दुबे लोग ग़म खाने वाले जीव नहीं हैं। और ग़म क्यों खायँ—क्या हम लोग हिन्दुस्तान में नहीं रहते? यदि दुबे लोगों के लिए यथेष्ट सीटें न रक्खी गईं (क्योंकि दुबे लोगों में भी अनेक श्रेणियाँ हैं), तो अन्य जाति वाले इन्हें भारतवर्ष से निकाल बाहर करेंगे। इसलिए पहले से प्रबन्ध कर लेना अच्छी बात है—बाद को पछताना न पड़े।

एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की है, कि सोलह जनवरी तक स्वराज्य मिल जायगा और सब राजनैतिक क़ैदी छूट जायँगे। अपने राम की राय में यह भविष्यवाणी बहुत ही ठीक जँचती है। जनवरी के मध्य तक राउण्डटेबुल कॉन्फ्रेन्स भी समाप्त होगी, बस उधर कॉन्फ्रेन्स ख़तम हुई, इधर स्वराज्य मिल गया। इसलिए अब यह सत्याग्रह और पिकेटिङ्ग सब बन्द हो जाना चाहिए। जब स्वराज्य मिलने ही पर उतारू हो गया है, तो सब व्यर्थ है। ख़्वामख़्वाह की झन्झट मोल लेना बुद्धिमत्ता नहीं है। गोलमेज़ के प्रतिनिधियों को भी ब्रिटिश सरकार से यह कह कर, भारत लौट आना चाहिए कि "जनाब, हम स्वराज्य-वराज्य कुछ नहीं चाहते—यह तो महज़ एक दिल्लगी थी, आप लोग बेफ़िक्र होकर आराम से बैठिए। स्वराज्य हमें अपने आप मिल जायगा। आप लोग झख मारेंगे और स्वराज्य देंगे, क्योंकि हमारे एक ज्योतिषी जी हुक्म लगा चुके हैं।" अपने राम भी आन्दोलन की टाँता-किटकिट से तङ्ग आ गए हैं। जी चाहता है कि क्लोरोफ़ॉर्म सूँघ कर पड़ रहें और सत्रह जनवरी को उठें, तो चारों तरफ़ स्वराज्य ही स्वराज्य देखें! हालाँकि यह युक्ति हिन्दुस्तान भर को करना चाहिए, क्योंकि सोलह जनवरी की प्रतीक्षा करते-करते एक आँख बैठ जायगी। इसलिए यह अच्छा है कि ये दिन बेहोशी में कट जायँ—पता भी नहीं लगेगा कि कब और कहाँ गए। परन्तु अपने राम की यह युक्ति हिन्दुस्तान भर मानने क्यों लगा, क्योंकि बहुतों को इसी में मज़ा आता है, कि ऐसी ही धमचक्र मची रहे।

ज्योतिषी जी महाराज ने बड़ी ग़लती की जो अभी तक इस बात को प्रकट न किया कि सोलह जनवरी तक स्वराज्य मिलेही गा—मानेगा नहीं। यदि वह साल भर पहले भी बता देते, तो यह झगड़ा क्यों होता। गाँधी जी नमक-सत्याग्रह आरम्भ न करते, विलायती कपड़े का बॉयकॉट न होता—न पिकेटिङ्ग होती। हज़ारों आदमी क्यों पिटते और क्यों जेल जाते! भारत-सरकार भी सुख की नींद सोती। गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स को भी हिन्दुस्तान से ही अँगूठा दिखा दिया जाता। क्योंकि होने वाली बात किसी के रोके नहीं रुक सकती। ज्योतिषी जी महाराज अब तक न जाने किस दरबे में बन्द रहे। यदि इनकी भविष्यवाणी ठीक हुई, तो इन्हें कालेपानी का दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। ये क्षमा के योग्य कदापि नहीं हैं; क्योंकि इन्होंने ही अब तक मौन धारण करके इतना उपद्रव मचवा दिया!

अपने राम इसीलिए कभी भविष्यवाणी नहीं करते कि कहीं सच हो गई तो मुफ़्त में सारा दोष अपने राम के मत्थे मढ़ा जायगा। अपने राम ने एक बार एक मरणासन्न रोगी के सम्बन्ध में कहा था कि यह अच्छा हो जायगा। बस जनाब, वह मृत्यु को अँगूठा दिखा कर टर्राँ-सा उठ बैठा। फिर क्या था! उसके घर वाले अपने राम की जान को आ गए कि "आपने पहले क्यों न बताया, हमारा सैकड़ों रुपया डॉक्टरों के चूल्हे में चला गया—आप पहले बता देते तो हम डॉक्टर तो क्या, किसी अत्तार को भी न बुलाते।" रोगी भी बड़ा नाराज़ हुआ कि डॉक्टरों ने ज़हर पिला-पिला कर नाक में दम कर दिया, और भूखों मार डाला। आप यदि पहले से बता देते तो मज़े से दोनों समय ठण्डाई छानते और मलाई-रबड़ी उड़ाते। यह सब देख-सुन कर अपने राम ने प्रतिज्ञा कर ली कि अब कभी जीवन में भविष्यवाणी नहीं करेंगे—सदैव भूतवाणी और वर्तमानवाणी ही करेंगे। स्वराज्य मिलने न मिलने के सम्बन्ध में अनेक बार इच्छा हुई कि भविष्यवाणी कर डालें, परन्तु यही डर लगा रहा, कि कहीं सच हो गई तो लोग ख़ुफ़िया पुलिस का आदमी समझ कर फाँसी पर लटका देंगे। इसलिए अपने राम भूतवाणी के पक्ष में हैं। अपने राम की भूतवाणी कभी ग़लत नहीं होती—यह दावा है। अपने राम की भूतवाणी सुनिए—"भारत में दस महीने से उथल-पुथल हो रही है, हज़ारों आदमी जेल जा चुके हैं, लाखों आदमी खद्दरधारी हो गए हैं, करोड़ों आदमी नित्य सवेरे उठते हैं और दिन भर अपना काम-धन्धा तथा आन्दोलन के सम्बन्ध में गप-शप करके रात में पड़ के सो जाते हैं।" क्यों सम्पादक जी यह भूतवाणी कितनी ठीक है—हालाँकि इसमें थोड़ी वर्तमानवाणी भी मिली हुई है। इस वाणी को कोई ग़लत प्रमाणित कर दे तो मैं उसे अपना चेला बना लूँ। आजकल वह समय है, कि हाथ-पैर बचा कर काम करना चाहिए। वाणी के पीछे ही हज़ारों आदमी जेल की रोटियाँ खा रहे हैं। शेरवाणी तथा क़ीलवाणी से काम न लेकर केवल नयनवाणी से काम निकालना चाहिए—ऐसा कुछ लोगों का मत है। सम्पादक जी, आप भी सदैव भूतवाणी तथा वर्तमानवाणी करते हैं। हालाँकि आपने अपने पत्र का नाम "भविष्य" रक्खा है, परन्तु भविष्यवाणी के पास भी नहीं फटकते। यह बड़ी अच्छी बात है। आपका और अपने राम का सिद्धान्त मिलता-जुलता है।

सम्पादक जी, सोलह जनवरी के लिए तैयारी कर रखिए। ख़ूब उत्सव होगा, ख़ूब नाच-रङ्ग होंगे। घर-घर घी के चिराग़ जलाए जायँगे। अपने राम ने अभी से विशुद्ध ताज़ा देशी घी देहात से मँगाने का प्रबन्ध कर लिया है। बिजली की बत्ती की रोशनी नहीं होगी। बिजली की बत्तियाँ विलायती होती हैं। आप भी रोशनी का बढ़िया प्रबन्ध कीजिएगा—जिससे कि चन्द्रलोक सूर्यलोक बन जाय।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

फ़रियादे बिस्मिल

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

ख़ुदा ही ख़ैर करे क्या पयाम आया है,
बजाए ख़त मुझे टेलीग्राम आया है !
ख़ुशी के साथ वहाँ जाएँ हज़रते "बिस्मिल",
यहाँ तुम आओ यह उनका पयाम आया है !!

* * *

पाठशाले का सबक़ सब भूल जाना चाहिए,
मुख़्तसर यह है, मुझे स्कूल जाना चाहिए !
उनसे पूछो हज़रते "बिस्मिल" यह क्या दस्तूर है,
मैं न याद आऊँ तो मुझको भूल जाना चाहिए ?

* * *

वह और क्या बताए दुनिया में काम अपना,
आता है बरहमन को बस राम-राम जपना ?
बँगलों पे जाके "बिस्मिल" करने लगे ख़ुशामद,
मतलब यह है कि समझें वह ख़ैरख़्वाह अपना !!

* * *

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीण-काय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशल-किशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। मूल्य ३) रु०

अनाथ पत्नी

इस पुस्तक में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें।

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल लागत मात्र २) स्थायी ग्राहकों से १।।)

मालिका

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण। आप देखेंगे कि प्रत्येक कहानी के अन्दर लेखक ने किस सुगमता और सचाई के साथ ऊँचे आदर्शों की प्रतिष्ठा की है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

देवताओं के ग़ुलाम

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामे एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। मूल्य ३); स्था० ग्रा० से २।)

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य ।।)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

साम्यवाद

[श्री० यदुनन्दनप्रसाद जी श्रीवास्तव]

(प्रत्युत्तर)

'भविष्य' के २३ अक्टूबर के अङ्क में मैंने साम्यवाद पर जो छोटा सा लेख दिया था उसने कई लोगों में भारी भ्रम पैदा कर दिया है। सब से प्रथम श्री० सुधीर महोदय ने उसके विरुद्ध लेखनी उठाई; उसका उत्तर भेजते न भेजते श्रीशैलेन्द्रकुमार जी अवस्थी ने भी एक जवाब लिख डाला। किन्तु अवस्थी जी के लिखने का ढङ्ग सुधीर महोदय की तरह फ़ौजी नहीं, साथ ही उनके लेख के कई अंशों से ऐसा विदित होता है कि उनके और मेरे विचारों में विरोध की अपेक्षा समता ही अधिक है। जो कुछ भी विरोध दीखता है, वह हम दो में से किसी न किसी का भ्रम है।

अवस्थी जी लिखते हैं—"पूर्वकाल में भारतीय राष्ट्र एवं समाज का सङ्गठन साम्यवाद के ही आदर्श पर स्थिर था।" मैंने भी अपने लेख के छठवें पैराग्राफ़ में ठीक यही बातें लिखी हैं। हमारा और अवस्थी जी का मत इस सम्बन्ध में एक हो जाने पर अब भेद केवल यही रह जाता है कि अवस्थी जी आधुनिक साम्यवाद के सिद्धान्त पर ही हमारे समाज को सङ्गठित बनाते हैं। अवस्थी जी के इस कथन से मैं सहमत नहीं।

हमारे समाज, धर्म अथवा सभी सङ्गठनों के मूल में आत्म-विकास का सिद्धान्त था। चाहे कोई व्यक्ति कुछ भी करे, उसका मुख्य उद्देश्य था अपने आत्मा का पूर्ण विकास—आत्म-साक्षात्कार अथवा मोक्ष। साम्यवाद का उद्देश्य यह नहीं मालूम पड़ता। भौतिकवादी पश्चिम की अन्य सभी बातों की तरह साम्यवाद का भी उद्देश्य है प्रत्येक व्यक्ति का भौतिक विकास। अवस्थी जी लिखते हैं—"वह (साम्यवाद) ब्रह्मज्ञान या मस्तिष्क-बल को नहीं भुलाना चाहता।" प्रत्यक्ष रूप से साम्यवाद चाहे आत्मवाद का विरोध न करता हो, किन्तु यह तो निर्विवाद है कि साम्यवाद आर्थिक एवम् राजनैतिक क्रान्ति है और उसकी आँख भौतिक सुख पर ही डटी हुई है। उसका उद्देश्य है भौतिक सुख। उसका लक्ष्य इससे परे नहीं जाता।

अवस्थी जी लिखते हैं—"आजकल के सम्यवाद में पहिले से कुछ अन्तर पड़ गया है, क्योंकि जब अत्याचार असहनीय हो गए तो इसने पीड़ित दिलों में प्रतिहिंसा की अग्नि पैदा कर दी। जिससे कुछ असहिष्णु व्यक्तियों ने......अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए......। यह साम्यवाद के असली उद्देश्य या सिद्धान्त का दोष नहीं है, न महात्मा कार्ल मार्क्स और महात्मा टॉल्सटॉय का दोष है......"

किन्तु दोष किसी न किसी का है अवश्य। वही हमें ढूँढ़ना चाहिए। साम्यवाद को प्रचलित हुए अभी बहुत दिन नहीं हुए। किन्तु इसी थोड़े काल में ही अवस्थी जी के कथनानुसार वह अपने मूल उद्देश्य से पतित हो चुका है। इससे क्या यह अनुमान न निकाला जाय कि साम्यवाद के मूल सिद्धान्त व्यावहारिक नहीं हैं। साम्यवाद के प्रवर्तक निश्चय ही ऊँचे दर्जे के व्यक्ति थे। उनके बाद महात्मा टॉल्सटॉय के हाथों इसकी बागडोर गई और फिर महामना लेनिन ने इसे पूरी तरह से व्यावहारिक रूप दिया। किन्तु इसी थोड़ी अवधि के अन्दर साम्यवाद अपने मूल उद्देश्य से हटने लगा। अब आपही सोचें कि यह सिद्धान्त क्या ग्रहण करने योग्य है?

इसके विपरीत आप अपने सामाजिक और राष्ट्रीय सङ्गठन को देखिए। सदियाँ गुज़र गईं, किन्तु यह समाज अनेकानेक आक्रमण और ठोकरों को बर्दाश्त करता हुआ आज भी जीवित है और आक्रमण का स्थिरता से मुक़ाबला कर रहा है। इस प्रकार दोनों की तुलना करने पर आपको पता चलेगा कि आपका सङ्गठन निश्चय ही अधिक मज़बूत नींव पर खड़ा किया गया है। आप लिखते हैं—"तब तक कोई सिद्धान्त विश्वव्यापी नहीं हो सकता जब तक उसमें कुछ सत्य नहीं रहता।" आप अपने समाज अथवा राष्ट्र-सङ्गठन के लिए यही नियम क्यों नहीं लगाते? यदि इस सिद्धान्त की दृष्टि से आप देखेंगे और समय का भी विचार रक्खेंगे तो आपको पता चलेगा कि साम्यवाद अथवा अन्य किसी भी वाद की अपेक्षा आपके "वाद" में सत्य का अंश कहीं अधिक है। और वह यही कि जहाँ पश्चिम अपनी आँख भौतिक सुख की ओर गड़ाए रहता है, वहीं आपकी सभ्यता का लक्ष्य है आत्म-विकास, उसके स्थायी होने का यही एक कारण है। यह निश्चित बात है कि आज हमारा वह सङ्गठन ढीला पड़ गया है, उसके कल-पुर्ज़े बिखर गए हैं और काम भी ठीक से नहीं हो रहा है, इसलिए उसमें परिवर्तन की आवश्यकता है। आप परिवर्तन करिए अवश्य, किन्तु किसी दूसरे वाद को स्वीकार कर उसके मूल में आघात न करिए।

इसके बाद अवस्थी जी ने महर्षि दयानन्द और महात्मा जी की चर्चा चला कर यह ध्वनि निकाली है कि ये लोग भी साम्यवाद के समर्थक हैं। किन्तु ज़रा विचार करने से यह छिपा न रह जायगा कि स्वामी जी तथा महात्मा जी का साम्यवाद पश्चिमी साम्यवाद से एकदम भिन्न चीज़ है। स्वामी जी तो एक धार्मिक नेता थे ही, किन्तु महात्मा जी भी स्पष्ट रूप से अपने आत्म-चरित में कहते हैं कि उनका अन्तिम लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार अथवा मोक्ष है। भारत को स्वराज्य-प्राप्ति आदि जितने भी उनके कार्य हैं, वे सब गौण हैं तथा वे उस अन्तिम उद्देश्य के पूरक हैं। गुलामी को वे इसीलिए दूर करना चाहते हैं कि वह उनके आत्म-साक्षात्कार के मार्ग का कण्टक है, इसलिए नहीं कि गुलामी दूर हो जाने पर हमारे भौतिक सुख बढ़ जावेंगे। वे यदि भौतिक सुख को भी बढ़ावेंगे तो केवल उसी हालत में जब कि वह उनके अन्तिम लक्ष्य-सिद्धि में सहायक हो। महात्मा जी अछूतों की दशा केवल इसीलिए सुधारना चाहते हैं कि अछूतों की वर्तमान अवस्था उनके आत्मिक विकास की बाधक है। वे धन अथवा किसी भी प्रकार के भौतिक सुख को अछूतों का अन्तिम लक्ष्य बनाना नहीं चाहते। केवल गुलामी दूर करना, दुख दूर करना, इसलिए कि इनके दूर करने पर भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी, महात्मा जी का लक्ष्य नहीं है। आप जो यह कहते हैं कि "साम्यवाद ने लाखों मनुष्यों को गुलामी से उद्धार किया है," वह तो महात्मा जी अथवा उनके आन्दोलन का लक्ष्य नहीं है। यही पूर्व और पश्चिम का अन्तर है। और यही अन्तर महात्मा जी तथा पश्चिमी साम्यवाद का है।

मेरे समान अधिकार वाले अंश के उत्तर में जो आप यह लिखते हैं कि "साम्यवाद के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार होना चाहिए कि यदि उसमें योग्यता है तो...वह भी राष्ट्रपति हो सकता है।" इसके उत्तर में भी मेरा यही कहना है कि हम राष्ट्रपतित्व या किसी भी ऊँची से ऊँची भौतिक महानता को अपना लक्ष्य क्यों बनावें? हम पूर्ण आत्म-विकास को ही अपना लक्ष्य क्यों न बनावें? आत्मा के विकसित होने पर अन्य सभी बातें आप से आप प्राप्त होती हैं। महात्मा जी को ही देखिए। यद्यपि वे कुछ नहीं चाहते; फिर भी उन्हें आज क्या अप्राप्य है? मैंने जो यह लिखा था कि "अधिकार की उत्पत्ति तो सामर्थ्य से होती है" और जिसके विषय में आप एतराज़ कर कहते हैं कि यह तो "जाकी लाठी ताकी भैंस" वाली कहावत हुई। उसका अर्थ भी महात्मा जी के ऊपर दिए वर्णन से खुल जाता है। महात्मा जी के आत्मिक विकास के साथ-साथ उनमें ऐसी सामर्थ्य आ गई है कि अब उनके अधिकार आप से आप बढ़ गए हैं। जिस अधिकार के लिए पश्चिमी साम्यवाद सिर-फुटौवल कर रक्त बहा रहा है, उसे प्राप्त करने का उत्तमोत्तम तरीक़ा हमें महात्मा जी से सीखना चाहिए। यही भारतीय सभ्यता की विशेषता है और हमारे सामाजिक सङ्गठन का मूल सिद्धान्त भी यही है। साम्यवाद की नक़ल करते समय हमें यह बात न भूल जानी चाहिए।

अवस्थी जी लिखते हैं "साम्यवाद प्रत्येक व्यक्ति को उसके परिश्रम के उचित फल को दिलाने के लिए लड़ता है।" निश्चय ही यह बात बड़ी अच्छी है, किन्तु इसमें भी हमें भारतीयता को न भूल जाना चाहिए। हमारे यहाँ पुराने समय में दण्ड की अपेक्षा प्रायश्चित्त का अधिक प्रचार था। साम्यवाद ने दण्ड का तरीक़ा अख़्तियार किया है, किन्तु हमें प्रायश्चित्त को अपनाना चाहिए। और इसकी भी शिक्षा हमें महात्मा जी से ही मिल रही है।

उदाहरणार्थ विदेशी बॉयकॉट को ले लीजिए। लङ्काशायर और मैनचेस्टर के कपड़ों की बिक्री कम करने का सवाल पेश है। हमारे कपड़े के व्यवसाय को सब से अधिक हानि इन्हीं दोनों ने पहुँचाई है। अन्य लोग कहते हैं इन कपड़ों का बॉयकॉट करो, किन्तु महात्मा जी यहाँ भी प्रायश्चित्त को ही अपनाते हैं। उनका कथन है कि अपने व्यवसाय, अपनी गुलामी आदि के लिए सब से अधिक दोषी तो हम ही हैं। तब हम दूसरे को दण्ड देने की अपेक्षा ख़ुद ही प्रायश्चित्त क्यों न करें। प्रत्येक व्यक्ति चर्ख़ा चलावे और खादी पहिन कर प्रायश्चित्त करे। काम भी बनता है और लङ्काशायर के प्रतिहिंसा का भाव तक पैदा नहीं होता। साम्यवाद से भिन्न यही है हमारा भारतीय तरीक़ा; जिसमें दूसरे के अपराधों की ओर दृष्टि रख कर प्रतिहिंसा के भाव से प्रेरित होने के बजाय अपना ही सुधार करना और आत्म-चिन्तन द्वारा मुक्ति प्राप्त करना ही प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य रहता है।

अछूतों के प्रश्न पर भी जहाँ अन्य लोग ऊँची जातियों को गाली देते नहीं थकते, महात्मा जी अपनी दृष्टि भी उस तरफ़ नहीं डालते। वे चुपचाप अछूतों की कमज़ोरियों को, उनकी उन ख़राब आदतों, अज्ञान, गन्दगी आदि को दूर करने का प्रयत्न करते हैं, जिन्होंने उन्हें शूद्रत्व से भी नीचे गिरा कर अछूत बना दिया था। और यह भी प्रायः निर्विवाद है कि अछूतों को सब से अधिक लाभ महात्मा जी ने ही पहुँचाया है।

अवस्थी जी लिखते हैं—"भारतीय सभ्यता से ही संसार में सुख-शान्ति स्थापित होगी।" किन्तु अवस्थी जी का विचार है कि "वह साम्यवाद के

द्वारा ही सफल हो सकती है।" इसे तो अवस्थी जी ने भी स्वीकार किया है और बात है भी प्रत्यक्ष कि साम्यवाद ने लोगों में प्रतिहिंसा और द्वेष की आग भड़का दी है। रूस में उसकी सफलता भी रक्त की नदी को पार कर प्राप्त हुई है। और आज भी रूस में साम्यवाद के विपरीत आवाज़ उठाने वालों को उतना ही और वैसा ही कड़ा दण्ड दिया जाता है, जैसा रूस का ज़ार अपने विरोधियों को देता था। तब साम्यवाद की विजय कौन सी है, यह समझ में नहीं आता। विचार-स्वतन्त्रता का गला तो आज भी वहाँ उसी प्रकार फाँसी और कारा-वास के द्वारा घोंटा जाता है। हाँ, उसका लक्ष्य और स्थान किञ्चित परिवर्तित हो गया है—कल जो अत्याचारी था, आज वह पीड़ित हो गया है और कल जो पीड़ित था आज वह अत्याचारी है। लोगों में प्रतिहिंसा और विद्वेष की अग्नि भड़का, विश्व में शान्ति स्थापित करना कठिन है। और यह प्रयत्न कई बार विफल भी हो चुका है। पश्चिम के राजनीतिज्ञ हैरान हैं; उनकी बुद्धि इस मसले को हल करने में असमर्थ है।

फिर भी अवस्थी जी उम्मीद करते हैं कि साम्यवाद के द्वारा ही विश्व में शान्ति होगी। विश्व में शान्ति तो वही महात्मा स्थापित करेगा, जिसका ज़िक्र अवस्थी जी भी अपने लेख में करते हैं। किन्तु आश्चर्य तो यह है कि उस महात्मा को वे आधुनिक पश्चिमी साम्यवाद का प्रवर्तक मानते हैं।

महात्मा जी में तथा पश्चिमी साम्यवाद में घोर अन्तर है। साम्यवाद प्रतिहिंसा और विद्वेष की अग्नि को भड़काता है तथा उसका लक्ष्य है भौतिक सुख। वह आत्म-विकास पर ज़रा भी ध्यान न देकर, दूसरे को हानि पहुँचाने और दूसरे की चीज़ को बलपूर्वक छीन कर अपनाने पर तुला हुआ है। इसके विपरीत महात्मा जी लोगों में अहिंसा का प्रचार कर दूसरों से प्रेम करने की शिक्षा देते हैं और उनका लक्ष्य है आत्म-विकास। भौतिक सुख की ओर वे बिलकुल नहीं देखते। वे दूसरों की वस्तु छीनने, किसी को भी हानि पहुँचाने अथवा बलोप-योग के विरोधी हैं। वे दूसरों को दण्ड देने के बदले ख़ुद प्रायश्चित्त के पक्षपाती हैं। अब आप ही निश्चय कर लें, इन दोनों में से किस मार्ग में सत्य का अंश अधिक है और किसके द्वारा विश्व में शान्ति स्थापित होने की अधिक सम्भावना है।

जिस वैदिक साम्यवाद का अवस्थी जी अपने लेख में ज़िक्र करते हैं, मेरा विश्वास है कि वह आधुनिक साम्य-वाद से नितान्त भिन्न था।

"इसावास्यम् इदम् सर्वम्"। ईश। यह सारा जगत उसी एक तत्व से व्याप्त है, तब भिन्नता कैसी? वैदिक साम्यवाद की बुनियाद इस समता की नींव पर रक्खी गई थी। आधुनिक साम्यवाद की बुनियाद ठीक इसके विपरीत भौतिक हक़-हक़ूक़ात पर रक्खी गई है। इस प्रकार भिन्न दृष्टि-कोण होने के कारण दोनों के व्यवहार में यथेष्ट अन्तर आ जाता है। जहाँ आज का साम्यवादी अपने प्रतिद्वन्द्वी के प्रति रोष से पागल होकर अत्याचार करने लग जाता है, वहाँ वैदिक साम्यवादी अपने प्रति-द्वन्द्वी में भी अपनी आत्मा का दर्शन करता था और उसके बुरे कर्मों को माया का परिणाम समझ कर इस माया के नाश की व्यवस्था करता था, अपने प्रतिद्वन्द्वी के प्रति ईर्षा, वैमनस्य का भाव तो उसके मन में आता ही न था।

आज रूस में क्या हो रहा है? ज़मींदारों की सम्पत्ति छीन कर किसानों को दी जा रही है। पहले किसानों की सम्पत्ति छीन कर ज़मींदारों को दी जाती थी। केवल पात्रों का स्थान परिवर्तन मात्र है। छीनने का निकृष्ट भाव जिस तरह ज़ार के समय में प्रबल था, आज भी है। इसे कम करने, इस पशु-प्रवृत्ति को दबा कर ऊपर उठने का प्रयत्न ही संसार में सुख-शान्ति स्थापित करेगा।

और जब तक हम धन से, भौतिक सुख से अपनी दृष्टि हटा नहीं, लेते तब तक अवस्था परिवर्तित न होगी। आज हम लूटते हैं; कल हम लुटेंगे। आवश्यकता स्थान और पात्र परिवर्तन की नहीं, वरन लूट की भावना को शमन करने की है और यह उस समय तक न होगा जब तक हम

> तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा
> मा गृध=कस्य स्वितधनम्

"इस संसार अथवा भौतिक सुख का उपभोग त्याग-भाव को रख कर न करें।"

मैंने पहले लेख में भी यही कहा था और आज भी मेरा यही कथन है कि परिवर्तन करिए, लोगों के दुख दारिद्र्य को दूर करिए, किन्तु अपनी सभ्यता के मूल में आघात न करिए और पश्चिमी भौतिकवाद की चका-चौंध में अपनी आत्मा को न भूल जाइए।

* * *

Registered No. A—2085

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.